

गौसुल्लकलैन महबूबे सुल्हानी कुतबे रव्वानी  
हज़रत सम्भवना सैख अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहो अन्हो  
की मसहूर ज़माना तसनीफ़

# गुनियतुत्तालिबीन

जिसने अंदाज़े बयान का लुत्फ़ और सलासत  
ज़बान का कैफ़ हर हर सतर में मौजूद है

तर्जमा अज़ः

अदीबे शहीर हज़रत

**शाम्स सिद्दीकी बरैलवी**

साबिक सदर शोअबा-ए-फारसी  
दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़



وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ  
(اے محبوب! ہم نے آپ کو سارے جہاں کیلئے رحمت بنا کر بھیجا)



کتاب کو پڑھنے سے پہلے  
اس کتاب کو سکین کرنے والے  
اور اس کام میں حصہ لینے والوں کو حق میں

# دُعا فرمائے

اللہ اَجَلِ ہمارے تمام  
سیر و کبیرا غناہوں کو مُآف فرماوے  
اور ایمان پر استقامت اُتار فرماوے!

# آمین

PDF BY :  
**WASEEM AHMED RAZA KHAN**  
**AZHARI & TEAM**  
+91-8109613336



गौसुस्सकलैन, महबूबे सुब्हानी कुतबे रब्बानी  
हजरत सय्यदना शैख अब्दुल कादिर जीलानी रजियल्लाहो अन्हो  
की मशहूर ज़माना तसनीफ़

# गुनियतुत्तालिबीन

जिसमें अंदाज़े बयान का लुत्फ़ और सलासते  
ज़बान का कैफ़ हर हर सतर में मौजूद है

तर्जमा अज़ः

अदीबे शहीर हजरत

शम्स सिद्दीकी बरैलवी

साबिक सदर शोअबा-ए-फ़ारसी

दारुल उलूम मंज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़

अदबी दुनिया

399, मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली-6



## जुमला हुकूक बहक्के नाशिर महफूज

- किताब : गुनियतुत्तालिबीन
- तसनीफ : महबूबे सुब्हानी कुतबे रब्बानी  
हजरत शैख अब्दुल कादिर जीलानी रजियल्लाहो अन्हो
- तर्जमा : अदीबे शहीर शम्स बरैलवी
- बएहतेमाम : रेहान अहमद सिद्दीकी
- सने इशाअत : मई 2010 ई०
- तादाद : 1100
- सफ़हात : 728
- हदिया

## अदबी दुनिया

399 मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली-6  
फोन: आफिस: 23250122,



## फ़ेहरिस्त मज़ामीन

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
दो बातें	22	फुतूहुल ग़ैब के चन्द उनवानात	55
हर्फ़ आगाज़		सिलसिला कादिरया	56
अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़	23	गौसे आज़म का हुलिया शरीफ़	58
अस्ल नाम क्या है	24	गौसे आज़म के अख़लाक व आदत	58
अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ का मौजूअ	24	गौसे आज़म की तसानीफ़	59
अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ का अंदाज़े बयान	25	अल फ़तहुर्रब्बानी का अंदाज़े बयान	61
आम अंदाज़े बयान	26	और इशाअते अव्वल	
अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ के ख़िलाफ़ एक शुब्हा इज़ाला	27	अल फ़तहुर्रब्बानी की इशाअत	62
अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ का उर्दू में तर्जमा	27	फुतूहुल ग़ैब	62
सवानेह हयात हज़रत गौसे आज़म	29	फुतूहुल ग़ैब का अंदाज़े बयान	62
तहसीले इल्म व फ़न	39	फुतूहुल ग़ैब की इशाअत और फ़ारसी उर्दू तराजिम	63
दर्स व तदरीस	40	गौसे आज़म की शायरी	64
मोएज़त व तलकीन	40	क़सीदए ग़ोसिया	66
अरबी ज़बान पर उर्दू पाना	41	हज़रत गौसे आज़म की फ़ारसी शायरी और फ़ारसी मकतूबात	68
ज़ालिमों, आलिमों, सूफ़ियों और फ़कीहों से ख़िताब	42	गौसे आज़म का विसाल	68
बाशिन्दगाने बग़दाद से ख़िताब	43	मज़ारे मुबारक	69
दरबारी उलमा, जुहहाद और सलातीन से ख़िताब	43	अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ की तसनीफ़ का सबब	70
आपके मवाएज़ का असर	44	<b>बाब 1</b>	
गौसे आज़म और तालीमाते बातिनी	45	दीने इस्लाम के वाजिबात व फ़राइज़	71
गौसे आज़म की इज़दिवाजी ज़िन्दगी	47	ईमान	71
गौसे आज़म के मामूलात	49	दीने इस्लाम	71
हज़रत का तरीक़ए तलकीन व इरशाद	49	नव मुस्लिम के हुक्क	71
छटी सदी हिजरी और आलमे इस्लाम की अबतरी व बदहाली	51	नव मुस्लिम का गुस्ल	71
		नमाज़	72
		शराइते नमाज़	72
		तहारत	72
		तयम्मुम	73



औरतों का हमाम में जाना  
हमाम के आदाब  
अन्नाशतरी पहनना और  
बुनवाना

अन्नाशती किन उंगलियों में  
पहनना चाहिए  
बैतुल ख़ला में जाना  
पानी से इस्तिनजा  
किन चीज़ों से इस्तिनजा  
करना चाहिए  
इस्तिनजा की ज़रूरत

17

तहारते कुब्रा (गुस्ल)  
गुस्ल की कैफ़ीयत और  
हुक्म

गुस्ले जनाबत  
पानी का इस्तेमाल  
घर में दाख़िला  
मअशीयत  
दीन दुनिया की दुरुस्ती  
चार किस्म के लोगों से है  
गोशा नशीनी और ख़मोश  
आदाबे सफ़र व रिफ़ाक़त  
सफ़र

22

मन्ज़िल पर ठहरने की दुआ  
सवारियों के गले में घंटीयां  
जानवरों और गुलामों को  
ख़रस्सी करने की मुमानियत  
आदाबे मसाजिद

23

अशआर ख़ानी और कुरआन  
ख़ानी  
अशआर के अक्साम  
कुरआन की ऐहतियात  
मोहरिक ज़ज़्बात अशआर  
किस जानवर को मारना  
जाइज़ और किसको  
नाजाइज़  
सांप का मारना

तहबन्द (अज़ार)  
पायजामा (सरावील)  
आदाबे ख़वाब

मोमिन का ख़वाब

20

घर से निकलने के आदाब  
घर से निकलने की दुआ  
आदाबे मस्जिद

मस्जिद में दाख़िल होने की  
दुआ

बाब 4

घर में दाख़िला करने हिलाल  
और ख़त्वत नशीनी इख़्तियार  
करने का बयान  
क़र्बिस्तान में जाने के आदाब  
दूसरों के साथ बरताव  
रहमत की दुआ  
मुसाफ़ा  
दुआ का तरीक़ा

कुरआनी तअ्वीज़ात  
वज़े हमल का तअ्वीज़

दम करना

नज़रे बद का इलाज  
सेंगी लगवाना फ़सद  
खिलवाना

अजनबी औरत के साथ तन्हाई  
में बैठना

बांदी और गुलाम से नर्मी  
बरतना

27

कुरआन पाक को साथ रखना  
मुत्फ़रिक् दुआएं

उज़ल करना

जिमा से परहेज़



उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
सैफ़ेद बालों को उखाड़ना	94	हम्माम के आदाब	108
नाखुन तराशना	95	अंगुशतरी पहनना और बनवाना	109
सर मुडाना	95	अंगुशतरी किस चीज़ की हो	109
कज़अ का हुक्म	96	अंगूठी किन उंगलियों में पहनी जाए	109
मांग निकालना	96	बैतुल खला में जाना	110
तहज़ीफ़ यानी जुल्फ़ें निकालना	97	पानी से इस्तिन्जा	112
मूंचीं से बाल नोचना	97	किन चीज़ों से इस्तिन्जा करना चाहिए	112
बालों को सियाह करना	97	इस्तिन्जा की ज़रूरत	113
ख़िज़ाब या वस्मा	97	गुस्ल की कैफ़ियत और हुक्म	113
सुरमा लगाना	98	गुस्ले जनाबत	114
बालों में तेल लगाना	98	पानी का इस्तेमाल	114
<b>बाब 3</b>		आज़ा धोने के वक्त मुस्तहब दुआयें	114
आदाबे मुआशरत	99	लिबास के अक़साम	117
सफ़र व हज़र, सात उमूर की पाबन्दी		अमामा किस तरह बांधें	117
मकरूह आदतें, घरों में दाख़िला		तहबन्द	117
रास्त चप का इस्तेमाल और		पायजामा	118
खाने पीने के आदाब	99	सफ़दे कपड़े	118
मकरूह बातें	99	ख़्वाब के मसाएल	119
दूसरों के घरों में दाख़िला	100	मोमिन का ख़्वाब	119
दाख़िला के आदाब	100	घर से निकलते वक्त की दुआ	120
दायां हाथ और पांव	101	मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ	121
खाने पीने के आदाब	101	<b>बाब 4</b>	
खाने का तरीक़ा	102	घर में दाख़िला	122
ज़रूफ़े तआम	102	मईशत	122
ज़ियाफ़त के आदाब	103	गदागरी	123
दावते ख़ल्ता	104	दीन व दुनिया की दुरुस्ती	123
खाने के आदाब	104	गोशा नशीनी और ख़ामोशी	124
हाथ किन चीज़ों से धोना मना है	105	सफ़र का इरादा	127
पीने के मसाएल	106	मंज़िल पर ठहरने की दुआ	128
खुलासाए कलाम	106	सवारियों के जानवरों के मले	128
मेहमानी में रोज़ा इफ़तार	106	में घंटियां	
हम्माम हुक्म	107	जानवर और गुलाम को ख़स्ती करना	128
औरतों का हम्माम में जाना	107	की मुमानेअत	



## उनवान

## सफ़हा

मस्जिद में काम करने के मसाएल	129
अशआर	130
तरतीले कुरआन	130
कुरआन की एहतियात	131
मोहर्रिके जज़्बात अशआर	131
सांप का मारना	132
गिरगिट का मारना	133
चींटी का मारना	133
मेंढक का मारना	133
मूजी जानवर	134
कुत्ता	134
जानवरों पर बोझ लादना	134
सिंगी लगाना	134
मां बाप के हुक्क	134
इताअते वालिदैन के मजीद अहकाम	135
मोआशरत की मुतफ़र्रिक बातें	136
मुस्तहब और मकरूह नाम और कुन्नियत	136
गुस्सा की हालत के अहकाम	137
क़ब्रिस्तान में जाने के आदाब	137
दूसरों के साथ बरताव	138
रहमत की दुआ	138
मुसाफ़ा	138
दुआ का तरीका	138
कुरआनी तावीज़	139
वज़ए हमल का तावीज़	139
दम करना	139
नज़रे बंद का इलाज	140
संगी लगवाना, फ़स्द खुलवाना	140
अज्जन्बी औरत के साथ तन्हाई में बैठना	141
बांदी और गुलामों से नर्मी बरतना	141
कुरआन पाक को साथ रखना	141

## उनवान

## सफ़हा

आईना देखते वक़्त क्या दुआ पढ़े	142
कान बजना	142
दर्द दूर करने की दुआ	142
बद शगूनी का दफ़िआ	142
कलीसा, आतिशकदा या बुतकदा देखने पर	142
रअद और कड़क की आवाज़	143
आंधी के वक़्त की दुआ	143
बाज़ार में जाना	143
रुईयते हिलाल की दुआ	143
मुसीबत ज़दा को देखकर	143
हाजी से मुलाकात पर	143
बीमार की अयादत के मौक़े पर दुआ	144
मुर्दों को कब्र में रखते वक़्त	144
बाब 8	
निकाह के अहकाम	145
बीवी पसन्द ना पसन्द करने का मसला	146
बीवी की खुसूसियात	146
जौजैन के हुक्क	149
निकाह के बाद	150
हमल के ज़माने में	151
जिमाअ के बाद	151
जिमाअ के वक़्त	151
उज़ल करना	151
जिमाअ से परहेज़	152
औरत की ख़्वाहिशे जिमाअ	152
बुराई से बचाव	152
राज़ की बातों का बयान करना	153
शौहर की इताअत गुज़ारी	153
शौहर का मर्तबा	153
औरतों के हुक्क	154
दावते वलीमा कब करना चाहिए	154



उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
निकाह में छुहारे लुटाना	155	अल्लाह तआला के पाक नामों की	178
निकाह का तरीका और शराएत	155	तादाद	
खुत्बए निकाह	155	ईमान किसे कहते हैं	179
<b>बाब 6</b>		ईमान के मानी	179
अवामिर व नवाही	158	इस्लाम की तारीफ़	179
पर्दादरी	159	मोमिन होने का दावा	181
मना करने पर कुरबत	159	किस्मत व तकदीर	182
मना करने वालों के गरौह	160	क़दरिया का नज़रिया	183
जने ग़ालिब	160	मुसलमान गुनाह से काफ़िर नहीं होता	184
अम्र बिल मारुफ़ और नही अनिल	160	<b>बाब 7</b>	
मुनकर की शराएत		अज़ाब व सवाब	185
अम्र व नही तन्हाई में करना बेहतर है	162	मेराज	186
पांचवीं शर्त की मज़ीद तौज़ीह व	163	मुनकर नकीर	187
तशरीह		मुदी जाएर को पहचानता है	187
नेक व बाद आमाल	164	जोगता क़ब्र या फिशारे क़ब्र	187
मना करने के आदाब	164	मोमिन का नेक अंजाम	188
सानेअ आलम की मारफ़त	165	काफ़िरों का अंजामे बद	189
हम्द व सना	166	काफ़िर की क़ब्र में हालत	190
सिफ़ाते इलाही	167	अस्वाहे शोहदा	191
सात आसमान	168	अशरे अजसाद	192
अर्श को उठाने वाले फ़रिश्ते	168	आंहरत का शफ़ाअत फ़रमाना	193
अलल अर्श इस्तवा	169	सिरात की कैफ़ियत	195
पिछली रात की नमाज़ इब्तिदाई	171	हौजे कौसर	195
रात की नमाज़ से क्यों अफ़ज़ल है		हौजे कौसर की वुसअत	196
कुरआन मज़ीद अल्लाह की	172	रोजे हशर हुज़ूर का कुर्ब व इख़्तोसास	196
किताब है		मुसलमानों का हिसाब और अल्लाह	197
कुरआन को मख़लूक कहने वाला	173	तआला की पर्दापोशी	
काफ़िर है		मीज़ान	197
कुरआन के हुरूफ़ और आवाज़	174	अहले हिसाब के अक़साम	198
तिलावते कुरआन	175	जन्नत और दोज़ख़ का वजूद	199
तकल्लुमे इलाही	175	बहिश्त की सूरत	200
हुरूफ़े हिज्जा मख़लूक नहीं	176	हूराने बहिश्ती	200
हुरूफ़े कुरआन कदीम या हादिस	177	आख़िरत की बीबी	200



सनवान

सफ़हा

उनवान

सफ़हा

बाब 8

सय्यदुल अंबिया नबीए आखिरीन	202
हुज़ूर के मोज़जे	203
उम्मते मोहम्मदिया की अफ़जलियत	204
खिलाफ़ते राशिदा	204
हज़रत अबू बकर की खिलाफ़त	205
हज़रत उमर की खिलाफ़त	206
हज़रत उसमान की खिलाफ़त	206
हज़रत अली की खिलाफ़त	207
हज़रत अमीर मुआविया की खिलाफ़त	208
उम्मोहातुल मोमिनीन और	208
अहले बैते रसूल	
अज़मते सहाबा कराम	209
अइम्मा कराम और हाकिम की पैरवी	211
सुन्नत व जमाअत की पैरवी	211
अहले बिदअत से इज्तेनाब	212
अहले बिदअत की निशानियां	213
वह सिफ़ात जिनका इतलाक़ अल्लाह	213
तआला की जात के साथ ना रवा है	
वह सिफ़ात जिनसे अल्लाह तआला	215
को मुत्तसिफ़ करना जाएज़ है	
हिदायत के रास्ते से भटके हुए	218
फिरकों का बयान	

बाब 9

तिहत्तर फिरके	220
शिया फिरका	223
राफ़जियों के फिरके	224
ग़ालिया	225
बोनानिया	225
तैयारिया	225
मुगीरिया	225
मन्सूरिया	226
खत्ताबिया	226

मोअम्मरा	226
बज़ीऐया	226
मुफ़ज़ज़लिया	226
शरीऐया	226
सब्बाईया	226
मुफ़व्वज़िया	227
ज़ैदिया	227
जारुदिया	227
सुलैमानिया	227
बतरिया	227
तईमिया	227
याकूबिया	228
राफ़जियों के मुख्तलिफ़ फिरके	228
कतईया	228
कैसानिया	228
करीबिया	228
उमैरिया	228
मोहम्मदिया	228
हुसैनिया	228
नारुसिया	228
इस्माईलिया	229
करामज़िया	229
मुबारकिया	229
शमीतिया	229
मोअम्मरिया	229
मतमूरिया	229
मौसविया	229
अमामिया	229
ज़रारिया	230
राफ़जियों के अक़वाले बातिला	230
मरजिया के फिरके	231
जहमिया	231
सालेहिया	231



उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
यूनिसिया	231	शैतान की हकीकत	242
शिमरिया	232	तऊज़ के फायदे	243
यूनानिया	232	शैतान किन चीज़ों से डरता है	244
नज्जारिया	232	शैतान से बचने की तदाबीर	244
गीलानिया	232	शैतान के अहवाल	246
शबीबिया	232	इंसान के मोवक्कलीन	248
हनफिया	232	इल्काहाए कल्ब	249
मआज़िया	233	नफ़्स और रूह	250
मुरीसिया	233	खुदा की पनाह मांगना	251
कर्रामिया	233	शैतान से जिहाद करना	251
मोअतज़ला या क़दरिया के अक़वाल	233	दूसरी मजलिस	252
हज़लिया	235	तख़्ते बिलकीस सुलैमान के हुज़ूर में	258
निज़ामिया	235	हज़रत सुलैमान और मलका	258
मोअम्मरिया	235	बिलकीस की मुलाक़ात	
जबाईया	236	हज़रत सुलैमान की औलाद	260
बहशमिया	236	बिलकीस के बत्न से	
कअबिया	236	हज़रत सुलैमान और बिलकीस	260
फ़िरकए मुशबह के अक़ाएद	236	के किस्से	
व अक़वाल		बिस्मिल्लाह की फ़ज़ीलत के बारे में	263
हश्शामिया	236	मज़ीद वज़ाहत व तशरीह	
मक़ातिलया	237	बिस्मिल्लाह का नुज़ूल	264
जहमिया के अक़वाल	237	बिस्मिल्लाह की तफ़सीर	266
ज़रारिया के अक़वाल	237	लफ़्ज़ अल्लाह के मानी में	267
नज्जारिया के अक़वाल	237	मुख़्तलिफ़ अक़वाल	
कोलाबिया के अक़वाल	238	बिस्मिल्लाह के फायदे	270
सालमिया फ़िरक़े के अक़वाल	238	बिस्मिल्लाह की मज़ीद तशरीह	270
<b>बाब 10</b>		बिस्मिल्लाह की बरक़त	271
मवाएज़े कुरआन व हदीस के	240	बिस्मिल्लाह की सिफ़त	272
बयान में चन्द मजालिस		शैतान की मुख़ालफ़त रहमते इलाही	273
पहली मजलिस	240	मजलिस सोम	273
अऊज़ की तशरीह	242	तौबा के मानी	273
शैतान की लफ़्ज़ी तशरीह	242	गुनाहे सगीरा और कबीरा	274
		सगीरा गुनाह	275



उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
सगाएर	275	दूसरी मिसाल	304
तौबा फ़र्जे ऐन है	277	तीसरी मिसाल	304
हज़रत आदम की तौबा	277	चंद और मिसालें	304
तौबा की तीन शर्तें	284	तक़्वा की तकमील की दस शर्तें	305
सेहते तौबा की शर्त	285	बयक वक़्त तौबा	306
रोज़े की कज़ा	286	फ़ासिक की इबादात	307
ज़कात की अदमे अदाएंगी के अदा	287	एक मिसाल	308
का तरीका		तौबा के मुताल्लिक अहादीस	308
कज़ा हज की अदाएंगी	287	बग़ैर तौबा के मग़फ़िरत नहीं	309
कफ़ारों की अदाएंगी	288	मज़ीद अहादीस	311
बंदगाने खुदा के हुक्क का अदा	289	सिद्क व ताअत का असर	314
न करना		तौबा की शिनाख़्त चार बातों से	315
हक़ तलफ़ी और कत्ले ख़ता	290	होवी है	
इमाम शाफ़ई का इरशाद	290	तौबा के बारे में मशाइख़े तरीक़त	316
कत्ले अमद से तौबा	290	के अक़वाल	
ना मालूम कातिल	290	तौबा के दर्जे	316
ना मालूम अफ़राद का गुनाह	291	तौबा के मज़ीद मानी	317
माली हुक्क का ग़सब	291	हज़रत ज़ुन्नून मिस्री	317
आमाल के तीन दफ़्तर	293	हज़रत अबू बकर वास्ती तौबा	318
तौबा में उजलत की जाए	293	किसे कहते हैं	
अल्लाह तआला की गुनाहों की	296	इब्ने अता का इरशाद	318
एक मिसाल		<b>बाब 11</b>	
मज़ालिम का तदारुक़	297	इन्ना अकरमकुम की तशरीह	319
जुहद व तक़्वा	298	हज़रत सिरी सिक्ती का सलाम	320
तक़्वा के सिलसिले में असलाफ़े	299	दुश्मन भी महफूज़ रहें	320
कराम के अक़वाल		नफ़्स से हिसाब फ़हमी तक़्वा है	321
तक़्वा की दो किस्में	300	तक़्वा किस तरह हासिल किया जाए	324
हलाले ऐन अंबिया का खाना है	302	तक़्वा का हुसूल	324
यहूदी, नसारा और ज़िम्मियों के	302	नजात के बारे में मशाइख़ के	324
बारे में हराम चीज़ों की फ़रोख़्त का हुक्म		अक़वाल	
रोज़ी कमाने के लिहाज़ से तीन	303	वादा व वर्ईद	325
किस्म के लोग		वर्ईदे इलाही	326
तक़्वा की एक और मिसाल	303	ख़्वाहिशात की पैरवी का अंजाम	327



## उनवान

## सफ़हा

## बाब 12

जन्नत और दोजख में दाखिला	329
मिस्ल का फायदा	329
जन्नत की मिसाल	329
दोजख की मिसाल	330
अहले जन्नत के इनामात	330
रफरफ की तारीफ	331
दोजख और दोजखियों के हालात	333
दोजख के अज़ाब	335
गुनाहों के मख़तस अज़ाब	346
चोर का अज़ाब	347
झूटी गवाही देने पर अज़ाब	347
मुशरिक पर गुनाह	347
जालिम व जाबिर और मुतकब्बिरों का अज़ाब	347
ख़यानत करने वालों का अज़ाब	347
दोजख के पुल उबूर करने के बाद	348
बन्दे के हजार महल	350
जन्नत के महल की कैफ़ियत	351
जन्नत की ज़मीन	353
अहले जन्नत की हैयत	353
दीदारे इलाही	353
अर्शे इलाही और मेम्बर	355
वापसी पर अल्लाह की तरफ़ से तोहफ़े	357
जन्नत की किस्में	358
जन्नते अदन	358
जन्नत के परिन्दे	359
मज़ीद इनामात	359
जहन्नम की हौलनाकियां	360
दोजख	360
काफ़िरों की बद अंजामी	362
अहले जन्नत पर मज़ीद इकराम	362

## उनवान

## सफ़हा

## बाब 13

चार बुजुर्ग महीने	366
लफ़्ज़ रजब की तहकीक	367
माहे रजब के दूसरे नाम	368
इश्तिकाक की मिसालें	369
असम की वजहे तसमिया	370
असब्बून कहने की वजह	370
रजब में सवाब	370
साबिक की वजहे तसमिया	374
रजब की मज़ीद खुसूसियात	375
माहे रजब के पहले रोज़े और पहली रात के क़याम की फ़ज़ीलत	376
साल की वह रात जिनमें क़याम करना मुस्तहब है	377
रजब की पहली रात में पढ़ी जाने वाली दुआयें	377
माहे रजब की नमाज़ें	379
रजब की नौचन्दी जुमेरात का रोज़ा	380
सत्ताईस रजब के रोज़े की फ़ज़ीलत	382
हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास का मामूल	382
रोज़ादार के लिए ज़रूरी शराएत	382
रोज़ा इफ़्तार करने की दुआ	384
माहे रजब की बरकतें	385
माहे शाबान और शाबान की पन्द्रहवीं शब	388
अल्लाह तआला की तख़लीकात	389
शाबान रसूलुल्लाह का महीना है	389
लफ़्ज़े शाबान की तहकीक	390
फ़ज़ाएल व बरकाते शबे बरात	391
शबे बरात के इनामात	395
शबे बरात की वजहे तसमिया	396
हज़रत हसन बसरी का वाकिआ	397



उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
शबे बरात में नमाज़	397	हज़रते ईसा की उम्मत की ईद	424
<b>बाब 14</b>		ईद मोमिन भी मनाता है और	426
रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाएल	398	काफ़िर भी	
लफ़्जे रमज़ान की तशरीह व तहकीक	400	ईद मनाने का इस्लामी तरीका	427
कुरआन पाक किस तरह नाज़िल हुआ	401	<b>बाब 15</b>	
माहे रमज़ान के फ़ज़ाएल	402	दस दिनों के फ़ज़ाएल	429
माहे रमज़ान की बरकतें	403	माह ज़िल हिज्जा के अशरा	430
शबे क़द्र	404	अव्वल में मोज़ाते अम्बिया	
रमज़ान के हुरूफ़	407	अशरा ज़िल हिज्जा की इबादात	431
रमज़ान की हुरमत	408	इस अशरा की नमाज़ों के फ़ज़ाएल	432
सरदारी और सरवरी	408	हज़रत आदम की दस चीज़ें	433
सूरह क़द्र की तफ़सीर	408	हज़रत इब्राहीम की दस चीज़ें	433
लैलतुल क़द्र के मानी	409	हज़रत शोऐब की दस चीज़ें	434
शबे क़द्र की तलाश	410	हज़रत मूसा की दस चीज़ें	434
शबे जुमा अफ़ज़ल है या शबे क़द्र	411	सय्यदुल मुर्सलीन की दस चीज़ें	435
शबे क़द्र पर शबे जुमा की	412	अशरा ज़िल हिज्जा की अज़मत	435
अफ़ज़लियत		क़सम याद करने की हिकमत	436
शबे क़द्र अफ़ज़ल है शबे जुमा से	412	यौमित्तरबीया	437
शबे क़द्र के ग़ैर मुतअय्यन होने	413	एहराम बांधना और लब्बैक कहना	437
का सबब		एक आराबी का वाफ़िआ	438
अल्लाह तआला ने हुज़ूर को	414	हज़रे असवद	439
पांच रातें मरहमत फ़रमाई		हज़ के इरादे से घर से निकलने	440
बदकारों के लिए नेकोकारों की	414	वाला और उसकी वफ़ात	
शफ़ाअत		यौमित्तरबीया की वजहे तसमिया	440
शबे क़द्र की अलामतें	415	तकमीले नेमत का दिन	443
नमाज़े तरावीह	416	अल यौमा अकमलतो की मज़ीद तशरीह	444
नमाज़े तरावीह की जमाअत	417	अरफ़ात और अरफ़ा के मानी	445
शबे क़द्र और माहे रमज़ान के	418	रोज़े अरफ़ा और शबे अरफ़ा की फ़ज़ीलत	447
मज़ीद मसाएल		अरफ़ा का रोज़ा	450
सदक़ए फ़ित्र व ईदुल फ़ित्र	420	अरफ़ा के दिन की नमाज़ें	450
ईद की वजहे तसमिया	421	यौमे अरफ़ात की दुआयें	451
मिल्लते इब्राहीम की ईद	422	अरफ़ा की वह दुआयें जो	453
उम्मतुल मुसलमा की ईद	423	आंहुज़रत के साथ मख़सूस थीं	



## उनवान

## सफ़हा

मलाएका और हजरत खिज़्र की दुआयें	454
इस दुआ का असर	454
अरफ़ा के दिन की दुआ	455
कौसर के मानी	456
ज़िक्र व शुक्र	458
हजरत फुज़ैल की तशरीह	458
इब्ने कैसान की तशरीह	459
हजरत सलमान फ़ारसी का इरशाद	460
दुआ का हुक्म	462
मुफ़स्सरीन का कौल	462
दुआ की अदमे कबूलियत	463
एक इल्मी नुक्ता	463
कुरबानी	464
ईदगाह का रास्ता	466
कुरबानी के वक्त की दुआ	467
कुरबानी का जानवर अच्छा हो	468
शबे ईदे कुरबान	469
कुरबानी के अहकाम	469
कुरबानी का जानवर	469
कुरबानी के जानवर का रंग	470
कुरबानी के दिन	470
अय्यामे तशरीक	471
तशरीक के मानी	471
जजाज का कौल	471
सदी का रिवायत	472
मुख्तलिफ़ तौजीहात	472
मोहम्मद बिन कअब का कौल	472
ज़िक्र के मानी	473
तशरीक के मानी	473
हजरत जून्नून मिस्री की तशरीह	474
तकबीरात अय्यामे तशरीक की तादाद	474

## उनवान

## सफ़हा

तकबीर के अल्फ़ाज व तादाद	475
मोहरिम की तकबीरात	475
ईदुल फ़ित्र की तकबीरात	475
<b>बाब 16</b>	
यौमे आशूरा और यौमे जुमा के फ़ज़ाएल	477
हजरत इब्ने अब्बास की रिवायत	477
आशूरा के दिन चार रकअत नमाज़	478
हजरत अबू हु़रैरा की रिवायत	478
हजरत अली की रिवायत	479
जंगली जानवर भी रोज़ा रखते हैं	479
आशूरा की वजहे तसमिया में उत्मा का इख़्तिलाफ़	480
किस तारीख को आशूरा होता है	481
यौमे आशूरा के बाज़ मजीद मसाएल	481
अहले बैत से अच्छा सुलूक	482
आशूरा के रोजे पर तअन करने वाले ग़लती पर हैं	482
यौमे जुमा के फ़ज़ाएल	483
शाने नुज़ूल	484
रोज़े जुमा के फ़ज़ाएल अहादीसे नबवी में	485
जुमा की एक साअत	485
मलाएका फ़ेहरिस्त मुस्तब करते हैं	486
जुमा के दिन जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वाले	486
तिजारत और लहव व लईब में मशगूल रहने वाला	487
जुमा के दिन की हैयत	487
जुमा के दिन छः लाख दोज़खी आज़ाद होते हैं	488
जुमा की नमाज़ बा जमाअत का सवाब	488



## उनवान

## सफ़हा

जुमा के दिन गुस्ल करके मस्जिद में जाना	489
दिन की साअतों के औकात	489
जुमा के दिन के गुस्ल की ताकीद	489
गुस्ल का वक़्त	489
जुमा का अफ़ज़ल तरीन ज़िक्र	490
लोगों को फलांगना मना है	491
नमाज़ी के सामने से गुज़रने की मुमानिअत	491
रोज़े जुमा की मज़ीद खुसूसियात	492
जुमा के दिन जिब्रील काबा में अपना झंडा नस्ब करते हैं	493
जुमा के दिन दुआ की कबूलियत की साअत	493
जुमा के दिन दरुद शरीफ़ ज़्यादा पढ़ना चाहिए	495
हज़रत अब्दुल अजीज़ बिन हबीब की रिवायत	495
हज़रत अब्दुल्लाह की रिवायत	496
जुमा के रोज़ हजार मर्तबा दरुद शरीफ़ पढ़ना	496
सय्यदुल अय्याम की वजहे तसमिया	497
<b>बाब 17</b>	
तौबा और तौबा करने वाले	498
हज़रत सईद बिन जुबैर का कौल	498
हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह की रिवायत	499
खालिस इताअत	499
इखलास के मानी	499
हज़रत सईद बिन जुबैर के नज़दीक	500
इखलास के मानी	
इखलास के दर्जे	501
हकीकी इखलास	501

## उनवान

## सफ़हा

सहल बिन अब्दुल्लाह का इरशाद	501
तवक्कल व इखलास	502
नापाक नफ़्स इंसान के दर पै आज़ार है	502
रियाकारों की तहदीद	503
रिया की मज़म्मत में अहादीस	504
रसूलुल्लाह की दुआ	504
किस आतिम की सोहबत में बैठना चाहिए	504
हुज़ूर का एक और इरशाद	505
एक और इरशादे गरामी	505
से बड़ा अंदेशा	505
दक्कनाक अज़ाब	506
दिराये का रोज़ा और उसकी जज़ा	506
महज़ अब्दुल्लाह के लिये ख़ैरात करना	506
रियाकार कारी, रियाकार सखी और रियाकार मुजाहिद	507
जन्नत से महरूम रहने वाले	508
मोमिनीन की फ़लाह और रियाकारों का इबतला	508
रियाकार अल्लाह को फ़रेब देना चाहता है	508
मुनाफ़िक का अंजाम	509
हज़रत हसन बसरी और फ़रक़द	510
लिबास तीन किस्म के हैं	510
<b>बाब 18</b>	
अय्याम की तख़लीक़ और हर दिन की खुसूसियत	511
अंबिया के मख़सूस दिन	512
उम्मत मोहम्मदिया का तोहफ़ा खास	512
बुध, जुमेरात और जुमा के रोज़े की फ़जीलत	512
अय्यामे बैज के रोज़ों की फ़जीलत	513



सनवान	सफ़हा	सनवान	सफ़हा
अय्यामे बैज की वजहे तसमिया	514	चार रकअत नफ़ल का सवाब	530
हमेशा रोज़ा रखने वाला का अज़	514	नमाजे वित्र का वक्त	530
रोज़ा की फ़ज़ीलत बिला तख़सीस	516	हज़रत अबू हु़रैरा को हुज़ूर की	531
जन्नत का दरवाज़ा रैयान	516	तीन हिदायतें	
रोज़ा निस्फ़ सब्र है	517	नमाजे वित्र के तीन तरीक़े	531
रोज़ादार के मुंह से मुश्क की लपटें	517	रसूलुल्लाह ने पूरी रात में वित्र पढ़े हैं	531
औरादे शब के सिलसिले में अहादीस	518	वित्रों को फ़स्ख करना	532
सबसे अफ़ज़ल नमाज़	519	वित्र की दुआ	532
हज़रत दाऊद को हुक्म हुआ	519	नींद का ग़लबा	533
वहशते क़ब्र नमाज़ से दूर होती है	519	बैठे बैठे सो जाना बुरा है	534
आख़िरी रात में फ़र्ज़ नमाज़ों के	520	अबदाल के औसाफ़	534
बाद दुआ क़बूल होती है		बेइतर अमल	534
रात की एक ख़ास साअत	521	मुस्तहब क़याम	535
बुख़ारी और मुस्लिम की सराहत	521	शब बेदारों के दिलों पर अल्लाह	535
हज़रत आएशा की एक रिवायत	522	की तवज्ज़ोह	
अमल की मदावमत पसन्दी	522	अल्लाह के मक़बूल बंदे	535
हुज़ूर का इरशाद तिलावत के बारे में	522	तमाम शब का क़याम	536
हुज़ूर की नमाजे शब की मिक़दार	522	ग़लबे अगर क़यामे शब का	537
नस्से क़ुरआन	523	ख़्वास्तगार	
सहरी ख़ाना और क़यामे शब	523	क़यामे शब पर मदावमत	538
हज़रत इब्ने मसऊद के पाकीज़ा	524	तहज्जुद की दुआयें	538
अक़वाल		तहज्जुद में क़याम की हालत में दुआ	539
मगरिब और इशा के दर्मियान	525	तहज्जुद की तकबीर	539
नमाज़ की फ़ज़ीलत		तहज्जुद की नमाज़ का आगाज़	540
हज़रत इमाम अहमद का इरशाद	526	तीस सौ आयात का विर्द	540
सहाबा किबार में किसी ने यह	526	मामूलाते नबवी	540
नमाज़ नहीं पढ़ी		शबे जिन्दादारी के लिए मुआविन	540
मगरिब व इशा के दर्मियान नमाज़	527	चीजें	
पढ़ना और उसका सवाब		शब बेदारी के तरीक़े	541
हज़रत ख़िज़्र से मुलाकात और	527	आख़िर शब में सोना	542
दीदारे रसूल		वित्र की नमाज़ से पहले	542
शबे जुमा में दो रकअत नमाज़	530	आराम करना	
नमाजे इशा के बाद नवाफ़िल	530	क़यामे शब की क़ज़ा	543



उनवान	सफ़हा
रात के औराद के पांच औकात	543
दिन की इबादत के पांच औकात	544
दिन का पहला वजीफा	544
इमाम हसन का इरशाद	545
नमाजे इशराक	546
सलातुल अब्बाबीन	546
जन्नत के एक दरवाजे के नाम	547
जोहा है	
नमाजे चाश्त की रकअतें	547
हजरत अबू जर मामूल	548
चाश्त की नमाज के दो औकात हैं	548
नमाजे चाश्त की किरात	549
नमाजे चाश्त के सिलसिले में	549
रिवायाते ममनूआ	
जोहर से पहले और जोहर के बाद	550
का वक्त	
चौथा वजीफा जोहर और अस्त्र के	550
दर्मियान की नमाज है	
कितने घंटे सोना मुस्तहब है	551
औरादे मजकूरा और एक जामेअ	551
हदीस	
अस्त्र की नमाज के बाद से गुरुबे	552
आफ़ताब तक	
रहमते इलाही	552
<b>बाब 19</b>	
शबे मेराज में पचास नमाजें फ़र्ज हुईं	553
नमाज की फ़रजीयत	553
औकात सलात	553
अहादीस से नमाज की फ़रजीयत	554
उन औकात में सबसे पहले नमाज	554
पढ़ने वाले पैग़म्बर	
रसूल पर सबसे पहले फ़र्ज होने	555
वाली नमाजें	

उनवान	सफ़हा
नमाजे फ़जर का वक्त	555
नमाजे फ़जर किस वक्त अफ़जल है	555
जोहर के वक्त की इब्तिदा	556
निस्फुन्नहार व ज़वाल	556
सायए अस्ल की मजीद तशरीह	557
उल्माए सल्फ़ की तशरीह	558
बाज़ उलमा की तशरीह ज़वाल के	558
बारे में	
ज़वाल की शिनाख़्त का एक और	559
तरीका	
ज़न व यकीन के ग़लबे अमल	559
यकीनी तौर पर ज़वाल की शिनाख़्त	560
काबा की शिनाख़्त	561
अस्त्र के वक्त का आगाज़	561
मग़रिब के औकात	561
इशा का आगाज़	561
नमाजे पंजगाना और सुनने	562
मोअक्कदा	
मग़रिब की सुन्नतें जल्द पढ़ना	562
एक तमसील	563
नमाज के औसाफ़	564
नमाज दीन का सुतून है	564
क़यामत में बंदे से सबसे पहले	564
नमाज का सवाल होगा	
मस्जिद में जाने की फ़जीलत	565
मस्जिद में दाख़िल होना	566
हजरत इब्राहीम का एक वाकिआ	566
हजरत ईसा से एक खिताब	567
बाज़ बुजुर्गाने सल्फ़ की नमाजें	567
खुजूअ व खुशूअ करने वालों की	568
तारीफ़	
अव्वल वक्त में नमाज की अदाएगी	569
वक्त टाल कर नमाज पढ़ना	569



उनवान	सफहा	उनवान	सफहा
छः दुनियावी अजाब	570	मुक्तदी का गुनाह इमाम का गुनाह है	584
मरते वक्त का अजाब	570	इक्तेदा की नीयत	585
कब्र के तीन अजाब	570	जमाअत का शिगाफ़ पुर करना	585
कब्र से निकलने पर तीन अजाब	570	इमाम से सबक़त न करना	585
नमाज़ की अज़मत व शान	570	इमाम मुताबेअत की गर्ज व गायत	586
नमाज़ की अव्वलियत और अहमियत	571	के लिए मुकर्रर किया जाता है	
नमाज़ की फ़रज़ीयत के मुनकिर	571	इमाम से मुसाबक़त के बाइस नमाज़	588
का हुक्म		कबूल नहीं होगी	
बेनमाजी का शरई हुक्म	572	तर्क वाजिबात व आदाबे नमाज़ पर	588
तर्क सलात के सिलसिले में मजीद	572	तंबीह करना ज़रूरी है	
रिवायात		खताकार की इस्लाह	588
<b>बाब 20</b>		हजरत इब्ने मसऊद का कौल	588
पैंतालीस मकरूह बातें	573	मुसलमानों को नसीहत करना हर	589
नमाज़ में दूसरी चीज़ों से शग़फ़	574	पर जाज़िब है	
मना है		उल्मा की खामोशी का नतीजा	589
नमाज़ का सवाब	574	सबसे बड़ा चोर	589
नमाज़ के अव्वलीन आदाब	575	इआदे नमाज़ का हुक्म	590
नमाज़ की तस्कीब	575	मोअज़िम के आदाब	591
सना पढ़ते वक्त हुज़ूर कल्ब	576	नमाज़ में ख़ुशूअ व ख़ुशूअ	591
मकबूल व मरदूद की नमाज़ की	578	इंसान बड़ी भूल और अजीम	592
निशानियां		ग़फलत में है	
इमाम के औसाफ़	579	जन्नत का तलबगार और दोज़ख़	592
इमाम के लिए मजीद सतर्त	581	से फ़रारी	
इमामत के लिए झगड़ा करना मना है	581	दुनिया धोका देती है और ज़रर	593
हाकिमे वक्त की इजाज़त ज़रूरी है	582	पहुंचाती है	
इमाम का दिल और ज़बान से	582	अल्लाह के ख़ास बंदों की नमाज़	593
नीयत करना		आदाबे नमाज़	594
इमाम मेहराब में बिल्कुल अंदर न	583	मारफ़ते नमाज़	594
खड़ा हो		अबू हाज़िम की वज़ाहत	594
किरअत के अव्वल व बाद सुकूत	583	खाना खाने में फ़राएज़ व सुनन	596
रुकूअ की तस्बीह	584	और मुस्तहब्बात	
नमाज़ से पहले मुक्तदियों को	584	<b>बाब 21</b>	
तंबीह करना		नमाजे जुमा	597



उनवान	सफ़हा
जुमा की रकअतें	597
जुमा की नमाज़ का वक़्त	597
किरअतें मसनूना	598
चार रकअत मुस्तहब	598
दो रकअत नमाज़	598
ईदैन की नमाज़ फ़र्जे कफ़ाया है	598
ईद की नमाज़ का वक़्त	599
ईद की नमाज़ के शराएत	599
ईद की नमाज़ किस तरह पढ़ी जाए	599
ईद की नमाज़ के बाद नवाफ़िल	599
ईद की नमाज़ मस्जिद में	600
नमाज़े ईद की कज़ा	600
नमाज़े इस्तिस्का कब पढ़ी जाती है	600
नमाज़े इस्तिस्का का इमाम कौन हो	601
नमाज़े कसूफ़ सुन्नते मोअक्कदा है	603
नमाज़ का तरीका	603
हर बार की किरअत की मिकदार	603
नमाज़े कसूफ़ की दलील	603
नमाज़े ख़ौफ़ की शर्तें	604
इमाम अहमद हबल का इरशाद	605
घमसान की जंग में सलाते ख़ौफ़	606
कस्र का हुक्म	606
कस्र के मसाएल	607
ज़ोहर व अस्त्र मगरिब व इशा को	608
मिलाकर पढ़ना	
नीयत करना ज़रूरी है	608
बारिश की बिना पर नमाज़ों का	609
जमा करना	
नमाज़े जनाज़ा के लिए खड़े होने	609
का तरीका	
नमाज़े जनाज़ा	610
सहाबा कराम की वसीयत	612
जनीन की नमाज़े जनाज़ा	612

उनवान	सफ़हा
मौत पर यकीन	613
सबसे ज़्यादा दानिशमंद	613
हज़रत लुक़मान की नसीहत	613
फ़रमाने मुस्तफ़वी	613
मकरूज़ पर अज़ाब	614
अयादत मुस्तहब है	615
मुत्तकी और मुतवक्किल हज़रात	615
तलकीन	615
मुर्दा के हक़ में अच्छा कलमा कहो	616
मय्यत का गुस्ल	617
मर्द की तकफ़ीन	618
औरत का कफ़न	618
मोहरिम का कफ़न	619
मुर्दा ज़जीन का गुस्ल	619
मर्द को मर्द और औरत को औरत	619
गुस्ल दे	
कब्र का तूल व अर्ज और गहराई	619
मय्यत को कब्र में उतारना	620
तलकीने मय्यत	620
बाब 22	
हफ़्ता भर में दिन में पढ़ी जाने	622
वाली नमाज़ें	
फ़ज़र की नमाज़ के बार में	622
इरशादे नबवी	622
हज़रत उसमान का इरशाद	622
मुनाफ़िकों पर नमाज़े फ़ज़र और	622
नमाज़े इशा भारी थी	
ज़वाल के बाद नमाज़	623
हज व उमरा का सवाब	623
दो शंबा की नमाज़	623
सेह शंबा की नमाज़	624
चहार शंबा की नमाज़	624
पंज शंबा की नमाज़	624



उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
तमाम दिन इबादत करना	625	नमाज़ दाफ़ेअ अज़ाबे क़ब्र की	635
ज़ोहर व अस्त्र के माबैन दो रकअत	625	फज़ीलत	
पढ़ना		इस दुआ के फ़ज़ाएल व औसाफ़	636
हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत	626	नमाज़ हाजत किस तरह अदा की जाए	636
हज़रत अनस बिन मालिक की रिवायत	627	रसूल ने अली और फ़ातिमा को	637
नमाज़े हाजत	627	यह दुआ सिखाई	
शबे सह शंबा की नमाज़	628	जुल्म से महफूज़ होने की दूसरी दुआ	637
शबे चहार शंबा की नमाज़	628	इज़ालए रंज व अलम	638
शबे पंज शंबा की नमाज़	628	हज़रत आइशा से हज़रत सिद्दीक़	638
हज़रत जाबिर की रिवायत	628	का इरशाद	
लैलतुल क़द्र की इबादत का सवाब	628	हज़रत हसन के दोस्त का वाकिआ	639
शबे जुमा में दरूद की कसरत	629	हज़रत जिब्रील की सिखाई हुई दुआ	639
शबे शंबा की नमाज़	629	<b>बाब 23</b>	
नफ़लों की अदाएगी	629	फ़ज़र और अस्त्र के बाद पढ़ी जाने	640
सलातुत्तस्बीह सगीरा और कबीरा	629	वाली दुआ	
गुनाहों को माफ़ करा देती है		एक और दुआ	640
तीस सौ तस्बीहें	630	तीसरी दुआ	641
इस्तख़ारा की तालीम	630	दुआयें ख़त्मे कुरआन	641
सफ़र, तिजारत, हज व ज़ियारत	630	एक वसीयत	647
के लिए इस्तख़ारा		यह महीना गुनाहों का कफ़ारा है	647
घर से निकलते वक़्त की दुआ	632	<b>बाब 24</b>	
सवार होते वक़्त की दुआ	632	आदाबुल मुरीदीन	653
चोर डाकू और दरिन्दों से महफूज़	633	इरादत की तारीफ़	653
रहने की दुआ		मुरीद किसे कहते हैं	653
हिफ़ाज़त की दुआ	633	हुज़ूर का इरशाद	654
अबू सईद का वाकिआ	633	मोहब्बते इलाही का ख़्वास्तगार	654
यह दुआ ग़म व अलम रफ़ा करती है	633	मारफ़त	654
नमाज़े किफ़ायत से तमानियते क़ल्ब	634	मुराद और मुरीद का फ़र्क़	655
हासिल होती है		मुरीद और मुराद के सिलसिल में	656
नमाज़े दफ़ा ख़सूमत	634	हज़रत जुनैन की तशरीह	
नमाज़े ख़सूमत के औकात	635	हज़रत मूसा और आंहज़रत की	656
सलाते उतक़ा शब्वाल में पढ़ी	635	मिसाल	
जाती है		मुतसव्विफ़ कौन है	657



उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
तसव्वुफ़ के मानी	657	फ़ेक़ की शर्त	678
मुतसव्विफ़ और सूफी का फ़र्क	657	तर्क हिज़्जे नफ़्स	678
सालिक का मख़लूक में मौजूद होना	658	माल की कमी हसरते दिल का	678
<b>बाब 25</b>		मौजिब है	
मुब्तदी के वाजिबात	662	फ़कीर को मुस्तक़बिल की फ़िक्र नहीं	679
कुरआन और हदीसे की पाबन्दी	662	करना चाहिए	
मोजज़ा और करामत	663	मौत का इंतज़ार	679
मुरीद का मेल मिलाप किन लोगों से	663	फ़कीर कब सवाल करे	680
मना है		दोस्तों के साथ सुलूक	681
इज्ज व इंकसार	663	दूसरों की चीज़ों का इस्तेमाल	681
मुरीद और रज़ाए इलाही	664	इस्बे हैसियत बरताव	682
शैख की मुख़ालफ़त न करना	664	फ़कीर को किस तरह खाना चाहिए	683
हज़रत आदम की तरबीयत	665	अमनिया और फुक़रा के साथ	683
हज़रत आदम का जन्नत से ख़ुरुज	666	खाना खाना	
औलिया अल्लाह और अब्दाल	667	अपने साथियों के साथ सुलूक	684
शैख्स से मुनक़तअ होना	667	इजाज़त ज़रूरी है	684
मज़ीद आदाब	668	पेश कदमी और पहल करना	685
समाअ के वक़्त के आदाब	668	नाफ़का की अदाएगी अदबे दरवेश है	685
समाअ के बारे में हमारा नुक्ताए नज़र	668	महज़ान के खाने में बच्चों को भी	686
समाअ में मुरीद के आदाब	669	शरीक करे	
शैख की अहमियत	669	खुद दावत में शरीक होना मुनासिब	686
तादीबे मुरीद में शैख का तर्ज अमल	670	नहीं है	
मुरीद किस को बनाया जाए	671	उलूमे शरीअत की तालीम अहल	687
<b>बाब 26</b>		व अयाल को देना ज़रूरी है	
दोस्तों के साथ सूफी की रविश	673	मोमिन के सफ़र की गर्ज व गायत	687
गैरों के साथ बरताव	673	सफ़र की एक शर्त	688
उमरा के साथ सोहबत	673	औराद व वज़ाएफ़े सफ़र	688
फुक़रा की मुसाहेबत उमरा के लिए	674	आगाज़े सफ़र ही से दिल की	689
फ़कीर से हुस्ने सुलूक	675	निगरानी करना	
फ़ेक़ पर सब्र की खूबी	675	एक जगह पर क़याम	689
सुपुर्दगी का सिला	676	मक़बूलियत वजहे हिजाब है	689
रसूलुल्लाह की हदीस	677	सफ़र में रफ़ीकों के साथ रहने	689
फ़ेक़ से मोहब्बत	677	का तरीका	



उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
सफ़र में अमरदों के साथ न रहे	689	मुतवक्किल की तारीफ़	708
ख़िदमते शैख़	690	तवक्कुल की तीन अहम बातें	708
समाअ के आदाब	690	हज़रत जुनैद का इरशाद तवक्कुल	709
महफ़िले समाअ में शैख़ की मौजूदगी	690	के सिलसिले में	
वज्द में मदद लेना	691	हज़रत उमर का इरशाद	710
दरवेश का अताए ख़िरका	692	हुस्ने अख़लाक़	712
<b>बाब 27</b>		हुस्ने अख़लाक़ की अफ़ज़लियत	712
मुजाहिदा की अस्ल	694	हुज़ूर का इरशाद	712
आफ़त आने के असबाब	695	हज़रत इब्राहीम अदहम का इरशाद	713
ख़्वास और अवाम का मुजाहिदा	695	शुक्र की अस्ल	714
आफ़ाते नफ़्स क्या हैं	696	शुक्र की किस्में	715
अख़लाक़े हमीदा की हकीक़त	696	शुक्र की तारीफ़ में मुख़तलिफ़ अक़वाल	715
नफ़्स की हकीक़त	696	सह	717
आमाले नफ़्स को पसन्द करना	697	सब्र की किस्में	718
मुजाहिदा की अस्ल	697	हज़रत जुनैद का इरशाद	718
मुराक़बा की अहमियत	697	हज़रत असी का इरशाद	718
मुजाहिदा की तकमील	698	रज़ा की तारीफ़	719
मारफ़ते खुदाक़न्दी	698	रज़ा का अदना दर्जा	720
शैतान से जिहाद	699	हज़रत फुज़ूल बिन अयाज़ का	722
शैतान अल्लाह का दुश्मन है	700	इरशाद	
नफ़से अम्मारा की पहचान	700	रज़ा का अदना दर्जा	723
नफ़्स की शिनाख़्त अल्लाह के आला	701	हदीसे कुदसी	723
ने बता दी है		हुज़ूर का इरशाद	724
अल्लाह के लिए अमल करने की	702	तमअ शिर्क़ है	724
शिनाख़्त		हवारियों से हज़रत ईसा का इरशाद	724
इबादत में खुलूस होना चाहिए	702	मिदक़ की अस्ल	725
अहले मुजाहिदा के दस ख़साएल	703	हुज़ूरे अकरम का इरशाद	725
तवाज़ोअ की तारीफ़	706	हज़रत जुनैद का इरशाद	725
तवक्कुल की अस्ल	707	हज़रत अबू सईद करशी का इरशाद	725
हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद	707	हज़रत जुन्नून मिस्री की सराहत	726
का इरशाद		हारिस मोहासबी का इरशाद	726
तवक्कुल की तारीफ़	707		
तवक्कुल के दर्जे	707		



# दो बातें

## एक बंदए हकीर की तरफ़ से

जमानए कदीम से अवामुन्नास की इसलाहे हाल और हिदायते उखरवी व दुनयवी के लिए हक व सदाकत के जाम की फ़राहमी की जाती रही है और यह इल्तेजाम खालिके कायनात जल्ला जलालहु ने ब अहसन अपनी मखलूक के लिए फ़रमाया है। अम्बिया व मुर्सलीन के बेहतरीन दौर के बाद उसने यह ख़िदमत अपने मुकर्रबीन रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन के सुपुर्द की और यह सिलसिला अला हालेही जारी व सारी है।

हक व सदाकत की पैगाम रसानी के लिए उलमाए रब्बानीन ने मुख्तलिफ़ तरीके इस्तेमाल किये उन में किरदार व अमल को अव्वालियत हासिल रही, जो कुछ किया हक की खातिर किया जिसकी खूशबू फैली और इलाके के इलाके को मुअत्तर व फैज़याब कर गई। दूसरा तरीका तकरीर व तहरीर का है, अपने मुरीदीन व मुतवस्सलीन व मुतअकदीन के अहवाल की दुरुस्ती के लिए उनके मिजाज और उनके अहवाल के मुताबिक़ वाज़ व तहरीर के अंदाज़ को नवाज़ा, बाद के अदवार में उनकी इफ़ादियत व अहमियत के पेशे नज़र वाज़ को मलफूज़ात की शक़ल में उनके किसी खास मुरीद या अकीदतमंद ने मुरत्तब कर दिया जो आज किताबी शक़ल में हमारे सामने मौजूद है। इसी तरह तहरीरी हिदायात भी हैं जो खास अंदाज़ से मुरीदों के लिए लिखी गई बाद को आम हो गई।

गुनियतुत्तालिब तरीकुल हक मौसूम बेह गुनियतुत्तालिबीन हज़रत सय्यदना मोहीयुद्दीन अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हर दौर में मकबूल तरीन किताब है जो तालिबे राह को अपने अहवाले जाहिर व बातिन पर नज़र रखने के लिए बेनज़ीर और बेमिस्ल है और हकीकत यह है कि इस किताब के एक एक बाब को पढ़ने के बाद इन पर गौर किया जाए और अपने अहवाल को उनके मुताबिक़ ढाल लिया जाए तो मौसै पाक का फैज़ बिला शुब्हा जारी हो जायेगा और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसको अपने मुकर्रबीन में शामिल फ़रमा लेगा इन्शा अल्लाह तआला।

और सही यही है कि हम अपने हाल को ग़ैर मुन्ज़बित तरीके पर छोड़े रहते हैं, दीन और मज़हब के नाम पर जो समझ में आया कभी यह कर लिया कभी वह कर लिया और खुद को जन्नत का हक़दार समझ कर इत्मीनान से बैठ गये, मैं आज की मौजूदा नस्ल से यही अर्ज़ करूंगा कि अपनी मसरूफ़ जिन्दगी में से एक दो घंटे रोज़ाना इसे एक ज़रूरी काम समझ कर निकालें और बुजुर्गों की तसनीफ़ करदा किताबों को मुताला में रखें इन्शा अल्लाह तआला दीन और दुनिया दोनों में मकबूल होंगे। गुनियतुत्तालिबीन पर ज़्यादा कुछ न कहते हुए बस इतना अर्ज़ करूंगा कि एक बार अल्लाह के वास्ते पढ़ जाइये इन्शा अल्लाह वह नूर अता कर दिया जाएगा जिससे आलम के आलम रौशन हो जायेंगे।

साजिद हाशमी अय्यूबी अल फिरदौसी

बतारीख़ 4 जमादिउल अव्वल 1431 हि०

बमुताबिक़ 19 अप्रील 2010 बरोज़ पीर



## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहु व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

## हर्फे आगाज

### अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक

बारगाहे अहदियत में सना व नयायश, दरबारे रिसालत में दरुद व सलाम और हजरत रिसालत पनाही सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आल व असहाब की बारगाह में गुलहाए मनाकिब व अकीदत निष्ठावर करने के बाद मअरुज हूँ कि हजरत सय्यदना गौसे आजम रजियल्लाहो अन्हो की सवानेह मुबारका में आप की तसानीफ के तआरुफ व तब्सरा के सिलसिला में अर्ज किया गया था कि आप की मशहूर जमाना तसनीफ गुनियतुत्तालिबीन पर मुतरजिम दीबाचा किताब में कुछ अर्ज करेगा कि सवानेह पाक के चन्द सफहात में इसकी गुंजाईश नहीं थी।

तमाम मोअर्रेखीन और हजरत गौसे आजम रजियल्लाहो अन्हो के सवानेह निगार हजरात का इस अम्र पर इत्तेफाक है कि आप की तसानीफ में गुनियतुत्तालिबीन, अलफतहुर्रब्बानी और फुतूहुल गैब बहुत मशहूर हैं और इन तीनों कुतुब में आखिरी दो किताबें आप की तकारीर के ईमान अफरोज मजमूए हैं सिर्फ गुनियतुत्तालिबीन एक मुस्तकिल तस्नीफ की हैसियत रखती है।

मशहूर मुस्तशरिक डी एस मार्गोलिथ ने अपने मकाला मुन्दर्जा इन्साइक्लो पिडिया ऑफ इस्लाम इशाअत 1913ई. में आप की तसानीफ की तअदाद इस तरतीब से नौ (9) बताई है (1)अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक (2)अलफतहुर्रब्बानी (3) फुतूहुल गैब (4)हिज्ब बशाइरुल खैरात (5)जलाइलुल खातिर (6) अलमवाहिबुर्रहमानिया वल फुतूहुर्रब्बानिया की मरातिबुल अखलाकुस्सुन्निया वल मकामातुल इरफानिया (7) यवाकीतुल हकम (8) अलफियूजातुर्रब्बानिया (9) वह खुत्बे जो बहजतुल असरार और दूसरी कुतब सवानेह में मजकूर हैं।

एक दूसरा मुस्तशरिक प्रोफेसर डब्लू बराऊ ने (बर्न यूनिवर्सिटी बर्लिन) इन्साइक्लो पिडिया ऑफ इस्लाम की तबअ् जदीद 1960 ई. में अपने मजमून में हजरत की तसानीफ के सिलसिला में रकम तराज है कि:

यह दौर था जिस में (हजरत) अब्दुल कादिर जीलानी रजियल्लाहो अन्हो ने अपने मिशन का आगाज किया वह अपनी तस्नीफ अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक मतबूआ काहिरा 1304हि. में एक आलिम नजर आते हैं। किताब कि इब्तिदा में वह एक सुन्नी मुसलमान के अखलाकी और समाजी फराईज बयान करते हैं वह हंबली नुक्तए नजर से एक ऐसा दस्तूरुल अमल मुस्तब करते हैं जिसका जानना हर मुसलमान के लिए जरूरी है इसमें 73 फिरकों का तजकरा भी किया है और किताब को तरीके तसव्वुफ के बयान पर खत्म किया है।

इस मुस्तशरिक ने आप की मजीद दो किताबों का और जिक्र किया है यानी अलफतहुर्रब्बानी और फुतूहुल गैब। इन के अलावा दूसरी किताबों के जिक्र से गुरेज किया है। मुस्तशरिकीन के अलावा दीगर अरबी और फारसी ज़बान के सवानेह निगार हजरात और मोअर्रेखीन नीज तजकरा



निगारों ने आप की उन अव्वलुज्जिक्र तीन किताबों पर इत्तेफाक किया है जिस के बाईस यह तीनों कुतुब बार बार छपी हैं और अकीदत के हाथों ने एहतेराम की आंखों से इनको लगाया है।

## असल नाम क्या है

हजरत गौसे आजम रजियल्लाहो अन्हो की इस मबसूत किताब के सिलसिला में तमाम तज्करा नविसों का इत्तेफाक है जैसा कि मैं इस से कब्ल तहरीर कर चुका हूं लेकिन किताब के नाम में कद्रे इख्तेलाफ है। अरबी ज़बान में जिस कदर नुस्खे दस्तियाब और मौजूद हैं। तमाम नुस्खों में यह किताब अलगुन्यितुत्तालीब तरीकुल हक के नाम से मौसूम है जिस तरह हजरत मुसन्निफ़ ने खुद दीबाचा के इख्तेताम में फरमाया है। इस सराहत के बाद मजीद किसी बहस की ज़रूरत इस सिलसिले में बाकी नहीं रहती कि किताब का असले नाम क्या है। अब सवाल यह पैदा होता है कि गुन्यितुत्तालेबीन नाम क्यों मशहूर हुआ इस की वजह बजुज़ इसके और कुछ नहीं कि चूंकि यह नाम बहुत तवील था और पूरा नाम बार बार लेना दुश्वास मालूम होता था इस लिए अलगुन्यितुत्तालीब को गुन्यितुत्तालेबीन से बदल दिया गया। गोया असले नाम को मुख़्तसर कर दिया गया। एक दूसरी वजह यह भी हो सकती है कि हिन्दुस्तान में जब इस का पहला तर्जमा मौलाना अब्दुल हकीम सयालकोटी ने फ़ारसी ज़बान में किया तो उन्होंने उन्होंने तर्जमा को असल नाम से मुताबिक़े कुल्ली के तौर पर गुन्यितुत्तालेबीन से मौसूम कर दिया।

शाहज़ादा दारा शिकोह हजरत मौलाना अब्दुल हकीम सयालकोटी मरहूम के मुआसरीन में से हैं उन्होंने भी अपनी किताब सफ़ीनतुल औलिया में इस किताब को गुन्यितुत्तालेबीन ही से मौसूम किया है और मेरा ख्याल है कि उनके पेशे नज़र असले किताब का कोई मख़तूता नहीं था बल्कि अग़लब है कि उन्होंने हजरत मौलाना अब्दुल हकीम सयालकोटी का फ़ारसी तर्जमा ही देखा हो और हस्स सराहत उसका नाम "गुन्यितुत्तालेबीन" ही तहरीर कर दिया हो।

उर्दू तराजीम में सबसे पहला तर्जमा मतबअ नवल किशोर लिखनऊ व कानपुर से मत्न के साथ शाय हुआ जिसके मुतर्जिम मौलवी महबूबुद्दीन इब्न मुन्शी जमाल अहमद हैं। यह तर्जमा उन्नीसवीं सदी के रोबअ आखिर में शाय हुआ और इसका नाम भी "गुन्यितुत्तालेबीन" ही है। बहरहाल "अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक" और "गुन्यितुत्तालेबीन एक ही चीज़ है। ज़्यादा से ज़्यादा यह कहा जा सकता है कि यह किताब अपने तराजिम की कसरत के बाइस अपने असले नाम के बजाए तराजिम के नाम से मशहूर हो गई। अब इस शोहरते आम की वजह से मतर्जिम मजबूर है कि रफ़अ इश्तेबाह के लिए वह भी इसी नाम की पैरवी करे। चुनांचे मैंने तर्जमा की सरलोह पर दोनों नामों को इख्तेयार किया है। वावैन में असल नाम तहरीर किया है और पेशानी पर मशहूर नाम।

## अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक का मौजू

जैसा कि नाम से ज़ाहिर है अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक का मौजू का मौजूअ शरीअत है जैसा कि हुज़ूर वाला ने दीबाचा में सराहत फरमाई है कि

गोया फ़राइज़ इस्लाम व सुनन नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मारफ़ते इलाही, आदाबे इस्लामी, अवामिर व नवाही की तामील व इताअत इस किताब का मौजूअ है और इन मबाहिस्



और मौजूआत को नसूसे कुरानीया और अहादीसे नब्बी से इस्तिदलाल के साथ पेश फरमाया है।

अलावा अजीं मुस्लमानों के मुख्तलिफ़ फिरकों के अकाइद की मुकम्मल तशरीह और ग़लत अकाएद का रद फरमाया है। बाज़ आयात की तफ़सीर भी फरमाई है। आमाल व अज़कार और अशग़ाल का भी बयान फरमाया है। किताब के आखिर में एक मबसूत बाब आदाबुल मुरीदैन पर मुश्तमिल है जिसमें तरीक़त की तालीम बड़े दिल पज़ीर अन्दाज़ में दी गई है। इस तरह अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ शरीअत और तरीक़त की तालीमात का लबाब और जौहर है और एक दिल नशीन और दिन पज़ीर इमतेज़ाज, लेकिन इसमें भी आप ने अपनी मजालिस और खुतबात की तरह शरीअत को मुक़ददम रखा है और अहकामे इलाही और इत्तेबाए नब्बी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बड़े ही अजीब अस्तूब और दिलों को ख़शीयते इलाही से हैबत ज़दा कर देने वाले अन्दाज़ में पेश फरमाया है।

अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ की फ़ेहरिस्ते मज़ामीन आप के पेशे नज़र है इसमें आप को अन्दाज़ा हो जाएगा कि हज़रत सय्यदना ग़ौसे आजम ने अहयाए दीन मतीन के लिए किस क़दर मसाई-ए-जमीला फरमाई है।

शायद बाज़ कोहताबीं यह ख़याल करें कि हज़रत ग़ौसुस्सक्लैन रज़ियल्लाहो अन्हो ने जिन मौजूआत पर क़लम उठाया है वह ऐसे मौजूआत हैं जिन पर हज़रत के असलाफ़े कराम और मआसिरीने एज़ाम ने भी क़लम उठाया है और उन मौजूआत पर कुतुबे अरबीया का एक वाफ़िर ज़ख़ीरा मौजूद हैं लेकिन यह शरफ़ सिर्फ़ हज़रत वाला के साथ मख़सूस है कि आप के कलाम का सोज़ और और इरशाद का गुदा और अल्फ़ाज़ का जोश दिलों को तड़पा देता है। आप की सवानेह मुबारका में मैंने इस अम्र की सहाहत की है कि आप के जोरे बयान और सोज़ो कलाम की ही यह असर था कि फ़िस्का व फुज़ूर से भरपूर और एक बिगड़े हुए मुआशरे में आप की दावते हक़ ने लाखों बंदग़ाने खुदा की काया फ़लट दी और हज़ारों लाखों गुम कर्दा मन्ज़िल, मन्ज़िल आशना हो गए।

### अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ का अन्दाज़े बयान

“अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़” का असलूबे बयान कैसा है और अपने हम अस्र मुसन्निफीन से हज़रत वाला का अन्दाज़े बयान किस क़दर जुदागाना है, इस मौजू पर क़लम उठाना अगरचे हद्दे अदब से तजावुज़ करना है, मैं क्या मेरी बिसाते इल्मी की हकीक़त क्या कि मैं हज़रत के असलूबे बयान पर क़लम उठाऊं लेकिन मैंने चूँकि “अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़” के इल्मी व अदबी पहलू को भी अपना मौजूअ करार दिया है इसलिए मजबूरन यह ज़सारत कर रहा हूँ और हज़ूर ग़ौसियत से इमदाद का ख़्वाहां हूँ कि मेरे क़लम क़ज बयान को यह सलीका अता हो कि इस सिलसिला में कुछ अर्ज़ कर सकूँ लेकिन इस सिलसिला में सब से बड़ी दुश्वारी यह है कि हज़रत वाला के अस्तूबे बयान के सिलसिला में कुछ अर्ज़ करने के लिए यह ज़रूरी है कि मैं आप के फ़सीह व बलीग़ इन्शा से इक्तिबासात बतौर इस्तिदलाल पेश करूँ। लेकिन सोचता हूँ कि उर्दू तर्जमा के साथ हज़रत वाला की इन्शा परदाज़ी की फ़साहत व बलाग़त, सलासत व रवानी, शिकोह अल्फ़ाज़ और हुस्ने बयान के पहलू अगर उजागर करता हूँ तो कारईन तर्जमा को इससे दिलचस्पी पैदा नहीं हो सकेगी।



बहैसियत मजमूई बकौल हज़रत आमिर बिन वहब यह कहना भी कि

उनकी जाते गरामी एक ऐसी जिन्दा किताब थी जिस में तफ़सीर व हदीस व फ़िक़ह व अदब व ग़ैरह, कोई ऐसा इल्म न था जिस में यदेतूला हासिल न हो, बिलखुसूस तफ़सीरे कुरआन के सिलसिला में जो महारत हासिल थी वह अपनी नज़ीर आप है ब—ई हमा कमाले अदब के एक गोशा को भी बेनकाब नहीं करता।

अलगुनियतुत्तालिब तरीकुलहक़ का तर्जमा आप के सामने है और तर्जमा में असल इन्शा और ज़बान के महासिन व खुसूसियात को किसी तरह भी मुन्तकिल नहीं किया जा सकता। अलबत्ता यह आप ज़रूर देखेंगे कि हज़रत वाला जिस मौजूअ पर कलम उठाते हैं वह एक समुन्द्र है जो ठाठें मार रहा है और एक सर मस्ती और जोश है जो एक एक लफ़्ज़ से पैदा हो रहा है। हज़रत वाला जिस मौजूअ पर कलम उठाते हैं उसकी तमाम जुज़ियात को पेश फ़रमाते हैं लेकिन अन्दाज़े बयान में वह सरमदी कैफ़ और दिल नशीनी है कि रुह में एक मस्ती की कैफ़ियत पैदा होती है, अलफ़ाज़ का जोश दिलों को गरमाता है और तबीयत में गुरेज़ की कैफ़ीयत पैदा नहीं होती। दिल चाहता है कि इसी तरह पुरकैफ़ अन्दाज़ में खोया रहे और हुस्ने बयान ने जो महवीयत बख़्शी है उसका इख़तेताम न हो।

हज़रत वाला जहां अज़ाबे अलीम से डराते हैं वहां अलफ़ाज़ की हैबत और शिकोह से दिल लरज़ जाते हैं और बद आमालियों पर नदामत का पसीना बहने लगता है। और जहां इनामाते खुदावन्दी का ज़िक्र करते हैं वहां रुह में बालीदगी और क़ल्ब में एक कैफ़ व सुरूर पैदा होता है। इनामे इलाही पर दिल के दरीचे खुल जाते हैं और अल्ताफ़े इलाही पर जर्बी सजदा रेज़ हो जाती है और यह सब कुछ नतीजा है हज़रत के उस खुलूस का जो इस्लाहे मुआशरे के सिलसिला में आपके पुरनूर क़ल्ब में मौजूद था। इस सोजे बातनी का जो इश्के इलाही की तपिश ने आप को बख़्शा था।

### आम अन्दाज़े बयान

हुज़ूर ग़ौसे आजम का यह मख़सूस अन्दाज़े बयान है कि आप जो कुछ फ़रमाते हैं उसके लिए इस्तिआरे, तश्बीह या मज़ाज़ का सहारा नहीं ढूँढते कि इस सूरत में इबारत बे असर हो जाती है और सोज़ व गुदाज़ की कैफ़ीयत उन परदों के पीच व ख़म में गुम हो जाती है। सोज़ व गुदाज़ और बयान की सदाक़त और खुलूस का तकाज़ा होता है कि जो कुछ कहा जाए वह सीधे साधे तरीक़े से कहा जाए चुनांचे हज़रत वाला जो कुछ फ़रमाते हैं वह छोटे छोटे जुमलों में मज़बूत और मसज्जअ बंदिशों के साथ वाज़ेह अलफ़ाज़ में फ़रमाते हैं और फिर यह कि हज़रत जहां तक मुमकिन होता है अपने कौल पर नस्से कुरआनी या हदीसे नब्बी से इस्तिदलाल फ़रमाते हैं जिस से जुम्ले कमाले बलन्दी पर पहुंच जाते हैं। आप की इन्शा लतीफ़ में इसकी बेहद व बेशुमार मिसालें भी मौजूद हैं जहां नस्से कुरआनी और हदीसे नब्बी से इस्तिदलाल नहीं फ़रमाते वहां अकाबेरीने सूफीया के अक्वाल से ताईद लाते हैं। उन मक़ामात पर यह महसूस होता है कि कुन्दन पर कोई नगीने जड़ रहा है। इस तरह हम कह सकते हैं कि आप की इन्शा आली, मसुज्जअ व मुक़फ़ा होने के साथ साथ मुरस्सअ भी है। अलग़रज़ इन्शा फ़सीह व बलीग़ की तमाम खूबीयां आप की इन्शा आली में मौजूद हैं।



मुझे अपसोस के साथ यह बात तहरीर करनी पड़ रही है कि "अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक" के किसी मुतर्जिम ने हज़रत वाला की खुसूसीयात इन्शा परदाजी पर दो हर्फ भी लिखने की ज़हमत गवारा नहीं फ़रमाई। राकिमुल हुरुफ़ ने इस सिलसिला में सबसे पहले यह ज़सारत की है। अल्लाह तआला से लगज़िशे कलम के लिए तौबा का ख़्वाहां और हूज़ूर गौसीयत में अपनी गुस्ताखी पर उफ़व व दरगुज़र का तालिब हूं।

### अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक के ख़िलाफ़ एक शुबहा का इज़ाला

मैंने जब से अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक का तर्जमा शुरू किया था, बाज़ असहाब की ज़बानी यह बात बार बार सुनी कि हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहो अन्हो ने जहां गुमराह फिरकों को बयान फ़रमाया है उन में फिरका हनफीया का भी ज़िक्र किया है इस बोहतान तराशी ने हूज़ूरे गौसीयत से जो अकीदत हनफीयों के दिलों में थी इसमें तो कुछ कमी पैदा नहीं हुई लेकिन एक शुबा अज़ीम दिलों में ज़रूर पैदा हो गया और बहुत से लोग तज़बजुब का शिकार हो गए अब इस बोहतान तराजी की असल सुनिये।

हज़रत सय्यदना गौसे आजम ने जिन फ़िर्का ज़ाल्ला की सराहत फ़रमाई है उसमें एक उन्वान "हनफीया मरजीया" का कायम फ़रमाया है और इरशाद किया कि हज़रत नोमान बिन साबित के बाज़ पैरो "हनफीया मरजीया" कहलाते हैं कि वह अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना ही काफी समझते हैं और इसी को असले ईमान करार देते हैं जैसा कि बरहूती ने अपनी किताब अश्शजरा में इस का ज़िक्र किया है। मैंने जहां इस इबारत का तर्जमा किया है वहां हाशिया में इसकी शराहत कर दी है। खुद हज़रत मुसन्निफ़ ने अपनी किताब में दो तीन मकामात पर हज़रत इमामे आजम रज़ियल्लाहो अन्हो का ज़िक्र फ़रमाया है और वहां अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित रज़ियल्लाहो अन्हो के अल्फ़ाज़ से आपका ज़िक्र किया है। इस से साबित है कि आप ने फ़िर्का ज़ाल्ला में सिर्फ़ उन चन्द असहाब का ज़िक्र किया है जो खुद को हनफीया मरजीया कहते हैं और ईमान के लिए अमल को ज़रूरी नहीं समझते। इस बोहतान तराजी की असल यह है कि इस नुक्ता को हवा देने वाले और बढ़ा चढ़ा कर पेश करने वाले वही गुमराह फ़िर्के हैं जिन की तादाद अब भी ख़ासी मौजूद है और जिन अकाइद पर हज़रत मुसन्निफ़ ने तन्कीस फ़रमाई है।

### अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक का उर्दू में तर्जमा

इस सिलसिला में मज़ीद कुछ कहना सताइशे खुद बज़बाने खुद का मिसदाक़ होगा इस लिए इस बाब में सिर्फ़ इतना ही कहना काफी है कि तर्जमा आप के सामने मौजूद है मुलाहिज़ा फ़रमायें और यह देखें कि ज़बान की सलासत व बयान की रवानी कहें भी क़ारी के ज़हन पर बार नहीं होगी। मैंने यह भरपूर कोशिश की है कि ज़बान का लुत्फ़ कायम रखते हुए हज़रत मुसन्निफ़ के अल्फ़ाज़ के मानी से गुरेज़ न करूं मफ़हूम के बदलने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। और एक अहम खुसूसियत यह कि मैंने इसको असल अरबी नुस्खा (मतबूआ मिस्र) से तर्जमा किया किसी फ़ारसी या उर्दू के तर्जमे से इस्तिफ़ादा नहीं किया। हां यह ज़रूर है कि इस्तिख़राजे मसाइल व मबाहिस के लिए "फ़स्ल" के लफ़्ज़ को तर्क करके अहम मौजूआत की तबवीब की है और ज़ेली मबाहिस के लिए बग़ली सुरख़ीयां कायम करदी हैं ताकि हुसने मानवी के साथ साथ हुसने सौरी भी पैदा हो जाए। मत्न में जहां जहां नुसूसे कुरआनी और अहादीसे नब्वी या अज़कार



व अदय्या मासूरा को पेश किया गया है मैंने उनको एक कालम में पेश करके मुकाबिल में उनक तर्जमा दे दिया है ताकि कारी की निगाहें असल मत्न से महरूम न रहें। उम्मीद कि यह तर्जम कबूलीयत का शरफ हासिल करेगा और अरबाबे इल्म व अदब इसको ब नज़रे इस्तेहसान मुलाहिजा फरमायेंगे।

तर्जमा की तक्मिला के सिलसिला में अपने मुहिब व मुकर्रम हज़रत मौलाना मौलवी अबू बकर साहब मौलवी फ़ाज़िल (पंजाब) ख़तीब जामा मस्जिद पी आई ए एयरपोर्ट कराची का है बेहद शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने तर्जमा की मुशकिलात के हल में मेरी रहनुमाई फ़रमाई और दुश्वारीयों को दूर फ़रमाया। इसी तरह अपने मुख़लिस मौलाना मौलवी गुलाम मुहीयुद्दीन साहिब नईमी मुरादाबादी का भी ममनून हूँ कि जनाब मौसूफ़ ने बड़ी ज़र्फ़ निगही से तसहीह पर तब्बजोह फ़रमाई और नुसूसे कुरआनी और अहादीसे नब्वी व अदय्या मासूरा के असल मत्न को किताबत की अग़लात से पाक फ़रमाया। अल्लाह तआला उनको जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए।

मैंने अपने अजीज़ दोस्त जिनसे मेरे बिरादराना रवाबित काइम हैं और जो मुझ पर बे ग़ायत शफ़क़त फ़रमाते हैं यानी मुहब्बी मुहम्मद मुईनुद्दीन अहमद चिश्ती कादरी एडमनिस्टर ऐटीव आफ़िसर डू मेडिकल कालेज कराची का भी सिपास गुज़ार हूँ उन्होंने इस तर्जमा की तक्मील में मेरी हिम्मत अफ़जाई फ़रमाई। और हज़रत ग़ौसुस्सक्लैन् की सवानेह मुबारका का एक इब्तिदाई खाका मुझें मुरत्तब करके मरहमत फ़रमाया। अल्लाह तआला मेरे इन तमाम दोस्तों को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए और हम सब की मसाई को मशकूर बनायें।

नाचीज़

शम्स सिद्दीकी बरैलवी



## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

नबी अखिरुज्जमां सय्यदे दौरां फखरे आदम व आदमियां अहमदे मुजतबा मुहम्मदे मुस्तफा मुहम्मद सलल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुनिया में तशरीफ लाए। कुफ़र व जलालत को जमाले जहां आरा की रौशनी से मुनव्वर व मुस्तनीर फरमा कर फजाए आलम को नूरे ईमान से रौशन फरमाया हुजूर की जाते गिरामी को नुबूव्वत के साथ साथ बारगाहे रूबूबियत से खत्मुलमुर्सलीन व खातिमुन्नबीईन के तुगराए बे मिसाली अता हुए और कलामे हक ने अलयौ म अकमल्लो लकुम दीनुकुम व अतमम तो अलैकुम नेअ मती व रजैतो लकुम इस्ला म दीना फरमा कर दीने इस्लाम के तक्मिला पर मुहरे तस्दीक सब्ब फरमा दी और जाहिर फरमा दिया कि अब किसी शारेअ की जरूरत बाकी नहीं रही।

चूंकि सआदत व शकावत, नूर व जुल्मत, ताअत व इत्यान इन्सानी फितरत में बतौरे जबिल्लत वदीअत की गई हैं पस जब दुनियावी राहतें, और फानी आसाइशें, नफूसे इन्सानी की अनांगीर होकर उसको रास्ती से मोड़कर गलत रास्तों पर डाल देती हैं और यह जबिल्लत नफूसे बशरी में हैजान पैदा करके ईमान की नूरानी और पाकीजा फजाओं में सरकशी और फितनों में तैरगी से उनके तकददुर और जुल्मत के बाइस बन कर जब हर तरफ मुहीत हो गई तो अहयाए दीने मतीन के लिए सुलहा व उफा व अक्ताब व अब्दाल को पैदा किया गया ताकि वह अपने पाकीजा अन्फास व आमाल, मुजाहिदात और मुजक्का अशगाल से उन खराबियों और फितना सामानियों का इज़ाला करें और जब शख्सी जबरुत और अफरादी सत्तवत अवाम क्या बल्कि खवास से भी आलाए कल्मतुल हक की कूव्वतों को सल्ब करे तो यह नुफूस कुदसिया, तमाशा भी कुनद खलके व मन बरदारमी रक्सम, का मिस्दाक बेत कर उस शख्सी जबरुत व अनानियत का तिलिस्म तोड़ दें और अनानियत व इस्तिब्दाद के मिनारों को जिक्र के गुर्ज से पारा पारा कर दें।

मुसलमानों की तारीख जिस को आम तौर पर तारीखे इस्लाम से ताबीर किया जाता है एक ऐसा सदाक़त नामा है जिस को कोई दूसरी कौम पेश नहीं कर सकी। मुसलमानों की यह तारीख हकाइक निगारी का एक ऐसा मरक्का है कि अक्वामे आलम में कोई दूसरी कौम ऐसी दरायत और हकीकत का इज़हार नहीं कर सकी। यह तारीख एक ऐसा मरक्का है जिस में निगाहों को खीरह कर देने वाले नकूश भी हैं और मस्ख़ शुदा खुतूत भी! मुसलमानों के अदल व इनसाफ़ के, एहसान व राफ़त और बज़िल्ल व करम के हैरत अंगेज़ वाक़आत भी हैं। एक तरफ़ तो हज़रत उमर की अदल गुस्तरी, रईयत परवरी के बेमिसाल कारनामे हैं, हज़रत उस्मान गनी और हज़रत अली मुर्तज़ा की सखावत व शुजाअत की अदीमुन नज़ीर शहादतें हैं तो दूसरी तरफ़ ख़ारजियों की फ़ितना सामानियों, मुसलमानों की बे राह रवी और दुनिया परस्ती, उनकी चीरह दस्ती और जुल्म व गारतगरी के अलम नाक वाक़आत भी हैं। वह काबा जिस के सामने मुसलमानों की जर्बी हाए नयाज़ झुकती हैं और जिस का तवाफ़ हर दिले मुस्लिम की आरजू! इसी काबा की दीवारों को मुसलमानों ने अपनी मुनजनीक के पत्थरों से टुकड़े टुकड़े कर डाला! हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर



की गिरफ्तारी के लिए हरमे काबा पर इस तरह यूरिश की गई कि गिलाफे काबा भी जल उठा। मदीनतुरसूल जिस की सर बलन्दी और अजमत का यह आलम कि आशिकाने रसूल उस जमीने मुकददस को सर के बल तय करते हैं उसको तीन शबाना रोज लौटने वाले शकीयुल कल्ब शामी मुसलमान थे। इस्लामी तारीख ने अपनी इन हौलनाकियों और तबाह कारियों को छुपाया नहीं बल्कि उन जहां फरसा वाक़ेआत के एक एक गोशे से नकाब उठाया है और बताया है कि मुसलमान पस्ती और कज रवी में किन हदों को छू लेता है।

बनू उमय्या और बनू अब्बास ने अपनी सल्तनत के इस्तेहकाक व इस्तेहकाम के लिए अरब व अजम में जिस तरह खून की नदियां बहाई वह एक तारीखी हकीकत है। जंगे कादसिया और जंगे यरमूक ने गैर मुस्लिमों के हौसलों को बिल्कुल्लिया शिकस्त दे दी थी और फिर वह कभी ईरान व रोम में इज्तेमाई तौर पर न उभर सके अलबत्ता मामूली झड़पें मुसलमानों, मजूसियों और रूमियों के माबैन अर्सा दराज़ तक जारी रहीं। यह तमाम जंगें मुसलमानों और काफ़िरों के दर्मियान हुईं लेकिन बनू उमय्या और खुसूसन बनू अब्बास का दौर सल्तनत जो चार सौ साल से ज़्यादा की मुदत पर फैला हुआ है मुसलमानों के माबैन मुख़ासमत जंग व जदल, सियासी कशमकश और हुसूले इक्तिदार के लिए खूरेजी और दुश्मन कुशी का ऐसा दौर है कि इराक व अजम में दावते अब्बासिया के सिलसिला में लाखों मुसलमानों की गर्दन मुसलमानों ने काट कर फेंक दीं। अब्बासी सल्तनत के कयाम के बाद इस खूरेजी के सैलाब में कुछ ठहराव पैदा हुआ लेकिन महदी के बाद यह सैल फिर तुंद रौ हो गया। अमीन व मामून की जंग ने पिछली तमाम कसर पूरी कर दी इस अर्सा में कई लाख मुसलमान, मुसलमानों के हाथों बे दरेग क़त्ल किये गये। मामून फतह व कामरानी के बाद बड़े करी व फर से तख़्ते सल्तनत पर मुतमक्किन हुआ लेकिन अफ़सोस कि उसका इल्मी व अदबी दौर भी खूं आशामी से महफूज़ न रह सका। आले बरबक पर जो कुछ तबाही नाज़िल हुई वह मामून के हाथों नाज़िल हुई, इराक की शोरिश, फ़िल्ना मक्का, फ़िल्ना यमन, बगावत जुत, बाबक खरम्मी और फ़िल्ना खल्क कुरआन मामून के दौर की यादगारें हैं। इल्म व अदब के इस अजीम सरपरस्त ही की पुश्त गर्मी और पुश्त पनाही ने मशाहीरे इस्लाम की गर्दन दबोच ली, हज़रत इमाम अहमद हम्बल और इमाम मोहम्मद जैसे सरखील उल्मा और फ़कीहाने एज़ाम को तौक व सलासिल पहनाये गये और उन पर ज़ब्र व तशददुद रवा रखा गया।

एतज़ाल की बढ़ती हुई सैल एक तूफ़ान बन कर आगे बढ़ी और बड़े बड़े साबित क़दमों से या तो अपनी बात मनवा ली या उनके दोशबार सर से सुबुकदोश कर दिये गये। फ़िल्ना एतज़ाल ने अब्बासी खलीफ़ा वासिक बिल्लाह के दौर में कुछ दम लिया था कि फ़िल्ना बातनिया ने सर उठाया और यह बहुत जल्द एक ऐसी तहरीक बन गया कि शैखुल जबाल क़िल अतुल मौत में एक ऐसे एक्तेदार का मालिक बन गया जिसके सामने बड़े बड़े सरकशों ने सर झुका दिये। उसकी जन्नती अरज़ी ने एक बार देखा है दूसरी बार देखने की हवस है, के पर्दे में वह कयामत ढाई कि इस्लामी शमा इरान व इराक में टिमटिमाने लगी वह तो यह कहिये हलाकू खां के हाथों उसका इस्तिंसाह हो गया वर्ना बातनी और फ़िदाई किसी गैर बातनी को रोके ज़मीन पर ज़िन्दा न छोड़ते उन बातनियों और फ़िदाईयों के हाथों इस्लाम के रेजालों अजीम, मशाहीर उल्मा व फ़ुक्हा मारे गये। निज़ामुल मुल्क तूसी जैसा रजले अजीम और वज़ीर बा तदबीर भी उनकी



तहरीक का निशाना बन गया।

अगर मैं इस चार सद साला दौर की फित्ना सामानियों को तफसील से बयान करूँ तो इसके लिये सैकड़ों सफ़हात की ज़रूरत होगी। मुख़्तसर यह है कि इस कशमकश जाह व सतवत के दौर में लाखों मुसलमान मारे गये, हजारों घर और करिये वीरान हुये, हर तरफ़ तबाही व बरबादी ही बरबादी थी। उल्मा दरबारियों की रेशादवानियों में इस तरह जकड़े हुये थे कि उनसे फौज़ व फ़लाह की तवक्कोआत टूट चुकी थीं। चुनांचे यही देखिये कि फित्ना ख़ल्के कुरआन के सिलसिले में दौरे मामून में जब आजमाईश का वक़्त आया तो हुकूमत के खौफ़ से ईमान व ईसाफ़ का सरे रिश्ता उनके हाथों से निकल गया और ख़लीफ़े वक़्त की हां में हां मिला कर जान बचा ली।

इस सियासी अब्तरी और इतिन्शार ने लोगों के दिलों से सुकून व करार छीन लिया था। एक तवाईफ़ुल मलूकी का सा आलम था। एक खौफ़ व हरास हर तरफ़ तारी था उल्माए वक़्त महर ब लब थे। इस्लाम के रिजाले अजीम ख़ाना नशीनी ही में अपनी आफ़ियत समझते थे उस वक़्त इस्लामी अलम उठाने वाला सिवाए सूफीयाए कराम के और कोई नहीं था।

तारीख़ शाहिद है कि दूसरी सदी हिजरी से छठी सदी हिजरी तक इस मसलके तसव्वुफ़ ने अरब और अजम में जिस कदर तरक्की की और उसका दाएरा नुफूज़ जिस कदर वसीअ हुआ और जिस तादाद में नफूसे कुदसिया इस चार सद साला दौर में आममत्तुल मुस्लिमीन की रहबरी और तज़कीया-ए-नफूस व कूलूब के लिए मन्स-ए-शहूद पर आए वह किसी और दौर को मयस्सर नहीं हो सके। शहरों के हंगामों और सियासी रेशादवानियों से महफूज़ रहने के लिए यह हज़रात आबादियों से मुंह मोड़ कर वीरानियों को आबाद करते और शरीअते मुहम्मदी की आबयारी में हमातन मसरुफ़ रहते। उन हज़रात के कौल व फ़ेअल की सदाक़्त और उनका इख़लास बहुत जल्द उन वीरानों को इंसानों से मामूर कर देता। यही विराने आबादियों में बदल जाते। यहां दीन की इशाअत के लिए दीनी मदारिस और ज़िक्रे इक के लिए ख़ानकाहें खुद बख़ुद काइम हो जातीं।

उन्ही वीरानों से उन पाक नफूस के सद्का में ख़ानकाही निज़ाम का आगाज़ हुआ और तसव्वुफ़ के मशहूर आलिम ख़ानवादे, सलासिल कादरिया सुहवरदीया, नक्शबन्दीया और चिशितिया पैदा हुए। इन सलासिल के सरखील और इआज़मे सूफ़याए किबार उसी दौर पान सद साला में ज़हूर में आए और तमाम आलम पर अपने जुहद व इत्तका, सिदक व सफ़ा, सब्र व क़नाअत और अहयाये शरीअत व तरीक़त के ऐसे नुकूश सब्त कर गए जो रहती दुनिया तक मिट नहीं सकते। इस ख़ानकाही निज़ाम के जो दूर रस नताएज बर आमद हुए इसका अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि इन ख़ानकाहों से तरबीयत पाने वाले अपने मुर्शिदे आला के हुक्म से हर उस जगह पहुंच जाते जहां मुसलमान इज्तेमाई तौर पर अब्तरी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे होते थे जहां ऐश व तने आसानी ने उनसे इस्लामी ख़साइल छीन लिए होते, गोया यह ख़ानकाही निज़ाम मुसलमानों की इसलाह का एक इज्तेमाई मिशन था। मुर्शिद जहां ज़रूरत महसूस फ़रमाता वहां अपने लाइक व फ़ाएक और मुतअमद मुरीद को भेज देता कि जाओ और उस ख़िल्ता के मुसलमानों की इसलाह का काम करो। यह हज़रात सैकड़ो हजारों मील का सफ़र करते, सऊबाते सफ़र उठाते, और अहयाये मिल्लत व दीन की खातिर बेज़ादे राह तवक्कल अलल्लाह इस मक्सद और मुर्शिद के



हुक्म की तामील के लिए निकल खड़े होते यह वहां पहुंचते। उमरा व शूयूखे सल्तनत उनका मज़ाक उड़ाते और उनकी राह में हाइल होते, सियासी रेशादवानियों से उनके गिर्द दाम कसा जाता। लेकिन यह हज़रात उन तमाम ख़तरात से बे परवाह हो कर अपने मिशन की तकमील में सरापा महव हो जाते।

ईरान का दौर तवाइफुल मलूकी हो या इराक व अरब की खूं आशाम जंगें, सलीबी जंगें हूं या रुमियों से जिदाल व किताल, इस सारे पुर आशोब और बेचैनी और बे इत्मेनानी के माहौल में उस वक्त की दीनी दर्सगाहें जो हकीकत में सुलहाए ज़माना की ख़ानकाहें थीं, सिर्फ़ अमन व अमान का गहवारा बनीं। यहां सिद्क व ईकान का दर्स भी मिलता था और तज़कीया नफ़स का सामान भी था। अहयाये दीन व मतीन के लिए अहकाम यहीं से सादिर होते थे।

तसव्वुफ़ या ख़ानकाही निज़ाम को हिजाज़ से ज्यादा फैलने फूलने का मौका अजम में नसीब हुआ। अजम के मुकाबला में अरब उन फ़िल्ता सामानियों से निस्बतन महफूज़ रहा जो शख़्सी इक्तेदार के हुसूल के लिए पांच-सौ साला दौर में दुनियाए इस्लाम में पैदा हुई। अगरचे उमवी दौर की लाई हुई तबाही का मातम मदीना मुनव्वरा और मक्का मोअज्ज़मा के दर व दीवार मुददत तक करते रहे लेकिन हिजाज़ में मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के अलावा मदनी जिन्दगी और इमरानी तहज़ीब के आसार दूसरे मक़ामात पर बहुत कम मौजूद थे। अरब की जिन्दगी पर बददूयत छाई हुई थी हिज़रियत के निशान खाल खाल थे यही वजह है कि शहरी जिन्दगी की वह गहमा गहमी यहां मफ़कूद थी जो इराक व अजम का तुरी इम्तियाज़ मुददतों तक बनी रही। यही वजह है कि मुल्क गीरी की तहरीकों को उस बिलादे मुक़ददसा और जज़ीरा नुमाए अरब में (यमन के सिवा) परवान चढ़ने के सवाके बहुत कम मिले और उनका रुख हमेशा इराक व अजम की जानिब रहा। मुल्क गीरी के लिए जो खूं आशाम जंगें हुई और जिन शोरिशों ने सर उठाया उनका मरकज़ हमेशा अस्फ़हान व बग़दाद रहे यही सबब है कि ख़ानकाही निज़ाम आप अरब के मुकाबिल में इराक व अजम में ज़्यादा पायेंगे अगरचे हज़रत सलमान फ़ारसी ने बहुत से शोरिशों और इख़्तीलाफ़ात से बचने के लिए अलग थलग एक विराने में क़याम करके उस ख़ानकाही निज़ाम का संगे बुनियाद रख दिया था लेकिन वह किसी ऐसी तहरीक को शुरू नहीं कर सके थे जिससे ख़ानकाही निज़ाम के इरतिका की कड़ियां मिलाई जा सकें। इसी तरह हज़रत हसन बसरी और राबे अदवीया हज़रत सलमान फ़ारसी के मुत्तबईन ज़रूर कहे जा सकते हैं लेकिन वह किसी ऐसी तहरीक के मुहर्रिक नहीं कहे जा सकते। हां यह ज़रूर है कि हज़रत सलमान फ़ारसी की तरह यह शख़्सीयतें भी दरबारी ताल्लुकात और सियासी सरगर्मीयों से अलग थलग रहीं।

ख़लीफ़तुर्रसूल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहु अन्हो ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में अपने अदल व इंसाफ़ और सियासत व तदब्बुर से सिर्फ़ अरब ही में हुदूद मुल्की को वुसअत नहीं बरख़्शी बल्कि उन्होंने जज़ीरा नुमाए अरब से बाहर भी एक इस्लामी सलतनत की बुनियाद डाली थी जिसको हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्हो और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने बढ़ा कर उस वक्त की सब से अज़ीमुश्शान और क़वी तरीन सलतनते इलाहिया



बना दिया था। हज़रत अंली को जंगे सिफ़ीन व जंगे जुमल और फ़िल्ना ख़वारिज के सबब दाख़िली शोरिशों ही से फ़ुरसत नहीं मिली जो वह उन हुदूद को और वुसअत बख़्शते अलबत्ता जब यह दौलते इस्लामिया बनी उमय्या के पास और उसका उन्वान उम्वी सलतनत करार पाया तो उन्होंने उसके हुदूद मशरिक व मगरिब में और वसीअ कर दिए। अगरचे उनके दौर में भी खूने मुस्लिम की अरज़ानी रही मगर हुदूदे मम्लिकत वसीअ से वसीअ तर होते चले गए। तक्रीबन सौ बरस बाद बनो उमय्या के ज़वाल ने दौलते अब्बासीया की तरह डाली तो उन्होंने उसको एक ऐसी अज़ीम सलतनत बना दिया जो सिर्फ़ एक दो ममालिक पर फैली हुई नहीं थी बल्कि अब्बासी दौलत पन्द्रह मुल्कों पर महतवी थी और हर एक कमल रौ चन्द वलायतों या सूबों पर मबनी। ज़रा उन ममालिक और उनके तहत वलायतों या सूबों पर नज़र डालिये ताकि आप को अन्दाज़ा हो सके कि इस्लाम के सेह सद साला दौर में मुसलमानों के कदम कहां से कहां तक पहुंच गए थे।

मम्लिकत या अक्लीम	तादादे विलायत	विलायात तहत मम्लिकत
1-जज़ीरतुल अरब	4	हिजाज़-यमन-उम्मान हिज़
2-इराक़ या बाबुल	5	कूफ़ा-बस्रा-वासित-मदाइन- हलवान-सामिरा
3-जज़ीरा	3	दयारे रबीआ-दयारे बकर -दयारे मिस्र
4-शाम	6	कन्सरीन, हम्स, दिमश्क, उरदुन, फ़िलिस्तीन, शरक़,
5-मिस्र	6	जफ़ार, हौफ़, रीफ़, इसकन्द्रीया, मक्दूनिया, सअईदिया
6- मगरिब	6	अफ़्रीका, ताहरत, सिजिलमास, नास, सूस अक्सा
7-मावराऊन्नहर	6	फ़रग़ाना, इस्बीजाब, शाश, अशरुसना, सुगद, बुख़ारा
8- ख़ुरासान	9	बल्ख़, ग़ज़नैन, लबत, सजिस्तान(सिस्तान) हरात, जूज़ जान, मरव शाहजहां, नीशापुर, कहिस्तान, (ममालिके अब्बासिया में सबसे ज़्यादा ज़रखेज़ व शादाब यही मुल्क था, कौस, जिरजान, तिबिसतान, वैलिमान, ख़िमरज़
9- अक्लीम व वैलम	5	आरमीनिया, आजर बाईजान
10- माब	3	रै, हमदान, अस्फ़हान,
11- अलजिबाल	3	सूस, तुस्तर (समुस्तर) जन्दिसापुर, अकर मुकर्रम,
12-ख़ूज़िस्तान	7	अहवाज़, वरदुक, राम हरमज़
13-फ़ारस	6	अरजात, ख़रवारु शेर, दारुल जर्द, शीराज़, साबूर अस्तख़र



14-किरमान

5

बर्वसीर, सीरजान, मिरनासीर, बम, जैरफत

15-सिंध

4

मकरान (सदर मकाम पिंजौर जो आजकल पंजगोर के नाम से मशहूर है) तूरान, खास सिंध (मंसूरा दारुस्सलतनत) हिन्द

कुल

78 सूबे

इस मुजमिल फेहरिस्त से आप को यह अंदाज़ा तो कम अज़ कम हो जायेगा कि इन अज़ीम 78 विलायतों या सूबों पर मुश्तमिल यह अरीज़ व बसीत पंद्रह ममालिक पर फैली हुई सलतनते अब्बासिया अपनी शान व शौकत और सतवत व जबरुत के एतबार से क्या होगी। इसी शान व शौकत के साथ साथ हुसूले इक्तेदार और जाह व सरवत की कशमकश जब परवान चढ़ी और अहदे अब्बासिया के पांच दौरों में खूने मुस्लिम की जो अरज़ानी हुई इसकी तफ़सील आज भी जब बयान की जाती है तो हमारे सर शर्म से झुक जाते हैं।

हुकूमते अब्बासिया (जिसको इस्लामी तारीख में खिलाफ़ते अब्बासिया कहा जाता है) का आगाज़ 13 रबीउल अव्वल 132 हि० से हुआ। उस दिन अब्बासी खलीफ़ा सफ़्फ़ाह के हाथ पर बैत हुई और उस हुकूमत का एख़्तोमाम 4 सफ़र 656 हि० को आख़िरी खलीफ़ा मुतअस्सिम बिल्लाह के क़त्ल पर हुआ। इस तरह अब्बासी सलतनत 524 साल कायम रही और इस में 37 खलीफ़ा हुये।

दौलते अब्बासी के एक्तेदार और बेमिसाल शान व शौकत का दौर, उसका पहला दौर है जो सफ़्फ़ाह, मंसूर, महदी, हादी, हारुन अमीन, मामून। मुतअस्सिम बिल्लाह और वासिक बिल्लाह की पुर सतवत व जबरुत सत्तनतों पर मुश्तमिल हैं यह दौर 132 हि० से होकर 232 हि० पर ख़त्म हुआ। एक तरफ़ तो यह दौर अब्बासी हुकूमत की शान व शौकत और उनकी बेमिसाल अज़मत व जलाल का ताबनाक मुर्वक़अ है तो दूसरी तरफ़ जंग व जदल, क़त्ल व ग़ारत गिरी, ख़ूरेजी और सफ़्फ़ाकी में भी आप अपना जवाब है। मुंदर्जा बाला अक़ालीम और ममलिकतों का क़याम जाहिर है कि अमन व अमान के पुर सुकून माहौल में तो हुआ नहीं होगा, बहुत सी तहरीकें उस सद साला दौर में उठीं। बहुत से दाईयाने हुकूमत पैदा हुये। बहुत से तालेअ आजमा तलवार ले कर मकाबिल में आये, चंद सरदारों और अमीरों ने बगावत पर कमर बांधी, अपनी हुकूमतों के क़याम के लिये सर तोड़ कर कोशिशें कीं, मुसलमानों की तलवारों ने मुसलमानों का बेदरेग़ लहू बहाया। अब्बासियों ने अपनी दावत की तकमील और सलतनत के इस्तहकाम के लिये लाखों मुसलमानों को तहे तेग़ किया तब कहीं वह इस क़दर वसीअ ममलिकत को कायम कर सके।

जैसा कि मैं ऊपर ज़िक्र कर चुका हूँ कि दूसरी सदी हिजरी से लेकर छटी सदी हिजरी तक पान सद साला दौर जिस तरह खून आशामियों और खाना जंगियों का दौर है उसी तरह यह दौर तसव्वुफ़ की अज़मत और सर बलन्दी का ज़माना भी है। दौलते अब्बासिया की वह विलायात जिन का ज़िक्र एख़्तोसार के साथ किया जा चुका है हजारों सूफ़ियाए कराम का मोलिद व मंशा बनीं रहीं। और अरबाबे तसव्वुफ़ के मशहूर खानवादे और सलासिल इस पान सद साला दौर में परवान चढ़े। वह दिल जिन में खौफ़े खुदा, खल्के खुदा से मोहब्बत और अहकामे इलाही की बजा आवरी का जज़्बा ज़िन्दा होता और जो अलशफ़क़तो अला खल्किल्लाह वत्ताअति ले अमरिल्लाह का



इस्लाम, दीन, अदल, इंसफ, दयानत, सदाकत और मारफते हक का जरीआ समझते थे वह शहरों की उस पुर आशोब जिन्दगी से कनाराकश होकर वीरानों को आबाद करते, जिक्रे हक की महफिलों को आरास्ता करते और दिलों को नूरे मारफत से चमकाते।

इसी सलतनते अब्बासिया का चौथा दौर है। और इन्हेतात के बाद हुकूमत ने कुछ संभाला लिया है बनू बवय्या के बाद आले सलजूक की हुकूमत कायम हो चुकी है लेकिन उन्होंने बगदाद की मरकजियत कर खत्म करके रै को अपना मर्कज और मुस्तकर खिलाफत बना लिया है। आले सलजूक ने आले बवय्या के बर खिलाफ अब्बासी खलीफा का एहताराम बहाल कर दिया है। खलीफा मुस्तज़हर बिल्लाह, मुक्तदी बिल्लाह यानी अबूल कासिम अब्दुल्लाह बिन जखीरा बिन अबुल अब्बास बिन कायम बे अमरिल्लाह अब्बासी तख्त पर मुतमक्किन है (खिलाफत 5 मोहर्रम 487 हि० से 16 रबीउल अब्बल 512 हि०)। यह वह वक़्त है कि सुलतान संजर मलिक शाह इस अहद का सुलतान है। हज़रत हुज्जतुल इस्लाम इमाम गज़ाली मुल्क के इंतेशार और अहालियाने मुल्क की बे राह रवी और बद आमालियों से बद दिल होकर दर्स व तदरीस का सिलसिला बंद करके बगदाद से मुल्क शाम की तरफ़ रवाना हो चुके हैं। हसन बिन सबाह की तलवार को खून का चसका पड़ चुका है। अकाबरीने उम्मत बगदाद छोड़ रहे हैं। सबाही और बातनी अकाएद के खिलाफ़ ज़बान खोलना मौत को दावत देने के मुतरादिक है। उंदलुस में खाना जंगियां हो रही हैं। अफ्रीका में मोवहहिदीन और मुराबतीन बरसरे पैकार हैं, मिस्र पर करामता काबिज़ हो चुके हैं, सलीबी जंगें शुरू हो चुकी हैं, ईरान बहुत सी रियासतों में तकसीम हो चुका है, मशिरक में मावराउन नहर, खुरासान और पंजाब पर गज़नवी खानदान का सुलतान इब्राहीम हुक्मरानी कर रहा है। दाता गंज बख़्श हज़रत उस्मान अली हिजवेरी लाहौर में इरशाद की मसनद से रह गुज़र आलम बाकी हो चुके हैं। हर तरफ़ एक अफ़रा तफ़री का आलम है गहवारा इल्म व मज़हब यानी बगदाद मासियत में मुब्तला है कि एक अठारह साला नौजवान सालेह 488 हि० में गीलान के कस्बा नीफ़ से इल्म की तिशनगी बुझाने के लिये आजिमे बगदाद होते हैं।

गीलान के महले वकूअ के सिलसिला में अगरचे मोअरिखीन में काफ़ी एख़्तेलाफ़ पाया जाता है और बाज़ हज़रात ने अजीब अजीब मोशगाफ़िया इस सिलसिला में की हैं लेकिन हमारे मशहूर मोअरिखीन मसऊदी और जुऐर तबरी का बयान इस सिलसिला में बहुत ज़्यादा वक़ीअ है। उनका बयान है कि गीलान जिसे अरब जीलान कहते हैं ईरान कदीम का एक सूबा था जो अक्लीमे वैलम के तवाबेअ में था इसके शुमाल में बहीरए कैस्पियन, जुनूब में सिलसिला कोहे अलबर्ज और मशिरक में माज़न्दरान था। उस अहद का जदीद इस्लाहात के बाद गीलान एक आज़ाद मम्लिकत बन गया था और उसका दारुस सलतनत रश्त था। आज भी रश्त शुमाली ईरान का एक मशहूर शहर है लेकिन गीलान को सूबा कहना सही नहीं। गीला विलायते तिब्रिस्तान का एक मशहूर शहर था और तिब्रिस्तान अक्लीम वैलम का एक सूबा था।

शहरे गीलान के मशहूर ताबेअ, तवालिमश, गिरगान रिदद, लाहीजान, रुद सर और राहता बाद हैं। गीलान की यह आज़ादी और खुद मुख्तारी दौरे सफ़वीया में ख़त्म हो गई और अब्बासे अब्बल (सफ़वी) ने उस को ईरान में शामिल कर लिया। 1813ई. के ईरान रुस मुआहिदा के मुताबिक़ उसका बहुत सा इलाका रुसी हुदूद में शामिल कर लिया गया और आज ईरान जदीद



में इस नाम का कोई सूबा या कोई विलायत नहीं अलबत्ता लाहीजान और रश्त मौजूद हैं।

इसी गीलान के कस्बा नीफ में एक खुदा परस्त वली कामिल हज़रत अबूसालेह मूसा (जंगी दोस्त) आबाद थे। हज़रत अबू सालेह मूसा की दियानत और तक्वा, उनका जुहद और इत्तेका उस मन्ज़िल पर था कि आलमे शबाब ही में यह खशीयते इलाही और इस्मत व इफ्फत की उन मन्ज़िलों पर पहुंच गए थे जहां इंसान अगर तौफीके इलाही शामिले हाल हो तो मुद्दतों की रियाजतों के बाद पहुंचा करता है। हज़रत मूसा जंगी दोस्त का आलमे शबाब था। एक रोज़ सख्त गरसंगी के आलम में एक सेब जो नदी में बहता हुआ आ रहा था निकाल कर खा लिया। लेकिन खाने के बाद मअन ख्याल आया कि बाग के मालिक से इजाजत लिए बगैर मुझे सेब खाने का हक नहीं था और न वह मेरे लिए हलाल था। सख्त पशेमान हुए और आखिर कार बाग के मालिक के तलाश में नदी के कनारे कनारे उस जानिब चल खड़े हुए जिधर से सेब बहता हुआ आया था। दूर दराज़ की मुसाफ़त क़तअ करने के बाद आखिरकार एक ऐसे बाग के करीब पहुंचे जिस के सेब के दरख़्तों की शाखें पानी में लटक रही थीं। आप को यकीन हो गया कि यही वह बाग है जिसका बहता हुआ सेब मैंने खाया है। लोगों से दरयाफ़्त किया कि इस बाग का मालिक कौन है। लोगों ने बताया कि हज़रत अब्दुल्लाह सौमई इस बाग के मालिक हैं और उन का सौमआ इस बाग के अन्दर है आप बाग के अन्दर पहुंच कर हज़रत अब्दुल्लाह सौमई की खिदमत में पहुंचे और अपने आने की गर्ज व गायत बयान की हज़रत अब्दुल्लाह सौमई इस नौजवान के जुहद इत्तेका को देखकर हैरान रह गए कि अल्लाह अल्लाह एक सेब और इसकी इजाजत के लिए इस क़दर दूर दराज़ कठिन मंज़िलों का सफ़र। हज़रत मूसा जंगी दोस्त जब तालिबे माफी हुए तो हज़रत अब्दुल्लाह सौमई ने आप का हसब नसब दरयाफ़्त किया और कुछ देर खामोश रहकर कुछ गौर व तअम्मुल किया उसके बाद फ़रमाया ऐ नौजवान मैं तुम को उस वक़्त तक माफ़ नहीं करूंगा जब तक तुम मेरी एक ख्वाहिश पूरी न कर दो। मूसा जंगी दोस्त ने अर्ज किया कि मैं हुसूले माफी के लिए आप की हर ख्वाहिश ब सर व चश्म बजा लाने के लिए तैयार हूं। हज़रत अब्दुल्लाह सौमई ने फ़रमाया कि तुम मेरी बेटी उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा को अपनी जौजियत में कबूल कर लो, लेकिन यह समझ लो कि वह गूंगी, बहरी, लूली, लंगड़ी और अन्धी है, बोलो क्या तुम्हें मन्ज़ूर है।

हज़रत मूसा जंगी दोस्त कुछ देर तो खामोश रहे लेकिन फिर ख्याल आया कि माफी इस शर्त को कबूल किए बगैर मिल नहीं सकती और जो कुछ सऊबात अब तक उठाई हैं वह इस माफी के लिए। दिल का तक्वा फ़ौरन कह उठा कि अब्दुल्लाह सौमई की शर्त कबूल कर लो। हज़रत मूसा जंगी दोस्त ने अर्ज किया कि हज़रत वाला अगर ख़ता की माफी इस शर्त की तहसील पर मब्नी व मुन्हसिर है तो मुझे यह रिश्ता मन्ज़ूर है। हज़रत शैख़ ने फ़ौरन खानकाहे आलिया में एलान करा दिया और जब शादी का सामान ठीक हो गया तो हज़रत शैख़ ने खुद ख़ुत्बा निकाह पढ़ाया और उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा को उस नौजवान की जौजियत में दे दिया। जब मूसा जंगी दोस्त हुजलए उरुसी में पहुंचे तो वहां एक पैकर हुस्न व जमाल को देख कर तौबा इस्तिगफ़ार करते हुए फ़ौरन पलट पड़े और हज़रत अब्दुल्लाह सौमई की खिदमत में पहुंच कर अर्ज किया कि हज़रत आपने मेरा अक्द एक अंधी, लूली लंगड़ी अपाहीज दोशीज़ा से किया था



लेकिन हुजलए उरुसी में तो कोई ना महरम मौजूद है जो इन तमाम ओयूब से मुबर्रा है जिनको आपने उम्मुल खैर से मुत्तसिफ़ फ़रमाया था। हज़रत अब्दुल्लाह सौमई ने फ़रमाया कि अजीज़म हुजलए उरुसी में जो दोशीज़ा मौजूद है वही उम्मुल खैर फ़ातिमा तुम्हारी जौजा है मैंने उसको अंधी इस एतबार से कहा था कि आज तक उसकी नज़र ना महरम पर नहीं पड़ी। बहरी इस लिहाज से कि आज तक कोई बुरी बात उसने नहीं सुनी, गूंगी इस एतबार से कहा कि उसने झूट नहीं बोला न किसी की गीबत की, लुंजी इस वजह से कहा कि कभी इसने अपने हाथों से ऐसा काम नहीं किया जो शरीअत के खिलाफ़ हो, लंगड़ी यूँ कहा कि उसने अल्लाह की राह के सिवा किसी और रास्ता पर आज तक क़दम नहीं रखा। अल्लाह अल्लाह हज़रत मूसा जंगी दोस्त की खुश बख़्ती कि ऐसी सालिहा और वलिया ख़ातून के अक्द में आयीं। हज़रत मूसा जंगी दोस्त शादी के बाद कुछ अर्सा तो हज़रत अब्दुल्लाह सौमई की ख़ानकाह में मुकीम रहे फिर अपनी सालिहा और आबिदा बीवी को लेकर नीफ़ वापस चले आये।

इन्ही फ़रिश्ता ख़िसाल साहबे तक़्वा व तहारत जौजैन के यहां 47 हि० में एक फ़र्ज़न्द तवल्लुद हुये, जिनका नामे नामी अब्दुल कादिर रखा गया और अहया-ए-मिल्लत व दीन के बाइस मोहीयुद्दीन के लक़ब से सर बलन्द हुये। जब ऐसी पाकीज़ा ख़िसाल, तक़्वा व परहेज़गारी की दिलदादा मां हों और ऐसा जुहद व इत्तका रखने वाला बाप तो जाहिर है कि फ़र्ज़न्द किन सिफ़ाते बलन्द को लेकर दुनिया में आया होगा।

आप के वालिदे माजिद के इस्मे गरामी के सिलसिला में भी मोअर्रेख़ीन में क़दरे इख़्तेलाफ़ पाया जाता है। मशहूर मोअर्रेख़ और सीरत निगार अज़्ज़हबी अबू सालेह अब्दुल्लाह जंगी दोस्त बताते हैं। मगरिबी मोअर्रेख़ीन जैसे बरू कलमान अली बिन मूसा बिन जंगी दोस्त बताता है। मार गोलिथ की तहकीक़ के मुताबिक़ इब्न जंगी दोस्त कहना ज़्यादा सही है। इस सिलसिला में आपके सिलसिला के नामवर फ़रज़न्द जो आप की जो की अठारहवीं पुस्त में हैं यानी सय्यद ताहिर अलाउद्दीन साहबे सज्जादा कादरिया व नकीब ज़ादा ने जो सवानेह हयात हज़रत की मुरत्तब की है इस में हज़रत पीराने पीर के वालिद माजिद का इस्मे गरामी अबी सालेह मूसा जंगी दोस्त लिखा है और यही ज़्यादा सही है।

हज़रत उम्मुल खैर फ़ातिमा के यहां यह विलादत अयास यानी साठ बरस की उम्र में हुई थी, रमज़ानुल मुबारक का महीना था, और 477 हि० पाक गोदों में एक पाक बातिन और पाक तीनत बच्चा ने परवान चढ़ना शुरू किया और उन रूहानी कमालात से ग़ैर शक़री तौर पर बहरावर होता चला गया जो वालिदैन् में कुदरत ने वदीअत फ़रमाये थे, लेकिन उस अजीम फ़र्ज़न्द ने अभी ज़िन्दगी की चंद मंज़िलें ही तय की थीं कि जुहद व इत्तका के रजले अजीम यानी हज़रत मूसा जंगी दोस्त का इंतक़ाल हो गया और उस सालेह यतीम फ़र्ज़न्द की तालीम व तरबीयत का तमाम बोझ आबिदा सालिहा जईफ़ा ख़ातून उम्मुल खैर फ़ातिमा के कंधों पर आ पड़ा। बग़दाद उस दौर में तालीम का मर्कज़ था मदरसा निज़ामिया बग़दाद का चार दांगे आलम में शोहरा था। मदरसा अहनाफ़ भी इसी तरह से मशहूर था।

488 हि० में जब कि उस फ़र्ज़न्द ने उम्र की अठारहवीं मंज़िल में क़दम रखा तो एक रोज़ यह वालिदा मोहतरमा से सफ़र की इजाज़त के तालिब हुये। सालिहा और आबिदा मां ने होनहार



बेटे के इश्तियाक को देखते हुये बग़दाद जाने की इजाज़त मरहमत फ़रमा दी। हर चंद कि उस ज़माना में जब कि हर तरफ़ अफ़रा तफ़री फैली हुई थी मुल्की नज़्म व नस्क़ दरहम व बरहम था। त़िब्रिस्तान से बग़दाद तक सैकड़ों कोस की मुसाफ़त थी। रास्ते पुर ख़तर थे किसी कारवां का सलामती के साथ अपनी मंज़िल पर पहुंच जाना एक बड़ी बात समझी जाती थी हज़रत उम्मुल ख़ैर ने तहसीले उलूम के लिये बा दीदा-ए-अश्क़बार बेटे को गले से लगा कर रुख़सत किया। बग़दाद में मुस्तनसर बिल्लाह सरीर आराये सलतनत है, ईरान में सलजूकी सलतनत की वह आन बान बाकी नहीं जो मलिक शाह और निज़ामुल मुल्क के दम से थी। 485 हि० में निज़ामुल मुल्क एक बातनी (फ़िदाई) के हाथ से शहीद हो गये और उनकी शहादत के बीस बाईस दिन के बाद ही सलतनत सलजूकिया का नुमाइन्दा सोज़िह (मलिक शाह) भी गुरुब हो गया। तख़्ते सलजूक के लिये मलिक शाह के फ़र्ज़न्द आपस में उलझ रहे थे। वली अहद सलतनत चूंकि नामज़द नहीं हुआ था लिहाज़ा तरकान खातून की ख़्वाहिश है कि उसका बेटा महमूद बाप का जानशीन हो जो सुलतान का सबसे छोटा बेटा है, और हक़ है बरकियारुक़ का। शाहज़ादा मोहम्मद और शाहज़ादा संज़र भी तख़्त के दावेदार हैं लेकिन निज़ामुल मुल्क ने बरकियारुक़ की वली अहदी सुलतान से मंज़ूर करा ली थी लिहाज़ा निज़ामुल मुल्क के उमरा की मदद से सुलतान बरकियारुक़ तख़्ते सलतनत पर रौनक़ अफ़रोज़ हुआ लेकिन मुल्क में अमन व अमान कायम न हो सका।

उस वक़्त उन ममालिक में कैफ़ियत यह थी कि रै, जील, त़िब्रिस्तान, खूज़िस्तान, फ़ारस, दयारे बकर और हरमैन शरीफ़ैन में बरकियारुक़ के नाम का ख़ुत्बा पढ़ा जा रहा था और आजर बाईजान, आरान, आरमीनिया, अस्फ़हान और इराक़ में सुलतान मोहम्मद बिन मलिक शाह सलजूकी का, संज़र बिन मलिक शाह ने ममालिके शरकिया में यानी जिरजान से मावराउन नहर तक अपने नाम का ख़ुत्बा शुरू कर दिया था। फिरंगी मुल्के शाम पर और बैतुल मुक़द्दस पर कब्ज़ा करने के लिये हमला आवर हो चुके थे।

इस मुख़्तसर से मुल्की हालात से आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि ममालिके इस्लामिया में कैसी ख़ाना जंगी छिड़ी हुई थी। दिलों से सुकून रुख़सत था न शहरों में अमन व अमान था न करियों में। कारवां की गुज़र गाहें पुर ख़तर थीं अहले काफ़िला महफूज़ व मामून न थे मंज़िल पर पहुंचने से पहले ही लुट जाते थे चुनांचे यह काफ़िला भी जिसमें इल्म व कमाल के जोया फ़र्ज़न्द सईद, वली मादर ज़ाद हज़रत अब्दुल कादिर अल मुलक्क़ब बेह मोहीयुद्दीन शरीक थे। नीफ़ से बग़दाद को ख़ाना हुआ लेकिन चंद मंज़िल तय कर पाया था कि डाकूओं ने घेर लिया लेकिन हज़रत अब्दुल कादिर के सिदक़ व सफ़ा ने अहले काफ़िला को तबाही से महफूज़ रखा, और हमला आवरों ने दुज़दी और रहज़नी से उस नौ उम्र सालेह जवान के हाथ पर तौबा की।

आख़िरकार क़तल् मनाज़िल करते हुए कई माह की मुददत के बाद हज़रत शैख़ अब्दुल कादिर बग़दाद पहुंचे। जैसा कि इससे कब्ल अर्ज किया जा चुका है उस वक़्त ख़लीफ़ा मुस्तनसर बिल्लाह बिन अबूलकासिम बिल्लाह बिन ज़गीरा अबूल अब्बास इब्न काइम बेअमरिल्लाह के तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ था। लेकिन आले बोविया के इक्तेदार ने बग़दाद की इल्मी व अज़मत को गहन लगा दिया था। फिस्क़ व फुज़ूर और मासियत का दौर दौरा था। चन्द पाकीज़ा



नुफूस उस शहर में ज़रूर मौजूद थे लेकिन उनका हलका असर महदूद था कुछ अल्लाह वाले भी थे और वह वअज़ व नसीहत से गो दिलों को गरमाना चाहते थे लेकिन उनकी मजलिसें सूनी पड़ी थीं कोई उनके वअज़ व नसीहत की तरफ़ कान धरने वाला न था। हर चन्द खलीफ़ा मुस्तन्सर बिल्लाह खुद एक मर्दे सालेह करीम और खलीफ़, नेक मिज़ाज, सखी और पाबन्दे शरीअत खलीफ़ा था और उलमा व फुज़ला और फुकरा और सुलहा से मोहब्बत करने वाला। लेकिन रइय्यत का मिज़ाज तन्द्म व ऐश परस्ती ने इतना बिगाड़ दिया था कि मासियत व सियाह कारी बग़दाद का मुक़दर बन चुकी थी बातिनी शोरिश ऊरुज पर थी और सलीबी जंग की बिना पड़ चुकी थी।

### तहसीले इल्म व फ़नः

हज़रत महीउद्दीन अब्दुल कादिर जीलानी कमाले इल्मी के हुसूल के लिए जब मर्कज़े उलूम व फ़नून और गहवारए तहज़ीबे इस्लामीया यानी बग़दाद में वारिद हुए तो आप सबसे पहले हज़रत शैख़ हम्माद बिन मुस्लिम दब्बास की ख़िदमत में हाज़िर हुए उस वक़्त तमाम बग़दाद ही नहीं बल्कि अतराफ़ व अक्नाफ़ में भी हज़रत हम्माद दब्बास की इरफ़ान शनासी का शहरा था। हज़रत हम्माद दब्बास की मजलिस जो ज़्यादा तर उन की दुकान पर काइम होती थी तालिबान का मरजअ थी। उस वक़्त के सूफ़ियाए किराम और असरार व हकीकत के जोया उस दुकान पर जमा होते थे जहां बज़ाहिर तो "राब" फ़रोख़्त होती थी लेकिन ब बातिन दिलों की मारफ़त की शीरीनी और हलावत से आसूदा किया जाता था। शैख़ दब्बास ने इस शहबाज़ तरीक़त को हाथों हाथ लिया और पज़ीराई में कोई दकीका फुरु गुज़ाश्त नहीं फ़रमाया।

हज़रत शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी ने शैख़े तरीक़त की तहरीक और खुद तकमीले उलूमे शरीआ के जज़्बा की सर शारी से मनाज़िले सुलूक तय करने से पहले यह मुनासिब ख़्याल फ़रमाया कि उलूमे दीनिया और उलूमे मुतादाविला की तकमील कर ली जाए चुनाचे आप काज़ी अबू सईद अलमुबारक अल मख़जूमी की ख़िदमत में पहुचें। काज़ी अबू सईद का शुमार अकाबिर फुक्हए अस्र में होता था उन्होंने मदरसा बाबुल अज़ज के नाम से एक दर्सगाह काइम कर रखी थी जहां उलमाए मुतबहहरीन दर्स की मसनदों पर मुत्मकिन थे। चुनाचे आप ने उस मदरसा में हज़रत अबू ज़करिया तबरेज़ी से अदब की तकमील फ़रमाई हज़रत अबू ज़करिया अदबियात में मुन्फ़रिद मक़ाम रखते थे। मुतअददिद किताबों के मुसन्फ़ि और उस वक़्त के शोहरए आफ़ाक़ अदीब थे। अदबीयात की तहसील के साथ साथ आपने इल्मे हदीस की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और उस वक़्त के मशाहीर मुहददेसीन जैसे अबूल ग़नाएम मोहम्मद बिन अली मैमून अल ख़रासी, अबूल बरकात तल्हा अल आकूली, अबू उसमान इस्माईल बिन मुहम्मद अस्बहानी, अबू ताहिर मोहम्मद अब्दुर्रहमान इब्न अहमद, अबूल मन्सूर अब्दुर्रहमान, अबू नसर मोहम्मद बिन मुख़तार हाशमी।

फ़िक्ह और उसूले फ़िक्ह में आप ने शैख़ अबूल ख़त्ताब महफूज़ अल कूलुज़ानी, अबूल वफ़ा अली बिन अकील हम्बली, अबूल हसन मोहम्मद बिन काज़ी अबू याला, मोहम्मद बिन अल हुसैन बिन मोहम्मद सिराज, काज़ी अबूल सईद अल मुबारक मख़जूमी बानी मदरसा बाबुल अज़ज से इस्तिफ़ादा फ़रमाया। आप अपनी तसनीफ़ अलगुनियतुत्तालीब अत्तरीकुल हक़" में अकसर व बेशतर सनदे रिवायत में काला शैख़ना मुबारक और काला हिब्तुल्लाह बिन मुबारक का ज़िक़्र



फरमाते हैं। इस से जाहिर होता है आप हदीस व फिक्ह में इन दोनों हज़रात से काफी मुतास्सिर थे और उन को सनद तसलीम करते थे।

हज़रत शैख अब्दुल कादिर जिलानी के असातज़ा कराम में अक्सरीयत ऐसे उलमा की थी जिनका फिक्ह मस्लक हंबली था। शायद यही सबब है कि आप भी इस मज़हब से मुतास्सिर हुए और आप ने भी इस को इख्तेयार किया। हदीस शरीफ़ पर आप की ज़र्फ़ निगाही और दिक्कते नज़र का यह आलम था कि आपके असातज़ा किराम सनद देते वक़्त फरमाया करते थे।

ऐ अब्दुल कादिर हम तो अल्फ़ाज़े हदीस की सनद दे रहे हैं वरना हदीस के मानी में तो हम तुम से इस्तेफ़ादा करते हैं क्योंकि बाज़ अहादीस के मतालिब जो तुम ने बयान किए हैं उन तक हमारी फ़हम की रसाई नहीं थी।

दर्स व तदरीस से फ़रागत के बाद आप अपने दिली जोश के बाइस मुददतों तक इराक़ के वीरानों और ख़राबात की तरफ़ निकल जाते और कई कई रोज़ तक बस्ती का मुंह न देखते लेकिन कुदरत को आप से एक अज़ीमुश्शान दीनी ख़िदमत लेनी थी इस लिए आप ने अपने उस्तादे गिरामी काज़ी अबू सईदु अल मुबारक अलमज़ूमि के इरशाद के बमोज़िब मदरसा बाबूल अज़ज़ में ख़िदमते तदरीस अपने ज़िम्मा ले ली। आप जब मदरसा में दर्स शुरू फरमाया तो तलबा की तादाद कुछ ज़्यादा न थी लेकिन आपके तहहुरे इल्मी का शोहरा इस क़दर जल्द बग़दाद और मुज़ाफ़ाते बग़दाद में पहुंचा कि दूर दराज़ मुक़ामात के तलबा जूक़ दर जूक़ आपके दर्स में शरीक होने लगे और मदरसा बाबूल अज़ज़ की वुसअत उन तालिबाने शौक की गुंजाइश के लिए कम हो गई और हालत हो गई कि जिन तलबा को मदरसा में जगह न मिलती थी वह मदरसा के मुत्तसिल बाज़ार और चौक में बैठकर आप की उन तक़रीर से इस्तेफ़ादा करते जो दौराने दर्स आप फरमाया करते।

इस हालत से मुतास्सिर होकर बग़दाद के अरबाब ख़ैर ने मदरसा की वुसअत में ज़रे कसीर सर्फ़ किया यहां तक कि बाज़ नेक बन्दे बग़ैर उज़रत रात दिन तामीर में लगे रहते और थोड़ी सी मुददत में मदरसा की वुसअत दे दी गई। 528 हि. में मदरसा की वुसअत का काम अन्जाम पहुंच गया और एक मोहत्तम बिश्शान इमारत तैयार हो गई उस वक़्त यह मदरसा बाबूल अज़ज़ के बजाए मदरसा कादरीया के नाम से मौसूम होकर अक्नाफ़े आलम में मशहूर हुआ।

### दर्स व तदरीस:

मदरसा में आप एक सबक़ तफ़सीर का, एक हदीस (शरीफ़) का, एक फ़िक्ह का और एक इख़्तेलाफ़ अइम्मा अरबा और उनके दलाइल का आप खुद देते थे। यूँ सुबह व शाम तफ़सीर व हदीस, फ़िक्ह उसूले फ़िक्ह और नहव के अस्बाक़ होते थे। नहव के बाद जोहर और अस्त्र के दर्मियान इल्मे तजवीद की तालीम होती थी। फ़तवा नवेसी का शोअ्बा इसके अलावा था, और मवाइज़े हस्ना की मजालिस इसके सिवा।

### मोएज़त व तल्कीन:

521 हि. में हज़रत ने पहली तक़रीर फरमाई। इब्तिदा में सामईन की तादाद बहुत कम थी लेकिन आप की पहली तक़रीर ने बग़दाद में तहलका मचा दिया। फिर तो इंसानों का एक दरिया उमड़ आया। हर वाज़ में इस क़दर हुज़ूम होने लगा कि बाब अश्शामिया की जामा मस्जिद



हाजरीन के लिए तंग हो गई। यह देख कर आप ईदगाह बगदाद के वसीअ व अरीज मैदान को अपने मवाएज के लिए पसन्द फरमाया, और फिर आप अर्सा तक उसी मकाम पर वाज फरमाते रहे। बगदादियों ने आप की खिताबत और मोएजत से मुतास्सिर हो कर बगदाद के बाहर एक तवील व अरीज रिबात तामीर कराई और यह सिलसिला इस कदर वसीअ होता चला गया कि मदरसा बाबुल अजज की तामीरात इस रिबात की तामीरात से मुत्तसिल व मुल्हिक होकर एक आली शान वसीअ व अरीज जाविया या खानकाह की शकल में नजर आने लगीं हजरत यहां दस्तूर के मुताबिक जुमा, यक शंबा और दो शंबा को दावत रुश्द व हिदायत फरमाया करते थे।

### अरबी ज़बान पर उबूर पाना:

हजरत की मादरी ज़बान फारसी थी और बगदाद अरबी अदब का गहवारा और फुस्हाए अरब का मल्जा व मावा। पस जरूरत थी कि आप अरबी ज़बान में वाज फरमायें इस लिए बावुजूद कि आप उलूमे दीनिया व अदबीया पर उबूर कामिल हासिल कर चुके थे और हदीस शरीफ के मअनी में ऐसे ऐसे निकात बयान फरमाते थे कि आप के असातजा भी उसके मोअतरिफ थे लेकिन बई हमा कमाले तकरीर की हिम्मत आप अपने आप में नहीं पाते थे चुनाचे हजरत खुद फरमाते हैं कि

“521हि. में 16 शव्वाल सह शंबा के रोज मैं हुजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीदार से आलमे रुया में मुशरफ हुआ। मैंने देखा कि हुजूर मुझे वाज कहने की हिदायत फरमा रहे हैं। मैंने अर्ज किया कि हुजूर मैं अजमी हूं। बगदाद के फुस्हा के सामने ज़बान खोलते हुए डरता हूं। मैं उन हजरात के सामने क्यों कर कलाम करूं। ऐसा न हो कि बगदाद के फसीह व बलीग हजरात मुझ पर खूना ज़न हो कि “आलादे नबी होने के बावुजूद अरबी से ना बलद है, और फिर भी वाज व पिन्द में सरगर्म है।”

मेरी इस गुज़ारिश पर हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सात मर्तबा कुछ पढ़कर मेरे मुंह पर दम फरमाया और वाज का हुक्म दिया। दूसरे रोज मैं बादे नमाजे जुहर वाज कहने के इरादे से मिम्बर पर बैठा और सोचता रहा कि क्या कहूं। मेरे इर्द गिर्द खिलकत का हुजूम था और हर एक मेरा वाज सुनने का मुशताक था। हर चन्द कि मेरे सीना में दरियाए इल्म मौजज़न था मगर ज़बान नहीं खुलती थी कि उसी बक्त मेरे जददे अमजद हजरत अली करमल्लाह वज्हे तशरीफ लाए और छः मर्तबा कुछ पढ़कर मेरे मुंह पर दम किया मेरी ज़बान फौरन खुल गई और मैंने वाज शुरू कर दिया। अब मेरी ताकते लिसानी की सारे बगदाद में धूम मच गई। खुद मेरे दिल में जोश सुखन का यह आलम था कि अगर कुछ अर्सा खामोश रहता और वाज न कहता तो मेरा दम घूटने लगता था। अब्बल अब्बल मेरी महफिले तज्कीर में थोड़े लोग हुआ करते थे मगर आखिर में नौबत यहां तक पहुंची कि हुजूम की मस्जिद में गुंजाइश ना मुमकिन हो गई बिल आखिर ईदगाह में मिम्बर रखा गया और मैंने वहां वाज कहना शुरू कर दिया।

आप फरमाते हैं कि:-

सत्तर हजार अफराद मेरी मजलिस में शरीक हुआ करते थे। सवार इतने आते थे कि उनकी गर्द से ईदगाह के गिर्द एक हलका बन जाता था और दूर से तोदा नजर आता था—

हजरत शाह अब्दुल हक मोहददिस देहलवी अखबारुल अखयार में ब तजकिरा हजरत गौसुल आजम तहरीर फरमाते हैं कि:-



हजरत के कलाम मोअजिज बयान में वह तासीर थी कि जब आप आयाते वईद के मआनी इरशाद फरमाते थे तो तमाम लोग लरज जाते थे। चेहरों का रंग फक हो जाता था गिरया व जारी का यह आलम होता था कि अहले महफिल पर बेहोशी तारी हो जाती थी।

जब आप रहमते इलाही की तशरीह व तौजीह और उसके मताल्लिब बयान फरमाने लगते तो लोगों के दिल गुन्चों की तरह खिल जाते थे अकसर हाजरीन तो बादाए जौक व शौक से इस तरह मस्त व बेखुद हो जाते थे कि बाद खत्मे महफिल उनको होश आता था और बाज तो महफिल में ही जां बहक तस्लीम हो जाते—

हजरत मोहदिदस देहलवी इसी सिलसिला में रकम तराज हैं:-

हजरत की महफिले वाज में चार सौ अफराद कलम दावत ले कर बैठते थे जो कुछ आप से सुनते उसको लिखते जाते।

हजरत के मवाइज दिलों पर बिजली का असर करते थे। शैख उमर कीसानी कहते हैं कि कोई मजलिस ऐसी नहीं होती थी जिस में यहूद व नसारा इस्लाम कबूल न करते हों। और आम्मतुन्नास रहजनी, खूरेजी, बदकारी और जराइम से तौबा न करते हों। फासिदुल एतकाद अपने गलत अकाइद से आप की महफिल में तौबा करते थे। मोअरिखीन का इस पर इत्तेफाक है कि बगदाद की आबादी के एक बड़े हिस्से ने आप के दस्ते हक परस्त पर इस्लाम कबूल किया।

मोहक्कि के वक्त शैख मौफिकुदीन इब्ने किदामा साहबे किताब मुगनी के इस कौल से हजरत मोहक्कि मोहदिदस देहलवी के इरशाद की तईद होती है हजरत मोफिकुदीन फरमाते हैं।

मैंने किसी शख्स को आप से बढ़कर दीन के बाइस ताजीम पाते नहीं देखा, बादशाह वोजरा और उमरा आप की मजालिस में नियाज मन्दाना तरीके पर हाजिर होते थे और अदब से बैठ जाते थे उलमा फुक्हा का तो कुछ शुमार ही नहीं था। एक एक दफा में चार चार सौ दवातें शुमार की गई हैं जो आप के इरशादात कलम बन्द करने के लिए मौजूद होती थीं।

आप पर बगदाद की मुआशरती समाजी और दीनी जिन्दगी की बिगड़ती हुई हालत पोशीदा नहीं थी, जुल्म व सितम, जबर व इस्तिब्दाद, फवाहिश व तने आसानी ऐश व तुरब में डूबी हुई जिन्दगी को हलाकत के भंवर से बाहर निकाल कर लाना ही आप का मक्सूदे अस्ली था और इसी लिए आपने बगदाद को अपनी दावत का मरकज बनाया था, आप के मवाइज का असली मोजिब यही था कि बन्दगाने खुदा की इस्लाह की जाए चुनांचे आप का हर वक्त उन बरगश्ता हाल नुफूस की इस्लाह में मशगूल और मसरुफ रहते। बड़े बड़े लोगों को उनकी बुराईयों पर बेधड़क टोकते और इस्लाह की तरफ मुतवज्जेह फरमाते यानी आप सलातीने वक्त (खुलाफाए बगदाद) वोजरा, उमराए सलतनत, अकाबेरीने मिल्लत, आमिल व काजी, वाएज व सूफी हर एक को बेधड़क टोकते और उसकी बुराईयों से आगाह फरमाते और कभी कभी किसी की इन्फरादियत, वजाहत और सतवत व शौकत से मरऊब नहीं होते थे। मैं इस सिलसिला में आप के खुत्बात व मवाइज से चन्द इक्त्साबात पेश कर रहा हूँ ताकि आप को हजरत की खिताबत और इस्लाह की शान का अंदाजा हो सके।

**जालिमों, आलिमों, सूफीयों, और फकीहों से खिताब**

तुम रमजान में अपने नफ्सों को पानी पीने से रोकते हो और जब इफ्तार का वक्त आता है



तो मुसलमानों के खून से इफ्तार करते हो और उन पर जुल्म करके जो माल हासिल किया है उसे निगलते हो।

ऐ लोगो! अससोस कि तुम सैर होकर खाते हो और तुम्हारे पड़ोसी भूखे रहते हैं और फिर दावा यह करते हो कि हम मोमिन हैं, तुम्हारा ईमान सही नहीं।

देखो! हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने हाथ से साइल को दिया करते थे अपनी ऊंटनी को चारा डालते, उसका दूध दुहते और अपना कुर्ता सिया करते। तुम उनकी मुताबिअत का दावा कैसे करते हो, जब कि अक्वाल व अफ़आल में उनकी मुखालिफ़त कर रहे हो।

ऐ मोलवियो, ऐ फ़कीहो! ऐ ज़ाहिदो! ऐ आबिदो, ऐ सूफीयो! तुम में कोई ऐसा नहीं जो तौबा का हाजतमन्द न हो, हमारे पास तुम्हारी मौत और हयात की सारी ख़बरें हैं सच्ची मोहब्बत जिस में तग़य्युर नहीं आ सकता वह मोहब्बत इलाही है, वही है जिस को तुम अपने दिल की आखों से देखते हो और वही मोहब्बत रुहानी, सिद्दीको की मोहब्बत है।

ऐ नफ़स, ख़्वाहिश, तबीयत और शैतान के बन्दो! मैं तुम्हें क्या बताऊं मेरे पास तो हक़ दर हक़ मग़ज़ दर मग़ज़ और सफ़ा दर सफ़ा तोड़ने और जोड़ने के सिवा कुछ भी नहीं यानी तोड़ना मा सिवा अल्लाह से और जोड़ना अल्लाह से।

ऐ मुनाफ़िको! ऐ दावा करने वालो! ऐ झूठो! मैं तुम्हारी हवस का काएल नहीं अहले दिल की सोहबत अख़तियार करो, ताकि तुम को भी दिल नसीब हो लेकिन तुम्हारे पास तो दिल है ही नहीं, तुम तो सरापा नफ़स व तबीयत और हवा व हवस हो!!

### बाशिन्दिगाने बग़दाद से ख़िताब

ऐ बग़दाद के रहने वाले! तुम्हारे अन्दर निफ़ाक़ ज्यादा और इख़लास कम हो गया है और अक्वाल बिला आमाल बढ़ गए हैं और अमल के बग़ैर कौल किसी काम का नहीं।

तुम्हारे आमाल का बड़ा हिस्सा जिस्म बे रुह है क्यों कि रुह इख़लास व तौहीद और सुन्नत रसूलुल्लाह पर काइम है, ग़फ़लत मत करो, अपनी हालत को पलटो ताकि तुम को राह मिले जाग उठो ऐ सोने वालो! ऐ ग़फ़लत शिआरो बेदार हो जाओ! ऐ सोने वालो जाग उठो जिस पर भी तुम ने एतमाद किया वह तुम्हारा माबूद है और जिस पर नफ़ा या नुक़सान में तुम्हारी नज़र पड़े और तुम ऐसा समझो कि उसके हाथों हक़ तआला (नफ़ा व नुक़सान) को जारी करने वाला है वह तुम्हारा माबूद है अन्क़रीब तुम्हें अपना अन्जाम नज़र आ जाएगा!

### दरबारी उलमा, जुह्हाद और सलातीन से ख़िताब

ऐ इल्म व अमल में ख़ियानत करने वालो! तुम को उनसे क्या निस्बत, ऐ अल्लाह और उसके रसूल के दुशमनों! ऐ अल्लाह के बन्दों पर डाका डालने वालो! तुम खुले जुल्म और खुले निफ़ाक़ में मुब्तिला हो, यह निफ़ाक़ कब तक।

ऐ आलिमो और ज़ाहिदो! बादशाहों और सुलतानों के लिए तुम कब तक मुनाफ़िक़ बने रहोगे कि तुम उनसे अपना ज़र व माल, शहवात व लज़्ज़ात हासिल करते रहो। तुम और अकसर बादशाहाने वक़्त अल्लाह के माल और उसके बन्दों के बारे में ज़ालिम, और ख़ियानत करने वाले हो।

ऐ इलाही, मुनाफ़िकों की शौकत तोड़ दे और उनको ज़लील फ़रमा, या उनको तौबा की



गुनियवुत्तालिबीन

तौफीक अता फरमा और जालिमों का किला कमा फरमा दे. जमीन को उनसे पाक फरमा दे या उनकी इस्लाह फरमा (आमीन)

(इक्तिबासात अज्र अल फतहुर्रब्बानी)

इस उमूमी खिताब में अक्सर तखसीस भी फरमाया करते थे, अक्सर उमरा और सलातीने वक्त आप की खिदमत में दुआये खैर के हुसूल के लिए हाजिर होते इस मौके पर आप उन को नसीहत फरमाते और वईदे इलाही से डराते, एक बार अल मुस्तन्जिद बिल्लाह आप की खिदमते बा बरकत में बारयाब हुआ और हजरत की खिदमत में दस तोड़े अशरफियों के पेश किए और कबूल फरमाने पर इसरार किया, आपने दोनों हाथों में चन्द अशरफियों को ले कर रगड़ा तो उनसे खून टपकने लगा उस वक्त हजरत ने अलमुस्तन्जिद से फरमाया।

तुम्हें अल्लाह से शर्म नहीं आती कि इंसानों का खून खाते हो और उसे जमा करके मेरे पास लाते हो।

अलमुस्तन्जिद यह माजरा देखकर बेहोश हो गया।

आप आलाए कल्मतुल हक कभी बाक नहीं फरमाते थे गलत कारियों पर आप बादशाह को भी इसी तरह डांट दिया करते थे जैसे किसी आमी को। एक बार बादशाह वक्त खलीफा मुक्तजी ले अमरिल्लाह ने काजी अबूल वफा यहया बिन सईद बिन यहया बिन मुजफ्फर को काजी-ए-बगदाद मुकर्रर कर दिया यह शख्स अपनी दराज दस्ती जुल्म व सितम रानी की बदौलत "इब्नुल मजहमुज्जालिम" के लकब से पुकारा जाता था। लोगों ने हजरत से खलीफा की इस अवाम दुश्मनी की शिकायत की तो आप ने बरसरे मिम्बर खलीफा (अलमुक्तजी ले अम्रिल्लाह) जो आप की मजिलस शरीफ में मौजूद था इस तरह फटकारा।

तुम ने मुस्लमानों पर एक ऐसे शख्स को हाकिम बनाया जो अज्जलमुज्जालेमिन है कल कयामत के दिन उस रब्बुल आलेमीन को जो अरहमर्रहमान है क्या जवाब दो गे—

यह सुन कर खलीफा लरजा बर अन्दाम हो गया और उसपर खशीयते इलाही से लरजा तारी हो गया उसने उसी वक्त काजी मजकूर को कुजात के ओहदा माजूल कर दिया लेकिन गुरबा और फुकरा के साथ आप का सलूक बिल्कुल मसावियाना था आप उनके साथ बैठ जाते और बड़ी बे तकल्लुफी से उनसे गुफ्तगू फरमाते और उनको आजादाना गुफ्तगू का मौका देते। आप के इन्ही अखलाक और फजाइल ने अवाम को आप का गरवीदा और ख्वास को आप का वालह शैदा बना दिया था।

## आप के मवाइज का असर

आपके उन मवाइजे हस्ना और खिताबाते हकीमाना का यह असर हुआ कि बगदाद जो ऐश व तुरब का गहवारा-ए-रन्दी सरमस्ती का ठिकाना था जहां के नौजवान रईसजादे और शुरफा आदाबे शराफत व सियादत भुला चुके थे बहुत जल्द राहे रास्त पर आ गए उनकी सर मस्तीया मांद पड़ गई, हजारों अफराद ने आप के दस्ते हक परस्त पर तौबा की। सिर्फ मुस्लमान ही ताइब नहीं हुए बल्कि सदहा यहूदियों और ईसाइयों ने इस्लाम कबूल किया चुनांचे मोअर्रेखीन का इस पर इत्तेफाक है कि बगदाद की आबादी के बड़े हिस्से ने हजरत वाला के हाथ पर तौबा की और बकसरत यहूद व नसारा और अहले जिम्मा मुसलमान हुए।



आप के उन मवाइजे हसना के तीन मजमूए हैं यानी अलफतहुर्रब्बानी, फुतूहुल गैब अल गुनियतुतालिब तरीकुल हक गुनियतुतालेबीन, इन कुतुब में आप के इरशादाते हकीमाना को बक़ैदे मौजू जब्ते तहरीर में लाया गया है इन तीनों किताबों में अब्बलुज्जिक्र दो किताबें मुख्तसर हैं और तीसरी यानी गुनियतुतालेबीन बहुत मुफ़स्सल है। मैं इन्शा अल्लाह आप की तसानीफ़ पर तफ़सीली बहस आप की तसानीफ़ के सिलसिला में करूंगा।

## हजरत गौसे आजम और तालीमाते बातनी

हजरत गौसे पाक रजियल्लाहो तआला अन्हो की तसानीफ़े मुबारिका आप के मवाइज व इरशादाते गरामी ही उस बलन्द मर्तबा और हिक्मत के उस आला दर्जा पर हैं किउनकी कमा हक्कहु, तारीफ़, उन का असर और उन के फैज़ान का इहाता करना और उनसे नताइज मुत्तब हुए उनका बयान करना बहुत ही दुशवार है। यह मवाइज व दर्स उस बलन्दी और असर आफ़रीनी की उस मंज़िल पर हैं कि आप की फ़जीलत और आप के कमालाते इल्मी पर दलीलें कातेअ हैं लेकिन क्या अरब और क्या अजम, क्या हिन्द और क्या शाम व इराक़ तमाम दुनिया में आप के नामे वाला की अज़मत और फैज़ाने मारफ़ूत की जो धूम और शान है वह आप के कमालाते बातनी और आप के रुश्द व हिदायत के सिलसिला यानी सिलसिला कादरिया का फ़रोग और उसकी आलमगीर इशाअत है। ज़ैल के सत्तूर में इस पाक सिलसिला के बारे में मुख्तसरन तहरीर कर रहा हूँ।

हजरत गौसुल आजम रजियल्लाहो अन्हो ने अपनी दावते हक के सिलसिला में अलफ़तहुर्रब्बानी में इस तरह इरशाद फ़रमाया है:

ऐ लोगो! दावते हक कबूल करो, बेशक मैं दाई इलल्लाह हूँ कि तुमको अल्लाह के दरवाजे और उसकी इताअत की तरफ़ बुलाता हूँ अपने नफ़्स की तरफ़ नहीं बुलाता कि मुनाफ़िक ही अल्लाह की तरफ़ मखलूक को नहीं बुलाता बल्कि अपने नफ़्स की तरफ़ बुलाता है।

इस अजीम दावत के लिये आपने उन चंद हस्तियों को इंतखाब फ़रमाया जिनमें यह जौहरे काबिल मौजूद था चुनांचे उनमें गुले सर सब्द हजरत शैख़ शहाबुद्दीन उमर बिन मोहम्मद सुहरवरदी साहबे अवारिफ़ुल मआरिफ़ हैं। आप उनफ़वाने शबाब में उलूमे अक़लिया के बड़े दिलदादा थे और आपकी तबीयत का रूजहान मन्कूलात की तरफ़ बहुत कम था। यह हाल देख कर आपके अम्मे नामदार हजरत शैख़ अबू नजीब सुहरवरदी जिनके इरशाद का शोहरा दूर दूर तक फैला हुआ था और एक अजीम साहबे तरीक़त बुजुर्ग़ शुमार होते थे अपने नौजवान बिरादरज़ादा को हजरत की ख़िदमते बा सआदत में लेकर हाज़िर हुये और हुजूरे गौसियत में अर्ज किया कि मेरा यह बिरादर ज़ादा हर वक़्त माकूलात में मशगूल रहता है हर चंद कि मैं रोकता हूँ लेकिन मैं कामयाब नहीं होता। हुज़ूर शैख़ सुहरवरदी से पूछा तुमने इल्मुल कलाम में कौन कौन सी किताबें पढ़ी हैं शैख़ सुहरवरदी ने कुतुब आमोख़ता की नाम बनाम निशान दही कि। हुज़ूर गौसे आजम ने किताबों के नाम सुन कर अपना दस्ते मुबारक सुहरवरदी के सीना पर फ़ेरा हाथ का फ़ेरना था कि सीना माकूलात से बिल्कुल साफ़ हो गया। जो कुछ पढ़ा था सब का सब महव हो गया और वह दिल अल्लाह तआला ने जिसको नूरे हिदायत, ईक़ान और इल्मे लदुन्नी की सलाहियत से नवाज़ा था मारिफ़े इलाहिया से मामूर हो गया और काल हाल से बदल गया दिल



व दिमाग की दुनिया में एक इन्कलाबे अजीम बरपा हो गया और आप ने फौरन दामन गौसियत को थाम लिया। अल्लाह तआला ने शैख सुहरवरदी के जरिये कादरियत को दुनिया के गोशा गोशा में फैला दिया जिस का जिक्र बहुत इजमाल के साथ में यहां कर रहा हूं।

हजरत शैख सुहरवरदी का सिलसिलए तरीकत मशरिक और मगरिब तक बहुत जल्द फैल गया, शाम मिस्र, अरब, अजम, तुर्किस्तान और मावरा उन्नहर तक और इस बर्र सगीर पाक व हिन्द में सिन्ध, दिल्ली और मशरिक में मिदनापुर, बंगाल और आसाम सब इस सिलसिला के रौशन सितारों की ताबनाकियों से जगमगा उठे।

हजरत शैख शहाबुद्दीन के मुरीद खास शैख मुस्लेहुद्दीन अल मारुफ सअदी शीराजी ने शीराज में इस सिलसिला को फैलाया और अपनी जिन्दए जावेद कुतुब गुलिस्तां व बोस्तां के जरिया इन तामम मुल्कों में हिक्मत व मारफत के चिराग रौशन किए जहां फारसी ज़बान पढ़ी और समझी जा सकती थी।

जब फ़िल्नए तातार ने बग़दाद को तबाह करने के बाद शाम की तरफ अपना रुख किया तो सिलसिला कादरिया सुहरवरदीया के शैखे आजम हजरत अजीजुद्दीन बिन अब्दुस्सलाम की तहरीक पर मुजाहिदे आजम तुर्क अजीम रुकनुद्दीन सरस ने इस फ़िल्ना का मुकाबला एक आहिनी दीवार बन कर किया और सैले बला को रोका और शाम व अरब की सरज़मीन से उसका मुंह फेर दिया इस बतले हुर्ीयत और मुजाहिदे आजम ने शाम में तातारियों को जो पै दर पै शिकस्त दीं वह तारीख़ के सफ़हात पर सब्त हैं मिस्र में सलतनते अब्बासीया का क़याम उन्ही की बदौलत ज़हूर में आया।

सिलसिला कादरिया और सुहरवरदीया के एक और दरख़शन्दा आफ़ताब हजरत शैखुल इस्लाम शैख बहाउद्दीन ज़क़ीया मुल्तानी हैं जिन के जरिया सिन्ध व हिन्द के जुल्न कदे में ईमान व इरफ़ान के चिराग़ रौशन हुए और इस्लाम की रौशनी से यह सियाह ख़ाने जगमगा उठे आप की सई से ऊच और मुल्तान इस आफ़ताब की रोशनी से मुनव्वर हैं।

बंगाल की वह सर ज़मीन जो कुफ़ व शिर्क से सियाह ख़ाना बनी हुई थी वहां इस्लाम के पहले मुबल्लिग़ हजरत शैख जलालुद्दीन तबरेजी सुहरवरदी हैं हजरत शैख जलालुद्दीन शैखुश्शुख़ हजरत सुहरवरदी के ख़लीफ़ा आजम थे।

ऊच में इसी सिलसिला का वह आफ़ताब गुरुब हुआ जिसका नाम नामी हजरत सय्यद जलाल सुख़ सुहरवरदी है जिन के साहबज़ादे हजरत शैख सय्यद अहमद कबीर बुख़ारी थे। उन्होंने इस्लाम की इशाअत में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया शाह जलाल मुजर्रद जिन्होंने सिलहद में इस्लाम की शमा फ़रोज़ां की आप ही के नवासे हैं।

हजरत ख़्वाजा हमीदुद्दीन नागौरी भी इसी ख़ानवादा सुहरवरदीया की एक शमए फ़रोज़ां हैं जिन्होंने हिन्द के मगरिबी हिस्सा में इशाअते इस्लाम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। अलगरज हिन्दुस्तान और दूसरे ममालिक में सुहरवरदी सिलसिला को जो क़बूले आम और अजीम तब्लीगी कामयाबियां हासिल हुई वह तमाम तर हजरत सय्यदना शैख अब्दुल कादिर जिलानी रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो की दुआ की बरकात हैं इस ख़ानदान में आप के लुत्फ़ करम से सदहा फ़ुक्राए कामिल और दरवेशाने मुख़्लिस और मुबल्लेगीने इस्लाम पैदा हुए कि आज भी यह



आफ़ताब इस बर्रें सगीर पाक व हिन्द में अपनी तमाम तर ताबानियों के साथ फरोजां है।

इस सिलसिला सुहरवरदीया के अलावा भी कादरियत के आफ़ताब ने कुफ़्र की तारीक रातों में उजाला फ़रमाया और आप से इस क़दर सलासिल तरीक़त जारी व सारी हुए कि आज भी दुनिया में जहां जहां मुसलमान आबाद हैं वहां यह सिलसिला ज़रूर मौजूद है। हर चन्द कि आप हंबली फ़िक्ह के पैरु और उस के शारेह थे आपकी अज़ीम तसनीफ़ गुनियतुत्तालीब तरीकुल हक़ फ़िक्हे हंबली पर एक मुस्तनद क़ितबा है लेकिन चूंकि आप महज़ इस्लाम के दाई थे और किताब इलाही और सुन्नते मुहम्मदी हज़रत गौसे आजम के दीन व मज़हब, फ़िक्ह व नज़र और वाज़ व इरशाद का मरकज़ व महवर था इस लिए आप की अज़मत का सिक्का हन्फियों के दिलों पर इस तरह बैठा हुआ है जिस तरह हंबलियों के दिलों पर, बल्कि मैं तो यह कहने में बाक नहीं करूंगा कि इस बर्रें सगीर पाक व हिन्द में हन्फी जिस कसीर तादाद में आप के गुलामों में शामिल हैं और आप के सलासिल हन्फी बुजुर्गों में जिस क़दर पाए जाते हैं वह हंबलीयों से कहीं ज़्यादा हैं।

हज़रत का तरीका एहसान व तालीम व तल्कीन भी तमाम तर किताब व सुन्नत पर मबनी व मुनहसर है इस में न फलसफ़े कलाम के ग़वामिज़ व रमूज़ हैं और न वहदतुल वजूद और वहदतुश्शहूद के मबाहिस हैं हज़रत का क़ल्ब नूरानी सोज़, यकीन, हुज़ूर और शहूद और इरफ़ाने इलाही है और सुन्नते नबी उसका महवर व मरकज़ है यही बाइस है कि चार दांगे आलम में आप का डंका अब भी बज रहा है।

कादरियत के बहुत से सलासिल आप की औलाद अमज़ाद से जारी व सारी हुए जो फ़ुक्हा कादरियत कहलाते हैं उर्फ़ आम में उन में से हर एक नकीबुल अशराफ़ कहलाता है।

## हज़रत गौसे आजम की इज़्दवाजी जिन्दगी

हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मुख्तलिफ़ औकात में चार शादियां कीं और उन चारों अज़्वाज से आप की औलाद पैदा हुई। औलादे ज़कूर के सिलसिले में आप के सवानेह निगार मुख्तलिफ़ुल ख़्याल हैं चुनांचे मौलाना अब्दुल अलीम रक़म तराज़ हैं कि आपके बीस औलादे नरीना (फ़रज़न्द) और उन्नीस लड़कियां पैदा हुईं लेकिन जब उन्होंने तफ़सील बयान की तो लड़कियों की तादाद सिर्फ़ 16 लिखी है और किसी लड़की का नाम तहरीर नहीं किया है। इस सिलसिला में सब से ज़्यादा मुस्तनद बयान हज़रत पीर ताहिर अलाउद्दीन अलकादिरी अलजीलानी इब्ने नकीबुल अशराफ़ महमूद हुस्सामुद्दीन कादरी जो ख़ानदाने गौसिया के एक ख़ुदा परस्त, दीनदार फ़रज़न्द हैं और पाकिस्तान में जिनके मुरीदान बा सफ़ा की एक ख़ासी तादाद मौजूद है हज़रत शैख़ ताहिर अलाउद्दीन, हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल कादिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की चौदहवीं पुश्त में हैं और हज़रत शैख़ सय्यद अब्दुल अज़ीज़ की औलाद से हैं जो हज़रत गौस पाक के दूसरे फ़रज़न्द हैं इस सिलसिला में सबसे ज़्यादा मुस्तनद कौल आप का हो सकता है।

हज़रत शैख़ सय्यद ताहिर अलाउद्दीन साहिब अपनी तानीफ़ तज़किरा कादरिया (मत्बूआ इस्तिक्लाल प्रेस लाहौर शास करदा हाल दरबारे गौसिया 1962 ई.) में ब उनवान "आप की औलाद अहले बैते मुतहहरा के अस्माए गरामी" के तहत फ़रज़न्दाने गरामी के अस्मा इस तरह तहरीर फ़रमाते हैं।



1-अस्सय्यद अशशैख हसीबुन्नस्ब अल इमाम अलमुक्तदा हजरत अब्दुल रज्जाक कादरी अलजीलानी। विलादत 525 हि. वफात 653हि.

2-हजरत अब्दुल अजीज कादरी अलजीलानी रजियल्लाहो तआला अन्हो विलादत 534, हि० वफात: 602 हि०

3-हजरत अब्दुल जब्बार वफात 575 हि०

4-हजरत अब्दुल वहहाब विलादत 523 हि०, वफात 553 हि०

5-हजरत अब्दुल गफ्फार

6-हजरत अब्दुज गनी

7-हजरत सालेह

8-हजरत मुहम्मद वफात 600 हि०

9-हजरत शम्सुद्दीन

10-हजरत इब्राहीम वफात: 593हि०

11-हजरत यहया विलादत:550हि०, वफात: 600 हि०

कुल ग्यारह फरजन्द और एक दुख्तर नेक अख्तर सय्यदा जनाबा फातिमा रजीयल्लाहो तआला अन्हा। कुल औलाद चौदह नफूसे कुदसिया।

इस सिलसिला में मजीद वजाहत इस तरह फरमाई है।

इनमें से सिर्फ तीन हजरात सय्यदना अब्दुल रज्जाक, सय्यदना अब्दुल अजीज, सय्यदना इब्राहीम रजीयल्लाहो तआला अन्हुम की औलाद हुई जो बगदाद शरीफ के अलावा दीगर अतराफ व अक्नाफ में भी फैली हुई है। इस औलाद पाक में से कुद्देस सिर्रहुल अजीज हजरत गौसे पाक के साहबजादे हजरत शैखुल मशाईख हसीबुन नसब इमामुल मुक्तदा साहिबुल मौला अब्दुल अजीज साहब ज्यादा इल्म व फज़ल, रजा व तवक्कुल अदब व आदाब, जुहद व तक्वा में मशहूर हुए", (तज्किरा कादरिया स.30,31)

शहजादा दारा शिकोह सफीनतलु औलिया में लिखते हैं:-

1-हजरत गौसुस्सकलैन के दस साहबजादों में पहले शैख सैफुद्दीन अब्दुल वहहाब कुद्देस सिर्रहु हैं माह शाबान 512 हि. में विलादत हुई और 25 शव्वाल 603 हि. में वफात पाई आप का मजार बगदाद में है।

2-शैख शफ़ुद्दीन ईसा कुद्देस सिर्रहु हैं आप इल्मे तसव्वुफ़ पर मशहूर किताब जवाहिरुल असरार के मुसन्निफ़ हैं आप की वफात 573 हि. में मिस्र में हुई।

3-शैख शम्सुद्दीन अब्दुल अजीज कुद्देस सिर्रहु आप सन्जार (संजर) की तरफ़ हिजरत फरमा गए थे और वहीं सकूनत इख्तियार फरमा ली।

4-शैख ताजुद्दीन अबू बकर अब्दुल रज्जाक कुद्देस सिर्रहु रिसाला जिलाउल खातिर जो हजरत गौसे आजम के मलफूजात हैं आप की तसनीफ़ है आप का मजार बगदाद शरीफ़ में है।

5-हजरत शैख अबू इसहाक इब्राहीम कुद्देस सिर्रहु आप की विलादत 528 हि. और वफात 6 शाबान 633 हि. में हुई आप का मजार हज़ूर गौसे पाक के मजार के करीब है।

6-हजरत शैख अबूल फज़ल मोहम्मद कुद्देस सिर्रहु आप की वफात 27 सफ़र 587 हि. में हुई आपका मजार भी बगदाद में है।



7-हजरत शैख अबू जकरिया यहया कुद्देस सिर्रहु आप की विलादत 6 रबीउल अव्वल 550 हि. और वफात 14 शाबान 600 हि. में हुई आप का मजार भी बगदाद शरीफ में हजरत शैख अब्दुल वहहाब के मजार के करीब वाकेअ है।

8-हजरत शैख अबू नसर मूसा कुद्देस सिर्रहु आप की विलादत 529 हि. और वफात जमादिल उखरा 600 हि. में दिमश्क में हुई और आप वहीं मदफून हुए।

शहजादा दारा शिकोह ने सिर्फ इन्ही आठ फरजन्दों का जिक्र किया है बाकी दो साहबजादों का जिक्र नहीं किया।

आफताबुद्दीन अहमद फुतूहुल गैब के अंग्रेजी तर्जमा के दीबाचा में तहरीर करते हैं कि "हजूर सय्यदना गौसुल आजम ने 52 साल की उम्र तक मुतअहहिल जिन्दगी इख्तियार न फरमाई उसके बाद सुन्नते नबी के ख्याल से आपने मुख्तलिफ जमानों में चार शादियां कीं और उन चारों अजवाज से आप के यहां 27 साहबजादे और 22 साहबजादियां पैदा हुई उन साहबजादों में से सिर्फ चार साहबजादे मशहूर हुए (1) हजरत शैख अब्दुल वहहाब (2) हजरत शैख ईसा (3) हजरत शैख अब्दुल रज्जाक और (4) हजरत शैख मूसा। (दीबाचा फुतूहुल गैब अंग्रेजी तर्जमा स:11)

लेकिन जैसा कि मैं पहले तहरीर कर चुका हूं कि इस सिलसिला में सब से ज्यादा मुस्तनद बयान जनाब शख ताहिर अलाउद्दीन साहब का है, जो हजूर गौसे आजम की चौदहवीं पुस्त में से हैं।

## हजरत सय्यदना अब्दुल कादिर जीलानी के मामूलात

आप हफ्ता में तीन मर्तबा अवामी मज्लिस से खिताब फरमाया करते थे और हर रोज सुबह और सेह पहर के वक्त आप तफसीर, हदीस और सुन्नते नबी का दर्स दिया करते थे। जोहर की नमाज के बाद आप फतवे का अहम काम अजाम दिया करते या दूर दराज के शहरों और मुल्कों से जो कुछ सवालात आप की खिदमत में आया करते थे उनके जवाबात तहरीर फरमाते।

आपके साहबजादे हजरत अब्दुल रज्जाक इरशाद फरमाते हैं कि हजरते वालिद माजिद ने तीस साल तक यानी 528 हि. से 558 हि. तक दर्स व तदरीस के साथ साथ इफ्ता का शग्ल जारी रखा। मसाइल फक्ही पर ऊबूर का यह आलम था कि इस्तिखराजे मसाइल के लिए आप ने कभी कुतुब से मदद नहीं ली। आप जो जवाब लिखते वह कलम बरदाश्ता लिखते आप इमाम शाफई और इमाम हंबल के मजहब पर फतवा दिया करते थे। हर रोज मगरिब की नमाज से कब्ल आप गुरबा में खाना तक्सीम फरमाते और नमाजे मगरिब के बाद खाना खाने के लिए बैठ जाते और अपने कुर्ब व जवार के ऐसे तमाम लोगों को खाने में शरीक फरमाते जो नादार होते। इशा की नमाज के बाद आप मज्लिस से उठ जाते और अपना ज्यादा वक्त कुरआन खानी और यादे इलाही में सर्फ फरमाते।

## हजरत का तरीका तल्कीन व इरशाद:

हजरत के मवाइज दिलों पर बिजली की तरह असर करते थे, आपका अन्दाजे बयान ऐसा दिल नशीन और मोअरिसर होता था कि दिलों में इन्कलाब पैदा हो जाता था आप की को मज्लिस ऐसी न थी जिस में यहूद व नसारा इस्लाम न कबूल करते हों और बदकार व बद आमाल



मुसलमान आप के दस्ते हक परस्त पर ताइब न होते हों, हर मज्लिस में हजारों फासिदुल एतकाद अपने ग़लत अकाइद से तौबा करते और हज़रत की रहबरी से सिराते मुस्तकीम पर आ जाते।

आप की मज्लिस में छोटे बड़े, गरीब व अमीर और आका व गुलाम की कोई तख्सीस नहीं थी बादशाह और वज़रा आप की मज्लिस में नियाज़ मन्दाना हाज़िर होते और बा अदब बैठते आप को जो कुछ फ़रमाना होता था बे धड़क इरशाद फ़रमाते, सलातीने वक़्त पर कड़ी से कड़ी तन्कीद की जाती लेकिन वह उसी अदब और सुकून के साथ उसको सुनते जिस तरह दूसरे अवामुन्नास। चुनांचे उन मजालिस में अक्सर व बेशतर इस तरह से आम तन्कीद फ़रमाते।

“ऐ इल्म व अमल में ख़यानत करने वालो। तुम को उन (खुदा रसीदा बुजुर्गों) से क्या निसबत, ऐ अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मनों! ऐ अल्लाह के बन्दों के डाकूओ, तुम खुले जुल्म और खुले निफ़ाक़ में मुब्तला हो, यह निफ़ाक़ कब तक।

ऐ आलिमों! ऐ ज़ाहिदो! शाहों और सुलतानों के लिए तुम कब तक मुनाफ़िक़ बने रहोगे ताकि उनसे दुनिया का माल व ज़र, शहवात व लज़्ज़ात हासिल करते रहो। तुम और अक्सर शाहाने वक़्त अल्लाह के माल और उसके बन्दों के मुताल्लिक़ ज़ालिम और खाइन हो।

बारे इलाहा— मुनाफ़िकों की शौकत तोड़ दे और उन को ज़लील फ़रमा। उनको तौबा की तौफीक़ दे और ज़ालिमों का क़िला क़मा फ़रमा दे ज़मीन को उनसे पाक करदे या उन की इस्लाह फ़रमा। (आमीन)

“ऐ बादशाहो! ऐ गुलामों! ऐ ज़ालिमों और ऐ मुनसिफ़ो ऐ मुनाफ़िकों और ऐ मुख़्लिसो! दुनिया एक महदूद वक़्त है और आख़िरत ग़ैर मुतनाही मुददत तक है, अपने मुजाहिदे और जुहद से जुमला मासिवा अल्लाह को छोड़ो, ग़ैर से तलब को पाक करो जिस ने दुनिया के अमीरों से तमा या ख़ौफ़ को दिल में जगह दी वह मवहहिद या नाइचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम होने का दावा नहीं कर सकता क्योंकि ख़ालिक़ के बदले मख़लूक़ से उम्मीद व ख़ौफ़ रखना शिर्क़ है।”

ऐ मुनाफ़िको ऐ मख़लूक़ और अस्बाब की परस्तिश करने वाले हक़ तआला को भुलाने वाले गर्दन झुका फिर तौबा कर उसके बाद इल्म सीख और अमल कर और मुख़्लिस बन वरना हिदायत न पाएगा।”

तुम रमज़ान में अपने नफ़्सों को पानी पीने से रोकते हो और जब इफ़्तार का वक़्त आता है तो मुसलमानों के खून से इफ़्तार करते हो। उन पर जुल्म करके जो माल तुम ने हासिल किया उसको निगलते हो।”

ऐ लोगो! अफ़सोस कि तुम सैर हो कर खाते हो और तुम्हारे पड़ोसी भूके हैं और फिर तुम यह दावा करते हो कि हम मोमिन हैं। तुम्हारा ईमान सही नहीं। देखो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने दस्ते मुबारक से साइल को दिया करते थे और अपनी ऊंटनी को खुद चारा डालते थे और उसका दूध दूहते और अपने कमीज़ आप सिया करते थे तुम इन की मुताबेअत का दावा कैसे करते हो हांलाकि अक्वाल व अफ़आल में उन की मुख़ालिफ़त कर रहे हो।

(इक़तिसाबात अज़ मजालिस फ़ुतूहर्ब़ानी)



हुजूर सय्यदना गौसे आजम शख्सी सलतनत गैर शरई मलूकीयत और अमारत को हराम जानते थे बादशाहों और अमीरों की ताजीम व तकरीम को शिर्क खयाल फरमाते थे। उन से कभी नहीं मिलते थे मगर बादशाह बड़े इसरार से हाजिरी की दरख्वास्त करते, जब यह हाजिर होते तो हजरत मकान के अन्दर तशरीफ ले जाते थे और जब यह आकर बैठ जाते उस वक्त आप मज्लिस में तशरीफ लाते (ताकि बादशाह के लिए ताजीमन उठने का सवाल पैदा न हो) इसी तरह हजरत गौसे आजम बादशाहों की बैतुल माल को ग़सब किया हुआ माल समझते थे, और बादशाहों और अमीरों को अल्लाह के माल का लूटने वाला और डाकू समझते थे। आप उनको बंदगाने खुदा का खाईन खयाल फरमाते थे। आप के मवाइज़ में जा बजा ऐसी सराहतें हैं और सलातीन व उमरा से खिताब हैं फुतूहुर्रब्बानी में खास तौर पर ऐसे खुतबात व मवाइज़ मौजूद हैं।

## हजरत गौसुसुक्लैन की तहरीके इसलाह व दावते जिहाद

### छठी सदी हिजरी और आलमे इस्लाम की अब्तरी व बद हाली

इस सवानेह मुक़ददस के आगाज़ में मुख्तसर तौर पर मैंने पांचवीं और छठी सदी हिजरी की उन तबाह कारियों और बरबादियों का जिक्र किया है जिन्होंने अरब, इराक, शाम, और मिस्र को तह व बाला कर रखा था। आलमे इस्लाम में क़यामते सुगरा बरपा थी अमन व अमान रुखसत हो चुका था हर तरफ़ अफ़रा तफ़री का आलम था। खास तौर पर छठी सदी हिजरी एक बहुत ही पुर आशोब और पुर फ़ितन सदी गुज़री है। तमाम आलमे इस्लाम सियासी इन्तेशार की ज़द में था। बड़े बड़े फ़िक्की और इल्मी बुहरान आए और अच्छे अच्छों के पैर उखड़ गए। बग़दाद जिस को कभी आलमे इस्लाम में मर्कज़ीयत का शरफ़ हाज़िल था, उसकी मर्कज़ीयत रू बा ज़वाल थी। सियासी इन्तेशार और इक्तेदार की कशमकश ने तवाइफ़ुल मलूकी की सूरत इख़्तियार कर ली और इस तवाइफ़ुल मलूकी ने इस्लाम की अज़ीम सलतनत के हिस्से बख़रे कर दिए थे।

बग़दाद की मर्कज़ीयत वैलिमियों, सामानियों, सलजूकीयों और ग़ज़नीयों के दर्मियान घर कर एक ज़स्दे बे रुह बन गई थी मज़कूरा सलतनतें आपस में जोउल अर्ज़ के बाइस दस्त व गिरेबां थीं ख़वारिज़्म शाहीयों और सामानियों और सफ़ारियों ने जंग व जदल का बाज़ार गर्म कर रखा था। शाम की सर ज़मीन फ़ातमीने मिस्र के ज़ेरे नगीं आ चुकी थी। सर ज़मीने हिजाज़ को कभी फ़ातमियों को लब्बैक कहना पड़ता और कभी अब्बासीयों को।

इस सियासी इन्तेशार ने मर्कज़ीयत के तार व पौद इस तरह बिख़ैर दिए थे कि ग़ैर मुस्लिम हमला आवरों को अपनी नाकाबिले फ़रामोश शिकस्तों का इन्तेक़ाम लेने का इससे बेहतर और कोई मौक़ा नहीं मिल सकता था चुनांचे जब इस्लाम की अज़ीमुश्शान सलतनत मुतअददिद सरहदों में तक्सीम हो गई तो वस्त एशिया के खूख़ार हमला आवर यानी तातारी अपनी हवस मुल्क गोरी के लिए आगे बढ़े और ख़वारिज़्म शाहीयों का नाम सफ़हए हस्ती से मिटा दिया।

यहूदी और नसरानी हुक्मरां सलीबी जंग का जोर शोर से एहतमाम करने लगे और आफ़ताबे



गौसियत के गुरुब होते ही तातारियों के हाथों बगदाद पर जो कुछ गुजरी वह तारीख कभी फरामोश नहीं कर सकती और सलीबी सूरमाओं ने अरजे फिलिस्तीन व शाम के अमन व अमान को जिस तरह तह व बाला किया, वह एक तारीखी हकीकत है।

इस सियासी अब्तारी और सियासी मर्कजीयत के पारा पारा हो जाने से आलमे इस्लाम के इक्तेदारे आला को यह नक्सान पहुंचा की मुसलमान एक ऐसी ताकत न रहा जो गैर कौमों को अपने किरदार व अखलाक और ज़बू ज़िहाद से मरऊब, खौफ़ ज़दा और उनके अज़ाइम को मुतज़लज़ल कर दिया करता था, जो आलाए कल्मतुल हक के वक़्त मौत से बेख़तर खेलता था। वह तलवार जो गैरों के लिए वक़फ़ थी अब उसकी तेज़ी अपनों पर आजमाई जा रही थी इस अफरा तफ़री और तवाइफ़ुल मलूकी ने अखलाकी हालत को भी तबाह कर दिया। वही रज़ाइल अखलाक जो गैर मुस्लिमों की तबाह कारियों का बाइस और उनकी रुसवाई का सबब बने हुए थे अब मुसलमानों की शान बन गए थे। रियाकारी, खुदगर्जी, मकर व फ़रेब, हिंस व तमा, बुज़दिली, खुशामद ख़ियानत और ज़िल्लत उनका शेआर बन गए। इक्तेदार परस्ती और चन्द अफ़राद की बाला दस्ती ने नई नई साजिशों को जन्म दिया व हैसियत मजमूई न कोई इज़्तेमाई मक्सद था और न कोई मुश्तरका नस्बुल ऐन। मज़हब से बेगानगी एक पसन्दीदा सिफ़त बन गई। शैफ़तगी पहली थी उसकी जगह बे ताल्लुकी ने ले ली और नौबत यहां तक पहुंच गई कि इल्म अमल के बजाए सिर्फ़ चन्द किताबों के पढ़ने तक महदूद व मुन्हसर हो गया। किताब व सुन्नत के मौजूआत के बजाए फ़लसफ़ीयाना मोशगाफ़ियों को जन्म दिया गया और उसके बानी हुए जो अपने अकाइदे फ़ासिदा की इशाअत के लिए ऐसे मौका के इन्तेज़ार में थे इल्मुल कलाम के निकात अदबी मजलिसों की जान बन गए और फ़लसफ़ा व कलाम के मबाहिस व मौजूअ पर मुनाज़रे और कज बहसियां अदब परवरी और अदब नवाज़ी का निशान करार पाए। चुनांचे तारीख़ शाहिद है कि मामून रशीद के दरबार में खुल्के कुरआन पर जो मुबाहसे और मुनाज़रे हुए वह किस दीनी ख़िदमत में शुमार नहीं हो सके बल्कि इसके दूर रस मुज़िर नताइज निकले।

शददाद तो अपनी जन्नत इरम के बाइस मुसलमानों में मतरुद व मरदूद ठहरा लेकिन एक होशमन्द बातिनी ने अलतमूत में एक जन्नत बनाकर आलमे इस्लाम में अजीम फ़िल्ना बरपा कर दिया, हज़ारों लाखों मुसलमानों को गुमराह किया, मशाहीरे इस्लाम तह तेग़ हुए। मुतज़ला और अशाइरा के मकातिबे फ़िक्र की बड़ी धूम धाम से बिना पड़ी और उस बेदीनी की रौ में ख़ूब परवान चढ़े। नतीजा ज़ाहिर था कि इशराकी और बातिनी रमूज़ और उन पर नुक्ता आफ़रीनियों ने इस्लामी तसव्वुरात और बुनियादी मुसल्लिमात तक को नज़रों से ओझल कर दिया, मैं इस सिलसिला में ज़्यादा तफ़सील में जाना नहीं चाहता कि मैं इब्तेदाई सफ़हों में इस पर कदरे तफ़सील से लिख चुका हूं। मुख़्तसर यह कि मुस्लमानों के तमददुनी निज़ाम के तार व पौद इस तरह बिखर गए कि फिर उनकी शीराज़ा बन्दी न हो सकी।

हमारे उलमा व फ़ुज़ला उन इल्मी बहसों में उलझे हुए थे, उमरा व अमाइद और सलातीन मुल्क गीरी की हवस का शिकार थे और जब वह इस शिकार के लिए उठते तो हर जुल्म रौ और हर सितम मबाह बल्कि ऐने इन्साफ़ बन जाता था अब सिर्फ़ एक ही चारा कार बाकी रह गया था कि इस तबाह हाल उम्मत में एक ऐसा गरौह पैदा हो जो सोने वालों को जगाए, गुम करदा राहों को रास्ता पर लगाए और किताब व सुन्नत का अहया करे, ज़ाहिर है कि यह काम ऐसी



जमाअत अंजाम दे सकती थी और वही अफराद उस नाव का पार लगा सकते थे जिनको न दुनिया खरीद सकती थी और न सतवत व दबदबा शाही उनकी गर्दनों को अपने आगे झुका सकता था।

इस्लाहे नफ्स, तजकीया बातिन और अहयाए शरीअत (मोहम्मदी) की यह तहरीक हर चंद कि कई सदी पहले शुरू हो चुकी थी अगर हम तफहहुस से काम लें तो हजरत हसन बंसरी रजियल्लाहो अन्हो के अहदे मसऊद तक जा पहुंचते हैं गोया उस तहरीक का चश्मा हम को पहली सदी हिजरी में रवां मिलता है लेकिन कई सदी तक यह तहरीक मकामीयत के हुदूद में महदूद रही और एक आलमगीर तहरीक न बन सकी हर चन्द कि उन कुरुने माजिया में ईरान, इराक, और शाम व अरब में जाविए और खानकाहें मितती हैं जहां यह पाकीजा नुफूस अपने मुकददस फरीजा को सर अन्जाम दिया करते थे और हलका बगोशाने खानकाह अतराफ व अक्नाफ में अवाम की रहनुमाई का फरीजा अदा करते रहते थे लेकिन पांचवी और छठी सदी हिजरी में गुमराही और जलालत के साए इतने तवील व अरीज हो गए कि उन्होंने तमाम दुनियाए इस्लाम को अपनी लपेट में ले लिया उस वक्त इस अम्र की बड़ी शिद्दत से जरूरत थी कि इस्लाहे नफ्स, तजकीया बातिन और अहयाए दीने मतीन की यह तहरीक भी उतनी ही वुसअत पजीर हो जाए जितने जलालत व गुमराही के साए।

अल्लाह तआला ने यह अहम और दुशवार काम अपने महबूब और मुकददस बन्दे के जो उसके महबूब वाला मकाम सय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निसबते खास रखता था सुपुर्द फरमाया और उन्होंने बड़ी बेजिगरी और मर्दानगी से इसको अत्मा पर पहुंचाया, यही व मसनद नशीन फेकर ओवैसी और साहबे विसादा हसन बंसरी है जिसने दौरे पुर फितन और जुल्मत कदा सरासर शिर्क व कुफरान में उसवर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चिराग रौशन किया और उसकी जियाए ईमान अफरोज को एक गोशे से दूसरे गोशा तक पहुंचाया और आज तक हजरत गौसे आजम का रौशन किया हुआ वह चिराग दुनियाए इस्लाम के गोशा गोशा में जिया बार है, हजरत गौसे आजम का मसलक इरशाद व इस्लाह अपने मुआसरीन व अस्ताफ से बहुत ज्यादा मुख्तलिफ था आप का मसलक व नेहज उन हजरात से बिल्कुल जुदा था। आप अमीरों वजीरों और बादशाहों के दरबार दूरेबार से कभी वाबस्ता नहीं हुए आप ने गोशा नशीनी और खलवत गुजीनी, रहबानियत को कभी पसन्द नहीं फरमाया अगर आप ऐसा करते तो आप का मिशन कामयाब नहीं हो सकता था। आपने बड़ी जसारत और शहामत से अवाम व ख्वास के लिए अपनी मज्लिस के दरवाजे खोल दिए जो कुछ कहा बरमला कहा जो तनकीद की वह बराहे रास्त की, इशारों कनायों से कभी काम नहीं लिया, जो कुछ हिदायत फरमाई साफ साफ फरमाई। अमीरों, वजीरों और बादशाहों के किरदार व गुफ्तार पर बरमला तनकीद की, खुल्लम खुल्ला उनके अफआले जमीमा और किरदार ना पसन्दीदा को हदफे मलामत बनाया। जुल्म व तअददुदी पर बे धड़क उनको टोका और वाजेह तौर पर उनको सय्यात से रोका। आप जो कुछ फरमाते उसका इस्तिदलाल कुरआन व हदीस से फरमाते। तसव्वुफ के रमूज व निकात उमूमी मजालिस में कभी आप का मौजू नहीं रहे। आपने अपनी तर तव्वजोह इस अम्र पर मब्जूल फरमाई कि लोगों के दिलों में कुरआन व हदीस का जज्बए एहताराम बेदार किया जाए उनमें हर किरम की कुरबानी और जिहाद फी सबी लिल्लाह का जौक व शौक पैदा हो,



उमरा व सलातीन मुल्क गीरी की हवस से हट कर अदल व इन्साफ और अहयाए शरीअत के लिए करें जो कुछ करें उन को मजबूर किया कि उनकी जिन्दगी एक सच्चे और बा अमल मुस्लमान की जिन्दगी बने ताकि रईयत भी अन्नास अला दीना मलूकेहिम के मिसदाक सच्चे और बा अमल मुयलमान बन जाए। उलमा व जुहहाद को हिदायत फरमाई की वह हिर्स व आज से अपना दामन बचा लें और जुहद फरोशी का बाजार गर्म न करें। आलिमों को नसीहत फरमाई कि किब व रिया, नखुवत व गरुर से अपने दिलों को पाक करें चुनाचे अलल उमूम आप अपने वाज में यह अलफाज जरूर फरमाया करते थे:

यानी अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इत्तिबा करो और बिदअत न निकालो और इताअत करो ना फरमानी न करो सब्र करो बे सब्री मत करो, सख्ती के बाद आसानी और मुराद हासिल होने का इन्तेजार करो, न उम्मीद मत बनो। खुदा के जिक्र पर भरोसा रखो आपस में फूट मत डालो। गुनाहों से तौबा करके पाक बनो और अपने मौला के दरवाजे को मत छोड़ो।

आप ने अपने इन मवाइज व खुतबात में कभी रहबानियत और तर्क दुनिया का मशवरा अवाया। ख्वास को नहीं दिया बल्कि इस बात पर जोर दिया कि वह अपनी दुनिया की इस्लाह करें ताकि अच्छी आखिरत का हुसूल मुम्किन हो सके, मेरे इस बयान पर आप के खुत्बात व तकारीर (मौसूमा बेह मजालिस) शाहिद हैं जिन के मजमूआ अलफतहुर्रब्बानी और फुतूहुल गैब के नाम से आज भी मशहूर हैं। मैं अगर हर दो बलन्द पाया मजमूओं के मौजूआत को पेश करूं तो इस मुख्तसर सवानेह मुबारका के सफहात मुतहम्मिल नहीं हो सकते हैं। फुतूहुल गैब से चन्द मौजूआत पेश कर रहा हूँ ताकि अन्दाजा हो सके कि आप मुसलमानों की दुनियावी इस्लाह का किस कदर ख्याल फरमाते थे आप की नजर में मुसलमानों की कामयाबी व कामरानी का राज सिर्फ इत्तिबाए रसूल और अहकामे शरीअत की पाबन्दी में मुजमिर था इसी लिए आप ने दीन के अहया के लिए इस का राह को इख्तियार फरमाया जिसने बहुत जल्द सिर्फ बगदाद वालों ही की नहीं बल्कि इराक व अजम और शाम व हिजाज के मुसलमानों की भी काया पलट दी और यह आप ही के मवाइजे हसना और जोरे बयान का नतीजा था कि मुसलमानों की बे अमली खत्म हुई और उन में जज्बए जिहाद फी सबी लिल्लाह एक ऐसा सैल तन्दूर बन गया कि दुनिया ने बहुत जल्द मुजाहिदे आजम सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी और शहाबुद्दीन गौरी को कुफ्र व जलालत की ना काबिले शिकस्त कूवतों को पास पास करते देख लिया। हजरत गौसे आजम के मसलके रुशद व हिदायत में हर नुक्ता पर हम को यह जज्बए अमल और अहयाए शरीयत कार फरमा नजर आता है इस लिए गौसे आजम को उस वक्त मोहीयुद्दीन के लकब से नवाजा गया और आज तक हुजुरे वाला का यह लकबे जांफिजा दिलों पर नक्श है और कयामत तक सब्त रहेगा।

आइये अब चन्द उन्वानात मजालिसे हुजूर गौसे आजम के मकालात से पेश करूं जिन का मजमूआ फुतूहुल गैब के नाम से मौसूम है ताकि अन्दाजा हो सके कि हजरत सय्यदना गौसे आजम ने अहयाए दीन और इत्तेबाए शरीअत की किस कदर कोशिश फरमाई।



## फतूहुल गैब के चन्द उनवानात

- 1-मकाला अब्बल-मोमिन के लिए तीन चीजें जरूरी हैं
- 2-मकाला दोम-बेहतर कामों के लिए नसीहत
- 3-मकाला पंजुम-दुनिया का हाल और उसकी तरफ इल्तेफात न करने की ताकीद
- 4-मकाला दहुम-नफ़स और इसके अहवाल
- 5-मकाला सीज़दहुम-अहकामे खुदावन्दी की बजा आवरी
- 6-मकाला पांजदहुम-खौफ और रजा
- 7-मकाला नौज़दहुम-ईमान की कूवत और ज़ोअफ़
- 8-मकाला बिस्ते दोम-मोमिन और उसका ईमान
- 9-मकाला सी दरदम-मोहब्बते इलाही में कोई शिक नहीं
- 10-मकाला सी व पंजुम-तक्वा इस्तेयार न करने से हलाकत
- 11-चहल व शिम-मोमिन को अब्बल क्या काम लाज़िम है
- 12-मकाला पनजाह व सोम-खुशनूदीए इलाही तलब करने की ताकीद
- 13-मकाला पिन्जाह व नहुम-बला पर सब्र और नेमत पर शुक्र की ताकीद
- 14-मकाला शुस्त व चहारुम-मरगे अबदी और हयाते अबदी
- 15-मकाला हफ़ता दहुम-खुदा के साथ किस तरह रहे और किस मख़लूक के साथ किस तरह।

हुज़ूर सय्यदना गौसे आजम के मकालाते वाला का यह मज़मूआ अस्सी (80) मकालात पर मुश्तमिल है मैंने चन्द उनवानात पेश कर दिये हैं। फतूहुल गैब के मकालात के चन्द इक्तिबासात इन्शा अल्लाह आइन्दा औराक में ब सिलसिला तसानीफ़ हुज़ूर सय्यदना गौसे आजम पेश करूंगा।

हज़रत की दूसरी मशहूर तसनीफ़, अल फतहुर्रब्बानी है। इन तकरीर में जो मजलिस के उन्वान से मौसूम हैं हज़रत ने खास तौर पर उमरा और सलातीन से खिताब फरमाया है और उनकी बद अमालियों, रियाकारियों, शकावत और जुल्म व सितम पर उनको ललकारा है। अलफतहुर्रब्बानी हज़रत की 62 मजालिस या 62 खुतबात पर मुश्तमिल है यह खुतबात बड़े बड़े अवामी जलसों में दिए गए थे और हकीकत यह है कि अवाम के जहनी इन्केलाब और उन की सच्ची रहनुमाई में उन खुतबात का बड़ा दख़ल है।

यह था मुख़्तसर सा जाइज़ा हज़रत गौसे आजम रज़ियल्लाहो अन्हो के इरशाद व दावत का। अपने तो अपने गैरों यानी मुस्तशरेकीन ने भी आप की उन इस्लाही मसाई का जिक्र और उनका तआस्सुर और दिल नशीनी का एतराफ़ किया है।

हज़रत सय्यदना अब्दुल कादिर जीलानी की दावते इरशाद व जिहाद के सिलसिला में मुख़्तसरन मैंने अभी जिक्र किया, और इससे कब्ल आप की दावत तरीक़त व मारफ़त को मुख़्तसरन पेश कर चुका हूँ वहां मैंने एक चीज़ का जिक्र नहीं किया था यानी एक गौस की करामतें। हमारे ज़माने ही में नहीं बल्कि कुरुने माजिया में भी पीरे तरीक़त, कुतुब, अब्दाल व वली



उल्लाह की सवानेह हयात और उसकी जात सतूदा सिफात को जब तक करामतों से वाबस्त न किया जाए उसके मन्सबे वाला को मुकम्मल नहीं समझा जाता है। हर चन्द कि हूजूर गौ आजम से बहुत सी करामतों का जहूर आप के सवानेह निगारों ने बयान किया है और शरह बस्त के साथ उन पर रौशनी डाली है। इन सब का माखज़ आप के पहले सवानेह निगार अब्दु कादिर अश्शतूरी की बहजतुल असरार है जो आप के विसाल के सौ साल बाद लिखी गई थी। उन करामतों में तमाम तर करामतें हैरत अंगेज़ और मोहय्यरुल उकूल हैं और उनका सुदू हज़रत गौसे आजम जैसे वलीए कामिल और गौसे वक्त से ना मुम्किन नहीं। लेकिन इस में किसे वलीए कामिल का इरादा शामिल नहीं होता बल्कि जो कुछ होता है वह मन्शाए इलाही के तहत होता है। अल्लाह तआला उन को तमाम कायनात पर मुतसरिफ़ फ़रमा देता है। लेकिन मेरी नज़ में हज़रत गौसे आजम की तमाम करामतों को अगर एक पल्ला में रखा जाए और आप की उन एकदामात व मसाई मश्कूरा को दूसरे पल्ले में जो अहयाए दीन के लिए आप से जहूर में आई और शरीअत के तने बे जान में आपने दोबारा जान डाली। आप के मवाइज़ और आप की तकारीर ने हजारों भटके हुआँ को मंजिल पर पहुंचाया। हजारों मुनकरीने खुदा आप के दस्ते हक परस्त पर ईमान की दौलत से मुशरफ़ हुए तो क्या इससे बड़ी भी कोई करामत हो सकती है हरगिज़ नहीं। गौसे समदानी की यह सब से बड़ी करामत है कि उन्होंने जालिमों को उनके जुल्म पर टोका। अमारत व बादशाहत के दबदबा और सतवत से मरऊब न हुए और सलातीने वक्त को भी उसी तरह झिड़का जिस तरह एक आमी को, क्या इससे बड़ी भी कोई करामत हो सकती है कि जाबिरों और सरकशों ने अपने सरों को आप के सामने खम कर दिया। इस लिए मैंने आपकी उन करामात का जिक्र करना ज़रूरी नहीं समझा जो आम सवानेह उमरियों में मौजूद है। अकीदत केश उन सवानेह उमरियों से इस्तेफ़ादा कर सकते हैं।

## सिलसिला कादरिया

मसलके तसव्वुफ़ में किसी मुर्शिदे कामिल के हलकए इरादत में दाखिल होना उस सिलसिला में दाखिल होना कहलाता है और औराद व वज़ाइफ़ और मुजाहिदात के बाद अगर पीरे तरीक़त अपने किसी मुरीद को बैअत की इजाज़त अता फ़रमा देता है तो उसका इज़हार इस तरह किया जाता है कि मज्लिसे ख़ास में पीरे तरीक़त उसका ऐलान फ़रमाता है और अपना ख़िरका, जुब्बा या दस्तार उसको बतौर इज़हारे नियाबत अता फ़रमाता है यही नियाबत ख़िलाफ़त कहलाती है। और साहिबे ख़िलाफ़त ख़लीफ़ा। चुनांचे हज़रत शैख़ अब्दुल कादिर जिलानी को भी हज़रत शैख़ अबू सईद अल मुबारक अल मख़जूमी रजियल्लाहो अन्हो से ख़िरका शरीफ़ मिला था। हर चन्द कि आप को तसव्वुफ़ की तरफ़ रग़बत दिलान वाले हज़रत अबूल ख़ैर हम्माद दब्बास (शीरा फ़रोश) हैं जो अपने वक्त के निहायत मोहतरम और मशहूर सूफी थे और अपने सूफ़ियाना तक़दुस और मुजाहिदात के लिए अतराफ़ व अक्नाफ़ में मशहूर थे और जाहिर है कि हज़रत गौसुल आजम ने उनकी मोहब्बते बा बरक़त में जब ही कदम रखा होगा जब उनके कमालाते बातनी और सिफ़ाते जाहिरी से मुताअस्सिर हुए होंगे जब हज़रत अब्दुल कादिर ने हज़रत अबूल ख़ैर हम्माद दब्बास की सोहबत अख़्तियार की तो उस वक्त वह एक होशमन्द मुफ़्ती ज़र्फ़ निगाह मुफ़स्सिर, मुहददिस, फ़कीह और मुबल्लिग़ बन चुके थे ब ई हमा ख़िरका ख़िलाफ़त आप को जैसा



की अभी जिक्र किया गया हजरत शैख अबू सईदु अल मुबारक अल मखजूमि ने अता फरमाया और आप का सिलसिला हजरत अबू सईद ही के वास्ते से हजरत रिसालत पनाही सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक इस तरह पहुंचता है।

शजरए पेशवाई हजरत शैख अब्दुल कादिर जीलानी रजियल्लाहो तआला अन्हो

1-हूजूर सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

2-हजरत अली मुर्तजा कर्मल्लाहु वजहहु

3-इमाम आली मकाम हसन बसरी रजियल्लाहो तआला अन्हो

4-हजरत शैख हबीब अजमी रजियल्लाहो तआला अन्हो

5-हजरत शैख दाऊद ताई रजियल्लाहो तआला अन्हो

6-हजरत शैख मारुफ करखी रजियल्लाहो तआला अन्हो

7-हजरत शैख सिरी सिक्ती रजियल्लाहो तआला अन्हो

8-हजरत शैख जुनैद बगदादी रजियल्लाहो तआला अन्हो

9-हजरत शैख अबू बकर शिब्ली रजियल्लाहो तआला अन्हो

10-हजरत शैख अब्दुल वाहिद बिन अब्दुल अजीज रजियल्लाहो तआला अन्हो

11-हजरत शैख अबूल हसन करशी रजियल्लाहो तआला अन्हो

12-हजरत शैख अबू सईद मखजूमि रजियल्लाहो तआला अन्हो

13-हजरत शैख अब्दुल कादिर जीलानी रजियल्लाहो तआला अन्हो

बर्रे सगीर हिन्द व पाक में आप के सिलसिला में शजरए पेशवाई इसी तरह से मशहूर व मारुफ है लेकिन आप के सिलसिला और खानदान के अजीम फरजन्द शैख ताहिर अलाउद्दीन नकीबजादा जिन का जाविया और खानकाह कोइटा में मरकजी हैसियत रखता है अपनी तसनीफ 'तजकिरा कादरीया' में आप का शजरा पेशवाई इस तरह तहरीर फरमाते हैं -2

1-हजरत सय्यदुल अम्बिया सरवरे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

2-हजरत इमाम अमीरुल मोमेनीन अली इब्न अबी तालिब कर्मल्लाहु वजहहु

3-हजरत शहीदे करबला इमाम हुसैन रजियल्लाहो तआला अन्हो

4-हजरत सय्यद जैनुल आबेदीन रजियल्लाहो तआला अन्हो

5-हजरत सय्यद मुहम्मद बाकर रजियल्लाहो तआला अन्हो

6-हजरत सय्यद मुहम्मद जाफर सादिक रजियल्लाहो तआला अन्हो

7-हजरत सय्यद मूसा काजिम रजियल्लाहो तआला अन्हो

8-हजरत सय्यद अबूल हसन अली इब्न मूसा रजा रजियल्लाहो तआला अन्हो

9-हजरत शैख मारुफ करखी रजियल्लाहो तआला अन्हो

10-हजरत शैख सिरी सिक्ती रजियल्लाहो तआला अन्हो

11-हजरत शैख अबूल कासिम जुनैद बगदादी रजियल्लाहो तआला अन्हो

12-हजरत शैख अबू बकर अली रजियल्लाहो तआला अन्हो

13-हजरत शैख अबूल फज़ल अब्दुल वाहिद अलमुतबन्ना रजियल्लाहो तआला अन्हो

14-हजरत शैख अबूल फ़रह तरतूसी रजियल्लाहो तआला अन्हो



15-हज़रत शैख अबूल हसन अली बिन मुहम्मद अलतमरशी अल हंकारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

16-हज़रत शैख अबू सईद अलमुबारक अल मख़जूमी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

17-हज़रत शैख अब्दुल कादिर जीलानी कुद्देस सिरहूल अजीज

आप ने मुलाहिज़ा फ़रमाया कि अक्वल शज़रए पेशवाई में सरवरे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक हज़रत गौसे आजम बारह वास्तों से और इस शज़रए पेशवाई में सोलह वास्तों से पहुंचते हैं।

## हज़रत गौसे आजम का हलिया शरीफ़

हज़रत सय्यदना गौसे आजम रज़ियल्लाहो अन्हो के मुरीदे बा सफ़ा शैख मौकिफ़ुद्दीन तराना अल कुदसी फ़रमाते हैं कि हमारे शैख हज़रत मोहीयुद्दीन अबू मोहम्मद अब्दुल कादिर जीलानी नहीफ़ुल बदन, उनका क़दे मुबारक सुतवां था अबरू बारीक और बाहम पैवस्ता थे आपका सीना गंजीनए मारफ़त था कुशादा था, रेशे मुक़द्दस घनी तवील व अरीज़ और खुशनुमा थी। आप की आवाज़ बलन्द और दिल नशीन थी। (तज़्किरा कादरिया अज़ पीर ताहिर अलाउद्दीन साहब)

अल कौकबुज्जाहिर के मुसन्निफ़ सय्यद मोहम्मद अबूल हुदा आफ़न्दी, रिफ़ाई, इस सिलसिला में तहरीर फ़रमाते हैं।

शैखुल इस्लाम मोहीयुद्दीन हज़रत शैख अब्दुल कादिर जीलानी रज़ियल्लाहो अन्हो बदन के लाग़र और मोतवरिसत कामत थे आप का सीना कुशादा था और रेशे मुबारक तवील और अरीज़ थी आप का रंग गंदुमी था और अबरुयें मिली हुई थीं और आवाज़ बहुत बलन्द थी। आप खुश रफ़्तार थे।

## हज़ूर गौसे आजम के अख़लाक़ व आदात

आप बहुत ख़लवत पसन्द थे अपने मदरसा से सिवाए जुमा के दिन के कभी बाहर तशरीफ़ नहीं लाते थे और उस दिन भी आप सिर्फ़ जामे मस्जिद और रेबात के कहीं और तशरीफ़ नहीं ले जाते। रास्त गोई आप का शेवा था। उम्र भर में आप ने कभी झूठ नहीं बोला और आप की इस सिद्क मक़ाली पर आप के उन्फ़वाने शबाब का वह वाक़ेआ शाहिद है कि जब डाकूओं ने आप को घेर लिया और दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे पास कितना माल है तो आप ने साफ़ साफ़ कह दिया कि चालीस दीनार। कुरआन पाक की तरह आप ने जददे अमजद अहमदे मुजतबा सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहादीस के भी हाफ़िज़ थे हम्बली मज़हब थे और हनाबिला के शैख़े वक़््त।

आप निहायत सालेह और रकीकुल क़ल्ब हमेशा ज़िक्र व फ़िक्र में महव रहते थे शरीअत के सख़्ती से पाबन्दी फ़रमाते, ख़लवत गुज़ीनी, मुजाहिदा, मेहनत व मशक्कत, मुख़ालफ़ते नफ़्स, कम खोरी और कम ख़्वाबी आप का शेवा था। मदरसा के तदरीसी मन्सब की तफ़वीज़ और अवामी जलसों के ख़िताब से पहले जंगलों और बयाबानों में रह कर इबादत करना आप का मामूल था। ज़ुहद व रियाज़त के सिलसिला में सख़्त उमूर को अपने नफ़्स के लिए इख़्तोयार फ़रमाते थे। आप बहुत ही सखी और साहिबे अख़लाक़े करीमाना थे आप का कलाम बा आवाज़े बलन्द और ब



सुरअत हुआ करता था। नेक बात बताने और बुरी बातों से रोकने के सिवाए आप और किसी बात में नहीं बोलते थे।

आप का दस्तरख्वान बहुत वसीअ था लेकिन आप हमेशा बहुत कम गिजा इस्तेमाल फरमाते थे इसी तरह लिबास भी मामूली होता था आप हमेशा मेहमानों के साथ बैठ कर खाना तनावुल फरमाते थे और उस वक्त खाना पसन्द फरमाते जब कुरब व जवार के नादारों और जरूरत मन्दों की एहतियाज पूरी हो जाती। आप गुर्बा और मसाकीन के साथ बैठना पसन्द फरमाते थे। तलबा का आप के गिर्द हुजूम रहता था और आप हर एक से ऐसा इलतिफात फरमाते कि हर एक यही समझता कि हूजूर की नजरे खास उसी के साथ मखसूस है आप न कभी उमरा व सलातीन की ताजीम के लिए उठे और न कभी उनके दरवाजे पर तशरीफ ले गए न कभी उनके गालीचों और कालीनों पर कदम रखा और न कभी किसी अमीर व वजीर या सुलतान के साथ बैठकर खाना खाया। अगर किसी शख्स की कार बर आरी के लिए खलीफ़े वक्त को नामा तहरीर फरमाते तो सिर्फ़ इस कदर तहरीर फरमाते कि "अब्दुल कादिर तुम को इस बात का हुक्म देता है। तुम पर उसका हुक्म नाफ़िज़ और उस हुक्म की इताअत वाजिब है रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

### हज़रत सय्यदना गौसे आजम की तसानीफ़

इस सवानेह मुबारक के आगाज़ में आप पढ़ चुके हैं कि हज़रत गौसे आजम का जीलान से कतअ मुसाफ़त फरमा कर बग़दाद तशरीफ़ लाने का मकसद यही था कि तिशनगीए इल्म को बुझायें और कुदरत को आप से यह अजीम काम लेना था कि आप अपने इरशादात और खुतबात से गुम कर्दा राहों की रहबरी करना है चुनांचे जब आप बग़दाद तशरीफ़ लाए कि उस अहद में ममालिके इस्लामीया के अजीम शहरों में उसको मरकजीयत हासिल थी और यह शहर उलमाए मुतबहहरीन व मुहददेसीन का मरकज़ बना हुआ था। बग़दाद का मदरसा निज़ामिया की शोहरत दूर दूर तक फैल चुकी थी आप ने भी उसी मदरसा को इन्तेखाब किया और वहां जिन आसतज़ा किराम से आप को इस्तेफ़ादा का मौका मिला उनमें से हर एक सपहरे इल्म का एक ज़ौ फ़िशां आफ़ताब था चुनांचे आप के असातज़ा में शैख़ अबूल वफ़ा, अली बिन तुफ़ैल, अबू ग़ालिब, मोहम्मद बिन हसन बाक़ेलानी, अबू ज़क्रिया, यहया बिन अली तबरेज़ी, अबू सईद बिन अब्दुल करीम, अबूल ग़नाइम, मोहम्मद बिन अली बिन मोहम्मद, अबू सईद बिन मुबारक मख़जूमी रहमहुल्लाहु तआला अजमईन, काबिले ज़िक्र हैं। उनमें से बहुत से असातज़ा हज़रात मुतअददिद गिरांमाया किताबों के मुसन्निफ़ थे। यानी अल्लामा अबु ज़करिया तबरेज़ी, बाक़ेलानी वग़ैरह हज़रात मुतअददिद मज़हबी व अदबी किताबों के मुसन्निफ़ थे। आप ने आठ साल तक उन मशाहीर असातज़ा से कस्बे फ़ैज़ फ़रमाया और जब 496 हि. में आपने उलूम की तक्मील की सनद हासिल कि तो ममालिके इस्लामीया में कोई ऐसा आलिम न था कि आप से हमसरी का दावा कर सके।

तहसीले इल्म के बाद जब आपने अपने उस्ताद के मदरसा की तदरीसी ख़िदमात उन की फ़रमाइश पर कबूल फ़रमा ली तो आप के औकात ज़्यादा तर मदरसा में गुज़रने लगे लेकिन कुदरत को आप से जो काम लेना था अब उसका वक्त आ गया था आप के दर्स में अब तलबा का हुजूम होने लगा था और हर दूर दराज़ के शहरों से आप के पास फ़तवे आया करते थे और



आप का बहुत सा वक्त उन के जवाबात तहरीर करने में गुज़र जाता था लेकिन जब आप बग़दाद के अवाम व ख्वास, वहां के उमरा और रईसज़ादों की बिगड़ी हुई हालत और तबाह हाल मुआशरत मुलाहिज़ा फ़रमाते तो आप को सख्त तकददुर होता। आप चाहते थे कि अवाम व ख्वास को ख़िताब फ़रमायें लेकिन चूंकि फ़ारसी आप की मादरी ज़बान थी और अरबी कस्बी और बग़दाद में फ़ारसी ज़बान में वाज़ व तज़कीर का फ़ायदा मालूम। अरबी ज़बान में आप ख़िताबत से कतराते थे इस सिलसिला में अलकौकबुज्ज़ाहिर के मुसन्निफ़ से एक रिवायत नक़ल की है कि

शैख़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि बग़दाद में एक शख्स वारिद हुआ लोग उसको शैख़ यूसुफ़ हमदानी कहते थे और लोग उसके कुतुबे वक्त समझते थे वह रिबात में क़याम पज़ीर थे जब मैंने उनके बारे में सुना तो मैं भी रिबात की तरफ़ गया लेकिन मैंने उनको नहीं पाया। एक शख्स ने मुझे बताया कि वह रिबात के तह खाने में हैं शैख़ कहते हैं कि मैं उनसे मिलने के लिए वहीं तह खाना में पहुंचा जब उन्होंने मुझको देखा तो खड़े हो गए और मेरा हाथ पकड़कर अपने बराबर बिठाया और सब हाल ज़िक्र कर दिया और मेरी जो मुश्किलात थीं वह सब हल हो गई फिर उन्होंने मुझ से कहा कि ऐ अब्दुल कादिर लोगों को नसीहत कर और वाज़ सुना, मैंने कहा कि मैं अजम का रहने वाला हूं बग़दाद के फुसहा के सामने मैं क्या कलाम करूंगा उन्होंने कहा तुम ने कुरआन मजीद हिफ़ज़ किया है, इल्म फ़िक्ह, इल्म वसूल, तफ़सीर, हदीस और इल्म लुग़त, सर्फ़ व नहव वगैरह हासिल किया है। क्या यह तुम्हारा मनसब नहीं है कि लोगों को नसीहत करो (वाज़ सुनाओ) जाओ मिम्बर पर बैठो, और वाज़ कहो मैं तुम में दरख्ते कमाल की असल देख रहा हूं और करीब है कि वह नखले बार आवर होगा।

इस ताईदे गैबी के बाद आप से वह तज़बज़ुब रफ़ा हो गया और आप ने वाज़ कहना शुरू किया जिस की सराहत हम हज़ूर के मामूलात के सिलसिला में कर चुके हैं आप वाज़ में अन्वाए उलूम से कलाम करते थे और हर तरह के इल्मी निकात और असरार बयान करते थे। जब आप मिम्बर पर वाज़ के लिए तश्रीफ़ फ़रमा होते तो हाज़रीन में से कोई भी अदब के बाइस न खांसता था न खकारता था और जब आप वाज़ कहते कहते मिम्बर पर बैठने से खड़ा हो जाते और कल्मा ज़बान से अदा फ़रमाते तो उस वक्त लोगों में इज़्तेराब और बेकरारी शुरू हो जाती थी। हाज़रीन पर वज्द और हाल की कैफ़ीयत तारी हो जाती थी और यह वह हाल था कि भटके हुए अपनी मन्ज़िल को पहुंचते और ज़लालत में फंसे हुए दीन की रौशनी का मुशाहिदा करते और आप के दस्ते हक़ परस्त पर ताइब होते और इस्लाम कबूल करते इस कैफ़ीयत में आप जो कुछ कहना चाहते बेग़ैर किसी लिहाज़ के कहते। अमीरों, वज़ीरों, बादशाहों और ग़ासिबों को अलल ऐलान ललकारते और वह दम बख़ुद बैठे रहते, किसी की मजाल न थी, जो उस वक्त कुछ अर्ज कर सके। उस वक्त आप के लहजा में दरुश्ती पैदा हो जाती और अल्फ़ाज़ व मआनी का एक ऐसा दरिया मौजज़न हो जाता कि जो कुछ फ़रमाते दिलों पर नक़्श होता चला जाता इसी हाल में लोगों के दिली ख़तरात पर भी इशारे से फ़रमाते और कूव्वते कश्फ़ से फ़ौरन उन को मुख़ातिब फ़रमाते, ऐसे मौक़े पर हाज़रीन में से हर शख्स आप के जलाल या कमाल का मुशाहिदा करता, अल्लाह तआला ने अपने महबूब बन्दे को यह ख़ूबी अता फ़रमाई थी कि हज़ारों नफ़ूस के मजमा में आप की आवाज़ दूर व नज़दीक यक्सां पहुंचती और हर एक बक़दरे अहलीयत व सलाहीयत उन नसीहते जान अफ़रोज़ व ईमान परवर से इस्तेफ़ादा करता।



हजरत शैख अब्दुल हक साहब मुहददिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि हजरत गौसुस्सक्लैन की मजलिस वाज में चार सौ अफराद कदम दवात लेकर बैठ जाते थे और जो कुछ वह हजरत से सुनते थे लिखते जाते थे।

चुनांचे बहुत कम मुददत में हजरत गौसे आजम के मवाइज व इरशादात के दो अजीम मजमूअे 552 हि. तक मुरत्तब हो गए एक फुतूहुल गैब और दूसरा अलफतहुर्रब्बानी। इन दोनों मजमूओं के सिलसिला में मुक्त्तसरन पहले अर्ज कर चुका हूं। फुतूहुल गैब के मौजूआत को मैंने तफसील से गुजश्ता सफहात में जिक्र किया है। अलफतहुर्रब्बानी जो आप के मवाइज का मजमूआ है जो मुतअददिद मजालिस में तकसीम है उन मजालिस के मौजूआत भी नहीं अनिल मुनकर और अम्र बिन मारुफ हैं बाज मजालिस अखलाकी मौजूआत पर भी मुश्तमिल हैं। जैल में अलफतहुर्रब्बानी की चंद मुतफर्रिक मजालिस से इक्तेबासात पेश हैं:

ऐ बाशिन्देगाने बगदाद! तुम्हारे अन्दर निफाक ज्यादा और इख्लास कम हो गया और अक्वाल बिला आमाल बढ़ गए। तुम्हारे आमाल का बड़ा हिस्सा जसदे बे रुह है क्योंकि रुह इख्लास व तौजीह और अल्लाह व सुन्नते रसूलुल्लाह पर काइम रहने का नाम है। गफलत मत करो, अपनी हालत को बदलो ताकि राह पाओ।

ऐ सोने वालो! जाग उठो, बेदार हो जाओ, गफलत शिआरो जाग उठो। ऐ सोने वालो, जिस पर भी तुम ने एतमाद किया और जिससे तुम ने खौफ किया और तुम ने तवक्को रखी वह भी तुम्हारा माबूद है और नफा व नुकसान जिस पर तुम्हारी नजर पड़े और तुम यूँ समझो कि हक तआला उसके हाथों उस नफा व नुकसान का जारी रखने वाला है तो वह तुम्हारा माबूद है। अन्करीब तुम को अपना अन्जाम नजर आ जाएगा।

ऐ मौलवीयो! ऐ फकीहो, ऐ जाहिदो, ऐ आबिदो, ऐ सूफीओ! तुम में कोई ऐसा नहीं जो तौबा का हाजत मन्द न हो, हमारे पास तुम्हारी मौत व हयात की तमाम खबरें हैं। वह मोहब्बते सादिक जिस में तगय्युर न आए वह मोहब्बते इलाही है वही है जिस को तुम अपने कल्ब की आंखों से देखते हो और वही मोहब्बते रुहानी सिद्दीकों की मोहब्बत है।

अलफतहुर्रब्बानी की यह तमाम बासठ मजालिस इन ही रुश्द व हिदायत का मजमूआ हैं आप ने वक्त की दुखती रग पर दस्तो मुबारक रखा था दिलों के चोर आप ने जाहिर फरमाए थे इस लिए आप जो कुछ फरमाते थे वह दिल नशीं होता था आप का अन्दाजे बयान इस कदर मोअस्सिर और पुर हैबत होता था कि दिल लरज उठते थे जिस्मों पर रअशा तारी हो जाता था और उनपर दरे तौबा खुल जाता था।

## अल फतहुर्रब्बानी का अन्दाजे बयान और इशाअते अव्वल

अलफतहुर्रब्बानी का तमाम तर अन्दाजे बयाने खतीबाना है एक वालहियाना जोश है जो हर नुक्ता में मौजजन है छोटे छोटे जुम्ले वसीअ मआनी और मफहूम लिए हुए हैं इस्तेआरह और तश्बीहा से खाली। जो कुछ कहते हैं और वाशिगाफ फरमाते हैं। इजाज व इब्हाम को उन में जगह नहीं देते बयान में एक अजीब व गरीब दबदबा और तन्तना है अलफाज का शोर व जोर बताता है कि उन का कातिल एक ऐसी हस्ती है जो जमाना परसती से बे नियाज हो कर सदाकत के रास्ते पर गामजन है।



मुझे अफसोस है कि इस मुख्तसर सवानेह हयात में इस कदर गुंजाइश नहीं कि मैं हज़ूर सय्यदना गौसे आजम की इनशा और ज़बान की बारीकियों और उनकी खुसूसीयात को बयान कर सकूँ और न मैं अपने कलम में यह कुदरत पाता हूँ कि उन कमालात का इस्तिकसा कर सकूँ जो सय्यदना गौसे आजम की इनशा में पाए जाते हैं सिवाए इसके कि "जो दिल से जो बात निकलती है असर रखती है" हज़रत गौसे आजम जो कुछ फरमाते थे दिली जोश और ताईदे इलाही से फरमाते थे इस लिए आप का कलाम मोअस्सिर और दिल नशीन था।

## अलफ़तहूरब्बानी की इशाअत

अलफ़तहूरब्बानी जो सय्यदना गौसे आजम के उन खुत्बात और इरशादात का मजमूआ है जो आप ने अपनी मजलिस में शव्वाल 545 हि. से रजब 546 हि. तक यानी एक साल की मुद्दत में इरशाद फरमाए उन मजालिस या खुत्बात की तादाद 62 है। अलफ़तहूरब्बानी सब से पहले मिस्र में 1202 हि. में शायी हुई इस कबूल उस मख्तूते की मुतअददिद नकलें अकीदतमन्दों के कुतुब खानों में मौजूद थीं। अलफ़तहूरब्बानी के अब तक उर्दू फ़ारसी और अंग्रेज़ी में मुतअददिद तर्जमे शायी हो चुके हैं लेकिन अभी तक मल्न के साथ को उर्दू तर्जमा मेरी नज़र से नहीं गुज़रा। और न आप के सवानेह निगार हज़रात ने इस तरफ़ कोई तवज्जोह की है चुनांचे अगर आप तफ़हहुस और जुस्तजू करें तब भी आप को हज़ूर की इनशा परदाजी और ज़बान व बयान के सिलसिला में चन्द सतूर भी नहीं मिल सकीं।

## फुतूहुल ग़ैब

अलफ़तहूरब्बानी की तरह फुतूहुल ग़ैब भी हज़रत सय्यदना गौसे आजम के खुतबात का मजमूआ है इस में 78 खुतबात हैं यह खुतबात भी अहकामे शरीअत और तरीक़त पर मुशतमिल हैं। बाज़ मक़ालात के उन्वानात में साबिका सफ़हात में ज़िक्र कर चुका हूँ। फुतूहुल ग़ैब के दो आखिरी मक़ाले यानी 79 वाँ और 80 वाँ हज़रत के साहबज़ादे अब्दुल वहहाब ने अर्ज हाल में मुरत्तब किए। गोया आप के असल मक़ालात 78 हैं।

## फुतूहुल ग़ैब का अन्दाज़े बयान

अलफ़तहूरब्बानी की तरह फुतूहुल ग़ैब का अन्दाज़े बयान भी ख़तीबाना है लेकिन इसमें वह हैबत और शिद्दते ख़िताब नहीं है जो अलफ़तहूरब्बानी में है और इसकी वजह यह है कि यह खुतबात तहदीदिया नहीं हैं बल्कि इलामिया हैं उनमें शरीअत व तरीक़त के मबाहिस हैं जिन को आपने बड़े दिल नशीन तरीक़े पर बयान फरमाया है मैं यहां सिर्फ़ एक खुतबा से इक्तेबास पेश कर रहा हूँ।

जब तू (मख़लूक के) एतबार से मर जायेगा तो तुझे कहा जायेगा तुझ पर अल्लाह की रहमत हो और अल्लाह तआला तुझ को ख़्वाहिशाती नफ़्सानी (के एतबार) से मारेगा और जब तू अपनी ख़्वाहिशात से मर जायेगा तो तेरे लिये कहा जायेगा कि अल्लाह तुझ पर रहमत करे और अल्लाह तुझे तेरी ख़्वाहिश, आरज़ू और इरादा (एतबार से) मार देगा फिर जब तू अपने इरादे और आरज़ू (के एतबार) से मर जायेगा तो तुझे कहा जायेगा कि अल्लाह तुझ पर रहम फरमाये फिर तुझे अल्लाह ज़िन्दा करेगा और उस वक़्त तू ऐसी ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा किया जायेगा जिसके बाद



मौत नहीं।

(मकाला चहारूम) सिद्दीकियत का मकाम और मर्गे मानवी इस खुतबा में इरशाद फरमाते हैं  
तेरे पास अबदाला आयेंगे तुझ से (दूसरों की) मुश्किलें हल होंगी तेरी दुआ से मेंह बरसेगा  
और तेरी बरकत से खेतियां उगाई जायेंगी और तेरी दुआ से हर ख्वास व आम, अहले सरहद,  
राई और अइम्मा (सरदाराने उम्मत) और उम्मत और तमाम मखलूक से मुसीबतें और बलायें दूर  
की जायेंगी।

फुतूहुल गैब के अन्दाजे बयान में भी जोर है लेकिन अलफतहुर्रब्बानी के मक़बला में इनशा  
की खुसूसियात और असलूबे बयान में इस अस्र के महासिन इनशा को ईराद करने के ज्यादा  
आसान मवाके हैं चुनांचे मुन्दर्जा बाला इक्तेबासात में सीधी साधी तराकीब है बयान में उलझाव  
नहीं है। अलबत्ता मुसज्जा का इल्तेज़ाम मौजूद है गोया मुकफ़्फ़ा व मुसज्जा इबारत है लेकिन  
आवरद नहीं बल्कि आमद है एक दरिया है जो ख़ानी और जोर शोर से बह रहा है मुझे अफ़सोस  
है कि मैं इख़्तसार के बाइस मज़ीद मिसालें पेश करने से कासिर हूं वरना मैं आप की इनशा  
परदाज़ी पर अपनी बिसात और कुव्वते क़लम के बक़द मज़ीद तहरीर करता।

## फुतूहुल गैब की इशाअत और फ़ारसी उर्दू तराजिम

फुतूहुल गैब भी सबसे पहले 1281 हि. में मिस्र में तबअ् हुई इससे कबूल अतराफ़ व अक्नाफ़  
में इस के मख़तूते और क़लमी नुस्खे मौजूद थे। हिन्दुस्तान में हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस  
देहलवी ने अपने मुर्शिदे कामिल और पीरे तरीक़त हज़रत अब्दुल वहहबा शाज़ली कादरी मक्की  
के इरशाद की तामील में इसका फ़ारसी ज़बान में तर्जमा किया। यह तर्जमा सतरहवीं सदी ईसवी  
में किया गया और जिस क़लमी नुस्खा से किया गया है बावजूद कोशिश मुझे वह फ़ारसी नुस्खा  
दस्तयाब न हो सका। वरना मैं तर्जमा की सही तारीख़ पेश करता। हज़रत शैख़ मुहद्दिस देहलवी  
के फ़ारसी तर्जमा से फुतूहुल गैब के मुत्तअद्दिद उर्दू और अंग्रेज़ी तर्जमे शाय हुए उन उर्दू तर्जमों  
में मक्तबा मुजतेबाई देहली का तर्जमा क़दीम तरीन उर्दू तर्जमा कहा जा सकता है नवल किशोर  
प्रेस लखनऊ ने भी फुतूहुल गैब का उर्दू तर्जमा 19वीं सदी के आखिर में शाय किया उस का  
एक अंग्रेज़ी तर्जमा मेरे सामने मौजूद है डाक्टर आफ़ताबुद्दीन अहमद उस अंग्रेज़ी तर्जमा के  
मोअल्लिफ़ व मुतर्जिम हैं।

हज़रत सय्यदना ग़ौसे आजम की अहम तरीन तस्नीफ़ अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़  
(अलमारुफ़ बेह गुनियतुत्तालेबीन) है जिस का तर्जमा सलासत के साथ असरे हाज़िर के तकाज़ों  
के बमोजिब आपके सामने पेश किया जा रहा है और यह सवानेह उमरी बतौर दीबाचा तहरीर की  
गई है।

अलगुनियतुत्तालिब तरीकुलहक़ सभी दूसरे मख़तूतात की तरह 1288 हि. में मिस्र में पहली  
बार तबअ् हुई मैंने दस मतबूआ नुस्खा के तबअ् सोम से इस का तर्जमा किया है। हिन्दुस्तान में  
इस का फ़ारसी ज़बान में सबसे पहला तर्जमा मुल्ला अब्दुल हकीम सियालकोटी ने किया है जो  
हज़रत शैख़ मोहद्दिस देहलवी के मुआसेरीन उलमा में एक मुमताज़ मक़ाम रखते थे। और आज  
भी दरसे निज़ामी की किताबों पर उन के हवाशी सनद समझे जाते हैं।

उर्दू में गुनियतुत्तालेबीन का तर्जमा सबसे पहले नवल किशोर प्रेस लखनऊ ने शाय किया



यह उर्दू तर्जमा उसी अरबी मूल का है जो नवल किशोर प्रेस ने शायी किया था यह तर्जमा मौलवी महबूबुद्दीन और मौलवी जमाल अहमद साहबान ने किया है इस के अलावा भी चन्द और उर्दू तर्जमा देहली और पंजाब में शायी हुए लेकिन सेहत का ख्याल किसी नुस्खा में नहीं रखा गया। अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक 14-अबवाब पर मुश्तमिल है और हर बाब के तहत मुतअददिद फसलें हैं। किताब का एक अहम बाब "अदाबुल मुरीदीन के नाम से मौसूम है अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक का असलूबे बयान बहुत दिलकश है बजाये इजमाल के इसमें तफसील मौजूद है हजरत ने ईमान व अरकाने इस्लाम व इबादात के सिलसिले में जो बयान किया है वह तफसील के साथ दिलकश अन्दाज़ में बयान फरमाया है अगरचे आप हंबली मजहब के पैरो थे लेकिन आप ने दीगर मज़ाहिब के एख़्तेलाफी मबाहिस को बहुत कम छेड़ा है आप की इस तसनीफ़े गिरां माया ने भी इस्लाही तहरीक में बड़ा काम किया, और फुतूहुल ग़ैब और अलफ़तहुर्रब्बानी से ज्यादा अवाम व ख़वास में मक़बूल हुई। मैं यहां इस क़दर बयान ही पर इक्तेफ़ा करता हूं कि "हरफ़े आगाज़ में गुनियतुत्तालिबीन के सिलसिला में तफ़सील से पहले लिख चुका हूं।

हजरत के सवानेह निगारों ने इस बात पर इक्तेफ़ाक़ किया है कि उन मशहूर व मारुफ़ ईमान अफ़रोज़ कुतुब के अलावा भी अरबी ज़बान में आप ने मुन्दर्जा ज़ैल कुतुब तसनीफ़ फ़रमाई थीं। यानी उनमें एक हिज़्ब नशारूल ख़ैरात है उसमें दरुद शरीफ़ के फ़ज़ाइल व बरकात से बहस फ़रमाई है इस के अलावा अलयवाकीत वल हिकम, अल फ़यूज़ातुर्रब्बानिया, अल मवाहिबुर्रहमानिया आप की तसानीफ़ हैं हजरत के मशहूर फ़रज़न्दाने अख़लाफ़ में हजरत शैख़ ताहिर अलाउद्दीन साहब आप की तसानीफ़ के सिलसिला में मुन्दर्जा बाला कुतुब के अलावा ज़ैल की चन्द कुतुब की भी निशानदेही फ़रमाते हैं (1) अलमवाहिबुर्रहमानिया वलफ़ुतूहातुर्रहमानिया (2) जिलाउल ख़ातिर (3) सिरूल असरार हर दो मज़कूरा कुतुब के सामने आपने यह नोट तहरीर किया है। कश्फ़ुल जुनून जामी ने जिक्र किया है जो ख़लीफ़ा थे, ग़ालिबन इससे पीर ताहिर अलाउद्दीन साहब की यह मुराद है कि हाजी ख़लीफ़ा ने अपनी किताब कश्फ़ुल जुनून" में इन कुतुब का जिक्र किया है। (4) रददुर्राफ़िज़ा (मदरसा कादरिया में इसका कल्मी नुस्खा मौजूद है) तफ़सीरे कुरआन करीम दो जिल्द।

अरबी ज़बान में हजरत की हर सेह कुतुब यानी अलफ़तहुर्रब्बानी, फ़ुतूहुल ग़ैब और अल गुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ पर तमाम सवानेह निगार और मोअर्रेख़ीन का इक्तेफ़ाक़ है।

## हजरत सय्यदना ग़ौसे आजम की शायरी

बुजुर्गाने दीन व मिल्लत, अकाबरीने सूफ़ियाए कराम मुफ़क्केरीने एज़ाम की शायरी, नाम व नुमू के लिए न थी और न मज़ाके शायरी और मजमूआ अशआर उन के लिए सरमाये इफ़ितेख़ार व इम्तेयाज़ हो सकता है बल्कि खुद उन हज़रात का शेअरी अदब पर एहसाने अज़ीम है कि उन्होंने अपने पाकीज़ा जज़्बात व एहसासात से ख़्वाह अरबी ज़बान हो या फ़ारसी अदबीयात को सर बलन्दी बख़्शी और अदब इस काबिल बनाया कि पाकीज़ा महफ़िलों और मुक़द्दस मज्लिसों में पढ़ा जा सके। उन हज़रात के लिए फ़न्ने शायरी कोई ऐसा दुशवार गुज़ार मरहला न था कि किसी उस्ताद के सामने जानूए अदब तय किया जाता या उसके हुसूल में उमरे अज़ीज़ को सर्फ़



किया जाता। बल्कि उन हज़रत का तबहहुरे इल्मी दूसरे फुनून की तरह इस फ़न में भी इज़हार ख़्याल के रास्ते तलाश कर लेता था।

चुनांचे अम्मे मोहतरम रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू तालिब, हज़रते हस्सान बिन साबित, हज़रते कअब बिन जुहैर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम मुतकददेमीन शोअ्राए अरब की सफ़े अव्वल में नुमाया हैसियत रखते। हां अल्लाह तआला ने अपने महबूब सय्यदुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए इस फ़न को शायाने शान नहीं बनाया वरना हूज़ूर से ज़्यादा बेहतर हम्दे इलाही पैरहने शोअर में और कौन पेश कर सकता था। सूरह शोअरा में अल्लाह तआला ने दुनिया दार शोअरा और फ़िस्क व फुज़ूर से भर पूर शायरी की मज़म्मत फ़रमाई है लेकिन असहाबे ईमान व ईक़ान का इससे इस्तिश्ना फ़रमा दिया है। हज़रत हस्सान व हज़रत कअब बिन जुहैर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के बाद पहली सदी हिजरी से पांचवीं सदी हिजरी तक बहुत से अरबी और फ़ारसी ज़बान में शोअर कहने वाले अकाबेरीने मिल्लत उलमाए उम्मत मौजूद हैं हज़रत अब्दुर्रहमान जामी, हिजवेरी (दाता गंज बख़्श) हज़रत ख़्वाजा ख़्वाजगान ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी, हज़रत शैख़ सअदी शीराज़ी कादरी हज़रत शैख़ अकबर मोहीयुद्दीन अल मारुफ़ बेह इब्ने अरबी और हज़रत अमीर खुसरू बहैसियत आरिफ़े बिल्लाह और बतौरे शायर किसी तआरूफ़ के मोहताज नहीं। पस हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म के बाज़ कसाइद के बारे में बा आसानी यह कह देना कि आप का कलाम नहीं कोई दानिशमंदाना कौल नहीं है।

चूँकि अरबी शायरी सिर्फ़ कसीदे और मरसीया का नाम है इस ज़बान में (बज़माने कदीम) न ग़ज़ल थी न रुबाई न कतअ था न मसनवी। यह सब असनाफ़े सुख़न फ़ारसी शायरी के पैदा वार है। अरब में मुद्दतों तक कसीदे की तश्बीब ही से ग़ज़ल का काम लिया जाता था और बस। चुनांचे आरिफ़ बिल्लाह ग़ौसे आज़म की तमाम तर शायरी चंद हम्दीया कसीदों पर मुश्तमिल है उन कसीदों में एक कसीदा ख़मरीया और एक कसीदा लामिया है।

अफ़सोस कि यह कसीदा कि मेरे सामने नहीं है वरना बक़दरे कुव्वत और इदराक व फ़हम इस सिलसिला में कुछ अर्ज़ करता। हां कसीदे ग़ौसिया जो हज़रत के वारदाते कलबी का आईनादार और आप के मनसब ज़लील का तर्जमान है मेरे पेशे नज़र है इस सिलसिला में इतना अर्ज़ करुंगा कि इस कसीदे को तवातुर के साथ हज़रत के तमाम सवानेह निगार हज़रात पेश करते आए हैं और इसके बाज़ अशआर के सिलसिला में बहुत से वाक़ियात बुजुर्गाने दीन से मन्सूब किए गए हैं वह लोग जो इस कसीदे को हज़रत की तसनीफ़ नहीं बताते वह अपने कौल की ताईद और सबूत में कोई मसकत दलील नहीं पेश कर सके। बजुज़ इसके हज़रत ग़ौसे आज़म बहुत ही मुतवाज़े और मुन्कसिरुल मिज़ाज थे आप ऐसे अशआर जिन में उलूए मरतबत और तरफ़ो दरजात का ज़िक्र बड़े फ़ख़्रिया अन्दाज़ में किया है किस तरह अवाम के सामने पेश कर सकते थे। ऐसे मोअत्तज़रीन की तादाद बहुत कम है सिर्फ़ एक हस्ती इस सिलसिला में काबिले ज़िक्र है और वह है जनाब रशीद रज़ा मिस्री मुदीर रेसाला अलमनार। लेकिन उन्होंने भी सिर्फ़ इतना कहा है कि यह कसीदा आप की तरफ़ मन्सूब है” हकीकत यह है कि आप के इस कसीदे का मानवी रंग आप की तसानीफ़ से बिल्कुल अलग है। मैं ज़बान के बारे में अर्ज़ नहीं कर रहा हूँ बल्कि मज़मून की नौईयत की तरफ़ इशारा है। आप अपनी तसानीफ़ में एक मुबल्लिग़, एक हादी व रहनुमा और अज़ाबे अलीम से डराने वाले और खुदावन्द समीअ व बसीर की ताअ्त



व बन्दगी पर आमादा करने वाले एक साहबे दानिश व बीनश मुर्शिद हैं और कसीदा गौसिया में आप जमाअते औलियाए किराम और गरोहे सूफियाए एजाम से मुख़ातिब हैं और उस मन्सबे वाला कि तरफ़ इशारा करते हैं जो बारगाहे नुबूव्वत से आप को तफ़वीज किया गया है। हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने फ़ीह रा फ़ीह में इस कसीदे के बारे में तहरीर किया है, कि

“कसीदा गौसिया शरीफ़ भी उसी मक़ामे कुर्ब के एक खुद्दार और और सुक्र याफ़ता की आवाज़ है जिस को सय्यदना गौसे आजम के बातनी हाल की एक इजतेमाई तफ़सीर समझना चाहिये।

हज़रत मौलाना रूम ने जो कुछ कहा है वह हर्फ़ ब हर्फ़ बजा है कसीदा गौसिया कि यही हकीकत है निगाहे ज़ाहिर बी और दिल ज़ाहिर परस्त इस हकीकत का इदराक और इसका फ़हम नहीं कर सकता, अब मैं कसीदा गौसिया को ज़ैल में दर्ज करता हूँ और अपने फ़ितरी मज़ाके शायरी के बदौलत इस का मनजूम तर्जमा पेश करने कि इजाज़त चाहता हूँ हर चंद समझता हूँ कि मेरा मनजूम तर्जमा उन मआरिफ़ व हक़ाइक़ को एहाता नहीं कर सकता जो हज़रत सय्यदना गौसे आजम के कलामे मोअजिज़ निज़ाम में मौजूद है, लेकिन इस लेहाज़ से कि उर्दू शायरी में अब तक यह ज़स़ारत किसी शायर ने नहीं कि है शायद मेरी यह कोशीश बारगाहे गौसियत में शरफ़े कबूलीयत पा ले और उस बेकार शायरी का बदल हो सके जिस के लिए हिन्दुस्तान में बहुत से माह व साल मैंने गंवा दिये हैं।

## कसीदा गौसिया तर्जमा मनजूम

सागर भरे हैं इश्क़ ने बज़मे विसाल के

ला जिस कदर भी खुम हैं शराबे जमाल के  
सागर भरें हैं मेरी जानिब रवा हुये  
मैं हूँ मियाने हलक़ए याराने हाल के  
आवाज़ दे रहा हूँ कि अक़ताबे दहर आओ  
ख़्वाहां हो तुम अगर अभी इसलाहे हाल के  
हिम्मत करो बढ़ो, चले आओ, उठाओ जाम  
यह खुम पे खुम भरे हैं शराबे विसाल के  
मेरी बची शराब तो पी, तुम ने दोस्तों  
लेकिन अभी तो दौर हैं जीने वसाल के  
तुम सब का भी बुलंद अगरचे मक़ाम हैं  
शायां नहीं हो तुम मेरी शाने कमाल के  
मैं तो ग़रीक़ जलवए हुस्ने कदीम हूँ  
काफी करम हैं मुझ को मेरे जुल जलाल के  
हूँ जिरह बाज़ सारे शुयूख़ाने दहर का  
किस को मिले हैं औज़ यह फज़ल व कमाल के



पहने हुए हूं अज्म व अजीमत की खिलअतें  
 कहते हैं ताज हैं मेरे सर पर कमाल के  
 राजे कदीम से मुझे आगाह कर दिया  
 मुझ पर अतायें की हैं एवज हर सवाल के  
 वाली बनाया है मुझे अकताबे दहर का  
 नाफिज है मेरा हुक्म अब हर एक के हाल के  
 पानी समुन्दरों में न बाकी रहे कहीं  
 मैं उन पर खोल दूं जो रमूज अपने हाल के  
 हो जाए उनपे फाश मेरा राजे इश्क गर  
 हो जाएं रेजा रेजा यह तोदे जिबाल के  
 मैं गर करूं बयान मोहब्बत की दासतां  
 हो जाए आग सर्द बगैर इश्तेआल के  
 मुर्दा अगर सुने जो भी मेरे राज को  
 जी उठे यह करम हों मेरे जुल जलाल के  
 मुस्तकबिल जहान के मंजर हैं सामने  
 परदे तमाम उठ गए माजी व हाल के  
 आगाह करतें है यह जमाना मुझे मदाम  
 यारो अबस हैं कस्द यह बहसो जिदाल के  
 है तिशनगी में लुत्फ कि ऐने गिना है वह  
 मेरे मुरीद नाम ले बस जुल जलाल के  
 अल्लाहु रब्बी खौफ न कर ऐ मेरे मुरीद  
 है मंजिले मुराद करीं मेरे हाल के  
 मेरे जुलू में खैर व करम के नकीब हैं  
 चर्च हैं आसमां से जमीं तक कमाल के  
 अल्लाह के शहरो मलक हैं सब मेरी मिलकियत  
 महकूम हैं यह सब माजी व हाल के  
 खामोश शाह से भला डरता है क्यों मुरीद  
 जौहर नेहां हैं मुझ में जिदाल व किताल के  
 सब मुल्क मेरे सामने यूं हैं कि खाक पर  
 फेकें हों जैसे राई के दाने उछाल के  
 सरदार व कौमे कुत्ब का दर्जा मुझे दिया  
 मौलाए कुल के लुत्फ जो शामिल थे हाल के  
 हूं औलियाए वक्त में बेमिस्ल व बे नजीर  
 हैं एख्तियार इल्म के तसरीफे हाल के



तपते दिनों में सौम से रह कर मेरे मुरीद  
 रख्शां हैं तैरगी में यह मोती कमाल के  
 रखतें है औलियाए तकलीईद नक्शे पा  
 रहबर मेरे हैं चांद जहाने कमाल के  
 यानी नबीए हाशिम, मक्की शहे हेजाज  
 सदका उन्हीं का हैं यह मरातिब कमाल के  
 जीली हूं और दीन का मोही लक़ब मेरा  
 कूहो जबल पे नस्ब हैं परचम जलाल के  
 मेरा बड़ा घराना है दादा हसन मेरे  
 हैं पांव गरदनो पे तमामी रिजाल के  
 मौसूम हूं मैं बन्दए कादिर के नाम से  
 जद्द मेरे ताजदार हैं ऐनुल कमाल के

### हज़रत गौसे आजम की फ़ारसी शायरी और फ़ारसी मकतूबात

हज़रत सय्यदना गौसे आजम के फ़ारसी मकतूबात भी मौजूद हैं और फ़ारसी शायरी का दीवान भी, फ़ारसी मकतूबात सिर्फ़ चन्द हैं और उनमें भी जा बजा आयाते कुरआनी से इस्तिदलाल है और वही जोरे बयान हैं जो फ़तहुर्रब्बानी और फ़ुतुहुल ग़ैब का अन्दाज है फ़ारसी दीवान के बारे में अकसर हज़रात का यह ख़्याल है कि वह दीवान आप का नहीं है हर चन्द कि कदीम तज़किरा नवीसों ने इसको आप ही से मनसूब किया है मैं यहां इस बहस को नहीं छेड़ना चाहता हां यह जरूर कहूंगा कि यह कह देना बहुत आसान है कि फ़लां दीवान फ़लां हस्ती से ग़लत मनसूब कर दिया है जिस तरह हाफ़िज़ मोहम्मद शीरानी गरहूम अपने एक दो वरकी रेसाला में ख़्वाजा ख़्वाजगाने चिश्त के मौजूदा फ़ारसी दीवान से इन्कार कर दिया और दलाएल निहायत कमज़ोर और बोदे पेश किए, अलहम्दुलिल्लाह कि राकिमुल हुरुफ़ और मेरे अजीज़ दोस्त बिरादरम काज़ी मुईनुद्दीन चिश्ती कादरी ने पांच साल की मुतवातिर कोशिश से उनके इस ख़्याल को बातिल कर दिया और हर हर पहलू से यह साबित कर दिखाया कि वह दीवान ख़्वाजा अजमेरी ही का है यह किताब लमआते ख़्वाजा के नाम से जल्द आप के हाथों में पहुँचेंगी।

### हज़रत गौसे आजम का विसाल

मशअले नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रौशन होने वाला चिराग़ जिसकी ज़ियाबारियां अरब व अजम से रुम व मिस्र व शाम तक पहुँचीं हिन्द व तुरकिस्तान के अंधेरों में जिसने रौशनी फैलाई यानी शरीअत के अलम बरदार तरीक़त व मारफ़त के इमाम और मज्लिसे रुहानियान के सदर नशीन हज़रत सय्यदना गौसे आजम ने 91 साल की उम्र में 11 रबीउस्सानी 561 हि. मुताबिक़ 1165 ई. वासिल बहक़ हुए बाज़ सवानेह निगारों ने जिनमें चन्द मुस्तशरेकीन शामिल हैं आप की तारीख़े विसाल 9 रबीउस्सानी बताई है आप की वफ़ात नमाज़े ईशा के बाद हुई तमाम अतराफ़ व अक्नाफ़ में रात भर मैं ख़बर फैल गई और लोगों के इज़दहाम का यह आलम हुआ कि दिन में आप की तदफ़ीन अमल में न लाई जा सकी बल्कि दूसरी शब में आप को दफ़न किया गया



रात भर और दिन भर लाखों अकीदतमन्द आप का आखिरी दीदार करते रहे। आप का विसाले अब्बासी खलीफा अलमुस्तन्जिद बिल्लाह के अहद में हुआ।

विसाल से पहले दुनिया से बे ताल्लुकी के कलमात बराबर आप की ज़बान पर आते रहते थे और हर वक़्त अल्लाह से डरने व तक्वा की वसीयत फ़रमाते रहते थे चुनांचे आप के फ़रज़न्द हज़रत शैख़ अब्दुल वहहाब ने जब आप से वसीयते आखिरी का सिलसिला में अर्ज किया तो आप ने जवाब में फ़रमाया।

“अल्लाह से डरो और उसके सिवा किसी से खौफ़ न करो और अल्लाह के सिवा किसी से उम्मीद न रखो और सब कामों को अल्लाह कि तरफ़ सौंप दो और अल्लाह के सिवा किसी पर भरोसा न करो और सब हाजतें उसी से तलब करो और अल्लाह के सिवा किसी पर वकूफ़ न करो, तौहीद को लाज़मी तौर पर इख़्तियार करो। इस तरह हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म ने अपने आखिरी सांसों में भी इस मक़सद की तब्लीग़ का ख़्याल रखा जो आप के सुपुर्द बग़दाद में किया गया था। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहे राजेऊन।

## मज़ारे मुबारक

हज़रत ग़ौसे आज़म का मज़ारे मुबारक बग़दाद के मशिरक़ में वाक़ेअ हैं यह वही मोहतरम जगह है जहां वह दर्स देते और वाज़ व इरशाद की मज़्लिस बरपा फ़रमाते यह जगह मदरसा के नाम से मौसूम थी चूंकि बादे विसाल आप यहीं मदफून् हुए इसलिए इसके बाद दरबारे ग़ौसिया (मज़ारे ग़ौसिया) के नाम से मौसूम चला आ रहा है इस इमारत में कई आली शान हस्तियों, आप के बाज़ फ़रज़न्दों के मज़ार हैं मस्जिद लंगर खाना, कुतुब खाना और ग़ैर मुल्कियों और मुल्क तलबा की एकामत गाहें भी हैं 615 हि. में अब्बासी ख़लाफ़ी नासिरुद्दीन ने इस इमारत में मज़ीद तौसीअ की लेकिन 912 हि. में शाह इस्माईल सनौसी शाह ईरान के हाथों उन इमारात को नुक़्सान पहुंचा उसके बाद 941 हि. में सुलतान सुलैमान उस्मानी ने यहां पर एक खूबसूरत और आली शान इमारत तामीर कराई 1218 हि. में सुलतान अब्दुल अज़ीज़ खां के अहद में अज़ सरे नौ तामीर हुई और आज भी इमारत अपनी शान व शिकोह के साथ हज़रत के फ़यूज़े बातनी की निशानदेही कर रही है।



## अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक् की तसनीफ़ का सबब

हम्द की सज़ा वार उसी अल्लाह की जात है जिससे हर किताब की इब्तिदा और जिस के जिक्र से हर कलाम का आगाज़ होता है। आलमे तसरूफ़ में राहत व आराम पाने वाले उसी की हम्द व सना का इनाम हासिल करेंगे। उसी के नाम से हर बीमारी से शिफा हासिल होती है और हर ग़म और हर मुसीबत में, सुख हो या दुख हर हाल में उसी के सामने तज़रू और सवाल के लिए हाथ फैलाए जाते हैं। उसको बुलाने वाला ख़्वाह किसी ज़बान में उसको पुकारे और बुलाये वह उसकी सुनता है और आजिज़ों की दुआएँ क़बूल करता है। हर शय अता करने वाला और मतलूब व मक्सूद तक पहुंचाने वाला वही है बस उसी का शुक्र है कि उसने नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाया और हक् का रास्ता वाज़ेह फ़रमा कर उस पर चलाया।

अल्लाह के बर्गुज़ीदा रसूल (हज़रत) मोहम्मद पर रहमत व सलाम हो जो दुनिया में गुमराहों को हिदायत का रास्ता दिखाने के लिए तशरीफ़ लाए आप की आल व असहाबे कराम और बिरादराने रिसालत और मुक़र्रबे मलाइका पर भी दरुद व सलाम हो!!

हम्द व सलात के बाद बाइसे निगारिश यह है कि मेरे बाज़ अहबाब ने जिनको मेरी सिद्क बयानी के बारे में हुसने ज़न था मुझ से इस किताब की तसनीफ़ की पुरज़ोर दरख्वास्त की- अल्लाह तआला ही हम को कौली और फ़ैली लगज़ि़शों से बघाने वाला है और वही नीयतों और इरादों से वाकिफ़ है और वही मेरे बाज़ अहबाब की इस ख़्वाहिश की तक्मील में सहूलत अता करने वाला है। तफ़रीक़ से दिलों को एक करने और बुराईयों को नेकियों से बदल देने की उससे उम्मीद है। वही गुनाह और क़सूर माफ़ करने और वही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करने वाला है।

जब मुझ पर इस बात की सदाक़त (बज़रिया क़श्फ़) ज़ाहिर हो गई कि एक ऐसी किताब की वाकई ज़रूरत है जो फ़र्ज़, सुन्नत और इस्लामी आदाब के सिलसिले में अवाम की रहनुमाई करे और लोग दलाइल व बराहीन से ख़ालिक की मारफ़त हासिल करें और कुरआन मजीद और हदीसे नब्वी से हिदायत याब हो कर राहे हक् इख़्तियार करें और इस इसरार से उस दोस्त की गरज़ सिर्फ़ यह है कि राहे हक् पर चलने वाले को अवामिर की तामील और नवाही से गुरेज़ में तआवुन हासिल हो, पस मैंने उसकी दरख्वास्त क़बूल कर ली।

उख़रवी नजात की आरजू और सवाबे आख़िरत की तलब के साथ में तालीफ़े किताब के लिए बड़ी मुस्तईदी से तैयार हो गया और यह सब कुछ अल्लाह तआला की तौफीक़ से हुआ। दिलों में हक् बात का इलका फ़रमाता है।

मैंने राहे हक् के तलबगारों की तमान दूसरी किताबों से बेनियाज़ बनाने के लिए इस किताब को 'अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक्' के नाम से मौसूम किया।



## बाब 1

# दीने इस्लाम के वाजिबात व फ़राइज़

ईमान, नमाज़, ज़कात, सद्क़ए फ़ित्र, रोज़ा, एतकाफ़, हज और उमरा

### ईमान

जो शख्स इस्लाम कबूल करना चाहे उस पर सबसे पहले वाजिब है कि वह कलमए शहादत पढ़े यानी ला इलाहा इल्ललाह मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह का ज़बान से इक़रार करे और इस्लाम के सिवा तमाम मज़ाहिब से बे ताल्लुक हो जाए और उन से बे ज़ारी का इज़हार करे और अल्लाह तआला की वहदानियत का दिल में यकीने कामिल रखे, इस एतकाद और यकीने कामिल की तशरीह आईन्दा मज़कूर होगी।

### दीने इस्लाम

अल्लाह तआला के नज़दीक सच्चा दीन इस्लाम है चुनांचे अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया कि यानी बिला शुबा सच्चा दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है। फिर फ़रमाया: और जिस ने इस्लाम के सिवा कोई और दीन पसन्द किया उसे कबूल नहीं किया जाएगा।

### नौ मुस्लिम के हक्क

जिस शख्स ने सच्चे दिल से कलमए शहादत पढ़ लिया और इस्लाम में दाखिल हो गया, उसको क़त्ल करना, उसकी औलाद को कैद करना, उसके माल व मताअ को लूटना (तमाम मुसलमानों पर) हराम हो गया। इस्लाम लाने से कबूल उससे जो गुनाह सरज़द हुए थे अल्लाह तआला उन सब को माफ़ फ़रमा देगा। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है: ऐ नबी आप उन काफ़िरों से फ़रमा दें कि अगर यह कुफ़्र से बाज़ आ गए तो उनके पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि: मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से उस वक़्त तक जिहाद करूँ जब तक वह ला इलाहा इल्ललाह न कह दें, जब उन्होंने कलमए तौहीद पढ़ लिया तो उन्होंने अपनी जानों और अपने मालों को मुझ से बचा लिया बजुज़ इस के कि उन का कोई हक़ वाजिब हो सो उस का हिसाब अल्लाह तआला फ़रमाएगा। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी इरशाद फ़रमाया है कि: इस्लाम मा कबूल के गुनाहों को फ़ना कर देता है।

### नौ मुस्लिम का गुस्ल

इस्लाम में दाखिल होने वाले शख्स के लिए गुस्ले इस्लाम वाजिब हो जाता है। एक रिवायत



के मुताबिक़ रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शमामा बिन आसाल और कैस बिन अस्सम को जब वह इस्लाम लाए तो हुक्म दिया कि गुस्ल करो एक रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया कि "अपने जिस्म से कुफ़्र के बालों को दूर करके गुस्ल करो"।

## नमाज़

इस्लाम में दाख़िल होने वाले पर नमाज़ फ़र्ज़ हो जाती है इस लिए कि इस्लाम कौल व अमल दोनों का नाम है, ज़बानी दावा कौल है और अमल उस दावा का सबूत है। ब अलफ़ाज़े दीगर कौल सूरत है और अमल उसकी रुह है।

## शराइते नमाज़

नमाज़ के लिए कुछ शराइत हैं जिन का नमाज़ से कब्ल पूरा करना ज़रूरी है और वह यह हैं।

- (1) पाक पानी से जिस्म को पाक करना (इस से मुराद वुजू है) पानी न मिले तो तयम्मूम करना।
- (2) पाक कपड़े से सतर पोशी करना
- (3) पाक जगह खड़ा होना (पाक जगह पर नमाज़ पढ़ना)
- (4) क़िब्ला की तरफ़ मुंह होना
- (5) नमाज़ का वक़्त होना
- (6) नमाज़ के लिए नीयत करना

## तहारत

(जिस्म की) तहारत के लिए कुछ फ़र्ज़ और कुछ सुन्नतें हैं, इस्लाम में दस फ़र्ज़ यह हैं 1. नीयत करना, यानी नापाकी को दूर करने के लिए नीयत करे और अगर तयम्मूम करना हो तो नमाज़ के मबाह होने का क़सद करे कि तयम्मूम से हदस दूर नहीं होता। पस ज़बानी नीयत के साथ साथ दिल में भी उसकी गवाही दे तो यह अफ़ज़ल है वरना सिर्फ़ ज़बानी नीयत भी काफ़ी है।

2. तस्मीया (बिस्मिल्लाह पढ़ना) यानी तहारत के लिए पानी लेते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़े
3. कुल्ली करमा यानी मुंह में पानी भर कर और उसे मुंह में फिरा कर मुंह से पानी निकाल देना।
4. नाक में डालना, नाक के दोनों नथनों में पानी चढ़ा कर उन्हें साफ़ करना।
5. मुंह धोना, (पेशानी से लेकर कंफटियों के अर्ज़ में ठोड़ी के नीचे तक) इस तरह कि दाढ़ी के बालों की जड़ों तक पानी पहुंच जाए।
6. हाथ धोना, दोनों हाथों को कोहनियों तक धोना।

7. सर का मसह, मसह करने का तरीका यह है कि दोनों हाथ पानी में डाले और फिर ख़ाली निकाल कर उन्हें सर की अगली जानिब से सर की पिछली जानिब गर्दन तक ले जाए और फिर इसी तरह वहां तक वापस लाए जहां से मसह शुरू किया लेकिन इस तरह कि दोनों अंगूठे कानों के सुराखों में रहें इससे फ़ारिग़ होकर कान के दोनों करों और सुराखों का उन अंगूठों से मसह करे।



8. पांव धोना, दोनों पांव टखनों तक धोए जायें। मजकूरा बाला तमाम फ़राइज़ यके बाद दीगरे एक साथ बजा लाना फ़र्ज है।

9. इन तमाम आज़ा को धोते वक़्त उन की तरतीब का ख़याल रखना। खुदावन्द तआला का इरशाद है। यानी ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ अदा करने के लिए उठो तो अपने मुंह को और अपने हाथों को कोहनियों तक धो लो, सर का मसह करो और दोनों पांव को टखनों तक धो लो।

10. मवालात यानी हर दूसरे उज्व को पहले उज्व का पानी खुश्क होने से पहले धोना।

## वुजू में दस सुन्नतें हैं

(1) वुजू के पानी में हाथ डालने से पहले दोनों हाथों को धो लेना। (2) मिसवाक करना (3) कुल्ली (गरगरा) करना। (4) नाक के दोनों सूराखों में पानी डाल कर उनको साफ़ करना, रोज़ा रखा हो तो कुल्ली करने और नाक में पानी चढ़ाने में एहतियात बरते (कि पानी हल्क़ से नीचे न उतर जाए) (5) दाढ़ी का ख़िलाल करना (6) दोनों आँखों के अन्दर पानी डाल कर उनको धोना दायें जानिब से (आँखों का धोना) शुरू करना। (7) दोनों कानों के मसह के लिए ताज़ा पानी लेना। (8) गर्दन का मसह करना। (9) दोनों हाथ और दोनों पांव की उंगलियों में ख़िलाल करना (यानी उंगलियों को दूसरी उंगलियों के दर्मियान डालना) (10) वुजू के हर उज्व को तीन दफ़ा धोना।

## तयम्मूम

तयम्मूम का तरीका यह है कि दोनों हाथ ऐसी पाक मिट्टी पर मारें कि गर्द मामूली तरीका पर दोनों हाथों पर चिमट जाए। उस वक़्त फ़र्ज नमाज़ के मबाह होने की नीयत करें, तस्मीया पढ़ें, अपनी उंगलियों को फैलाकर मिट्टी पर एक दफ़ा मारें, फिर हाथों के अन्दर की तरफ़ से चेहरे को, मसह करें, फिर दोनों हाथों की पुस्त का मसह करें। (तहारते कुबरा यानी गुस्ल का बयान आदाबे ख़ला के बाब में इन्शा अल्लाह किया जाएगा)

## सतरे औरत

किसी पाकीज़ा कपड़े से नाफ़ से लेकर जानू तक और कन्धों तक छुपाना सतरे औरत है, सतरे औरत के लिए कपड़ा रेशमी न हो क्योंकि रेशमी कपड़े में नमाज़ नहीं होती, किसी से छीने हुए या चुराए हुए कपड़े में नमाज़ नहीं होती।

## नमाज़ की जगह

नमाज़ (पढ़ने) के लिए ऐसी जगह होना चाहिए जो नजासत और पलीदी से पाक हो और अगर कोई ऐसी जगह हो जिस पर नजासत हो मगर वह नजासत हवा और आफ़ताब की गर्मी (धूप) से खुश्क हो गई हो तो ऐसी जगह को साफ़ करके उस पर कपड़ा बिछा कर उस पर नमाज़ पढ़ी जा सकती है।

## नमाज़ की सप्त

मक्का मुकर्रमा और उसके करीबी इलाके में अगर कोई हो तो वह ऐन काबा की तरफ़ रुख़ कर ले और अगर मक्का से दूर किसी और जगह पर हो तो भी काबा की तरफ़ रुख़ मालूम करने



के लिए अपने इजतेहाद, सितारों आफ़ताब और हवाओं के रुख के जरिये से समते काबा की तहकीक करके उस तरफ़ रुख करे।

## नमाज़ की नीयत

नीयत का मकामे असली दिल है (यानी दिल के इरादे का नाम नीयत है) चूँकि नमाज़ अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़र्ज की गई है इस पर दिल से यकीन रखना और अल्लाह तबारक व तआला का हुक्म जानते हुये उसको अदा करना वाजिब है। दिखावे और दूसरों के सुनाने के लिये न हों, नमाज़ के दौरान दिल को खुदावंद तआला के हुजूर में उस वक़्त तक पूरे तौर पर हाज़िर रखा जाए जब तक नमाज़ से फ़रागत हासिल न हो जाए। हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आएशा रज़ी अल्लाहो अन्हा से फ़रमाया: जिस नमाज़ में तेरा दिल हाज़िर न हो वह नमाज़ ही नहीं।

## औक़ाते नमाज़

नमाज़ के वक़्त का अन्दाज़ा अपने यकीन से कर लिया जाए (जब कि रौशन और साफ़ हो) और अगर अब्र या आंधी (गुबार) वगैरह हो और वक़्त का तऐयुन (अन्दाज़े से) न हो सके तो फिर गुमान ग़ालिब ही से उसका अन्दाज़ा कर लिया जाए।

## अज़ान

वक़्त का तऐयुन या (गुमाने ग़ालिब से) अन्दाज़ा कर लेने के बाद अज़ान इस तरह कही जाए  
 अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर  
 अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह, अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह  
 अशहदु अन्ना मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह, अशहदु अन्ना मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह  
 हय्या अलस्सलाह, हय्या अलस्सलाह  
 हय्या अलल फ़लाह, हय्या अलल फ़लाह  
 अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर,  
 लाइलाहा इल्लल्लाह

## एक़ामत

अज़ान के बाद जब नमाज़ के लिए खड़े हों तो इस तरह एक़ामत कही जाएं:  
 अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर  
 अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह  
 अशहदु अन्ना मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह  
 हय्या अलस्सलाह  
 हय्या अलल फ़लाह  
 क़दका मतिस्सलाह, क़दका मतिस्सलाह  
 अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर  
 लाइलाहा इल्लल्लाह



हंबली और शाफई हजरात के यहां एकामत के अलफाज हय्या अन्नल फलाह तक एकहर हैं जबकि अहनाफ के यहां दोहरे हैं।

एकामत कहकर नमाज के लिए खड़े हो जाओ, अल्लाहो अकबर के अलावा दूसरे ताजीमी अल्फाज का इस्तेमाल नमाज शुरू करने के लिए जाइज नहीं है।

## नमाज के अरकान

नमाज के पन्द्रह रुकन हैं (1) खड़ा होना (2) तक्बीरे तहरीमा पढ़ना (3) सूरह फातिहा पढ़ना (4) रुकू करना। (5) रुकू में ठहरना (6) रुकूअ से खड़ा होना (7) थोड़ा ठहरना (8) सजदा करना (9) सजदे में कदरे ठहरना (10) दोनों सजदों के दर्मियान बैठना (11) इस बैठक में कदरे तवक्कुफ करना (12) कअदा अखीरा (आखिरी मरतबा बैठना) (13) आखिरी कअदा में तशहहुद पढ़ना (14) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरुद पढ़ना (15) सलाम फेरकर नमाज खत्म करना।

## नमाज के वाजिबात

नमाज के वाजिबात नौ हैं। (1) तक्बीर कहना (तक्बीरे तहरीमा के सिवा) (2) रुकूअ से उठते वक्त समेअल्लाहुलिमन हमिदह कहना और (3) रब्बना लकल हम्द कहना (4) रुकूअ में सुब्हाना रब्बियल अजीम पढ़ना (5) दोनों बार सजदों में सुब्हाना रब्बियल आला कहना (तीन तीन बार) (6) दोनों सजदों के दर्मियान बैठते वक्त एक बार रब्बिग फिरली कहना (7) पहला अत्तहियात पढ़ना (8) पहले तशहहुद के लिए बैठना (9) सलाम इस नीयत से फेरना की मैं नमाज से फारिग हुआ।

## नमाज की चौदह सुन्नतें

नमाज की चौदह सुन्नतें हैं—(1) शुरू करते वक्त इन्नी वज्जहतो वज हेया लिल्लजी फतरस्समावाते वल अर्जा वमा अना मिनल मुश्रेकीन पढ़ना—(2) अऊजूबिल्लाहि मिनशशैतानिर्रजीम पढ़ना (3) बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ना (4) सूरह फातिहा के खत्म पर आमीन कहना (5) सूरह फातिहा के बाद कोई सूरत पढ़ना (6) रब्बना लकल हम्द के बाद मिलाअस्समावाति वलअर्ज कहना (7) रुकूअ और सजदे में तस्बीहात को एक मरतबा से ज्यादा पढ़ना (8) दोनों सजदों के दर्मियान जुलूस की हालत में रब्बिग फिरली पढ़ना (9) एक रिवायत के मुताबिक नाक पर सजदा करे (सजदे में नाक जमीन पर लगाये) (10) दोनों सजदों के दर्मियान कदरे आराम के लिए बैठना (जलसए इस्तराहत करना) (11) चार चीजों से पनाह मांगना यानी

अऊजूबिल्लाहि मिन अजाबे जहन्नमा व मिन अजाबिल कब्र व मिन फिल्तिल मसीहिददज्जला व मिन फिल्तिल महया वल ममाते पढ़ना (मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं जहन्नम की अजाब से, कब्र की अजाब से, मसीहिदज्जाल के फिले से और जिन्दगी व मौत के फिले से) (12) आखिरी कअदा में दरुद शरीफ पढ़ने के बाद वह दुआ पढ़ना जो हदीसों में आई है। (13) वित्रों में दुआए कुनूत पढ़ना (14) दूसरा सलाम फेरना (इसका सबूत जईफ रिवायत से है)

## हैयाते नमाज

नमाज की हैयात पच्चीस हैं—(नमाज की हैयात से इन पच्चीस उमूर का ताल्लुक है) (1)



नमाज़ शुरू करते वक़्त, रुकूअ में जाते वक़्त, रुकूअ से सर उठाने के बाद दोनों हाथों का उठाना (दोनों हाथ इस तरह उठाए जायें कि दोनों हथेलीयां दोनों कंधों के बराबर हों और दोनों अंगूठे कानों के पास और उंगलियों के पोरे कानों की नरमा तक पहुंच जायें) हाथ इस तरह उठाकर फिर छोड़ दिए जायें (2) नाफ़ के ऊपर बायां हाथ हो और उस हाथ के ऊपर दायां हाथ रखा जाए (3) सजदे के मक़ाम पर नज़र रखी जाए (4) जिन नमाज़ों में क़िरात बलन्द आवाज़ से पढ़ी जाती है—उन में बलन्द आवाज़ से क़िरात पढ़ना और आमीन भी बलन्द आवाज़ से कहना और जिन नमाज़ों में क़िरात आहिस्ता पढ़ी जाती है उनमें आहिस्ता पढ़ना और आमीन भी आहिस्ता कहना। रुकूअ में दोनों हाथ दोनों घुटनों पर रखना, रुकूअ के बाद पीठ सीधी करना, सजदे में दोनों बाजूओं को दोनों पहलुओं से अलग रखना, सजदे में जाते वक़्त घुटनों को ज़मीन पर पहले रखना, फिर हाथों का रखना, सजदे में दोनों रानों को पेट और पसलियों से अलग रखना, सजदे में दोनों घुटनों को अलग फ़ासला से रखना। दोनों हाथों का दोनों मोड़ों के मुक़ाबिल रखना। दोनों सजदों के दर्मियान बैठते वक़्त क़अदे ऊला में एक पांव बिछा कर उस पर बैठना और क़अदे अख़ीर में सुरीन के बल बैठना, दायें रान पर दायां हाथ और बायें रान पर बायां हाथ रखना। दायें हाथ की उंगलियों को बन्द रखना। बन्द हाथ की अंगुष्ठे शहादत से इशारा करना। इस तरह कि अंगूठे से दर्मियानी उंगली के साथ हलका किया हो। बायें हाथ की उंगलियां खुली हुई रान पर रखी हों।

इन शर्तों में से कोई शर्त भी किसी उज़रे शर्ई के सिवा अगर तर्क कर दी जाएगी तो नमाज़ बातिल हो जाएगी। अगर किसी रुक्न को क़सदन तर्क कर दिया या ग़लती से किसी रुक्न को छोड़ दिया गया तो नमाज़ न होगी। अगर वाज़िब को ग़लती से तर्क कर दे तो सजदा सहू से नमाज़ हो जाएगी और अगर वाज़िब को जान बूझ कर छोड़ दिया जाए तो नमाज़ बातिल हो जाएगी। किसी सुन्नत या नमाज़ की हैयत के तरक़ से न नमाज़ बातिल होती है और न सजदा सहू लाज़िम आएगा।

## ज़कात

मुसलमान पर ज़कात इस हालत में वाज़िब होती है जब वह साहिबे निसाब हो (जिनके पास मोजिबे ज़कात माल हो) ज़कात का निसाब यह है। तीस मिस्क़ाल सोना या दो सौ दिरहम चांदी या इन दोनों में से किसी एक की कीमत के बराबर माल तिजारत या पाँच ऊंट या तीस (रास) गायें या भैसैं या चलीस बकरियां, बशर्ते कि यह सब जानवर पूरे साल जंगल में आज़ाद मुफ़्त चरते हों। निसाबे ज़कात हैं, गुलाम और मकातिब पर ज़कात वाज़िब, फ़र्ज़ नहीं है।

### निसाब

सोने या चांदी पर चालीसवां हिस्सा ज़कात है यानी बीस दीनार पर निस्फ़ दीनार, दो सौ दिरहम पर पांच दिरहम।

### ऊंटों का निसाब

अगर पांच ऊंट हों तो एक भेड़ या बकरी (भेड़ शश माहा और बकरी एक साला) दस ऊंट हों तो दो बकरियां या दो भेड़ें। 150 ऊंटों पर तीन बकरियां (भेड़ें) 20 ऊंटों पर चार भेड़ या



बकरियां दी जाएं छब्बीस ऊंटों के मालिक पर पूरे साल भर की ऊंटनी देना वाजिब है (जो एक साल की पूरी हो) अगर साल भर की ऊंटनी मौजूद न हो तो दो बरस से ज्यादा उम्र का एक ऊंट दिया जाए।

छत्तीस ऊंटों का मालिक दो साल की एक ऊंटनी जकात में दे। छियालिस ऊंटों का मालिक तीन साल की उम्र का एक ऊंट जकात दे। इक्सठ (61) ऊंटों पर एक जकात दे जो चार साल पूरे करके पांचवें साल में दाखिल हो गया हो छिहत्तर (76) ऊंटों वाला दो बरस की दो ऊंटनियां जकात दे। एकानवे से एक सौ बीस ऊंटों तक तीन तीन बरस तक तीन तीन बरस के दो ऊंट देना होंगे, इससे ज्यादा अगर एक भी बढ़ जाए तो हर चालीस में से दो बरस की एक ऊंटनी जकात दे और हर पचास पर तीन साल का एक ऊंट जकात दे।

## गाय, भैंस का निसाब

अगर तीस (30) गाय या भैंस का मालिक हो तो एक बरस का बच्चा नर या मादा जकात है, अगर चालीस हों तो एक बच्चा (नर या मादा) जो दो साल का हो और साठ गायों पर दो बच्चे जिन की उम्र एक साल है जकात है जब गायें सत्तर तक पहुंच जायें तो इसमें से एक बच्चा साल भर का और एक बच्चा दो साल जकात है। इसी तरह पर तीस गायों से एक एक बच्चा एक साल का और हर चालीस से हर बच्चा दो बरस का निकाले।

## बकरियों का निसाब

चालीस से एक सौ बकरियों तक एक बकरी जकात है। अगर तादाद उस से ज्यादा हो तो दो सौ की तादाद तक दो बकरियां या दो भेड़ें। अगर दो सौ से एक भी ज्यादा हो जाए तो तीन सौ तक तीन बकरियां या भेड़ें जकात हैं। इससे आगे हर सैकड़े पर एक दी जाए।

# मसरफे जकात

## जकात के मुस्तहिक

माले जकात के हकदार आठ किस्म के (लोग) हैं जिन का जिक्र कुरआन पाक में आया:  
 (1) फुकरा (वह नादार लोग जिन के पास गुजर बसर के लिए कुछ न हो) (2) मसाकीन (वह मुफलिस जिसके पास कुछ तो हो मगर बकदरे जरूरत न हो) (3) जकात के आमेलीन, यानी कारिन्दे और कार कुन (जकात वसूल करने और बैतुल माल तक पहुंचाने वाले) (4) मोअल्लेफतुल कुलूब (ऐसे काफिर जिन को अगर माल दिया जाए तो उनके मुसलमान हो जाने की उम्मीद और तवक्को हो या कम अज कम मुसलमान को उनकी शरातों से महफूज रखा जा सके) (5) गुलामों को आजाद कराने में, ऐसे कर्जदारों की इआनत में जिन को अदाए कर्ज की ताकत न हो। (7) वह मुजाहेदीन जो बेगैर किसी एवज या तन्ख्याह के काफिरों के साथ जिहाद में मशगूल हैं। (8) ऐसा मुसाफिर जिसके पास सफरे खर्च न हो और वह परदेस में इसकी वजह से पड़ा हो।

## सदकए नाफिला

फर्ज जकात अदा करने के बाद नफ़ल ख़ैरात हर ज़माने में हर वक़्त मुस्तहब है, खुसूसन



बरकत वाले महीनों और दिनों में तो और भी अफज़ल है। मसलन रजब, शअबान और रमज़ान के महीनों में, ईद के अय्याम, मोहर्रम के दस दिन, कहत साली और तंग हाली के दिनों में अफज़ल है। सदकए नफ़ल अदा करने वालों के माल में ख़ैर व बरकत होती है और उसके अहल व अयाल अमल व अमान और आराम से रहते हैं इस के अलावा आख़िरत में बड़ा सवाब मिलता है।

## सदकए फ़ित्र

जिस शख्स के पास अपने और अपने बीवी बच्चों की ज़रूरीयात से ज़्यादा रोज़ी हो तो उस पर सदकए फ़ित्र वाजिब है। ईद की रात या ईद के दिन अपनी जात, अपनी औलाद, बीवी, गुलाम, बांदी, मां बाप, भाई बहन, चचा और चचा की औलाद और करीबी अइज़्ज़ा की तरफ़ से बशर्ते कि उन की क़िफ़ालत और नान नफ़का की ज़िम्मेदारी उस पर हो, सदकए फ़ित्र अदा करे।

### सदकए फ़ित्र की मिक़दार

ख़ूज़ूर, किशमिश, गेहूँ, जौ या उनके सत्तू आटा एक साअ है (साअ एक मुमासिल वज़न हमारे मुल्क में 351 तोले हैं एहतियातन साढ़े चार सेर शुमार किया जाता है) जो वज़न में साढ़े पांच रत्ते इराकी है बरकौले सही पंसेरी है (सदकए फ़ित्र में दिया जा सकता है) अगर कहीं यह चीज़ें न हों तो शहर में जो ग़ल्ला उमूमन इस्तेमाल होता है। मसलन चावल, जवार, चना, वगैरह उसी में से उतनी मिक़दार अदा करे।

## रोज़ा

जब रमज़ान का (मुबारक) महीना आ जाए तो हर मुसलमान पर इसके रोज़े वाजिब हो जाते हैं अल्लाह तआला का इरशाद है (जो शख्स तुम में से रमज़ान को पाए तो उसमें रोज़े रखे।

अगर चांद देख कर या किसी आदिल सिक़ह आदमी की शहादत से या शअबान की तीसवीं रात को बादल या गुबार की वजह से चांद न देखने या माहे शअबान के तीस दिन पूरे हो जाने से रमज़ान की आंमद साबित हो जाए तो दूसरे दिन से रोज़े रखे और वक़्ते मग़रिब से सुबह सादिक के तुलूअ होने तक जिस वक़्त चाहे नीयत करे। रोज़ाना पूरे महीने इसी तरह नीयत किया करे। एक ज़अईफ़ रिवायत में यह भी आया है कि अगर रमज़ान की पहली रात में महीने भर के रोज़ों की नीयत एक साथ कर ली तो काफी है।

सुबह से लेकर पूरे दिन खाने पीने और जिमाअ से परहेज़ करे, कोई शय भी बाहर की तरफ़ से पेट के अन्दर दाख़िल न हो न अपने बदन से खून निकाले न किसी दूसरे से निकलवाए।

(पचने न खुद लगाए न दूसरे से लगवाए) खुद कै न करे कोई ऐसी हरकत न करे जिस से इनज़ाल की सूरत पेश आए।

### क़ज़ा व कफ़ारा

ऊपर बयान की हुई एहतियातों को मलहूज़ रखना अज़ बस ज़रूरी है, अगर इन अहक़ाम में से किसी एक की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगा तो क़ज़ा लाज़िम आएगी (रोज़ा बातिल हो जाएगा) और



## गुनियतुत्तालिबीन

उस दिन भी शाम तक हर ममनूआ चीज से परहेज रखना जरूरी होगा। रोज़ा के दर्मियान (रोज़े की हालत में) जिमाअ करने से कफ़ारा भी वाजिब हो जाता है। (1) यानी किसी मुसलमान बांदी या गुलाम को आजाद करना जो तन्दरुस्त और काम काज करने के काबिल हो (अन्धा, लंगड़ा, लूला, लुंजा या बहरा न हो) (2) अगर इसकी ताकत न हो तो मुतवातिर दो माह तक रोज़े रखे, (3) यह भी न हो सके तो साठ फकीरों को खाना खिलाए इस तरह इस तरह कि हर मिसकीन या फकीर कम अज़ कम एक सौ साढ़े तिहत्तर दिरहम वज़नी गेहूँ दे या हर एक को निस्फ़ साअ (175 1/2 तोले) खूजूर या जौ या उस शहर में जो गल्ला खाया जाता हो वह दे दे लेकिन अगर कुछ देने की तौफीक न हो तो अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करे और दूसरे रोज़ कोई अच्छा अमल करे।

रमज़ान के महीने में दिन के वक़्त किसी जवान औरत के साथ खलवत (तन्हाई) में न रहे न बोसा ले ख्वाह वह उसकी मोहरम ही क्यों न हो, जवाले आफ़ताब के बाद मिसवाक से परहेज करे, गोंद चबाने, थूक मुंह में जमा करके निगलने, पकते वक़्त खाना का मज़ा या नमक चखने से इज्तेनाब करे।

## सहर व इफ़्तार

किसी की गीबत, बुराई करने, झूठ बोलने और गाली गलोच से परहेज करे। बादल वाले दिन इफ़्तार में ताख़ीर करे वरना इफ़्तार में जल्दी करना मुस्तहब है, अगर ऐसे लोगों में से न हो जिन को तुलूए फज़र का अन्दाज़ा नहीं हो सकता। (जैसे नाबीना, कमज़ोर नज़र वाला) तो उसे सहरी ताख़ीर से नहीं खाना चाहिए बल्कि जल्द खाए वरना आखिर रात तक तवक्कुफ़ करके सहरी खाना अफ़ज़ल है।

## इफ़्तार

अफ़ज़ल यह है कि खजूर या पानी से इफ़्तार करे और और इफ़्तार के वक़्त वही दुआ करे जो हूजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाई है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर किसी ने रोज़ा रखा है और (इफ़्तार में) शाम का खाना उसके सामने लाया जाए तो (इफ़्तार करते वक़्त) यह दुआ पढ़े

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मा ल-क सुमतो व अला रिज्केका अफ़तरतो सुब्हान-क व बेहम्देका अल्लाहुम्मा तक्बल मिन्ना फ़इन्न-क अन्तस समीउल अलीम

यानी मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ। ऐ अल्लाह मैंने रोज़ा तेरे लिए रखा और तेरे ही रिज्क से इसे खोला, तू पाक है और तेरे ही लिए हम्द है। ऐ अल्लाह तू हमसे (इस रोज़े को) कबूल कर। बेशक तू सुनने और जानने वाला है।

## एतकाफ़

मुसलमान के लिए एतकाफ़ में बैठना मुस्तहब है, एतकाफ़ के लिए उस मस्जिद में बैठना चाहिए जिस में नमाज़ बा जमाअत अदा होती हो, इस मक्सद के लिए सब से बेहतर जामा मस्जिद है कि अगर एतकाफ़ के दौरान जुमा का दिन आ जाए तो मोतकिफ़ नमाज़े जुमा भी अदा



कर सके, एतकाफ़ के लिए रोज़ा दार होना ज़्यादा बेहतर है, मगर रोज़ा रखे बग़ैर भी एतकाफ़ किया जा सकता है। रोज़ा रखना इस लिए बेहतर है कि एतकाफ़ करने वाले को रोज़ा उसके मक़सद बरारी में मदद देता है, यह नफ़से अम्मारा की ख़्वाहिशों का क़ला क़मा करता है करता है। एतकाफ़ के लुगवी माना है—“अपने आप को किसी ख़ास मक़ाम में रोके रखना, किसी चीज़ पर जुमा रहना और किसी शय पर पाबन्दी इख़्तेयार करना—”अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इरशाद फ़रमाया: यह क्या मूर्तियाँ हैं तुम जिन (की पूजा) पर जमे हुए हो।

एतकाफ़ सुन्नते रसूलाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी और सुन्नते सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम भी, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माहे रमज़ान के आख़िरी अशरा में एतकाफ़ फ़रमाया था और विसाल शरीफ़ के वक़्त तक उसी सुन्नत पर क़याम फ़रमाया और सहाबे कराम को भी इसकी दावत फ़रमाई और फ़रमाया जो कोई एतकाफ़ करना चाहे तो रमज़ान के आख़िरी अशरा (दस दिन) में करे। एतकाफ़ करने वाला हालते एतकाफ़ में ऐसे कामों में मशगूल रहे जो कुर्बे इलाही हासिल करने का ज़रिया हैं मसलन तिलावते कुरआने पाक, तस्बीह व तहलील (सुब्हानल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ना) सिफ़ाते इलाही में ग़ौर व ख़ौज और मुराक़बा में मशगूल रहे। और बेकार कौल व अमल से बचे, अल्लाह की याद के अलावा हर ज़िक्र से ख़ामोश रहे, इल्मे दीन पढ़ना और कुरआन शरीफ़ पढ़ना जाइज़ है चूँकि इससे दूसरों को भी फ़ायदा पहुंचता है इस लिए यह इस इबादत से अफ़जल है जिसका फ़ायदा तन्हा आबिद को हासिल होता है।

गुस्ते जनाबत (नापाकी), खाने पीने। कज़ाए हाजत (बौल व बराज़) के लिए एतकाफ़ से बाहर आना जाएज़ है इसी तरह फ़िल्ते, सख़्त बीमारी और जान जाने के अन्देशे की सूरत में एतकाफ़ से बाहर आना जाएज़ है।

## हज और उमरा

### शराइते हज

एक मुसलमान पर जब तमाम शराइते हज मौजूद हों तो फ़ौरन हज और उमरा उस पर फ़र्ज़ हो जाता है, शराइते हज यह हैं, इस्लाम क़बूल करने के बाद आज़ाद हो या (गुलाम न हो) आक़िल और बालिग़ हो। पागल न हो, हज के इख़राजात मौजूद हूँ, सफ़र के दौरान सवारी की ताक़त हो, राह में किसी किस्म का शदीद ख़तरा न हो, वक़्त में इतनी गुंजाइश हो कि जाकर हज कर सके, अहल व अयाल के लिए इस क़दर खर्च मुहय्या कर दिया हो कि हज करने वाले की ग़ैर हाज़िरी में उन के लिए काफ़ी हो और रहने के लिए मकान हो। अगर क़र्ज़दार हो तो क़र्ज़ अदा कर चुका हो। वापस आने के बाद गुज़र बसर का कुछ सामान मौजूद हो (कुछ अन्दोख़ता हो या जाइदाद का किराया वग़ैरह।)

अगर इन अहक़ाम की ख़िलाफ़वर्जी करेगा, अहल व अयाल के हुक्क की अदाइगी में कोताही करे, मक़रुज़ था और क़र्ज़ अदा किए बग़ैर जाने का इरादा करे तो इन सूरतों में सवाब के बजाए गुनाह कमाएगा, उस पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है: आदमी के लिए यही गुनाह काफ़ी है कि जिनकी रोज़ी उसके



ज़िम्मा है उन्हें जाया कर दे। जिसने शराइते मज़कूरा के मुताबिक हज़ किया और ख़िलाफ़े शरीअत कोई काम न किया और हज़ व उमरा अदा किया तो उसका फ़र्ज़ अदा हो गया।

## मीकाते एहराम

मीकात उस मक़ाम को कहते हैं जिससे आगे मक्का जाने वाला बग़ैर एहराम बांधे न जा सके। शरई मीकात मगरिब वालों (मगरिबी ममालिक के लोगों) के लिए हुजफ़ा, मशिरक़ वालों के लिए जाते अर्क, अहले मदीना के लिए जुल हुलैफ़ा, और अहले यमन के लिए यलमलम और नज्द के रहने वालों के लिए कर्न मुकर्रर है।

जब मीकाते शरई पर पहुंचे तो गुस्ल करके पाक व साफ़ हो और अगर पानी मयस्सर न हो तो तयम्मूम करे फिर तहबन्द बांध कर चादर ओढ़े। यह दोनों कपड़े सफ़ेद और पाकीज़ा हों, फिर खुशबू लगा कर दो रकअत नमाज़ पढ़ कर एहराम बांध ले, एहराम की नीयत दिल में भी करे और ज़बान से भी। अगर तमत्तो करना चाहे तो सिर्फ़ उमरा के लिए और सिर्फ़ हज़ करना चाहे तो सिर्फ़ हज़ के लिए, और दोनों एकजा करना चाहे तो दोनों के लिए एकजा नीयत करे,

तमत्तो हज़ की उस सूरत को कहते हैं जिसमें अय्यामे हज़ में पहले उमरा का एहराम बांध कर उमरा अदा की जाए और फिर उसी साल उसी सफ़र में हज़ का एहराम बांध कर हज़ किया जाए ऐसे शख्स को मुत-मत्ते कहते हैं।

नीयत के अलफ़ाज़ यह हैं।

इलाही मैं उमरा करना चाहता हूँ या इलाही मैं हज़ करना चाहता हूँ या इलाही मैं उमरा या हज़ दानो करना चाहता हूँ मुझे इसकी तौफ़ीक़ इनायत कर और कबूल फ़रमा।) इसके बाद तलबीह कहे तलबीह (लब्बैक) के अलफ़ाज़ यह हैं।

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक ला शरीक ल-क लब्बैक इन्नल हम्दा वन्नेमता ल-क वल मुल्का ल-क ला शरीका ल-क

(मैं तेरे लिए हाज़िर हूँ, इलाही मैं तेरे लिए हाज़िर हुआ तेरा कोई शरीक नहीं, मैं तेरे लिए हाज़िर हुआ, हम्द और फज़ल तेरे ही लिए है, और हुकूमत तेरी है और तेरा कोई शरीक नहीं है।

लब्बैक ऊँची आवाज़ से कहे, एहराम बाँधने के बाद पांचों वक़्त की नमाज़ के बाद रात और दिन के शुरु होने के वक़्त, जब किसी साथी से मुलाक़ात हो या जब किसी से बलन्दी पर चढ़े या बलन्दी से नीचे आए या किसी और को तलबीह पढ़ते सुने तो, मस्जिदे हराम में और हर इज़ज़त वाले मक़ाम पर तलबीह कहे और नबीए मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरुद व सलाम अर्ज करके अपने अइज़्ज़ा व अहबाब के लिए दुआ मांगे।

## एहराम के मसाइल

एहराम बांधने के बाद सर को (किसी वक़्त) ना ढांपे न सिला हुआ कपड़ा पहने और ना मोज़ा पहने। अगर इन ममनूआत में से किसी अम्र का मुरतकिब होगा तो एक बकरी की कुरबानी देना लाज़िम होगी लेकिन जब बग़ैर सिला हुआ तहबन्द न मिले और न बग़ैर सिलाई के जूते पहनने को मयस्सर आयें तो ऐसी सूरत में सिला हुआ कपड़ा और जूते पहन लें, एहराम बांध लेने के बाद



## गुनियतुतालिबीन

अपने बदन और कपड़ों पर किसी किस्म की खूंशबू न लगायें अगर कसदन ऐसा किया तो कपड़ों को धोना होगा और एक बकरी की कुरबानी देना होगी।

नाखुन और बाल कटवाना भी मना हैं, तीन नाखुन काटने या तीन बाल मूँडने वाले को एक बकरी कुरबानी देना होगी अगर तीन दिन से कम नाखुन काटे या तीन से कम बाल मूँडे, या तिहाई सर से कम मुंडवाया तो हर नाखुन और हर बाल के एवज दस छटाक गोहूँ देना होंगे।

## जिन्सी कयूद

एहराम की हालत में अपना निकाह करना या किसी और के निकाह में शामिल होना दोनों बातें मना हैं अपनी मन्कूहा या लौंडी से एहराम की हालत में जिमाअ भी ममनूअ है। अलबत्ता बीवी के पास आना जाना मना नहीं इस के खिलाफ करने वाले का हज बातिल हो जाएगा बशर्त की जिमाअ उक्बा के संगरेजे मारने से पहले वाक़ेअ हुआ हो, अगर कसदन अपनी मनी ख़ारिज को या बार बार औरत की तरफ़ देखे और उस सूरत से इज़ाल हो जाएगा तो कफ़ारा में एक बकरी की कुरबानी देना होगी।

## हैवानात का शिकार और कीड़े मकोड़े मारना

और खुद शिकार करना या किसी से शिकार कराना (यानी किसी को शिकार की तरगी देना या शिकार में मदद देना) शिकार के लिए रहनुमाई करना, जिबह करने में मदद देना शिकार के लिए हथियार मुहय्या करना, यह सब बातें मना हैं।

अगर इन बातों में से कोई काम करेगा तो शिकार किए हुए जानवर की मानिन्द जानवरों से कफ़ारा देना होगा यानी अगर शुतुरमुर्ग शिकार किया है तो उसके बदले ऊंट की कुरबानी देनी होगी। इसी तरह गोरखर और नील गाय के एवज गाय की कुरबानी हिरन या लोमड़ी के एवज बकरी की कुरबानी बिज्जू (कफ़तार) के बदले मेंढा, खरगोश के एवज बकरी का बच्चा, घूं (जंगली चूहे) के बदले चार माह की उम्र का बकरी का बच्चा सूसमार(गोह) के बदले बकरी का बच्चा, बड़ी के एवज बड़ा और छोटी सूसमार के एवज छोटा बच्चा हर कबूतर के एवज एक बकरी, अगर मिसली जानवर न हो तो उसकी कीमत दो सिक्कह मुसलमानों के तजवीज़ कराई ख़ैरात करना लाज़िम है।

पालतू (अहली) जानवर को मोहरिम के लिए जिबह करना और खाना जाइज़ है हर मूर्त जानवर को बहालते एहराम क़त्ल करना (मार डालना) जाइज़ है जैसे सांप, बिच्छू, कांटने वाला कुत्ता, शेर, चीता, भेड़या, भगड़ा (पलंग) अब्लक कौआ, चील, बाज़, इनके अलावा भीड़, मच्छर, पिस्सू, खटमल, चिचड़ी, छिपकली, मक्खी और ज़मीन के रहने वाले (हर मूजी) जानवर का मारना जाइज़ है चियूँटी अगर इज़ा दे तो उसे भी मारना जाइज़ है जूँ और उनके अण्डों का भी एवज रिवायत में यही हुक्म है। दूसरी रिवायत में बक़दरे मुम्किन ख़ैरात करना लाज़िम है हरम जानवर को ग़ैर मोहरिम भी क़त्ल न करे अगर ऐसा करेगा तो बहालते एहराम शिकार को क़त्ल करने पर जो (कफ़ारा और कुरबानी का) हुक्म है वही इस सूरत में भी जारी रहेगा

## दरख़्त

हरम के दरख़्तों को न काटे न उखाड़े वरना बड़े दरख़्त के एवज गाय और छोटे दरख़्त



बदले भेड़ की कुरबानी देना होगी।

मदीना मुनव्वरा के जानवरों और दरख्तों के बारे में भी यही हुक्म है। मगर फर्क यह है कि तावान में सिर्फ उस शख्स के कपड़े छीन लिए जायें, छिने हुए कपड़े छीनने वाले पर हलाल हैं

## मसाइले हज

अगर वक्त में गुंजाइश हो और यौमे अरफा से कुछ दिन पहले मक्का में दाखिल होने का इमकान हो तो मुस्तहब है कि खूब अच्छी तरह गुस्ल करके मक्का के बालाई जानिब से दाखिल हो जब मस्जिदे हराम पर पहुंचे तो बाबे बनी शैबा से हरम के अन्दर दाखिल हो और खानए काबा जब नज़र के सामने आए तो दोनों हाथ उठा कर बलन्द आवाज़ से यह दुआ पढ़े।

**तर्जमा:**—इलाही बेशक तू आफियत बख्शने वाला है और तेरी ही तरफ से सलामती है ऐ परवरदिगार हम को आफियत के साथ जिन्दा रख इलाही इस घर की अज़मत आंरै शरफ व वकार और खैर में इजाफा फरमा और जो हज और उमरा करने वाले इस ताज़ीम व तकरीम करें इलाही इन की अज़मत शरफ और वकार में भी इजाफा फरमा अल्लाह के लिये बकसरत हम्द व सना है जैसा कि वह इसका मुस्तहिक है और जिस तरह की तेरी जात बुजुर्गी और इज्जत व जलाल के लिए मुनासिब है अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे अपने घर तक पहुंचाया और मुझे उसके लाएक जाना और हर हाल में अल्लाह का शुक्र है इलाही तुने मुझे अपने घर का हज करने के लिए बुलाया और हम तेरी बारगाह में हाज़िर हो गये इलाही मेरे हज को कबूल फरमा और मेरी ख़ताओं से दर गुज़र फरमा और मेरा हर हाल दुरुस्त फरमा दे तेरे सिवा कोई माबूद नहीं

## तवाफ़

इसके बाद (यानी यह दुआ पढ़ने के बाद इब्तेदाई तवाफ जिसको तवाफे कुदूम कहते हैं।) बजा लाये अपनी चादर से इजतबा करे यानी इस तरह ओढ़े की दायां शाना खुला रहे और दायें बगल के नीचे से निकाल कर चादर का पल्लू बायें मुंडे पर डाल ले जिस से बायां शाना छुप जाये, फिर हज़रे असवद के पास आये उसे हाथ से छुए और मुमकिन हो तो बोसा दे वरना हाथों को ही बोसा दे अगर हुजूम के बाइस हज़रे असवद को ना छू सके और न उसके करीब पहुंच सके तो दूर ही से उसकी तरफ हाथ से इशारा ही कर दे और यह अलफाज़ ज़बान से अदा करे

**तर्जमा:**—मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बुजुर्ग है ऐ अल्लाह मैं तुझ पर ईमान लाया तेरी किताब की दिल से तसदीक की और तेरे अहद पर वफा की और तेरे पैगम्बर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तरीक की पैरवी की।

तवाफ़ दायें जानिब से शुरू करे, इसके बाद बैतुल्लाह के दरवाजे की तरफ लौटे फिर उस पत्थर की तरफ जाए। जिस के ऊपर खाना काबा का परनाला रखा है। तेज़ी और कुव्वत के साथ छोटे छोटे कदमों के साथ गुज़रे रुकने यमानी पर पहुंचे तो उसको हाथ से छू ले उसको बोसा न दे, इसी तरह हज़रे असवद तक आए, इस पूरे तवाफ़ को एक फेरा शुमार करे, दोबारा और सह बारा भी इसी सूरत से चक्कर लगाए और हर तवाफ़ के दौरान यह दुआ पढ़े—

**तर्जमा:**—ऐ अल्लाह हज कबूल फरमा और इसकी कोशिश के एवज़ मुझे जज़ा दे और मेरे



गुनाह माफ़ फ़रमा दे।

इसके बाद आहिस्ता आहिस्ता चल कर बाकी चार तवाफ़ पूरे करे इन बाकी चार तवाफ़ों के दौरान यह दुआ पढ़े।

**तर्जमा:**—ऐ परवरदिगार बख़्श दे और रहम फ़रमा और मेरी ख़ता जो तुझे मालूम है उससे दरगुज़र फ़रमा, तू बड़ी इज़्ज़त और बुजुर्गी वाला है।

ऐ हमारे रब हम को दोनों ज़हान की भलाई अता कर और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। इस के अलावा दुनिया और दीन की भलाई के लिए जो दुआ करना हो करे।

जो शख्स तवाफ़ कुदूम की नीयत करे उसको चाहिए कि वह दुनियावी नजासत और पलीदी से पाक हो, सतरे औरत किए हुए हो। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ख़ाना काबा का तवाफ़ भी नमाज़ ही है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि अल्लाह ने तवाफ़ करने वालों को बोलने की इजाज़त दे दी है और नमाज़ में बोलने की इजाज़त नहीं है।

## तवाफ़ के बाद

तवाफ़ से फ़रागत के बाद मक़ामे इब्राहीम के पीछे पहुंच कर दो रिक़अतें मुख़्तसर पढ़े पहली रिक़अत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह काफ़िरून और दूसरी रिक़अत में सूरह इख़लास पढ़े फिर लौट कर हज़रे असवद छू कर दरवाज़ा से निकल कर कोहे सफ़ा की जानिब चला जाए और इतना ऊंचा चढ़ जाए कि बैतुल्लाह नज़र आने लगे ऊपर चढ़ कर तीन बार अल्लाहु अक़बर कह कर यह अलफ़ाज़ कहे।

**तर्जमा:**—तमाम तारिक़ अल्लाह ही के लिए हैं क्योंकि उसी ने हमें हिदायत और रास्ती का रास्ता दिखाया कोई माबूद बरहक़ नहीं मगर अल्लाह, उसकी ज़ात व सिफ़ात में कोई उसका शरीक़ नहीं उसने अपना वादा पूरा कर दिया अपने बन्दे की मदद की काफ़िरों को शिकस्त दी, वह यक़ता है उसके सेवा कोई माबूद नहीं और हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं खुलूस के साथ उसकी इताअत करते हैं अगरचे ना ग़वार हो काफ़िरों को।

यह दुआ पढ़ने के बाद कोहे सफ़ा से उतर कर लब़ैक़ कहे दूसरी और तीसरी मरतबा दुआ पढ़े फिर नीचे उतर कर इतना पैदल चले कि उस सब्ज़ मील (मीले अख़ज़र) से जो मस्जिद के करीब खड़ा है छः हाथ का फ़ासला रह जाये फिर तेज़ी के साथ चल कर बाकी दो सब्ज़ निशानों (पत्थरों) तक पहुंचे उसके बाद हलकी रफ़्तार से चल कर मरवा तक पहुंच कर ऊपर चढ़ जाये और जो अमल सफ़ा पर किया था वही मरवा पर करे फिर उससे उतर कर सई करे और दोनों सब्ज़ सुतूनों के दर्मियान दौड़े यहां तक की कोहे सफ़ा पर आ जायें इसके बाद दोबारा फिर उसी तरह करे ऐसा अमल सात बार करे (पहला चक्कर सफ़ा से शुरू करे और मरवा पर ख़त्म करे) जिस तरह तवाफ़ के वक़्त तहारत ज़रूरी है उसी तरह सफ़ा और मरवा के दर्मियान सई के वक़्त भी पाक होना लाज़िम है।

## 8 ज़िलहिज्जा

जब तवाफ़े काबा और सई से फ़ारिग़ हो जायें तो अगर हज्जे तमत्तो की नीयत की है तो अपना सर मुंडा दे या बाल तरशवाये बशर्ते कि कुरबानी का जानवर साथ न हो इस हल्क़ व क़स्



के बाद वह हर काम उसके लिए जाएज है जो गैर मोहरीम आदमी कर सकता है ब तरवीया (8 ज़िलहिज्जा) का दिन आ जाये तो उस रोज़ मक्का से एहराम बांधे और मेना में आये, जुहर, अस्त्र, मगरिब, और इशा की नमाज़ें वहीं अदा करे और वहीं रात गुज़ारे, अगले दिन फ़ज्र की नमाज़ भी वहीं अदा करे सूरज तुलूअ होने के बाद दूसरो के साथ चल कर उस जगह पहुंचे जहां अरफा के दिन लोग खड़े होते हैं।

सूरज ढल जाय तो इमाम खुतबा पढ़े, खुतबा में लोगो को बताये की उनको क्या क्या करना चाहिये मसलन वकूफ़ का हुक्म वकूफ़ का वक्त वकूफ़ की जगह, अरफात से रवानगी मुज्दलफा में नमाज़ की अदायगी और शब्बाशी, कंकरीयां मारना, कुरबानी करना, सर मुंडाना बैतुल्लाह का तवाफ़ वगैरह फिर इमाम के साथ जुहर व अस्त्र की नमाज़ें (एक साथ जमा कर के) पढ़े मगर इकामत हर नमाज़ की जुदा जुदा कहे फिर इमाम से करीब हो कर जबले रहमत और सख़रात (संगरेजों) की तरफ़ बढ़े और क़िब्ला रु होकर अल्लाह तआला की हम्द व सना खूब करे अल्लाह की याद अकसर व बेशतर इन अलफाज में करे (यह दुआ पढ़े)

**तर्जमा:**—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह वहदहु लाशरिक है उसी की हुकूमत है उसी के लिए हर तारीफ़ खास है वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है, वही ज़िन्दा है जिसको मौत नहीं आएगी, उसी के हाथ में हर भलाई है वह सब कुछ कर सकता है इलाही मेरे दिल में नूर पैदा कर दे मेरी आखों में नूर पैदा कर दे मेरे कानों में नूर पैदा कर दे और मेरा काम मेरे लिए आसान फ़रमा दे।

अगर दिन के वक्त इमाम के साथ खड़ा नहीं हो सका (यानी वकूफ़े अरफा नहीं मिल सका) मगर अगले दिन शब कुरबानी की सुबहे सादिक से पहले इमाम के साथ शामिल हो गया तो वकूफ़ का हुक्म करार दिय जाएगा और अगर उस वक्त भी इमाम के पास नहीं पहुंच सका तो हज़ फौत हो जायेगा।

मुज्दलफा के रास्ते कि तरफ़ इमाम के साथ सुकून और आहिस्तगी के साथ चलना चाहिये मुज्दलफा में पहुंच कर इमाम के साथ मगरिब व इशा की नमाज़ बा जमाअत अदा करे अगर इमाम के साथ अदा न कर सके और वह फौत हो जायें तो फिर तन्हा ही अदा करे और अपना सामान वहीं रखे, वहीं रात गुज़ारे, जहां संगरेजे आसानी से दस्तेयाब हो जायें वहां से 70(सत्तर) संगरेजे ले, यह कंकरीयां चने से बड़ी और फनदक (बादाम) से छोटी हों इन संगरेजों को धो लेना मुस्तहब है।

जब सुबहे सादिक हो जाये तो तड़के नमाज़ पढ़ कर मशअरे हराम के पास जा कर क़याम करे, अल्लाह की हम्द व सना और तहलील व तकबीर और दुआ में बहुत ज़्यादा मशगूल रहे, मंदर्जा जैल दुआ पढ़े।

ऐ अल्लाह तूने हमें इस जगह खड़ा किया है तूने ही हमें यह जगह दिखाई है, पस जिस तरह तूने हमें यह सीधी राह दिखाई है उस तरह हमको अपने जिक्र की तौफीक अता कर हमारी बख़्शिश फ़रमा और हम पर रहम फ़रमा जैसा की तूने अपने फ़रमान के मुताबिक़ हम से वादा किया है और तेरा वादा सच्चा है, फिर जब तुम लोग अरफात से वापस आने लगे तो मशअरे हराम के पास अल्लाह की याद करो इस तरह याद करो जिस तरह तुम को बतला रखा है और हकीकत में इससे पहले तुम महज़ नावाकिफ़ थे फिर तुम सब को ज़रूरी है कि उस जगह होकर



वापस आओ जहां और लोग जाकर वापस आते हैं और अल्लाह तआला के सामने तौबा करो बेशक अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देगा और मेहरबानी फ़रमाएगा।

जब दिन खूब निकल आये तो मिना को वापस जाये और वादिए मुहस्सिर में तेजी के साथ चले और जब मिना पहुंच जाये तो जमरए उक़बा पर सात कंकरियां मारे, हर कंकरी मारते वक़्त तकबीर भी कहे और दोनों हाथों को इतना उठाये कि बगलों कि सफ़ेदी नमूदार हो जाये इस लिए की आहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने संगरेजे इसी तरह मारे थे, यह कंकरिया तुलूअए आफ़ताब के बाद और जवाले आफ़ताब के कब्ल मारना चाहिये, अलबत्ता अय्यामे तशरीक के बकिया दिनों में कंकरियां जवाले आफ़ताब के बाद मारना चाहिये कंकरिया मारने के बाद अगर उसके साथ कुरबानी का जानवर है तो उसे ज़िबह करे फिर सर मुंडवाये या बाल तरशवाये अगर औरत है तो वह अपने सर के बालों की लट अंगूली के पौरे के बराबर कटवाये फिर मक्का को चला जाये और गुस्ल या वुजू करके तवाफ़े ज़ियारत करे (तवाफ़े ज़ियारत की नीयत करना ज़रूरी है) तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहिम के नीचे दो रिकअत नमाज पढ़े उसके बाद अगर चाहे तो सफ़ा मरवा का सई करे वरना तवाफ़े कुदूम के वक़्त जो सई कर चुका है वही काफी है अब वह तमाम बातें जो एहराम के वजह से ममनूअ थीं जाएज़ हो जायेंगी इसके बाद ज़मज़म की तरफ़ जाये और उसका पानी पिये, पानी पीने के वक़्त कहे—

**तर्जमा:**—बिस्मिल्लाह, इलाही इस पानी को मेरे लिए नफ़ा बख़्श, इल्म, वसीअ रिज़्क, सैराबी और शिकम सैरी और हर मरज़ से शिफ़ा का बाइस बना दे और मेरे दिल को इससे धोकर अपने मोहब्बत आमेज़ ख़ौफ़ से भर दे।

**मिना में:**—इसके बाद को लौट आये और तीन रात वहीं रहे और अय्यामे तशरीक में तीनों जमरों पर कंकरियां इसी तरह मारे जैसा की जिक्र हो चुका है, हर रोज़ इक्कीस(21)कंकरियां मारे, सात कंकरियां तीनों जमरों पर, जमरए ऊला से शुरू करे यह जमरा दूसरे जमरों की बनिसबत मक्का से ज़्यादा फ़ासला पर है। मस्जिदे ख़ैफ़ के करीब है सबसे पहले क़िब्ला रु होकर उस जमरा पर कंकरियां मारे, मारते वक़्त जमरए ऊला बायीं जानिब हो ना चाहिये। यहां कंकरिया मारने के बाद जमरा से आगे कुछ पढ़ कर ठहर जाये ताकि दूसरों की कंकरिया उस को लग जायें यहां इतनी देर ठहर कर दुआ करता रहे जितनी देर में सूरए बकर पढ़ी जाती है फिर जमरए वुसता के पास पहुंच कर उसके बायीं तरफ़ ठहर कर क़िब्ला रु होकर कंकरिया मारे और हसबे साबिक़ दुआ करे फिर जमरए अख़ीर यानी जमरए उक़बा के पास पहुंचकर उससे बायीं तरफ़ खड़ा हो और क़िब्ला रु होकर कंकरिया मारे फिर वादी में उतर जाये तवक्कुफ़ न करे मगर जल्द फ़रागत पाना चाहे तो तीसरे दिन संगरेजे न फेंके बल्कि जो उसके पास हों उनको ज़मीन में दफ़न कर दे, फिर उस जगह से मक्का की जानिब रवाना हो, वादीए अब्ता में पहुंच कर जुहर, अस्त्र, मग़रिब और एशा की नमाज़ें अदा करे, थोड़ी देर के लिये सो जाए फिर मक्का में दाख़िल हो, फिर मक्का के अन्दर या किसी दूसरी जगह इस तरह ठहरे जैसे जाहिर या अबतह में क़याम किया था।

## ख़ाना काबा में

जब ख़ाना काबा में दाख़िल हो तो बरहना पा दाख़िल हो, अन्दर पहुंच कर नमाज़ें नफ़ल अदा



करे इत्मीनान से खूब सैर हो कर आबे ज़म ज़म पिये आबे ज़म ज़म पीते वक्त ज़्यादती इल्म, बख़्शिशे गुनाह और रज़ाए इलाही के हुसूल की नीयत करे, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि "जिस बात के लिए ज़मज़म का पानी पिया जाये उसी के लिए है" अपनी तवज्जोह और निगाह को ज़्यादा तर ख़ानए काबा ही की तरफ़ रखे। बाज़ अहादीस में आया है कि ख़ाना काबा को देखना इबादत है। ख़ाना काबा को विदाअ किये बग़ैर उससे बाहर ना आए तवाफ़े विदाअ इस तरह है कि सात बार तवाफ़ करके रुकने यमानी और ख़ाना काबा के दरवाजे के दर्मीयान खड़ा हो कर यह दुआ पढ़े।

तर्जमा:—ऐ अल्लाह यह तेरा ही घर है और मैं तेरा बन्दा हूँ और तेरे बंदे और तेरी लौंडी का बेटा हूँ जिस चीज़ पर तूने मुझे कुदरत दी उस पर तूने मुझे सवार कराया और तूने मुझे अपने शहरों की सैर कराई यहां तक कि मुझे अपनी नेमत तक पहुंचा दिया और जो इबादत मुझ पर फ़र्ज थी उसके अदा करने मे मेरी मदद फ़रमाई अगर तू मुझ से राजी हुआ तो और राजी हो और अगर मेरी किसी कोताही के बाइस तू मुझसे राजी नहीं हुआ तो इससे पहले कि मैं तेरे इस घर से वापस जाऊँ तू अपनी रज़ामंदी से मुझ पर एहसान फ़रमा यह मेरे रुख़सत होने का वक्त है अगर तू मुझे इस हालत में इजाज़त दे दे कि मैं तेरे और तेरे घर के एवज़ न किसी दूसरे घर को इख़्तियार करूंगा और न किसी दूसरे को अपना रब बनाऊंगा इलाही मेरे बदन की आफ़ियत, मेरे जिस्म की सेहत और मेरे दीन की भलाई अता फ़रमा मेरे लिए दुनिया और आख़िरत की ख़ैर को जमा फ़रमा दे, बेशक तू हर शय पर कुदरत रखने वाला है।

इसके बाद रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरुद भेजे और रवाना हो जाये, मक्के में क़याम न करे अगर क़याम करे तो भेड़ जिबह करे।

## अदमे गुंजाइशे वक्त

अगर वक्त की गुंजाइश न हो और ख़तरा हो कि अरफ़ात का क़याम फ़ौत हो जायगा तो इस सूरत मे इब्तिदा अरफ़ात ही से कर दे बशर्ते कि मीकात से एहराम बांधा हो और वहां खड़ा रहे यहां तक कि आफ़ताब गुरुब हो जाये गुरुबे आफ़ताब के बाद रवाना होकर वही अमल करे जो मुज़दलफ़ा में शब बाशी के ज़िम्न मे बयान हो चुका है फिर मिना में संगरेजे दाल कर मक्का आ जाये और दो तवाफ़ करे।

अव्वल तवाफ़ में तवाफ़े कुदूम की नीयत करे और दूसरे तवाफ़ में ज़ियारत की। फिर सफ़ा और मरवा के दर्मीयान सई करे, अब उसके लिए हर वह चीज़ जो पहल ममनूअ थी हलाल हो जायेगी, फिर तीन दिन तक कंकरियाँ मारने के लिए मिना में लौट आए और बक़िया आमाल की तकमील करे ( यानी वह तमाम अफ़आले हज़ बजा लाये जो पहले बयान हो चुके हैं।

## उमरा

### उमरा की सूरत

उमरा की सूरत यह है कि गुस्ल करके खुशबू लगाये और शरई मीकात से एहराम बांधे, फिर मक्का पहुंच कर बैतुल्लाह का सात मर्तबा तवाफ़ करे और सफ़ा मरवा के दर्मीयान सई करे, सई



के बाद सर मुंडवाए या बाल छोटे करवाए अगर कुरबानी का जानवर साथ न लाया हो तो एहराम खोल दे। अगर उमरा करने वाला मक्का मुकर्रमा में मौजूद हो तो मकामे तनईम में जाकर वहाँ से एहराम बांध कर आये और मज़कूरा बाला आमाला व अफ़आल बजा लाये।

## मुबाशिरत के एहकाम

हज में औरत के साथ जिमाअ करना या किसी दूसरे तरीके से ऐसी बात करना जिससे इन्ज़ाल हो जाये तो हज बातिल हो जाता है।

# हज के अरकान, वाजिबत और सुन्नतें

## हज के अरकान

हज के अरकान चार हैं (1) एहराम (2) वकूफ़े अरफात (3) तवाफ़े ज़ियारत (4) सई (बैन सफ़ा व मरवा) अगर किसी ने इन अरकान में से किसी एक रूकन को तर्क कर दिया तो उसका हज न होगा (और न किसी किस्म की कुरबानी देने से उसकी तलाफी होगी) और उसी साल या अगले साल दोबारा एहराम बांध कर हज करना वाजिब हो जाता है।

## वाजिबाते हज

हज के वाजिबात पांच हैं (1) मुज़दलफ़ा में निस्फ़ शब तक ठहरना (2) एक रात मिना में कयाम करना (3) संगरेजे फेंकना (4) सर मुंडना (5) तवाफ़े विदाअ, अगर इन में से कोई वाजिब छूट जाए, तो इस के एवज़ बकरी जिबह करे इससे तरके वाजिब की तलाफी उसी तरह हो जाएगी जिस तरह नमाज़ में तरके वाजिब पर सज्दए सह से तलाफी हो जाती है

## हज की सुन्नतें

हज में सुन्नतें पन्द्रह हैं (1) एहराम बांधने के लिए, मक्का में दाख़िल होने के लिए, अरफात में कयाम करने के लिए, तवाफ़े ज़ियारत और तवाफ़े विदाअ के लिए गुस्ल करना (2) तवाफ़े कुदूम (3) सफ़ा और मरवा के दर्मियान दौड़ना (4) तवाफ़ में अकड़ कर चलना (5) तवाफ़ और सई के वक्त चादर का इसतबाअ करना (6) दोनों रूकनों को हाथ से छूना (7) संगे असवद को चूमना (8) सफ़ा और मरवा पर चढ़ना (9) मिना में तीन रातें गुज़ारना (10) मशअरे हराम के पास खड़ा होना (11) तीनों जमरों के पास खड़ा होना (12) खुतबात के वक्त ठहरना और खड़ा होना (13) दौड़ने के मकामात पर दौड़ना (14) आहिस्ता चलने के मकाम पर आहिस्ता चलना (15) तवाफ़ के बाद दरिअतें पढ़ना अगर यह तमाम अफ़आल या इनमें से कोई एक सुन्नत तर्क हो गई तो इसका एवज़ (कुरबानी) लाजिम नहीं आता, फ़जीलत तर्क हो जाएगी।

## उमरा के अरकान

उमरा के अरकान तीन हैं (1) एहराम बांधना (2) खाना काबा का तवाफ़ करना (3) सफ़ा और मरवा के दर्मियान सई करना।

**उमरा के वाजिबात:**—उमरा में सिर्फ़ एक वाजिब है यानी सर मुंडवाना।



## उमरा की सुन्नतें

उमरा की सुन्नतें यह हैं, एहराम के वक्त गुस्ल करना, तवाफ़ और सई में मशरूआ दुआओं और अज़कार का पढ़ना सुन्नतों के तर्क पर वही हुक्म है जो हज में तर्क सुन्नत के बारे में आया है।

## मदीना (मुनव्वरा) की ज़ियारत

जब अल्लाह तआला के फज़ल व करम से तन्दरुस्ती और आफ़ियत के साथ मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी नसीब हो तो मुस्तहब है कि मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में यह दरुद पढ़ता हुआ दाख़िल हो।

**तर्जमा:**—इलाही, हमारे आका मोहम्मद मुस्ताफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और हमारे आका की आल पर रहमतें नाज़िल फ़रमा और मेरे लिए अपने रहमत के दरवाज़े खोल दे और अपने अज़ाब के दरवाज़े बंद कर दे, तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो ज़हानों का पालने वाला है।

फिर रौज़ए मुबारक पर हाज़िर हो, मिम्बर शरीफ़ के करीब इस तरह खड़ा हो कि मिम्बर (शरीफ़) बायें हाथ पर हो, मज़ारे मुबारक सामने हो और किब्ला वाली दीवार पुश्त के पीछे, इस तरह ज़ियारत शरीफ़ जायेर और किब्ला के दर्मियान हो जाएगी फिर इस तरह अर्ज करे,

**तर्जमा:**—ऐ अल्लाह के नबी आप पर सलाह हो और अल्लाह की रहमत और बरकत इलाही (हज़रत) मोहम्मद और आले मोहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा, जिस तरह तूने इब्राहीम पर रहमत नाज़िल फ़रमाई हकीकत यह है कि तू ही हम्द और बुजुर्गी वाला है इलाही हमारे आका और सरदार मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हमारे लिए वसीला बना और दुनिया और आख़िरत में उनको बलंद दर्जा और बुजुर्गी अता फ़रमा उन्हें मक़ामे महमूद इनायत कर जिस का तूने वादा किया है, ऐ अल्लाह (आलम) अरवाह में मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूह पर (आलम) अजसाम में आप के जिस्मे (अतहर) पर ऐसी ही रहमत नाज़िल फ़रमा जैसा उन्होंने तेरा पैग़ाम पहुंचाया और तेरी आयात की तिलावत की और तेरे हुक्म का बलंद आहंगी से ऐलान किया, तेरी राह में जिहाद किया, तेरी फ़रमा बरदारी का हुक्म दिया और नाफ़रमानी से रोका, तेरे दुश्मन से दुश्मनी और तेरे दोस्त से दोस्ती फ़रमाई, वफ़ात के वक्त तक तेरी इबादत की बेशक इलाही! तूने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़रमाया कि अगर लोग अपनी जानों पर भी जुल्म करके तेरे पास आयें और अल्लाह से बख़्शिश चाहें और रसूल उनके लिए बख़्शिश की दरख़्वास्त करें तो वह अल्लाह को बख़्शाने वाला और मेहरबान पायेंगे और इसमें कोई शुबा नहीं कि मैं तेरे पैग़म्बर के पास अपने गुनाहों से तौबा करता हुआ माफी का तलबगार होकर हाज़िर हुआ हूं और तुझ से दरख़्वास्त करता हूं कि तू मेरे लिए मग़्फ़िरत को उसी तरह वाजिब कर दे जिस तरह तूने उन लोगों के लिए वाजिब कर दी थी जो तेरे नबी की हयात में जो उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर माफी के तलबगार हुए और नबी ने भी उनके लिए मग़्फ़िरत तलब फ़रमाई इलाही मैं तेरे नबी के वसीले से जो नबीए रहमत थे तेरी तरफ़ रुजूअ करता हूं या रसूलल्लाह मैं आप के वसीले से अपने रब की तरफ़ रुजूअ करता हूं कि वह मेरे गुनाह माफ़



फरमा दे और मुझ पर रहम फरमा, इलाही मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शफाअत करने वालों में सबसे अव्वल दर्जा वाला और सब दुआ करने वालों से ज्यादा कामयाब अव्वलीन व आखिरीन में सबसे ज्यादा इज्जत वाला बना इलाही जिस तरह हम बगैर देखे उन पर इमान लाए और बगैर मिले हमने उनकी तसदीक कर दी तू सभी को उस जगह दाखिल करना जहां तूने उनको दाखिल फरमाया और हमारा हशर उन्हीं के गरोह में फरमा और हम को उनके हौज पर उतार और उनके प्याले से हम को ऐसा पानी हम को पिला कर सैराब कर जो प्यास को दूर करने वाला, लजीज और खुशगवार हो जिस के बाद हम कभी प्यासे न हों, और हम को रूसवा, अहद शिकन, इताअत से खारिज, और दीन की सदाकत में शक करने वाला न बना हम को उनमें से न बना जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ न हम को गुम करदा राह बना और हम को अपने नबी की शफाअत के मुस्तहकीन में से कर दे।

यह दुआ पढ़ कर दायें तरफ से होकर आगे बढ़े और यह दुआ पढ़े।

ऐ अल्लाह के रसूल के दोनों दोस्तों आप पर सलाम हो, अल्लाह की रहमत और बरकत हो ऐ (हज़रत) अबू बकर सिद्दीक आप पर सलाम हो ऐ (हज़रत) उमर फारुक आप पर सलाम हो, ऐ अल्लाह तू इन दोनों हज़रात को इनके नबी और दीने इस्लाम की तरफ से नेकी और जज़ा दे मैं और हमारे भाईयों को जो हमसे क़बूल ईमान के साथ इस दुनिया से रुख़सत हो गये उन्हें बख़्श दे और हमारे दिलों में ईमान लाने वालों के हक में कीना न डाल, ऐ हमारे पालने वाले बेशक तू बख़्शाने वाला और रहम करने वाला है।

इस के बाद दो रिकअतें पढ़ कर बैठ जाये, रौज़ए मुतहहरा के अंदर ही मज़ारे अक़दस और मिम्बर शरीफ़ के दर्मीयान अगर नमाज़ अदा करे तो मुस्तहब है हुसूले बरकत के लिए मिम्बर शरीफ़ को छू ले।

मस्जिदे कुबा में भी नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है अगर शोहदा के मज़ारात की ज़ियारत का ख्वास्तगार हो तो ज़ियारत कर सकता है, ख़ूब दुआयें मांगे जब मदीना मुनव्वरा से रुख़सत होने का इरादा करे तो मस्जिदे नब्वी में हाज़िरी दे, रौज़ए मुबारक की तरफ़ बढ़ कर उसी तरह सलाम पेश करे जिस तरह पहले पेश किया था, सलात व सलाम के बाद इजाज़त तलब करे, दोनों सहाबा पर सलाम पेश करे और फिर यह दुआ पढ़े।

इलाही अपने नबी के मज़ार की इस ज़ियारत को मेरे लिए आखिरी ज़ियारत न बना देना और मरते वक़्त मुझे आप की मोहब्बत और सुन्नत पर काइम रखना, आमीन या अर्रहमर्रहिमीन



## बाब 2

## आदाब

# इस्लामी अख़्लाक़ व तहज़ीब

### सलाम

मुलाकात के वक़्त पहले सलाम करना सुन्नत है, और सलाम का जवाब देना पहले सलाम करने से ज़्यादा ज़रूरी है। लफ़्जे सलाम पर चाहे तो अलिफ़ लाम ज़्यादा करके अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु कहे या बग़ैर अलिम लाम दाख़िल किए सलामुन अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु कहे दोनों तरह जाइज़ है।

सलाम के बारे में एक हदीस मरवी है जो हज़रत इमरान बिन हसीन से मनकूल है कि "एक शख्स ने ख़िदमते गिरामी में हाज़िर हो कर अस्सलामो अलैकुम कहा, हुजूर वाला ने जवाब दे दिया वह शख्स बैठ गया, हुजूर ने इरशाद फ़रमाया इसको दस नेकियाँ मिलीं, कुछ देर बाद एक दुसरा शख्स हाज़िरे ख़िदमत हुआ—और उसने अर्ज किया अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु हुजूर ने जवाब दे दिया और वह बैठ गया—सरकार ने इरशाद फ़रमाया इसे तीस नेकियाँ मिलीं। सुन्नत यह है कि चलने वाला बैठने वाले को, और सवार पियादा को और बैठे को सलाम करे, जमाअत में से अगर एक ने भी सलाम कर लिया तो सब की तरफ़ से काफी है इसी तरह अगर जमाअत में एक ने जवाब दे दिया तो वह सब की तरफ़ से काफी होगा, मुश्रिक को सलाम करने में इब्तिदा दुरुस्त नहीं, अगर मुश्रिक सलाम में खुद पहल करे तो जवाब में (सिर्फ़) अलैक कहदे लेकिन मुसलमान के सलाम के जवाब में व अलैकुमस्सलाम कहना चाहिए, जिस तरह उसने अस्सलामो अलैकुम कहा है अगर बरकातहुम का लफ़ज़ बढ़ा दे तो और भी अच्छा है।

अगर कोई मुसलमान दुसरे मुसलमान को सिर्फ़ सलाम कहे तो जवाब न दिया जाए और उसको बता दिया जाए कि यह इस्लामी तरीका नहीं है औरतों को भी बाहम सलाम करना मुस्तहब है लेकिन किसी मर्द का जवान औरत को सलाम करना मकरूह है हाँ अगर औरत का चेहरा खुला हो (बेपर्दा हो) तो ऐसी हालत में अगर उसे किया जाए तो कुछ हरज नहीं है। बच्चों को सलाम करना मुस्तहब है इस (तरीका) से उनमें सलाम की आदत पैदा होती है, जो शख्स मज्लिस से उठ कर जाए वह जाते वक़्त अहले मज्लिस को सलाम करे यह मुस्तहब है, अगर दरवाज़ा दीवार या कोई और चीज़ हायल हो तब भी सलाम करे, अगर कोई सलाम करके चला गया और फिर दो बारा आकर तब भी सलाम करे।

### सलाम करने की मुमानिअत

अगर कुछ लोग शतरंज या नर्द (पाँसा) खेल रहे हों, या जूए में मसरूफ़ हों, शराब पी रहे हों तो उन को अस्सलामो अलैकुम न कहे (उनको सलाम न करे) हाँ अगर वह खुद सलाम करें



## गुनियतुतालिबीन

तो जवाब दे दे अगर यह कवी उम्मीद हो कि जवाब न देने से यह लोग मुतनब्बेह होंगे (आमतौर पर शर्मिन्दा होंगे) और गुनाहों से बाज़ आ जाएंगे तो सलाम का जवाब (इस सूरत में भी) न दे

कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज्यादा तर्क सलाम न करे, हाँ अगर वह बिदअती हो, गुम करदा राह हो या मासियत में मुब्तिला हो तो ऐसे शख्स से तर्क ताल्लुक करे। जिस मुसलमान भाई ने दूसरे मुसलमान भाई से कतए ताल्लुक कर लिया हो और फिर उस को सलाम करे तो वह तर्क ताल्लुक के गुनाह से बच जाता है।

## मुसाफ़ा

इस्लाम में मुसाफ़ा करना मुस्तहब है, अगर मुसाफ़ा की इब्तिदा खुद की है तो जब तक दूसरा शख्स मुसाफ़ा से अपना हाथ अलग न करे, अपना हाथ अलग नहीं करना चाहिए, आपस में बग़लगीर हो जाएं या बतौर तबरूक व दीनदारी एक शख्स दूसरे के हाथों या सर को बोसा ले तो यह जाएज़ है, मुंह चूमना मकरूह है।

## ताजीम

### ताजीम के लिए खड़ा होना

बादशाह आदिल, वालिदैन, दीनदार और परहेज़गार और बुजुर्ग लोगों की ताजीम के लिए खड़ा होना मुस्तहब है इस का असले सबूत इस रिवायत से मिलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्ला अलैहि वसल्लम ने बनी कुरैज़ा के यहूदियों के कज़िया के फैसले के लिए हज़रत साद मुआज़ को तलब फ़रमाया हज़रत साद सफ़ेद गधे पर सवार हो कर (बीमारी की वजह से) उनके आने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अहले मज्लिस (हज़रत साद कबीला वालों) से फ़रमाया कि अपने सरदार के लिए खड़े हो जाओ।

उम्मुल मुमेनीन हज़रत आएशा रज़ियल्लाहो अन्हा फ़रमाती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्ला अलैहि वसल्लम जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा के यहाँ तशरीफ़ ले जाते थे तो आपकी ताजीम के लिए खड़ी हो जाती थीं। इसी तरह जब कभी हज़रत फ़ातिमा आहज़रत ख़िदमत में तशरीफ़ ले जाती थीं तो आहज़रत उनकी तरफ़ उठ कर (बढ़ते) और हाथ पकड़ कर चूमते और अपनी जगह पर बिठाया करते।

एक रिवायत में आया है कि हुज़ूर वाला ने इरशाद फ़रमाया जब किसी कौम का सरदार (बुजुर्ग) तुम्हारे पास आए तो तुम उस की इज़्जत करो, इससे दिलों में दोस्ती और मोहब्बत फैलती है, इसलिए नेक लोगों की ताजीम मुस्तहब है और इसी तरह उनको तोहफ़ा हदाया देना भी मुस्तहब है लेकिन अहले मासियत और अल्लाह के ना फ़रमान बन्दों की ताजीम मकरूह है।

### छींक और जमाही (जमाई)

छींकने वाले को चाहिए कि छींकते वक़्त मुंह को छुपा ले और आहिस्ता छींके फिर ऊँचा आवाज़ से अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन कहे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद है कि जब बन्दा (छींक के वक़्त) अल्हम्दो लिल्लाह कहता है तो फ़रिश्ता उसके स



गुनियतुतालिबीन

रब्बुल आलमीन कहता है और बन्दा अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन कहता है तो फरिश्ता यरहम-क रब्बोका कहता है।

छींकते वक्त अपना मुह दायें बायें न फेरे, छींकने वाला अल्हम्दो लिल्लाह कहे तो सुनने वाले के लिए यरहम-कल्लाह कहना मुस्तहब है उसके जवाब में छींकने वाला यहदीकोमुल्लाह व युस्लेह हालोकुम (अल्लाह तुम को हिदायत दे और तुम्हारा हाल दुरुस्त करे) कहे अगर यगफिरुल्लाह लकुम कहे तो यह भी दुरुस्त है। अगर किसी को तीन दफा से ज्यादा छींकें आयें तो सुनने वाले पर (दुआईया) जवाब देना जरूरी नहीं क्योंकि यह मरतूब हवा और जुकाम की वजह से है, हदीस शरीफ में इसी तरह आया है, हजरत सलमा इब्न अकूअ से मरवी है कि हुजुरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि छींकने वाले को तीन बार जवाब दिया जाए उससे ज्यादा छींके तो जुकाम में मुब्तला है।

## जमाही या जमाई

जब किसी को जमाही आए तो मुंह पर हाथ रखले या आस्तीन से (मुंह को) ढांप ले क्योंकि शैतान मुंह में घुस जाता है। हजरत अबू हुरैरा से मरवी है कि हुजुर वाला ने इरशाद फरमाया: अल्लाह छींक को पसन्द फरमाता है और जमाही को ना पसन्द। तुम में से किसी को जमाही आए तो जहाँ तक हो सके लौटा दे हा हा न कहे इससे शैतान हंसता है, बे पर्दा बूढ़ी औरत की छींक का जवाब देना मर्द के लिए जायज़ है और नकाबपोश जवान औरत का छींक का जवाब देना मर्द के लिए नाजायज़ है—बच्चे की छींक के जवाब में यह दुआ पढ़ें अल्लाह तुझे बरकत दे, अल्लाह तुझे जज़ा दे, अल्लाह तुझे नेकी दे।

## दस फितरी खसाइल

फितरते इंसानी की इन दस खसलतों का हर आदमी को इख्तियार करना जरूरी है, इन दस खसलतों में से पांच का ताल्लुक सर से है और पांच बाकी सारे जिस्म से मुताल्लिक है।

सर से मुताल्लिक खसलतें यह हैं:—(1) कुल्ली करना (2) नाक में पानी डाल कर उसको साफ करना (3) मिस्वाक करना (4) मूँछें कतरवाना (5) दाढ़ी रखना।

सारे जिस्म के मुताल्लिक खसलतें यह हैं:—(1) जेरे नाफ़ के बाल साफ़ करना, (2) बगलों के बाल साफ़ करना (3) नाखून कटवाना (4) पानी से इस्तिनजा करना (5) खतना कराना।

## मूँछें और दाढ़ी

मूँछें तरशवाने की असल वह हदीस है जो हजरत इब्ने उमर से मरवी है कि हुजुरे अक़दस ने फरमाया लबें (गहरी) कटवाओ और दाढ़ी बढ़ाओ। हजरत अबू हुरैरा से मरवी हदीस में आया है कि लबें कतराओ और दाढ़ी बढ़ाओ। दोनों रिवायतों के मानी एक ही हैं, लफ़ज़ "कस" यानी काटने या तरशवाने का मतलब कैंची की मदद से बालों को जड़ से काटना है लेकिन मूँछों को उस्तुरे से मूँढ़ना मकरूह है। हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वह शख्स हम में से नहीं जो अपनी मूँछें मुंडाता है, इसकी वजह यह है कि मूँछें मूँढ़ना एक किस्म की खिलक़त बदलनी है इससे चहरे की रौनक



और खूबसूती जाती रहती है सहाबा कराम से मरवी है कि वह अपनी मूंछों को कतरवाते थे

## दाढ़ी

दाढ़ी रखने से मुराद दाढ़ी के बालों का वाफिर और ज्यादा करना है, हक तआला के इरशाद यानी यहाँ तक कि ज्यादा हो गए, के यही मानी है। रिवायत में आया है कि हजरत अबू हुसैय दाढ़ी को मुट्ठी में पकड़ कर मुट्ठी से बाहर निकले हुए बालों के हिस्से को कतर देते थे, हजरत उमर फरमाते थे कि मुट्ठी के नीचे का हिस्सा काट दो।

## बालों की मीआद

हजरत अनस बिन मालिक ने आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि चालीस दिन गुजरने से कब्ल मूंछें कतरवाओ, नाखून कटवाओ, बगल के बाल उखड़वाओ और शर्मगाह के बाल मूंड़ो, हमारे बाज असहाब का कौल है कि यह इजाजत मुसाफिरो के लिए है मुकीम के लिए बीस रोज से आगे बढ़ना अच्छा नहीं है। इमाम अहमद से इस हदीस के सही और गलत होने के मुताल्लिक मुख्तलिफ रिवायात आई हैं। किसी में इस इस की सेहत का इनकार है और किसी में तय्युने वक्त के लिए इस हदीस को हुज्जत करार दिया गया है।

मूए जेरे नाफ की सिलसिले में इख्तियार है चाहे नौरा (चूना और हड़ताल का मुरक्कब) सफ करें चाहे चूने या उस्तुरे से साफ करें, इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैहि से रिवायत है कि वह नौरा इस्तेमाल करते थे, मन्सूर बिन हबीब बिन अबी साबित की रिवायत हुजूर अकदस व बारे में यही है कि हजरत अबू बकर सिद्दीक ने रसूलुल्लाह के लिए लेप तैयार किया और हुजूर ने अपने दस्ते मुबारक से उसे अपने जेरे नाफ लगाया। हजरत अनस बिन मालिक से इस खिलाफ मरवी है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह ने कभी चूने का लेप इस्तेमाल नहीं किया बल्कि जब बाल बढ़ जाते तो हुजूर उन्हें मूंड़ दिया करते थे। मूए जेरे नाफ के सिवा दूसरी जगह के बाल दूसरे शख्स से भी साफ कराये जा सकते हैं। इसके सबूत में हजरत उम्मे सलमा की रिवायत है कि रसूल के जेरे नाफ तक पहुंचते तो हुजूर इस काम को अन्जाम देते। अबूल अब्बास नसाई कहते हैं कि हमने अबू अब्दुल्लाह के चूने का लेप किया लेकिन जेरे नाफ की हद पर उन्होंने खुद चूने का इस्तेमाल किया गरज जब जेरे नाफ, रानों व पिंडलियों की सफाई का जवाज चूने से साबित है तो उस्तुरे से भी मूंड़ना जायज है। इस कयास की ताईद हजरत अनस की मजकूरा बाला रिवायत से होती है कि रसूलुल्लाह ने चूने का इस्तेमाल कभी नहीं किया, बाल ज्यादा होते तो मूंड़ देते थे।

## सफेद बालो का उखाड़ना

सफेद बालों का चूनना मकरूह है, है हजरत अम्र बिन सुयैब ने अपने वालिद से और उन्होंने अपने दादा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफेद बाल उखाड़ने (चुनने) से मना फरमाया है और फरमाया सफेदी इस्लाम का नूर है, एक और हदीस में आया है कि हुजूर गरामी ने इरशाद फरमाया: सफेद बालों को न निकालो (उखाड़ो) क्योंकि जिस मुसलमान को बहालते इस्लाम लिबासे पीरी पहनाया गया कियामत के दिन (बालों की सफेदी) उसके लिए नूर होगी। यहया की रिवायत में आया है कि अल्लाह तआला उसके हर बाल के



एवज एक नेकी लिखेगा और एक गुनाह साकित कर देगा बाज तफसीरों में अल्लाह तआला के इस फरमान को व जा अकुम अन्नजीर इसी बात की ताईद में पेश किया गया है और कहा है कि नजीर से मुराद शैब यानी बुढ़ापा है। सफेद बाल मौत से डराते हैं, मौत की याद दिलाते हैं, ख्वाहिशाते नफ़सानी और दुनिया की लज़्जतों से रोकते हैं, आखिरत की तैयारी और दारेबका की सामान फ़राहम करने पर तैयार करते हैं। फिर किस तरह ऐसी चीज़ का दूर करना जायज़ हो सकता है? सफेद चुनने वाला तकदीर से मुकाबला करना चाहता है, अल्लाह के कामों में दखल दे कर उसकी ना खुशी हासिल करता है, जवानी की ताज़गी और नौ उमरी को हमेशा की ताज़गी और बुजुर्गी पर तरजीह देना चाहता है। बुजुर्गी, बुर्दबारी और इस्लाम के नूरानी लिबास और इब्राहीमी शिआरे जिस्मानी से नफ़रत करता है। बाज़ कुतुब में मंकूल है कि सब से पहले हालते इस्लाम में सफेद बाल हज़रत इब्राहीम के हुए थे। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस है: अल्लाह तआला बूढ़े आदमी से शर्म करता है यानी उसे अज़ाब देने में हया फ़रमाता है।

## नाखून तराशना

जुमा के दिन ऊंगलियों की तरतीब के खिलाफ़ नाखूनों को तराशना मुस्तहब है (तरतीब के खिलाफ़ तराशने से मुराद यह है कि छोटी ऊंगली से अंगूठे तक तरतीब वार न तराशे जाएं) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि जो कोई मुकर्ररा तरतीब के खिलाफ़ नाखून काटता है वह अपनी आँख में आशोब व रम्द की बीमारी नहीं दिखेगा। हमीद बिन अब्दुर्रहमान ने अपने वालिद से रिवायत नक़ल की है कि जो शख्स ज़ुमा के दिन नाखून तराशेगा उसके बदन के अंदर शिफ़ा दाख़िल होगी और बीमारी निकल जाएगी, जुमेरात के दिन अस्त्र के बाद नाखून तराशने की भी यही फ़जीलत और बुजुर्गी है।

ऊंगलियों की तरतीब के खिलाफ़ का मतलब यह है कि अब्बल सीधे हाथ की छंगली से तराशना शुरू करे फिर बीच की उंगली, फिर अंगूठा, अंगूठे के बाद छंगली के बराबर वाली उंगली फिर अंगुष्ठे शहादत के नाखून तराशे, बायें हाथ के नाखूनों की तराश इस तरह करे कि पहले अंगूठा फिर दर्मियानी उंगली फिर छंगली और उसके बाद अंगुष्ठे शहादत और अंगुष्ठे शहादत के छंगली के बराबर वाली उंगली के नाखून तराशे। हमारे अकाबेरीन (उलमाए हंबली से अब्दुल्लाह बिन बत्ता की रिवायत इसी तरह है। हज़रत वकी हज़रत आएशा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे इरशाद फ़रमाया ऐ आएशा! जब तू नाखून तराशे तो बीच की उंगली से शुरू कर फिर छंगली फिर अंगूठा, फिर छंगली के पास वाली उंगली फिर अंगुष्ठे शहादत के नाखून काट, यह अमल तवंगिरी पैदा करता है।

नाखून, कैंची या चाकू से काटे जायें, दांतों से नाखून काटना मकरूह है, नाखून तराश कर उनको मिट्टी में दबा देना चाहिए। सर और बदन के बालों, भरी हुई सेंगी और फ़स्द के खून का भी यही हुक्म है। रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खून, बाल और नाखूनों को मिट्टी में दबाने का हुक्म दिया है।

## सर मुंडाना

इमाम अहमद बिन हंबल की एक मरफू रिवायत के बमौजिब हज और उमरा और ज़रूरत



के अलावा सः मुंडाना मकरूह है। हज़रत अबू मूसा और उबैद बिन उमर से रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़रमाया: जिसने सर मुंडाया वह हममें से नहीं। दारे कुतनी ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की है कि आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हज और उमरा के सिवा बाल न मुंडाये जाएं। इसी बिना पर हुज़ूर ने ख़्वारिज की मजम्मत फ़रमाई और उनकी पहचान सर मुंडाना बतलाया, हज़रत उमर ने सब्बीग से फ़रमाया "अगर मैंने देखा कि तुमने सर के बाल मुंडाए हैं तो उसी सर को पिटूंगा। इब्ने अब्बास रिवायत करते हैं कि "अगर किसी का सर मुंडा हुआ देखो तो समझो उसमें शैतान की सिफ़त है क्योंकि सर मुंडवाने वाला अपने को अजमियों को हम शक़ल बनाता है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि जो किसी कौम की शक़ल इख़्तियार करेगा वह उसी में से होगा।

जब सर मुंडाने की मुमानिअत ऊपर की रिवायतों से साबित है तो फिर बालों को कतरवाना चाहिए। इमाम अहमद बिन हंबल ऐसा ही करते थे, इख़्तियार है कि बाल जड़ों से कतरवाए या ऊपर से यानी बालों की नोकें कटवा दे।

इमाम अहमद की दूसरी रिवायत है कि सर मुंडाना मकरूह है क्योंकि अबू दाऊद ने अपनी असनाद के साथ नक़ल किया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने फ़रमाया कि हज़रत जाफ़र की शहादत के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जाफ़र के घर वालों के पास हज़रत बिलाल को भेजा फिर खुद भी तशरीफ़ ले आए और इरशाद फ़रमाया कि आज के बाद मेरे भाई पर न रोना फिर फ़रमाया मेरे भतीजों (उसके लड़कों) को मेरे पास लाओ, हम को आपकी ख़िदमत ले जाया गया, हुज़ूर ने फ़रमाया नाई को बुलाओ नाई बुलाया गया हुक्म दिया गया कि उनके सिर मूंड दो, नाई ने हमारे सर मूंड दिये। यह भी रिवायत है कि हुज़ूर के बाल कंधों तक लटकते थे, आपने ज़िन्दगी के आवाख़िर ज़माने में अपने सरे मुबारक के बाल मुंडवा दिये थे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि हुज़ूर के बाल कानों की लौ तक थे। उस ज़माने में बाज़ अफ़राद कभी कभी सर मुंडा लिया करते थे और किसी ने उन पर एतराज़ नहीं किया, इस बिना पर मकरूह नहीं है कि इस में सख़्ती और तंगी है जो माफ़ कर दी गई है। जिस तरह कि बिल्ली और दूसरे हशरसतुल अर्ज का झूठा माफ़ कर दिया गया है।

## क़ज़अ का हुक्म

क़ज़अ यानी कुछ बाल मुंडाना और कुछ हिस्से के बाल छोड़ देना मकरूह है हुज़ूर सरवर कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने से मना फ़रमाया है। इसी तरह गरदन के बाल मुंडाना भी मकरूह। हुज़ूर ने पचने लगवाने की ज़रूरत के सिवा गर्दन के बाल मूंड ने से मना फ़रमाया है कि यह मजूसियों का अमल है।

## मांग निकालना

बड़े बाल रखना और मांग निकालना सुन्नत है, एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुद भी मांग निकाली और सहाबा कराम को भी मांग निकालने का हुक्म दिया, यह रिवायत बीस से ज़्यादा असहाब से मरवी है जिन में हज़रत अबू उबैदा, हज़रत अम्मार और हज़रत अबी मसऊद भी शामिल हैं।



## तहजीफ़ या जुल्फें निकालना

अपने रुख़सारों पर (औरतों की तरह लंबी) जुल्फें छोड़ना जैसा कि अल्वियों का तरीका है मर्दों के लिए मकरूह है, औरतों के लिए जायज़ है क्योंकि हमारे अकाबेरीन में से अबू बकर ज़लाद ने हज़रत अली से नक़ल किया है कि आपने फ़रमाया कि औरतों को जुल्फें रखना जायज़ है मगर मर्दों के लिए मकरूह है।

## मोंची से बाल नोचना

मोंची से चेहरे के बाल उखेड़ना मर्द और औरत दोनों के लिए मकरूह है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मोंची के ज़रिये चेहरे के बाल उखेड़ने वालों पर लानत फ़रमाई है। औरतों के लिए पेशानी के बाल शीशे की धार या उस्तुरे से काटना मकरूह है, चेहरे पर अगर बाल निकल आयें तो उन को भी शीशे या उस्तुरे से काटना और मूँडना औरत के लिए मकरूह है इसकी ममानिअत पहले बयान हो चुकी है। लेकिन अगर शौहर अपनी बीवी को इसका हुक्म दे और अंदेशा हो कि हुक्म न मानने की सूरत में शौहर उससे बे इल्तेफ़ाती बरतेगा और किसी दूसरी औरत से निकाह कर लेगा या इस तरह बिगाड़ और ज़रूर पैदा होगा तो मसलेहतन बाज़ लोगों के नज़दीक ऐसा करना जाएँ है। रंगा रंग कपड़ों से आराइश, तरह तरह की खुशबू का इस्तेमाल, अपने शौहर से शोखी, खूश तबई करना ताकि शौहर का दिल लुभायें और उसको अपनी तरफ़ मायल करें जायज़ है। वह औरतें जो अपने मुँह के बाल मोचने से साफ़ करके अपने आपको इसलिए खूबसूरत बनाती हैं कि ग़ैरों के साथ अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशात का पूरा करें उन पर आंहज़रत ने लानत की है।

## बालों को सियाह करना

सफ़ेद बालों को सियाह रंग में रंगना मकरूह है, हज़रत हसन रिवायत करते हैं कि बाज़ लोग अपने सफ़ेद बालों को सियाह में बदल रहे थे, आंहज़रत ने देख कर फ़रमाया "अल्लाह तआला कियामत के दिन उनके मुँह काले करेगा"। हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि आंहज़रत ने फ़रमाया कि यह लोग बहिश्त की खूशबू नहीं सूँघेंगे। सियाह ख़िजाब के सिलसिले में जो अहादीस आई हैं उनमें से एक यह है कि हज़ूर ने इरशाद फ़रमाया सियाह ख़िजाब करो इससे बीवी का उन्सियत और जिहाद में दुश्मन को (तुम्हारे जवान होने का) धोका हो जाता है। इस हदीस में सियाह ख़िजाब का जवाज़ असल में जंग के लिए है बीवी का ज़िक्र असले मक़सूद नहीं है बल्कि बित्तब्बेअ है।

## ख़िजाब या वसमा

मुस्तहब तरीका यह है कि सर के बालों को मेहंदी (हिना) या वसमा के ख़िजाब से रंगे। हज़रत इमाम हम्बल ने तैंतीस बरस की उम्र में मेहंदी वसमा का ख़िजाब किया था, उनके चचा ने कहा कि तुमने तो वक़्त से पहले ही ख़िजाब कर लिया, उन्होंने जवाब दिया कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी की रिवायत है कि हज़ूर वाला ने इर्शाद फ़रमाया "सफ़ेद बालों का



रंग बदलने की बेहतरीन चीज मेहंदी वसमा है। रसूलुल्लाह के खिजाब के मुताल्लिक मुखतलिफ़ रिवायात हैं। हज़रत अनस का बयान है कि थोड़े से बालों के सिवा हुजूर के बाल सफ़ेद ही नहीं थे, लेकिन हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर ने हुजूर के बाद मेहंदी वसमा का खिजाब लगाया था, यह भी रिवायत है कि हज़रत उम्मे सलमा ने रसूलुल्लाह के चन्द बाल निकाल कर लोगों को दिखाए जो मेहंदी वसमा से रंगे हुए थे, इस हदीस से रसूलुल्लाह का मेहंदी वसमा का खिजाब लगाना साबित होता है।

इमाम अहमद के कौल के मुताबिक़ ज़ाफ़रान और दरस (एक किस्म की घास) से खिजाब करना रवा है और इसकी दलील यह है कि हज़रत अबू मालिक अश़री की रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह का खिजाब दरस और ज़ाफ़रान का था। पस सर के बालों का खिजाब लगाना साबित है तो इसी तरह दाढ़ी में खिजाब लगाने का भी हुक्म ऐसा ही होगा कि हुजूर वाला ने हुक्म उम्मी दिया था कि "सफ़ेद बालों को बदल दो और यहूदियों से मुशबिहत न करो।" हज़रत अबू ज़र की रिवायत में पहले गुज़र चुका है कि हुजूर ने फ़रमाया सफ़ेद बालों को बदलने की बेहतरीन चीज़ मेहंदी वसमा है। यह हुक्म भी आम सर के बाल हों या दाढ़ी के सबको शामिल है।

फ़तेह मक्का के दिन हज़रत अबू बकर अपने वालिद अबू कोहाफ़ा को लेकर रसूले खुदा के खिदमते गिरामी में हाज़िर हुए हुजूर वाला ने हज़रत अबू बकर के पास ख़ातिर से फ़रमाया "बह मियाँ को तुम घर पर ही रहने देते हम उनके पास पहुंच जाते, इसके बाद अबू कोहाफ़ा मुसलमान हो गए उस वक़्त उनके सर और दाढ़ी (के बाल) सफ़ेद सफ़ामा की तरह थे, हुजूर ने फ़रमाया इस रंग को बदल दो मगर सियाही से बचना इस इरशाद में साफ़ सराहत है कि दाढ़ी का हुक्म सर की तरह है और सियाह खिजाब की मुमानिअत है। हज़रत अबू उबैदा ने कहा है कि सफ़ामा एक किस्म की घास होती है जिसके फूल भी सफ़ेद हाते हैं और फल भी।

## सुरमा लगाना

ताक़ बार सुरमा लगाना मुस्तहब है। हज़रत अनस की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ताक़ मर्तबा सुरमा लगाया करते थे। उलमा का इस बारे में इख़िलाफ़ है। हज़रत अनस फ़रमाते हैं कि नबीए मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दाहिनी आंख में तीन और बाई आंख में दो सलाइयाँ (सुरमों की) लगाया करते थे और हज़रत अब्बास से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर आंख में सुरमों की तीन तीन सलाइयाँ लगाया करते थे।

## बालों में तेल लगाना

मुस्तहब है कि एक दिन छोड़ कर बालों में तेल लगाया जाए और अफ़ज़ल यह है कि रौगन बनफ़शा इस्तेमाल किया जाए जैसा कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो की बयान फ़रमूद इन दो हदीसों से साबित है। (1) हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मर्द को रोज़ाना कंधे करने से मना फ़रमाया है। एक दिन छोड़ कर करे। (2) हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि रौगन बनफ़शा को तमाम तेलों में ऐसी ही फ़ज़ीलत है जैसी मुझे तमाम इंसानों में।



## बाब 3

# आदाबे मुआशिरत

**सफ़र व हज़र, सात उमूर की पाबन्दी, मकरूह आदतें**

**घरों में दाखिला, रास्त चप का इस्तेमाल और खाने पीने के आदाब**

सफ़र और हज़र (क़याम) दोनों सूरतों में हर इन्सान अल्लाह तआला पर तवक्कुल करे और इन सात बातों को मलहूज़ रखे।

(1) सफ़ाई और ज़ाहेरी ज़ेबाईश करे।

(2) कंघी करे।

(3) सुरमें का इस्तेमाल करे।

(4) मिसवाक करे।

(5) अपने पास कैची रखे।

(6) अपने पास मुदरा रखे। मुदरा एक लकड़ी है जिसका सिरा गोल होता है और बालिशत से छोटी होती है इससे अहले अरब हश्रातुल अर्ज़ मज़रत रसां चीज़ों से अपने बदन की हिफ़ाज़त करते हैं उन चीज़ों से इससे रफ़ूद देते हैं और जहां जिस्म में खुजली होती है वहां खुजला देते हैं।

(7) रौगन का शीशा (बोतल)

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहो अन्हा से मरवी है कि सफ़र होता या इक़ामत किसी हाल में यह सात चीज़ें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ से न छूटती थीं।

## मकरूह बातें

मंदर्जा ज़ैल बातें मकरूह हैं। (1) सीटी बजाना—(2) ताली बजाना (3) नमाज़ में उंगलियाँ चटखाना (4) समा के वक्त झूठ झूठ वज्द की हालत बना कर कपड़े फाड़ना (अगर वाक़ेई किसी की वज्द में यह हालत हो तो उससे उस झूठे मुद्ई की हालत का मुकाबला नहीं किया जा सकता) (5) रास्ता में खाना (6) अहले मज्लिस के सामने पांव फैला कर बैठना (7) तकिया से सहारा दे कर इस तरह बैठना कि सीधा बैठने की हैयत बाकी न रहे। यह फ़ेल गुरुर की अलामत है उससे दूसरे अहले मज्लिस की तौहीन होती है हाँ अगर उज़्र की वजह से ऐसा हो तो मकरूह नहीं है (8) लम्बे लम्बे कपड़े पहनना (9) मसतगी चबाना यह सिफ़लापन है (10) बांछें फाड़ कर हंसना (11) ठट्ठा मारना (12) बग़ैर ज़रूरत चीख कर बोलना (13) रफ़्तार में इतेदाल न रखना यानी ऐसी चाल से चलना मुनासिब और मुस्तहब है कि न बहुत तेज़ी हो जिससे खुद थक जाए या राहगीरों से टकराओ न हो, न ऐसी कदम शुमारी जिससे गुरुर और तमकनत पैदा हो (14) बलन्द आवाज़ से रोना (15) मय्यत के औसाफ़ बयान करना (और बलन्द आवाज़ से रोना) हाँ अगर यह गिरया व ज़ारी अल्लाह के ख़ौफ़ से हो या ज़िन्दगी के गुज़रता औकात के बेकार जाने पर पशेमानी और ताअस्सुफ़ के बाइस हो या इस वजह से हो कि जिस दरजे पर पहुचना पेशे



नज़र था उस पर पहुंच न सका और इस ख्याल से दिल शिकस्ता हो कर रोए और रोने में आवाज़ बलन्द हो जाए तो मकरूह नहीं है (16) लोगों के सामने बदन को मैल छुड़ाना (17) हम्माम, पा खाना और दूसरे गंदे मकामत पर बातें करना (18) ऐसे मकामत पर किसी को सलाम करना या सवाल का जवाब देना (19) लोगों के सामने अपने सर को खोलना और अपने बदन के उन हिस्सों को खोलना जिनको आम तौर पर ढांपा जाता है। यह सब बातें मकरूह हैं और कश्फे औरत हराम है। (20) बाप की या अल्लाह के अलावा किसी दूसरे की किसी हाल में भी कसम खाना (अगर कसम खाना ही है तो अल्लाह की कसम खाए वरना खामोश रहे। रसूलुल्लाह का इरशादे गिरामी यही है।

## दूसरों के घरों में दाखिला

### दाखिल होने की इजाज़त तलब करना

#### दाखिला के आदाब

मुसलमान के लिए अफ़ज़ल यह है कि जब वह किसी से मिलने जाये तो दरवाज़े पर रुक कर कहे अस्सलामो अलैकुम, क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ। रिवायत में आया है कि कबीला बनी आमिर का एक शख्स हाज़िर हुआ, हुजूर इस वक्त काशान-ए-नबुव्वत में तशरीफ़ फरमा थे उसने आस्ताना मुबारक पर हाज़िर होकर अर्ज किया क्या मैं अन्दर आ जाऊँ हुजूर वाला ने गुलाम से फरमाया बाहर जा कर उस को इजाज़त तलब करना सिखाओ और उससे कहो कि यूँ कहे "अस्सलामो अलैकुम" क्या मैं अन्दर आ जाऊँ उस शख्स ने यह इरशाद वाला सुन लिया और अर्ज किया अस्सलामो अलैकुम क्या मैं अन्दर आ जाऊँ हुजूर ने उस को इजाज़त मरहमत फरमा दी और वह अन्दर आ गया।

दरवाज़े पर जाकर पुकारने वाले को चाहिए कि दरवाज़े की तरफ़ पीठ कर के ज़्यादा फासला पर खड़ा न हो इस तरह (जवाब में दी जाने वाली) आवाज़ अच्छी तरह सुनाई नहीं देती। इजाज़त तीन बार तलब की जाये अगर मिल जाये तो बेहतर है वरना लौट जाये लेकिन अगर गुमान ग़ालिब यह हो कि दूसरी की वजह से साहबे खाना ने मेरी आवाज़ नहीं सुनी होगी या किसी काम में मशगूल होने बाइस आवाज़ न सुन सके होंगे तो तीन मरतबा से ज़्यादा भी इजाज़त तलब करना जाएज़ और इस की दलील हज़रत अबू सईद खुदरी की वह रिवायत है जिस में बयान किया गया है कि हुजूर अकदस ने इरशाद फरमाया कि "घर में दाखिल होने के लिए तीन बार इजाज़त तलब करना चाहिए अगर इजाज़त मिले तो अन्दर आ जाए वरना वापस हो जाए।" तलबे इजाज़त का हुक्म सब के लिए बराबर है। एक बार किसी शख्स ने रसूलुल्लाह से अर्ज किया कि माँ के पास दाखिल होने की भी इजाज़त लेना मेरे लिए ज़रूरी है। आप ने इरशाद फरमाया हाँ उस ने अर्ज किया कि मैं तो माँ के साथ एक ही घर में रहता हूँ आप ने फरमाया फिर भी इजाज़त लो उसने अर्ज किया कि मैं तो उस का खादिम हूँ फरमाया फिर भी इजाज़त लो क्या तुम उस को बरहना देखना पसन्द करते हो।

अगर घर में उसकी लौंडी या बीवी हो (जिसके लिए कुरबत जाएज़ है) तो फिर इजाज़त लेने



की जरूरत नहीं है। इसलिए अगर वह बरहना हों तब भी उन्हें देख लेना मुबाह है लेकिन फिर भी मुस्तहब यही है कि घर में इस तरह दाखिल हो कि उन्हें उसके आने की खबर हो जाए। मिनहा की रिवायत में इमाम अहमद ने इस तरह सराहत की है। घर में दाखिल हो तो घर वालों को सलाम करे, इससे घर की खैर व बरकत ज्यादा होती है, हदीस शरीफ में इसी तरह आया है। सफ़र से वापस आए तो रात को अचानक घर वालों के पास न पहुंचे। रसूलुल्लाह ने इसकी मुमानिअत फरमाई है, दो आदमियों ने ऐसा किया था तो उन्होंने अपनी बीवियों की वह हालत देखी जिस को वह पसन्द नहीं करते थे।

दूसरे के घर में दाखिले की इजाजत मिल जाए तो साहबे खाना जहाँ बैठने की इजाजत दे वहीं बैठ जाए ख्वाह साहबे खाना जिम्मी काफिर ही क्यों न हो। अगर लोग खाना खा रहे हों तो जब तक साहबे खाना अपनी खुशी से खाने में शरीक न करे खुद खाने में शरीक न हो।

## दस्त व पाए रास्त व चप का इस्तेमाल

### दायां हाथ और पांव

कोई चीज़ लेना, खाना पीना, मुसाफ़ा करना, वुजू करना, जुता पहनने और कपड़े पहनने की इब्तेदा दायें हाथ से मुस्तहब है, मुकद्दस मकामात, मस्जिदों में दाखिल होते वक़्त पहले दायां पांव दाखिल करना चाहिए। गन्दे कामों जैसे मैल दूर करना, नाक साफ़ करना, इस्तिन्जा करना और पलीदी को धोने का काम बायें हाथ से करना चाहिए। हाँ अगर किसी के लिए ऐसा करना दुश्वार हो (यानी बाएं हाथ में चोट हो या कट गया हो) तो दायें हाथ से कर सकता है। एक पांव में जुता पहन कर न चले हाँ अगर थोड़ा सा चलना हो जैसे एक जुता पहन लिया है और दूसरा कुछ फासले पर है दूसरे जुते का तिस्मा टूट गया है तो मरम्मत की गरज़ से कदरे चल सकता है।

किसी शख्स को ख़त या फ़रमान वगैरह देना हो तो दायें हाथ से देना चाहिए, बलन्द मर्तबा शख्स के साथ अगर चलना हो तो उसके दायें तरफ़ चले (जिस तरह दो आदमियों की जमाअत में इमाम को बायें हाथ की तरफ़ कर लिया जाता है) अगर अपने से कम मरतबा शख्स के साथ चलना हो तो उसके बाईं जानिब चले। बुजुर्गों ने यह भी कहा है कि हर सूरत में दायें हाथ पर चलना मुस्तहब है ताकि बाईं सप्त थूकने वगैरह के लिए खाली रहे।

## आदाबे अक़ल व शरब

### खाने पीने के आदाब

खाने पीने में मुस्तहब यह है कि अब्बल बिस्मिल्लाह कहे (अल्लाह तआला का नाम ले) और फ़ारिग होने के पर अल्लाह का शुक्र अदा करे, इससे खाने में बरकत होती है और शैतान दूर भागता है। एक रिवायत में है कि सहाबा ने अर्ज किया "या रसूल अल्लाह हम खाते हैं मगर सैरी नहीं होती, फ़रमाया शायद तुम लोग अलग अलग खाते हो, सहाबा कराम ने अर्ज किया जी हाँ! आपने फ़रमाया एकट्टे हो कर खाया करो और (खाना शुरू करते वक़्त) बिस्मिल्लाह कर लिया करो, खाने में बरकत हासिल होगी। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने खुद सुना,



हुजूर वाला इरशाद फरमा रहे थे कि जब आदमी अपने घर में दाखिल हो और वह दाखिल होने होने और खाने से पहले बिस्मिल्लाह कह ले तो शैतान अपनी जुर्रियत से कहता है कि अब न तुम इस घर में रात रह सकोगे न वहाँ खाने में शरीक हो सकोगे, अब यहाँ से भागो, इसके बर अक्स जब कोई शख्स घर में दाखिल होते वक्त और खाना खाते वक्त अल्लाह का नाम नहीं लेता तो शैतान अपनी जुर्रियत से कहता है कि तुम को आज रात रहने को ठिकाना भी मिल गया और रात को खाना भी खा सकोगे ।

हजरत हुजैफा फरमाते हैं कि हम खाने के वक्त जब आँहजरत के साथ शरीक हुए तो हुजूर वाला से पहले कोई खाने पर हाथ नहीं डालता था, एक बार हम हुजूर के साथ खाने पर मौजूद थे कि इतने में एक आराबी (दिहाती) आया, आते ही खाने पर हाथ डालने लगा हुजूर वाला ने उस का हाथ पकड़ लिया, इतने में एक लड़की आई वह ऐसी हालत में थी कि गोया कोई उसको धकेलता ला रहा है, उसने भी आते ही खाने पर हाथ डालना चाहा, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसका भी हाथ पकड़ लिया और इरशाद फरमाया "जिस खाने पर अल्लाह का नाम न लिया जाए शैतान उसको हलाल समझता है, उस दिहाती के साथ भी शैतान आया था और खाने को अपने लिए हलाल बनाना चाहता था और उस लड़की के साथ भी आया था ताकि उस लड़की के जरिये उस खाने को अपने लिये हलाल बना ले, मैंने उस दिहाती का भी हाथ पकड़ लिया और उस लड़की का भी । कसम है उस जात की जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है कि इन दोनों के हाथों के साथ शैतान का हाथ भी मेरे हाथ में है । इसके बाद हुजूर वाला ने इरशाद फरमाया कि अगर कोई शख्स खाना शुरू करते वक्त बिस्मिल्लाह कहना भूल जाए तो याद आने पर इस तरह कहे बिस्मिल्लाहि फी अब्वलेही व आखेरही । हजरत आएशा से भी इसी तरह मरवी है ।

## खाने का तरीका

खाना नमक से शुरू करना और नमक पर खत्म करना मुस्तहब है (यानी अब्वल नमकीन खाना खाए और आखिर में भी कोई नमकीन चीज़ खाए) दायें हाथ से लुकमा ले कर छोटा निवाला मुंह में रखे और खूब देर तक चबाए और आहिस्ता आहिस्ता निगले, एक किस्म का खाना हो तो अपने सामने से खाए और अगर मुख्तलिफ किस्म के खाने हों या फल वगैरह हों तो बरतन में इधर उधर से लेने में कोई हरज नहीं जिस खाने को खाए उसको चोटी या बीच से न खाए बल्कि किनारे से शुरू करे अगर सरीद हो तो तीन उंगलियों से खाए और आखिर में उंगलियां चाट ले । खाने पर फूँके ने मारे (ठंडा करने के लिए) खाने के बरतन में सांस न छोड़े, सांस लेना हो तो बरतन को मुंह से अलग करके सांस ले, तकिया लगा कर खाना पीना मकरूह है, खड़े हो कर खाना पीना दुरुस्त है मगर बाज़ इसको मकरूह बताते हैं । इस लिए बैठ कर खाना पीना ज्यादा अच्छा है अगर अहले मजलिस से किसी को बरतन देना हो तो दाईं तरफ वाले से शुरू करे ।

## जुरुफ़े तआम

सोने चाँदी या सोने चाँदी का मुलम्मा किए हुए बरतनों में खाना पीना नाजाएज़ है । अगर किसी ऐसे बरतन में खाना सामने आए तो खाते वक्त किसी ऐसे दूसरे बरतन में उसको उलट लेना चाहिए जिस में खाना जाएज़ हो या रोटी पर डाल ले, और जो शख्स ऐसे बरतन में खाना लाया हो उसको मलामत करे । ऐसे बरतनों में धोनी देना भी जाएज़ नहीं है इसी तरह चाँदी या



सोने का गुलाब पाश भी इस्तेमाल करना मना है, जिस जगह ऐसे बरतन इस्तेमाल होते हैं वहाँ खाना खाने के लिए न जाए, और अगर इत्तेफाकन पहुंच जाए तो वापस चला आए और साहबे खाना को नरमी से समझाए कि आपको जेबा यह है कि जिस चीज को शरीयत ने हलाल किया है और जीनत बढ़ाने वाला करार दिया है उसी के मुताबिक आराईश करें और जिस चीज की बंदिश की गई उसको जीनत का सबब न बनाए जिस लज्जत का नतीजा गुनाह हो उसमें कुछ भलाई नहीं है। अल्लाह आप पर रहम फरमाये, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद उसको याद दिलाएं कि हुजूर ने इरशाद फरमाया है "जो आदमी सोने या चाँदी के बरतन में खाए या ऐसे बरतन में जिसमें यह दोनों शामिल हों (दोनों का काम हो) तो ऐसा शख्स अपने पेट में दोज़ख की आग भरता है।

खाना खाने में मुंह का निवाला बाहर न निकाले हाँ अगर मजबूर हो जाए मसलन निवाला हल्क में फंस जाए, फन्दा लग जाए या जलता हुआ निवाला हो और मुंह जलने लगे तो नवाला बाहर निकाल देना जाएज़ है। खाने में छींक आ जाए तो मुंह पर कोई चीज रख ले और मुंह को अच्छी तरह छुपा ले, खाने से दूर हो कर छींके।

खाने वाले के पास अगर कोई शख्स खड़ा हो यानी खिदमतगार वगैरह तो उस को बैठने की इजाज़त दे दे और वह अगर इन्कार करे तो उमदा खाने से लुक्मा उठा कर दे दे, कोई गुलाम, खिदमती लड़का या पानी पिलाने वाला खड़ा हो तो उसके साथ भी यही सुलूक करे, बरतन में अगर कुछ बच आए तो उसको भी साफ करले। बरतन, तब्बाक वगैरह के किनारों पर जो खाना लगा रह जाए उसको भी पोंछ कर खा लेना चाहिए। जो लोग खाने में शरीक हों उनके साथ खुश कलामी से पेश आए कि अगर वह रन्जीदा हों तो उनकी रंजिश दूर हो जाए। अगर अपने से बलन्द सरतबा लोगों के साथ खाना खाए तो अदब मलहूज़ रखे, अगर गरीबों (फकीरों) के साथ खाए तो उनको खुद पर तरजीह देते हुए वह चीज़ें खिलाए जो उनको मरगूब हों, दोस्तों के साथ खाए तो शगुफ़ता मिजाजी के साथ खाए, आलिमों के साथ इस ख्याल से खाए कि उनकी पैरवी करेगा और उनसे आदब हासिल करेगा। नाबीना के साथ खाए तो उसको जो चीज़ें सामने हों वह बता दे कि बसा औकात वह अपनी कोरी व नाबीनाई की वजह से अच्छा खाना (उमदा गिज़ायें) खाने से महरूम रह जाते हैं।

## जियाफ़त के आदाब

शादी के वलीमा के दावत कबूल करना मुस्तहब है, जाने के बाद इख्तियार है खाए या न खाए, अगर न खाए तो दुआए ख़ैर करके चला आए। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह मरवी है कि हुजूर वाला ने फ़रमाया जिसकी दावत की गई और उसने कबूल न किया तो उसने अल्लाह और उसके रसूल की ना फ़रमानी की। जो बग़ैर बुलाए (दावत वगैरह में) जाता है वह चोर हो कर दाख़िल होता है और लुटेरा बन कर वापस आता है। दावत के यह अहकाम उस वक्त हैं जब मज्लिस बुरी (नाजाएज़) बातों से پاک हो। अगर वहाँ कोई ममनूअ चीज़ है मसलन ढोल, सारंगी, बरबत, नफीरी, शबाबह, रुबाब, तंबूरे, सरोद वगैरह हो कि यह सब चीज़ें हराम हैं—सिर्फ़ दफ़ का इस्तेमाल निकाह के वक्त जाएज़ है। उसके साथ नाचना गाना मकरूह है। अल्लाह तआला का इरशाद है लोगों में बाज़ वह हैं जो बेहूदा बातें ख़रीदते हैं, की तफ़सीर में बाज़ अहले तफ़सीर



ने लिखा है के "लहवल हदीस" से मुराद राग और शेअर है, बाज़ अहादीस में आया है कि राग दिल के अन्दर उसी तरह निफाक पैदा करता है जिस तरह सैलाब सब्जे को उगाता है।

हजरत शिबली से लोगों ने दरयाफ्त किया, क्या गाना सुनना दुरुस्त है हजरत शिबली ने कहा नहीं, लोगों ने पूछा फिर किया है? आप ने फरमाया दुरुस्त न होने की सूरत में गुमराही के सिवा और कुछ नहीं है।

राग के नाजाएज़ होने के लिए यही बात काफी है कि उसको सुन कर तबियत में जोश और शहवत में हैजान पैदा होता है, औरतों की तरफ मैलान बे अक्ली, सुबकी, कमीनगी और बहुत सी नफ़सानी ख्वाहिशात इससे बेदार होती है। पस अल्लाह पर और कयामत पर ईमान रखने वालों के लिए अल्लाह की याद में मशगूल होना एक ऐसा अमल है जो पाकिजगी के साथ साथ आफियत बरख़्ताने वाला है।

## दावते ख़तना

दावते ख़तना मुस्तहब है इसलिए दावते ख़तना कबूल करना भी ज़रूरी नहीं है। निष्ठा लेना मकरूह है क्योंकि इसमें लूट से मुशाबेहत पाई जाती है अलावा अर्जी छिछोरा पन और नफ़स की ज़िल्लत भी है। वलीमा निकाह के अलावा किसी और खूशी के मौका पर दावत अगर इस तरीके से की जाए जो हुज़ूर वाला के इरशाद फरमाए हुए तरीका के खिलाफ़ हो यानी ज़रूरत मन्दों को उसमें शिरकत से रोका गया हो और मालदार जिनको दावत की ज़रूरत नहीं उसमें मौजूद हों तो ऐसी दावत मकरूह है।

अहले इल्म व फज़ल के लिए दावते तआम के कबूल करने में उजलत करना बिला इज़्ज़त कबूल कर लेना मकरूह है। यह एक तरह की बेशरमी भी है और नदीदा पन भी। बिन बुलाए किसी दावत में शिरकत करना दोहरा गुनाह है। एक तो बग़ैर बुलाए किसी के घर में दाखिल होना दूसरे बग़ैर दावत के खाना और इस तरह किसी की पोशीदा बातों को देखना और जगह में तंगी पैदा करना बेशरमी की बातें हैं।

## खाने के आदाब

खाना खाते वक़्त तहज़ीब का तकाज़ा है कि खाना खाने वालों के चेहरों को न तके, इस तरह उनको शर्मिन्दगी होगी खाने पर ऐसी बातें नहीं करना चाहिए जिससे लोग घिन खायें। इसी तरह हंसाने वाली बातें भी नहीं करना चाहिए इससे अन्देशा होता है कि लोगों के हल्क़ में निवाला फंस कर फन्दा लग जाएगा। ऐसी बातें भी नहीं करना चाहिए जिसको सुनकर लोग कबीला खातिर हों इससे खाने का लुत्फ़ जाता रहता है।

खाने से पहले और खाने के बाद दोनों हाथों का धोना मुस्तहब है, बाज़ लोगों का ख्याल है कि खाने से पहले हाथ धोना मकरूह है अलबत्ता बाद में धोना मुस्तहब है, प्याज़, लहसन और (गुन्दना) खाना मकरूह है इसलिए कि उनसे बदबू पैदा होती है। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जो शख्स बदबूदार सब्जियाँ खाए वह हमारी मस्जिदों में न आए। इतना ज़्यादा खाना जिससे बदहज़मी का ख़तरा हो, मकरूह है। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया है कि "पेट से बदतर किसी बरतन को आदमी नहीं भरता।"



मेज़बान की इजाज़त के बग़ैर एक मेहमान अपना खाना किसी दूसरे मेहमान को अगर दे तो यह मकरूह है इसलिए कि मेज़बान की चीज़ (खाना वगैरह) सिर्फ़ मेहमान के लिए है, दूसरों को देने का उसको हक़ हासिल नहीं है, दावत खाने से इंसान दावत का मालिक नहीं बन जाता। अकसर लोगों ने इस सिलसिले में इख़्तेलाफ़ किया है बाज़ कहते हैं कि जितना खाना मेहमान के पेट में चला जाता है वह उसका मालिक बन जाता है और बाज़ कहते हैं खाने वाला, मेज़बान के खाने का मालिक बन ही नहीं सकता।

जब खाना सामने लाकर रखा जाए तो खाना शुरू करे। उस वक़्त मजीद इजाज़त की जरूरत नहीं। अपनी चीज़ जान कर खाना शुरू कर दे बशर्ते कि उस बस्ती का रिवाज ऐसा ही हो, असल इजाज़त रिवाज ही है। मुंह से कोई चीज़ निकाल कर खाने के बरतन में डालना मकरूह है (हड्डी वगैरह को बरतन में रखे) खाते वक़्त खिलाल भी नहीं करना चाहिए। यह दोनों बातें मकरूह हैं। आलूदा हाथ रोटी से साफ़ नहीं करना चाहिए (रोटी खराब होगी) चन्द अक्साम के खाने यकजा मिला कर न खाए ख्वाह खाने वाले की तबीयत को यह बात मरगूब ही क्यों न हो इसलिए कि बहुत से लोग उससे कराहत करते हैं। खाने की बुराई करना नाजाएज़ है। इसी तरह मेज़बान को अपने खाने की तारीफ़ नहीं करना चाहिए। खाने की कीमत लगाना भी मना है। इससे रकाकत का इज़हार होता है एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खाने की न तारीफ़ फरमाते और न बुराई।

खाने वाले का अगर पेट भर चुका हो तो तब भी उस वक़्त तक खाने हाथ ने हटाए। (कुछ न कुछ थोड़ा थोड़ा खाता रहे) जब तक दूसरे लोग अपना हाथ न हटा ले हों अगर दूसरे लोगों की तरफ़ से बेतकल्लुफी महसूस हो तो फिर खुद भी तकल्लुफ़ न करे और हाथ खींच ले, मुस्तहब है कि खाने वाले एक ही तश्त में हाथ धोयें। क्योंकि हदीस शरीफ़ में आया है कि तुम परागन्दा न हो अगर तफ़र्रका करोगे तो तुम्हारी जमीअत भी पसगन्दा हो जाएगी। एक रिवायत में यह भी आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जब तक तश्त धोवन से भर न जाए उसे मत उठाओ।"

## हाथ किन चीज़ों से धोना मना है

खाने की चीज़ों से हाथ धोने या साफ़ करने की भी ममानियत है जैसे आटा (बेसन) बाक़ला, मसूर वगैरह से (बतौरे साबुन) हाथ धोने का काम न लिया जाए, भूसी से हाथ धोना जाएज़ है। दो खजूरें मिला कर एक साथ न खाए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसकी ममानियत फ़रमाई है। बाज़ लोगों ने कहा है कि तन्हा खा रहा हो या खुद खाने का मालिक हो तो ऐसा करना मकरूह नहीं है। मेहमान को चाहिए कि अपनी मर्जी के खाने साहबे खाना (मेज़बान) से तलब न करे, इससे मेज़बान को तकलीफ़ होगी पस जो कुछ वह पेश कर दे उसी पर इक्तेफ़ा करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है मैं और मेरी उम्मत के परहेज़गार लोग तकल्लुफ़ से बेज़ार हैं, हां अगर मेज़बान, मेहमान से उसकी पसन्द और मर्जी दरयाफ़्त करे तो बता दे कोई हरज नहीं है।

अगर खाने पीने की चीज़ में मक्खी के अलावा कोई और सैयाल खून वाली चीज़ गिर पड़े तो खाना नापाक हो जाता है और उस को खाना नाजाएज़ हो जाता है, हां अगर खुश्क चीज़



हो तो उठा ले अगर सैयाल खून वाली न हो लेकिन जहरीली हो तो उसको न खाए।  
 सांप बिच्छू या कोई और नुक्सान पुंहचाने वाली चीज़ खाने में गिर जाए तो खाना हराम हो जाता है, अगर मक्खी गिर जाए तो उसको इतना गोता दे दे कि उसके दोनों बाजू डूब जायें, फिर उसको निकाल कर फेंक दे खाना पाक रहेगा ख्वाह मक्खी गिर कर मर ही क्यों न गई हो, ऐसा खाना खाया जा सकता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि तुम में से किसी के बरतन में अगर मक्खी गिर जाए तो उस को गोता दे दे क्योंकि मक्खी के एक बाजू में बीमारी और दूसरे में शिफा है और मक्खी शिफा वाले बाजू को डूबने से बचाए रखती है और बीमारी वाले के डुबो देती है।

## पीने के मसाएल

पीने की चीज़ को चूस चूस कर पीना मुस्तहब है यानी घोंट घोंट कर के, जानवर की तरह एक दम सांस खींच कर न पिये बल्कि सांस ले ले कर तीन मरतबा में पिये मगर बरतन में सांस न ले, शुरू में बिस्मिल्लाह कहे और आखिर में अलैहम्दो लिल्लाह।

## खुलासाए कलाम

इन तमाम बातों का खुलासा यह है कि खाने पीने में बारह बातें (खास) हैं। इन में चार फर्ज हैं चार सुन्नतें हैं और चार मुस्तहब हैं।

फर्ज बातें यह हैं :—(1) खाने वाले को मालूम हो कि खाना कहां से और किन जराए से हासिल हुआ हो (हलाल जरिये से है हराम जरिये से तो नहीं) (2) खाना शुरू करते वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ना। (3) जो मिले और जितना मिले उस पर कनाअत करना (4) आखिर में शुक्र बजा लाना।

सुन्नतें यह हैं :—(1) खाना खाने में बायें पांव पर बैठना। (2) तीन उंगलियों से खाए। (3) खाने से फारिग होने पर उंगलियों को चाटे। (4) अपने सामने और करीब से खाए।

चार मुस्तहब यह हैं :—(1) छोटा लुकमा खाए और उसे खूब चबाए। (2) लोगों की तरफ कम देखे। (3) रोटी को दस्तरख्वान की तरह फर्श न बनाए कि उस पर सालन रख कर खाए। (4) तकिया लगा कर या चीत लेट कर न खाए।

## मेहमानी में रोज़ा इफ़तार करना

रोज़ादार शख्स अगर किसी दूसरे शख्स के यहां (मेहमान बन कर) रोज़ा इफ़तार करे तो यह दुआ पढ़े—

तर्जमा :—रोज़ादारों ने तुम्हारे पास इफ़तार किया, नेकों ने तुम्हारा खाना खाया, तुम पर रहमत नाज़िल हो, फ़रिश्ते तुम्हारे लिए दुआ करें। अल्लाह का शुक्र है जिसने हम को खाना खिलाया और पिलाया, मुसलमान बनाया। गुमराही से निकाल कर सीधे रास्ते पर लगाया और अपनी कसीर मखलूक पर हम को फज़ीलत अता फ़रमाई इलाही उम्मत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भूकों का पेट भर दे, जो नंगे हैं उन को कपड़ा पहना दे, बीमारों को तंदुरुस्त फ़रमा दे मुसाफ़िरों को वतन में लौटा दे, घर वालों को (मुकीम) की परेशानी दूर कर दे, उनकी



रोज़ी जारी फ़रमा दे और उनके यहां हमारे आने को बाइसे बरकत और यहां से हमारे जाने को मग़फ़िरत का बाइस बना दे, हमको दोनों ज़हान की भलाई अता फ़रमा और दोज़ख़ के अज़ाब से महफूज़ रख। ऐ रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

## हम्माम, बरहंगी, अंगुशतरी, बैतुल ख़ला रफ़ए हाजत और इस्तेन्जा का तरीक़ा, गुस्ल

### हम्माम का हुक्म

हम्माम का बनाना, बेचना, ख़रीदना और किराया पर देना हर चीज़ मकरूह है और इसकी वजह यह है कि वहां सतरे औरत नहीं हो सकता बल्कि आम तौर पर बरहंगी की सूरत पाई जाती है, हज़रत अली का फ़रमान मनकूल है कि "हम्माम बुरा मक़ाम है जहां हया का लिबास उतार दिया जाता है और कुरआन की तिलावत नहीं की जाती है।"

अगर कोई मजबूरी न हो तो हम्माम में न जाना बेहतर है। एक रिवायत में आया है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर हम्माम से नफ़रत करते थे और उसका सबब यह बताते थे कि (हम्माम में गुस्ल करना) यह ऐश परस्ती है। हसन बसरी और इब्ने सीरीन हम्माम में नहीं जाते थे। इमाम अहमद के साहबज़ादे अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने अपने वालिद को हम्माम जाते कभी नहीं देखा, लेकिन अगर ज़रूरत ही आ पड़े तो हम्माम में दाख़िल होना जाएज है मगर तहबन्द से अपने सतर को छुपाए हुए और दूसरों के सतर से आंखें चुराए हुए हम्माम में दाख़िल हो। अगर अगर हम्माम का ख़ाली होना मुम्किन हो (किसी वक़्त) तो रात को या दिन को ऐसे वक़्त कि गुनाह का अंदेशा कम हो हम्माम में दाख़िल होने में कोई हरज नहीं है।

इमाम अहमद से हम्माम में दाख़िल होने का मसला दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया "अगर तुम को मालूम हो कि हम्माम के अंदर जितने लोग हैं सब तहबन्द बांधे हुए हैं तो दाख़िल हो सकते हो वरना नहीं। हज़रत आएशा सिदीका रज़ियल्लाहो अन्हा से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस ने फ़रमाया, हम्माम बुरा मक़ाम है जहां न परदा होता है और न उसका पानी पाक होता है।

हज़रत आएशा सिदीका ने फ़रमाया कि अगर कोहे उहद के बराबर सोना मिल जाए और उसके एवज़ हम्माम में जाना पड़े तब भी मुझे हम्माम में जाने की खुशी नहीं होगी, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह की रिवायत है कि हुज़ूरे गिरामी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो अल्लाह और रोज़े क़यामत पर ईमान रखता हो उसे बग़ैर तहबन्द के (बांधे) हम्माम में नहीं जाना चाहिए।

### औरतों का हम्माम में जाना

अगर औरतें हम्माम में जाना चाहें तो उन शराइत के तहत जा सकती हैं जो मर्दों के लिए बयान किए गए हैं या कोई उज़्र या हाजत हो जैसे बीमारी या हैज़ व निफ़ास वग़ैरह की मजबूरी के बाइस उनको जाना पड़े।

हज़रत इब्ने उमर बयान फ़रमाते हैं कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया



ऐ मेरी उम्मत के लोगो! सरजमीने अजम (ईरान) बहुत जल्द फतह होगी और वहां तुम ऐसे घर पाओगे जिनको हम्माम कहा जाता है लिहाजा मर्द बगैर तहबन्द के वहां न जायें और औरतों को वहां बगैर हैज व निफास की मजबूरी के न जाने दें।

## हम्माम के आदाब

जब हम्माम में जाए तो न अस्सलामो अलैकुम कहे और न कुरआन शरीफ पढ़े इस सिलसिले में हज़रत अली से मरवी हदीस ऊपर पेश की चुकी है। हम्माम में किसी हाल में भी बरहना होना जाएज नहीं यहां तक कि गुस्ल की हालत में भी बिल्कुल बरहना होने की ममानियत है। अबू दाऊद ने अपनी असनाद के साथ बहज़ बिन हकीम से और उन्होंने अपने दादा से नक़ल किया है कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह हमको किससे सतर छुपायें और किससे न छुपायें? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अपनी बीवी और बान्दी के सिवा इसको सबसे छुपाओ। मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह अगर कोई शख्स तन्हा हो, फरमाया आदमियों से ज्यादा अल्लाह हकदार है कि उसकी शर्म की जाये। अबू दाऊद ने अपनी इस्नाद से हज़रत अबू सईद ख़ुदरी की रिवायत नक़ल की है कि हुज़ूर ने इरशाद फरमाया "मर्द, मर्द का सतर न देखे न औरत, औरत का, मर्द, मर्द के साथ एक कपड़ा ओढ़ कर न लेटे। और न औरत, औरत के साथ एक कपड़ा ओढ़ कर लेटे, अगर जगह बिल्कुल तन्हा हो और कोई देखता भी न हो तब भी बगैर तहबन्द बांधे नहाना मकरूह है, अबू दाऊद ने अपनी असनाद से हज़रत अता बिन यअला बिन उमय्या से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बूढ़े शख्स को बगैर तहबन्द के गुस्ल करते मिला मुलाहिज़ा फरमाया तो आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और अल्लाह तआला की हम्द ब सना के बाद फरमाया अल्लाह तआला बड़ा हयादार और परदे में रहने वाला है हया और परदे को पसन्द फरमाता है। अगर तुम में से कोई गुस्ल करे तो पर्दा कर लिया करे। अगर कोई गुस्ल वगैरह के लिए पानी (दरिया, होज़, चश्मा) में दाखिल हो तब भी बगैर तहबन्द होना मकरूह है, पानी में भी तो बकसरत रहने वाले मौजूद हैं।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बगैर तहबन्द के पानी में दाखिल होने की ममानियत फरमाई है। हज़रत हसन बसरी का कौल है कि पानी में बकसरत रहने वाले हैं उन से परदा करने के हम ज्यादा हकदार हैं यानी पानी के अन्दर रहने वाली मख़लूक से भी सतरे औरत करना चाहिए।

एक रिवायत में आया है कि हज़रत इमाम अहमद ने बगैर तहबन्द के पानी में दाखिल होने की इजाज़त दे दी थी और इस अम्र को मकरूह नहीं समझा। किसी शख्स ने इमाम साहब से दरयाफ़्त किया कोई शख्स नहर में नंगा नहा रहा हो और उसे कोई न देखे तो उसके लिये क्या हुक्म है आपने जवाब दिया कि इस तरह नहाने में कोई हरज नहीं है, ताहम बेहतर यही है कि पानी में भी तहबन्द बांध कर जाए।



# अंगुशतरी

## अंगुशतरी पहनना और बनवाना

अबू दाऊद अपनी असनाद से लिखा है कि हजरत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब बाज़ अजमी फरमां रवाओं के नाम मकतूब गिरामी इरसाल फरमाने का इरादा किया तो आपसे अर्ज किया कि वह लोग बगैर मोहर के किसी खत को नहीं पढ़ते, उस वक्त आपने चांदी की मोहर बनवाने का हुक्म दिया जिस पर मोहम्मद रसूलुल्लाह कन्दा था। हजरत अनस ने यह भी फरमाया कि रसूले खुदा की पूरी अंगूठी चांदी की थी मगर उसका नगीना हबशी अकीक का था।

अबू दाऊद नाफेअ से और वह इब्ने उमर से रिवायत करते हैं कि आंहजरत ने अपनी अंगूठी सोने की बनवाई थी जिसमें चांदी का नगीना था और उस नगीना पर मोहम्मद रसूलुल्लाह कन्दा था, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मामूल था कि नगीना का रुख हमेशा अपनी कफे दस्त की जानिब रखते थे। आपके जमाने में और लोगों ने भी सोने की अंगूठियां बनवा कर पहनीं, हुजूर वाला ने जब यह हालत मुलाहिज़ा फरमाई तो अपनी अंगूठी उतार डाली और फरमाया अब मैं इसको कभी नहीं पहनूंगा, उसके बाद आपने चांदी की अंगूठी बनवाई और उस पर "मोहम्मद रसूलुल्लाह" कन्दा कराया। आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद यही अंगुशतरी हजरत अबू बकर ने पहनी उनके बाद हजरत उमर ने पहनी और उनके बाद हजरत उस्मान जुन्नुरैय ने यहां तक कि (एक मौका पर) यह अंगुशतरी आपकी उंगली से निकल कर "चाहे अरीस" में गिर गई और फिर हमेशा उसी में रही।

## अंगुशतरी किस चीज़ की हो

लोहे और पीतल की अंगूठी पहनना मकरूह है, अबू दाऊद से रिवायत अब्दुल्लाह बिन बरीदा मरवी है कि एक शख्स पीतल की अंगूठी पहने रसूलुल्लाह की खिदमत में हाज़िर हुआ, आपने फरमाया कि किया वजह है कि मुझे तेरी तरफ से बुतों की बू महसूस हो रही है, उस शख्स ने फौरन अंगूठी उतार कर फेंक दी, दोबारा वही शख्स लोहे की अंगूठी पहन कर हाज़िरे खिदमत हुआ। हुजूर ने फरमाया "क्या वजह है कि मैं तुझे दोज़खियों का ज़ेवर पहने देख रहा हूं उसने फौरन अंगूठी उतार कर फेंक दी और अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह मैं किस चीज़ की अंगूठी बनाओं? आपने फरमाया, चांदी की मगर एक मिस्काल की पूरी न हो। यानी साढ़े चार माशे से ज्यादा न हो।

## अंगूठी किन उंगलियों में पहनी जाए

दर्मियानी और शहादत की उंगली में अंगूठी पहनना मकरूह है, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हजरत अली को इससे मना फरमाया था, पस बाएं हाथ की छंगुली में पहनना बेहतर है। अबू दाऊद ने इब्ने उमर से रिवायत की है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बायें हाथ में अंगुशतरी पहना करते थे जिसका नगीना कफे दस्त की तरफ रखते थे, सल्फे सालेहीन का यही तरीका मंकूल है इसके खिलाफ बिदअतियों का अमल और उनकी निशानी है।



मुस्तहब अम्र यही है कि दायें हाथ से पकड़ कर चीजों को बायें हाथ में लिया जाए बस यही अंगुशतरी के लिये भी मुस्तहब है। अंगूठी पर हुरूफ और नाम कन्दा होते हैं उनका अदब भी इसी तरीका से होता है। हजरत अली की रिवायत से यह साबित होता है कि रसूलुल्लाह अपने दाहिने हाथ में अंगुशतरी पहना करते थे लिहाजा इस रिवायत के पेशे नजर दायें और बायें दोनों हाथों में अंगूठी पहनने का हुक्म मसावी हैसियत रखता है मगर पसन्दीदा बात पहली ही है।

## बैतुल खला, रफ़ए हाजत और इस्तेन्जा का तरीका

### बैतुल खला में जाना

जब पाखाने में जाने का इरादा हो तो सबसे पहले वह तमाम चीजें निकाल कर अलग रख दे जिन पर अल्लाह का नाम हो जैसे मोहर, तावीज, कौरह। फिर उलटा पांव आगे बढ़ाये और दायां पांव पीछे रखे (यानी बायां पांव पहले बैतुल खला में रखे फिर दायां) और कहे:

**तर्जमा:** बिस्मिल्लाह मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ खबीस नर और मादा जिन्नात से और पलीद गन्दे फिटकारे हुए शैतान से।

हदीस शरीफ़ आया है, हुजुरे अक़दस ने फ़रमाया उन पाखानों में शैतान होते हैं इसलिए तुम शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो और तुम में से हर शख्स बैतुल खला में दाखिल होते वक़्त कहे अऊज़ोबिल्लाहि मिनरिर्जसल नजसीन अल खबीसिशैतानिर्जमीम।

पाखाना में दाखिल होते वक़्त सर ढका होना चाहिए और जब तक ज़मीन (बैतुल खला) के करीब तक न पहुंच जाए अपने कपड़े न उठाए। रफ़ए हाजत के लिए बैठे तो टांग पर जोर दे कर बैठे इस तरीके से रफ़ए हाजत में सहूलत होती है फ़ारिग़ होने से कब्ल किसी से बात न करे, बात करने वाले या सलाम करने वाले का भी जवाब न दे। अगर इस असना में छींक आ जाये तो दिल में अल्लाह की हम्द व सना बयान करे आसमान की तरफ़ न देखे, अपनी या किसी दूसरी शख्स की गलाज़त या हवा (रियाह) ख़ारिज होने पर न हंसे।

रफ़ए हाजत के लिए लोगों से दूर चला जाए, पेशाब के लिए जगह नर्म व जाज़िब तलाश करे ताकि लौट कर छीटें न पड़ें, किसी को अपनी शर्मगाह न देखने दे, जहां रफ़ए हाजत को बैठता है अगर वह जगह सख्त हो या हवा का रुख़ मुख़ालिफ़ हो (सामने से आती हो) तो शर्मगाह का मुंह ज़मीन से मिला कर रखे, जंगल में किबला की तरफ़ मुंह करके या पीठ करके न बैठे, जुनूब रूया या शिमाल रूया बैठे। चांद या सूरज की तरफ़ मुंह करके बैठना भी मना है, किसी सूरख़ में पेशाब न करे, किसी फल वाले या ग़ैर मेवादार दरख़्त के नीचे पेशाब न करे इसलिए कि कभी कभी लोग दरख़्त के नीचे (आराम के लिए) बैठते हैं तो इस सूरत में उनके कपड़े गन्दे हो जायेंगे, और जो फल उपर से गिरेगा वह भी नापाक हो जाएगा। किसी रास्ते में भी पेशाब ना करे न किसी घाट पर न किसी दीवार के साये में, ऐसा करना मौजिबे लानत से जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है।



रफ़ हाजत के मकाम पर कुरआन पाक न पढ़े और न किसी तरह अल्लाह का जिक्र करे ताकि अल्लाह के नाम की बेअदबी न हो सिर्फ़ बिस्मिल्लाह और अऊज़ोबिल्लाह पढ़े। रफ़ हाजत के बाद यह दुआ पढ़े।

**तर्जमा:**—अल्लाह का शुक्र है जिसने मेरा दुख दर्द दूर किया और मुझे महफूज़ रखा, मैं तुझसे मग़फ़िरत का तालिब हूँ

इसके बाद उस जगह से हट कर किसी पाक जगह पर आ जाए और वहां इस्तेन्जा करे ताकि हाथ नजासत से आलूदा न हों और पानी की छींटें बदन और कपड़ों पर न आयें।

अगर बाहर निकलने वाली नजासत ग़ैर मामूली तौर पर मक़ामे ख़ुरूज से इधर उधर न फैली हो बल्कि सिमटी हुई (एक जगह) हो तो इस्तेन्जा करने वाले को इख़्तियार है कि उसी जगह इस्तिन्जा करे लेकिन यह ख़याल रहे कि नजासत से हाथ आलूदा न हों और बदन या कपड़ों पर छींटें न पड़ें। इस्तिन्जा ख़ुश्क चीज़ से करे या पानी से (इख़्तियार है) अगर ख़ुश्क चीज़ से साफ़ करने का इरादा हो तो पत्थर या मिट्टी के तीन ऐसे टुकड़े ले जो पाक हों उनसे पहले इस्तिन्जा न किया गया हो। इस्तिन्जा करने की तरकीब यह है कि दायें हाथ में पत्थर या मिट्टी का ढेला लिया जाए और ग़लाज़त के ख़ारिज होने वाले मक़ाम को उससे रगड़े मगर इससे क़ब्ल पेशाब को ऐसा ख़ुश्क कर ले कि फिर कतरा निकलने का इमक़ान न रहे, ख़ास कर इसकी तहकीक़ करे इसको इस्तबरा कहते हैं और जो कतरे बर आमद हों उनको दायें हाथ के पत्थर से ख़ुश्क करे, यहां तक कि सूराख़ के मुंह पर तरी का निशान भी बाकी न रहे इस तरह तीन पत्थरों से किया जाए।

अगर पत्थर के टुकड़े मयस्सर न आयें तो तीन ठिकरियां या तीन ढेले लेकर उन पर मजकूरा अमल करे। कुछ भी न हो तो तीन मुट्ठी मिट्टी ही ले लिया जाए या ज़मीन या दीवार से उज्ज्वए मख़सूस को मस्क करके हर मरतबा देख ले कि ख़ुश्की आई या नहीं, इस अमल के बाद यकीन करे कि इस्तिन्जा का हुक्म पूरा हो गया। सिर्फ़ सोतने से परहेज़ करे बल्कि डंडी के आखिरी हिस्से से सर की तरफ़ सोते। क्योंकि पेशाब के कतरे अक्सर डंडी ही में रह जाते हैं और वुजू से फ़ारिग़ होने के बाद निकलते हैं जिससे वुजू टूट जाता है। इसलिए हुक्म है कि पाक करने और ख़ासने से क़ब्ल तीन चार कदम ज़मीन पर पैर मारता हुआ चले ताकि पेशाब का कोई कतरा बाकी रह गया हो तो निकल जाए।

पाख़ाने के मक़ाम (मक़अद) को साफ़ करने का तरीका यह है कि बायें हाथ में पत्थर ले कर आगे से पीछे की तरफ़ ख़ुरूज (ग़लाज़त) के मक़ाम तक खींचे फिर उस पत्थर को फेंक दे अब दूसरा पत्थर लेकर पीछे से आगे की तरफ़ खींचें फिर उसको भी फेंक दे, अब तीसरा पत्थर लेकर मक़ामे ख़ुरूज चारों तरफ़ किनारों पर मले। फिर उसको भी फेंक दे इस तरह ज़रूरी तहारत हासिल हो जाएगी। अगर तीसरे पत्थर से पूरी तहारत न हो और तरी नमूदार हो तो दो पत्थर और इस्तेमाल करे यानी पत्थरों की तादाद पांच कर दे और इससे भी ज़्यादा सात पत्थर इस्तेमाल कर सकता है लेकिन ताक़ तादाद होना चाहिए। अगर एक या दो पत्थरों से तहारत हो जाए जब भी तादाद तीन तक बढ़ाये शरीअत का यही हुक्म है।

पत्थर इस्तेमाल करने का एक और तरीका भी है वह इस तरह है कि बायें हाथ में एक पत्थर ले कर मक़ामे ख़ुरूज के दायें किनारे पर आगे से पीछे तक ले जाए फिर उसी तरह बायें किनारे



से आगे से पीछे तक ले जाए अब उस पत्थर को फेंक दे। अब दूसरा पत्थर लेकर बायें किनारे के अगले हिस्सा से फेरता हुआ दायें किनारे के अगले हिस्से तक लाये, फिर तीसरे पत्थर से दर्मियानी हिस्से की सफाई करे यह दोनों तरीके जाएज है।

हदीस में आया है कि एक शख्स ने किसी देहाती सहाबी से कहा मेरे ख्याल में तुम को अच्छी तरह रफ़ए हाजत के लिए बैठना भी नहीं आता, सहाबी ने कहा आता क्यों नहीं, तेरे बाप की कसम मैं उससे अच्छी तरह वाकिफ हूँ, उस शख्स ने कहा अच्छा बयान करो। सहाबी ने कहा कि मैं (रफ़ए हाजत के लिए बैठते वक्त) कदमों को दूर दूर रखता हूँ, ढेले तैयार रखता हूँ शह घास की तरफ मुंह और हवा के रुख पर पुश्त रखता हूँ, हिरन की तरह दोनों पांव पर जोर दे कर बैठता हूँ और शुतरमुर्ग की तरह सुरीन को ऊँचा रखता हूँ। (शह: अरब की सरज़मीन पर एक खुशबूदार घास होती है)

## पानी से इस्तिनजा

पानी से इस्तिनजा करने का तरीका यह है कि उज्वे मखसूस को बायें हाथ से थाम कर दायें हाथ से उस पर सात दफ़ा पानी डाल कर धोए, धोने में उज्वे मखसूस को सोंते यानी इस्तबरा करे बाकी कतरात भी खारिज हो जायें। फुकहाए मदीना ने मर्द की शर्मगाह को जानवर के थन से तशबीह दी है कि जब तक सोंता जाता है कुछ न कुछ बर आमद ही होता है यहां तक कि जब पानी डाला जाता है तो पेशाब बन्द हो जाता है।

पिछली शर्मगाह की तहारत की शकल ये है कि पानी दायें हाथ से डाले और बायें हाथ से सफाई करे, पानी मुसलसल डालता रहे मखरज को किसी कद ढीला छोड़ दे और हाथ से खूब मले यहां तक कि पाकीजगी और तहारत का यकीन हो जाए। अगली और पीछली शर्मगाह के अन्दरुनी हिस्सों का धोना जरूरी नहीं है। हवा खारिज होने के बाद इस्तिन्जा जरूरी नहीं।

तहारत के लिए खुश्क चीजों को इस्तेमाल भी काफी है मगर इसके साथ पानी भी इस्तिन्जा करे तो बेहतर है, पानी का इस्तेमाल हर हाल में ऊला और अफज़ल है। पानी से अगर इस्तिन्जा न किया जाए तो विसवास पैदा होता है। बाज़ लोगों का कौल है कि कुछ शायर पानी से इस्तिन्जा नहीं करते थे। इसी वजह से उनसे बेहूदा और फहश कलाम सरज़द होता था। अल्लाह तआला ऐसे गन्दे और फहश कलाम से पनाह में रखे। अगर नजासत फैल कर मर्द की शर्मगाह के सर के बेशतर हिस्सा (हश्फ़ा) तक पहुंच जाए या पिछली शर्मगाह के दोनों किनारों पर लग जाए तो ऐसी सूरत में बगैर पानी के इस्तिन्जा दुरुस्त नहीं होता। इस लिए कि नजासत रुख़सत की जगह से बाहर निकल गई है और उस नजासत के मानिन्द होगी जो बाकी बदन पर हो जैसे रान और सीना वगैरह, इस लिए पानी के बगैर पाकी मुमकिन नहीं होगी।

## किन चीजों से इस्तिन्जा करना चाहिए

जिन चीजों से इस्तिन्जा करना जाएज है वह खुश्क, पाक और साफ़ हों और अज्व किस्म तआम न हों इसी तरह उन चीजों से भी इस्तिन्जा करना दुरुस्त नहीं जिनका ऐहतराम किया जाता है। और न उनसे जो किस जानवर के जिस्म का हिस्सा हों जैसे हड्डी या गोबर वगैरह, क्योंकि ये अशिया जिन्नात की गिज़ा हैं। ज़ख़्म डालने वाली या ख़राश पैदा करने वाली चीजों



से भी इस्तिन्जा करना नहीं चाहिए, जैसे शीशा, कोयला या कंकरिया वगैरह।

## इस्तिन्जा की ज़रूरत

रीह के अलावा बाकी जो भी दोनों रास्तों (उज्वे मख्सूस और मकअद) से बर आमद हो इस सूरत में इस्तिन्जा वाजिब है जैसे पाखाना, कीड़े पत्थरी, पीप, लहु, बौल।

मर्द की शर्मगाह से (उज्वे मख्सूस) से निकलने वाली ये पांच चीजें हैं।

(1) पेशाब,

(2) मजी, वह रकीक सफ़ेद पानी जो लैसदार होता है, जो शहवानी बातों या शहवत के वक़्त ख़ारिज होता है, इस सूरत में सिर्फ़ पेशाबगाह का काफी नहीं बल्कि फ़ोतों को भी धोना चाहिए। जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो ने रिवायत की है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया यह मर्द का पानी है, हर मर्द से निकलता है और यह जब यह निकले तो उस मक़ाम को और फ़ोतों को धो लोना चाहिए।

(3) वदी, वह सफ़ेद गाढ़ा पानी या रतूबत जो पेशाब के बाद निकलती है इसका हुक्म पेशाब का है।

(4) मनी, यानी वह सफ़ेद पानी जो जिमाअ या एहतलाम की खुसूसी कैफ़ियत के वक़्त शर्मगाह से कूद कर निकलता है। आदमी में कुव्वत ज़्यादा हो तो इसका रंग ज़र्द होता है और कसरते जिमाअ की वजह से इसका रंग सुर्ख़ हो जाता है। जुअफ़े बदन और कमज़ोरी की वजह से इसमें पतला पन पैदा हो जाता है, इसकी बू ख़जूर के शगूफ़े या गुंधे हुए आटे की बू की तरह होती है। एक रिवायत में इसको पाक करार दिया गया है लेकिन इसके निकलने से पूरे बदन को धोना (गुस्ल) वाजिब हो जाता है। औरत का पानी (मनी) ज़र्द रंग का होता है।

(5) कभी मर्द की अगली शर्मगाह से हवा (रीह) ख़ारिज होती है इसके निकलने पर इस्तिन्जा ज़रूरी नहीं।

## तहारते कुबरा (गुस्ल)

### गुस्ल की कैफ़ियत और हुक्म

गुस्ल जिसको तहारते कुबरा से ताबीर किया जाता है दो तरह का है एक कामिल और एक बक़दरे ज़रूरत। कामिल गुस्ल ये है कि जनाबत या हदसे अकबर को दूर करने के लिए नीयत के साथ किया जाए, दिल से नीयत करने के बाद ज़बान से भी कह ले तो अफ़ज़ल है। पानी लेते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़े, तीन बार दोनों हाथ धोए, बदन पर जो नजासत लगी हो उसको धो डाले फिर पूरा वुजू करे, पाँच उस जगह से हट कर दूसरी जगह धोए, तीन चुल्लू (लप) पानी सर पर इस तरह डाले कि बालों की जड़ें तर हो जायें फिर तीन मर्तबा सारे जिस्म पर पानी बहाये, दोनों हाथों से बदन भी मलता जाए, रानों के गोशे को (जिन को जंगसे कहते हैं)। और बदन की खाल की शिकनें भी धोए, इन मक़ामात पर पानी यकीनी तौर पर पहुंचाना चाहिए। हुज़ूरे अक़दस का इरशाद है कि बालों को तर करो और जिल्द को ख़ूब साफ़ करो, गुस्ल के दौरान अगर कोई फ़ेअल ऐसा सरज़द न हुआ हो जिससे वुजू जाता रहता है। तो इसी गुस्ल से नमाज़



गुनियतुत्तालिबीन

पढ़ना जाएज है (मजीद की जरूरत नहीं है) हदसे असगर और हदसे अकबर को दूर करने के लिए यही गुस्ल काफी होगा अगर गुस्ल के दौरान वुजू टूट गया हो तो नमाज के लिए दोबारा वुजू किया जाए।

## गुस्ले जनाबत

गुस्ले जनाबत के सिलसिले में जो तफसील पेश की गई इसकी अस्ल सबूत वह रिवायत जो हज़रत आएशा रजियल्लाहो अन्हा से मरवी है। फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गुस्ले जनाबत करना चाहते तो तीन बार दोनों हाथ धोते फिर दायें दस्ते एकदस में पानी ले कर बाएं दस्ते मुबारक पर पानी बहाते फिर कुल्ली फरमाते और बीनी मुबारक में पानी पहुंचाते। तीन बार चेहरा मुबारक व तीन बार दोनों दस्ते मुबारक धोते फिर तीन बार सरे मुबारक पर पानी डालते और इसको धोते जब गुस्ल फरमा कर बाहर तशरीफ लाते तो दोनों कदमे अकदस धोते।

किस्म दोम यानी किफायत करने वाली तहारत यह है कि अपनी शर्मगाह को धो कर नीयत करे और बिस्मिल्लाह पढ़ कर पानी बहाये। नाक में पानी डाले क्योंकि वुजू और गुस्ल दोनों में पानी डालना वाजिब है इसके बाद सारे जिस्म पर पानी बहाये। दौराने गुस्ल नाक में पानी डालने और कुल्ली करने के बारे में दो रिवायतें हैं जिससे साबित होता है कि तहारते सुगरा में भी जाएज है लेकिन ऐसे गुस्ल के साथ नमाज पढ़ना जाएज नहीं जब तक कि गुस्ल और वुजू दोनों की नीयत न की हो, अगर वुजू की नीयत न हो तो न होगा और उसकी नमाज भी सही नहीं होगी, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिसका वुजू न होगा उसकी नमाज न होगी और तहारते कुबरा में गुस्ल भी हो गया और वजू भी।

## पानी का इस्तेमाल

गुस्ल में पानी बेकार और जाएद इस्तेमाल करना मुस्तहब नहीं, दर्मियानी तौर पर सर्फ करना अच्छा भी है और मुस्तहब भी, अगर गुस्ल और वुजू की जरूरियात पूरी हो सकती हैं तो इसराफ के मुकाबले में कम पानी इस्तेमाल करना बेहतर है। एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक मुद पानी से वुजू और एक साअ पानी से गुस्ल फरमाते।

# आजा धोने के वक्त की मुस्तहब दुआयें

## इस्तिन्जा के बाद की दुआ:

इस्तिन्जा से फारिग हो कर ये दुआ पढ़े

इलाही! मेरे दिल को शक और निफाक से पाक रख और मेरी शर्मगाह की बे हयाइयों से हिफाज़त फरमा।

## बिस्मिल्लाह कहते वक्त की दुआ:

बिस्मिल्लाह पढ़ते वक्त कहे।

परवरदिगार मैं शैतानी वसवसों से पनाह मांगता हूं। या अल्लाह! अपने शैतानों के आने से भी तेरी पनाह चाहता हूं।



## हाथ धोते वक्त कहे:

इलाही! मैं तुझसे खैर व बरकत चाहता हूं और नहूसत, बरबादी से तेरी पनाह-मांगता हूं।

## कुल्ली करते वक्त की दुआ:

कुल्ली करते वक्त ये दुआ पढ़े।

इलाही! अपनी किताब कुरआन (पाक) के पढ़ने में और अपनी याद बकसरत करने में मेरी मदद फरमा (ताकि मैं कुरआन खूब पढ़ूं और कसरत से तेरी याद करूं।

## नाक में पानी डालते वक्त:

नाक में पानी चढ़ाते वक्त कहे।

खुदाया! अपनी खूशनूदी के साथ जन्नत की खूशबू सूंघा (मुझे जन्नत की खूशबू और मुझसे राजी हो जा)

## नाक साफ़ करने के वक्त:

ये दुआ पढ़े।

इलाही! मैं दोज़ख की बू से और आखिरत के घर की खराबी से तेरी पनाह चाहता हूं।

## मुंह धोने के वक्त:

ये दुआ पढ़े।

इलाही! उस रोज़ मेरे मुंह को सफ़ेद (रौशन) करना जिस रोज़ तेरे दोस्तों के मुंह सफ़ेद होंगे और जिस रोज़ तेरे दुश्मनों के चेहरे सियाह होंगे उस रोज़ मेरे चेहरे को सियाही से महफूज़ रखना।

## सीधे हाथ धोते वक्त:

यह दुआ पढ़े:

इलाही! आमाल नामा मेरे सीधे हाथ में देना और मेरा हिसाब आसान कर देना।

## दस्ते चप धोते वक्त:

यह दुआ पढ़े।

इलाही! मैं इस बात से तेरी पनाह मांगता हूं कि तू बायें हाथ में या पुश्त के पीछे से मेरा आमाल नामा मुझे दे।

## सर का मसह करते वक्त:

सर का मसह करते वक्त यह कहे।

इलाही! मुझे अपनी रहमत में छुपा ले और मुझ पर अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमा और उस दिन अपने अर्श के नीचे मुझे जगह दे जिस दिन तेरे साया के सिवा कोई साया नहीं होगा।

## कानों के मसह के वक्त की दुआ:

कानों के मसह करते वक्त यह दुआ पढ़े।

खुदाया! मुझे उन लोगों में से कर दे जो अच्छी बात सुन कर उस की पैरवी करते हैं इलाही



मुझे नेकियों के साथ बहिश्त के मुनादी की आवाज़ सुना।

### गर्दन का मसह करते वक्त की दुआ:

गर्दन का मसह करते वक्त यह दुआ पढ़े।

इलाही! मेरी गर्दन को दोज़ख से आज़ाद फ़रमा दे जंजीरों और तौकों से मैं तेरी पनाह मांगता हूँ।

### दायां पांव धोते वक्त:

यह दुआ पढ़े।

इलाही! अहले ईमान के साथ मेरे कदम को पुल सिरात पर कायम फ़रमा।

### बायां पांव धोते वक्त:

यह दुआ पढ़े।

इलाही! जिस रोज़ मुनाफ़िकों के कदम पुल सिरात से फिसल जाएंगे उस रोज़ मैं अपने कदम के फिसलने से तेरी पनाह चाहता हूँ।

### वजू से फ़रागत पाने की दुआ

वुजू से फ़ारिग होकर आसमान की तरफ मुंह उठा कर यह दुआ पढ़े।

मैं शहादत देता हूँ कि अल्लाह एक है और उसका कोई शरीक नहीं और उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मैं शहादत देता हूँ कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। इलाही तू माफ़ है और अपनी तारीफ़ का मुस्तहिक, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं मैंने बदी की और अपनी जान पर जुल्म किया। मैं तुझसे मग़फ़िरत का तालिब हूँ और माफ़ी का ख़्वास्तगार, मुझे बख़्श दे और माफ़ी दे दे, तू बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है। इलाही! मुझे तौबा करने वालों में से कर दे और पाकबाज़ों में से बना दे और साबिर शुक्र गुज़ार कर दे और ऐसा कर दे कि मैं तेरी याद किया करूँ। और सुबह व शाम तेरी पाकी ब्यान करूँ।

## लिबास, ख़्वाब और घर से बाहर

### निकलने के आदाब

लिबास पांच तरह का होता है, (1) हर मोकल्लफ़ (बालिग़ साहबे फ़हम) के लिए हराम (2) बाज़ के लिए हलाल और बाज़ के लिए हराम, (3) मकरुह, (4) मुबाह, (5) वह जिसके इस्तेमाल की माफ़ी है। (यानी इजाज़त है)

(1) छीना हुआ लिबास हर मोकल्लफ़ (बालिग़ और फ़हीम) के लिए हराम है (2) रेशमी लिबास औरतों के लिए हलाल है और बालिग़ मर्दों के लिए हराम है। नाबालिग़ लड़कों को रेशमी लिबास पहनाने के जवाज़ व अदमे जवाज़ की दो रिवायतें हैं। जिहाद में मुजाहिदीन के लिए भी रेशमी लिबास पहनने के जवाज़ व अदम जवाज़ की भी दो मुतज़ाद रिवायतें हैं। उनमें एक



रिवायत में इस लिबास को मुबाह लिखा है। (3) कपड़ा इतना लम्बा पहनना कि गरूर व तबख्तुर की हद में दाखिल हो जाए मकरुह है (4) इसी तरह वह लिबास भी मकरुह है जो रेशम और सूत से मिलकर बना हो लेकिन रेशम और सूत की तादाद मालूम न हो कि कितनी है (निस्फ़ निस्फ़ है या कम व बेश है।) (5) वह लिबास जिसकी माफी (इजाज़त) है लिबास है जो लोगों में मारुफ़ हो और मुस्तअमल हो। लिहाज़ा ऐसा लिबास पहने जेसा उमूमन अहले शहर पहनते हैं ताकि लिबास से बेगानगी का इज़हार न हो। रिवाज से हट कर लिबास पहनने वाले पर लोग उमूमन अंगुशत नुमाई करते हैं और गीबत करते हैं। इस तरह यह लिबास पहनने वाले के लिए भी तकलीफ़ का बाइस बनता है और दूसरों के लिए गीबत का सबब।

## लिबास का अक़साम

लिबास की दो किस्में हैं। एक लिबास वाजिब है और दूसरा मुसतहब। फिर वाजिब की भी दो किस्में हैं। एक हक्कुल्लाह (वह जो अल्लाह तआला के हक़ की तरफ़ राजेअ हो)। दूसरा हक्कुन्नास (वह जो सिर्फ़ इन्सान के हक़ की तरफ़ राजेअ हो)।

(1) हक्कुल्लाह यह है कि अपनी बरहंगी को लोगों से इस तरह छुपाये जैसा कि छुपाने का हुक्म है, इसकी तफ़सील बरहंगी के ब्यान में हो चुकी है। (2) हक्कुन्नास यह है कि गर्मी सर्दी अपनी हिफ़ाज़त के लिए इन्सान लिबास पहने। यह वाजिब है ऐसे लिबास को तर्क करना हराम है क्योंकि उसके तर्क में जान का ख़तरा और ऐसा करना हराम है।

मुसतहब लिबास की भी दो किस्में हैं। एक हक्कुल्लाह और दूसरी हक्कुन्नास। अब्बलुज़्ज़िक़्र वह लिबास है जो चादर की तरह नमाज़ की जमाअतों, ईदैन के इजतमाआत और जुमों में लोग पहनते हैं, आदमी को चाहिए कि ऐसे इजतमाआत में ख़ूबसूरत कपड़ों से अपने कंधों को बरहना न करे। दूसरी किस्म का लिबास यानी हक्कुन्नास यह है कि उमदा और नफीस कपड़े जो मुबाह हैं वह पहने ताकि आदमी की शराफ़ते नफ़्स में कमी न आए लेकिन ऐसे कपड़े पहन कर दूसरे लोगों को हकीर न जाने।

## अमामा किस तरह बान्धे

अमामा यानी पगड़ी बांधते वक़्त उसका एक सिरा दांतों में दबाने वाले फिर सर पर लपेटे यह तरीक़ा मुसतहब है, लिबास की हर वह वज़अ मकरुह है जो अहले अरब की वज़अ के खिलाफ़ और अजमियों से मुशाबेह हो।

## तहबन्द

तहबन्द का दामन बहुत ज़्यादा लम्बा न रखे। हदीसा शरीफ़ में आया है। हुज़ूरे सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुसलमान का तहबन्द (एज़ार) आधी पन्डली तक होता है या टख़नों से नीचे हो दोज़ख़ में जलेगा। (यानी जिस क़द्र जामा टख़नों से नीचे होगा वह दोज़ख़ में जलेगा)। जो एज़ार (तहबन्द) को घसीटता हुआ चलता है अल्लाह तआला उसकी तरफ़ रहमत की नज़र नहीं फ़रमाएगा। ये हदीस अबू दाउद ने अपनी असनाद के साथ हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो अन्हो से नक़ल की है।

नमाज़ पढ़ते वक़्त चादर को इतना तंग न पहने कि हाथ बाहर निकालने में दिक्क़त हो ऐसा



करना मकरुह है। सदल भी मकरुह है यानी चादर के वस्ती हिस्से को सर पर रखना और इधर उधर के दोनों किनारों को पुश्त पर लटका देना। यह यहुदियों का लिबास है।

अगर अन्दरूनी कपड़े न पहनते हो और सिर्फ तहबन्द बांधे हो तो एहतबा भी नाजाएज है। एहतबा की सूरत यह है कि दोनों जानू खड़े कर के सीने की जानिब समेट लिए जायें और सुरीन के बल बैठा जाए और चादर को पीछे से घुमा कर सामने लाकर घुटनों को घेरे में लेकर बांधा जाये ताकि कमर का सहारा हो जाए, इस सूरत में शर्मगाह के खुल जाने का खतरा होता है लेकिन अगर कोई कपड़ा अन्दर पहने हो तो एहतबा जायज है। नमाज में मुंह बिल्कुल लपेट लेना चाहिए और नाक ढांक लेना मकरुह है। (इसको तलतिम कहते हैं।)

मर्दों के लिए औरतों की वजअ इख्तियार करना और औरतों के लिए मर्दों के मुशाबेह लिबास नहीं पहनना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने वाले (मर्द और औरत) पर लानत भेजी है और अजाब के वईद सुनाई है।

नमाज में अकआ भी मकरुह है, अकआ की दो सूरतें हैं। एक यह कि पांव के तलवे और ऐड़ियां उपर की तरफ और तलवे जमीन से लगे हों और आदमी ऐड़ियों पर बैठा हो। दूसरी सूरत यह है कि दोनों सुरीनों की नोकों पर बैठा हो और पांव कुत्ते की तरह आगे की तरफ फैले हों। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि यह कुत्ते की बैठक है और इस तरह बैठना मना है।

ऐसा लिबास पहनना जिससे बदन नज़र आता हो मकरुह है। अगर कसदन ऐसा लिबास पहनेगा जिससे बदन का समनूआ हिस्सा चमकता हो तो ऐसा शरख्स फासिक है, ऐसा लिबास पहन कर नमाज भी दुरुस्त नहीं।

## पायजामा (सराविल)

पायजामा की शरीयत में तारीफ की गई है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पायजामा को निस्फ लिबास करार दिया है और इसे मर्दों के लिए मौजूं बताया है। पायजामा के पांचों की मोरियां ज्यादा कुशादा रखना मकरुह है। तंग मोरियां ज्यादा पसन्द और बेहतर हैं। इससे बेपर्दगी नहीं होती। सतरे औरत अच्छी तरह होता है।

एक रिवायत में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इलाही पायजामा पहनने वाली औरतों को बख्शा दे, हुजूर ने यह दुआ उस वक्त फरमाई जब एक औरत जो पांचे उठाए हुए थी। बलन्दी पर चढ़ते हुए गिर पड़ी। हुजूर ने उस की तरफ से मुंह फेर लिया था। उस वक्त किसी ने अर्ज किया कि यी औरत पायजामे पहने है मुन्दर्जा जैल बाला दुआ फरमाई। बाज़ हदीसें में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसे ढीले पायजामे को जिन के पांव (ऊपरी हिस्सा) को छुपा दें ना पसन्द है। कुशादा पांचों वालों ढीले पायजामे को मुखरफज कहते हैं। चुनांचे मस्ल में आया है कि ऐशुन मुखरजुन (फराख हाली की जिन्दगी)। सबसे बेहतर वह लिबास है जो पर्दा पोश हो।

## सफ़ेद कपड़े

कपड़ों का सबसे अच्छा रंग सफ़ेद है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया है कि "तुम्हारे सबसे अच्छे कपड़े सफ़ेद हैं।" एक रिवायत में आया है कि आंहजरत



सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अपने बच्चों को सफेद कपड़े पहनाओ और मुर्दों को भी सफेद कफन दो। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि हुज़ूर ने इरशाद फरमाया "सफेद रंग के कपड़े पहनो" तुम्हारे लिए यह बेहतरीन लिबास है, इन्हीं मुर्दों को कफन दो, बेहतरीन सुर्मा अशमद है, बीनाई को तेज़ करता है और पलकों के बाल लगाता है।

## आदाबे ख़्वाब

### ख़्वाब के मसाएल

जो शख्स सोने का इरादा करे तो इसके लिए मुसतहब है कि पानी के बर्तन ढक दे, मशकीजा का मुंह बंद कर दे, चिराग़ गुल कर दे, अगर कोई बू दार चीज़ खाई हो तो मुंह साफ़ करे (कुल्ली करे) ताकि मूजी जानवर इज़ा न पहुंचाए। बिस्मिल्लाह पढ़ कर यह दुआ जो अबू दाऊद ने अपनी असनाद के साथ हज़रत सईद बिन उबैदा से रिवायत की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बराअ (बिन अज़िब) से फरमाया है कि ख़्वाबगाह में जाओ तो पहले नमाज़ की वुजु की तरह वुजु कर लो फिर दायें करवट से लेट कर यह पढ़ो और अपनी हर बात के आखिर में इसको पढ़ो। (यानि इसके पढ़ने के बाद कोई बात न करो)

इलाही! मैं अपने आपको तेरा फरमा बरदार बनाता हूँ और अपने काम तुझे सौंपता हूँ तुझे अपना सहारा करार देता हूँ और तुझसे उम्मीद करता हूँ और तुझसे डरता हूँ तुझसे भाग कर सिवार्ये तेरे न बचने का कोई मक़ाम है और न पनाह लेने का। जो किताब तूने नाज़िल फरमाई उस पर मेरा यकीन है और जो नबी तूने भेजा है उस पर मेरा ईमान है।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर इस दुआ को पढ़ने के बाद तुम (सोते में) मर जाओगे तो इस्लाम पर मरोगे। हज़रत बराअ रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि मैंने इस दुआ को याद करना शुरू किया मगर **नबी यकल्लजी अरसलता** की जगह **बेरसूलेकल्लजी अरसलता** पढ़ा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया नहीं **व नबी यकल्लजी अरसलता** पढ़ो।

सोने को लेटे तो सीधी करवट पर किबला रुख़ सोने को इस तरह लेटे जैसे कब्र में मुर्दे को लिटाते हैं। हदीस में इसी तरह आया है, अगर आसमान और ज़मीन की बादशाहत (अल्लाह तआला के एकतदार) पर गौर करने के लिए चित लेटे (आसमान की तरफ़ मुंह करके) तो कुछ मुज़ायका नहीं! औंधा लेट कर सोना मकरुह है।

अगर सोते में डरावने ख़्वाब नज़र आयें तो ख़्वाब की बुरे असरात से अल्लाह से पनाह मांगें और बाई तरफ़ तीन बार थूक करके यु दुआ पढ़ें:

**तर्जमा:**—इलाही! इस ख़्वाब का नतीजा मेरे लिए अच्छा कर और इसकी शर से मुझे बचा। फिर आयतल कुर्सी, सुरह इख़लास (कुल होवल्लाह) सूरह फ़लक और सूरह अन्नास पढ़ें। बशर्ते कि नापाक न हो। अपना ख़्वाब सिर्फ़ नेक शख्स या दानिशमन्द दोस्त से कहे जो ख़्वाब की ताबीर अच्छी तरह जानते हो किसी दूसरे से ब्यान न करे, अगर ख़्वाब शैतानी ख़्यालात देखे हों तो उन्हें बयान करने की मुतलक़ ज़रूरत नहीं। शैतानी किसी सूरत का जामा पहन कर ख़्वाब में दिखाई देता है।



हजरत अबू कतादा का बयान है कि मैंने खूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना है कि सच्चा ख्वाब अल्लाह की तरफ से होता है और बेहूदा ख्वाब शैतान की तरफ से। पस अगर कोई शख्स ना पसन्दीदा और बेहूदा ख्वाब देखे तो बेदार होने पर बाई तरफ तीन मरतबा थूके और अल्लाह से उसकी बुराई की पनाह मांगे। ऐसा शख्स बुरे ख्वाब से महफूज रहेगा।

## मोमिन का ख्वाब

हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह मामूल था कि फजर की नमाज से फरागत के बाद हाजिरीन की तरफ मुतवज्जह होकर फरमाते थे क्या आज रात तुम में से किसी ने कोई ख्वाब देखा है? फिर आप फरमाते कि मेरे बा सिवाये सच्चे ख्वाब के नुबूवत का कोई और हिस्सा बाकी नहीं रहेगा। हजरत उबादा बिन सामर की रिवायत है "हुजुरे वाला ने इरशाद फरमाया है कि मोमिन का ख्वाब नुबूवत का छियालिसवा हिस्सा है।"

## घर से बाहर निकलने के आदाब

### घर से निकलते वक्त की दुआ

घर से बाहर निकलते वक्त उन कलमात को पढ़े जो हजरत उम्मे सलमा शअबी की मरद हदीस में है कि उन्होंने फरमाया जब भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे घर से बाहर निकले हमेशा आसमान की तरफ रुए मुबारक फरमा कर यह अल्फाज ज़बाने मुबारक से अद फरमाये।

तर्जमा:-इलाही! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उस बात से कि मैं गुमराह हो जाऊं या मुझे गुमराह कर दिया जाये, मैं फिसल जाऊं या मुझे फिसला दिया जाए, मैं खुद जुल्म करूँ या मुझ पर जुल्म किया जाये, मैं खुद नादान हूँ या नादान बनाया जाऊँ।

और फिर कुल होवल््लाह और सूरह फ़लक और सूरह अन्नास (मअउज तैन) के साथ सुबह व शाम ये दुआ पढ़े।

तर्जमा:-इलाही! हम तेरे साथ सुबह करते हैं और तेरे साथ शाम करते, तेरे ही फज़ल से जीते हैं और तेरी ही हुक्म से मरते हैं।

सुबह की दुआ में आखिर में व एलैकन्नशहूर कहे और शाम की दुआ के आखिर में व एलैकन्न मसीर का इजाफ़ा करे, इस दुआ के पढ़ने के बाद यह दुआ भी पढ़े।

तर्जमा:-इलाही! आज और आज के बाद जो ख़ैर तू तकसीम करे तू मुझे उन बन्दों के बराबर कर दे जो तेरे नज़दीक बड़े हिस्सा वाले हैं। ख्वाह वह तेरी तरफ से हिदायत बख़्शने वाला नूर हो या तेरी रहमत आम्मा हो या तेरा दिया हुआ रिज़्के वसीअ हो या तेरी तरफ से दफ़ा कर दया तकलीफ़ या माफ़ किया हुआ गुनाह या दूर की हुई सख़्ती या ज़ाएल की हुई मुसीबत या एहसान के तौर पर दी हुई आफ़ियत हो। बहरहाल जो ख़ैर भी हो मुझे उसमें बड़ा हिस्सा पाने वाला बन्दों के साथ अपनी रहमत में शरीक बना दे, तू सब कुछ कर सकता है।



## आदाबे मस्जिद

### मस्जिद में दाखिल होने की दुआ

मस्जिद में दाखिल होना चाहे तो दायां कदम आगे बढ़ाये और पीछे बायां कदम रखे और कहे।

**तर्जमा:**—बिस्मिल्लाह, अल्लाह की तरफ से सलामती हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर। इलाही मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रहमत नाज़िल फरमा और उनकी औलाद पर। इलाही! मेरे गुनाह बख्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाजे खोल दे।

मस्जिद में अगर कोई शख्स मौजूद हो तो उसको सलामुन अलैक करे और अगर मौजूद न हो तो कहे अस्सलामो अलैना मिन रब्बेना अज़्ज व जल्ल (अल्लाह बुजुर्ग बरतर की तरफ से हम पर सलामती हो।) मस्जिद में दाखिल हो जाए तो दो रिकअतें पढ़े बगैर न बैठे, इस के बाद दिल चाहे तो नफ़ल पढ़े या अल्लाह के जिक्र में बैठ कर मशगूल रहे या खामोश बैठ जाए। दुनिया किसी बात का तज़क़िरा न करे बात करे तो बकदरे जरूरत करे ज़्यादा न करे।

नमाज़ का वक़्त शुरू हो जाए तो सुन्नतें पढ़ कर जमाअत के साथ फर्ज अदा करे। नमाज़ से फ़ारिग हो कर जब मस्जिद से बाहर निकलना चाहे तो बायां पांव आगे रखे और दायां पीछे और कहे।

**तर्जमा:**—बिस्मिल्लाह। अल्लाह की तरफ से सलामती हो रसूलुल्लाह पर, इलाही मोहम्मद और आले मोहम्मद पर अपनी रहमत नाज़िल फरमा, मेरे गुनाह बख्श दे और मेरे लिए अपने फज़ल के दरवाजे खोल दे।

नमाज़ के बाद 33 बार सुब्हानल्लाह 33 बार अल्हम्दो लिल्लाह और 34 बार अल्लाहो अकबर पढ़ना सुन्नत है। जब सौ की तादाद मुकम्मल हो जाए तो ख़ातमे पर कहे।

**तर्जमा:**—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की हुकूमत है, उसी के लिए हर तारीफ़ ज़ेबा है वही ज़िन्दा करता है वही मारता वह हमेशा हमेशा के लिए ज़िन्दा है मरेगा नहीं वह अज़मत व बुजुर्गी वाला है। बेहतरी और भलाई उसी के हाथ में है और वह हर शय पर कुदरत रखने वाला है।

हर वक़्त बा वुजू रहना मुसतहब है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस में आया है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि अपनी उम्र में हर वक़्त बा तहारत रहो। जितना हो सके रात और दिन में नमाज़ पढ़ते रहो, निगहबान फ़रिश्ते तुम से मोहब्बत रखेंगे। चाश्त की नमाज़ पढ़ा करो। क्योंकि यह नमाज़ अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वालों की है। घर में दाखिल हो तो घर वालों को सलाम किया करो, इससे घर की बरकत ज़्यादा होती है। बड़ी उम्र वाले मुसलमान की इज़्ज़त करो और छोटों पर शफ़क़त रखो तो तुम जन्नत में मेरे रफ़ीक़ बन जाओगे। इस हदीस में बकसरत (अख़लाकी और समाजी) आदाब को जमा फ़रमा दिया गया है।



## बाब- 4

# घर में दाखिले, कसबे हलाल और खलवते नशीनी इख्तियार करने का बयान

## घर में दाखिला

घर में दाखिल होने से कबूल दरवाजे पर खड़ा हो कर खंकारे और कहे *अस्सलामो अलैना मिन रब्बेना* बाज़ अहादीस में आया है कि जब मोमिन अपने घर से निकलता है तो अल्लाह उसके दरवाजे पर दो फ़रिश्तों को मुकर्रर फ़रमा देता है जो उसके माल और घर वालों की निगहदाश्त करते हैं और शैतान सत्तर सरकश शैतानों को मुकर्रर कर देता है, वापस हो कर जब मोमिन अपने दरवाजे के करीब पहुंचता है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि इलाही अगर यह हलाल कमाई करके लौटा है तू इसको तौफ़िक दे। फिर जब वह खंकारता है तो फ़रिश्ते करीब आ जाते हैं और जब *अस्सलामो अलैना मिन रब्बेना* कहता है तो शैतान रूपोश हो जाते हैं और दोनों फ़रिश्ते आ कर उसके दायें और बायें आकर खड़े होते हैं। जब दरवाजे खोल कर कहता है तो तो शैतान चले जाते हैं और फ़रिश्ते उसके साथ अन्दर दाखिल होते हैं, उसके घर की हर चीज़ संवार देते हैं और उसका दिन आसाईश से गुज़रता है, आराम से बैठता है, फ़रिश्ते उसके सर के ऊपर होते हैं, जो कुछ वह खाता पीता है वह पाक और हलाल होता है, दिन रात जितना अर्सा भी वह घर में रहता है उसकी जान भी पाक रहती है।

अगर कोई मुसलामन इन बातों पर अमल नहीं करता तो फ़रिश्ते वहां से चले जाते हैं और शैतान उस आदमी के साथ घर में घुस जाते हैं और हर चीज़ उसकी नज़र में कबीह बना देते हैं घर वालों की तरफ से ऐसी बातें सुनवाते हैं जो उसको नागवार गुज़रती है यहां तक कि उसके घर वालों के साथ उसके झगड़े शुरू होते हैं, अगर वह बग़ैर बीवी के है तो उस पर औंघ और सुस्ती तारी हो जाती है। मुरदार की तरह सोता है, उठ कर बैठता है तो ग़ैर मुफ़ीद चीज़ों की आरजू करता है। वह ख़बीसुन नफ़स हो जाता है, उसका खाना पीना सोना सब कुछ अपने लिए बिगाड़ लेता है।

## मईशत

कस्ब व मआश के सिलसिले में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख्स सवाल से बचने घर वालों की रोज़ी हासिल करने और हमसाये पर मेहरबानी करने के लिए हलाल देना तलब करता है, कयामत के दिन जब अल्लाह उसको उठायेगा तो उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह (रौशन) होगा। और जो शख्स दूसरों के मुकाबले में अपने दिल को बढ़ाने, फ़ख़र करने और लोगों पर अपना



तमबुल जाहिर करने के लिए माल तलब करता है, कियामत के दिन अल्लाह के सामने जाएगा तो अल्लाह उससे ना खुश होगा।

## गदागरी

हजरत साबित बनानी की रिवायत करते हैं कि आसाईश दस चीजों में है। नौ तो वह हैं जिनका ताल्लुक तलबे मआश से है और एक इबादत से है। हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो अन्हो रावी हैं, सरकार ने फरमाया है कि जो शख्स अपने लिए सवाल का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह उसके लिए मोहताजी का दरवाज़ा खोल देता है और जो सवाल करने से बचता है अल्लाह भी उसे सवाल से बचाता है। जो शख्स लोगों से मुसतगनी हो जाता है। अल्लाह तआला उसको भी गनी कर देता है। अगर तुम में से कोई रस्सी लेकर जंगल को जाकर लकड़ियां जमा करके बाज़ार में ला कर एक मद खजूरों के एवज़ में फरोख्त कर दे तो लोगों के सामने दस्ते सवाल दराज़ करने से बेहतर है कि लोग दें या न दें। एक रिवायत में आया है कि जो शख्स अपने लिए सवाल का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह तआला उसके लिए मोहताजी और फकीरी के सत्तर दरवाज़े खोल देते हैं। एक दूसरी रिवायत में आया है कि हुजूर वाला ने फरमाया कि अयाल्दार कमाने वाले मोमिन को अल्लाह तआला पसन्द फरमाता है और जो तन्दुरुस्त शख्स निकम्मा है, न दुनिया के काम न दीन के काम का, अल्लाह तआला उसको न पसन्द फरमाता है।

रिवायत में आया है कि अल्लाह के खलीफा हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दरखास्त की कि मेरी मआश का ज़रिया मेरे हाथ की कमाई को बना दे। अल्लाह ने उनके हाथ में लोहे को नर्म कर दिया। उनके हाथ में लोहा मोम और गूँधे हुये आटे की तरह हो गया। चुनांचे हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम लोहे की जिरहें बना कर बेचते थे और उनकी कीमत से अपने और अपने अहल व अयाल की रोजी कमाते थे।

हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम के बेटे हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज किया कि परवरदिगार मैंने तुझसे दरखास्त की थी कि मेरे बाद ऐसी हुकूमत किसी और को अता न फरमाई जाये तूने मेरी इस दरखास्त को भी कबूल फरमा लिया इसके बावजूद मैं अगर तेरा पूरा पूरा शुक्र अदा करने से कासिर हूं तू मुझे ऐसा कोई बन्दा बता दे जो मुझसे ज़्यादा तेरा शुक्र अदा करने वाला हो।

अल्लाह तआला ने वही भेजी कि ऐ सुलेमान! मेरा एक बन्दा अपने हाथ से कमा कर अपने पेट पालता है, उसी से अपना बदन ढांकता है और मेरी बन्दगी में लगा रहता है यही वह बन्दा है जो तुझसे ज़्यादा शुक्र गुज़ार है। तब हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने दुआ की कि इलाही! मुझे अपने हाथ से कमाना सीखा दे। पस हजरत जिब्रईल तशरीफ़ लाए और आप को खजूर के पत्तों से टोकरे बनाना सीखाया चुनांचे सबसे पहली जंबील (टोकरी) जिसने बनाई वह हजरत सुलेमान अलैहिस्सलाम थे।

## दीन व दुनिया की दुरुस्ती चार किस्म के लोग से है

एक दानिश मन्द का कौल है कि दीन व दुनिया की दुरुस्ती सिर्फ़ चार किस्म के लोग होती है। 1. आलिम, 2. हाकिम, 3. मुजाहिद, सिपाही और 4. पेशावर। हुक्काम निगरां हैं यानी चरवाहे की मानिन्द हैं। खुदा के बन्दों की निगरानी इस तरह करते हैं जिस तरह चरवाहा अपने रेवड़



की। आलिम पैगम्बरों के वारिस हैं, गुमराहों को आखिरत का रास्ता दिखाते हैं और लोग उनकी अच्छी आदतें इख्तियार करते हैं। मुजाहिद सिपाही (गाजी) ज़मीन पर खुदा का लश्कर है जो काफ़िरों का बेख कुनी करता है। और कस्ब करने वाला अल्लाह की तरफ से मुकर्रर किये हुए अमीन हैं। उन्हीं से मसालेह खल्क की फ़राहमी और ज़मीन की आबादी वाबस्ता है, अगर चरवाहे भेड़िये बन जाएं तो बकरियों का हिफ़ाज़त कौन करे। अगर उल्मा इल्म को छोड़ कर दुनिया में मशगूल हो जाएं तो लोग किसकी पैरवी करें, अगर मुजाहिद फ़ख़्र व गुरुर के लिए सवार हों या लोगों को लूटने की नीयत से सवार हो कर निकलें तो दुश्मन पर फ़तह कैसे पाएं। कस्बे हलाल करने वाले खाइन हो जाएं तो लोग उनको किस तरह अपना अमीन समझें।

अगर ताजिर तीन बातें ना होंगी तो वह दीन व दुनिया दोनों में मोहताज रहेगा। अब्बल यह कि ज़बान को तीन चीज़ों से बचाये, झूट बोलने से, बेहुदा गुप्तगू करने से और झूटी कसम खाने से। दोम ये कि अपनी हमसायों और दोस्तों के सिलसिले में अपने दिल को धोके और हसद से पाक करे। सोम ये कि अपने आपको तीन बातों का आदी बनाये, नमाज़े जुमा और जमाअत का। रात और दिन के किसी हिस्से में इल्म हासिल करने और हर शय पर अल्लाह की रज़ामन्दी को तजवीज़ देना, कस्बे हराम से बचने का।

रिवायत है कि बन्दा जब नापाक कमाई करके उसमें कुछ खाना चाहता है और बिस्मिल्लाह कहता है तो शैतान कहता है जब तूने कमाई की थी तो मैं तेरे साथ था अब तुझसे अलग न हूंगा तेरे साथ शरीक रहूंगा चुनांचे हर हराम खाने वाले के साथ शैतान शरीक रहता है इस इरशादे खुदावन्दी के बमौजिब:

**तर्जमा:**—शैतान को ख़िताब करके फ़रमाया गया तू इंसानों के साथ उनके माल व औलाद में शरीक हो जा।

माल से मुराद हराम माल है और औलाद में शैतान की शिरकत से मुराद वह औलाद जो जिना की औलाद हो। तफ़सीरे आयत में यही सराहत की गई है।

हज़रत इब्न मसऊद रिवायत करते हैं कि जो शख्स कस्बे हराम से माल कमा कर उससे कुछ सदका करता है उसके सबाब के बजाए अज़ाब होता है और जो कुछ उस माल से वह खर्च करता है हरगिज़ बरकत का बाइस नहीं होता है और ऐसे हराम माल से अगर कुछ छोड़ जाता है तो यह उसके लिए दोज़ख का तोशा होता है। हराम माल से वही बचता है जिसको अपने खून और गोश्त के बारे में दोज़ख में जाने का अंदेशा लगा रहता है, आदमी की जीनत गोश्त और खून ही से है इस लिए लाज़िम है कि खुद भी हराम से बचे और घर वालों को भी बचाए और हराम कमाई खाने वालों के पास भी न बैठे न उनका खाना खाए न किसी को हराम कमाई का रास्ता बताए वरना उसको भी उसका शरीक माना जाएगा। परहेज़गारी दीन की असल है, इबादत का क़वाम (राबता) है और आखिरत का काम पूरे होने का ज़रिया है।

## गोशा नशीनी और ख़ामोशी

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गोशा नशीनी के मुताल्लिक़ इरशाद है "गोशा नशीनी इख्तिायार करो" गोशाए तन्हाई में बैठना भी इबादत है, आपने फ़रमाया "मोमिन वह है जो



अपने घर में बैठा रहे"। यह भी इरशाद फरमाया "सबसे अफ़ज़ल आदमी वह है जो गोशागीर हो कर लोगों से अपनी बुराई को रोके रखे (लोग उसकी बुराई से महफूज़ रहे)"। हदीस के बाज़ अल्फ़ाज़ में आया है कि आपने फरमाया मुसाफ़िर वह है जो अपने दीन से भागता है।

हज़रत बिशर हाफ़ी रहमतुल्लाह अलैह जो सोलहाए सल्फ़ में से हैं, फरमाते हैं कि यह ज़माना ख़ामोशी रहने और घर में बैठ रहने का ज़माना है।

जब हज़रत सअद इब्न वकास रज़ियल्लाहो अन्हो अक़ीक़ में अपने घर के अन्दर सबसे अलग हो कर बैठ रहे (निकलना और मिलना जुलना बन्द कर दिया) तो लोगों ने कहा आप ने बाज़ार का जाना, और इजतेमा में शिर्कत करना क्यों छोड़ दिया और आप तन्हाई पसन्द क्यों हो गए? फरमाया मैंने बाज़ार को बेहूदा और लोगों के जलसों को लहव व लईब की जगह पाया, इस लिए मैंने गोशा नशीनी ही में आफ़ियत समझी।

वहब बिन अलवर्द रहमतुल्लाह अलैह का कौल है मैं पचास बरस तक लोगों से मिलता जुलता रहा मगर इतनी मुदत में एक शख्स भी ऐसा नहीं मिला जो मेरा एक कसूर माफ़ कर देता, मेरा एक ऐब छुपाता, गुस्सा की हालत में मुझसे दरगुज़र करता, न कोई ऐसा शख्स नज़र आया जो हिर्स व हवा में मुब्तला न हो (हर शख्स को अपनी ख़्वाहिशात के घोड़े पर सवार पाया)।

शअबी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि एक मुदत तक लोगों का मेल जोल (मुआशरा) दीन के ज़ेरे असर रहा। दीन गया तो मुआशरा शराफ़ते नफ़्स के ज़ेरे असर आ गया, शराफ़ते नफ़्स भी गई तो शर्म व हया के तहत रहा। जब वह भी रुख़सत हो गई तो अब लोग रग़बत और ख़ौफ़ से ज़िन्दगी बसर करते हैं और मेरा ख़्याल है कि इससे ज़्यादा सख़्दा हालात पेश आने वाले हैं।

एक दाना कौल है कि इबादत के दस हिस्से हैं। नौ हिस्से तो ख़ामोशी में हैं और एक गोशा नशीनी में। मैंने ख़ामोश रहने पर नफ़्स को आमादा किया मगर मेरा काबू न चला तो गोशा नशीनी की तरफ़ मायल हो गया तो मुझे वह नौ हिस्से भी मिल गये। उसी दाना का कौल है कि क़ब्र से बड़ा कोई वाएज़ नहीं किताब से ज़्यादा दिल बस्तगी के लिए कोई चीज़ नहीं और तन्हाई (गोशा नशीनी) से ज़्यादा किसी शय में आफ़ियत नहीं।

बिशर बिन हारिस कहते हैं कि इल्म की तलब दुनिया से फ़रार के लिए होती है, दुनिया को तलब करने के लिए नहीं होती।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहा अन्हा फरमाती हैं कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया गया कि किस शख्स की हम नशीनी बेहतर है? फरमाया उस शख्स की जिसके देखने से तुम को खुदा याद आ जाये और उसके इल्म से आख़िरत याद आ जाए और जिस की गुफ़्तगू से तुम्हारे इल्म में इज़ाफ़ा हो।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नसीहत फरमाते हैं! ऐ हवारियो!! अल्लाह से मोहब्बत करना चाहते हो तो गुनेहगारों से नफ़रत करो, उस का कुर्ब चाहते हो तो नाफ़रमानों से दूर रहो, अल्लाह की खुशनूदी उस के दुश्मनों की नाराज़गी है।

अगर मेलजोल के चारा नहीं होता तो उलमा की सोहबत इख़्तियार करो क्योंकि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया है उलमा की हम नशीनी इबादत है यह भी हुज़ूर ने फरमाया है कि आदमी को चाहिए कि अपने दिल को फ़िक्र में जिस्म को सब्र में और आँखों



को गिरया वजारी में मसरूफ रखे कल कि रोजी की फिक्र न करो इस लिए कि यह गुनाह है जो आमाल नामा में लिखा जाता है।

मस्जिदों में चिमटे रहो (मस्जिदों में जाना लाजमी रखो) अल्लाह के घर को आबाद रखने वाले अहलुल्लाह हैं। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मस्जिदों में ज्यादा आमद व रफ्त रखने वाला कभी अपने ऐसे भाई से मुलाकात कर लेता है जिसके गुनाह बख्खो जा चुके होते हैं, कभी वह उस रहमत को पा लेता है जिसका वह मुन्तजिर होता है, कभी हिदायत का रास्ता बताने वाला और हलाकत से बचाने वाला लफ्ज़ उसको मिल जाता है (ऐसी बातें हासिल हो जाती हैं जो हिदायत का रास्ता बताने वाली और हलाकत से बचाने वाली हैं) उमद और अजीब इल्म हासिल होता है, मोहब्बत और खुदा के खौफ का बाइस वह गुनाहों को तर्क कर देता है।

गोशा नशीनी इख्तियार करने वाले के लिए यह हरगिज़ जाइज़ नहीं है कि (वह अपनी गोशा नशीनी के बाइस बा जमाअत नमाज़े जुमा और जमाअत (पन्जगाना) को तर्क कर दे। नमाज़े जुमा को बतौरे दवाम (हमेशा के लिए) तर्क कर देने वाला काफिर है। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया श्री शख्स बिला उज़्र तीन जुमा तर्क कर देता है अल्लाह उस के दिल पर मोहर लगा देता है, हज़रत जाबिर की रिवायत करदा हदीस में है कि हुजूर ने हुज्जतुल विदा के खुतबा में इरशाद फरमाया: जान लो कि इस जगह, इस महीने में, इस साल में अल्लाह तआला ने कियामत के दिन तक के लिए तुम पर जुमा फर्ज़ कर दिया है। लिहाज़ा अगर कोई शख्स इमाम जालिम या आदिल होने के बावजूद नमाज़े जुमा को हकीर समझे या फर्ज़ को इनकार करे या इसको तर्क कर दे तो अल्लाह तआला उसकी परेशानी दूर न करेगा। न ही उसके काम पूरे फरमाएगा। सुन लो! न उस की नमाज़ कबूल होगी और न उसकी जकात अद होगी, न उसका हज़ कबूल होगा, और न रोज़ा ता बक्त्त कि वह तौबा न करे, अल्लाह तआला तौबा करने वालों की तौबा कबूल फरमा लेता है। (मंदरजा बाला सज़ा इस लिए है कि) नमाज़े जुमा का तारिक दावते इलाही की तहकीर व तौहीन करता है इस लिए कि अल्लाह तआला क इरशाद है।

ऐ ईमान वालो! जब तुम को जुमा की नमाज़ के लिए बुलाया जाए तो अल्लाह को याद करने के लिए तेज़ी के साथ बढ़ो।

गोशागरी और ख़वलत नशीनी के सिलसिले में कहा गया है कि लोगों पर तअन न करो और न उनकी जमाअतों को छोड़ो, बस जहाँ तक हो सके उन से कनारा कश हो जाओ इस लिए लाज़िम है कि जहाँ तक मुमकिन हो सके लोगों से अलग थलग रहने की कोशिश करे, क्यों कि झूठी बात दो आदमियों ही के दर्मियान होती है (एक कहता है दूसरा सुनता है) जिना भी दो के मिलने से होता है इसी तरह कत्ल भी दो के बग़ैर नहीं होता (एक कातिल दूसरा मकतूल) रहज़नी भी दो आदमियों के दर्मियान वाक़ेअ होती है (एक राहगीर दूसरा राहज़न) बस सबसे अलग थलग और तनहाई इख्तियार करने में सलामती है अलबत्ता दीनी मआमलात में अगर कोई तआवुन को तो गोशागरी और तनहाई मुनासिब नहीं।



# आदाबे सफ़र व रिफ़ाक़ते सफ़र

## सफ़र का इरादा

किसी सफ़र का इरादा हो या कोई शख्स, हज, जिहाद या किसी काम की गरज़ से एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए इरादा करे तो सफ़र शुरू करने से पहले दो रिक़अत नमाज़ पढ़ कर यह दुआ पढ़े।

**तर्जमा:**—इलाही ! मुझे अपनी रज़ा, मग़फ़िरत और भलाई की जगह पहुंचा दे, तेरे ही दस्ते कुदरत में ख़ैर है तू ही हर चीज़ पर कादिर है, इलाही! तू सफ़र में मेरा साथी है। मेरे जाने के बाद मेरे अहल व अयाल और माल का तू ही निगहबान है। ऐ अल्लाह हमारे लिए सफ़र को असान कर दे, इलाही! सफ़र की दुशवारी और वापसी की बदहाली से मैं तेरी पनाह चाहता हूँ, और इस बात से भी पनाह चाहता हूँ कि अहल व अयाल और माल की कोई नागवार हालत का मुशाहिदा करूं।

सफ़र का इरादा पंज शंबा, हफ़ता या दो शंबा के रोज़ सुबह के वक़्त करे जब सवारी पर ठीक तरह से बैठ जाये तो कहे।

**तर्जमा:**—पाक है वह ज़ात जिसने इस सवारी को हमारा मुतीअ बनाया हम में इसको काबू रखने की ताक़त नहीं थी और बिलाशुबा हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं।

सफ़र से वापस आए तो दो रिक़अत नफ़ल नमाज़ पढ़ कर यह दुआ माँगे।

**तर्जमा:**—हम अल्लाह की तरफ़ लौटने वाले, तौबा करने वाले, उसकी इबादत करने वाले और उसके सना ख़्वाह हैं।

रिवायत में आया है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसा ही करते थे, सफ़र में अगर कोई दूसरा अमीरे जमाअत (अमीरे कारवाँ) न हो तो खुद उनका अमीर या राहबर न बने न किसी जगह क़याम (पड़ाव) करने का मशवरा दे, अगर कोई शख्स रास्ता जानने वाला सफ़र में साथ हो तो उसकी पैरवी करे। सफ़र में ख़ामोश रहे, साथियों रिफ़ाक़त अच्छी तरह करे और उनको ख़ूब फ़ाइदा पहुंचाये। बेकार बातों से गुरेज़ करे, रास्ता पर और ग़मनाक जगह पर पड़ाव न करे, क्योंकि ऐसी जगह साँपों और दरिन्दों की गुज़रगाह होती है, ऐसे मक़ामात से हट कर उतरे, रात के आखिरी हिस्से में रास्ते में न ठेहरे कि यह अम्र भी मकरूह है। सफ़र में ना पसंदीदा तरीक़ेकार इख़तियार न करे ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को तर्क कर के रज़ाए इलाही का तालिब रहना चाहिए।

शहर से निकलने और सफ़र पर जाने का जब इरादा हो तो सबसे पहले ज़रूरी है कि जिन लोगों से ताल्लुकात ख़राब हैं उनको राज़ी करे वालिदैन् और अपने दूसरे बुजुर्ग अजीज़ों की रज़ामन्दी हासिल करे, अहल व अयाल को साथ ले जाए या किसी ऐसे शख्स को मुक़र्रर कर के जाए जो (ग़ैर हाज़री में) सारे उमूर अंजाम दे सके।

मुसाफ़िर का सफ़र अगर सफ़रे ताअत हो ज़्यादा मुनासिब है, जैसे हज या रौज़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ियारत या किसी बुजुर्ग की मुलाक़त या मक़ामाते मुक़द्दसा में से किसी की ज़ियारत, या मुबाह उमूर के लिए जैसे तिज़ारत, तहसीले इल्म वग़ैरह। मगर यह



सफ़र इबादाते पंजगाना के मसाइल सीखने के बाद होना चाहिए। क्योंकि इबादात का इल्म फ़र्ज है, इसके अलावा दूसरा इल्म मुबाह है बाज़ इसको फ़र्ज कफ़ाय़ा कहते हैं।

सफ़र में रफ़ीक़ाने सफ़र के साथ खुश ख़लकी और नर्मी का बरताव करे किसी की मुख़ालफ़त न करे, अपने रफ़ीकों की ख़िदमत करता रहे और बग़ैर मजबूरी के किसी से ख़िदमत न ले। सफ़र में हर वक़्त पाक रहे, आदाबे रिफ़ाक़त में यह भी कि अगर साथी थक जाए तो ख़ुद भी ठहर जाए, प्यासा हो तो पानी पिलाए अगर (रफ़ीके सफ़र) सख़्ती के साथ पेश आए तो उसके साथ नर्मी का बरताव करे, वह नाराज़ हो तो उसको मनाये अगर वह सोता हो तो उसकी ओर उसके सामान की हिफ़ाज़त करे अगर उसके पास ज़ादेराह कम हो तो उसको अपनी जात पर मुक़द्दम रखे, अगर माली कशाईश हासिल हो तो तन्हा ही न ले ले उसकी हमदर्दी भी करे, उससे कोई राज़ न छुपाए और न उसका राज़ फ़ाश करे, उसकी ग़ैबत में भलाई के साथ उसका तज़क़िरा करे, उसकी ग़ैबत रद कर दे, न किसी से उसकी शिकायत करे बल्कि अच्छे अलफ़ाज़ में उसका ज़िक़्र करे। वह मशवरा तलब करे तो ख़ैर ख़्वाही के साथ मशवरा दे अगर रफ़ीके सफ़र मरतबा में उससे बड़ा है तब भी उसकी भलाई के लिए उसको नसीहत करने से गुरेज़ न करे उसका नाम व निसबत और वतन दरयाफ़्त कर ले।

अगरचे खुद सब रफ़ीको के सरदार हो मगर सबसे यही जाहिर करे मैं ताबेअ और फ़रमांबरदार हूँ जो लोग उसके ताबेअ हों, अज़ रूए ख़ैर ख़्वाही उनको उनके औयूब से वाकिफ़ कर दे, मलामत और सख़्ती का रवय्या इख़तियार न करे, अगर किसी चीज़ का डर हो या किसी जगह पड़ाव करे ता यह दुआ पढ़े।

## मंज़िल पर ठहरने की दुआ

मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ और उसके उन पूरे कलमात (कलाम) की पनाह लेता हूँ जिनके दायरे से न कोई नेक बाहर निकल सकता है और न कोई बंद और उसके तमाम छुपे नामों की पनाह लेता हूँ ख़्वाह वह मुझे मालूम हों या न हों, उन तमाम चीज़ों के शर से जो अल्लाह ने पैदा कीं, बिखेरीं और ईजाद कीं। और उन चीज़ों के शर से जो ऊपर से उतरती हैं और जो आसमान पर चढ़ती हैं और हर उस चीज़ की शरारत से जो उसने ज़मीन पर फैलाई हैं और रोज़ व शब की मुसीबतों से और शबाना रोज़ के हवादिस से, उन हवादिस के सिवा जो ऐ अरहमुर राहेमीन तेरी तरफ़ से ख़ैर लेकर आयें और हर उस जानवर के शर से जो पूरे तौर पर अल्लाह के कब्ज़े में है, यकीनन मेरा रब ही सीधा रास्ता है।

## सवारी के जानवरों के गले में घंटियाँ

सवारियों (ऊटों) की गरदनो पर घंटियाँ न बाँधे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर घंटी (जरस) के साथ शैतान होता है। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद भी है कि उन मुसाफ़िरो के साथ फ़रिश्ते नहीं रहते जिनके साथ (ऊटों के गले में) घंटियाँ हों। मुसतहब है कि सफ़र में अपने साथ लाठी रखे और कोशिश करे कि किसी वक़्त इस से ख़ाली न हो। मैमून बिन मेहरान ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि असा साथ रखना अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत और मुसलमानों की आदत है।

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि असा में छः खूबियाँ हैं। (1) अम्बिया



अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत है, नेक लोगों की रविश, मूजी जानवरों (साँप बिच्छू वगैरह) के मुकाबला के लिए हथियार है, कमजोर का सहारा है, मुनाफिकों को जलील करने वाला है, नेकियों में इजाफा का सबब है, कहते हैं, जिस मोमिन के पास लाठी होती है उससे शैतान भागता है, मुनाफिक और बदकार उससे डरता है, नमाज का वक्त वह किब्ला का काम देती है (नमाजी लाठी को सामने रख लेता है और) वह सुतरा बन जाती है, थक जाता है तो उससे सहारा लेता है और अपनी ताकत बहाल करता है इसी तरह लाठी (असा) के और बहुत फायदे हैं। अल्लाह तआला ने हजरत मूसा अलेहिस्सलाम के किस्से में बयान फरमाया है।

**तर्जमा:**—और यह मेरी लाठी है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ और अपनी बकरियों के लिए दरख्तों से पत्ते (इससे) झाड़ता हूँ, इससे मेरी और जरूरतें भी वाबस्ता हैं।

## जानवरों और गुलाम को खस्सी करना

### जानवरों और गुलाम को खस्सी करने की मुमानिअत

किसी जानवर या गुलाम को खस्सी करना जाएज नहीं है, हरब और अबूतालिब की रिवायत में इमाम अहमद ने यही तसरीह फरमाई है, इसी तरह जानवर के चेहरे को दागना भी नाजाएज है। अबू तालिब ने इमाम अहमद का यही कौल नकल किया है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि किसी जानवर, चौपाया को खस्सी न करो। हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहो अन्हो और अन्नस बिन मालिक रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जरूरत के लिए कानों को दागने की इजाजत मरहमत फरमाई है। और चेहरे पर दाग लगाने की मुमानिअत फरमाई है। अगर दूसरे जानवरों में शिनाख्त की जरूरत हो (यानी गल्ले में अपना जानवर पहचानने के लिए) तो चेहरे के अलावा किसी और उज्व मसलन रान या कोहान को दाग देना जाएज है।

## आदाबे मसाजिद

### मस्जिदों में काम करने के मसाएल

मसाजिद में कोई नापाक और पलीद काम करना जाएज नहीं दूसरे काम मसलन कपड़ा सीना, बेचना, खरीदना और इसी तरह दूसरे काम भी मस्जिदों में करना मकरूह हैं, जिक्रे खुदा के अलावा किसी किस्म की आवाज बलन्द करना भी मकरूह है। मस्जिद में थूकना मकरूह है। इसका तदारुक इस तरह करे कि थूक पर मिट्टी डाल दे, मस्जिद को नक्श व निगार से मुजय्यन करना भी मकरूह है। पक्का पलास्तर और कहगुल करने में कोई हरज नहीं है। मुसाफिर या मोअतकिफ के सिवा मस्जिद को शबबाशी की जगह बनाना मकरूह है रसूलुल्लाह मुताबिक कबीला सकीफ के नुमाइंदों को मस्जिद में ठहराया था मसाजिद में ऐसे अशआर और कसीदे से पढ़े जा सकते हैं जो बेहूदगी और मुसलमानों की हिज्व से खाली हों यों शेअर ख्वानी से मस्जिदों को मसऊन व महफूज रखना औला है अलबत्ता ऐसे अशआर पढ़े जा सकते हैं जो



जुहद की तरफ माएल करने वाले दिलों को गुदाज और शौक (मोहब्बत) को बढ़ाने वाले और खौफे खुदा से रूलाने वाले हों ऐसे अशआर अगर बार बार पढ़े जायें जब भी जाएज है लेकिन इन सब से बेहतर और अफजल यह है कि कुरआन की तिलावत और तसबीह व तहलील की जाए क्योंकि मस्जिदों की बिना ही जिक्रे इलाही और नमाज के लिए हुआ करती है लिहाजा मुनासिब यही है कि इसके अलावा और कोई काम मस्जिदों में न किया जाए मस्जिद की जमीन से मिट्टी निकाल कर मुन्तकिल करना भी मकरूह है हां मस्जिदों का कूड़ा करकट साफ करना और झाड़न बाहर निकाल कर फेंक देना जाएज है और इस काम का बड़ा सवाब है आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मस्जिद का कूड़ा करकट साफ करना हूरो का महर है बच्चों और दीवानों को मस्जिदों में ना जाने दिया जाये उनका जाना मकरूह है। हां जुन्बी जनाबत वाला शख्स अगर मस्जिद से गुजर जाये तो कुछ कबाहत नहीं है अगर अगर ऐसी हालत में मस्जिद के अन्दर दाखिल होना पड़े तो वुजू करके दाखिल हो।

मस्जिद में जाएजा औरत को दाखिल से रोक दिया जाये कि इस सूरत में मस्जिद का नजासत से आलूदा हो जाने का अंदेशा है बवक्ते जरूरत जनाबत वाले के लिए वुजू करके मस्जिद के अन्दर इतनी देर ठहरना जाएज है कि वह गुस्ल कर सके मगर बेहतर यह है कि वुजू के साथ जनाबत के लिए तयम्मुम करे अगर मस्जिद के कुएं में पानी न मिले तो कुएं तक पहुंचने के लिए तयम्मुम करके मस्जिद में से गुजरना जाएज है जब कुएं तक पहुंच जाये तो गुस्ल करे।

## अशआर ख़ानी और कुरआन ख़ानी

### अशआर

अशआर दो किस्म के होते हैं मुबाह और ममनूअ, जिन अशआर में कोई बेहूदगी न हो उनका पढ़ना जायज है और बेहूदा (बा एतबारे अल्फाज व मौजू) अशआर का पढ़ना ना जायज है जिन अशआर में लहव व लईब की आमेजिश हो (बा एतबारे मौजू) उनका पढ़ना बहरहाल ममनूअ है जिन अशआर में हिमाकत की बातें हों या उन में सुबकी (रकाकत) भरी हो ऐसे अशआर भी पढ़ना दुरुस्त नहीं है।

### तरतील कुरआन

कुरआने पाक के ताजीम व तकदीस के पेशे नज़र इसको गवैयाँ की तरह गाकर पढ़ना मकरूह है, इसकी कराहत की वजह यह है कि गाकर पढ़ने से कलाम अपनी असली हालत से तजावुज हो जाता है यानी मद और हमजा साकित हो जाते हैं। जिन हुरुफ को लम्बा करके पढ़ना होता है गाने के तर्ज पर वह मुख़्तसर हो जाते हैं और जिन्हें मुख़्तसर करना होता है वह तवील हो जाते हैं अक्सर हुरुफ मदगम हो जाते हैं।

कराहत की एक वजह यह भी है कि कुरआन पाक पढ़ने का असले मकसद तो यह है कि इससे खौफे खुदा पैदा हो नसीहत की बातें सुन कर सामेअ को ना फरमानी से डर लगे, कुरआनी दलाएल व बराहीन, किसस और अमसाल सुनकर इबरत हासिल हो। अल्लाह तआला के उन वादों का जो कुरआन में किये गये हैं उम्मीदवार बने यह तमाम फवाएद गाकर पढ़ने में खत्म हों



जाते हैं अल्लाह तआला का इरशाद है:

**तर्जमा:**—मोमिन वही हैं कि अल्लाह के याद के वक्त उनके दिल डर जाते हैं जब अल्लाह का कलाम उनके सामने पढ़ा जाता है तो यह तिलावत उनके ईमान में इजाफा का सबब बन जाती है और वह अपने रब पर ही भरोसा करते हैं। दूसरी जगह इरशाद है:

**तर्जमा:**—यह लोग कुरआन पर गौर क्यों नहीं करते

इस सिलसिले की एक और आयत है

**तर्जमा:**—जो लोग इस कलाम को सुनते हैं जो रसूल पर उतारा गया है तो तुमको नजर आयेगा कि हक को पहचान लेने की वजह से उनकी आंखों से आसू जारी होंगे (वह रोते होंगे)

चूँकि तफरीही नगमें इन चीजों के हुसूल से मानेअ होते हैं उस लिए मकरूह है।

## कुरआन की एहतियात

काफिरों से जंग के लिए निकला हो तो इसको साथ न रखे इस लिए कि अगर वह काफिरों के हाथ लग जायेगा तो वह इसकी बे हुरमती करेंगे। अगर कोई ना वाकिफ जवान औरत कुरआन पढ़ रही हो तो उसकी तरफ कान न लगाये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर नमाज़ में नमाज़ी को कोई हादसा पेश आ जाये तो मर्द सुब्हानल्लाह कहे और औरत ताली बजा दे (आवाज़ न निकाले कि इस सूरत में अजनबी आवाज़ मर्द के कान में पड़ेगी) जबकि नमाज़ के लिए यह हुक्म है तो ऐसे अशआर और ऐसी बातें जिन में आशकी व माशूकी के तज़करे हो और मोहब्बत के रमज़ व किनाये हो जिससे लोगों की तबीयत बर अंगेख़्ता होती हो इस लिए उसका सुनना किसी के लिए जाएज़ नहीं।

## मुहर्रिक जज़बाते अशआर

अगर कोई शख्स कहे कि मैं ऐसे अशआर सुनकर उनको ऐसे मानी पर महमूल करता हूँ जिसमें मैं इन्दल्लाह गुनाह से महफूज़ रहता हूँ तो हम इस बात को सही नहीं मानेंगे। शरीयत ने हुरमत की कोई तफरीक नहीं की है (जो चीज़ हराम है बस वह हर सूरत में हराम है) अगर किसी के लिए जाएज़ होता तो अंबिया अलैहमुस्सलाम के लिए जाएज़ होता अगर यह उज़्र सही होता तो अगर कोई शख्स यह दावा करे कि मुगन्निया के गाने सुनने से मेरे अन्दर शहवानी जोश पैदा नहीं होता तो क्या उसके लिए रंडियों का गाना सुनना मुबाह हो जायेगा कोई शख्स यह दावा करे कि उसे शराब पीने से नशा नहीं होता तो क्या उसके लिए शराब पीना उसके लिए हलाल हो जायेगा। अगर कोई यह भी कहे कि मेरी आदत ही यह है कि शराब पीने के बाद मैं हराम से रूक जाता हूँ तब भी उसके लिए शराब पीना हलाल नहीं हो सकता या अगर कोई शख्स कहे कि अमरदों, नौ खेज़ लड़कों और औरतों को इस लिए देखता हूँ और उनसे उस लिए खलवत करता हूँ (तन्हाई में मिलता जुलता हूँ) कि मैं उनके हुस्न से सबक हासिल करता हूँ तब भी यही कहा जायेगा कि ऐसा कहना जाएज़ नहीं बल्कि इसका तर्क वाजिब है। इबरत तो ऐसी चीज़ों से भी बहुत कुछ हासिल की जा सकती है। जो हराम नहीं है हकीकत में यह उन लोगों का है जो हराम का इरतिकाब करना चाहते हैं और अपने नफ़्स के मुतीअ हैं हम ऐसे लोगो की बात कबूल नहीं कर सकते और न उनकी तरफ इलतेफ़ात कर सकते हैं। अल्लाह तआला



का इरशाद है—

**तर्जमा:**—अहले ईमान से कह दीजिए कि अपनी आंखों को बन्द रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफजत करें यह उनके लिए पाकीजा तरीन फेअल है।

पस जो शख्स कहे कि ना महरम को देखना पाकीजा अमल है वह कुरआन को झुठलाता है।

## किस जानवर को मारना जायज है

### और किस को नाजायज

#### सांप का मारना

घर के अन्दर अगर सांप दिखाई दे तो तीन बार उसको खबरदार कर दे अगर उसके बाद भी वह सामने आये तो मार डाले। जंगल में बगैर खबरदार किये मार डालना जायज है अगर ऐसा सांप नजर आ जाये जिसकी दुम इतनी छोटी है कि वह कटी हुई नजर आये या उसकी पुश्त पर दो सियाह खत हो या जैसा कि लोगों में मशहूर है उसकी आंखों में सियाह बाल भी नजर आये ऐसे सांप (या सांपों) को बगैर ऐलान के हलाक कर दे।

खबरदार करने के मानी यह हैं कि उससे कहे कि जान ले कर चला जा हम को आजार न दे। हदीस शरीफ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से घरैलू सांपों की बाबत दरयाफ्त किया गया आप ने इरशाद फरमाया जब तुम अपने घर में सांप देखो तो उससे कहो

मैं तुम्हें उस कौल कि कसम देता हूँ जो पैगम्बर खुदा हजरत नूह अलैहिस्सलाम ने तुम से लिया था और उस अहद की कसम देता हूँ जो हजरत सुलैमान ने तुम से लिया था कि तुम यहां से चले जाओ और हमें आजार न पहुंचाओ।

अगर वह न जाए तो फिर उनको मार डाले इब्ने मसऊद रजियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो सांप नजर आए उसे मार डालो और जो शख्स सांप के मारने से इस लिए डरता है कि वह उसके दुश्मन हो जाएंगे तो ऐसा शख्स मेरी उम्मत में से नहीं है।

हजरत सालिम बिन अब्दुल्लाह रिवाएत करते हैं कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया “सांपों को मार दो” दो खत वाला सांप और कटी दुम (छोटी दुम) का सांप यह दोनों अंधा कर देते हैं और हमल को भी गिरा देते हैं रावी कहते हैं कि हजरत अब्दुल्लाह जिस सांप को भी देख लेते थे उसे मार डालते थे चुनांचे हजरत अबु लबाबा ने उन को इस हाल में देखा कि वह एक सांप की घात में बैठे थे उन्होंने कहा कि हुजूर ने घरों में रहने वाले सांपों को मारने से मना फरमाया है और बतौरे दलील अबू साएब की यह रिवायत पेश की कि एक दफा मैं अबू सईद के पास गया हम तख्त पर बैठे थे कि के नीचे कोई शय हरकत करती हुई महसूस हुई देखा तो सांप था मैं ने कहा मैं उसे मार डालना चाहता हूँ हजरत अबूसईद ने अपने घर के सामने वाली कोठरी की तरफ इशारा करते हुए फरमाया यहां मेरा चचा जाद भाई रहता था नई नई शदी हुई



थी जंग एहजाब के दिन उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से घर आने की इजाजत मांगी हुजूर ने उसको इजाजत मरहमत फरमा दी और हुक्म दिया कि हथियार साथ ले कर जाए वह घर पहुंचा तो बीवी को दरवाजा पर खड़ा पाया मेरे भतीजे ने यह देख कर बीवी की तरफ नीजा सीधा किया (ताकि उसे मार डाले) उस की बीवी ने कहा कि जल्दी न करो पहले अन्दर जाकर देख लो (कि मेरे बाहर की आने की क्या वजह है) वह कोठरी के अन्दर गया तो बड़ा हैबत नाक सांप वहां मौजूद था उसने नेजे से उसको छेंद लिया और नेजे में चुभा हुआ फड़कता हुआ सांप लेकर बाहर निकला लेकिन खुद भी फौरन गिर कर मर गया। हज़रत अबू सईद कहते हैं कि मैं यह नहीं कह सकता कि पहले कौन मरा। सांप या मेरा इब्ने अम्म उसके कबीले के लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज किया अल्लाह से दुआ फरमाइये कि वह हमारे आदमी को वापस कर दे हुजूर ने इरशाद फरमाया कि तुम सांप मारने वाले के लिए मगफिरत की दुआ मांगो फिर फरमाया मदीना में जिन्नों की एक जमाअत ईमान लाई है उन्हें तुम सांपों की शकल में देखोगे जब देखो तो तीन मरतबा उनको मुतनब्बेह करो, तंबीह के बाद भी अगर वह सामना करे तो मार डालो। बाज़ अहादीस में यह अल्फाज़ आए हैं कि उस को तीन मरतबा खबरदार कर दो फिर भी सामने आये तो उसको मार डालो वह शैतान है।

## गिरगिट का मारना

गरगिट का हलाक कर देना भी जाएज़ है। आमिर बिन सईद ने अपने वालिद का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गिरगिट को मार डालने का हुक्म दिया था।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि हुजूर ने फरमाया पहली ज़र्ब में मार डालने वाले के लिए सत्तर नेकीयां हैं।

## चींटी का मारना

चींटियां जब तक आज़ार ना पहुंचायें उनको मारना मकरूह है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी चींटी ने एक पैगम्बर के काट लिया पैगम्बर ने चींटियों का बिल जला देने का हुक्म दे दिया हुक्म के ब मौजिब चींटियों का बिल जला दिया गया अल्लाह तआला ने उन पर वही नाजिल की कि एक चींटी ने तुम्हारे काटा था मगर तुम ने अल्लाह की तसबीह करने वाली पूरी उम्मत को हलाक कर दिया।

## मेंढक का मारना

मेंढक (ज़ग़दअ) का मारना भी मारना मकरूह है हज़रत अब्दुर्रहमान बिन उसमान से रिवायत है कि किसी शख्स ने दवा के लिए मेंढक को मार डालने के बारे में हुजूर से दरयाफ़्त किया आप ने फरमाया मेंढक को मत मारो और जिन जानवरों को मार डालना जाएज़ है उन को आग में न जलाओ मसलन जूं, पिस्सू, मच्छर चींटियां। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि किसी जानवर को आग का अज़ाब न दिया जाए कि आग का अज़ाब सिवाये आग



के खालिक के और कोई नहीं दे सकता।

## मूजी जानवर

जो जानवर खिलकतन मूजी हैं ख्वाह उससे इजा पहुंची हो या न पहुंची हो मगर उस को मार डालना जाएज है क्योंकि अजीयत पहुंचाना उसकी फितरत है जैसे सांप (इसके बारे में पहले बयान किया जा चुका है) बिच्छू, काटने वाला कुत्ता, चूहा वगैरह। बहुत ज्यादा काले कुत्ते का भी यही हुक्म है इस लिए कि वह शैतान है।

प्यासे जानवर को पानी पिलाना सवाब है बशर्ते कि वह मूजी न हो। रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया है हर सोखता जिगर को पानी पिलाने का सवाब है बशर्ते कि वह मूजी जानवर न हो। मूजी जानवर को पानी पिलाने से उसकी शरारत और ईजा रसानी में और इजाफा होगा।

## कुत्ता

शिकार, खेती या चौपाओं की हिफाजत के लिए अगर कुत्ता पाला जाए तो जाएज है वरना नहीं। काटने वाले कुत्ते को आजाद छोड़ रखना मकरूह है लोगों को जरूर से बचाने के लिए काटने वाले कुत्ते को मार डालना जाएज है बाज रिवायत में आया है कि शिकार और चौपाओं की हिफाजत के सिवा जिसने कुत्ता पाल रखा है उसकी नेकियों के सवाब से रोजाना दो कीरात की कमी हो जाती है।

## जानवरों पर बोझ लादना

जानवरों पर उनकी बरदाश्त से ज्यादा बार डालना जाएज नहीं है ख्वाह वह जानवर जमीन जोतने का हो या बोझ ढोने या सवारी का। अगर जानवर को बकदरे किफायत चारा न देगा तो गुनहगार होगा जानवर को उनकी ख्वाहिश से ज़ियादा खिलाना भी मकरूह है जैसा कि बाज लोग मोटा करने के लिए उनको ऐसी खूराक देते हैं।

## पछने लगाना, सिंगी लगाना

पछने लगाने का पैसा एख्तियार करना और इसकी रोजी खाना मकरूह है इस लिए कि यह सिफला पन है। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही इरशाद है पछने लगाने वाली की कमाई पलीद है। हमारे बाज असहाब ने (उलमाए हंबली) ने इस को हराम करार दिया है क्योंकि इमाम अहमद हंबल से यही मरवी है

# हुक्के वालिदैन

## मां बाप के हुक्क

मां बाप के साथ हुसने सलूक (भलाई) से पेश आना वाजिब है अल्लाह अज्ज द जल्ल का इरशाद है:

तर्जमा:—अगर तेरी ज़िन्दगी में वालिदैन में से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जायें तो उनको उफ भी न कह और कोई झिड़की की बात न कर, उनसे बात करते वक्त नरमी एख्तियार कर।



एक और जगह इरशाद हुआ है: **तर्जमा:**—और दुनिया में उन दोनों का अच्छा साथ दो।  
 एक और जगह इरशाद है: **तर्जमा:**—मेरा और अपने वालिदैन का शुक्र अदा कर और तुझे मेरी ही तरफ लौट कर आना है।

हजरत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि अगर कोई शख्स मां बाप को रात भर नाराज रखे यहां तक कि सुबह हो जाए तो उसके लिए दोजख के दरवाजे खोल दिये जाते हैं और सुबह से शाम तक मां बाप को नाराज रखे उसके लिए भी दोजख के दो दरवाजे खोल दिये जाते हैं अगर मां बाप में किसी एक को नाराज करे तो उसके लिए दोजख का एक दरवाजा खोल दिया जाता है ख्वाह उस नाराजगी में ज्यादाती मां बाप ही की तरफ से क्यों न हो।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह की रजामंदी मां बाप की रजामंदी में है और अल्लाह की नाराजगी मां बाप नाराजगी में है। यह भी हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर से मरवी है कि एक शख्स ने रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत गिरामी में हाजिर हो कर अर्ज किया मैं जिहाद का इरादा रखता हूं हुजूर ने इरशाद फरमाया क्या तेरे वालिदैन हैं? उसने जवाब दिया हां आप ने फरमाया उन्हीं की खिदमत में जिहाद है। वालिदैन के साथ भलाई करने की सूरत यह है कि उनकी जरूरतों को पूरा करे उन्हें तकलीफ न पहुंचने दे, वालिदैन के साथ बच्चों जैसी नरमी और मोहब्बत की बातें करे, उन की खिदमत करने में कोताही न करे, वालिदैन से खिचकर न रहे सच्चे दिल और मोहब्बत से उनकी खिदमत करे, उनकी तरफ से दुख बर्दाश्त करे उनकी आवाज से अपनी आवाज ऊंची न करे। शरई मुखालफत न हो तो किसी काम में उनकी मुखालफत न करे। अगर वह किसी ऐसे काम के लिए कहें (जो खिलाफे शरअ हो) तो उस हुक्म को न माने जैसे हज नमाज, जकात, कफ़ारा और अल्लाह तआला की नज़र वगैरह तर्क करने का हुक्म न माने अगर वालिदैन के हुक्म से किसी हराम काम का इस्तेकाब होता हो जैसे ज़िना, शराब नोशी, कत्ले ज़िना की तोहमत लगाना नाजाएज माल लेना यानी चोरी और डाका वगैरह तो इस हुक्म की इताअत न करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि इन बातों या कामों में मखलूक की ताबेदारी न करो जो खालिफ़ की नाराजगी का बाइस हैं और अल्लाह तआला का इरशाद है:

**तर्जमा:**—और अगर तेरे वालिदैन तुझे इस लिए तकलीफ़ में डालें कि तू उस चीज़ को खुदा का शरीक करार दे जिस का तुझे इल्म ही नहीं तो तू उनका कहना न मान, हां दुनिया में उनका सिर्फ़ नेकी में साथ दे।

मन्दरजा हदीस और इरशादाते रब्बानी से मालूम होता है कि जो भी अल्लाह की ना फरमानी या अल्लाह की इताअत तर्क करने का हुक्म दे उसकी बात न मानी जाए। इमाम अहमद, अबू तालिब से रिवायत करते हैं कि एक शख्स को उसके वालिदैन नमाजे बा जमाअत में शिरकत से मना किया करते थे तो आंहरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस शख्स से फ़राएज को तर्क करने के बारे में मां बाप के हुक्म की इताअत मत करो।

### इताअते वालिदैन के मजीद अहकाम

वालिदैन की फरमांबरदारी के लिए नफ़लों को तर्क किया जा सकता है और यह अफ़ज़ल है।



वालिदैन के साथ भलाई की एक सूरत यह भी है कि वालिदैन ने जिन लोगों से मिलना जुलना छोड़ दिया उनसे खुद भी तर्क ताल्लुक करे और जिन लोगों से वालिदैन के ताल्लुकात हों उनसे खुद भी ताल्लुक रखे। वालिदैन के मामले में मुखालिफों पर ऐसा ही गुस्सा करे जैसा अपनी जात के लिए करता है। अगर वालिदैन की किसी बात पर गुस्सा आये तो उस वक्त वालिदैन की उन तकालीफ, उनके ईसार कुरबानी और खुलुस व मोहब्बत को याद करो जो उन्होंने तुम्हारी परवरिश के दौरान की हैं और उस वक्त अल्लाह के उस फरमान को भी याद करो "वालिदैन के साथ इज्जत के साथ बात करो" अगर वालिदैन की शफकत की याद भी गुस्सा को फुरु न कर सके तो समझ ले कि वह बद नसीब है और अल्लाह की नाराज़गी में गिरफ़्तार है।

अगर तुमने अल्लाह तआला के हुक्म के खिलाफ मां बाप के साथ कोई सुलूक किया है तो गुस्सा फुरु हो जाने के बाद अल्लाह तआला से इसकी माफी चाहो और तौबा करो।

अगर किसी ऐसे सफ़र पर चाहो जो तुम पर वाजिब नहीं है तो वालिदैन की रज़ामन्दी के बग़ैर मत जाओ। मां बाप की रज़ामन्दी के बग़ैर जिहाद पर भी न जाओ, वालिदैन को कोई दुख न पहुंचाओ इस का ख़्याल रखो कि तुम्हारी वजह से तुम्हारे वालिदैन को कोई शख्स आज़ार पहुंचाने का बाइस न बने।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस शख्स पर लानत की है जो मां और बच्चे में जुदाई का बाइस हो अगर कहीं से खाने पीने की चीज़ें लाओ तो सबसे अच्छा खाना मां बाप को दो क्योंकि वह भी (तुम्हारी खातिर) अक्सर भूके रहे हैं और तुम को अपने ऊपर तरजीह दी है और तुम्हारा पेट भरा है खुद बेदार रहे हैं और तुम को सुलाया है।

## मुआशरत की मुतफ़रिक् बातें

### मुस्तहब और मकरूह नाम और कुनियत

किसी मौलूद बच्चे का नाम मअ कुनियत वह रखना जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस्मे मुबारक मअ कुनियत था मकरूह है लेकिन अगर सिर्फ़ मोहम्मद या अबुल कासिम रख लिया जाए तो मकरूह नहीं है। इमाम अहमद के इस बारे में दो कौल मरवी हैं एक तो ब सूरते जवाज़ मौजूद है और दूसरी रिवायत ब सूरते अदमे जवाज़ मंकूल है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम मुबारक रख लेना और कुनियत न रखना हज़रत अबू हुरैरा और अनस की रिवायतों से साबित है कि हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरा नाम रख लिया करो मेरी कुनियत न रखा करो।

नाम मअ कुनियत रखने का जवाज़ हज़रत आएशा रज़ियल्लाहो अन्हा की रिवायत से साबित होता है कि एक औरत ने खिदमते वाला में हाज़िर हो कर अर्ज किया या रसूलुल्लाह मेरे एक लड़का पैदा हुआ है मैंने उस का नाम मोहम्मद और कुनियत अबुल कासिम मुकर्रर की है, मुझे बताया गया है कि हुजूर वाला को यह बात पसन्द नहीं है हुजूर ने इरशाद फ़रमाया वह कौन सी चीज़ है जिस ने मेरे नाम को हलाल और मेरी कुनियत को हराम किया है और कौन सी चीज़ है जिस ने मेरी कुनियत को हलाल और मेरे नाम को हराम किया है (यानी मेरी कुनियत के



गुनियतुत्तालिबीन

जवाज़ और नाम के अदमे जवाज़ का मौजिब क्या है)

अबू यहया और अबू ईसा के साथ कुन्नियत रखना मकरूह है अपने गुलाम का नाम अफ़लह, नजाह, यसार, नाफ़ेअ, रेबाह और कनीज़ के नाम बरकह, बर्रह, हिज़्न और आसिया रखना मकरूह है। हजरत उमर फ़ारूक़ से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस ने फ़रमाया अगर मैं जिन्दा रहा तो गुलामों के नाम यसार, बरकत रेबाह, नजाह या अफ़लह रखने की मुमानीअत कर दूंगा।

ऐसे नाम और लक़ब जो अल्लाह तआला के नामों के मिस्ल हों रखना मकरूह है जैसे मालिकुल मुलूक शहंशाह वगैरह क्योंकि यह अहले फ़ारस में राएज़ हैं। वह नाम रखना भी मकरूह है जो सिर्फ़ अल्लाह के लिए सज़ावार हैं जैसे कुददूस, एलाह, ख़ालिक, मुहैमिन। अल्लाह तआला का इरशद है: मुशरिकों ने अल्लाह के शरीक बना रखे हैं फ़रमा दीजिये यह उनके मन घड़त नाम हैं बाज़ मुफ़स्सेरीन इस आयत तफ़सीर इस तरह करते हैं, आप उनसे कह दीजिए कि उन शरीकों के नाम भी मेरे नामों की तरह रखो फिर देखो कि शरीकों के ऐसे नाम रखना मुनासिब है या ना मुनासिब।

अपने भाई या गुलाम को करीह लक़ब से पुकारना हराम है इस लिए कि अल्लाह तआला ने इससे मना फ़रमाया है अल्लाह तआला का इरशद है। यानी बुरे अल्काब से न बुलाओ अल्लाह तआला ने इसे फ़िस्क़ फ़रमाया है और मुसतहब यह है कि अपने भाई को ऐसे नामों से पुकारे जो उसे सबसे ज़्यादा पसन्द है।

## गुस्सा की हालत के अहकाम

गुस्से के वक़्त अगर कोई आदमी खड़ा हो तो बैठ जाए (इससे गुस्सा कुछ फुरु हो जाता है) और बैठा हो तो लेट जाए गुस्से में ठंडे पानी के छींटे मुह पर पड़ने से गुस्सा ठंडा पड़ जाता है। हज़रत इमाम हुसन की रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़रमाया गुस्सा एक अंगारा है जो आदमी के दिल में दहकता है अगर किसी की ऐसी कैफ़ियत हो और खड़ा हो तो बैठ जाए और बैठा हो तो तकिया के सहारे से टेक लगा ले।

अगर कुछ लोग अपने राज़ की बातों में मशगूल तो उनके दर्मीयान घुस कर नहीं बैठना चाहिए रसूलुल्लाह ने इसकी मुमानीअत फ़रमाई है धूप और साया के दर्मीयान यानी कुछ धूप और कुछ साया दार में बैठना भी मकरूह है बायें हाथ पर सहारा दे कर बैठना मकरूह है बैठे हुए लोगों के दर्मीयान लेटना मकरूह है और जब मज्लिस से उठे तो कफ़ारए मज्लिस के तौर पर यह दुआ पढ़ना मुस्तहब है।

तर्जमा:—ऐ अल्लाह तू पाक है सब तारीफ़ तेरे ही लिए है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं मैं तेरी बख़्शिश चाहता हूँ और तेरी ही तरफ़ तौबा करता हूँ।

## क़ब्रिस्तान में जाने के आदाब

क़ब्रिस्तान से जूते पहन कर गुज़रना मकरूह है क़ब्रिस्तान में जाने वाले के लिए यह दुआ पढ़ना मुस्तहब है:

तर्जमा:—ऐ अल्लाह उन पुराने जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के मालिक जो दुनिया से निकलते वक़्त ईमानदार थे मोहम्मद और आले मोहम्मद पर अपनी रहमत और अपनी तरफ़ से



राहत नाज़िल फ़रमा और मेरा सलाम उनको पहुंचा दे।

## जब क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो तो कहे

तर्जमा:—मोमिनों की बस्ती के रहने वालो तुम पर सलाम हो इन्शा अल्लाह हम भी तुम्हारे पास पहुंचने वाले हैं। एक रिवायत में यही आया है।

किसी क़ब्र की ज़ियारत के वक़्त क़ब्र पर हाथ न रखे यह यहूदियों का तरीका है न क़ब्र पर बैठे न उससे टेक लगाये न क़ब्र को पांव से ठोकर मारे, सख़्त मजबूरी की हालत इससे मुस्तसना है। क़ब्र से इतने फ़ासले पर और ऐसी जगह खड़ा होना जहां साहबे क़ब्र की ज़िन्दगी में खड़ा हाता हो और वैसा ही उसका एहताराम करे जैसे अगर वह ज़िन्दा होता तो करता।

ग्यारह मरतबा सूरह इख़लास (कुल होवल्लाह) और कुछ दिगर आयाते कुरआनी पढ़ कर साहबे क़ब्र पर उसका सवाब पहुंचाये और अल्लाह से इस तरह अर्ज करे कि इलाही अगर सूरत को पढ़ने का सवाब तूने मेरे लिए मुकर्रर किया है तो मैं वह सवाब इस साहबे क़ब्र के लिए हदिया करता हों इस के बाद अल्लाह से अपनी मुराद मांगें। मुर्दे की हड्डी न तोड़े और न उसको पामाल करे अगर वह ऐसा करने पर मजबूर हो गया या इत्तेफ़ाक़न ऐसा हो जाए तो इस्तिग़फ़ार पढ़े और अहले क़ब्र के लिए बख़्शिश की दुआ करे।

## बदशुगूनी

बदशुगूनी करना मना है नेक फ़ाल की मुमानिअत नहीं है।

## दूसरों के साथ बरताव

हर शख्स से आजिजी और इन्केसारी के साथ पेश आना चाहिए बूढ़ों की इज़्ज़त और बच्चों पर शफ़क़त करना मुस्तहब है छोटों के कसूर और ख़ताओं से दर गुज़र करना भी मुस्तहब है मगर अदब आमोज़ी तर्क न करे।

## रहमत की दुआ

हर एक के लिए यह कहना कि अल्लाह तआला तुम पर अपनी रहमत नाज़िल करे या फ़लां बिन फ़लां पर अल्लाह तआला अपनी रहमत भेजे, जाएज़ है। मनकूल है कि हज़रत अली मुर्तज़ा कर्म्मल्लाह वजहहु ने हज़रत उमर फ़ारूक़ से फ़रमाया "सल्लल्लाहो अलैका" (अल्लाह तआला तुम पर रहमत नाज़िल करे) आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी एक मरतबा इरशाद फ़रमाया था अब औफ़ा की औलाद पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

## मुसाफ़ा

ज़िम्मी काफ़िर से मुसाफ़ा करना मकरूह है हज़रत अबूहुरैरा की रिवायत के बमौजिब हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया ज़िम्मीयों से मुसाफ़ा न करो।

## दुआ का तरीका

दुआ मागने का तरीका यह है कि दोनों हाथ फैलाये अल्लाह की हम्द व सना के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजे फिर अपनी मुराद मांगें। दुआ मागते वक़्त



आसमान की तरफ नज़र उठाए। दुआ मागने के बाद दोनों हाथ मुंह पर फेर ले। हुजुरे अकदस का इरशाद है दोनों हाथ फैला कर अल्लाह से दुआ मांगो फिर उन्हें मुंह पर फेर लो

## कुरआनी तावीज

कुरआन शरीफ के साथ तावीज (पनाह चाहना) जाएज़ है। अल्लाह तआला का इरशाद है शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांग। अल्लाह तआला ने मऊज़तैन में भी फरमाया है। हदीस लेते थे हुजुरे वाला ये दुआ भी पढ़ते थे।

**तर्जमा:**—मैं खुदाए बुर्जुग व बरतर और उसके पाक कलमो के साथ पनाह मांगता हूं उस शर से जिसको उसने पैदा कर के फैला दिया है और हर चौपाये के शर से क्योंकि मेरा रब उसको पेशानी के बालों से पकड़ने वाला है।

कुरआन मजीद और अल्लाह तआला के असमाए हुस्ना बतौर अफसू पढ़ना भी जाएज़ है अल्लाह तआला फरमाता है: हम ने कुरआन में उन चीज़ों को नाज़िल किया है जो मुसलमानों के लिए शिफा और रहमत का बाइस है।

दूसरी आयत में इरशाद होता है: यह किताब है जो हमने उतारी और जो बरकत वाली है। हजरत हसन और हजरत हुसैन के सिलसिले में हुजुरे अकदस ने फरमाया था कि उनको (यानी नज़रे बद) झाड़ा करो अगर तकदीर से कोई चीज़ सबक़्त करती तो वह नज़रे बद होती।

तप ज़दा शख्स के लिए तावीज लिख कर गले में डाला जा सकता है इमाम अहमद ने फरमाया कि मुझे बुखार हो गया तो मेरे लिए बुखार का यह तावीज लिखा गया

अल्लाह के नाम से शुरू है जो रहमान व रहीम है अल्लाह के नाम से, मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं ऐ आग तू सलामती के साथ हजरत इब्राहीम पर ठंडी होजा और उन्होंने उनसे फरेब करने का इरादा किया था मगर हमने उनको ज़लील व ख़्बार कर दिया ऐ जिब्रील, मीकाईल और ईसाफ़ील के रब इस तावीज वाले को अपनी कुव्वत से शिफा दे दे ऐ अरहमरीहेमीन।

## वज़अे हमल का तावीज

बाज़ उलमा (असहाब हजरत मुसन्निफ़) का कौल है जिस औरत के बच्चा पैदा होने में दुशवारी का सामना हो तो वज़अ हमल की आसानी के लिए किसी प्याले या दूसरे पाक बरतन में मन्दर्जा जैल दुआ लिख कर पानी से धो कर कुछ पानी उस औरत को पिलाया जाए और कुछ उसके सीने पर छिड़क दिया जाए तावीज यह है:

**तर्जमा:**—उस खुदा के नाम से शुरू करता हूं जो रहमान और रहीम है अल्लाह तआला के सिवा कोई दूसरा इबादत के लाएक नहीं है वह अल्लाह जो अर्श अज़ीम का परवर दिगार है सब तारीफ़ उसी के लिए है जो जहानों का पालने वाला है गोया वह (कुफ़ार) उसको उस दिन देखेंगे जिस का वादा किया गया है वह नहीं ठहरेगे मगर एक घड़ी दिन के बराबर कुरआन का पढ़ाना हुक्म है पस काफ़िरों की कौम के सिवा कोई हलाक नहीं होता।

## दम करना

चींटी, सांप, बिच्छू, पिस्सू, मच्छर वगैरह के काटे में मंत्र का पढ़ना (दम करना) जाएज़ है।



चुनांचे सूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर जहरीले जानवर के काटने में दम करने (मंत्र पढ़ने की) इजाजत दी और इरशाद फरमाया है कि जो शख्स शाम को तीन बार **सल्लल्लाहु अला नूहीन व अला नूहिस्सलामो** (अल्लाह तआला नूह पर दरुद भेजे और नूह पर सलाम हो) पढ़ेगा तो उस रात उस को बिच्छू नहीं काटेगा।

हुजूर का यह भी इरशादे गिरामी है कि जो शख्स शाम को तीन बार **अऊजा बेकलेमातिल्लाहिताम्माती कुल्लेहा मिन शर्रे मा ख-ल-क** (यानी हर शय की बदी से जो पैदा की गई है मैं अल्लाह के सिवा इन कलेमात के साथ जो पूरे और कामिल हैं पनाह मागता हूँ) उस रात उसको कोई डंक (जहर) दुख नहीं पहुंचाएगा मंत्र पढ़ कर दम करना जाएज है थुथकारना मकरुह है।

## नज़रे बद का इलाज

नज़रे बद लगाने वाला अपने चेहरे, अपने हाथों को कोहनियों तक धोये और अपने घुटने और और पैरों के साथ तहबंद के अन्दरुनी आज्ञा को भी एक बरतन में धोये फिर उस धोवन को उस शख्स पर डाले जिसको नज़रे बद लगी वह सेहतयाब हो जाएगा अबू अमामा बिन सहल बिन हनीफ़ से रिवायत है कि मैं गुस्ल कर रहा था कि आमिर बिन रबीआ ने मेरे बदन को देख लिया और ताज्जुब से कहने लगा खुदा की कसम आज जैसा मंज़र मैंने कभी नहीं देखा, किसी पर्दा नशीन औरत की जिल्द भी मैं ने ऐसी (हसीन) नहीं देखी। मुझे फालिज हो गया ऐसा कि मैं सर भी नहीं उठा सकता था लोगों ने इस बात का तज़क़िरा सरबरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया। आपने इरशाद फरमाया तुम किसी को मुलज़िम ठहराते हो लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह आमिर बिन रबीअ ने ऐसा ऐसा कहा था हुजूर ने आमिर को बुलवाया और मुझे भी तलब फरमाया और इरशाद किया सुब्हानल्लाह कोई अपने भाई को क्यों मारे डालता है अगर कोई चीज़ किसी को पसंद हो (देखकर ताज्जुब करे) तो उसके लिए बरकत की दुआ करे फिर आप आंहजरत ने आमिर को हुक्म दिया कि गुस्ल करो आमिर ने अपना चेहरा धोया ऊपरी हाथ धोये दोनों कोहनियां धोई फिर सीना और अपनी शर्मगाह को धोया इसके बाद दोनों जानू दोनों पांव मअ पिंडलियों के धोए यह आज्ञा इस तरह धोए कि पानी एक बरतन में धोवन का जमा हो गया हुजूर ने इरशाद के ब मौजिब वह तमाम पानी मेरे ऊपर से बहा दिया गया अबू अमामा कहते हैं कि हस्बुल हुक्म कुछ पानी मेरे बदन पर मल दिया गया था इस पर अमल के फौरन बाद खुद सवारों के साथ चल कर लौट आया।

अगर पूरा गुस्ल करके नज़र ज़दा पर पानी डाला जाए तो फौरन बेहतर होगा

## सेंगी लगवाना, फ़स्द खुलवाना

बीमारियों के इलाज़ के लिए सेंगी लगवाना, फ़स्द खुलवाना, दाग़ लगवाना, दवायें, शरबत और उरुक पीना, रगों का काटना, जख्मों को चीरना, सारे बदन में कीड़े पड़ जाने के ख़ौफ़ से किसी उज्व का काटना बवासीर के मस्सों का काटवाना (अमले ज़र्राही कराना) गरज़ ऐसे काम करना जिनसे जिस्म की इसलाह मकसूद है जाएज़ है अलबत्ता तंदरुस्त और सही बदन को काटने से बचाना चाहिए।



रिवायत है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सेंगी लगवाई और तबीब से मशवरा फरमाया और तबीबों से फरमाया तुम्हारी राय ही इलाज है तबीबों ने अर्ज किया या रसूलल्लाह क्या तिब में कुछ फायदा है आपने फरमाया जिसने बीमारी उतारी है उसने दवा भी उतारी है हजरत इमाम अहमद से जिस्म दागने का मसला दरयाफ्त किया गया आप ने फरमाया, देहात के लोग ऐसा करते हैं। बिलाशुबा हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा ने दाग से इलाज किया है (दाग लगाया है) एक और मकाम पर हजरत इमाम अहमद ने फरमाया कि हजरत इमरान बिन हसीन ने अरकुन्निसा को चीरा था। इमाम साहब से एक और रिवायत में दागने की कराहत मन्कूल है।

हराम चीज का बतौर दवा इस्तेमाल दुरुस्त नहीं, जैसे शराब, ज़हर मुरदार, नापाक चीज़ वगैरह। गधी के दूध से भी इलाज दुरुस्त नहीं है हुजूर का इरशाद है: हराम चीज़ों में मेरी उम्मत की शिफा नहीं रखी गई है। अशद जरूरत के सिवा हकना करना मकरूह है।

ताऊन से भागना जाएज़ नहीं लेकिन कहीं ताऊन फैला हो तो उस जगह जाना नहीं चाहिए अपने आप को खुद हलाकत में न डाले।

## अजनबी औरत के साथ तन्हाई में बैठना

ना महरम के साथ तन्हाई में न बैठे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की मुमानिअत फरमाई है और इरशाद फरमाया है कि वहां तीसरा शैतान होता है क्योंकि शैतान उनको गुनाह की तरफ माएल करता है।

किसी जवान औरत की तरफ मजबूरी के सिवा नज़र उठा कर न देखे, मजबूरी की सूरत इलाज या गवाही वगैरह है बूढ़ी और खुले चेहरे वाली औरत को देख लेना जाएज़ है। जवान औरत को देखने से फितने में पड़ जाने का अन्देशा है। दो मर्द या दो औरतों को बरहना एक लिहाफ़ में या एक चादर में बहम न होना चाहिये रसूलुल्लाह ने इसकी मुमानिअत फरमाई है इस तरह बरहना लेटने से एक की नज़र दूसरे के सतर पर पड़ती है और यह मना है फिर शैतान के वरगलाने से इरतिकाबे गुनाह का भी डर है।

## बांदी और गुलामों से नर्मी बरतना

अपने गुलाम और बांदी के साथ नर्मी से पेश आए, उनसे ना काबिले बरदाश्त काम न ले, उनको कपड़ा पहनाए, खाना खिलाए अगर वह ख्वाहिशमन्द हों तो उनका निकाह भी कर दे लेकिन उनको निकाह पर मजबूर न करे इसमें अगर कोई कोताही करेगा तो गुनहगार होगा अगर चाहे तो उनको फ़रोख्त कर दे चाहे आज़ाद कर दे अगर गुलाम आज़ादी का मुतालबा करे तो कुछ रूपया (रक़म) मुक़र्रर करके उन्हें आज़ाद कर दे (यानी वह मजदूरी के ज़रिये मुक़र्ररा रक़म जब अदा कर दे तो आज़ाद कर दिया जाये) हदीस शरीफ़ में आया है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आखिरी वसीयत यह थी कि नमाज़ के पाबन्द रहना और गुलामों का ख्याल रखना।

## कुरआन पाक को साथ रखना

दुश्मन के मुल्क में दौराने जिहाद कुरआन को साथ ले जाना मकरूह है, मुबादा वह काफ़िरों के हाथ लग जाए और वह कुरआन की बे अदबी करें। हां अगर मुसलमानों का ग़ैर मामूली



दबदबा और गलबा हो तो पढ़ने के लिए साथ ले जाना जाएज है ताकि पढ़ा हुआ भूल न जाए।

## मुतफ़र्रिक़ दुआयें

### आईना देखते वक़्त क्या दुआ पढ़े

आईना को देख कर यह दुआ पढ़ना मुसतहब है

तर्जमा:—अल्लाह के लिए हम्द व सना है जिसने मुझे दुरुस्त पैदा किया और मेरी बनावट दुरुस्त की मुझे खूबसूरती अता की और मुझे ऐसे आज्ञा दिये जो ऐबदार आज्ञा के मुकाबले में खुशनुमा दिखाई देते हैं। यह रिवायत आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है।

### कान बजना

आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर किसी के कान बजने लगें तो वह दरुद शरीफ पढ़ने के बाद यह दुआ पढ़े:

तर्जमा:—जिसने मुझे भलाई से पाक किया अल्लाह तआला उसको याद करे।

### दर्द दूर करने की दुआ

आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर किसी शख्स के किसी उज्व में दर्द हो तो यह दुआ पढ़ कर दम करे।

तर्जमा:—हमारा अल्लाह वह है जिसका नाम आसमानों में मुक़द्दस है इलाही तेरा हुक्म आसमान और ज़मीन में ऐसा ही नाफ़िज़ व जारी है जैसे तेरी रहमत आसमान व ज़मीन में आम है इलाही हमारे गुनाह और कुसूर माफ़ कर दे ऐ पाक लोगों के रब अपनी रहमत का छींटा और अपनी शिफा में से इस दर्द को जो लाहिक है शिफा दे।

### बद शगूनी का दफ़ा

बद शगूनी पैदा करने वाली कोई चीज़ देखे तो कहे

तर्जमा:—इलाही भलाईयों को तेरे सिवा कोई नहीं लाता और न तेरे सिवा कोई बुराईयों को दफ़ा करता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यही दुआ मरवी है।

### कलीसा, आतिशकदा या बुतकदा देखने पर

अगर कोई शख्स यहूदियों का इबादत ख़ाना (हैकल) देखे बातरी या संघ (बूक) की आवाज़ सुने या किसी जगह यहूदियों मुश्रिकों और ईसाईयों की जमाअत देखे तो उसको यह अल्फ़ाज़ कहना चाहिए।

तर्जमा:—मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं कोई उसका शरीक नहीं उसके सिवा और मैं किसी और की बन्दगी नहीं करता हूँ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि जो शख्स मज़कूरा बाला



अल्फाज कहेगा मुश्रिकों की तादाद के बराबर अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ़ फरमा देगा  
**रअद और कड़क की आवाज**

रअद और गरज की आवाज सुन कर कहे

**तर्जमा:**—इलाही हम को अपने ग़ज़ब से क़त्ल न कर देना और अपने अज़ाब से हलाक न कर देना और उससे पहले हम को बचाना।

## आंधी के वक़्त की दुआ

आंधी आती देख कर यह दुआ पढ़े

**तर्जमा:**—इलाही मैं तुझ से इसकी ख़ैर का तलबगार हूँ और जिस काम के लिए इसको भेजा गया है इस की ख़ैर का भी, और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इसके शर से और उस चीज़ के शर से जिसके लिए इस को भेजा गया है।

## बाज़ार में जाना

बाज़ार में जाने वाले को चाहिए कि वह यह दुआ पढ़े रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यही पढ़ते थे। हुज़ूर यह फ़रमाया करते थे

**तर्जमा:**—इलाही मैं तुझ से बाज़ार और जो कुछ बाज़ार में मौजूद है उससे भलाई का ख़हसतगार हूँ और बाज़ार की बुराई और उसमें जो कुछ मौजूद है उसकी बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। इलाही मैं उस बात से तेरी पनाह माँगता हूँ कि मैं बाज़ार में झूठी कसम में मुब्तला हो जाऊँ या कोई नुक़सान का सौदा मुझ पर आ पड़े। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं है। उसी की हुकूमत है उसी के लिए तमाम तारीफ़ है, वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है। वह ज़िन्दा है, उसके लिए मौत नहीं है। उसी के कब्ज़े में भलाई है। वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।

## रुईयते हलाल की दुआ

महीने का नया चाँद देख कर पढ़े

**तर्जमा:**—इलाही, इस चाँद को बरकत, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ हम पर नमूदार फ़रमा! अल्लाह मेरा और तेरा रब है।

## मुसीबत ज़दा को देख कर

जब किसी को दुख और मुसीबत में मुब्तला देखे तो यह दुआ पढ़े

**तर्जमा:**—अल्लाह का शुक्र है कि जिसने मुझे इस दुख से महफूज़ रखा, जिसमें तुझे मुब्तला किया और मुझे तुझ पर और बहुत सी मख़लूक पर बरतरी और फ़ज़ीलत अता फ़रमाई।

जब तक यह दुआ पढ़ने वाला ज़िन्दा रहेगा, अल्लाह तआला उसको उस दुख से महफूज़ रखेगा (ख़्वाह कोई दुख हो)

## हाजी से मुलाकात पर

हाजी सफ़रे हज से वापस आयें तो उनसे मुलाकात के वक़्त कहे



**तर्जमा:**—अल्लाह तेरे हज को कबूल फरमाए, तुझे बड़ा अज्र अता फरमाये और जो कुछ तेरा खर्च हो गया है उसका एवज तुझको अता करे।

रिवायत में आया है कि हजरत उमर रजियल्लाहो अन्हो हाजी से मुलाकात के वक्त यही फरमाया करते थे।

## बीमार की अयादत के मौका पर दुआ

किसी मुसलमान बीमार की अयादत को जाए और उसको हालते नज़अ में देखे या उसे मुर्दा पाए तो यह दुआ पढ़े जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है। आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मौत घबराहट का वक्त है लिहाजा जब तुम अपने किसी रफीक को इस हालत में देखो तो यह दुआ पढ़ो।

**तर्जमा:**—बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं और उसी की तरफ हम लौटने वाले हैं अपने رب के पास ही हमको पलटकर जाना है। इलाही अपने पास इसको नेकोकारों में लिख ले, और इसका नामए आमाल इल्लिईन में रख दे और इसके पस्मांदगान की तू निगरानी फरमा। हम को इसके सवाब से महरूम न कर और इसके बाद हम को मुसीबत में न डाल।

यह मुसतहब है कि मरने वाला शख्स अपने गुनाहों के लिए इस्तिगफार करे और अपने वारिसों को मशवरा दे कि जो कुछ हुक्कुल इबाद उसके जिम्मे हैं उसको अदा करें, जो गरीब रिश्तेदार उसके वारिस नहीं हैं अपने कुल माल का तिहाई हिस्सा उनको देने की वसीयत करे, अगर ऐसे रिश्तेदार न हों तो मोहताजों, मिसकीनों, मस्जिदों, पुलों और दूसरे नेकी के कामों में माल का तिहाई हिस्सा सर्फ करने की वसीयत कर दे।

## मुर्दों को कब्र में रखते वक्त की दुआ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है, मुर्दों को कब्रों में रखते वक्त कहो **बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लते रसूलिल्लाहि** आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मय्यत को कब्र में रखते वक्त यही अलफाज इरशाद फरमाये थे। कब्र पर मिट्टी डालते वक्त कहे

**तर्जमा:**—मैं तुझ पर ईमान लाया और मैंने तेरे पैगम्बर की तसदीक की मैं हश्श पर ईमान लाया हूँ, यह वह है जिसका अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने वादा किया है।

हजरत अली करमल्लाहु वजहहु से मरवी है कि जो शख्स ऐसा करेगा उसे ख़ाक के ज़रों के बराबर नेकियाँ मिलेंगी।



## बाब 5

# निकाह, मुबारकत, हमल, बीवी और इताअत गुजारी, वलीमा, निकाह का खुत्बा निकाह के आदाब

### निकाह के अहकाम

निकाह करने से निकाह करने वाले का असल मकसूद अल्लाह के हुक्म की तामील होना चाहिए जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जमा:—अपनी बेवाओं का निकाह कर दो, उसी तरह नेक लौंडियों और गुलामों का निकाह कर दो।

दूसरी जगह इरशादे रब्बानी है:

तर्जमा:—उन औरतों से निकाह करो जो तुम्हें पसन्द हो, दो दो तीन तीन चार चार।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि निकाह करो और अपनी औलाद बढ़ाओ, ख्वाह हमल साकित क्योंकि न हो जाए क्योंकि मैं अपनी कसरते उम्मत पर फ़ख़र करने वाला हूँ। इस दोनों आयतों और हदीसों से साबित है कि जिना का डर हो या न हो निकाह करना बहरे सूरत वाजिब है।

इमाम अहमद की रिवायत की रू से अबू दाऊद के नज़दीक निकाह का मुतलकन वाजिब है। (जिना का डर हो या न हो) पस वाजिब की अदाएगी की नीयत करने वाले के लिए हुक्मे खुदावंदी की तामील का स्वाब होगा। इरशादे खुदावंदी की तामील के साथ साथ अपने दीन की तकमील और हिफाजत भी मकसूद हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है "जिसने निकाह कर लिया उसने अपना निस्फ़ दीन महफूज़ कर लिया। दूसरा फ़रमाने नबी है "जब बन्दे ने निकाह कर लिया तो उसने अपना निस्फ़ दीन मुकम्मल कर लिया।"

निकाह के लिए ऐसी औरत का इन्तेखाब करे जो आली नसब हो, कराबतदार न हो और ऐसी औरत में से हो जो कसीरून नस्ल मशहूर हैं (उस ख़ानदान की हो जिस ख़ानदान की औरत के ज्यादा औलाद पैदा होती है) हज़रत जाबिर बिन अबदुल्लाह ने जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताया कि मैंने रान्ड(बेवा) से शादी किया है तो हुज़ूर ने फ़रमाया तुमने दोशीजा से निकाह क्यों नहीं किया कि तूम्हारा बहलाव उससे होता और उसका तुम से।

कसीरून नस्ल होने की शर्त इसलिए है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बाहम निकाह करो नसलें बढ़ाओ, मैं तुम्हारी कसरत की वजह से दूसरी उम्मतों पर फ़ख़र करूँगा अगरचे बच्चा कच्चा ही हो। बाज़ अहादीस में आया है कि ऐसी औरत से निकाह



करो जो बहुत बच्चे पैदा करने वाली और ज्यादा मेहनत करने वाली हो। मैं तुम्हारी कसरत पर फख्र करूँगा।

औरत के कराबतदार (रिश्तेदार) न होने की शर्त इस लिए है कि अगर बाहम नफरत व अदावत हो जाए तो उस कराबत को कतअ न करना पड़े जिसको जोड़े रखने का हुक्म दिया गया है। इसी लिए शरीअत ने निकाह के अन्दर दो बहनों को जमा करने से मना फरमाया है। जबान दराज, तलाक की ख्वास्तगार और बदन गुदवाने वाली औरत से भी निकाह न करना चाहिए। निकाह करने के बाद औरत से खुश अखलाकी से पेश आए, उसको दुख न दे और उस पर सख्ती न करे कि वह खुलअ की ख्वास्तगारी करे और अपने महर को खुलअ के बदल में महसूब कर दे। बीवी के वालिदैन को गाली न दे अगर ऐसा करेगा तो उससे अल्लाह और अल्लाह के रसूल बेजार होंगे।

रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया है औरतों से भलाई करने का मेरा आखिरी हुक्म मानो, वह तुम्हारे पास कैदी हैं। बाज अहादीस में आया है कि जो शख्स किसी औरत से महर के साथ निकाह करे और नीयत महर अदा करने की न हो तो वह कयामत के दिन जानी की हालत में आएगा, औरत अगर अपनी जबान दराजी से शौहर को दुख पहुँचाये तो मर्द को चाहिए कि उस औरत से अलाहिदा हो जाए या अल्लाह की तरफ रुजू करे और तजरूअ व जारी के साथ दुआ करे, अल्लाह उसके काम को पूरा कर देगा और अगर उस रंज और दुख में सब्र करेगा तो राह खुदा में जिहाद करने वाले की तरह होगा। अगर औरत ब रजा व रगबत जब्र के बगैर अपना कुछ माल शौहर को दे दे तो खुशी से लेना चाहिए। उसका खाना मर्द के लिए जाइज है।

### बीवी पसन्द ना पसन्द करने का मसला

मुनासिब है कि निकाह से पहले औरत का चेहरा और जाहिरी बदन देख ले (यानी मुँह और हाथों को अच्छी तरह देख ले) ताकि बाद को मुफारिकत या तलाक की नौबत न आए क्योंकि तलाक और मुफारिकत अल्लाह तआला के नजदीक मकरूह और ना पसन्दीदा है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लिम का इरशाद है कि अल्लाह तआला के नजदीक मुबाह चीजों में तलाक सबसे ना पसन्दीदा चीज है।

औरत के चेहरे वगैरह को देख लेने के सिलसिले में असल दलील यह हदीस है, हुजूर अकदस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लिम ने इरशाद फरमाया अगर तुम में किसी के दिल में किसी औरत को पैगाम भेजवाने का इरादा अल्लाह तआला पैदा कर दे तो पहले उस औरत के चेहरे और दोनों हथेलियों को देख लेना चाहिए। यह सूरत आपस में मोहब्बत पैदा करने के लिए निहायत मुनासिब है। हजरत जाबिर रजियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि हुजूर ने इरशाद फरमाया कि जब तुम में से कोई किसी औरत को निकाह का पयाम दे तो अगर उस औरत के उन आज्ञा का देखना मुम्किन हो जो निकाह की तरफ रगबत दिलाते हैं देख ले। हजरत जाबिर कहते हैं कि मैंने एक लड़की को निकाह का पैगाम दिया और छुप कर उतना हिस्सा भी देख लिया जिसने मुझे निकाह करने पर आमदा किया था। अबू दाऊद ने यह रिवायत अपनी सुनन में नक़ल की है।

### बीवी की खुसूसियात:

औरत को दीनदारी और जी फहम होना चाहिए। हजरत अबू हुरैरा रिवायत करते हैं कि



आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया औरत से निकाह चार खूबियों के पेशे नज़र किया जाता है दौलत, हुस्न, आली नसबी और दीनदारी। कामयाबी उस शख्स की है जो महज़ दीनदारी की बिना पर औरत से निकाह करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दीनदार औरत से निकाह करने की सराहत इस लिए फ़रमाई है कि दीनदार औरत शौहर की मददगार होती है और थोड़ी रोजी पर क़नाअत कर लेती है इसके बर ख़िलाफ़ दीनदारी से ख़ाली औरतें गुनाह और मुसीबत में मुब्तला कर देती हैं। ऐसी औरतों से वही बचता है जिसे अल्लाह तआला बचाये।

अल्लाह तआला का इरशाद है: यानी अब उनसे मुबाशरत करो और अल्लाह तुम्हारे लिए जो कुछ लिख दिया है उसकी तलब करो, इस आयते करीमा की तफ़सीर में अकसर मुफ़स्सरीन ने कहा है कि मुबाशिरत से मुराद जिमाअ और इबतगा से मुराद तलबे औलाद है, औरत के लिए भी यही मुनासिब है कि निकाह करने में उसका मक़सूद भी अपनी इसमत का तहफ़फ़ुज़, औलाद की तलब और अल्लाह की तरफ़ से दिया हुआ अज़रे अज़ीम हो। वह इसी नीयत से शौहर की कुरबत में रहकर हमले विलादत और औलाद की परवरिश को सब्र से बरदाश्त करे। ज़ियाद बिन मैमून ने हज़रत अनस बिन मालिक का कौल नक़ल किया है कि मदीना की रहने वाली एक इत्र फ़रोश औरत जिसका नाम हौला था, हज़रत आईशा की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया, उम्मुल मोमेनीन मेरा शौहर फ़लाँ शख्स है। मैं हर रात इत्र लगाकर और सिंगार शबे ज़फ़ाफ़ की दुलहन की तरह हो जाती हूँ। जब वह आकर अपने बिस्तर में लेट जाता है तो मैं उसके लिहाफ़ में घुस जाती हूँ। इन कामों से मेरा मक़सूद अल्लाह तआला की रज़ामन्दी होता है मगर मेरा शौहर मेरी तरफ़ से मुँह फेर लेता है मेरे ख़याल में उसको मुझ से नफ़रत है, हज़रत आएशा ने फ़रमाया बैठ जाओ। रसूलुल्लाह तशरीफ़ ले आये उस असना में सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया यह खुशबू कैसी है? क्या हौला आई है? क्या तुम ने इससे कुछ ख़रीदा है? हज़रत आएशा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह, बख़ुदा मैंने कुछ नहीं ख़रीदा है, फिर हौला ने अपना किस्सा अर्ज़ किया, हुज़ूर गिरामी ने फ़रमाया, जा उसकी बात सुन और उसका हुक्म मान! हौला ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैं ऐसा ही करूँगी मुझे इसका क्या सवाब मिलेगा? आहज़रत ने जवाब दिया जो औरत अपने ख़ाविन्द की आरास्तगी और दुरुस्ती के लिए कोई चीज़ उठा कर रखती है, उसके एवज़ उसको एक नेकी का सवाब मिलता है और उसका एक गुनाह माफ़ कर दिया जाता है और एक दर्जा बलन्द कर दिया जाता है और जो हामला औरत हमल की कोई तकलीफ़ बरदाश्त करती है उसके लिए काइमुल लैल और साइमुन नहार और अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाला अज़्र मिलता है और जब उसे दर्द ज़ेह लाहक़ होता है तो हर दर्द के एवज़ उसको एक जान (गुलाम) आज़ाद करने का सवाब मिलता है और जब बच्चा माँ की पिसतान से दूध का चुसकी लेता है तो हर चुसकी के एवज़ उस औरत को इस क़दर सवाब मिलता है जितना गुलाम को आज़ाद करने का। जब औरत अपने बच्चा का दूध छुड़ाती है तो आसमान से निदा आती है ऐ औरत तूने माज़ी के सब काम पूरे कर दिए अब जो ज़माना बाकी है उसका काम शुरू कर। (यानी पिछली ज़िन्दगी के सारे गुनाह माफ़ हो गए अब अज़ सरे नौ ज़िन्दगी शुरू कर)



हजरत आएशा यह सुन कर अर्ज किया या रसूलुल्लाह मर्दों का सवाब का क्या हाल है औरतों को तो इस कदर सवाब का हिस्सादार बना दिया गया? यह सवाल सुन कर हुजूर तबस्सुम फरमाया और इरशाद किया कि जो मर्द अपनी बीवी का हाथ उसको बहलाने के लिए पकड़ता है अल्लाह तआला उसके लिए एक नेकी लिख देता है। जब मर्द प्यार से औरत के गले में हाथ डालता है उसके हक में दस नेकियाँ लिखी जाती हैं और जब वह औरत के साथ मुबाशरत करता है तो दुनिया व माफीहा से बेहतर हो जाता है। और जब गुस्ल (जनाबत) करता है तो बदन के जिस बाल पर से पानी गुजरता है उस हर बाल के एवज उसकी एक नेकी लिखी जाती है और एक गुनाह कम कर दिया जाता है और एक दर्जा ऊँचा कर दिया जाता है और गुस्ल के एवज जो कुछ सवाब उसको दिया जाएगा वह दुनिया और माफीहा से बेहतर होगा। अल्लाह तआला उस पर फख्र करता है और फरिश्तों से कहता है कि मेरे बन्दे की तरफ देखो कि इस सर्द रात में गुस्ले जनाबत के लिए उठा है। इसे मेरे परवरदिगार होने का यकीन है। तुम भी इस बात पर गवाह रहना कि मैंने इस बख्श दिया।

इब्ने मुबारक बिन फुजाला ने इमाम हुसैन रजियल्लाहो अन्हो से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया, औरतों के साथ भलाई करने की मेरी वसीयत मानो वह तुम्हारे पास कैद हैं, खुद मुखतार नहीं हैं, तुमने उनको अल्लाह तआला की अमानत के तौर पर हासिल किया है और अल्लाह के हुक्म से उनके शर्मगाहों को अपने लिए हलाल बनाया है।

अबादा बिन कसीर ने ब हवाला अब्दुल्लाह, उम्मुल मोमेनीन हजरत मेमूना रजियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत के मर्दों में बेहतरीन मर्द वह हैं जो अपनी औरतों के साथ अच्छा सुलूक करता है और मेरी उम्मत की औरतों में सबसे बेहतर वोह औरत है जो अपने शौहर के साथ अच्छा सुलूक करती है। ऐसी औरत को रात दिन में ऐसे एक हजार शहीदों का सवाब मिलता है। जो खुदा के राह में सन्न के साथ शहीद होते हैं और उसके अजर की उम्मीद अल्लाह से रखते हैं। उन औरतों में से हर औरत जन्नत की हूरे ऐन पर ऐसी ही फजीलत रखती है जैसी मोहम्मद को तुममें से अदना मर्द पर। मेरी उम्मत की औरतों में वह औरत सब से बेहतर है जो अपरे शौहर की उसकी ख्वाहिश के मुताबिक फरमांबरदारी करती है, गुनाहों के कामों के सिवा। फरमाया मेरी उम्मत के मर्दों में बेहतर वह मर्द है जो अपने अहल के साथ उसी तरह मेहरबानी से पेश आता है जिस तरह एक माँ अपने बच्चे के साथ, ऐसे मर्द के लिए हर दिन रात में सन्न व शुक्र के साथ अल्लाह की राह में शहीद होने वाले सौ मर्दों का सवाब लिखा जाता है। इस मौका पर हजरत उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहो अन्हो ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह यह किया बात है कि औरत को हजार शहीदों का सवाब और मर्द को सौ शहीदों का सवाब है हुजूर ने इरशाद फरमाया कि तुम को मालूम नहीं कि अजर और सवाब में औरत मर्द से बढ़कर है और अफज़ल है। जन्नत में अल्लाह तआला मर्द के दरजात में मजीद दरजात का इजाफा इस लिए फरमाएगा कि उसकी बीवी उससे खुश है और उसके लिए दुआ करती है। क्या तुम को नहीं मालूम कि औरत के लिए शिर्क के बाद सबसे बड़ा गुनाह शौहर की नाफरमानी है, खबरदार कमजोरों के हक की बाबत अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तआला उन दोनों के बारे में बाज पुर्स करेगा। यतीम और औरत जिसने इन दोनों से भलाई की वह अल्लाह और उसकी रजामन्दी तक पहुंच गया और जिसने इन दोनों से बुराई की वह अल्लाह की गुज़ब



का सज़ावार हो गया है। शौहर का हक़ बीवी पर ऐसा है जैसा मेरा हक़ तुम पर है जिसने मेरी हक़ तलफ़ी की उस ने अल्लाह का हक़ जाया किया और वह अल्लाह के ग़ज़ब में मुब्तला होकर लौटा, उसका ठिकाना जहन्नम है और जहन्नम बहुत बुरी जगह है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह के हवाले से हज़रत अबू जाफ़र बिन मोहम्मद बिन अली ने बयान किया कि मैं और चन्द बुजुर्ग़ सहाबा आंहरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे कि एक औरत आई और सलाम कहकर आप के सरहाने खड़ी हो गई और अर्ज किया या रसूलल्लाह यहां से काफी मुसाफ़त पर कुछ औरतें हैं मैं उनकी तरफ़ से एलची (नुमाइन्दा) बन कर आप की ख़िदमत में आई हूं और उन की तरफ़ से यह पैग़ाम लाई हूं कि मर्दों और औरतों का रब अल्लाह तआला है, आदम अलैहिस्सलाम मर्दों के बाप थे और औरतों के भी, हव्वा मर्दों की भी मां थीं और औरतों की भी, मर्द जब भी राहे खुदा में मारे जाते हैं तो वह अपने रब के पास ज़िन्दा रहते हैं और उनको वहां रोज़ी दी जाती है और ज़ख्मी हो जाते हैं तब भी उनके ऐसा ही सवाब है जैसा कि आप आगाह हैं और हम मर्दों पर (बंधी) बैठी रहती हैं और उनकी ख़िदमत में मशगूल रहती हैं तो क्या हमारे लिए भी कुछ अज़्र है? रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मेरी तरफ़ से औरतों सलाम कहना और उनसे कहना कि शौहर की इताअत और उस के हक़ का इकरार मर्दों के जिहाद के सवाब के बराबर है मगर तुम में से कम औरतें ऐसा करती हैं।

हज़रत साबित बिन अनस का बयान है, मुझे औरतों ने रसूलुल्लाह की ख़िदमत के भेजा मैंने ख़िदमते अक्दस में हाज़िर औरतों की तरफ़ से अर्ज किया या रसूलल्लाह! क्या मर्द बुजुर्गी में बढ़ गये हैं और खुदा की राह में जिहाद करने का अज़्र पा गए हम औरतों के लिए किसी ऐसे अमल का तज़क़िरा नहीं है जिसके बाइस हम अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों के अमल की बराबरी कर सकें। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया घर में बैठ कर तुम में से हर एक का कामकाज करना खुदा की राह में जिहाद करने वालों के अमल के बराबर है।

हज़रत इमरान बिन हिसीस फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया गया क्या औरतों पर भी जिहाद फ़र्ज़ है फ़रमाय हां उनका जिहाद ग़ैरत है, वह अपने नफ़्सों से जिहाद करती हैं पस अगर वह सब्र करें तो वह जिहाद करने वाली हैं और अगर वह (रोज़ी की कमी व बेशी पर) राज़ी रहेंगी तो वह गोया जिहाद की तैयारी करने वाली है पस औरतों के लिए दोहरा अज़्र है। लिहाज़ा मर्द और औरत दोनों के लिए मुनासिब है कि वह सवाब मिलने पर एतकाद रखें। मियां बीवी पर लाज़िम है कि अक्द और जिमाअ के वक़्त के उस सवाब पर भी एतकाद रखें जिस का ज़िक्र हदीस में आ चुका है।

## जौजेन के हुक्क

मियां बीवी में से हर एक का हक़ दूसरे पर वाजिब है इस का सबूत इस आयत से होता है तर्जमा:—जैसा तुम्हारा हक़ औरतों पर है ऐसा ही उनका हक़ भी मर्दों पर है। यह बात इस लिए है कि दोनों अल्लाह तआला के फ़रमांबरदार बन जायें। औरत को यह एतकाद भी रखना चाहिए कि उस के लिए इन्तज़ाम खाना दारी और शौहर की इताअत जिहाद से बेहतर है। हदीस शरीफ़ में आया है हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया औरत के लिए शौहर या क़ब्र से बेहतर कोई चीज़



नहीं है। हुजूर ने यह भी इरशाद फरमाया हां मिसकीन है मिसकीन है वह मर्द जिसकी बीवी न हो, अर्ज किया गया या रसूलल्लाह ख्वाह वह मर्द गनी हो आपने इरशाद फरमाया हां अगरचे वह माल के लिहाज से गनी हो फिर इरशाद फरमाया मिसकीन है मिसकीन है वह औरत जिस का शौहर न हो, अर्ज किया गया ख्वाह वह मालदार हो हुजूर ने फरमाया अगरचे माल के लिहाज से गनी हो।

निकाह जुमेरात या जुमा को करना मुसतहब है सुबह की बजाये शाम के वक्त निकाह करना औला व अफजल है, ईजाब व कुबूल से पहले खुतबए निकाह पढ़ना मसनून है अगरचे बाद में भी पढ़ा जा सकता है।

निकाह में इख्तियार है कि खुद करे या वकील के मारफत करे, निकाह हो चुके तो हाजिरीन के लिए यह अल्फाज कहना मुसतहब है

तर्जमा:—अल्लाह तुम को बरकत दे और तुम पर अपनी रहमत नाजिल फरमाये नेकी और तंदुरुस्ती के साथ तुम को इकट्ठा रखे।

## निकाह के बाद

निकाह के बाद अगर औरत के घर वाले मोहलत तलब करें तो उनको मोहलत दे दी जाए ताकि इस मुद्दत में वह दुल्हन का सामान दुरुस्त कर लें (जहेज, सामान आराईश और जेवरात वगैरह)

जब औरत मर्द के घर आये तो इस रिवायत पर अमल करे जिस के रावी हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद हैं वह फरमाते हैं कि एक शख्स ने उनसे बयान किया कि मैंने एक दोशीजा से निकाह कर लिया है और मुझे डर है कि वह मुझे पसन्द नहीं करेगी या न करे, हजरत अब्दुल्लाह ने फरमाया है उलफत अल्लाह की तरफ से होती है और नफरत शैतान की जानिब से जब तुम बीवी के पास जाओ तो सबसे पहले उसको कहो कि वह तुम्हारे पीछे दो रिकअत नमाज पढ़े नमाज के बाद तुम इस तरह दुआ करना:

इलाही मेरे लिये मेरे अहल में बरकत अता फरमा, मुझ से मेरे अहल के लिये बरकत दे, ऐ अल्लाह मुझे इससे और उसको मुझसे रोजी दे। या अल्लाह जब तू हमको यकजा करे या अलग करे तो हुसूले खैर ही के लिये करना।

जब बीवी से मुबाशरत करे कि यह दुआ पढ़े:

आली मर्तबा, अजमत वाले अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं इलाही अगर तूने मुकद्दर कर दिया है कि मेरी पुश्त से (कोई औलाद) बर आमद हो तो उसको पाकीजा नस्ल बना, इलाही शैतान को मुझ से दूर रख और जो औलाद तू मुझे रोजी करे उससे भी शैतान से दूर रख।

जिमाअ से फरागत के बाद बगैर लब हिलाये दिल यह दुआ पढ़े:

बिस्मिल्लाह उस अल्लाह के लिये तारीफ है जिसने आदमी को पानी से पैदा किया फिर उसके लिये (बाहम मोहब्बत पैदा करने के लिये) रिश्ता और सुसराल को बनाया और तेरा रब हर शय पर कादिर है।

इस मजमून कि असल वह हदीस है जो कुरैब ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि आहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब तुम अपनी बीवी के साथ



यकजा होने का इरादा करो तो कहो ऐ अल्लाह हमें और उस बच्चे को जो हमें अता करना है, शैतान से दूर रखना है अगर उनके मुकद्दर में बच्चा की विलादत है तो शैतान उस बच्चे को कभी जरूर नहीं पहुंचा सकेगा।

## हमल के ज़माने में

हमल जाहिर होने पर मर्द को लाज़िम है कि औरत कि ग़िज़ा को हराम और हराम के शुबा से भी पाक रखे ताकि बच्चे की पैदाईश इस बुनय्याद पर हो कि शैतान की वहां तक रसाई ही न हो सके बल्कि ज़ियादा बेहतर यह है कि हलाल की ग़िज़ा की पाबन्दी जफ़ाफ़ (अव्वल रोज़ की मुबाशरत) ही से की जाए ताकि वह खुद और उस की बीवी और बच्चे (पैदा होने वाले) दुनिया में शैतान की दसतरस से और आखिरत में दोज़ख से महफूज़ रहें।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

**तर्जमा:**—ऐ ईमान वालो! अपनी जानों और घर वालों को दोज़ख से बचाओ।

इस के अलावा बच्चा नेकोकार और वालिदैन का फरमांबरदार और अल्लाह का मुतीअ होता है और यह सब कुछ पाक साफ़ ग़िज़ा की बरकत है।

## जिमाअ के बाद

जिमाअ से फारिग होने के बाद औरत के पास से हट जाए और बदन को धोकर नजासत दूर करे और वुजू करे बशर्ते कि यह है कि दोबारा जिमाअ का कस्द हो, अगर कस्द न हो तो गुस्ल करे, नापाकी की हालत के ना सोये ऐसा करना मकरूह है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसा ही मरवी है, अलबत्ता अगर शदीद सर्दी की वजह से नहाना दुशवार हो या हम्माम दूर हो पानी दूर हो या गुस्ल करने में कुछ ख़ौफ़ हाएल हो तो बगैर गुस्ल के सो जाए और उस वक़्त तक बगैर गुस्ल रहे जब तक यह उज़र दूर न हो जायें (मवाक़ेअ फ़राहम होते हुए गुस्ल करे)।

## जिमाअ के वक़्त

जिमाअ के वक़्त किस्सा रू न हो, पोशीदा जगह पर मुजामेअत करे (किसी की नज़र सामने न हो) यहां तक की छोटे बच्चे के सामने भी न हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है आप ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम में से कोई अपनी बीवी से कुरबत करे तो परदा कर ले, बे परदा होगा तो मलाएका हया की वजह से बाहर निकल जायेंगे और शैतान आ जायेंगे अगर कोई बच्चा हुआ तो शैतान की उसमें शिक़त होगी, बुजुर्गाने सल्फ़ से मनकूल है कि जिमाअ के वक़्त अगर बिस्मिल्लाह न पढ़ें तो इस सूरत में मर्द के शर्मगाह से लिपट जाता है और उस मर्द की तरह वह भी जिमाअ करता है।

जिमाअ से पहले औरत को जिमाअ की तरफ़ राग़िब करना मुस्तहसन है अगर ऐसा ना किया जाए जो औरत को जरूर पहुंचने का अन्देशा है जो अकसर और अदावत और जुदाई तक पहुंचा देता है।

## उज़ल करना

शर्मगाह से बाहर इज़ाल करना जाएज़ नहीं है, अगर औरत आज़ाद है तो उसकी इज़ाज़त



लेना जरूरी है और अगर वह किसी की बांदी हो तो उसके आका की इजाजत जरूरी है, हां अगर खुद अपनी बांदी है तो इजाजत लेने की जरूरत नहीं उसको खुद इख्तियार है। एक शख्स ने रसूलुल्लाह की खिदमत में हाजिर होकर अर्ज किया या रसूलुल्लाह मेरी एक बांदी है जो हमारी खिदमतगार भी है मैं उससे मुजामेअत करता हूं मगर उसका हामला होना मुझे पसंद नहीं है हुजूर ने इरशाद फरमाया अगर चाहो तो उजल कर लिया करो लेकिन जो उसके लिए मुकद्दर हो चुका है उस को जरूर मिलेगा।

## जिमाअ से परहेज

हैज व निफास की हालत में जिमाअ से परहेज करना चाहिए एक कौल के लिहाज से हैज का खून खत्म होने के बाद गुस्ल से पहले जिमाअ नहीं करना चाहिए और निफास की सूरत में निफास के चालीस रोज गुजरने से पहले अगर खून का आना बन्द हो गया है तब भी जिमाअ न करना मुस्तहब है, औरत को अगर गुस्ल के लिए पानी न मिले तो तयम्मूम कर ले। अगर हैज, निफास की इस मुददत के अन्दर जिमाअ किया तो एक रिवायत के ब मौजिब एक या निस्फ दीनार बतौर कफ़ारा ख़ैरात करे और दूसरी रिवायत के लिहाज से (कफ़ारा मुकर्रर नहीं है बल्कि) अल्लाह से तौबा और इस्तिग़फ़ार करे और आइन्दा ऐसा न करने का अहद करे।

औरत को ग़ैर मख़सूस मक़ाम में जिमाअ नहीं करना चाहिए, आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मलऊन है वह शख्स जो औरत से लिवातत करता है।

## औरत की ख़्वाहिशे जिमाअ

अगर मर्द को जिमाअ की ख़्वाहिश हो तो भी तर्क जिमाअ जाएज़ नहीं है क्योंकि इस मामला में औरत का भी हक़ है। और तर्क जिमाअ से औरत को ज़रूर पहुंचने का अंदेशा है क्योंकि औरत की ख़्वाहिश जिमाअ मर्द की ख़्वाहिश से बहुत ज्यादा होती है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ी यल्लाहो तआला अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया "औरत की ख़्वाहिशे जिमाअ मर्द की ख़्वाहिश (जिमाअ) से (99) दर्जा जाएद है मगर अल्लाह ने उस पर हया को मुसल्लत फ़रमा दिया है यह भी कहा गया है कि शहवत (ख़्वाहिशे जिमाअ) के दस हिस्से हैं नौ औरतों के लिए हैं और एक मर्दों के लिए। बग़ैर उज़्र के चार माह से ज्यादा औरत से अलग रहना जाएज़ नहीं अगर चार माह से ज्यादा मुदत गुज़र जाये तो औरत जुदाई का मुतालबा कर सकती है। अगर मर्द सफ़र में छः माह से ज्यादा रहे तो और औरत उसको वतन में वापस बुलाये और मर्द कुदरत रखने के बावजूद जाने से इन्कार करे उस सूरत में औरत हाकिम से तफ़रीक़ (अलाहिदगी)की ख़्वाहिश करे तो हाकिम दोनों में तफ़रीक़ करा दे।

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो ने जिहाद के सफ़र पर जाने वालों के लिए यही मुददत मुकर्रर फ़रमायी थी यानी चार माह सफ़र में रहे और चार माह घर पर रहे दो दो माह सफ़र में आमद व रफ़्त के रखे गये थे।

## बुराई से बचाव

अगर ग़ैर औरत को देखकर उसका हुस्न पसन्द आये (उसकी तरफ़ रग़बत हो) तो घर आकर अपनी बीवी से कुरबत करे ताकि जोशे शहवानी का हैजान खत्म हो जाये एक रिवायत



में आया है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया कि अगर किसी को कोई अजनबी औरत अच्छी लगे तो अपनी बीवी से कुरबत करे क्योंकि औरत की शक्ल में शैतान उसके सामने आने जाने लगता है। अगर अपनी बीवी न हो तो अल्लाह की तरफ रुजूअ करे और उसी से गुनाह से महफूज रखने की दरखास्त करे, शैतान मरदूद से उसी की पनाह मांगे।

## राज की बातों का बयान न करना

अपनी बीवी से जिमाअ करने की हालत व कैफियत का किसी से तजकिरा करना मर्द के लिए जाएज नहीं, न औरत के लिए जाएज है कि वह किसी दूसरी औरत से इसका जिक्र करे यह रज़ालत और छिछोरापन है अकलन व शरअन भी बुरा है हज़रत अबू हुसैरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हो से एक तवील हदीस मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मर्दों की तरफ मुतवज्जह हो कर फरमाया कि क्या तुम में कोई शख्स ऐसा है कि जो बीवी से जिमाअ करता है और दरवाज़ा बन्द कर लेता है और अपने ऊपर परदा डाल लेता है और अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक परदे में छुप जाता है, सहाबा किराम रज़ी अल्लाहो अन्हुम ने अर्ज किया जी हां या रसूलुल्लाह ऐसे लोग हैं, तब रसूलुल्लाह ने फरमाया क्या तुम में कोई ऐसा शख्स भी है कि जो अपने इस फेअल को लोगो में बयान करता फिरे कि मैंने ऐसा किया! वैसा किया। यह सुन कर लोग खामोश हो गये, इस के बाद हुजूर ने औरतों की तरफ मुतवज्जह होकर फरमाया क्या तुम में कोई औरत ऐसी है जो (इस राज को) बयान करती है औरतें खामोश रहीं लेकिन एक जवान औरत जानू के बल खड़े हो कर और आगे बढ़कर अर्ज किया कि या रसूलल्लाह ऐसी बातें मर्द भी करते हैं और औरतें भी करती हैं। तब आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो मर्द या औरतें ऐसी बातें करती हैं उनकी मिसाल ऐसी है कि जो एक शैतान एक शैतानिया से किसी गली में मिला और उससे जिमाअ कर लिया और लोग उनको देखते रहे खबरदार !! मर्दों की खुशबू वह है जिस की बू फैलती है रंग जाहिर नहीं होता और औरतों की खुशबू एक ऐसी चीज़ है जिस का रंग तो नुमाया होता है मगर बू नहीं फैलती।

## शौहर की इताअत गुज़ारी

अगर कोई मर्द अपनी बीवी को अपनी ख्वाहिश पूरी करने (जिमाअ) के लिए बुलाये और वह न माने तो वह अल्लाह की ना फरमान होगी और उस पर गुनाह होगा। हज़रत अबू हुसैरा रज़ी अल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो औरत अपने शौहर को उसके काम (जिमाअ) से रोक देती है उस पर दो कीरात गुनाह होता है और जो मर्द अपनी औरत की हाजत पूरी नहीं करता उस पर एक कीरात गुनाह होता है।

बाज़ हदीसों में वारिद है कि अगर शौहर अपनी हाजत पूरी करने के लिए औरत को बुलाये तो उसे फौरन आ जाना चाहिए ख्वाह वह तंवर पर ही क्यों न हो हज़रत अबू हुसैरा की रिवायत है कि हुजूर ने इरशाद फरमाया: अगर तुम में से कोई अपनी बीवी को बिस्तर पर बुलाये और वह न आये और मर्द तमाम रात ग़म व गुस्से में बसर करे तो फरिश्ते सुबह तक उस औरत पर लानत भेजते रहते हैं।



## शौहर का मरतबा

कैस बिन सअद रज़ियल्लाहो अन्हो का बयान है कि मैं हीरा गया वहां मैंने लोगों को देखा कि वह अपने बादशाह को सजदा करते हैं, जब मैं मदीना (मुनव्वरा) लौट कर आया और खिदमते गिरामी में हाज़िर हुआ तो मैंने कहा या रसूलल्लाह! आप तो सजदा किये जाने के ज्यादा मुस्तहिक है हुजूर ने इरशाद फरमाया बताओ कि अगर तुम मेरी कब्र की तरफ से गुज़रोगे तो क्या मेरी कब्र को सजदा करोगे? मैंने अर्ज किया कि नहीं! फरमाया तो ऐसी सूरत में मुझे भी सजदा न करो, फिर हुजूर ने फरमाया कि अगर मैं चाहता कि किसी को सजदा किया जाये तो औरतों को हुक्म देता कि वह अपने शौहरों को सजदा किया करें क्योंकि अल्लाह तआला ने औरतों पर मर्दों के बहुत से हुक्क मुकर्रर फरमाये हैं।

### औरतों के हुक्क

हकीम बिन माविया कुशैरी रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि मेरे वालिद ने आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ्त किया कि हम पर हमारी बीवीयों का क्या हक है? आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम खाना खाओ तो औरत को भी अपने साथ खिलाओ। तुम पहनो तो उसे भी पहनाओ। (मार से) उसके चेहरे को न बिगाड़ो उससे अलाहिदगी इख्तियार न करो अगर औरत नशूज (कुरबत और मुजामेअत से इन्कार) पर अड़ी हुई है या राजी भी हो तो झगड़े और नागवारी के साथ तो अब्बल शौहर उसे नसीहत करे अल्लाह के अज़ाब से डराये अगर वह फिर भी अपनी जिद पर कायम रहे तो ख्वाबगाह में उसको तन्हा छोड़ दें और (तीन रोज़ से कम तक) कलाम करना भी तर्क कर दे इस तरह अगर वह बाज़ आ जाये तो फब्बेहा वरना फिर उसको मारने का हक है लेकिन इस तरह कि ज़र्ब का निशान न उभरे दुर्रे या कोड़े न मारे क्योंकि औरत को मारने से गरज़ उस का हलाक करना नहीं है बल्कि मकसूद यह है कि वह सरताबी से बाज़ आ जाये और फरमा पजीर बन जाये अगर इस तरह भी वह बाज़ न आये तो फिर औरत अपने करावतदारों से एक शख्स और मर्द अपने अजीजों से एक शख्स को अपना वकील और पंच मुकर्रर कर ले और दोनों पंच मामला गौर करे और जैसा मसलेहत हो ख्वाह सुलह या तफरीके माल के साथ हो या बगैर माल के अपना फैसला दे दें उनका फैसला जौजेन के लिए कतई होगा। (दोनों को इस की तामील करनी होगी)

## दावते वलीमा

### दावते वलीमा कब करना चाहिए

शादी का वलीमा मुस्तहब है। सुन्नत यह है कि कम अज़ कम एक बकरी जिब्ह की जाये वलीमे में हर किस्म का खाना देना जायज़ है (यानी किसी खाने की तख्सीस नहीं है) अगर पहले दिन वलीमा की दावत दी जाये तो कबूल करना वाजिब है दूसरे दिन की दावत कबूल करना मुस्तहब है और तीसरे दिन मुबाह मगर तीसरे दिन की दावत कबूल करना एक तरह का सुबुकपन है।

कम अज़ कम एक बकरी जिब्ह करने की दलील यह है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि



वसल्लम ने हजरत अब्दुर्रहमान से फरमाया था कि वलीमा करो ख्वाह एक ही बकरी का हो हुजूर ने (इस सिलसिला में) यह भी फरमाया था कि अब्बल दिन वलीमा करना हक है दूसरे दिन वलीमा करना शोहरत और इसके बाद सुबकी का बाइस।

हजरत इब्ने उमर रजिअल्लाहो अन्हो से यह हदीस मरवी है कि हुजूर ने फरमाया कि जिस को शादी के दिन वलीमा की दावत दी जाये वह कबूल कर ले अगर रोजा न हो तो खाना खा ले और रोजादार हो तो बगैर खाये वापस चला आये। (शिरकत बहरहाल करे)

## निकाह में छुहारे लुटाना

निकाह के बाद छुहारे लुटाना मकरूह है क्योंकि इसमें छिछोरापन है कम जर्फी और सिफला पन का अन्दाज पाया जाता है लूट ही हिरसे नफस है इस लिए इससे बचना औला है और अजरूये तकवा व परहेजगारी इसको तर्क करना ही मुनासिब है मगर एक दूसरी रिवायत में इसको मकरूह नहीं बताया गया है क्योंकि रिवायत में आया है कि हुजूर ने एक ऊँट की कुरबानी फरमायी और गरीबों और मिसकीनों को बुला कर फरमाया जो चाहे इसका गोश्त काट कर ले जाये, निछावर में और इसमें कोई फर्क नहीं है सबसे बेहतर यह है कि हाजरीन में तकसीम कर दे इस लिए यह फेअल ज्यादा पसन्दीदा, निहायत हलाल और परहेजगाराना अमल है।

## निकाह का तरीका

### निकाह का तरीका और शरायत

निकाह के शरायत यह हैं कि पहले वली आदिल मौजूद हो, गवाह भी आदिल हो, जौजैन हम कुफू भी हो, कोई मुरतद न हो, औरत इद्दत में न हो, गरज कोई मानेअ न हो। निकाह करने वाला औरत से निकाह की रजामन्दी हासिल करे, बशर्ते कि उस पर जबर न किया गया हो यह शर्त इस सूरत में है कि औरत रांड हो या ऐसी बाकरा जिसका बाप जिन्दा न हो या उसके तरफदारो ने उसको महर की तादाद बता दी हो।

जब औरत इज्ज दे दे तो निकाह ख्वां खुतबा (निकाह) पढ़े और अल्लाह से खुद भी इस्तिगफोर करे मुस्तहब यह है कि औरत के वली से खुतबा पढ़वाया जाये फिर वली को चाहिए कि निकाह करने वाले से कहे कि मैंने अपनी लड़की की या बहन की (जैसी भी सूरत है) तेरे निकाह में दी है जिसका नाम यह है इसके बाद तय शुदा मिकदार महर की बताए उसके जवाब में नाकेह कहे कि मैंने यह निकाह कबूल किया, जो शख्स अरबी नहीं जानता उसका निकाह उसी की ज़बान (मादरी ज़बान) में पढ़ाया जाये। जो शख्स अच्छी तरह अरबी नहीं जानता निकाह के लिए उस का अरबी सीखना जरूरी है या नहीं इस सिलसिला में दो कौल हैं एक रिवायत है कि नाकेह को अरबी ज़बान सीखना लाज़िम है और दूसरी रिवायत में लाज़िम नहीं है।

### खुतबाए निकाह

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का खुतबा पढ़ना मुस्तहब है, एक रिवायत में आया है कि इमाम अहमद बिन हंबल निकाह की मजलिस में जाते और वहां हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का खुतबा नहीं पढ़ा जाता तो आप उस मजलिस को छोड़कर चले आते मुझे (साहबे गुनियतुत्तालिबीन)



हजरत इब्ने मसऊद का खुत्बा मुनदर्जा जैल सिलसिलए रिवायत से पहुंचा है।

शैख इमाम हिब्तुल्लाह बिन मुबारक बिन मूसा सकफी ने बगदाद में बहवालए काजी मुजफ्फर हिनाद बिन इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन नसर नस्फी बयान फरमाया काजी मुजफ्फर ने बहवालए काजी अबू उमर कासिम बिन जाफर बिन अब्दुल वाहिद हाशमी बसरी बयान फरमाया और काजी अबू उमर ने बहवालए मोहम्मद बिन अहमद लोलवी से और लोलवी ने बहवालए अबू दाऊद और अबू दाऊद ने बहवालए मोहम्मद बिन सुलैमान अंबारी मुफ्ती और मोहम्मद बिन सुलैमान बहवालए वकीअ और वकीअ ने इस्राफील से सुना और इस्राफील ने अबू इस्हाक से और अबू इस्हाक ने अबीइल हूस से बहवालए अबू ऊबैदा और अबू ऊबैदा ने बहवालए हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान किया। हजरत इब्ने मसऊद ने फरमाया कि रसूलुल्लाह ने हम को यह खुत्बा निकाह सिखाया।

**तर्जमा:**—अल्लाह के लिए ही तमाम तारीफें हैं, हम उसी की हम्द व सना करते हैं और उसी से मदद मांगते हैं और उसी से माफी चाहते हैं। अपने नफ़सों और अपनी बद आमालियों से उसकी पनाह मांगते हैं जिसको वह हिदायत कर दे उसको कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसको वह गुमराह छोड़ दे उसको राहे रास्त पर लाने वाला कोई नहीं है मैं शहादत देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूँ कि मोहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं ऐ लोगों अपने उस रब से डरो जिसने तुमको एक शख्स से पैदा किया उसी से उसके जोड़े को पैदा किया और दोनों से बहुत मर्द और औरतें पैदा कीं। और अल्लाह से डरो जिस के वास्ते से तुम से सवाल करते हो (रिश्ता मांगते हो) सिला रहमी के कलअ करने से बचते रहो बिला शुबा अल्लाह तुम्हारा निगरा है ऐ अहले ईमान अल्लाह से डरो और पक्की बात कहो अल्लाह तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिये दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ फरमा देगा जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानेगा उसको बड़ी कामयाबी हासिल होगी।

मुस्तहब है कि इसके बाद यह पढ़े

अपनी रान्डो और नेककार, गुलामी और बांदियों का निकाह कर दो अगर वह मिसकीन वफादार हैं तो अल्लाह अपने फज़ल से उनको गनी कर देगा अल्लाह बड़ी कशार्इश वाला है और ख़ूब जानने वाला है वह जिस को चाहता है बेहिसाब रिज़क़ देता है।

इस मज़कूरा खुत्बा के अलावा अगर कोई यह खुत्बा पढ़े तो इसका पढ़ना भी जाएज़ है।

अल्लाह तआला के लिए सना है जो अपने इनामात में यगाना व यकता और बख़्शिश में बड़ा सखी है अपने नामों से मुमताज़ है अपनी बुजुर्गी में यकता व अकेला है बयान करने वाले उस की शान बयान नहीं कर सकते और ना उसकी सिफात का इज़हार करने वाले हक्के नअत अदा कर सकते हैं। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह वाहिद बेनियाज़ है वही माबूद है उसके मिस्ल कोई चीज़ नहीं, वह ख़ूब सुनता और देखता है, बा बरकत है वह अल्लाह जो ग़ालिब है और गुनाहों का बख़्शाने वाला है उसने मुहम्मद को बरहक़ बरगुज़ीदा और ख़राबियों से पाक नबी बना कर भेजा, आप रौशन चिराग़ और चमकता दमकता नूर थे आप ने वह पैग़ाम पहुंचा दिया जिसके पहुंचाने के लिए आप भेजे गए थे। आप पर और उनकी तमाम आल पर दरूद व सलाम हो। यह तमाम उमूर अल्लाह के हाथ में हैं। वही उनके रास्तों पर उन को चलाता और मुनासिब मक़ामात जारी फ़रमाता है वह जिस चीज़ को पीछे कर दे उसको कोई आगे बढ़ाने वाला नहीं है और जिस चीज़ को आगे कर दे उसको कोई पीछे करने वाला नहीं है बग़ैर अल्लाह के हुक्म



और तकदीर के दो भी जमा नहीं हो सकते हर फैसले का पहले से अन्दाज़ा है और हर अन्दाज़े की एक मुद्दत लिखी हुई है अल्लाह जिस तहरीर को चाहता है मिटा देता है जिसको चाहता है बाकी रखता है उसी के पास असल किताब है।

खुत्बा पढ़ने के बाद कहे कि अल्लाह के हुक्म और उस के कज़ा व क़द्र के मुताबिक़ फ़लां बिन फ़लां (नाम ले) तुम्हारी खातून (बहन या बेटी) से निकाह करना चाहता है और बरग़बते खातिर तुम्हारी इस खातून से निकाह करने आया है यह मुकर्ररा महर भी अदा कर चुका है पस तुम इस दरख़्वास्त गुज़ार से जो निकाह का तालिब है निकाह कर दो। अल्लाह तआला का इरशाद है:

**तर्जमा:**—तुम अपनी रांडों, गुलामों और बांदियों में से जो नेक हैं उनका निकाह कर दो अगर वह मोहताज हैं तो अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से उन्हें मालदार कर देगा यकीनन अल्लाह कशाईश वाला और जानने वाला है।

खुत्बा से फ़ारिग़ होने के बाद मज़कूरा बाला तरीक़े निकाह बांध दे।

अब



# बाब 6

## भलाई का हुक्म

## और

## बुराई की मुमानिअत

अल अम्र बिल मारुफ़ वन्नही अनिल मुनकर

अवामिर व नवाही

अल्लाह तआला ने अपनी किताब में भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने वालों जिक्र किया है और उनकी तारीफ़ इस तरह फ़रमाई है:

**तर्जमा:**—भलाई का हुक्म देने वाले, बुराई से रोकने वाले ही अल्लाह की कायम करदा हुदूद की निगरानी करने वाले हैं।

दूसरी आयत में इस तरह इरशादे बारी है।

**तर्जमा:**—तुम लोगों की हिदायत के लिये बेहतरीन ग़रोह बनाकर भेजे गये हो भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।

एक और आयत में इस तरह फ़रमाया गया है।

**तर्जमा:**—मोमिन मर्द और मोमिन औरतें बाहम एक दूसरे के दोस्त हैं भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं।

एक रिवायत में आया है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तुम कतअन भलाई का हुक्म दो और बुरी बातों की मुमानिअत करो वरना अल्लाह तआला तुम्हारे नेकों पर तुम्हारे बुरों को ज़रूर मुसल्लत कर देगा। फिर नेक लोग दुआ करेंगे मगर उनकी दुआ कबूल नहीं होगी।

हज़रत सालिम अबदुल्लाह हज़रत उमर से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया है अच्छी बातों का हुक्म दो और बुरी बातों से रोको कबूल अर्जी कि तुम्हारे नेक लोगों की दुआयें कबूल न हों और तुम इस्तिग़फ़ार करो मगर तुम्हें माफ़ न किया जाए, ख़ूब समझ लो कि अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना न रिज़्क को दूर करता है न उम्र की मुदत कम करता है ख़ूब सून लो यहूदी उलमा और इसाई आबिदों ने नेकी का हुक्म देना और बदी से रोकना जब तर्क कर दिया तो अल्लाह तआला ने उन के पैग़म्बरों की ज़बान से उन पर लानत भेजी और सब को मुसीबत में डाल दिया।

हर मुसलमान आजाद, आकिल, बालिग़ पर जो मारुफ़ और मुनकर से वाकिफ़ हो (यानी



आलिम हो) लाजिम है कि लोगों को अच्छी और नेक बातों का हुक्म दे और बुरी बातों से रोके अगर मना करने की ताकत रखता हो और ऐसा करने से कोई बिगाड़ और फसाद पैदाना हों जिससे उसके माल या उसके अहल व अयाल को कोई नुकसान पहुंचे। इन अहकाम को पहुंचाने के लिए कोई तखसीस नहीं हाकिम हो या आलिम खलीफा (हाकिमे वक्त) हो या आलिम रईयत का कोई फर्द हो हमने बदी के साथ इल्म और उसके कतई तौर पर आगाही का जो शर्त लगायी है उस की बुनियाद यह है कि बगैर इल्म गुनाह में मुब्तला हो जाने का अंदेशा है इस लिए कि बदी करने वाला महफूज़ नहीं कि उसने जो गुमान किया है मुमकिन है कि हकीकत उसके खिलाफ हो। अल्लाह तआला का इरशाद है मुसलमानों! बहुत बद गुमानी करने से बचो बेशक बाज़ बद गुमानी गुनाह है।

अल्लाह तआला का इरशाद है

तर्जमा:—ऐ ईमान वालों बहुत बदगुमानी से बचो बेशक बाज़ बदगुमानी गुनाह है।

## पर्दादरी

किसी पर जो बात पोशीदा है उस का इजहार उस पर वाजिब नहीं क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद है: टोह में मत रहा करो। बदी से रोकने वाले का फर्ज है कि जो बदी जाहिर में हो सिर्फ उसी को दूर करे और उसे तर्क करने की तलकीन करे, जो बदी पोशीदा है उसे पर्दे ही में रहने दे।

## मना करने पर कुदरत

नेकी का हुक्म करने के लिए ताकत की शर्त इस लिए लगायी गयी है कि रसूलुल्लाह का इरशाद है: अगर किसी कौम में कोई शख्स गुनाह कर रहा है और लोग उसके बदलने की कुदरत रखते हों और उसको न बदलें (न रोकें) तो अल्लाह तआला की तरफ से तौबा करने से पहले ही अज़ाब नाज़िल हो जाता है। इस हदीस में आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने कुदरत व ताकत की कैद (शर्त) लगायी है और कुदरत उस वक्त हासिल होती है जब नेक लोगों (अहले सलाह) का ग़लबा हो, हाकिम आदिल हो और अहले ख़ैर की मदद भी हासिल हो लेकिन ऐसी हालत में जब कि जान का ख़तरा हो या माल का ज़रर हो तो बाज़दाश्त वाजिब नहीं है।

अल्लाह तआला का इरशाद है :

तर्जमा:—अपने हाथों से अपने आपको हलाकत में न डालो।

दूसरी आयत में है:

तर्जमा:—खुदकुशी न करो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अपने आप को बेइज़्जत करना मोमिन के लिए ज़ेबा नहीं। सहाबा कराम ने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह कोई खुद अपने को कैसे बेइज़्जत करता है? फ़रमाया ऐसी बात के दर पै न हो जिस की उसको ताकत न हो। हुज़ूर ने यह भी इरशाद फ़रमाया है। जब तुम ऐसी बात देखो जिस के बदलने पर तुम कादिर न हो तो तुम सब्र करो यहां तक कि अल्लाह तआला ही उसे बदल दे, क्योंकि वही उसे बदल सकता है।



पस जब किसी पर यह साबित हो जाये कि मना करने की कुदरत नहीं रखता तो उस पर मना करना वाजिब नहीं, खौफ़ के गालिब होने पर यह सोचना कि मना करना जायज़ है या नहीं। तो हमारे नज़दीक मना करना जायज़ है बल्कि अगर मानेअ उलूल अज़्म और साबिर है तो और अच्छा है कि इस सूरत में मना करना जिहाद की तरह है। अल्लाह तआला ने लुकमान के किस्से में फरमाया है।

**तर्जमा:**—अच्छाई का हुक्म दो, बुरी बात से रोको और जो कुछ तुम को दुख पहुंचे उस पर सब्र करो।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू हुरैरा को हुक्म दिया: ऐ अबू हुरैरा! नेकी का हुक्म करो और बदी से बाज़ रखो और जो मुसीबत आये उस पर सब्र करो। जाबिर हाकिम के सामने या कलिमए कुफ़ के ग़लबा के वक्त ईमान का कलिमा ज़बान पर लाना रवा है इन दोनों मकामात पर इज़हारे हक़ करने पर फुक़हा का इत्तेफ़ाक़ है इख़तेलाफ़ के मवाक़ेअ इससे अलग हैं।

## मना करने वालों के गरोह

अम्र मुनकर से रोकने वाले तीन किस्म के होते हैं (यह तीन गरोह हैं) अब्दुल बादशाह और हाकिम जो मना करने की ताक़त और कुदरत रखते हैं (2) जबान से मना करने वाले यह उलमा होते हैं (3) दिल से बुरा जानने वाले यह आम लोग हैं। हज़रत अबू सईद खुदरी रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अगर तुममें से कोई शख्स ख़िलाफ़े शरअ बात देखे तो उसे हाथ से रोक दे ऐसा न कर सके तो ज़बान से उसको रोके और अगर ऐसा भी न कर सके तो दिल से उसे बुरा जाने यह जईफ़ तरीन ईमान है (ईमान का कमज़ोर तरीन पहलू) बाज़ सहाबा का कौल है कि अगर कोई शख्स कोई अम्र ममनूअ देरे और उसको रोकने (मना) की ताक़त न रखता हो तो तीन मरतबा कहे: इलाही बिला शुबा यह बुरा काम है अगर ऐसा कह देगा तो अम्र बिल मारुफ़ और नही अनिल मुनकर का सवाब उसको मिलेगा।

## जन्ने गालिब

अगर इस बात का गुमान गालिब है कि मना करने से भी बुराई दूर न होगी और बुराई करने वाला उस पर जमा रहेगा तो ऐसी सूरत में उसे मना करना चाहिए कि नहीं? इस सिलसिला में इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैहि से दो कौल मरवी हैं एक से वुजूब साबित है क्योंकि मुमकिन है मना करने से वह बाज़ आ जाये उसके दिल में नरमी पैदा हो जाये उसको अल्लाह की तरफ़ से तौफीक़ मिल जाये, मना करने वाले की सच्चाई की बरकत से उसको हिदायत मिल जाये और वह अपने बुरे अमल से बाज़ आ जाये पस गुमान मना करने की राह में हाएल नहीं।

दूसरी रिवायत में है कि जब तक इस बात का यकीने कामिल न हो कि मना करने से बुराई दूर हो जायेगी उस वक्त तक मना करना वाजिब नहीं क्योंकि रोकने का मक़सद ही यह है कि बुराई दूर हो जाये पस अगर कवी गुमान है कि बुराई दूर न होगी तो तर्क नसीहत औला है।

## अम्र बिल मारुफ़ और नही अनिल मुनकर की शरायत

अम्र बिल मारुफ़ और नही अनिल मुनकर की शरायत पांच हैं।



1-जिस नेकी का हुक्म करता है और जिस बदी से रोकता है उसका खुद आलिम हो  
 2-अल्लाह की खुशनूदी हासिल करने दीन को कवी करने और अल्लाह का बोल बाला करने के लिए हो दिखावट, शोहरत और अपने नफ्स की बेजा तारीफ मकसूद न हो अगर मना करने वाला सच्चा और मुखलिस होगा तो अल्लाह की तरफ से उसकी मदद होगी तौफीके खुदावन्दी शामिले हाल होगी। अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि: अगर तुम अल्लाह के दीन की हिमायत करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे कदमों को जमा देगा। फिर इरशाद फरमाया अल्लाह परहेजगारों और एहसान करने वालों की मदद करता है लिहाजा पस जब तुम शिर्क से बचोगे और इससे बाज रखने में लोगों का दिखावा छोड़ दोगे और इखलास के साथ अमल करोगे तो तुमको कामयाबी हासिल होगी इसके बर अक्स किया तो बेइज्जती, रूसवाई, जग हसाई और बुराई अला हालेही बाकी रहेगी बल्कि इसमें बराबर इजाफा होता रहेगा, उसका ग़लबा होगा और अहले मआसी उसकी तरफ दौड़ेंगे। अल्लाह तआला की मुखालिफत, ना फरमानी, ममनूआत के इरतिकाब पर जिन्न व इन्स के शयातीन इत्तेफाक करेंगे।

3-अम्र व नही नरमी और मोहब्बत के साथ हो, बद खुल्की और सख्ती के साथ न हो ताकि नेक मकसद हासिल हो और बुराई करने वाले को शैतान के चंगुल से आजादी हासिल हो जो ख की ना फरमानी को उस की नज़र में आरास्ता कर के लाया और बुराई करने वाले की आंखों पर पर्दा डाल दिया। इससे शैतान का मकसद सिर्फ यह था कि उस गुनहगार को तबाह कर दे और दोज़ख में पहुंचा दे अल्लाह तआला का इरशाद है। शैतान अपने गरोह वालों को दावत देता है कि वह दोज़खी हो जायें।

अल्लाह तआला आंहरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खिताब करके फरमाता है:-

अल्लाह की कितनी रहमत है कि आप उनके लिए नर्म दिल हैं और अगर आप बदखुल्क और सख्त दिल होते तो यकीनन यह लोग आप के गिर्द व पेश से परागन्दा हो जाते हैं।

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमस्सलाम को पैग़म्बर बना कर फिरऔन के पास भेजा तो फरमाया।

इससे नरमी से बात करना शायद वह नसीहत कबूल कर ले या (या अल्लाह की ना फरमानी से) डर जाये।

हज़रत ओसामा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हों की रिवायत करदा हदीस में है हुज़ूर ने फरमाया कि जब तक किसी में यह तीन बातें न हों, अच्छाई का हुक्म देना और बुरी बातों से रोकना उसके लिए ज़ेबा नहीं। वह तीन खसलतें यह हैं कि जिस बात का हुक्म करे खुद उस का आमिल हो, जिस बुरी बात से मना करे उस से अच्छी तरह वाकिफ़ हो और जो कुछ कहे नरमी और शफ़क़त के साथ कहे।

4-अम्र व नही नरमी के साथ करे, वह साबिर हो, बुर्दबार कुव्वते बर्दाश्त का मालिक हो, मुतवाज़ेअ खुश खुल्क और नर्म मिज़ाज का मालिक हो, अपनी नफ्सानी ख्वाहिशात पर काबू रखता हो, तबीब हो ताकि बीमार का इलाज कर सके, दानिशमन्द होता कि उसकी दीवानगी दूर कर सके, पेशवा और रहनुमा हो। अल्लाह तआला का इरशाद है कि हम ने एक जमाअत बनाई जो हमारे हुक्म के मुताबिक़ करती है।



**तर्जमा:**—जब उन्होंने अपनी कौम की अजीयतों के बरदाश्त करने पर अल्लाह के दीन की नुसरत और उसके ग़लबा और उस पर कायम रहने की खातिर सब्र किया तो अल्लाह ने उनको रहनुमा हिदायत करने वाले, दीन के हकीम और मोमिनों का सरदार बनाया।

हज़रत लुक़्मान के किस्से में अल्लाह तआला फ़रमाया कि: अच्छे काम का हुक्म दे, बुरी बात से रोक, जो कुछ तुझे (उसके बदले में) दुख पहुंचे उस पर सब्र कर यह बड़े हौसला का काम है।

5—जिस नेक काम की तलकीन करे खुद भी उस पर कारबन्द हो और जिस मुनहयात (ममनूआत) से दूसरों को रोके खुद भी उनसे बचे ताकि दूसरे लोग अपने फ़ेअल के लिए उसको दलील न बनाए और वह अल्लाह के नज़दीक ज़लील और काबिले मलामत न ठहरे।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

तुम दूसरों को नेकी का हुक्म देते हो मगर अपने आप को भूल जाते हो हालांकि तुम किताब (इलाही) पढ़ते हो क्या इतना भी नहीं समझते?

हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत कर्दा हदीस में आया है कि हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मैंने शबे मेराज में कुछ लोग देखे जिनके होंठ कैंचियों से काटे जा रहे थे, मैंने जिब्रील से कहा कि यह कौन लोग हैं? जिब्रील ने कहा कि यह आप की उम्मत के ख़तीब हैं जो दूसरों को नेकी का हुक्म देते थे मगर अपने आप को भूल जाते थे हालांकि वह किताब (इलाही) पढ़ते थे।

एक शायर का कौल है

जिस बात को तू खुद करता है उससे दूसरों को न रोक

अगर ऐसा करेगा तो तेरे लिए बड़ी शर्म की बात होगी

हज़रत कतादा फ़रमाते हैं कि एक मरतबा लोगों ने मुझ से कहा कि तौरैत में आया है कि ऐ आदम के बेटे तू मुझे याद दिलाता है और खुद को भूल जाता है, दूसरों को मेरी तरफ़ बुलाता है और खुद मुझसे भागता है तेरा यह डराना बेकार है इस आखिरी फ़ेकरे से मुराद यह है कि जो दूसरों को अच्छे काम करने का हुक्म देता है और बुरी बात से रोकता है मगर अपनी जात को छोड़ देता है उसका यह नसीहत करना बेकार है अल्लाह तआला बुजुर्ग व बरतर है इसे खूब जानता है।

## अम्र व नही तन्हाई में करना बेहतर है

अगर मुमकिन हो तो अम्र व नही तन्हाई में करे क्योंकि तन्हाई में नसीहत का दिल पर ज़्यादा असर होता है और आदमी बुरी बातों से बच जाता है। हज़रत अबू दरदा फ़रमाते हैं कि जो शख्स किसी को अलाहदगी में नसीहत करता है वह उसे संवारता है और जो लोगों के सामने नसीहत करता है वह गोया उसका ऐब बयान करता है।

अगर अलाहदगी में नसीहत करने का असर न हो तो ऐसे शख्स से खुल्लम खुल्ला नसीहत करना चाहिए और इस सिलसिला में दूसरे लोगों से भी मदद ले, अगर यह सूरत भी कारगर न हो तो फिर हुक्मत के आदमियों से मदद ले बहरहाल ग़ैर मशरूअ कामों से मना करने का काम किसी तरह न छोड़े। जिस कौम ने यह रोक टोक ख़त्म कर दी और इस की तरफ़ से गाफ़िल



गुनियतुत्तालिबीन

हो गयी अल्लाह ने उसकी मजम्मत की है। फरमाया है कि जो लोग बुरे काम करते थे उनसे एक दूसरे को नहीं रोकते थे वह यह बुरी हरकत करते थे।

**तर्जमा:**—जो लोग बुरे काम करते थे और आपस में एक दूसरे को मना नहीं करते थे वह बहुत ही बुरा काम करते थे। दूसरी आयत में इरशाद फरमाया है।

दरवेशों और आलिमों ने लोगों को झूठ बोलने और हराम खाने से मना क्यों नहीं किया, उनका ऐसा करना बहुत ही बुरा और कबीह था।

यानी उलमा, मशाइख और वाएजो ने इनको बेहयाई की बातें कहने, हराम खाने और गुनाह के काम करने से क्यों नहीं रोका?

रिवायत यह है कि अल्लाह तआला ने हजरत यूशअ बिन नून पर वही नाज़िल फरमायी कि "मैं तुम्हारी कौम में से चालीस हजार नेकों और साठ हजार बदी करने वालों को हलाक करूंगा" हजरत यूशअ बिन नून ने अर्ज किया, बुरे तो खैर अपने किये की सज़ा पाते हैं लेकिन नेकों को हलाक करने की क्या वजह है? अल्लाह तआला ने फरमाया कि इस लिए कि मेरी नाराज़गी पर नाराज़ नहीं हुए और बदों के साथ खाने पीने में बराबर शरीक रहे।

## पांचवीं शर्त की मज़ीद तौज़ीह व तशरीह

हम ने तबलीग के सिलसिला में पांचवीं शर्त के तहत बयान किया है कि बुराई से रोकने और नेकी की हिदायत करने वालों के लिए ज़रूरी है कि खुद भी वह उन नेकियों का हामिल हों जिनकी वह तबलीग करते हैं लेकिन हमारे बुजुर्गों और मशाइख का कहना है कि अम्र बिल मारुफ व नही अनिल मुनकर हर शख्स पर वाज़िब है ख़्वाह वह फासिक हो सालेहुल आमाल!! इसके बारे में साबिका आयात व अहादीस में जो उमूम बिला तफ़रीक आया है यानी आम हुक्म दिया गया है उस हुक्म के सबूत में यह बुजुर्ग यह आयत पेश करते हैं

**तर्जमा:**—बाज़ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह तआला की रज़ा के लिए अपनी जानें बेच देते हैं। हजरत उमर रज़ि अल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि एक शख्स यह आयत पढ़ रहा था मैंने कहा कि हम सब अल्लाह के लिए हैं और उस की तरफ लौटने वाले हैं एक आदमी उठा और अम्र बिल मारुफ और नही अनिल मुनकर करने लगा उसे उसी वक्त शहीद कर दिया गया।

अबू उमामा फरमाते हैं कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लिम ने "बेहतरीन जिहाद" ज़ालिम, हाकिम, बादशाह के सामने हक बात कहना कहा है हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि हुज़ूर ने फरमाया: "कयामत के दिन तमाम शहीदों में अफज़ल हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब होंगे और वह आदमी होगा जिस ने एक ज़ालिम बादशाह के सामने खड़े हो कर उसको भलाई का हुक्म दिया और बुराई से रोका और बादशाह ने उसको क़त्ल करा दिया। जिस शख्स को बुरे कामों से रोका जाये और वह उसरो बाज़ न आये तो ऐसे शख्स के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है:

**तर्जमा:**—वह है जो बुराई से रूकता है और उसे इज़्ज़त पकड़ लेती है मगर बाज़ नहीं रहता एक और आयत में इरशाद है।

**तर्जमा:**—और जब उस से कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उसे इज़्ज़त, गुनाह के साथ पकड़ ले।

हजरत इब्ने मसअूद फरमाते हैं अल्लाह के नज़दीक सब से बड़ा गुनाह यह है कि किसी बन्दे



से कहा जाए कि अल्लाह से डरो और वह जवाब दे कि तुम अपनी तो खबर लो यह हुक्म सब के लिए आम है।

हजतर अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अच्छी बात का हुक्म दो ख्वाह खुद अमल न किया हो और बुरी बात से रोको ख्वाह खुद न रूके हो क्योंकि कोई शख्स गुनाह से खाली नहीं है ख्वाह वह मअसियत जाहिर में हो या बातिन में। लिहाजा अगर हम यह कहें कि बराई की मजम्मत का हक सिर्फ उसी को है जो बुराई से इजतेनाब करता है तो अम्र बिल मारुफ व नही अनिल मुनकर दुश्वार हो जाएगा इस तरह नसीहत करने का हुक्म ही मिट जाएगा और नाबूद हो जाएगा।

## नेक व बद आमाल

जो बात किताब (कुरआन) व सुन्नत (अहदीस) और अक्ल के मवाफिक हो वह मारुफ (अच्छी) है और जो बात उसके खिलाफ हो वह मुनकर है और बदी है मारुफ व मुनकर की दो किस्में हैं एक वह जिसका वजूब या हुरमत अवाम व ख्वास सब जानते हैं जैसे पांचों वक्त की नमाज़, रमज़ान के रोजे, जकात, हज वगैरह की फरज़ीयत इस सब से वाकिफ हैं और जिना शराब नोशी, चोरी, रहज़नी, सूद ख्वारी, डाका ज़नी की हुरमत (हराम होना) ऐसे गुनाहों से रोकना अवाम की जिम्मा भी उसी तरह है जैसे ख्वास के जिम्मे।

दूसरी किस्म वह है जिसे ख्वास के सिवा अवाम नहीं जानते मसलन उन बातों पर एतकाद जो बारी तआला के बारे में जाइज़ और ना जाइज़ हैं। इस किस्म में अम्र बिल मारुफ ख्वास उलमा का काम है और उनमें जो ममनूआत हैं अगर कोई आलिम अवाम को उनसे मना करे तो उन्हें अच्छी तरह खबरदार कर दे। आम आदमी को लाज़िम है अगर वह कुदरत रखता है तो उस से बाज़ रहे, आम आदमी को जाइज़ नहीं कि आलिम से मालूमात हासिल करने से पहले ऐसे उमूर का रद या इनकार करे।

जिन उमूर में उलमा और फुक्हा का इखतलाफ है और इजतेहाद की गुंजाइश हो उनका रद या इनकार भी जाइज़ नहीं जैसे इमाम अबू हनीफ़ा के मुकल्लिद का तहबन्द पहनना और बगैर वली के औरत का निकाह करना जैसा कि इमाम अबू हनीफ़ा के मज़हब का मशहूर मसलक है तो इमाम अहमद और इमाम शाफ़ई के मुकल्लिद के लिए इसके खिलाफ आवाज़ उठाना जाइज़ नहीं। इमाम अहमद फरमाते हैं की किसी फ़कीह के लिए जाइज़ नहीं है कि वह लोगों को अपने मज़हब पर उभारे और (इस सिलसिला में) उन पर सख्ती करे। हकीकत में मुख़ालफ़त की आवाज़ सिर्फ इस सूरत में उठाना दुरुस्त है जब इजमाअ (उलमा) के खिलाफ हो रहा हो इमाम अहमद फरमाते हैं कि मुख़तलिफ़ फ़ीह मसाइल में मना करना जाइज़ है। इस सिलसिला में मैमूनी की रिवायत में आया है कि अगर कुछ लोग शतरंज खेल रहे हों और कोई शख्स उधर से गुज़रे तो उनको मना करे और रोके और जाहिर है कि इमाम शाफ़ई के नज़दीक शतरंज खेलना जाइज़ है।

## मना करने के आदाब

हर मोमिन पर वाजिब है कि बहरहाल आदाबे मज़कूरा पर अमल करे और तर्क न करे। मरवी



है कि अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर रजियल्लाहो अन्हो ने फरमाया है पहले बा अदब हो जाओ फिर इल्म हासिल करो। अबू अब्दुल्लाह बलखी फरमाते हैं कि अदब पहले इल्म बाद में। अब्दुल्लाह बिन मुबारक फरमाते हैं कि जब मुझ स बयान किया जाता है कि फलां आलिम को तमाम अगलों और पिछलों के बराबर इल्म है तो मुझे उससे मुलाकात न होने का अफसोस नहीं होता है लेकिन अगर मुझे मालूम हो कि फलां शख्स को अदबे नफ्स हासिल है तो मुझे उससे मिलने की आरजू होती है और मुलाकात न होने का अफसोस।

इस मौका पर एक मिसाल पेश की जाती है। एक शहर है जिसके पांच किले हैं एक सोने का, दूसरा चांदी का, तीसरा लोहे का, चौथा पुख्ता ईंटों का और पांचवां कच्ची ईंटों का। जब तक हिसार वाले कच्ची ईंटों के किला की हिफाजत करेंगे तब तक दुश्मन दूसरे किलों की तरफ रागिब नहीं होगा लेकिन अगर अहले किला उसकी हिफाजत छोड़ देंगे तब दुश्मन दूसरे किलों की लालच करने लगेगा यहां तक की सारे किलों को वीरान कर देगा। यही मिसाल ईमान की है। इस के पांच किले हैं। पहला किला यकीन का है, दूसरा इखलास का, तीसरा फराइज का, चौथा ईमान व सुनन का और आखिरी किला हिफज आदाब व (मुस्तहब्बात की पाबन्दी) का। जब बन्दा मुस्तहब्बात (आदाब) की पाबन्दी तर्क कर देगा तब शैतान सुनन व ईमान, फिर फराइज फिर इखलास और फिर यकीन पर हमला कर देगा। लिहाजा हर मुसलमान के लिए जरूरी है कि वह वुजू, नमाज, खरीद व फरोख्त गरज हर बात में मुस्तहब (आदाब) का पाबन्द रहे।

(मुनदर्जा बाला सतूर में) हमने अपनी मुराद, अपने पसंदीदा मकसद और आदाबे शरीयत का खुलासा बयान कर दिया। (इस मौजू पर) हमारे बयान का आखिरी हिस्सा यही है पांचो इबादतों के जुमला अहकाम की तामील से हर मुसलमान पक्का मुसलमान बन जाता है और इन आदाब को एख्तियार करने से सुन्नत का पैरो और आसारे सल्फ ताबेअ बन जाता है और इस सूरत में उसको कुछ मारफत हासिल हो जाती है। बकिया मारफत सानेअ का ताल्लुक तो कलबी आमाल से है और इन (कलबी आमाल) का जिक्र हमने आखिर (मजमून) में इस लिए किया है कि दीने इस्लाम में दाखिल होने में दुश्वारी न हो। इंसान जब जाहिरी तौर पर इस्लाम का लिबास पहन लेगा तो फिर हम उससे नूरे ईमान का बातिनी लिबास पहनने के लिए कहेंगे (मारफते खालिक के लिए कलबी आमाल के लिए रुजू करेंगे)

## सानेअ आलम की मारफत

आयात और दलाइल की रौशनी में इखतेसार के साथ अल्लाह तआला की मारफत यह है कि इन चीजों की यकीन और उन की मारफत हासिल हो कि अल्लाह एक ही है, अकेला है, तन्हा है, बाप नहीं, बेटा नहीं, उसका कोई हमसर नहीं, कोई चीज उसकी मिसाल नहीं, वह समीअ है बसीर है, न उसकी कोई नजीर है न कोई उसका मददगार है और न कोई शरीक, न कोई पुश्त पनाह है और न कोई उसका वजीर है, कोई बराबर का मुखालिफ नहीं, कोई सलाहकार नहीं वह जिस्म नहीं जिसे छुआ जा सके, जौहर नहीं कि उसे समझा जाये अरज नहीं कि उसको जिस्म की एहतियाज हो न उसके अजजा है न जराये, न तालीफ, है न माहीयत है, न हद है।



## हम्द व सना

वही अल्लाह है जिसने आसमान को ऊंचा किया और ज़मीन को बिछाया, न वह तबीयत आम्मा है, न तालेअ है, न वह हर चीज़ पर छा जाने वाला अंधेरा है और न जगमगाती रौशनी है, उसको हर चीज़ का इल्म हुजूरी हासिल है, छूये बगैर वह हर चीज़ का मुशाहिदा करता है, गालिब है तसल्लुत वाला है और सब पर हाकिम व कादिर है, रहमत करने वाला गुनाहों को बख़्शाने वाला है और पर्दापोश है, वही इज़्ज़त देता है, वही मदद करता है बहुत मेहरबान है, ख़ालिफ़ है, नीस्त से हस्त करने वाला है सबसे अब्बल है और सब से आखिर है, ज़ाहिर भी है और बातिन भी अकेला है, वही माबूद है, ऐसा जिंदा है जो मरने वाला नहीं बल्कि हमेशा रहने वाला है उसे फ़ना नहीं उसकी बादशाहत हमेशा से कायम है हमेशा से है और हमेशा रहेगा, सबको थामने वाला है, सोता नहीं, ऐसा कुव्वत वाला जिसे कोई ज़रर नहीं पहुंचा सकता वह मज़बूत है उसे काबू में नहीं किया जा सकता है, उसके अज़मत वाले नाम हैं, ज़्यादा अता करने वाला है, उसने तमाम मख़लूक को फ़ना होने का फैसला कर दिया और फ़रमाया

**तर्जमा:**—आसमान व ज़मीन पर जो कुछ है फ़ना होने वाला है सिर्फ़ तुम्हारे इज़्ज़त व करामत वाले खुदा की ज़ात बाकी रहेगी, वह बा इतबार उलू मुस्तवीर अर्श है। सारे आलम को उसकी ज़ात ने अपने अन्दर समो रखा है, उस का इल्म हर शय पर मुहीत है पाकीज़ा कलिमात उसी की तरफ़ चढ़ते हैं, पाकीज़ा अमल उनको ऊपर उठाते हैं। आसमान से ज़मीन तक हर अन्न की तदबीर करता है फिर हर एक चीज़ ऐसे एक दिन में जिसकी तादाद तुम्हारी गिनती के लिहाज़ से हजार बरस के बराबर होगी उसी की तरफ़ लौट जायेगी, उसने तमाम मख़लूक को और उनके अफ़आल को पैदा किया उनके रिज़्क और उनके हयात की मुददत मुकर्रर फ़रमायी, जिस चीज़ को उसने पीछे किया उसको कोई आगे और जिस को आगे किया है उसको कोई पीछे करने वाला नहीं है वही सारी दुनिया और उसके कामों का इरादा करता है अगर वह उनको ना फ़रमानी से बचाना चाहता तो कोई उसके इरादे की मुख़ालिफ़त नहीं कर सकता था और अगर चाहता कि सब उस के फ़रमा बरदार बन जाये तो सब फ़रमा बरदार हो जाते वह छुपी हुई और पोशीदा बातों को जानने वाला है, वह दिलों के भेदों से वाकिफ़ है, जिसको उसने खुद पैदा किया है भला वह उससे किस तरह से वाकिफ़ न होगा। वह बड़ा ख़बरदार बारीक बी है। वही हरकत देने वाला और ठहराने वाला है हम उसका तसव्वुर नहीं कर सकते और न ज़ेहन में उसका अन्दाज़ा कर सकते हैं।

उसका क़यास इंसानों पर नहीं किया जा सकता जिस चीज़ को उसने खुद बनाया उसके साथ मुशाबेहत से वह पाक है वह इस बात से बरतर है कि जिस चीज़ को उसने ईजाद किया और आलमे नीस्ती से आलमे हस्त में लाया उससे उसकी निस्बत की जाये। हर शख्स जो कुछ करता है वह उस पर काबू और कुदरत रखता है सबको उसने अपने इल्म के इहाता में रखा है और उसके शुमार में हैं।

हर एक क़यामत के दिन उसके सामने तन्हा जायेगा ताकि हर एक को उसकी सई का बदला मिल जाये, क़यामत की गरज़ व ग़ायत यह है कि बदकारों को उनकी बदकारी और नेकों कारों को उनकी नेकी का बदला अता फ़रमाये। वह मख़लूक का मोहताज नहीं, वह अपनी



मखलूक को रिज्क देता है वह दूसरो को खिलाता है उसे कोई नहीं खिलाता वह रोजी देता है उसे रोजी नहीं दी जाती वह पनाह देता है उसके खिलाफ किसी को पनाह नहीं दी जा सकती मखलूक उसकी मोहताज है, उसने मखलूक को इस लिये पैदा नहीं किया कि खुद वह उनसे नफा हासिल करे या अपने जरूर को दफा करे या किसी ने इस तखलीक के लिये दरखास्त की न उस के दिल में पैदा करने का कोई ख्याल आया या कुछ सोच पैदा हुई बल्कि वह हर चीज से पाक खालिस इरादा है उसने खुद ही इरशाद फरमाया और वह हर सादिकुल कौल से ज्यादा सादिकुल कौल है

**तर्जमा:**—वह बुजुर्ग हस्ती मालिके अर्श है जो चाहता है करता है।

वह अकेला कुदरत रखता है आमाल को नीस्त से हस्त करने, दुख और मुसीबत को दूर करने, अशिया को बदल डालने और हालात को मुतगय्यर कर देने की वह रोजाना नई शान है। जो कुछ उसने मुकर्रर किया है उस के मुकर्रर करदा वक्त की जानिब वही चलाता है।

## सिफाते इलाही

बिला शुबा वह जिन्दगी के साथ जिन्दा है कुदरत के साथ कादिर है, इरादा के साथ साहबे इरादा है, बगैर कानों के सुनता है और बगैर आंखों के देखता है इल्म से इदराक करने वाला है वह कलाम के साथ मुतकल्लिम है, अम्र के साथ आमिर है और नही के साथ मना करने वाला है (नाही) और खबर के साथ खबर देने वाला है। बिला शुबा अल्लाह अपने हुक्म और फैसला पर आदिल है, इनाम व अता तो महज उसकी मेहरबानी और एहसान है (किसी पर उस पर हक नहीं है) पहली बार भी वही पैदा करने वाला है और दुबारा भी वही पैदा करेगा, वही जिन्दगी अता करने वाला है, वही मौत देने वाला है, वह अदम से वजूद में लाने वाला और वही ईजाद करने वाला है, वही जजा व सजा देने वाला है।

वह बड़ा सखी है, बुख्ल नहीं करता, वह बुर्दबार है इन्तेकाम में जल्दी नहीं करता, याद रखने वाला है भूलता नहीं, उसका इल्म उसको हाजिर है सहव से पाक है, खबर रखने वाला है, गुफ़लत से बरी है, वही रोजी तंग करता है वही फराख करता है हंसता है और खुश होता है, मोहब्बत करता है और नफरत करता है ना पसंद करता है और पसंद फरमाता है, राजी होता है और नाराज़ होता है, मेहरबानी करता है और गुनाहों को बख़्शता है वही देता है वही रोक लेता है उस के दो हाथ हैं उस के दोनों हाथ दायें हाथ हैं उसने खुद फरमाया है:

**तर्जमा:**—उसके दायें हाथ में आसमान लिपटे हुये हैं।

हजरत इब्ने उमर से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मिम्बर पर तशरीफ फरमा होकर यह आयत तिलावत फरमाई और फरमाया आसमान उसके दायें हाथ में होंगे और वह उनको इस तरह फेंक देगा जिस तरह बच्चा गेंद को फेंक देता है फिर इरशाद फरमायेगा मैं ही ग़ालिब हूं। रावी का बयान है कि यह फरमाते वक्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिम्बर शरीफ पर लरजां थे और करीब था की आप गिर पड़ें।

हजरत इब्ने अब्बास ने फरमाया अल्लह तआला तमाम ज़मीन व आसमान को मुट्ठी में इस तरह पकड़ेगा की उनका कोई किनारा भी मुट्ठी से बाहर नहीं होगा। हजरत अनस बिन मालिक और हजरत इब्ने अब्बास से मरवी है की हुजुरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद



फरमाया: इन्साफ करने वाले (आदिल हज़रत) कयामत के दिन नूर के मिम्बरों पर रहमान के दाईं जानिब होंगे और उसके दोनों हाथ दायें हैं।

अल्लाह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अपने हाथ से अपनी शकल पर बनाया और अदन के बाग को अपने हाथ को अपने हाथ से लगाया और तूबा का दरख्त भी अपने हाथ से लगाया। तौरैत अपने हाथ से लिखी और हज़रत मूसा के हाथ में अपने हाथ से दी। बिला वास्ता बगैर किसी तर्जमान के उनसे खुद कलाम फरमाया बंदों के दिल रहमान की दो उंगलियों में हैं वह जिस तरह चाहता है उन को फेर देता है। और जो कुछ चाहता है उनमें भर देता है। कयामत के दिन आसमान व ज़मीन उस की मुट्ठी में होंगे जैसा की हदीस शरीफ में आया है अल्लाह तआला अपना क़दम जहन्नम में रखेगा तो जहन्नम के तबके आपस में सिमट जायेंगे और कहेंगे बस बस। उसके बाद एक कौम आग से बाहर निकलेगी अहले जन्नत अल्लाह के चेहरे को देखेंगे उस के देखने में उन को कुछ इशतेबाह नहीं होगा और न कुछ तकलीफ होगी। हदीस शरीफ में ऐसा ही आया है अल्लाह तआला उन पर जलवा अंदाज होगा और उन की तमन्नाए दीदार पूरी करेगा। अल्लाह तआला का इरशाद है

**तर्जमा:** नेक काम करने वालों के लिए अच्छा बदला है आर कुछ ज़्यादा भी।

बाज़ असहाब का ख़्याल है कि अलहुस्ना से मुराद जन्नत है और ज़्यादा से मुराद अल्लाह का दीदार है। एक दूसरी आयत में है: कुछ चेहरे उस रोज़ तरो ताज़ा होंगे और अपने रब की तरफ देख रहे होंगे। फ़ैसला और जज़ा (कयामत) के दिन अल्लाह के सामने बन्दो की पेशी होगी वह खुद ही उनका हिसाब लेने का ज़िम्मेदार होगा कोई दूसरा उसका ज़िम्मेदार न होगा।

## सात आसमान

अल्लाह तआला ने सात आसमान एक के ऊपर एक और सात ज़मीने एक के नीचे दूसरी तह ब तह पैदा की हैं ऊपर की ज़मीन से निचले आसमान तक पांच सौ बरस का रास्ता है और हर आसमान से दूसरे आसमान तक भी उतना ही फ़ासला है। पानी सातवें आसमान पर है। अल्लाह तआला का अर्श पानी पर है। और अल्लाह तआला अर्श पर है उससे वरा सत्तर हज़ार हिजाब हैं यह हिजाब नूर के भी हैं और तारीकी के भी और उन चीज़ों के भी जिन से वही वाकिफ़ है।

## अर्श को उठाने वाले फरिश्ते

अर्श को उठाने वाले (फरिश्ते) अर्श को उठाये हुए हैं। अल्लाह तआला फरमाता है अर्श की हद है लेकिन उससे अल्लाह ही वाकिफ़ है। फरिश्ते अर्श की अतराफ़ को घेरे हुए हैं। अर्श सुर्ख याकूत का है उस की वुसअत आसमानों और ज़मीनो की वुसअत के मानिन्द है। अर्श के मुकाबले में कुर्सी की मिसाल ऐसी है जैसे कि मैदान में एक छल्ला पड़ा हो जो कुछ सातों आसमानों में उनके दर्मियान और उनके नीचे है और जो कुछ तहतुस्सरा में है और जो कुछ समन्दरों की गहराईयों में है अल्लाह तआला उसको जानता है वह हर बाल के निकलने और हर दरख्त और हर खेती के उगने की जगह से वाकिफ़ है, हर पत्ते के गिरने की जगह उसके इल्म में है और उनके पूरे शुमार को भी जानता है, पत्थर के रेज़ों, रेत और मिट्टी के ज़रों, पहाड़ के वज़नों से वह वाकिफ़ है और समन्दरों की नाप उस के इल्म में है, बन्दों के आमाल और उन के भेद उन की सांसों और उन के अक़वाल को वह जानता है, हर चीज़ से वह वाकिफ़ है इसमें कोई चीज़



उससे पोशीदा नहीं, उसके इल्म से कोई जगह खाली नहीं वह मखलूक की मुशाबेहत से पाक व मुनज्जा है। यह कहना जायज नहीं कि वह हर जगह है बल्कि यह कहा जाये कि वह अर्श पर है क्योंकि उस ने खुद फरमाया है। अर्रहमानो अलल अर्शिस्तवा और यह भी फरमाया है सुम्मस्सतवा अलल अर्शिर्रहमान। उसी की तरफ पाकीजा अल्फाज चढ़ते हैं और अच्छे आमाल उन को ऊंचा करते हैं। एक बांदी से हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ्त फरमाया कि अल्लाह कहां है? उसने आसमान की तरफ इशारा कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसके मुसलमान होने का फैसला फरमा दिया। हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस में आया है हुजूर गिरामी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब अल्लाह ने मखलूक को पैदा किया तो अपने जिम्मा एक तहरीर लिख ली और वह तहरीर उसके पास अर्श के ऊपर है और वह तहरीर यह है

**तर्जमा:**—बिला शुबा मेरी रहमत मेरे गजब पर गालिब है।

हदीस शरीफ के दूसरे अल्फाज इस तरह आये हैं कि "जब अल्लाह तआला तखलीक को कामिल कर चुका तो उस ने अपनी जात को तहरीर में लिखा कि बिला शुबा मेरी रहमत मेरे गजब से आगे है" वह तहरीर उसके पास अर्श के ऊपर है।

यह जरूरी है कि लफ्ज इस्तवा का इतलाक अल्लाह पर किसी तावील के बगैर किया जाये। इस्तवा से मुराद अर्श पर जात का मुसतवी (हमवार) होना ही है लेकिन यह इस्तवा उस कबूद (बैठक) और लम्स के बगैर है जिसका कायल फिरका मुजस्समा और करामिया है। इसके मानी गलबा और तसल्लुत के नहीं जिसके कायल मुतजला हैं इसके माने बलंदी और उलू नहीं जिसके कायल अशायरा हैं ऐसे मानी न शरीयत में कहीं आये हैं न किसी सहाबी, ताबई, मोहदिदस और सलफे सालिहीन में से किसी से मनकूल हैं बल्कि उनसे सिर्फ लफ्ज इस्तवा का इतलाक मनकूल है।

## अलल अर्श इस्तवा

उम्मुल मोमिनीन हजरत सलमा रजियल्लाहो तआला अन्हा ने आयत **अर्रहमानो अलल अर्शिस्तवा** की तशरीह में फरमाया वह कैफियत है जो गैर मनकूल है। इस्तवा (का मानी) मालूम है, इस का इकरार वाजिब है और इन्कार कुफ्र है। हजरत अनस रजियल्लाहो अन्हो की रिवायत से मुस्लिम ने (सहीह मुस्लिम में) इस हदीस को मरफूअन नकल किया है और फरमाने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम होने की सराहत की है। हजरत इमाम अहमद हंबल ने अपने इन्तकाल से कुछ पहले फरमाया सिफाते इलाही की खबरों को वैसा ही रखा जाये जैसी वह आयी हैं ऐसी तावील उनकी न की जाये कि अल्लाह की तशबीह मखलूक से लाजिम आये न ऐसी तौजीह की जाये कि अल्लाह का सिफात से खाली होना लाजिम आये। बाज रिवायतों में इमाम अहमद का यह कौल भी आया है कि मैं साहबे कलाम नहीं और न इन मकामात के मुताल्लिक अल्लाह की किताब, हदीसे रसूल, अकवाले सहाबा व ताबाईन (रजियल्लाहो अन्हुम अजमईन) में किसी जगह मुझे कलाम मिलता है इस के अलावा भी कलाम (इस मौजूअ पर) अच्छा नहीं, अल्लाह की सिफात में चूं व चरां न की जाये न बतौर शक ऐसा कहा जाये। हजरत इमाम अहमद ने एक और जगह भी कहा है हम ईमान रखते हैं कि अल्लाह अर्श पर है जैसी और जिस



तरह की उसकी मशीयत है न कोई हद है कि कोई हद बन्दी करने वाला उसकी हद बन्दी कर सके न कोई ऐसी सिफत है कि बयान करने वाला उस को बयान कर सके क्योंकि सईद बिन मुसैइब ने काब अहबार का कौल नक़ल किया है कि अल्लाह ने तौरैत में फरमाया है "मैं अल्लाह हूँ अपने बन्दों के ऊपर मेरा अर्श तमाम मखलूक से ऊपर है और मैं अर्श के ऊपर हूँ अपने बन्दों का इन्तज़ाम मैं अर्श के ऊपर से करता हूँ मेरे बन्दों की कोई चीज़ मुझसे पोशीदा नहीं है"। अल्लाह का अर्श पर बगैर किसी कैफियत के होना हर उस किताब में मज़कूर है जो अल्लाह की तरफ से किसी पैगम्बर पर नाज़िल हुई है।

एक बात यह भी है कि अर्श हो या गैर अर्श अल्लाह को मखलूक पर उलूए कुदरत, तसल्लुत और ग़लबा हमेशा से हासिल है। इस लिए "इस्तवा अलल अर्श" को ख़ास तौर पर इस मानी पर महमूल नहीं किया जायेगा पस इस्तवा अल्लाह की जाती सिफत है उसकी ख़बर सराहत और ताकीद सात आयतों में और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस में आयी है। इस्तवा अल्लाह की सिफते लाज़िमा है और उसके लिए मौजू है जैसे हाथ, चेहरा, आंख, समअ, बसरे, हयात, कुदरत, मोही और ममीत होना उसकी सिफते लाज़िमा में से हैं (उसी तरह एक यह भी सिफते लाज़िमा है) हम कुरआन और हदीस से बाहर नहीं जायेंगे, हम कुरआन और हदीस पढ़ते हैं और जो कुछ इन दोनों में है हम उस पर ईमान रखते हैं पस सिफात की कैफियात को हम अल्लाह के सुपुर्द करते हैं।

हज़रत सुफियान बिन उईनिया रज़ियल्लाहो अन्हो ने फरमाया कि अल्लाह ने अपनी जात की जो सिफत अपनी किताब में बयान कर दी है वह वैसा ही है, उस की तफसीर बस उसका पढ़ना है इसके अलावा उसकी तफसीर कोई नहीं हम इसके अलावा किसी और बात के मुकल्लफ भी तो नहीं है क्योंकि वह गैब है उस के फहम में अबल की गुज़ाईश नहीं है। हम अल्लाह तआला से उपव व आफियत के तालिब है और उस की जात व सिफात के मुताल्लिक हम ऐसी बात कहने से जिसकी न खुद उसने इत्तेला दी है और न उसके रसूल ने, हम उसकी पनाह मांगते हैं।

अल्लाह तआला हर रात को दुनिया के आसमान पर जिस तरह और जिस कैफियत के साथ चाहता है उतरता है और अपने बन्दों में से जिस गुनहगार, खताकार, मुजरिम नाफरमान को पसन्द करता है और चाहता है बख़्श देता है। वह बाबरकत बुजुर्ग आली मरतबत है और सबसे बाला है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस के अच्छे नाम हैं।

आसमाने दुनिया पर अल्लाह के नुज़ूल के यह माना नहीं है कि उस की रहमत या उस का सवाब उतरता है, यह मुतज़ला और अशायरा का खुद साख़्ता दावा है। हज़रत उबादा बिन सामत से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "अल्लाह बुजुर्ग व बरतर हर रात को जबकि आखिरी तिहाई हिस्सा बाकी रह जाता है, आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फरमाता है और इरशाद फरमाता है कि क्या कोई मांगने वाला है कि उसका सवाल पूरा किया जाये? क्या कोई गुनाहों की माफी का तलबगार है कि उस को माफ़ किया जाये? क्या कोई कैदी है कि उस की कैद ख़त्म कर दी जाये?। यह निदा सुबह की नमाज़ तक रहती है फिर हमारा रब ऊपर चला जाता है। हज़रत उबादा बिन सामत की दूसरी रिवायत के अल्फाज़ यूँ है कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तबारक व तआला हर रात को जब आखिरी



तिहाई हिस्सा बाकी रह जाता है आसमान से दुनिया की जानिब नुजूल फरमाता है और कहता है कि क्या मेरे बन्दों में से कोई बन्दा है जो मुझ से मांगे और मैं उसकी दुआ कबूल करूं क्या अपने नफ्स पर कोई जुल्म करने वाला है जो मुझे पुकारे और मैं उसे बख्श दूं, क्या ऐसा शख्स है जिस का रिज्क तंग कर दिया गया हो और वह मुझ से (फराखी) तलब करे और मैं उसका रिज्क उस की जानिब लौटा दूं, क्या कोई कैदी है जो मुझे पुकारे और मैं उस को कैद से आजाद कर दूं। ऐसा तूलूए फज्र तक रहता है फिर अल्लाह अपनी कुर्सी पर उलू फरमाता है।

## पिछली रात की नमाज़ इब्तेदाई रात की नमाज़ से क्यों अफ़ज़ल है?

हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत जाबिर, हज़रत अली, हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद, हज़रत अबू दर्दा, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत आईशा से यह हदीस रिवायत करते हैं (ब इखतेलाफ़े अल्फ़ाज़) इसी लिए यह सब हज़रात पिछली रात की नमाज़ को इब्तेदाई रात की नमाज़ से अफ़ज़ल करार देते थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ से मरवी हदीस में है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया "अल्लाह तआला निस्फ़ शाबान की रात को आसमान से दुनिया की तरफ़ नुजूल फ़रमाता है और उस शख्स के सिवा जिस के दिल में कीना या शिर्क हो हर शख्स को बख्श देता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो का कौल है कि मैंने खुद सुना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे, जब रात का निस्फ़ अब्बल हिस्सा गुज़र जाता है तो अल्लाह तबारक व तआला आसमान से दुनिया की तरफ़ नुजूल फ़रमाता है और फ़रमाता है कि क्या कोई इस्तिग़फ़ार करने वाला है कि मैं उसके गुनाह बख्श दूं, क्या कोई साएल है कि मैं उस को अता करूं, क्या कोई तौबा करने वाला है कि मैं उसकी तौबा कबूल करूं। तूलूए फ़ज्र तक यही कैफ़ियत रहती है।

हज़रत इसहाक़ बिन राहबिया से कहा गया कि यह क्या हदीसे हैं जो आप बयान करते हैं कि "अल्लाह तआला आसमान से दुनिया की तरफ़ नुजूल फ़रमाता है फिर सऊद करता है और हरकत करता है" इसहाक़ ने साइल से कहा किया तुम काएल हो कि अल्लाह तआला बग़ैर हरकत के नुजूल व सऊद पर कादिर है साइल ने कहा जी हां यह सुन कर इसहाक़ ने कहा फिर तुम हरकत करने से क्यों इनकार करते हो।

हज़रत यहया बिन मोईन ने कहा कि अगर कोई जहमी (जहम बिन सफ़वान मुतज़ली का पैरो) तुम से कहे कि मैं ऐसे रब को नहीं मानता जो नुजूल करता है तो तुम उससे कहो कि मैं ऐसे रब पर ईमान रखता हूं कि जैसा चाहता है वह करता है। हज़रत शरीक़ बिन अब्दुल्लाह से कहा गया कि हमारे पास कुछ ऐसे लोग हैं जो इन अहादीस का इनकार करते हैं तो शरीक़ ने की कि हमारे पास सलात, सियाम, ज़कात और हज़ के नाम कौन लाया है? क्या यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मन्कूल नहीं हैं हमने तो उन्हीं अहादीस से अल्लाह को पहचाना है।



# कुरआन मजीद अल्लाह की किताब है

हमारा अकीदा है कि कुरआन मजीद अल्लाह का कलाम है, अल्लाह की किताब है, अल्लाह का खिताब है, और वह वही है जो अल्लाह ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के ज़रिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाई थी (जिस को लेकर हज़रत जिब्रील रसूलुल्लाह पर नाज़िल हुए थे) अल्लाह तआला खुद फ़रमाता है।

**तर्जमा:**—रुहुल अमीन ने उसको आप के दिल पर उतारा वाज़ेह अरबी ज़बान में ताकि आप लोगों को डराने वाले हों।

रसूलुल्लाह ने अल्लाह तआला के उस हुक्म की तामील में यह कुरआन अपनी उम्मत को पहुंचा दिया जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद था।

**तर्जमा:**—ऐ पैग़म्बर जो कुछ आप के रब की तरफ़ से आप पर उतरा है उस को पहुंचा दीजिये।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मौक़िफ़े हज में लोगों के सामने अपने आप को पेश करते हुए फ़रमा रहे थे "कोई शख्स है जो मुझ अपनी कौम के पास ले जाए कि कुरैश ने तो मुझे कलामुल्लाह पहुंचाने से रोक दिया है।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

**तर्जमा:**—अगर कोई मुशरिक तुम्हारी पनाह में आना चाहे तो तुम उसको पनाह दो ताकि वह (इस तरह पनाह में आकर) अल्लाह का कलाम सुन ले।

कुरआन शरीफ़ अल्लाह का कलाम है, मख़लूक नहीं जिस तरह भी इसको पढ़ा जाए लिखा जाए और जिस तरह भी इस की तिलावत की जाए और जैसा भी कारियों की किरत, तलफ़फ़ुज़ करने वालों के तलफ़फ़ुज़ और हाफ़िज़ों की याददाश्त से इस में इख़तेलाफ़ हो (जब भी) बहरहाल वह अल्लाह का कलाम है और अल्लाह की सिफ़ाते जातिया में से है, न इस में हुदूस है और न तग़य्युर व तबद्दुल है न इस में कमी व बेशी होती है न किसी इन्सान की तालीफ़ और तसनीफ़ का इस में दख़ल है अल्लाह ही की तरफ़ से इस के नुज़ूल का आगाज़ हो और उसी की तरफ़ से उसका हुक्म लौटेगा। हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस में आया है कि हुज़ूर ने फ़रमाया, कुरआन की फ़ज़ीलत तमाम किताबों पर ऐसी ही है जैसी अल्लाह की तमाम मख़लूक पर है। अल्लाह ही की तरफ़ से नुज़ूले कुरआन का आगाज़ हुआ और उसी की तरफ़ से उसके हुक्म का रूजूअ होगा। इस इबारत का मतलब यह है कि कुरआन मजीद का नुज़ूल और इस का ज़हूर अल्लाह की तरफ़ से हुआ और कुरआन के तमाम अहकाम व फ़राएज़ और तर्क ममनूआत अल्लाह ही के फ़रमान के तहत हैं। उसी की वजह से हर फ़ैअल व हर तर्क, तमाम अहकाम का रूजूअ अल्लाह ही की तरफ़ है। इसी बिना पर बाज़ लोगों ने कहा है कि अल्लाह ही की तरफ़ से कुरआन मजीद का ज़हूर बतौर हुक्म हुआ और उसी की तरफ़ कुरआन का रूजूअ



बतौर इल्म होता है। बहरहाल कुरआन पाक अल्लाह का कलाम है वह हाफिजों के सीनों में (पोशीदा) हो या हाफिजों के जबानों पर या लिखने वालों के हाथों में या देखने वालों की नजर में, मुसलमानों के मुसहफों पर हो या बच्चों की तख्तियों पर जहां भी देखा जाए और पाया जाए (वह अल्लाह का कलाम है)।

## कुरआन को मखलूक कहने वाला काफिर है

जो शख्स कुरआन को मखलूक कहता है या उसकी इबारत या तिलावत को कुरआन नहीं कहता या कहता है कि कुरआन को मेरा तलफ़ुज करना मखलूक है वह खुदा की कसम काफिर है, उससे मेल जोल रखना, उसके साथ खाना मना है, न उसके साथ निकाह जाएज है न उस की हमसाएगी एख़्तियार की जाए बल्कि उसको बिल्कुल छोड़ दिया जाए उससे कलाम तर्क कर दिया जाए ऐसा कहने वाले की इहानत की जाए उसके पीछे नमाज़ न पढ़ी जाए न उस की गवाही कबूल की जाए, उस का वलीए निकाह होना भी दुरुस्त नहीं है, अगर वह मर जाए तो उसके जनाज़ा की नमाज़ भी न पढ़ी जाए अगर उस पर काबू मिल जाए तो मुरतद की तरह उससे तीन मरतबा तौबा कराई जाए अगर तौबा करे तो दुरुस्त है वरना उस को क़त्ल कर दिया जाए।

हज़रत इमाम अहमद रज़ियल्लाहो अन्हो से दरयाफ़्त किया गया कि जो शख्स कहता है कि कुरआन को मेरा तलफ़ुज करना मखलूक है उसका क्या हुक्म है आप ने फ़रमाया कि वह काफिर हो गया। यह भी इमाम अहमद रज़ियल्लाहो अन्हो का कौल है कि जो शख्स कहता है कुरआन कलामे इलाही है मखलूक नहीं है लेकिन तिलावते कुरआन मखलूक है वह भी काफिर हो गया है। हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुरआन के बारे में दरयाफ़्त किया, हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया वह अल्लाह का कलाम है मखलूक नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल ग़फ़ार जो रसूले खुदा के आज़ाद करदा गुलाम थे कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब अल्लाह की याद की जाए (यानी कुरआन पढ़ा जाए) तो तुम कहो अल्लाह का कलाम है मखलूक नहीं है, जिसने इस को मखलूक कहा वह काफिर है। अल्लाह तआला का इरशाद है: अला लहुल खल्को वल अम्र, इस आयत में अल्लाह तआला ने अम्र को ~~खल्क~~ से अलग बयान किया है, अगर अम्रे खुदा (जिसने मखलूक को पैदा किया) भी मखलूक होता तो उसको अलखल्क से जुदा बयान नहीं किया जाता और इस तरह यह तकरार बेसुद होती गोया यह एबारत यूं हो जाएगी अला लहुल खल्को वल खल्क यह तकरार बे फ़ायदा और बेसुद है और अल्लाह तआला इससे पाक है (कि वह ऐसी बेसुद व बे फ़ायदा बात बयान फ़रमाये)।

आयत कुरआनन अरबीयन गैरा जी एवजिन में लफ़ज़ गैरा जी एवजिन की तफ़सीर में हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा से गैरा मखलूक मनकूल है। वलीद बिन मुगीरा मखज़ूमी ने जब कुरआन को इन्सान का कलाम करार दिया तो अल्लाह तआला ने उसको दोज़ख की वईद सुनाई। अल्लाह तआला का इरशाद है

तर्जमा:—उस ने कहा यह तो महज़ मनकूल जादू है यह इंसानी कलाम के सिवा कुछ और नहीं, मैं अनकरीब उसको जहन्नम में झोंकूंगा।



अब जो शख्स भी कुरआन को इबारत या मखलूक कहता है या यह कहता कि कुरआन को मेरा तलफ़ुज करना मखलूक है उस के लिए सकर मकर है इस आयत व इन अहदुन मिनल मुशरेकीना अस्तजा रका फ़ अजेरहू हत्ता यस्मऊ कलामुल्लाह, में कलामुल्लाह कहा गया है आप का कलाम नहीं फ़रमाया दूसरी आयत में है (तर्जमा: वह कुरआन जो सीनों और वरकों में है उस को हम ने लैलतुल कद्र में नाज़िल फ़रमाया। एक और आयत में इस तरह इरशाद है (तर्जमा: जब कुरआन पढ़ा जाए तो उस को बग़ौर सुनो और उस की तरफ़ कान लगाओ)।

एक और जगह इरशाद फ़रमाया है: हम ने कुरआन को अलाहिदा अलाहिदा कर दिया ताकि तुम लोगों के सामने ठहर ठहर कर पढ़ो, मुसलमानों ने सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किरत और तलफ़ुज को सुना पस आप का तलफ़ुज कुरआन ही कुरआन है। अल्लाह तआला ने उन जिन्नात की तारीफ़ फ़रमाई है जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किरत सुनी थी।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: जिन्नात ने कहा कि हम ने अरबी कुरआन सुना जो हिदायत का रास्ता दिखाता है। अल्लाह तआला का यह भी इरशाद है: हम ने जिन्नात के एक ग़रोह का रुख़ आप की तरफ़ फेर दिया ताकि वह कुरआन सुन लें।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के कुरआन पढ़ने को भी अल्लाह तआला ने फ़रमाया है:

**तर्जमा:**—कुरआन को याद करने के लिए तुम अपनी ज़बान मत हिलाओ कुरआन को (तुम्हारे सीने में) जमा करना हमारे जिम्मा है जब हम पढ़ें तो हमारे पढ़ने के पीछे तुम पढ़ो।

एक और जगह इरशाद है: कुरआन का जितना हिस्सा (तुम्हारे लिए) आसान हो वह पढ़ो।

मुसलमानों का इस पर इजमा है कि जिसने नमाज़ में सूरह फ़ातिहा पढ़ी उस को किताबुल्लाह का कारी कहा जाएगा। जिसने बात करने की कसम खाई हो वह अगर कुरआन पाक पढ़े उस पर कसम शिकनी का जुर्म आएद नहीं होगा। यह तमाम उमूर बताते हैं कि कुरआन (इंसानी) इबारत नहीं है। हज़रत मुआविया बिन हकम से मरवी हदीस में है कि हुज़ूर ने फ़रमाया था कि हमारी इस नमाज़ में आदमियों का कोई कलाम दुरुस्त नहीं है नमाज़ तो सिर्फ़ किरत (कुरआन) तसबीह व तहलील और तिलावते कुरआन है। इस हदीस में हुज़ूर ने तिलावते कुरआन को कुरआन फ़रमाया है इस से मालूम हुआ कि तिलावत और मतलू (जिसको तिलावत किया जाए) दोनों एक हैं। अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने मुसलमानों को नमाज़ में किरत का हुक्म दिया है और बात करने से मना किया है। अगर हमारी किरत हमारा कलाम हो अल्लाह का कलाम न हो तो फिर हम अग्रे ममनूआ के मुरतकिब होंगे।

## कुरआन के हुरुफ़ और आवाज़

हमारा अक़ीदा है कि कुरआन पाक समझे जाने वाले हुरुफ़ और सुनी जाने वाली आवाज़ में है क्योंकि उन्हीं हुरुफ़ और आवाज़ों से गूंगा और ख़ामोश शख्स मुतकल्लिम और गोया हो जाता है। अल्लाह का कलाम हुरुफ़ और आवाज़ों से अलग नहीं हो सकता। ऐसी बदीही बात का मुनकिर महसूस का मुख़ालिफ़ और बसीरत से महरूम है। अल्लाह तआला का इरशाद है।

अलिफ़ लाम ज़ालिका, हा मीम, ता सीन मीम, तिलका आयातुल किताब, ग़ौर कीज़िए



अल्लाह तआला ने हुरुफ़ जिक्र फ़रमाये और फिर उनका किनाया किताब से फ़रमाया:

एक जगह इरशादे बारी तआला यूँ है:

जमीन में जितने दरख्त हैं अगर वह कलम बन जाये और समन्दर रौशनाई बन जाए और उस को सात और समन्दर मदद पहुंचाए तब भी अल्लाह के कलेमात खत्म न होंगे। इसी तरह एक और दूसरी आयत में है

अगर समन्दर मेरे रब के कलेमात तहरीर करने के लिए रौशनाई बन जायें तो रब के कलेमात खत्म होने से पहले समन्दर खत्म हो जाएंगे।

## तिलावत कुरआन

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम कुरआन पढ़ा करो तुम को हर हर्फ़ के एवज़ दस नेकियां मिलेंगी, सुन लो मैं यह नहीं कहता कि अलिफ़ लाम मीम एक हर्फ़ है बल्कि अलिफ़ दस नेकियां लाम दस नेकियां और मीम दस नेकियां, यह तीस नेकियां हुईं। हुज़ूर ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि कुरआन को सात हरफ़ों (किरअतों) पर नाज़िल किया गया है जिनमें से हर एक शिफा अता करने वाला है।

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा के बारे में इरशाद फ़रमाया।

आप के रब ने मूसा को पुकारा हम ने उन को तूर की दाई जानिब से पुकारा।

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया था।

बिला शुबा मैं ही अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई और माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो।

यह निदा और कौल बगैर आवाज़ के मुमकिन नहीं और न यह मुमकिन है की अल्लाह के अलावा यह नाम और यह सिफ़त (इलाह) किसी फ़रिश्ते या किसी दूसरी मख़लूक की हो।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, कयामत के दिन होगा तो अल्लाह तआला बादलों के साये में जलवा फ़रमा होगा और रवां व फ़सीह कलाम करेगा और फ़रमाएगा (वह तमाम सच बोलने वालों से ज्यादा सच बोलने वाला है)। तुम तवील मुदत तक चुप रहो, जब से मैंने तुम को बनाया था मैं तुम्हारे लिए ख़ामोश रहा तुम्हारे आमाल को देखता रहा, तुम्हारी बातें सुनता रहा अब यह तुम्हारे आमाल नामे हैं जो तुम को पढ़ कर सुनाये जाएंगे, जिस को उनके अन्दर जो ख़बर मिले वह उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और जिस को कुछ और मिले वह अपनी जान ही को मलामत करे।

सहीह बुख़ारी में अब्दुल्लाह बिन अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे अल्लाह के बन्दों को उठाएगा और ऐसी आवाज़ पुकारेगा कि उस को दूर वाला भी करीब वालो की तरह सुनेगा, मैं बादशाह हूं मैं बदला देने वाला हूं।

## तकल्लुमे इलाही

हज़रत मुस्लिम बिन मसरूक़ ने हज़रत अब्दुल्लाह का कौल नक़ल किया है कि जब अल्लाह तआला वही से मुतकल्लिम होता है तो उसकी आवाज़ आसमान वाले सुनते हैं और सजदा में गिर जाते हैं जब दिलों से हैबत दूर कर दी जाती है तो अहले आसमान पुकारते हैं तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया है दूसरे जवाब देते हैं हक़ फ़रमाया ऐसा ऐसा फ़रमाया।



हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि जब अल्लाह तआला वही से मुतकल्लिम होता है तो आसमान वालों को ऐसी आवाज़ सुनाई देती है जैसे पत्थर की चट्टान पर लोहे के गिरने से पैदा होती है सब फौरन सजदे में गिर पड़ते हैं जब दिलों से अल्लाह तआला हैबत दूर फरमा देता है तो कहता है तुम्हारे रब ने क्या फरमाया? यह सब जवाब देते हैं हक फरमाया वह बुजुर्ग व बरतर है।

मोहम्मद बिन कअब फरमाते हैं बनी इसराईल ने हजरत मूसा अलैहिस्सलाम से दरयाफ्त किया कि जब अल्लाह तआला ने आप से कलाम किया था तो आप ने अपने रब की आवाज़ को मखलूक में किस से मुशाबेह पाया हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने फरमाया मैंने अपने रब की आवाज़ को रअद के मुशाबेह पाया जब कि उसमें बाजगश्त न हो। यह आयात व अहादीस इस बात पर दलालत करती है कि कलामुल्लाह आवाज़ है मगर आदमियों की आवाज़ की तरह नहीं जिस तरह उसका इल्म कुदरत और तमाम दूसरी सिफात इन्सान की सिफात की तरह नहीं है उसी तरह उसकी आवाज़ भी इंसानों की आवाज़ की मानिन्द नहीं है।

हजरत इमाम अहमद बिन हंबल रजियल्लाहो अन्हो के असहाब की बयान करदा एक रिवायत के पेशे नजर अल्लाह तआला के लिए आवाज़ की सराहत की गयी है (इस रिवायत से जाहिर होता है कि अल्लाह तआला की आवाज़ है) अशायरा इसके खिलाफ है, अशायरा का कौल है कि कलामुल्लाह एक मानी (मफहूम) है जो जाते इलाही के साथ कायम है (अल्लाह तआला हर बिदअती, गुमराह और गुमराह करने वाले की हिसाब फहमी करने वाला है)

अल्लाह तआला हमेशा से मुतकल्लिम है और (सिफते कलाम कदीम है) और उसका कलाम अम्र, नही और इस्तिफहाम से तमाम मानी को हावी है। इब्ने खुजैमा का इरशाद है कि अल्लाह का कलाम पैहम है उसमें वक्फा और खामोशी नहीं है। हजरत इमाम अहमद से लोगों ने दरयाफ्त किया कि क्या यह कहना जायज़ है कि अल्लाह मुतकल्लिम है और सकूत उसके लिए दुरुस्त है, आप ने फरमाया हम इजमालन यह कहते हैं कि अल्लाह हमेशा से मुतकल्लिम है। अगर कोई हदीस ऐसी आती जिससे जाहिर होता कि अल्लाह खामोश हो गया तो हम भी कहते, अब तो हम यही कहते हैं कि वह मुतकल्लिम है बगैर किसी खास कैफियत और तशबीह के जिस तरह वह चाहे कलाम करता है।

## हुरूफ़े हिज्जा मखलूक़ है कि गैर मखलूक़

### हुरूफ़े हिज्जा मखलूक़ नहीं

हुरूफ़े हिज्जा भी मखलूक़ नहीं हैं। अल्लाह के कलाम में हों या वह इंसान के कलाम में हों, अहले सुन्नत में से एक गरोह का यह अकीदा है कि कुरान मजीद के हुरूफ़ कदीम हैं और इसके अलावा जितने हुरूफ़ हैं वह हादिस हैं लेकिन यह उनकी ग़लती है। अहले सुन्नत का बगैर किसी फ़र्क़ के सही तरीन कौल यही है कि हुरूफ़े हिज्जा मखलूक़ नहीं हैं अल्लाह तआला का इरशाद है

लफ़्ज़ कुन दो हरफ़ी है (काफ़ नून) अगर यह लफ़्ज़ मखलूक़ होगा तो फिर अल्लाह तआला



दूसरे कुन के कहने का मोहताज होगा और इस तरह गैर मोतनाही सिलसिला लाजिम आयेगा।

कुरआन पाक के गैर मखलूक होने की आयात कुरानिया से बहुत सी दलीलें ऊपर गुजर चुकी हैं हम उनको दोबारा पेश नहीं करेंगे। हदीसे नबवी में आया है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अलिफ़ बा ता सा के मुताल्लिक दरयाफ़्त किया गया तो आप ने हज़रत उसमान से फ़रमाया अलिफ़ अल्लाह का इस्म है और बा अल्लाह के नामे बारी का और ता अल्लाह के नाम अल मुतकब्बिर का और सा अल्लाह के नाम अल बाइस और अल वारिस का है और इसी तरह हुजूर ने तमाम हुरुफ़ को अल्लाह के अस्माए सिफ़ाती का जुज्व करार दिया चूंकि अल्लाह तआला के अस्मा मखलूक नहीं हैं इसी लिए हुरुफ़े हिज्जा भी मखलूक नहीं हुए।

हज़रत अली कर्म्मल्लाहू वजहहु से मरवी हदीस में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जब आप ने अबजद हव्वज हुत्ती के माने दरयाफ़्त किये तो आंहरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अली! क्या तुम अबी जाद (अबजद)की तशरीह से वाकिफ़ नहीं अबजद में अलिफ़ अल्लाह का और बा अल्लाह के नाम अलबारी जीम अल्लाह के नाम जलील का है। इसी तरह हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तमाम हुरुफ़ (हिज्जा) को अल्लाह का अस्मा का जुज्व होना करार दिया हालांकि यही हुरुफ़ आदमियों के कलाम के भी अजज़ा हैं।

हज़रत इमाम अहमद ने हुरुफ़े हिज्जा के कदीम होने की इस ख़त में सराहत की है जो नीशापुर और जिरजान के बाशिन्दों को आप ने इरसाल किया था और उस में आप ने लिखा था कि जो शख्स हुरुफ़े हिज्जा को हादिस कहता है वह अल्लाह का मुनकिर है जब वह इस बात का कायल हो कि हुरुफ़े हिज्जा मखलूक हैं तो वह कुरआन के मखलूक होने का कायल हुआ। (यानी कुरआन को उसने मखलूक करार दिया)

## हुरुफ़े कुरआन कदीम हैं या हादिस

आप से कहा गया कि एक शख्स कहता है जब अल्लाह तआला ने हुरुफ़ (हिज्जा) पैदा किए तो लाम लेट गया और अलिफ़ खड़ा हो गया और कहने लगा कि जब तक मुझे हुक्म नहीं दिया जायेगा मैं सजदा नहीं करूंगा। इमाम अहमद ने फ़रमाया कि यह कायल का कुफ़्र है (ऐसा कहने वाला काफ़िर है) इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि तुम हुरुफ़ के हुदूस के कायल न बनो, सबसे पहले यहूदी इसके कायल होकर हलाक हुए जो शख्स किसी एक हर्फ़ के हुदूस का कायल हुआ वह कुरआन के हुदूस का कायल हुआ। इस सिलसिला में एक दलील यह भी है कि जब हुरुफ़ कुरआन में कदीम हैं तो कुरआन के अलावा भी कदीम होंगे यह कैसे हो सकता है कि एक चीज़ बेऐनही कदीम भी हो और हादिस भी। जब कुरआन में हुरुफ़ (हिज्जा) का हादिस न होना साबित हो गया तो ग़ैरे कुरआन में भी यह कदीम होंगे।



# नौ दूना असमाए हुसना (निनानवे पाक नाम)

## अल्लाह तआला के पाक नामों की तादाद

हमारा एतकाद है कि अल्लाह तआला के निनानवे नाम हैं जो उनको याद करेगा जन्नत में दाखिल होगा यह तमाम अस्मा कुरआन मजीद की मुखतलिफ सूरतों में मौजूद हैं। इन में से सिर्फ पांच तो सूरह फातिहा में हैं वह यह है (या) अल्लाह, (या) रब, (या) रहमान, (या) रहीम, (या) मालिक और छब्बीस सूरह बकरा में हैं (या) मोहीत, (या) कदीर, (या) अलीम, (या) हलीम, (या) तब्बाब, (या) बसीर, (या) वासेअ, (या) बदीअ, (या) रऊफ, (या) शकिर, (या) अल्लाह, (या) वाहिद, (या) गफूर, (या) हकीम, (या) काबिज, (या) बासित, (या) ला इलाहा इल्लल्लाहु, (या) हय्य, (या) कय्यूम, (या) अली, (या) अजीम, (या) वली, (या) गनी, (या) हमीद, सूरह आले इमरान में यह चार असमाए हुसना हैं। (या) कायम, (या) वहहाब, (या) सरीअ, (या) खबीर, सूरह निसा में यह छ असमा हैं (या) रकीब, (या) हसीब, (या) शहीद, (या) वकील, (या) गफूर, (या) मोकीत, पांच असमा सूरह अनआम में हैं। (या) फातिर, (या) काहिर, (या) कादिर, (या) लतीफ, (या) खबीर, सूरह आराफ में यह असमा हैं। (या) मोही, (या) मोमीत, सूरह अनफाल में भी दो हैं। (या) नेअमल मौला, (या) नेअमन नसीर, सूरह हूद में सात असमाए हुसना हैं। (या) हफीज, (या) रकीब, (या) मजीद, (या) कवी, (या) मुजीब, (या) वदूद, (या) फआल, सूरह रअद में दो हैं। (या) कबीर, (या) मतआल। सूरह इब्राहीम में एक नाम है (या) मन्नान, सूरह हजर में भी एक नाम है (या) खल्लाक, सूरह नहल में भी एक नाम है (या) बाइस, सूरह मरियम में दो हैं (या) सादिक, (या) वारिस, सूरह मोमिनून में एक है (या) करीम, सूरह नूर में तीन असमाए हुसना हैं (या) हक, (या) मतीन, (या) नूर, सूरह फुरकान में सिर्फ एक है (या) हादी। सूरह सबा में भी एक नाम है (या) फत्ताह, सूरह मोमिन में चार हैं (या) गाफिर, (या) काबिल, (या) शदीद, (या) जततौल, सूरह जारियात में तीन हैं (या) रज्जाक, (या) जलकूब्बा, (या) मतीन, सूरह अकतरबत में एक है (या) मुक्तदिर, सूरह रहमान में (या) बाकी, (या) जुल जलाल, (या) वल इकराम, यानी तीन असमाए हुसना हैं। सूरह हदीद में चार हैं। (या) अब्वल, (या) आखिर, (या) जाहिर, (या) बातिन। सूरह हश्श में दस असमाए हुसना हैं। (या) कुददूस, (या) सलाम, (या) मोमिन, (या) मोहैमिन, (या) अजीज, (या) जब्बार, (या) मोतकब्बिर, (या) खालिक, (या) बारी, (या) मुसब्बिर। सूरह बुरुज में यह असमाए हुसना हैं। (या) मुबदी, (या) मोईद, सूरह कुल हो वल्लाह (अखलास) में (या) अहद (या) समद यह दो नाम आये हैं।

हजरत सुफियान ओऐनिया ने इसी तरह (अस्माये हुसना) जिक्र किये हैं और अब्दुल्लाह बिन इमाम अहमद ने कुछ मजीद नाम बयान किये हैं मजीद नाम यह है (या) मोजीब, (या) काहिर, (या) फाजिल, (या) खालिक, (या) रकीब, (या) माजिद, (या) जब्बाद, (या) अहकमुल हाकेमीन।

अबू बकर नक्काश ने किताब तफ्सीरुल अस्मा वस्सिफात में हजरत जाफर बिन मोहम्मद का कौल नक्ल किया है कि अल्लाह के 360 नान हैं। एक रिवायत में एक सौ चालीस आये हैं उन



अकवाल की बिना इस पर है कि कुरआन पाक में जो अस्माए हुसना मुकरर आये हैं उन को भी लोगों ने दाखिले शुमार कर लिया है और उनको अस्मा करार दे दिया है हालांकि सही वही हैं जो हजरत अबू हुरैरा से मरवी हैं।

## ईमान की तारीफ़

### ईमान किसे कहते हैं

हमारा एतकाद है कि ज़बान से इकरार दिल से यकीन और अरकान पर अमल करने का नाम ईमान है। ईमान ताअत से बढ़ता है और मासियत से कम होता है इल्म से ईमान में कुव्वत आती है और जहालत से कमज़ोर होता है और तौफीक ईलाही से वकूअ पज़ीर होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है :

तहकीक़ जो लोग ईमान लाए तो उनका ईमान ज़्यादा होता है और खुश होते हैं।

इस तरह जो चीज़ ज़्यादा होती है वह घट भी सकती है अल्लाह तआला का इरशाद है जब उन के सामने आयात पढ़ी जाती हैं तो उन का ईमान बढ़ता है

एक और जगह इरशाद होता है

ताकि वह लोग जिन को किताब दी गई यकीन कर लें और वह लोग जो ईमान लाए उन का ईमान मजबूत हो जाए।

हजरत इब्ने अब्बास, हजरत अबू हुरैरा और हजरत अबू दरदा से मरवी है कि ईमान कम भी होता है और ज़्यादा भी होता है इस के अलावा इस सिलसिले में दीगर अकवाल भी हैं जिन की तफ़सील तवालत का बाइस है। अशायरा कहते हैं कि ईमान में कमी व बेसी नहीं होती।

### ईमान के मानी

लोगत में ईमान के मानी दिल से किसी चीज़ के तसदीक़ करने और जिस पर यकीन हो उसे हासिल करने के हैं। शरीयत में ईमान के मानी हैं अल्लाह तआला के वजूद का यकीन करना उसके असमा व सिफ़ात को पहचानना और उन पर यकीन रखना, फ़राइज़, वाजिबात और नवाफ़िल का अदा करना, गुनाहों और मआसी से इजतेनाब करना, अगर ईमान को मज़हब, शरीयत और मिल्लत से मौसूम किया जाए तो जाएज़ है इस लिए कि दीन वही है जिस का इत्तेबा किया जाए और ताआत के साथ मुहर्रमात व ममनूआत से इजतेनाब किया जाए यही ईमान की तारीफ़ है।

### इस्लाम की तारीफ़

इस्लाम की तारीफ़ अगरचे ईमान के साथ की जा सकती है क्योंकि हर ईमान यकीनन इस्लाम है लेकिन हर इस्लाम ईमान नहीं इस लिए कि इस्लाम के मानी मुतीअ और फ़रमाबरदार होने के हैं हर मोमिन अहकामे ईलाही का मुतीअ व फ़रमाबरदार है लेकिन हर मुसलमान अल्लाह तआला पर ईमान रखने वाला नहीं क्योंकि अकसर मुसलमान तलवार के ख़ौफ़ से इस्लाम कबूल कर लेते हैं।



ईमान का लफ्ज बहुत से कौली और फेअली सिफात पर हावी है और इसके दायरे में अल्लाह तआला की तमाम इबादतें शामिल हैं। लफ्ज इस्लाम का मतलब है ज़बान से कलमए शहादत अदा करना और दिल से इसकी तस्दीक करना और पांचों इबादतें अदा करना। हज़रत इमाम अहमद ने ईमान को इस्लाम से अलग करार दिया है क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि एक रोज़ मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख्स वारिद हुआ जिस के कपड़े बहुत सफ़ेद और बाल बहुत सियाह थे सफ़र की कोई अलामत उससे ज़ाहिर नहीं थी हम में से कोई शख्स उस को नहीं पहचानता था वह शख्स आते ही रसूले खुदा के सामने बैठ गया और अपने जानू रसूल के जानू से मिला कर बैठ गया अपने दोनों हाथ अपने घुटनों पर रख लिए और कहा ऐ मोहम्मद! अल्लाह के रसूल! इस्लाम क्या है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस्लाम यह है कि तू कलमए शहादत पढ़े यानी अशहदु अल ला इलाहा इल्लल्लाह व अशहदु अन्ना मोहम्मदन अब्दहु व रसूलहु कहे, नमाज़ पन्जगाना अदा करता रहे, ज़कात अदा करता रहे, रमज़ान के रोज़े रखे, ताक़त हो तो हज भी अदा करे।

यह सुन कर उस शख्स ने जवाब दिया ऐ मोहम्मद! आप ने बिल्कुल सच फ़रमाया उसके इस जवाब से लोग बहुत हैरान हुए कि खुद ही पूछता है और खुद ही तस्दीक करता है फिर उस ने कहा मुझे ईमान के मुताल्लिक बताइये। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ईमान यह है कि तू अल्लाह तआला उसके फ़रिश्तों, उस की किताबों, उसके पैग़म्बरों, क़यामत और नेकी व बदी की तक्दीर (अनदाजे) पर ईमान लाए, उसने यह सुन कर कहा आप ने सच फ़रमाया।

उस शख्स ने फिर कहा ऐ अल्लाह के रसूल एहसान (खूबी) क्या है? हुज़ूर ने जवाब में फ़रमाया एहसान यह है कि तुम अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसको देख रहे हो अगर ऐसा न हो सके तो दिल में यह ज़रूर यकीन करो कि अल्लाह तआला तुम को देख रहा है। उस ने फिर दरयाफ़्त किया या रसूलुल्लाह क़यामत के दिन का हाल बयान फ़रमाया आपने जवाब दिया क़यामत का हाल जिससे दरयाफ़्त किया जा रहा है वह दरयाफ़्त करने वाले से ज़्यादा क़यामत का हाल नहीं जानता। उस शख्स ने कहा क़यामत की कुछ निशानियां ही बता दीजिए हुज़ूर ने फ़रमाया क़यामत की अलामतों में से यह है कि लौंडिया अपने आकाओं को जनैंगी और मुफ़लिस पांव से नंगे बदन से बरहना बकरियों के चराने वाले आलीशान इमारतों पर फ़ख़ करते नज़र आयेंगे। रावी फ़रमाते हैं इस के बाद हम कुछ देर ठहरे रहे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ देर के बाद मुझ से फ़रमाया, उमर! जानते हो यह साइल कौन था? मैंने जवाब दिया अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानता है, आप ने फ़रमाया यह जिब्रील अलैहिस्सलाम थे और तुम लोगों को दीन सिखाने आये थे। हदीस के दूसरे अलफ़ाज़ यह हैं वह जिब्रील थे तुम को तुम्हारे दीनी उमूर सिखाने आए थे इससे पहले वह जब कभी जिस शक़ल में आए मैंने उन को पहचान लिया लेकिन उस मरतबा मैं उस शक़ल में उन को फ़ौरन नहीं पहचान सका।

गौर तलब अम्र यह है जिब्रील अलैहिस्सलाम ने ईमान और इस्लाम के मुताल्लिक अलग अलग सवाल करके दोनों में तफ़रीक़ कर दी चुनांचे रसूलुल्लाह ने दोनों सवालों के अलग अलग



जवाबात इरशाद फरमाये। इमाम अहमद के पेशे नज़र एक आराबी वाली हदीस भी थी। एक आराबी ने रसूलुल्लाह से अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह! आप ने फ़लों को अता किया और मुझे मना फ़रमाया उसके इस सवाल पर हुजूर वाला ने इरशाद फ़रमाया कि वह मोमिन था। आराबी ने अर्ज किया कि मैं भी तो मोमिन हूँ। हुजूर ने फ़रमाया कि तुम मुस्लिम हो। इमाम अहमद अल्लाह तआला के उस इरशाद को भी सनद के तौर पर लाते हैं।

आराब (देहाती) कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं ऐ पैगम्बर आप उन से कह दीजिए कि तुम लोग ईमान नहीं लाए कहो हम इस्लाम लाए हैं अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाखिल नहीं हुआ है

ईमान में ज्यादाती (इज़ाफ़ा) सिर्फ़ रोज़े नमाज़ से नहीं होती बल्कि दिली यकीन के बाद अवामिर व नवाही की पाबंदी, तकदीर को मानना, अल्लाह के किसी फ़ेअल पर एतराज़ न करना, अल्लाह ने तक्सीमे रिज्क का जो वादा फ़रमाया है उस पर एतेमाद रखना और शक न करना, अल्लाह पर भरोसा रखना और अपनी कुव्वत और ताक़त पर तकिया न करना, मुसीबतों पर सब्र और नेमतों पर शुक्र बजा लाना, अल्लाह को आयूब से पाक जानना और किसी किस्म की किसी हाल में उस पर तोहमत न लगाना।

इमाम अहमद से दरयाफ़्त किया गया कि ईमान मख़लूक है या ग़ैरे मख़लूक। आप ने जवाब दिया जिस ने ईमान को मख़लूक कहा वह काफ़िर हो गया क्योंकि ऐसा कहने वाला लोगों को वहम में मुब्तला करता है (क्योंकि इस कौल से कुरआन के मख़लूक होने का वहम होता है और इस में कुरआन के साथ ईहाम और तअरीज़ है) जो यह कहे कि ईमान ग़ैरे मख़लूक है वह मुबतदेअ (बिदअती) है इस लिए कि इस कौल से यह वहम लाहिक होता है कि रास्ते से अजीयत रसां चीज़ का दूर करना और आज्ञा के तमाम अफ़आल ग़ैरे मख़लूक हैं, इस तरह इस जवाब से इमाम मौसूफ़ ने दोनों ग़रोहों की तरदीद फ़रमाई दी है और इमाम साहब ने एक हदीस बयान फ़रमाई कि हुजूर ने इरशाद फ़रमाया ईमान की सत्तर से कुछ ज्यादा खसलतें हैं जिन में सब से अफ़ज़ल कलमए तौहीद और सबसे अदना खसलत रास्ते से ईज़ा दूर करने वाली चीज़ का हटा देना है।

इमाम साहब का मसलक है कि जिस चीज़ का ज़िक्र न कुरआन में हो न आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस बारे में कुछ फ़रमाया हो (हदीस मौजूद न हो) न सहाबा क़राम ने इस सिलसिले में कुछ कहा हो उसमें (अपनी तरफ़ से) राय देना बिदअत और दीन में नई बात पैदा करना है।

## मोमिन होने का दावा

किसी मोमिन के लिए जाएज़ नहीं कि वह कहे "मैं यकीनन मोमिन हूँ" बल्कि कहे मैं इनशा अल्लाह मोमिन हूँ। मोतज़ला के नज़दीक यह कहना कि मैं सच्चा मोमिन हूँ जाइज़ है, यकीनन मोमिन कहने से इस लिए मना किया गया है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, जो शख्स यकीनी तौर पर कहे कि मैं मोमिन हूँ वह काफ़िर है। हज़रत हसन बसरी से रिवायत है कि हज़रत अब्दूल्लाह बिन मसऊद के सामने बयान किया गया कि फ़लों शख्स कहता है कि मैं कतई मोमिन हूँ, हज़रत ने फ़रमाया उससे पूछो जन्नत में जाएगा या दोज़ख़ में, लोगों ने उससे पूछा तो उस ने कहा कि अल्लाह ही ख़ूब वाकिफ़ है। इब्ने मसऊद ने फ़रमाया दूसरी बात को



अल्लाह के सुपुर्द कर दिया पहली बात (मामिन होने को) को भी अल्लाह के सुपुर्द क्यों नहीं कर दिया (यानी पहले ही कह देता कि मेरा मोमिन होना अल्लाह ही को मालूम है)।

यकीनन सच्चा मोमिन वही होगा जो अल्लाह तआला के नजदीक मोमिन है और वही जन्नती भी होगा और इस का एतबार उस वक्त है जब ईमान पर खात्मा हो और किसी को ईमान पर खात्मा होने की खबर नहीं। इस लिए मुनासिब यही है कि डरता भी रहे और उम्मीद भी रखे, आमाल की दुरुस्ती भी करता रहे और अन्देशा के साथ साथ उम्मीदवार भी रहे यहां तक कि नेक आमाल पर खात्मा हो जाए, लोग जिन आमाल में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उन्हीं पर उनका खात्मा होता है और जिन आमाल पर खात्मा होगा उन्हीं पर हशर होगा। हदीस शरीफ में आया है हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया जैसे ज़िन्दा रहोगे वैसे ही मरोगे और जैसे मरोगे वैसे ही उठाए जाओगे।

हमारा भी एतकाद है कि बन्दे के तमाम आमाल अल्लाह के पैदा करदा हैं और उनके कमाय हुए हैं ख़्वाह नेक हों या बद, अच्छे हों या बुरे, जो आमाल ताअत व मासियत के हैं उस का यह मतलब नहीं कि अल्लाह ने मासियत का हुक्म दिया है बल्कि मानी यह है कि अल्लाह ने किसी के गुनहगार होने का फैसला और अंदाज़ा कर लिया है। अफ़अल मुक़द्दर उनके कस्द व इरादे के मुताबिक़ कर दिया है।

## किसमत व तकदीर

हमारा अक़ीदा है कि अल्लाह ने रिज़्क पैदा फ़रमा कर उस को तकसीम कर दिया जो रिज़्क मुक़द्दर में कर दिया है उस को न कोई बन्द कर सकता है और न कोई उसका रोकने वाला है। रिज़्क (मकसूम) न कोई बढ़ा सकता है न उसे कोई कम कर सकता है न उस का नर्म सख्त हो सकता है और न सख्त नर्म, कल का रिज़्क आज नहीं खाया जा सकता। ज़ैद की किसमत उमर की तरफ़ मुन्तक़िल नहीं हो सकती, अल्लाह हराम रिज़्क भी देता है और हलाल भी। इस का मतलब यह नहीं कि उसने हराम को मुबाह कर दिया है बल्कि यह मतलब है कि हराम (रिज़्क) को भी वह बदन की ग़िज़ा और जिस्म की कुव्वत बना देता है। उसी तरह कातिल मकतूल की ज़िन्दगी मुनक़तअ करता बल्कि मकतूल अपनी मौत आप मरता है यही हाल उस शख्स का है जो पानी में डूब जाता है या उस पर दीवार गिर जाती है या पहाड़ की बुलन्दी से फेंक दिया जाता है या कोई दरिन्दा उस को खा जाता है (यह सब अपनी मौत से मरते हैं) मुसलमानों और मोमिनों की हिदायत याबी और काफ़िरों की ज़लालत और गुमराही अल्लाह ही की तरफ़ से है यह सब उसी का फ़ैअल और उसी का सन्नाई है उस के मिल्क में कोई शरीक नहीं। अल्लाह तआला का इरशाद है।

उन आमाल का बदला है जो वह करते रहे हैं

इसी के साथ मज़ीद इरशाद फ़रमाया

तुम्हारे सब्र करने के एवज़ में जैसा तुम करते हो वैसा ही बदला दिया जाएगा और जैसा करोगे वैसा ही सवाब पाओगे।

दोज़खियों से पूछा

तुम का दोज़ख में किस चीज़ ने दाख़िल किया उन्होंने कहा हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे और न हम मिसकीन को खाना देते थे।



फिर इरशाद फरमाया।

यह वह आग है जिस को तुम झुटलाते थे।

इसी सिलसिले में इरशाद फरमाया: उसके एवज जो तेरे दोनों हाथ पहले कर चुके हैं। इन आयात के अलावा दूसरी आयात हैं जिनमें अल्लाह तआला ने जजा को इन्सान के अफआल से मुताल्लिक फरमाया है, बन्दे का कसब करना इस से साबित होता है। जहमीया फिरके के लोग इस के खिलाफ है। वह कहते हैं कि बन्दों के कसब का वजूद नहीं, इन्सानी अमल ऐसा है जैसे दरवाजा का खुलना और बन्द होना यानी गैर एख्तियारी, खोलने वाला चाहता है तो दरवाजा खुलता है और बन्द करना चाहता है तो बन्द कर देता है। वह उस दरख्त की मानिन्द हैं जो हिलाया जाता है और हरकत दिया जाता है (दरख्त मजबूर है उस की हरकत उस के एख्तियार से नहीं होती) यह लोग हक के मुनकिर हैं और किताब व सुन्नत की तरदीद करते हैं।

## कदरिया का नजरिया

कदरिया (मुअतजला) काइल हैं कि इंसान अपने आमाल का खुद खालिक है अल्लाह उन्हें गारत करे। यह उम्मत मोहम्मदिया के मजूसी हैं उन्होंने इन्सानों को अल्लाह का शरीक ठहराया है और अल्लाह की तरफ इज्ज की निसबत करते हैं। उन्होंने अल्लाह के मुल्क में ऐसी चीजों के वजूद को तसलीम किया है जो अल्लाह की कुदरत और इसादे से बाहर है हालांकि अल्लाह उससे बहुत बुलन्द और बरतर है। इरशाद फरमाता है: अल्लाह ने तुम को और तुम्हारे आमाल को पैदा किया है। जब बदला इंसान के आमाल पर वाकेअ है तो अल्लाह की तरफ से तखलीक भी आमाल पर होगी (यानी जब जजा व सजा का खालिक अल्लाह तआला है तो आमाल की तखलीक भी अल्लाह तआला ही का काम होगा) यह जाइज नहीं की कहा जाए उस (मुन्दर्जा बाला नस) से मुराद वह काम हैं जो बन्दे पत्थरों पर बनाते हैं (बुतों की मूर्तें) क्योंकि पत्थर तो जिस्म हैं, किसी जिस्म को करने का कुछ मफहूम नहीं बल्कि करने का ताल्लुक उन आमाल से है जो इन्सान करता है। पस आमाल वह हैं जो इन्सान करता है (न कि जामिद अजसाम) हेकीकत में तखलीक इलाही इन्सान के आमाल की राजेअ है वह हरकत हो या सुकूत। खुदावन्दे आलम का इरशाद है:

वह लोग हमेशा इखतेलाफ में पड़े रहेंगे सिवा उन लोगों के जिन लोगों पर आप का रब रहम फरमाये उन को तो अल्लाह ने उसी (इखतेलाफ करने के) लिए पैदा किया है।

दूसरी जगह इस तरह इरशाद होता है:

क्या उन्होंने अल्लाह के ऐसे शरीक बना रखे हैं जिन्होंने अल्लाह की तखलीक की तरह मखलूक का पैदा किया जिसकी बिना पर अल्लाह तआला की मखलूक और मफरूजा शरीकों की मखलूक में इम्तियाज नहीं रहा, आप फरमा दीजिए कि अल्लाह हर चीज का खालिक है।

इस सिलसिले में इरशाद हुआ

क्या अल्लाह के सिवा कोई और खालिक है जो जमीन और आसमान से तुम को रिज्क देता है।

मुशरिकों की हालत बयान फरमाते हुए इरशाद फरमाया।

अगर उन्हें कोई भलाई पहुंच जाए तो यह कहें यह अल्लाह की तरफ से है और अगर बुराई पहुंच जाए तो कहें यह तुम्हारी जानिब से है उन से कह दीजिए कि सब खुदा की जानिब से है,



उन लोगों को क्या हुआ है कि यह बात समझने की कोशिश नहीं करते।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है "अल्लाह ने हर कारीगर को और उस की सनअत को पैदा किया यहां तक की कसाब को और उसके ज़िबह करने के फ़ैज़ल को भी।

हज़रत इब्ने अब्बास ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत बयान की कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने ही ख़ैर व शर को पैदा किया, उन लोगों की खुश ख़बरी हो जिन के हाथों पर मैंने नेकी मुक़द्दर फ़रमाई और उन की ख़राबी हो जिन के हाथों पर मैंने शर पैदा किया।

हज़रत इमाम अहमद से दरयाफ़्त किया गया कि जिन आमाल की वजह से लोग अल्लाह की रज़ामन्दी या नाराज़गी के मसतौजिब होते हैं क्या उन में कोई अमल अल्लाह की तरफ से होता है या बन्दों की तरफ से? इमाम अहमद ने जवाब में फ़रमाया वह पैदा किये हुए अल्लाह के हैं और किए हुए बन्दों के।

## मुसलमान गुनाह से काफ़िर नहीं होता

हमारा भी अक़ीदा यही है कि मोमिन कितने ही सगीरा या कबीरा गुनाह करे लेकिन वह काफ़िर नहीं होता ख़्वाह वह तौबा के बग़ैर ही मर जाए बशर्ते कि तौहीद व ईमान को तर्क न किया हो। इस सूरत में उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द होगा चाहे वह बख़्श दे और जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे और चाहे तो सज़ा दे और दोज़ख़ में भेज दे। लिहाज़ा तुम को अल्लाह तआला और उस की मख़लूक के दर्मियान दख़ल न देना चाहिये जब तक अल्लाह उसके अन्जाम की ख़बर खुद न दे।



## बाब 7

## मआद से मुताल्लिक अक्काइद

अजाब व सवाब, मुनकर नकीर, मेराज, शहीद और मोमिन

शफाअत, पुल सिरात, कौसर, हशर

और आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

## अजाब व सवाब

हमारा अक्कीदा है कि मोमिन गुनाहे कबीरा के बाइस दोजख में तो जाएगा लेकिन वह हमेशा दोजख में नहीं रहेगा बल्कि आखिर में वहां से रिहाई पाएगा दोजख उसके हक में कैद खाने की तरह होगा। बकदरे जुर्म व गुनाह रहने के बाद वहां से रिहाई मिल जाएगी। उसके चेहरे पर आग की लपट नहीं पहुंचेगी उसके आजाए सुजूद को आग नहीं जलाएगी, यह आजा आग पर हराम कर दिए गये हैं। जब तक वह दोजख में रहेगा अल्लाह से उस की उम्मीद नहीं टूटेगी आखिरकार वह दोजख से निकल कर जन्नत में दाखिल हो जाएगा। दुनिया में उस ने जैसी और जिस कदर ताअत की होगी उसी के मुवाफिक उसको जन्नत में दरजात दिए जाएंगे।

मुतजला का कौल इस के खिलाफ है। वह कहते हैं की कबीरा गुनाह से नेकियां बरबाद हो जाती हैं, उन का कोई सवाब नहीं मिलेगा। ख्वारिज का भी यही कौल है, मोमिन पर लाजिम है कि तकदीर की भलाई, बुराई और कजाए इलाही के तल्ख व शीरी (अच्छाई, बुराई) पर ईमान रखे और इस बात पर भी ईमान रखे कि जो कुछ असबाबे रहमत उस को मयस्सर हैं वह महज अल्लाह तआला का फज़ल व करम हैं न कि उसकी कोशिशों का नतीजा और समरा।

हमारा अक्कीदा है कि जो कुछ (कल तक) हुआ और कयामत तक आइन्दा होगा वह कजा व तकदीर से हुआ और आइन्दा होगा। लौहे महफूज में अल्लाह तआला ने जो तकदीर लिख दी है उससे कोई बंदा भाग नहीं सकता, कजाए इलाही के खिलाफ सख्त कोशिश के बाद भी न कोई शख्स किसी को नुकसान पहुंचा सकता है और न फाइदा। हजरत इब्ने अब्बास से मरवी हदीस में यही आया है कि अल्लाह तआला फरमाता है।

अगर अल्लाह तुम को कोई जरूर पहुंचाए तो उसी के सिवा कोई दूसरा उस दुख का दूर करने वाला नहीं अगर वह तुम को भलाई पहुंचाना चाहे तो उस के फज़ल को कोई रद करने वाला नहीं वह अपने बन्दों में जिसको चाहता है अपने फज़ल से नवाज़ता है।

हजरत जैद बिन वहब ने हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत की है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम से हर एक की तखलीक इस तरह हुई है कि चालीस दिन मां के पेट में बसूरत नुतफा रहता है। (एक रिवायत में चालीस रातें आता है) फिर वह उतनी ही मुदत वह मुनजमिद खून की शक्ल में फिर उतनी ही मुदत गोश्त के लोथड़े की



गुनियतुत्तालिबीन

शकल में रहता है फिर उसके बाद अल्लाह तआला फरिश्ते को इन चार बातों के साथ उसके पास भेजता है, सूरत, रिज़्क, अमल, सआदत या शकावत। इंसान उम्र भर दोज़खियों के से अमल करता है यहां तक कि उसके और दोज़ख के दर्मियान एक हाथ का फासला रह जाता है अचानक तकदीर का लिखा गालिब आ जाता है और वह जन्नतियों का काम करके जन्नत में दाखिल हो जाता है और इसी तरह आदमी जन्नतियों के काम करता है यहां तक कि उसके और जन्नत के दर्मियान सिर्फ एक हाथ का फासला रह जाता है कि यकायक तकदीर का लिखा गालिब आ जाता है और वह दोज़खियों के काम करके दोज़ख में दाखिल हो जाता है।

हश्शाम बिन उरवह कहते हैं कि मेरे वालिद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा से रिवायत हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कोई शख्स अहले बहिश्त के से काम करता है मगर लौहे महफूज़ में उस के मुक़्दर में दोज़ख लिखा है चुनांचे मौत के करीब पहुंच कर वह उन कामों से फिर कर दोज़खियों के से काम करने लगता है यहां तक की उस हाल में मर कर दोज़ख में पहुंच जाता है और किसी मुक़्दर में लिखा होता है कि यह अहले बहिश्त से है मगर वह दोज़खियों के से काम करता है फिर जब मरने कि करीब होता है तो उन कामों को छोड़ कर अहले बहिश्त के से काम करने लगता है यहां तक की उस हाल में मर कर वह जन्नत में चला जाता है।

हज़रत अब्दुर्रहमान सलमी हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहु से रिवायत हैं कि एक दफ़ा हम लोग बारगाहे रिसालत में हाज़िर थे हुज़ूर ज़मीन कुरैद रहे थे अचानक सर उठा कर फरमाया कोई ऐसा नहीं जिसकी जगह दोज़ख या जन्नत मुक़्दर न हो चुकी हो। यह सुनकर सहाबा ने अर्ज किया हम मुतवक्किल हो जाएं? हुज़ूर ने फरमाया अमल करो जिस के लिए उस को पैदा किया गया है वह उस पर आसान कर दिया गया है।

सालिम बिन अब्दुल्लाह अपने वालिद हज़रत अब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर बिन खत्ताब ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! हम जो कुछ करते हैं क्या यह पहले से तय शुदा चीज़ है या अज़ सरे नौ पैदा की जाती है, हुज़ूर ने इरशाद फरमाया तय शुदा चीज़ है। हज़रत उमर ने अर्ज किया तो फिर इसी पर एतमाद करके न बैठ जायें? हुज़ूर ने फरमाया तुम अमल करो, हर एक को उसी बात की तौफ़ीक दी जाती है जिस के लिए उस को पैदा किया गया है जो अहले सआदत में होता है वह सआदत के काम करता है और जो बदबख्त है वह बदबख्तों जैसा अमल करेगा।

## मेराज और दीदारे इलाही

### शबे मेराज

हम ईमान रखते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शबे मेराज में अपनी रब को जिस्मानी आंखों से देखा दिल की आंखों से नहीं और न ख्वाब में। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैंने अपने रब को रूबरू देखा इसमें कोई शक व शुबा नहीं और फरमाया कि मैंने उसको सिदरतुल मुन्तहा के पास देखा यहा तक की रब के चेहरे का नूर मेरे सामने जाहिर हुआ।



हजरत इब्ने अब्बास ने आयत

तर्जमा:—(यानी हम ने आप को जो ख्वाब दिखाया है उससे हमने लोगों का इम्तेहान किया है) की तफसीर में फरमाया है कि रूया से मुराद आंखों का देखना है जो शबे मेराज में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिखाया गया है। हजरत इब्ने अब्बास फरमाते हैं कि हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को खुल्लत मिली, हजरत मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम और मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दीदारे इलाही हासिल हुआ। हजरत इब्ने अब्बास ने यह भी फरमाया कि मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने रब को अपनी आंखों से दो मरतबा देखा। यह रिवायत हजरत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहो अन्हा के उस रिवायत से मआरिज नहीं जो रोइत के इनकार में मरवी है इस लिए कि इस में नफी है और उन अहादीस (मजकूरा बाला) में इस्बात है और मुसबत को मनफी पर मुकद्दम रख जाता है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने लिए रोइत का इस्बात फरमाया है। हजरत अबू बकर बिन सुलैमान का कौल है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने रब का दीदार ग्यारह मरतबा किया, नौ बार का सबूत अहादीस से मिलता है जब कि आप हजरत मूसा अलैहिस्सलाम और अल्लाह तआला के माबैन तखफीफे नमाज के लिए बार बार आए गए और पचास वक्त की नमाज के बजाये पांच वक्त की नमाज फर्ज की गई। (45 बार की तखफीफ हो गई) यह सुनन नबवी से साबित है और दो बार अल्लाह तआला का दीदार कुरआन से साबित है।

## मुनकर नकीर

हमारा ईमान है कि अंबिया अलैहमुस्सलाम कि सिवा हर शख्स के पास कब्र में मुनकर नकीर आते हैं मुर्दे में रूह डाली जाती है मुनकर नकीर उससे सवाल करते हैं और उसका इम्तेहान लेते हैं कि वह किस दीन का मुअतकिद था मुर्दा को बिठाया जाता है जब सवाल खत्म हो जाता है तो बगैर तकलीफ के उसकी रूह फिर खींच ली जाती है।

## मुर्दा ज़ाइर को पहचानता है

हमारा ईमान है कि मुर्दा की कब्र पर आने वाले को मुर्दा पहचानता है। जुमा के दिन तुलूए फज्र के बाद तुलूए आफताब तक यह शिनाख्त और ज़्यादा क़वी होती है।

## जुगता कब्र या फिशारे कब्र

गुनाहगारों और काफ़िरों के लिए कब्र के दबाव और कब्र के अज़ाब पर ईमान लाना भी वाजिब है। ईमानदारों और नेको कारों को कब्र में राहतें मयस्सर होंगी इस पर भी ईमान रखना लाज़िम है। मोतज़ला का कौल है इस के खिलाफ़ है वह कब्र के अज़ाब, राहत और मुनकर नकीर के सवालात को नहीं मानते। अहले सुन्नत के कौल का सबूत इस आयत से होता है अल्लाह तआला का इरशाद है: अल्लाह अहले ईमान को मजबूत बात पर काएम रखता है, दुनयवी ज़िन्दगी में भी और आखिरत में भी।

तफसीर में मनकूल है कि इस आयत में दुनयवी ज़िन्दगी से मुराद रूह के निकलने का वक्त (वक्ते इन्तेकाल) है और आखिरत से मुराद कब्र के अन्दर मुनकर नकीर के सवाल का वक्त है हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि जब तुम में से



किसी को कब्र में रखा जाता है तो दो काले रंग के नीली आंखों वाले फरिश्ते आते हैं उन में से एक मुनकर दूसरा नकीर है वह दोनों मुर्दे से पूछते हैं तू इस हस्ती यानी मोहम्मद रसूलुल्लाह के मुताल्लिक क्या कहता है? मुर्दा जिन्दगी में जो कुछ करता था वही बयान कर देगा अगर मर्द मोमिन है तो कहेगा अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। इस जवाब को सुन कर वह दोनों फरिश्ते कहेंगे हम को मालूम था तू ऐसा ही कहेगा उसके बाद मुर्दे की कब्र को 70 70 हाथ कुशादा कर दिया जाएगा और उस की कब्र रौशन कर दी जाएगी फिर वह दोनों फरिश्ते कहेंगे सो जा कहेगा मुझे इजाजत दो कि मैं अपने अहल व अयाल के पास जाकर यह खुशखबरी दूँ लेकिन फरिश्ते जवाब देंगे उस दुलहन की तरह सो जा वही बेदार करते हैं जो घर वालों में उस को सब से ज्यादा प्यारा होता है चुनांचे वह सो जाएगा यहां तक कि अल्लाह तआला उसे उसकी ख्वाबगाह से उठाएगा।

अगर मुर्दा मुनाफिक होगा तो सवाल के जवाब में कहेगा मैं नहीं जानता लोगों को जो कुछ कहते सुनता था वही मैं कह देता था फरिश्ते कहेंगे हम तो पहले ही जानते थे कि तू ऐसा कहेगा उसके बाद वह जमीन को हुक्म देंगे कि इस पर तंग हो जा, जमीन मुर्दे पर ऐसी तंग होगी कि मुर्दे की पसलियां इधर उधर निकल जाएंगी और वह हमेशा उसी अजाब में रहेगा यहां तक कि अल्लाह तआला उसको उसकी कब्र से उठाएगा।

## मोमिन का नेक अंजाम

इस मसला के सबूत के लिए अता बिन यसार की रिवायत से तमस्सुक किया गया है वह कहते हैं कि आहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हजरत उमर रजियल्लाहो अन्हो से फरमाया उमर उस वक्त तेरा क्या हाल होगा जब तेरे लिए तीन हाथ (गज) एक बालिश्त लंबी और एक हाथ एक बालिश्त चौड़ी, जमीन दुरुस्त की जाएगी फिर तेरे घर वाले तुझे गुस्ल दे कर कफन पहनायेंगे खुशबू लगायेंगे जनाजा उठायेंगे फिर दफन कर देंगे और लौट आएंगे फिर कब्र में तेरे पास सवाल करने वाले मुनकर नकीर आयेंगे जिनकी आवाजें कड़क की तरह और आंखें चुंधिया देने वाली बिजली की तरह होगी उन के बाल लटके हुए होंगे वह तुझे डरायेंगे और पूछेंगे तेरा रब कौन है और तेरा दीन क्या है? हजरत उमर ने अर्ज किया या रसूलल्लाह यह दिल जो मेरे पास आज है क्या यही दिल मेरे पास उस वक्त भी होगा हुजूर ने फरमाया हां। हजरत उमर ने अर्ज किया तो फिर वह उन दोनों के लिए काफी होगा।

यह हदीस इस अम्र पर दलील है कि रुह दोबारा बदन में डाली जाएगी क्योंकि हजरत उमर ने जब अर्ज किया था कि क्या मेरे साथ मेरा दिल होगा तो हुजूर ने फरमाया। हां

हजरत मिन्हाल बिन अम्र ने हजरत बरअ बिन आजिब से रिवायत की है कि हम लोग एक बार हुजूर के हमराह एक अंसारी के जनाजा में गए जब कब्र के नजदीक पहुंचे तो देखा लहद तैयार नहीं है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठ गए हम भी गिरंदा गिर्द बैठ गए (अज रुए ताजीम व हैबते रसूलुल्लाह) हम सब ऐसे बेहिस व हरकत बैठे थे गोया हमारे सरो पर परिन्दे बैठे हैं। हुजूर दस्ते मुबारक की लकड़ी से जमीन कुरेदने लगे फिर सरे मुबारक उठा कर दो या तीन बार फरमाया मैं अजाबे कब्र से अल्लाह की पनाह मांगता हूँ फिर इरशाद फरमाया जब बन्दए



मोमिन आखिरत की तरफ मुंह किये दुनिया से कतअ ताल्लुक करता है तो उस पर गोरे रंग के फरिश्ते नाज़िल होते हैं उन के चेहरे पर आफ़ताब की तरह ताबां होते हैं उनके पास जन्नत का कफ़न और जन्नत की खुशबू होती है यह फरिश्ते उस बन्दे मोमिन बफ़ासला हद्दे नज़र बैठ जाते हैं उसके बाद मौत का फरिश्ता उसकी बालेन पर बैठ कर कहता है ऐ आराम पाने वाले पाकीज़ा नफ़्स बाहर निकल आ। अल्लाह की दी हुई खुशनूदी और मग़फ़िरत की तरफ़ आ। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि उस वक़्त वह जान इस तरह बाहर आ जाती है जैसे बरतन से पानी का कतरा बहता है फ़ौरन वह फ़रिश्ते उसको ले लेते हैं और पल भर के लिए मलकुल मौत के हाथ में नहीं छोड़ते उसे उस जन्नत वाले कफ़न और खुशबू में लपेट देते हैं वह खुशबू मुश्क की खुशबू से बेहतर होती है। उस खुशबू का वजूद रुए ज़मीन पर कहीं नहीं है उसके बाद वह फ़रिश्ते उसको लेकर ऊपर आसमान पर चढ़ते हैं मलाइका की जिस सफ़ से भी गुज़रते हैं सब मलाइका कहते हैं कि यह किस की पाकीज़ा तरीन खुशबू है? फ़रिश्ते सबसे अच्छा नाम लेकर बताते हैं कि यह फ़लां बिन फ़लां की रूह है जब आसमान पर पहुंचते हैं तो उनके लिए दरवाज़ा खूल जाता है फ़रिश्ते उस का इस्तक़बाल करते हैं और इस तरह सातवें आसमान तक उसको पहुंचाया जाता है उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इस बन्दे का नामए आमाल इल्लीईन में लिखो और इसे उस ज़मीन की तरफ़ ले जाओ जिससे हमने इस को पैदा किया था हमने ज़मीन से उनको पैदा किया और उसी में उठाएंगे।

चुनांचे रूह को दोबारा जिस्म में लौटा दिया जाता है फिर दो फ़रिश्ते मुनकर नकीर आते हैं और पूछते हैं कि तेरा रब कौन है और तेरा दीन क्या है? बन्दे मोमिन कहता है मेरा रब अल्लाह है, मेरा दीन इस्लाम है दोनों फ़रिश्ते फिर सवाल करते हैं कि इस जाते वाला के बारे क्या कहते हो जिस को अल्लाह तआला ने तुम में मबऊस किया? बन्दा जवाब देता है कि वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं जो हमारे पास हक़ ले कर आए फिर फ़रिश्ते सवाल करते हैं कि तुम को यह बात किस तरह मालूम हुई बन्दा कहेगा मैंने अल्लाह की किताब यानी कुरआन पढ़ा उस पर ईमान लाया और उस की तसदीक़ की। उस वक़्त आसमान से एक पुकारने वाला पुकार उठेगा कि मेरे बन्दे ने ठीक़ कहा इस के लिए जन्नत का फ़र्श बिछाओ और इस को जन्नत का लिबास पहना दो और इस के लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दो। उस वक़्त बन्दे को जन्नत की हवा और खुशबू आने लगेंगी उस की कब्र मुन्तहाए नज़र तक कुशादा कर दी जाएगी उस वक़्त एक शख्स ख़ूबरू खुशबू में बसा हुआ उसके पास आकर कहेगा तुझे बशारत हो इस मुसरत आफ़रीं चीज़ की। यह वही दिन है जिस का तुझ से वादा किया गया था वह कहता है कि तू कौन है आने वाला कहता है मैं तेरा अमले सालेह हूं उस वक़्त बन्दा कहेगा इलाही क़यामत कायम फ़रमा दे।

## काफ़िरों का अंजामे बद

हुज़ूर ने फ़रमाया कि जब काफ़िर बन्दा दुनिया छोड़ता है और आखिरत की तरफ़ जाता है तो उस के लिए आसमान से दो काले चेहरे वाले फ़रिश्ते उतरते हैं वह एक टाट साथ लेकर आते हैं और उसकी हद्दे निगाह पर जाकर बैठ जाते हैं फिर मौत का फरिश्ता उसके सरहाने आकर बैठ जाता है और कहता है ऐ ख़बीस रूह बाहर निकल अल्लाह की नाराज़गी और उस के ग़ज़ब



की तरफ आ। रुह खौफ से तमाम आज्ञा में फैल जाती है मलकुल मौत उस रुह को इस तरह खींचता है जैसे भीगी हुई ऊन से मेख खींची जाती है चुनांचे उसकी तमाम रंगें और आसाब टूट जाते हैं फ़रिश्ते उस को टाट में लपेट देते हैं उससे सड़े हुए मुरदार की बू आती है।

फ़रिश्ते उस को ऊपर चढ़ा कर ले जाते हैं और मलाइका की जिस सफ़ से गुजरते हैं वह यही कहते हैं यह ख़बीस बू कहां से आई है। उसको ले जाने वाले फ़रिश्ते उसका सबसे बुरा नाम लेकर कहता है यह फ़लां इब्ने फ़लां है। जब दुनिया के आसमान का दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं नहीं खोला जाता है उसके बाद हुज़ूर ने आयत **ला तो फ़त्तेहो लहुम अब्बाबुस्समा** तिलावत फ़रमाई अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इसकी किताब को सिज्जीन में लिख दो उस के बाद उसकी रुह को ज़मीन की तरफ फेंक दिया जाता है यह इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूर ने ये आयत तिलावत फ़रमाई:

**तर्जमा:**—जो शख्स अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता है उस का यही हाल होता है कि वह आसमान से गिराया जाता है और परिन्दे उसे उचक लेते हैं या हवा उसे दूर जगह फेंक देती है यानी उस की रुह दोबारा बदन में डाली जाती है और दो फ़रिश्ते आकर उस को बिठाते हैं और दरयाफ़्त करते हैं तेरा रब कौन हैं? वह कहता है हाय हाय मुझे मालूम नहीं फ़रिश्ते कहते हैं तेरा दीन क्या है वह कहता है ऐ वाए मैं नहीं जानता फ़रिश्ते कहते हैं वह जाते गिरामी जिस की बेअसत तुम लोगों में हुई थी उस के मुताल्लिक क्या कहता है वह कहता है हाय हाय मैं नहीं जानता उस वक़्त एक मुनादी आवाज़ देता है मेरे बंदे ने झूट बोला उसके लिए आग का बिस्तर कर दो और आग के कपड़े पहना दो और दोज़ख का एक दरवाज़ा उस के लिए खोल दो चुनांचे दोज़ख की कुछ गरमी और लपट उस की तरफ आती है कब्र इतनी तंग हो जाती है कि इधर उधर पसलियाँ निकल जाती हैं और एक शख्स बद सूरत बद लिबास बदबूदार आकर कहता है तुझे इस तकलीफ़ रसां हालत की बशारत हो यही वह दिन है जिस का तुझ से वादा किया जाता था वह कहता है तू कौन है आने वाला कहता है मैं तेरा अमले बद हूं वह कहता है परवरदिगार कयामत बरपा न करना।

हजरत अब्दुल्लाह इब्न उमर का कौल है कि जब मोमिन को क़ब्र में रख दिया जाता है तो उस की क़ब्र सत्तर हाथ लम्बी और सत्तर हाथ चौड़ी कर दी जाती है उस पर फूल बिखेरे जाते हैं और जन्नत के रेशमी कपड़ों से उस पर परदा डाल दिया जाता है अब अगर उस के पास कुरआन का कोई हिस्सा हिफ़ज़ है (यानी कुरआन का कुछ हिस्सा ऐसा याद हो जिस को वह पढ़ा करता था) तो उस का नूर उस के लिए काफी होता है वरना आफ़ताब की नूर की तरह उसके लिए क़ब्र में रौशनी कर दी जाती है और उस की हालत उस दुल्हन की तरह होती है जिस को बेदार करने वाला उस के सिवा कोई नहीं होता वह सो कर उठती है तो ऐसा मालूम होता है कि उस की नींद अभी पूरी नहीं हुई है।

## काफ़िर की क़ब्र में हालत

काफ़िर को जब क़ब्र में रखा जाता है तो उस पर क़ब्र ऐसी तंग हो जाती है कि उसकी पसलियां पेट के अन्दर टूट कर घुस जाती है और ऊंट के बराबर सांप उस पर डसने के लिए छोड़े जाते हैं जो उस का गोश्त इस तरह खाते हैं और नोचते हैं कि जिस्म की सिर्फ हड्डियां बाकी



रह जाती है और कुछ गूंगे, बहरे, अन्धे शैतान उस पर छोड़े जाते हैं उन्हीं को शैताने मरदूद कहा गया है उन के पास लोहे के घन होते हैं उन घनों से वह उस को मारते हैं और यह न उसकी आवाज सुनते हैं न उस को देखते हैं कि उन पर रहम खायें सुबह व शाम यह काफिर आग के सामने पेश किया जाता है।

इन तमाम अहादीस से कब्र का अजाब और कब्र की राहतें साबित हैं अगर कोई एतराज करे कि जिस शख्स को सूली दे दी गई हो और दरिन्दे परिन्दे उस का गोश्त नोच कर खा गये हों या कोई शख्स जल गया हो या डूब गया हो या दरिन्दों ने उस को फाड़ खाया हो तो उस का क्या होगा? उस पर अजाब किस तरह होगा? तो जवाब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कब्र के अजाब के बारे में फरमाया है और कब्र मुनकर नकीर के सवाल व जवाब को लोगों की आदत और तरीके के हसबे हाल बयान फरमाया है कि लोग मुर्दों को कब्रों में दफन करते हैं अगर किसी मुर्दा के अज्जा परागंदा हो जायें तो अल्लाह तआला उस की रूह को जमीन पर भेजता है अगर वह अजाब के लाएक है तो रूह को अजाब होता है और अगर नेक है तो रूह को राहत व नेमत मयस्सर होती है।

काफिरों की रूहों को दिन में दो मरतबा यानी सुबह व शाम अजाब दिया जाता है यह अजाब कयामत तक नाजिल होता रहेगा जब कयामत कायम होगी तो उन को जिस्मों के साथ दोजख में डाल दिया जाएगा। अल्लाह तआला का इरशाद है: सुबह व शाम आग पर उन की पेशी होती है और कयामत के दिन हुक्म होगा फिरऔनों को सख्त तरीके अजाब में दाखिल करो।

## अरवाहे शोहदा

हमारा यह अकीदा है कि शहीदों और मोमिनों की रूहें सब्ज परिन्दों के हौसलों (पोटों) में रहती हैं और जन्नत की सैर करती हैं और अर्श के नीचे नूर की किन्दीलों में लौट कर कयाम करती हैं। दूसरी मरतबा सूर फूँके जाने पर वह हिसाब व किताब के लिए जमीन पर उतर कर अपने जिस्मों दाखिल हो जाएंगी। हजरत इब्ने अब्बास से मरवी है कि हुजूर ने फरमाया जब तुम्हारे भाई ग़ज़वए उहद में शहीद हो गए ता उन की रूहों को अल्लाह तआला ने सब्ज परिन्दों के पोटों (हवासिल) में दाखिल कर दिया वह जन्नत में आज़ाद फिरते हैं और अर्श के साए में सोने की किन्दीलों में बसेरा करते हैं जब उन्होंने अच्छा खाना पहनना और पाकीज़ा आराम गाहें पाईं तो कहने लगे हमारे भाईयों को कोई मुत्तला कर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं हम को रिज़्क दिया जाता है पस वह जिहाद से गुरेज़ और जंग से एराज़ न करें अल्लाह तआला ने उनकी उस ख्वाहिश पर फरमाया और वह बड़ा सच्चा है कि मैं उन को मुत्तला कर दूंगा।

चुनांचे यह आयत नाजिल हुई:

जो लोग अल्लाह की राह मारे गए उन को मुर्दा ख्याल न करो बल्कि वह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं उन को रिज़्क दिया जाता है और अल्लाह ने उनको अपने फज़ल से जो कुछ अता किया है उस पर वह खुश हैं।

यह हो सकता है कि मोमिन और काफिर के जिस्म के बाज़ हिस्से से हो और बाज़ से न हो और जो सूलूक अज्जा से हुआ है कुल से हो। जवाब में यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला तमाम अज्जाए मुत्तर्फरका को तंगीए कब्र और मुनकर नकीर के सवाल के लिए जमा कर



देता है जिस तरह हशर और हिसाब किताब के लिए अल्लाह मुतफर्रिक अज्जा को जमा कर देगा।

## हशर अजसाद

कब्रों से मुर्दों के उठने और मुर्दों के मुनतशिर अज्जा के जमा होने पर ईमान लाना वाजिब है। जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है:

और कयामत आने वाली है इसमें कोई शक नहीं है और अल्लाह कब्रों वालों को जरूर उठाएगा जिस तरह अल्लाह ने तुम को पहली बार पैदा किया वैसी ही तुम दोबारा लौटोगे।

अल्लाह तआला का इरशाद है

इसी जमीन (मिट्टी) से हमने तुम्हें पैदा किया है और इसी में हम तुम्हें लौटाएंगे और इसी से हम तुम को दोबारा उठाएंगे।

अल्लाह कब्रों से निकालेगा और जमा करेगा इस लिए कि हर शख्स को उसकी कोशिश का बदला मिल जाए बदी करने वालों को अल्लाह उनके अमल की सजा दे दे और जिन्होंने नेकी की हो उनको नेकी सवाब अता फरमा दे।

अल्लाह तआला फरमाता है

वह अल्लाह जिस ने तुम को पैदा किया वही फिर तुम को मौत देता है और फिर जिन्दा करेगा

बेशक जो पहली बार पैदा करने पर कादिर है वह इस पर भी कादिर है कि उन्हें दोबारा जिला दे।



# सय्यदे कौनैन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत

## आंहज़रत का शफ़ाअत फ़रमाना

इस बात पर भी ईमान लाना वाजिब है कि अल्लाह तआल हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शफ़ाअत को कबीरा और सगीरा गुनाह करने वालों के हक में हिसाब के वक़्त कबूल फ़रमाएगा, हिसाब के वक़्त दोज़ख में जाने से पहले हुज़ूर तमाम उम्मतों के मोमिनो की शफ़ाअत फ़रमाएंगे और दोज़ख में दाखिल होने के बाद सिर्फ़ अपनी उम्मत की शफ़ाअत फ़रमाएंगे। अल्लाह तआला हुज़ूर की और दूसरे अहले ईमान की शफ़ाअत से गुनहगार दोज़ख से निकलेंगे यहां तक की जिस के दिल में ज़रा भर भी ईमान होगा और जिसने खुलूस के साथ एक बार भी कलमए तौहीद पढ़ा होगा वह भी दोज़ख में नहीं रहेगा।

फ़िरका क़दरिया (मुतज़ला) इस का मुनकिर है लेकिन अल्लाह तआला के इन इरशादात में उन के कौल की तकज़ीब मौजूद है

- (1) हमारा न कोई सिफ़ारशी है और न कोई गहरा दोस्त।
- (2) क्या हमारे कुछ सिफ़ारशी हैं जो हमारी सिफ़ारिश करें।
- (3) सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उनको फायदा नहीं देगी।

इन तमाम आयात मुन्दर्जा बाला से साबित है कि आखिरत में शफ़ाअत का वजूद होगा हर चंद कि काफ़िर इस से महरूम रहेंगे। इसी तरह हदीस शरीफ़ से भी साबित है हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सबसे पहले मैं ही वह शख्स हूंगा जो क़यामत के दिन ज़मीन के शिगाफ़ता होने के बाद बर आमद हूंगा मगर मैं यह बात फ़ख़्र के तौर पर नहीं कह रहा हूं मैं ही औलादे आदम का सरदार हूं और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं। लिवाइल हम्द मेरे ही हाथ में ही होगा मैं फ़ख़रिया नहीं कहता सबसे पहले मैं ही बिला फ़ख़्र बहिश्त में जाऊंगा मगर इस पर भी मुझे फ़ख़्र नहीं। सबसे पहले बहिश्त की जंजीर मैं ही हिलाऊंगा मुझे ही सबसे पहले बारगाहे इलाही में हाज़िर होने की इजाज़त दी जाएगी और दीदार हक़ नसीब होगा। मैं अल्लाह तआला के हुज़ूर में सजदा में गिर पड़ूंगा उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सर उठाओ और शफ़ाअत करो तुम्हारी शफ़ाअत कबूल की जाएगी सवाल करो तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा मैं सर उठा कर अर्ज करूंगा या रब्बे उम्मती उम्मती मैं बराबर अपने अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करता रहूंगा। अल्लाह तआला फ़रमाएगा जाओ देखो जिस के दिल में दाना के बराबर भी ईमान पाओ उस को दोज़ख से निकाल लो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत के इस क़दर लोगों को दोज़ख से निकालूंगा कि वह पहाड़ की बलन्दी के बराबर होंगे फिर दूसरे पैग़म्बर मुझ से कहेंगे कि अल्लाह के हुज़ूर में फिर मग़फ़िरत और बख़्शिश की दुआ करें मैं कहूंगा



कि इतने बार अपने रब से मैं सवाल कर चुका हूँ कि अब मुझे सवाल करते शर्म आती है।

हजरत जाबिर की रिवायत करदा हदीस में है कि हुजूर ने फरमाया, उम्मत मोहम्मदिया के कबीरा गुनाहों करने वालों के लिए मेरी सिफारिश होगी। हजरत अबू हुरैरा की रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि हर नबी की एक दुआ कबूल होती है चुनांचे हर एक नबी ने अपनी दुआ करने में उजलत से काम लिया लेकिन मैंने अपनी दुआ को महफूज रख छोड़ा ताकि क़यामत के दिन अपनी उम्मत की सिफारिश करूँ चुनांचे मेरी शफ़ाअत इन्शा अल्लाह उम्मत के उन लोगों के लिए होगी जिस ने अपनी ज़िन्दगी में अल्लाह के साथ किसी और को शरीक न किया हो। इन्शा अल्लाह मेरी दुआ उस के हक में ज़रूर कबूल होगी।

हजरत अनस की रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ज़मीन पर जिस क़दर पत्थर और ढेले पाए जाते हैं उनसे भी ज़्यादा लोगों की क़यामत में मैं शफ़ाअत करूँगा। आप की शफ़ाअत मीज़ाने अदल के पास भी होगी और पुल सिरात पर भी, इस तरह हर नबी की शफ़ाअत साबित है।

हजरत हुज़ैफ़ा की रिवायत है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम क़यामत के दिन कहेंगे ऐ मेरे रब अल्लाह तआला फरमाएगा लम्बैक, हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कहेंगे परवर दीगार तूने औलादे आदम को जला दिया अल्लाह तआला फरमाएगा जिस के दिल में एक गन्दुम या जौ के बराबर ईमान हो उसको आग से निकाल लो। इसी तरह हर उम्मत के अबरार और सिद्दीक की शफ़ाअत कबूल होगी। हजरत अबू सईद खुदरी से मरवी है कि हुजूर ने फरमाया हर आदमी को एक दुआ करने का हक अता किया गया है और मैंने अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिए उसे महफूज रखा है मेरी उम्मत के लोग ऐसे होंगे कि एक शख्स अपने कबीले की शफ़ाअत करेगा उस का कबीला बख़्श दिया जाएगा और जन्नत में दाखिल होगा। बाज़ लोग एक जमाअत की शफ़ाअत करेंगे और उनकी शफ़ाअत से अल्लाह उन को जन्नत में दाखिल फरमा देगा इसी तरह बाज़ लोग तीन आदमियों की, बाज़ दो आदमियों की और बाज़ एक आदमी की सिफारिश करेंगे।

हजरत इब्ने मसऊद से मरवी है कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुसलमानों के एक गरोह को दोज़ख का अज़ाब दिया जाएगा लेकिन अल्लाह की रहमत और शफ़ाअत करने वालों की शफ़ाअत से उन को जन्नत में दाखिल कर दिया जाएगा। हजरत ओवैस करनी की मशहूर रिवायत है कि जब लोग दोज़ख आग से जल कर कोयला हो चुके होंगे तो जिस पर अल्लाह तआला मेहरबानी, रहमत, करम और एहसान करना चाहेगा उसको दोज़ख से निकाल कर जन्नत में दाखिल कर देगा।

हजरत हसन बसरी ने ब रिवायत हजरत अनस बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं बराबर शफ़ाअत करता रहूँगा मेरा रब मेरी शफ़ाअत कबूल फरमाता रहेगा यहां तक कि मैं अर्ज करूँगा ऐ रब मेरी शफ़ाअत हर उस शख्स के लिए कबूल फरमा जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा है अल्लाह तआला फरमाएगा ऐ मोहम्मद यह शफ़ाअत न आप के लिए है और न किसी और के लिए, मुझे अपनी इज़्ज़त व रहमत की कसम मैं ला इलाहा इल्लल्लाह के क़ाएल को आग में नहीं छाड़ूँगा।



# सिरात

## सिरात की कैफियत

जहन्नम के ऊपर सिरात होने पर यकीन रखना वाजिब है। सिरात एक पुल है जो जहन्नम की पुश्त पर बिछा हुआ है वह पुल जिसे अल्लाह चाहे जहन्नम की तरफ खींच लेगा और जिसे चाहे उस उतार देगा। पुल से गुजरने वालों को उनके अमाल के मुताबिक नूर अता होगा कुछ यहां चलने वाले होंगे कुछ दौड़ने वाले, कुछ सवार, कुछ जानू के बल और कुछ चूतड़ों के बल घिसटने वाले होंगे।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक तवील हदीस में फरमाया है कि सिरात में आंकड़े होंगे ऐसे जैसे सअदान के कांटे। (सअदान एक खार दान घास है जिसे ऊंट बड़ी रगबत से खाता है इसके कांटे बहुत लम्बे लम्बे होते हैं) हुजूर ने सहाबा से दरयाफ्त फरमाया क्या तुम सअदान के कांटों से वाकिफ हो? सहाबा ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह जी हां हम वाकिफ हैं। रसूलुल्लाह ने फरमाया तो वह आंकड़े सअदान की तरह होंगे जिन की लम्बाई का अल्लाह तआला के सिवा किसी को अन्दाजा नहीं, यह कांटे लोगों को खींच लेंगे पस बाज लोग अपने आमाल की वजह की वजह से हलाक हो जाएंगे बाज लोग गहरे जख्म खायेंगे और दोजख में फेंक दिये जाएंगे और बाज लोग जख्मी होने के बाद नजात पा जाएंगे। वह आंकड़े अपनी धार के बाइस काटने के लिए भी होंगे। हुजूर ने यह भी फरमाया कि कुरबानी के जानवरों को फरबा बनाओ वह सिरात पर तुम्हारी सवारियां हैं। हुजूर ने फरमाया सिरात बाल से ज्यादा बारीक, शोला से ज्यादा गर्म और तलवार से ज्यादा तेज है उस की लम्बाई आखिरत के सालों के हिसाब से तीन सौ सालों की मुसाफत है नेक लोग तो सिरात से पार हो जाएंगे और बदकार उस से फिसल पड़ेंगे एक कौल यह भी है कि आखिरत के सालों के हिसाब से सिरात की मुसाफत तीन हजार साल है।

## हौजे कौसर

अहले सुन्नत का अकीदा है कि कयामत के दिन हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक हौज होगा जिससे अहले ईमान सैराब होंगे और काफिर महरूम रहेंगे। पुल सिरात से गुजरने के बाद और जन्नत में दाखिल होने से पहले यह हौज आप को अता किया जाएगा उस का पानी एक बार पीने के बाद कभी प्यास नहीं लगेगी। हौज की चौड़ाई एक माह की मुसाफत के बाद होगी उस का पानी दूध से ज्यादा सफेद और शहद से ज्यादा शीरी होगा। उस के चारों तरफ कूजे होंगे जो शुमार में सितारों के बराबर होंगे हौज में दो नल होंगे उसमें कौसर से आकर दो नालों के दहाने मिलते हैं उस पानी का मम्बा जन्नत है और उस की शाख मैदाने हिसाब में होगी।

हौज का तजकिरा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस हदीस में फरमाया है जो हजरत सौबान से मरवी है रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया कयामत के दिन मैं हौज के पास हूँ। हुजूर वाला से हौज की वुसअत की दरयाफ्त की गई? आप ने फरमाया जितनी इस मकाग से सम्मान तक है। उस का पानी दूध से ज्यादा सफेद और शहद से ज्यादा भीठा होगा उसमें जन्नत के दो नाले आकर मिल जाते हैं एक चांदी का दूसरा सोने का। जो एक बार उसका पानी पी



लेगा वह फिर कभी प्यासा नहीं होगा।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम से मिलने का मुकाम मेरा हौज है जिस की चौड़ाई उस की लम्बाई के बराबर होगी मरब्बा होगा। मक्का से एलिया तक जितना फासला है उसकी वुसअत इस से भी ज्यादा यह फासला एक माह की मुसाफत के ब कद्र है। उस पर कूजे सितारों की मानिन्द होंगे उस का पानी चांदी से ज्यादा सफेद होगा जो एक मरतबा उस का पानी पी लेगा फिर कभी प्यासा नहीं होगा। उसी तरह हर पैगम्बर को एक एक हौज दिया गया है सिवाये सालेह पैगम्बर के, उनका हौज ऊंटनी के थन होंगे, हर उम्मत के अहले ईमान हौज का पानी पियेंगे मगर काफिरों को पीना नसीब न होगा।

### हौजे कौसर की वुसअत

इसी सिलसिले की एक और हदीस में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरा हौज इतना है जितना अदन से उम्मान तक फासला है उस के दोनों किनारों पर मोतियों के खेमे नरब हैं और उसके कूजे तादाद में आसमान के सितारों के बराबर हैं उसकी मिट्टी खालिस मुश्क की है उसका पानी दूध से ज्यादा सफेद बर्फ से ज्यादा ठंडा शहद से ज्यादा शीरी है जो उस को एक बार पी लेगा फिर कभी प्यासा नहीं होगा, कयामत के दिन हौज पर मेरे पास आने से इस तरह अलग रखा जाएगा जिस तरह गैर ऊंट को दूसरे अपने ऊंटों से हंका दिया जाता है। हुजूर ने फरमाया मैं कहूंगा कि मेरे पास आओ मेरे पास आओ उस वक्त मुझे बताया जाएगा कि आप नहीं जानते कि आप के बाद इन लोगों ने कैसी कैसी नई बातें कीं मैं कहूंगा कि क्या नई बातें निकाली थीं कहा जाएगा इन्होंने आप की तालीम को बदल डाला था तब मैं कहूंगा कि दूर हो दूर हो (फिरका मोतजला ने इस हौज से इन्कार किया है लिहाजा वह इस हौज के पानी से महरूम रहेंगे) अगर यह लोग हौज के इन्कार से तौबा न करेंगे और आयात व हदीस व अकवाले सहाबा को रद्द करने से तौबा नहीं करेंगे तो दोजख में प्यासे दाखिल होंगे।

हजरत अनस बिन मालिक से मरवी हदीस में है कि हुजूर ने फरमाया कि जिसने शफाअत की तकजीब की उसको शफाअत नसीब नहीं होगी और जिस ने हौज की तकजीब की उसके नसीब में उसका पानी न होगा।

### रोजे हश्र हुजूर का कुर्ब व इख्तेसास

अहले सुन्नत का यह अकीदा है कि अल्लाह तआला अपने नबी मुख्तार सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कयामत के दिन अपने तमाम अंबीया व मुर्सलीन से बलन्द तर अपने कुर्ब में अर्श पर बिठाएगा। हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर ने एक आयत की तशरीह के तहत रिवायत की है कि हुजूर ने फरमाया कि अल्लाह तआला आप को अपने कुर्ब में तख्त पर बिठाएगा और हश्शाम बिन उरवा ने हजरत आएशा रजी अल्लाहो अन्हा से रिवायत बयान की है कि उन्होंने कहा हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मकामे महनूद के बारे में दरयाफ्त किया गया, हुजूर ने इरशाद फरमाया कि मेरे रब ने मुझे अर्श पर बिठाने का वादा फरमाया है। हजरत उमर बिन खत्ताब से भी ऐसा ही मरवी है। हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम से मरवी है कि हुजूर ने फरमाया जब कयामत का दिन होगा तो तुम्हारे नबी को बुला कर अल्लाह की कुर्सी पर बिठाया जाएगा लोगों



ने दरयाफ्त किया ऐ अबा मसऊद (रावी) जब अल्लाह तआला कुर्सी पर जलवा अफरोज होगा तो क्या हुजूर हक तआला के कुर्ब में होंगे उन्होंने कहा हां तुम्हारी समझ पर अफसोस है आप उसी के साथ ही होंगे।

## मुसलमानों का हिसाब और अल्लाह तआला की परदा पोशी

अहले सुन्नत का यह भी अकीदा है कि कयामत के दिन अल्लाह तआला मोमिन को हिसाब के लिए बुलाएगा तो उन्हें अपने करीब करके उन पर पर दस्ते करम रखेगा यहां तक कि उसे लोगों से छुपा लेगा। हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर से मरवी है कि उन्होंने आप आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह इरशाद फरमाते हुए सुना कि कयामत के दिन मोमिन को लाया जाएगा उस पर अल्लाह अपना दस्ते करम रखेगा यहां तक कि उसको लोगों से छुपा लेगा बन्दे मोमिन अपने तमाम गुनाहों को इकरार करेगा और दिल में सोचेगा कि मैं हलाक हो गया मगर अल्लाह अज्जा व जल्ल फरमाएगा मेरे बन्दे यह तेरे गुनाह हैं चूंकि मैंने दुनिया में उन्हें छुपा रखा था आज मैं तेरे लिए उन को बख्शाता हूं।

हिसाब लेने के मानी यह हैं कि बन्दे के सामने बुराईयों और नेकीयों की फेहरिस्त पढ़ कर उस के आमाल की जज़ा व सज़ा की मिकदार से वाकिफ किया जाएगा और जो चीज़ उस को नुकसान पहुंचाने वाली है उससे आगाह कर दिया जाएगा। मोतज़ला हिसाब लेने के मुनकिर हैं वह अल्लाह तआला के इस इरशाद को झुटलाते हैं: बेशक हमारी ही तरफ़ उनकी वापसी होगी और हमारे ही जिम्मा उन का हिसाब है।

## मीज़ान

अहले सुन्नत का यह भी अकीदा है अल्लाह की एक मीज़ाने अदल भी है जिसमें कयामत के दिन लोगों की नेकियां और बुराईयां वज़न की जाएंगी। मीज़ान के दो पलड़े और एक ज़बान डंडी जिसे पकड़ कर तौलते हैं होगी।

फिरकए मोतज़ला, फिरका मरजिया व खवारिज ने उस मीज़ाने अदल से भी इनकार किया है वह कहते हैं मीज़ान के मानी आमाल को तौलना नहीं है बल्कि अदल व इन्साफ़ के हैं। हालांकि अल्लाह की किताब और सुन्नत में उनकी तकज़ीब मौजूद है। अल्लाह तआला फरमाता है।

हम कयामत के दिन अदल की तराजूयें रखेंगे और किसी जान पर ज़र्रा बराबर जुल्म नहीं किया जाएगा उस का अमल राई के दाना के बराबर होगा तो हम उसे देंगे और हम हिसाब करने वाले काफी हैं।

मज़ीद इरशाद फरमाया है:

जिस के वज़न भारी होंगे वह पसंदीदा ऐश में रहेगा और जिस के वज़न हल्के होंगे वह हावीया (तबकए जहन्नम) की गोद में जाएंगे।

हल्का भारी अदल की सिफ़त नहीं है यह तराजू अल्लाह तआला के अपने हाथ में होगी। क्योंकि बंदों का हिसाब अल्लाह तआला ने अपने हाथ में रखा है नवास बिन समआन कुलाबी की रिवायत की है कि उन्होंने हुजूर को इरशाद फरमाते सुना कि रोज़े कयामत तराजू रहमान के हाथ में होगी वही कुछ को ऊंचा करेगा और कुछ पस्त। एक रिवायत यह भी है कि तराजू जिब्रील अलैहिस्सलाम के हाथ में होगी। हजरत हुज़ैफ़ा बिन यमान से मरवी है कि हजरत जिब्रील साहबे



मीज़ान होंगे। अल्लाह तआला हज़रत जिब्रील से फ़रमायेगा। ऐ जिब्रील इनका तवाज़ुन करो इनके आमाल तौलो जब वह तौलेंगे तो बाज़ के पलड़े भारी होंगे और बाज़ के हलके।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रिवायत करते हैं कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तराजू रखी जायेगी एक आदमी को लाया जायेगा और उसे तराजू के पलड़े में रखा जायेगा और दूसरे पलड़े में उसके तमाम आमाल को। आमाल का पलड़ा अगर हलका होगा तो उसे दोज़ख की तरफ़ ले जायेंगे। उस वक़्त आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा कि इसे ले जाने में जल्दी न करो इसकी एक चीज़ वज़न होने से रह गई है। चुनांचे एक चीज़ लाई जाएगी जिस पर ला इलाहा इल्लल्लाह लिखा होगा उसको आदमी के आमाल के पलड़े (नेकियों के पलड़े) में रख दिया जायेगा उसकी वज़ह से तराजू (पलड़ा) झुक जायेगी और उसको जन्नत में भेजने का हुक्म दे दिया जायेगा।

एक और हदीस (मरफूअ) में आया है कि हुज़ूर ने फ़रमाया क़यामत के दिन एक आदमी को मीज़ान के पास लाया जायेगा फिर निनान्चे तूमार (दफ़तर) लाये जायेंगे। हर तूमार की लम्बाई हरे निगाह के बराबर होगी उन सब में उसके गुनाहों और ख़ताओं का इंदराज होगा चुनांचे उसकी बर्दियां नेकियों पर ग़ालिब आ जायेंगी। और उसको दोज़ख की तरफ़ भेजने का हुक्म हो जायेगा जब वह पुश्त फेरेगा तो अचानक एक बलन्द आवाज़ से पुकारने वाला पुकार कर कहेगा अभी इसका कुछ हिस्सा रह गया है चुनांचे कोई चीज़ अंगूठे के सरे (पोरे) के बराबर लाई जायेगी (हुज़ूर ने अंगूठे का निस्फ़ हिस्सा का पकड़ कर बताया) जिस पर ला इलाहा इल्लल्लाह व अन मोहम्मद रसूलुल्लाह (कलमए शहादत) तहरीर होगा। उसको उसकी नेकियां के पलड़े में रख दिया जायेगा तो नेकियां बुराईयां से भारी हो जायेंगी और उसको जन्नत की तरफ़ भेज देने का हुक्म हो जायेगा। एक हदीस के अल्फ़ाज़ इस तरह हैं कि हुज़ूर वाला ने अंगूठा पकड़ कर बताया फिर इतना काग़ज़ उसके लिये निकाला जायेगा जिस पर ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मद रसूलुल्लाह की शहादत तहरीर होगी बाज़ अक़वाल में आया है कि क़यामत के दिन ज़र्ज़त और राई के दानों के बराबर आमाल की सूरत होगी नेकियां अच्छी सूरत होंगी जिन को नूर के पलड़े में डाला जायेगा और अल्लाह की रहमत के साथ मीज़ान भारी हो जायेगी। बुराईयां बुरी और भौंडी सूरतों में होंगी उनको तारीक पलड़े में डाला जायेगा और अल्लाह के हुक्म के साथ मीज़ान भारी हो जायेगी।

मीज़ान के भारी हो जाने के मानी पलड़े का ऊंचा हो जाना है और हलके होने के मानी नीचा हो जाना है जो दुनियावी तौल के बर ख़िलाफ़ है। ईमान और शहादत का कलिमा पलड़ा भारी होने का बाइस होगा और पलड़े के हलके होने का बाइस अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना है। जो पलड़ा भारी होता है वह अपने मालिक को बहिश्त में ले जाता है और हलका पलड़ा मालिक को दोज़ख में पहुंचाता है, उस दोज़ख का नाम हाविया है, हाविया दोज़ख का सबसे निचला दर्जा है, अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जमा:—जिसके वज़न भारी होंगे वह पसंदीदा ज़िन्दगी यानी बहिश्त बरीं में होगा और जिसके वज़न हलके होंगे उसका ठिकाना वहां हाविया होगी।

## अहले हिसाब के अक़साम

आमाल के वज़न किए जाने के एतबार से तीन तरह के लोग होंगे (1) वह लोग जिन की



नेकियां बुराइयों से ज्यादा होंगी उनको जन्नत में जाने का हुक्म होगा (2) वह लोग जिनकी बर्दियां और बुराइयां नेकियों पर गालिब आएंगी उन को दोजख में जाने का हुक्म होगा (3) वह लोग जिन की नेकियां और बर्दियां बराबर होंगी यह लोग आराफ वाले होंगे फिर जब अल्लाह चाहेगा उन को जन्नत में दाखिल फरमा देगा। **व अलल आराफे रिजालुन** का यही मतलब है मुकर्रब बन्दे बगैर हिसाब के जन्नत में दाखिल हो जाएंगे जैसा कि हदीस शरीफ में आया है कि 70 सत्तर हजार बन्दे बे हिसाब के जन्नत में दाखिल होंगे।

अहले ईमान में से बाज लोगों को थोड़ा सा हिसाब लेकर जन्नत में दाखला का हुक्म दे दिया जाएगा बाज लोगों का पूरी तरह हिसाब लिया जाएगा फिर उन का मामला अल्लाह के सुपुर्द होगा वह चाहेगा तो जन्नत में भेज देगा चाहेगा तो दोजख में जाने का हुक्म देगा अल्लाह तआला का इरशाद है।

जिसके दाहिने हाथ में नामए आमाल दिया जाएगा उस का हिसाब आसानी से हो जाएगा मजीद इरशाद फरमाया है

हर इन्सान का आमाल नामा उस की गरदन में लटका दिया जाएगा वह उसे खुला हुआ देख लेगा और उसे हुक्म दिया जाएगा इसे पढ़ आज तेरी ज्ञात ही हिसाब लेने के लिए काफी है।

हजरत अली कर्रमल्लाह वजहहु से मरवी हदीस में हैं कि हुजूर ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला तमाम मखलूक का सिवाए मुशरिकों के हिसाब लेगा। मुशरिक का हिसाब नहीं लिया जाएगा और उस को बिना हिसाब ही दोजख में भेज देने का हुक्म होगा।

## जन्नत और दोजख

### जन्नत और दोजख

अहले सुन्नत का अकीदा है कि जन्नत और दोजख दोनों पैदा हो चुके हैं। यह दो घर हैं एक को अहले ताअत व अहले ईमान के सवाब व राहत के लिए अल्लाह ने बनाया है और दुसरा गुनहगारों और ना फरमानों के सजा और अजाब के लिए। यह दोनों घर अजल से हैं और अबद तक रहेंगे, कभी फना नहीं होंगे। यह जन्नत वही है जिसमें हजरत आदम हजरत हव्वा थे और इब्लीस लईन ने उन्हें वहां से निकलवाया और खुद भी निकाला गया। मोतजला इसके मुनकिर हैं। यह लोग जन्नत में दाखिल नहीं होंगे। अपनी जान की कसम यह हमेशा दोजख में रहेंगे जो मोमिन मोवहिहद सत्तर बरस तक अल्लाह की इताअत करता रहा सिर्फ एक गुनाहे कबीरा के इरतेकाब की वजह से उसको यह लोग दोजखी करार देते हैं। अल्लाह तआला की किताब और रसूलुल्लाह के इरशाद में उन लोगों के बातिल अकीदे की तकजीब मौजूद है। अल्लाह तआला फरमाता है:

जन्नत की वुसअत चौड़ाई आसमान और जमीन के बराबर है वह मत्तकियों के लिए तैयार की गई है।

और फरमाया:

उस दोजख से डरो जो काफ़ीरों के लिए तैयार की गई है।

हर जी फहम जानता है कि जो चीज तैयार हो चुकी है वह यकीनन पैदा हो चुकी है। इस



से साबित हुआ कि जन्नत व दोज़ख पैदा हो चुके हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक की रिवायत करदा हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं जन्नत के अन्दर गया तो मैंने वहां एक नहर बहती हुई देखी जिस के दोनों किनारों पर मोतियों के खेमे थे, बहते पानी की तरफ हाथ मार कर देखा तो वह खालिस मुश्क था। मैंने कहा जिब्रील यह क्या है? उन्होंने कहा यह वही कौसर है जो अल्लाह ने आपको अता फरमाया है।

## बहिश्त की सूरत

हज़रत अबू हुरैरा रिवायत करते हैं कि मैंने आंहरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ्त किया कि बहिश्त किस चीज़ से बनाई गई है आप ने इरशाद फरमाया उस की ईंटें सोने और चांदी की हैं और खालिस मुश्क उस का गारा है उस के संगरेजें याकूत और मरवारीद के हैं जाफ़रान और दरस की तरह इस की जमीन खुशबू दार है।

बहिश्त में दाखिल होने वाला उस में हमेशा रहेगा उस को कभी मौत नहीं आएगी, आराम से रहेगा। दुख नहीं होगा अहले बहिश्त के कपड़े कभी नहीं फटेंगे उन की जवानी पर जवाल नहीं आएगा। उनका शबाब मुबदल ब पीरी न होगा।

यह हदीस शरीफ इस बात की दलील है कि जन्नत और दोज़ख पैदा हो चुके हैं और जन्नत की राहत दवामी और गैर फ़ानी है। अल्लाह तआला की इरशाद है जन्नत का मेवा दवामी है और उस का साया भी।

दूसरी आयत में है: वह नेमतें न कभी खत्म होंगी और न इस्तेमाल पर रोक टोक होगी।

## हुराने बहिश्ती

जन्नत की नेमतें में बड़ी आंखों वाली हूरें भी हैं अल्लाह तआला ने उनको जन्नत के अन्दर हमेशा रहने के लिए पैदा किया है वह फ़ना नहीं होंगी।

अल्लाह तआला का इरशाद है

उन में नज़र बन्द रखने वाली हूरें हैं जिनको इससे पहले न किसी इंसान ने छुआ है और न किसी जिन्न ने।

मजीद इरशाद फरमाया है: खेमों में हूरें महफूज़ हैं।

हज़रत उम्मे सलमा फरमाती हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह मुझे आयत **क अमसालिल लूउल ईल मकनून** के बारे में बताइये हुज़ूर ने इरशाद फरमाया उनकी सफ़ाई ऐसी होगी जैसे सीप में मोती। इस इरशाद के बाद आप ने फरमाया हूरें कहेंगी हम हमेशा रहने वाली हैं हम कभी नहीं मरेंगी और हम खुश रहने वाली हैं कभी गुस्से नहीं होंगी। हुज़ूर ने फरमाया हूरें सच्चे घर में होंगी सच्ची ही बात कहेंगी। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चूंकि सादिक हैं हक़ बात के सिवा फरमाते ही नहीं, आप ने फरमाया कि हूरें हमेशा रहेंगी, कभी नही मरेंगी।

## आखिरत की बीवी

हज़रत मआज़ बिन जबल की रिवायत है हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने



फरमाया जब कभी कोई औरत अपने शौहर को ईजा देती है तो हूरे ऐन में से वह हूर जो आखिरत में उस की बीवी होगी उस औरत से कहती है खुदा तुझे हलाक करे, इस को दुख न दे यह तो तेरे पास मेहमान है अन्करीब तुझ से जुदा होकर मेरे पास आएगा। इस हदीस से यह साबित हुआ कि जन्नत और दोज़ख फना नहीं होंगे और न वह चीजें फना होंगी जो जन्नत और दोज़ख में हैं जो उसमें दाखिल होंगे उनको फिर वहां से नहीं निकाला जाएगा न अल्लाह तआला अहले जन्नत पर मौत को तसल्लुत करेगा न जन्नत की राहत को जवाल होगा। जन्नती हमेशा बढ़ती हुई राहतों में रहेंगे। अल्लाह तआला के हुक्म से जन्नत व दोज़ख की दर्मियानी दीवार पर मौत को जिबह कर दिया जाएगा और एक मुनादी पुकार कर कहेगा ऐ अहले जन्नत अब तुम हमेशा जिन्दा रहोगे तुम्हें कभी मौत नहीं आएगी और ऐ दोज़ख के मकीनो! तुम भी हमेशा जिन्दा रहोगे और मरोगे नहीं रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हदीस सहीह में इसी तरह मनकूल है।





## बाब 8

# हुजूर की रिसालत और आप की फज़ीलत उम्मतें रसूल, बिदअत, सिफ़ात इलाही, गुमराह फिरके

### सय्यदुल अंबिया नबीए आखिरीन

तमाम अहले इस्लाम का अकीदा है कि मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम अल्लाह के रसूल, तमाम रसूलों के सरदार और आखिरी नबी थे। अल्लाह तआला ने सब इंसानों और तमाम जिन्नात के लिए भेजा था। अल्लाह तआला का इरशाद है: हम ने आप को तमाम आदमियों के लिए भेजा है। हम ने आप को जहाने वालों के लिए रहमत बना भेजा है।

हज़रत अबू अमामा की रिवायत करदा हदीस में आया है कि हुजूर ने फ़रमाया अल्लाह ने मुझे दूसरे अंबिया पर चार बातों में बरतरी अता फ़रमाई है मुझे तमाम लोगों के लिए भेजा गया (आखिरी हदीस तक) और यह कि आप को वह तमाम मोज़जात दिए गए हैं जो आप के सिवा किसी को नहीं दिये गये। बाज़ अहले इल्म ने इन मोज़जात की तादाद एक हजार बताई है उन तमाम मोज़जात में से एक मोज़जा कुरआन शरीफ़ है।

हज़रत इब्ने अमामा से मरवी हदीस में है कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे तमाम नबियों पर चार बातों में फ़ज़ीलत दी है यह की मुझे तमाम इंसानों की तरफ़ भेजा गया (आखिरी हदीस तक) हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह मोज़जात दिये गये जो आप के सिवा किसी पैग़म्बर को नहीं दिये गए बाज़ उलमा ने इन मोज़जात की तादाद एक हजार शुमार की है उन तमाम मोज़जात में से एक मोज़जा कुरआन हकीम है। कुरआने करीम की तरतीब इबारत ऐसे निराले तरीक़े से है जो कलाम अरब के तमाम असालीबे बयान और उनके नज़्म व तरतीब से जुदा है इसकी तरतीब व तरकीब, इस की फ़साहत, बलागत हर फ़सीह व बलीग़ की फ़साहत व बलागत से बलन्द तर है। अहले अरब इस की एक सूरत की नज़ीर पेश करने से आजिज़ हो गए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: कुरआन जैसी दस सूरतें अज़ खुद बना कर ले आओ और अगर ला सकते हो लेकिन लोग न ला सके। फिर फ़रमाया कि एक ही सूरत बना लाओ कुरआन के मान्निद एक सूरत ही बना लाओ।

चुनांचे एक सूरत भी लाने में आजिज़ रहे पूरा कुरआन लाना तो बड़ी बात थी बावजूद यह कि तमाम आलम से उनकी फ़साहत व बलागत बढ़ चढ़कर थी। फ़ुसहाए अरब गुंग हो गए अपनी ज़यानें कटवा बैठे। इससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत तमाम लोगों पर



जाहिर हो गई और कुरआन पाक का उसी तरह एक मोजजा करार पाया जैसे हजरत मूसा अलैहिस्सलाम का असा था। हजरत मूसा ऐसे जमाने में मबरूस हुए थे कि हर तरफ साहिरों की धाक बैठी हुई थी जादूगरों का तूती बोल रहा था। हजरत मूसा अलैहिस्सलाम से जब उन साहिरों को मुकाबला हुआ और उन्होंने अपने जादू के कमालात दिखाये तो हजरत मूसा के अजदहा बन कर उन रस्सियों को सांपों को निगल गया जादूगर मगलूब हो गए वह जलील होकर पलटे और बे एख्तियार होकर सजदे में गिर पड़े या जैसे हजरत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दों को जिन्दा कर देते और मादर जाद नाबीना और कोढ़ में गिरफ्तार लोगों को तन्दरुस्त कर देते थे क्योंकि हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की बेअसत ही ऐसे जमाने में हुई थी जो बड़े माहिर फन अतिब्बा का दौर था लोग उन के सामने ऐसे ला इलाज बीमारों को पेश करते थे जो हाजिक तबीबों के इलाज से शिफायाब नहीं हो सके थे। हजरत ईसा अलैहिस्सलाम का यह मोजजा देख कर तमाम तबीब उन के फरमाबरदार हो गए और ईमान ले आए इस लिए कि हजरत ईसा अलैहिस्सलाम फन्ने तिब और महारते फन में उन सबसे आगे बढ़ गए थे और साहबे मोजजा साबित हुए।

चुनांचे कुरआन पाक की फसाहत और उस का एजाज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मोजजा है बिलकुल उसी तरह जैसे हजरत मूसा का असा और हजरत ईसा का मुर्दों का जिन्दा करना मोजजा था।

## हुजूर के मोजजे

हुजूर के उंगलियों से पानी का चश्मा जारी होना, थोड़ा खाना बकसरत लोगों के लिए काफी हो जाना, जहरीली बकरी के आज्ञा का यह कहना कि हम को तनावुल न फरमाएं हम जहरीले हैं। आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मोजजे हैं। चांद के दो टुकड़े हो जाना, ऊंट का कलाम करना, खजूर के तने का रोना आप की जानिब दरख्त का आना भी आपके मोजजात हैं, इसी कबील के बहुत से मोजजे आप के हैं।

आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हजरत मूसा के असा की मानिन्द या हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की तरह मरीजों को अच्छा कर देना अन्धों को बीनाई वापस कर देना, कोढ़ियों को जजाम से सेहतयाब कर देना, हजरत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी जैसे मोजजे आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस लिए अता नहीं हुए थे कि हुजूर की उम्मत उन की तकजीब करके हलाकत में न पड़े जिस तरह पहली उम्मतें (तकजीब करके) हलाक हो गईं।

अल्लाह तआला का इरशाद है:

हम को साबिका मोजजों की तरह अपनी निशानियां भेजने से सिर्फ इस मसलेहत ने रोका कि अगर यह भी तकजीब करेंगे तो हलाक हो जाएंगे।

एक और वजह यह भी थी कि अगर साबिका नबियों की तरह अगर आप भी ऐसे ही मोजजे पेश फरमाते तो लोग कहते कि आप कोई नई बात तो नहीं लाए, आप ने खुद ही हजरत मूसा और हजरत ईसा के बारे में यह बातें फरमाई हैं इस लिए आप भी उन के मुत्तबईन में से हैं, जब तक आप ऐसी कोई चीज न लायें जो अंबियाए साबिकीन न लाए हों उस वक्त तक हम आप पर ईमान नहीं लाएंगे इस लिए अल्लाह तआला ने किसी नबी को वह मोजजा अता नहीं फरमाया जो दूसरे नबी को अता फरमाया गया था।



घुनान्चे हर नबी को एक मखसूस मोजजा अता किया गया।

## उम्मे मुहम्मदिया की अफजलियत

अहले सुन्नत इस बात के मोतकिद हैं कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत तमाम उम्मतों से बेहतर है और उनमें उस जमाने के लोग तमाम लोगों से बेहतर और अफजल हैं जिन्होंने हुजूर को देखा, आप की तसदीक की आप की बैअत की और आपकी पैरवी की जिहाद किया, अपना माल और अपनी जानें कुरबान कीं। और उन लोगों में हुदैबिया वाले अफजल हैं जिन्होंने एक दरख्त के नीचे आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक पर बैअत की, यह अस्हाब एक हजार चार सौ हैं, उन में अफजल अहले बदर हैं जिन की तादाद तीन सौ तेरह (313) है जो अस्हाबे तालूत की तादाद के बराबर हैं और उन 313 में अफजल वह दारुलखैजान वाले अस्हाब हैं जिन की तादाद बशमूल हजरत उमर चालीस हो जाती है। और उन चालीस में अफजल वह दस अस्हाब हैं जिनके जन्नती होने की आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गवाही दी वह दस अस्हाब यह हैं

1. हजरत अबू बकर सिदीक
  2. हजरत उमर
  3. हजरत उसमान
  4. हजरत अली
  5. हजरत तलहा
  6. हजरत जुबैर
  7. हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ
  8. हजरत सअद
  9. हजरत सईद
  10. हजरत अबू उबैदा बिन जर्हाह
- रजियल्लाहो अन्हुम

उन में पहले चार हजरत खुलफाए राशिदीन सबसे अफजल थे और उन चारों में हजरत अबू बकर को फिर हजरत उमर को फिर हजरत उसमान को फिर हजरत अली को फजिलत हासिल है। उन चारों हजरत ने आंहजरत के बाद (बतौर मजमूई) तीस साल तक खिलाफत के फरायज अंजाम दिए। हजरत अबू बकर ने दो साल से कुछ ऊपर, हजरत उमर ने दस साल, हजरत उसमान ने बारह साल और हजरत अली छे साल खलीफा रहे। खुलफाए राशिदीन के बाद अमीर मुआविया को नौ साल तक खिलाफत का वाली बनाया दिया गया। उससे पहले हजरत उमर ने अमीर मुआविया को शाम का अमीर बनाया था उस उहदा पर आप बीस साल तक फायज रहे।

## खिलाफते राशिदा

खुलफाए राशिदीन ने खिलाफत बजोर शमशीर या जब्र के जरिया हासिल नहीं की थी न अपने फजल से छीनी थी बल्कि मुआसरीन पर उन को फजिलत हासिल थी और सहाबा कराम के इत्तेफाक व इन्तेखाब और रजा मन्दी से उन को खिलाफत मिली थी।



## हजरत अबू बकर की खिलाफत

हजरत अबू बकर की खिलाफत के मनसब पर मुहाजरीन व अंसार के इत्तेफाके आरा से फायज हुए थे। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद अंसार से चन्द मुकर्रेरीन ने अपनी तकरीरों में कहा कि एक अमीर हम में से और एक तुम में से हो लेकिन हजरत उमर ने (उस के जवाब में) फरमाया ऐ गरोहे अंसार क्या तुम वाकिफ नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हजरत अबू बकर को इमामत करने का हुक्म दिया था? अंसार ने बयक ज़बान हो कर कहा हां यह सच है हजरत उमर ने कहा कि बताओ अबू बकर से बेहतर आगे बढ़ने को किस का जी चाहता है (कौन है जो अबू बकर से आगे बढ़े?) अंसार ने कहा मआज़ल्लाह कि हम अबू बकर से आगे बढ़ें।

एक दूसरी रिवायत में इस तरह है कि हजरत उमर ने फरमाया कि तुम में से किस का जी चाहता है कि हजरत अबू बकर को जिस मकाम पर रसूलुल्लाह ने खड़ा किया था वहां से उनको हटा दे, सब ने बिल इत्तेफाक कहा कि हम यह नहीं चाहते हम अल्लाह से माफी चाहते हैं उसके बाद अंसार व मुहाजरीन मुत्तफिक हो गए और सबने हजरत अबू बकर से बैअत कर ली। बैअत करने वालों में हजरत अली भी थे। एक सहीह रिवायत में है कि बैअत मुकम्मल हो जाने के बाद हजरत अबू बकर सिद्दीक तीन रोज तक लोगों की तरफ मुतवज्जेह होकर फरमाते रहे लोगों! मैं तुम्हारी बैअत वापस करता हूं क्या तुम में से कोई मेरी बैअत को न पसंद करता है और उसके जवाब में हजरत अली रजियल्लाहो अन्हो सबसे आगे खड़े हो कर फरमाते थे न हम आप से बैअत वापस लेते हैं न कभी हम बैअत लेने की ख्वाहिश करेंगे इस लिए कि आप को रसूलुल्लाह ने आगे किया है अब आप को पीछे कौन कर सकता है।

मोतबर असहाब और रावियों ने कहा कि हजरत अली रजियल्लाहो अन्हो हजरत अबू बकर सिद्दीक की इमामत के हक में सब सहाबा से सख्त थे। एक रिवायत है कि जंगे जमल के बाद अब्दुल्लाह बिन अलअकूअ ने हजरत अली से दरयाफ्त किया कि क्या आप से तरह इस अम्र (खिलाफत) के सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई अहद किया था? आप ने जवाब दिया कि मैंने इस बारे में बहुत गौर व खौज किया और इस नतीजा पर पहुंचा कि नमाज़ ईलाम का बाजू है पस हम ने अपनी दुनिया के लिए उस चीज़ को पसन्द किया जो रसूलुल्लाह ने हमारे दीन के लिए पसंद फरमाई थी इस लिए हम ने हजरत अबू बकर को अपना रहबर बना लिया और यह इस लिये कि हुजूर ने अपनी अलालत के दौरान अपनी जगह उन्हें इमाम बनाया। हजरत बिलाल हर नमाज़ के वक्त हुजूर की खिदमत में हाज़िर हो कर नमाज़ की इत्तेला देते थे तो हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते कि अबू बकर से कहो कि वह नमाज़ पढ़ा दें।

अपनी हयाते मुबारका में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हजरत अबू बकर के बारे में ऐसी गुफ्तगू फरमाया करते थे जिससे सहाबा कराम को यूं मालूम होता था गोया आंहजरत के बाद हजरत अबू बकर ही खिलाफत के सबसे ज़्यादा मुस्तहिक हैं इन्ने बतहा ने अपनी असनाद से हजरत अली का कौल नक्ल किया है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में अर्ज किया गया कि या रसूलल्लाह हम हुजूर के बाद किस का अपना खलीफा बनायें। हुजूर ने इरशाद फरमाया अगर तुम अबू बकर को अमीर बनाओगे तो उनको अमानत दार दुनिया से



बे रगबत और आखिरत का तालिब पाओगे और अगर उमर को अमीर बनाओगे तो उनको ताकतवर और ऐसा अमानतदार पाओगे जो अल्लाह के मामले में किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा नहीं करेगा और अगर तुम अली को अमीर बनाओगे तो उन को हिदायत याफ़ता हादी पाओगे। चुनांचे इन्ही इरशादात की बिना पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हो खिलाफ़त पर तमाम सहाबा का इज्मा हो गया।

हमारे इमाम हज़रत अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन हम्बल ने यह एक रिवायत नक़ल की है कि हज़रत अबू बकर की खिलाफ़त इशारए इलाही से साबित है और यही मज़हब हज़रत हसन बसरी और सहाबे कराम की एक जमाअत का है कि इस की बिना वह रिवायत है जो हज़रत अबू हुसैने ने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हवाले से बयान की है। हुजूर ने फ़रमाया कि जब मुझ मेराज हुई तो मैंने अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से अर्ज किया कि मेरे बाद अली इब्ने अबी तालिब को खलीफ़ा बना दे उस पर फ़रिश्तों ने कहा ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला वही करता है जो वह चाहता है आप के बाद खलीफ़ा हज़रत अबू बकर हैं।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत इब्ने उमर की हदीस में फ़रमाया कि वह शख्स जो अबूबकर है मेरे बाद बहुत कम अरसा जिन्दा रहेगा। मुजाहिद से मरवी है कि हज़रत अली ने मुझ से फ़रमाया कि हुजूर इस दुनिया से उस वक़्त तक तशरीफ़ नहीं ले गए जब तक आप ने मुझ से अहद नहीं ले लिया कि हुजूर के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अमीर होंगे फिर उमर फिर हज़रत उस्मान और फिर मैं (अली इब्ने अबी तालिब)।

## हज़रत उमर की खिलाफ़त

हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो की खिलाफ़त इस बिना पर काएम हुई कि उनको हज़रत अबू बकर ने खलीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया। इसके बाद तमाम सहाबा कराम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से बैअत कर ली और अमीरुल मोमिनीन का खिताब दे दिया हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास कहते हैं कि सहाबा कराम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ से कहा कि आप ने उमर को खलीफ़ा बनाया है हालांकि आप उन की दुरुश्त मिज़ाजी से वाकिफ़ हैं कल आप अल्लाह तआला को क्या जवाब देंगे? आप ने फ़रमाया कि मैं जवाब दूंगा कि तेरे बन्दों में से सब से बेहतर को मैंने लोगों का अमीर बनाया था।

## हज़रत उसमान की खिलाफ़त

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो सहाबा कराम के इत्तेफ़ाक़ राय से खलीफ़ह मुक़र्रर हुए। हज़रत उमर ने अपनी औलाद को खिलाफ़त के इस्तिहकाक़ से महरूम करके छः असहाब की एक मजलिसे शूरा मुक़र्रर कर दी थी कि वह खलीफ़ा का इंतखाब करें वह असहाब यह हैं हज़रत तलहा, हज़रत जुबैर, हज़रत सअद बिन अबी वक्कास, हज़रत उसमान, हज़रत अली हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम।

हज़रत जुबैर और हज़रत सअद रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने अपने आप को खिलाफ़त की उम्मीदवारी से अलग कर लिया सिर्फ़ चार हज़रात बाकी रह गए थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने हज़रत अली और हज़रत उसमान से कहा कि मैं अल्लाह, अल्लाह के रसूल और मुसलमानों के लिए तुम से किसी एक को मुतख़ब कर लूंगा फिर आप ने हज़रत अली का हाथ



पकड़ कर कहा कि अली तुम पर अल्लाह के अहदे मीसाक, जिम्मेदारी और अल्लाह के रसूल की जिम्मा की पासदारी लाजिम है। जिस वक्त मैं तुम्हारे हाथ पर बैअत कर लूंगा उस वक्त तुम को अल्लाह और उसके रसूल और तमाम मुसलमानों की खैर ख्वाही करना होगी और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा की सीरत पर चलना पड़ेगा। हज़रत अली ने अपनी जात में इस काम को पूरा करने की ताकत नहीं पाई जो कि मज़कूरा असहाब में थी इस लिए आप ने उस दावत को कबूल नहीं फ़रमाया। आप के इनकार पर हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत उसमान का हाथ पकड़ कर वही शर्तें दुहराई वही बातें कही जो हज़रत अली से कही थीं। हज़रत उसमान ने उन बातों को कबूल कर लिया। हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत उसमान का हाथ छोड़ कर बैअत कर ली उसके बाद हज़रत अली ने भी हज़रत उसमान की बैअत कर ली फिर दूसरे रोज़ बैअत आम ली गई। इस तरह हज़रत उसमान इत्तफ़ाके आरा से खलीफ़ा मुक़र्रर हो गए और शहादत के वक्त तक इमामे बरहक रहे। कोई ऐसी बात आप से सरज़द नहीं हुई जो तअन का मौजिब या आप के फ़िस्क का सबब हो या उससे आप के क़त्ल (शहादत) का जवाज़ पैदा हो सके। राफ़जियों का कौल इसके खिलाफ़ है अल्लाह उन को हलाक करे।

## हज़रत अली की ख़िलाफ़त

हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त भी ज़माअत के इत्तेफ़ाक़ और सहाबा कराम के इजमा से हुई। अबू अब्दुल्लाह बिन बुत्तह ने मोहम्मद बिन हनफ़िया की रिवायत नक़ल की है। मोहम्मद बिन हनफ़िया ने फ़रमाया जिस ज़माने में हज़रत उसमान महसूर थे मैं अली के साथ था एक शख्स ने आकर कहा कि अनक़रीब अमीरुल मोमिनीन (हज़रत उसमान) को शहीद कर दिया जाएगा। हज़रत अली यह सुनकर फौरन खड़े हो गए मैंने उस वक्त आप की हिफ़ाज़त की गरज़ से आप की कमर पकड़ ली आप ने फ़रमाया मुझे छोड़ दो फिर हज़रत अली हज़रत उसमान के घर पहुंचे मगर उस वक्त तक अमीरुल मोमिनीन शहीद हो चुके थे हज़रत अली वहां से वापस आकर मकान में दाखिल हुए और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया लोगों ने आकर दरवाज़ा खटखटाया और आप के घर में दाखिल होकर आप को ख़बर दी की हज़रत उसमान शहीद कर दिये गए और मुसलमानों को खलीफ़ा को ज़रूरत है और इस वक्त आप से ज़्यादा ख़िलाफ़त का हक़दार हमारी नज़र में कोई और नहीं है। हज़रत अली ने जवाब में इरशाद फ़रमाया मुझे खलीफ़ा बनाने का ख़्याल तर्क कर दो मैं अमीर होने से बेहतर तुम्हारे लिए वज़ीर हूं। लोगों ने जवाब दिया खुदा की क़सम आप से ज़्यादा हक़दार ख़िलाफ़त का हम और किसी को नहीं जानते। फ़रमाया अगर तुम नहीं मानते तो मेरी बैअत पोशीदा तौर पर नहीं होगी मैं मस्जिद में जाता हूं जो मेरी बैअत करना चाहे वहां आकर मेरी बैअत करे यह फ़रमाकर आप मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गए और लोगों ने आप की बैअत कर ली पस आप शहादत के वक्त इमामे बरहक़ थे। ख़ारजियों का कौल इसके खिलाफ़ है अल्लाह उनको हलाक करे। वह कहते हैं हज़रत अली कभी इमामे बरहक़ न थे। अब रहा यह मामला कि आप की हज़रत तलहा, हज़रत जुबैर, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा और अमीर मुआविया से जंग हुई तो इमामे अहमद ने इस सिलसिले में सराहत फ़रमाई है कि इस मामले में बल्कि उन तमाम झगड़ों, इख़तलाफ़ात और



गुनियतुत्तालिबीन

नजाआत के बारे में खामोश रहा जाए जो सहाबा कराम के दर्मियान वाक़ेअ हुए क्योंकि कयामत के दिन अल्लाह तआला उन के बाहमी तनाज़आत को दूर कर देगा। इरशादे रब्बानी है। उन के दिलो में जो बाहमी रज़िंश होगी हम उस को दूर कर देंगे और वह भाई भाई हो जाएंगे वह आमने सामने तख़्तों पर बैठे होंगे।

अलावा अजीं यह बात भी है कि अहले हल्लो अक्द (मदीना) ने हज़रत अली की ख़िलाफ़त पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया था इस लिए आप को खुद अपनी ख़िलाफ़त के सहीह होने का यकीन था और मुख़ालफीन से जंग करने में वह हक़ पर थे इस लिए कि जो भी इताअते अमीर से बाहर हुआ और लड़ाई का झन्डा बलन्द किया वह बागी हो गया और बागी से जंग करना जाइज़ था।

रहा अमीर मुआविया और हज़रत तलहा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहो अन्हुम का मामला तो वह भी हक़ पर थे। इस लिए की वह ख़लीफ़े मज़लूम के ख़ून का बदला लेना चाहते थे और कातिल हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो के लश्कर में मौजूद थे पस हर फ़रीक़ के पास जंग के जवाज़ की एक वजह मौजूद थी लिहाज़ा हमारे लिए सकूत इस सिलसिला में सबसे अच्छी बात है, उनके मामले को अल्लाह की तरफ़ लौटा देना चाहिए वह सबसे बड़ा हाकिम और बेहतरीन फैसला करने वाला है। हमारा काम तो यह है कि हम अपन ओयूब पर नज़र डालें और दिलों को गुनाहो की चीज़ों से और अपनी ज़ाहिरी हालतों को तबाही अंगेज़ कामों से पाक और साफ़ रखें।

## हज़रत अमीर मुआविया की ख़िलाफ़त

हज़रत अमीर मुआविया बिन अबू सुफियान रज़ियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो की शहादत और हज़रत इमाम हसन इब्ने अली का ख़िलाफ़त से दस्त बरदार होकर अमरे ख़िलाफ़त हज़रत अमीर मुआविया को सौंपने के बाद साबित व सहीह है। इमाम हसन के इस एकदाम से रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वह फ़रमान सहीह साबित हो गया जिसमें हुज़ूर ने फ़रमाया था कि मेरा यह बेटा सय्यद है अल्लाह इस के ज़रिये से मुसलमानों के दो बड़े ग़रोहों में सुलह कर देगा। इमाम हसन के सुलह करने से अमीर मुआविया की ख़िलाफ़त वाजिब हो गई। उस साल का नाम सन जमाअत इस लिए रखा गया है कि मुसलमानों का इख़्तिलाफ़ ख़त्म हो गया और सबने अमीर मुआविया से रुजूअ कर लिया और कोई तीसरा मुद्दई ख़िलाफ़त बाकी नहीं रहा।

अमीर मुआविया की ख़िलाफ़त का ज़िक्र आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद में मौजूद है हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे बाद 35, 36 या 37 साल इस्लाम की चक्की घूमेगी चक्की से मुराद दीन की कुव्वत है, तीस साल से ऊपर की जो पंजसाला मुद्दत है वह अमीर मुआविया की मुद्दते ख़िलाफ़त में आती है (यह ख़िलाफ़त 3 साल चंद माह बाकी रही) 30 साल तो हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो पर पूरे हो गये थे (ख़िलाफ़ते राशिदा की मुद्दत 30 साल है।)

## उम्माहातुल मोमिनीन और अहले बैते रसूल

हम नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तमाम अज़वाजे मुतहहरात के साथ हुस्न ज़न रखते हैं और हमारा यह एतकाद है कि वह सब उम्माहातुल मोमिनीन (मुसलमानों की माए)



हैं। सय्यदा आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहो अन्हा तमाम दुनिया की औरतों से अफ़ज़ल है। अल्लाह तआला ने अपने कलामे पाक के ज़रिये (जिस की हम रोज़ाना तिलावत करते और कयामत तक करते रहेंगे) तोहमत तराशों के कौल से हज़रत आइशा की पाकी का इज़हार फ़रमाया है।

इसी तरह हज़रत फ़ातिमा बिनते रसूलुल्लाह (अल्लाह उनसे और उनके शौहर और उनकी औलाद से राजी हो) भी सारे जहाँ की औरतों से अफ़ज़ल है। जिस तरह आप के वालिदे माजिद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की मोहब्बत वाजिब है उसी तरह आप से मोहब्बत और दोस्ती रखना भी वाजिब है। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है फ़ातिमा मेरे जिस्म का एक टुकड़ा है जिस चीज़ से उस को रंज पहुँचता है इससे मुझे भी रंज पहुँचता है।

### अज़मते सहाबा कराम

तमाम सहाबा कराम वह कुरआन वाले हैं जिन का तज़क़िरा अल्लाह तआला ने अपनी कुतुब में फ़रमाया है और उनकी तारीफ़ की है। यही मुहाजिरीन व अंसार हैं जिन्होंने दोनों किबलों की तरफ़ नमाज़ पढ़ी उन के बारे में हक़ तआला फ़रमाता है।

जिन लोगों ने फ़तहे मक्का से पहले राहे खुदा में माल सर्फ़ किया और जिहाद किया वह दूसरों के बराबर नहीं बल्कि वह मरतबे में उन लोगों से बहुत बढ़ कर हैं जिन्होंने फ़तहे मक्का के बाद राहे खुदा में माल सर्फ़ किया और जिहाद किया मगर अल्लाह ने हर फ़रीक़ से भलाई का वादा फ़रमाया है।

एक और आयत में फ़रमाया है:

तुम से वह लोग जो ईमान लाए और नेक आमाल किये उनसे अल्लाह ने वादा फ़रमा लिया है कि उनको ज़मीन पर उसी तरह खलीफ़ा बनाएगा जिस तरह उससे पहले के लोगों को खलीफ़ा बनाया और उनके उस दीन को मज़बूत कर देगा जो अल्लाह ने उनके लिए पसंद फ़रमाया है और ख़ौफ़ के बाद बदले में उन को अमन अता कर देगा।

एक जगह और इरशाद फ़रमाया गया है।

रसूलुल्लाह के असहाब वह काफ़िरों पर दीनी उमूर में बहुत सख़्त और आपस में नमी का सलूक करने वाले हैं तुम उन को रूकूअ और सजदा करने वाले देखोगे। वह उससे उसके फ़ज़ल के हर वक़्त ख़्वाहां हैं और उस की रज़ा के ख़्वास्तगार हैं उन की पेशानियों पर सजदों के निशान हैं।

यह ऐसे हैं जिन की सिफ़त तौरैत में भी है और इन्ज़ील में भी।

हज़रत जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने इस आयत की तफ़सीर में अपने वालिद मोहम्मद बाक़र का कौल नक़ल किया है कि अल्लजीना मा अहू हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हो हैं जो तंगी और फ़राखी में, ग़ार में और बद्र दिन झोपड़ी में रसूलुल्लाह के साथ रहे और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब हैं और हज़रत उसमान बिन अफ़फ़ान हैं और हज़रत अली इब्ने अबी तालिब हैं। रसूलुल्लाह के दोनों ग़हरे दोस्त हज़रत तलहा और हज़रत जुबैर हैं और हज़रत सअद, हज़रत सईद, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और अबू उबैदा बिन ज़र्रह रज़ियल्लाहो अन्हुम अज़मईन यह दसों हज़रात ऐसे हैं जिन की सिफ़त तौरैत में भी है और इन्ज़ील में भी है। खेती



की सबसे पहली निकलने वाली कौपल या अगवा से मुराद रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और हजरत अबू बकर रजियल्लाहो अन्हो के जरिये अल्लाह ने अपने रसूल को कुत्ता अता फरमाई और हजरत उमर के जरिया उस सूई यानी रसूलुल्लाह की मोटाई यानी ताकत बढ़े फिर हजरत उसमान के जरिया दह खेती अपनी डंडी पर खड़ी हो गई और हजरत अली इम अबी तालिब की वजह से वह अच्छी मालूम होनी लगी और रसूलुल्लाह और आप के असहाब मतलब यह है कि आयात मजकूरा के हर टुकड़े का मिसदाक उन दस सहाबा में कोई न है जो अशरए मुबश्शरा कहे जाते हैं।

अहले सुन्नत व जमाअत का इत्तेफाक है कि जिन बातों में सहाबा कराम कि दर्मियान इख्तेलाफ है उन से जबान को रोका जाए उसमें बहस गुफ्तगू न की जाए। सहाब की बद गोई से जबान को बन्द रखा जाए उनके फजाएल व महासिन को बयान करना और उनके बाहमी इख्तेलाफी मामले को खुदा के सुपुर्द करना वाजिब है। जिस तरह भी उनका वकूअ हुआ है। जैसे हजरत अबू रजियल्लाहो अन्हो और हजरत तलहा और हजरत जुबैर हजरत आइशा और अमीर मुआवियह के दर्मियान इख्तेलाफ वाकैअ हुआ जिस का जिक्र पहले हो चुका है उस इख्तेलाफ पर बहस न की जाए और जबान को बन्द रखे। हर सहाबी बुजुर्गी और फजीलत का एतराफ करना जरूरी है।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

और वह लोग जो उनके बाद आए हैं कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार हमें बख्शा दे और हमारे उन भाईयों को भी जो ईमान में हमसे पहले गुजर चुके हैं उन की बाबत हमारे दिलों में कोई बुराई पैदा न हो ऐ हमारे रब तू ही शफक़त और रहम करने वाला है।

एक और आयत में इरशाद फरमाया है

यह उम्मत वह है जो गुजर चुकी उस गरोह ने जो कुछ किया उस का जवाब उन्हीं के जिम्मे है जो कुछ तुम करोगे उस के तुम जिम्मादार होगे उन्हे लोगों के बारे तुम से नहीं पूछा जाएगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जब मेरे असहाब का जिक्र हो तो तुम जबान रोको यानी किसी को बुरा न कहो। हदीस शरीफ के दूसरे अल्फाज इस तरह हैं मेरे सहाबा के बाहमी नज़ाअत से अपने को बचाए रखो किसी को बुरा न कहो अगर तुम में से कोई शख्स भी उहद पहाड़ के बराबर सोना राहे खुदा में सर्फ कर देगा जब भी सहाबा के एक मुद बल्कि आधे मुद का भी सवाब नहीं मिलेगा।

हजरत अनस बिन मालिक रजियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस में आया है कि हुजूर ने फरमाया है कि वह शख्स कितना खुश नसीब है जिसने मुझे देखा और वह शख्स जिस ने मेरे देखने वाले को देखा। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरे सहाबा को गाली न दो जो उन को गाली देगा उस पर खुदा की लानत।

हजरत अनस रजियल्लाहो अन्हो कि रिवायत में आया है कि हुजूर ने फरमाया अल्लाह ने मुझे चुन लिया और मेरे लिये मेरे सहाबा को चुन लिया है उनको मेरे लिये अंसार और मेरा रिश्तादार बना दिया। आखिर जमाना में एक ऐसा गरोह पैदा होगा जो सहाबा के मरतबे को घटाएगा। खबरदार तुम उन के साथ न खाना, न निकाह का सिलसिला करना, न उन के साथ नमाज़ पढ़ना, ना उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना ऐसे लोगों पर लानत करना जाएज़ है।



हजरत जाबिर की रिवायत करते हैं कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दरख्त हुदैबिया के नीचे जिसने मुझ से बैअत की वह कभी दोजख में नहीं जाएगा। हजरत अबू हुदैरा से रिवायत है कि आंहजरत ने फरमाया अल्लाह तआला ने अहले बद की हालत को देख कर ही फरमाया कि जो चाहो करो मैंने तुम को बख्श दिया।

हजरत इब्ने उमर की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरे सहाबी सितारों की तरह हैं तुम उनमें जिस किसी का भी कौल ले लोगे सीधा रास्ता पाओगे।

हजरत बरीदा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया जिस जमीन पर मेरा कोई सहाबी फौत होगा उस को उस जमीन वालों के लिए कयामत के दिन शफीअ बनाया जाएगा। हजरत सुफियान बिन ऐनिया का कौल है कि रसूलुल्लाह के असहाब के मुताल्लिक जो शख्स एक लफ्ज (बद) भी कहेगा वह गुमराह और बद राह होगा।

## अइम्माए कराम और हाकिम की पैरवी

अहले सुन्नत का इस बात पर इजमा है कि अइम्माए मुसलेमीन और उनकी पैरवी करने वालों का हुक्म सुनना औ मानना वाजिब है और हर नेक व बद, आदिल व जालिम हाकिम की इक्तेदा और उन लोगों के पीछे जो ऐसे लोगों की तरफ मामूर हो नमाज पढ़ना चाहिए। अहले सुन्नत का इस बात पर भी इजमा है कि अहले किब्ला में से किसी के कतई जन्नती या दोजखी होने का हुक्म नहीं लगाना चाहिए ख्वाह वह मुतीअ हो या आसी, नेक राह हो या कजरौ यह हुक्म न लगाया जाए सिर्फ उस सूरत में जब कि उस कि बिदअत व गुमराही से मुत्तेला हो जाए तब यह हुक्म लगाया जा सकता है।

अहले सुन्नत का इस बात पर भी इजमा है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम की मोजजात और औलियाए कराम की करामतें बरहक हैं उनको तसलीम करना वाजिब है। अशया की गिरानी और अरजानी अल्लाह तआला की तरफ से है। न किसी सितारे की तासीर के सबब है और न बादशाहों या जमाने के हाकिमों कि नुहूसत या बरकत कि वजह से। फिरका कदरिया और नुजूमी तासीरे कवाकिब के काएल हैं। हजरत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बिला शुबा गिरानी और अरजानी अल्लाह के दो लशकर हैं एक का नाम तमअ है और दूसरे का खौफ। अल्लाह तआला को जब गिरानी मंजूर होती है तो वह ताजिरों के दिलों में लालच डाल देता है और वह अशिया रोक लेते हैं और जब वह चाहता है कि अरजानी हो तो सौदागरों के दिलों में खौफे इलाही पैदा कर देता है और वह चीजों को अपने हाथों से बाहर निकाल देते हैं, जमा शुदा अजनास फरोख्त कर देते हैं।

## सुन्नत व जमाअत की पैरवी

साहबे अक्ल व बीनश मोमिन के लिए बेहतर है कि वह सुन्नत व जमाअत की पैरवी करे, बिदअत से इजतेनाब करे और दीन में ज्यादा गुलू न करे, न गहराई में जाए न तसन्नूअ से काम न ले ताकि गुमराही से बचे और उसके कदम को लगजिश न हो जो हलाकत का बाइस है।

हजरत अबदुल्लाह बिन मसऊद का इरशाद है इत्तेबाअ करो और बिदअत से बचो यह तुम्हें काफी है।



हजरत मआज बिन जबल ने फरमाया तुम पोशीदा बातों की टोह लगाने से बचो और यह बात मत कहो कि यह बात क्यों है? जब मुजाहिद को हजरत मआज के इस कौल की इत्तेला मिली तो उन्होंने कहा कि पहले हम बाज चीजों के अहकाम के मुताल्लिक कहा करते थे यह क्या है? मगर अब ऐसा नहीं कहेंगे, लिहाजा ईमानदार शख्स पर लाजिम है कि सुन्नत का इत्तेबा और जमाअत फी पैरवी करे, सुन्नत उस तरीके को कहते हैं जिस को रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शुरू किया फरमाया और उस पर गामजन रहे और जमाअत उसे कहते हैं जिस पर चारों खुल्फाए कराम की खिलाफत के जमाने में असहाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इत्तेफाक किया।

## अहले बिदअत से इजतेनाब

दानिशमन्द मोमिन पर यह भी लाजिम है कि अहले बिदअत से ताल्लुक न रखे और न उनकी मोहब्बत व कुरबत इख्तियार करे, न उनको सलाम करे, हमारे इमाम अहमद बिन हंबल ने फरमाया कि जिसने किसी अहले बिदअत को सलाम किया वह गोया उससे मोहब्बत रखता है इस लिए कि रसूलुल्लाह का इरशाद है कि बाहम सलाम की कसरत करो ताकि मोहब्बत बढ़े यह भी लाजिम है कि बिदअतियों का हमनशीन न बने न उनके पास जाए और न उनको ईदों और खुशी के मवाकेअ पर मुबारक दे न उनके जनाजे की नमाज पढ़े। जब उनका जिक्र आ जाए तो उनके लिए दुआए रहमत भी न करे बल्कि उनसे अलग रहे और महज अल्लाह के लिए उन से अदावत रखे अहले बिदअत का मजहब बातिल होने का यकीन रखे और उस पर अजीम अज्र व सवाब का यकीन रखे।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाय कि जिसने अहले बिदअत को महज अल्लाह के लिए अपना दुश्मन जाना उसके दिल को अल्लाह तआला ईमान से भर देता है और जो शख्स उनको खुदा का दुश्मन जान कर मलामत करे अल्लाह तआला कयामत के दिन उस को अमन व अमान से रखेगा और जो शख्स ऐसे लोगों को जलील करे उसको बहिश्त में सौ दर्जे मिलेंगे और जो बिदअती से कुशादा रवी और खन्दा पेशानी से मिला उसने उस दीन की तौहीन की जो अल्लाह तआला ने मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाजिल फरमाया था।

अबू मुगीरा ने हजरत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब तक बिदअती बिदअत को तर्क न कर दे अल्लाह उसके नेक अमल को कबूल करने से इन्कार करता है। हजरत फुजैल बिन अयाज रिवायत करते हैं कि अहले बिदअत के साथ दोस्ती रखने वाले के नेक आमाल जाया कर दिये जाते हैं और अल्लाह तआला उसके दिल से नूरे ईमान निकाल देता है और जो शख्स अहले बिदअत से दुश्मनी रखता है उसे अल्लाह तआला बर्खा देता है ख्वाह उसके नेक आमाल थोड़े ही क्यों न हों जब तुम किसी बिदअती को रास्ते में देखो तो दूसरा रास्ता इख्तियार कर लो। हजरत फुजैल बिन अयाज कहते थे कि मैं ने खुद हजरत सुफियान बिन अनिया को यह कहते सुना कि जो शख्स किसी बिदअती के जनाजे के साथ जाता है तो वह जब तक वापस नहीं लौट आता अल्लाह का गजब उस पर नाजिल होता रहता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिदअती पर लानत फरमाई है और इरशाद



फरमाया है जिसने दीन में कोई नई बात पैदा की या किसी बिदअती को पनाह दी उस पर अल्लाह की, उस के फरिश्तों की और तमाम इन्सानों की लानत, अल्लाह तआला न उसके सिर्फ यानी फर्ज को कबूल फरमाता है और न उसके अदल यानी नफ़ल को, हज़रत अबू अय्यूब सजिस्तानी ने फरमाया कि अगर तुम किसी से रसूलुल्लाह की हदीस बयान करो और वह कहे इसको रहने दो कुरआन में जो कुछ है वह बयान करो तो समझ लो कि वह गुमराह है।

## अहले बिदअत की निशानियां

अहले बिदअत की बकसरत निशानियां हैं जिनसे वह पहचाने जाते हैं, एक अलामत तो यह है कि वह मोहदेसीन को बुरा कहते हैं और उनको हशविया जमाअत का नाम देते हैं, अहले हदीस को फिरका हशविया करार देना जिन्दीक की अलामत है। इससे उनका मकसद अबताले हदीस है। फिरका कदरिया की अलामत यह है कि वह मोहदेसीन (अहलुल असार) को मुजब्बरा (जबरिया) कहते हैं। अहले सुन्नत को मुशब्बेहा करार देना फिरका जहमिया की अलामत है, अहलुल आसार (अहले हदीस) को नासबी कहना सफ़जी की अलामत है। यह तमाम बातें अहले सुन्नत के साथ उनके तआस्सुब और उनके ग़ैज़ व ग़ुज़ब के बाएस है, हालांकि उसका तो सिर्फ एक नाम अहले हदीस है। बिदअती उनको जो लक़ब देते हैं वह उनको चिमट नहीं जाते जिस तरह मक्का के काफ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जादूगर, शाएर, मजनून मफ़तून और काहिन कहते रहते थे मगर अल्लाह तआला उसके मलाएका, इन्स व जिन्न और तमाम मख़्लूक के नज़दीक आप उन तमाम ऐबों से पाक थे और कोई लक़ब मौजू न था आप का लक़ब रसूल और नबी था। अल्लाह तआला ने फरमाया "देखो उन्होंने तुम्हारे लिए कैसी मिसालें गढ़ रखी हैं पस यह गुमराह हैं, रास्ता नहीं पा सकते।"

अहले सुन्नत व जमाअत के अकीदे और सानेअ की मारेफ़त के सिलसिले में बकदरे ताक़त हमने इख़्तैसार के साथ जो कुछ जमा कर दिया है यह हमारे बयान का तितित्मा था। इसके बाद (इस सिलसिले में) हम दो फ़स्लें और बयान करते हैं जिनसे नावाकिफ़ (गाफ़िल) रहना किसी साहबे ख़िरद और जि फ़हम और ईमानदार शख़्स के लिए जाएज़ नहीं जबकि वह दलील व बुरहान के रास्ता पर चलना चाहता है। अब्बल फ़स्ल में उन सिफ़ाते इन्सानी, इन्सानी अख़्लाक और उयूब का बयान है जिनका इतलाक़ जाते बारी तआला पर सही नहीं और दूसरी फ़स्ल में उन गुमराह फिरकों का बयान है जो हिदायत के रास्ते से भटक गए हैं और जिनकी हुज्जत कयामत और मुहासबा के दिन बातिल होगी।

## वह सिफ़ात जिन का इतलाक़ अल्लाह तआला की ज़ात के साथ ना रवा और ना जाएज़ है

मुन्दरजा ज़ैल सिफ़ात से अल्लाह तआला को मुत्तसिफ़ करार देना जाएज़ नहीं है। जिहालत, शक, तरद्दुद, ग़लबए ज़न, सहव व निसयान, ऊंघ, नींद, मरज़, ग़फ़लत इज्ज़, मौत, बेहरापन, गूंगापन, नाबीनाई, शहवत, नफ़रत, ख़्वाहिश, गुस्सा (ज़ाहिरी) ग़ुज़ब (बातिनी), ग़म



अफसोस, मलाल, पशेमानी, तास्सुफ, दुख, लज्जत, नफा, नुकसान, आरजू, मकसद और किज्ब।

अल्लाह तआला का नाम ईमान रखना भी जाएज नहीं है। फिरका सालमिया इसके जवाज का काएल है, उन्होंने मुन्दरजा जैल आयत से इस्तिदलाल किया है जिस ने ईमान के साथ कुफ्र किया यकीनन उसके अमल जाया हुये, (उनके ख्याल के मुताबिक इस आयत में अल्लाह को ईमान कहा गया है) और हमारे नजदीक ईमान से वजूबे ईमान मुराद है। यानी जिसने वजूबे ईमान का इंकार किया वह ऐसा ही है जैसे किसी ने रसूल और रसूल के लाए हुए अवामिर व नवाही को मानने से इंकार कर दिया।

अल्लाह तआला को फरमांबरदार (मुतीअ) कहना भी जाएज नहीं, न उसको औरतों को हामला करने वाला कहना जाएज है, अल्लाह की हद्दे इन्तेहा नहीं, न वह आगे है न पीछे, न नीचे है न ऊपर, न पहले है न बाद में, जहाते सिता (छे तरफों) से उसके लिए कोई तरफ नहीं। उस की जात में चगूगी (कैसी और कयोंकर) को दखल नहीं है, अल्लाह तआला की यह सिफतें नहीं हैं सिवाए इसके कि वह "मुस्तविए अर्श" है जैसा कि कुरआन और अहादीस में आया है, सब अतराफ का पैदा करने वाला वही है, वह कैफ (कैसा) और कम (कितना) दोनों सिफात से पाक है।

इस बारे में कि अल्लाह तआला को शख्स कहना जाएज है या नहीं उलमा का इख़लाफ है जो लोग जवाज के काएल हैं वह हज़रत मुगीरा बिन शोअबा से मरवी उस हदीस को सनद लाते हैं कि रसूलुल्लाह ने फरमाया अल्लाह से ज्यादा कोई शख्स गैरत वाला नहीं और अल्लाह से ज्यादा किसी शख्स को माज़रत पेश करना महबूब नहीं।

अदमे जवाज के हामी कहते हैं कि हदीस में खुदा के लिए शख्स की तसरीह नहीं है एहतेमाल है कि इसके मानी यह हों (कोई शख्स अल्लाह से ज्यादा गैरत मन्द नहीं है) बिला शबहा बाज हदीस में "ला अहद" के अल्फाज भी वारिद हुए हैं। (मतलब यह है कि अल्लाह से ज्यादा कोई शख्स, जिन्न, इन्स, फरिश्ता या कोई दूसरी मखलूक गैरत मन्द नहीं है)

अल्लाह तआला को फाज़िल, आज़ाद (अतीक) फकीह, फहीम, फितीन (ज़ीरक) मुहक्किफ, आकिल, मोअक्किर (दूसरे की ताज़ीम करने वाला) तय्यब कहना जाएज नहीं, बाज के नजदीक तय्यब कहना जाएज है। अल्लाह को आदी (पुराने जमाने का) कहना भी जाएज नहीं क्योंकि आदी आद की तरफ मन्सूब है और कौमे आद कदीम नहीं बल्कि हादिस है, अल्लाह तआला को मुतीक (ताकत वाला) भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि हर ताकत महदूद होती है, अल्लाह तआला ताकत वाला नहीं बल्कि हर ताकत का खालिक है। उसको महफूज़ भी नहीं कहा जा सकता बल्कि वह हाफिज़ है, उसको किसी का मुरतकिब (मुबाशरा) भी नहीं कह सकते और न उसका वरफ़ मुक्तसिब हो सकता है इसलिए कि मुक्तसिब उसको कहते हैं जो कुदरत मुहद्देसा के ज़रिया किसी दूसरी चीज़ को ईजाद करे (यानी कस्ब पैदा करदा मखलूक की कुदरत से हादिस है) और अल्लाह तआला उससे पाक व मुनज़्ज़ा है। अल्लाह तआला पर अदम का इतलाक भी जाएज नहीं क्योंकि वह कदीम है और उसके वजूद के लिए इब्तेदा नहीं है।

इब्ने कुलाब ने इसके बर ख़िलाफ़ कहा है यानी वह कहते हैं कि अल्लाह तआला कदीम है सिफत किदम के साथ और वह बाकी है कभी फना नहीं होगा, वह आलिम है तमाम मालूमात गैर मुतनाहिया का और वह कादिर है तमाम गैर मुतनाहिया मुकदूरात का। मोतज़ला इसके ख़िलाफ़ कहते हैं कि सब सिफतें इन्तेहा पज़ीर हैं (गैर मुतनाही नहीं है)



# वह सिफ़ात जिनसे अल्लाह तआला को मुत्तसिफ़ करना जाएज़ है

अल्लाह तआला को इन सिफ़तों से मुत्तसिफ़ करना जाएज़ है। सिफ़त फ़रह, ज़हक, ग़ज़ब, सख़्त, रज़ा और इस सिलसिले में हम (तफ़सील से पहले बयान कर चुके हैं) अल्लाह तआला को मौजूद होने के साथ मुत्तसिफ़ करना जाएज़ है, अल्लाह तआला का इरशाद है और खुदा को अपने पास ही मौजूद पाया। उसको शइ के साथ मुत्तसिफ़ करना जाएज़ है, अल्लाह तआला का इरशाद है पूछिए सबसे बढ़ कर शहादत देने वाली कौन सी चीज़ है, खुद ही बता दीजिये वह अल्लाह है।

अल्लाह के लिए नफ़स, ज़ात, ऐन (आंख) का सबूत भी जएज़ है बशर्तकि इंसानी आज़ा से तशबीह न दी जाए। अल्लाह की सिफ़त काइन बग़ैर तअय्युने हद के बयान करना जाएज़ है। अल्लाह तआला का इरशाद है वक़ानल्लाहो बेकुल्ले शैइन अलीमा दूसरी जगह फ़रमाया वक़ानल्लाहो अला कुल्ले शैइन रकीबा। यह भी जाएज़ है कि उसको कदीम, बाकी और मुस्ततीअ कहा जाए। उस को आरिफ़, मतीन, वासिफ़, दर्री, दारी (दरायत वाला) कहा जाए इस लिए कि यह तमाम सिफ़ात ब मानी आलिम राजेअ हैं और इसकी मुमानिअत न शरअ में वारिद है और लोग़त में बल्कि एक शायर का कौल है। इलाही मैं नहीं जानता और तू जानने वाला है।

अल्लाह तआला के राई (देखने वाला) भी कह सकते हैं इसके मानी भी आलिम के हैं और जाएज़ है कि उसको अपनी ख़ल्क और अपने बन्दों से मुत्तला से मौसूफ़ करें क्योंकि इस के मानी भी आलिम के हैं यही हुक्म वाजिद (पाने वाला) का है ब मानी आलिम। अल्लाह को जमील (ख़ूबसूरत) कहना भी सही और दुरुस्त है और मुजमल से मुत्तसिफ़ करना भी सही है। अल्लाह को दैयान (बन्दों के आमाल की जज़ा व सज़ा देने वाला) कहना भी सही है। दैन के मानी हैं हिसाब। एक मशहूर मक़ूला है जैसा तुम करोगे वैसा बदला दिया जाएगा, हिसाब के दिन का मालिक। दैयान इन मानी में आ सकता है यानी अपने बन्दों के लिए शरीयत और इबादत मुक़र्रर करने वाला और उसकी तरफ़ वह दावत देता है और उसे अपने बन्दों पर फ़र्ज़ करता है उसके बाद हक़ तआला उन बन्दों का बदला देगा जो उस की शरीयत पर अमल पैरा होंगे।

अगर अल्लाह तआला की सिफ़त मुक़दिर (अन्दाज़ा करते वाला) से करें तो यह भी जाएज़ है जैसा कि फ़रमाया हम ने हर चीज़ का अन्दाज़े के साथ पैदा किया, और खुदा ने अन्दाज़ा किया और हिदायत दी, और ख़बर देने के मानी फ़रमाया हमने लूत को ख़बर दी कि सिर्फ़ उसकी औरत यानी बीवी उसके अहल के सिवा अज़ाब के लिए पीछे रह जाने वालों में से है। तक्दीर के मानी गुमाने ग़ालिब या शक के नहीं हैं अल्लाह तआला की ज़ात उससे बरतर है।

अललाह तआला को नाज़िर कहना दुरुस्त है यानी अशिया की देखने वाला और उस का जानने वाला। नाज़िर के मानी गौर करने वाला और सोचने वाला नहीं हैं। अल्लाह तआला की ज़ाते वाला इससे बरी और मुन्ज़ज़ा है। उसको शफ़ीक़ कहना दुरुस्त है यानी मख़लूक पर रहम करने वाला और लुत्फ़ व करम करने वाला, अल्लाह का शफ़ीक़ होना डरने और ग़मगीन होने वाले की मानी में नहीं है।



गुनियतुत्तालिबीन

अल्लाह तआला को रफीक कहना दुरुस्त है यानी मखलूक पर रफ़क व मेहरबानी करने वाला। इन मानी में नहीं यानी उमूर में जमाव पैदा करने वाला, चीजों की इस्लाह करने की फ़िक्र करने वाला और नताएज से महफूज़ रहने वाला। इन मानी के एतबार से लफ़्ज़े रफीक से उसको मत्तसिफ़ नहीं किया जा सकता।

अल्लाह तआला को सखी, करीम और जव्वाद कहना भी दुरुस्त है इन सब अल्फ़ाज़ के मानी हैं मखलूक पर फ़ज़ल व एहसान और करम करने वाला और लोगत में जो सखावत के मानी नरम के आए हैं जिस तरह कहते हैं नर्म काग़ज़ इन मानी का अल्लाह पर इतलाफ़ दुरुस्त नहीं। अल्लाह तआला को आमेरून हुक्म देने वाला, नाही मुमानियत करने वाला, मुबीहुन जाएज़ बना देने वाला, मुसिद्दुन बंदिश कर देने वाला, मुहल्लेलुन हलाल करने वाला, मोहर्रेमुन हराम करने वाला, फ़ारिजुन फ़र्ज़ कर देने वाला, मुलज़ोमुन लाज़िम कर देने वाला, मुर्शिदुन सीधा रास्ता दिखाने वाला, काज़िउन और हाकिमुन कहना जाएज़ और दुरुस्त है।

इसी तरह अल्लाह तआला को वाएदुन जज़ा का वादा करने वाला, मुतवाएदुन सज़ा से डराने वाला, मोख़फ़वेफ़ुन दिलाने वाला, मोहज़्ज़ेरून अज़ाब से डराने वाला, ज़ाम्मून मज़म्मत करने वाला, मादेहुन किसी की तारीफ़ करने वाला, मुखातेबुन खिताब करने वाला, मुतकल्लमुन बात करने वाला, यानी सिफ़ते कलाम से मुत्तसिफ़ होना और कायलुन कहने वाला, से मुत्तसिफ़ करना जाएज़ नहीं है।

उस को मुग़देमुन से मुत्तसिफ़ करना इस मानी में जाएज़ नहीं है कि उसने मौजूद नहीं किया और उस ने मादूम नहीं किया और इस मानी में कि जिस चीज़ को उसने मौजूद किया उससे वजूद में आने के बाद बका को जुदा कर दे और उसे ना पैदा कर दे दुरुस्त और सहीह है। इसी तरह जाएज़ है कि उसको फ़ाएल के साथ मुत्तसिफ़ करें व ई मानी कि अपनी पैदा की हुई चीज़ को अदम से वजूद में लाने वाला और पैदा करने वाला और अपनी कुदरत से उसको बना देने वाला है, फ़ाएल के मानी कासिब के नहीं है कसब तो अल्साम के मिलने (फ़ाएल व मुन्फ़इल) और बाहमी मोहासिब के बग़ैर नहीं होता और अल्लाह तआला इससे पाक व मुन्ज़ज़ा है।

अल्लाह तआला को ज़ाएलून यानी फ़ाएल कहना दुरुस्त है यानी अपने फ़ेअल को करने वाला। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: हम ने दिन और रात को दो निशनियां बनाया। ज़ाअला हुक्म के माना में भी आया है एक आयत में है अल्लाह तआला को जिस तरह फ़ाएल कहा जाता है उसी तरह वाक़ेई तौर पर उसको तारिक भी कहा जा सकता है यानी अपनी कुदरतें शामिल व आमला के तहत फ़ेअल अब्वल के बजाए कोई ऐसा दूसरा फ़ेअल करने वाला जो फ़ेअले अब्वल की ज़िद हो। तारिक के माना यह नहीं कि वह अपने नफ़्स को किसी फ़ेअल के दवाअी व अस्बाब से रोकना और बाज़ रखना है फ़ेअल की तरह तर्क भी अल्लाह तआला की मुसबत सिफ़त है मन्फ़ी वस्फ़ नहीं है। इंसान के लिए तर्क की सिफ़त अदी है और अल्लाह तआला के लिए वजूदी।

अल्लाह तआला को मोजिदून बमानी ख़ालिक और मोकव्विनून बमानी मोजिद कहना भी जाएज़ है उस को मुसब्बेतून ब माना बरकरार रखने वाला, चीज़ों को सबात व बका अता करने वाला भी कहना जाएज़ है एक आयत में है।

अहले ईमान को अल्लाह तआला पक्की बात पर साबित कदम रखेगा।

एक दूसरी आयत में इरशाद है: अल्लाह जिस चीज़ को चाहता है मिटा देता है और जिस चीज़ को चाहता है बरकरार रखता है उम्मूल किताब उसी के पास है।



अल्लाह तआला को आमिलून और सानिउन ब मानी खालिक कहना भी दुरुस्त है अल्लाह तआला को मुसीबून कहना दुरुस्त है यानी उस के अफआल उस के इरादे और मकसद के मुताबिक होते हैं उनमें कोई कमी व बेशी या तफावुत नहीं होता क्योंकि अल्लाह तआला अपने तमाम अफआल की हकायक और कैफियात से वाकिफ है अल्लाह तआला के मुसीब होने के यह मानी नहीं कि वह किसी हाकिम के हुक्म के मुताबिक अमल करता है, हां बन्दे पर इस लफ्ज का जब इतलाक होता है तो उसके यह माना होते हैं कि बंदा अपने रब का फरमांबरदार उस के हुक्म पर कारबन्द और उस की मुमानियत के बाइस किसी काम से बाज रहने वाला है, किसी सरदार या हाकिम बालादरस्त का मुतीअ होने के बाइस बन्दा को मुसीब कहा जाता है। अल्लाह तआला के अफआल को सवाबुन बमानी हक व सहीह कहना दुरुस्त है। अल्लाह तआला को मुसीबुन (सवाब देने वाला) और मुनईम (नेअमत देने वाला कहना भी दुरुस्त है यानी जिस शख्स को सवाब देता है उस को इन्आम याफता बना देता है।

अल्लाह तआला को मुआकेबुन और मुजाजियून (सजा और जजा देने वाला) कहना दुरुस्त है यानी वह नाफरमान को जलील करता है और उस की मअसियत के मुताबिक उस को दुख देता है उस को कदीमुल एहसान कहना भी दुरुस्त है यानी तखलीक और अताए रिज्क उस की कदीमी सिफात हैं अल्लाह तआला का इरशाद है **इन्नल लजीना स-ब-कत लहुम मिन्ना अल हुस्ना**। अल्लाह तआला को दलीलुन कहना भी दुरुस्त है हजरत इमाम अहमद से एक शख्स ने कहा कि मुझे कुछ तोशए दुआ मरहमत फरमाइए मैं तरतूस जा रहा हूं इमाम ने फरमाया इस तरह कहो ऐ हैरानों के राहनुमा (दलील) मुझे अहले सिदक का रास्ता दिखा दे और अपने सालेह बन्दों में से कर दे।

अल्लाह तआला को तबीबुन कहना भी दुरुस्त है अबू रमसना तमीमी से मरवी है कि उन्होंने ने कहा मैं अपने वालिद के हमराह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजलिस में मौजूद था मैंने हुजूर के शानए मुबारक पर सीप (सदफ) की तरह कोई चीज देखी मेरे वालिद ने अर्ज किया या रसूलल्लाह मैं तबीब हूं क्या इस का इलाज कर दू हुजूर ने इरशाद फरमाया इस का तबीब वही है जिस ने इसको पैदा किया है।

अबू अस्सफर की रिवायत है कि हजरत अबूबकर रजियल्लाहो अन्हो अलील हुए कुछ लोग आप की अयादत के लिए हाजिर हुए और कहने लगे क्या हम आप के लिए तबीब को बुला लें आप ने इरशाद फरमाया तबीब ने मुझे देखा था लोगों ने दरयाफ्त किया फिर तबीब ने क्या कहा? हजरत अबू बकर ने फरमाया उसने कहा जो मैं चाहता हूं करता हूं। हजरत दाऊद रजियल्लाहो अन्हो के मुताल्लिक भी ऐसी ही एक रिवायत आई है कि आप बीमार हुए और लोग अयादत के लिए आए और पूछा आप को क्या दीमारी है? उन्होंने जवाब दिया कि गुनाहों की, लोगों ने कहा आप क्या चाहते हैं? फरमाया जन्नत लोगों ने कहा क्या हम आप के लिए तबीब को बुला लें उन्होंने जवाब दिया कि तबीब ही ने तो मुझे बीमार किया है।

इस फस्ल में हम ने उन अस्मा को बयान किया है जिन के साथ अल्लाह तआला को पुकारना जाएज है इससे कब्ल हम अल्लाह तआला के निनानवे अस्माए हुस्ना बयान कर चुके हैं उन नामों से अल्लाह तआला को दुआ में पुकारना ज्यादा मुनासिब है उन अस्माए वस्फी के साथ भी जो इस फस्ल में बयान किए गए हैं अल्लाह तआला को पुकारना जाएज है मगर दुआ में या साहिरो, या मुस्तहजियो, या माकिरो, या खारिओ, या मुगीजो, या गजबानो, या मुनतकिबो, या माअदियो, या



मोअदमो, या मोहलिको कह कर पुकारना मना है अगरचे मुजरिमों के जुर्म की पादाश और सजा देने के लिहाज से अल्लाह का इन औसाफ से मुत्तसिफ होना सहीह और दुरुस्त है।

## हिदायत के रास्ते से भटके हुए फिरकों का बयान

उन गुमराह फिरकों के बयान में जो राहे हिदायत से भटक गए हैं उस की असल वह हदीस है जिस को कसीर बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद और जद की सनद के साथ साथ बयान किया है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम अपने से पहले लोगों के रास्ते पर कदम ब कदम जरूर चलोगे और उनही चीजों को इख्तेयार करोगे जिन को उन्होंने इख्तेयार किया था। एक एक बालिशत एक एक हाथ और एक एक गज (उनकी पैरवी करोगे) यहां तक कि अगर वह सोसमार (गोह) के भट में भी धुसे थे तो तुम भी उनकी पैरवी के लिए सोसमार के भट में दाखिल होगे। अच्छी तरह सुन लो कि हजरत (मूसा अलैहिस्सलाम)की हिदायत के बरअक्स बनी इस्राईल 71 फिरकों में बट गये थे जिनमें एक फिरका के सिवा सब गुमराह थे और वह एक फिरका मुसलमानों की जमाअत का था। फिर ईसा इब्ने मरियम अलैहिस्सलाम की हिदायत के खिलाफ ईसाई फट कर 72 फिरकों में हो गए और उनमें एक फिरका के सिवा तमाम फिरके गुमराह और बेदीन थे वह एक फिरका इस्लाम और मुसलमानों की जमाअत का था इसके बाद तुम 73 फिरके हो जाओगे और उनमें सिवाए एक फिरका के बाकी सब गुमराह होंगे और वह फिरका इस्लाम और मुसलमानों की जमाअत का होगा।

हजरत अब्दुर्रहमान बिन जुबैर से मरवी है कि सरकारे आली ने इरशाद फरमाया: मेरी उम्मत फट कर 73 फिरके बन जाएगी। उम्मते मोहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए सबसे बड़ा फितना वह फिरका होगा जो अहकामे (दीनी) का फैसला सिर्फ अपनी राए से करेगा, खुद ही हलाल को हराम बनाएगा और खुद ही हराम को हलाल ठहराएगा।

अब्दुल्लाह बिन जैद ने हजरत इब्ने उमर रजियल्लाहो अन्हो से रिवायत की है कि हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया बनी इस्राईल फट कर 71 फिरकों में हो गए एक के सिवा सब दोज़खी हुए और मेरी उम्मत फट कर 73 फिरके हो जायेंगे जिनमें से एक के सिवा सब दोज़खी होंगे। सहाबा कराम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह वह एक ऐसा होगा आप ने फरमाया जो मेरे और मेरे सहाबा के सीधे रास्ते पर चलेगा।

जिस तफरका का जिक्र आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया न आपके जमाने में हुआ, न हजरत अबू बकर, हजरत उमर, हजरत उसमान, हजरत अली के जमाने में हुआ बल्कि यह इख्तेलाफ सहाबा कराम और ताबईन हजरात की वफात के कई सौ साल बाद जुहूर में आया यानी उस वक्त जबकि मदीना मुनव्वरा में सातों फकीह हजरात वफात पा चुके थे। मुख्तलिफ शहरों के उलमा और फकीह भी दुनिया से रुखसत हो चुके थे और उनके इन्तेकाल से इल्म भी मर गया और सालहा साल बीत गए और सदयिां गुजर गईं तो आम तौर पर दीन में इफ़तेराक व इख्तेलाफ पैदा हो गया और सिर्फ एक छोटा गरोह अहले हक का रह गया, नजात पाने वाला गरोह यही है अल्लाह ने अपने दीन की हिफाज़त इसी के जरिये से फरमाई।



हजरत इब्ने उमर की रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया: अल्लाह तआला लोगों को इल्म अता फरमाने के बाद उनके सीनों से नहीं निकालेगा बल्कि उलमा वफात पा जायेंगे। जब कोई आलिम मर जाएगा तो उसका इल्म भी उसी के साथ चला जाएगा यहां तक कि जुहला बाकी रह जायेंगे जो खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे। हजरत इब्ने उमर से मरवी एक दूसरी रिवायत में हदीस शरीफ के अल्फाज इस तरह हैं: हुजूर वाला ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला इल्म को इस तरह कब्ज नहीं फरमाएगा कि लोगों के दिलों से खींच कर निकाल ले बल्कि उलमा के वफात पा जाने से इल्म भी मर जाएगा, जब कोई आलिम बाकी नहीं रहेगा तो लोग जाहिलों को अपना पेशवा बना लेंगे उनसे मसाएल दरयाफ्त किए जायेंगे और वह न जानने के बावजूद फतवा (जवाब) देंगे नतीजा यह कि वह खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह कर देंगे। हजरत कसीर बिन अब्दुल्लाह बिन औफ अपने वालिद और दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिस तरह सांप सिमट कर अपने बिल में आ जाता है उसी तरह दीन सिमट कर हिजाज में आ जाएगा। दीन की हिफाजत हिजाज से होगी जिस तरह हिरनों की हिफाजत पहाड़ की चोटी पर पहुंच जाने से होती है, दीन का जुहूर गुरबत की हालत में हुआ था लौट कर दोबारा दीन गरीब हो जाएगा। गरीबों के लिए यह खुशखबरी का बाइस है। अर्ज किया गया गुरबा कौन लोग हैं? हुजूर ने फरमाया: वह लोग कि जब लोग मेरी सुन्नत को बिगाड़ देंगे तो वह सुवार देंगे। हजरत इब्ने अब्बास ने फरमाया हर जमाने में लोग एक सुन्नत को मुर्दा और एक बिदअत को जिन्दा करेंगे। हजरत अली कर्रमल्लाह वजहहू ने फरमाया कि रसूलुल्लाह ने फितनों का जिक्र फरमाया तो हमने अर्ज किया या रसूलल्लाह! फितनों से बच निकलने का क्या रास्ता होगा? फरमाया अल्लाह की किताब कि यही पुर हिकमत व मोअजत नामा है, यही सिराते मुस्तकीम है यही वह किताब है जिसमें जबानों का इशतबाह पैदा नहीं होता, इसी को जब जिन्नात ने सुना तो वह इन्ना समेअना कुरआनन अजबन कहे बगैर न रह सके, जो इस के मवाफिक कहेगा वह सच्चा होगा और जो इसके मुताबिक फैसला करेगा वह इन्साफ करेगा।

हजरत अरबाज बिन सारिया ने फरमाया हम ने रसूलुल्लाह की इक्तिदा में फज्र की नमाज पढ़ी हुजूर ने ऐसा दिल नशीन वाज फरमाया कि आंखों से आंसू रवां हो गए दिलों पर खौफ तारी हो गया और बदन गरमा गए। हमने अर्ज किया या रसूलल्लाह हुजूर की यह नसीहत तो ऐसी है कि हम को मालूम होता है जैसे हुजूर हम को छोड़ रहे हों हुजूर ने इरशाद फरमाया मैं तुम को अल्लाह से डरते रहने और हाकिम की इताअत व फरमां पजीरी की नसीहत करता हूं ख्वाह वह हाकिम हबशी गुलाम ही क्यों न हो। मेरे बाद जिंदा जो रहेगा वह बड़े इख़ोलाफात देखेगा, तुम्हारे लिए मेरी सुन्नत और मेरे उन खुल्फा की सुन्नत पर काएम रहना लाजिम है जो मेरे बाद होंगे और तुम को सीधा रास्ता दिखायेंगे उस को मज़बूती से पकड़े रखना और दांतों से पकड़ लेना। दीन में नई बातों से बचना क्योंकि दीन में पैदा की हुई हर नई बात बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।

हजरत अबू हुरैरा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो दावत देने वाला सीधे रास्ते की तरफ बुलाए और उसकी दावत की पैरवी की जाए तो पैरवी करने वालों की तरह उस रहनुमा को भी सवाब मिलेगा मगर पैरवी करने वालों के सवाब में कमी नहीं की जाएगी और जो जलालत की दावत दे और उसकी पैरवी की जाए तो उसकी पैरवी करने वालों के बराबर उस पर वबाल होगा जब कि पैरवी करने वालों के गुनाहों में कमी न होगी।



## बाब 9

## तिहत्तर फिरके

## नाजी, खारजी, शीया, राफ़जी, मोतजला

## क़दरिया और दूसरे फिरके

यह तमाम तिहत्तर फिरके दर असल दस गरोहों से निकले हैं (1) अहले सुन्नत (2) खारजी (3) शीया (4) मोतजला (5) मरजिया (6) मोशब्बह (7) जहमिया (8) जरारिया (9) नज्जारिया (10) कुलाबिया।

अहले सुन्नत का एक ही तबका है, खारिज या खारिजिया के पन्द्रह, मोतजला के छः मरजिया के बारह, शीया के बत्तीस, मुशब्बह के तीन फिरके हैं। जरारिया, कुलाबिया, बुखारिया और जहमिया का एक एक फिरका है इस तरह कुल बहत्तर फिरके हुए। फिरका नाजिया सिर्फ अहले सुन्नत का है, उसका मसलक और अकीदा पहले बयान किया जा चुका है। क़दरिया और मोतजला फिरका के लोग इस फिरका नाजिया को मुजबरह कहते हैं क्योंकि उसका अकीदा है कि तमाम मखलूक अल्लाह तआला की मशीयत, कुदरत, इरादा और तखलीक के ताबेअ है मरजिया उस फिरका नाजिया को शकाकिया कहते हैं क्योंकि इस गरोह के लोग ईमान को मशीयत इलाही की शर्त से मशरूत करने के काइल हैं और कहते हैं कि अगर कोई शख्स यूँ कहे कि मैं इन्शाअल्लाह मोमिन हूँ तो इस तरह कहना दुरुस्त है (जैसा कि इससे कब्ल बयान किया जा चुका है।)

राफ़जी इस नाजिया फिरका नासबिया कहते हैं क्योंकि उनका उसूल है कि अपने इमाम को जमाअत की राए से मुकर्रर करते हैं। जहमिया व नज्जारिया दोनों इस फिरका को मुशब्बह कहते हैं।

इस लिहाज से कि वह अल्लाह तआला की सिफ़ात में इल्म, कुदरत और हयात वगैरह सिफ़ात का असबात करते हैं। बातनिया इसको हशविया कहते हैं चूंकि यह गरोह अहादीस का काइल और आसार के साथ ताल्लुक रखता है हालांकि उनका कोई और नाम नहीं है बजुअ इसके कि वह असहाबे हदीस और अहले सुन्नत हैं जैसा कि हम ने पहले बयान किया है।

खारजियों के नाम और अल्काब मुखतलिफ हैं, उस गरोह को खारजी कहने की असल वजह यह है कि उन्होंने हज़रत अली कर्म्मल्लाहो वजहहू के ख़िलाफ़ ख़रूज किया था, उनका नाम हुकमिया भी है इस लिए कि उन्होंने अबू मूसा अशअरी और उम्र बिन अलआस के हुकम होने का इंकार किया था और जब हज़रत अली ने उन दोनों को हुकम मान लिया तो खारजियों ने कहा हुकम देना सिर्फ अल्लाह के साथ मखसूस है (किसी को खलीफा के तक्क़रूर के मुताल्लिक फैसला सादिर करने का हक़ नहीं है) उनको हरोरिया भी कहा जाता है इसकी वजह यह है कि यह लोग हज़रत अली कर्म्मल्लाहो वजहहू का साथ छोड़ कर मक़ामे हरुरा में जाकर ठहर गए थे उनको



गुनियवुत्तालिबीन शरात (बेचने वाला) इस लिए कहा जाता है कि उनका दावा था कि हमने अल्लाह तआला के रास्ता में अपनी जानें फरोख्त कर दी हैं। उनके मारिका भी कहा जाता है। मारिका कहने की वजह यह है कि यह लोग दीन से खारिज हो गए थे। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी यही हालत बयान की थी और फरमाया था वह लोग दीन से इस तरह निकल जायेंगे जिस तरह कमान से तीर निकल जाता है, फिर वह दीन में वापस नहीं अयेंगे। चुनांचे यह लोग दीने इस्लाम से बाहर हो गए मिल्लते इस्लामिया को छोड़ दिया और जमाअत से अलग हो गए और राहे रास्त से भटक गए। हुक्मते इस्लामिया से खारिज हो गए खुलफाए के खिलाफ उन्होंने तलवार उठाई और उनके खून और माल को हलाल करार दिया, अपने मुखालिफों को काफिर कहा रसूलुल्लाह के असहाब और अंसार पर सब्बो शत्म किया और उनसे तबरी (बेजारी का इजहार) किया, उन हजरात को काफिर हो जाने और कबीरा गुनाहों के मुरतकिब होने की निस्बत की, उनकी मुखालिफत को जाइज करार दिया यह लोग अजाबे कब्र और हौजे कौसर पर ईमान नहीं रखते, न यह रसूलुल्लाह की शफाअत पर ईमान रखते हैं और कहते हैं कि एक दफा जो दोजख में दाखिल हो गया वह फिर खारिज नहीं होगा और कहते हैं कि जिसने एक दफा झूट बोला या गुनाहे सगीरा या कबीरा का मुरतकिब हुआ और बगैर तौबा किये मर गया तो वह काफिर है और वह हमेशा हमेशा दोजख में रहेगा यह एक जमाअत से नमाज नहीं पढ़ते सिर्फ इमाम के पीछे नमाज पढ़ते हैं यह नमाज को उसके वक्त से ताखीर में अदा करने को जाइज समझते हैं। इसी तरह बगैर चांद देखे रोजे और इफ्तार को जाइज समझते हैं, नज़्र करने, बगैर वली के निकाह करने को भी जाइज समझते हैं, दस्त बदस्त एक दिरहम के बदले दो दिरहम लेना जाइज समझते हैं सूद नहीं जानते चमड़े के मोजे पहन कर नमाज पढ़ना उनके नज़दीक दुरुस्त नहीं है। चमड़े के मोजों पर मसह को भी दुरुस्त नहीं मानते उनका अकीदा है कि बादशाह की इताअत दुरुस्त नहीं, खिलाफत कुरैश के साथ मखसूस नहीं।

इस फिरका के लोगों की ज्यादा तादाद जजीरा उम्मान, मोसिल, हजर मौत और अतराफे अरब में है। अबदुल्लाह बिन जैद, मुहम्मद बिन हिज्ब, यहया बिन कामिल और सईद बिन हारून उनके लिए मजहबी कुतुब तसनीफ कीं।

उनके पन्द्रह फिरके हैं एक फिरका नजदात है जो नजदह बिन आमिर हनफी साकिन यमामह की तरफ मनसूब है यही गरोह अबदुल्लाह बिन नासिर के साथियों का है। इस गरोह का अकीदा है कि जिसने एक मर्तबा झूट बोला या कोई सगीरा गुनाह किया और उस पर काइम रहा (तौबा न की) तो वह मुशरिक है और जिसने जिना किया, चोरी की, शराब पी मगर उन गुनाहों पर काइम न रहा (तौबा कर ली) तो वह मुसलमान है उनकी नज़र में इमामे वक्त की ज़रूरत नहीं है सिर्फ किताबुल्लाह से वाकफियत ज़रूरी है।

इनमें से एक गरोह का नाम अजारका है यह नाफेअ बिन अरजक के साथियों का गरोह है इनका अकीदा है कि यह गुनाहे कबीरा कुफर है और दुनिया दारुल कुफर है, उनका अकीदा है कि हजरत अली कर्रमल्लाहो वजहहू ने जब हजरत मूसा अशअरी और हजरत अम्र बिन अलआस को अपने और अमीर मुआविया के दर्मियान इस्तिहकाके खिलाफत का झगड़ा फैसल करने के लिए पंच और हकम माना था तो उन दोनों ने हकम बन कर कुफर किया। यह मुशरिकों के बच्चों को (जिहाद) में कत्ल करना जाइज करार देते हैं, यह जिना की सज़ा संगसारी (रज्म) को हराम



कहते हैं। पाक दामन मर्द पर जिना की तुहमत लगाने वाले पर हद्दे शरई लगाना यह जाइज नहीं समझते और पाक दामन शौहर वाली औरत पर जिना की तुहमत लगाने वाले पर हद्द लगाना जाइज ख्याल करते हैं।

खारजियों का एक गरोह फिदकिया भी है यह गरोह इब्ने फिदयक की तरफ मनसूब है, एक गरोह अतविया है यह अतिया इब्ने असवद की तरफ मनसूब है, एक उजारवा भी है यह अबदुर्रहमान बिन अजर से निसबत रखता है उजारवा के मुखतलिफ गरोह हैं यह सब मैमूनिया कहलाते हैं यह लोग पोती, नवासी, भतीजी और भ्रांजी से निकाह जाइज करार देते हैं। इनका अकीदा है कि सूरह यूसुफ असल कुरआन में नहीं है बल्कि इलहाकी है। उनका एक फिरका जाजमिया कहलाता है। उनके अहले इस्लाम से अलग खारिज होने का बाएस उन का यह अकीदा है कि दोस्ती और दुशमनी अल्लाह तआला की दो सिफतें हैं, फिरका जाजिया से भी एक गरोह अलग हो गया उसका नाम मालूमिया है उनका अकीदह है जो शख्स अल्लाह तआला को उसके नामों से नहीं पहचानता है वह जाहिल है, यह लोग कहते हैं कि बन्दों के अफआल अल्लाह के पैदा किए हुए नहीं हैं, किसी फेअल की कुदरत वकूए फेअल के वक्त होती है उससे पहले नहीं होती है।

खारिजियों के असली पन्द्रह फिरकों में से एक फिरका मजहूलिया है जो इस बात का काइल है कि अगर कोई किसी एक नाम से भी अल्लाह को जानता है वह आलिम है जाहिल बिल्लाह नहीं है। खारजियों का एक फिरका सलीता है यह उसमान बिन सलत से निसबत रखता है और इस बात का मुद्ई है कि जो शख्स हमारे नजरियात मान ले और मुसलमान भी हो जाए तब भी उसकी नाबालिग औलाद को मुसलमान नहीं कह सकते जब तक वह औलाद (बालिग होने के बाद हमारे नजरियात और अकाइद को न मान ले।

खारजियों का एक गरोह अखनसिया है जो अखिन्स की तरफ मनसूब है यह काइल है कि आका गुलाम की और गुलाम आका की जकात ले सकता है बशर्तकि मुहताज मिसकीन हो। खारजियों का एक फिरका जफरिया है जिस की एक शाख हफसिया है उसका अकीदा है कि जो शख्स अल्लाह को पहचानता हो उसका इकरार करता हो वह शिर्क से पाक हो जाता है, ख्वाह वह रसूल का, जन्नत का, दोजख का सबका मुनकिर हो और तमाम जराइम का मुरतकिब हो, कातिल हो, जिना को हलाल जानता हो, मुशरिक सिर्फ वह है जो अल्लाह को न पहचाने और उसका इंकार करे, उस गरोह का अकीदा है कि कुरआन मजीद की आयत में जो लफ्ज हीरान आया है उससे मुराद हजरत अली और उनका गरोह है और अरहाबहू यदऊनहू एलल हुदा—से मुराद अहले नहरवान हैं (यानी खारजी हैं।) खारजियों का एक फिरका अबाजियह है जिस का ख्याल है कि तमाम फराइज इलाहिया ईमान हैं, गुनाहे कबीरा कुफराने नेमत है कुफर नहीं है।

खारिज का फिरका बहन्सिया अबी बहनस से मनसूब है, यह फिरका इस अम्र का मुद्ई है कि जब तक आदमी अल्लाह के हर हलाल और हर हराम के हुक्म से तफसीली तौर पर वाकिफ न हो मुसलमान नहीं होता, उसी गरोह के कुछ लोग इस बात के काइल हैं कि अगर किसी ने कोई फेअले हराम किया तो उसको उस वक्त तक काफिर नहीं कहा जा सकता जब तक उस का मामला हाकिम के सामने पेश न कर दिया जाए और वह उस पर हद्दे शरई जारी न कर दे।



शरई सजा जारी होने के बाद उसको काफिर करार दिया जाएगा।

खारजियों का एक और गरोह शराखिया है, यह अब्दुल्लाह बिन शमराख से मनसूब है, उस गरोह का अकीदा है कि मां बाप को कत्ल कर देना हलाल है। इब्ने शमराख ने जब दारुल तकीया (ख्वारिज का मरकजी मकाम) में इस अकीदा के दावा किया तो तमाम खारजी इससे अलग हो गये।

खारजियों का एक फिरका बदिया भी है जिस का अकीदा अराजका जैसा है, यह लोग अराजका से सिर्फ इतनी बात में अलग और मुनफरिद हैं कि उनके अकीदे की बिना पर दो वक्त की नमाज़ फर्ज है यानी दो रकअत सुबह की और दो रकअत शाम की, वह कहते हैं कि अल्लाह तआला का हुक्म है: दिन के दोनों अतराफ़ (सुबह व शाम) में नमाज़ कायम करो। अराजका की तरह काफिरों की औरतों को कैद करना और उनके बच्चों को कत्ल करना उनके अकीदे में जाएज है क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है रुए ज़मीन पर किसी काफिर को बाकी ना छोड़ो।

फिरका नजदात के अलावा तमाम खारजी बिल इत्तेफ़ाक़ गुनाहे कबीरा के मुरतकिब को काफिर कहते हैं। अबू मूसा अशअरी और उमर बिन अलआस की तहकीम पर रज़मन्दी के बाइस हज़रत अली कर्मल्लाहो वजहहु की भी तकफ़ीर करते हैं।

## शीया फिरका

शीया फिरका मुख्तलिफ़ नामों से मौसूम है इस को राफ़जी, गालिया, शीया, तय्यारा भी कहते हैं इस फिरका को शीया कहने की वजह यह है कि यह लोग हज़रत अली कर्मल्लाहो वजहहु की पैरवी का दावा करते हैं और आप को तमाम सहाबा कराम से अफ़ज़ल मानते हैं। राफ़जी की वजहे तसमिया यह है कि उन्होंने अकसर सहाबा कराम को छोड़ दिया और हज़रत अबू बकर सिदीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ की ख़िलाफ़त को तसलीम नहीं किया। बाज़ लोगों ने राफ़जी को वजहे तसमिया यह बताई है कि जब ज़ैद बिन अली (हज़रत ज़ैनुल आबिदीन) ने हज़रत अबू बकर सिदीक़ और हज़रत उमर से मुवदत का इज़हार किया और दोनों बुजुर्गों की दोस्ती का एतराफ़ किया तो उन लोगों (राफ़जियों) ने हज़रत ज़ैद बिन अली को छोड़ दिया। हज़रत ज़ैद ने फ़रमाया उन लोगों ने मुझे छोड़ दिया इस लिए इन को राफ़जी कहा जाएगा है। यह भी कहा गया है कि शीया वह होता है जो हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहो अन्हो को हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो से अफ़ज़ल न करार दे यानी राफ़जी हज़रत अली को हज़रत उसमान से अफ़ज़ल करार देता है।

शीया का एक फिरका कतइया है उस ने मूसा बिन जाफ़र की मौत पर कतई इजमा कर लिया है। एक फिरका गालिया है यह गरोह हज़रत अली के बारे में बहुत ज़्यादा गुलू करता है नाज़ेबा बातें कहता है। हज़रत अली के अन्दर रबूबियत और नबुव्वत की सिफ़ात को तसलीम करता है हश्शाम बिन हेकम, अली बिन मन्सूर, हुसैन बिन सईद, फ़ज़ल बिन शाज़ान, अबू ईसा वराक़, इब्ने रावन्दी, फ़सीही इस फिरके के मज़हबी मुसन्नफीन हैं इस फिरके के लिए मज़हबी किताबे लिखी हैं इस फिरके के बेशतर आबादी कुम, काशान, बिलादे इदरीस और कूफ़ा में हैं।

हज़रत मुसन्निफ़ पीराने पीर के मुबारक दौर में उनकी तादाद उन शहरों में ऐसी ही थी जैसा कि इरशाद फ़रमाया। यह तादाद पन्द्रह होती है हज़रत मुसन्निफ़ ने चौदह बताई है गालिबन



आप ने इमामिया को पहले बयान फरमाया है और दोबारा शुमार नहीं फरमाया।

## राफ़जियों के फिरके

राफ़जियों के असल तीन गरोह हैं गालिया, जैदिया और राफ़जा, गालिया के बारह फिरके हो गए जो इस तरह हैं।

बनानीतिया, तय्यारिया, मन्सूरिया, मुगीरिया, खत्ताबिया, मुअम्मरिया, बजामिया, मुफ़ज्जलिया, मुतनासिखा, शरीईया, सबैइया, मुक़व्वज़ा। फिरका जैदिया के छः शाखें हो गईं जारुदिया, सुलेमानिया, बरीया, नईमिया, याकूबिया, तनासुखिया (दोबारा दुनिया में वापस आने का काइल यानी तनासुख का।)

राफ़जिया के चौदह गरोह हैं क़तऐया, केसानिया, करैबिया, उमैरिया, मुहम्मदिया, हुसैनिया, नावसिय्या, इस्माइलिया, करामजिया, मुबारकिया, शमीतिया, अम्मादिया, मतमूरिया, मूसविया इमामिया।

राफ़जियों के तमाम गरोह और फिरके इस अम्र पर गुत्तफिक है कि ख़िलाफ़त का सबूत अक्ली है इजमाई नहीं बल्कि नस का मोहताज है। तमाम इमाम हर ग़लती और निसयां और ख़ता से पाक है मफ़ज़ूल की इमामत अफ़ज़ल की मौजूदगी में जाइज़ नहीं सहीह कौल वही जो हम खुलफ़ाए कराम के ज़िक्र में पहले बयान कर चुके हैं।

हज़रत अली को तमाम सहाबा पर तरजीह देने में भी यह सब मुत्तफिक है इन का दावा है कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अली की ख़िलाफ़त मन्सूस है और हज़रत अबू बकर सिद्दीक और हज़रत उमर फ़ारुक और दूसरे सहाबा कराम तबर्रा करते हैं (बेज़ारी का इज़हार) सिर्फ़ जैदिया इस हुक्म से मुस्तसना हैं (वह इस बात के मुख़ालिफ़ हैं)

तमाम राफ़जी इस बात पर भी मुत्तफिक हैं कि हज़रत अली कर्म्मल्लाहु वजहहु की ख़िलाफ़त न देने के बाइस (उनसे बैअते ख़िलाफ़त न करने के सबब से) सिवाए छः आदमियों के तमाम सहाबी मुरतद हो गए वह छः अफ़राद यह हैं हज़रत अली, हज़रत अम्मार, हज़रत मक़दाद बिन असवद, हज़रत सलमान फ़ारसी और दो और आदमी। इस फिरका का यह भी अक्कीदा है ख़ौफ़ की हालत में इमाम यह कह सकता है कि मैं इमाम नहीं हूँ उनका यह भी एतकाद है कि किसी चीज़ के मौजूद होने पहले अल्लाह तआला को उसका इल्म नहीं होता है। वह यह भी कहते हैं कि यौमे हिसाब से कब्ल मुर्दे दुनिया में दोबारा लौट आएं मगर राफ़जियों का फिरका गालिया इस का काइल नहीं वह हिसाब किताब और हशर का भी मुनकिर है।

राफ़जियों के तमाम फिरकों का अक्कीदा है कि जो कुछ दुनिया में हो चुका है या आइन्दा जो कुछ होगा इमाम को उन सब का इल्म होता है (ख़्वाह वह दीनी चीज़ हो या दुनयवी) यहां तक कि ज़मीन पर जिस क़दर ख़जफ़ रेज़े हैं और बारिश के जितने क़तरे ज़मीन पर गिरते हैं उनका भी उसे इल्म होता है और उन का शुमार जानता है इसी तरह इमाम दरख़्त की पत्तियों की तादाद से भी वाकिफ़ होता है। अंबिया अलैहिमुस्सलाम की तरह है अइम्मा के हाथों से भी मौजज़ात जाहिर होते हैं उनमें से बाज़ का यह ख़्याल है कि जिन लोगों ने हज़रत अली से जंग की वह काफ़िर हो गए इसी तरह के उनके और भी बहुत से अकाइद व अक्वाल हैं।



## गालिया

गालिया गरोह (जो राफजियों से अलग है) तो यह भी कहता है कि हजरत अली तमाम अंबिया से अफजल है वह कहते हैं कि हजरत अली दूसरे सहाबे की तरह जमीन में दफन नहीं हुए बल्कि वह अब्र में हैं वह वहीं से अल्लाह के दुश्मनों से जंग करेंगे और आखिरी जमाना में फिर आएंगे और दुश्मनों को कत्ल करेंगे।

हजरत अली और दूसरी तमाम अइम्मा फौत नहीं हुए हैं बल्कि यह सब कयामत तक जिन्दा रहेंगे उन की तरफ मौत को रास्ता नहीं मिलेगा (उनको मौत नहीं आएगी) गालिया फिरका का यह भी दावा है कि अली नबी है, जिब्रील ने वही के पहुंचाने में गलती की है यह इस बात के भी काइल है कि अली इलाह थे। अल्लाह और उसकी मखलूक की कयामत तक उन पर लानत हों अल्लाह उन की बस्तियों को उजाड़ दे और वीरान कर दे उन की खेतियां बरबाद कर दे और जमीन पर उनकी कोई बस्ती बाकी न छोड़े। उन्होंने गुलू की हद कर दी और कुफ़ पर जम गए इस्लाम को तर्क कर दिया ईमान से कनारा कशी एख़्तोयार कर ली अल्लाह उसके अंबिया और कुरआन के मुनकिर हो गए हम ऐसे अक़वाल एख़्तोयार करने वालों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

## बुनानिया

फिरका गालिया की एक शाख बुनानिया यह गरोह बुनान बिन समआन से मनसूब है उन की तोहमत तराशियों और लगव बातों में से एक यह है कि अल्लाह तआला इंसान की तरह है यह झूटे हैं अल्लाह तआला उस तशबीह मुनज्जहा से और पाक है उसने खुद फरमाया है उस जैसी कोई शय नहीं।

## तय्यारिया

गालिया फिरका ही की एक शाख तय्यारिया है यह फिरका अब्दुल्लाह बिन मुआविया बिन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तय्यार से मनसूब है यह तनासुख के काइल हैं और कहते हैं कि आदम की रूह अल्लाह की रूह थी जो आदम के अन्दर हुलूल कर गई थी उसी गरोह के बाज़ लोग यह अकीदा रखते हैं कि मरने के बाद आदमी की रूह जब दोबारा दुनिया में आती है तो सबसे पहले बकरी के बच्चे के जौन में आती है फिर उसके बाद उससे भी ज्यादा हकीर जौन में आती है फिर हकीर से हकीर तर कालिबों में दौरा करती रहती है यहां तक की गंदगी और नजासत के कीड़ों में जन्म लेती है, जौन बदलने की यह आखिरी हद है इस गरोह के बाज़ लोग तो यहां तक की अकीदा रखते हैं कि गुनहगारों की रूहें लोहे, कीचड़, और कच्चे बरतनों की शकल एख़्तोयार कर लेती हैं और फिर वह अपने गुनाह की सज़ा इस तरह पाती हैं कि आग में जलाई जाती हैं कूटा पीटा जाता है, गलाया जाता है, इस तरह जलील व ख़्वार करने के लिए उन पर जिस्मानी अज़ाब होता रहता है।

## मुगीरिया

यह फिरका मुगीरा बिन सअद की तरफ़ मनसूब है इस फिरका के सरबराह मुगीरा ने नबुव्वत का दावा किया था उस का कौल था कि अल्लाह नूर है लेकिन इन्सानी शकल में, उसने यह भी



दावा किया था कि वह मुर्दों को ज़िन्दा कर देता है।

## मन्सूरिया

फिरका मन्सूरिया अबू मनसूर से निसबत रखता है, अबू मनसूर का दावा था कि मुझे आसमानी मेराज हुई भी और परवरदिगार ने मेरे सर पर हाथ फेरा था उस का अकीदा था कि हज़रत ईसा अब्बल तरीन मखलूक थे, फिर उसके बाद हज़रत अली की पैदाइश हुई अल्लाह के पैगम्बरों का सिलसिला खत्म नहीं होगा जन्नत दोजख की कोई हकीकत नहीं है, इस गरोह का अकीदा है कि जो शख्स हमारे चालीस मुखालेफीन को कत्ल कर दे वह जन्नती होगा। लोगों का माल लूटना इनके नज़दीक मुबाह है इनका अकीदा है कि जिब्रील ने नबुव्वत पहुंचाने में ग़लती कर दी इस फिरका का यह कुफ़्र इतना अजीम है कि इसके बराबर कोई और कुफ़्र नहीं।

## खत्ताबिया

यह फिरका अबी खत्ताब से मन्सूब है इस गरोह का अकीदा है कि इमाम नबी और अमीन है हर ज़माने में दो पैगम्बर ज़रूर होते हैं एक नातिक होता है और एक खामोश रहता है। चुनावे हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पैगम्बर नातिक थे और हज़रत अली खामोश पैगम्बर थे।

## मुअम्मरा

मुअम्मरा का भी अकीदा वही है जो खत्ताबिया का है खत्ताबिया से यह इस अम्र में बढ़कर है यह नमाज़ के भी तारिक हैं।

## बजीऐआ

बजीऐआ फिरका बजीअ से मन्सूब है इस फिरका का अकीदा है कि हज़रत जाफ़र अल्लाह हैं अल्लाह उसी शक़्ल व सूरत में दिखाई देता है यह गरोह कहता है कि हमारे पास भी वही आती है और हम को आलमे फ़रिश्तगान (आलमे मलकूत) की तरफ़ उठाया जाता है उन की यह इफ़तरा परदाजी, दरोग़बानी और तोहमत तराशी कितनी अजीम है अल्लाह इनको असफलुस साफ़ेलीन हाविया के अन्दर फेंक दे।

## मुफ़ज़ज़लिया

मुफ़ज़ज़लिया फिरका मुफ़ज़ज़ल सैरफी से मन्सूब है यह फिरका भी झूठी रिसालत और नबुव्वत के दाई हैं इमामों के मुताल्लिक उनके अक़वाल भी वही हैं जो मसीह (हज़रत अलैहिस्सलाम) के बारे में ईसाइयों की हैं।

## शरीऐया

शरीऐआ फिरका (नामी शख्स) से मन्सूब है इस गरोह का अकीदा है कि अल्लाह तआला ने पांच हस्तियों में हुलूल किया था नबी अलैस्सलाम, अली, अब्बास, जाफ़र और अकील रज़ियल्लाहो अन्हुम

## सब्बाइया

फिरका सब्बाइया अबदुल्लाह बिन सबा से मन्सूब है इस फिरका का दावा है कि अली



रजियल्लाहो अन्हो ने वफात नहीं पाई है कयामत से पहले दुनिया में वापस आएंगे मशहूर शायर सय्यद हुमैरी इसी फिरका में से था।

## मुफ़व्वज़ि़या

फिरका मुफ़व्वज़ि़या का अकीदा है कि अल्लाह तआला ने मखलूक का इन्तेजाम इमामों के सुपुर्द फरमाया दिया है वह कहते हैं कि अल्लाह तआला ने किसी चीज़ को पैदा नहीं किया बल्कि हर चीज़ तखलीक और उसके इन्तेजाम के कुदरत रसूलुल्लाह की तफवीज़ फरमा दी थी हज़रत अली के बारे में भी उनका यही ख्याल है उनमें से बाज़ लोग जब अब्र को देखते हैं तो कहते हैं अली इसमें है और उन पर सलाम भेजते हैं।

## जैदिया

इस फिरका का नाम जैदिया इस मुनासिबत से रखा गया कि यह लोग जैद बिन अली के उस कौल की तरफ़ रागिब कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारुक़ से तवल्ला दुरुस्त है।

## जारुदिया

फिरका जारुदिया की निसबत अबुल जारुद से है इस गरोह का ख्याल है कि हज़रत अली रसूलुल्लाह की वसी थे और वही खलीफ़ा अव्वल थे उनका कौल था कि रसूलुल्लाह ने हज़रत अली के सिफ़ात की अपने खलीफ़ा के सिलसिले में सराहत कर दी थी लेकिन नाम का तअय्युन नहीं फरमाया था यह लोग इमामते मनसूब का सिलसिला हज़रत इमाम हुसैन तक चलाते हैं उस के बाद ख़िलाफ़त के शूराई होने के काएल है।

## सुलैमानिया

यह फिरका सुलैमान बिन कसीर की तरफ़ मनसूब है ज़रफ़ान का कौल है कि इस फिरका का गुमान है कि इमाम हज़रत अली थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर की बैअत ग़लत हुई यह दोनों हज़रत अली से सबक़त के मुसतहिक़ न थे और उम्मत ने अग्रे असले का छोड़ दिया।

## बतरिया

यह फिरका अबतर नामी शख्स की तरफ़ मनसूब है अबतर का असल नाम नवा था लेकिन अबतर के नाम से मशहूर था इस गरोह का ख्याल है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर की बैअत ग़लत नहीं हुई क्योंकि हज़रत अली ने ख़िलाफ़त को छोड़ दिया था। हज़रत उसमान के मामले में यह लोग तवक्कुफ़ करते हैं और कहते हैं कि जब उनसे बैअत की गई तो हज़रत अली इमाम थे।

## नईमिया

फिरका नईमिया नईम बिन यमान की तरफ़ मनसूब है इस फिरका का अकीदा भी अबतरिया की तरह है लेकिन फ़र्क़ यह है कि यह हज़रत उसमान से तबर्रा करते हैं और आप को (मआज़



अल्लाह) काफिर कहता है।

## याकूबिया

यह फिरका याकूब की तरफ मनसूब है यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक और हज़रत उमर की इमामत के काइल थे और रजअत के इनकार करते हैं इस गरोह के बाज़ लोग और हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर से तबर्रा करते हैं और रजअत के काइल हैं।

# राफ़ज़ियों के मुख़्तलिफ़ फिरके

राफ़ज़ियों के शाख़ दर शाख़ चौदह फिरके हो गए

## क़तइया

चूँकि क़तइया फिरके पैरुओं को हज़रत मूसा बिन जाफ़र की मौत का क़तई यकीन था इसी लिए इसको क़तइया कहते हैं यह लोग इमामत का सिलसिला मोहम्मद बिन हनफ़िया तक ले जाते हैं और आप को ही काइम मुनतज़िर मानते हैं।

## केसानिया

इस फिरका की निसबत केसान की तरफ़ है यह मोहम्मद बिन हनफ़िया की इमामत के काइल थे क्योंकि बसरा में अलम आप ही को दिया गया था।

## करीबिया

यह लोग इब्ने करीब ज़रर के साथी थे (इस लिए इनको करीबिया कहा गया है।)

## उमैरिया

इस फिरका के लोग उमर के साथी थे और जब उन्होंने महदी पर ख़ुरुज किया तो उमर ही उनका इमाम था।

## मोहम्मदिया

यह गरोह इस बात का दावा करता है मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हसन बिन हुसैन इमाम काइम हैं और इमाम काइम ने तमाम बनी हाशिम को छोड़ कर अपना वसी अबू मन्सूर को बनाया था जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी और हज़रत हारून (अलैहिमस्सलाम) की औलाद को छोड़ कर यूशअ बिन नून को अपना वसी बनाया था।

## हुसैनिया

इस गरोह का ख़्याल है कि अबू मन्सूर ने अपने बेटे हुसैन को अपना वसी बनाया था, इस लिए अबू मन्सूर के बाद हुसैन ही इमाम हुए।

## नावसिया

यह फिरका नावस बसरी की तरफ़ मनसूब है वही इस गरोह का सरदार था। यह लोग इमाम जाफ़र की इमामत के और उनके ज़िन्दा होने के काइल हैं और कहते हैं वही काइम और मेहदी हैं।



## इस्माईलिया

इस्मालिया कहते हैं कि जाफर का इन्तकाल हो गया उनके बाद इस्माईल इमाम हुए। यही बादशाह बनेंगे इमाम मुनतजिर वही हैं।

## कुरामजिया

यह फिरका सिलसिले इमामत को जाफर तक चलाते हैं और इस के काइल हैं कि इमाम जाफर ने मोहम्मद बिन इस्माईल की इमामत की सराहत की थी, मोहम्मद जिन्दा हैं पस वही इमामे महदी हैं।

## मुबारकिया

मुबारकिया दसवां फिरका है यह मुबारक नामी शख्स से मनसूब है जो उन लोगों का सरदार था उनका अकीदा है कि मोहम्मद बिन इस्माईल जिन्दा नहीं, वफात पा चुके हैं लेकिन उनके बाद उनकी औलाद में इमामत में जारी है।

## शमीतिया

यह फिरका यहया बिन शमीत से मनसूब है जो उनका सरदार था उनका अकीदा है हजरत जाफर इमाम हैं उनके बाद इमामत उनके बेटे पोतों में जारी व सारी है।

## मुअम्मरिया

यह फिरका फतहिया भी कहलाता है उनका अकीदा है कि इमाम जाफर के बाद उनके बेटे अबदुल्लाह इमाम हैं अबदुल्लाह के पांव बहुत लम्बे और मोटे थे उस गरौह की तादाद बहुत ज्यादा हुई।

## मतमूरिया

इस फिरका की वजह तसमिया यह है कि इन लोगों ने यूनुस बिन अब्दुर्रहमान से मुनाजरा किया उनको फिरका कतइया से ताल्लुक था यूनुस ने उनके बारे में कहा कि तुम लोग कुलाब मतमूरिया से भी ज्यादा गंदे हो (कुलाबे मतमूरिया बारिश में भीगे हुए कुत्ते को कहते हैं) इसी वजह से इस फिरका का नाम मतमूरिया पड़ गया इस फिरका का अकीदा है कि मूसा बिन जाफर जिन्दा हैं न मरे हैं न मरेंगे वही इमाम महदी है इस फिरका को वाकिफा भी कहते हैं क्योंकि यह लोग सिलसिले इमामत में मूसा बिन जाफर पर ठहर जाते हैं।

## मौसविया

यह लोग सिलसिले इमामत में मूसा बिन जाफर पर रुक जाते हैं इस वजह से मौसविया से मुलकब हैं लेकिन मतमूरिया के बर अक्स यह लोग कहते हैं कि हम को मालूम नहीं कि मूसा जिन्दा है या मर गए अगर किसी दूसरे की इमामत सही व दुरुस्त होती तो लोग उसको नाफिज करते।

## अमामिया

यह फिरका सिलसिले इमामत को मोहम्मद बिन हसन की तरफ चलाता है और उनको



इमाम काइम मुन्तजिर (महदी) तसलीम किया है यह लोग कहते हैं कि इमाम काइम जाहिर होकर जमीन को अदल से भर देंगे जिस तरह अब वह जुल्म से भरपूर है।

## जरारिया

यह फिरका जरारा नामी शख्स के साथियों का है जो अक्कीदा मुअम्मरिया का था वही उनका है, बाज लोगों का ख्याल है कि जरारा ने मुअम्मरिया की मुखालफत तर्क कर दी थी जिस का बाइस यह हुआ कि अब्दुल्लाह बिन जाफ़र से कुछ मसाइल दरयाफ़्त किए गए अब्दुल्लाह उनका जवाब न दे सके तो लोगों ने उनको छोड़ दिया और मूसा बिन जाफ़र की तरफ रुजूअ किया।

## राफ़ज़ियों के अक्वाल (बातिला)

राफ़ज़ियों के अक्वाल यहूदियों से मुशाबेहत रखते हैं। शअबी कहते हैं कि राफ़ज़ियों की मोहब्बत यहूदियों की मोहब्बत है यहूदी इस बात के काएल है कि इमामत हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की औलाद के अलावा किसी दूसरे के लिए दुरुस्त नहीं इसी तरह राफ़ज़ी कहते हैं कि इमामत हज़रत अली की औलाद के अलावा किसी और की सहीह नहीं है। यहूदी इस बात के काएल हैं कि जब मसीह दज्जाल खुरुज करेगा और ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से जमीन पर रस्सी पकड़ कर उतरेंगे उस वक़्त जिहाद होगा इससे पहले जिहाद नहीं हो सकता। राफ़ज़ी भी कहते हैं कि जब तक मेहदी बर आमद नहीं होंगे और एक मुनादी आसमान की तरफ से निदा न करेगा उस वक़्त तक जिहाद नहीं हो सकता। यहूदी मगरिब की नमाज़ इतनी ताखीर से पढ़ते हैं कि आसमान पर सितारा का इज्तेमा एक जाल की शक्ल में नज़र आने लगे (काफी सियाही न फैल जाए) राफ़ज़ी भी मगरिब की नमाज़ में इसी क़दर ताखीर करते हैं। यहूदी क़िबला की तरफ से कुछ फिरे हुए नमाज़ में होते हैं राफ़ज़ी भी ऐसा ही करते हैं। यहूदी फ़ज्र की नमाज़ सुबह के ख़ूब रौशन हो जाने के बाद अदा करते हैं राफ़ज़ी भी ऐसा ही करते हैं यहूदी नमाज़ में कपड़े लटकाए रहते हैं राफ़ज़ियों की भी यही हालत है। यहूदी हर मुसलमान के खून को हलाल समझते हैं राफ़ज़ी भी यही ख्याल करते हैं। यहूदी औरतों की इद्दत के काएल नहीं हैं राफ़ज़ी भी इसके काएल नहीं हैं यहूदी तीन तलाक़ को बे मानी समझते हैं राफ़ज़ियों का भी यही हाल है यहूदियों ने तौरात में तहरीफ़ की है राफ़ज़ियों ने कुरआन में तहरीफ़ की। राफ़ज़ी कहते हैं कुरआन पाक में तग़य्युर व तबद्दुल कर दिया गया है तरकीब व तरतीब में उलट फेर कर दिया गया है नुज़ूल की तरतीब बाकी नहीं है और कुरआन में कमी व बेशी कर दी गई है कुरआन की क़िरअत ऐसे तरीकों से की गई है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है।

यहूदी जिब्रील अलैहिस्सलाम से बुग़ज़ रखते हैं और कहते हैं वह हमारे दुशमन हैं राफ़ज़ियों का एक ग़रोह भी इस का काएल है कि जिब्रील ने वही पहुंचाने में ग़लती की। अली के बजाए मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को वही पहुंचा दी अल्लाह ने उनको वही दे कर अली के पास भेजा था। अल्लाह करे यह हमेशा तबाह और ग़ारत रहें।



# मरजिया के फिरके

मरजिया के 12 फिरके हैं

(1) जहमिया (2) सालेहिया (3) शमरीया (4) यूनिसिया (5) यूनानिया (6) नज्जारिया (7) गीलानिया (8) शबीबिया (9) हनफिया (10) मुआजिया (11) मोरिसिया (12) करामिया

मरजिया की वजह तसमिया यह है कि इस फिरका के ख्याल में ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मद रसूलुल्लाह का काएल ख्वाह कितने ही गुनाह करे मगर वह दोज़ख में नहीं जाएगा। ईमान कौल का नाम है अमल का नहीं, आमाल अहकाम हैं ईमान सिर्फ कौल है लोगों के ईमानों में बाहम कमी बेशी नहीं होती, पस आम आदमियों का ईमान, अबिया का ईमान और मलाएका का ईमान एक ही है इसमें न कोई ज़्यादा है न कोई कम।

इज़हार ईमान के साथ इन्शा अल्लाह नहीं कहना चाहिए (बल्कि यकीन के साथ ईमान का दावा किया जाए और कहा जाए मैं यकीनन मोमिन हूँ इस तरह न कहे मैं इन्शा अल्लाह मोमिन हूँ) जो शख्स ज़बान से ज़रूरियाते दीन का इकरार करे और अमल न करे जब भी वह मोमिन है।

## जहमिया

जहमिया फिरका जहम बिन सफ़वान से मन्सूब है जहम का कौल है कि अल्लाह को, अल्लाह के रसूल को और उन चीज़ों को जो अल्लाह की तरफ़ से आई हैं सिर्फ़ जानने और मानने का नाम ईमान है। इस फिरका का दावा था कि कुरआन मखलूक है अल्लाह तआला ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से कलाम नहीं किया अल्लाह तो कलाम करता ही नहीं है न उस को देखा जा सकता है और न उस की जगह जानी जा सकती है उसके लिए न अर्श न कुर्सी और न वह अर्श पर है, उन्होंने नामए आमाल तौले जाने और अज़ाबे क़ब्र और जन्नत व दोज़ख के पैदा हो जाने का इन्कार किया है उनका दावा है कि जब वह दोनों पैदा होंगे तो फ़ना हो जाएंगे। अल्लाह तआला अपनी मखलूक से कलाम नहीं फ़रमाएगा और न रोज़े क़यामत उनकी तरफ़ नज़र करेगा और न अहले जन्नत अल्लाह तआला की तरफ़ नज़र उठाएंगे और न उस का दीदार जन्नत में होगा। ईमान सिर्फ़ एतराफ़े क़ल्ब का नाम है न कि ज़बान से इकरार करने का। उस ग़रोह ने अल्लाह तआला की तमाम सिफ़ात से इन्कार किया है।

## सालहिया

इस फिरके का यह नाम इस वजह से पड़ा कि यह लोग खुद को अबूल हसन सालेही के मजहब का पैरु कहते हैं उन लोगों का अकीदा है कि मारेफ़त का नाम ईमान और जिहालत का नाम कुर्फ़ है और यह कि जिस ने सालिस सलासा (यानी तीन में से एक तीसरा खुदा) कहा सो यह कहना कुर्फ़ नहीं है मगर ऐसी बात वही कहेगा जो काफ़िर हो अगरचे वह ज़ाहिर न करे और यह कि ईमान के सिवा कोई और इबादत नहीं है।

## यूनिसिया

यह फिरका यूनुस बरी से मन्सूब है उनका अकीदा है कि मारेफ़त और अल्लाह तआला से



मोहब्बत और खुजूअ व खुशूअ का नाम ईमान है जिसने इन बातों में से एक बात भी तर्क कर दी वह काफिर हो गया।

## शिमरिया

यह फिरका अबू शिमर की तरफ मनसूब है इस गरोह का ख्याल है कि ईमान, मारफत, खुजूअ व खुशूअ और मोहब्बत के साथ साथ ज़बान से यह इकरार करना भी है कि खुदा के मिरल कोई नहीं है। इन सब बातों का मजमूआ का नाम ईमान है अबू शिमर ने कहा है कि जो कबीरा गुनाह का मुरतकिब हुआ है उसको मुतलकन फ़ासिक नहीं कह सकता बल्कि इतना कह सकता है कि वह फ़लां फ़लां अमल से फ़ासिक है।

## यूनानिया

यह फिरका यूनान से मनसूब है उनका अकीदा है कि मारफत और अल्लाह और रसूल का इकरार और जिसे अक़ल जाएज़ नहीं समझती उस काम को न करना (कि खुदा उसको माफ़ नहीं करता) इन सब के मजमुआ का नाम ईमान है।

## नज्जारिया

फिरका नज्जारिया हसन बिन मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह नज्जार से मनसूब है वह कहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों की मारफत और उसके मुत्तफिक़ अलैह फ़राएज़ और उसके साथ खुजूअ व खुशूअ और ज़बान के साथ इकरार करने का नाम ईमान है पर जो शख्स इनमें से किसी बात से नावाकिफ़ है और उस पर हुज्जत काएम हो जाए और वह उसका इकरार न करे तो वह काफिर है।

## गीलानिया

यह फिरका गीलान से मनसूब है और यी शिमरिया का हम ख्याल है इस का अकीदा है कि अशिया के हुदूस से आगाह होना ईमान के लिए ज़रूरी है और तौहीद का इल्म ही सिर्फ़ ज़बानी इकरार है कल्बी शहादत ज़रूरी नहीं। ज़रक़ान का कौल है कि गीलान ने कहा है कि ज़बानी इकरार का नाम ही ईमान है और यही तसदीक़ है।

## शबीबिया

यह फिरका मोहम्मद बिन शबीब से मनसूब है इनके साथी इसके काएल हैं कि अल्लाह का इकरार करना, अल्लाह की वहदानियत का पहचानना और अल्लाह की ज़ात की हर तशबीह से नफ़ी करना (यानी लैसा कमिसलेही शैइन) ईमान है। मोहम्मद का यह भी अकीदा था कि इब्लीस में ईमान था लेकिन वह अपने गुरुर और तकब्बुर के बाइस काफिर हो गया।

## हनफिया

अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित के बाज़ उन पैरुओं और साथियों को हनफिया मरजिया कहा जाता है जिन का अकीदा है कि अल्लाह और अल्लाह के पैग़म्बरों को पहचानने और उन तमाम चीज़ों का इकरार करने का जो अल्लाह की तरफ़ से आई हैं उसका नाम ईमान है। बरहूती ने



अपनी किताब अश्शजरा में इस का जिक्र किया है।

अदबी दुनिया

## मुआजिया

यह फिरका मआज मूसी की तरफ मनसूब है मआज कहता था कि जिसने अल्लाह की इताअत कर दी उसको फासिक नहीं कहा जाएगा बल्कि कहा जाएगा कि उस शख्स ने फिस्क किया है फासिक न अल्लाह का दोस्त होता है न दुश्मन।

## मुरीसिया

यह फिरका बिश्र मुरीसी का है इस फिरका का अकीदा है कि इमान तसदीक का नाम है और तसदीक दिल और ज़बान दोनों से होती है इब्ने रावन्दी का भी यही मस्लक था उसका कौल था कि सूरज को सजदा करना कुफ़र नहीं है बल्कि एक अलामते कुफ़र है।

## करामिया

यह फिरका अबू अब्दुल्लाह बिन कराम से मनसूब है इस का अकीदा है कि ज़बानी इकरार ही इमान है, कल्ब की तसदीक इसके लिए ज़रूरी नहीं मुनाफिक हकीकत में मोमिन थे। कुदरते फ़ेअल को यह वजूदे फ़ेअल से मुक़द्दम जानते हैं ख़्वाह कुदरते फ़ेअल वकूए के साथ मुत्तसिल व मुआविन हो इसके बर ख़िलाफ़ अहले सुन्नत कहते हैं कुदरत फ़ेअल वकूए फ़ेअल के साथ है और बग़ैर शर्त के इसको मुक़द्दम कहना जाएज नहीं। उन की किताबें अबूल हसन सालही, इब्ने रावन्दी, मोहम्मद बिन शबीब और हुसैन बिन मोहम्मद नज्जार ने तसनीफ़ की हैं। इस फिरका के मानने वाले ज़्यादातर मशरिक में और ख़ुरासान में आबाद हैं।

# मोतज़ला या क़दरिया के अक्वाल

## मोतज़ला की वजहे तसमीया

1. मोतज़ला की वजहे तसमीया यह है कि यह लोग हक़ से किनारा कश हो गए थे (एतज़ाल किनारा कश हो जाने को कहते हैं) दूसरे यह कि

2. यह लोग मुसलमानों के अक्वाल से अलग थलग हो गए थे यानी मुसलमानों में गुनाहे कबीरा के मुरतकिब के बारे में इख़्तेलाफ़ था बाज़ कहते थे कि मुरतकिबे गुनाहे कबीरा मोमिन है क्योंकि उसमें इमान मौजूद है बाज़ कहते हैं कि वह काफ़िर हो गया वासिल बिन अता ने तीसरा कौल ईजाद किया और कहा कि गुनाहे कबीरा का मुरतकिब न मोमिन है न काफ़िर। इस कौल की बिना पर वह सब मुसलमानों से अलग हो गया और अहले इमान से किनारा कश हो गया इस वजह से उनको मोतज़ला कहा जाने लगा।

3. मोतज़ला कहने की यह वजह भी बताई गई है कि यह लोग हज़रत हसन बसरी की मजलिस से अलग हो गए थे जब हसन बसरी का उनकी तरफ़ गुज़र हुआ तो उन्होंने फ़रमाया यह लोग मोतज़ला (अलग हो जाने वाले) हैं उस वक़्त यह लोग अम्र बिन उबैद की पैरवी करते थे हसन बसरी ने जब अम्र बिन उबैद पर अताब किया तो लोगों ने हसन बसरी को इस गुरस्सा पर आप को टोका आप ने फ़रमाया क्या तुम ऐसे शख्स के सिलसिले में मुझ से बिगड़ते हो जिस



को मैंने खुद ख्वाब में सूरज को सजदा करते देखा था।

4. मोतजला को कदरिया भी कहते हैं कदरिया कहने की वजह यह है की यह लोग इन्सान के गुनाहों को कजा व कद्र के तहत नहीं समझते बल्कि खुद इन्सान को उसके गुनाहों का खालिक समझते हैं।

मोतजला, जहमिया और कदरिया सिफाते खुदावन्दी के इन्कार में एकसां मसलक रखते हैं हम इस सिलसिला में उनके कुछ अकाइद पहले बयान कर आए हैं। इस मसलक की किताबों में मसन्निफ अबूल हुजैल, जाफर बिन हरब, खयात, कअबी, अबूल हाशिम, अबू अब्दुल्लाह बसरी, अब्दुल जब्बार बिन अहमद हमदानी हैं, इनका मजहब अमवाज, असकर और जहजम में ज्यादा फैला। मोतजला के मुन्दरजा जैल छः फिरके हैं।

हजलिया, निजामिया, मुअम्मरिया, जबाईया, कअबिया और बहीशमिया वह बातें जिन पर मोतजला के तमाम फिरके मुत्तफिक हैं वह जाते बारी की नफी पर मुशतमिल है यानी अल्लाह तआला के इल्म, कुदरत, हयात, समअ और बसर के नफी करते हैं इसी तरह वह उन सिफात की नफी करते हैं जो शरीअत से साबित हैं मसलन इसतवा व नुजूल वगैरह वह सब इस पर मुत्तफिक है कि अल्लाह का कलाम हादिस (नौ पैदा शुदा) है और उसका इरादा भी हादिस है नीज यह कि उसने उस कलाम से तकल्लुम फरमाया जिसको उसने अपने गैर में पैदा किया (मसलन दरख्त वगैरह) अल्लाह इरादा करता है और उसका इरादा हादिस है जो महल का मोहताज नहीं है। अल्लाह तआला अपने मालूम के खिलाफ इरादा करता है (यानी जानता है कि एक फेअल नहीं होगा और फिर उस फेअल का इरादा करता है।)

बन्दों की तरफ से जो फेअल होने वाला नहीं है अल्लाह उसका इरादा करता है और जो बात हो गई है वह नहीं चाहता अल्लाह तआला अपने बन्दों के मकदूरत पर कादिर नहीं है बल्कि यह मोहाल कि उसने अपने बन्दों के अफआल को पैदा नहीं किया बल्कि बन्दे ही उन अफआल के खालिक हैं। बकसरत ऐसी चीजें हैं जिन को इन्सान खाता है लेकिन अल्लाह तआला ने उनको बन्दों को रिज्क नहीं बनाया है जब कि वह हराम हों, हकीकत है कि अल्लाह तआला हलाल ही रिज्क बनाता है न कि हराम को। आदमी कभी अजले मोअय्यन से पहले कत्ल कर दिया जाता है और कातिल वक्त से पहले उसकी जिन्दगी खत्म कर देता है।

मोमिन गुनाहे कबीरा के इरतकाब से अगरचे का काफिर नहीं हो जाता लेकिन ईमान से खारिज हो जाता है उसकी तमाम नेकियां बरबाद हो जाएंगी और वह हमेशा दोजख में रहेगा। मोतजला गुनाहे कबीरा के मुरतकिब के लिए रसूलुल्लाह की शफाअत के भी मुनकिर हैं। मोतजला में अकसर ऐसे ही हैं जो अजाबे कब्र को नहीं मानते और मीजान का इन्कार भी करते हैं। यह लोग खलीफ़े वक्त की इताअत तर्क करने और उसके खिलाफ़ खुरुज को भी जाइज समझते हैं। उनका अकीदा है कि जिन्दा की दुआ या खैरात से मुर्दे को फायदा और नफ़ा नहीं पहुंचता है यह लोग हुसूले सवाब को नहीं मानते। उनका यह भी अकीदा है कि न अल्लाह ने आदम से कलाम किया और न नूह से और न इब्राहीम (अलैहिमुस्सला) से न हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से और न जिब्रील, मिकाईल और न इस्राफील से, न उन मलाइका से कलाम किया जो अर्श को उठाए हुए हैं कयामत के दिन अल्लाह तआला उनमें से किसी की तरफ़ भी नहीं देखेगा, न इब्लीस, यहूदियों और नसरानियों से कलाम फरमाएगा।



## हज़लिया

फिरका हज़लिया का बानी और सरदार अबुल हज़ील इस अकीदे में मोतज़ला के दूसरे फिरकों से मुन्फ़रिद है कि अल्लाह तआला के लिए इल्म भी है और कुदरत भी, समअ भी है और बसर भी। अल्लाह तआला का कुछ कलाम मख़लूक है और कुछ ग़ैर मख़लूक। लफ़ज़ कुन ग़ैर मख़लूक है, अल्लाह अपनी मख़लूक का दुश्मन नहीं है, अल्लाह के मक़दूरात की एक खास हद है। अहले जन्नत जन्नत में रहेंगे लेकिन वह हरकत पर कादिर न होंगे और न अल्लाह उनको हरकत देने पर कादिर होगा। इसका अकीदा है कि मुर्दे, मादूम और आजिज़ से फ़ेअल का सुदूर हो सकता है। अबुल हज़ील का अकीदा था कि अल्लाह तआला हमेशा के लिए समीअ नहीं है।

## निज़ामिया

यह फिरका निज़ामिया का बानी और सरदार निज़ाम था उसका अकीदा था कि जमादात तख़लीकी अम्र (नेचर) के मुवाफ़िक़ अमल करते हैं वह सिवाए हरकत एतमादिया के तमाम अग़राज़ की नफ़ी करता है यानी किसी अर्ज़ का वजूद तस्लीम नहीं करता सिवाए हरकते एतमादिया के। वह कहता है कि इन्सान रूह का नाम है और किसी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं देखा बल्कि इन्सान के जिस्म को देखा इज्मा के ख़िलाफ़ उसका कौल यह भी था जिसने क़सदन नमाज़ को तर्क कर दिया तो लौटाना उसके जिम्मा वाजिब नहीं है। निज़ाम इजमाए उम्मत का काएल नहीं था वह कहता था कि उनका इज्मा बातिल पर था वह इसका भी काएल था कि ईमान कुफ़्र की तरह है और ताअत गुनाह के मानिन्द और हुज़ूर का फ़ेअल इब्लीसे लईन की तरह है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो की सीरत हुज्जाज की सीरत के मानिन्द है उसने इस कौल को इस दलील के साथ एख़्तियार किया था कि तमाम जानदार एक ही जिन्सीयत रखते हैं (इस लिए हर फ़ेअल अच्छा है या बुरा दूसरे फ़ेअल की तरह है) निज़ाम का यह भी कौल था कि कुरआने हकीम अपनी तरतीब इबारत के एतबार से मोज़ज़ा नहीं है। उस का कौल है कि बच्चा अगर दोज़ख़ के किनारे पर हो तब भी अल्लाह तआला में यह कुदरत नहीं कि उसको जला डाले या दोज़ख़ में फेंक दे। अहले किब्ला में यही वह पहला शख्स है जिसने यह अक़बाले कुफ़्र कहे हैं यह कहता था कि जिस्म की तक़सीम किसी हद पर भी जाकर ख़त्म नहीं हो सकती (ला मुतनाही है) उसका कौल था कि सांप, बिच्छू, गोबर के कीड़े, कुत्ते और सुअर भी जन्नत में हैं।

## मुअम्मरिया

फिरका मुअम्मरिया का बनी मुअम्मर था उसके कौल माद्दा परस्तों की तरह थे बल्कि उनसे कुछ बढ़ कर। यह कहता था कि अल्लाह ने न रंग पैदा किया है और न जाँका, न बू, न जिन्दगी, न मौत बल्कि यह सब जिस्म के तबई ख़्वास हैं (नेचर ने उन्हें ऐसा ही पैदा किया है) वह कहता था कि कुरआन भी अल्लाह का फ़ेअल नहीं है बल्कि जिस्म के अफ़आल हैं उसने अल्लाह तआला के क़दीम होने का भी इन्कार किया है, अल्लाह उसका नास करे और इस उम्मत से उसके ख़्यालात को दूर रखे।



## जबाईया

जबाईया फिरका का सरदार जबई था चन्द उमूर में उसने इज्मा के खिलाफ किया और सब से अलग हो गया उन उमूर में से एक यह है कि वह कहता था बन्दे अपने अफआल के खालिक है और उस बात में से कोई सबकत नहीं ले जा सका यानी उससे पहले किसी ने यह बात नहीं कही थी। वह यह भी कहता था कि अल्लाह तआला औरतों में हमल की तखलीक करता है वह कहता था कि बन्दे जब किसी काम के करने का इरादा करते हैं तो अल्लाह तआला अपने बन्दों की इताअत करता है उसका कौल था कि अगर कोई सख्स यह कहे कि इन्शा अल्लाह मैं कल को अपना कर्ज अदा कर दूंगा और कर्ज अदा न करे तो वह हानिस (कसम तोड़ने वाला) होगा और इन्शा अल्लाह कहने से उसको कुछ फायदा नहीं पहुंचेगा वह कहता था कि पांच दिरहम की चोरी करने से अदमी फासिक हो जाता है और अगर उससे एक हब्बा भी कम है तो फासिक नहीं होगा।

## बहशमिया

बहशमिया फिरका अबूल हाशिम से मनसूब है अबूल हाशिम जबाई का फरजन्द था उसका कौल था कि मुकल्लफ कादिर होता है फाएल और तारिक नहीं होता अल्लाह तआला उसको उस के फेअल पर अजाब देगा अगर गुनहगार तमाम गुनाहों से तौबा कर ले और एक गुनाह से न करे तो जिन गुनाहों से उसने तौबा की है वह तौबा भी सहीह न होगी।

## काबिया

यह फिरका अबुल कासिम काबी बगदादी से मनसूब है उसने अल्लाह तआला के समीअ व बसीर होने से इन्कार किया है और इसका भी मुनकिर था कि अल्लाह हकीकत में साहबे इरादा है वह कहता था कि बन्दों के अफआल के मुताल्लिक अल्लाह के इरादा करने के मानी हैं उन अफआल का हुक्म देना और अपन फेअल के इरादा करने के मानी हैं फेअल को जानना और मजबूर न होना। अबुल कासिम कहता था कि आलम में खला महाल है और जिस्म की सिर्फ बैरुनी सतह हरकत करती है गोया कोई सख्स अगर जिस्म पर तेल लगा कर चले तो इस नजरिया का मुताबिक वह खुद मुतहरिक न होगा बल्कि तेल मुतहरिक होगा यह कुरआन को हादिस तो कहता था मगर इसके मखलूक होने का काएल नहीं था।

## फिरका मुशब्बा के अकाएद व अकवाल

मुशब्बा के तीन फिरके हैं हश्शामिया, मकातिलिया, वासमिया

यह तीनों फिरके इस बात पर मुत्तफिक हैं कि अल्लाह जिस्म है इस लिए कि किसी मौजूद का इल्म बगैर जिस्म के नहीं हो सकता। राफजियों और करामिया फिरकों पर मुशब्बा के अकाइद का बहुत गल्बा था हश्शाम बिन हेकम ने मुशब्बा फिरके की किताबें तालीफ की हैं अल्लाह तआला की जिस्मानियत के इस्बात में खुसूसियत से एक किताब तालीफ की है।

## हश्शामिया

यह फिरका हश्शाम बिन हेकम की तरफ मनसूब है इस फिरके का अकीदा था कि अल्लाह



तआला जिस्म है जिसमें तूल, अर्ज और अमक मौजूद है वह एक चमकदार नूर है लेकिन उसकी उक मिक्दार मुकरर है वह खड़ा होता है और बैठता है वह मुतहरिक भी होता है और साकिन भी वह सियाल चादी की तरह है। एक रिवायत में आया है कि हश्शाम ने कहा कि अल्लाह के लिए सबसे अच्छी मिक्दार (कामत) सात बालिशत है पूछा क्या तेरा रब बड़ा या कोहे उहद? उसने जवाब दिया मेरा रब बड़ा है।

## मकातिलया

यह फिरका मकातिल बिन सुलैमान की तरफ मनसूब है मकातिल का अकीदा था कि अल्लाह इन्सान की शकल में जिस्म है उसके गोश्त भी है और खून भी, सर, ज़बान, गरदन और दूसरे आज्ञा व जवारेह भी हैं लेकिन उसकी कोई चीज़ किसी चीज़ के मुशाबेह नहीं है न कोई शय उससे मुशाबेह है।

## जहमीया के अक़वाल

जहम बिन सफ़वान इस कौल में सबसे मुन्फरिद और अलग थलग है कि जो अफ़ाल इन्सान से सरज़द होते हैं उनका हकीकी फ़ाएल वह नहीं है बल्कि मजाज़न उसकी तरफ़ निसबत की जाती है जैसे मिसालन कहा जाता है कि दरख़्त लम्बा हो गया, खजूर पक गई यह सब बतौरे मजाज़ है। यह अल्लाह को शय कहने का मुन्किर और अल्लाह के इल्म के हादिस होने का काएल था उसका अकीदा था कि चीज़ों की पैदाइश से पहले उनका इल्म अल्लाह के लिए महाल है, वह जन्नत और दोज़ख़ दोनों को फ़ानी कहता था, अल्लाह तआला के सिफ़ात के वजूद की नफ़ी करत है जहम के मसलक के लोग जहमी शहर तिरमीज़ के हैं। मर्व में भी इसके हम ख़्याल लोग पाए जाते हैं नफ़ी सिफ़ात पर उसने एक किताब भी लिखी है उसको मुस्लिम बिन अहूर मारवानी ने क़त्ल कर दिया।

## ज़रारिया के अक़वाल

ज़रारिया फिरके को ज़रार बिन अम्र से निसबत है। ज़रार उस अम्र का काएल था कि अजसाम मजमूआ एराज़ का नाम है अजसाम का एराज़ बिन जाना उसके नज़दीक जाएज़ था। इस तरह जौहर अर्ज में उनके नज़दीक कोई फ़र्क नहीं हुआ ज़रार का अकीदा था कि कुदरत कादिर का जुज़ है और यह फ़ेअल के सुदूर से पहले होती है हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत अबी बिन कअब की किरअतों का मुन्किर था।

## नज्जारिया के अक़वाल

नज्जारिया फिरका हुसैन बिन मोहम्मद नज्जार की तरफ़ मनसूब है नज्जार बन्दों के फ़ेअल का हकीकी फ़ाएल अल्लाह को भी क़रार देता है और बन्दों को भी और इरादा इलाही के सिवा मोतज़ला की तरह बाकी तमाम सिफ़ाते इलाहिया की नफ़ी करता है चुनांचे उसने साबित किया है कि अल्लाह तआला अपने लिए क़दीम इरादा करने वाला है वह ख़लक़े कुरआन का काएल



था और कहता था कि अल्लाह तआला के साहबे इरादा होने के लिए मानी हैं अल्लाह का मजबूत व मगलूब न होना। इसी तरह अल्लाह के मुतकल्लिम होने के मानी हैं कलाम करने से आजिज न होना। इसी तरह अल्लाह के जव्वाद और सखी होने के मानी हैं बखील न होना। नज्जार का मसलक इब्ने औन और युसूफ राजी के मसलक को मुताबिक है उसके पैरु ज्यादा तर काशन में आबाद हैं।

## कुलाबिया के अक़वाल

कुलाबिया फिरका अबू अब्दुल्लाह बिन कुलाब की तरफ मनसूब है उस का अकीदा था कि अल्लाह की सिफात न कदीम हैं न हादिस, न ऐने जात हैं न गैरे जात, आयत अर्रहमान अलल अर्शिस्तवा में इस्तवा होने के मानी हैं कज न होना, अल्लाह तआला जिस हाल पर पहले था उसी पर हमेशा से है। अल्लाह तआला की कोई मखसूस जगह नहीं उस का कौल था कि कुरआन के हुरुफ नहीं हैं।

## सालमिया फिरके के अक़वाल

फिरका सालमिया इब्ने सालिम की तरफ मनसूब है इसके बहुत से अक़वाल में से एक कौल यह भी है कि कयामत के रोज़ अल्लाह तआला मोहम्मदी आदमी की शकल में देखा जाएगा, जिन व इन्स, मलाएका और हैवान हर एक के सामने उसी की हैसियत में अल्लाह नमूदार होगा, अल्लाह की किताब में उनकी तकज़ीब मौजूद है: अल्लाह की तरह कोई चीज़ नहीं है, वही सुनने वाला और देखने वाला है।

इस फिरका का एक कौल यह यह भी है कि अल्लाह तआला की हस्ता एक राज़ सरबस्ता है अगर वह उसको जाहिर कर दे तो निज़ामे आलम दरहम व बरहम हो जाए और अंबिया का भी एक राज़ सरबस्ता है अगर इसका इज़हार हो जाए तो नबूव्वत तबाह हो जाए और उलमा का भी एक राज़ है अगर वह खुल जाए तो इल्म जाया हो जाए मगर यह कौल ग़लत है, अल्लाह तआला हकीम है उसका इन्तेज़ाम नाकाबिले ज़वाल है, तबाही और बर्बादी उसकी तरफ़ रुख़ भी नहीं कर सकती। अगर इस गरोह के इस कौल को सच मान लिया जाए तो हिकमते इलाही बेसूद और बातिल करार देने तक पहुंचा देती है और हिकमते इलाही को बातिल करार देना कुफ़्र है, इस फिरका का यह भी कौल है कि कयामत के दिन काफ़िर अल्लाह तआला का दीदार करेंगे और अल्लाह तआला उनका हिसाब किताब लेगा।

उनका कौल है कि दूसरी मर्तबा इब्लीस ने आदम को सजदा कर लिया था, कुरआन मजीद में उनके इस कौल की तकज़ीब मौजूद है, अल्लाह तआला फ़रमाता है: इब्लीस ने इन्कार किया और तकबुर किया और वह काफ़िरों में से था। दूसरी आयत में है: सिवाए इब्लीस के कि वह सजदा करने वालों में से न था।

उस फिरका का यह कौल भी है कि इब्लीस जन्नत में दाख़िल नहीं हुआ, इस बात की तकज़ीब भी कुरआन हकीम में मौजूद है, अल्लाह तआला का इरशाद है: जन्नत से निकल जा बे शुबहा तू मरदूद है।



उस फिरका का यह कौल भी है कि जिब्रील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए थे मगर अपनी असल जगह से हटे भी नहीं थे यह लोग इसके काएल हैं कि जब अल्लाह ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया तो हज़रत मूसा में कुछ गुरुर (खुदनगही) पैदा हो गया। अल्लाह ने वही भेजी कि मूसा! तुम खुद पसंद हो गए हो, आंखें उठा कर तो देखो, मूसा ने नज़र उठा कर देखा तो सामने सौ तूर नज़र आए और हर तूर पर एक मूसा मौजूद था, असहाबे हदीस और अहले रिवायत के नज़दीक उनका यह कौल बिल्कुल लम्ब, ग़लत और बातिल है, अल्लाह के रसूल पर दरोग बन्दी करने वाले के बारे में आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वर्इद के तौर पर फ़रमाया था कि जिसने मुझ पर कसदन झूट लगाया उसको अपना ठिकाना दोज़ख में लेना चाहिए।

उन का यह कौल भी था कि अल्लाह बन्दों से ताअत का इरादा करता है मासियत व गुनाह का इरादा नहीं करता बल्कि उनकी नाफ़रमानियां उन ही के साथ रखना चाहता है, यह सब ख़ुराफ़ात है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: अल्लाह जिस के फ़ितना यानी कफ़्र का इरादा करे तो अल्लाह से तुम उसको बिल्कुल नहीं बचा सकते और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह कफ़्र न करत, अगर अल्लाह चाहता तो वह न लड़ते।

उनका एक ख़्याल यह भी है कि नबूव्वत से क़ब्ल और हज़रत जिब्रील के आने से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुरआन पाक याद था, इस कौल की तकज़ीब भी कुरआन में मौजूद है, अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ रसूल तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या है और न ईमान से वाकिफ़ थे, इससे पहले न तुम कोई किताब पढ़ते थे न अपने हाथ से लिखते थे।

यह फिरका इस बात का भी काएल है कि अल्लाह हर कारी की ज़बान पढ़ता है जब यह लोग किसी कारी की ज़बान से कुरआन सुनते थे, यह कौल हुलूल के अकीदा तक पहुंचा देता है और इससे लाज़िम आता है कि अल्लाह कभी कुरआन पढ़ता और ग़लत तलफ़फ़ुज़ करता है क्योंकि कभी कभी कारी से ऐसा हो जाता है। उनका एक कौल यह भी है कि अल्लाह हर जगह है, अर्श वगैरह की तख़सीस नहीं। कुरआन पाक में उनके इस कौल की भी तकज़ीब मौजूद है।

अल्लाह तआला का इरशाद है: खुदा ने अर्श पर करार पकड़ा।

अल्लाह तआला ने अर्श पर मुस्तवी होना फ़रमाया है, ज़मीन पर, पहाड़ों पर या हामिला औरतों के पेटों पर मुस्तवी होना नहीं फ़रमाया।

अकाइद और उसूल के बारे में यह आख़री बयान है जो इशारा व इख़्तिसार के साथ पेश किया गया। दर हकीकत हमने गुमराह फिरकों के मज़ाहिब मुख़्तलफ़ा के हर मज़हब के अबताल की तरफ़ इशारा नहीं किया महज़ इस ख़ौफ़ से कि किताब ज़ख़ीम न हो जाए। बस मैं ने उनके चन्द अक़वाल का ज़िक्र ही कर दिया ताकि उनकी शिनाख़्त हो जाए। अल्लाह तआला हम को और तुम सब को इन मज़ाहिबे (बातेला) और उनके मोतक़ेदीन के शर से बचाए और हमें इस्लाम और सुन्नत पर और फिरका नाजिया में अपनी रज़ा से मौत अता फ़रमाए (आमीन)



## बाब 10

# मवाएज़ कुरआन व हदीस के बयान में

## चन्द मजालिस

### पहली मजलिस

तर्जमा: तो जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह चाहो मरदूद शैतान से, की तशरीह। यह सूरह नहल की एक आयत है, सूरह नहल मक्की है और सूरह नहल की सिर्फ तीन आखरी आयतों का नुजूल मदीना में हुआ इस की कुल आयात 128 हैं और कुल अल्फाज एक हजार आठ सौ इक्तालिस और कुल हुरूफ 7709 (सात हजार सात सौ नौ) हैं इस सूरह की शाने नुजूल अहले तफसीर ने यह बयान की है कि एक बार मक्का मोअज्जमा में रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाजे फ़जर में सूरत अन्नज्म और वल्लैल इज़ा यगशा तिलावत फ़रमाई और दोनों सूरतों की किरात बुलन्द आवाज़ से फ़रमाई। सूरत अन्नज्म में जब आप आयत तर्जमा: भला आप ने लात व उज्जा और तीसरे मनात को देखा, पर पहुंचे तो आप को उंध आ गई और शैतान ने आप की किरात में हम आवाज़ हो कर यह अल्फाज मिला दिए, तर्जमा: यह आली कद्र बुत हैं जिन की शफ़ाअत की उम्मीद है, मुशरिक यह सुन कर बहुत खुश हुए वह तो बुतों की शफ़ाअत साबित ही करते थे और कहते थे यह अल्लाह के पास हमारे शफीअ हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने उनके कौल को नक्ल फ़रमाया है।

हम तो उनकी परस्तिश सिर्फ इसलिए करते हैं कि यह हम को अल्लाह के करीब पहुंचा दें। मुशरिकीन कहा करते थे कि बुत एक पाक अजसाम हैं उनके लिए कोई गुनाह नहीं है बस यह बादशाहों और मलाइका के मुकाबला में इबादत के लिए ज़्यादा मौजूं और बेहतरीन हैं इस लिए कि उनके लिए गुनाहों का इमकान है और वह जी रुह हैं। उन्होंने बुतों को गरानीक से तशबीह दी है, गरनीक या गरनूक की जमअ हैं गरनूक नर परिन्दे को कहते हैं, बुलन्दीए मरतबा के बाइस कुफ़ार बुतों को गरानीक कहा करते थे। इस वजह से भी कि नर परिन्दा ज़्यादा ऊंचा उड़ता है। बाज़ का कौल है कि गरनूक एक सफ़ेद आबी रंग का परिन्दा होता है बाज़ लोग इसको नरगिस या कलिंग कहते हैं। गुदाज़ बदन वाले जवान आदमी को भी गरनूक कहा जाता है। हज़रत अली से मरवी हदीस इस मफ़हूम को वाज़ेह करती है कि आप ने फ़रमाया कि मैं कुरैश के एक गरनूक (गुदाज़ जिस्म के नौजवान) को देख रहा हूं कि वह कुरैश को अपने खून में लथेड़ रहा है और मक़ातिल का कौल है कि गरनूक से मुराद फ़रिश्ते हैं। काफ़िरों का एक गरौह मलाइका की परस्तिश करता और वह मलाइका का अपना शफीअ समझता था। गरज़ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब सूरत अन्नज्म ख़त्म की तो सजदा किया उस वक़्त वहां जो मुसलमान या मुशरिक मौजूद थे सब ने सजदा किया सिर्फ वलीद बिन मुगीरा ने सजदा नहीं किया वलीद एक बूढ़ा शख्स था उसने एक मुट्ठी मिट्टी उठाई और अपनी पेशानी पर लगाकर



सजदा कर लिया और कहने लगा क्या हम इस तरह झुक जाएं जिस तरह उम्मे ऐमन और उसके साथी वाली औरतें झुकती हैं ऐमन रसूलुल्लाह के खादिम थे जो यौमे हुनैन में शहीद हो गए। मजकूरा दोनों जुमले हर काफिर के दिल में घर कर गए हालांकि यह शैतान की मुकफफा इबारत थी और उसी का उठाया हुआ फितना था उसी ने उन जुमलों को रसूलुल्लाह की किरअत में शामिल कर दिया था। सब लोगों के सजदा करने पर फरीकैन (मुसलमानों और मुशरिकों) को ताज्जुब हुआ मुसलामनों को तो इस वजह से कि बगैर ईमान व ईकान के मुशरिकों ने सजदा किया और रसूलुल्लाह की पैरवी की और मुशारेकीन इस वजह से खुशी हुई कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने और अपनी कौम के अब्बल मजहब की तरफ वापस आ गये। उन्होंने अपने माबूदों की ताजीम के लिए सजदा किया था। शैतान की शैतीनियत से यह दोनों जुमले लोगों में खूब फैल गए यहां तक की हब्श में भी इनकी खबर जा पहुंची। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह बात बड़ी शाक गुजरी। शाम को जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और कहने लगे मैं इन दोनों जुमलों से अल्लाह की पनाह मांगता हूं मेरे रब ने यह दोनों कलमे नहीं उतारे न मुझे इनके पहुंचाने का हुक्म दिया। हुजूर पर जब यह बात वाज़ेह हुई तो आप को बहुत रंज हुआ और फरमाया क्या मैंने शैतान का कहा माना और उसका कलाम अपनी ज़बान से अदा किया और शैतान के कलाम को अल्लाह के कलाम के साथ मिला दिया। इसके बाद अल्लाह तआला ने इन शैतानी इलका करदा जुमलों सूरह अन्नज्म से अलग कर दिया और रसूलुल्लाह पर आप की तमानियते खातिर के लिए यह आयत उतारी।

हम ने आप से पहले जो रसूल और नबी भी भेजा तो जब उसने अल्लाह का कलाम पढ़ा तो शैतान ने उसकी किरअत में ज़रूर ही दखल अंदाजी की पस जो कुछ शैतान डालता है खुदा उसको दूर कर देता है और वह अपनी आयात को मुस्तहकम करता है, खुदा दाना और हकीम है

जब अल्लाह तआला ने शैतान की मुसज्जा इबारत और उसके फितने से अपने नबी को बरी कर दिया तो मुशरिक फिर उसी गुमराही और अदावत पर लौट आए इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह से पनाह तलब करने का हुक्म दिया गया और यह आयत नाजिल फरमाई।

जब कुरआन पढ़ो तो फटकारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो।

हज़रत इब्ने अब्बास का इरशाद है कि इस आयत का मतलब यह है जब कुरआन पढ़ने का इरादा करो तो तऊज़ पढ़ो अऊज़ोबिल्लाहि मिनशैतानिर्रजीम। रजीम के मानी रान्दा, फटकारा हुआ और मरदूद हैं।

इब्ने अब्बास फरमाते हैं कि इबलीसे लईन के लिए अऊज़ोबिल्लाह पढ़ने से ज़्यादा सख्त यीज़ और कोई नहीं है।

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है

जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए हैं और उस पर भरोसा रखते हैं शैतान का उन पर काबू नहीं चल सकता (कि वह उनको सीधे रास्ते से भटका सके) शैतान का काबू तो सिर्फ उन लोगों पर होता है जो उससे दोस्ती रखते हैं (उसकी पैरवी करते हैं) पस वह उनको उनके दीन से बहका देता है और शैतान का तसल्लुत उन लोगों पर होता है जो अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक करते हैं



## अऊज की तशरीह

अऊज के मानी हैं मैं पनाह चाहता हूं पनाह लेता हूं रुजूअ करता हूं। मआज पनाह की जगह अऊज और अयाज मसदर है। आजा बेही (सीगा माजी) बमानी उसने उसकी पनाह लेता है यअऊजोबेही (सीगा मजारेअ) वह उसकी पनाह लेता है, मआज अल्लाह मैं अल्लाह की पनाह लेता हूं हाजा अऊजुन ली मिम्मा अखाफा के मानी हैं जिस चीज का मुझे खौफ है उससे मेरे लिए पनाह है, या मुझे पनाह देने वाला है, इस तरह गोया बन्दा अल्लाह की पनाह लेता है ताकि वह अल्लाह की पनाह में शैतान के शर से महफूज रहे वत्ताअव्वुजू बिल कुरआन के मानी हैं कुरआन के जरिये शिफा हासिल करना, इस्तेआजा के मानी बाज लोगों ने बचाव एख्तयार करने के लिये अल्लाह तआला ने हजरत मरियम की वालिदा के कौल को इस तरह नक़ल फ़रमाया है

मैं उसको यानी मरियम को और उसकी नस्ल को शैतान मरदूद से तेरी हिफाज़त में देती हूँ।

## शैतान की लफ्ज़ी तशरीह

शैतान शतनुन से बना है शतनुन के मानी हैं रसिन मुतहरिक व दराज, और दूर होना, शैतान चूंकि खैर से दूर है और शर के अन्दर तवील व मुतहरिक है। इन्सान को शैतान कहने से मुझ है कि उससे शैतान की तरह अफ़आल का सुदूर हो। हर बुरी चीज शैतान से मुशाबेह है। अल्लाह का एक मुहाबरा है क अन्ना वज्हु वज्हुशैतान (इसका चेहरा शैतान के चेहरे की तरह है) काना रा सोहु रासुशैतान, और उसका सर शैतान के सर की मानिन्द था।

अल्लाह तआला का इरशाद है: उस दरख्त की शाखें शैतानों के सरों की मानिन्द हैं।

इस आयत में शयातीन की यही ऊरफी मानी हैं। बाज हज़रात का ख्याल है कि शयातीन बड़े बदसूरत सांप होते हैं, शयातीने अयाल यानी छोड़े की गरदन के बालों को भी कहते हैं। वर भी कहा गया है कि शैतान एक मशहूर घास का नाम है। रजीम बमानी मरजूम (फटकारा हुआ) जिस पर अल्लाह की लानत की मार है। अल्लाह ने उसको नाफ़रमानी और हज़रत आदम के सजदा न करने की वजह से अपनी बारगाह से लानत के साथ दूर कर दिया है उसे फ़रिश्तों ने ज़मीन से हांका और आसमान से ज़मीन की तरफ़ फेंका फिर उस पर सितारों के शरारों की मार पड़ती रहेगी और उसी के साथ साथ फिटकार भी।

## शैतान की हकीकत

शैतान अल्लाह तआला से दूर है और हर भलाई से दूर है वह जन्नत से दूर और दोजख़ से बहुत करीब है अल्लाह तआला ने नबी मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मा मुकर्रमा को शैतान से पनाह मांगने का हुक्म दिया ताकि दोजख़ से दूर और जन्नत से नज़दीक हो जाएं और जज़ा व सज़ा के मालिक के चेहरे की तरफ़ देख सकें गोया कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल इरशाद फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दे शैतान मुझ से दूर है और तू मुझ से करीब है लिहाज़ हर हाल में हुस्ने अदब को मलहूज रख यहां तक कि तुझ पर शैतान का दांव न चले और किसी बहाने वह तुझ पर काबू न पा सके।

हुस्ने अदब अहकामे खुदावन्दी को बजा लाना, ममनूआत से बचना, अपनी जान व माल औलाद और तमाम मख़लूक में हत्तल मक़दूर खुदावन्द तआला की रज़ा को मलहूज रखना है।



अगर बन्दा इन चीजों पर पाबन्दी के साथ अमल पैरा हो और उन पर हमेशा गामजन रहे तो उसको नजात हासिल हो जाती है। शयातीन के फितनों और वसवसों, नफ्स के खतरों और दगदगों, कब्र के फिशार व अज़ाब, कयामत की शिद्दत और हौल, दोजख के अज़ाब और उसके कुर्ब से नजात हासिल होगी। ऐसा बन्दा अल्लाह तआला के कुर्ब में जन्नतुल मावा के अन्दर पैगम्बरों, सिद्दीकों, शहीदों और सालेहीन के साथ होगा जो निहायत उम्दा रफीक और साथी हैं। ऐसा बन्दा हर हाल में हमेशा अल्लाह तआला की नेमतों से बहरायाब होता रहेगा।

अल्लाह तआला का इरशाद है: मेरे खास बन्दों पर तेरा काबू नहीं चल सकेगा।

जब बन्दे पर अल्लाह की बन्दगी और ऊबूदियत का निशान हो जईफ और रजील कम तर शैतान को उस पर ग़लबा का मौका नहीं मिलेगा, न जलवत न खलवत में, न ख्यालात पर न दिल पर, न ख्वाहिशात पर, न आसाब पर शैतान का असर काइम हो सकेगा। बल्कि बन्दा उस वक्त इस किस्म की आवाज सुनेगा कि "इसी तरह हमने उन लोगों के साथ किया जिन्होंने ख्वाहिशात को छोड़ा और हक की पैरवी की और हिदायत पाई" ऐसे शख्स के हक में फ़रिश्ते बाहम झगड़ते हैं और आलमे मलकुत में उसको इज़्ज़त के नाम के साथ पुकारते हैं अल्लाह तआला मुसतवीए अर्श होने की सूरत में अपने कलामे कदीम के साथ जो शैतान की मिलावट और बातिल की आमेजिश से कारी की किरअत के वक्त महफूज़ कर दिया गया अपने उस बन्दा पर फ़ख़र फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया है।

ऐसा इस लिए है कि हम इस बन्दे से बुराई और बेहयाई का रफ़ा फ़रमा दें बिला शुबा वह हमारे मुत्तख़ब बन्दों में से है।

इस की वजह सिर्फ़ यह है कि वह बन्दा जाहिर व बातिन में खुदा से डरा और शैतान मरदूद से भागा और उसकी पुकार बचा चुनांचे यह डर तो अल्लाह की तरफ़ से आ चुका है।

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तुम भी उससे दुश्मनी रखो। शैतान ने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया क्या तुम नहीं समझते।

गरज़ शैतान की पैरवी हर बंद बख़्ती और मुसीबत की असल है और शैतान की मुखालफ़त में खुश नसीबी, आराम, राहत हिदायत और ला ज़वाल जन्नत का (हुसूल) है।

## तरुज़ के फ़ायदे

अऊज़ोबिल्लाह पढ़ने से पांच फ़ायदे बन्दे को हासिल होते हैं। अब्बल दीन व हिदायत पर इस्तेक़ामत, दोम शैतान मरदूद के शर और फ़साद से बचाव, सोम अल्लाह की पनाह के मजबूत किला और कुर्ब के मक़ाम पर दाख़िला, चहारुम पैगम्बरों, सिद्दीकीन, शोहदा और सालेहीन के साथ मक़ामे अमन तक रसाई, पन्जुम मालिके ज़मीन व आसमान की इमदाद का हुसूल।

बाज़ कुतुबे साबिका में आया है कि जब शैताने लईन व मरदूद ने अल्लाह से कहा कि मैं तेरे बन्दों के आगे पीछे और दायें बायें से आऊंगा तो अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे अपनी इज़्ज़त व अज़मत की क़सम उनको मैं हुक्म दूंगा कि वह तेरे इग़वा से बचने के लिए मेरी पनाह में आने की दरख्वास्त करें जब वह मुझ से यह दरख्वास्त करेंगे तो मैं अपनी हिदायत के ज़रिये दायें जानिब से और अपनी इनायत के ज़रिये बाईं तरफ़ से, अपनी निगहदाश्त के ज़रिये उन की पुश्त से और अपनी इआनत के ज़रिये उनके सामने से उनकी हिफ़ाज़त करूंगा। ऐ



मलऊन तेरा बहकाना उनको नुकसान न पहुंचा सकेगा। बाज अहादीस में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो बन्दा एक मरतबा अल्लाह की पनाह मांगता है तो अल्लाह तआला दिन भर उस की हिफाजत फरमाता है। हुजूर का यह भी इरशाद है कि अल्लाह की पनाह तलब करके गुनाहों के दरवाजों को मुकफ़ल कर दो और बिस्मिल्लाह पढ़ कर ताअत व बन्दगी के दरवाजों को खोल दो। रिवायत है कि मोमिन को गुमराह करने के लिए इब्लीस (लईन) रोजाना 360 लश्कर भेजता है जब मोमिन अल्लाह की पनाह मांगता है तो अल्लाह तआला उसके दिल की तरफ़ तीन सौ साठ मरतबा नज़र फरमाता है और हर मरतबा फरमाने से शैतान का एक लश्कर तबाह हो जाता है।

## शैतान किन चीज़ों से डरता है

वह चीज़ जिससे शैतान डरता और भागता है वह या तो इस्तअजा (अल्लाह की पनाह तलब करना) है या आरिफों के दिलों की नूरे मारफ़त की शुआ है, अगर तुम आरिफों में से नहीं हो तो तुम पर मुत्तकियों का इस्तअजा लाज़िम है यहां तक कि तुम आरिफों के दर्जा तक पहुंचो, जब तुम आरिफों में से हो जाओगे तो तुम्हारे दिल की नूरानी शुआ शैतान की शौक़त को तोड़ डालेगी और उसके शर को नीस्त कर देगी और उसके असरात फना हो जायेंगे और तुम्हारी जात के अन्दर उसका जो लश्कर कारफरमाई के लिए मौजूद है उसके पांव उखड़ जाएंगे और फिर बस औकात ऐसा होगा कि तुम अपने भाईयों और अपने पैरुओं के लिए निगहबान बन जाओगे जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर फारूक के बारे में इरशाद फरमाया कि ऐ उमर! शैतान तुम्हारे साया से भागता है। आप ने यह भी इरशाद फरमाया कि जिस वादी से उमर गुज़रते हैं शैतान उस वादी को छोड़ कर दूसरी वादी में चलता है। एक जईफ़ रिवायत में यह भी आया है कि उमर को देख कर शैतान बदहवास हो जाता है।

शैतान जब किसी बन्दे में अपनी अदावत और मुख़ालफ़त की तसदीक़ कर लेता है और बन्दे की सच्चाई उस पर जाहिर हो जाती है तो वह उससे मायूस हो कर उसको छोड़ देता है और दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होता है लेकिन पोशीदा तौर पर छिपता छिपता आता रहता है लिहाज़ा बन्दे को चाहिए कि सिद्क़ पर सख्ती से काएम और शैतान के वार से होशियार रहे इसलिए कि उसका सुराख़ बारीक़ है और उसकी दुश्मनी पुरानी और हकीकी है, वह गोश्त पोस्त में खून की तरह रवां दवां रहता है। हज़रत अबू हुरैरा के बारे में रिवायत है कि वह किब्ब सिनी में दुआ मांगा करते थे कि इलाही मैं तेरी पनाह मांगता हूं उससे कि मैं जिना करूं या किसी को क़त्ल करूं, किसी ने उनसे दरयाफ़्त किया कि आप को यह खौफ़ क्या है? आप ने फरमाया क्यों न खौफ़ करूं जबकि शैतान जिन्दा है।

## शैतान से बचने की तदाबीर

जिन कलेमात के साथ शैतान से जंग करने और उसको दूर करने पर इस्तेक़ामत हासिल होती है वह कलेमा इख़्लास और रब्बुल इज़्ज़त का ज़िक्र करना है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशादे रब्बानी को नक़ल करते हुए फरमाया: ला इलाहा इल्लल्लाह मेरा किला है जो शख्स यह कलेमा कहेगा मेरे किला में दाख़िल हो जाएगा जो मेरे उस किला में दाख़िल हो जाएगा वह मेरे हर अज़ाब से महफूज़ हो जाएगा।



अहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने पूरे इख्लास के साथ ला इलाहा इल्लल्लाह कहा वह जन्नत में दाखिल हो गया। शैतान अज़ाब का वसीला है, बन्दा जब कलेमए तौहीद पढ़ता है और कलेमए तौहीद के तकाज़े यानी वाजिबात के अदा करने और ममनूआत के तर्क का लिबास पहन लेता है और शैतान यह लिबास उसको पहने देखता है तो उससे दूर भाग जाता है और उसके पास आने की जुरअत नहीं करता जिस तरह जंग में सिपाही सपर के ज़रिये दुश्मन के असलहा से महफूज़ हो जाते हैं उसी तरह बन्दा शैतान के फितने से बच जाता है (गोया यह चीज़ें उसके लिए सपर बन जाती हैं)

बिस्मिल्लाह का ज़िक्र भी बक़्सत करना चाहिए, रिवायत में आया है कि अहंजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुना कि एक कह रहा था कि "शैतान हलाक हो" आप ने फरमाया ऐसा न कहो क्योंकि इस तरह शैतान अपने आप को बड़ा समझने लगता है और कहता है मुझे अपनी इज़्जत की कसम! मैं ने तुझ पर ग़लबा पा लिया बल्कि इसके बजाए तुम बिस्मिल्लाह कहो क्योंकि उससे शैतान छोटा बनता है यहां तक कि वह एक च्यूटी के बराबर बन जाता है।

शैतान से मुकाबला करने की एक अहम सूरत यह भी है कि अल्लाह के फज़ल के अलावा दुनिया वालों से किसी किस्म की तमअ न रखे न दुनिया वालों की मदद की न उनके माल की न उनकी तारीफ़ की न उनके जत्थे और गरोह की न उनके तुहफा व हदया की, क्योंकि दुनिया और दुनिया वाले सब शैतान की फौज और उसका जतथा हैं। दुनिया में आदमी अपने माल के साथ और बादशाह अपने लशकर के साथ होता है लिहाज़ा बन्दे पर लाज़िम है कि हर एक से उम्मीद मुनक़तअ कर ले, अल्लाह पर तब्वकुल और भरोसा कर के हर एक से बे नियाज़ हो जाए। अपने तमाम मामलात और तमाम हालात में सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ रुजू करे, हराम और हराम के शुबा से भी गुरेज़ करे, मखलूक का एहसान न ले, मुबाह और हलाल चीज़ों के इस्तेमाल में भी कमी कर दे, ख्वाहिशे नफ़्स और हिस् के साथ खाना न खाए और उस लकड़हारे की तरह कमाई न करे जो बग़ैर देखे भाले और तमीज़ के रात के अंधेरे में लकड़ियां जमा किया करता था (तर व खुशक का कुछ तमीज़ न था) जो शख्स इसकी परवाह नहीं करता कि उसका खाना कहां से आता है (हलाल जरिया से या हराम से) तो अल्लाह तआला भी परवा नहीं करता कि उसको दोज़ख के कौन से दरवाज़े से दाखिल करे, लिहाज़ा बन्दे को चाहिए कि इन तमाम बातों का ख्याल रखे और इस तरह कारबन्द हो कि शैतान उससे ना उम्मीद हो जाए और अल्लाह तआला की रहमत और करम से वह महफूज़ हो जाए। अगर बन्दे ने इन बातों पर अमल नहीं किया तो शैतान उसके दिल और सीने पर सवार होगा। अल्लाह तआला का इरशाद है।

जो शख्स रहमान के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाता है हम उस पर शैतान को मुसल्लत कर देते हैं पस शैतान उसका साथी बन जाता है, कभी नमाज़ में वसवसा डालता है कभी ऐसी बातिल नफ़्सानी ख्वाहिशों में मुब्तला कर देता है जो हराम या मुबाह होती हैं और कभी वह बन्दे को फराएज़ की बजा आवरी, नेक आमाल, सुनन व वाजिबात, इबादात और ताआत के बजा लाने में रखना डालता है जिस के नतीजे में बन्दे को दुनिया और आखिरत का ख़सारा उठाना पड़ता है और उसका हशर शैतान के साथ होता है, बसा औकात आखिर उम्र में उसका ईमान भी छीन लेता है जिस के बाइस वह क़यामत के दिन जहन्नम के अन्दर फिरऔन, हामान और कारून की मईयत में होगा। हम अल्लाह तआला से ईमान के छिन जाने से और ज़ाहिर व बातिल में शैतान



की पैरवी करने से पनाह मांगते हैं।

## शैतान के अहवाल

मकातिल ने बरिवायत जहरी बवासता उमर, हजरत आइशा से बयान किया कि उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम एक रात हुजूर की तलाश में आए, उन सहाबा में हजरत अबू बकर सिद्दीक, हजरत उमर फारुक, हजरत उस्मान, हजरत अली, हजरत सलमान और अम्मार बिन यासिर शामिल थे। उन असहाब के पहुंचने पर रसूलुल्लाह बाहर तशरीफ लाए और हालत यह थी कि बुखार की वजह से आप की मुबारक पेशानी पर पसीने के कतरात मोतियों की तरह चमक रहे थे फिर हुजूर ने अपनी मुबारक पेशानी पर हाथ फेर कर फरमाया: अल्लाह तआला मलऊन पर लानत करे आप ने तीन मरतबा फरमाया, इसके बाद सरे अक़दस झुका लिया, हजरत अली मुर्तजा ने अर्ज किया मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों, इस वक्त आप ने किस पर लानत फरमाई? हुजूर ने फरमाया खुदा के दुश्मन इब्नीस खबीस पर!! उसने अपनी दुम दुबुर में डाल कर सात अंडे निकाले और उनसे उसकी औलाद हुई फिर उनको बनी आदम के बहकाने पर उसने मामूर किया उन सात में से एक का नाम मदहश है जिस को उलमा (के वरगलाने) पर मुकर्रर किया गया चनान्चे वह उलमा को मुख्तलिफ ख्वाहिशात की तरफ ले जाता है, दूसरे का नाम हदबस है जो नमाज़ पर मुकर्रर है नमाज़ियों को ज़िक्रे इलाही से हटा कर इधर उधर लहव व लइब में लगा देता है और उनको जमाही और औंध में मुब्तला कर देता है। पस इस तरह नमाज़ियों में से कोई सो जाता है और जब कोई कहता है कि सो गए? तो वह कहता है नहीं मैं तो नहीं सोया! इस तरह वह नमाज़ में बगैर वजू के रह जाता है। कसम है उस जात की जिस के कब्जा में मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है कि उनमें से कोई नमाज़ी इस हाल में निकलता है कि उसको आधी नमाज़ क्या बल्कि चौथाई नमाज़ के दसवें हिस्से का भी सवाब नहीं मिलता बल्कि ऐसी नमाज़ का गुनाह सवाब से बढ़ जाता है।

शैतान की तीसरी औलाद का नाम ज़लबनून है। बाज़ारों में मुकर्रर है वह लोगों को कम तौलने और झूट बोलने पर उकसाता है, माल बेचते वक्त दुकानदारों को माल की झूटी तारीफ पर उभारता है ताकि अपना माल फरोख्त कर के रोज़ी कमाए। चौथे का नाम बतरर है वह लोगों को गिरेबान चाक करने, मुंह नोचने और मुसीबत के वक्त वावैला कराने पर मुकर्रर है (लोग मुसीबत पड़ने पर हाए वावैला करते हैं) ताकी मुसीबत के अज व सवाब को (फरयाद व फगां करा के) जाया करा दे। पांचवें का नाम मनशूत है, यह दरोगा गोई, चुगुल खोरी, तअन व तशनीअ करने पर मुकर्रर है। छटे का नाम वासिम है। यह शर्मगाहों पर मुकर्रर है। चुनान्चे यह मर्द और औरत की शर्मगाहों पर फूंक मारता है ताकि वह एक दूसरे के साथ ज़िना में मुब्तला हों, सातवें का नाम अऊर है, यह चोरी पर मामूर है यह चोर से कहता है कि (माल चोरी कर) कि चोरी तेरे फाका को दूर कर देगी, तेरा कर्ज अदा हो जाएगा और तेरे तन पोशी भी हो जाएगी बाद को तौबा कर लेना, लिहाज़ा हर मुसलमान का फर्ज है कि वह किसी हालत में भी शैतान से गाफिल न रहे और अपने कामों में उससे बे खौफ हो कर न बैठ जाए।

एक हदीस में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि वजू



पर एक शैतान मुकर्रर है जिस का नाम वलहान है तुम उससे अल्लाह की पनाह मांगो। नमाज की सफों में मिल कर खड़े होना की भी आप ने हिदायत फरमाई है ताकि शैतान बकरी के बच्चे की (हजफ) की तरह सफों में न घुस आए।

हजफ हिजाज की उन छोटी छोटी बकरियों को कहते हैं जिनके न दुम होती है और न कान, ऐसी बकरियां यमन के मकाम जर्श में पैदा होती हैं।

हजरत उसमान बिन आस ने फरमाया कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज किया मेरी नमाज और मेरी किरअत में शैतान खलल डालता है, हुजूर ने इरशाद फरमाया, उसका नाम खनजब है जब तुम को उसका एहसास हो तो अल्लाह की पनाह मांगो (अऊजोबिल्लाह पढ़ो) और बाई तरफ को तीन बार धुतकार दो। हजरत उसमान ने अर्ज किया कि मैंने ऐसा ही किया है और अल्लाह ने उसको मझ से दूर कर दिया है।

एक मशहूर हदीस में रसूलुल्लाह का इरशाद इस तरह आया है कि तुम से हर एक के लिए एक शैतान है सहाबा कराम ने अर्ज किया या रसूलल्लाह क्या हुजूर के लिए भी है? फरमाया मैं भी उसके बगैर नहीं मगर अल्लाह तआला ने उसके मुकाबला में मेरी मदद फरमाई है और मुझे उससे महफूज व मामून कर दिया है। एक दूसरी हदीस में है कि हुजूर ने फरमाया तुम में से हर एक पर उसका एक जिन्न साथी मुकर्रर है अर्ज किया गया कि क्या हुजूर भी उसके बगैर नहीं हैं? हुजूर ने इरशाद फरमाया हां मैं भी उसके बगैर नहीं मगर अल्लाह ने उसके मुकाबला में मेरी मदद फरमाई है और वह मेरा ताबेअ हो गया है अब मुझे वह नेकी के सिवा कुछ और मशवरा नहीं देता।

मन्कूल है कि जब अल्लाह तआला ने अपनी बारगाह से इब्लीस को निकाल दिया तो उसकी शैतान बीवी को उसी की बाई पसली से पैदा किया जिस तरह हव्वा को हजरत आदम से पैदा किया गया था। फिर उस औरत से शैतान ने जिमाअ किया वह हामला हो गई और उसने इकत्तीस अन्डे दिये उसकी सारी नस्ल की असल यही 31 अन्डे हैं फिर उस से शैतान की तमाम जुर्रियात फैली जिस से खुश्की और समन्द्र पट गए यहां तक कि हर अन्डे से दस हजार नर व मादा पैदा हुए जिन्होंने पहाड़ों पर, जजीरों, तीरानों, जंगलों, दरियाओं, रेगिस्तानों, बयाबानों, चश्मों, चौराहों, हम्मामों, पाखानों, फुरजों, जंग व जिदाल के मैदानों, करना फूंकने के मैदानों, कब्रस्तानों, घरों, काठियों, बहूओं के खेमों गरज कि जुमला जगहों को भर दिया, अल्लाह तआला फरमाता है!

तो क्या तुम शैतान और उसकी जुर्रियत को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो, हालांकि वह तुम सब का दुश्मन है और जालिमों के लिए कितना बड़ा बदला है।

हलाकत है उन लोगों के लिए जो शैतान और उसकी जुर्रियत की इताअत, अल्लाह की इबादत के बजाए इख्तियार करते हैं। बिला शुबहा उन्ही के साथ यह भी दोजख में रहेंगे बशर्ते कि उन्होंने तौबा न की, नसीहत को कबूल नहीं किया अपने नफ्स की रिहाई और खलासी की कोशिश न की। बुरे आमाल, बुरे रुफका और शैतानी लशकर को न छोड़ा पस लाजिम है कि अल्लाह की तरफ रुजूअ करे और इताअते इलाही की पाबान्दी करे, उन उलमा और अहले मारफत की सोहबत इख्तियार करे जो अल्लाह के हुक्म के मुवाफिक अमल करने वाले और अल्लाह की तरफ बुलाने वाले, उसकी रजा की तरफ रागिब करने वाले, उसके फजल के उम्मीदवार और उसके कहर से डरने वाले हैं आर जिन को अल्लाह की पकड़ का खौफ रहता है, दुनिया से रगबत नहीं रखते, आखरत



के तालिब रहते हैं। जो रातों को नमाजों में खड़े रहने वाले, दिन को रोजा रखने वाले और गुजस्ता बेकार जिन्दगी पर नौहा करने वाले, आइन्दा के लिए तौबतुन नसूह करने वाले, तमाम गुनाहों और खताओं से तौबा करने वाले, खालिके काइनात पर तवक्कुल करने वाले, शब व रोज के औकात में इबादत करने वाले हैं। यही वह लोग हैं जो तौक व सलासिले दुनियवी मसाइब और जहन्नम की आग की खौफ से महफूज व मामून हैं इस लिए कि उन्होंने शैतान की पैरवी से मुंह मोड़ा और जाहिर व बातिन में अल्लाह के अहकाम की पैरवी की। पस जजा देने वाला उनके आमाल के मुताबिक उनको जजा और एहसान फरमाने वाला अल्लाह उनको सवाब अता फरमाएगा वैसा ही सवाब जैसा कि उसने खुद इरशाद फरमाया है।

पस अल्लाह तआला ने उन लोगों को उस दिन के शर से बचा लिया, खुशहाल ताजगी और सुरूर उनके सामने लाया और सब्र रखने के एवज उनको जन्नत और हरीर का लिबास अता फरमाया।

बिला शुबहा परहेजगार लोग जन्नत में अपने कुदरत वाले बादशाह के पास सिद्क के मुकाम में होंगे और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता है खुसूसियत के साथ उसको दो जन्नतें मिलेंगी।

अल्लाह के जो बन्दे मुत्तकी होने के बाद आजमाईश में मुब्तला हो जाते हैं, उनका जिक्र अल्लाह तआला इस तरह फरमाता है:

जब कभी शैतान परहेजगारों के दिलों में वसवसे डालता हो तो उस वक्त वह खुदा को याद करते हैं और उनको हक व बातिल का फर्क मालूम हो जाता है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने बताया है कि अल्लाह की याद से दिलों को जिला हासिल हाती है और दिल से परदे गफलत दूर हो जाता है और बेचैनियों का तदारुक हो जाता है खुदावन्द तआल की याद परहेजगारी की कुंजी है और तकवा आखरत का दरवाज़ा है उसी तरह जैसे कि ख्वाहिशाते दुनिया का दरवाज़ा है। अल्लाह तआला का इरशाद है:

और जो कुछ कुरआन में है उसे याद करो ताकि तुम मत्तकी बन जाओ।

इस आयत में बताया गया है कि यादे इलाही से इन्सान मुत्तकी बन जाता है।

## इन्सान के मुवक्किल

### इन्सान के मोवक्कलीन

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मरवी है कि इन्सान के दिल में हर वक्त दो मशवरा देने वाले मौजूद रहते हैं एक वह फरिश्ता है जो नेकी और हक पर उभारता है दूसरा दुश्मने शैतान है जो बुरे कामों पर उभरता है और हक की तकज़ीब करता है और नेकी से बाज़ रखता है। हसन बसरी फरमाते हैं हकीकत में यह दो तरह के ख्यालात होते हैं एक अल्लाह की तरफ से (इरादए खैर) और दूसरा शैतान की तरफ से तकज़ीबे हक। अल्लाह अपने उस बन्दे पर रहम फरमाए जो इरादे के वक्त तवक्कुफ करे अगर वह अल्लाह की तरफ से हो तो उसको अमल में लाए और शैतान की तरफ से हो तो उससे जिहाद करे, आयत मिन शरिल वसवासिल खन्नास की तशरीह



करते हुए मक़ातिल ने बयान किया है कि वसवसा आदमी के दिल पर फैलता है अगर इन्सान अल्लाह को याद करता है तो यह वसवसा डालने वाला खन्नास पीछे हट जाता है और अगर इन्सान ग़फ़लत बरतता है तो यह दिल पर छा जाता है यहां तक की आदमी के दिल को हर तरफ से घेर लेता है और जब इन्सान ज़िक्रे इलाही करता है तो वह उसके दिल से जुदा हो कर उससे दूर हो जाता है बल्कि उसके दिल से निकल जाता है। हज़रत इकरमा का इरशाद है कि वसवसों के मक़ाम मर्द का दिल और आंखें हैं और औरत की सिर्फ आंखें हैं जब वह सामने हो और अगर औरत पुश्त फेर कर जाए तो उसके सुरीनों में उसका मक़ाम है।

## इलकाहाए कल्ब

दिल में छः तरह के इलका होता हैं अक्ल इलकाए नफ़स, दोम इलकाए शैतान, सोम इलकाए रूह, चहारूम इलकाए मलक, पन्जुम इलकाए अक्ल, शशुम इलकाए यकीन। इलकाए नफ़स, ख्वाहिशात की तहसील, जाइज़ व नाजाइज़ रूजहानात व मैलानात के दर पै हो जाने का हुक्म देता है इलकाए शैतान, अकीदा के एतबार से क़ुफ़र व शिर्क का हुक्म देता है, नीज़ वादए खुदावन्दी पर झूटे होने का बोहतान और उसके पूरा न होने की शिकायत पर उभारता है, आमाल में गुनाह करने, तौबा में ताखीर और दुनिया व आखिरत को तबाह करने वाले उमूर को इख्तियार करने का मशवरा देता है। यह दोनों इलका, इलकाए बद हैं उनके बुरा होने का हुक्म दिया गया है और यह दोनों ख़तरे या इलकाए आम मुसलमानों को लाहक होते हैं।

इलकाए रूह और इलकाए मलक दोनों हक़ तआला की इताअत और उसका हर हुक्म बजा लाने का जिस का नतीजा दुनिया व आखिरत में सलामती की सूरत में होता है, हुक्म देते हैं और यह हर उस चीज़ को लाते हैं जो शरीअत के मुताबिक होती है यह दोनों इलका मामूर और काबिले सताईश हैं और यह ख्वासुल मुसलेमीन में पाए जाते हैं (आम नहीं) इलकाए अक्ल कभी इस बात का हुक्म देता है जो नस और शैतान के मवाफ़िक़ होती है और कभी ऐसी बात का हुक्म देता है जो इलकाए रूह व मलक के मवाफ़िक़ होती है यह इलका अल्लाह तआला की हिकमत है और इससे तख़लीक़े काइनात का इस्तेहक़ाम वाबस्त है ताकि अक्ल सेहत मुशाहिदा और नेक व बद की तमीज़ के साथ ख़ैर या शर का इख्तियार करे और नतीजा में अज़ाब या सवाब उस के लिए मोज़िबे ज़ियां या बाइस सूदमन्दी हों।

चूंकि जिस तरह अल्लाह तआला ने इन्सान के जिस्म को अपने अहक़ाम के नुज़ूल का महल और ला मुतनाही वारदातों का मरकज़ बनाया उसी तरह अक्ल को नेक व बद की कसौटी (मेआर) बनाया है। अक्ल भलाई बुराई को लेकर जिस्म के अन्दर दाख़िल होती है, अक्ल और जिस्म दोनों मुक़ल्लफ़ होने के महल हैं, अहवाल की तबदीली का मक़ाम है और राहत की लज़्ज़त या अज़ाब अलीम की करबुत की तअय्युन के ज़राये हैं (अज़ाब की तकलीफ़ और सवाब की लज़्ज़त उसके ज़रिये से पहचानी जाती है।)

इलकाए यकीन रूहे ईमान है, मन्ज़िल इल्म है अल्लाह तआला की तरफ़ से उसका नुज़ूल और सुदूर होता है, यह इलका सिर्फ़ उन सीनों में पैदा होता है जो मर्तबाए ईकान पर पहुंच जाते हैं। जैसे सिद्दीकीन, शुहदा, अबदाल और मख़सूस औलियाए कराम। यह इलका मख़फी तौर पर नाज़िल होता है और उसकी आमद बहुत अदक़ होती है मगर बरहक़ ज़रूर होती है। उसका



सुदूर इल्मे लदुन्नी, अखबार बिलगैब और असरारिल उमूर के साथ होता है, यह मकाम उन बन्दों को मिलता है जो अल्लाह को महबूब व मरगूब हों, उसके मुनतखब हों, फना फिल्लाह हों और अपने जवाहिर से भी गाफिल हो गए हों, फर्ज और सुन्नतहाए मुअक्किदा की अदाएगी के अलावा उन की जाहिरी इबादात का रुख बातिन की तरफ हो गया हो (हर वक्त बातिनी इबादात में गूँठे हों सिवाए फर्जों और मुअक्किदा सुन्नतों की अदाएगी के) यह लोग हर वक्त बातिनी कैफियात की निगहदाश्त करते हैं और अल्लाह तआला उनकी जाहिरी तरबीयत का खुद ही कफील होता है जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है (कि वह इस तरह कहते हैं)

मेरा कारसाज तो अल्लाह है जिस ने किताब नाजिल फरमाई वही नेकों का कारसाज है।

पस अल्लाह तआला उनका जिम्मदार होता है, वही उनके काम पूरे करता है वही असरारे गैब के मुताले में उनके कुलूब को मशगूल रखता है वही अपने कुर्ब के जलवों से उनके दिलों को रौशन रखता है। उसने उन हजरात को अपने साथ मुकालमे के लिए इन्तखाब कर लिया है अपनी जाते पाक खास तौर से उनके सुकून व तमानियत का मरजअ बना दिया है पस हर रोज उनके इल्म में अफजूनी, मारफत में ज़्यादती, नूरानियत में कसरत और कुर्ब इलाही में इज़ाफा होता है यह हजरात हमेशा बाकी रहने वाली और कभी खत्म न होने वाली राहत गैर मुनक़तअ नेमत और ना मुतनाही मुसररत में गरीक रहते हैं फिर जब अरबी अजली तहरीर (मद) अपनी आखिरी मुदत पर पहुंच जाती है और इस दारे फना में उनके कयाम की मुदत इख़्तेताम का जाती पहुंचती है तो उनका इंतकाल बड़ा पुर शिकोह होता है जैसे एक दुलहन हुजलए उरुसी से निकल कर सेहन में आ जाए ओर एक अदना हालत से आला में पहुंच जाए। दुनिया उनके लिए जन्नत होती है और आखिरत में उनको आंखों की ठंडक का कैफ मयस्सर होगा यानी उनको अल्लाह तआला की तरफ देखना मयस्सर आएगा। न दरबान होगा, न डर, न हाजिब होगा, न दरबान, न कोई रोकने वाला होगा, न टोकने वाला, न कोई एहसान रखने वाला होगा, न एहसान उठाया जाएगा, न दुख होगा, न तकलीफ और न उस लज़्ज़त का इख़्तेताम होगा और न इनक़ेतअ। अल्लाह तआला का इरशाद है:

बेशक परहेज़गार बागों और नहरों में सिद्क के मकाम में कुदरत रखने वाला बादशाह के पास होंगे।

जिन लोगों ने दुनिया में नेक काम किए अल्लाह तआला की ताअत व बन्दगी की तो आखिरत में उसके एवज़ वह उनको जन्नत, इज़्ज़त की नेमत और सलामती अता फरमाई गई और चूंकि दुनिया में उन्होंने ने अल्लाह तआला के लिए पाकी व सफाई में ज़्यादती की और उसके बर खिलाफ अमल से इजतेनाब किया तो अल्लाह तआला ने उनको बका व अता के घर में ज़्यादा अता फरमाया और वह हमेशा हमेशा रब्बे करीम की तरफ नज़र करता है जैसा कि अल्लाह तआला ने अरबाबे बसीरत और अहले दानिश को इसकी खबर दी है।

## नफ़्स और रूह

नफ़्स और रूह इल्काए शैतान व मलक के दो मकामात हैं, मलक दिल में तक्वा का इल्का करता है और शैतान नफ़्स में बदकारी की तहरीक करता है, नफ़्स बदकारी में आज्ञा को इस्तेमाल करने की दिल से ख्वास्तगारी करता है अक्ल और ख्वाहिश जिस्म के अंदर नफ़्स के लिए मकाम



हैं और दोनों अपने हाकिम की रजा के मुताबिक जिस्म में अपना अमल करते हैं तौफीके खैर या तौफीके शर। दिल में दो रौशने नूर हैं इल्म और ईमान यह सब दिल के कारिन्दे, उसके आलात हैं, इन आलात व असबाब के दर्मियान दिल बादशाह की तरह है यह सब उसके लश्करी हैं जो उसके पास आकर उतरते हैं। दिल एक रौशन आईना की मानिन्द है और यह आलात उस आईना के गिर्दा गिर्द हैं जब दिल उनकी तरफ देखता है यह सब उसमें जलवा फगन होते हैं यानी आईनाए कल्ब उन सबका इदराक कर लेता है।

## खुदा की पनाह मांगना

मैं कज रौ शैतान से, बुरे ख्यालात से, नफ्स के खतरात से, हर जिन व इन्स के फितना से, रिया और निफाक से, खुद पसंदी और तकब्बुर से, शिर्क से, दिल में पैदा होने वाली बुरी खरस्लतों से, हलाकत की मंजिल तक पहुंचाने वाली नफ्स की शहवत व हर लज्जत से, बिदअत व गुमराही से, उन ख्वाहिशों से जो आतिशे दोजख को जिस्म पर मुसल्लत कर देने वाली हैं और उस कौल व फेअल और फिक्र से जो अर्श से नाजिल होने वाले गैबी उलूम के लिए दिल की रुकावट बन जाएं, गुमराह की रगबतों के इत्तिबा से, नफ्सानी जज्बात और खराब अखलाक से, अर्श व कुर्सी के मालिक की पनाह मांगता हूं अगर मैं ताअत व बन्दगी गाफिल हो जाऊं तो रब्बे वदूद की पनाह मांगता हूं और उसके अजाब से जो मेरी रग व जान से भी ज्यादा मुझसे करीब है।

मैं अल्लाह की पनाह तलब करता हूं उसके उस वक्त के कहर से जब वह गुनाहगारों पर गजबनाक होता है मैं उसकी पनाह मांगता हूं अपने गुनाहों की परदा दरी से और खुशकी व तरी में उसकी मासीयत करने से, कज रवी और हिमाकत से, शेखी और तकब्बुर से, इताअत व इबादत न करने से और इसके न करने पर कसम खाने से, झूठी कसम के खाने और कसमों के तोड़ने के गुनाह से, नीज बुरे खातमा से, हर नेकी की दौलत से तही दामां होने से, मरते वक्त बुरी मौत से।

## शैतान से जिहाद करना

शैतान से जिहादे बातिनी होता है जो दिल और ईमान की ताकत से किया जा सकता है पस तुम शैतान से जिहाद करोगे तो हक तआला की मदद तुम्हारे शामिले हाल होगी और अल्लाह तआला तुम्हारा मददगार होगा। काफिरों से जिहाद जाहिरी तौर पर नेजे और तलवार से होता है और बादशाहे दो जहां उस जिहाद में तुम्हारा मददगार होता है और उस जिहाद में तुम्हारा मरकजे उम्मीद हुसूले जन्नत है। अगर काफिरों से जिहादा के दौरान तुम शहीद हो गए तो तुम्हारी जजा दारुल बका है (बहिश्ते जाविदां है) अगर तुम शैतान से जिहाद करते हुए फना हो गए और तुम्हारी तमाम उमर उसकी मुखालिफत में सर्फ हो जाए तो तुम्हारी जजा यह होगी कि तुम रब्बुल आलिमीन के दीदार से सरफराज हो गए। अगर काफिर तुम को मार डाले तो तुम शहीद होगे और अगर शैतान की पैरवी व इताअत की हालत में शैतान ने तुम को रान्दए दरगाहे हक हो जाओगे। काफिरों से जिहाद की तो एक हद व निहायत है लेकिन शैतान और नफ्स से जिहाद की कोई हद व गायत नहीं। अल्लाह तआला फरमाता है: अपने रब की इबादत यकीन यानी मौत आने तक करो। शैतान और ख्वाहिशे नफ्स की मुखालफत का नाम इबादत है अल्लाह तआला फरमाता है : वह और सब गुमराह और शैतान का लश्कार सब के सब उस जहन्नम में



सर के बल उल्ले जाएंगे।

ग़ज़वए तबूक से वापसी में हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था: हम जिहाद असगर से जिहाद अकबर की तरफ वापस हुए। यहां जिहादे अकबर से हुजुरे वाला की मुराद शैतान और नफ़्स से जिहाद करना था क्योंकि यह जिहाद दवामी है और इसकी मुदत तबील है, पुर खतर है और इसमें नतीजा की खराबी का खतरा रहता है कि कामयाबी हो या न हो।

## दूसरी मजलिस

अल्लाह तआला के इस इरशाद की तशरीह में

इन्नुह मिन सुलैमाना व इन्नुह बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(बेशक यह सुलैमान की जानिब से है और मेहरबान और रहम करने वाले अल्लाह के नाम से शुरू है)

यह सूरह नमल की एक आयत है सूरह नमल मक्की है इसकी आयात की तादाद 93 है, इस सूरत के अल्फ़ाज़ 1149 है और इसके हुरुफ़ की तादाद 4799 है (इस आयत में जिस वाक़ेअ की तरफ इशारा है वह इस तरह है कि) हज़रत सुलैमान बिन दाऊद उन पर और हमारे नबी रसूलुल्लाह और तमाम अंबिया मोमिनीन, अल्लाह के नेक बन्दों और मुक़र्रबीने मलाएका पर अल्लाह की रहमत हो। बैतुल मुक़द़स से यमन जाते हुए वादीए गुल (चियूटी की वादी) से गुज़रे लोगों को प्यास महसूस हुई, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने हुद हुद को तलब फ़रमाया, उस उस वक़्त आपके साथ सिर्फ़ एक ही हुद हुद था, कलिंग को बुलवा कर आपने उससे हुद हुद के बारे में दरयाफ़्त किया कलिंग तमाम परिन्दों का सरदार था उसने अपनी ला इल्मी का इजहार किया और कहा कि मैंने तो उस को कोई हुक्म नहीं दिया (किसी काम पर मामूर नहीं किया है) हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को हुद हुद की तलाश इस लिए थी कि वह अपनी मनकार ज़मीन पर लगाकर (ज़मीन खोद कर) यह बता दे कि पानी ज़मीन के अन्दर कितनी दूर है और कितने फ़ासले पर है, हुदहुद उसी काम के लिए मख़सूस था। जब उसको पानी की तलाश का हुक्म दिया जाता है तो अब्बल वह हवा में उड़ता फिर कुछ देख कर उसी ख़ित्तए ज़मीन पर टूट कर गिर जाता जहां पानी मौजूद होता और फिर वह अपनी मनकार पानी के मक़ाम पर रख देता (इस तरह वह पानी के मक़ाम की निशानदेही किया करता था) जिन्नात जल्दी जल्दी उस जगह को खोदते और पानी निकल आता। जिन्नात हौज़, तालाब और बाउलियां तैयार कर देते यह सब भर लिये जाते अलावा अज़ी पख़ालें, मशकीजे और पानी के तमाम बरतन भर लिए जाते। इस तरह तमाम जानवर जिन्नात और इंसान पानी से ख़ूब सैराब होते और फिर कूच हो जाता, मंज़िल की तरफ़ रवाना हो जाते। गरज़ हुद हुद का उस वक़्त कुछ पता न चला, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को बहुत गुस्सा आया और कहा कि मैं उसको इस नाफ़रमानी की सज़ा सज़ा दूंगा उसके पर नोच डालूंगा ताकि साल भर तक परिन्दों के साथ न उड़ सके या उसको ज़िबह कर डालूंगा या वह मेरे सामने अपनी ग़ैर हाज़िरी की कोई वाज़ेह दलील (माकूल वजह) पेश करे। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का दस्तूर था कि जब किसी परिन्दे को सज़ा सज़ा दी जाती तो



उसके पर उखाड़ दिया जाते थे और उसको लुण्डवरा करके छोड़ देते थे।

अभी आप वादीए नमल में ठहरे हुए कुछ ज्यादा देर नहीं गुजरी थी कि सामने से हुदहुद आ गया (हुदहुद ज्यादा देर गैर हाजिर नहीं रहा) किसी ने उसको बताया कि हजरत सुलैमान ने तेरे लिए सज़ा का हुक्म सुनाया है कहने लगा कि कोई इस्तिस्ना भी इस सज़ा में किया है कहने वाले ने कहा हां।

हुदहुद हजरत हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम के सामने जाकर खड़ा हो गया और ताजीमन सजदा किया और बोला कि आप की सलतनत दाएम् व काएम् रहे और अल्लाह आपको उमर अबदी अता फरमाए उसके बाद चौंच से जमीन कुरेदने लगा और हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम को तरफ इशारा करके कहा कि मैं ऐसी चीज़ मालूम करके आया हूँ जिसकी आप को खबर नहीं है (वह आप के इहातए इल्म से बाहर है) और वह यह कि सरजमीने सबा से मैं एक यकीनी खबर लाया हूँ। हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने दरयाफ्त किया वह क्या खबर है? हुद हुद ने अर्ज किया मैंने वहाँ एक औरत को हुकमरान पाया जिसका नाम बिलकीस बिनते अबी सरह हुमैरी है उसको कुदरत ने हर चीज़ अता की है उसके पास इल्म है, माल है, लश्कर है और किस्म किस्म के घोड़े हैं, उसके पास एक बहुत बड़ा तख़्त है वह तख़्त बहुत ही खूबसूरत है उसकी बलन्दी तीस गज़ (एक रिवायत में अस्सी गज़ भी आया है) और चौड़ाई अस्सी गज़ है तरह तरह के जवाहिर और मोती उस तख़्त में जड़े हैं लेकिन बिलकीस और उसकी कौम को अल्लाह के सिवा सूरज को सजदा करते हुए मैंने देखा है यह दीन मजूसियों और आतिश परस्तों का है, शैतान ने उनको धोके में डाल रखा है और राहे रास्त से उनको हटा दिया है वह इस्लाम से ना आशना है।

क्या वजह है कि वह अल्लाह की इबादत नहीं करते जो आसमान व जमीन की पोशीदा चीज़ों को जाहिर करता है और लोग जिस चीज़ को छुपाते हैं वह सब से वाकिफ़ है उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह अर्श का मालिक है।

यह हाल सुनकर हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने हुद हुद से फरमाया कि पहले तुम पानी तलाश करो उसके बाद हम तुम्हारी बात पर गौर करेंगे (कि तुम सच कहते हो या ग़लत) यह हुक्म मिलते ही हुद हुद ने पानी तलाश करके जगह बता दी सारे लश्कर ने सैराब होकर पानी पिया और सबकी ज़रूरत पूरी हो गई तब हजरत सुलैमान ने हुद हुद को तलब किया और खत लिख कर उसे सर ब मोहर किया और हुद हुद को दे कर फरमाया इस खत को ले जा और अहले सबा (मलका से मुराद हैं) के पास पहुंचा दे। और उनके जवाब का इंतज़ार करना।

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने खत में लिखा था बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम यह खत सुलैमान इब्ने दाऊद की जानिब से है। मैं तुम को जता देना चाहता हूँ कि तुम मुझ पर बरतरी और बड़ाई के ख्वास्तगार न बनो (मेरी इताअत करने में अपनी बड़ाई को रुकावट न बनाओ) और तुम सब फरमां बरदार बन कर यानी मसालेहत के रंग में मेरे पास आओ अगर तुम जिन्नात से हो तो तुम मेरे खिदमतगार हो (कि कौमे जिन्नात मेरी ताबेअ हैं) और अगर तुम इंसानों से हो तो तुम पर मेरे हुक्म का सुनना और उसे मानना लाज़िम है।

यह नामा सुलैमान की तरफ़ से है और बेशक उस अल्लाह के नाम से शुरू है जो मेहरबान और रहीम है कि तुम मुझ से सरकशी न करो और मुतीअ होकर (मुसलमान होकर) मेरे पास चली आओ। हुद हुद यह खत लेकर दोपहर को बिलकीस के महल में पहुंचा बिलकीस अपने महल में सो



रही थी महल के तमाम दरवाजे बंद हो चुके थे कोई उसके पास नहीं पहुंच सकता था पहरा वाले महल के गिर्द पहरा दे रहे थे और उसकी कौम के बारह हजार जंगजू सवार निगरानी के लिए उसकी फौज में मौजूद थे उन बारह हजार जंगजू सवारों में से हर एक सवार (जवान) एक लाख जवानों पर हाकिम था (औरतों और बच्चों का उनमें शुमार नहीं था) हफ्ता में एक दिन कौम के मामलात और मुल्की मुहिम्मात का फैसला करने के लिए बिलकीस बाहर निकलती थी उसका तख्त सोने के चार पायों पर कायम था वह उस तख्त पर इस तरह आकर बैठती थी कि खुद तो लोगों को देखती थी लेकिन उसको कोई नहीं देख सकता था। जब कोई शख्स अर्ज मतलब के लिए उसके हुजूर में पहुंचता तो सामने पहुंच कर कुछ देर सर झुकाए खड़ा रहता और फिर सजदा करता वह सजदे से उस वक्त तक सर नहीं उठा सकता था जब तक मलका बिलकीस उसको सर उठाने की इजाजत नहीं दे देती थी। जब तमाम मामलात और मुहिम्मात का फैसला हो जाता तो वह फिर अपने महल में वापस चली जाती और फिर हफ्ता भर तक उसे कोई नहीं देख सकता था फिर दूसरे हफ्ता को उसी सूरत में देख सकता था, बिलकीस का मुल्क (यमन) बहुत ही बड़ा मुल्क था।

हुद हुद जब खत लेकर पहुंचा तो उसने महल के दरवाजे बंद पाए और चारों तरफ पहरा वाले पहरा पर मौजूद थे हुद हुद ने बिलकीस के पास पहुंचने के लिए महल के गिर्द चक्कर लगाए आखिरकार वह एक कमरे से दूसरे और से तीसरे कमरे में होता हुआ एक रौशनदान के जरिये बिलकीस के कमरे में पहुंच गया बिलकीस तीस गज ऊंचे तख्त पर चित लेटी सो रही थी और उसके जिस्म पर एक चादर के सिवा कोई और लिबास नहीं था और वह भी उसके जेरे नाफ पड़ी थी ऊपर का जिस्म बिल्कुल बरहना था चादर सिर्फ सतरे औरत के लिए थी और बिलकीस हमेशा इसी ढंग से सोती थी, हुद हुद ने वह खत उस के पहलू में रख दिया खुद उड़ कर रौशनदान में जा बैठा और बिलकीस की बेदार होने का इंतजार करने लगा कि जब वह बेदार हो तो खत पढ़ ले लेकिन बिलकीस देर तक सोती रही जब उसको सोते हुए बहुत देर हो गई तो हुद हुद रौशनदान से उतर कर अपन चोंच से बिलकीस को ठोंग मारी बिलकीस की आंख खुल गई और उसने अपने पहलू में खत पाया, उसने खत को उठाया और आंखें मलकर (अच्छी तरह बेदार होकर) उस खत को देखा और सोचने लगी कि महल के तमाम दरवाजे बन्द थे यह खत यहां कैसे आ गया, कमरे से निकल कर महल के पहरा वालों से दरयाफ्त किया क्या तुम ने किसी को मेरे कमरे में दाखिल होते हुए देखा है चौकीदारों ने कहा कि दरवाजे उसी तरह बन्द हैं जैसे बन्द किये गये थे और हम महल के इर्द गिर्द पहरा दे रहे हैं (किसी के अन्दर दाखिल होने का इमकान ही नहीं) मलका सबा पढ़ी लिखी औरत थी उसने खत खोल कर पढ़ा उसमें सबसे पहले बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तहरीर था खत पढ़ कर उसने (अमाएदीन) कौम को तलब किया जब वह सब जमा हो गए तो उसने कहा एक इज्जत वाला खत मुझे पहुंचाया गया है (यानी एक शाही मकतूब सर ब मोहर) मुझे मिला है। इस खत में तहरीर है:

यह खत सुलैमान की तरफ से है और उस अल्लाह के नाम से शुरू है जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है कि तुम मुझ से ऊंचे न बनो और मेरे पास फरमांबरदार बनकर आओ मलका ने खत का मजमून सुनाकर सरदारों से कहा ऐ सरदारों मुझे मेरे इस मामले में मशवरा दो। पस उसने कहा कि ऐ सरदारों मुझे मेरे मामला में मशवरा दो कि मैं क्या करूं।



मेरा तो यह हमेशा से मामूल रहा कि जब तक तुम मौजूद न हो और मशवरा में हाज़िर न हो तो मैं किसी बात का फैसला नहीं किया करती हूँ। सरदारों ने जवाब दिया कि हम बड़े ताकतवर, जंगजू और बहादुर हैं। जंग, कुव्वत और कसरते अफ़राद में कोई हम पर ग़ालिब नहीं हमने किसे से शिकस्त नहीं खाई है ऐ बिलकीस तू हम सब सरदारों की सरदार है तू अपने मामला को ख़ूब समझती है सरदारों को नसीहत नहीं की जाती बल्कि हुक्म किया जाता है तू हम को हुक्म दे, हम तेरे हुक्म पर चलेंगे, मलका ने सरदारों का यह जवाब सुन कर कहा कि दरस्तूरे आम यह है कि बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं उसे बरबाद कर देते हैं और मुअज़्जेज़ीन को रुसवा करते हैं, लोगों का माल छीन लेते हैं और क़त्ल व ग़ारतगरी करते हैं, कैदी बनाते हैं गरज़ कि हर तरह बरबाद करके छोड़ते हैं उसके बाद मलका सब ने कहा कि मैं सुलैमान की जनाब में एक हदिया भेजती हूँ और आजमाती हूँ कि कासिद मेरे पास क्या जवाब लाते हैं और वहां के क्या हालात सुनाते हैं उसके बाद बिलकीस ने बारह ऐसे गुलाम इन्तखाब किए जिनमें ज़नाना पन नुमायां थे उनके हाथों पर मेहंदी लगवाई और बालों में कंधी कराई गई बनाव सिंगार किया गया और लड़कियों का लिबास पहना दिया गया मलिका ने उनको नसीहत कर दी कि जब उनसे कुछ पूछा जाए और सुलैमान उनसे कुछ गुफ़्तगू करें तो वह इस तरह जवाब दें जिस तरह औरतें जवाब देती हैं फिर मलका ने ऐसी बारह लड़कियां मुनतख़ब कीं जिनमें मरदाना अलामतें नुमायां थीं मर्दों की तरह उनके आज़ा सख़्त थे उनके सरों के बाल मर्दों की तरह बनवा कर उनको मर्दाना कपड़े पहना दिये गए और जूतियां भी पहना दीं उनको अच्छी तरह समझा दिया गया कि तुम से जब गुफ़्तगू हो तो मर्दों के लहजा में बे हिजाबाना जवाब देना। उन बान्दियों और गुलामों के साथ यलनजूज की लकड़ी, मुश्क, अंबर और रेशम यह तमाम चीज़ें तब्बाकों में सजा दी गई बहुत ज़्यादा दूध वाली अरबी नस्ल की ऊंटनियां, दो ख़र मोहरे (बड़ी कौड़ियां) जिनमें एक बलदार सूराख़ वाला था और दूसरा बग़ैर सूराख़ के। एक ख़ाली प्याला इन तमाम तोहफ़ा व हदाया के साथ एक औरत को भी हज़रत सुलैमान की ख़िदमत में भेजा और उसको ताकीद कर दी कि हज़रत सुलैमान जो बात कहें उसे याद रखें और जो वाक़ेआत वहां गुज़रें उनको लफ़ज़ ब लफ़ज़ यहां आकर बयान करे, साथ ही साथ यह भी हिदायत की कि दरबार में सब खड़े रहें जब तक बैठने की इजाज़त न मिले न बैठें अगर वह जब्बार बादशाह होंगे तो तुम को बैठने का हुक्म नहीं देंगे और फिर मैं उनको माल दे कर राज़ी कर लूंगी ताकि वह हमारी तरफ़ से ख़ामोश हो जायें (हमला न करें) और अगर बुर्दबार, साहिबे इल्म और फ़हीम होंगे तो वह तुम को बैठने का हुक्म देंगे।

मलका सब ने उस औरत को ताकीद की कि वह हज़रत सुलैमान से कहे कि सूराख़ वाले ख़र मोहरा (बड़ी कौड़ी) में किसी जिन्न या इंसान की मदद के बग़ैर धागा पिरो दें और बग़ैर सूराख़ के ख़र मोहरे में लोहे और जिन्न व इन्स की मदद के बग़ैर सूराख़ कर दें दूसरे यह कि गुलाम और बान्दियों को अलग अलग कर दें (औरतों को अलग और मर्दों को अलग कर दें) प्याला को ऐसे पानी से भर दें जो झाग वाला मीठा हो और वह पानी न ज़मीन का हो न आसमान का, इस के साथ ही और हज़ारों इल्मी सवालात पर मुश्तमिल ख़त लिख दिया अलगरज़ यह सब लोग तोहफ़े और हदिये लेकर रवाना हुए जब यह सब लोग हज़रत सुलैमान के दरबार में पहुंचे और बिलकीस के इरसाल करदा तमाम तहाएफ़ पेश किए, हज़रत सुलैमान ने जब उन हदाया



को देखा तो न उनकी तरफ कदम बढ़ाया और न उनको लेने के लिए हाथ बढ़ाया न उनको हकीर व कमतर बताया यानी न किसी खुशी का इज़हार किया और न नागवारी का। कासिदों ने आप की तरफ से किसी ऐसी बात का मुशाहिदा नहीं किया जिससे उनको तोहफों की कबूलीयत या अदमे कबूल का अंदाज़ा होता अलबत्ता आप ने अपना सर आसमान की तरफ उठाया और कासिदों की तरफ देख कर फरमाया: ज़मीन भी अल्लाह की है और आसमान भी, उसने आसमान को बलंद किया और ज़मीन को बिछाया लिहाज़ा जो चाहे खड़ा रहे और जो चाहे बैठ जाए और सबके बैठने की इजाज़त दे दी।

मलका बिलकीस की नुमाइंदा और मीरे कारवां खातून ने दोनों खर मोहरे हज़रत सुलैमान के हुज़ूर में पेश कर के कहा कि मलका बिलकीस ने इस्तेदा की है जिन्न व इन्स की तदबीर के बग़ैर सूराख वाले खर मोहरे में धागा आर पार पारो दें और दूसरे खर मोहरे में लोहे और जिन्न व इन्स की मदद के बग़ैर आर पार सूराख कर दें। उसके बाद उसने प्याला पेश किया और कहा के मलका ने दरख्वास्त की है कि इसको ऐसे झाग वाले मीठे पानी से भर दें जो न ज़मीन का हो न आसमान का। इसके बाद गुलामों और बांदियों को पेश कर के दरख्वास्त की कि औरतों को अलग और मर्दों को उनमें से अलग अलग फरमा दें।

हज़रत सुलैमान ने आयाने मम्लिकत और उमराए सलतनत को जमा किया और दोनों खर मोहरों में से सूराख वाला खर मोहरा लेकर फरमाया कि इस खर मोहरे में कौन इस पार से धागा डाल कर उधर निकाल सकता है (लेकिन जिन्न व इन्स में से कोई इसको मस न करे। यह हुक्म सुन कर खजूर में रहने वाले सुर्ख रंग के एक कीड़े ने अर्ज़ किया के ऐ सुलतान! मैं आप की यह खिदमत बजा लाता हूँ बशर्ते कि आप मेरी रोजी रूतब (छुहारा, खजूर) से मुक़र्रर फरमा दें आप ने उसकी अर्ज़दाश्त मंज़ूर कर ली। रावी का बयान है कि कीड़े ने सरसे धागा लपेट लिया और खर मोहरे में दाखिल हो गया और दूसरी जानिब धागा लेकर निकल गया चुनांचे इस खिदमत के एवज़ आपने उस की रोजी रूतब से मुक़र्रर फरमा दी फिर आप ने दूसरा खर मोहरा लिया और फरमाया के कौन है जो इस में सूराख कर दे लेकिन लोहे की मदद के बग़ैर यह सुन कर लकड़ी के कीड़े ने आगे बढ़ कर कहा कि मैं यह खिदमत बजा लाऊंगा मगर इस शर्त के साथ के मेरी रोजी लकड़ी में मुक़र्रर कर दी जाए उसकी भी दरख्वास्त मंज़ूर हुई। बस लकड़ी के कीड़े ने खर मोहरे में सूराख करना शुरू किया और उसमें आर पार सूराख कर दिया और इस खिदमत के एवज़ उसकी रोजी लकड़ी में मुक़र्रर कर दी गई। इसके बाद प्याला आप के सामने रखा गया (ताकि मीठे और झाग वाले पानी से जो न ज़मीन का हो न आसमान का उसको पुर कर दिया जाए। आपने अपने अरबी घोड़ों को तलब किया और उनको दौड़ा दिया जब दौड़ते दौड़ते उनके पसीने बहने लगे उस वक़्त उनके पसीने उस प्याले को भर लिया गया यही वह झाग वाला मीठा पानी था जो न ज़मीन का था और न आसमान का। उसके बाद आप ने पानी मंगवाया तो उन खिदमतगारों को जिसमें औरतें और मर्द शामिल थे वजू करने का हुक्म दिया गया ताकि लड़कों और लड़कियों में इमतियाज़ हो जाए अब्बल लड़कियों ने जो लड़कों की शकल में थीं हाथों पर पानी इस तरह बहाना शुरू किया एक लड़की ने बायें हाथ में पानी लेकर दायें हाथ की हथेली पर पानी लेकर अपना बायां बाजू धोया फिर उसी तरह दायें हाथ में पानी का बरतन लेकर दायें बाजू धोया इससे मालूम हो गया कि यह लड़कियां हैं उनको आपने एक



तरफ कर दिया फिर उसके बाद उन गुलामों को पानी दिया गया जो लड़कियों की शक्ल में थे उन्होंने पहले दायां हाथ धोया उसके बाद बायां जिससे पता चल गया कि यह मर्द गुलामों हैं उनको भी अलग कर दिया गया यह तादाद में बारह थे इस तरह लड़कों को और लड़कियों को आप ने अलग अलग कर दिया। फिर सवालात पर गौर फरमा कर आप ने बिलकीस के एक हजार सवालात के जवाबात दे दिए फिर आप ने बिलकीस के हृदियों को वापस कर दिया और पैगाम रसां औरत से फरमाया कि क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो हालांकि अल्लाह तआला ने जो हुक्मत और नबुव्वत मुझे अता फरमाई है वह इस माल से कहीं बेहतर है जो अल्लाह ने तुम को दिया है मुझे इस माल से क्या खुशी हो सकती है तुम्हारे हृदिये तुम्हारे लिए ही बाइसे मुसररत हो सकते हैं फिर बिलकीस के नाम एक खत लिखकर हुद हुद को दिया कि यह खत बिलकीस तक पहुंचा दे हम उन पर जरूर ऐसे फौजों से हमला करेंगे जिसके मुकाबला की उनमें ताकत नहीं है और उनको ज़लील व ख़्बार करके सब से निकाल देंगे और ज्यादा ज़लील व ख़्बार होंगे।

हुद हुद ने हज़रत सुलैमान का खत लेकर दोबारा बिलकीस के पास पहुंचा, बिलकीस ने खत पढ़ा उस असना में कासिद भी लौट आए उन्होंने हज़रत सुलैमान का वाक़ेआ और तोहफ़ा व हदाया के सिलसिले में आप ने जो कुछ फरमाया था और लौटा कर जो जवाब दिया था वह सब बिलकीस को सुनाया उस वक्त बिलकीस ने अपने कौम से कहा कि हम पर यह हुक्म आसमान से नाज़िल हुआ है इसकी मुखालिफ़त मुनासिब नहीं है और न इस की मुखालिफ़त की हम में ताकत है। फिर मलका सब अपने तख़्त की हिफाज़त की तरफ़ मुतवज्जेह हुई और उसके सात कमरों में बन्द करवा के उसपर पहरे वाले मुकर्रर कर दिए और सुलैमान की खिदमत में रवाना हो गई। हुद हुद ने फौरन हज़रत सुलैमान की खिदमत में हाज़िर होकर इत्तेला दे दी कि बिलकीस आप की खिदमत में आ रही है, हज़रत सुलैमान ने अमाइदे सलतनत को जमा करके फरमाया कि सरदारों! इससे कब्ल कि बिलकीस एक फरमां पज़ीर की हैसियत से मेरे पास पहुंचे उनका तख़्त मेरे पास कौन ला सकता है क्योंकि सुलह हो जाने के बाद उनके तख़्त को लेना जाइज़ नहीं होगा। उमरा नामी एक तुन्द खू और ग़ज़बनाक जिन्न ने अर्ज़ किया आप अपने इजलासे अदालत न उठने पाएंगे कि उतने अर्सा में बिलकीस का तख़्त मैं यहां लाकर हाज़िर होगा हज़रत सुलैमान की मजलिस अदालत सुबह से दोपहर तक रहती थी मुझ में उस तख़्त को उठाने की ताकत है मैं ताकतवर भी हूं और अमानतदार भी, जो सोना चांदी और जवाहिरात उस तख़्त में लगे हैं मैं उन में ख़यानत नहीं करूंगा। आप आगाह हैं कि हद्दे नज़र मेरा एक कदम है इस लिहाज़ से मैं इतने वक्त में यकीनन तख़्त आप की खिदमत हाज़िर कर दूंगा। हज़रत सुलैमान फरमाया कि मैं तो इससे भी कम वक्त में तख़्त यहां चाहता हूं यह सुनकर एक शख्स ने जिसको किताबुल्लाह का कुछ इल्म था और अल्लाह के इसमें आज़म या हय्यो या कय्यूमो से वह आगाह था अर्ज़ किया कि मैं अपने रब से दुआ करूंगा और उसकी तरफ़ रुजूअ हूंगा अपने रब की किताब पर गौर करूंगा तो उम्मीद है आप की नज़र की वापसी (पलक झपकने में) से पहले तख़्त को हाज़िर कर दूंगा। उस शख्स का नाम आसिफ़ बिन बरख़िया बिन शअया था उसकी वालिदा का नाम बातूरा था यह बनी इसराईली था चूंकि वह इसमें आज़म से वाकिफ़ था इस लिए हज़रत सुलैमान ने कहा कि अगर तुमने यह काम अंजाम दे लिया तो तुम ग़लबा और



बलन्दी (मरतबत) पाओगे और अगर तुम इस काम को अंजाम न दे सके तो तुम मुझे इन दरबारियों के सामने शर्मिन्दा न करना क्योंकि मैं जिन्न व इन्स दोनों का सरदार हूँ यानी नाकार्ग की सूरत में मेरे हुजूर में मत आना।

## तख्ते बिलकीस सुलैमान के हुजूर में

चुनांचे हज़रत आसिफ़ बरख़या उठे और वजू करके अल्लाह तआला की जनाब में सजदा किया और इस्मे आज़म पढ़ कर दुआ करने लगे। हज़रत अली मुर्तज़ा से मरवी है कि इस्मे आज़म के साथ जिसने भी दुआ की उसकी दुआ अल्लाह तआला ने कबूल फ़रमाई और इस्मे आज़म के वसीले से जिसने कुछ मांगा उसे अल्लाह तआला ने अता फ़रमा दिया। वह जुलजलाले क़द इकराम है।

रावी का बयान है कि आसिफ़ बरख़या के दुआ मांगते ही मलका बिलकीस का तख़्त ज़मीन के नीचे गाएब होकर हज़रत सुलैमान की कुर्सी के पास नमूदार हो गया, एक रिवायत यह है कि उस कुर्सी के नीचे नमूदार हुआ जिस पर हज़रत सुलैमान तख़्त नशीनी के वक़्त अपने पाद रखते थे। जब तख़्त हाज़िर हो गया तो जिन्नात ने कहा कि वाकई आपके सहाबी आसिफ़ बरख़या तख़्त को लाने की तो कुदरत रखते हैं लेकिन वह मलका सबा बिलकीस को नहीं ला सकते। हज़रत आसिफ़ ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से अर्ज किया कि (हुक्म हो तो) मैं मलका सबा को भी ला सकता हूँ।

रावी का बयान है कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के हुक्म से एक शीश महल तैयार किया गया और उसके नीचे पानी जारी किया गया और उसमें मछलियां छोड़ दी गईं शीशा की सफ़ाई की वजह से फ़र्श के ऊपर से पानी और मछलियां साफ़ नज़र आती थीं फिर हुक्म के बमोज़िब हज़रत की कुर्सी महल के वस्त में रख दी गई और मसाहिबीन की कुर्सियां भी बिछा दी गईं खुद आप भी तशरीफ़ फ़रमा हो गए तरतीब यह थी कि हज़रत की कुर्सी के करीब आदमियों की, उसके बाद जिन्नात की, उसके बाद शयातीन की, नशिस्त थी। हज़रत सुलैमान की नशिस्त का यही तरीका होता था, जब आप कहीं सफ़र में तशरीफ़ ले जाना चाहते तो आप अपनी कुर्सी पर और मसाहिबीन अपनी अपनी कुर्सी पर बैठ जाते थे फिर आप हवा को हुक्म देते थे वह सबको उठा कर फ़िज़ा में ले जाती थी और जब ज़मीन पर चलने का क़स्द होता तो हस्बुल हुक्म हवा सब को ज़मीन पर ले आती और आप ज़मीन पर चलते, हज़रत सुलैमान की मजलिस ऐसी ही होती थी जैसी उस ज़माने में बादशाहों की होती थी।

अल ग़रज़ जब मजलिस की नशिस्त दुरस्त हो गई तो हज़रत सुलैमान ने आसिफ़ बरख़या को बिलकीस के लाने का हुक्म दिया, आसिफ़ ने दोबारा सजदे में गिर कर दोबारा इस्मे आज़म या हय्यो या कय्यूमो पढ़ कर अल्लाह से दुआ मांगी, दुआ करते ही बिलकीस सामने आ मौजूद हुई। बाज़ लोग कहते हैं कि इस्मे आज़म का इल्म रखने वाला हज़रत के अस्तबल का दारोगा ख़ब्बा बिन औ था बाज़ कहते हैं कि हज़रत ख़िज़र हैं।

## हज़रत सुलैमान और मलका बिलकीस की मुलाक़ात

हज़रत सुलैमान ने बिलकीस को अपने सामने देख कर फ़रमाया कि यह मेरे रब की मेहर



बानी है वह मुझे इस अम्र में आजमाना चाहता है कि मुझे जो हुक्मत दी गई है उसका शुक्र अदा करता हूँ या अपने उस मातेहत के इल्म को देखकर जो इल्म में मुझसे अफ़ज़ल है उस नेमत की नाशुक्री करता हूँ (इल्म में अफ़ज़ल से इशारा आसिफ़ बरख़या की तरफ़ है) हकीक़त यह है कि अगर कोई शुक्र करेगा तो उसी को फ़ाइदा होगा और ना शुक्री करेगा तो उसमें ख़ुदा को कुछ नुक़सान नहीं है। वह तो बे नियाज़ और करीम है वह सज़ा देने में जल्दी नहीं करता। जब जिन्नात को यह ख़बर हुई कि बिलकीस आ गई हैं तो उनको यह ख़तरा लाहिक़ हुआ कि कहीं हज़रत सुलैमान बिलकीस से निकाह न कर लें अगर ऐसा हो गया तो बिलकीस कौमे जिन्नात के तमात वाक़ेआत हज़रत सुलैमान को बता देगी, चूँकि बिलकीस की मां एक परी थी इसलिए उसको जिन्नात के बारे में तमात बातों का इल्म था, बिलकीस की मां का नाम अमीरा बिनत उमरिया रवाहा बिनत सक्कन था और वह जिन्नात की मलिका थी इसलिए जिन्नात उसकी ऐब जूँ करने लगे ताकि हज़रत सुलैमान उससे नुफ़ूर हो जाएं पस वह कहने लगे, हज़रत वाला! बिलकीस कोताह अक्ल है और उसके पावं गधे के सुमू की मानिन्द हैं और हकीक़त भी यह थी कि बिलकीस के पावं कज थे और उनकी पिंडलियों पर बाल थे। यह सुनकर हज़रत सुलैमान ने बिलकीस के अक्ल व फ़हम का इम्तेहान लेना चाहा और उनके पावं भी देखना चाहे और उस का इन्तेज़ाम यह किया था कि शीश महल के नीचे आपने पानी भरवा दिया था और उसमें मेंढकियां और मछलियां छुड़वा दी थीं, बिलकीस की दानिश के इम्तेहान के लिए आपने उनके तख़्त में कुछ तबदीलियां कर दी थीं। अल्लाह तआला के इरशाद: बिलकीस के तख़्त में कुछ तबदीलियां कर दो, के यही मानी हैं।

जब बिलकीस महल तक पहुंच गई तो उनसे कहा गया कि महल के अन्दर दाख़िल हों, जब बिलकीस ने महल के अन्दर नज़र डाली तो उनको वहां पानी का गुमान हुआ, उनको डर हुआ कि शायद मुझे डुबाने का इन्तेज़ाम किया गया है, अगर मौत का और कोई तरीका होता तो अच्छा था यानी सुलैमान मुझे और किसी तरह मार डालते, बिल आख़िर आगे बढ़ने के लिए अपनी पिंडलियों से कपड़ा उठाया तो उनकी दोनों पिंडलियों पर बाल नज़र आए बाकी बदन के लिहाज़ से बिलकीस बहुत ही हसीन और खूबरू थीं और जो कुछ उनके बारे में कहा गया था वह उन ऊयूब से बहुत दूर थीं। किसी ने कहा कि यह शीश महल है इसमें गुबार का कोई निशान नहीं है। यह ऐसा चिकना है जैसे अमरद, जिसके रूख़सार पर बाल न हों। उस महल की छत, ज़मीन और दीवारें सब शीशा की हैं, बिलकीस हज़रत सुलैमान की तरफ़ रवाना हुई, हज़रत सुलैमान उनकी पिंडलियों पर बाल देख चुके थे और आपको वह भी भले लगे थे जब बिलकीस हज़रत सुलैमान के सामने पहुंचीं तो बार बार अपने तख़्त को देखती थीं, उनसे दरयाफ़्त किया गया कि क्या तुम्हारा तख़्त भी ऐसा ही है उन्होंने तख़्त को देख वर कुछ पहचाना कुछ नहीं पहचाना, वह दिल में कहने लगीं कि वह तख़्त यहां कैसे पहुंच सकता है वह तो सात कमरों के अन्दर बन्द है और उसकी निगरानी पर चौकीदार भी मुकर्रर हैं गर्ज कुछ पहचाना कुछ नहीं पहचाना कोई कतई फ़ैसला न कर सकीं और कहा कि ऐसा मालूम होता है गोया वही है। हज़रत सुलैमान ने कहा हम को इससे पहले ही ख़बर दे दी गई है और हम उससे पहले अल्लाह के फ़रमांबरदार बन गए थे। (बिलकीस इस्लाम लाने से कब्ल मजूसी मज़हब की पैरु थीं) बिलकीस कहने लगीं मैंने खुद अपने ऊपर जुल्म किया (यानी मैंने ख़्वाह मख़्वाह हज़रत सुलैमान के बारे में बदगुमानी



की कि वह मुझे डूबोना चाहते हैं) यह भी मुराद हो सकती है कि मैंने आफताब परस्ती करके अपने ऊपर जुल्म किया अब मैं सुलैमान के साथ अल्लाह की फरमांबरदार बनती हूँ यह भी मतलब हो सकता है कि मैं सुलैमान के साथ रब्बुल आलमीन की खालिस इबादत करूंगी। इसलिए मैं मुसलमान होती हूँ (यह बयान किया जा चुका है कि पहले बिलकीस काफिरा थी) हज़रत सुलैमान ने उसको अल्लाह के सिवा दूसरे की इबादत से रोका) फिर हज़रत सुलैमान ने उनसे निकाह कर लिया उनके (पिंडलियों) के बाल साफ करने के लिए नूरा तैयार करने का हुक्म दिया जब नूरा (चूने का पाउडर) तैयार हो गया तो हज़रत सुलैमान और बिलकीस ने उसका इस्तेमाल किया हज़रत सुलैमान ही नूरा के मौजिद थे।

## हज़रत सुलैमान की औलाद बिलकीस के बतन से

रावी का बयान है कि हज़रत सुलैमान ने बहुत सी बातें बिलकीस से दरयाफ्त कीं और इस तरह बहुत सी बातें बिलकीस ने हज़रत सुलैमान से मालूम कीं (यानी बहुत देर तक दोनों बाहम गुफ्तफू करते रहे) फिर हज़रत सुलैमान ने बिलकीस से मुबाशरत की और उनके बतन से हज़रत सुलैमान के एक लड़का पैदा हुआ जिसका नाम दाऊद रखा गया लेकिन वह आप की हयात ही में मर गया उसके कुछ अर्सा बाद हज़रत सुलैमान की वफ़ात हो गई उसके एक माह बाद बिलकीस का भी इन्तेकाल हो गया, एक रिवायत यह भी है कि हज़रत सुलैमान ने शाम के मुल्क में एक गावं बिलकीस को दे दिया था मरते दम तक बिलकीस उसका लगान लेती रहीं और उसी से अपना गुज़ारा करती रहीं। एक रिवायत में यूँ भी आया है कि मुबाशरत के बाद हज़रत सुलैमान ने बिलकीस को उनके मुल्क सबा वापस कर दिया था और वह खुद महीने में एक बार बैतुल मक़द़स से सवार हो कर यमन पहुंच जाते थे।

## बसाइर

### हज़रत सुलैमान और बिलकीस के किस्से से इबरतें हासिल होती हैं

हमने इस मजलिस में हज़रत सुलैमान का पूरा किस्सा तफ़सील के साथ इसलिए पेश कर दिया है कि इसमें आक़ेबत बीं, दानिशमन्द मोमिन के लिए बड़ा सरमायए नसीहत पिन्हां है जो गुज़िश्ता नेकों और बदों की सीरत से इबरत हासिल करना चाहता है। साबिका उम्मतों में अल्लाह तआला का इक्तीदार नाफ़िज़ था, जो फ़रमान पज़ीर बन्दे थे उनको उसने इज़्ज़त अता फ़रमाई और नाफ़रमानों को अपने फ़रमांबरदारों का मुतीअ बना दिया। नाफ़रमानों को ख़्वा र व ज़लील किया और उनके इख़्तियार की बाग़ डोर अपने इताअत केशों के हाथ में दे दी और अपने दोस्तों और मोहिब्बों को मख़्लूक का मालिक बना दिया तो दानिशमन्द मोमिन इन तमाम बातों से नसीहत हासिल करता है। ग़ौर करने का मक़ाम है कि हज़रत सुलैमान ने अल्लाह की इताअत की और अल्लाह तआला ने उनको बिलकीस और उसके मुल्क (सबा) का मालिक बना दिया जबकि बिलकीस की सलतनत में बारह हज़ार जंगजू सरदार ऐसे मौजूद थे जिनमें से हर एक की कमान में एक लाख फौज थी और हज़रत सुलैमान की फौज की कुल तादाद 4 लाख थी, जिसमें दो लाख जिन्नात थे और दो लाख इन्सान। देखो दोनों फौजों की तादाद में अज़ीमुश्शान फ़र्क़ था।



कहाँ बारह करोड़ फौज और कहाँ चार लाख, लेकिन सुलैमान को उनकी इताअत गुजारी के बाएस गालिब व मालिक और कुफ़र व इस्तेग़्नाह की वजह से बिलकीस को मगलूब व ममलूक बना दिया पस आदमी को समझ लेना चाहिए कि इस्लाम हमेशा सरबलन्द रहता है। सरनिगू नहीं होता, अल्लाह तआला अहले ईमान पर कभी काफ़िरों को मुसल्लत नहीं करेगा, ऐ मर्दे मोमिन ! अल्लाह तआला तुझे हज़रत सुलैमान की तरह तौफ़ीक़ दे अगर तू सुलैमान की तरह साहिबे ईमान होगा तो दुनिया में दुश्मनों से महफूज़ रहेगा और आख़िरत में जहन्नम की भड़कती हुई आग से बचेगा, दोज़ख़ तेरा ख़िदमत गुज़ार होगा और ख़ादिमों की तरह तेरे आगे आगे चल कर तुझे (जन्नत का) रास्ता बताएगा और अपने मौला के हुक्म की तामील करते हुए दोज़ख़ तुझ से बहुत ही नर्म अल्फ़ाज़ में कहेगा ऐ मर्दे मोमिन मेरे ऊपर से गुज़र जा, तेरे (ईमान) के नूर ने मेरे शौलों को ठंडा कर दिया है गरज़ यह कि तेरी बड़ी तौकीर होगी और तेरा चेहरा पुरनूर होगा, हुल्ला शाही तेरे जिस्म पर होगा और अज़मत व बुजुर्गी की निशानियाँ तुझ से नुमायाँ होंगी। इस बिना पर ख़ादिमों और गुलामों पर तुम्हारी तौकीर व ताज़ीम और ख़िदमत फ़र्ज़ है इसके बरअक्स काफ़िरों और नाफ़रमानों पर वह आग अपना गैज़ व ग़ज़ब दिखाएगी जैसे कोई गालिब आने वाला दुश्मन अपनी कामयाबी के बाद मगलूब से इन्तेक़ाम लेता है, उसी तरह वह तुम से बदला लेगी। अल्लाह तआला का इरशाद है:

जब वह उसे (आतिशे जहन्नम) दूर से देखेंगे तो उसके गैज़ व ग़ज़ब की आवाज़ सुनेंगे लिहाज़ा अगर तुम दुनिया व आख़िरत में इज़्ज़त के ख़्वाहां हो तो तुम पर अल्लाह तआला की इताअत व फ़रमांबरदारी लाज़मी और नाफ़रमानी से इजतेनाब ज़रूरी है, अल्लाह की रहमत तुम को उसी वक़्त हासिल होगी। अल्लाह तआला का इरशाद है:

जो इज़्ज़त चाहता है सो यह जान ले कि तमाम तर इज़्ज़त अल्लाह ही की जानिब से है इज़्ज़त तो अल्लाह उसके रसूल और मुसलमानों के लिए है लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते।

पस ऐ ईमान का दावा करने वाले! तेरा निफ़ाक़ और ऐ इख़लास के मद्दई तेरा (अमली) शिर्क तेरे लिए अल्लाह तआला की इज़्ज़त और उसके बरगुज़ीदा नबी और मोमिनीने अख़ियार की इज़्ज़त को देखने में मानेअ है और एक हिजाब व पर्दा है, हां अगर तू ईमान के तकाज़ों के मुताबिक़ अमल पैरा होगा और इख़लास की शराइत के मुताबिक़ यकीन रखेगा तो दुनिया में हर दुख और हर जिन्नी व इन्सी शैतान से और आख़िरत में (दौज़ख़ की) आग के अज़ाब से महफूज़ रहेगा, तुझे कामयाबी और तेरे दुश्मनों को ख़्तारी नसीब होगी, अल्लाह तआला फ़रमाता है:

अगर तुमने अल्लाह की मदद की तो वह तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और तुम्हें साबित क़दम रखेगा।

एक दूसरी आयत में इरशाद है कि सुस्त व कमजोर न बनो और (जिल्लत और शिकस्त के साथ) सुलह के ख़्वाहां न हो तुम ही गालिब रहोगे अल्लाह तुम्हारे साथ है लेकिन ग़फलत तुम्हारे दिलों पर छा गई है और जंग की तहें चढ़ गई हैं उसके गिर्द सियाही और जुलमत फैल गई है। हाए अफ़सूस! हाए नदामत! ऐसे दिल वालों के लिए जिस दिन क़यामत में भेद खुल जाएंगे, वह दिन वाक़ेअ होना हक़ है, बड़ी मुसीबत का दिन होगा तुम्हारी कोई छुपी बात छुपी नहीं रहेगी उस रोज़ लोग परागन्दा परेशान होकर क़ब्रों से निकलेंगे ताकि उनको उनके आमाल दिखाए



जायें पस जिसने जर्रा भर नेकी की है वह उसे देख लेगा और जिसने जर्रा भर बदी की है वह उसे देख लेगा। कहा गया है कि चार जर्रे मिल कर राई के दाने के बराबर होते हैं। बाज का कौल है कि एक जर्रा उस सुर्ख चियूटी के बराबर होता है जो ब मुश्किल गौर करने पर नजर आती है। हजरत अब्दुल्लाह इब्न अब्बस (रजी अल्लाहो अन्हुमा) ने फरमाया कि जब तुम अपना हाथ जमीन पर रख कर उठाओ तो हथेली में मिट्टी लग जाए वही जर्रा है, बाज कहते हैं कि जर्रा जौ के हजारवें हिस्से का नाम है, बाज कहते हैं कि जर्रा गुबार के उस हिस्से को कहते हैं जो शुआए खुर्शीद से सूई के नाके की तरह चमकता है। पस कितना हैबतनाक होगा वह दिन जिस में ऐसे हल्के वजन वाले आमाल (यानी जर्रों के बराबर आमाल भी) तौले जायेंगे, उसी दिन के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है उस रोज हम परहेजगारों को मेहमान के तौर पर रहमान की तरफ ले जाने का हुक्म देंगे और मुजरिमों को सख्त प्यास की हालत में जहन्नम की तरफ हंकायेंगे।

उस वक्त पर्दा हट जाएगा, पोशीदा बातें अयां हो जाएंगी, मोमिन और काफिर, सिद्दीक व मुनाफिक, मोवहहिद व मुशरिक दोस्त दुश्मन, वाकई हकदार और झूटे दावेदार में इम्तियाज होगा (अलग अलग कर दिया जऐगा)

ऐ नातवां इन्सान! उस दिन की हैबत से डर और गौर कर कि तू इन दो गरोहों में से किस गरोह में शामिल होगा। अगर तूने बुजुर्ग व बर्तर माबूद के लिए आमाल किए हैं और अपने अमल में खुदाए अलीम व खबीर से खौफ खाया है और अमल को उन तमाम चीजों से पाक रखा है जो परखने वाले बसीरत रखने वाले, सब की नजर में बुरी और नापसन्द हैं। तू तो उस गरो में शामिल होगा जो कयामत के दिन उसका मेहमान होगा। तुझे इज्जत और सलामती हासिल होगी और बशारत तेरे लिए मौजूद होगी और अगर तेरा अमल इसके बरअक्स है तो फिर यकीनन तू उसी गरोह के साथ होगा और उन हलाक होने वालों के साथ होगा जो दोजख में फिरऔन व हामान और कारून के साथ हलाक किए जायेंगे।

अल्लाह तआला का इरशाद है: जो शख्स यह उम्मीद रखता हो कि अपने परवरदिगार से मुलाकात करे पस (उससे कह दो कि) नेक अमल करे और अल्लाह की इबादत में किसी को शरीक न करे।

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की फज़ीलत

### फज़ाइल

हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि जब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नाज़िल हुई तो बादल और मशरिक की तरफ भागती हुई हवायें ठहर गईं, समन्द्रों में तमव्वुज हुआ, जानवरों ने सुनने के लिए कान लगा दिए और शैतानों पर आसमान से अंगारों की मार पड़ी, अल्लाह तआला ने अपने इज्जत व जलाल की कसम खाई कि जिस बीमार पर उसका नाम लिया जाएगा वह



उसको जरूर शिफा देगा और जिस चीज़ पर उसको पढ़ा जाएगा उसमें बरकत अता फ़रमाएगा और जो शख्स बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ेगा वह जन्नत में जाएगा।

अबू वाइल कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने फ़रमाया कि जो शख्स चाहता है कि उसको अल्लाह तआला दोज़ख के उनीस फ़रिश्तों से बचा ले तो वह बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़े उसके हुरूफ़ 19 हैं। अल्लाह तआला हर हर्फ़ को अज़ाब के एक फ़रिश्ते के लिए सपर बना देगा। हज़रत इब्न अब्बास ने बकौल ताऊस फ़रमाया है कि हज़रत उसमान इब्न अफ़फ़ान ने रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के मुताल्लिक दरयाफ़्त फ़रमाया, हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि यह अल्लाह के नामों में से एक नाम है, अल्लाह के इस्मे आजम और इस इस्म में ऐसा ही ताल्लुक व इत्तेसाल है जैसे आंख की सफ़ेदी और सियाही में।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, जिस शख्स ने ज़मीन से ऐसा कागज़ जिस पर बिस्मिल्लाह तहरीर थी अल्लाह तआला के नाम की ताज़ीम करते हुए इस डर से उठा लिया कि पामाल न हो तो अल्लाह तआला के यहां उसका नाम सिद्दीकीन की फ़ेहरिस्त में लिख दिया जाता है और उसके वालिदैन का ख़्वाह वह मुश्रीक ही क्यों न हों अज़ाब हल्का कर दिया जाता है।

रिवायत है कि तीन मरतबा शैतान इस तरह चीख़ चीख़ कर रोया कि ऐसा कभी नहीं रोया एक तो उस वक़्त जब उसको मरदूद व मलऊन बना कर आलमे मलाइका से ख़ारिज कर दिया गया, दूसरे सरवरे कौनैन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विलादते मुबारक के मौका पर, तीसरे उस वक़्त जब सूरह फ़ातिहा नाज़िल की गई जिसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम मौजूद है। सालिम बिन अलजअद के कौल के मुताबिक़ हज़रत अली मुर्तज़ा कर्म्मल्लाहो वजहहू ने फ़रमाया कि जब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नाज़िल हुई तो रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सबसे पहले जब यह आयत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई तो आपने इरशाद फ़रमाया कि मेरी नसल जब तक इसकी तिलावत करती रहेगी अज़ाब से महफूज़ रहेगी। उसके बाद उसे उठा लिया गया फिर वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई तो उन्होंने ने उस को उस वक़्त पढ़ा जब वह (आग में फेंके जाते वक़्त) मुनजनीक के पलड़े में थे और (उस की बरकत से) अल्लाह तआला ने आग को सलामती के साथ ठंडा कर दिया, फिर उसे उठा लिया गया, फिर वह हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम तक किसी पर नाज़िल न हुई। जब हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई तो फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ सुलैमान बख़ुदा आप की हुकूमत तमाम हो गई फिर वह उठा ली गई अब अल्लाह तआला ने उसे मुझ पर नाज़िल फ़रमाया है, मेरी उम्मत क़यामत के दिन इस हाल में आएगी कि वह बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ते होंगे और जब उनके आमाल मीज़ान में तौले जायेंगे तो उनकी नेकियां वज़नी हो जायेंगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग उस (बिस्मिल्लाह) को अपनी किताबों और ख़तों में लिखो और जब तहरीर करो तो उसको ज़बान से भी पढ़ो।

### बिस्मिल्लाह की फ़ज़ीलत के बारे में मज़ीद वज़ाहत व तसरीह

हज़रत इकरमा से मरवी है कि जब अल्लाह तआला ने लौह व क़लम को पैदा किया तो सब से पहले क़लम को हुक्म दिया कि लिख क़लम लौह पर चला और उस पर वह सब कुछ लिख



दिया जो कयामत तक होने वाला है, कलम ने लौह पर सबसे पहले बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तहरीर किया जब तक लोग इस आयत की तिलावत करते रहेंगे अल्लाह तआला उनके लिए अमान मुकर्रर फरमा दी है।

## बिस्मिल्लाह का नुजूल

सातों आसमान वाले, बुलन्द भरतबा रखने वाले, बुजुर्गी वाले, परदों वाले और सफ बस्ता मुकर्रब फरिश्ते (सबके सब) और अल्लाह तआला की तस्बीह पढ़ने वाले (करी बयान) इसको पढ़ते हैं। यह सबसे पहली आयत है जो हजरत आदम अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुई थी, उन्होंने इरशाद फरमाया था कि (इसकी बरकत से) मेरी औलाद अजाब से महफूज रहेगी जब तक वह इसका विद करती रहेगी। फिर हजरत इब्राहीम खलीलुल्लाह पर यह सूरत नाजिल हुई और उन्होंने इसकी तिलावत उस वक्त फरमाई जब वह मुनजनीक के पलड़े में बैठे थे (आग में फेंके जा रहे थे) और अल्लाह तआला ने उन पर आग को सलामती के साथ सर्द फरमा दिया, उसके बाद उसको उठा लिया गया फिर मूसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुई उसकी बरकत से वह फिराँ और उसके जादूगरों पर, हामान और उसके लश्कर, कारून और उसके पैरुओं पर गालिब आए उसके बाद उसको फिर उठा लिया गया फिर वह चौथी बार हजरत सुलैमान पर नाजिल हुई उस वक्त मलाइका ने कहा, बखुदा आज आप की सलतनत कामिल हो गई चुनान्चे जिस चीज पर हजरत सुलैमान बिस्मिल्लाह पढ़ते वह उनकी ताबअे फरमान बन जाती।

जिस रोज हजरत सुलैमान पर बिस्मिल्लाह उतारी गई थी अल्लाह ने सुलैमान अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया था कि बनी इस्राईल के तमाम लोगों में मुनादी करा दो कि जो शख्स अल्लाह की अमान की आयत सुनना चाहता हो वह हजरत दाऊद के हैकल (मेहराबे दाऊद) में सुलैमान के पास आ जाए वह वाज कहना चाहते हैं, चुनान्चे हर वह शख्स जो अल्लाह की इबादत का शौक रखता था उनकी खिदमत में दौड़ता हुआ हाजिर हुआ। चुनान्चे तमाम अहबार बनी इस्राईल और जोहाद व उब्बाद बनी इस्राईल के तमाम कबाइल और गरोह मेहराबे दाऊद में हाजिर हो गए (कोई आबिद व जाहिद बाकी न रहा) उस वक्त हजरत सुलैमान उठे और मिम्बरे इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर तशरीफ ले गए और उनके सामने आयते अमान बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तिलावत की जिसने भी इसको सुना वह खूशी से झूम उठा, सबने एक ज़बान होकर कहा कि हम गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूले बरहक हैं गर्जकि इस आयते करीमा के ज़रिया हजरत सुलैमान रूए ज़मीन के सलातीन पर गालिब आए और उसी के ज़रिया से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का फतह करवा दिया।

हजरत सुलैमान के बाद इस आयत को फिर उठा लिया गया, उसके बाद जब हजरत ईसा इब्ने मरियम पर नाजिल की गई तो वह बहुत खूश हुए और आपने अपने हवारियों को इसकी खुश खबरी सुनाई, अल्लाह तआला ने उनपर वही नाजिल फरमाई ऐ कुंवारी मरियम (बतूल) के फरजन्द तुम जानते हो कि कौन सी आयत तुम पर नाजिल की गई है, यह आयते अमान है यानी यह फरमाने बारी बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम है इसको तुम खड़े, बैठे, लेटे, आते जाते, चढ़ते उतरते हर हाल में कसरत से पढ़ा करे क्योंकि जो शख्स इसका विद रखेगा वह कयामत के दिन इस हाल में उठेगा कि उसके नामए आमाल में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम आठ दर्जा दर्ज होगा



और वह शख्स मुझ पर ईमान लाने वाला और मेरी रूबूबियत का इकरार करने वाला होगा मैं उस को दोजख से आजाद कर के जन्नत में दाखिल कर दूंगा। लिहाजा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को अपनी किरअत और अपनी नमाज के शुरू में पढ़ना चाहिए क्योंकि जिसने अपनी किरअत और अपनी नमाज के शुरू में इसको पढ़ा तो जब वह मरेगा तो उसको मुन्कर नकीर का कुछ खौफ न होगा, उसपर मौत की सख्ती और फिशारे कब्र आसान हो जाएगा और मेरी रहमत उसके शामिले हाल होगी मैं उसके लिए कब्र को कुशादा और ता हद्दे नजर रौशन कर दूंगा, मैं उसको कब्र से उस हाल में निकालूंगा कि उसका बदन गोरा और चेहरा ऐसा नूरानी होगा कि वह चमकता होगा मैं उससे बहुत नर्म हिसाब लूंगा, उसकी नेकियों को वजनी कर दूंगा और सिरात पर उसको नूरे कामिल अता कर दूंगा यहां तक कि वह जन्नत में दाखिल हो जाएगा और मैदाने हशर में मुनादी से निदा कराऊंगा कि वह सईद और मगफूर है। हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज किया ऐ अल्लाह! ऐ मेरे रब! क्या यह इनाम मेरे लिए खास है, इरशाद हुआ तुम्हारे लिए भी और उन लोगों के लिए भी जो तुम्हारे पैरु हैं और तुम्हारे तरीका पर चलेंगे, तुम्हारे बाद अहमद (मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और उनकी उम्मत के लिए भी (यह इनाम) खास है। हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने इसकी इत्तेला अपने पैरुओं को दी और उनको बशारत देते हुए फरमाया मेरे बाद एक पैगम्बर आयेंगे जिनका नाम अहमद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) है उनके औसाफ और कमालात ऐसे ऐसे हैं, हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने ताबईन और पैरुओं से हुजूर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाने का पुख्ता अहद लिया और जब अल्लाह तआला आप को आसमान की तरफ उठाने लगा तो आपने अपने असहाब (हवारीन) से उस अहद को ताजा किया (उस अहद की तजदीद की) चुनान्चे जब तमाम हवारीन और आपके मुत्तबईन गुजर गए और उनके बाद दूसरे लोग आए तो खुद भी गुमराह हो गए और दूसरों को भी गुमराह कर दिया और दीन को बदल कर दुनिया को ले लिया। उस वक्त यह आयते अमान नसारा के सीनों से उठा ली गई। सिर्फ उन चन्द लोगों के दिलों में बाकी रह गई जो इंजील के पैरुओं में साहिबे इस्लाम थे जैसे बहीरा राहिब वगैरह। उसके बाद जब अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मबऊस फरमाया और मक्का में सूरह फातिहा बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम उतारी गई तो रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि कुरआन करीम की सूरतों खुतूत और किताबों के शुरू में लिखी जाए और इस आयत का नुजूल रसूले खुदा के लिए अजीम फतह व कामरानी का बाएस हुआ। रब्बुल इज्जत ने अपनी इज्जत की कसम खाकर फरमाया कि जो मुसलमान, साहिबे यकीन अपने किसी काम को शुरू करने से पहले इसको पढ़ लेगा मैं उसमें जरूर बरकत पैदा करूंगा और जब भी कोई मुसलमान इसको पढ़ता है तो जन्नत उससे कहती है लब्बैक व सअदी क इलाही अपने इस बन्दे को बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम के सदका में जन्नत में दाखिल फरमा दे और जन्नत किसी बन्दे के हक में दुआ करे तो उसका जन्नत में जाना जरूरी हो जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि ऐसी कोई दुआ रद नहीं होती जिसके आगाज में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम हो, आपने फरमाया कयामत के दिन बिला शुबा मेरी उम्मत बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कहती हुई आगे बढ़ेगी और मीजान में उसकी नेकियां वजनी हो जायेंगी उस वक्त दूसरी उम्मतें कहेंगी कि उम्मत मोहम्मदी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की



गुनियतुत्तालिबीन

तराजूओं में किस कदर वज़नी आमाल हैं, अम्बिया उनके जवाब में कहेंगे कि उम्मत मोहम्मदिया के कलाम का आगाज़ अल्लाह तआला ने तीन ऐसे नामों से है कि अगर उनको तराजू के एक पल्ले में रख दिया जाए और तमाम मखलूक की बुराईयां (गुनाह) दूसरे पल्ला में रख दिये जायें तब भी यकीनन नेकीयां ही भारी होंगी।

हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा को हर मरज़ की शिफा हर दवा का मददगार (शिफा) हर फ़कीर के लिए तवनगरी, आतिशे दोज़ख से, पर्दे ज़मीन में घंसने से अमान, सूरत मस्ख होने और सख्ती में पड़ने से महफूज़ रहने का ज़रीया बताया है जब तक लोग इसकी तिलावत करते रहेंगे।

## बिस्मिल्लाह की तफ़सीर

अतीया औफी ने अबू सईद खुदरी से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को उनकी वालदा माजदा हज़रत मरियम ने उस्ताद के पास तहसीले इल्म के लिए भेजा तो उस्ताद ने उनसे कहा पढ़िये बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। हज़रत ईसा ने फ़रमाया आपको मालूम है यह क्या है? उस्ताद ने जवाब दिया कि मुझे नहीं मालूम, आपने फ़रमाया कि बे तो अल्लाह की रौशनी, सीन उसकी बलन्दी और मीम उसकी मम्लिकत है।

हज़रत अबू बकर वरीक ने फ़रमाया कि बिस्मिल्लाह जन्नत के बागों में से एक बाग़ है उसके हर हर्फ़ की तफ़सीर अलग अलग है चुनान्चे बा के छः मानी हैं, एक बारी के मानी, यानी अर्श से तहतुस्सरा तक अल्लाह हर चीज़ का खालिक है और इसका सबूत अल्लाह का यह इरशाद है हुवल्लाहुल खालिकुल बारिओ। (2) बसीर के मानी में अल्लाह अर्श से ज़मीन तक तमाम मखलूक का देखने वाला है। वल्लाहो बसीरुम बिमा तअमलून। (3) बासित के मानी में इस्तेमाल हुआ है यानी अल्लाह अर्श से फ़र्श तक मखलूक के रिज़्क में कुशादगी करने वाला है, इरशाद है इन्नल्लाहा यबसुतुल रिज़्का लेमैय्यशाओ। (4) बाकी के मानी में मुस्तअमल है यानी अर्श से ज़मीन तक तमाम मखलूक फना हो जाएगी और सिर्फ़ अल्लाह बाकी रहने वाला है। कुल्लो मन अलैहा फानिव व यबका वजहु रब्बेका जुल जलालि वल इकराम (5) बाएसुन के मानी में इस्तेमाल किया है यानी अर्श से फ़र्श तक हर मखलूक को मरने के बाद अज़ाब व सवाब (हिसाब किताब) के लिए उठाने वाला है जैसा कि इरशाद, फ़रमाया इन्नल्लाहा यब असु मन फ़िल कुबूर (6) बर्रून के मानी हैं यानी वह अर्श से फ़र्श तक तमाम मोमिनो के साथ एहसान करने वाला है। हुवल बर्रूर रहीम

सीन की पांच सूरतें (यानी सीन से अल्लाह तआला के पांच अंसमा की तरफ़ मिस्ल बा के इशारा हैं) (1) समीऊन की तरफ़ यानी अर्श से फ़र्श तक अपनी तमाम मखलूक की आवाज़ सुनने वाला है जैसा कि इरशाद फ़रमाया है : क्या वह यह गुमान रखते हैं कि हम उनकी आहिस्ता और पोशीदा बात को नहीं सुनते। दूसरे सय्यद के मानी में यानी अर्श से फ़र्श तक अल्लाह तआला की सरदारी है इस का सबूत अल्लाहुस्समद में मौजूद है। तीसरे मानी हैं सरीउल हिसाब के, यानी अर्श से तहतुस्सरा तक तमाम मखलूक का मुहास्बा अल्लाह तआला जल्द करने वाला है जिसका सबूत वल्लाहु सरीउल हिसाब है चौथे मानी हैं सलामुन के यानी अर्श से फ़र्श तक उसने अपनी तमाम मखलूक को सलामती अता फ़रमाई है और इसका सबूत अस्सलामुन मोमिनो भी है। पांचवें



गुनियतुतालिबीन मानी सातेरुन के हैं यानी अल्लाह तआला अपने बन्दों के गुनाहों पर परदा डालने वाला है जेसा कि उसका इशारा है गाफेरुज्जंबे व काबिलुत तूबे इस में लफ्ज गाफिर के मानी हैं सातिर यानी परदा डालने वाला।

मीम की बारह सूरतें हैं, मीम से अल्लाह तआला के बारह अस्माए हुस्ना की जानिब इशारा है अब्बल मलेकुल खल्क, मखलूक का बादशाह या हाकिम जिस की वजाहत अल मलेकुल कुद्स में मौजूद है। दोम मालेकुल खल्क मखलूक का मालिक जिस की वजाहत मालेकुल मुल्क में की गई है सोम मन्नानुन अलल खल्क, मखलूक पर एहसान करने वाला, इसकी तशरीह बलिल्लाहो य मुन्नू अलैकुम में मौजूद है। चहारुम मजीदुन यानी अल्लाह बुजुर्गी और मज्द व ओला वाला है इसकी वजाहत जुल अर्शिल मजीद से फरमाई गई पंजुम मोमिनून का इशारा है यानी अर्श से फर्श तक अपनी मखलूक को अमन व अमान देने वाला जैसा कि इरशाद फरमाया व आमनहुम मिन खौफ़। शशुम मोहय्यमेनून यानी अर्श से फर्श तक अपनी मखलूक से आगाही रखने वाला। इरशाद हुआ है अल मोमिनून मोहय्यमेनून। हफ्तुम मुकतदेरुन यानी अर्श से फर्श तक अपनी मखलूक पर कुदरत रखने वाला। जैसा कि इरशाद फरमाया फी मकअदे सिदकिन इन्दा मलिकीन मुकतदिर। हशुम मुकीतुन की तरफ़ इशारा है यानी अर्श से फर्श तक अपनी मखलूक की निगहबानी करने वाला। इरशादे रब्बानी इसकी वजाहत में मौजूद है वकानल्लाहा अला कुल्ले शैइन मोकीता। नहुम मुकर्मुन यानी सारे आलम में अपने दोस्तों को इज्जत देने वाला, जिस की वजाहत वल कद करमना बनी आदमा। दहुम मुनइमुन यानी कुल जहां को नेमत देने वाला, इरशाद फरमाता है व असबगा अलैकुम नेअमहु, जाहिरन व बातिनन। याज्दहुम मुफज्जेलून की तरफ़ इशारा है यानी अर्श से फर्श ते अपनी मखलूक पर मेहरबानी करने वाला, इरशाद फरमाया है इन्नल्लाहा लजु फजलिन अलन्नास। दोआज्दहुम मोसव्विरून की तरफ़ इशारा है यानी मखलूक का सूरत गर, इस आयत में इसकी वजाहत मौजूद है अल खालिकुल बारियुल मुसव्विरो।

अहले मारफत व हकीकत का इरशाद है कि कुरआन मजीद को बिस्मिल्लाह से शुरू करने का मकसद है कि इंसान अपने तमाम अफ़आल व आमाल की इब्तिदा अल्लाह के नाम से करे और उस नामे पाक से बरकत हासिल करे और इसी की तरगीब उस का मकसूदे आला है।

## लफ्ज अल्लाह के मानी में मुख्तलिफ़ अक़वाल

इस्मे अल्लाह के मानी और उसकी तन्कीह व तसरीह में उलमा का इख़िलाफ़ है चुनान्चे खलील बिन अहमद और उलामए अरब की एक जमाअत ने कहा है कि अल्लाह, खुदाए बुजुर्ग व बरतर का ऐसा नाम है जिसमें उसका कोई शरीक नहीं है। चुनान्चे अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है: क्या उसका कोई हमनाम तुनको मालूम है) इससे खलील का मतलब यह है कि इस्मे अल्लाह के अलावा अल्लाह के दूसरे नाम मुशतरक हैं अल्लाह तआला पर उन नामों का इतलाक़े हकीकी होता है और दूसरे पर बतौर मजाज मगर लफ्ज अल्लाह मुशतरक ही नहीं है बतौर मजाज भी इसका इतलाक़ किसी और पर नहीं हो सकता क्योंकि उसके अन्दर हमागीर मालकीयत का मफ़हूम पिन्हां है बाकी तमाम मआनी उसके तेहत हैं।

अगर अल्लाह का अलीफ़ हजफ़ कर दें तो लिल्लाह रह जाता है अब अगर पहले लाम को भी हजफ़ कर दें तो लह रह जाता है फिर दूसरा लाम भी गिरा दिया जाए तो हू रह जाता है



गुनियतुत्तालिबीन

बाज़ उलमा लफ़्ज़ अल्लाह को अलम नहीं कहते बल्कि इसको इल्मे मुशतक कहते हैं। अल्लाह को इस्मे मुशतक तसलीम करने के बाद उसके माख़ज़ व इश्तेकाक के तअय्युन में भी उलमा के मुख्तलिफ़ अक़वाल हैं चुनान्चे नसर बिन शमील का कौल है कि लफ़्ज़ अल्लाह तअल्लाहु से बना है जिसके मानी बन्दगी और इबादत के हैं अलाहू इलाहतुन (बाबे फ़तहा से) इस्तेमाल होता है जैसे: उसने इबादत करने के तरीका से इबादत की) बाज़ उलमा कहते हैं कि यह लफ़्ज़ अलहुन से मुशतक है जिसके मानी एतमाद करने के हैं जैसा कि कहते हैं अलहत इला फ़लानिन अलहा, मैं ने फ़लां शख्स पर भरोसा किया, इस सूरत से अल्लाह को इलाह कहने की वजह यह है कि मसाइब और अग़राज़ के तेहत बन्दे घबरा कर अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करते हैं और उसके सामने तज़र्रोअ व ज़ारी करते हैं। अल्लाह उनको पनाह देता है पस इलाह के मानी हुए वह ज़ात जिस की पनाह ली जाए जिस तरह इमाम उसको कहते हैं जिसकी लोग पैरवी करें बन्दे नफ़ा व नुक़सान में नाचार व मजबूर होकर उसी की तरफ़ रुजूअ करते हैं।

अबू अम्र बिन उला का कौल है कि लफ़्ज़ इलाह अलहत फ़िश शय से मुशतक है यानी जब बन्दा हैरान व परेशान होता है और जब कोई राह नहीं पाता तो वह उसको उस नाम से पुकारता है, तमाम इन्साऩी उकूल, अल्लाह तआला की अज़मत व इन्साफ़ की कुनह और हकीकत की मारफ़त में हैरान हैं पस उसका नाम इलाह यानी हैरत में डालने वाला करार पाया जिस तरह मकतूब के लिए कातिब और महसूब के लिए हिसाब नाम रखा गया यानी किताब बमानी मकतूब और हिसाब बमानी महसूब।

मोबर्रद (नहवी) कहते हैं कि यह लफ़्ज़ अलहत से मुशतक है। अरब कहते हैं अलहत इला फ़लानिन यानी मैं ने फ़लां शख्स के पास आराम व सुकून हासिल किया, चुनान्चे मख़्लूक को भी अल्लाह की याद से आराम और सुकून हासिल होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है: आगाह हो कि अल्लाह के ज़िक्र से लोग चैन और आराम पाते हैं) बाज़ लोग कहते हैं कि इलाहुन की असल वलहुन से मुशतक है और इसका असल माद्दा वलहुन है जिसके मानी हैं किसी अजीज के न मिलने से होश व हवास का गाइब हो जाना या अक्ल से आजिज़ रहना, चूँकि अल्लाह की याद के वक़्त शौक की शिद्दत, मोहब्बत के ग़लबा और दिली बेकरारी के बाएस होश व हवास जाते रहते हैं। अक्ल आजिज़ रह जाती है पस उसमें गुम होने की बिना पर उसका यह नाम रखा गया, बाज़ ने कहा है कि इसका असल माद्दा लूहुन है इसकी असल सिर्फ़ लाहुन थी और वलहुन के मानी हैं परदा में छुप कर आने वाला चूँकि अहले अरब जब किसी चीज़ को पहचानते हों फिर वह नज़र से ओझल हो जाए तो उस वक़्त लाहुन बोलते हैं चुनान्चे जब उरुस नौ परदे में चली जाती तो उस वक़्त वह कहते हैं लाहतुलउरुस तलवह लौहन चूँकि अल्लाह तआला की रुबूबीयत दलाइल व शवाहिद के साथ ज़ाहिर है और बएतेबारे कैफ़ीयत, औहाम से वह परदे में छुपा है। बाज़ लोग कहते हैं इलाहुन के मानी हैं बलन्द व बरतर लाहा (ज़ाद) बलन्द हो गया इसी मानी के एतबार से सूरज को इलाहतुन कहा गया है बाज़ उलमा इस बात के काएल हैं इलाहुन के मानी हैं इजाद की कुदरत रखने वाला। बाज़ ने इसके मानी सरदार बयान किये हैं।

अर्रहमान् रहीम के मानी में बाज़ उलमा का यह ख़याल है कि यह दोनों अल्फ़ाज़ हम मआनी हैं यानी रहमत, रहमान और रहीम दोनों सिफ़ाते ज़ातिया हैं गोया रहमते सिफ़त ज़ाती है। बाज़ उलमा कहते हैं कि रहमत के मानी मुस्तहिके अज़ाब को अज़ाब न देना और जो मुस्तहिके ख़ैर



न हो उसके साथ भलाई करने के हैं इस लिहाज से यह दोनों असमाए सिफात फेअल में से हैं यानी सिफते फेलिया (सिफते मुशब्बा) बाज उलमा ने दोनों में फर्क बयान किया है चुनान्चे वह कहते हैं कि अर्रहमान मुबालगा का सीगा है जिसके मानी यह हैं कि उसकी रहमत हर चीज को अपने अन्दर समाए हुए है और रहीम का दर्जा रहमान से (मआनन) कम है। बाज उलमा कहते हैं कि अर्रहमान के मानी अपनी तमाम मखलूक पर मेहरबानी करने वाले के हैं ख्वाह वह मखलूक मोमिन हो या काफिर, ख्वाह नेक हो या बदकार, रहमत व मेहरबान यह है कि वह सब ही को रोजी देता है, अल्लाह तआला का इरशाद है: मेरी रहमत हर शइ को अपने अन्दर समोए हुए है और अर्रहीम के मानी हैं कि वह खास मोमिनो पर रहम करने वाला है चुनान्चे दुनिया में हिदायत व तौफीक और आखिरत में जन्नत और दीदार के इनामात मोमिनो के लिए मखसूस हैं। इस लिहाज से रहमान का लफज खास है और मानी आम और रहीम का लफज आम है और मानी खास। लफज रहमान का इतलाक अल्लाह के सिवा किसी और पर नहीं हो सकता इसलिए यह लफज खास है और चूंकि तमाम मखलूक को अल्लाह ही ने पैदा किया है और वही उसको रिज्क देता है, वही हर किस्म के नफा व नुकसान का मालिक है और उसकी रहमत तमाम मौजूदात के शामिले हाल है पस माअनी की इस हमागीरी के बाएस उसको रहमान कहते हैं लेकिन लफज रहीम मुशतरक है यानी दूसरो पर भी इसका इतलाक होता है इसलिए यह लफज आम है लेकिन इसके मानी मखसूस हैं यानी खास मेहरबानी और हिदायत की तौफीक। पस माअनी के लिहाज से यह खास हुआ।

हजरत इब्ने अब्बास फरमाते हैं कि यह दोनों असमा (रहमान व रहीम) दकीक हैं और एक दूसरे से दकीक तर। मुजाहिद फरमाते हैं कि दुनिया वालों पर मेहरबानी फरमाने के लिहाज से वह रहमान है और आखिरत वालों पर (करम व राहत फरमाने के बाइस) रहीम है। दुआ में या रहमानुदुनिया और या रहीमुल आखिरत कहा गया है। जहहाक कहते हैं अल्लाह आसमान वालों पर रहमान है उनको आसमानों में रखा और इताअत को उनकी गरदन का तौक बना दिया गुनाहों से उनको महफूज रखा और तमाम दुनियावी लज्जतों और खाने पीने से उनको दूर रखा, वह अर्रहीम जमीन वालों पर है कि उनके पास (हिदायत के लिए) पैगम्बरों को भेजा और किताबें उतारीं।

इकरमा का कौल है कि अल्लाह अर्रहमान है। एक ही हमागीर रहमत के साथ और रहीम सौ मुतफर्रिक रहमतों के साथ है। हजरत अबू हुरैरा रजी अल्लाहो अन्हो से मरवी है कि हुजूर ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह अज्जा व जल्ला की सौ रहमतें हैं उनमें से एक रहमत (बिला शुबा) उसने जमीन पर भेजी और उसे अपनी तमाम मखलूक में तकसीम फरमाया इसी एक रहमत के बाएस वह एक दूसरे पर मेहरबानी और शफकत करते हैं और रहमत के बाकी निन्नानवे हिस्से अपनी जात के लिए मखसूस फरमाए जिससे वह कयामत के दिन अपने बन्दों पर रहम फरमाएगा।

एक दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआला अपनी उस एक रहमत को अपनी बाकी निन्नानवे (हिस्से) रहमतों के साथ मिलाने वाला है और इस तरह अपनी सौ रहमतें पूरी करके कयामत के दिन उनके जरिये अपने बन्दों पर रहम फरमाएगा। रहमान वह है कि जब उससे कोई मांगे वह अता फरमाए और रहीम वह है जब उससे न मांगा जाए तो गजब फरमाए। हजरत अबू हुरैरा से मरवी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो अल्लाह तआला से नहीं मांगता वह उसपर गजब फरमाता है।



अर्रहमान वह है जो नेमतों के साथ मेहरबानी फ़रमाता है, अल्लाह रहीम है जिसने तकालीफ़ को रोका और दफ़ा फ़रमाया, अल्लाह रहमान है उसने दोज़ख़ से बचाया। अल्लाह का इरशाद है: और तुम आतिशे जहन्नम के किनारे पर थे तो उसने तुमको उससे नजात बख़्शी। उसी नेमत की तरफ़ इशारा है और अर्रहीम वह है जो जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। जैसा कि खुद फ़रमाया: तुम जन्नत में सलामती और अमन के साथ दाख़िल हो जाओ। अल्लाह तआला रहमान है उस की रहमत जानों पर है और रहीम है कि उसकी रहमत दिलों पर है।

अल्लाह रहमान है वह मुसीबतों को दूर करता है रहीम है कि गुनाहों को माफ़ फ़रमाता है, अल्लाह रहमान है कि सही और ग़लत रास्ता वाज़ेह कर देता है और इस एतबार से रहीम है कि (ग़लत रास्ता से) बचाता है और (राहे रास्त पर चलने की) तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है, अल्लाह रहमान है गुनाह माफ़ फ़रमाता है ख़्वाह वह कबीरा ही क्यों न हों, ताअतों को कबूल फ़रमाता है ख़्वाह ख़ालिस न हों इसलिए कि इस एतबार से रहीम है। अल्लाह रहमान है कि वह मआश की दुरुस्ती के अस्बाब फ़राहम करता है और रहीम है कि आख़िरत को दूरस्त करने के ज़राये इनायत करता है। रहमान वह है जो रहम फ़रमाता है और दुख, दर्द और शर को दूर करने की कुदरत रखता है, रहीम वह है जो रिज़क़ देता है और दूसरों को खाना खिलाता है और खुद नहीं खाता, बिला शुबा अल्लाह तआला ही रिज़क़ देने वाला और मज़बूत कुव्वत का मालिक है। वह उस पर भी रहमान है जो उसका मुनकिर है और उसपर भी रहीम है जो उसको न माने, वह उस पर भी रहमान है जो उसकी न शुक्री करे और वह उसपर भी रहीम है जो उसका शुक्र बजा लाए, वह उसपर भी रहमान है जो दूसरे को उसका शरीक ठहराए, मुशरिक पर भी रहम फ़रमाता है और उसपर भी रहीम है जो उसके मालिक होने का काएल हो।

## बिस्मिल्लाह के फ़ाइदे

तुम बिस्मिल्लाह पढ़ा करो ताकि अल्लाह की तरफ़ से गुनाहों की माफी पाओ, यह फ़ाइदा तो लोगों की ज़बानी (नवेद मगफ़िरत व माफी) सुनने पर है जब हक़ तआला से यह सुनोगे तो क्या कुछ फ़ाइदा होगा। तुम्हारा यह सुनना तो इस हाल में है कि ग़मे दुनिया मौजूद है लेकिन उस वक़्त यह सुनना कैसा होगा जब वह खुद साकी होगा। अब तो तुम्हारा यह सुनना वास्ते के साथ है लेकिन बग़ैर वास्ता के सुनना कैसा होगा। तुम्हारा अब सुनना तो धोके के घर में सुनना है लेकिन वह सुनना क्या होगा जब तुम सरवर (दारुल आख़िरत) के घर में सुनोगे तो, अब तो तुम्हारा यह सुनना शैतान के घर में है लेकिन तुम्हारा वह सुनना कैसा होगा जो रहमान के साथ में होगा। तुम्हारा अब सुनना तो एक कमज़ोर बन्दे से सुनना है लेकिन तुम्हारा यह सुनना उस वक़्त कैसा होगा जो बादशाह रब्बुल जलील की तरफ़ से होगा, यह तो सिर्फ़ ख़बर की लज़ज़त है तो नज़र की लज़ज़त कैसी होगी, यह तो मुजाहदे की लज़ज़त है तो मुशाहदे की लज़ज़त कैसी होगी? यह बयान की लज़ज़त है तो ईमान की लज़ज़त कैसी होगी? यह मगाइबा (ग़याब) की लज़ज़त है तो अन्दाज़ा करो कि हुज़ूरी की लज़ज़त कैसी होगी।

## बिस्मिल्लाह की मज़ीद तशरीह

तुम उस अल्लाह का नाम लो जो अज़दाद से پاک है, उस खुदा के नाम के साथ शुरू करो



जो शरीकों से मोनज्जा है, उस खुदा का नाम ले कर जो औलाद के बनाने से पाक है, उस खुदा के नाम की बरकत से जिसने नूरों को रौशनी बख्शी, उस खुदा के नाम की मदद से जिसने नेक लोगों को इज्जत बख्शी, उस खुदा का नाम लो जिसने तमाम अंदाजे मुकर्रर फरमाए दिलों और आंखों को रौशनी अता की और उस खुदा के नाम से जो नेकों के दिलों में सहर के वक्त जलवा अंदाज होता है, उस खुदा के नाम की बरकत से जिसने दोस्तों को अपने असरार का इल्म अता फरमाया। उनके कुलूब को अनवार से ढांप लिया और उनके दिलों में अपने राज बतौर अमानत रखे, उनके कुलूब से खतरात दूर किए और गैरों की बन्दगी से महफूज व मामून रखा, उनसे बोझों, बन्दिशों और गुनाहों के अम्बारों को दूर रखा क्योंकि अल्लाह तआला अजल ही से मेहरबानी करने और मफिरत चाहने वालों के गुनाह माफ कर देने की सिफत के साथ मुत्तसिफ है।

कहो बिस्मिल्लाह उसका नाम है जिसने दरिया जारी किये, दरख्त उगाए, यह उसका नाम है जिसने इताअत शिआर बन्दों के साथ शहरों को आबाद किया और उन बन्दों को पहाड़ों की तरह औताद (मीखें) बनाया जिन की वजह से जमीन अपने सुक्कान के लिए फर्श की तरह हो गई, यह लोग चालीस बरगुजीदा अबदाल हैं यह अल्लाह रब्बुल इज्जत की पाकी बयान करते हैं। उसकी जात में किसी के शरीक और उसका हमसर होने से (यह अबदाल अल्लाह की पाकी बयान करते हैं और उसके शरीक और हमसर होने की नफी करत हैं) यह अबदाल दुनिया में बादशाह हैं और कयामत के दिन सिफारिश करने वाले हैं इसलिए कि अल्लाह तआला ने उन को जहान की तदबीर करने और बन्दों पर लुफ्ते करम करने के लिए पैदा किया है।

## बिस्मिल्लाह की बरकत

बिस्मिल्लाह अपने जाकिरों का जखीरा है, ताकतवर लोगों के लिए इज्जत है कमजोरों के लिए मलजा व मावा, महबूबों के लिए नूर और मुशताकों के लिए समन्दर है। बिस्मिल्लाह अरवाह की राहत है और जिस्मों की नजात है, सीनों का नूर है और तमाम कामों की दुरुस्ती का निजाम है, बिस्मिल्लाह अहले ऐतमाद का ताज और अहले विसाल का चिराग है। आशिकों को बिस्मिल्लाह सारे जहां से बे नियाज कर देने वाली है। बिस्मिल्लाह उस जात का नाम है जिसने कुछ बन्दों को इज्जत और कुछ बन्दों को जिल्लत दी। यह उसका नाम है जिसने अपने दुश्मनों के लिए जहन्नम को मुन्तजिर बनाया और अपने दोस्तों के लिए अपने दीदार का वादा फरमाया यह उसका नाम है जो वाहिद है और गिन्ती से खारिज है। यह उसका नाम है जो बाकी है और बे गायत (निहायत) है, बिस्मिल्लाह उसका नाम है जो बगैर किसी सहारे के काइम है।

बिस्मिल्लाह हर सूरत का आगाज है यह उसका नाम है जिसके (जिक्र की) बदौलत खल्वतें पुर कैफ हो जाती हैं, उसका नाम है जिसके नाम से नमाजें तमाम होती हैं, उसका नाम है जिस पर सबको हुस्ने ज़न है, उसका नाम है जिसके लिए आंखें बेदार रहती हैं, उसका नाम है जिस के कुन फरमाने से वह चीज़ फौरन (मौजूद) हो जाती है। बिस्मिल्लाह उसका नाम है जो लम्स से मोनज्जा व पाक है, उसका नाम है जो लोगों से बे नियाज है, उसका नाम है जो कयास से बरतर है। लिहाजा तुम बिस्मिल्लाह पढ़ो। हर हर्फ के बदले एक एक हजार अज्र तुम को मिलेंगे और तुम्हारे सबके सब गुनाह मिटा दिए जायेंगे जिसने उसको अपनी ज़बान से कहा दुनिया उस की गवाह बनती है, जिसने उसे अपने दिल में कहा आखिरत उसकी शाहिद होती है और जिसने



उसको पोशीदा तौर पर कहा मौला (अज्जा व जल्ला) उसका गवाह होता है, उस में वह हलावत है कि पढ़ने वाले का दहन शीरीं बन जाता है, उसके पढ़ने से दिल में कोई ग़म बाकी नहीं रहता, सब नेमतें इस कलिमा पर तमाम हो गईं, जलाल और जमाल दोनों बिस्मिल्लाह में एकजा हैं, लफ़्ज़ बिस्मिल्लाह जलाल अन्दर जलाल है और अर्रहमानिर्हीम जमाल दर जमाल है। जिसने जलाल का मुशाहिदा किया फ़ना हो गया और जिसने जमाल का नज़ारा किया जिन्दा हो गया। बिस्मिल्लाह ऐसा कलिमा है जो कुदरत और रहमत दोनों का जामेअ है उसमें कुदरत भी है और रहमत भी। कुदरत ने मुतीअ व फ़रमांबरदार बन्दों को जमा किया और रहमत ने गुनहगारों के गुनाह धो डाले।

अल्लाह तआला का हुक्म है कि बिस्मिल्लाह पढ़ो। गोया वह फ़रमाता है कि जिसने मेरी ताअत की वह मेरी हुजूरी में बारयाब हो गया और नूरे ताअत के बदौलत उसको मुआइना हासिल होता है और जिसको मुआइना (की दौलत) नसीब हो वह, बयान से बे नियाज़ हो जाता है, उस का दिल असरार और उलूमे अदयान का ज़र्फ़ बन जाता है, जिसने अपने महबूब का विसाल पाया वह अशकबारी और इज़तेरार से आज़ाद हो गया, जिसने नज़र से उसके जमाल का मुशाहिदा किया वह ख़बर (आगाही) से बे परवा हो गया, जो बारगाहे समदियत तक पहुँच गया वह रन्ज व ग़म से नजात पा गया। जिसको ज्ञाते अक़दस का कुर्ब हासिल हो गया उसको फिराक़ व जुदाई से नजात मिल गई और जिसने दौलते दीदार पाई वह शकावत व बद बख़्ती से मसऊन व मामून हो गया।

## बिस्मिल्लाह की सिफ़त

तुम बिस्मिल्लाह कहो क्योंकि बा मख़लूक को पैदा करने वाले बारियुन (अल बराया) की है, सीन ख़ताओं की परदा पोशी करने वाले (सत्तारख़ ख़ताया) और मीम नेमत व अता के साथ एहसान करने वाले (मन्नाने अ अताया)। एक कौल है कि बा ओलाद से बरी होती है, सीन आवाज़ों (पकारों) के सुनने वाले और मीम दुआओं के क़बूल करने वाले से मुराद है। मीम की तशरीह व तसरीह में कहा गया है कि मैं बाकी (ग़ैर फ़ानी) हूँ, मेरी तरफ़ देखो तुम दूसरों को पिलाओ मैं तुम्हारा साकी हूँ तुम को पिलाऊंगा तुम दूसरों को खिलाओ मैं तुम्हारा मुतईम हूँ तुम को खिलाऊंगा।

एक कौल है कि बा से बका ताएबीन (तौबा करने वालों की गिरया व ज़ारी) और सीन से सुजूदुल आबेदीन (इबादत करने वालों के सज्दे) और मीम से मुज़नेबून (गुनाहगारों) की उज़्र ख़्वाही है यह भी कहा गया है कि बा बलाया की मीम मोअती और सीन सातिर की है यानी अल्लाह तआला मसाइब को दूर करने वाला, रहमान, बख़्शीशें और इनामात देने वाला और रहीम गुनाहों को छुपाने वाला है। यह भी कहा गया है कि अल्लाह अहले इरफ़ान के लिए अल्लाह है और इबादत गुज़ार बन्दों के लिए रहमान और गुनहगारों के लिए रहीम है।

अल्लाह वह है जिसने तुमको पैदा किया और वह कितना अच्छा पैदा करने वाला है, अर्रहमान है जिसने तुमको रोज़ी दी और वह कितना अच्छा रोज़ी देने वाला है। अर्रहीम है जो तुम्हारे गुनाहों को बख़्शने वाला है और वह कितना अच्छा बख़्शिाश करने वाला है।

यह भी कहा गया है कि अल्लाह वह है जो भरपूर नेमतों का देने वाला है वह रहमान व रहीम



है जूद व अता करता है वह अल्लाह है जो माओं के पेटों से हमको बाहर निकालता है, वह रहमान है कब्रों से बाहर निकाल कर लाएगा, रहीम है तारीकी से निकाल कर रौशनी की तरफ लाता है।

## शैतान की मुखालफ़त रहमते इलाही

अल्लाह तआला उस शख्स पर रहम फ़रमाए जिसने शैतान के खिलाफ़ किया और गुनाहों से दूर रहा वह दोज़ख़ से बचा, अल्लाह तआला उसको नेकियों की मज़ीद हिम्मत दे और रहमान के ज़िक्र में हमेशा उसको मशगूल व मसरूफ़ रखे क्योंकि उसने बिस्मिल्लाह कहा है।

अल्लाह तआला उस शख्स पर रहम फ़रमाए जिसने अल्लाह को मज़बूत पकड़ा उसकी तरफ़ रुजू हुआ, उसने अल्लाह पर तवक्कुल किया और उसके ज़िक्र में मशगूल रहा क्योंकि उसने बिस्मिल्लाह पढ़ी है, अल्लाह तआला उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जिसने दुनिया से नफ़रत की और आख़िरत का शाइक़ रहा और तकलीफ़ों पर सब्र और अल्लाह की नेमतों पर शुक्र अदा किया, मौला के ज़िक्र में हमेशा महव रहा क्योंकि उसने बिस्मिल्लाह कहा है।

तबरीक व तहनीयत है उस बन्दे के लिए जिसने शैतान से परहेज किया और कुव्वते ला यमूत पर क़नाअत की (बक़्दर ज़रूरत रोज़ी हासिल करने पर) और उस खुदा के ज़िक्र में मसरूफ़ व मशगूल रहा जो हय्यो ला यमूत है, लिहाज़ा तुम भी बिस्मिल्लाह कहो।

## मजलिस सोम

## व तू बू इलल्लाहि जमीअन

### की तशरीह व तफ़सीर

### तौबा के मानी

अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह की तरफ़ रुजू हो ताकि तुम फ़लाह पाओ। यह ख़िताब तौबा करने के बारे में आम है। लुगवी एतबार से तौबा के मानी रुजू करना है। चुनान्वे कहते हैं ताब फ़लां मिन कज़ा यानी फ़लां शख्स इस बात से बाज़ आ गया, इस्तेलाहे शरअ में तौबा हर शरई मज़मूम से बाज़ रह कर शरई महमूद की तरफ़ पलट आने का नाम है यानी जो चीज़ शरअन बुरी है उसको छोड़ कर जो चीज़ शरअन अच्छी और पसन्दीदा है उसकी तरफ़ रुजू करना तौबा है।

इस बात का यकीन रखना कि गुनाह और नाफ़रमानियां हलाकत में डालने वाली, अल्लाह और जन्नत से दूर करने वाली हैं। नीज़ गुनाहों को तर्क करना जो अल्लाह और जन्नत से कुरबत का मौजिब है, तौबा है गोया अल्लाह तआला हुक्म देता है कि ख़्वाहिशात परस्ती न करो हज़ा व हवस को छोड़कर मेरी तरफ़ लौटो, उम्मीद रखो कि आख़िरत में मेरे पास मुराद पाओगे, हमेशा रहने वाले घर में मेरी नेमतों के अन्दर तुम हमेशा रहोगे फ़लाह व कामयाबी नजात से हमकिनार हो कर मेरी रहमत के साथ जन्नत के ऐसे बलन्द दर्जों पर जिनको नेको कारो के लिए तैयार



किया गया है, फायज़ होगे, यह खिताब अल्लाह तआला ने मुसलमानों से खुसूसियत के साथ फरमाया है।

ऐ ईमान वालों! खालिस तौबा के साथ अल्लाह की तरफ रुजू हो जाओ, करीब है कि तुम्हारा सब तुम्हारे गुनाहों को तुम से बदल दे (माफ़ फरमा दे) और तुमको उन बागों में भेज दे जिनके नीचे नहरें रवां हैं।

नसूह के मानी खालिस के हैं तौबतन्नसूह का मतलब यह है कि तुम अल्लाह की तरफ इस तरह रुजू हो कि वह मक्र व फरेब के शायेबा से खाली हो। नसूह नसाह से माखूज है जिसके मानी धागे के हैं पस तौबतन्नसूह वह खालिस तौबा है जो न किसी दूसरी चीज़ से वाबस्ता हो और न कोई दूसरी चीज़ उससे मुताल्लिक हो, बन्दा ताअत पर काएम हो जाये, गुनाह की तरफ माएल न हो खुलूस के साथ अल्लाह की तरफ माएल हो जाए जिस तरह कि (पहले) उसने खालिसन हवाए नफ़स की खातिर गुनाह का इर्तिकाब किया था यहां तक कि (उस हाल में) उस का खातमा हो जाए। ब इजमाए उम्मत तमाम गुनाहों से तौबा करने वाजिब है, अल्लाह तआला ने गुनाहों से तौबा करने वालों का जिक्र मुतअदिद जगह (कुरआन हकीम में) फरमाया है: अल्लाह तौबा करने वालों को पसन्द फरमाता है और गुनाहों से पाक रहने वालों को पसन्द फरमाता है। इस आयत में यह सराहत फरमाई है कि तौबा करने वालों को तौबा करने और अल्लाह से दूर कर देने वाले गुनाहों से पाक होने की वजह से अल्लाह उनको पसन्द फरमाता है। एक और जगह इरशाद फरमाया है:

वह तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द बजा लाने वाले, रुजू करने वाले, रुकूअ करने वाले, सजदा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले, बुराई से मना करने वाले, हुदूदे इलाही की हिफाज़त करने वाले हैं, मोमिनों को आप खुश खबरी सुना दीजिए।

इस आयत में अल्लाह तआला ने तौबा करने वालों का जिक्र किया और फिर उनके आला और उम्दा औसाफ़ का जिक्र फरमाया कि तौबा करने वाले वह हैं जो इन खुसूसियात और औसाफ़ के हामिल हैं और बशरुल मोमिनीन फरमा कर बताया कि जब बन्दा उन औसाफ़ का हामिल हो जाता है तो वह ईमान और बशारत का मुस्तहिक हो गया।

## गुनाहे सगीरा और कबीरा

कौन से गुनाह सगीरा और कौन से गुनाह कबीरा हैं जिन गुनाहों से तौबा बरने का हुक्म दिया गया है उनमें सगीरा भी हैं और कबीरा भी। कौन कौन से गुनाह कबाइर में शुमार होते हैं उनकी तादाद की तअय्युन में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ उलमा ने तीन, बाज़ के चार, किसी ने सात, किसी ने नौ और किसी ने उनकी तादाद ग्यारह बताई है। हज़रत इब्ने अब्बास तक जब हज़रत उमर का यह कौल पहुंचा कि कबाइर सिर्फ़ सात हैं तो आपने फरमाया कि सात कहने से तो सत्तर कहना बेहतर था। आप फरमाया करते थे कि अल्लाह तआला ने जिसकी मुमानियत फरमा दी है वह कबीरा है। बाज़ उलमा ने कहा है कि कबीरा की तादाद मुबहम है उनकी सही तादाद को कोई नहीं जानता, उसी तरह जैसे कि लैलतुलकदर और जुमा के दिन की खास मकबूल साअतों को कोई नहीं जानता (इसमें राज़ यह है कि) ताकि लोग कोशिश और हुसूले



तलब में ज्यादा से ज्यादा रागिब हों यही हाल कबाइर का है (कि सही तादाद नहीं बताई गयी) ताकि लोग तमाम गुनाहों से बचने के लिए ज्यादा सख्ती से काम लें।

बाज का कौल है कि हर वह गुनाह जिसकी सज़ा में दोजख की वईद है वह कबीरा है, बाज का कौल है कि कबीरा वह गुनाह है जिसकी दुनयवी सज़ा (हद्दे शरई) मुकरर कर दी गई है। बाज उलमा ने कहा है कि कबाइर सतरह हैं उनमें चार का ताल्लुक दिल से है (1)शिक (2)गुनाह पर जमे रहना (3)खुदा की रहमत से मायूसी (4)अल्लाह ने जो ढील और छूट दे रखी है उससे बे खौफ बन जाना। चार का ताल्लुक ज़बान से है यानी झूठी गवाही देना, पाक दामन पर जिना की तोहमत लगाना (ख्वाह मर्द हो या औरत) झूठी कसम खाना जिसकी वजह से हक को बातिल और बातिल को हक करार दिया जाये या उस झूठी कसम की वजह से किसी मुसलमान का माल मारा जाए (ख्वाह वह बकदर एक मिसवाक ही क्यों न हो) चौथे जादू, तीन कबाइर का ताल्लुक पेट से है शराब और दूसरी नशा आवर चीजें पीना। यतीम का माल बगैर हक के खाना, दानिस्ता और जान बूझ कर सूद खाना, दो का ताल्लुक उज्हे मखसूस से है। जिना और लिवातत (फेअल गैर वज़अ फितरी) दो का ताल्लुक हाथों से है कत्ल करना और चोरी करना। एक का ताल्लुक पांव से है। जिहाद मे दुशमन के मुकाबले से भागना (एक का दो के मुकाबले से और दस का बीस के मुकाबिल से, सौ का दो सौ के मुकाबले से फरार करना) एक गुनाह ऐसा है जिसका ताल्लुक तमाम बदन से है, मां बाप की नाफरमानी करना (हुकू के वालदैन् से रुगरदानी) वालदैन् के हुकूक यह हैं कि जब वह तुम्हारे एतमाद पर कसम खा लें तो तुम उनकी कसम को नीचा न करो, अगर वह तुमको गाली दे तो तुम उसके बदला में उनको न मारो। अगर वह तुम से कुछ मांगें तो तुम देने से इंकार करो अगर वह भूके हों और तुम से खाना मांगे तो तुम उनको न खिलाओ यह तमाम बातें वालदैन् के हुकूक से रुगरदानी और उनकी अदाएगी से फरार है।

## सगीरा गुनाह

### सगाएर

गुनाहे सगीरा बेशुमार हैं इनकी शिनाख्त और इनकी तादाद के इज़हार का कोई तरीका नहीं है सिर्फ शरई शहादत और बसीरत से इनको शिनाख्त किया जा सकता है। शरअ का मकसद तो यही है कि इन्सान का दिल गुनाहों से बाज रह कर मुतवज्जेह इललल्लाह हो जाए और अल्लाह तआला का कुर्ब उसे हासिल हो। अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है: जाहिरी और बातिनी गुनाह छोड़ दो।

मन्दर्जा जैल गुनाहे सगीरा में शुमार होते हैं किसी खूबरु अजनबी औरत या मर्द की तरफ (जिन्सी तहरीक के तहत) देखना, उसका बोसा लेना, उसके साथ लेटना मगर जिमअ न करना, मुसलमान भाई को गाली देना और तोहमते जिना के अलावा किसी किस्म की और शर्म व आर दिलाने वाली बात कहना, मारना, गीबत करना, चुगली खाना, झूठ बोलना, इसके अलावा और ऐसी ही बहुत सी बातें सगीरा गुनाह में शुमार होती हैं।

अगर मोमिन कबीरा गुनाहों से तौबा कर लेता है तो सगीरा गुनाह उसके जिम्न में आ जाते हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है: अगर तुम गुनाहे कबीरा से इजतेनाब करोगे तो तुम्हारी छोटी



बुराईयां (सगीरा गुनाह) हम खुद ही माफ़ कर देंगे।

लेकिन माफी के इस इरशाद से किसी को लालच में न आना चाहिए बल्कि तमाम सगाएर व कबाएर से तौबा करना चाहिए। एक शायर का कौल है—वह जो छोटे और बड़े गुनाहों से पाक हो गया तो यह तक्वा और इस्तेक़ामते दीनी में शुमार होगा।

और इस तरह मोहतात रह कर जैसे ख़ारदार ज़मीन पर चलने वाला होता है तेरे लिये यही बेहतर है कि तुझको जो कांटा यानी गुनाह ज़िन्दगी की राह में नज़र आए उससे परहेज़ करे। तू सगीरा गुनाहों को हकीर न समझ बेशक पहाड़ पत्थरियों से ही बनते हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि एक मैदान में जहां न लकड़ियां मौजूद थीं और न कोई दूसरी चीज़ (लक़ व दक़ चटियल मैदान था) वहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने असहाब के साथ फ़रोक़श हुए। हुज़ूर वाला ने लकड़ियां जमा करने का हुक्म दिया। सहाबा कराम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह हमें लकड़ियां तो नज़र ही नहीं आती। फ़रमाया किसी चीज़ को हकीर न जानो जो चीज़ मिले उसे ले आओ चुनांचे सहाबा कराम इधर उधर गए और कुछ न कुछ उठा लाए और एक जगह जमा कर दिया चुनांचे एक बड़ा ढेर हो गया। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुमको मालूम नहीं कि यही हाल उस ख़ैर व शर का है जिसको हकीर समझा जाता है, छोटा छोटे से और बड़ा बड़े से मिल कर और ख़ैर ख़ैर से, शर शर से मिल कर एक अंबार हो जाता है।

कहा गया है कि बन्दा जब गुनाहों को छोटा (और हकीर) जानता है तो वह अल्लाह के नज़दीक बड़ा होता है और बन्दा उसको बड़ा जानता है तो वह अल्लाह के नज़दीक छोटा होता है, बन्दए मोमिन का गुनाहे सगीरा को गुनाहे अज़ीम (गुनाहे कबीरा) जानना उसके ईमान के बड़े होने और मारफ़ते इलाही से ज़्यादा करीब होने के बाइस होता है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं: मोमिन अपने गुनाह को अपने ऊपर पहाड़ की तरह समझता है उसको डर होता है कि वह कहीं उसके ऊपर गिर न पड़े और मुनाफ़िक़ अपने गुनाह को नाक पर बैठी हुई मक्खी की तरह (हकीर) जानता है जिसको वह हाथ से उड़ा देता है, बाज़ उलमा ने कहा है कि यह ना काबिले माफी गुनाह है।

इन्सान का यह कौल कि काश मेरा अमल ऐसा ही होता (गुनाहे सगीरा की तरह) ऐसी बात कहना आदमी के ज़ोअफ़े ईमान, मारफ़त की कमी और अल्लाह तआला की अज़मत को न जानने की दलील है। अगर उसको अल्लाह तआला की अज़मत का इल्म (कुछ भी) होता तो वह छोटे (गुनाह) को बड़ा और हकीर को अज़ीम जानता, अल्लाह तआला ने किसी पैग़म्बर (अलैमिस्सलाम) के पास वही भेजी कि "हदिया की कमी का ख़्याल न करो बल्कि उसके भेजने वाले की अज़मत की तरफ़ देखो", तुम गुनाह के मामूली और छोटे होने को न देखो बल्कि जिस के सामने तुमने गुनाह किया है उसकी अज़मत का लिहाज़ करो इसी लिये कहा गया है कि जिसकी मंज़िलत और जिसका मरतबा बारगाहे इलाही में ज़्यादा वह किसी गुनाह को हकीर और छोटा नहीं समझता बल्कि हर उस अमल को जिससे अल्लाह तआला की हुक्म की मुख़ालफ़त होती है, कबीरा समझता है।

बाज़ सहाबा कराम ने ताबेईन से फ़रमाया "जो गुनाह तुमको बाल से ज़्यादा बारीक (हकीर) नज़र आते हैं वह गुनाह हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में



पहाड़ की तरह हलाकत अंगेज नजर आते थे"। इसकी वजह यह थी कि उनको रसूलुल्लाह और बारगाहे इलाही से कुर्ब हासिल था। इसी तरह आलिम से जो गुनाह सरजद हो वह बड़ा समझा जाएगा और जाहिल अगर यही गुनाह करे तो उसको हकीर माना जाएगा। इसी तरह आसी से उन बातों (लगजिशों) में दर गुजर किया जाता है जिन बातों में आरिफ़ से दर गुजर नहीं की जाती। आरिफ़ और आसी के इल्म, मारफ़त और उनके मरातिब में जिस क़दर तफ़ावुत है उसके लिहाज़ से यह फ़र्क़ व इम्तियाज़ है।

## तौबा फ़र्जे ऐन है

लिहाज़ा तौबा हर शख्स के हक़ में फ़र्जे ऐन है क्योंकि कोई शख्स भी हाथ पांव के गुनाहों से ख़ाली नहीं (वह आलिम हो कि आमी) और अगर कोई उन आज्ञा के गुनाह से ख़ाली है तो दिल ही से उसने गुनाह किया होगा और अगर यह भी न होगा तो उन शैतानी वसवसों से ख़ाली न होगा जो अल्लाह याद गाफ़िल कर देने वाले होंगे और अगर ऐसा भी न होगा तो अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात की मारफ़त हासिल करने में कोताही और ग़फलत बरतने से तो कोई भी ख़ाली नहीं होगा। यह तमाम सूरतें अहले इमान के अहवाल व मक़ामत के एतबार से अला क़दर मरातिब हैं। लिहाज़ा हर हाल के लिये ताआत, गुनाह और हुदूद व शरायत जुदा जुदा हैं, उन्ही हुदूद की (जो जिसके लिये मोअय्यन हैं) पाबन्दीए ताआत व बन्दगी है और उनसे ग़फलत या उनकी मुख़ालफ़त गुनाह है। इसलिये हर शख्स तौबा का मोहताज है। यानी ज़रूरी है कि क़जरवी उसके अंदर पैदा हो गई है उससे लौट जाए और शरीअत ने जो सीधा रास्ता उसके लिये मुक़र्रर कर दिया है जो मक़ाम उसे अता हुआ है और जो मंज़िल उसके लिये बना दी गई है उसी की तरफ़ मुतवज्जेह हो। चूंकि लोगों के मरातिब मुख़तलिफ़ हैं इसलिये हर शख्स की तौबा जुदागाना है। यानी तौबा की ज़रूरत में तो फ़र्क़ नहीं अलबत्ता नौईयत व मिक्दार में फ़र्क़ है। अ़वाम की तौबा तो गुनाहों से होती (यानी वह गुनाहों से तौबा करते हैं) लेकिन ख़्वास की तौबा ग़फलत से होती है और ख़ासूल ख़ास बन्दों की तौबा है, अल्लाह अज़्ज व जल्ल के सिवा किसी और तरफ़ दिल के मैलान से (यानी मासिवा की तरफ़ दिल का मैलान तौबा का बाइस होता है) जैसा कि हज़रत जूनून मिस्री ने फ़रमाया कि अ़वाम गुनाहों से तौबा करते हैं और ख़्वास ग़फलत से। हज़रत अबूल हसन नूरी फ़रमाते हैं कि तौबा यह है कि अल्लाह अज़्ज व जल्ल के अलावा हर चीज़ से तौबा करे। पस तौबा करने वालों के माबैन फ़र्क़ व इम्तियाज़ है कुछ तो गुनाहों से तौबा करते हैं और कुछ ताएबीन ऐसे हैं जो अपने हसनात (नेकियों) के देखने से तौबा करते हैं (यानी अपनी नेकियों का इज़हार व एतबार नहीं करते) और कुछ बन्दे ऐसे हैं जो ग़ैर खुदा की तरफ़ तमानियते क़ल्ब से तौबा करते हैं (यानी मासिवा अल्लाह से अगर उनको तमानियते क़ल्ब और सुकून व आसूदगी मयस्सर होती है तो उनके लिये तौबा का मौजिब बन जाती है) ग़ौर करो कि अंबीया कराम अलैहिमुस्सलाम भी तौबा से मुस्तग़नी नहीं हैं, देखो! हदीस शरीफ़ में आया है हुज़ुरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मेरे क़ल्ब पर अब्र सा आ जाता है तो मैं दिन रात में अल्लाह अज़्ज व जल्ल से सत्तर मर्तबा इस्तिग़फ़ार करता हूँ।

## हज़रत आदम की तौबा

हज़रत आदम अलैहिरसलाम ने जब शज़रे ममनूआ से कुछ खाया (शज़रे ममनूआ का फल



खाया) और जिस्मे मुबारक से बहिश्ती लिबास उतर गया, आपका सतर खुल गया, सिर्फ ताज व कलगी सर पर बाकी रह गए। फ़रिश्तों ने उन दोनों को उतारने से हया की उस वक्त हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और उन्होंने आपके सर से ताज और पेशानी से कलगी (पट्टी) को उतार लिया फिर आपको और हव्वा को हुक्म हुआ कि तुम और हव्वा मेरे कुर्ब से दूर हो जाओ (यहां निकल जाओ) ना फ़रमान मेरे कुर्ब में नहीं रह सकता। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने शरमाते हुए हज़रत हव्वा की तरफ़ देखा और फ़रमाया कि यह पहली शामते गुनाह है, कुर्ब हबीब (की मंज़िल) से हमको निकाल दिया गया, आराम बख़्श ज़िन्दगी और खुशगवार ऐश के बाद, तज़र्रोअ और इलहाह व ज़ारी का मोहताज होना पड़ा है, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की यह हालत, अजीम सतवत, ज़बरदस्त फज़ीलत, इज़्ज़त व नाज़ और सबसे ज़्यादा मामून व महफूज़ जगह पर बलंद मरतबा रखने और अल्लाह तआला से बहुत ज़्यादा कुरबत रखने के बावजूद हुई। अगर कोई भी तौबा से मुसतगनी हो सकता था और दुश्मन (शैतान) की दुश्मनी, नफ़स की नहूसत, शैतान की मक्कारी और दसीसा कारी से महफूज़ रह सकता और मरतवा की बलंदी, इसमत व पाक दामनी और अल्लाह की कुरबत पर किसी को नाज़ हो सकता था तो यह बात हज़रत आदम के लिए सबसे ज़्यादा मौजू और मुनासिब थी (कि आप उन तमाम खुसूसियात व औसाफ़ से मुत्तसिफ़ थे) लेकिन बई हमा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम भी तौबा से बेनियाज़ न रह सके यहां तक उन्होंने तौबा की और अल्लाह तआला ने उनकी तौबा कबूल फ़रमा लिया। अल्लाह तआला का हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा के सिलसिला में इरशाद है

आदम ने अपने रब से कलिमाते तौबा सीखे तो रब ने उनकी तौबा कबूल फ़रमाई बेशक वही तौबा कबूल करने वाला मेहरबान है।

हज़रत इमाम हसन बिन अली मुर्तजा से मरवी है कि आप ने फ़रमाया जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कबूल फ़रमायी तो फ़रिश्तों ने उन्हें मुबारकबाद पेश की और जिब्रील, मिकाइल, इसराफ़ील (अलैहिमुस्सलाम) ने ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा! ऐ आदम! आप की आंखें ठंडी हो (दुआइया कलमात) कि अल्लाह तआला ने आप की तौबा कबूल फ़रमा ली। यह सुनकर आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: ऐ जिब्रील! इस तौबा के कबूल करने के बाद भी अगर बाज़ पुर्स हुई तो फिर मेरा ठिकाना नहीं। उसी वक्त वही नाज़िल हुई अल्लाह तआला ने फ़रमाया! ऐ आदम तुम ने अपनी नस्ल को मशक्कत, तकलीफ़ और तौबा का वारिस बनाया है तो अब कोई मुझे पुकारेगा मैं लब्बैक फ़रमाऊंगा जिस तरह मैंने तुम्हारे लिए लब्बैक कहा था और जो कोई मुझ से मांगेगा मैं उस अता में बुख़ल नहीं करूंगा क्योंकि मैं तो करीब हूं और कबूल करने वाला हूं। ऐ आदम! मैं गुनाहो से तौबा करने वालों को जन्नत में जमा करूंगा और उनको उनकी कब्रों से शादा व फ़रहां उठाऊंगा और उनको उन दुआओं की कबूलियत के बाइस (कब्रों से) शाद काम निकालूंगा।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का वाक़ेआ भी इसी तरह का है कि उनको अपनी आबरू बचाने के लिए ग़ैरत आई, काफ़िरो ने जब आप पर झुठलाया तो आप को उन पर सख़्त गुस्सा आया और आप की बददुआ से अल्लाह तआला ने तमाम अहले मशरिक व अहले मगरिब (तमाम दुनिया) को गर्क कर दिया, आप ही आदमे सानी थे, आप ही की नस्ल से यह इंसान (तमाम दुनिया में) फैले



क्योंकि जो लोग आप की कशती में डूबने से महफूज व मामून रहे उनमें से आप के तीनों फरजन्द साम, हाम, और याफिस के अलावा किसी और के औलाद नहीं हुई इस शान और मरतबा के बावजूद आप ने बारगाहे इलाही में इस तरह दुआ की थी।

ऐ मेरे रब! मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ कि मैं तुझ से ऐसी दरखास्त करूँ (ऐसा सवाल करूँ) जिसका मुझे इल्म न हो और अगर तूने मुझे न बख्शा और मुझ पर रहम न किया तो मैं ज़ियाकारों में रहूँगा।

हजरत इब्राहीम खलीलुल्लाह जलीलुल कद्र (पैगम्बर) थे। अल्लाह तआला ने उनको अपनी दोस्ती के लिए मुन्तखब फरमा लिया था उनको पैगम्बरो और नबियो का बाप बनाया। एक और रिवायत में आया है उनकी औलाद और औलाद की औलाद में चार हजार पैगम्बर हुए। अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया कि हमने उन की औलाद को बाकी रखा (हम ने उनकी औलाद को बाकी रहने वाला बनाया) यहां तक कि हमारे पैगम्बर सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हजरत मूसा, हजरत ईसा, हजरत दाऊद, हजरत सुलैमान भी उन्ही की औलाद में हैं। वह भी बड़े जलालते शान तौबा, इजहारें इज्ज और अल्लाह तआला के सामने एहतियाज से बेनियाज न थे चुनांचे हजरत इब्राहीम ने मुनाजात इस तरह की:

वह खुदा जिसने मुझे पैदा किया, वही मुझे रास्ता दिखाता है, वह खुदा मुझे खिलाता पिलाता है और जब बीमार हो जाता हूँ तो मुझे शिफा अता करता है और वह खुदा जो मुझे मौत देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा वही ज़ात जिससे मैं कयामत के दिन अपनी खताओं की बख्शिष का उम्मीद रखता हूँ।

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सिलसिला में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है (हजरत इब्राहीम के कौल को इस तरह बयान फरमाया है)

ऐ रब! हम को हमारी इबादत के तरीके सिखा और हम पर रहमत नाज़िल फरमा तू बड़ा तौबा करने वाला मेहरबान है।

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम एक जलीलुल कद्र नबी थे वह खुदा की हम कलामी से सरफराज हुए, अल्लाह तआला ने उनको अपने लिए पसन्द फरमाया और अपनी मोहब्बत उन पर इल्का फरमाई (आप के दिल में डाल दी) ज़ाहिरी और बातिनी मोजज़ों से आप की ताईद फरमायी थी। जैसे यदे बैज़ा (चमकता हुआ हाथ) असा (जो ज़मीन पर डालने से अज़दहा बन जाता था) और वह नौ निशानियां जो सहराए तीह में अता हुई जैसे रात में नूर का सुतून, मन व सलवा का नुज़ूल वगैरह यह वह मोजज़ात थे जो आप से पहले किसी नबी को अता नहीं हुए मगर आप ने इस तरह दुआ की थी:

इलाही! मुझे और मेरे भाई (हारून) को बख्श दे और हम को अपनी रहमत में दाखिल कर तू ही तौबा करने वाला सबसे ज़्यादा मेहरबान है।

हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम जलीलुल कद्र नबी थे और अल्लाह तआला ने उनको अजीम मुल्क अता फरमाया उनके दरबान तीस हजार अफराद थे और वह जब जुबूर की तिलावत फरमाते थे तो उनके सर पर परिन्दे सफ़ बस्ता रुक जाते थे और पानी अपनी खानी में बढ़ जाता था उनके गिर्द तमाम जिन्न व इन्स और दरिन्दे गज़िन्दे जानवर इस तरह परे के परे बांध कर



खड़े हो जाते थे और एक दूसरे को गजन्द न पहुंचाते, पहाड़ तस्बीह करने लगते उनकी जलालते शान और उनके मनसब की हिफाजत की खातिर आप की इज्जत व अफजाई के लिए और रोजी फराहम करने के लिए लोहे को नर्म कर दिया गया। इन तमाम कमालात के बावजूद आप सजदे में चालीस दिन तक रोये यहां तक की आप के आंसुओं की नमी से घास उग आयी तो अल्लाह तआला ने उन पर रहम फरमाया और उनकी तौबा कबूल करते हुए इरशादे बारी तआला हुआ।

तो हम ने उनको माफ़ कर दिया और यकीनन हमारे पास उन को तक़रूब और एक अच्छा मकामे रूजु हासिल था।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम अजीम तर बादशाह हुए हैं हवा भी उनकी फ़रमाबरदार थी एक महीना का रास्ता दिन के निस्फ़े अव्वल में और एक महीना की राह दिन के निस्फ़े आखिर में तय कर लिया करते थे और उनको ऐसी हुकूमत हासिल थी कि आप के बाद किसी को हासिल नहीं हुई इसके बावजूद जब उन पर उस लगज़िश की बिना पर अताब फरमाया गया। उनके इल्म के बग़ैर उनके घर में चालीस दिन तक एक मूर्ती की पूजा की गई तो चालीस रोज़ तक उनकी हुकूमत छीन ली गयी आप हैरान व परेशान हो कर जिधर को मुंह उठा भाग खड़े हुए हाथ फैला फैला कर सवाल करते थे मगर खाने को कुछ नहीं मिलता था जब वह कहते कि मैं सुलैमान बिन दाऊद हूं मुझे कुछ खाने को दो तो उनका सर फोड़ दिया जाता था, उन पर पत्थर फेंके जाते थे और तरह तरह की तौहीन की जाती, उनको झूठा समझा जाता था। एक रोज़ किसी के घर पर आप ने खाना मांगा तो धक्के दे कर वहां से निकाल दिये गये एक औरत ने आप के मुंह पर थूक दिया। रिवायत मे आया है कि एक जड़फ़ा पेशाब से भरा हुआ आबख़ोरा लेकर निकली और सुलैमान के सर से उसको फोड़ दिया। गर्ज कि उस कस मपुरसी में आप चालीस रोज़ तक रहे, आखिरकार अल्लाह तआला ने मछली के पेट से आप की अंगूठी बर आमद कर दी आपने उसको पहन लिया उस वक़्त परिन्दे आपके पास आकर खड़े हो गये तमाम जिन्नात, शयातीन और चरिन्दे दरिन्दे सब के सब आप के गिर्द हाज़िर हो गये आप की तज़लील करने वालों ने जब आप को पहचान लिया तो साबिका सुबकी आमेज़ सुलूक के माज़रत ख्वाह हुए आपने जवाब में फ़रमाया जो कुछ तुमने इससे पहले किया मैं उस अमल पर तुम को मलामत नहीं करता और अब जो कुछ कर रहे हो उसको भी अच्छा नहीं कहता यह सब कुछ मेरे रब की तरफ़ से था और उससे कुछ और चारए कार ही न था। पस अल्लाह तआला ने उनका मुल्क उनको वापस कर दिया और फिर अपनी पनाह में ले लिया।

जब ऐसे बड़े बड़े सरदारों, पेशवाओं और साहिबाने हक़म व वालियाने शरअ और अल्लाह के खुल्फ़ा (पैग़म्बरों) का यह हाल था तो बेचारे तेरी क्या हस्ती! ऐ मिस्कीन और तेरा क्या इतराना! तू धोके के घर में शैतान के पास है। तुझे तो दुश्मनों का लश्कर घेरे हुए हैं, कहीं हवाए नफ़स है तो कहीं शहवत, कहीं तमन्नाएं हैं, कहीं वसवसे, कहीं शैतान की मुलम्मअ कारी है लेकिन तो अपनी ज़ाहिरी इबादत, रोज़ा, नमाज़ और हज व ज़कात पर मगरूर, अपने आज्ञा को ज़ाहिरी डर से गुनाह से बाज़ रखने पर नाज़ां है, हालांकि तेरा बातिन, रुहानी इबादत से खाली है, और वह कामिल परहेज़गारी, तक्वा, जुहद, शक्र, सब्र व रज़ा बक़ज़ा, कनाअत, तवक्कुल, तसलीम, तफ़वीज़, यकीन, मा सिवा अल्लाह से दिल का बचाओ, दिल की सखावत, एहसान शनासी, हुस्ने



गुनियतुतालिबीन

नीयत, हुसने सुलूक, हुसने ज़न, हुसने अखलाक, हुसने सोहबत, हुसने मारफ़त, हुसने ताअत, सिदक व इखलास और दूसरे महासिन व फ़ज़ाईल अखलाक से खाली है। इसके बजाये तेरा बातिन बुरी ख़सलतों से भरपूर और ऐसे गुनाहों की जड़ों में जकड़ा हुआ है जिनसे हर किस्म की तकलीफ़, मसाएब और दुनिया व आखिरत में हलाक करने वाली बलाएं फूटती हैं यानी तुझे मुफ़लिसी और मोहताजी का डर है, अल्लाह तआला की तकदीर (तकदीरे इलाही) से बेज़ारी व नाराज़गी, कज़ा व कद्र पर एतराज़ और इस सिलसिले में तू खुदा पर बोहतान बांधता है, उसके वादों पर तुझे शक है। तेरा दिल खोट, कीना, हसद, धोका फरेब, जाह तलबी, खूद सताई, दुनिया में मंज़िलत की आरजू और उस पर खुशनूदी और इतमिनाने क़ल्ब। अल्लाह के बन्दों पर तकब्बुर करता है, इतराता है जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है: और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर तो उसे इज़्ज़त गुनाह के साथ पकड़ लेती है।

हद से ज़्यादा ग़ैज़ व ग़ज़ब, असबीयत (बेजा तरफ़दारी), आर (नक चड़ापन) सरदारी की मोहब्बत, बाहमी एनाद, अदावत, तमअ बुख़्ल, खौफ़, इतराना, शैखी बघारना, दौलतमन्दों की ताज़ीम, मुफ़लिसों की तहकीर, फख़्ख, दुनियावी हिस्स, मुबाहात, रिया, तअल्ला (शेखी) के बाइस हक़ से रूगरदानी, बेहुदा बातों में गौर व फ़िक्र, यावा गोई की कसरत, लाफ़ ज़नी, दूसरों के अहवाल की टोह, और अपनी हालत से बे ख़बरी (हालांकि खुद ख़बरी और अपनी हालत की निगहदस्त भी एक गू ना इबादत है) अपनी मिलकियत जताना, खुदा के हाकिमों में अपनी कुव्वत और अपने ज़ोर पर गौर करना, खल्के खुदा की हद से ज़्यादा (दुनियावी) मामलात में) ताज़ीम करना और उनकी खातिर से हक़ को छुपाना, अपने आमाल पर मगरूर होना, झूठी तारीफ़ से खुश होना, दूसरों की ऐब जूई करना, अपने ऐबों से चश्म पोशी, खुदा की नेमतों को फ़रामोश कर देना, हर नेमत की अपनी जात या किसी दूसरी मख़लूक से निसबत करना हालांकि तमाम मख़लूक अल्लाह ही अहकाम के ताबेअ और उसी की आलाए कार है, ज़ाहिर परस्ती करना उसूल और मुकर्ररा हुदूद के तहफ़्फ़ुज़ का ख़्याल न करना, बेजा काम करना, खुशी को पसन्द और ग़म से नफ़रत करना हालांकि ग़म व मलाल के बग़ैर दिल वीरान है जो दिल इससे आरी हैं उनमें हिकमत का फ़रोग और नूर इलाही बुझ जाता है, हालांकि हिकमते इलाही नूर की फ़रावानी से हक़ तआला की कुरबत हासिल होती है, अल्लाह से दिल का लगाव पैदा हो जाता है, तवज्जोह के साथ बग़ोशे होश उसका कलाम सुनते हैं और उसके अहकाम का फ़हम पैदा हो जाता है तमाम मख़लूक से बे नियाज़ी हासिल हो जाती है, सआदते दवाम और लाज़वाल नजात और कामिल नेमत मयस्सर आती है। यही हिज़्न व मलाल नफ़स की फ़रेब कारियों से बचाने में मुआविन व मददगार होता है क्योंकि जब नफ़स को ज़िल्लत पहुंचती है और बन्दा सब्र व शुक्र करता है तो उसको नेक बख़्ती हासिल होती है और अल्लाह तआला दोस्तों, उसके असफ़िया मुहिब्बीन, शोहदा, सालेहीन, उलमा व आरेफ़ीन और अंबीया अलैहिस्समुलाज के जुमरा में उसको महसूब किया जाता है।

मगर तेरा हाल तो यह है कि तेरा बातिन दीन से तआवुन में सुस्ती करता है और हामियाने दीन, औलीयाए कामिलीन को (जिनकी दावत खल्क के लिये हुज्जत है उनका अल्लाह की ताअत की तरफ़ बुलाना और खुदावन्द तआला के अज़ाब व अताब से डराना और उसकी रहमत व जन्नत के वादे को याद दिलाना उनका काम है) ज़ाहिर में अपना भाई करार देता है (भाई की



गुनियतुत्तालिबीन

तरह उनकी मोहब्बत का मुद्ई है) मगर बातिन में उनसे मुखालफत रखता है और उन नेक और मुकद्दस लोगों की मुवाफिकत से गुरेज करता है हालांकि उनके दिल अल्लाह की मोहब्बत से चूर हैं वह रहमान के दोस्त हैं और सारे जहां से मुंह मोड़ कर सिर्फ अल्लाह पर तवक्कुल किये बैठे हैं, शिदत के साथ मसाइब को बर्दाश्त करते हैं और इताअते इलाही से कभी गाफिल नहीं होते वह अल्लाह तआला के एहसान के मरहून और उसकी दोस्ती का खिलअत पहने हुए हैं। उनका नाम रब्बुल इज्जत के मुखलेसीन में तहरीर है, दुनिया में उमरा के दरवाजों का तवाफ करने, दुनियावी फितनों और कब्रों में बरजख के खौफ और उसके फिशार से मामून व मसऊन हैं, कयामत में उनको हिसाब देने की वहशत आर डर नहीं है वह जन्नत में नेमत व सुरु और ताजगी व फरहत के साथ हमेशा रहने वाले हैं।

तुझको दुनिया में जो माल व दौलत दिया गया, मुसीबतों से आजादी दी गई, तकलीफ के बदले तुझे राहत से नवाजा गया तो उस पर तू फरेब खूदा और मगरूर हो गया और अल्लाह तआला की उस बख्शिश, फजल व करम के छीने जाने का खौफ तेरे दिल से जाता रहा जो तुझसे पहले दूसरों को अता की गई थीं और उनसे मुनतकिल हो कर तेरे पास आई थीं यह माल व मनाल, फिरऔन, हामान, कारुन, शदाद, आद, कैसर व किसरा और दूसरे शाहाने माजी और उन अक्वाम को हासिल था जो सफहए हस्ती से मिट गई, यह दुनिया उनके लिये बाजीघए अतफाल बन गई थीं, उम्मीदों और आरजूओं ने फरेब में मुब्तला कर रखा था और शैतान ने अल्लाह तआला से उनको बरगश्ता कर रखा था यहां तक कि अल्लाह तआला का हुक्म आ गया और वह माल व मनाल जिससे उनकी दिलचस्पियां वाबस्ता थीं उनसे वापस ले लिया, नर्म बिस्तरों से उनका उठा दिया गया, बुलन्द ऐवानों और कोशकों से उनको निकाला मिल गया, वह इज्जत जो उनो हासिल थी उनसे छीन ली गई, वह मुल्क जिस पर उनको नाज था उनकी मिलकियत था उनसे ले लिया गया और वह अमानतें (माल व मनाले दुनिया) जो आरजी तौर पर उनके पास रखी गई थीं उनसे वापस ले ली गई, अल्लाह तरफ से उन्हें वह हुक्म पहुंचा जिसका उनको गुमान तक न था (यानी मौत का हुक्म) फिर उनकी बद आमालियां उनके सामने लाई गई और मामूली सी मामूली आमाल का, सख्ती के साथ मुहासबा किया गया, जिन तंग कैद खानों में वह दुनिया के अंदर दूसरों को बन्द किया करते थे उनसे भी ज्यादा तंग व तारीक कैद खानों में उनको बन्द किया गया और जो सख्ती दूसरों पर करते थे उससे कहीं ज्यादा तशद्दुद से उनको दो चार होना पड़ा और जो अजाब वह दूसरों को देते थे उससे भी ज्यादा सख्त उनको दिया गया, उनके हाथ पैरों को जंजीरों से जकड़ कर दोजख में जलाया गया, जकूम और थूहड़ उनको खाने दिया गया और फिर कचलहु और पीप पिलाया गया। क्या अहदे माजी के उन अफराद के अहवाल से तुझे कुछ भी इबरत हासिल नहीं हुई? क्या उन लोगों के अन्जाम से कुछ नसीहत हासिल नहीं हुई जिन को उनके घर वालों से अलग करके कैद कर दिया गया और तू उनके तरका का मालिक बन बैठा है और उनके बनाये हुए मकानों में आज आबाद है हालांकि उनके बानियों को उनसे निकाल बाहर कर दिया गया क्योंकि उनकी तामीर में उन्होंने जुल्म व सितम को अपना शेआर बनाया था, बहुत से लोगों की उन महल्लात में तौकीर की थी और बहुत से लोगों की तजलील, उनके रुख्सारों, पेटों और सरों पर पर मार मारी गयी थी, बहुत सी गरीब मुसीबत ज़दा और बद हाल आंखों को रुलाया था, बहुत से शरीफ मतमव्विल अफराद को उनका



सब कुछ छीन कर मोहताज बनाया था बहुत सी नयी रस्में जारी की थीं और मजमूम तरीके राएज किये थे, दानिशमन्दो और दानाओं को पस्त हौसला बनाया उनके दिल तोड़े और अपने से नाराज किया। बहुत से अहले दिल हज़रात अल्लाह के हुज़ूर में आधी आधी रात को उनके मज़ालिम की शिकायतें पेश कीं आह व जारी और फ़रयाद की ताकि अल्लाह तआला उन हज़रात की मुसीबतों को दूर कर दे चूँकि अहले दिल ने अपनी फ़रयाद सबसे बाख़बर हस्ती (खुदावन्दे दो जहाँ) से की थी इस लिए मुअज़्जज फरिश्तों ने (उनको हाथों हाथ) लिया और उस अजीमुल मरतबत शहंशाह और सबसे बड़े मुन्सिफ़ के सामने पेश कर दिया जो ज़ालिम नहीं।

अजीज व हकीम, ग़ालिब व बरतर रब्बुल इज़्ज़त ने उन दुनिया परस्तों के सीनों में जो कुछ था देख लिया इस लिए कि वह हर खुली और छुपी चीज़ से बाख़बर है इस लिए उन नेक बन्दों की शिकायत और फ़रियाद पर तवज्जोह फ़रमाई और उनकी दुआ को कबूल फ़रमाकर जवाब में फ़रमाया मैं ज़रूर ज़रूर तुम्हारी मदद करूंगा अगरचे वह मदद कुछ देर बाद हो। चुनांचे उन ज़ालिमों को उनके जुल्म की पादाश में ऐसी कटी हुई खेती की तरह कर दिया जिस का अब कहीं निशान भी बाकी नहीं। किसी कौम को गरकाब कर के हलाक किया गया, किसी को ज़मीन धंसा कर फ़ना के घाट उतार दिया गया और किसी पर संग बारी करके नीस्त व नाबूद कर दिया, किसी को क़त्ल करा के किसी कौम की सूरते मस्ख़ फ़रमाकर बरबाद कर दिया गया और किसी कौम की अक़ल व ख़िरद को इस तरह सल्ब किया गया कि उनके दिलों को पत्थर की तरह सख़्त कर दिया उन पर कुफ़्र की मोहरें लगा दीं और शिर्क और जुलमत के परदो से उनको सर बन्द कर दिया गया। चुनांचे उनके दिलों में न ईमान दाख़िल हुआ न इस्लाम के बाद उनको एक सख़्त मुआख़ज़ा ने पकड़ लिया और सख़्त तरीन पंजए अकूबत में लेकर ऐसी हलाकत खेज़ जगह पर झोंका गया जहाँ उनकी खालें झुलस जाती हैं फिर उसकी जगह दूसरी खाल बदल दी जाती है इस तरह वह हमेशा अज़ाब में, दहकती आग में मुसीबत में मुब्तला रहेंगे और उनको खाने को वह कुछ दिया जायेगा जो उनके हल्क़ से नीचे नहीं उतरेगा उनका वहाँ रहना दाइमी है, जब तक यह ज़मीन व आसमान मौजूद है वह न मरेंगे और न वहाँ से छुठकारा पायेंगे उनके अज़ाब की न कोई इन्तेहा है न उनकी हलाकत का कोई हद। दोज़ख में भी उनके लिए रुसवाई की ज़िन्दगी है उनकी तरफ़ खुशी का गुज़र न होगा, न वहाँ से उनकी सांस निकलेगी न रुह, उनकी सारी उम्मीदें टूट जायेंगी और उनका नाला व शेवन बेकार होगा, उनके दिल गले में फंसे होंगे और उनकी ज़बानों में बोलने की सकत नहीं होगी उनसे कहा जाएगा दूर रहो, बात न करो।

ऐ मिस्कीन! (ऐ मुख़ातिब) उस अज़ाब से डर! अगर तू उन जैसे आमाल का मुरतकिब है उनकी रविश पर चल रहा है, उनकी पैरवी करता है, कहीं ऐसा न हो कि तू बग़ैर तौबा के मर जाये और ग़फलत व फ़रेब में मुब्तला होकर उनकी हालत में पकड़ा जाये तो अपने नफ़्स के लिए तू कोई उज़र या जवाब पेश न कर सके। पस रिहाई, मुख़लिसी और नजात की तदबीर कर और आगे के लिए जादे राह तैयार कर और वरना वहीं अज़ाब व अकूबत जो उनके लिए है तेरे लिये भी होगी।



# तौबा की शर्तें

## और उनकी नोअय्यत

### तौबा की तीन शर्तें:

तौबा की तीन शर्तें हैं पहली शर्त अहकामे इलाही के खिलाफ आमाल पर शर्मिन्दगी व नदामत है नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है पशेमानी व नदामत तौबा है सही नदामत व पशेमानी की पहचान यह है कि दिल में रिक्कत पैदा हो और कसरत से आंसू बहाये जायें। इस लिए हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तौबा करने वालों की मजलिस में बैठो क्योंकि वह लोग नर्म दिल हैं।

दूसरी शर्त यह है कि हर आन और हर घड़ी गुनाहों से बाज़ रहा जाये। तीसरी शर्त है कि मआसी और ख़ताओं का दोबारा इरतेकाब न करे जिस तरह कि पहले मुरतकिब हुआ है। अब बकर वास्ती से जब तौबतुन नसूह के मानी दरयाफ़्त किये गये तो फरमाया कि गुनहगार पर गुनाह का कोई बैरुनी और अन्दरुनी असर बाकी न रहे जिसकी तौबा खालिस होती है और परवाह नहीं करता कि किस तरह शाम होती है और किस तरह सुबह। तौबतुन नसूह पशेमानी (गुनाह न करने का) पुख़्ता इरादा पैदा कर देती है, पुख़्ता इरादा और अज़्म इस बात का होता है कि जो गुनाह पहले किये हैं दोबारा उनमें मुब्तला न हो क्योंकि पशेमानी और नदामत से उसको मालूम होता है कि उसके और उसके रब के दर्मियान मआसी हाएल हो जाते हैं और यह गुनाह उसको उस आखिरत से बाज़ रखते हैं जो दुनिया की मोहब्बत और बुरे अन्जाम से महफूज़ है। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि गुनाह करने से बन्दा रिज़्के कसीर से महरूम हो जाता है चुनांचे जिना अफ़लास का मौजिब और सबब बनता है।

बाज़ आरिफ़ों ने फरमाया है जब तुम किसी में तग़य्युर, रिज़्क में तंगी, परेशानी और बदहाली देखो तो जान लो कि वह अपने मौला के हुक्म का बजा लाने वाला नहीं है बल्कि वह हवाए नफ़स का ताबेअ है। जब तुम देखो कि लोगों की दराज़ दस्ती ज़बान दराजी तुम पर गालिब है और ज़ालिमों का पंजा तुम्हारी जान व माल और औलाद पर मुसल्लत है तो समझ लो तुम ममनूआत के मुरतकिब, हुकूकुल इबाद में कोताही करने वाले, हुदूदे इलाही से तजावुज़ करने वाले और आदाब व तरीक़त को बरबाद करने वाले बन गये हो। जब तुम देखो कि अन्दोह व ग़म और हिज़्न व मलाल के बादल तुम्हारे दिलों पर मंडला रहे हैं (दिल ग़म में गिरफ़्तार हैं) तो जान लो कि तुम्हारे रब ने जो कज़ा व क़द्र मुक़द्दर फरमा दी थी तुम उससे एराज़ कर रहे हो और अल्लाह के वादे को झुठला रहे हो तुम को उस पर एतमाद नहीं है और जो तदबीर खुदा ने तुम्हारे और अपनी मख़लूक के लिए की है तुम उससे राज़ी नहीं हो तो जब तौबा करने वाला अपने हाल पर गौर व फ़िक्र करके जान लेता है तो वह उस पर पशेमान होता है।

पशेमानी और नदामत के मानी यह हैं कि महबूब के जुदा होने से उसके दिल को दुख पहुंचता है दिल से हूक उठती है और वह ग़मज़दा रह जाता है। इसी बिना पर उसका हिज़्न व



मलाल बढ़ता है और उसकी हसरत में इज्जाफा होता है वह बकसरत गिरया व जारी करता है उसके साथ ही वह इरादा कर लेता है फिर ऐसी हरकत (गुनाह) नहीं करेगा गुनाह ज़हर से ज्यादा हलाकत आफरीं है और वह हमला आवर दरिन्दे, जला देने वाली आग और टुकड़े टुकड़े कर देने वाली तलवार से ज्यादा ज़रूर रसां है। मोमिन की यह शान नहीं है कि एक सुराख से दोबारा डसा जाए लिहाज़ा वह गुनाहों से ज़रूर भागता है और इस तरह भागता है जिस तरह मोहलिक और मुज़रत रसां चीज़ों से लोग भागते हैं। लिहाज़ा यह बात गिरह में बांध लेनी चाहिए कि गुनाहों (के इरतिकाब) में पूरी पूरी हलाकत है और इताअते खुदा वन्दी में कुल्ली तौर पर बका, अब्दी सलामती की लज़्जत। गुनाह, तवील हिज़्न व मलाल पैदा करते हैं और बाद में ज़हमत बीमारी, उम्र गुनाहों से घटती है और लोगों को आग का ईंधन बनना पड़ता है।

## सेहते तौबा की शर्त

तौबा से जो नतीजा पैदा होता है उससे ज़ब्त तदारुक पैदा होता है उसका ताल्लुक हाल से भी है और माजी से भी। हाल से ताल्लुक का तकाज़ा यह है कि उन तमाम ममनूआत (मआसी) को तर्क कर दे जिनका मुरतिकब हो रहा है और जिनको करता चला आ रहा है और जिस फर्ज की अदाएगी की तरफ़ मुतवज्जेह है उसको फौरन अदा कर दे और माजी से ताल्लुक यह है कि ज़माना माजी में जो कोताही हो गई है उसको अईन्दा पूरा कर दे, तर्क मआसी और इताअत पर मरते दम तक काएम रहे। सेहते तौबा का माजी से मुताल्लुक होने की एक शर्त यह भी है कि अपने ख्याल को उस दिन की तरफ़ मुनअतिफ़ करे जिस दिन बालिग़ हुआ था और उस दिन तक गौर करे जिस दिन उसने तौबा की है और फिर हिसाब लगाये कि उस उम्र के कितने साल कितने दिन, कितनी घड़ियां, और कितने सांस गुज़रे हैं और गौर करे कि उस अर्सा में उससे कितनी कोताहियां हुई हैं और किस कद्र मआसी का इरतिकाब हुआ है, ताआत व इबादात में उस तरह गौर करे कि उसने कितनी नमाज़ें उसके शरायत व अरकान के बग़ैर पढ़ी हैं और कितनी नमाज़ें सिरे से पढ़ी ही नहीं, कितनी नमाज़ें बग़ैर वजू अदा की हैं और कितनी नाकारह वजू के साथ पढ़ी हैं (मसलन वजू में नीयत नहीं की) या यह कि वाजिबाते वजू को तर्क किया, कुल्ली नहीं की, नाक में पानी नहीं चढ़ाया, पैर धोना भूल गया या टाल दिया या नापाक कपड़ों या रेशमी लिबास ग़सब किये हुए कपड़ों और मग़सूबा ज़मीन पर नमाज़ अदा की। (अब ऐसा जो शख्स सिन बलूग़त के दिन से अपनी तौबा के दिन तक तमाम फ़राएज़ की कज़ा करे तो सबसे पहले उन तमाम फ़राएज़ की अदाएगी में मसरूफ़ हो जो उससे कज़ा हुए हैं और उस वक़्त तक कज़ा अदा करता रहे जब तक मौजूदा वक़्त की नमाज़ का वक़्त न आ जाए, मौजूदा नमाज़ का वक़्त आ जाने पर उसको अदा करे फिर कज़ा पढ़ना शुरू कर दे यहां तक कि तमाम नमाज़ें अदा हो जायें। जब जमाअत होने लगे तो उसके साथ भी ब नीयते कज़ा शरीक हो जाए और जमाअत के बाद फिर हसबे मामूल तन्हा लौटाता रहे यहां तक कि जब उस वक़्त की नमाज़ का वक़्त तंग होने लगे तो वक़्ती नमाज़ तन्हा ब नीयते अदा पढ़े और इमाम के साथ पढ़ी हुई नमाज़ को फौत शुदा नमाज़ की कज़ा करार दे ले। यह तग़ाम इहितयात कज़ा में इसलिये करे कि उसे तरतीब हासिल हो जाए इसलिये कि हमारे नज़दीक तरतीबे कज़ा वाजिब है अगरचे वक़्ती नमाज़ जमाअत से इमान के साथ अदा की नीयत से पढ़ ली तो उसकी अदा है दोबारा वक़्ती नमाज़



तन्हा लौटाने की ज़रूरत नहीं है मगर ज़्यादा सही पहली सूरत ही है लेकिन अगर उसका शमूल उन लोगों में रहा और उन लोगों में उसकी जिन्दगी गुज़री जिनके बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है:

और दूसरे लोग वह हैं जो अपने गुनाहों का इकरार करते हैं और उनके अमल नेक व बद के साथ मिले जुले होते हैं तो करीब है कि अल्लाह तआला उनकी तौबा क़बूल फ़रमा ले

यानी जब उन लोगों पर ईमान का ग़लबा होता है तो रोज़ा नमाज़ ख़ूब अच्छी तरह अदा करते हैं, नजासत और हराम शरई से इजतेनाब करते हैं और अपने दीन में एहतियात करते हैं और जब उन पर बदबख़्ती का ग़लबा होता है तो उनको शैतान बहकाता है, वह नमाज़ में कोताही और उसके शराइत व अरकान अदा करने में काहिली और सुस्ती बरतते हैं कुछ अदा करते हैं और कुछ छोड़ देते हैं। या किसी दिन नमाज़ पढ़ी किसी दिन नहीं पढ़ी, या दिन रात में दो एक नमाज़ें पढ़ लीं, बाकी छोड़ दीं, नहीं पढ़ीं उनके लिये इस सूरत में लाज़िम यह है कि ख़ूब कोशिश करके यकीन के मरतबे तक पुहंचे और नमाज़ों को तमाम व क़माल तरीक़े से जिस तरह शरीअत ने शुरू किया है बजा लाए (यानी तरीक़ा हासिल करने की कोशिश करे) वरना जिस नमाज़ के कामिल अदा करने का यकीन हो उसको दोबारा न लौटाए लेकिन अगर औला और बेहतर का ख़्वाहां है तो अगरचे दुशवारी बहुत है मगर सब नमाज़ें लौटाए इस सूरत में जो कोताही अदा की तकमील व तामील में हो गई है उसकी दुरुस्ती हो जाएगी और यह नमाज़ें उन अहकाम में कोताही का कफ़ारा बन जायेंगी जो उससे हो चुकी है। (मसलन कभी झूट बोला था या नाजाइज़ तौर पर रोज़ी कमाई थी तो उन गुनाहों का कफ़ारा उन नमाज़ों से अदा हो जाएगा) ऐसी सूरत में जन्नत के अंदर उसके बलन्द मरातिब होंगे बशर्तकि तौबा की हालत में इस्लाम और सुन्नत रसूल(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर उसका ख़ातमा हो (उसकी मौत वाक़ेअ हो)

जब ताएब तमाम फ़ौत शुदा फ़राएज़ की क़ज़ा (लौटाने) से फ़ारिग हो जाए और अल्लाह तआला उसको मुहलत और उम्र अता फ़रमाए (और अपनी ताअत व बन्दगी की तौफीक़ उसको मुरहमत फ़रमाए और अपनी ताअत के लिये उसको मुन्तख़ब फ़रमाए और उसको इस्तिक़ामत बख़्शे अपने मुहब्बत करने वालों में उसको महसूब करे, ज़लालत व गुमराही से उसे बचाए, शैतान की पैरवी, उसकी दोस्ती और हवा व हवस की लज़्जत से उसे महफूज़ रखे, उसका मुंह दुनिया से मोड़ कर आख़िरत की जानिब उसे मुतवज्जेह कर दे) तो उसे चाहिए कि मोवक्क़दा सुन्नतों की अदाएगी की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए (जो सन्नत हाए मुवक्क़दा फ़ौत हो चुकी हैं, उनकी क़ज़ा पूरी करे) और फ़ौत शुदा मुताल्लिकात नमाज़ के अदा करने में उसी तरह मशगूल हो जिसकी तफ़सील फ़राएज़ के ज़िम्न में हम बयान कर चुके हैं, उसके बाद वह तहज्जुद, रात की नमाज़ और उन औराद में मशगूल हो जाए जिनका ज़िक्र मुफ़स्सल इंशाअल्लाह आख़िर किताब में करेंगे।

## रोज़े की क़ज़ा

अब रहा रोज़े की क़ज़ा क मसला तो जिसने सफ़र या मरज़ की वजह से रोज़ा छोड़ दिया,



कसदन रोज़ा नहीं रखा या रात से कसदन या सहवन नीयत को छोड़ दिया (रोज़ा बगैर नीयत रख लिया) तो ऐसे तमाम रोज़ों की कज़ा करे, लेकिन अगर यकीनी तौर पर कुछ याद न हो तो याद करे, सोचे और गौर करे, जिस रोज़े के छूट जाने का ज़्यादा गुमान है उसको दोबारा रखे बाकी छोड़ दे हां अगर इहतियात मलहूज़ है तो सबकी कज़ा करे यह ज़्यादा बेहतर अगर ऐसा करे तो सिन्ने बुलोगत से यौमे तौबा तक हिसाब करे (यानी तमाम रोज़ों को शुमार करे) अगर दस साल गुज़रे हों तो दस माह के और अगर बारह साल गुज़रे हों तो बारह महीने के रोज़े रखे। गर्ज़कि हर साल के लिये एक माह के रोज़ों की कज़ा अदा करे (यह कज़ा माहे रमज़ान के रोज़ों की कज़ा होगी)।

## ज़कात की अदमे अदाएगी के अदा का तरीका

नमाज़ और रोज़ों की तरह अदाएगीए ज़कात का हिसाब वक्ते बलोग से नहीं लगाया जाएगा बल्कि उस वक्ते से लगाया जाएगा जबसे वह मालिके निसाब हुआ है हरचन्द कि हमारे नज़दीक नाबालिग बच्चे और दीवाने के माल पर भी ज़कात बाजिब है (बशर्तकि वह मालिके निसाब हो) वह उस वक्ते से तमाम सालों और कुल माल का हिसाब करे फिर तमाम सालों की ज़कात निकाल कर फुकरा और मसाकीन और हकदारों को दे दे अगर उसने बाज़ सालों की ज़कात अदा कर दी है और बाज़ सालों की अदा न की हो (उनमें सुस्ती की हो) तो उन सालों का हिसाब करे (जिनमें ज़कात नहीं दी है) फिर उन बरसों की ज़कात अदा करे (अदा किये हुए सालों को छोड़ दे) जैसा कि हम पहले नमाज़ और रोज़े के सिलसिले में बयान कर चुके हैं।

## क़ज़ा हज की अदाएगी

हज की अदाएगी के बारे में यह समझ लेना चाहिए कि अगर हज के तमाम शराएत उसके हक में पूरे हो गए हों तो फ़ौरन उसे हज अदा कर लेना चाहिए, सुस्ती और कोताही में अगर कुछ मुद्त गुज़र गई और उस मुद्त में हज की कुछ शरतें मफ़कूद हो गई, मुहताज हो गया लेकिन कुछ मुद्त के बाद फिर इस्तेताअत हासिल हो गई तो उस वक्ते फ़ौरन अदा कर लेना चाहिए और हज के सफ़र पर चल देना चाहिए अगर दोबारा माली इस्तेताअत हासिल न हुई लेकिन सफ़र हज के लिये जिस्मानी ताक़त मौजूद है तब भी हज कर इरादा कर लेना और सफ़र पर निकल खड़ा होना बाजिब है, अगर माल (ज़ादे राह) मौजूद नहीं है लेकिन जिस्मानी ताक़त मौजूद है तो उस पर लाज़िम है कि कस्बे हलाल करे और उससे सफ़रे खर्च और सवारी वगैरह का इन्तिज़ाम करे अगर खाने पर कुदरत नहीं है तो दूसरों से इम्दाद तलब करे ताकि दूसरे अपने ज़कात व सदकात से अदाए हज के लिये उसकी मदद करें और उसको ज़कात व ख़ैरात से इस क़दर माल मिल जाए कि वह हज कर सके। अल्लाह तआला ने मसारिफ़े सदकात के हुक्म में (आयत में) जो आठ किस्मे मुस्तहक्कीन की बयान फ़रमाई हैं उनमें फ़ी सबीलिल्लाह भी एक किस्म है और हमारे नज़दीक हज करना, फ़ी सबीलिल्लाह के जुमरे में है। अगर ऐसा शख्स हज के बगैर मर गया तो वह गुनहगार और आसी रहेगा इसलिये कि उसने अदाएगीए हज में कोताही की, हमारे नज़दीक साहिबे इस्तेताअत होते ही हज के लिये रवाना हो जाना बाजिब है। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है जो शख्स खानए काबा तक पहुंचने के लिये सवारी और जादे राह के लिये पस अंदाजा करता है और फिर वह हज न करे तो वह अपने दीन



पर नहीं और कोई अफसोस नहीं कि वह यहूदी, नसरानी होकर मरे, यह सब कुछ अदाएगीए हज के हुदम की ताकीद, तहफफुजे हज की इहतियात और हज के जाया होने के अन्देशा के तौर पर फरमाया गया है।

## कफ़ारो की अदाएगी

अगर किसी शख्स पर कफ़ारा या नज़रें वाजिब हैं तो सबसे पहले उनकी अदाएगी से उहदा बरआ हो जो कुछ बयान किया जा चुका है उसके मुताबिक ज़रूरी है। उन तमाम फराएज़, वाजिबात और सुनने मोअक्किदा की अदाएगी के बाद गुनाहों के बारे में गौर करे और सोचे कि अब्बल बलूग से तौबा के वक्त तक आंख, कान, ज़बान, हाथ, पांव, आलाते जिन्सी और दूसरे तमाम आज़ा से क्या क्या गुनाह सादिर हुए हैं उसके बाद तमाम दिनों, घड़ियों पर गौर करे और अपने सामने अपने गुनाहों की तफ़सील का दफ़्तर लाये (तमाम गुनाहों का जायज़ा ले) यहां तक कि अपने तमाम सगीरा व कबीरा गुनाहों से बाख़बर हो जाये (सब उसको याद अस जायें) गुनाहों की याद उन लोगों के देखने से भी आ जाती है जो गुनाहों के साथी और शरीक थे और उन तमाम मक़ामात और जगहों को भी याद करे जहां अपने गुमान में उसने लोगों की निगाहों से छुप कर गुनाह किये और उन आंखों (के देखने) से गाफ़िल रहा जो न सोती हैं और न पलक झपकाती हैं यानी करामन कातेबीन जो नामए आमाल लिखने वाले फरिशते हैं, तुम जो कुछ करते हो और जो कुछ मुंह से निकालते हो वह सब जानते हैं वह हर हाल में बन्दा के पास उसके निगहबान व मुहाफ़िज़ हैं और बन्दा उन इज़्ज़त वाले निगहबान फरिशतों से गाफ़िल है हालांकि वह आगे पीछे दायें बायें मौजूद रहते हैं और अल्लाह के हुक्म से उसकी निगरानी करते हैं और हर फेअल और उसकी हर सांस का शुमार करते रहते हैं, बन्दा उस खुदा से छुप कर गुनाह करता है जो हर सज़ और बहुत ही पोशीदा बात को भी जानता है। जो दिलों के राजों से आगाह है और ज़ाहिर व बातिन उससे कुछ भी पोशीदा नहीं (यानी तमाम ज़ाहिर व बातिन से बाख़बर है) पस अपने गुनाहों पर गौर करना चाहिए अगर वह महज़ अल्लाह तआला (हुकूकुल्लाह) की नाफ़रमानियां हों और बन्दों के हुकूक से उनका कुछ ताल्लुक न हो जैसे ज़िना, शराब खोरी, बाजा और गाना सुनना और ग़ैर महरम की तरफ़ देखना, मस्जिद में नापाकी की हालत में बैठना, बग़ैर वजू के कुरआन पाक छूना, कोई बुरा अक्कीदा रखना तो उन गुनाहों की तौबा इस तरह होगी कि नदामत के साथ अल्लाह तआला के हुज़ूर में माज़रत ख्वाह हो और उन गुनाहों की तादाद, कसरत व मुदत को शुमार करके बक़द उनके नेकियां करें और हर गुनाह व मासियत का बदल उस की नौइयत के एतबार से नेकियों से करे, अल्लाह तआला का इरशाद है

नेकियां बदियों को फना कर देती है।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि हर हालत में अल्लाह से डरो और हर बदी के एवज़ नेकी करो क्योंकि नेकी बदी को ज़ाएल कर देती है।

अल गरज़ हर बदी का कफ़ारा वैसी ही नेकी या उससे मिलती जुलती नेकी के ज़रिया से होता है। मसलन शराब नोशी का कफ़ारा हर हलाल मशरूब के ज़रिया हो सकता है लेकिन वह मशरूब ऐसा हो जो उस के नज़दीक बहुत ही पसन्दीदा और मरगूब हो। गाने बजाने के कफ़ारा यह है कि कुरआन करीम और अहादीसे नबविया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और



हिकायतुस्सालेहीन को सुना जाये। मसजिद में हालते जनाबत बैठने का कफ़ारा यह है कि मसजिद में इबादत में मशगूल होने के अलावा एतकाफ़ भी करे। बे वजू कुरआन करीम को छूने का कफ़ारा कुरआन करीम की बहुत ज्यादा इज्जत व तौकीर और उसे कसरत से पढ़ना और बावजू हो कर उस को खूब छुये और तालीमाते कुरआन से इबरत हासिल करे। इस का इफ़रार करे और उन अहकाम पर अमल करे नीज़ यह कि कुरआन करीम खुद लिख कर उसको दूसरों के लिए वक्फ़ कर दे।

## बन्दगाने खुदा के हुक्क का अदा न करना

अब रहे बन्दगाने खुदा पर चीरा दस्ती और उनकी हक़ तलफ़ी तो उनमें अल्लाह तआला की नाफ़रमानी और उसके अहकाम के खिलाफ़ वरज़ी होती है। अल्लाह ने जिना, शराब, सूद वगैरह की तरह बन्दों की हक़ तलफ़ी की भी मुमानियत फ़रमाई है। अल्लाह तआला के अहकाम की नाफ़रमानी का कफ़ारा वही पशेमानी नदामत, अफ़सोस और आइन्दा ऐसा न करने का अहद और नेकी करना है लेकिन बन्दों के हुक्क तल्फ़ करने का तदारुक और उनकी तलाफी यह है कि अगर लोगों को दुख दिया है तो उनके साथ भलाई करे ताकि उनका कफ़ारा अदा हो जाये गोया ज़्यादतियों और हक़ तलफ़ियों का कफ़ारा लोगों के साथ नेकियां करना और उनके लिए दुआये ख़ैर करना है। अगर वह शख्स जिस को इज़ा दी थी फ़ौत हो चुका है तो उसके लिए रहमत की दुआ मांगे उसकी औलाद और उसके वुरसा के साथ मेहरबानी और हुस्ने सलूक करे यही उसका कफ़ारा है बशर्ते कि वह अजीयत ज़बान से पहुंची हो या मार पीट से अगर अजीयत अमवाल के ग़सब करने से पहुंची है तो उसका कफ़ारा इस तरह होगा कि जो हलाल माल उसके पास है उसको लेवजहिल्लाह सदका करे और अगर उसको बे आबरु किया है यानी किसी ग़ीबत की है, चुगली खाई है, ऐब जोई की हो तो इसका कफ़ारा यह है अगर वह शख्स दीनदार और अहले सुन्नत हो तो उसके दोस्तों और उसके अहबाब के सामने मुख़तलिफ़ मजलिसों और महफ़िलों में उसकी तारीफ़ व तौसीफ़ करे और जो कुछ खूबियां उसकी मालूम हों उनको बयान करे। किसी को क़त्ल करना अल्लाह तआला के हक़ से मुताल्लिक है उसका कफ़ारा गुलाम आज़ाद करना है इस लिए कि गुलाम की आज़ादी उसकी ज़िन्दगी है (गोया इस तरह ज़िन्दगी बख़्शना हुआ) क्योंकि गुलाम अपने ज़ाती हुक्क में बिल्कुल मुर्दे की तरह होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है: अल्लाह एक गुलाम ममलूक की मिसाल देता है जो किसी चीज़ पर कादिर नहीं है। उसकी तमाम कमाई उसके आका की है उसके तसरूफ़ात व हरकात व सकनात उसके मालिक की मिलकियत है पस उसको आज़ाद कर देना गोया उसको नीस्त से हस्त कर देना और मुर्दे को ज़िन्दा कर देना है (मजाज़न) उसी तरह गोया कातिल एक इबादत गुज़ार बन्दे को मादूम कर देता है और अल्लाह की वह इताअत जो वह करता था उसके फ़ैअल से मोअत्तल हो जाती है इस सूरत में वह अल्लाह तआला का भी ख़ताकार है। इस सूरत में अल्लाह ने उसको हुक्म दिया है कि मक़तूल के बजाए किसी इबादत गुज़ार बन्दे को पेश कर जिस सूरत सिर्फ़ यही मुमकिन है कि किसी गुलाम को गुलामी से नजात दिलाए ताकि फिर वह बगैर किसी रुकावट के अपने लिए जो चाहे करे इस तरह मादूम का मुआवज़ा मौजूद से हो जायेगा। गुनाह की यह तमाम कैफ़ियात हुक्कुल्लाह से ताल्लुक रखती है।



## हक तलफी और कत्ले खता

बन्दो की हक तलफी ख्वाह वह जानी हो या माली हो या उसको बे आबरू किया जाये या सबके सब खालिस इजाएँ हैं। जानी हक तलफी की सूरत यह है कि किसी को बगैर इरादा कत्ल किया जाये तो उसकी तौबा की शकल उसकी खून बह (दैत) की अदाएंगी है। मकतूल वरसा या उस का आका या हाकिम उस खून बहा के वसूल करने के मुस्तहिक हैं। कत्ले खता में (यानी भूल चूक से किसी को कत्ल कर देने में) हमारे नजदीक कातिल के खानदान वालों पर दैत अदा करना लाजिम है जब तक खून बहा अदा न होगा यानी मुस्तहकीन को नहीं पहुंचेगा। कातिल जिम्मेदार है लेकिन अगर कातिल के रिश्ते कुम्बे वाले (आकिला) न हो और कातिल अदाएंगी की इस्तेताअत हो तो एक मुसलमान गुलाम आजाद करे। बेहतर यह है कि कातिल दैत खुद ब रज़ा व रग़बत अदा कर दे इस लिए हमारे नजदीक दैत का अदा करना सिर्फ वारिस (आकिला) की जिम्मेदारी है। कातिल का अदाएंगी दैत से कोई ताल्लुक नहीं (कातिल तो उस सूरत में एक बुरदा आजाद कर देगा जब कि उसके वरसा न हो) यही कौल सही है।

## इमाम शाफ़ई का इरशाद

एक कौल यह भी है कि अगर कातिल साहिबे हैसियत है और उस के वरसा नहीं है तो कातिल अपने पास से दैत अदा कर दे यह मसलक इमाम शाफ़ई का है उनकी दलील यह है कि दैत इबतेदा अन कातिल ही पर वाजिब होती है उसके बाद उसकी आसानी (और इमदाद के लिए उसके रिश्तेदारों पर यह बोझ डाल दिया जाता है और बतौर तावान वरसा उस बोझ को बर्दाश्त करते हैं वरसा (आकिला) और कातिल में बाहम तवारुस पाया जाता है। जहाँ आकिला न हो तो कातिल पर उसकी अदाएंगी ज़रूरी है खुसूसन जब कि वह तौबा की हालत में हो और जुल्म व तअदुदी और गुनाहों से ओहदा बरा होना चाहता हो और हुक्के इन्सानी बर से रूस्तगारी का ख्वास्तगार और तक़वा का आर्जुमन्द है।

## कत्ले अमद से तौबा

कत्ले अमद से बगैर कसास के ख़लासी न मुमकिन है। अगर कत्ल नहीं किया बल्कि ऐसी जगह ज़र्ब लगाई गई है जिस का एवज़ (कसास) लेना मुमकिन हो उस ज़र्ब से जान जाने का ख़तरा था तो बदला के लिए वारिसों से गुफ़्तगू की जाये और अगर ज़र्ब में (तलाफ़े जान का ख़तरा नहीं) तो फिर मज़रूब से बात की जाये अगर वरसा कसास से दस्तबदार हो जायें और उसको माफ़ कर दें तो कसास साकित हो जायेगा और अगर माल लेकर माफ़ करना चाहें (खून बहा कबूल करे) तो माल अदा करना होगा इस तरह वह अपने गुनाहों से नजात हासिल कर लेगा।

## ना मालूम कातिल

अगर किसी इंसान को कत्ल किया और किसी को नहीं मालूम कि कातिल कौन है तो कातिल पर लाजिम है कि मकतूल के वारिसों के सामने खुद कत्ल का इकरार व एतराफ़ करे और अपनी जान का एख़तियार उनको दे दे ख्वाह वह माफ़ कर दे ख्वाह कसास ले ले या दैत तलब करे। इख़्फ़ाए कत्ल जायज़ नहीं, कत्ल का जुर्म सिर्फ़ तौबा से माफ़ नहीं होगा अगर कि



शख्स ने एक जमाअत को मुख्तलिफ जगहों पर क़त्ल किया और मक़तूलीन के वुरसा का पता नहीं और न मक़तूलीन की सही तादाद का पता है तो इस सूरत में पुख़्ता तौबा करे और अपने किरदार को सज़ा दे और अल्लाह तआला की मुक़रर करदा सज़ा खुद अपनी जान को दे यानी गू ना गू नफ़्सानी मुजाहिदे करे और जान सोज़ी के काम करे। अगर कोई शख्स तुझ पर जुल्म करे या उसे ईज़ा पहुंचाए (तो अपने किये क़त्ल के बदले में) तू उसे माफ़ कर दे, गुलाम आज़ाद करे, माल का सदका दे और बकसरत नवाफिल अदा करे ताकि उसके उन आमाल ख़ैर की जज़ा क़यामत के दिन उसके उन मुतअद्दिद व जुर्म हाये क़त्ल के बराबर हो जाए (और उस को) अज़ाब से नजात हासिल हो जाये अल्लाह तआला अपनी रहमत से जन्नत इनाम फ़रमाए इस लिए कि उसकी रहमत हर शै को अपने आगोश में लिए है वह अर्राहेमीन है।

ऐसी सूरत में जब कि वह मक़तूलीन के वुरसा से वाकिफ़ नहीं मक़तूलीन को मजरुह करने की वज़ाहत, उनको लूटने की सराहत लोगों के सामने बे फ़ायदा है इस लिए कि अदमे आगाही के बाइस वारिसों को उनका हक़ तो पहुंचा ही नहीं सकता या उनसे उज़रे तक़सीर कर सके, अपना गुनाह माफ़ कराये बल्कि जो कुछ हमने बयान किया है वैसा ही अमल करे।

## ना मालूम अफ़राद का गुनाह

इसी तरह अगर किसी ने ज़िना किया, शराब पी, चोरी की और वह उसके मालिक को नहीं पहचानता, डाका डाला लेकिन साहिबे माल से वाकिफ़ नहीं, रास्ता में लूटा, लूटे जाने वाले से ना बलद है या जिमाअ के अलावा किसी अजनबी औरत से कोई ऐसी हरकत की जिस की कोई शरई ताज़ीर नहीं है तो उन जराएम से सहीह तौबा करे इस बात पर मौकूफ़ नहीं है कि वह गुज़श्ता वाक़ियात का तज़करा करके खुद अपने आप को रुसवा करे और आप अपनी पर्दा दरी या उन जुर्मों पर हुदूद (शरई सज़ायें) कायम कराने के लिए इनामे वक़्त या हाकिम को तलाश करे बल्कि अल्लाह तआला ने जो पर्दा डाल दिया है उस पर्दा में छुपा रहे और दरे पर्दा अल्लाह तआला से तौबा करे नफ़्सानी जिहाद करे, रोज़े रखे, मुबाह चीज़ों और लज़ज़तों से महज़ूज़ होने में कमी कर दे तस्बीह व तहलील बकसरत करे, तक़वा और परहेज़गारी एख़्तयार करे। हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर कोई शख्स उन गुनाहों में से कोई गुनाह कर बैठे तो उसको चाहिए कि अल्लाह तआला की पर्दा पोशी के साथ उसे पोशीदा रखे और हमारे रुबरू अपने गुनाहों को ज़ाहिर न करे अगर उसने अपने क़सूर बता दिए तो हम उस पर अल्लाह की हद नाफ़िज़ करेगें और अगर इसके बर अक्स उसने हाकिम के पास जाकर अपना जुर्म पेश कर दिया और हाकिम उसके लिए सज़ा तजवीज़ करदे उसको सज़ा दे दे तो फिर उस मुजरिम की तौबा और मक़बूल होगी और वह गुनाह की ज़िम्मेदारी से ओहदा बरा हो जायेगा और जुर्म की नजासत से उसको पाकी हासिल हो जायेगी।

## माली हुक्क़ का ग़सब करना

### माली हुक्क़ का ग़सब और उनसे तौबा

अब रहा यह सवाल कि अमवाल में तौबा की सूरत क्या है? (यानी अगर किसी ने किसी



शख्स के अमवाल गसब किये हैं तो वह सही तौबा किस तरह करे) अगर किसी ने किसी इन्सान का माल छीना है या चोरी की है या किसी के माल पर डाका डाला है या अमानत में ख्यानत की है या मामलए माली में धोका दिया है, खराब माल फरोख्त किया है या बेचे जाने वाले माल के ऐब छुपाया है, या मजदूर की उजरत में कमी को या सिरे से उसकी उजरत ही न दी तो इन तमाम सूरतों में हिसाबी नजर डालना चाहिए और उस वक्त से उसका हिसाब करे जब से वह आकिल और तमीजदार हुआ है। इसमें बालिग होने के वक्ते आगाज की शर्त नहीं है बल्कि उस वक्त से शुमार करे जब कि यह किसी वसी की जेरे निगरानी था और वसी ने उसके माल को अपने माल के साथ खलत मलत कर दिया था और वसी ने अपनी दीनी सुस्ती (जोअफे दीनदारी) के बाइस उसकी कोई परवा नहीं की थी क्योंकि वसी तो खुद हक तलफी करने वाला था और उससे मजहब (की शराइत) की खिलाफ वरजी हुई इसलिये वसी का हराम माल लड़के के माल में मिल गया कुछ तो वसी की ना इन्साफी और बद दियानती और जुल्म की वजह से और कुछ खुद लड़के की जानिब से ख्यानत के बाइस माल में मिलावट हुई तो बालिग होने के बाद जब यह लड़का ताइब हुआ तो उसको इस मामला पर तफतीशी नजर डालना चाहिए और गैर का हक उसको वापस देना चाहिए और अपने माल को हराम और शुबा रखने वाले माल से पाक करना चाहिए।

इरतेकाबे जुर्म से तौबा के दिन तक जर्रा जर्रा का दिल में हिसाब लगाना चाहिए ऐसा न हो कि हिसाब के बगैर गफलत की हालत में मौत आ जाए और उसके लिये रोजे हिसाब आ जाए कि वह न सवाब हासिल कर सका और न उसका आमाल नामा पाक हुआ और बाज पुर्स के वक्त कोई जवाब काबिले पजीराई न हो उस वक्त यह पशेमान होगा लेकिन पशेमानी से उसको कोई फायदा नहीं पहुंचेगा। रब की रजा हासिल करना चाहेगा मगर अताबे इलाही से महफूज न होगा, मोहलत का तालिब हो गा मगर मोहलत नहीं मिलेगी, शफीअ दूंदेगा लेकिन कोई शफीअ न होगा। यह तमाम नताइजे बद उस वक्त मुरत्तब होंगे जब जिन्दगी में शरई हुदूद से पार कदम रखेगा, पसन्दीदा चीजों और लज्जतों के हुसूल के लिये अपने नफ्स और शैतान की पैरवी करेगा, अल्लाह तआला की इताअत और उसकी बारगाह से मुनहरिफ होगा, दायते हक को कबूल करने से पीछे हटेगा, परवरदिगार की ना फरमानी और खिलाफ वरजी की तरफ उसके कदम तेजी से बढ़ेंगे, इसलिये कयामत के दिन उसका हिसाब किताब बहुत तवील होगा और उसकी गिरया व जारी और वावैला बहुत कुछ होगा (बारे गुनाह से) उसकी कमर टूट जाएगी उसका सर नदामत से झुका होगा, बड़ी शर्मिन्दगी उठाना पड़ेगी, कोई हुज्जत और दलील पेश नहीं की जाएगी। दोजख के फरिश्ते उसको पकड़ कर उस अजाब की तरफ ले जाएंगे जो उसने खुद अपने लिये पहले ही से तैयार कराया होगा, वह खुद ही अपने नफ्स को हलाकत में डालने और दोजख में दाखिल करने का मौजिब और बाइस होगा और कारुन, फिरऔन, हामान के बराबर के दर्जा में दोजख में दाखिल होगा। इसलिये कि हुकूकूल इबाद की तरफ से रोजे हिसाब चश्मे पोशी नहीं की जाएगी और न उनसे दर गुजर किया जाएगा। हदीस शरीफ में आया है कि बन्दा को अल्लाह के सामने खड़ा किया जाएगा और उसकी नेकियां पहाड़ के बराबर होंगी अगर वह नेकियां बाकी बचीं तो यकीनन वह अहले जन्नत से होगा मगर हुकूक का मुतालबा करने वाले खड़े होंगे, उसने किसी को गाली दी होगी, किसी का माल मारा होगा, किसी को ज़द व कोब किया होगा पस उन



हुक्क के बदले यह नेकियां उन लोगों को दे दी जाएंगी और उसके पास नेकियों का कुछ हिस्सा भी बाकी नहीं रहेगा उस वक्त फरिश्ते अर्ज करेंगे कि इलाहल आलमीन! इसकी नेकियां तो खत्म हो गई और हुक्क के तलब करने वाले बहुत से बाकी हैं, अल्लाह तआला फरमाएगा कि इन मुतालबा करने वालों (हुक्क तलब करने वालों) की बुराईयां (बदियां) इसकी बदियों में डाल दो और उसे दोजख में धक्के देते हुए ले जाओ गरज वह दूसरों के गुनाहों की वजह से जो बदले के तौर पर उसके जिम्मे डाले जाएंगे हलाक और तबाह हो जाएगा इस तरह मजलूम जालिम की नेकियों के जरिये नजात पा जाएंगे क्योंकि जालिम की नेकियां बतौर तावान मजलूम के हक में मुन्तकिल कर दी गई हैं।

## आमाल के तीन दफ्तर

हजरत आएशा सिद्दीका रजियल्लाहो अन्हा से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया आमाल के तीन दफ्तर होंगे, एक दफ्तर ऐसा होगा जिसका लिखा हुआ अल्लाह तआला माफ़ फरमा देगा, एक दफ्तर ऐसा होगा जिसका लिखा हुआ अल्लाह तआला माफ़ नहीं फरमाएगा और एक दफ्तर का नविश्ता बगैर बदला लिये माफ़ नहीं किया जाएगा।

वह दफ्तर जिसका लिखा अल्लाह तआला माफ़ नहीं फरमाएगा वह शिर्क (का गुनाह) है। अल्लाह तआला फरमाता है: जिसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराया बिना शुबा उस पर जन्नत हराम है और उसका ठिकाना दोजख है। और जिस दफ्तर का नविश्ता अल्लाह तआला माफ़ फरमा देगा वह हुक्क अल्लाह है यानी वह जुल्म जो उसने अपने और अपने रब के हुक्क के माबैन अपनी जान पर किये हैं, और तीसरा दफ्तर जिसका नविश्ता बगैर बदला के नहीं रहेगा वह हुक्कल इबाद हैं यानी बन्दों की बाहम हक तलफी है, हजरत अबू हुरैरा से मरवी कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया, जानते हो कि कयामत के दिन मेरी उम्मत में से कौन मुफलिस होगा सहाबा कराम ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह हम में से मुफलिस वह है जिसके पास माल व दौलत न हो, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी उम्मत में से मुफलिस वह होगा जो अपने रोजों और नमाज़ के साथ तो आएगा लेकिन उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खाया होगा, किसी का खून (ना हक) बहाया होगा और किसी को मारा होगा पस वह मजलूम जालिम की नेकियों से बदला हासिल करेगा और जालिम की नेकियां उसकी होंगी, अगर नेकियां (बदला के लिये) खत्म हो जाएंगी तो मजलूम की बुराईयां उसके नामाए आमाल में लिख दी जाएंगी, फिर उस (मुफलिस) को जहन्नम में फेंक दिया जाएगा इसलिये जालिम के लिये जरूरी है कि तौबा में जल्दी करे।

## तौबा में उजलत की जाए

हजरत इब्ने अब्बास से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि ऐसे ताखीर करने वाले लोग हलाक हो गए जो कहते हैं कि हम कुछ अर्सा बाद तौबा कर लेंगे। हजरत इब्ने अब्बास आयते करीमा: "बल्कि आदमी चाहता है कि वह गुनाह करता चला जाए" की तफ़सीर में फरमाते हैं कि इन्सान चाहता है कि गुनाहों को बढ़ाता रहे और तौबा में ताखीर करता रहे, और फिर कहे अनकरीब तौबा कर लूंगा यहां तक कि उसे मौत आ जाती है और बद तरीन हालत में आती है। लुकमान हकीम ने अपने बेटे से कहा! तौबा को कल पर न टालना क्योंकि मौत



नागेहानी तौर पर आ जाएगी। पस हर एक शख्स पर वाजिब है कि सुबह व शाम तौबा करता रहे। मुजाहिद फरमाते हैं कि जो शख्स सुबह व शाम तौबा न करे वह जालिम है।

तौबा दो किस्म (नौइयत) की है एक वह जिसका ताल्लुक हक्कुल इबाद से है उसका मुफसलन जिफ्र हम कर चुके दूसरी वह है जिस का ताल्लुक बन्दा और अल्लाह तआला से है यानी हक्कुल्लाह से है। हक्कुल्लाह से इनहेराफ और अतलाफ से तौबा की शकल यह है कि जबान से इस्तिगफार करे और दिल में अपने किये पर शर्मिन्दा हो और यह पुख्ता इरादा करे और वह गुनाह (जिन की तरफ हम पहले इशारा कर चुके हैं) नहीं करेगा लिहाजा तौबा करने वाले को इंतेहाई कोशिश करनी चाहिए और अपनी पूरी कुव्वत उस पर सर्फ कर देना चाहिए कि उसकी नेकियां ज्यादा हो जायें ताकि कयामत के दिन जबकि उसकी लेकर मजलूमों के पलड़े में रख दी जायें तो यह खाली हाथ न रह जाये। चुनांचे बन्दों के जितने ज्यादा हुक्क उसके जिम्मा हों उतनी ही ज्यादा नेकियां उसको करनी चाहिए वरना दूसरों के गुनाहों की वजह यह हलाक व तबाह हो जायेगा। पस यह जरूरी है कि तमाम उम्र नेकियां हासिल करने में मसरूफ रखे और तौबा के बाद बाकी रहने वाली जिन्दगी भी तवील हो तो खूब नेकियां कमा सके वरना मौत तो घात में है और अकसर मौत करीब आ जाती है और तकमीले आरजू इखलासे अमल और दुरुस्तीए नीयत से पहले ही मौत जिन्दगी को काट देती है तो अगर ऐसी सूरत वाकअ हो गई तो तेरा क्या हाल होगा। इस लिए नेकियों के करने में अपनी पूरी कोशिश करे उनसे माफी तलब करे और उनके हुक्क अदा कर दे अगर वह लोग न मिले जिनके हुक्क तल्फ किये हैं तो उनके वुरसा से रूजूअ करे तमाम हुक्क अदा करने के बाद भी जालिम अल्लाह से डरता रहे और उसकी रहमत का उम्मीदवार रहे। खुदाबन्द बुजुर्ग व बरतर की ना पसन्दीदा बातों से बचता रहे उसकी इताअत व रजा के हुसूल में लगा रहे ऐसी हालत में अगर मौत आ जायेगी तो उसका सवाब अल्लाह के जिम्मे हो जायेगा अल्लाह तआला का इरशाद है:

जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की जानिब हिजरत करके घर से निकला फिर उसे मौत आ गई इस हाल में तो उसका अज्र अल्लाह तआला के जिम्मे है।

सहीह बुखारी व मुस्लिम शरीफ में बरिवायत हजरत अबू सईद खुदरी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है कि हुजूर ने फरमाया तुमसे पहली उम्मतों में एक शख्स था जिसने निन्नानवे खून किये थे उसने रुए जमीन के सबसे बड़े आलिम के बारे में दरयाफ्त किया किसी शख्स ने उसे एक राहिब का पता बता दिया यह शख्स उस राहिब के पास पहुंचा और उससे दरयाफ्त किया कि किसी शख्स ने निन्नानवे खून किये हैं क्या उसके लिए तौबा मुमकिन है? राहिब ने कहा नहीं। यह जवाब सुनकर उस शख्स ने राहिब को भी कत्ल कर दिया, इस तरह सौ खून पूरे कर देने पर उसने फिर सबसे बड़े आलिम का पता दरयाफ्त किया उसे फिर एक आलिम का पता बता दिया गया वह वहां पहुंचा और उस आलिम से दरयाफ्त किया कि मैंने सौ खून किये हैं, क्या मेरे लिए तौबा मुमकिन है और क्या वह तौबा कबूल हो सकती है? उस आलिम ने कहा हां हो सकती है। तेरे और तौबा के दर्मियान कौन हाएल हो सकता है फलां मकाम पर जा वहां कुछ लोग अल्लाह तआला की इबादत में मसरूफ हैं उनके साथ मिलकर तू भी इबादत कर और अपने इलाका की तरफ लौट कर फिर कभी न जाना क्योंकि वह बहुत बुरी सरजमीन है, चुनांचे यह शख्स बताए हुए मकाम की तरफ चला उसने अभी निस्फ रास्ता ही तय किया था



गुनियवुतालिबीन  
 कि उसको मौत ने आकर दबोच लिया, रहमत और अज़ाब के फरिशतों के माबैन उसके लिए इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया, रहमत के फरिशतों ने कहा कि यह तौबा करता हुआ अल्लाह की तरफ़ रुजू हुआ है, अज़ाब के फरिशतों ने कहा इसने कभी नेकी नहीं की थी, इस असना में एक फरिशता आदमी की शकल में आया, तमाम फरिशतों ने उसको हक़म बना लिया, उसने कहा दोनों तरफ़ ज़मीन नाप लो जो जगह करीब हो वही इसके लिए है। चुनांचे दानों तरफ़ की ज़मीन नापी गई उस तरफ़ ज़मीन कम निकली जिधर तौबा करने जा रहा था (यानी उससे करीब थी) चुनांचे रहमत के फरिशतों ने उसे ले लिया।

एक रिवायत में आया है कि नेक आबादी का फासला सिर्फ़ एक बालिश्त कम था दूसरी रिवायत में है कि गुनाहों की आबादी को अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि उससे दूर हो जा और दूसरी आबादी (यानी नेकी की आबादी) को हुक्म हुआ कि उससे करीब हो जा और फिर फ़रमाया अब दोनों ज़मीनों का फासला नाप लो, फरिशतों ने नेक आबादी की फासला कम पाया (यानी उससे करीब पाई) और उसकी मग़फ़िरत कर दी गई, यह इस अम्र की खुली और रौशन दलील है कि नीयत करके तौबा का इरादा करना, तौबा की तरफ़ दौड़ना और तौबा की नीयत करना भी मुफ़ीद है और इस अम्र की भी दलील है कि नेकियों का पलड़ा वज़नी हुए बग़ैर भी ख़्वाह वह ज़र्रा भर ही क्यों न हो उसकी नजात नहीं है। पस तौबा करने वालों के लिए नेकियों की कसरत ज़रूरी है और उसको नवाफ़िल भी कसरत से पढ़ने चाहियें ताकि क़यामत के दिन हुक्म के दावेदारों को वह राज़ी कर सके और फ़राएज़ भी मुरतफ़ा हो जायें जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया नफ़ल की कसरत करो उनके ज़रिये फ़राएज़ बलंद किये जायेंगे। अल्लाह से पोख़ता और मुसतहक़म वादा और मजबूत अहद कर लो कि आइन्दा यह और इस जैसे दूसरे गुनाह कभी नहीं करूंगा और इस वादे को इस तरह तक़वीयत पहुंचाये कि तंहाई और ख़ामीशी इख़्तियार करे ख़ोराक कम कर दे, कम सोए हलाल रोज़ी का इस्तिज़ाम करे और शुबहा की रोज़ी से बचे ख़्वाह कमाई करके या मीरास से या किसी और हलाल ज़रिया से रोज़ी हासिल करे अगर मीरास के माल में शुबहा हो या हराम का जुज्व हो तो उसको दूर कर दे, उसे न खाये न पहने क्योंकि गुनाहों की जड़ हराम नर और दीन की बुनियाद हलाल रोज़ी पर है, तक़वा के साथ हलाल और पाक लुक़्मा दीन की असल है, इंसान में नेकी और बदी की जो ख़सलत पैदा होती है वह उसी लुक़्मा से पैदा होती है। पस याद रखो कि हलाल लुक़्मा नेकी पैदा करता है और हराम लुक़्मा बदी जैसे कि हांडी उसी चीज़ की खुशबू देती है जो उसमें पकाई जा रही है।

तौबा करने वाले को चाहिए कि उलमा और फुक़हा की सोहबत में ज़्यादा बैठे और उनसे अपने दीन के बारे में इस्तिफ़सार करे और राहे खुदा में चलने की भारफ़रत हासिल करे, अल्लाह की इताअत में हुस्ने अदब और दीनी उमूर में इस्तिक़ामत उनसे सीखे, उलमा उसको वह तमाम मख़फ़ी बातें सिखायेंगे जो तरीक़त और सुलूक के लिए ज़रूरी हैं क्योंकि हर नावाक़िफ़ राह के लिए दलीले राह की ज़रूरत होती है और हादी की ज़रूरत है कि वह हिदायत करे। तौबा करने वाला उन तमाम बातों में सच्चाई इख़लास और मुजाहदा को काम में लाए। अल्लाह तआला का इरशाद है:  
 जो हमारी राह में कोशिश करते हैं हम उनको रास्ता बताते हैं।  
 बिला शुबहा हिदायत की राह में सच्ची कोशिश करने वाले का खुदा हादी है, जब उस राह



मे सादिक होगा तो हिदायत को वह मादूम नहीं पायेगा (जरूर हिदायत पायेगा) इसलिए कि अल्लाह तआला ने उसका वादा फरमाया है और अल्लाह तआला न वादा खिलाफ है और न बन्दों पर जुल्म करने वाला है वह अर्रहमर्राहेमीन है, रऊफ़ व रहीम है, अपनी मखलूक पर मेहरबानी करने वाला है, वह अपनी तरफ़ मुतवज्जेह होने वालों का मददगार और तौफीक देने वाला है और जो उससे रुगरदान होते हैं और उससे पीठ मोड़ते हैं उनको मेहरबानी के साथ बुलाता है और उनकी तौबा से खुश होता है उसी तरह जैसे एक मेहरबान मां तवील सफ़र से अपने बटे की वापसी पर खुश होती है।

## अल्लाह तआला की रज़ा मन्दी की एक मिसाल

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला बन्दे की तौबा से इस तरह खुश होता है जैसे तुम में से कोई शख्स हलाकत खेज़ बयाबान में सफ़र कर रहा हो और उसके साथ एक सवारी हो जिस पर जरूरियाते जिन्दगी लदी हों और वह सवारी मअ तमाम सामान के गुम हो जाये फिर वह उसकी तलाश में इस क़द्र मारा मारा फिरे कि जान लबों पर आ जाये उस वक़्त वह दिल में कहे कि अब वहीं चलना चाहिए जिस जगह सवारी गुम हुई है और वहीं मुझे मरना चाहिए और फिर वह उस जगह वापस आए, उसकी आंखें नींद से बोझल हों। चुनांचे एक लम्हा के लिए वह आंखें बन्द कर ले और एक लम्हा बाद जब आंखें खोले तो देखे कि उसकी सवारी मअ सामान के उसके सरहाने मौजूद है। उस वक़्त उस मुसाफिर की खुशी का क्या ठिकाना होगा (पस जैसी उस मुसाफिर की खुशी होगी ऐसी ही खुशी अल्लाह तआला को होती है।)

हज़रत अली ने फरमाया कि मैंने अबू बकर सिद्दीक से सुना कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कोई बन्दा अगर गुनाह करे फिर उठ कर वजू करे और अपने गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करे तो अल्लाह पर उसको बख़्श देने का हक़ हो जाता है क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है:

जिस शख्स ने कोई गुनाह किया हो या अपने नफ़स पर जुल्म किया हो वह अल्लाह से माफी मांगे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला पाएगा।

अगर मौजूदा माल (जो तरके में मिला है) उसमें छीना हुआ माल शामिल हो (तो तौबा से पहले) उस माल को उसके मालिक को वापस कर दे इस सूरत में कि वह उसके खास मालिक को जानता हो अगर मालिक न मिल सके तो उसके वुरसा को वापस कर दे, अगर यह सूरत न हो तो लाज़िम है कि उसके मालिक की तरफ़ से उस माल को सदका कर दे, अगर हलाल माल के साथ हराम माल मिल गया है तो ग़ौर से हिसाब लगाए और हराम माल की किदार जानने की कोशिश करे फिर उतना माल सदका कर दे बक़िया माल अपने और अहल व अयाल के खर्च में लाये।

किसी की बे आबरूई करना जैसे किसी को गाली देना या किसी को बुरा कहना दिल आज़ारी है और यह गुनाह है उसी तरह किसी को पीठ पीछे बुरा कहना (गीबत करना) या इस तरह बुराई के साथ उसका ज़िक्र करना कि (अगर वह सुने तो) उसको बुरा मालूम हो, गीबत में दाख़िल है उसका एवज़ या कफ़ारा यह है कि जिसकी गीबत की है उससे वह बात कह दे जो



उसके पीछे कही गई है और उससे उस बात की माफी मांगे अगर किसी जमाअत को बुरा कहा है तो उसके हर फर्द से माफी मांगे अगर कोई फर्द उस जमाअत का फौत हो गया तो मरने वाले की नेकियों का कसरत से जिक्र करे जैसा कि हम पहले बयान कर चुके हैं। अगर जिस शख्स की गीबत की हो उसकी इत्तेला उसको न पहुंची हो तो ऐसी सूरत में उससे माफी न मांगे कि उस सूरत में उसके दिल को दुख पहुंचेगा बल्कि जिन लोगों की मौजूदगी में गीबत की हो उन के सामने खुद को झूठा करार दे और जिसकी गीबत की हो उसकी तारीफ करे।

## मजालिम का तदारूक और बदला लेने का बयान

गुनहगार ने जिसकी गीबत की है या बुराई की है उसके रुबरु तमाम मजालिम को सराहत व तफसील से बयान करने और उसकी मिकदार बताने की जरूरत नहीं है बल्कि मुबहम तरीके से कह दे कि तफसील की सूरत में उसका नफस जालिम को बख्शाने पर रजामन्द नहीं होगा बल्कि वह उसे कयामत के दिन के लिए उठा रखेगा ताकि मजलूम उसका बदला उसकी नेकियों से ले ले या मजलूम की बुराईयां जालिम के दफ्तरे आमाल में शामिल कर दी जायें हां अगर इस किस्म का गुनाह है जिसके बयान करने से मजलूम को अजीयत पहुंचेगी और उसका दिल दुखेगा जैसे उसकी बीवी या बांदी से जिना करने की खबर या किसी पोशीदा ऐब से उसे मनसूब करने का गुनाह अगर किया है तो मुबहम तरीके पर माफी तलब करे इसके सिवा कोई और चारए कार नहीं है और फिर जो कुछ हक उसका रह जाये उसका इजाला नेकियों से करे जैसे मैय्यत या मफकूद की हक तलफी। इजाला की सूरत यह है कि ज्यादा से ज्यादा नेकियां कमाये कि कयामत के दिन अगर मजलूम अपने हक के एवज जालिम की नेकियां भी ले ले तब भी उतनी नेकियां बच जायें कि उसको (जालिम को) जन्नत में जगह मिल जाये (बख्शा दिया जाये।)

अगर साहिबे हक को अपनी हक तलफी का इल्म न हो और गुनहगार और मुजरिम को यह शुबहा हो कि मैं अगर साहिबे हक के सामने उसकी हक तलफी बयान करूंगा तो वह जल्द माफ नहीं करेगा या मुकाबला पर आमादा हो जायेगा या उसके इजहार में एक जान के जियां का अन्देशा है तो कफ़ारा का तरीका यह है कि उसके साथ नमी का बरताव करे, उसकी मुश्किलात को दूर करे और उसके जरूरी कामों की तकमील में सई करे, इस तरह मुहब्बत और शफकत के बरताव से उसका दिल उसकी तरफ माएल हो जायेगा क्योंकि इंसान बन्दए एहसान है, हर शख्स बुराई देख कर भागता और बचता है और हुस्ने सुलूक के बाएस उसका दिल माएल होता है अगर ऐसा तरीका इख्तियार करना भी दुशवार हो तो इसका कफ़ारा यह है कि कसरत से नेकियां करे ताकि उसके गुनाह के एवज उसकी नेकियां बदला बन सकें, मसलन किसी ने किसी का माल तल्फ कर दिया है और तल्फ शुदा माल के एवज दूसरा माल उसको देना चाहा मगर उसने कबूल करने से इंकार कर दिया (और हक उसी तरह बाकी रहा) लेकिन हाकिम हुक्म देता है कि उस माल को कबूल करना होगा इसी तरह मैदान कयामत में अल्लाह तआला एवज कबूल करने का हुक्म देगा, वह सबसे बड़ा हाकिम और सबसे बड़ा आदिल है।



## जोहद व तक़्वा

तौबा करने वाला जब हुक्कूल इबाद से बेबाक हो जाये और उसके जिम्मे कोई जुल्म न रहे और खुसूसियत के साथ इबादात में मशगूल हो तो फिर तक़्वा का रास्ता इख्तियार करे, तक़्वा ही के बाएस बन्दे को दुनिया और आखिरत में बन्दों के हुक्क से और अल्लाह के अज़ाब से नजात हासिल होगी और उसी के बदौलत रोज़े हिसाब उससे आसान हिसाब लिया जायेगा इस लिए कि बराज़े क़यामत हुक्कूल इबाद और इंसानों के उन बाहमी मामलात का ज़रूर हिसाब होगा जो शरीयत के खिलाफ़ सरज़द हुए हैं। जिस शख्स ने दुनिया में भी अपना हिसाब कर लिया और अपना हक़ मख़लूक से हासिल कर लिया और उस चीज़ को छोड़ दिया जिस पर उसका हक़ नहीं था और वह क़यामत के दिन हिसाब किताब की तवालत से डरा तो उसके हिसाब में सख्ती नहीं की जायेगी। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला को परहेज़गारों का हिसाब करते शर्म आयेगी, इसलिए हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इससे कब्ल कि तुमसे हिसाब लिया जाये अपना मुहासबा खुद करो और आमाल को वज़न करो कब्ल इसके कि उनको तौला जाये। नीज़ हुज़ूर ने फ़रमाया कि इंसान के इस्लाम की खूबियों में से यह भी एक खूबी है (यानी हुस्ने इस्लाम है) कि वह ग़ैर ज़रूरी बातों से इजतेनाब करे, इस हदीस शरीफ़ में इस तरफ़ इशारा है कि हर मामला में सोच विचार से काम ले और शरई इजाज़त के बग़ैर किसी काम की तरफ़ कदम न बढ़ाए अगर शरीयत में उसको इख्तियार करने की गुंजाईश मौजूद है तो करे वरना बाज़ रहे और शरीयत के मुताबिक़ दूसरे काम की तरफ़ रुजू हो, इस इरशाद में इस जानिब हुज़ूर का इरशाद है कि जो बात तुम को शक़ में डाले उसको छोड़ दो और उस चीज़ को इख्तियार करो जिसमें शक़ शुबहा न हो।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मोमिन तवक्कुफ़ करने वाला है और मुनाफ़िक़ उजलत करने वाला होता है। (यानी मोमिन सोच समझ कर उस वक़्त काम करता है जबकि उसको शरीयत के मुताबिक़ पाता है और अगर खिलाफ़े शरअ होता है तो उसको तर्क कर देता है) आप ने इरशाद फ़रमाया, अगर तुम इतनी नमाज़ें पढ़ लो कि कमान की तरह ख़मीदा हो जाओ और इतने रोज़े रख लो कि तांत की तरह (दुबले पतले) बन जाओ तब भी बग़ैर तक़्वा के तुम को यह इबादत कोई नफ़ा न देगी।

एक हदीस शरीफ़ में है की जिसको यह परवाह नहीं कि उसका खाना पीना कैसा है (हलाल तरीका से हासिल हुआ है या हराम तरीका से) तो अल्लाह तआला भी परवाह नहीं करेगा कि उसे जहन्नम के किस दरवाज़े से दाख़िल किया जाए।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया की जो बन्दा हराम माल खाता है और उसी माल से सदका देता है तो उसको (उस सदका पर) कुछ अज़्र नहीं मिलेगा और न हराम माल के खर्च में बरकत होती है और जो कुछ हाराम माल वह अपने पीछे छोड़ जाएगा वह उसके लिए जहन्नम के रास्ते का तोशा है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अल्लाह तआला बदी को बदी से नहीं मिटाता बल्कि बदी को नेकी से मिटाता है।



हज़रत इमरान बिन हुसैन से मरवी है कि आंहरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दो! मैंने तुम पर जो फ़र्ज किया है उसे बजा लाओ ताकि तुम लोगों में सबसे बढ़कर आबिद बनो और जिन बातों से मैंने मना किया है उन से बाज़ रहो ताकि तुम लोगों में ज़्यादा मुत्तकी बनो और जितना रिज़्क मैंने तुम को दिया है उसपर क़नाअत करो ताकि तुम लोगों में सबसे ज़्यादा ग़नी बन जाओ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू-हुरैरा से फ़रमाया परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि लोगों में सबसे ज़्यादा आबिद बनो।

## तक़्वा के सिलसिले में अस्लाफ़े कराम के अक़्वाल

हज़रत हसन बसरी ने फ़रमाया ज़र्रा भर परहेज़गारी, हज़ार रोज़े और नमाज़ (नफ़ल) से बेहतर है अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को वही फ़रमाई कि अहले कुरबत को कोई चीज़ परहेज़गारी की तरह मुझसे करीब नहीं करती (परहेज़गार मुझसे सबसे ज़्यादा करीब है।) एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला के नज़दीक दिरहम का 1/6 मालिक को वापस कर देना (उसमें ख़यानत न करना) सौ मक़बूल हज़ों से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। एक रिवायत में सत्तर मक़बूल हज़ आये हैं। हज़रत अबू-हुरैरा ने फ़रमया कि क़यामत के दिन बारी तआला का कुर्ब पाने वाले अहले तक़्वा और जुह्हाद होंगे।

इन्ने मुबारक ने फ़रमाया कि हराम का एक पैसा न लेना (रद कर देना) सौ पैसे सदका करने से बेहतर है। इन्ने मुबारक के बारे में मनकूल है कि वह मुल्के शाम में हदीस (शरीफ़) की किताबत कर रहे थे, उनका कलम टूट गया उन्होंने आरियतन किसी से कलम मांगा जब किताबत से फ़ारिग हो गए तो कलम वापस करना भूल गये और कलमदान में वह कलम पड़ा रह गया जब वह शाम से मर्व पहुंचे तो कलमदान में वह कलम नज़र पड़ा फौरन पहचान गये और फिर उन्होंने कलम वापस करने के लिए मुल्के शाम के सफ़र की तैयारी शुरू कर दी और वापस जा कर दे दिया।

हज़रत लुक़मान बिन बशीर से मरवी है वह फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि हराम वाज़ेह है और हलाल भी वाज़ेह है लेकिन इन दोनों के र्मियान बकसरत शुबहात हैं जिनको बहुत से लोग नहीं जानते लिहाज़ा जिसने शुबहात से इज़तेनाब किया उसने अपना दीन महफूज़ कर लिया और अपनी इज़्ज़त बचा ली जिसने ऐसा नहीं किया वह हराम में मुब्तला हुआ, जिस तरह चरवाहा बकरियां चराता है और ख़्याल रखता है कि दूसरे के खेत में न जाने पायें कि हर बादशाह की एक महफूज़ चरागाह होती है, अच्छी तरह सुन लो कि अल्लाह तआला की महफूज़ चरागाह उसकी हराम कर्दा चीज़ें हैं (तहरीमी अहक़ाम हैं) सुनो! जिस्म में एक पारह गोश्त है, जब वह दुरुस्त होता है तो सारा जिस्म सही व सालिम (सेहत मन्द) रहता है और जब वह ख़राब हो जाता है तो सारा जिस्म ख़राब हो जाता है। जानते हो वह पारह गोश्त क्या है? वह दिल है।

हज़रत अबू मूसा अशअरी फ़रमाते हैं कि हर चीज़ की एक ख़ास हद मअय्यन है और इस्लाम की हूद हैं। परहेज़गारी, तवाज़ोअ, सब्र और शुक्र। तक़्वा और परहेज़गारी उन सब की जड़ है, सब्र दोज़ख़ से नजात का बाएस है और शुक्र जन्नत के हुसूल का ज़रिया। हज़रत हसन बसरी मक्का को गये तो देखा कि हज़रत अली की औलाद में से एक साहबज़ादे ख़ानए काबा से पुश्त



लगाए लोगों को नसीहत कर रहे हैं (वाअज़ कह रहे हैं) हज़रत हसन बसरी वहां रुक गये और उनसे दरयाफ़्त किया, मियां साहबज़ादे! दीन का सुतून क्या है? उन्होंने जवाब दिया तक्वा, फिर हज़रत हसन बसरी ने दरयाफ़्त किया दीन को तबाह करने वाली चीज़ क्या है? उन्होंने जवाब दिया लालच, यह सूनकर हज़रत हसन बसरी को कमाले तआज्जुब हुआ।

## तक्वा की दो किस्में

हज़रत इब्राहीम अदहम ने फ़रमाया कि तक्वा की दो किस्में हैं एक वह जो फ़र्ज़ है दूसरा वह जो डर और खौफ़ से हो। गरज़ तक्वा तो मआसी से बचना है और खौफ़ और डर का तक्वा अल्लाह तआला के मुहरमात में शुबहात से बचना, आवाम की परहेज़गारी तो हराम व शुबहा की उन तमाम चीज़ों से बचना है जिनका मखलूक की नज़र में बुरा अंजाम और शरीयत की तरफ़ से उनपर मवाख़ज़ा है और ख़्वास की परहेज़गारी है उन तमाम चीज़ों से अलग रहना जिनमें ख़्वाहिश (नफ़्स) का दख़ल और नफ़्स की लज़्ज़त व रग़बत का शाएबा है और जो हज़रात ख़्वास में ख़ास है यानी ख़ासुल ख़ास है उनका तक्वा है उन चीज़ों से बचना जिनमें इंसान के इरादे और राय का दख़ल हो, गोया अवाम का तक्वा है तर्क दुनिया में, ख़्वास का तक्वा है तर्क जन्नत में और ख़ासुल ख़ास का तक्वा है मासिवा अल्लाह से हर शय का तर्क कर देना।

यहया बिन मआज़ राजी का कौल है कि तक्वा दो किस्म का है। एक ज़ाहिरी और दूसरा बातिनी। ज़ाहिरी तक्वा यह है कि तेरा इरादा और हर हरकत अल्लाह के लिए हो और बातिनी तक्वा यह है कि तेरे दिल में अल्लाह के सिवा किसी का दख़ल मुमकिन न हो। यहया बिन मआज़ ने यह भी फ़रमाया कि जो शख्स तक्वा के दकाएक और बारीकियों पर नज़र नहीं करता उसे कुछ हासिल नहीं होता न खुदा की तरफ़ से उसको कुछ अता होता है। कहा गया है कि जिसकी नज़र तक्वा में बारीक बीन है कयामत में उसका मरतबा बलन्द व अरफ़अ होगा। एक कौल यह भी है कि गुफ़्तगू का तक्वा सोने चांदी के तक्वा से ज़्यादा सख़्त है और सरदारी में तक्वा, सोने चांदी के तक्वा से ज़्यादा सख़्त है। इसलिए कि इन दोनों को तो उसके हुसूल के लिए खर्च किया गया है।

अबू सुलैमान दारानी फ़रमाते हैं कि तक्वा जोहद का पहला दर्जा है जिस तरह क़नाअत रज़ा की आखिरी मंज़िल है। हज़रत अबू उसमान ने फ़रमाया तक्वा का सवाब हिसाब में हल्का होता है और यहया बिन मआज़ राजी ने फ़रमाया तक्वा बग़ैर तावील के इल्म के मर्तबा पर फ़ायज़ होना है। इब्नुल जला का कौल है कि जिसकी दरवेशी में तक्वा नहीं है वह ज़ाहिर में हराम खाता है। युनुस बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि तक्वा हर मुशतबहा चीज़ से गुरेज़ करने (बच निकलने) और हर आन नफ़्स का मुहासबा का नाम है। हज़रत सुफ़ियान सूरी फ़रमाते हैं कि तक्वा से ज़्यादा आसान चीज़ मैंने नहीं देखी कि जो चीज़ दिल में खटकी (ज़रा भी मुशतबहा मालूम हुई) उसको मैंने छोड़ दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस फ़रमान का भी यही मतलब है कि जिस चीज़ के हलाल होने में तुम्हारे दिल में शुबहा हो और उसपर दूसरे लोगों का आगाह होना तुम पर गिरा गुज़रे, तुम्हारे सीने में उसके लिए कुशादगी पैदा न हो और दिल में कुछ शुबहा हो तो ऐसी चीज़ गुनाह है।

इसी तरह हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि गुनाह दिलों



में खराश पैदा करने वाला है यानी जो चीज़ में खराश और खटक पैदा करे उसपर दिल मुतमईन न हो तो उससे परहेज़ करो, इसी सिलसिला की एक और हदीस भी है जिसमें हुजूर ने फरमाया कि दिल में खराश पैदा करने वाली चीज़ों से बचो वह गुनाह हैं। यह भी इरशाद फरमाया है कि दिल में शक व शुबहा डालने वाली चीज़ को छोड़कर उस चीज़ को इख्तियार करो जो शक व शुबहा पैदा करने वाली नहीं है।

हज़रत मारुफ करखी का कौल है कि जिस तरह मजम्मत से ज़बान रोकते हो उसी तरह दूसरों की मदह से भी रोको। बिश्र हाफी ने फरमाया: तीन काम मुशकिल तरीन हैं, अव्वल नादारी में सखावत, तन्हाई में परहेज़गारी और ऐसे शख्स के सामने हक बात कहना जिससे उम्मीद भी हो और खौफ भी (नुकसान पहुंचाने का खौफ और इनाम व अलताफ की उम्मीद) बिश्र बिन हारिस हाफी की बहन हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल की खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि ऐ इमाम! हम छत पर बैठ कर सूत कातते हैं जब (नीचे) मशअलें गुजरती हैं तो उसकी रौशनी हम पर पड़ती है क्या उसकी रौशनी में हमें सूत कातना जायज़ है, हज़रत इमाम ने यह सुनकर फरमाया! खुदा तुम्हें माफ़ करे तुम कौन हो, उन्होंने कहा कि मैं बिश्र बिन हारिस की बहन हूं यह सुनकर हज़रत इमाम अहमद रौने लगे और फरमाया कि तुम्हारे घर से तो परहेज़गारी और तक़वा का दरिया बहता है तुम मशअलों की रौशनी में सूत न काता करो।

हज़रत अली अत्तार ने फरमाया मैं बसरा के एक कूचा से गुज़र रहा था मैंने देखा चन्द जईफ़ लोग बैठे हैं और बच्चे खेल रहे हैं, मैंने उन बच्चों से पूछा तुमको इन बुजुर्गों के सामने खेलते शर्म नहीं आती, यह सुनकर एक बच्चा बोला चूंकि इन बुजुर्गों में तक़वा कम हो गया है इसलिए इनकी हैबत भी कम हो गई है।

हज़रत मालिक बिन दीनार चालीस साल बसरा में रहे लेकिन मरते दम तक बसरा का छुहारा या खजूर नहीं चखी। जब खजूरों की फ़सल खत्म हो जाती तो फरमाते बसरा वालो! न मेरे इस पेट का नुक़सान हुआ और न तुम्हारी खजूरों में कुछ कमी व बेशी हुई। हज़रत इब्राहीम बिन अदहम से कहा गया कि हज़रत! आबे ज़म ज़म क्यों नहीं पीते, फरमाया मेरे पास डोल नहीं है मेरा डोल होता तो पीता।

रिवायत है हारिस मुहासबी जब मुशतबहा खाने ही तरफ़ हाथ बढ़ाते थे तो उंगुलियों के पोरों पर पसीना आ जाता था, इससे आप समझ जाते थे कि खाना हलाल नहीं है, कहते हैं कि हज़रत बिश्र हाफी के सामने मुशतबहा खाना लाया जाता तो आप का हाथ खाने की तरफ़ बढ़ता ही नहीं था। हज़रत बायज़ीद बुस्तामी जब शिकमे मादर में थे उस वक़्त आप की वालिदा के सामने अगर मुशतबहा खाना आ जाता और वह और वह उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाना चाहतीं तो हाथ बढ़ता ही नहीं था। बाज़ बुजुर्गों के सामने जब मुशतबहा खाना लाया जाता तो खाने से बदबू निकलने लगती जिससे वह समझ जाते कि खाना मुशतबहा है और वह उसे न खाते, बाज़ हज़रात के मुताल्लिक़ मनकूल है कि जब वह मुशतबहा खाने का लुक़्मा मुंह में रखते तो लुक़्मा चबाया ही न जाता था बल्कि वह लुक़्मा उनके दहन में रेत की तरह हो जाता था। अल्लाह तआला ने यह सूरतें उनका बोझ हल्का करने, उनकी आसानी और उनकी हिफ़ाज़त के लिए कर दी थी जब इन लोगों ने अपने लुक़्मों को हराम से पाक रखा, तलबे हलाल और तर्क हराम की कोशिश की



तो अल्लाह ने भी उनको मुशतबहा और ना मरगूब खानों से महफूज रखा और खाने की शिनाखा उन पर आसान कर दी। फ़रोख़्त करने वालों की तलाश और उनके अहवाल की जुस्तजू और हराम व हलाल की तनकीह की उनको ज़रूरत बाकी नहीं रही और अल्लाह तआला ने उनको पहचान अता कर दी। यह निशानियां और अलामात उन अकाबिरीन को अता हुई जिनके हाल पर हक़ तआला की इनायत मबजूल और उसकी रहमत उनके शामिले हाल हुई, आम मुसलमानों के लिए हर वह चीज़ हलाल है जिसका नतीजा मख़लूक की नज़र में काबिले मजम्मत न हो और न उस पर शरई मुवाख़ज़ा हो जैसा कि हज़रत सुहैल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी के बारे में मनकूल है कि जब उनसे रिज़्क हलाल के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया हलाल वह है जिसमें अल्लाह की ना फ़रमानी न हो। एक कौल यह भी उसके जवाब में उनसे मनकूल है कि उन्होंने फ़रमाया हलाल और पाक वह है जिसमें अल्लाह को फ़रामोश न किया गया हो।

### हलाले ऐन अंबिया का खाना है

आम मुसलमानों के लिए हर वह चीज़ हलाल है जिसमें किसी मख़लूक का हक़ न हो और उस पर कोई शरई मुतालबा भी न हो जैसा कि हज़रत सुहैल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी ने एक सवाल के जवाब में फ़रमाया हलाल हर वह चीज़ है जिसमें अल्लाह तआला की ना फ़रमानी न हो। दूसरी मरतबा फ़रमाया कि हलाल वह साफ़ माल है जिसमें कि हलाले ऐनी ही अगर हलाल होता (उसके सिवा हर चीज़ हराम) तो किसी के लिए मुरदार खाना हलाल न होता और न वह खाना हलाल होता जिसे किसी सिपाही ने अपने हराम माल से खरीदा और फिर जिससे खरीदा उसको वापस करके अपने दाम वापस ले लिए, ऐसा खाना मुत्तकी मोमिन के लिए जायज़ नहीं इसलिए कि खरीदने और वापस करने के दर्मियान उस खाने पर एक ऐसी हालत भी गुज़री है जिसमें वह खाना हराम था और वह हुरमत, सिपाही खरीदार के हाथ में जाने से पैदा हुई अगर वह तमाम मुसलमान बिना इत्तेफ़ाक़ वापसी के बाद उस खाने को हलाल जानते हैं, इस तरह यह बात ज़ाहिर हो गई कि हलाल व हराम वह है जिस पर शरीयत ने हुक्म दिया न कि वह शय बजाते खुद हलाल व हराम है। हलाले ऐन अंबिया अलैहिमुस्सलाम का खाना है जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शख्स को यह दुआ मांगते सुना कि इलाही! मझे हलाले मुतलक़ रोज़ी अता फ़रमा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हलाले मुतलक़ रोज़ी का रिज़्क अंबिया का रिज़्क है, तू ऐसा रिज़्क अल्लाह से मांग जिस पर तुझे अज़ाब न हो।

### यहूदी, नसारा, और ज़िम्मीयों के बारे में हराम चीज़ों की फ़रोख़्त का हुक्म

शरीयत में है कि अगर कोई काफ़िर, ज़िम्मी, यहूदी, नसारानी और मजूसी, हराम चीज़ों की तिजारत करे मसलन शराब, खिन्ज़ीर वगैरह तो उसको उसकी इजाज़त दे दी जाएगी उससे कीमत का उश्र (दसवां) ले लिया जाएगा यह बात हज़रत उमर से साबित है कि आपने हुक्म फ़रमा दिया था कि इन ज़िम्मीयों को ऐसी तिजारत करने की इजाज़त दे दो और उनसे उसकी कीमत का दसवां हिस्सा ले लो। अब सवाल यह पैदा होता है कि उस उश्र (दसवां) का क्या किया जाता था? क्या उससे मुसलमान फ़ायदा उठाते थे, (ज़रूर उठाते थे), अब अगर सिर्फ़ हलाले ऐनी (वह शय जो अपनी जात के एतबार से हलाल हो) ही को हलाल करार दिया जाए



तो शराब और खिन्जीर हराम हैं, उनकी कीमत का उश्र (दसवां) किस तरह हलाल हो सकता है। हालांकि मिकदार और कब्जा के तगय्युर के बाएस उसको हजरत उमर ने हलाल करार दे दिया था, पस जिस शख्स ने अपने हाथ में शरीयत की मशअल ले कर उसकी रौशनी में लेन देन किया और उस लेन देन में कुछ तगय्युर व तबद्दुल नहीं किया और शरीयत के दायरा से कदम बाहर न रखा और वही लिया जिसकी शरीयत ने इजाजत दी है और वही दिया जिसका हुक्म शरीयत ने दिया है और शरीयत के मुताबिक ही तमाम तसरूफात किये तो ऐसे शख्स को हलाल खाने वाला कहा जाएगा और हलाले मुतलक की तलब और तलाश उसके लिये जरूरी नहीं है। नीज यह कि हलाले मुतलक का दस्तयाब होना तकरीबन ना मुमकिन है। बजुज उसके कि अल्लाह तआला अपने बाज औलिया व असफिया को उससे सरफराज फरमा दे और अल्लाह तआला के लिये यह अम्र कुछ दुशवार नहीं।

## रोजी कमाने के लिहाज से तीन किस्म के लोग

रोजी कमाने के लिहाज से लोग तीन तरह के हैं, अब्बल मुत्तकी, दूम वली, सोम अहले मारफत। मुत्तकी के लिये बस वह चीज हलाल है जो अपने नतीजा के एतबार से मख्लूक की नजर में ऐब के काबिल न हो और न उसपर कोई शरई मुवाखजा हो। वलीए कामिल मोमिन के लिये वह खाना हलाल है जिसमें नफसानी ख्वाहिशात का शाएबा और उसकी आमेजिश न हो महज अम्रे इलाही के ताबेअ हो (जो कुछ मयस्सर आ गया वह खा लिया)

आरिफों और अहले मारफत का खाना वह है जिसमें उनके कस्द व इरादा को मुतलक दखल न हो बल्कि सिर्फ तकदीरे इलाही कारफरमा होती है, अल्लाह तआला का फजल हमेशा उनके शामिले हाल रहता है, वही उनकी रोजी फराहम करता है और वही उस रोजी तक उनकी रहनुमाई फरमाता है। अल्लाह तआला अपनी कुदरते कामिला और मशीयत से उनके लिये हर शय मुहय्या करता है और अपनी नेमतों से सरफराज करता है और वह अल्लाह के फजल के तहत इस तरह परवरिश पाते हैं जिस तरह एक शीर ख्वार बच्चा मां की आगोश में परवरिश पाता है, पस जब तक पहला मरतबा हासिल न हो दूसरे दरजा तक रसाई हासिल नहीं होती, और जब तक दूसरे दरजा पर न पहुंच जाए तीसरे मकाम का हुसूल नहीं हो सकता।

मुत्तकी का खाना बे नफस आदमी के लिये मुशतबहा है और बे नफस शख्स का खाना उस शख्स के हक में मुशतबहा है जिसने अपने इरादों को मशीयते इलाही के ताबेअ कर दिया और राहे इलाही में फना कर दिया है जैसा कि कहा गया है सय्यातुल मुकर्रेबीन हसनातुल अबरार है यानी अहले कुरबत की बुराईयां नेक लोगों की नेकियों के बराबर हैं, पस शैख का खाना मुरीद के लिये मुबाह है मगर शैख के लिये मुरीद का तआम शैख के तजकिया हाल, पाकीजगीए नफस कुर्ब इलाही और मंजिलत की बलन्दी के बाएस हराम है।

## तक़्वा की एक और मिसाल

हकाइके तक़्वा के सिलसिला में एक और मिसाल कहश से मनकूल है, कहते हैं कि मुझसे एक ऐसा गुनाह हो गया जिसकी नदामत में मैं चालिस साल से रोता हूं, मेरा एक भाई मुझसे मिलने को आया मैंने उसकी मदारात के लिए एक दांग की भुनी हुई मछली खरीदी, जब वह खाने से फारिग हो गया तो हाथ साफ करने के लिये पड़ोसी की दीवार से (उसकी इजाजत के बगैर



एक ढेला तोड़ कर मैंने उसको दे दिया उसने उस मिट्टी से हाथ मल कर साफ कर लिये और मैंने इस फेअल पर पड़ोसी से उसकी माफी तलब नहीं की।

## दूसरी मिसाल

मनकूल है कि एक मकान में किराएदार रहता था उसने किसी को खत लिखा, (रौशनाई ताजा थी) उसने चाहा कि उस मकान से थोड़ी सी मिट्टी लेकर सियाही को खुश्क करदे फौरन उसके दिल में खतरा गुजरा कि मकान उसकी मिल्क में नहीं है बल्कि किराया पर है, चन्द लम्हे बाद उसने दिल को यह कह कर बहला लिया कि थोड़ी मिट्टी लेने में क्या डर, चुनांचे मिट्टी ले कर खत खुश्क कर लिया फौरन गैब से आवाज आई कि ऐ मिट्टी को हकीर व खफीफ समझने वाले! तुझे बहुत जल्द पता चल जाएगा जब कल तू तवील हिसाब में गिरफ्तार होगा।

## तीसरी मिसाल

उतबा को लोगों ने देखा कि वह मौसमे सरमा में पसीने से शराबोर हैं, किसी ने वजह पूछी तो कहा कि यह मकान वह है जिसमें मैंने अपने रब की नाफरमानी की थी, जब उनसे गुनाह के बारे दरयाफ्त किया गया तो बताया गया कि हाथ साफ करने के लिये मिट्टी का ढेला दीवार से उखाड़ लिया था और मालिक मकान से उसकी इजाजत नहीं ली थी।

## चन्द और मिसालें

मनकूल है कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल ने मक्का मुकर्रमा में एक दुकानदार के पास अपना तश्त गिरवी रख दिया जब उसको वापस लेने का वक़्त आया तो दोकानदार ने दो तश्त आपके सामने रख दिये और कहा कि इन दोनों में जो आपका हो ले लीजिए, हज़रत इमाम ने फ़रमाया कि अपने तश्त का पहचानना मेरे लिये मुशकिल है लिहाज़ा यह दोनों तश्त तुम ही अपने पास रहने दो। इमाम साहब ने रेहन का रुपया उसको दे दिया, दोकानदार ने कहा कि हज़रत मैं तो आपकी आजमाईश कर रहा था, यह रहा आपका तश्त। इमाम साहब ने फ़रमाया, अब मैं नहीं लूंगा यह कहकर तश्त छोड़ कर चले गए।

मरवी है कि हज़रत राबिया अदविया ने शाही मशअल की रौशनी में अपनी फटी हुई कमीज़ सी ली उसके नतीजा में उनके दिल की हालत बदल गई (दिल को खोया खोया सा पाने लगी) उनको कुछ मुदत बाद अपनी फटी हुई कमीज़ का ख्याल आया फौरन ही कमीज़ को फाड़ डाला और रख दिया दिल की हालत दुरुस्त हो गई और फिर नूर पैदा हो गया।

किसी ने सुफियान सूरी को ख्वाब में देखा कि परिन्दे की तरह आपके दो बाजू हैं और जन्नत में वह एक दरख़्त से उड़ कर दूसरे दरख़्त पर पहुंच जाते हैं उनसे पूछा कि आपको यह मर्तबा कैसे मिला आपने जवाब दिया कि तक्वा के बाएस।

हस्सान इब्ने सुफियान के बारे में रिवायत है कि वह साठ बरस तक न लेट कर सोये न चरबी (चिकनाई) खाई और न ठंडा पानी पिया। आपके इन्तेकाल के बाद किसी शख्स ने आपको ख्वाब में देखा आपसे पूछा कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या मामला किया, फ़रमाया अच्छा सुलूक किया लेकिन मैं एक सूई के बाएस जिसे मैंने आरियतन लिया था और उसे वापस नहीं किया जन्नत से रोक दिया गया हूं।



हज़रत अब्दुल वाहिद बिन जैद का एक गुलाम चन्द साल से उनकी खिदमत में था वह चालीस साल तक इबादत गुज़ार रहा, अब्दुल वाहिद के पास वह गल्ला नापने की खिदमत पर मामूर था उसके इन्तेक़ाल के बाद किसी शख्स ने देखा और पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ क्या मामला किया उसने जवाब दिया कि मेरे साथ बेहतर हुआ है लेकिन मुझे जन्नत से रोक दिया है क्योंकि जब मैं गल्ला नाप के देता था तो मेरे पैमाने से चालीस पैमाने गर्द व गुबार (मेरे जिम्मा) निकाली गई यानी हर नाप के साथ जो गर्द व गुबार गल्ला के साथ मिलकर जाता था वह चालीस पैमाने निकला और उसकी सज़ा में मुझे जन्नत में जाने से रोक दिया गया।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक कब्रस्तान से गुज़र हुआ आपने उन मुर्दों में से एक मुर्दे को पुकारा हुक्मे इलाही से वह जिन्दा हो गया आपने उससे दरयाफ़्त किया तू कौन है? उसने अर्ज़ किया हज़रत मैं हम्माल (कुली) हूँ लोगों के बोझ उठाया करता था एक रोज़ एक आदमी का गद्दा मैंने पहुँचाया, असनाए राह में उन लकड़ियों में से एक तिन्का दांत कुरेदने के लिए तोड़ लिया, उसका मुतालबा मरने के वक़्त से अब तक मुझ से किया जा रहा है।

## तक़्वा की तकमील के शराएत

### तक़्वा की तकमील की दस शर्तें

इंसान जब तक इन दस बातों को पूरा न करे उस वक़्त तक कामिल तक़्वा हासिल नहीं होगा।

**अव्वल:** गीबत से ज़बान को रोकना, अल्लाह तआला का इरशाद है: तुम में से कोई किसी की गीबत न करे।

**दोम:** बद गुमानी से बचना और परहेज़ करना, अल्लाह तआला का हुक्म है: बहुत गुमान करने से बचो बाज़ गुमान गुनाह होते हैं। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि हज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया गुमान से परहेज़ करो, गुमान बड़ी झूठी बात है।

**सोम:** मज़ाह (ठठ बाजी) से इजतेनाब करो, अल्लाह का इरशाद है: कोई कौम किसी कौम का मज़ाक न उड़ाये।

**चहारुम:** ना महरम से आंखें बन्द रखना, अल्लाह तआला का इरशाद है: अहले ईमान से कह दीजिए कि वह अपनी आंखें नीची रखें।

**पंजुम:** ज़बान (गुफ़्तगू) की सच्चाई, अल्लाह तआला फ़रमाता है: जब बात चीत करो तो सच बोलो (इंसाफ़ करो)।

**शशुम:** अल्लाह के एहसान को पहचानना ताकि मगरूर न हो जाये, अल्लाह का इरशाद है: बल्कि यह तो अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुमको मोमिन होने की हिदायत की।

**हफ़तुम:** राहे हक़ में माल को खर्च करना नाजायज़, रास्ता में खर्च न करना, अल्लाह तआला फ़रमाता है: और वह लोग जब खर्च करते हैं तो न फुज़ूल खर्ची करते हैं और न बुख़ल करते हैं। नेक कामों में खर्च में बुख़ल नहीं करते और मासीयत में खर्च नहीं करते।

**हश्तुम:** दुनिया में उरुज आर गुरुर का तालिब न हो, अल्लाह तआला का इरशाद है:



आखिरत का घर हम उन लोगों के लिए रखेंगे जो ज़मीन पर न इतराते हैं और न फ़साद बरपा करते हैं।

**नहुम:** नमाज़ पंजगाना की उनके औकात में हिफ़ाज़त करना (उनको अदा करना) और उनके रुकूअ व सुजूद में पाबन्दी करना क्योंकि इरशादे रब्बानी है: तमाम नमाज़ों को निगाह रखो (नमाज़ों की पाबन्दी करो) खुसूसन दर्मियानी नमाज़ अस्र को और अल्लाह के हुज़ूर खुजूअ के साथ खड़े रहो।

**दहम:** मज़हब सुन्नत पर कायम रहना, अल्लाह तआला फ़रमाता है: और यकीनन यह मेरी सीधी राह है तुम इस (सुन्नत) पर चलो दूसरी राहें मत इख़्तियार करो अगर दूसरे रास्तों में दाख़िल होंगे तो अल्लाह के सीधे रास्ते से भटक जाओगे।

## बाज़ गुनाहों से तौबा

### बयक वक़्त तौबा

बयक वक़्त अगर तमाम गुनाहों से मुमकिन न हो तो बाज़ गुनाहों से तौबा करना और बाज़ से न करना जायज़ है। मसलन कबीरा गुनाहों से तौबा करे आर सगीरा से न करे कि वह जानता है अल्लाह तआला के नज़दीक कबाइर बड़े गुनाह होते हैं और यह अल्लाह तआला के अताब और सख़्त अज़ाब में मुब़्तला करने वाले हैं और सगीरा गुनाहों का दर्जा कमतर है इसलिए उनकी माफ़ी का रास्ता करीबी है। यह ख़याल करके कबाइर से तौबा करना दुशवार नहीं है इसके बाद जब दिल में ईमान व यकीन मुस्तहक़म हो जाएगा और हिदायत के अनवार ज़ाहिर हो जायें और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ होने में बन्दे का सीना खुल जाये तो उस वक़्त तमाम सगाइर गुनाहों की बारीकियों, शिकं खफ़ी, दिलों के गुनाह और मक़ामात व हालात के तमाम गुनाहों तौबा करे बल्कि उसके बाद तो हर मक़ाम और हालात के गुनाह से भी तौबा करता रहेगा, जब बन्दा को किसी मक़ाम (इरफ़ान) पर तरक्की होती है तो वहां पहुंचकर वह खुद जान लेता है कि उसे क्या करना चाहिए। इस बात को वही समझ सकता है जो उसका मज़ाक़ रखता है और उस रास्ता पर ग़ामज़न है। उस राह के राह रौ से मिलता जुलता है इसलिए बारे अब्बल ही उन लोगों की गिरफ़्त उस चीज़ पर न बढ़ने लगे जो इन्तहा दर्जा की चीज़ है। तुम को आसानी पैदा करने के लिए भेजा गया है, दुशवारियां और नफ़रत पैदा करने के लिए नहीं भेजा गया है। बिला शुबहा दीने इस्लाम एक मज़बूत दीन है यह कच्चा दीन नहीं है आहिस्तगी और नर्मी के साथ इस पर चलो, जिसने तरक्की की राह छोड़ी उसके लिए कोई सवारी नहीं है और न उसका कोई राहबर है।

जिस शख्स ने बाज़ कबीरा गुनाहों से तौबा की और बाज़ से नहीं की और यह ख़याल किया कि अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा सख़्त और ज़्यादा अज़ाब का बाएस है यह समझकर वह उन बाज़ कबाइर से ताइब हो गया और बाज़ से नहीं हुआ। उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख्स क़त्ल लूट मार और लोगों पर जुल्म व सितम करने से इसलिए तौबा कर लेता है कि वह जानता है कि बन्दों के हुक्क (बदला के बग़ैर) नहीं छोड़े जायेंगे और वह गुनाह जिन का ताल्लुक बन्दे और अल्लाह के दर्मियान है जल्द तर माफ़ हो जायेंगे या एक शख्स शराब पीने से तो तौबा कर लेता है लेकिन जिना से नहीं करता इस ख़याल से कि शराब तमाम बुराइयों की जड़ है और इससे



अक्ल जाये हो जाती है और बन्दा तमाम गुनाहों का मुरतकिब होता है, मदहोश हो कर इंसान गुगल्लजात बकने लगता है, अल्लाह से मुनकिर हो जाता है, तोहमत पर उतर आता है, जिना करता है उसे बुत परस्ती से रुकने का भी होश नहीं रहता गर्जकि वह तमाम गुनाह कर गुजरता है क्योंकि शराब तमाम गुनाहों की जड़ है और उनका सरचश्मा है जैसे कोई शख्स चन्द सगीरा गुनाहों से तो तौबा कर लेता है मगर कबीरा गुनाहों पर डटा रहता है जैसे गीबत या ना महरम को देखने से तो तौबा कर लेता है मगर मय नोशी पर कायम रहता है क्योंकि वह उसका बहुत ज्यादा आदी है और उसका खूगर है या उसका नफ्स उसको धोका देता है और वह समझता है कि यह मेरी बीमारी का इलाज है और दवा के तौर पर इस्तेमाल की हमको इजाजत है, शैतान भी उसको वरगलाता है और शराब की अच्छाइयां उसके सामने पेश करता है और खुद भी उसको मय नोशी का बड़ा शौक है जानता है कि पीने से सुरूर व कैफ़ हासिल होता है तमाम ग़म दूर हो जाते हैं अलावा अर्जीं सेहते जिस्मानी का फ़ायदा भी हासिल होता है हलाकत आफ़रीन नताइज और बुरे अवाकिब उसकी नज़र से छुप जाते हैं और वह अल्लाह के अज़ाब की तरफ़ से ग़ाफ़िल हो जाता है न दीन की ख़राबियों की तरफ़ उसकी नज़र जाती है और न दुनिया की। उसको यह ख़्याल नहीं आता कि शराब अक्ल को बरबाद कर देती है और अक्ल ही से दीन और दुनिया के तमाम काम सर अंजाम होते हैं।

हमने अभी ऊपर बयान किया है कि बाज़ गुनाहों से तौबा करना दुरुस्त होता है उसकी वजह यह है कि हर मुसलमान आम हालत में अल्लाह तआला की इताअत और नाफ़रमानी से ख़ाली नहीं होता हां हालात में तफ़ावुत होता है। अल्लाह तआला की कुरबत के लिहाज़ से गुनाहों का छोटा बड़ा होना अलग अलग चीज़ है, फ़ासिक़ तक यह कहता है कि हवा व हवस के ग़लबा की वजह से शैतान अगर मुझ पर ग़ालिब आ गया था और उसने मुझसे गुनाह सरज़द कराए थे तो यह तो मुझे कभी ज़ेब नहीं देता कि नफ्स को आज़ाद से छोड़ दूं और गुनाहों में आलूदा होता रहूं बल्कि जिन गुनाहों का तर्क करना मेरे लिए आसान है उनको कोशिश करके छोड़ दूं मेरी यह कोशिश मेरे दूसरे गुनाहों का कफ़फ़ारा बन जायेगी और शायद अल्लाह तआला यह देखकर कि मैं उसके ख़ौफ़ से बाज़ गुनाह तर्क कर रखा हूं और अपने नफ्स और शैतान से जिहाद में मसरूफ़ हूं मेरी मदद फ़रमाए और मुझे अपनी रहमत से दूसरे गुनाहों के तर्क की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमा दे और मैं जो दूसरे गुनाह करता उनके दर्मियान रुकावट डाल दे।

## फ़ासिक़ की इबादात

अगर हमारा यह कौल दुरुस्त करार नहीं दिया जायेगा तो फिर फ़ासिक़ की नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज गर्ज कि कोई ताअत व इबादत भी सही नहीं होगी और उससे बस यह कह दिया जाये कि तू फ़ासिक़ है, अल्लाह की ताअत से ख़ारिज है, हुक्मे इलाही की ख़िलाफ़रवर्जी करने वाला है इस लिए तेरी ताअतें और इबादतें अल्लाह के लिए नहीं हैं बल्कि ग़ैर अल्लाह के लिए हैं। अगर तू अल्लाह की इबादत का दाई है तो फ़िस्क़ को छोड़ दे इस राह में बस अल्लाह का एक ही हुक्म है और जब तक तू फ़िस्क़ को तर्क न कर दे यह ख़्याल नहीं किया जा सकता कि तू अपनी नमाज़ों से अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल करना चाहता है यह महाल है ऐसा नहीं किया जायेगा।



## एक मिसाल

इस दलील की मिसाल यह है कि एक शख्स पर दो लोगों के दो दीनार कर्ज है और मकरुज इतनी इस्तेताअत रखता है कि दोनों का कर्ज अदा कर दे लेकिन वह शख्स दो में से एक का कर्ज चुकता कर देता है (एक दीनार अदा कर देता है) और दूसरे का कर्ज अदा करने से इन्कार कर देता है और कसम खा लेता है बावजूद कि वह जानता है और दिल में कर्जदार होने का भी इकरार करता है तो इस सूरत में बिला शुबहा जिसका उसने कर्ज अदा कर दिया उसके बारे में वह सुबुक दोश हो गया लेकिन दूसरे शख्स का कर्ज जिससे वह मुनकिर है उस पर बाकी रहा। इसी तरह वह शख्स जो अल्लाह तआला के बाज़ अहकाम बजा लाता है और उसका मुतीअ है लेकिन जब वह ममनूआत के इरतेकाब से नाफरमानी करता है तो वह उस मआसीयत की वजह से गुनहगार बनता है और उसका इमान नाकिस रहता है क्योंकि वह एक ही वक्त में कुछ उमूर में अल्लाह का मुतीअ व फरमाबरदार है और बाज़ बातों में ना फरमान है, दीनी उमूर में ताअत व मआसियत का खलत मलत करने वालों का यही तरीका है। अब अगर यह शख्स (तरक्की करके) उस दर्जा पर पहुंच जाये कि नफ़सानी ख्वाहिशात जाएल हो जाये उस वक्त वह तमाम गुनाहों से बाज़ आ जाता है बशर्ते खुदावन्द तआला यह सिलसिला मुनक़तअ करना चाहे, अगर अल्लाह तआला की मर्जी नहीं है और बन्दा पर गुनहगार होने का आखिरी फैसला वह कर दे तो किसी के बस की बात नहीं क्योंकि गुनाहों से महफूज़ रहना हमारे बस की बात नहीं मगर जो अल्लाह तआला से तौबा करता है उस पर अल्लाह तआला रहम भी फरमाता है और जो उसकी तरफ़ रुजूअ करता है उसकी मेहरबानी उसके शामिले हाल होती है।

## तौबा के बारे में अहादीस व आसार

### तौबा के मुताल्लिक़ अहादीस

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि जुमा के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुत्बा में हम से इरशाद फरमाया कि ऐ लोगों! मरने से पहले तौबा करो और कब्ल इस के कि जोअफ़ या बीमारी की वजह से आजिज़ हो जाओ नेक आमाल में उजलत करो, अल्लाह से अपना ताल्लुक़ जोड़ लो कामयाब हो जाओगे। ख़ैरात ज़्यादा करो तुम्हारे रिज़्क में अफ़जूनी होगी, दूसरों को भलाई का हुक्म दो महफूज़ रहोगे, बुरी बातों से लोगों को रोको तुम्हारी मदद की जायेगी। हुज़ूरे अक़दस अकसर यह दुआ फरमाया करते थे: इलाही मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा कबूल फरमा बेशक तू ही तौबा करने वाला और मेहरबानी करने वाला है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि: इब्लीस को जब ज़मीन पर उतारा गया तो कहने लगा इलाही! तेरी इज़्ज़त और जलाल की कसम! आदमी के बदन में जब तक जान रहेगी मैं बराबर उसको बहकाता रहूंगा, परवर दिगार ने फरमाया मुझे अपने इज़्ज़त व जलाल की कसम!



जब तक मौत की आखिरी हिचकी उसे न आ जाये मैं उसकी तौबा भी फरमाऊंगा।

हजरत मोहम्मद बिन मतरफ़ फरमाते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है कि आदमी पर रहमत हो कि वह गुनाह करता है और मुझसे माफी मांगता है और मैं उसको बख्श देता हूँ उस पर रहमत हो कि वह दोबारा गुनाह करता है और मुझ से मग़फ़िरत तलब करता है और मैं उसे माफ़ कर देता हूँ रहमत हो उस पर कि न तो वह गुनाह के इस्तेकाब से बाज़ आता है और न मेरी रहमत से मायूस होता है मैं तुम को गवाह बनाता हूँ कि मैंने तुम को बख्श दिया!

हजरत अनस ने फरमाया कि आयते करीमा व अनिस तग़फ़ेरु रब्बकुम सुम्मा तुबू अलैहे के नूजूल के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा कराम सौ मरतबा इस्तिग़फ़ार करते और कहते थे :हम अल्लाह से मग़फ़िरत चाहते हैं और तौबा करते हैं। हजरत अनस ने फरमाया कि एक शख्स हुजूर की मजलिस में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! मुझसे एक बड़ा गुनाह सरज़द हो गया है, आप ने फरमाया कि अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करो उसने अर्ज़ किया मैं इस्तिग़फ़ार कर लेता हूँ फिर दोबारा वैसा करता हूँ आपने फरमाया जब भी गुनाह का इस्तेकाब किया करे तौबा किया कर यहां तक कि शैतान ज़लील व ख़्बार हो जाये उसने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह अगर मेरे गुनाह ज़्यादा हो जायें तो? हुजूर ने फरमाया अल्लाह तआला की माफी तेरे गुनाहों से बहुत ज़्यादा है।

## बग़ैर तौबा के मग़फ़िरत नहीं

हजरत हसन बसरी फरमाते हैं कि बग़ैर तौबा के मग़फ़िरत की और बग़ैर अमल सवाब की उम्मीद न रख इसलिए कि अल्लाह तआला से माफ़िल होना उसके ग़ज़ब में मुबतला कर देता है और ऐसे आमाल का इस्तेकाब करना जिनसे वह राज़ी न हो और उस पर मग़फ़िरत की आरज़ू करना तेरी आरज़ू की फ़रेब ख़ूरदगी है यहां तक कि (उसी हालत में) मौत आ जायेगी क्या तूने अल्लाह तआला का यह इरशाद नहीं सुना यानी बेकार उम्मीदों ने तुम को फ़रेब दिया आखिर तुम को खुदा का हुक्म पहुंचा और अल्लाह के मुताल्लिक तुम को शैतान ने धोके में रखा दूसरी जगह (इसी बारे में) इरशाद होता है जिसने तौबा की, ईमान लाया और नेक काम किये और सीधी राह इख़तेयार की मैं उसे बख्श देता हूँ। यह भी इरशाद फरमाया मेरी रहमत हर चीज़ को अपने अन्दर समाये हुए है मैं अपनी रहमत उन लोगों के लिए मुक़द्दर करूंगा जो तक्वा रखते हैं और ज़कात देते हैं और मेरी आयात पर इमान रखते हैं।

पस बग़ैर तौबा व तक्वा रहमत और जन्नत की आरज़ू व हिमाक़त, नादानी और नफ़्स का फ़रेब है क्योंकि रहमत और जन्नत की शर्तें इन मज़कूरा आयतों में बयान कर दी गई हैं यानी रहमत व जन्नत तौबा व तक्वा के साथ मरबूत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है मोमिन अपने गुनाहों को पहाड़ के मानिन्द समझता है और डरता है कि वह पहाड़ कहीं सर पर न आ गिरे और फ़ाजिर अपने गुनाहों को उस मक्खी के मानिन्द समझता है जो नाक पर बैठी हुई है कि इशारे से उसको उड़ाया जा सकता है।

आंहरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया बन्दा गुनाह करता है और वह गुनाह उसको बहिश्त में ले जाता है? आप ने फरमाया गुनाह उसकी नज़र के सामने रहता है जिससे उसको निदामत और शर्मिन्दगी महसूस होती है वह अल्लाह से मग़फ़िरत चाहता है बिल आखिर



वही गुनाह उसे बहिश्त में ले जाने का मौजिब बन जाता है।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैंने किसी चीज़ को तलब में इतना हसीन और तासीर में तेज़ नहीं पाया जितनी पुराने गुनाह के लिए नई नेकी होती है। बिला शुबहा नेकियां गुनाहों को दूर कर देती है यह फरमान नसीहत हासिल करने वालों के लिए एक अजीम नसीहत है जब कोई बन्दा गुनाह करता है तो गुनाह से दिल में एक सियाह नुक्ता पैदा हो जाता है वह तौबा करता है घबराकर अल्लाह की तरफ रुजूअ करता है और इस्तिगफ़ार करता है उस वक्त वह नुक्ता दिल से साफ़ हो जाता है। अगर वह तौबा, ज़ारी और इस्तिगफ़ार नहीं करता तो गुनाह बालाए गुनाह दाग़ पर दाग़ तह ब तह हो जाते हैं यहां तक कि तमाम दिल सियाह हो कर मुर्दा हो जाता है और यही मानी हैं इस आयत के यानी "ऐसा नहीं है बल्कि जो काम वह करते थे उन कामों के बाइस उनके दिल पर जंग आ गया है" उनके आमाल का जंग उनके दिल पर चढ़ गया है। हुजूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया गुनाह न करना, तलबे तौबा से ज़्यादा आसान है इस लिए मौत की ताख़ीर को ग़नीमत जानो।

आदम बिन ज़ियाद का कौल है कि अपने आप को ऐसा समझो कि मौत सामने आ गई है और तुम अल्लाह से माफ़ी तलब कर रहे हो और अल्लाह तआला ने माफ़ी दे दी है इस लिए हर वक्त अल्लाह की इताअत के काम करो।

हज़रत दाऊद अलैहिस्लाम के पास वही आई कि डरते रहो, कहीं ऐसा न हो कि ग़फलत की हालत में तुम को मैं पकड़ लूं और मेरे सामने आओ तो कोई हुज्जत काम न आये, कोई मर्दे सालेह अब्दुल मलिक बिन मरवान के पास गये, अब्दुल मलिक ने उनसे कहा कि मुझे कुछ नसीहत फरमाइए, मर्दे सालेह ने फरमाया अगर तुम्हारे पास मौत आये तो क्या तुम मरने के लिए तैयार होगे? अब्दुल मलिक ने कहा नहीं। तब बुजुर्ग ने फरमाया क्या तुम इतनी कुदरत रखते हो कि इस हालत को ऐसी हालत की तरफ़ लौटा सको जो तुम को पसन्द है? (यानी मौत को वापस कर सकते हो?) अब्दुल मलिक ने नफ़ी में जवाब दिया। बुजुर्ग ने फरमाया क्या तुम इससे महफूज़ हो कि तुम को मौत अचानक आ दबोचे? अब्दुल मलिक ने नफ़ी में जवाब दिया। उस वक्त उन बुजुर्ग ने फरमाया कि मैंने किसी जी फहम शख्स को उन बातों से राज़ी और खुश होते नहीं देखा जिन पर तुम मगरूर हो (यानी मुल्क व मताए दुनिया)

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि (गुनाह पर) नदामत और पशेमानी तौबा है आपने यह भी इरशाद फरमाया कि जिसने गुनाह किया फिर उस पर पशेमान हुआ तो पशेमानी उस गुनाह का कफ़ारा हो गया। हसन बसरी ने फरमाया है कि तौबा के चार सुतून हैं 1-ज़बान से माफ़ी का तालिब होना 2- दिल से पशेमान होना 3- आज़ा को गुनाह से रोकना 4-यह नीयत रखना कि आइन्दा ऐसा गुनाह नहीं करूंगा। यह भी फरमाया कि तौबतुन्नसूह यह है कि तौबा करे और जिस गुनाह से तौबा की है उसकी तरफ़ फिर न लौटे।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि गुनाह से तौबा करने वाला बेगुनाह की तरह हो जाता है और गुनाह का इरतेकाब करने के बावजूद रब से माफ़ी तलब करने वाला गोया अपने रब से मज़ाक़ करता है। जब कोई बन्दा अस्तग़फ़िरोका व अतूबू एलैका कहता है और उसके बाद फिर गुनाह करता है फिर यही कहता है और फिर गुनाह करता है तो तीन



गुनियतुत्तालिबीन  
बार (इसी तरह) गुनाह करने के बाद चौथी बार उसके गुनाह को (सगीरा होने के बावजूद) कबीरा की फेहरिस्त में लिख दिया जाता है।

हज़रत फुजैल बिन अयाज़ ने फ़रमाया कि तुम अपनी जात के खुद वसी बनो और दूसरे लोगों को अपने लिए वसी न बनाओ, जब कि खुद तुम ने अपने ज़िन्दगी में अपने नफ़्स की वसीयत जाया कर दी तो फिर तुम उन दूसरों को इस बात पर किस तरह बुरा कह सकते हो कि उन्होंने तुम्हारी वसीयत राएगां कर दी।

हज़रत अबू उमामा बाबली से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दाहिने बाजू का फ़रिश्ता बायें बाजू के फ़रिश्ते पर हाकिम है जब बन्दा नेकी करता है तो दायें बाजू का फ़रिश्ता उसकी दस नेकियां लिख लेता है और जब बन्दा बुराई (गुनाह) करता है और बायें बाजू का फ़रिश्ता उसकी बुराईयां लिखने लगता है तो दायें बाजू का फ़रिश्ता कहता है ठहर जाओ चुनांचे वह छः सात घड़ी तक (लिखने से) रुका रहता है अब अगर उस अर्सा में बन्दा ने अपना गुनाह अल्लाह से बख़्शवा लिया तो गुनाह नहीं लिखा जाता वरना बदी लिख ली जाती है। हदीस शरीफ़ के दूसरे अल्फ़ाज़ इस तरह से हैं कि बन्दा जब गुनाह करता है तो वह नहीं लिखा जाता है यहां तक कि वह दूसरा गुनाह करे जब उसके पांच गुनाह हो जाते हैं और उनके बाद वह एक नेकी कर लेता तो उसके लिये पांच नेकियां लिखी जाती हैं। और वह पांच नेकियां उन पांच गुनाहों का बदल हो जाती हैं, उस वक़्त इब्लीस चीख़ता है और कहता है कि मेरा इब्ने आदम पर काबू किस तरह चले मैं कितनी ही कोशिश क्यों न करूं वह एक नेकी करके मेरी सारी कोशिश पर पानी फेर देता है।

हज़रत इमाम हसन से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर बन्दे पर दो फ़रिश्ते मुक़रर हैं, दाईं तरफ़ वाला बाईं तरफ़ के फ़रिश्ते पर हाकिम है। बन्दा जब कोई गुनाह करता है और बाईं तरफ़ का फ़रिश्ता कहता है कि मैं इसको लिख लूं तो दाईं तरफ़ वाला (हाकिम) फ़रिश्ता कहता है अभी ठहर कि वह पांच गुनाह कर ले (तब लिखना) जब बन्दा पांच गुनाह कर लेता है और बाईं तरफ़ का फ़रिश्ता उनको लिखना चाहता है तो दाईं तरफ़ का फ़रिश्ता कहता है अभी ठहर जा कि वह कोई नेकी कर दे। जब बन्दा कोई नेकी कर लेता है तो दाईं तरफ़ का फ़रिश्ता कहता कि हमको बताया गया है कि हर नेकी का एवज़ दस गुना है बस आओ हम पांच गुनाहों को पांच नेकियों से मिटा दें और बाकी पांच नेकियां इसकी लिख लें, उस वक़्त शैतान चीख़ता है और कहता है कि मैं इन्सान पर किस तरह ग़ालिब आ सकता हूं। मैं जितनी कोशिश और मेहनत करता हूं उसकी एक नेकी मेरी तमाम कोशिशों को मलिया मेट कर देती है।

## मज़ीद अहादीस

हज़रत इब्ने अब्बासब से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बन्दा जब तौबा करता है और अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल कर लेता है तो बारी तआला करामन कातेबीन को उस बन्दे के लिये गुनाह फ़रामोश करा देता है और बन्दा के वह आज़ा जिनसे गुनाह किये और वह ज़मीन जहां उसने गुनाह किये, वह आसमान जिसके नीचे उसने गुनाह किये सब फ़रामोश करा दी जाती हैं (आज़ा ज़मीन और आसमान सब फ़रामोश कर देते हैं) इसी



तरह कयामत के दिन जब वह बन्दा आएगा तो उसके गुनाहों पर कोई गवाही देने वाला न होगा और न उस पर गुनाह का बोझ होगा।

हुजुरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "गुनाह से तौबा करने वाला उस शख्स की मानिन्द है जिसने कोई गुनाह नहीं किया। एक रिवायत में इस हदीस में इतना और ज़्यादा है अगरचे दिन में सत्तर बार गुनाह करे और तौबा करे। हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि जो शख्स तीन बार **अस्तुग़फ़ेरुल्लाह ला हल अज़ीमल्लज़ी ला इलाहा इल्ला होवल हय्युल कय्यूमो व अतूबू इलैह** पढ़ेगा उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जाएंगे ख़्वाह वह मिक्दार में समन्दर के झाग के बराबर हों। यह भी हज़रत इब्ने मसऊद से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि आदमी कयामत के दिन अपने आमाल नामा में अव्वल गुनाहों को मुंदरिज और आखिर में नेकियों को दर्ज पाएगा लेकिन जब दोबारा आमाल नामा के आगाज़ पर नज़र डालेगा तो उसको सब नेकियां ही नेकियां तहरीर नज़र आएंगी। आयते करीमा: यह वह लोग ही होंगे कि अल्लाह उनकी बुराईयों को नेकियों से बदल देगा, के यही मानी हैं और यह उस तौबा करने वाले के हक़ में है जिसका ख़ातिमा अनाबत और तौबा पर हुआ हो।

बाज़ अकाबरीने सल्फ़ का कौल है कि बन्दा जब गुनाहों से तौबा कर लेता है तो उसके तमाम गुज़श्ता गुनाह नेकियों से बदल जाते हैं। हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि कयामत के दिन कुछ लोग तमन्ना करेंगे कि उनके गुनाह ज़्यादा होते, हज़रत इब्ने मसऊद ने यह बात इस लिये फ़रमाई कि अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिसके गुनाह चाहेगा नेकियों से बदल देगा।

हज़रत हसन बसरी ने नबीए मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि हुजूर वाला ने इरशाद फ़रमाया "तुम में से जब कोई गुनाह करता है तो ज़मीन से आसमान तक फ़िज़ा गुनाहों से पुर हो जाती है और जब वह अल्लाह तआला से तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसकी तौबा कबूल फ़रमा लेता है इसी लिये हुजूर ने इरशाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआला कहता है कि ऐ इब्ने आदम! अगर तू सतहे ज़मीन को गुनाहों से भर कर मुझसे मिलेगा तो मैं उसके बराबर मग़फ़िरत के साथ तुझसे मिलूंगा।

एक रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद कूफ़ा की एक गली से गुज़र रहे थे कि एक फ़ासिक के घर में बहुत से औबाश जमा थे और शराब पी जा रही थी, उन लोगों में एक गाने वाला भी था जिसका नाम ज़ावान था वह बरबत पर उमदा आवाज़ से गा रहा था। हज़रत इब्ने मसऊद ने उसकी आवाज़ सुन कर फ़रमाया, कैसी अच्छी आवाज़ है, काश यह कुरआन की तिलावत करता तो कितना अच्छा होता फिर आप अपनी चादर सर पर डाल कर आगे बढ़ गए, ज़ावान ने आपकी आवाज़ सुन ली, लोगों से पूछा यह कौन साहब थे लोगों ने बताया कि यह रसूलुल्लाह के सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद हैं ज़ावान ने कहा यह क्या फ़रमा रहे थे लोगों ने कहा कि वह कह गए हैं "कितनी अच्छी आवाज़ है काश गाने के बजाए कुरआन की तिलावत की जाती तो कितना अच्छा होता"। यह सुनते ही ज़ावान के दिल पर हैबत तारी हो गई फौरन उठ खड़ा हुआ, बरबत को ज़मीन पर मार कर तोड़ डाला और दौड़ता हुआ हज़रत तक पहुंचा और गले में चादर डाल कर (ख़ताकार की शकल बना कर) रोने लगा आपने ज़ावान को गले लगा लिया और उसके साथ खुद भी रोने लगे और फ़रमाया "मैं कैसे उससे मोहब्बत न करूँ



जिससे अल्लाह को मोहब्बत है" उसके बाद ज़ावान ने बरबत बजाने और गाने से तौबा कर ली और हज़रत इब्ने मसऊद की खिदमत में रहने लगा। यहां तक कि कुरआन पाक पढ़ लिया और इतना इल्म हासिल किया कि इल्मे दीन का इमाम बन गया। चुनांचे ज़ावान ने बहुत सी हदीसों हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद और हज़रत सलमान फारसी से रिवायत की हैं।

इस्माइली रिवायत में आया है कि एक रन्डी गाने का पेशा करती थी लोगों को अपने हुस्न व जमाल से फितना में डाल रखा था, उसके घर का दरवाज़ा हमेशा खुला रहता था और वह खुद खुले दरवाज़े के पास तख्त पर बैठा करती थी, जो शख्स उधर से गुज़रता और उसको देखता फरेफ़ता हो जाता मगर उसके पास आने से इजाज़त उस वक़्त मिलती जब दस दीनार या उससे ज़्यादा रकम पेश करता। एक रोज़ कोई इस्माइली जाहिद उधर से गुज़रा अचानक उस आबिद की नज़र उस फ़ाहशा औरत पर पड़ी वह आबिद भी उसे देखते ही फरेफ़ता हो गया लेकिन आबिद ने अपने नफ़्स से जंग शुरू कर दी यहां तक कि उसने अल्लाह तआला से दुआ मांगी कि वह इस गुनाह की ख़्वाहिश उसके दिल से दूर कर दे वह बराबर अपने दिल को काबू में किये रहा मगर आखिरकार दिल बेकाबू हो गया यहां तक कि उसके पास जिस क़दर माल व मताअ था वह सब उसने फरोख़्त कर दिया और जिस क़दर दीनारों की ज़रूरत थी जमा कर के उस फ़ाहशा औरत के दरवाज़े पर आया, फ़ाहशा ने आबिद से कहा कि दीनार उसके वकील के सुपुर्द कर दे फिर उसके पास आए, आबिद ने उसके कहने के मुताबिक़ किया, वह उसके सामने तख्त पर बनी संवरी बैठी थी आबिद दीनार दे कर उसके पास बैठ गया जब आबिद ने हाथ बढ़ा कर उससे लुत्फ़ अंदोज़ होने का क़स्द किया तो अल्लाह तआला ने उसकी साबिका इबादत की बरक़त और अपनी रहमत से उसको इस तरह बचा लिया कि आबिद के दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि अल्लाह तआला अपने अर्श से उसकी इस ना गुप्तनी हालत देख रहा है और वह इस फ़ेअले हराम में मसरूफ़ है, हाय हाय मेरे तमाम आमाल ज़ाया हो गए पस उसी वक़्त आबिद के दिल में ख़ौफ़ हुआ और वह सारे बदन से कांपने लगा और उसका रंग फ़क़ हो गया, बदकार औरत ने उसका उड़ा रंग देख कर पूछा क्या बात है? आबिद ने कहा मैं अपने रब से डर रहा हूँ, वापस जाने दो, औरत ने कहा तुम भी ख़ूब हो, सैकड़ों लोग तो मेरी आरजू करते हैं कि मुझे पालें और तुम मेरी मोहब्बत से मुंह मोड़ रहे हो, आबिद ने कहा मैं अपने अल्लाह से डरता हूँ रहा वह माल जो मैंने तुम को दिया है वह मुझे वापस नहीं चाहिए वह तुम्हारे लिये हलाल है। वह तुम ही ले लो और मुझे जाने दो। फ़ाहशा ने कहा मालूम होता है कि कभी तुमने अब से पहले यह लुत्फ़ (सोहबत) नहीं उठाया है। आबिद ने कहा हां। फिर फ़ाहशा ने उसका नाम और पता दरयाफ़्त किया, आबिद ने अपना और अपना गांव का नाम बता दिया उसके बाद औरत ने उसको जाने की इजाज़त दे दी। आबिद उफ़तां व खेज़ां, अपनी हालत पर गिरया कुनां वहां से वापस आया, उसके बाद आबिद की बरक़त से औरत के दिल में भी अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा हुआ और दिल में कहने लगी उस शख्स का पहला गुनाह था और उसके दिल में अल्लाह का इस क़दर ख़ौफ़ पैदा हुआ, मैं तो इतने बरसों से यह गुनाह कर रही हूँ और मेरा रब भी वही है जो उस शख्स (आबिद) का है, डरना तो मुझे चाहिए था, उसके बाद फ़ाहशा औरत ने अपना दरवाज़ा लोगों पर बन्द कर दिया, शरीफ़ाना लिबास पहन कर अल्लाह की याद में मसरूफ़ हो गई। एक दिन उस औरत ने सोचा कि अब उसे उस आबिद के पास चलना चाहिए क्या ताज्जुब कि वह



मुझसे निकाह कर ले! अगर ऐसा हो जाए तो मैं अपने दीन की बातें उससे सीख लूंगी और वह अल्लाह की इबादत में मेरा मुआविन व मददगार होगा। यह सोच कर उसने अपना तमाम सामान और रुपया व पैसा अपने साथ लिया और आबिद के बताए हुए पता पर पहुंच कर आबिद के मुताल्लिक लोगों से पूछा, लोगों ने आबिद को बताया कि एक औरत आई है और आपको दरयाफ्त कर रही है, आबिद उठ कर उस औरत के पास पहुंचा तो औरत ने अपने चेहरे से नकाब उलट दिया ताकि आबिद उसको पहचान ले, आबिद ने उसको पहचान लिया और उसी के साथ उसको अपना गुनाह भी याद आ गया, एक चीख मारी और गिर पड़ा गिरते ही उसकी रुह कफ़से उनसरी से परवाज़ कर गई, अब तो वह औरत बहुत घबराई और बहुत कुढ़ी और कहने लगी मैंने जिसके लिये घर छोड़ा वह खुद ही दुनिया छोड़ कर चला गया, उसने लोगों से पूछा क्या इसके रिश्तेदारों में कोई ऐसा शख्स है जो मुझसे शादी कर ले, लोगों ने बताया कि आबिद का एक नेक और सालेह भाई है लेकिन वह मुफलिस और तंगदस्त है औरत ने कहा कुछ मज़ाएक़ा नहीं मेरे पास काफी माल है चुनांचे आबिद के भाई ने उस औरत से निकाह कर लिया। निकाह के बाद उस सालेह औरत के बतन से सात लड़के पैदा हुए जो सारे के सारे बनी इस्राईल के नबी हुए।

### सिद्क व ताअत का असर

तुमने सिद्क, ताअत और हुसने नीयत की बरकत देखी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के ज़रिये अल्लाह तआला ने ज़ावान को किस तरह हिदायत बख़्शी चूंकि हज़रत अब्दुल्लाह खुद सादिक और नेक दिल थे (इसलिये उनकी बात ने ज़ावान पर यह असर किया) लिहाज़ा तुम उस वक़्त तक किसी बुराई को नेक नहीं बना सकते जब तुम अपनी ज़ात में खुद नेक न बनो और रब का ख़ौफ़ तुम्हारे दिल में न हो। अगर तुम मुखलिस हो और अपनी हरक़ात व सकनात में रियाकार नहीं हो, हर हाल में अल्लाह को वाहिद व यक़ता समझोगे तो तुम को नेकी की तौफ़ीक़ और ज़बान मिलेगी और अल्लाह तआला तुम्हारी राह रास्त पर ज़्यादा रहनुमाई फ़रमाएगा और तुम्हारे बाइस (दूसरे की) बुराई बग़ैर किसी तकलीफ़ के ज़ाएल हो जाएगी और मौजूदा ज़माने की तरह नेकी बुराई की सूरत में रूनुमा नहीं होगी, इस ज़माने में तो अगर कोई किसी एक बुराई को रोकने की कोशिश करता है तो लोग उसके दर पै आज़ार हो जाते हैं और फ़सादे अजीम बरपा करके रोकने वाले को गालियां देते हैं, उस पर ज़िना की तोहमत लगाते हैं और मार धाड़ करते हैं, उसको लूट लेते हैं गर्ज कि हर तरह से उसको सताते हैं यह सारी बुराईयां इसलिये हैं कि उनके ईमान व यकीन में नक्स है और उनके अंदर सिद्क की कमी है क्योंकि वह अपनी ख़्वाहिशात से मग़लूब हैं और सारी बुराईयां उनमें मौजूद हैं, पस उन बुराईयों के दूर करने का फ़र्ज़ उन पर आएद होता है लेकिन वह कैसे यह फ़र्ज़ अदा करें कि उनके नफ़ूस तो बड़े बड़े मशग़लों में लगे हुए हैं वह दूसरों को तो बुराई से मना करते हैं मगर उन पर जो फ़र्ज़ ऐन है उसको छोड़ कर फ़र्ज़ कफ़ाया में मसरूफ़ हैं, वह अपने फ़र्ज़ को छोड़ कर ऐसी बातों में मशग़ूल होते हैं जो उनके लिये मौजूद नहीं हैं।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि आदमी के इस्लाम की ख़ूबी इसमें है कि जो चीज़ उसके लाएक़ न हो उसको तर्क कर दे, अगर वह चाहता है कि दूसरे जल्द बुराई को तर्क कर दें तो खुद उस पर लाज़िम है कि पहले वह अपने से उस बुराई को



दूर करे और अपने आप को नसीहत करके उससे बचा रहे और तमाम गुनाहों को छोड़ दे ख्वाह वह जाहिरी गुनाह हो या बातिनी! जब वह खुद उन गुनाहों से पाक साफ हो जाए उस वक्त दूसरों की (इसलाह की) तरफ मुतवज्जेह हो और हुसने तदब्बुर के साथ उनसे बुराईयों को दूर करे जिस तरह हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के जरिये जावान की बुराई जाएल हुई, बनी इस्राईल की आबिद की इबादत और उसके इखलास और सिदके दिली पर गौर करो कि किस तरह अल्लाह तआला ने उसे गुनाहे कबीरा और बदकारी के इरतकाब से बचा लिया, अल्लाह तआला फरमाता है:

वाक़ेआ यूं ही हुआ ताकि हम उसको बुराई और बे हयाई से दूर रोकें यकीनन वह हमारे मुखलिस बन्दों में से था चूँकि साबिका अय्याम में खलवतों और तन्हाइयों में उनके अंदर खुलूस, सच्चाई और हुसने ताअत था इसलिए अल्लाह की मदद उनके और उस फाहशा औरत के दर्मियान जाएल हो गई इस पर भी गौर करो कि अल्लाह तआला ने उस आबिद की बदौलत उस बदकार औरत को (बदकारी से) किस तरह नजात दी और किस तरह आबिद के बरकत से आबिद के भाई को क्या कुछ मयस्सर आ गया। अल्लाह तआला ने उसकी मुफलिसी और तकलीफ (उसरत) को दूर ही नहीं किया बल्कि एक हसीन तरीन बीवी भी उसे अता फरमा दी उसको अल्लाह तआला ने इस तरह रिज़्क दिया और इस तरह गनी किया कि वह उसका शान व गुमान भी नहीं कर सकता था फिर उसे सात नबियों का बाप और उस औरत को उनकी मां बनाया।

खुलासा यह कि तमाम भलाईयां अल्लाह तआला की ताअत फरमांबरदारी में हैं और तमाम बुराईयां उसकी नाफरमानी और मासीयत में। लिहाजा तुम को किसी हालत में भी मासीयत शेआर नहीं बनना चाहिए अगर हम ईसयां गोश हुए तो न हम होंगे न ईसियां रहेंगे!

## तौबा की शिनाख्त

### तौबा की शिनाख्त चार बातों से होती है

तौबा करने वाले की तौबा की शिनाख्त चार बातों से होती है अव्वल ज़बान को बेहूदा बातों, गीबत, चुगलखोरी और झूट से रोक ले, दोम—अपने दिल में किसी के तरफ से हसद और दुश्मनी न रखे, सोम—बुरे लोगों से दूर रहे क्योंकि यह लोग बुराई की तरफ उसको रागिब करेंगे इस तरह तौबा की पुख्तगी में फुतूर डालेंगे और उसकी तौबा टूट जायेगी। उन बातों को अपनाते रहे जिनसे तौबा में पुख्तगी आती है और उन बातों से परहेज़ करे जिनसे तौबा में लचक पैदा होती है। लिहाजा उम्मीद, कुव्वत और कलबी इरादे को मजबूत करे क्योंकि इस तरह इसमें कुव्वत और वलवला पैदा होगा और यह इरादा तौबा को बरकरार रखने का मुहर्रिक होगा पस ममनूआते शरइया से दूर रहे और नफसे अम्मारा को ख्वाहिशों की तकमील से बाज़ रखे और उसको रोके रहे ताकि वह दोबारा गुनाह का इरतेकाब न करे। चहारुम—बन्दा तौबा करने वाला खुद को उन कामों से अलग रखे जिनका जिम्मा खुद हक तआला ने लिया है मसलन रिज़्क वगैरा और उन कामों में (इताअत व बन्दगी) में मसरुफ़ हो जाये जिसकी अदाएगी का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया है। जब तुम किसी तौबा करने वाले में यह अलामते मौजूद पाओ तो जान लो कि वह उन लोगों में से है जिन के बारे में हक तआला ने इरशाद फरमाया है तौबा करने वालों को अल्लाह दोस्त रखता है।

लोगों पर भी चार बातें आएद होती हैं इसी तरह तौबा कबूल करने वाले (हक तआला) की तरफ



से चार बातें दूसरे लोगों के जिम्मा है अब्बल यह कि लोगों को चाहिए कि ऐसे शख्स से मोहब्बत करे क्योंकि उस बन्दे ने अल्लाह से मोहब्बत करनी शुरू कर दी है दोम—लोग अपनी दुआओं के जरिये उसकी तौबा की हिफाजत करें और कहें कि अल्लाह तआला उसे तौबा पर कायम रखे। सोम—लोग उसको उसके गुज़िश्ता (साबिका) गुनाहों पर मलामत न करे, ताना न दें। नबी मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिसने किसी मोमिन (तौबा करने वाले) को उसकी बुराई (गुनाह) के साथ मलामत की तो वह बुराई उस मोमिन के लिए कफ़ारा बन जायेगी और अल्लाह तआला अगर चाहेगा तो बुराई करने वालों को उस बुराई में मुबतला कर देगा।

और जो शख्स किसी मुसलमान के किसी गुज़रे हुए गुनाह से उस पर ताना ज़न हो तो वह दुनिया से उस वक़्त तक नहीं जायेगा जब तक वह खुद उस जुर्म पर इरतेकाब न कर ले और उसके बाइस रूसवा न हो इस लिए कि कोई मोमिन इरतेकाबे गुनाह का इरादा नहीं करता न अपने दिल से कसदे गुनाह करता है न गुनाह को दीन का जुज़्ज समझता है कि उसे दीनदारी के तौर पर करता हो सिर्फ़ शैतान के फ़रेब दही, जोशे शहवत और नफ़्सानी शौक की फ़रावानी ग़फ़लत व फ़रेब खुरदगी की वजह से उससे गुनाह वाक़ेअ होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है और अल्लाह ने कुफ़्र, फ़िस्क और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिए ना पसन्दीदा बना दिया है। इस आयत में अल्लाह तआला ने वज़ाहत फ़रमा दी है कि अहले ईमान के नज़दीक मआसीयत इन्तेहाई नागवार चीज़ है इस लिए मोमिन जब तौबा करे और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ हो जाये तो उसको तौबा करदा गुनाह याद दिला कर शर्मिन्दा करना जाएज़ नहीं बल्कि उसके लिए दुआ करना चाहिए कि अल्लाह तआला उस तौबा पर उसको कायम रखे और उसको तौफीक दे और उसकी हिफाजत फ़रमाये। चहारुम—लोगों पर वाजिब है कि उसके साथ बैठें उठें, उससे बात चीत करें, उसके मआविन व मददगार हों और उसकी इज्जत करें।

तौबा करने वाले को भी अल्लाह तआला चार बातों से सरबलन्द व मोअज़्ज़ज फ़रमाता है 1—गुनाहों से उसको इस तरह निकाल लेता है जैसे उसने गुनाह ही नहीं किया 2—अल्लाह तआला को अपना दोस्त बना लेता है 3—शैतान उस पर ग़ालिब नहीं होता 4—दुनियां से रुख़्सत होने से कब्ल उसको ख़ौफ़ से अम्न व अमान बख़्शता है। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: उन पर फ़रिश्तों का नुज़ूल होता है और वह कहते हैं कि तुम ख़ौफ़ न करो और न हिज़्न व मलाल। तुम को उस जन्नत की खुशख़बरी हो जिसका तुम से वादा किया गया है।

## तौबा के बारे में

## मशाइखे तरीक़त के अक़वाल:

### तौबा के दर्जे

शैखे तरीक़त अबू अली दक्काक ने फ़रमाया है कि तौबा क तीन दर्जे हैं (1) तौबा (2) एनाबत (3) अदबत, तौबा इब्तेदाई दर्जा है, दर्मियानी दर्जा एनाबत है और आखिरी या इन्तेहाई दर्जा अदबत है। जिसने अज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से तौबा की वह साहिबे तौबा है, जिसने सवाब की खातिर या



अज़ाब से बचने लिये तौबा की वह साहिबे एनाबत है और जिसने महज अल्लाह तआला के हुक्म की तामिल में तौबा की, सवाब की उम्मीद और अज़ाब के अंदेशा से नहीं वह साहिबे अदबत है। मशाइखे कराम ने यह भी फरमाया है कि तौबा आम अहले ईमान की सुन्नत है, अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ ईमान वालो! अल्लाह से तौबा किया करो ताकि तुम फ़लाह पाओ।

एनाबत औलियाए मुकर्रबीन की सिफ़त है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होने वाले दिल के साथ आया है। अदबत अंबिया मुर्सलीन अलैहिमुस्सलाम की सिफ़त है इरशादे बारी है: कितना अच्छा बन्दा है क्योंकि वह अल्लाह की तरफ़ रुजू होने वाला है।

हज़रत जुनैद ने फ़रमाया कि तौबा तीन मानी पर हावी है (1) गुनाह पर पशेमानी (2) जिस वीज़ को अल्लाह ने मना फ़रमाया है उसको दोबारा न करने का पुख़्ता इरादा (3) हुक्के इन्सानी को अदा करने की कोशिश।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि तौबा नाम है आइन्दा गुनाह को तर्क कर देने का (आइन्दा गुनाह न करने का) हज़रत जुनैद से मरवी है कि मैंने हारिस को यह कहते हुए सुना कि मैं कभी अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोकतौबा नहीं कहता हूँ बल्कि कहता हूँ अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोका शवततौबा यानी ऐ अल्लाह मैं तुझ से तौबा की आरजू तलब करता हूँ।

हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मैं हज़रत सिरी सिक्ती के पास पहुंचा तो मैंने उनका रंग परीदा पाया मैंने वजह दरयाफ़्त की तो आपने फ़रमाया कि एक जवान ने मुझसे तौबा के बारे में दरयाफ़्त किया, मैंने उसको बताया कि तौबा यह है कि तू अपने गुनाहों को न भूले, वह नौजवान मुझसे झगड़ने लगा और कहा तौबा यह है कि तू अपने गुनाहों को भुला दे, मैंने कहा कि मेरे नज़दीक तो तौबा के यही मानी हैं जो उस जवान ने बताए हैं। हज़रत सिरी सिक्ती ने पूछा क्यों यह मानी क्योंकर हैं? मैंने जवाब दिया कि मैं इस लिये कहता हूँ कि जब मैं रंज व अलम के आलम में होता हूँ तो वह मुझे आराम व राहत की हालत में ले जाता है और आराम व राहत की हालत में रंज व अलम को याद करना जुल्म है यह सून कर वह ख़ामोश हो गए।

## तौबा के मज़ीद मानी

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि तौबा यह है कि तू अपने गुनाहों को न भूले। हज़रत जुनैद बग़दादी ने किसी शख्स के सवाल के जवाब में फ़रमाया कि तौबा यह है कि अपने गुनाहों को भूल जाओ, हज़रत अबू नसर सर्राज ने मज़कूरा बाला (दोनों मुतज़ाद) कौलों की तशरीह की है वह फ़रमाते हैं कि हज़रत सहल के कौल में मुरीदों और उन दूसरे लोगों के अहवाल की तरफ़ इशारा है कि वह कभी तो अपने नफ़ा के सिलसिले में सोचते हैं और कभी नुक़सान पर अफ़सोस करते हैं लेकिन हज़रत जुनैद ने मुहक्क़कीन की तौबा की तरफ़ इशारा किया है क्योंकि जब मुहक्क़कीन के दिलों पर अज़मते इलाही का ग़लबा होता है और वह हमेशा ज़िक़े इलाही में मशगूल रहते हैं इस लिए वह अपने गुनाहों को याद ही नहीं कर पाते। हज़रत जुनैद का यह कौल हज़रत रोयम के कौल के मानिन्द है जब उनसे तौबा के बारे में दरयाफ़्त किया तो उन्होंने फ़रमाया कि तौबा की याद से तौबा करना चाहिए।

## हज़रत जुन्नून मिसरी

हज़रत जुन्नून मिसरी ने फ़रमाया कि अवाम की तौबा गुनाहों से होती है और ख़्वास की



गुनियतुत्तालिबीन

गफलत से। हज़रत अबुल हसन नूरी ने फ़रमाया कि तौबा यह है कि मा सिवा अल्लाह से तौबा की जाये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद बिन अली ने फ़रमाया कि एक तौबा करने वाला तो अपनी लगज़िशों से तौबा करता है और एक ताएब गफलत से तौबा करता है और एक तौबा करने वाला नेकियों के देखने से तौबा करता है ज़ाहिर है कि इन तीनों में कितना अज़ीम फ़र्क है।

## हज़रत अबू बकर वासती तौबा किसे कहते हैं

हज़रत अबू बकर वासती ने फ़रमाया कि ख़ालिस तौबा यह है कि ताएब के ज़ाहिर व बातिल में मआसीयत का शाएबा भी बाकी न रहे जिसकी तौबा ख़ालिस होती है वह परवाह नहीं करता कि तौबा के बाद उसकी शाम कैसी गुज़री और सुबह कैसी हुई! हज़रत यहया बिन मआज़ राजी ने मुनाजात में कहा इलाही! मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैंने तौबा की है न यह कहता हूँ कि अब ऐसा नहीं करूँगा क्योंकि मैं अपनी सरिश्त को पहचानता हूँ और न मैं इसकी ज़मानत दे सकता हूँ कि आइन्दा गुनाह नहीं करूँगा क्योंकि मैं अपनी कमज़ोरियों को जानता हूँ फिर भी मैं यह कहता हूँ कि आइन्दा ऐसा नहीं करूँगा क्योंकि शायद मैं दोबारा ऐसा करने से पहले मर जाऊँ।

हज़रत जुन्नून मिसरी ने फ़रमाया कि गुनाहों को छोड़े बग़ैर तौबा करना झूटों की तौबा है। आपने यह भी फ़रमाया कि तौबा की हकीकत यह है कि ज़मीन अपनी वुसअत व फुसहत के बावजूद तुझ पर तंग हो जाये यहां तक कि तेरे लिए फ़रार की राह बाकी न रहे इसके बाद तेरी जान तुझ पर तंग हो जाये जैसा कि अल्लाह तआला कुरआन करीम में इरशाद फ़रमाता है।

फ़राख़ होने के बावजूद ज़मीन उन पर तंग हो गई और उनकी जानें उन पर तंग हो गई और उन्होंने जान लिया कि अल्लाह के सिवा और कोई ज़रिया अल्लाह से बचाव का नहीं है फिर अल्लाह ने उनकी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई ताकि वह उसी की तरफ़ लौट आयें।

## इब्ने अता का इरशाद

इब्ने अता ने फ़रमाया कि तौबा दो तरह की है तौबा एनाबत और तौबा इस्तजाबत, तौबा एनाबत यह है कि बन्दा अल्लाह तआला के अज़ाब से तौबा करे। तौबा इस्तजाबत यह है कि बन्दा खुदावन्द तआला के लुत्फ़ व करम से हया करते हुए तौबा करे।

हज़रत यहया बिन मआज़ राजी ने फ़रमाया कि तौबा के बाद का एक गुनाह तौबा, तौबा के पहले सत्तर (70) गुनाहों से बदतर है।

हज़रत अबू उमर अन्ताई ने फ़रमाया कि अली बिन ईसा वज़ीर एक अज़ीम लश्कर के साथ जा रहा था अवाम पूछने लगे कि यह कौन शख्स है? सरे राह खड़ी हुई एक ज़ईफ़ा ने कहा कि क्या तुम यह पूछते हो कि यह कौन है? यह एक बन्दा है जो खुदा की नज़रों से गिर गया है और खुदा ने इसको दुनिया में मुबतला कर दिया है जिसमें तुम इसे देख रहे हो, ज़ईफ़ा की यह बात अली बिन ईसा ने सुन ली घर वापस जाकर उन्होंने वज़ारत से इस्तीफ़ा दे दिया और मक्का मुकर्रमा में पहुंच कर मुक़ीम हो गये।



## बाब 11

आयत, इन्ना अकरमकुम इन्दल्लाहे अतक्काकुम

अल्लाह के नजदीक तुम में ज़्यादा इज़्ज़त  
वाला वह है जो तुम में सबसे ज़्यादा मुत्तकी है

की तश्रीह व तफ्सीर

उलमाए रब्बानी ने तक्वा के मानी और मुत्तकी की हकीकत के बारे में इखतेलाफ़ किया है (उलमा के अक़वाल मुख़तलिफ़ हैं) रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद गरामी है कि मुकम्मल तक्वा अल्लाह तआला के इस इरशाद में है:

बेशक अल्लाह तआला तुमको अदल, एहसान और कराबत वालों को माल देने का हुक्म देता है और तुम्हें बदकारी, बेहयाई और नाफ़रमानी से मना करता है ताकि तुम नसीहत कबूल करो।

हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया है कि मुत्तकी हर वह शख्स है जो किसी दूसरे शख्स को देखे तो यह कहे कि यह मुझसे बेहतर है। हज़रत उमर इब्न ख़त्ताब ने हज़रत कअब अहयार से फ़रमाया मुझे तक्वा के बारे में कुछ बताओ तो उन्होंने फ़रमाया क्या आप कभी ख़ारदार राह से गुज़रे हैं, हज़रत उमर ने फ़रमाया, हां! हज़रत कअब ने फ़रमाया! उस वक़्त आप उस राह से कैसे गुज़रे? आपने फ़रमाया दामन समेटे हुए गुज़रा हूँ, हज़रत कअब ने कहा कि यही हाल तक्वा का है।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने फ़रमाया कि दिन को रोज़ा रखना, रात को नमाज़ें पढ़ना और उनके दर्मियान गड़बड़ करना। (ना मुनासिब आमाल का इस्तेफ़ाब) तक्वा नहीं है, तक्वा तो यह है कि जिसको अल्लाह ने हराम किया है उससे बचे और जो फ़र्ज़ किया है उस पर अमल करे, उसके बाद अल्लाह तआला तुझे जो रिज़्क अता फ़रमाये वह ख़ैर ही ख़ैर है।

मनकूल है कि तलक़ बिन हबीब से दरयाफ़्त किया गया कि तक्वा क्या है? उसकी तारीफ़ बयान फ़रमाईये तो उन्होंने कहा अल्लाह तआला की दी हुई रौशनी में सवाब की उम्मीद पर अल्लाह से शर्म करते हुए अहकामे इलाही की ताअत और उनपर अमल करना तक्वा है। यह भी कहा कहा गया है कि अल्लाह के दिए हुए नूर के मुताबिक़ उसके अज़ाब से डरते हुए मआसीयत को तर्क कर देना तक्वा है। बकर बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि इंसान उस वक़्त तक मुत्तकी नहीं हो सकता जब तक उसका खाना हराम और मुशतबह से पाक न हो और वह ग़ज़ब से बचने की कोशिश न करे।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने फ़रमाया मुत्तकी को लगाम दी गई है जिस तरह हरम में अहराम बांधने वाले को यानी जिस तरह मुहरिम पर बहुत सी हलाल चीज़ें हराम हो जाती हैं उसी तरह मुत्तकी के लिए बहुत सी चीज़ों से बचना ज़रूरी है। हज़रत शहर बिन मौशियब ने फ़रमाया कि मुत्तकी वह है जो ऐसे काम को छोड़ दे जिसके करने में कुछ मज़ाएक़ा न हो और उसका यह तर्क उस ख़ौफ़ से हो कि वह किसी ख़तर वाले काम में न पड़ जाये।



## हज़रत सिर्री सिक़ती का सलाम

हज़रत सुफ़ियान सूरी और फुज़ैल ने फ़रमाया कि मुत्तकी वह है जो लोगों के लिए वह चीज़ पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है क्योंकि मुत्तकी वही होता है जो दूसरों के लिए दिल में ज़्यादा वुसअत रखता है (उसी तरह जिस तरह अपने लिए) तुम्हें मालूम है मेरे उस्ताद मोहतरम सिर्री सिक़ती को एक वाक़ेआ पेश आया, एक रोज़ किसी दोस्त ने आपको सलाम किया आपने उनके सलाम का जवाब दे दिया लेकिन आप तेवरी चढ़ाए रहे और शगुफ़ता रबी का इज़हार नहीं हुआ, मैंने इसकी वजह दरयाफ़्त की तो आपने फ़रमाया मुसलमान जब अपने मुलसमान भाई को सलाम करता है और वह जवाब देता है तो दोनों पर सौ रहमतें तक़सीम की जाती हैं, नव्वे उस शख़्स को मिलती हैं जो ज़्यादा शगुफ़जा रौ हाता है और दस दूसरे को दी जाती हैं। मैं चीं बजबी इसलिए रहा कि यह नव्वे रहमतें उसको मिल जायें।

हज़रत मोहम्मद बिन अली तिमिज़ी ने फ़रमाया मुत्तकी वह है जिससे झगड़ा करने वाला कोई न हो। हज़रत सिर्री सिक़ती ने फ़रमाया मुत्तकी वह है जो अपने नफ़्स से बुग़ज़ रखता है। हज़रत शिब्ली ने कहा कि मुत्तकी वह है जो अल्लाह के सिवा हर चीज़ से बचे।

नातिक सादिक ने फ़रमाया आगाह रहो अल्लाह के सिवा हर चीज़ बातिल है। मोहम्मद बिन हनीफ़ ने फ़रमाया कि हर वह चीज़ जो तुझे अल्लाह से दूर कर दे उससे किनारा कश होने का नाम तक़्वा है। कासिम बिन कासिम ने फ़रमाया आदाबे शरीयत की मुहाफ़ज़त का नाम तक़्वा है। हज़रत नूरी ने फ़रमाया मुत्तकी वह है कि जो दुनिया और उसकी आफ़तों से बचे। अबू यज़ीद ने फ़रमाया तमाम शुबहों से बचने का नाम तक़्वा है, नीज़ फ़रमाया तक़्वा यह है कि जो कुछ तू कहे खुदा के लिए कहे और जब ख़ामोश रहे तो खुदा के लिए ख़ामोश रहे और जब ज़िक्र करे तो अल्लाह का ज़िक्र करे।

## दुशमन भी महफूज़ रहें

हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ फ़रमाते हैं कि बन्दा उस वक़्त तक मुत्तकियों में से हरगिज़ नहीं हो सकता जब तक उसके दुश्मन उससे इस तरह अमन व अमान में न हो जायें जैसे उसके दोस्त। हज़रत सहल फ़रमाते हैं कि मुत्तकी वह है जो अपनी वजूद की ताक़त और कुव्वत से बेपरवाह हो जाये यह भी कहा गया है कि तक़्वा यह है कि अल्लाह तआला तुझे उस जगह न देखे जिस जगह के लिए तुझे मना किया गया है और उस जगह तू ग़ैर मौजूद न हो जहां मौजूद होने का तुझे हुक्म दिया गया है। एक कौल है कि नबी मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी का नाम तक़्वा है। यह भी कहा गया है कि ग़फ़लतों से दिल को, ख़्वाहिशात से नफ़्स को, लज़्ज़तों से हल्क़ को और बुरी बातों से आज़ा को बचाना और महफूज़ रखना तक़्वा है उस वक़्त यह उम्मीद हो सकती है कि ज़मीन व आसमान के मालिक तक़्वा तेरी रसाई हो जाये। हज़रत अबुल कासिम फ़रमाते हैं कि हुस्ने खुल्क़ तक़्वा है। बाज़ हज़रात का कौल है कि मर्द का तक़्वा तीन चीज़ों से मालूम होता है। (1) जो चीज़ उसे न मिले न उस तक पहुंचे उस पर तवक्कुल। (2) जो चीज़ उसे मिल गई है उस पर रज़ामन्दी। (3) जो चीज़ जाती रही उस पर ख़ूबसूरती के साथ सब्र।



कहा गया है कि जो शख्स अपनी ख्वाहिशात का ताबेअ नहीं वही मुत्तकी है। मालिक ने कहा कि मुझसे वहब बिन कीहान ने कहा कि मदीना के किसी फकीह ने हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को लिखा कि अहले तकवा की चन्द अलामतें होती हैं उनके जरिये उनकी शिनाख्त की जाती है। मुसीबत पर सब्र, हुक्मे इलाही पर राजी, नेमतों पर शाकिर, अहकामे इलाही की इताअत और फरमांबरदारी करते हैं।

## नफ्स से हिसाब फहमी तकवा है

मैमून बिन महरान कहते हैं कि आदमी उस वक्त तक मुत्तकी नहीं हो सकता जब तक वह अपने नफ्स से उससे भी ज्यादा हिसाब फहमी न करे जिस तरह से एक बखील शरीक तिजारत अपने शरीक से करता है या एक जालिम बादशाह (अपने दीवान से)।

हजरत अबू तोराब ने फरमाया मंजिले तकवा से पहले पांच घाटियां आती हैं जब तक तू उन को उबूर नहीं करेगा, मंजिले तकवा तक नहीं पहुंच सकता। (1) नेमत पर फेक पर तरजीह (2) बकद्रे किफायत रोजी को कसीर रोजी पर तरजीह। (3) जिल्लत को इज्जत पर तरजीह। (4) रंज को राहत पर तरजीह। (5) मौत को जिन्दगी पर तरजीह देना।

बाज मशाइख ने फरमाया है कि आदमी जब तक ऐसे मकाम पर न पहुंच जाये कि उसकी दिली आरजुओं और ख्वाहिशात को तश्त में रखकर बाजार में फिराने के लिए कहा जाये तो उसको झिझक महसूस न हो (क्योंकि उसके ख्यालात और आरजूयें खिलाफे तकवा नहीं होंगी)। उस वक्त वह तकवा की चोटी पर पहुंच सकता है वरना उसकी रसाई वहां तक नहीं हो सकती। यह भी कहा गया है कि जिस तरह तुम अपना जाहिर मखलूक के लिए आरास्ता करते हो उसी तरह अपना बातिन हक तआला के लिए आरास्ता करो यही तकवा है।

हजरत अबू सईद खुदरी से मरवी है कि एक शख्स ने रसूल खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाजिर हो कर अर्ज किया या रसूलल्लाह मुझे कुछ हिदायत फरमाईये, आपने इरशाद फरमाया खुदा से डरते रहो, यह तमाम भलाईयों का मजमुआ है, जिहाद के पाबन्द रहो यह इस्लाम की (जाएज) रहबानियत है, खुदा की याद पाबन्दी से करो यह तुम्हारे लिए रौशनी है।

अबी हरमज नाफेअ बिन हरमज का बयान है कि मैंने हजरत अनस से सुना है कि उन्होंने इरशाद फरमाया किसी शख्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज किया कि हुजूर आप की आल कौन है? इरशाद ने इरशाद फरमाया हर मोमिन मुत्तकी मेरी आल है। अलगर्ज तकवा तमाम खूबियों का मजमूआ है और तकवा की हकीकत यह है कि अल्लाह की फरमांबरदारी के साथ साथ उसके अजाब से बचा रहे, अरब का मुहावरा है फलां शख्स ने अपनी ढाल से पनाह ली। तकवा की असल शिर्क से बचना उसके बाद मआसी व सईयात से बचना फिर शुबहात से बचना और उसके बाद फुजूल और बेकार बातों को तर्क कर देना है।

अल्लाह से डरो जितना डरने का हक है, की तफसीर में बताया गया है कि अल्लाह की इताअत की जाये नाफरमानी न की जाये, उसको याद किया जाये, फरामोश न किया जाये, उसका शुक्र अदा किया जाये नाशुकी न की जाये।

हजरत सुहैल बिन अब्दुल्लाह ने फरमाया अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं है रसूलुल्लाह के सिवा कोई दलील व रहनुमा नहीं, तकवा के सिवा कोई तोशा नहीं और सब्र करने



के सिवा कोई अमल नहीं। कनानी ने फरमाया दुनिया को मुसीबतों पर तकसीम किया गया है और जन्नत को तक्वा पर। जो शख्स अपने और अल्लाह के माबैन तक्वा और मुराक़बा को काम में न लाये वह कश्फ और मुशाहदा तक नहीं पहुंच सकता।

नसराबाजी ने फरमाया कि तक्वा यह है कि बन्दा मासिवा अल्लाह से बचे और (अल्लाह के सिवा हर चीज़ से गुरेज़ करे) सुहैल फरमाते हैं कि जो चाहता है कि उसका तक्वा दुरुस्त हो जाये उसको चाहिए कि तमाम गुनाहों को छोड़ दे और यही कौल है नसरआबाजी का कि जिसने तक्वा को इख्तियार कर लिया और दुनिया को छोड़ने का मुशताक बन गया, इसलिए कि अल्लाह तआला फरमाता है बेशक आखिरत का घर मुत्तकी लोगों के लिए बेहतर है।

बाज़ मशाइख उज्जाम ने फरमाया कि जिसका तक्वा दुरुस्त हो गया अल्लाह तआला उसके दिल से दुनिया की किनारा कशी को सहल व आसान बना देता है। हज़रत अब्दुल्लाह रुदबारी फरमाते हैं कि तक्वा हर उस चीज़ के तर्क कर देने का नाम है जो तुझे अल्लाह तआला से दूर करने वाली है। हज़रत जुन्नून मिसरी ने फरमाया कि जो अपने जाहिर को मुखालिफ़ शरअ बातों से और अपने बातिन को खुदा से गाफिल रखने वाली बातों से आलूदा न करे, मौकिफ़ुल इत्तेफ़ाक में अल्लाह तआला के साथ खड़े होंगे। इब्ने अतिया ने फरमाया मुत्तकी के लिए जाहिर भी है और बातिन भी, उसका जाहिर हुदूदे शरई की मुहाफ़िज़त है और उसका बातिन हुस्ने नीयत और अखलास है। हज़रत जुन्नून मिसरी ने फरमाया कि जिन्दगी उसी की है जो ऐसे मरदाने खुदा के साथ हो जिनके दिल तक्वा के आरजू मन्द हों और अल्लाह के जिक्र में खुशहाल हों। अबू हफ़स ने फरमाया परहेज़ हलाल महज़ को इख्तियार करने में है किसी दूसरी चीज़ में नहीं है। हज़रत अबुल हसन जन्जानी ने फरमाया जिसका सरमाया तक्वा है उसकी तारीफ़ से ज़बानें गुंग हैं (उसकी तारीफ़ नहीं की जा सकती)। वासती ने कहा कि तक्वा यह है कि अपने तक्वा की दीद से परहेज़ करे (ऐसी सूरत पैदा न करे कि उसके तक्वा के इज़हार के मवाक़ेअ पैदा हों और उसकी निगाहों से गुज़रें, लोग उसके सामने उसके तक्वा की तारीफ़ करें)।

मरवी है कि इब्ने सीरीन ने घी के चालीस कुप्पे खरीदे उनके गुलाम ने किसी कुप्पे से चूहा निकाला, इब्ने सीरीन ने गुलाम से दरयाफ़्त किया कि चूहा किस कुप्पा से निकाला? गुलाम ने कहा मुझे याद नहीं रहा तो आपने तमाम कुप्पों का घी फेंकवा दिया।

बाज़ अइम्मए केबार से मनकूल है कि वह अपने मकरुज़ के दरख़्त के साये में भी नहीं बैठते थे और फरमाते थे कि हदीस शरीफ़ में आया है जिस कर्ज़ से कुछ नफ़ा हासिल हो वह सूद है। मनकूल है कि हज़रत बायज़ीद बुस्तामी ने अपने एक रफ़ीक़ के साथ जंगल में कपड़े धोये, घाने के बाद उनके साथी ने कहा कि इन कपड़ों को अंगूर की बाढ़ (अंगूर की टट्टी) पर फैला दें आप ने कहा हम लोगों की दीवार पर मेख नहीं गाड़ते, साथी ने कहा अच्छा दरख़्त से लटका दें तो आपने फरमाया नहीं, इसकी टहनियां टूट जायेंगी, साथी ने कहा कि फिर अज़ख़र (मिरचिया गन्द) घास पर फैला दें तो आपने फरमाया कि यह चौपायों का चारा है हम जानवरों से इसको नहीं छुपा सकते (कपड़ों के फैलाने से घास छुप जायेगी) आखिरकार आपने अपनी पीठ पर कपड़े डाल लिए और सूरज की तरफ़ पीठ करके खड़े हो गये, जब कपड़े एक रुख़ से सूख गये तो उनको उलट दिया फिर दूसरा रुख़ भी सूख गया इस तरह आप ने कपड़े खुशक कर लिए।



गुनियतुतालिबीन

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम ने फ़रमाया कि मैं एक रात ज़हरा बैतुल मुक़द्दस के नीचे ठहर गया, कुछ रात गये दो फ़रिश्ते उतरे एक ने दूसरे से कहा यहां कौन है? दूसरे ने जवाब दिया इब्राहीम बिन अदहम, पहले फ़रिश्ते ने कहा यह वही इब्राहीम अदहम है जिसके मरातिब में से अल्लाह तआला ने एक मतर्बा कम कर दिया है, दूसरे ने पूछा उसकी क्या वजह हुई, पहले ने कहा इब्राहीम ने बसरा में कुछ छुहारे ख़रीदे थे, मेवा फ़रोश के छुहारों में से एक छुहारा (तौल के अलावा) उसके छुहारों में गिर गया था (वह उन्होंने रख लिया)। हज़रत इब्राहीम बिन अदहम का बयान है कि सुनते ही मैं बसरा वापस आया उसी दुकानदार से छुहारे ख़रीदे एक छुहारा दुकानदार के छुहारों में डाल दिया और फिर बैतुल मुक़द्दस लौट आया और ज़हरा के नीचे आकर सोया। कुछ रात गये वही दोनों फ़रिश्ते वहां उतरे और एक ने दूसरे से पूछा यहां कौन है? दूसरे फ़रिश्ते ने जवाब दिया इब्राहीम अदहम है, पहले ने कहा यह वही शख्स है जिसने चीज़ को उसकी जगह वापस कर दिया (यानी छुहारा) और उसका दर्जा जो कम कर दिया था फिर बलंद कर दिया गया।

कहा गया है कि तक़्वा की कई किस्में हैं उनमें से अवाम का तक़्वा तर्क शिर्क है, ख़ुल्ल का तक़्वा तर्क मआसी के बाद ख़्वाहिशाते नफ़्स को तर्क कर देना और हर हाल में नफ़्स की मुख़ालफ़त करना है, औलियाए ख़्वास का तक़्वा है हर चीज़ में अपने इरादा का तर्क कर देना, नफ़ली इबादात का ख़ालिस अल्लाह के लिए बजा लाना, असबाब से दिल बस्तगी को ख़त्म कर देना और मासिवा अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह और मैलान से किनारा कश हो जाना, हाल व मक़ाम की पाबन्दी को तर्क करके तक़्मीले फ़राएज़ के साथ तमाम बातों पर अल्लाह तआला के अहक़ाम की पाबन्दी करना।

अंबिया अलैहिमुस्सलाम का तक़्वा यह है कि कोई ग़ैब उनसे ग़ैब में तजावुज़ नहीं करता (यानी आलमे ग़ैब) में हर ग़ैब उनकी ज़िन्दगी का राहनुमा होता है और वही पर हर वक़्त उनकी नज़र होती है। बस यह तक़्वा मिनल्लाह (अल्लाह की तरफ़ से) होता है अल्लाह ही उनको हुक्म देता है और अल्लाह ही मना फ़रमाता है, वही उनको तौफ़ीक़ अता करता है और अदब सिखाता है, वही उनको पाकीज़ा बनाता है, वही उनको बीमारी और शिफ़ा देता है, वही उनसे कलाम और गुफ़्तगू करता है, वही उनको हिदायत देता और रहनुमाई फ़रमाता है, वही उनको बरक़त अता करता है, वही उनको आगाह करता है, वही उनको साहिबे बसीरत बनाता है, अक्ल को इसमें मजाल नहीं (कि मदाख़लत कर सके)। अंबिया तमाम इंसानों बल्कि फ़रिश्तों से भी अलग होते हैं अलबत्ता उन उमूर में जिनका ताल्लुक़ उम्मत और आम मोमिनीन के जो ज़ाहिरी अहक़ाम और वाज़ेह उमूर है उनमें अंबिया आम लोगों के साथ शरीक हैं इन बातों के अलावा दूसरे उमूर में वह मुनफ़रिद हैं अलबत्ता मख़सूस औलियाए कराम और अज़ीमुल मरतबत अब्दालों को इस तक़्वा का कुछ हिस्सा मिल जाता है, यह हज़रात तक़्वा की अपने अलफ़ाज़ में ताबीर नहीं कर सकते न उन उमूर का उनसे ज़हूर होता है, लोगों के फ़हम व इंदराक़ और हिस्से सामेआ में सिर्फ़ वही चीज़ आ जाती है, जो उन औलियाए किराम की ज़बान पर आ जाये। पस अक्सर ऐसा होता है कि बग़ैर इरादा बेसाख़ता कोई लफ़ज़ या चन्द अलफ़ाज़ उनकी ज़बान से निकल जाते हैं बस फ़ौरन ही उनके उस जोश को साकिन और उनके हैजान को साकित कर दिया जाता है और उस पर पर्दा डाल दिया जाता है वह इस सुकून व सकूत के बाद फ़ौरन बेदार हो जाते हैं और अपनी ज़बानों को (बयान से) रोक लेते हैं और जो कुछ हो चुका है (या वह कह चुके हैं) उसकी



अल्लाह से माफी मांगते हैं, इबारत को बदल देते हैं और अदाशुदा अलफाज को माकूल तरीके पर दुरुस्त कर लेते हैं। इस तरह कि मामूल के मुताबिक उनका मफहूम पैदा हो जाये।

## हुसूले तक़्वा की इब्तिदाई सूरत

### तक़्वा किस तरह हासिल किया जाये

हुसूले तक़्वा की इब्तिदाई सूरत यह है कि सबसे पहले उन मज़ालिम की माफी मांगे जो उसने लोगों पर किये हैं और उनके हुक्क के मुतालबात से उहदा बरआ हो जाये उसके बाद सगीरा और कबीरा गुनाहों से आज़ादी हासिल करे और अपने दिल के गुनाहों को तर्क करने में मशगूल हो कि दिल के गुनाह ही तमाम गुनाहों की असल बुनियाद हैं। दिल ही से दूसरे आज़ा में गुनाहों की तहरीक होती है जैसे रिया व निफ़ाक़, उज्ब व तकब्बुर, हिर्स व तमअ, मख़लूक से उम्मीद, जाह व मरतबत अपने हम जिन्सियों पर तफ़व्वुक व बरतरी के गुनाह (कि उनकी जड़ दिल ही है) जिनकी तफ़सील बहुत तवील है, उन तमाम को तर्क करने की ताकत, ख़्वाहिशाते नफ़्स की मुख़ालफ़त से पैदा होती है, पस नफ़्सानी ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करे ताकि तमाम कलबी गुनाहों को तर्क करने की तरफ़ कदम बढ़ा सके।

अल्लाह तआला के हुक्म की मौजूदगी में (उसके हुक्म के खिलाफ़) किसी चीज़ को पसन्द न करे और न अल्लाह तआला की तदबीर के साथ अपनी किसी तदबीर को काम में लाये और न अपनी तदबीर को तदबीरे इलाही पर तरजीह दे, अपने रिज़्क में किसी सबब और वजह को तलाश न करे खल्क के इन्तेज़ाम में अल्लाह के किसी हुक्म पर ऐतराज़ न करे, हर चीज़ को अल्लाह के सुपुर्द कर दे और अल्लाह का मुहीअ और फरमांबरदार बन जाये, अपने आपको उसके हवाले कर दे और अल्लाह तआला के दस्त कुदरत में ऐसा बन जाये जैसे एक शीर ख़्वा र बच्चा अपनी आका (दूध खिलाई) की गोद में होता है, जैसे मुर्दा ग़साल के हाथ में मसलूबुल इख़्तियार होता है, बन्दों की नजात और रुस्तगारी सिर्फ़ इसी तरीका में है।

### तक़्वा का हुसूल

अगर कोई यह कहे कि इस तरीके को किस तरह हासिल किया जाये तो उसको बता दिया जाये कि इस रास्ता के हुसूल का मदार है सच्चे दिल से अल्लाह की पनाह हासिल करना, सबसे अलग होकर अल्लाह का हो जाना, उसके अवामिर व नवाही की तामील करके उसकी ताअत व बन्दगी की पाबन्दी, अपने आपको तक्दीरे इलाही के सुपुर्द कर देना, उसके हुदूद की हिफ़ाज़त करना और हमेशा अपने हाल की निगहदाश्त करना।

## नजात

### नजात के बारे में मशाइख़ के अक़वाल

नजात के बारे में मशाइख़ के मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं, हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं कि जिसको भी नजात मिली उसको बग़ैर इसके नहीं मिली जब तक वह सिद्क दिल से अल्लाह अज़्ज व



जल्ता की पनाह में न आ जाये।

अल्लाह तआला का इरशाद है:

अल्लाह ने अपनी रहमत फरमाई उन तीन शख्सों पर जो पीछे रह गये थे यहां तक कि जमीन उनपर तंग हो गई अपनी वुसअत कं बावजूद और उनके नुफूस भी उनपर तंग हो गये (जान से आजिज़ आ गये) और उन्होंने गुमान किया इसके सिवा कि अल्लाह ही की तरफ रुजू किया जाये इससे बचने का कोई और तरीका नहीं है।

हज़रत अदहम ने फरमाया कि जिसने भी नजात पाई वह सिद्क व सफ़ा के बजुज़ नहीं पाई, अल्लाह तआला का इरशाद है अल्लाह तआला अहले तक़्वा को उनकी कामयाबी के साथ नजात देता है।

हज़रत हरीरी ने फरमाया कि कोई शख्स वादा पूरा किये बगैर (ईफ़ाए अहद के बगैर) नजात नहीं पा सकता जिसने ईफ़ाए वादा का पास किया वह नजात पा गया। अल्लाह तआला का इरशाद है वह लोग जो अल्लाह के अहद को पूरा करते हैं और अहद व पैमान को नहीं तोड़ते।

हज़रत अता का इरशाद है कि जब तक हया मौजूद न हो कोई नजात नहीं पा सकता, अल्लाह तआला फरमाता है:

क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह तआला देखता है।

बाज़ मशाइखे उज़्ज़ाम फरमाते हैं कि बगैर हुक्मे इलाही और कज़ाए साबिक के (जो अल्लाह के इल्म में पहले से थी) किसी नजात पाने वाले ने नजात नहीं पाई। अल्लाह फरमाता है:

जिनके लिए हमारी तरफ से पहले ही भलाई मुक़द्दर हो चुकी है (वह दोज़ख में नहीं जायेंगे)

हज़रत हसन बसरी ने फरमाया कि दुनिया और दुनिया से रुगरदानी के बगैर किसी नजात पाने वाले को नजात मयस्सर नहीं आई। अल्लाह तआला का इरशाद है:

दुनियावी जिन्दगी तो निरा लहव व लइब है। रसूल खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि दुनिया की मोहब्बत हर गुनाह की जड़ है। कुरबते इलाही हासिल करने वालों के लिए कुर्ब के हुसूल का ज़रिया अदाए फ़र्ज़ से ज़्यादा बेहतर और कोई ज़रिया नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इरशाद फरमाया जब से अल्लाह ने दुनिया को पैदा किया है उसको कभी पसन्दीदगी की नज़र से नहीं देखा। इस हदीस की तशरीह व तफ़सीर में हज़रत बसरी फरमाते हैं कि इसका मतलब यह है कि यह दुनिया मकरुह है। अल्लाह तआला ने निगाहे रहमत से उसकी तरफ कभी नहीं देखा यह दुनिया अल्लाह और बन्दे के दर्मियान बड़ा हिजाब है। यह छोटे खरे का मेयार (कसौटी) है जिनको दुनिया से लगाव होता है वह हक़ सुब्हानहू तआला की मुनाजात में लज़्ज़त नहीं पाते इसलिए कि दुनिया अल्लाह और उसकी पसन्दीदा चीज़ों की ज़िद है और ज़िद को अल्लाह तआला दोस्त नहीं रखता।

## तौहीद व ताअ़त और वादा व वईद

### वादा व वईद

जिस तरह अल्लाह तआला ने सवाब का वादा फरमाया और अज़ाब से डराया है, जन्नत व राहत उक़्बा की रग़बत दिलाई है और दोज़ख से डराया है, इसी तरह मख़लूक को अपनी



तौहीद व ताअत की तरफ बुलाया है पस उसने डराया, धमकाया, मुतनब्बेह फरमाया ताकि हुज्जत पूरी हो जाये और मखलूक को कोई उज्र बाकी न रहे। बारी तआला का इरशाद है:

हमने पैगम्बरों को भेजा जो लोगों को बहिश्त की खुशखबरी देते हैं और दोज़ख से डराते हैं ताकि रसूलों को भेजने के बाद लोगों को अल्लाह के खिलाफ कोई हुज्जत बाकी न रहे।

और एक दूसरी आयत में फरमाया :

अगर इससे कबूल हम उनको अज़ाब से हलाक कर देते तो (क़यामत के दिन) वह कहते कि परवरदिगार तूने हमारे पास पैगम्बर क्यों नहीं भेजा कि हम ज़लील व ख़्वाब होने से पहले तेरा हुक्म बजा लाते।

एक जगह इरशाद फरमाया: बग़ैर पैगम्बर भेजे हम अज़ाब नहीं दिया करते।

और यह भी इरशाद फरमाया:

ऐ लोगो! बेशक तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत और शिफा उसके लिए है जो सीनों में है और मोमिनीन के लिए हिदायत और रहमत आ चुकी है।

## वईदे इलाही

अल्लाह तआला ने ख़ौफ़ दिलाने और अज़ाब से डराने के लिए इरशाद फरमाया।

अल्लाह तुम को अपने (जाती) अज़ाब से डराता है और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा शफ़क़त करने वाला है।

मज़ीद इरशाद फरमाया: जान लो जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह उससे वाकिफ़ है पस उससे डरते रहो

और

जान लो अल्लाह हर चीज़ से वाकिफ़ है

और फरमाया

ऐ! दानिशवरो! मुझसे डरो।

और भी ज़्यादा वाज़ेह तौर पर इरशाद फरमाया।

उस दिन से डरो जिस दिन तुम अल्लाह की तरफ़ लौटोगे फिर वह नफ़स (जान) को बदला देगा जो उसने कमाया और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा

इरशाद फरमाया

और उस दिन से डरो जब कोई किसी के काम न आएगा और न उससे बदला कबूल किया जाएगा और न कोई सिफ़ारिश उसके लिए नफ़ा बख़्श होगी।

और इरशाद फरमाया:

ऐ लोगो! अपने अल्लाह से डरो और उस दिन से डरो जब बाप अपने बेटे को नजात न दिला सकेगा और न बेटा बाप को, खुदा का वादा सच्चा है पस दुनिया की ज़िन्दगी से धोखा न खाओ! और शैतान अल्लाह के मुताल्लिक तुम को धोखे में न रखे।

मज़ीद फरमाया:

ऐ लोगो! अपने उस मालिक से डरो जिसने तुम को एक शख्स से पैदा किया उसके जोड़े को पैदा किया फिर दोनों से बहुत से गर्द और औरतों को पैदा किया और उस अल्लाह से डरते



रहो जिस के नाम पर तुम बाहम मांगते हो और रिश्तेदारियों को मुनक़तअ करने से डरते रहो, बेशक अल्लाह तुम्हारा निगेहबान है।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच बात कहो।

ऐ ईमान वालो! खुदा से डरो और हर शख्स उस चीज़ को देखे जो उसने कल के लिए भेजी है, और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हारे आमल से बाख़बर है।

और इरशाद फ़रमाया:

और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है!

अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं।

इसी सिलसिले में मज़ीद फ़रमाया गया:

क्या तुम्हारा ख़्याल है कि हमने तुम्हें यँही बे फ़ायदा पैदा किया है और तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटोगे।

क्या इन्सान यह गुमान करता है कि वह यँही छोड़ दिया जाएगा

इरशादे बारी तआला है:

क्या बस्ती वालों को इस बात का डर नहीं कि रात के वक़्त उन पर हमारा अज़ाब आए और वह सोते हों या वह इस बात से बेख़ौफ़ हो गए हों कि चाश्त के वक़्त उन पर हमारा अज़ाब आए और वह खेल में लगे हों।

## ख़ाहिशात की पैरवी का अंजाम

ऐ मिसकीन! इन आयात (मज़कूरा बाला) का तेरे पास क्या जवाब है? और इन इरशादात के मुताबिक़ तेरा क्या अमल है? क्या तू अपनी नफ़्सानी ख़ाहिशों की पैरवी से बाज़ आ गया? यह ख़ाहिशात ना पाक हैं दुनिया और आख़िरत में तुझे हलाक़ करने वाली हैं, तुझे बद बख़्ती और ख़वारी की जगह पर झोंकने वाली हैं वह जगहा ऐसी है जिसकी आग तुझे जलाएगी और जिसके सांप तुझे डसेंगे, और जहाँ के बिच्छू तुझे ग़ज़न्द पहुंचाएंगे, अज़ीयत, तकलीफ़ देने वाली चीज़ें तुझे अज़ीयत व तकलीफ़ में मुबतला करेंगी, जहाँ के कीड़े मकोड़े तुझे खाएंगे, जहाँ के फ़रिश्ते और निगेहबान तुझे मारेंगे और हर रोज़ नौ बनो किस्म किस्म के अज़ाब तुझे दिए जाएंगे, जहाँ फिरऔन, हामान, कारून और शैतान के साथ साथ तू भी होगा।

तरगीब (तक़वा) के सिलसिले में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है:

और जो अल्लाह से डरता है तो अल्लाह उसके लिए निकास (बचाओ) का रास्ता निकाल देता है और ऐसी जजगा से उसको रिज़्क पहुंचाता है जिसका गुमान भी नहीं होता।

मज़ीद इरशाद फ़रमाया:

और जो अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके गुनाह साक़ित कर देता है।

और फ़रमाया:

ऐ इन्सान! तुझे किस शय ने धोखा दिया? तेरा परवरदिगार वह अल्लाह करीम है जिसने तुझे पैदा किया और ठीक किया और संवारा (तेरे सही और मुकम्मल आज्ञा बनाए)

मज़ीद इरशाद फ़रमाया



जो लोग ईमान लायें हैं, क्या उनके लिये (अभी) वक़्त नहीं आया है कि उनके दिल डर और आजजी से अल्लाह को याद करें।

बिला शुबह अल्लाह तआला ने तुम्हें इसकी रग़बत दिलाई है कि तुम उसका फज़ल तलाश करो, उसकी वसीअ़ रहमत को ढूँढो, उसके पाक रिज़्क की जुस्तजू करो और तक्वा की राहों पर चल कर और उस पर मदावमत करके राहत पज़ीर और तमानियत अंदोज़ हो। तुम्हारे लिए उसने तक्वा की राहों को वाज़ेह कर दिया है और हुज्जत बयान फ़रमा दी है, उसके बाद तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देने, ख़ताओं को साक़ित फ़रमा देने और अज़्र व सवाब को बढ़ाने का ज़िम्मा लिया है और इरशाद फ़रमाया है:

फ़िर उसने तुम्हारी ग़फ़लत, फ़रामोश कारी और राहे इलाही से आँखें बन्द कर लेने और उसकी आयात व नसाएह के सुनने पर बहरा बन जाने पर ख़बरदार किया है और इरशाद फ़रमाया:

म गर्करा बे रब्बेकल्ल करीमिल्लज़ी ख़ल-क-क़ फ़सव्वका फ़अ-द-ल-क़ इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने अपने आप को सिफ़ते करम से मौसूफ़ फ़रमाया है ताकि तुम उसके मामले में रूगरदानी इख़्तियार न करो, और उसके कुर्ब से नफ़रत न करने लगो और दूसरी मख़लूक की तरफ़ राग़िब न हो जाओ इसके बाद उसने तुम को पैदा किया और अदम से तुम को वजूद में लाया साथ ही ज़िन्दगी अता फ़रमाई। इसके बाद तुम कुछ भी न थे, तुम्हारी तंगदस्ती के बाद तुम्हें ग़नी किया और तुम्हारी ज़ईफ़ी के बाद तुमको क़वी किया, तुम्हारे अंधे पन के बाद अपने मामलात में तुम्हें बसीरत बख़्शी, ज़हालत के बाद इल्म दिया और गुमराही के बाद हिदायत मरहमत फ़रमाई, पस ऐ गाफ़िल तू उसके इस फ़ज़ले अज़ीम को तलब करने से बैठ रहा है और क्यों उसके ताअत की पाबन्दी से सुस्ती कर रहा है, उसकी ताअत तो तुझे दुनिया में मुअज़्ज़ज बना देगी और आख़िरत में सआदत तेरे नसीब में होगी और तेरे बुलन्द दरजात को मज़ीद बुलन्द कर देगी। क्या तुझे दुनियावी हयात पसन्द है? क्या तू बेहतर के एवज़ हकीर चीज़ के लिए तैयार है? क्या तूने दुनिया को, दुनिया वालों को, और इसकी ज़ाहिरी ज़ेब व ज़ीनत को जो सबके सब फ़ना होने वाले हैं, फ़िरदौसे आला पर, पैग़म्बरों, सिद्दीकों और शहीदों की रिफ़ाक़त पर तरज़ीह दी है?

क्या तू ने अल्लाह तआला का यह इरशाद नहीं सुना:

क्या तुमने आख़िरत के बजाए दुनियावी ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया है? हयाते दुनिया का सामान तो आख़िरत में बहुत हकीर होगा।

एक और जगह इरशाद फ़रमाया है:

बल्कि तुम तो दुनियावी ज़िन्दगी ही पसन्द करते हो हालांकि आख़िरत बेहतर और लाज़वाल है।

इरशाद फ़रमाया है:

जिसने सरकशी की और दुनियावी ज़िन्दगी को इख़्तियार किया तो उसके लिए दोज़ख़ है और वही उसका ठिकाना है।



## बाब 12

# जन्नत और दोजख़

## जन्नत और दोजख़ में दाख़ला

वाज़ेह रहना चाहिए कि दोजख़ में दाख़िल होना कुफ़्र के सबब से है और वहाँ अज़ाब की ज़्यादाती और जहन्नम के तबकात का फ़र्क और उनकी तकसीम बुरे आमाल व अख़लाक़ के मुताबिक़ होगी, और जन्नत में दाख़िला ईमान की वजह से होगा और वहाँ का ऐश (जावे दानी) और उसकी फ़रावानी और जन्नत के तबकात की तकसीम फ़जाइले अख़लाक़ और आमले हसना के मुताबिक़ होगी। अल्लाह तआला ने जन्नत को पैदा फ़रमाया और अहल जन्नत के सवाब के लिए उसको नेमतों से मामूर फ़रमा दिया और दोजख़ को पैदा करके दोजखियों के अज़ाब के लिए उसको अज़ाब से भर दिया है, दुनिया को पैदा फ़रमा कर आजमाइश व इम्तहान के लिए इसको आफ़तों और नेमतों से भर दिया फिर हक़ तआला ने मख़लूक़ पैदा फ़रमाया और उनसे जन्नत व दोजख़ को छुपा दिया। इन्सान ने उन दोनों को नहीं देखा, लिहाज़ा दुनिया में जिस क़दर दुख़ सुख़ हैं वह आख़िरत की राहत व तकलीफ़ का नमूना हैं और जो कुछ आख़िरत में है उसका ज़ाएक़ा हैं।

अल्लाह तआला ने ज़मीन पर अपने बन्दों में से बादशाह बनाए और उनको सुलतानी क़ुदरत और ग़लबा अता फ़रमाया लोगों के दिलों में उनकी हैबत बिटाई, ताकि वह उन पर हुकूमत करें। यह एक नमूना और मिसाल है अल्लाह की तदबीरे हुक्मरानी और उसके निफ़ाजे हुक्म की, इन सब बातों की ख़बर उसने क़ुरआन मजीद में दे दी। दुनिया और आख़िरत की हालत बयान फ़रमादी, अपनी हुकूमत, इक़तेदार, इंतज़ाम, एहसान और अपनी सनअत गरी को भी वाज़ेह फ़रमा दिया और मिसालें भी बयान फ़रमा दीं (ताकि फ़हम को आसानी हो) चुनांचे इरशाद फ़रमाया:

वह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं जिसे दाना लोग ही समझते हैं।

## मिस्ल का फ़ायदा

बस अल्लाह के जानने वाले अल्लाह की बयान फ़रमूदा मिसालों को समझते हैं, मिस्ल के मानी हैं कि देखी हुई चीज़ के ज़रिये किसी अंदेखी चीज़ की हालत को तुम समझ सको, और जिस चीज़ को आंखों से देख रहे हो उसके वास्ते से उस चीज़ को पहचान लो जो आंखों के सामने नहीं उस तरह तुम उन चीज़ों का इदराक़ कर लोगे जो आंखों से नज़र नहीं आती हैं, ताकि तुम अल्लाह तआला की हकीकी बादशाहत और दोनों जहाँ की भलाईयों और उसके मामलात को ख़ूब अच्छी तरह समझ लो।

## जन्नत की मिसाल

पस दुनिया की हर राहत और लज़ज़त जन्नत का नमूना है और उसका ज़ाएक़ा है, जिस को न किसी आंख ने देखा है और न किसी कान ने सुना न किसी इन्सान के दिल में इसका तसव्वुर



आया। अगर बन्दों के सामने अल्लाह तआला उन नेमतों में से किसी नेमत का नाम ज़ाहिर भी फरमा देता तो नाम से किसी को कोई फायदा नहीं पहुँचता कि न किसी ने उसको समझा है और न देखा है और न दुनिया में उसका कोई नमूना मौजूद है। मसलन इस्लाम ने बताया है कि जन्नत के सौ दरजे हैं और उनमें से सिर्फ़ तीन दरजों की हालत और कैफ़ियत बयान की गई है यानी सोना, चाँदी, और नूर के दरजात, इससे आगे बयान नहीं फरमाया क्योंकि वह अक़ल में नहीं आ सकते।

## दोज़ख़ की मिसाल

इसी तरह दुनिया में जो तकालीफ़ और आलाम हैं वह भी दारे आख़िरत का नमूना हैं, इनके अलावा अज़ाब की जो और शक़लें हैं अक़ल उनको बरदाश्त नहीं कर सकती। यह तमाम अक़ूबतें और दोज़ख़ के अज़ाब उन पर होंगे जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब और अताब होगा और जन्नत की तमाम नेमतें उनके लिए होंगी जो अल्लाह की रहमत की मुस्तहिक़ हैं। जो बन्दें दुनिया चीज़ों में से मुबाह नेमत को इस्तेमाल करते हैं और उस पर अल्लाह का शुक्र बजा लाते हैं उसको उस शुक्र के एवज़ जन्नत में ऐसी नेमत मिलेगी जिसके सामने यह दुनियावी नेमत बहुत ही हकीर है और जो दुनिया की ममनूआ नेमत को इस्तेमाल करेगा वह आख़िरत के दरजात (और उसकी नेमतों) से अपने आप को महरूम कर देगा और जो आख़िरत को सच्चा (हकीक़त) नहीं समझेगा वह अपने नफ़्स को जन्नत की हर नेमत से महरूम कर देगा।

## अहले जन्नत के इनामात

अहले जन्नत के लिये जन्नत में उरुसैं, वलीमे और मेहमानियां होंगी। अराइस, दावतें वगैरह इस लिए होंगी कि अल्लाह तआला ने उनको दारुस्सलाम की जानिब बुलाया ताकि उनको ख़ूबसूरत, तरोताज़ा और अबदी ज़िन्दगी अता फरमाए। शादियों की दावतें और ज़ियाफ़तें मुलाकात के लिये होंगी क्योंकि अहले जन्नत बाहम मुलाकात भी करेंगे और आपस में बातें करने लिए अच्छी अच्छी जगहें भी होंगी। तूबा के साए में उनका इजतमा भी होगा जहाँ पैग़म्बरों की ज़ियारत और मुलाकात से मुशरफ़ होंगे, फ़रिश्तों के आपस में जलसे भी होंगे, उन सब पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जल्ल व ओला का सलाम होगा, वहाँ बाज़ार होंगे, वहाँ वह अपनी अपनी पसन्द की चीज़ें मुन्तख़ब करेंगे और नमाज़ के औकात में सुबह व शाम अल्लाह तआला की जानिब से अलवाने नेमत मतऊमात व मशरूबात और फ़वाकिहात तोहफ़ा में दिये जाएंगे। उनको इनना वाफ़िर रिज़्क दिया जाएगा कि वह कभी कम नहीं होगा और न उसकी कमी महसूस होगी बल्कि अल्लाह की जानिब से रोज़ ब रोज़ उसमें इज़ाफ़ा होगा। जब अहले जन्नत के सामने यह उम्दा, लज़ीज़, ताज़ा ब ताज़ा नेमतें आएंगी तो वह पहली चीज़ों को भूल जाएंगे फिर वह ऐसे मक़ाम पर ले जाए जाएंगे जहाँ नहरे कौसर के किनारे बाग़ों में मोतियों के खेमें नसब होंगे, उनमें से खेमा साठ मुरब्बा को होगा और उसमें कोई दरवाज़ा नहीं होगा, उन खेमों के अंदर इत्र बेज़ जिस्म वाली बांदियां होंगी ऐसी जिनको न कभी फ़रिश्ते ने देखा होगा न जन्नत के किसी खादिम ने न हूर ने फी हिन्ना ख़ैरातुन हेसान, का मतलब यही है। उन खेमों के अंदर (एन बांदियों के अलावा) ख़ूबसूरत और हसीन बीवियां होंगी, उनकी ख़ूबसूरती की तारीफ़ जब खुद अल्लाह तआला ने बयान फरमाई है तो फिर किसकी मजाल है कि उनकी तारीफ़ कर सके। इरशाद



फरमाया: खेमों के अंदर महफूज हूरें होंगी। यह हूरें अल्लाह तआला की मुनतखब करदा होंगी अल्लाह तआला ने उन्हें खूबसूरत और नेक बनाया है, उन्हें अबरे रहमत से पैदा किया है जब अबरे रहमत बरस्ता है तो यह खूबसूरत हूरें पैदा होती हैं, उनके चेहरों को नूर अर्श के नूर से मुस्तनीर व मुस्तफाद है फिर उन हूरों के गिर्द मोतियों के खेमें नसब कर दिए जाते हैं। ताकि उन्हें कोई न देख सके गोया उन्हें उन खेमों में परदे में रखा गया है। बस वह सिर्फ अपने शौहरों के लिए खेमों के अंदर महफूज होंगी। अहले जन्नत महलों के अंदर अपनी उन बीवियों (अजवाज) के साथ लुत्फ अंदोज होंगे और जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, वह इस नेमत को पाते रहेंगे। जब मशीयते इलाही के मुताबिक उन नेमतों और राहतों की तजदीद का दिन आएगा तो बहिश्त के दरजात में उनको पुकारा जाएगा कि ऐ अहले जन्नत! आज खुशी, मसरत और सुरूर का दिन है तुम अपनी तफरीह गाह की तरफ निकलो उस वक्त वह लोग मोती और याकूत के घोड़ों पर सवार हो कर अपने अपने महलों के दरवाजों से निकलेंगे और फरहत व सुरूर के मैदानों में पहुंचेंगे यह लोग वहाँ पहुंचकर उन बागों की सैर करेंगे जो नहरे कौसर के किनारे बांकेअ हैं उसके बाद अल्लाह तआला हर जन्नती की उसकी मंजिल की तरफ रहनुमाई फरमाएगा और फिर हर शख्स अपने आप को अपने खेमे के पास खड़ा हुआ पाएगा, उस खेमे का कोई दरवाजा नहीं होगा उसी वक्त वह खेमा अल्लाह के महबूब बन्दे के सामने शक हो जाएगा और उससे दरवाजा नमूदार होगा ताकि उसको मालूम हो जाए कि अंदर की नेमतों (हूर) को किसी ने नहीं देखा है इस तरह उस वादा की तकमील हो जाएगी जो अल्लाह तआला ने दुनिया में फरमाया था कि फी हिन्ना खैरातुन हेसान और फरमाया था हुरुन मकसूरातुन फिल ख्याम और जिसकी सिफत यह बयान फरमाई थी लम यत मिस्हुन्ना इन्सुन कब्लहुम वला जान (जन्नतियों से पहले उन हूरों को न किसी इन्सान छुआ होगा और न किसी जिन्न ने) फिर यह लोग जन्नती हूरों के साथ नुजहत के तख्तों पर मुतमकिन होंगे, उनके सामने इजदेवाज के वलीमा का खाना पेश होगा वलीमा के खाने के फरागत के बाद अल्लाह तआला उनको शराबे तहूर (पाकीजा शरबत) से सैराब फरमायेगा और यह ताजा फल खायेगें जो नौ बनौ अल्लाह तआला उनको मरहमत फरमायेगा उनको जेवर और आला जोड़े (खिलअत) भी पहनाये जायेंगे और यह अपनी खूबसूरत बीवियों से राहत अन्दोज होंगे अपनी हाजत उनसे पूरी करेंगे फिर उन बागों में नहरों के किनारे मनबत कारी से आरास्ता पैरास्ता नफीस नशिस्त गाहों की तरफ आयेगें वहां यह सब्ज मोटे गद्दों पर बैठ जायेंगे और उनसे सहारा लगायेंगे, मुत्तकईना अला रफरफीन खुजरीन व अबकरी हेसान के यही मानी हैं।

## रफ़ की तारीफ़

जब अल्लाह तआला खुद किसी शय के बारे में हेसान फरमा दे तो फिर कौन सी खूबसूरती बाकी रह जाती है। रफ़ रफ़ वह चीज़ है कि आदमी उस पर बैठे तो वह लचक जाती है और जिधर को झुके तो बैठने वाला भी उधर को झुक जाये (स्प्रींग वाला गद्दा, सूफा या झुलना उसकी उसकी मुशाबेहत कामिल तो नहीं हां मिसाल के तौर पर कह सकते हैं।)

जब जन्नती इन सोफों पर बैठ जायेंगे तो हजरत इस्राफील अलैहिस्सलाम नगमा सराई शुरू करेंगे। हदीस शरीफ में आया है कि अल्लाह की मखलूक में हजरत इस्राफील से ज्यादा और



कोई खुश आवाज़ नहीं, जब हज़रत इस्राफ़ील नग़मा सराई शुरू करेंगे तो सातों आसमान वालों की तसबीह व नमाज़ें रुक जायेंगी। हज़रत इस्राफ़ील अल्लाह तआला की तसबीह व तक्दीस के रंगा रंग नग़में सुनायेंगे उनकी नग़मा सराई के वक़्त जन्नत का हर दरख़्त फूलों से भर जायेगा हर पर्दा और दरवाज़ा गून्ज उठेगा और खुल जायेगा दरवाज़े की ज़न्जीर भी बसूरत नग़मा बजने लगेगी। सोने और चांदी के झाड़ी वाले नीस्तानों (गंजान झाड़ियों के जंगल) में जब इस्राफ़ील के नग़मों की गून्ज पहुंचेगी तो उनसे भी तरह तरह के ज़मज़मे पैदा होंगे उस वक़्त हर हूर अपने मख़्सूस राग में और हर परिन्दा अपनी आवाज़ में नग़मा सरा हो जायेगा, उस वक़्त अल्लाह तआला मलाइका को हुक्म देगा कि तुम भी उन नग़मा सराओं को जवाब दो और मेरे उन बन्दों को अपने नग़में सुनाओ जिन्होंने दुनिया में शैतान के बाजों से अपने कान बन्द कर लिए थे। फ़रिश्ते जवाब में अपने रुहानी नग़मे सुनायेंगे उन तमाम आवाज़ों से (मिलकर) एक हमहमा पैदा होगा उस वक़्त अल्लाह तआला हुक्म देगा ऐ दाऊद उठो साके अर्श के पास खड़े होकर मेरी तक्दीस बयान करो। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की तक्दीस व तमजीद ऐसे लहन से बयान करेंगे कि आपकी आवाज़ तमाम आवाज़ों पर गालिब आ जायेगी और उन आवाज़ों की लज़्ज़त चन्द दर चन्द हो जायेगी। ख़ेमे वाले अपने अपने गदीलों पर मुतमक्किन होंगे रंगा रंग लज़्ज़तें और राग गाने उनको महजूज़ कर रहे होंगे, गूनागूं नग़मों के सुरों से उनके कान भर जायेंगे। पस वह नग़मे की लज़्ज़त से भर जायेंगे, के यही मानी है।

यहया बिन कसीर रहमतुल्लाह अलैहि फ़रमाते हैं कि सैज़ा से मुराद एक किस्म की लज़्ज़त है और यह समाअ का नाम भी है गर्ज कि अहले जन्नत उसी लज़्ज़त व सुरु में होंगे इतने में जन्नते अदन की तरफ़ से मलिकुल कुदूस (अल्लाह तआला) की रहमत का दरवाज़ा खुल जायेगा फ़ौरन ही बाबे अदन से लेकर तमाम जन्नतियों के तमामी दरजात तक रुहानियों की आवाज़े अल्लाह तआला की तमजीद व तक्दीस में नसरुफ़ हो जायेंगी और गूंजने लगेगी अदन से एक हवा तरह तरह की खुशबू के साथ हयात बरख़्श और कैफ़ आफ़रीं झोंके लेकर चलेगी उसका नाम नसीमे कुरबत होगा उसके पीछे एक नूर चमकेगा उस नूर से अहले जन्नत के बागात, उनके ख़ेमे और नहरों के किनारे रोशन हो जायेंगे और हर चीज़ पुर नूर हो जायेगी। उसके बाद रब्बुल इज़्ज़त की आवाज़ उनके सरो के ऊपर से आयेंगी तुम सलामती रहो ऐ मेरे महबूबो! मेरे दोस्तो! मेरे बरगुज़ीदा बन्दो! जन्नत वालो! तुम ने अपनी तफ़रीह गाह कैसी पाई, यह तुम्हारी ईद का दिन है दुश्मनों ने नौ रोज़ के बजाए मेरे दुश्मनों ने नेमतों की तजदीद के लिए दुनिया में एक दिन मुकर्रर किया था मगर अपनी बदबख़्ती और ख़बासत की वजह से उन्होंने खुद इस नेमत को ख़राब बना दिया इस लिए वह अपने लिए मतलूबा लज़्ज़त न पा सकें और जो कुछ उन्होंने उस दुनिया में तलब किया था उसके मुकाबिल वह आख़िरत में घाटे में रहे और उनसे इतना सब्र न हो सका कि जो चीज़ मैंने आख़िरत में अपने इताअत गुज़ारो के लिए मुहय्या की है उसको वह हासिल कर लेते। तुम ने उनसे किनारा कशी की और दुनिया परस्तों ने जिस चीज़ की हिर्स की थी तुम उससे बाज़ रहे, आज वह अपने किए का वबाल चखेंगे। दारे फ़ना (दुनिया) में उनकी वह लज़्ज़त और ख़्वाहिश जल्दी ही फ़ना हो गई थी और आज वह ज़िल्लत व ख़्वारी में मुब्तला हो गए। तुम को उस सब्र के एवज़ जन्नत हुल्लाह बहिश्ती, तफ़रीह गाह और सलामती हासिल हुई। पस यह तुम्हारा "योमे नौ रोज़" है मेरे घर में जन्नते अदन के अंदर यह तुम्हारी बाहमी मुलाकात



का दिन है, दुनिया में तुम को आज के दिन अकसर इबादत करते और गुनाहों से एराज़ करते देखा था जबकि लोग दुनिया के लहव व लइब, भासियतों और ऐश व इशरत के मजे उड़ा रहे थे और दुनिया के लेन देन में मस्त व मगरूर थे, तुम मेरे हुदूद की पाबन्दी करते रहे थे, मुझसे किए हुए अहद के पाबन्द थे और मेरे हुकूक को ज़ाया करने से डरते थे यह सब कुछ उसका सिला है।

## दोज़ख़

### दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात

उसके बाद दोज़ख़ के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा खोल दिया जाएगा जिससे आग के शोले और धुआँ उठेगा, दोज़ख़ी चीखते चिल्लाते और फ़रयाद करते होंगे ताकि (इस हालत को देख कर) अहले जन्नत अपनी जन्नत और अपनी नशिस्तों पर बैठे हुए उन नेमतों को देखेंगे जो अल्लाह तआला ने उनको अता फ़रमाई हैं ताकि उनकी काबिल रश्क हालत और कैफ़ व सुरूर में इज़ाफ़ा हो!

दोज़ख़ी अपने कैद खानों और जेल खानों से इस हाल में कि वह तौकों और बेड़ियों से कसे हुए हैं अपने हाथ से खोई हुई नेमतों को देख कर तास्सुफ़ करें, चूँकि उस वक़्त अहले जन्नत का रुख़ अल्लाह तआला की तरफ़ होगा इसलिये वह अहले जन्नत का वसीला लेकर अल्लाह तआला से फ़रयाद करेंगे और अहले जन्नत को उनके नामों से पुकारेंगे, अल्लाह तआला फ़रमाएगा:

अहले जन्नत बिला शुबहा आज के दिन चैन (मजे) करते हैं वह और उनकी बीवियां गदेलों पर तकिया लगाए सायों में हैं। उनके लिये जन्नत में मेवे हैं और हर वह शय है जिसकी वह ख्वाहिश व तलब करें। रहम वाले रब की जानिब से उन पर सलामती है, मेहरबान रब का फ़रमाया हुआ आज पूरा होगा और कहा जाएगा कि ऐ मुजरिमो! आज छट जाओ, ऐ औलादे आदम क्या मैंने तुमसे अहद नहीं लिया था कि शैतान को न पूजना, बिला शुबहा वह तुम्हारा खुला दुश्मन है और मेरी बन्दगी करना कि यही सीधी राह है।

इसके बाद आतिशे जहन्नम में जोश पैदा होगा, दोज़ख़ियों की जमाअत मुन्तशिर हो जाएगी उनकी फ़रयाद व वावैला बन्द हो जाएगा और उनको आग के जज़ीरों में फेंक दिया जाएगा जब यह दोज़ख़ी वहाँ पहुंचेंगे तो खजूर के मानिन्द डंक रखने वाले बिच्छू उन्हें दौड़ दौड़ कर डंक मारेंगे फिर आग का सैलाब उन पर चढ़ आएगा, यह खुदा का अज़ाब होगा यह सैलाब उनको आग के समन्दर में गर्क कर देगा अल्लाह की तरफ़ से एक मुनादी पुकारेगा "यह वही दिन है जिसके झुटलाने के लिये मेरे मुकाबले में जंग करते रहे हो और मेरी ही नेमतों में मस्त हो कर मेरे खिलाफ़ सरकशी करते आए हो। तुम दारूल महन और उबूदियत के घर में (यानी दुनिया में) उस तकज़ीब पर खुश होते थे, आज हम ने अपने फ़रमांबरदार बन्दों के लिये जो नेमतें फ़राहम की हैं तुम अपनी दुनियावी नेमतों को उनके मुशाबेह और मिस्ल करार देते थे, अब तुम्हारी लज़्ज़तें खत्म हो गई, जिस चीज़ को तुमने दुनिया में पसन्द किया था उसका मज़ा चखो, अहले जन्नत बेशक तुमसे अलाग़ थलग हैं। वह वलीमों की दावतों, अनवा व अक्साम के मेवों, तरो ताज़ा तहाएफ़, दोशीज़ा हूरों की क़र्बत से महज़ूज़ हो रहे हैं, गदेलों पर बैठे हैं, तरह तरह के नग़मात



सुनने में मशगूल हैं, मेरा उन पर सलाम है, मैं उन पर मजीद लुत्फ व करम के साथ मुतवज्जेह हूँ। मेरी नेमतों का उन पर रोज़ ब रोज़ इज़ाफ़ा होता जाएगा ताकि वह मसरूर व शाद काम रहें। तो ऐ अहले जन्नत! तुम्हारा यह दिन मेरे दुश्मनों के उस दिन का बदल है जिस दिन वह एक दूसरे को मुबारक बाद पेश करते थे और अपने (दुनियावी) बादशाह के हुज़ूर में नज़रें पेश करते थे। तुम यकीनन अपनी मंजिले मकसूद पर पहुंच गए।

हज़रत अबू हु़रैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि एक रोज़ एक शख्स रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज किया कि मुझे अच्छी आवाज़ से बहुत रग़बत है किया जन्नत में भी अच्छी आवाज़ें होंगी, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया ज़रूर होंगी, कसम है उस पाक जात की जिसके कब्जे मेरी जान है कि जन्नत में अल्लाह तआला दरख़्तों को हुक्म देगा कि मेरे उन बन्दों को गाना सुनाओ जो मेरी इबादत और मेरे ज़िक्र में (दुनिया में) मशगूल रहे और चंग व रूबाब से दुनिया में बचते रहें, तो दरख़्त ऐसी आवाज़ से नग़मा सरा होंगे कि ऐसी आवाज़ मख़्लूक ने कभी नहीं सुनी होगी, दरख़्त अल्लाह तआला की तमजीद व तकदीस में नग़मा सराई करेंगे।

हज़रत अबू कुलाबा से मरवी है कि एक शख्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज कि या रसूलसल्लाह! क्या जन्नत में रात भी होगी? हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया तुम्हें इस सवाल की ज़रूरत क्यों महसूस हुई? उसने अर्ज किया या रसूलल्लाह मैंने सुना है कि अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में इरशाद किया है!

जन्नत में अहले जन्नत को सुबह व शाम उनका रिज़क मिलेगा।

मैंने यह ख़्याल किया कि सुबह व शाम के दर्मियान रात होगी, हुज़ूर ने इर्शाद फ़रमाया बहिश्त में रात नहीं है वहाँ तो रौशनी ही रौशनी है, सुबह के बाद शाम और शाम के बाद सुबह होगी। अहले जन्नत जिन औकात में दुनिया में नमाज़ें पढ़ते थे उन औकात में जन्नत में अल्लाह तआला की तरफ़ से उनको ताज़ा और उमदा तोहफ़े मिलेंगे और फ़रिश्तें उनको सलाम करेंगे। पस जो शख्स चाहता है कि दवामी पुर कैफ़ जिन्दगी उसको हासिल हो उसे चाहिए कि तक़वा के हुदूद की पाबन्दी करे और उन्हें महफूज़ रखे, अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में परहेज़गारी की यह शर्तें बयान की हैं:

मशरिक व मगरिब को मुंह कर लेना ही (बस) नेकी नहीं है, नेकी तो उनकी नेकी है जो अल्लाह पर, रोज़े आखिरत पर, मलाइका पर, अल्लाह की किताबों पर और उसके नबियों पर ईमान रखते हैं। माल की मोहब्बत होते हुए उसको यतिमो, मिसकीनों, मुसाफ़िरों, मांगने वालों को और गर्दन छुड़ाने के लिये देते हैं। नमाज़ें अदा करते हैं, ज़कात देते हैं और जब कोई वादा कर लेते हैं तो उसके पूरा करते हैं, तकलीफ़ और दुख में और ख़ौफ़ के वक़्त सब्र करते हैं। यही लोग सच्चे हैं और यही लोग मुत्तकी और परहेज़गार हैं।

पस अहले तक़वा पर लाज़िम है कि वह इस्लाम के अरकान और उनके शराएत को बजा लाए

रिवायत है कि हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ने आयते करीम "ऐ ईमान वालो! इस्लाम पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ" की तफ़सीर में फ़रमाया कि इस्लाम के आठ हिस्से हैं। (1) एक हिस्सा नमाज़



है (2) एक जकात है (3) एक रोज़ा (4) एक हज (5) एक उमरा (6) एक जिहाद (7) एक अम्र बिल मारुफ़ (8) और एक हिस्सा नहीं अनिल मुन्कर है। वह शख्स बड़ा ही ना मुराद है जिस के पास इस्लाम का कोई हिस्सा न हो।

आसिम अहूल ने ब. रिवायत हज़रत अनस बिन मालिक बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस्लाम की मिसाल ऐसी है जैसे ज़मीन जमा हुआ दरख़्त, अल्लाह का मानना उस दरख़्त की जड़ है, पांचों वक़्त की नमाज़ उसकी शाखें हैं, रोज़े उसकी छाल हैं और हज व उमरा उसके पक़े हुए फल (जो तोड़ने के काबिल हैं) वजू और गुस्ते जनाबत उसकी सैराबी के लिये पानी है। माँ बाप की फ़रमांबरदारी और अक़रबा परवरी उसकी नाजूक टहनियाँ हैं, ममनूआते शरयी से खुद को बाज़ रखना (रोके रखना) उसके पत्ते हैं और आमले सालिहा उसके फल और अल्लाह की याद उसके रेशे (सोते) हैं, इसके बाद हुज़ूर ने फ़रमाया जिस तरह दरख़्त की ख़ूबसूरती और दुरुस्ती उसके सब्ज पत्तों के बग़ैर नहीं होती उसी तरह इस्लाम का हुस्ने तर्क मनाही और आमले हुसना की अदाएगी के बग़ैर नहीं पाया जाता।

## दोज़ख़ और दोज़ख़ के अज़ाब

अल्लाह ने दोज़ख़ियों के लिये जो अज़ाब रखे हैं

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जब क़यामत का दिन होगा और उस यकीनी दिन में सब मख़लूक एक मैदान में इकट्ठा होगी तो एक काला साएबान उन पर छा जाएगा उसकी सियाही की शिदत ऐसी होगी कि एक दूसरे को देख नहीं सकेगा, सब लोग अपने अपने पैरों पर खड़े होंगे, उनके और अल्लाह तआला के दर्मियान का फ़ासिला सत्तर साल की मुसाफ़त होगी लोग उसी हालत में होंगे कि अचानक अल्लाह तबारक तआला फ़रिश्तों पर तजल्ली फ़रमाएगा उस वक़्त अल्लाह के नूर से तमाम ज़मीन रौशन हो जाएगी तमाम तरीकी दूर हो जायेगी और नूर तमाम मख़लूक को इहाता कर लेगा फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह व तहमीद में अर्श के गिर्दा गिर्द तवाफ़ में मशगूल हो जायेंगे हुज़ूर ने फ़रमाया कि उस असना में तमाम मख़लूक सफ़ बस्ता खड़ी होगी हर उम्मत की एक मख़सूस जगह होगी उस वक़्त सहीफ़े और मीज़ान लाई जायेगी यह मीज़ान एक फ़रिश्ते के हाथ पर मुअल्लक होगी और वह कभी एक पलड़े में उठायेगा कभी झुका देगा आमाल नामे उसमें रखे जायेंगे उसी हालत में जन्नत का पर्दा उठाया जायेगा और फिर जन्नत करीब लाई जायेगी फिर भी उसका फ़ासला अहले ईमान से पांच सौ बरस की राह होगा, जन्नत से एक हवा चलेगी जिस की खुशबू ईमान वाले मुश्क की तरह महसूस करेंगे फिर दोज़ख़ के ऊपर से पर्दा उठाया जायेगा दोज़ख़ की बदबूदार हवा उसके धुएँ से आलूदा होगी मुजरिम उसकी बू को महसूस करेंगे हालांकि उनके और दोज़ख़ के दर्मियान पांच सौ बरस की राह का फ़ासला होगा फिर दोज़ख़ को बड़े बड़े जंजीरों से खींच कर करीब लाया जायेगा उस पर उन्नीस फ़रिश्ते मुवक़िल होंगे और हर मुवक़िल के मददगार सत्तर हजार फ़रिश्ते होंगे तमाम मुवक़िल और उनके मददगार फ़रिश्ते दोज़ख़ के दायें बायें और पीछे पीछे चलते हुए उसका घेरे में लिए हुए खींच कर लायेंगे हर फ़रिश्ते के हाथ में लोहे का एक गुर्ज़ होगा जिसकी ज़र्ब से दोज़ख़ी चीख उठेंगे, दोज़ख़ की आवाजे गधे की पहली और आखिरी



आवाज़ की तरह इन्तेहाई करीह होंगी दोज़ख में मुसीबतें होंगी, तारीकी होगी, बदबूदार धुआ होगा, शोर होगा, दोज़ख दोज़खियों पर गज़बनाक होगा और शिदते गज़ब के बाइस उसके शोले उठेंगे, फ़रिश्ते दोज़ख को खींचते हुए जन्नत और महशर के दर्मियान नस्ब कर देंगे उस वक्त दोज़ख आंख उठा कर सारी मखलूक को देखेगा फिर उन पर हमला आवर होगा ताकि सब मोमिनों व दोज़खियों को निगल ले मगर दारोगाए दोज़ख (मालिक) और उसके मुवक्किल उसको जंजीरों से रोके रखेंगे। दोज़ख जब देखेगा कि उसको बांध लिया गया है तो उसमें सख्त जोश आयेगा और गज़ब की शिदत की वजह से करीब होगा कि वह फट जाये फिर वह दोबारा दहाड़ेगा तमाम मखलूक उसके दांत पीसने की आवाज़ सुनेगी मखलूक के दिल दहल जायेंगे और धड़क कर सीनों से निकलने लगेंगे। लोगों के होश उड़ जायेंगे, आंखें खुली की खुली रह जायेंगी, दिल सीनों से तड़प कर हल्क तक आ जायेंगे।

मनकूल है कि एक शख्स ने हुजूर की खिदमत में अर्ज किया कि या रसूलल्लाह हम को दोज़ख की हालात से आगाह फ़रमाइये आपने फ़रमाया दोज़ख ज़मीन से सत्तर गुना बड़ा है, काला है, तारीक है, उसके सात सर हैं, हर सर पर तीस दरवाजे हैं, हर दरवाजे का तूल तीन रोज़ की राह के बराबर है उसका बालाई लब नथने से लगता है और जेरीन लब (इस कदर लम्बा होगा कि वह उसे) घसीटता हुआ चलेगा उसके हर नथने में एक बड़ी जंजीर और सख्त बंदिश पड़ी होगी उस जंजीर को सत्तर हजार फ़रिश्ते थामे होंगे और वह फ़रिश्ते भी बहुत तुन्द खू और हैबतनाक होंगे, उनके दांत बाहर निकले हुए होंगे, आंखे अंगारों की तरह दहकती हुई होगी, आग के शोलों की तरह रंग होगा, नथनों से शोले निकलते होंगे और उनसे धुआं उठता होगा और यह सबके सब अल्लाह तआला के हुक्म की तामील के लिए तैयार होंगे। उस वक्त दोज़ख अल्लाह के हुजूर में सजदा करने की इजाज़त तलब करेगा जो उसको मिल जायेगी और दोज़ख उस वक्त तक सजदा में रहेगा जब तक अल्लाह तआला की मर्जी होगी फिर अल्लाह तआला उसे सर उठाने का हुक्म देगा, दोज़ख सर उठा कर कहेगा कि वह अल्लाह तमाम तारीफों का सज़ावार है जिसने मुझे ऐसा बनाया कि मेरे ज़रिये से वह अपने नाफरमानों से इन्तक़ाम लेता है और किसी दूसरी मखलूक को ऐसा नहीं बनाया कि वह मुझसे इन्तक़ाम ले सके। फिर वह रवा और साफ़ शुस्ता ज़बान में कहेगा हम्द खुदा ही के लिए है वही उसके लायक है वह यह हम्द बा आवाज़े बलन्द बजा लायेगा फिर बड़े जोर से फ़रियाद करेगा उस वक्त मुक़र्रब फ़रिश्ता, नबी, रसूल और मौकिफ़ (महशर) में खड़े हुए अफ़राद में से कोई ऐसा बाकी न रहेगा वह जानू के बल खुदा के हुजूर में न गिर पड़े उसके बाद दोज़ख दोबारा फ़रियाद करेगा उस वक्त हर फ़र्द की आंखों में आंसू छलक पड़ेंगे फिर वह तीसरी बार फ़रियाद करेगा उस वक्त अगर किसी ज़िन्न व इंसान के आमाल 72 पैगम्बरो के बराबर भी होंगे तो वह यही ख़्याल करेगा कि मैं दोज़ख में गिर पड़ूंगा फिर वह चौथी बार फ़रियाद करेगा उस वक्त कोई फ़र्द ऐसा बाकी नहीं रहेगा जो ख़ामोश न हो जाये सिर्फ़ जिब्रील, मीकाईल और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अर्श को पकड़े होंगे और उनमें से हर एक मुनाजात में मशगूल होगा हर तरफ़ नफ़सी नफ़सी का आलम होगा। हर एक यही कहता होगा कि मैं अपने नफ़स और जान के सिवा तुझसे कोई सवाल नहीं करता। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके बाद इरशाद फ़रमाया कि उसके बाद दोज़ख आसमान के सितारों के बराबर चिंगारियां फेंकेगा। उसकी हर चिंगारी इतने बड़े बादल के बराबर होगी जो



मगरिब से उमड़ता चला आता हो और यह चिंगारियां मखलूक के सरो पर आकर गिरेंगी।  
 इसके बाद दोजख पर पुल सिरात नख किया जायेगा, उसपर सात सौ गुजरगाहें बनाई जायेंगी, हर गुजरगाह के दर्मियान सत्तर साल की मुसाफत होगी। एक रिवायत में है कि उस पर सात गुजरगाहें होंगी और पुल की चौड़ाई एक रास्ता से दूसरे रास्ता के माबैन पांच सौ साल की मुसाफत होगी। सातवां तबका या रास्ता अपनी गर्मी और तपिश के लिहाज से सबसे ज्यादा गर्म होगा और उसकी गहराई भी दूसरे तबकों के मुकाबिल में बहुत ज्यादा होगी यही तबका अजाब में दूसरे तमाम तबकों से ज्यादा शदीद, इन्तहाई, भयानक और हौलनाक होगा, उसकी चिंगारियां भी सत्तर गज लम्बी होंगी।

करीब तरीन दर्जे के शोले पुल सिरात से गुजर कर इधर उधर जायेंगे और उनकी ऊंचाई तीन तीन मील होगी, दोजख का हर दर्जा हरारत की तेजी, अंगारों की लम्बाई और नूअ ब नूअ अजाब की कसरत के लिहाज से अपने बालाई तबके में सत्तर गुना ज्यादा होगा हर तबके में समन्दर, दरिया, पहाड़ भी होंगे, पहाड़ की ऊंचाई सत्तर हजार साल की मुसाफत के बराबर होगी। दोजख के हर दर्जा में से सत्तर सत्तर पहाड़ होंगे और हर पहाड़ के सत्तर दुरें होंगे, हर दुरें में सत्तर हजार दरख्त, थूहड़ (इन्दराइन) के होंगे, हर दरख्त के सत्तर हजार शाखें होंगी, हर शाख पर सत्तर सत्तर सांप और बिच्छू होंगे, हर सांप की लम्बाई तीन मील की मुसाफत के बराबर की होगी। हर बिच्छू बड़े बड़े बुखती ऊंट के बराबर होगा। हर दरख्त में सत्तर हजार फल होंगे और हर फल देव के सर के बराबर का होगा हर फल के अन्दर सत्तर हजार कीड़े होंगे और हर कीड़ा तीर की मुसाफत के बकदर लम्बा होगा, बाज फलों में कीड़े नहीं होंगे बल्कि कांटे होंगे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके बाद फरमाया कि दोजख के सात दरवाजे होंगे हर दरवाजे की सत्तर वादियां होंगी हर वादी का अमक (गहराई) सत्तर मील के मुसाफत के बकदर होगी, हर वादी में सत्तर हजार दरें और हर दरें में सत्तर हजार गार और हर गार की सत्तर हजार शाखें होंगी हर शाख सत्तर हजार साल की मुसाफत के बराबर होगी, हर शाख के अन्दर सत्तर हजार अजदहे होंगे हर अजदहे की बाछ में सत्तर हजार बिच्छू पोशीदा होंगे, हर बिच्छू के सत्तर हजार गुरिये होंगे हर गुरिये या मनके में मटका भर जहर भरा होगा जो काफिर या मुनाफिक उसमें पहुंचेगा उसको यह तमाम जहर पीना होगा।

हुजूर ने इरशाद फरमाया तमाम मखलूक घुटनों के बल खड़ी होगी और जहन्नम उन पर बार बार इस तरह हमला करेगा जैसे मस्त ऊंट हमला करता है उस वक्त एक मुनादी पुकारेगा और तमाम अंबिया, सिद्दीकीन, शोहदा और सालेहीन उठ खड़े होंगे उसके बाद तमाम मखलूक की पेशी होगी और हर शख्स अपने अपने मजालिम और आमाल के एवज कैफरे किरदार को पहुंचेगा उसके बाद दूसरी पेशी होगी और अरवाह व अजसाम भ झगड़ा होगा (कि कौन पेश हो) बिलआखिर अजसाम अरवाह पर गालिब आयेंगे, उसके बाद तीसरी पेशी होगी उस वक्त नामाए आमाल उड़ उड़ कर लोगों के हाथों में जाकर गिरेंगे कुछ लोग ऐसे होंगे जिनके दाहिने हाथ में नामाए आमाल होगा और कुछ के बायें हाथ में, कुछ लोगों का नामाए आमाल उनकी पुस्त पर होगा। जिनके नामाए आमाल दाहिने हाथ में होंगे (अस्हाबुल यमीन) उनको अल्लाह तआला की तरफ से नूर अता होगा, उनकी इस इजत अफजाई पर फरिश्ते उनको मुबारकबाद देंगे और वह लोग अपने रब की मरहमत के साथ पुल सिरात (बआसानी) उबूर कर जायेंगे और जन्नत में



दाखिल हो जायेंगे। जन्नत के दरबान जन्नत के दरवाजा पर उनकी सवारियों और उनके हुल्ला हाय बहिश्ती के साथ उनसे मुलाकात करेंगे (उनको सवारियां और जिन्नती खिलअतें पेश करेंगे) यहां से सब जन्नती अलग अलग हो कर अपने अपने मखसूस ऐवानों और खुश खुश अपने अपने महलों की तरफ जायेंगे, अपनी बीवियों (हूरों) के पास पहुंचेंगे और ऐसी नेमतें देखेंगे जिनके बयान से जबान कासिर होगी न उनकी आंखों ने इससे पहले यह नेमतें देखी होंगी और न दिल में उनका तसव्वुर आया होगा फिर यह मुकर्ररा अन्दाजा के मुताबिक खायें और पियेंगे, जेवर और खिलअतें पहनेंगे, बीवियों को गले लगायेंगे फिर अपने खालिक की हम्द करेंगे जिसने उनके गम को दूर कर दिया। इज्तेराब से अमन बख्शी और उनके हिसाब को आसान फरमा दिया, यह अल्लाह का दी हुई नेमतों का शुक्र अदा करेंगे और कहेंगे कि तमाम हम्द अल्लाह ही को सजावार है जिसने इस राह की तरफ हमारी राहनुमाई फरमाई अगरचे हमारे अन्दर ऐसी ताकत न थी अगर उसकी हिदायत शामिले हाल न होती तो हम राह से भटक गये होते।

उस वक्त उनकी आंखें लाये हुए तोशा से ठंडी होंगी, वह दुनिया में यकीन व ईमान रखते थे तसदीक करते थे, अजाब से डरते थे, अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार थे और सवाब (आखिरत) से उनको रगबत थी उस वक्त नजात पाने वालों को नजात मयस्सर आ जायेगी और काफिर तबाह हो जायेंगे।

जिन लोगों को उनके आमाल नामे बायें हाथ या पीठ के पीछे से दिए गये होंगे उनके हाथ सियाह होंगे उनकी आंखों की सफेदी फिर जायेगी (आंखे बे नूर हो जायेंगी) उनकी नाक पर दाग लगा दिया जायेगा उनके बदन बड़े और बदन की खालें मोटी पड़ जायेंगी। जब वह अपने आमाल नामे को देखेंगे तो वावैला करेंगे और उन्हें मालूम होगा कि कोई छोटे से छोटा गुनाह भी बगैर दर्ज हुए नहीं बचा, वह लोग होंगे जिनके दिल खोये होंगे और ख्यालात बुरे, वह उस वक्त जबरदस्त खौफ व हरास में मुब्तला होंगे उनको सरो के बल औन्धा कर दिया जायेगा, शर्म से उनकी आंखें झुकी होंगी और गदनें लटकी हुई होंगी, दोजख की तरफ देखने से उनकी आंखें पथरायेंगी और एक लहजा के लिए भी उस तरफ नजर न उठा सकेंगे क्योंकि उनके सामने बड़ा भयानक मंजर होगा। सख्त दुश्वार, हर तरफ मुसीबत ही मुसीबत इज्तेराब आफरीं हालत और घबरा देने वाली दहशत, गम पैदा करने वाली, जलील बनाने वाली, दिलों को फिक्र में डालने वाली और आंखों को रूलाने वाली फिजा होगी।

उस वक्त वह अपने रब की बन्दगी का इकरार करेंगे और अपने गुनाहों का एतराफ भी मगर उस वक्त उसका इकरार व एतराफ उन पर आग, शर्म, गम, बंदबख्ती, इलजाम और गजब में और भी इजाफा कर देगा। (बजाए फायदे के और नुकसान होगा)

यह रब के सामने दो जानू बैठे गुनाहों का इकरार करते होंगे, आंखें नीली होंगी कुछ दिखाई न देगा, दिल गढ़ों में गिर रहे होंगे, कुछ उनकी समझ में न आयेगा, उज्ज्व उज्ज्व कांप रहा होगा, कुछ बोल न सकेंगे बाहमी रिश्तादारियां कट चुकी होंगी न नसब बाकी होगा ना बिरादरी, कोई किसी का पुरसाने हाल न होगा, सब अपनी अपनी मुसीबत में मुब्तला होंगे और उसका दूर करना उनसे मुमकिन न होगा दुनिया में लौट जाने की दरखास्त करेंगे तो वह कबूल न होगी, उस वक्त उनको उस चीज का यकीन हो जायेगा जिसको वह दुनिया में तसलीम नहीं करते थे, वहा



उनको प्यास बुझाने को न पानी मिलेगा न पेट भरने को खाना, न तन ढाकने को कपड़ा। पस वह प्यासे, भूके, नंगे बे यार व मदगार, गुमगीन, परेशान हाल फिरते होंगे, जान, माल, कमाई, बीबी, बच्चों, गुर्ज कि हर तरफ से घाटे ही घाटे में होंगे उस हालत में अल्लाह तआला दोज़ख के मुक्किलों को हुक्म देगा कि अपने कारिन्दों को साथ ले कर जहन्नम से बाहर आयें और तमाम जंजीरें और बेड़ियां, तौक और गुर्ज साथ लायें। चुनांचे सब उस सामान के साथ हाज़िर हो जायेंगे, जब लोग अज़ाब की उन चीज़ों को देखेंगे तो अपने हाथ और अपनी उंगलियां चबा डालेंगे, मौत को पुकारेंगे, आंसू बहायेंगे और उनके पांव लड़खड़ा जायेंगे और उस वक्त वह हर भलाई और बेहतरी से नाउम्मीद हो जायेंगे (उनकी तमाम उम्मीदें मुनकतअ हो जायेंगी) बारी तआला का हुक्म होगा उनको पकड़ लो उनकी गरदनो में तौक डाल कर जहन्नम में ढकेल दो और वहां जंजीरो में जकड़ दो, उसके बाद अल्लाह तआला जिस शख्स को जहन्नम के जिस दर्जा में दाखिल करना चाहेगा उस दर्जा के मुक्किलों को बुला कर हुक्म देगा उसको गिरफ्तार कर लो। चुनांचे एक एक आदमी की तरफ सत्तर सत्तर मुक्किल बढ़ेंगे उसको खूब जकड़ कर बांधेंगे, भारी तौक गरदनो में और भारी जंजीरें नथनों में डालेंगे जिससे दम घुटने लगेगा फिर पीठ की तरफ से उनको तौकों से मिला दिया जायेगा जिसके बाएस पीठ की हड्डियां टूट जायेंगी, इस तकलीफ से आंखें फट जायेंगी, रंगें फूल जायेंगी, गरदनो का गोश्त तौक की गर्मी से जल जायेगा, रंगों से खाल उतर जायेगी, सरों के अन्दर भेजे पिघल जायेंगे, अन्दर से बह कर बाहर आ जायेंगे बहते हुए पैरों तक पहुंच जायेंगे। बदन की खाल उधड़ कर गिर पड़ेगी, गोश्त नीले पड़ जायेंगे और खून उससे बहने लगेगा, उनकी गरदनें मोड़ो से कानों तक बहुत से तौकों से भरी होंगी सारा गोश्त जल जायेगा होंठ कट जायेंगे दांत और जबानें बाहर निकल आयेंगी वह वावैला करेंगे, चीखेंगे, तौकों से शोले निकलेंगे उनकी गर्मी रंगों में इस तरह दौड़ेगी जिस तरह खून दौड़ता है उनके तौक खोखले होंगे जिनके अन्दर तपिश गर्दिश करती होगी, उन तौकों की गर्मी दिलों तक पहुंचेगी और दिलों की खाल को उधेड़ देगी, दिल छिल कर हल्क तक आ जायेंगे, दम बहुत ज्यादा घुटेगा यहां तक की आवाजें निकलना बन्द हो जायेंगी, इसी असना में अल्लाह तआला जहन्नम के मुक्किलों को हुक्म देगा कि उनको (जहन्नम का) लिबास पहनाओ, मुक्किल उनको कपड़े पहनायेंगे उनको इन्तहाई काले बदबूदार खुरदरे जहन्नम की गर्मी से दहकते हुए कुर्ते पहनाये जायेंगे, वह इस कदर दहकते होंगे कि अगर पहाड़ पर उनको रख दिया जाये तो वह भी पिघल जायें। फिर अल्लाह तआला हुक्म देगा कि इनको उनके ठिकाने पर ले जाओ उस वक्त उनको ले जाने के लिए दोज़ख से और जंजीरें आयेंगी जो पहली जंजीरों मुकाबला में बहुत ज्यादा भारी औ बड़ी होंगी, फ़रिश्ते उन जंजीरों को पकड़ेंगे और उनसे हर एक (नाफ़रमान) उम्मत को अलग अलग बांधेंगे फिर फ़रिश्ता जंजीरों के सिरों को अपने कांधों पर रख कर पीठ फेरकर मुंह के बल खींचता हुआ ले चलेगा, पीछे से सत्तर हजार फ़रिश्ते हर गरोह को पीछे से गुर्जों से मारते हुए हंकायेंगे, जब जहन्नम पर पहुंच जायेंगे तो यह मुक्किल कहेंगे यह वह आग है जिसको तुम नहीं मानते थे क्या यह कोई जादू है क्या तुमको दिखई नहीं देता, अब तो तुम को इसमें दाखिल होना है तुम सब्र करो या न करो दोनों बराबर हैं, तुम्हारे आमाल की तुम को सज़ा दी जाए उस वक्त जहन्नम के दरवाजे खोल दिए जायेंगे ताकि वह उस आग में दाखिल हो जायें, दरवाजों के पर्दे उठा दिए जायेंगे उस वक्त आतिशे दोज़ख जोश मारेगी और



लपटें भड़कने लगेंगी, धुआ बलन्द होगा, शरारे बलन्द होंगे, हर एक शरारा सत्तर साल में तय होने वाली मुसाफ़त के बक़्द्र बलन्द होगा यह शरारे बलन्द हो कर फिर पलटेंगे और इन दोज़खियों के सरो पर गिरेंगे, इनके बाल जलकर भसम हो जायेंगे और खोपड़ियां टूट जायेंगी उस वक़्त दोज़ख बड़े जोर से चिल्लायेगा और कहेगा! ऐ दोज़ख वालो! मेरी तरफ़ जल्दी आओ कसम है मेरे रब की कि मैं तुमसे ज़रूर बदला लूंगा। फिर दोज़ख कहेगा कि तमाम हम्द उसी को सज़ावार है जिसने अपने ग़ज़ब के बाएस मुझे ग़ज़बनाक बनाया और अपने दुश्मनों से मेरी आग के ज़रिया इन्तेक़ाम लेता है, ऐ परवरदिगार! मेरी गर्मी में और मेरी कुव्वत में और इज़ाफ़ा फ़रमा दे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसके बाद कुछ फ़रिश्ते जहन्नम से बाहर आयेंगे, हर फ़रिश्ता, हर उम्मत को अपनी हथेली पर उठा कर औन्धा जहन्नम में फेंक देगा यह लोग सरनिगूं हालत में सत्तर साल की मुसाफ़त तक लुढ़कते हुए चले जायेंगे आखिरकार यह जहन्नम के पहाड़ों की चोटियों पर पहुंचेंगे तो वहां भी उनको आराम मयस्सर नहीं आयेगा हर जहन्नमी की सत्तर खालें तह ब तह हो जायेंगी, पहाड़ों की चोटियों पर पहुंचने के बाद सबसे पहले उनको थूहड़ (जकूम) खाने को मिलेगा जिसकी गर्मी उसके (ऊपर) पोस्त से नमूदार होगी वह बहुत ज़्यादा कड़वा और कांटों दार होगा, दोज़खी जकूम चबा रहे होंगे कि यक बारगी गुर्ज बरदार मुवक्किल उनको गुरजों से मारना शुरू कर देंगे गुर्ज की ज़रबात से उनकी हड्डियां रेज़ा रेज़ा हो जायेंगी। फिर उन को पांव से पकड़ कर घसीट घसीट कर दोज़ख में फेंक देंगे, फिर सत्तर साल के रास्ता के बराबर फासला तक दोज़ख की गहराई में लुढ़कते चले जायेंगे और आखिरकार फिर उन पहाड़ों के दरों में जा पहुंचेंगे, इस असना में 70 मरतबा इनका पोस्त बदला जाएगा और वहां भी उनको गिज़ा जकूम (थोहड़) ही मिलेगी लेकिन उनकी यह खुराक उनके मुंह ही में रहेगी (हल्क से नीचे उतारने की इनमें ताकत नहीं होगी) उनका मुंह और उनका दिल दोनों उनके गले में फंस जायेंगे जिससे उनका दम घुटने लगेगा उस वक़्त वह शोर व वावैला करेंगे आर पानी मांगेंगे उन घाटियों में कुछ नदियां और नहरें होंगी, यह जहन्नमी पानी के लिए उन नहरों के तरफ़ बढ़ेंगे और उनके किनारों पर पहुंच कर औन्धे गिर पड़ेंगे ताकि किसी सूत से पानी पी लें, उस वक़्त उनके मुंह की खालें अलग हो कर नहरों में गिर पड़ेंगी और वह पानी न पी सकेंगे, वह मायूस होकर नहरों से पलटना चाहेंगे कि दोज़ख के फ़रिश्ते फिर आ मौजूद होंगे दोज़ख के फ़रिश्ते उन्हें आते ही मारना शुरू कर देंगे, मार मार कर उनकी हड्डियां चूर चूर कर देंगे फिर उनको पांव से पकड़ कर घसीट लेंगे आर बाहर लाकर फिर दोज़ख में फेंक देंगे फिर यह लोग औंधे मुंह चालीस साल की राह तक आग के शोलों और उनके सख्त धुएं में फंसे हुए अज़ाब भुगतते रहेंगे जहन्नम की वादियों में उतरने से पहले हर जहन्नमी की सत्तर बार खाल बदली जायेगी।

आंहरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरशाद फ़रमाया कि दोज़ख की यह नदियां वादियों में जाकर ख़त्म होंगी, यह लोग उन नदियों का पानी पियेंगे मगर वह इतना गर्म होगा कि पेट में नहीं ठहरेगा (उनके पेट की खाल जल जायेगी) उस वक़्त अल्लाह तआला उनको सात नई खालें अता फ़रमायेगा तब कहीं कुछ पानी उनके पेट में ठहरेगा लेकिन पेट में पहुंच कर आंतों को टुकड़े टुकड़े कर देगा और यह कटी हुई आंतें मक़अद की राह से निकल जायेंगी पानी का कुछ बाकी हिस्सा रगों में फैल जायेगा जिससे उनका गोश्त फिघल जायेगा और हड्डियां चटख



जायेंगी, अब फिर उनको फरिश्ते जा पकड़ेंगे उनकी पीठ, मुंह और सरों पर गुर्ज मारेंगे हर गुर्ज की 260 धारें होंगी गुर्ज की ज़रबात से उनकी पुश्तें टूट जायेंगी उसके बाद फिर उन्हें खींचकर फिर औन्धे मुंह में दोज़ख में डाल दिया जायेगा जब यह दोज़ख के बीचों बीच पहुंचेंगे तो उनकी खालों में आग भड़क उठेगी, कानों में पहुंचेगी, नाक के नथनों और शोले निकलने लगेंगे और सारे बदन से कचलियो (खूनाबा) बहने लगेगा आंखें निकल कर रुख्सारों पर लटक जायेंगी उस वक्त उनको उन शैतानों के साथ जिन्होंने उनको बहकाया था और उन (झूठे) माबूदों के साथ जिनसे यह मुसीबत के वक्त मदद मांगा करते थे मिला कर बांध दिया जायेगा और तंग जगहों पर उनको डाल दिया जायेगा उस वक्त वह (तंग आकर) मौत को पुकारेंगे मगर मौत नहीं आयेगी फिर उनके दुनयवी माल को आग में तपा कर उनकी पेशानियों और पहलुओं पर दाग लगाये जायेंगे और उन की पीठों पर वह गर्म गर्म सोना और चांदी रखवाया जायेगा जो उनकी पीठ फाड़ कर बाहर निकल आयेगा, यह लोग जहन्नम के मुस्तहिक होंगे और अपने शैतानों और पत्थरों (माबूदों) के साथ बंधे पड़े होंगे उस वक्त गुनाहों के बाएस उनके बदन पहाड़ों की तरह कर दिए जायेंगे ताकि अज़ाब की शिद्दत और ज़्यादा हो जाये एक एक पहाड़ की लम्बाई एक महीने की मुसाफ़त के बक़्द्र और चौड़ाई तीन रातों की मुसाफ़त के बक़्द्र होगी। हर एक पहाड़ का सिरा करअ (शाम की सरहद के करीब एक पहाड़ का नाम) के बराबर होगा, 32 दांत रखने वाले दोज़खी के दांत बाज़ उसके सर से बाज़ उसकी ठोड़ी से निकल आयेंगे, नाक एक बड़े टीले जैसे हो जायेगी, बालों की लम्बाई और उनकी सख्ती सनोबर के दरख्त की तरह होगी, बाल अपनी कसरत और ज़्यादती में दुनिया के घने जंगलो ऐसे जायेंगे, ऊपर का होंट खींचा हुआ होगा और नीचे का होंट नव्वे हाथ का हो जायेगा, हाथ दस शबाना रोज़ मुसाफ़त के बराबर और उनकी मोटाई एक दिन रात की मुसाबत के बराबर होगी, दोज़खी की रान दरकान (यह भी एक पहाड़ नाम है) की तरह और खाल की मोटाई चालीस हाथ होगी, पिंडली का तूल पांच रात की मुसाफ़त के बराबर होगा और मोटाई एक दिन की मुसाबत के बराबर होगी। हर आंख कोहे हिरा की तरह बन जायेगी जब उनके सर पर तारकोल डाला जायेगा तो आग भड़क उठेगी और उसकी शोला बारी बढ़ती ही चली जायेगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है कि अगर आदमी इस हैयत क़दाई में दोज़ख से बाहर आ जाये कि उसके दोनों हाथ गरदन से बंधे हों, गरदन में बहुत से तौक पड़े हों और पांव में बेड़ियां और जंजीरें खड़खड़ाता बाहर निकल आये और लोग उसको इस हालत में देख लें तो (डर कर) भाग खड़े हों और जहां तक उनसे भागा जाये वह भागते चले जायें।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि दोज़ख की गर्मी, तारीकी, गुनागूं अज़ाबों और ठिकानों की तंगी की वजह से दोज़खियों के गोश्त नीले पड़ जायेंगे हड्डियां टूट जायेंगी, दिमाग खौलने लगेगा, भेजा पिघल पिघल कर बाहर निकल कर जिस्म पर बहता होगा, जहां से गुज़रेगा उस जगह को (अपनी हिद्दत और तपिश से) जला देगा। जोड़ जोड़ पारा पारा हो जायेंगे उनसे कचलहु बहने लगेगा इन टूटे हुए जोड़ों में कीड़े पड़ जायेंगे उनमें एक एक कीड़ा गोरखर के बराबर होगा, गोहों और शाहीन की तरह उनके नुकीले नाखून होंगे यह नाखून खाल और गोश्त के अन्दर पेवस्त हो जायेंगे इधर उधर दौड़ेंगे, यह कीड़े काटेंगे, सहमे हुए यह जंगली जानवरों की तरह इधर उधर



जायेंगे, दोजखियों का गोشت खायेंगे, उनका खून पियेंगे, गोشت और खून के सिवा उनकी कोई गिजा नहीं होगी।

फिर फ़रिश्ते दोजखियों को पकड़ कर अंगारों पर नेजों के भालों जैसे नुकीले पत्थरों पर बड़ी कुव्वत और सख्ती के साथ घसीटेंगे और इसी तरह घसीटते हुए जहन्नम के समन्दर तक जो यहां से सत्तर मील के मुसाफ़त पर होगा ले जायेंगे उस असना में उनका जोड़ खुल जायेगा और पारा पारा हो जायेगा उनको रोज़ाना सत्तर हजार नई खालें (अज़ाब सहने के लिए) दी जायेंगी, बहरे जहन्नम पर पहुंचकर उनको जहन्नम के मुवक्किलों के सुपुर्द कर दिया जायेगा वह उन दोजखियों की टांगे पकड़ कर जहन्नम के समन्दर में फेंक देंगे जहन्नम के समन्दर की गहराई अल्लाह तआला के सिवा किसी को मालूम नहीं।

बाज़ रिवायात में आया है कि तौरैत में मरकूम है कि बहरे जहन्नम के मुकाबले में दुनिया का समन्दर ऐसा ही है जैसे इस दुनियावी समन्दर के मुकाबले में एक छोटा चश्मा। बहरे जहन्नम में फेंके जाने के बाद जब वह अज़ाब उठायेंगे और अज़ाब का मज़ा चखेंगे तो एक दूसरे से कहेगा कि पहले हमको जो कुछ अज़ाब दिया गया था वह तो इस अज़ाब के मुकाबिल में महज़ एक ख़्वाब था (कुछ भी नहीं था)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक बार उस जहन्नम के समन्दर में गर्क होने के बाद समन्दर उन्हें उछाल कर सत्तर हाथ दूर फेंक देगा हर हाथ का फासला आधा गज़ का नहीं होगा बल्कि इतना होगा जितना मशरिक से मगरिब तक है, फिर फ़रिश्ते उन दोजखियों को गुर्जों से मारेगे, इसके बाद उन्हें सत्तर साल की मुदत में तय होने वाली गहराई में गर्क कर दिया जायेगा उनका खाना पीना उसी दरिया से होगा फिर वह एक सौ चालीस साल के मुसाफ़त के बक़्द्र ऊपर उभरेंगे और उनमें से हर एक चाहेगा ज़रा दम ले ले, मगर फौरन ही फ़रिश्ते गुर्ज मारने के लिए आ जायेंगे यह अज़ाब उस अज़ाब के अलावा होगा जो उन पर जारी है, जब वह दम लेने को सर ऊपर उठायेंगे तो सत्तर हजार गुर्ज उनके सरो पर पड़ेंगे और फिर उनको सत्तर हाथ की गहराई में गोता दे दिया जायेगा। जब तक अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होगा वह उसी हाल में रहेंगे यहां तक कि उनका गोشت और हड्डियां सब गल सड़ जायेंगी, सिर्फ़ जान बाकी रह जायेगी उस वक़्त एक मौज उठ कर उनको सत्तर साल की मुसाफ़त के बक़्द्र दूरी पर ले जाकर किसी साहिल की तरफ़ उनको उछाल देगी उस साहिल में सत्तर हजार गार होंगे और हर गार की सत्तर हजार शाखें होंगी और हर शाख का तूल सत्तर साल की मुसाफ़त के बक़्द्र होगा। हर शाख में सत्तर हजार अज़दहे होंगे और हर अज़दहे की लम्बाई सत्तर गज़ होगी उसके सत्तर दांत होंगे और हर दांत में एक मटका ज़हर भरा होगा उन गारों में आने के बाद उनकी रूहों को नई खालें और नये बदन दिए जायेंगे लोहे के तौक पहनाये जायेंगे सांप और बिच्छू उन तौकों से लिपट जायेंगे, हर दोजखी पर अज़ाब के लिए सत्तर हजार सांप और सत्तर हजार बिच्छू मुक़र्रर किये जायेंगे पहले तो यह सांप उनके घुटनों तक ऊपर चढ़ेंगे दोजखी उस अजीयत को बरदाश्त करेंगे फिर यह सीनों तक आ जायेंगे उस पर भी यह सब करेंगे फिर हंसुली तक चढ़ आयेंगे उस पर भी यह सब करेंगे यहां तक कि यह ऊपर चढ़ कर उनके नथनों, लबों ज़बानों और कानों को पकड़ कर लटक जायेंगे, इसी तरह बिच्छू अमल करेंगे बिच्छू और सांप अपना काम तमाम ज़हर उनको पिलायेंगे उस वक़्त जहन्नम की तरफ़ भागने और उसमें गिर



गुनियवुतालिबीन  
 पड़ने के सिवा कोई चारएकार न होगा, कोई उस वक्त उनकी मदद को नहीं आयेगा, सांप उनका गोश्त चबायेंगे, खून चूसेंगे और बिच्छू उनको डसेंगे, उस वक्त उनका सारा गोश्त गल गल कर गिर पड़ेगा और हर जोड़ अलग हो जायेगा जब यह उस अजीयत से बचने के लिए भाग कर दोजख में जा गिरेंगे तो सत्तर बरस तक उन सांपों और बिच्छुओं के ज़हर की वजह से आग का उन पर असर नहीं होगा। फिर आग में जलने के बाद उनको नई खालें दी जायेंगी। उस वक्त वह खाना मागेंगे, फरिश्ते खाना ले कर आयेंगे जो वलीमा से मौसूम होगा यह खाना लोहे से ज्यादा सख्त होगा वह उसे चबा न सकेंगे और उगल देंगे और भूक की शिद्दत में अपनी उंगुलियों और हाथों को चबा डालेंगे वह अपनी हथेलियों को खा जायेंगे उसके बाद कलाईयां फिर कोहनियां और उसके बाद मोठें खा जायेंगे सिर्फ शाने बाकी रह जायेंगे इससे आगे उनका मुंह नहीं पहुंचेगा इसलिए वह मजीद न खा सकेंगे फिर लोहे के आंकड़ों में उनकी कूचे (एड़ियों के ऊपर का हिस्सा) फंसा कर थुहड़ के दरख्तों में उलटा दिया जायेगा जकूम की हर शाख में अगरचे यह दोजखी सत्तर सत्तर साल लटके होंगे लेकिन उनके बोझ से शाख नीचे को नहीं झुकेगी, नीचे से उनको जहन्नम की लपटें पहुंचेगी और सत्तर बरस तक यह अज़ाब उन पर होता रहेगा यहां तक कि उनके जिस्म पिघल जायेंगे और जाने बाकी रह जायेंगी फिर अज सरे नौ उनके जिस्म और खालें पैदा की जायेंगी उस वक्त हाथ के पोरों के बल उनको लटकाया जायेगा उनके सुरीनों से आग उनके जिस्मों के अन्दर दाखिल होगी और उनके दिलों को खाती हुई उनके नथनों और कानों से निकल जायेगी, इस अज़ाब की मुद्दत सत्तर साल होगी जब इस मरतबा में हड्डियां और गोश्त पिघल जायेंगे और सिर्फ जाने बाकी रह जायेंगी तो फिर अज सरे नौ बदन और खालें पैदा की जायेंगी। इस बार उनकी आंखों में आंकड़े डाल कर उनको लटकाया जायेगा और बराबर अज़ाब होता रहेगा गर्जकि कोई जोड़ कोई उज्व और सर का कोई बाल ऐसा नहीं रहेगा जहां आंकड़ा डालकर थुहड़ के दरख्त से सत्तर साल तक न लटकाया जाये। पस वह हर उज्व और हर जोड़ से मौत का मज़ा चखेंगे लेकिन उनको मौत नहीं आयेगी इन अज़ाबों के बाद उन पर तरह तरह के अज़ाब होंगे जब फरिश्ते इन दोजखियों को यह तमाम अज़ाब दे चुकेंगे और उनको छोड़ देंगे तो हर जहन्नमी हर दोजखी को जंजीर में बांध कर मुंह के बल घसीटते हुए दोजख में उनके ठिकानों पर ले जायेंगे। हर दोजखी का ठिकाना उसके आमाल के मुताबिक होगा किसी के ठिकाने का तूल एक महीने मुसाफत का बक़्द्र होगा और वहां आग दहकती होगी और सिवाए उस शख्स के कोई दूसरा वहां नहीं होगा, किसी की फुरुदगाह का तूल 19 दिन की मुसाफते राह के बक़्द्र होगा और फिर यह ठिकाने तंग और छोटे होना शुरू होंगे और बाज़ ठिकानों का तूल सिर्फ एक दिन की मुसाफत के बक़्द्र रह जायेगा इन ठिकानों के वुसअत और तंगी के तनासुब से ही मकीनों पर अज़ाब किया जायेगा, किसी को उलटा लटका कर अज़ाब दिया जायेगा और किसी को चित लिटाकर, किसी को बिठाकर किसी को घुटनों के बल झुकाकर, किसी को खड़ा करके अज़ाब दिया जायेगा। यह तमाम मकामात अज़ाब पाने वालों के लिए नेजे की नोक से भी ज्यादा तंग होंगे, आग किसी के टखनों तक होगी और किसी के घुटनों तक, किसी की रानों तक पहुंचेगी, किसी की नाफ तक और किसी के हल्क तक, कोई आग में गोता खाता होगा और कोई उसमें गर्क होगा कोई आग में (गिरदाब की तरह) चक्कर खायेगा यह आग उन्हें सत्तर माह की मुसाफत के बक़्द्र गहराई तक पहुंचा देगी फिर जब वह अपने अपने



ठिकानों पर पहुंच जायेंगे तो हर एक को उसके साथी के साथ मिला दिया जायेगा। यह वहां इतना रोयेंगे कि उनके आंसू सूख जायेंगे उस वक्त वह खून के आंसू रोयेंगे उनके आंसू इस कदर होंगे कि अगर जमा हो जायें तो उनमें कश्ती रानी हो सकती है।

दोज़ख की तह में दोज़खियों को जमा होने का एक दिन होगा और उस दिन के बाद फिर वह कभी एक जगह जमा नहीं हो सकेंगे। खुदा के हुक्म से मुनादी दोज़ख की तह में निदा देगा। उस मुनादी की आवाज़ दूर नज़दीक दोज़ख के बालाई हिस्से और ज़ेरीं हिस्से वाले सब ही सुन लेंगे। उस मुनादी का नाम हश्शर होगा। हश्शर पुकारेगा ऐ दोज़खियों! जमा हो जाओ! सब के सब जहन्नम के बुनियादी हिस्से में जमा हो जायेंगे उनके अज़ाब के फ़रिश्ते साथ होंगे यह सब दोज़खी आपस में मशवरा करेंगे दुनिया में जिन लोगो को कमज़ोर और हकीर समझा जाता था वह बड़े लोगों से कहेंगे हम दुनिया में तुम्हारे मुतीअ और फ़रमांबरदार बने रहे क्या आज तुम हम को खुदा के अज़ाब से बचा सकोगे? दुनिया के यह बड़े (मगरूर मुतकब्बिर) लोग कहेंगे कि हम सब दोज़ख में पड़े हैं, अल्लाह अपने बन्दों का फैसला कर चुका है। (फिर तुम हमसे क्या मदद तलब करते हो) अल्लाह तुम को समझे तुम हमसे फ़रयाद कर रहे हो, यह कमज़ोर लोग जवाब देंगे खुदा करे तुम कभी खुशी का मुंह न देखो। तुम ही तो यह अज़ाब हम पर लाये हो (तुम्हारी बदौलत यह अज़ाब हम पर नाज़िल हुआ है।) फिर यह लोग खुदावन्दे आलम से अर्ज करेंगे! ऐ हमारे रब जिनकी बदौलत हमें इस अज़ाब का सामना करना पड़ा है उन पर अपना अज़ाब दोगूना कर दे। (बददुआ सुनकर) यह मुनकिर और मगरूर लोग कहेंगे कि अगर अल्लाह हम को हिदायत देता तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करते, ग़रीब और कमज़ोर लोग जवाब देंगे कि तुम झूट कहते हो तुम रात दिन मक्क़ व फ़रेब में मुबतला रहे कि हम अल्लाह की ना फ़रमानी करे और उसका शरीक बनाये आज हम तुम से और उन झूटे माबूदों से जिनकी परस्तिश की तुम हमको दावत देते थे बेज़ार हैं।

इसके बाद सब दोज़खी अपने साथ के शैतानों की तरफ़ तबज़्जोह करेंगे और कहेंगे तुम्हारे गुमराह होने से हम भी गुमराही के गढ़े में गिर पड़े। सबसे आखिर में शैतान मलऊन बलन्द आवाज़ से कहेगा! ऐ दोज़खियों! बेशक अल्लाह तआला ने तुम से सच्चा वादा किया था उसने तुम को दावते हक़ दी थी मगर तुम ने उसको क़बूल नहीं किया और उसके वादे को सच न जाना और उसकी तसदीक़ नहीं की और मैंने तुमसे जो वादा किया था आज उसके ख़िलाफ़ किया। मेरा तुम पर कोई ज़ोर तो था नहीं सिर्फ़ इतनी बात थी कि मैंने तुम को (बातिल की दावत दी) तुम ने वह दावत क़बूल कर ली अब मुझे तुम बुरा न कहो बल्कि खुद अपने आप को मलामत करो अब तो मैं न तुम्हारी फ़रयादरसी कर सकता हूं और न अपनी मदद पर कादिर हूं। अल्लाह के सिवा जिनकी तुम परस्तिश करते थे मैं आज उनका इनकार करता हूं। उसके बाद मुनादी ऐलान करेगा ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत, उस वक्त कमज़ोर मुतकब्बिरों पर और मुतकब्बिर व मगरूर उन कमज़ोर लोगों पर लानत भेजेंगे, यह सब अपने साथ वाले वाले शैतानों पर और उनके साथी शैतान उन सब पर लानत भेजेंगे और अपने साथी शैतानों से कहेंगे काश ! हमारे और तुम्हारे दर्मियान फ़ासला, मशरिक़ व मगरिब के फ़ासला के बराबर हो जाये तुम आज भी बुरे साथी हो और कल दुनिया में भी बुरे साथी थे।

बाद अज़ीं लोग अपने अपने जमाअत और ग़रोह पर नज़र डालेंगे और एक दूसरे से कहेंगे



आओ! इन मुवक्किलों से कहें कि यह अल्लाह से हमारी सिफारिश करे ताकि एक दिन का अज़ाब ही अल्लाह तआला हल्का कर दे, अपने मुवक्किलों से गुप्तगू करने में उनको सत्तर साल लग जायेंगे और उस तमाम मुद्दत में वह अज़ाब में मुबतला रहेंगे। आखिरकार मुवक्किलों से यह बात कहेंगे वह उनको जवाब देंगे कि क्या अल्लाह के अहकाम लेकर तुम्हारे पास नहीं आये थे, सब कहेंगे बेशक आये थे। उस वक्त मुवक्किल कहेंगे बस तो अब तुम यूँही फरयाद करते रहो मगर काफ़िरों की पुकार अब बेकार है। जब मुवक्किलों के जवाब से वह मायूस हो जायेंगे और उनको अच्छा जवाब नहीं मिला तो वह मालिक (दारोगए जहन्नम) से फरयाद करेंगे और कहेंगे कि ऐ मालिक तुम ही हमारे लिए अल्लाह तआला से दुआ करो कि वह हमको मौत दे दे। मालिक अब्बल तो बकद्रे मुद्दते दुनिया उनकी बात का जवाब नहीं देंगे, कोई बात ही नहीं करेंगे, फिर जवाब देंगे भी तो कहेंगे, मौत के फैसले से पहले मुद्दतों तक तुम को यहां रहना होगा। जब वह मालिक के जवाब से भी मायूस हो जायेंगे तो उस वक्त अपने रब से फरयाद करेंगे और कहेंगे इलाही! तू अब हम को अब यहां से निकाल दे अगर हम दोबारा हम तेरी नाफरमानी करे तो बेशक हम जालिम होंगे। अल्लाह तआला उनकी इस फरयाद का बकद्रे ज़माना 70 साल जवाब नहीं देगा फिर जिस तरह कुत्तों को धुतकारते हैं उसी तरह (धुधकारते हुए) जवाब देगा कि जहन्नम में ज़िल्लत के साथ पड़े रहो, मुझसे फरयाद न करो। जब वह देखेंगे कि उनका रब भी रहम नहीं फरमाता और कोई उम्मीद अफ़ज़ा जवाब नहीं दिया गया तो एक दूसरे से (मायूसी के साथ) कहेंगे कि अब हम इस अज़ाब पर सब्र करे या न करे दोनों बातें बराबर हैं अब तो रिहाई तो नसीब नहीं होगी, इस वक्त न हमारा कोई सिफारिशी है और न कोई दिलसोज़ी करने वाला दोस्त है अगर एक बार हम दुनिया में लौट जायें तो ज़रूर इमान वालों में शामिल हो जायें।

बाद अज़ीं फरिश्ते उनको लौटा कर उनके ठिकानों पर ले जायेंगे उस वक्त उनके कदम डगमगाते होंगे उनकी तमाम हुज्जतें नाकारा बन चुकी होंगी, अल्लाह का अज़ाब देख चुके होंगे और उसकी रहमत की उम्मीद मुनक़तअ हो चुकी होगी सख़्त इज़तेराब का आलम होगा, रूसवाई और एक अज़ीम ज़िल्लत उन पर मुसल्लत होगी वह अपनी उस कोताही पर जो उनसे दुनिया में सरज़द हुई बहुत कुछ फरयाद व फुगां करेंगे और आमाल के उन बोझों पर हसरत व अफ़सोस करेंगे जो अपनी गरदनों पर दुनिया से लाद कर लाये थे उनकी गरदनों पर न सिर्फ़ उनके बोझ होंगे बल्कि उनकी गरदनों पर उनकी पैरवी करने वालों के बोझ होंगे। उनका अज़ाब उनकी ज़मीन के ज़रों और उनके दरियाओं के कतरे से भी जाएद होंगे उनके इर्द गिर्द अज़ाब देने वाले सफ़ाक व तरार फरिश्ते होंगे जो अज़ाब देने में कोई रू रियायत नहीं करेंगे उनका हुक्म बहुत सख़्त और बात अटल होगी उन अज़ाब देने वाले फरिश्तों के जिस्म बड़े बड़े बिजली की तरह कूंदते चेहरे अंगारों सी दहकती आंखें और शोला आतिशों की तरह सुख़्क भभूका रंगत, दांत बाहर निकले हुए, बैल की सींगों की तरह (लम्बे लम्बे) नाखून, हाथों में आग के भारी भारी लम्बे लम्बे गुर्ज़ लिए हुए ऐसे कि अगर उनको पहाड़ों पर मारें तो वह भी रेज़ा रेज़ा हो जायें (ऐसी डरावनी सूरत) और ऐसे गुर्ज़ों से वह अल्लाह के नाफ़रमानों को मारेंगे उन ज़र्बात से अगर सर शके चश्म के बजाए खून के आंसू बहें तो कुछ तअज्जुब नहीं। वह अगर उन फरिश्तों को पुकारेंगे तो उनका जवाब नहीं देंगे वह गिरया व ज़ारी करेंगे और उनको रहम नहीं आयेगा ठंडे पानी के लिए चीखेंगे तो उसके बजाए पिघले हुए तांबे की तरह उनको खौलता हुआ पानी मिलेगा जो उनके दहनों को



झुलस डालेगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि दोज़खियों पर रोज़ाना एक ऐसा बादल छायेगा जिसकी बिजली के कौंधने से उन की बीनाई जाती रहेगी और उसकी कड़क उनकी कमर तोड़ देगी उन पर ऐसी गहरी तारीकी मुसल्लत हो जायेगी कि वह अज़ाब के फ़रिश्तों को भी नहीं देख सकेंगे फिर बादल उनसे मुखातिब होगा कि ऐ जहन्नम वालो! क्या तुम चाहते हो कि मैं पानी बरसाऊँ? सब मिलकर कहेंगे कि हां हम पर ठंडा पानी बरसा दे! बादल उन पानी के बजाए इस तरह पत्थर बरसायेगा कि उनकी खोपड़ियां चकनाचूर हो जायेंगी। उसके बाद बादल उनपर खौलता हुआ पानी, शोले, लोहे, कांटे और मेखे बरसायेगा। फिर सांप बिच्छू, दूसरे हशरातुल अर्ज और ज़ख्मों का धोवन बरसायेगा, बादल के छाने पर दोज़ख के दरिया इतना जोश मारेंगे कि उनकी लहरें उबल पड़ेंगी यह लहरें बड़ी गज़बनाक होगी उस वक्त कोई जगह ऐसी बाकी नहीं होगी जहां दरिया का पानी न चढ़ आया हो। उस सैलाब (बला) में तमाम दोज़खी गर्क हो जायेंगे मगर उनको ख़ौफ़ नहीं आयेगा। नाफ़रमानों पर जो उसके अन्दर होंगे, जहन्नम का जोश और उसका दर्जा हरारत, उसकी हैबतनाक आवाज़, शोले, धुआं, तारीकी, गर्म लपटें, गर्म पानी, भड़कती और दहकती आग, परवरदिगार के गज़ब के बाइस और भी ज़्यादा तेज़ हो जायेगी। हम सब दोज़ख से दोज़ख में जाने वाले कामों से दोज़खियों की हमराही से अल्लाह की पनाह तलब करते हैं (आमीन)

इलाहल आलमीन! तू हमारा भी मालिक है और दोज़ख का भी, इलाही हमको दोज़ख की हौज़ में न उतारना, हमारी गरदनो में उसकी तौक न डालना, हमको उसका लिबास न पहनाना, हमको उसका थुहड़ न खिलाना, उसका गर्म पानी हम को न पिलाना, उसके मुक्किलों को हम पर मुकर्रर न फ़रमाना, उसकी आग का हमको निवाला न बनाना, अपनी रहमत से पुल सिरात से हम को गुज़ारना, हमको उसके शोले और शरारों से दूर रखना, अपनी रहमत से उसके धुएं से उस सख्ती और उसके अज़ाब से बचा लेना आमीन। या रब्बुल आलमीन।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अगर जहन्नम का सबसे छोटा दरवाज़ा मगरिब की तरफ़ से खोल दिया जाये तो उसकी हिद्दत व हरारत से मशरिक के पहाड़ इस तरह पिघल जायें जिस तरह तांबा पिघलता है अगर उसकी एक चिंगारी उड़ कर मगरिब में जाकर गिरे और आदमी मशरिक में हो तो उसका दिमाग़ खौलने लगे यहां तक कि मग़ज़ जिस्म पर बहने लगे।

दोज़खियों पर सबसे कम दर्जे का अज़ाब यह होगा कि उनको आग के जूते पहनाये जायेंगे जिस की आग नथनों और कानों के सुराखों से निकल कर बहने लगेगी, उनके दिमाग़ खौलने लगेंगे उनके करीब जो लोग होंगे वह उसकी तपिश से एक पत्थर से तड़प कर दूसरे पत्थर पर गिरेंगे तमाम दोज़खियों को उनके आमाल के मुताबिक़ अज़ाब दिया जायेगा हम उनके आमाल और उनके मक़ामे आखिरी से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

## गुनाहों के साथ मख़तस अज़ाब

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो लोग अपनी शर्मगाहों को फेअले हराम से महफूज़ नहीं रखते (ज़िना से मुरतकिब होते हैं) उनका अज़ाब यह होगा कि उनकी



तक कि उनके जिस्म पिघल जायेंगे सिर्फ उनकी जानें बाकी रह जायेंगी फिर उनको उतार लिया जायेगा और अज सरे नौ जिस्म और खालें दी जायेंगी फिर उनको उसी अजाब में मुब्तला कर दिया जायेगा और बकद्र मुदते दुनिया सत्तर हजार फरिश्ते कोड़े मारेंगे यहां तक कि उनके बदन गल जायेंगे और सिर्फ जानें रह जायेंगी।

### चोर का अजाब

जो चोरी के गुनाह का मुरतकिब है उसका अजाब यह है कि उसका बन्द बन्द काटा जायेगा फिर अज सरे नौ जिस्म दिया जायेगा सत्तर हजार फरिश्ते उसके बन्द काटने के लिए छुरियां हाथ में लिए उसकी तरफ बढ़ेंगे।

### झूठी गवाही देने पर अजाब

झूठी गवाही देने वालों पर अजाब की कैफियत यह होगी कि उनकी जबानों में आंकड़े डालकर उनको उलटा लटका दिया जायेगा फिर सत्तर हजार फरिश्ते उनपर कोड़े बरसायेंगे यहां तक कि उनके जिस्म पिघल जायेंगे सिर्फ रुहें बाकी रह जायेंगी।

### मुशरिक पर गुनाह

वह लोग जो शिर्क में मुब्तला रहे हैं उनको जहन्नम के गारों में डाल दिया जायेगा फिर गारों के दहाने बन्द कर दिए जायेंगे, उन गारों में सांप और बिच्छू कसरत से होंगे, आग के शोले और उसका धुआं होगा और हर दोजखी का हर घड़ी सत्तर हजार बार जिस्म तबदील किया जायेगा।

### जालिम और जाबिर और मुतकब्बिरों का अजाब

जालिम, सरकशों और मुतकब्बिरों जैसे फिरऔन, हामान वगैरह पर इस तरह से अजाब होगा कि उनको आग के सन्दूकों में डाल कर मुकफ़ल कर दिया जायेगा। फिर उन सन्दूकों को जहन्नम के सबसे जेरी हिस्सा में रख दिया जायेगा। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि ऐसे हर दोजखी को एक लम्हा में 99 किस्म का अजाब दिया जायेगा और दिन में हजार मरतबा उनकी खालें तबदील की जायेंगी।

### ख़यानत करने वालों का अजाब

जो लोग ख़यानत करते हैं उनको उन चीजों के साथ लाया जायेगा जिनमें उन्होंने ख़यानत की होगी, फिर उनको जहन्नम के दरिया में उन चीजों के साथ डाल दिया जायेगा फिर उनसे कहा जायेगा कि दरिया में गोता लगाओ और उन चीजों को निकालो जिनमें तुमने ख़यानत की थी वह दरिया की तह तक जायेंगे। सिर्फ अल्लाह तआला को उसकी गहराई का इल्म है और किसी को नहीं, वह उस दरिया में गोता लगायेंगे और जब सांस लेने के लिए सर उठायेंगे तो सत्तर हजार फरिश्ते लोहे के गुर्ज से उन्हें मारेंगे यह अजाब उन पर हमेशा होता रहेगा।

रावी का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते थे कि अल्लाह तआला ने फैसला कर दिया है कि अहले दोजख जहन्नम में करनों (अहकाब) तक रहेंगे, मुझे उन करनों (अहकाब) की तादाद नहीं मालूम, हां आखिरत का कर्न (हकब) अस्सी हजार बरस



का, एक बरस तीन सौ साठ दिन का और दिन हजार बरस का होगा, पस अहले दोज़ख की हलाकत ही हलाकत है। उनके चेहरों की हलाकत यह है कि वह आफ़ताब की गर्मी और हिदत को तो बर्दाश्त नहीं कर सकते मगर दोज़ख की आग में उनको जलना पड़ेगा। उन सरो की हलाकत है जो सर का दर्द तो बर्दाश्त नहीं कर सकते थे मगर दोज़ख में उन पर खौलता पानी डाला जायेगा और हलाकत है उन आंखों की जो आशोबे चश्म को बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं मगर दोज़ख में उनसे आग के शोले निकलेंगे और हलाकत है उन नथनों की जो बदबू को सूंघना गवारा नहीं करते थे मगर वहां आग उनको खायेगी। उन कानों की हलाकत है जो खुशगवार आवाज़ें सुनना पसन्द करते थे मगर जहन्नम में उनसे शोले निकलेंगे, हलाकत है उन गरदनो की जो दर्द व अलम तो बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं मगर उस वक़्त उनमें तौक डाले जायेंगे, हलाकत है उन खालों की जो मोटा लिबास पहनना बर्दाश्त नहीं करती थीं मगर जहन्नम में उनको आग के खुरदरे बदबूदार और सख़्त कपड़े पहनाये जायेंगे, हलाकत है उन पेटों की जो ज़रा सी तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं कर सकते थे मगर दोज़ख में ज़कूम (थूहड़) के खौलते पानी से उनको भरना पड़ेगा जिससे अंतड़ियां भी कट जायेंगी, उन पैरों की हलाकत है जो बरहना पांव बर्दाश्त नहीं कर सकते थे मगर उन्हें आग की जूतियां पहनाई जायेंगी, पस अहले दोज़ख के लिए हलाकत ही हलाकत और अज़ाब ही अज़ाब है जिसमें वह मुब्तला होंगे। इलाही अपने हिले अजीम और फज़्ले अमीम की बरकत से दोज़खी न बनाना। (आमीन सुम्मा आमीन)

## दोज़ख के पुल उबूर करने के बाद

हज़रत अबू हु़रैरा रज़िअल्लाहो अन्हो से मरवी है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि जहन्नम के सात पुल हैं और हर दो पुलों के दर्मियान सत्तर साल का फ़ासला है, हर पुल की चौड़ाई तलवार की धार बराबर है, लोगों का पहला गरोह पलक झपकने की तेज़ी की तरह उस पुल पर से गुज़र जायेगा, दूसरा गरोह बिजली के कूदने की तरह, तीसरा गरोह तेज़ हवा के झोंके की मानिन्द, चौथ गरोह परिन्दे की परवाज़, पांचवा गरोह दौड़ते हुए घोड़ों की तरह, छठा तेज़ रफ़्तारों की मानिन्द उस पुल से गुज़र जायेगा, सातवां गरोह पयादा पा लोगों की तरह उससे गुज़रेगा, पुल से गुज़रने वालों में जब आखिरी आदमी रह जायेगा तो उसको हुक्म दिया जायेगा कि गुज़र, वह अपने दोनों पांव जैसे ही पुल पर रखेगा उसका पांव फिसल जायेगा तो वह घुटनों के बल चलने की कोशिश करेगा आग फ़ौरन उसके बालों और खाल पर असर अंदाज़ होगी। वह पेट के बल चलने की कोशिश करेगा और घिसटता हुआ चलेगा जब पांव भी सहारा नहीं देगा तो एक हाथ पकड़ कर चलेगा और दूसरा हाथ उसका लटकता रहेगा। दोज़ख की आग उस पर अज़ाब करती रहेगी वह खुद यह गुमान करेगा कि अब मैं अज़ाब से बच नहीं सकता मगर पेट के बल सरकते सरकते वह पुल को पार कर लेगा, पुल पार करने के बाद वह पुल की तरफ़ देखेगा और कहेगा कि कैसी बरकत वाली है वह ज़ात जिसने अपने अज़ाब से नजात बख़्शी, मुझे यकीन नहीं आता कि मेरे रब ने अगलों या पिछलों में से किसी पर ऐसी रहमत व बख़्शिश फ़रमायी हो जैसी उसने मुझ पर फ़रमाई।

हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि एक फ़रिश्ता आयेगा और उसका हाथ पकड़ कर उस हौज़



गुनियवुत्तालिबीन  
 के पास ले जायेगा जो जन्नत के दरवाजे के सामने है आर कहेगा कि इसमें गुस्ल कर लो और इसका पानी पी लो वह गुस्ल करेगा और पानी पियेगा। उससे बहिश्त वालों की खुशबू आयेगी और उसका रंग निखर जायेगा फिर वही फरिश्ता उसे जहन्नम के दरवाजे पर लाकर खड़ा कर देगा और कहेगा उस वक्त तक यहां खड़े रहो जब तक अल्लाह तआला की इजाजत तुम्हारे बारे में न आ जाये उस वक्त वह दो जखियों की तरफ देखेगा दो जखी कुत्तों की तरह भौंकते होंगे उस वक्त वह शख्स रो रो कर अर्ज करेगा, इलाही! मेरा मुंह उन दो जखियों की तरफ से फेर दे (ताकि मैं उन्हें न देख सकूँ) ऐ मेरे रब! इसके सिवा मैं तुझ से कुछ और तलब नहीं करूंगा वही फरिश्ता रब्बुल आलमीन की बारगाह से आयेगा और उसका मुंह जहन्नम की आग की तरफ से फेर देगा उस वक्त वह बन्दा जहां खड़ा होगा वहां से जन्नत सिर्फ एक कदम के फासला पर होगी, वह जन्नत के दरवाजे और उसकी वुसअत की तरफ देखेगा, दरवाजे के दोनों दरवाजों के माबैन फासला तेज उड़ने वाले परिन्दे की चालीस साल की मुसाफत के बक़्द्र होगा। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया वह बन्दा अपने रब से अर्ज करेगा ऐ मेरे रब! यकीनन तूने मुझ पर एहसानाते अजीम फरमाये हैं, तूने मुझे आग से नजात दी, मुंह फेर कर जन्नत की रुख पर कर दिया। अब मेरे और जन्नत के दर्मियान सिर्फ एक कदम का फासला है। ऐ परवरदिगार! तेरे जलाल व इज्जत की कसम मैं तुझसे अर्ज करता हूँ कि तू मुझे जन्नत के दरवाजे में दाखिल कर दे मैं तुझसे और कुछ तलब नहीं करूंगा सिवाए इसके कि जन्नत के दरवाजे को मेरे और अहले दो जख के दर्मियान हायल फरमा दे ताकि मैं उनकी आवाज भी न सुन सकूँ और न उन्हें देखूँ फिर वही फरिश्ता रब्बुल आलमीन की बारगाह से आयेगा और कहेगा कि ऐ इब्ने आदम! तू किस क़द्र झूठा है? क्या तूने सवाल न करने का वादा नहीं किया था? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि बन्दा कहेगा और कसम खायेगा कि इज्जते रब की कसम मैं कुछ और नहीं मांगूंगा, उस वक्त फरिश्ता उसका हाथ पकड़ कर जन्नत के दरवाजे में दाखिल कर देगा और खुद बारगाहे इलाही में वापस चला जायेगा वह शख्स उस वक्त अपने दायें बायें और सामने एक साला मुसाफत के बक़्द्र जन्नत को देखेगा तो उसे सिवाए दरख्तों और फलों के कुछ नज़र नहीं आयेगा। जन्नत करीब तरीन दरख्त का उसके मक़ाम से फासला एक परतीर होगा वह उस पेड़ को देखेगा तो उसकी जड़ सोने की, शाखें चांदी की, और पत्ते उन हसीन कपड़ों की तरह नज़र आयेंगे जिन्हें इंसान ने देखा है, उसके फल मक्खन से ज़्यादा नर्म शहद से ज़्यादा शीरीं और मुश्क से ज़्यादा खुशबूदार हैं। बन्दा यह देख कर हैरान रह जायेगा और फिर अर्ज करेगा! इलाही तूने मुझे जहन्नम से नजात दी और जन्नत के दरवाजे में दाखिल कर दिया, तूने मुझ पर बड़े एहसानात किये हैं लेकिन मेरे और इस दरख्त के दर्मियान सिर्फ एक कदम का फासला है इसको भी दूर फरमा दे। इसके सिवा मैं तुझसे और कोई सवाल नहीं करूंगा फिर वही फरिश्ता आयेगा और कहेगा तू भी बड़ा झूठा है। तूने तो मजीद सवाल न करने का वादा किया था। फिर यह मजीद इस्तदा क्यों कर रहा है, तेरी कसम कहां गई तुझे शर्म नहीं आती, आखिरकार उसका हाथ पकड़ कर जन्नत के अन्दर करीब तरीन महल तक ले जायेगा, यकायक उसे एक साल की मुसाफत के बक़्द्र दूरी पर मोती का एक महल दिखाई देगा उस महल को अपने सामने और अपनी कयाम गाह को अपने अक़ब में देखकर उसे ऐसा मालूम होगा कि पिछली जगह बिल्कुल हेच थी उस वक्त वह बेसाख़्ता अर्ज करेगा, इलाही! मैं यह मकान तुझसे



मांगता हूँ उसके बाद किसी चीज़ की दरखास्त नहीं करूंगा, फौरन एक फरिश्ता आयेगा वह कहेगा ऐ इंसान! क्या तूने अपने रब की कसम इससे पहले नहीं खाई थी? तू किस कदर काजिब है खैर जा तुझे वह महल दे दिया। जब यह बन्दा उस महल में पहुंचेगा तो उसके मुकाबिल का समा और मंज़र देखकर यह मकान और महल तो बे वक़्त मालूम होगा, महल देखकर बेकाबू हो जायेगा और अर्ज करेगा कि ऐ रब! मैं तुझसे इस महल का ख़्वास्तगार हूँ इसके बाद कोई और सवाल नहीं करूंगा फरिश्ता फिर आकर कहेगा कि ऐ इब्ने आदम क्या तूने कसम नहीं खाई थी? आखिर तू कितना दोगू गो है? फरिश्ता उसे उस महल में दाखिल कर देगा तो वह खुश हो कर इधर उधर देखेगा तो उसे ख़्वाब जैसा मालूम होगा और बन्दा फिर मुकाबिल के महल के लिए इस्तदा करेगा फिर फरिश्ता आयेगा और उसको उसका वादा और कसम याद दिलायेगा लेकिन इस बार मलामत नहीं करेगा क्योंकि वह महसूस करेगा कि जन्नत के अज़ाएब व ग़राइब इंसान के लिए हैरान कुन हैं जिन्हें देख कर इंसान काबू में नहीं रह सकता फिर उसे एक और महल नज़र आयेगा जिसे देख कर मौजूदा महल भी उसे ख़्वाब व ख़्याल मालूम होगा मबहूत हो कर रह जायेगा और फिर उसमें दरखास्त की सक्त् न रहेगी। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया फिर वही फरिश्ता आयेगा और उससे कहेगा अपने रब से मांगते क्यों नहीं? बन्दा जवाब देगा कि तुम पर खुदा की रहमत हो मैंने रब्बुल इज़्ज़त की कसम इतनी बार खाई है कि अब उससे डरता हूँ मुझे उससे हया आती है, उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रमायेगा ऐ मेरे बन्दे! क्या तू इसपर राजी है कि अज़ल से अबद तक कुल दुनिया में जो कुछ है उससे दस गुना तुझे देदू? बन्दा अर्ज करेगा मरवरदिगार क्या तू मुझसे इस्तिहज़ा फ़रमा रहा है तू तो रब्बुल आलमीन है, अल्लाह तआला फ़रमायेगा मैं ऐसा कर सकता हूँ तू जो मांगना चाहता है मांग, उस वक़्त बन्दा अर्ज करेगा कि मुझे आदमियों (हम जिन्सों) से मिला दे, फौरन एक फरिश्ता उसका हाथ पकड़ कर जन्नत में पयादा पा ले जायेगा उस वक़्त वह ऐसी चीज़ देखेगा जो उससे पहले उसने कभी नहीं देखी होगी। बन्दा सजदे में गिर पड़ेगा और कहेगा बिला शुबहा मेरे रब जल्ला व उला ने मुझे अपने जलवा से नवाज़ा (मुझे अपना जलवा दिखाया) फरिश्ता कहेगा सर उठा कर देख यह तेरा घर है, यह तेरी मंज़िल है और सबसे कम दर्जा की मंज़िल है।

## बन्दे के हज़ार महल

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दा कहेगा कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अगर मेरी नज़र की हिफ़ाज़त न फ़रमाता तो यकीनन इस कस्त्र के नूर से ख़ीरा हो कर मेरी बीनाई जाती रहती, फिर वह अपने महल में रहने लगेगा, तब उससे एक दूसरा बन्दा मुलाकात करेगा उस मुलाकाती के चेहरे और लिबास को देख कर वह ख़्याल करेगा कि शायद वह फरिश्ता है, आने वाला करीब आकर कहेगा अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु आपके आने का अब वक़्त आया, वह सलाम का जवाब देने के बाद दरयाफ़्त करेगा कि बन्दे! खुदा तुम कौन हो? वह जवाब देगा मैं आप का मुहाफ़िज़ हूँ और मेरी तरह आपके एक हज़ार मुहाफ़िज़ और हैं और हर एक के ज़िम्मे आपके एक महल की निगरानी है, आपके हज़ार महल हैं और हर महल में हज़ार ख़ादिम और एक हूर आपके लिए मख़सूस है। यह शख्स महल में दाखिल होगा तो देखेगा कि मोती के सत्तर कमरे हैं, हर कमरे में सत्तर दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े



में मोती का एक कुब्बा है, वह उन कुब्बों को खोलेगा जिसे आज तक किसी मखलूक ने नहीं खोला होगा दर्मियानी कुबा में उसको सुख मोती (याकूत) का एक गुंबद नज़र आयेगा जिसका तूल सत्तर गज होगा और उसके सत्तर दरवाजे होंगे और कोई मोती आपस में हमरंग नहीं होगा। हर लोलवी गुंबद में हूरे ऐन मौजूद होंगी, उनकी जलवा गाहें आरास्ता व पैरास्ता होगी, तख्त बिछे होंगे कस्स के अन्दर दाखिल होगा तो एक हूर मिलेगी वह उसको सलाम करेगी यह शख्स सलाम का जवाब देकर मुतहय्यर खड़ा रह जायेगा। हूर कहेगी आपको मेरी मुलाकात के लिए अब वक्त मिला मैं आपकी बीवी हूँ यह शख्स हूर के मुंह को देखेगा उस वक्त उसके चेहरे में (आईना की तरह) उसको अपना अक्स नज़र आयेगा हूर सत्तर जोड़े पहने होगी, हर जोड़े का अलग अलग रंग होगा, हूर का जिस्म इस कदर शफ़ाफ़ होगा कि लिबास के बाहर से उसकी पिंडली की हड्डी का गूदा तक नज़र आयेगा जब यह बन्दा उसकी तरफ़ से ज़रा देर को भी गाफ़िल हो कर दोबारा उसके जमाल को देखेगा तो उसको हूर का जिस्म पहले से सत्तर गुना ज़्यादा हसीन नज़र आयेगा, हूर उसके लिए आईना होगी और वह हूर के लिए।

## जन्नत के महल की कैफ़ियत

हर महल के तीन सौ साठ दरवाजे होंगे और हर दरवाजे पर तीन सौ साठ मोती, याकूत और दीगर जवाहिर के कुब्बे होंगे और हर कुब्बे का रंग एक दूसरे से मुखतलिफ़ होगा जब वह महल से सर निकाल कर झांकेगा तो बक़दर मुसाफ़ते ज़मीन उसको अपनी मिलिकियत नज़र आयेगी और जब वह उसकी सैर करेगा तो सौ बरस तक अपनी ही मिलिकियत (सरजमीन) में चलता रहेगा मगर उसकी हद ख़त्म नहीं होगी। हर दरवाजे पर फ़रिश्ते मौजूद होंगे यह अल्लाह तआला की तरफ़ से सलाम और तोहफ़े लायेंगे, हर फ़रिश्ते के पास ऐसा हदिया होगा जो दूसरे के पास नहीं होगा यह फ़रिश्ते अपने हदियों और तोहफ़ों के साथ रोज़ाना दिन चढ़े उस बन्दे को सलाम करने आयेंगे, अल्लाह की किताब (कुरान शरफ़ि) में उसकी तसदीक़ इस तरह मौजूद है।

हर दरवाजे से फ़रिश्ते उनसे सलाम अलैकुम कहते हुए आयेंगे यह बदला है उसका जो तुमने सब्र किया तो आख़िरत का घर, (जन्नत) कितना अच्छा है।

मज़ीद इरशाद फ़रमाया और जन्नत में उनके लिए सुबह व शाम रिज़क़ है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि यह बन्दा जो सबसे आख़िर में दाख़िल हुआ था अहले जन्नत उसे मिस्कीन के नाम से पुकारेंगे। उसकी वजह यह है कि दूसरों के मरतबे उससे कहीं ज़्यादा अफ़जूं होंगे उस मिस्कीन के खाने के लिए सिर्फ़ 80 हजार ख़ादिम मुकर्रर होंगे जब वह खाने की ख़्वाहिश करेगा तो उसके सामने खाना ऐसे ख़्वानों में पेश होगा जो ज़र्द और सुख़ याकूत के मररसा होंगे उन ख़्वानों के पाये मरवारीद के होंगे हर पाये की लम्बाई बीस मील होगी उन ख़्वानों में सत्तर किस्म के लज़ीज़ और रंगा रंग खाने होंगे। प्यालों में मुखतलिफ़ किस्म के शरबत होंगे खाने का मज़ा शुरू से आख़िर तक यकसां कायम रहेगा, अगरचे बाज़ खाने एक दूसरे मिलते जुलते होंगे लेकिन उनका रंग व रूप एक दूसरे से अलग होगा हर ख़ादिम को उसका हिस्सा खाने से ज़रूर दिया जायेगा लेकिन जब यह बन्दा खा चुकेगा तब उसके पस ख़ुरदा से दिया जाएगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते थे कि ऊंचे दर्जे वाले उस मिस्कीन



जन्नती की ज़्यादा करेंगे (बलन्दी से उसको देखेंगे) लेकिन यह उन लोगों को नहीं देख सकेगा। ऊंचे दर्जे वाले हर जन्नती की खिदमत में आठ लाख खिदमतगार होंगे हर खादिम के हाथ में एक ख्वान होगा जिसमें खाना होगा और जो खाना एक ख्वान में होगा वह दूसरे में नहीं होगा। जन्नती हर किस्म के खाने में से कुछ न कुछ जरूर खायेगा, जब यह खाने से फ़ारिग होगा तो हर खादिम को उस पस खुर्दा खाने और शरबत से हिस्सा मिलेगा, हर जन्नती को बहत्तर हूँ और दो इंसानी बीबीयां अता होंगी हर बीबी का महल याकूत सब्ज़ का होगा जो सुर्ख याकूत से भरसा होगा हर क़स के सत्तर हजार दरवाज़े (किवाड़) होंगे, हर किवाड़ पर मोती का एक कुब्बा होगा हर बीबी सत्तर हजार जोड़े पहने होगी हर जोड़े के सत्तर हजार रंग होंगे और कोई जोड़ा एक दूसरे के मानिन्द मुशाबेह न होगा। हर बीबी की खिदमत में एक हजार लौंडियां होंगी और सत्तर हजार ख्वातीन सहेलियां होंगी, हर लौंडी के हाथ में खाने से भरा हुआ ख्वान और शरबत से पुर प्याला होगा और एक ख्वान का खाना और प्याला का शरबत दूसरे ख्वान के खाने और शरबत से मुशाबेह नहीं होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है कि जब वह बन्दा ख्वाहिश करेगा कि अपने उस भाई से मुलाकात करे जिससे दुनिया में अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के वास्ते मोहब्बत करता था वह कहेगा कि काश मुझे अपने भाई का हाल मालूम होता कि वह किस हाल में है उसको ख़तरा होगा कि कहीं वह तबाह न हो गया हो अल्लाह तआला उसके दिल के इस ख़तरे से वाकिफ़ होगा वह फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि मेरे बन्दे को उसके भाई के पास पहुंचा दो, इस हुक्म के बाद फ़रिश्ता उसके पास एक अदद ऊंटनी लेकर आयेगा जिस पर पालान के बजाए नूर के गद्दे (नमदे) पड़े होंगे, जन्नती उसको सलाम करेगा फ़रिश्ता सलाम का जवाब देने के बाद कहेगा कि उठो सवार हो और अपने भाई के पास मुलाकात के लिए चलो जन्नती ऊंटनी पर सवार हो कर बहिश्त का वह रास्ता जो हजार बरस में तय हो सकता था इतनी जल्दी तय कर लेगा जितनी देर में तुम ऊंटनी पर सवार हो कर तेज़ रफ़्तारी से एक क़दम का रास्ता तय करते हो यह राह तय करके अपने भाई के घर पहुंच जायेगा और उसको सलाम करेगा वह सलाम का जवाब देगा और उसे खुश आमदीद कहेगा वह दरयाफ़्त करेगा कि ऐ भाई तुम कहां थे? मुझे तो तुम्हारे बारे में अंदेशा लाहक़ हो गया था दोनों मुआनका करेंगे और कहेंगे उस खुदा का शुक्र व एहसान है जिसने हमको मिलाया फिर दोनों अल्लाह तआला की हम्द ऐसी खुश अलहानी से करेंगे कि किसी ने ऐसी आवाज़ कभी नहीं सुनी होगी।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि उस वक़्त अल्लाह तआला उन दोनों से फ़रमायेगा कि ऐ मेरे बन्दो! यह वक़्त इबादत और बन्दगी का नहीं है बल्कि हमसे तहाएफ़ मांगने का वक़्त है लिहाज़ा तुम दोनों की जो ख्वाहिश हो हमसे तलब करो वह दोनों अर्ज़ करेंगे कि इलाही! हम दोनों को इस दर्जा (नज़लत) में यकजा कर दे, अल्लाह तआला उन दोनों को एक खेमा में यकजा कर देगा (दोनों को एक साथ रहने का हुक्म फ़रमा देगा) उस खेमा के चारों तरफ़ मोती और याकूत होंगे उनकी बीबीयों के लिए अलग मक़ाम होंगे फिर वह दोनों एक साथ खाये पियेंगे और हर तरह का लुत्फ़ उठायेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नती जब कोई लुक्मा अपने मुंह में रखेगा और उसके दिल में किसी दूसरे खाने की ख्वाहिश होगी तो अल्लाह



तआला उसी लुकमा को उसके मुंह में उसी मरगूब व मतलूब खाने में तबदील फरमा देगा।

## जन्नत की जमीन

रसूल ख़ुदा सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज किया गया कि या रसूलल्लाह जन्नत की जमीन कैसी होगी? हुज़ूर ने इरशाद फरमाया उसकी जमीन सफ़ेद व नर्म चांदी की और उसकी मिट्टी मुश्क की होगी और टीले जाफ़रान के होंगे उसकी चहार दीवारी मरवारीद, याकूत और सोने चांदी की होगी और ऐसी शफ़फ़ाफ़ कि अन्दर से बाहर की चीज़ और बाहर से अन्दर की चीज़ नज़र आयेगी। जन्नत में ऐसा कोई महल न होगा जिसकी अन्दर की चीज़ें बाहर से और बाहर की चीज़ें अन्दर से नज़र न आती हों, जन्नत में हर शख्स का लिबास तहबन्द (इज़ार) और चादर और बग़ैर सिले हुए जोड़े होंगे। मोतियों का ताज सर पर होगा, ताज में चारों तरफ़ मोती, याकूत और ज़मरूद होंगे और उससे सोने की दो जंजीरें लटकती होंगी, गरदन में सोने का गुलूबन्द होगा जिसके किनारे याकूत सब्ज़ और मरवारीद के होंगे। हर जन्नती के हाथ में तीन कंगन होंगे, एक कंगन सोने का एक चांदी का एक मोतियों का होगा। ताज के नीचे मोतियों और याकूत के सर बन्द होंगे जोड़े के ऊपर बारीक रेशम का लिबास होगा जिनके अस्तर सब्ज़ हरीर के होंगे सब तकिये लगाये ऐसे बिस्तरों पर बैठे होंगे जिनका अस्तर मोटे रेशम का और सबरह उमदा सुर्ख तफ़ीस कपड़े का होगा उसपर सुर्ख याकूत की धारियां पड़ी होंगी उनके तख़्त सुर्ख याकूत के और उनके पाये मरवारीद के होंगे, हर तख़्त पर हज़ार फ़र्श बिछे होंगे और हर फ़र्श में सत्तर रंग होंगे कोई रंग एक दूसरे से मुशबेह नहीं होगा। हर तख़्त के सामने सत्तर हज़ार बिस्तर होंगे और हर बिस्तर के सत्तर रंग होंगे और कोई बिस्तर दूसरे से मुशबेह नहीं होगा हर बिस्तर के दायें बायें सत्तर हज़ार कुर्सियां होगी और हर कुर्सी नई होगी और एक दूसरे से मुख़तलिफ़।

## अहले जन्नत की हैयत

रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तमाम अहले जन्नत ख़्वाह वह दुनिया में पस्त क़द हो क़्यों न हों जन्नत में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के क़द के बराबर होंगे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का क़द साठ हाथ का होगा तमाम जन्नती जवान होंगे रेश व बरूदत (दाढ़ी मूँछ के) बग़ैर, उनकी गहरी सुरमगीं आंखें होंगी उनकी बीवियां सब यकसां क़द की होंगी। इस एहतमाम के बाद मुनादी ऐसी आवाज़ में पुकारेगा जो दूर व नज़दीक नीचे और ऊपर यकसां सुनी जायेगी कि ऐ जन्नत वालो! क्या तुम को अपने यह घर पसन्द आये? सब जवाब में अर्ज करेंगे ख़ुदा की क़सम हमारे रब ने हमें इज़्ज़त और क़रामत की जगह उतारा है हम यहां से कहीं और मुनक़तिल नहीं होना चाहते और न इसके बदले दूसरा घर हम चाहते हैं। हम अपने रब के जवार में खुश हैं। ऐ अल्लाह! हमारे परवरदिगार! हमने तेरी मुनादी सुनी और उसका सच्चा जवाब अर्ज कर दिया।

## दीदार इलाही

इलाही हम तेरे दीदार के तालिब हैं तू हमें अपना जलवा दिखा दे क़्योंकि तेरा दीदार ही तो सबसे बड़ कर है। उस वक़्त अल्लाह तआला उस जन्नत को जिसका नाम दारुस्सलाम है और जहां अल्लाह तआला की मजलिस और मक़ाम है हुक्म देगा कि ख़ुद को सजा ले और आरास्ता



कर ले और उसके के लिए तैयार हो जा कि मैं अपना दीदार मैं अपना दीदार अपने बन्दों को करारुं जन्नत दारुस्सलाम रब का हुक्म सुनेगी बात खत्म होने से पहले ही खुद को आरास्ता कर लेगी और अल्लाह तआला का दीदार करने वालों के लिए तैयार हो जायेगी उस वक्त अल्लाह तआला एक फरिश्ते को हुक्म देगा कि मेरे दीदार के लिए मेरे बन्दों को बुलाओ वह फरिश्ता बारगाहे इलाही से रवाना हो कर बहुत पुर कैफ बलन्द और लम्बी आवाज़ में पुकारेगा ऐ अहले जन्नत ! ऐ अल्लाह के दोस्तो! आओ अपने रब का दीदार करो, उसकी आवाज़ हर जन्नती सुन लेगा ख्वाह वह ऊपर के तबके में या नीचे के तबके में। तमाम जन्नती ऊंटो और घोड़ों पर सवार हो जायेंगे, सफेद कस्तूरी और जर्द जाफ़रान के टीलों की तरफ चलेंगे और दरवाजे के करीब पहुंचकर सलाम पेश करेंगे और इस तरह कहेंगे अस्सलामो अलैना मिन रब्बना (हम पर हमारे रब की तरफ से सलाम हो) फिर वह दाखिले की इजाज़त चाहेंगे उनको इजाज़त दे दी जायेगी। जूही वह दरवाजे में दाखिल होने का इरादा करेंगे कि अर्श के नीचे से मशीरा नामी हवा चलेगी वह हवा मुश्क व जाफ़रान के टीलों को उठा लेगी और नबार बन कर उन तालिबाने दीदार के सरो, गरेबानों और कपड़ों पर डाल देगी फिर वह अन्दर दाखिल होकर अपने रब और उसकी अर्श व कुर्सी पर नज़र डालेंगे उनको एक नूरे ताबां नज़र आयेगा मगर रब जलवा फरमा न होगा उस वक्त यह यक ज़बान हो कर कहेंगे: ऐ हमारे परवरदिगार तू हर ऐब से पाक है तू कुद्स है तू फरिश्तो और हूरो का रब है तू बरकत वाला और आली मरतबा है। हमें अपने जमाल के दीदार से मुशरफ़ फरमा! उस वक्त अल्लाह तआला हिजाबाते नूर को हुक्म देगा कि हट जाओ फौरन यके बाद दीगरे हिजाबात उठते चले जायेंगे इस तरह सत्तर हिजाबात उठ जायेंगे और ज़ेरीन हिजाब अपने बालाई हिजाब से नूरानियत में सत्तर गुना ज़्यादा होगा उसके बाद अल्लाह तआला जलवा अफ़रोज़ होगा तालबाने दीदार सब सजदे में गिर पड़ेंगे और जितनी देर अल्लाह चाहेगा सजदे रेज़ रहेंगे सब सजदे में कहेंगे हम तेरी पाकी बयान करते हैं तेरे ही लिए तमाम हम्द व सना है तूने हमको दोज़ख से बचाया और जन्नत में दाखिल किया। यह मकान हमारे लिए कितना अच्छा है हम तुझ से पूरे पूरे राजी हैं तू भी हम से राजी हो जा। अल्लाह तआला फरमायेगा मैं तुमसे पूरे तरह से राजी हूं यह बन्दगी और हम्द व सना बयान करने का वक्त नहीं है यह ऐश व शादकामी का वक्त है मुझसे मांगो मैं तुम्हें अता करूंगा आरजू करो मैं तुम्हारे आरजू से बहुत ज्यादा तुमको दूंगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अहले जन्नत दिल ही दिल में आरजू करेंगे कि अल्लाह तआला ने उनको जो कुछ अता फरमाया है वह हमेशा कायम रखे अल्लाह तआला (उनकी आरजू के जवाब में) फरमायेगा कि जो कुछ मैंने तुझ को अता किया है उसी की मिस्ल व मानिन्द जो कुछ और अता करूंगा वह सब तुम्हारे लिए कायम व दायम रखूंगा। अहले जन्नत अल्लाहु अकबर कहते हुए सर उठायेंगे और रब्बुल इज्ज़त के नूरे पाक की शिद्दत से उस तरफ नज़र न उठा सकेंगे उस मजलिस का नाम "मशरिकी कुब्बए अर्श रब्बुल आलमीन" होगा इसके बाद रब्बुल इज्ज़त उनसे फरमायेगा ऐ मेरे बन्दो! ऐ मेरी कुरबत वालो! मेरे दोस्तो! मेरे मुहिब्बो! मुझसे मुहब्बत रखने वालो! ऐ वह लोगों जिनको मैंने अपनी मखलूक और इताअत गुज़ार बन्दों में से मुनतख़ब किया है, मरहबा मरहबा।



## अर्श इलाही और मेम्बर

इसके बाद उन लोगों को रब्बुल इज्जत के अर्श के सामने कुछ नूरानी मेम्बर नज़र आयेंगे उन मेम्बरों के नीचे नूर की कुर्सियां होंगी, उन कुर्सियों के नीचे फर्श पर गालीचे और गालीचों के नीचे मसनदें होंगी। अल्लाह जल्ला व जलालहु फरमायेगा! आओ और हस्बे मरातिब बैठो सबसे आगे रसूलाने कराम (अलैहिमुस्सलाम) तशरीफ लायेंगे और मेम्बरों पर तशरीफ फरमा हो जायेंगे फिर अंबिया अलैहिमुस्सलाम कुर्सियों पर जलवा अफरोज़ होंगे और हज़राते सालेहीन आगे बढ़ कर मसनदों पर बैठ जायेंगे उसके बाद नूरानी ख़्वान बिछाये जायेंगे, हर ख़्वान के सत्तर रंग होंगे और हर एक मरवारीद व याकूत से मुस्सअ फिर हक़ तबारक व तआला अपने खुदाम को हुक्म देगा कि सबको खिलाओ यह खुदाम सबके आगे ख़्वानों में सत्तर प्याले याकूत व मरवारीद के रखेंगे हर एक प्याले में सत्तर किस्म का खाना होगा आगे अल्लाह अज्ज व जल्ल इरशाद फरमायेगा कि खाओ हर एक जितना चाहेगा खायेगा खाते वक्त आपस में यह हज़रात कहेंगे आज के खाने के मुकाबिल में हमारे घर का खाने बिल्कुल हेच था वह उसके मुकाबले में ख़्वाब व ख़्याल है फिर अल्लाह तआला के हुक्म से यह हज़रात शराबे तहूर से सैराब किये जायेंगे उस वक्त अहले जन्नत आपस में कहेंगे कि हमारे मशरूबात तो इस मशरूब के मुकाबिल में एक ख़्वाब वा ख़्याल (हेच) हैं फिर रब्बुल इज्जत फरमायेगा कि तुमने इनको खिला पिला दिया अब इनको फल और मेवे खिलाओ, खुदाम फल लेकर आयेंगे। अहले जन्नत उन फलों में से कुछ खायेंगे और कहेंगे कि इन फलों के मुकाबले में हमारे (दुनिया के) फल बिल्कुल हेच और बे हकीकत है अल्लाह तआला खादिमों को हुक्म देगा कि तुमने इनको खिला पिला दिया मेवे भी खिला दिए अब इन्हें लिबास बहिश्ती और ज़ेवर से आरास्ता करो। खादिम लिबास और ज़ेवर उनको पहनायेंगे उस वक्त यह लोग आपस में कहेंगे कि इसके मुकाबले में हमारे ज़ेवर और लिबास तो बिल्कुल हेच थे। यह लोग कुर्सियों पर ही बैठे होंगे कि अल्लाह तआला अर्श से एक हवा भेजेगा जिस का नाम मैसरा होगा यह हवा ज़ेरीने अर्श से मुस्क व काफूर का गुबार (जो बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद होगा) साथ लाकर उनके सरो, गरेबानों और कपड़ों पर डाल देगी जिससे यह सब मुअत्तर हो जायेंगे फिर तमाम ख़्वान बचे हुए ख़ानों के साथ उठा लिए जायेंगे।

आंहज़रत सल्लल्लाही अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उस वक्त अल्लाह तआला फरमायेगा ऐ मेरे बन्दो! मुझसे सवाल करो मैं अता करूंगा और जो आरजू करोगे उससे ज़्यादा दूंगा यह सब जन्नती मुत्तफ़ेका तौर पर कहेंगे ऐ अल्लाह हमारे रब ! हम तुझसे तेरी रज़ा के तालिब हैं, अल्लाह तआला फरमायेगा मेरे बन्दो मैं तुम से राज़ी हूं सब सजदे में गिर पड़ेंगे और तस्बीह व तकबीर में मशगूल हो जायेंगे उस वक्त रब्बुल इज्जत फरमायेगा मेरे बन्दो! सर उठाओ यह इबादत का वक्त नहीं है यह वक्त ऐश व इशरत और राहत नसीबी का है बन्दे सजदे से सर उठायेंगे अनवारे रब्बी की वजह से उनके चेहरे ताबां होंगे। अल्लाह तआला फरमायेगा अब अपने महलों को वापस जाओ यह सब जन्नती बारगाहे इलाही से निकल आयेंगे, खुदाम सवारियां ले आयेंगे यह तमाम जन्नती अपनी अपनी ऊंटनी या ख़च्चर पर बैठ जायेंगे हर एक की रकाब में सत्तर हज़ार गुलाम होंगे यह गुलाम भी उसी जैसी सवारी पर सवार होंगे। रास्ते में से जो चाहेगा अपने इलाके और महल की तरफ़ चला जायेगा बाकी सब उसके हमरकाब रहेंगे यहां तक कि उसका कस्र आ



जायेगा कस्र में पहुंच कर जन्नती अपनी बीवी की तरफ जायेगा वह खड़े होकर उसका इस्तकबाल करेगी, खुश आमदीद व मरहबा कहेगी और कहेगी मेरे महबूब आप तो अपने रब के पास हुस्न व जमाल और नूर लेकर खुशबूदार लिबास और हसीन जेवर के साथ आये मैं भी आपसे जुदा न थी (आप के साथ थी) अल्लाह तआला के तरफ से एक फरिश्ता बलन्द आवाज से पुकार कर कहेगा ऐ अहले जन्नत! तुम हमेशा इसी हाल में रहोगे और तुम को इसी तरह नौ ब नौ नेमतें मिलती रहेंगी।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि फरिश्ते हर दरवाजे से सलामून अलैकुम बिमा सबरतुम फनेअमा उकबेयद्दार कहते हुए आयेंगे उनके साथ हृदिये के तौर पर मतऊमात, मशरूबात, मलबूसात और जेवरात होंगे।

हुजूर फरमाते थे कि जन्नत के सौ दर्जे होंगे हर दो दर्जों के दर्मियान एक सरदार मुअय्यन है जिस की बुर्जुगी और फज़ीलत का सब इकरार करेंगे जन्नत में सफ़ेद कस्तूरी और जाफ़रान के पहाड़ हैं अहले जन्नत की डकार से कस्तूरी की और पसीने से मुश्क की खुशबू आती है वह न थूकते हैं और न उन्हें बौल व बराज़ की ज़रूरत पेश आती है न उनकी नाक बहती है और न वह बीमार होते हैं न उनके सर में दर्द होता है।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फरमाते थे कि तमाम आला दर्जा और कम दर्जा वाले जन्नती चाश्त के वक़्त खाना खाते हैं फिर दो घड़ी आराम करते हैं और दो घड़ी आपस में मुलाकातें करते हैं। चार घड़ी अपने ख़ालिक की तमजीद बयान करते हैं फिर दो घड़ी आपस में मिलते जुलते हैं जन्नत में रात और दिन भी हैं लेकिन जन्नत के रात की तारीकी दिन की रौशनी से सत्तर गुना ज्यादा होगी हुजूर फरमाते थे कि तोहफ़ा व हदाया देने के एतबार से अदना दर्जा का शख्स भी ऐसा होगा कि अगर उसके पास जिन व इन्स मेहमान हों तब भी उसके पास अपने मेहमानों के लिए कुर्सियां, फर्श, तकिए और बिस्तर होंगे और मेहमानों को खिलाने के लिए काफ़ी सामाने ख़ोराक होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जन्नत में बाज़ दरख़्तों के तने सोने के, बाज़ चांदी के और बाज़ याकूत और जबरजद के होंगे उनकी शाखें भी ऐसी ही होंगी और उनके पत्ते दुनयवी ज़ेवरो से खूबसूरत होंगे उनके फल मक्खन से ज़्यादा नर्म और शहद से ज़्यादा शीरीं होंगे। हर दरख़्त की लम्बाई पांच सौ साल और मोटाई सत्तर साल की मुसाफ़त के बक़्द होगी देखने वाले की नज़र दरख़्त के आखिरी पत्ते और फल तक पहुंचेगी। हर दरख़्त के फल सत्तर हज़ार किस्म के होंगे और कोई फल हम रंग नहीं होगा जन्नती को जिस किस्म के फल की ख़्वाहिश होगी वही फल रखने वाली शाख़ पांच सौ पचास या उससे कम मुसाफ़त की राह से नीचे झुक जायेगी उस फल का तालिब अगर उस फल को हाथ तोड़ना चाहेगा तो उसको तोड़ लेगा और अगर मुंह में लेना चाहेगा तो अपना मुंह खोल देगा वह फल उसके मुंह में आ जायेगा, जब फल को तोड़ेगा फौरन उसके एवज़ एक दूसरा खूबसूरत और उम्दा फल अल्लाह तआला पैदा कर देगा जब जन्नती तोड़ने और खाने की ख़्वाहिश पूरी कर लेगा तो शाख़ (उचक कर) फिर वहीं ऊपर लौट जायेगी जहां से झुकी थी। जन्नत में बाज़ दरख़्त समरदार नहीं होंगे बल्कि उनमें सिर्फ़ शगूफ़ों के गिलाफ़ और आसतीनें होंगी जिनमें हरीर, खूबसूरत नफीस रेशम बारीक रेशमी कपड़े होंगे और बाज़ आस्तीनों में मुश्क और काफूर होंगे। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि



वसल्लम फरमाते थे कि अहले जन्नत हर जुमा को अपने रब के दीदार से मुशरफ़ होंगे नीज़ इरशाद फरमाया कि अगर बहिश्त का एक ताज आसमान के नीचे लटका दिया जाये तो उसकी ताबानी सूरज की चमक दमक को मांद कर दे।

हुजूर फरमाते थे कि जन्नत (बहुत से) महल हैं हर महल में चार नहरें रवां हैं एक आबे शीरी की दूसरी दूध की, तीसरी शराब तहूर की और चौथी शहद मुस्फ़ा की। अगर जन्नती किसी नहर का पानी पीयेगा तो आखिर में उस पानी से मुश्क की खुशबू आयेगी। जन्नती उन चश्मों का पानी मिलाये बगैर नहरों का पानी पियेंगे। एक चश्मा का नाम जन्नबील है, दूसरे का नाम तस्नीम, तीसरे का काफूर। चश्मा काफूर से सिर्फ़ मुकर्रबीन हज़रात सैराब होंगे। रसूलुल्लाह फरमाते थे कि अगर अल्लाह तआला यह फैसला सादिर न फरमा चुका होता कि अहले जन्नत शराबे तहूर के प्याले लेने में एक दूसरे पर पेश कदमी करेंगे तो अहले जन्नत उन कासों को कभी अपने मुंह से न हटाते। हुजूर फरमाते थे कि अहले जन्नत एक लाख साल या उससे भी ज्यादा दूर की मुसाफ़त से बाहम मुलाकात के लिए जायेंगे और जब वह मुलाकात के बाद अपने अपने महल्लात को वापस जायेंगे तो सीधे अपने अपने ठिकानों पर (राह भटके और भूले बगैर) वापस आ जायेंगे।

### वापसी पर अल्लाह की तरफ़ से तोहफ़े

अहले जन्नत जब दीदारे इलाही से मुशरफ़ होकर वापसी का कसद करेंगे तो अल्लाह तआला हर शख्स को, एक सब्ज़ रंग का अनार मरहमत फरमायेगा जिसमें सत्तर दाने होंगे और हर दाने में सौ रंग होंगे और कोई दाना हम रंग नहीं होगा। बास्गाहे इलाही से मराजेअत के वक़्त वह जन्नत के बाज़ारों से गुज़रेंगे उन बाज़ारों में खरीद व फरोख़्त नहीं होगी बल्कि वहां ज़ेवर, कपड़ों के जोड़े, बारीक और मोटा रेशमी कपड़ा, खूबसूरत मुनक्क़श मोती और याकूत और मुरस्सअ ताज लटके होंगे वहां से जन्नती इतनी चीज़ें लेंगी जितनी वह ले जाना चाहेंगे मगर उन बाज़ारों में कुछ कभी नहीं आयेगी वहां हसीन तरीन तस्वीरें भी होंगी। ऐसी ही जैसी आदमियों की तस्वीरें होती हैं उन तस्वीरों के सीने पर तहरीर होगा कि जो शख्स मुझ जैसा हसीन होना पसन्द करेगा अल्लाह तआला उसको मुझ जैसा बना देगा पस जो उन तस्वीरों जैसा हसीन होना पसन्द करेगा उसके चेहरे का हुस्न उस तस्वीर की तरह हसीन हो जायेगा। जब यह लोग लौट कर अपने अपने महल्लात में आयेंगे तो ग़िलमान सफ़ बांधे खड़े होंगे और उन वापस आने वालों को खुश आमदीद मरहबा कहते हुए आगे बढ़ेंगे। हर एक अपने बराबर वालों को उन जन्नतियों की वापसी का बशारत देगा इस तरह सिलसिला ब सिलसिला यह खुश ख़बरी उसकी बीवी (हूर) तक पहुंच जायेगी, बीवी फरते इनबेसात से दरवाज़े तक आयेगी और उसको सलाम व मरहबा कहेगी दोनों गले मिलेंगे और मुआनका करते हुए अन्दर आ जायेंगे। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते थे कि जन्नती की बीवी इतनी हसीन व जमील होगी कि अगर उसे कोई फरिश्ता, नबी या रसूल देख ले तो उसके हुस्न पर फरेफ़ता हो जाए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अहले जन्नत खाने के बाद जो आखिरी शरबत पियेंगे उसका नाम तहूरो धेहाक़ होगा (पाक लबरेज) होगा उसका एक घूंट पीने के बाद जो कुछ खाया पिया है सब हज़्म हो जायेगा। उसकी डकार मुश्क की खुशबू की तरह होगी अहले जन्नत के पेट में कभी कोई तकलीफ़ नहीं होगी शराबे तहूर पीने के बाद उन्हें फिर



खाने की खाहिश होगी और हमेशा उनका यही तरीका रहेगा।

## जन्नत की किस्में

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि अहले जन्नत की सवारियां सफ़ेद याकूत से बनाई गई हैं आप फ़रमाते थे जन्नतें तीन किस्म की हैं एक का नाम अलजन्ना दूसरी का अदन और तीसरी का दारुरसलाम है। जन्नत अदन, अलजन्ना से सत्तर करोड़ गुना बड़ी है, अलजन्ना के महल बाहर से सोने के और अन्दर से ज़बरजद के होंगे। उसके बुर्ज सुर्ख याकूत के और उसके झरोके (खिड़कियां) मोतियों के लड़ियों के होंगे, जन्नती अपनी बीवी से सात सौ साल की मुदत के बक़्द्र लुत्फ़ अंदोज़ होगा फिर उसकी दूसरी बीवी जो पहली बीवी से ज़्यादा हसीन व जमील होगी दूसरे महल से उसको पुकारेगी कि ऐ दोस्त! अब वक़्त आ गया है कि मैं तुम से दौलते विसाल हासिल करूं ! वह पूछेगा कि तुम कौन हो? वह जवाब देगी कि मैं वह हूं जिसके बारे में अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया था।

कोई नहीं जानता कि उनकी आंखों की टंडक के लिए क्या क्या छुपा कर रखा गया है। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे जन्नत में एक जन्नत दरख़्त उसका साया इतना है कि सवार सात सौ साल तक चले तब भी उसका साया ख़त्म न हो उसके नीचे नहरे रवां है उसकी हर शाख़ पर शहर तामीर हैं हर शहर की लम्बाई दस हजार मील है। एक शहर से दूसरा शहर मशरिक व मगरिब के फ़ासला पर है उनके महलों से सलसबील के चश्मे शहरों की तरफ़ जारी हैं उस दरख़्त का पत्ता इतना बड़ा है कि उसके साया में पूरी एक उम्मत आ जाये। हुजूर ने इरशाद फ़रमाया कि जब जन्नती मर्द अपने बीवी के पास जायेगा तो वह कहेगा कि कसम है उस ज़ात की जिसने मुझे आप की मुलाकात की इज़्ज़त बख़्शी कि जन्नत की कोई चीज़ मुझे आप से ज़्यादा महबूब नहीं है जन्नती भी ऐसा ही जवाब देगा हुजूर फ़रमाते थे कि जन्नत में ऐसी ऐसी चीज़ें मौजूद हैं जिनकी तारीफ़ बयान करने वाले बयान नहीं कर सकते न सारी दुनियां उनका तसब्बुर कर सकती है न किसी सुनने वाले कानों ने उनको सुना और न मख़लूक की आंखों ने उनको देखा है।

## जन्नते अदन

आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ऐसे दो शख्सों को जो महज़ अल्लाह के लिए आपस में मोहब्बत रखते थे अदन की जन्नत में ऐसे सुर्ख़ याकूत के मीनार पर उतारेगा जिस का अर्ज सत्तर हजार साल की मुसाफ़त के बक़्द्र है उस मीनार पर सत्तर हजार कमरे होंगे और हर कमरा एक महल की सूरत में होगा महज़ अल्लाह के लिए मोहब्बत करने वाले ऊपर से तमाम अहले जन्नत को देखेंगे उन अहले मीनार की पेशानियों पर लिखा होगा हम लेवजहिल्लाह मोहब्बत करने वाले हैं, जब उनमें से कोई अपने महल से अहले जन्नत को देखेगा तो उसके चेहरे के नूर से अहले बहिश्त के महल्लात इस तरह मामूर हो जायेंगे जिस तरह खुरशीद के नूर से अहले ज़मीन के घर भर जाते हैं उस वक़्त एक जन्नती दूसरे जन्नती से कहेगा यह रौशनी उन चेहरों की है जिन्होंने महज़ अल्लाह के लिए आपस में दोस्ती की है यह कहते ही उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह दरख़शां और फ़रोज़ां हो जायेगा।



हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते थे कि जन्नती अपने हुस्न में जन्नत के खादिमों पर ऐसी फज़ीलत व बरतरी वाला होगा जैसे सितारों पर माहे कामिल को फज़ीलत हासिल है आपने फरमाया कि जब अहले जन्नत खाने से फारिग हो जायेंगे तो जन्नत की बीवियां कैफ़ आफरीं लै के साथ गायेंगी और कहेंगी कि हम हमेशा रहने वाली हैं हम को कभी मौत नहीं आयेगी हम अमन व अमान में रहने वाली हैं हम को कभी खौफ़ व दामनगीर नहीं होगा हम खुश व खुरम रहने वाली हैं हम कभी नाखुश नहीं हूंगी हम हमेशा जवान रहने वाली हैं हमको बुढ़ापा ताहक़ न होगा हम हमेशा लिबास में मलबूस रहने वाली हैं कभी बरहना नहीं होंगी हम नेक और हसीन तरीन औरतें इज़्ज़त वाली कौम की बीवियां हैं।

## जन्नत के परिन्दे

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते थे कि जन्नत के हर परिन्दे के सत्तर हजार पर है उनका हर पर दूसरे से अलग रंग का है हर परिन्दा की जसामत तूल व अर्ज में एक एक मील होगी अगर जन्नती उन परिन्दों में से किसी के खाने का ख्वास्तगार होगा तो उस परिन्दे को एक ज़र्फ़ में लाकर रख दिया जायेगा उस वक्त वह अपने पर फड़ फड़ायेगा जिससे सत्तर रंग के खाने गिरेंगे उनमें कुछ कच्चा गोश्त होगा और कुछ भुना हुआ, हर गोश्त का रंग अलग अलग होगा उस का मज़ा "मन" की मानिन्द होगा यह गोश्त मन के मजे के तरन्जीन से ज़्यादा लज़ीज़ और मक्खन से ज़्यादा नर्म व लतीफ़, छाछ से ज़्यादा सफ़ेद होंगे। जब जन्नती खाने से फारिग हो जायेगा तो यह परिन्दा फड़फड़ा कर उड़ जायेगा और उसका एक पर भी कम न होने पायेगा। जन्नतियों के परिन्दे और उनके घोड़े जन्नत के बाग़ों में और उन जन्नतियों के महलों के आस पास चरागाहों में चरेंगे।

## मज़ीद इनामात

हुजूर फरमाते थे कि अहले जन्नत को अल्लाह तआला सोने की अंगूठियां मरहमत फरमायेगा (जिन्हें वह पहनेंगे) यह बहिश्त की अंगुशतरियां होंगी इसके बाद मज़ीद याकूत और लूलू की अंगुशतरियां होंगी यह अंगुशतरियां दारुस्सलाम में दीदारे इलाही के वक्त अता होगी अहले जन्नत जब अपने रब की जियारत से मुशररफ़ होंगे तो अल्लाह तआला की तरफ़ से अता फरमूदा मेहमानी के खानों को खायेंगे, मशरूबात पियेंगे और उनकी लज़्ज़तों से महजूज़ होंगे उस वक्त रब्बुल इज़्ज़त फरमायेगा कि ऐ दाऊद! अब खुश अलहानी से मेरे अज़मत के तराने गाओ हज़रत दाऊद हुक्म की तामील फरमायेंगे आप की खुश अलहानी से जन्नत की हर चीज़ पर एक सकूत का आलम तारी हो जायेगा और हमा तन गोश हो जायेगी फिर रब्बुल इज़्ज़त अहले जन्नत को लिबास और ज़ेवरात अता फरमायेगा और यह लोग अपने अपने मकानों में वापस आ जायेंगे।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि हर जन्नती के लिए एक दरख्त मख्सूस होगा जिसका नाम तूबा होगा जब उसको आला लिबास पहनने की ख्वाहिश होगी तो वह तूबा के पास जायेगा दरख्त अपने शगूफ़ों के गिलाफ़ खोल देगा वह छः रंग के होंगे हर गिलाफ़ में सत्तर रंग के कपड़े होंगे हर एक रंग और नक्श दूसरे के नक्श और रंग से जुदागाना होगा, जन्नती जो लिबास चाहेगा मुनतख़ब कर लेगा, मुनतख़ब लिबास का टुकड़ा लाला के फूल की पंखुड़ियों से ज़्यादा नर्म व नाजुक और लतीफ़ होगा। हुजूर फरमाते थे कि जन्नत में बीवीयों के



गलो में तहरीर होगा तुम मेरे हबीब हो और मैं तुम्हारी महबूबा हूँ तुम्हारी तरफ से मेरे दिल में न कदूरत होगी और न शिकायत। जन्नती जब अपने बीवी के सीने की तरफ नज़र डालेगा तो (जिस्म इस कदर शफ़ाफ़ होगा कि) गोश्त और हड्डियों के अक़ब से जिगर की सियाही नज़र आयेगी। औरत का जिगर मर्द के लिए आईना होगा और मर्द का जिगर बीवी के लिए आईना होगा। जिगर की सियाही से उस बीवी के हुस्न में कोई नक़्श पैदा नहीं होगा जिस तरह याकूत में धागा पिराने से कोई नक़्श पैदा नहीं होता उनकी सफ़ेद मोती की तरह और चमक दमक याकूत की तरह होगी अल्लाह तआला का इरशाद है: गोया वह याकूत और मरजान की तरह हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि जन्नती लोग मोती और याकूत की ऊंटनियों और खच्चरों पर सवार होंगे उनके कदम मुन्तहाये नज़र पर पड़ेंगे जो चौपायों की जसामत सत्तर मील की होगी उनकी मुहारें और लगामें मोती और ज़बरजद की होंगी।

## फ़वक़ा हुमुल्लाहो शर्रा ज़ालेकल यौमे

### व लक्क़ा हुम नज़रतौ व सुरूरा

#### जहन्नम की हौलनाकियां

यानी अल्लाह तआला ने अहले जन्नत को उस दिन की बुराई से बचा लिया और उनको ताज़गी और मुसरत से हमकिनार किया, मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने जन्नतियों को कयामत के दिन हिसाब की सख्ती और दोज़ख की शिद्दत और तकलीफ़ से महफूज़ रखा था।

#### दोज़ख़

कयामत के मैदान में उन्नीस फ़रिश्ते ऐसे होंगे जिनमें से हर एक के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते बतौर मददगार मौजूद होंगे ताकि रब्बुल इज्ज़त के हुक्म की तामील करें। यह फ़रिश्ते दोज़ख़ को खींच कर लायेंगे यह बड़े ही भयानक और बदखू होंगे बहुत ही सख्त मिज़ाज़ होंगे, उनके दांत बाहर को निकले होंगे आंखें शोला की तरह और उनके नथनों से धुआं निकलता होगा वह कभी दोज़ख़ के दायें बायें और कभी उसके पीछे चलेंगे हर एक के हाथ में लोहे का एक गुर्ज होगा उस गुर्ज से वह दोज़ख़ को हांकेंगे दोज़ख़ की फुंकारे, दहाड़े, तारीकी, कड़क और शिद्दते ग़ज़ब के बाइस शोले उठते होंगे। फ़रिश्ते दोज़ख़ को मखलूक की कयामगाह और बहिश्त के दमियान लाकर खड़ा कर देंगे। दोज़ख़ मुंह उठाकर देखेगा सामने मखलूक खड़ी होगी, दोज़ख़ दौड़ करके आगे बढ़कर उनको खाना चाहेगा मगर मुवक्किल अपनी जंजीरों से उसको रोक लेंगे (अगर उसको न जाये तो वह हर मोमिन व काफ़िर को निगल ले) जब उसको रोक दिया जायेगा तो उसमें (गुस्सा) एक ज़बरदस्त जोश पैदा होगा। यह मालूम होगा कि शिद्दते ग़ज़ब से फट पड़ेगा उस वक़्त वह इस ज़ोर की सांस खींचेगा कि उसके दांत बजने की आवाज़ सारी मखलूक को सुनाई देगी उस हौलनाक आवाज़ से लोगों के दिल दहल जायेंगे सीने से बाहर निकलने लगेंगे, आंखे पथरा जायेंगी, दिल सीनों से उछल कर हल्क में आ जायेंगे उस वक़्त मैदाने हश्र में हर मुक़र्रिब फ़रिश्ता और नबीए मुरसल दो ज़ानू बैठ जायेगा। दोज़ख़ फिर सांस को बाहर



फेंकेगा तो हर शख्स की आंखों में जितने कतरे हैं वह सबके सब बाहर निकल पड़ेंगे (हर एक की आंख अशक बार हो जायेंगी) फिर दोजख तीसरी सांस लेगा तो अगर किसी जिन्न व इंसान के आमाल बहत्तर नबियों के बराबर भी कर दिए जायें तब भी वह ख्याल करेगा कि वह कहीं दोजख की गिजा न बन जाये, जब वह फिर सांस लेगा तो जबानें गुंग हो जायेंगी। हजरत जिवील, मीकाईल और हजरत खलीलुल्लाह अलैहिस्लाम अर्शे इलाही से चिमट जायेंगे और उस वक्त हर शख्स नफ्सी नफ्सी पुकारता होगा और अपनी जान की सलामती के सिवा कोई और दुआ न मांग सकेगा फिर दोजख सितारों जितने शोले फेंकेगा यह शरारे मखलूक के सरो से गुजरेंगे। यही वह शर है जिससे उन मोमिनों को अल्लाह तआला महफूज रखेगा जो अपनी नजरो को पूरा करते और अल्लाह के अजाब से डरते थे।

बेशक व शुबहा अल्लाह तआला अपने उस अजाब से तमाम अहले तौहीद व ईमान और अहले सुन्नत व जमाअत को महफूज रखेगा और उस दिन अपनी रहमत से पेश आयेगा और उनका हिसाब आसान करके उन्हें जन्नत में दाखिल करेगा और फिर वहां हमेशा हमेशा रखेगा।

काफ़िरो, मुशरिकों और बुत परस्तों पर उसकी बदी और शर को ज़्यादा फरमायेगा उनके लिए खौफ व अजाब को भी दूना कर देगा और फिर उन्हें दोजख में हमेशा हमेशा के लिए डाल देगा। (यह थी तसरीह व तफ़सीर फवा काहा मुल्लाहो शर्मा जालिकल यौम की।)

इसके बाद इरशादे बारी है व लक्का हुम नज़रतों व सुरुरा (और उनको ताज़गी, फ़रहत और मसरत से हम किनार करेगा इसकी सूरत यह होगी कि हर मोमिन बरोजे कयामत जब अपनी कब्र से बाहर आयेगा और अपने सामने देखेगा तो उसको एक ऐसा शख्स (आदमी) नज़र आयेगा जिसका चेहरा चांद की तरह चमकता होगा और वह मुस्कराता और हंसता होगा उसके कपड़े सफ़ेद होंगे और सर पर ताज होगा वह मोमिन के करीब आकर कहेगा ऐ अल्लाह के दोस्त (वली) आप के लिए सलामती है, मोमिन जवाब में कहेगा कि आप पर भी सलामती हो, ऐ बन्दए खुदा आप कौन हैं? क्या फरिश्ता हैं? वह कहेगा नहीं, मोमिन बंदा कहेगा कि क्या आप पैगम्बर हैं? वह जवाब नफ़ी में देगा। मोमिन कहेगा कि क्या आप मुक़रबीने इलाही से हैं? वह कहेगा नहीं, तब बन्दए मोमिन कहेगा खुदा की कसम फिर आप क्या हैं वह कहेगा मैं आप का अमले सालेह हूं मैं आप के लिए दोजख से नजात और बहिश्त के इनाम की खुशख़बरी ले कर आया हूं मोमिन कहेगा कि क्या आप इन दोनों बातों से आगाह है जो मुझे खुशख़बरी और बशारत दे रहे हैं वह कहेगा कि जी हां मैं आगाह और वाकिफ़ हूं। बन्दए मोमिन कहेगा फिर आप मुझसे क्या चाहते हैं तो वह जवाब देगा आप मुझ पर सवार हो जायें। मोमिन कहेगा कि आप जैसे (नूरानी और बुर्जुग फ़र्द) पर सवार होना मैं मुनासिब नहीं समझता, वह जवाब देगा कि इस में क्या हरज है मैं भी तो दुनिया में मुद्दतो आप के ऊपर सवार रहा हूं। अब मैं आपको खुदा का वास्ता देकर दरखास्त करता हूं कि आप मेरे ऊपर सवार हो जायें, खुदा का वास्ता पाकर मोमिन उसके ऊपर सवार हो जायेगा उस वक्त वह कहेगा कि आप डरिये नहीं मैं आप को जन्नत की तरफ़ ले जाऊंगा मोमिन यह सुनकर इस क़दर खुश होगा कि उस खुशी का असर चेहरे से नुमाया होगा, चेहरा जगमगाने लगेगा और दिल में कैफ़ व सुरूर पैदा होगा व लक्का हुम नज़रतों व सुरुरा का यही मतलब है।



## काफिरों की बद अंजामी

काफिर जब कब्र से उठेगा तो वह अपने सामने एक बद हैबत शख्स को देखेगा जिसकी आंखें नीली और रंग उस काफिर से भी ज्यादा सियाह होगा जैसे तारीक रात में कब्र की तारीकी। उसका लिबास भी सियाह होगा उसकी दाढ़ें ज़मीन से लगी होंगी (बड़े बड़े दांत होंगे) गरज की तरह गरजता हुआ आगे आयेगा उससे मुरदार से भी बदतर सड़ांड आती होगी। काफिर उसे देखकर कहेगा कि तू कौन है और उससे मुंह फेरना चाहेगा तो वह कहेगा कि ऐ उदवुल्लाह! आ मेरी तरफ आ! आज मैं तेरे लिए हूँ और तू मेरे लिए है काफिर कहेगा। अरे तू ग़ारत हो। क्या तू कोई शैतान है, वह कहेगा नहीं, खुदा की कसम मैं तेरा अमले बद हूँ काफिर कहेगा मुझ से क्या चाहता है वह कहेगा कि मैं तुझ पर सवार होना चाहता हूँ, काफिर कहेगा मैं तुझे अल्लाह की कसम देता हूँ मुझे छोड़ दे और मुझे सारी मखलूक के सामने रूसवा न करो। वह कहेगा खुदा की कसम इसके बग़ैर कोई चारा ही नहीं, मुद्दतों तक (दुनिया में) तू मुझ पर सवार रहा है आज मुझे तुझ पर सवार होना है, यह कहकर वह काफिर पर सवार हो जायेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि: काफिर अपनी पीठों पर अपने गुनाहों का बोझ लादेंगे, आगाह रहो वह क्या बुरा बोझ उठावेंगे, का यही मतलब है। इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने दोस्तों का जिक्र किया है कि उन मोमिन बन्दों के बशारत के बाद बलाऊं पर सब्र करने और अवामिर को बजा लाने और ममनूआत से बचने और तकदीर पर रज़ामन्द रहने की वजह से उनको जन्नत और रेशमी लिबास अता किया जायेगा, वह जन्नत में रहकर लुत्फ़ अंदोज़ होंगे और (आला खिलअतें पहनेंगे)।

## अहले जन्नत पर मज़ीद इकराम

वह जन्नत में परदे वाली मसहरियों (चीरखट) पर तकिया लगाये बैठे होंगे जहां वह न सूरज की गर्मी को देखेंगे और न ठिठुराने वाली सर्दी को। इसलिए कि जन्नत में न गर्मी का मौसम होगा न सर्दी का। उनपर जन्नत के दरख्तों के साये होंगे और मेवे उनके करीब लाये जायेंगे, अहले जन्नत, जन्नत के फल अगर चाहेंगे तो खड़े होकर, चाहेंगे तो बैठकर, जी चाहेगा तो लेट कर खायेंगे (उनका जिस तरह जी चाहेगा वह फल खायेंगे) उनपर चांदी के बरतनों और कूजों का दौर चलेगा, यह कूजे गोल होंगे पकड़ने के लिए उनमें कुंडे नहीं होंगे वह कूजे शीशे के होंगे लेकिन जन्नत में मीना (शीशा) चांदी का होगा। वह कूजे ऐसे बरतनों के अन्दाज़ पर बने होंगे कि खुदाम के हाथों में आ जायें और सैराब करने की गुंजाईश उनमें हो (यानी जब जन्नती ऐसे कूजे से शराबे तहूर पियें तो सैराब हो जाये) और बरतन में कुछ बाकी न रहे, गोया अंदाज़े से मुराद है बरतन का खादिम के हाथ में गिरफ्त और सैराबी के मुताबिक होना व युसकू न फीहा कासन, कास से मुराद शराब है जो शराब बरतन में हो वह ख़मर नहीं है बल्कि कास है और जो बरतन में नहीं है वह ख़मर है, कास नहीं है। यानी और प्याले से शराब पिलायेंगे जिसमें चश्मा जंजबीन का पानी आमेखता होगा, हक़ तआला ने इरशाद फ़रमाया: वह चश्मा जिसका नाम सलसबील है वह जन्नते अदन से निकल कर हर जन्नत से गुज़र कर फिर जन्नते अदन की तरफ़ लौट आयेगा। इस तरह तमाम जन्नतियों में उसका बहाव होगा। विलदान से मुराद



गिलमान हैं जो कभी बूढ़े नहीं होंगे, नौ खेज ही रहेंगे (उन पर हमेशा जवान रहने वाले गिलमान गश्त करते हैं यानी खिदमत के लिए हाज़िर रहते हैं) वह गिलमान ऐसे हसीन हैं कि देखने वालों को वह बिखरे हुए मोती नज़र आयेंगे (उन बिखरे हुए मोतियों की तादाद सिवाये अल्लाह के कोई नहीं जानता) तुम जन्नत में जाकर देखोगे तो वह तुमको एक अजीम नेमत और एक बड़ा मुल्क दिखायेगा क्योंकि हर जन्नती को एक क़स्र मिलेगा उस क़स्र में सत्तर महल होंगे और फिर हर महल में सत्तर घर होंगे और हर घर एक मजूफ़ मोती का होगा, हर मोती की बलंदी, चौड़ाई और लम्बाई एक फ़रसख होगी। मोती के हर मकान में चार हज़ार सोने के दरवाज़े हैं हर घर में याकूत और याकूत के कलमों से बना हुआ एक तख़्त है उस तख़्त के दायें बायें चार हज़ार सोने की कुर्सीयां होंगी जिनके पाये सुर्ख याकूत के होंगे, इस एक तख़्त पर सत्तर फ़र्श हैं हर एक जुदागाना रंग का होगा जन्नती उस तख़्त पर अपनी बाईं जानिब तकिया लगाये बैठे होंगे सबके अन्दर बदन से लगा हुआ सफ़ेद रेशम का लिबास होगा, पेशानी पर याकूत ज़मुरद और रंगा रंग जवाहिर की जीगा पट्टी होगी हर जवाहिर का रंग जुदा होगा सर पर सोने का ताज होगा, उस ताज के सत्तर गोशे होंगे हर एक गोशा पर एक मोती होगा जिसकी कीमत मशरिक व मगरिब के तमाम माल व मताअ के बराबर होगी हाथों में कंगन होंगे हाथों और पैरों की उंगलियों में सोने की अंगूठियां होंगी उन अंगूठियों में रंग बिरंग के नगीने होंगे, उस जन्नती के पास दस हज़ार गुलाम होंगे, यह न कभी बड़े होंगे न कभी बूढ़े (हमेशा अमरद रहेंगे) सामने याकूत सुर्ख का एक ख़ान रखा जायेगा जिसकी लम्बाई चौड़ाई एक मील होगी। उस ख़ान में सोने चांदी के सत्तर हज़ार बरतन होंगे और हर बरतन में सब्ज़ रंग का खाना होगा। जन्नती अगर कोई लुक़्मा किसी खाने का उठायेगा और उतनी देर में किसी दूसरे रंग के खाने की ख़्वाहिश पैदा होगी तो वह लुक़्मा फौरन उसी खाने के जायके के मुताबिक़ हो जायेगा जन्नती के सामने गिलमान खड़े होंगे उनके हाथों में चांदी के कूज़े और बरतन होंगे, उनके पास शरबत और पानी भी होगा, जन्नती चालीस आदमियों के खाने के बराबर खाना तमाम खानों में से खायेगा। खाने से फ़राग़त के बाद गिलमान उसको उसकी पसन्द का शरबत पिलायेंगे जब वह डकार लेगा और जब पानी पी कर उसको पसीना आयेगा तो अल्लाह तआला खाने की ख़्वाहिश के हज़ार दरवाज़े उसपर खोल देगा (यानी तमाम खाना हज़्म हो जायेगा और फिर शिदत के साथ भूक लगेगी) जो परिन्दे जन्नती के हुज़ूर में आयेंगे वह बख़्ती ऊंटों के बराबर होंगे यह परिन्दे जन्नती के सामने आकर खड़े हो जायेंगे हर एक परिन्दा दुनिया के हर गाने से ज़्यादा सुरीली आवाज़ में अपनी तारीफ़ बयान करेगा और कहेगा कि ऐ अल्लाह के दोस्त! आप मुझे खा लें! मैं मुद्दतों तक जन्नत के बागों में चुगता रहा हूं और मैंने फ़लां फ़लां चश्मे का पानी पिया है, यह तमाम परिन्दे बड़ी खुश अलहानी के साथ गायेंगे उस वक़्त जन्नती उनकी तरफ़ नज़र उठा कर देखेगा तो वह सबसे ज़्यादा खुश अलहान परिन्दा को पसन्द करेगा। अल्लाह ही जानता है कि यह ख़्वाहिश कितनी देर उसके दिल में रहेगी कि वह परिन्दा उसके ख़ान पर गिर जायेगा। उसका कुछ हिस्सा कदीद (नमकीन खुश्क किया हुआ गोश्त) बन जायेगा और बाज़ शवी यानी बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा शीरीं भुना हुआ गोश्त होगा जन्नती उसमें से कुछ खायेगा उसके सैर हो जाने के बाद वही परिन्दा पहला जैसा बनकर उसी दरवाज़े से निकल कर वापस चला जायेगा जिससे वह दाखिल हुआ था।

जन्नती मसहरी पर आराम फ़रमा होगा और उसकी बीवी सामने मौजूद होगी, जन्नती को



इन्तहाई सफाई के बाएस अपने चेहरे का अक्स बीवी के चेहरे में नज़र आयेगा जन्नती के दिल में कुर्बत (मजामेअत) की ख्वाहिश पैदा होगी तो उसकी तरफ नज़र उठा कर देखेगा लेकिन हया के बाएस उसको इस मकसद से अपने पास बुलाने से शर्मा जायेगा बीवी उसके इस मकसद को समझ जायेगी और वह खुद उसके करीब आ जायेगी और कहेगी आप पर कुर्बान जाऊँ! ज़रा मेरी तरफ तो देखिए आज आप मेरे लिए हैं और मैं आपके लिए। जन्नती उस वक्त उससे जिमाअ करेगा जिमाअ के वक्त उसमें सौ मर्दों की ताकत और चालीस मर्दों की ख्वाहिशें जमा होंगी। जिमाअ के वक्त उस बीवी को बाकरा पायेगा उसकी वजह से उसके दिल में मुहब्बत और बढ़ जायेगी और बराबर चालीस दिन तक उससे मजामेअत में मशगूल रहेगा। जिमाअ से फारिग होगा तो बीवी के मुंह से मुश्क की खुशबू आयेगी उस खुशबू के बाएस जन्नती के दिल में उसकी मोहब्बत और बढ़ जायेगी उस जन्नती के लिए ऐसी चार हजार आठ सौ बीवीयां होंगी हर बीवी के सत्तर खिदमतगार और लौंडियां होंगी।

हज़रत अली रज़िअल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि अगर एक खिदमतगार लौंडी को दुनिया में भेज दिया जाये तो तमाम दुनिया वाले उसके लिए कट मरेंगे और अगर एक हूर जमीन पर अपने गेसू दिखा दे तो उसके नूर से सूरज की रौशनी मांद हो जाये।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब जन्नती अपने तख्त पर बैठा होगा तो अल्लाह तआला एक फरिश्ता को उसके पास भेजेगा जिसके पास सत्तर जोड़े कपड़ों के होंगे हर जोड़े का रंग दूसरे से अलग होगा यह सब जोड़े फरिश्तों की दो उंगुलियों में दबे होंगे (उनकी नर्मी और नज़ाकत का यह आलम होगा) फरिश्ता दरवाज़े पर आकर दरबान से कहेगा कि मैं रब्बुल आलमीन का कासिद हूँ अल्लाह के वली से मेरे लिए इजाज़त तलब करो, दरबान कहेगा कि मैं उस अल्लाह के वली से खुद खिताब करने की ताकत नहीं रखता हूँ मैं अपने बराबर के दरबान से कह देता हूँ इस तरह सत्तर दरवाज़ों तक दरबान ब दरबान यह सिलसिला चलेगा तब उस जन्नती को इत्तेला मिलेगी कि अल्लाह का कासिद दाखिला की इजाज़त चाहता है। जन्नती उसको अन्दर आने की इजाज़त दे देगा फरिश्ता अन्दर आकर कहेगा अस्लामु अलैकुम या वलीअल्लाह! रब्बुल इज़्ज़त आपसे राजी है और आप को सलाम कहता है इस पयाम को सुनकर जन्नती इतना खुश होगा कि अगर अल्लाह ने उसको हयाते जाविदां अता न की होती तो उसको शादी मर्ग हो जाता: बन्दे के लिए सबसे बड़ी नेमत अल्लाह की तरफ से अल्लाह की रज़ा मन्दी, का यही मतलब है ऐ मोहम्मद आप जन्नत में देखेंगे कि जन्नती को अज़ीम नमतें हासिल होंगी और अड़ी हुकूमत देखेंगे, का यही मतलब है।

इसके बाद रब्बुल इज़्ज़त ने इरशाद फरमाया: उनका बालाई लिबास सब्ज़ रेशम का बारीक और दबीज़ होगा, बालाई लिबास की तखसीस इस वजह से है कि उनके बदन से चिमटे हुए कपड़े सफ़ेद रेशम के होंगे। उनको चांदी के कंगन पहनाये जायेंगे दूसरी जगह इरशाद है यानी यह कंगन जो उनको पहनाये जायेंगे सोने और मोतियों के होंगे। उनका रब उन्हें शराब तहूर पिलायेगा।

जन्नत के दरवाज़े पर एक दरख्त है उसकी जड़ से दो चश्मे निकलते हैं, बन्दा जब सिरात से गुज़र कर उन चश्मों की तरफ जायेगा तो एक में दाखिल होकर गुस्ल करेगा उसके पानी की खुशबू कस्तूरी से भी जायद खुशबूदार होगी उस चश्मा की गहराई सत्तर कद्वे आदम होगी और



अहले जन्नत के कद की दराजी साठ हाथ होगी। जन्नत का हर मर्द और हर औरत कद में बराबर होंगे और उसका सन व साल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सन व साल के मुताबिक होगा यानी 33 साल। गोया सबके सब जवान होंगे कमसिनी को बढ़ाकर 33 साल कर दिया जायेगा हर मर्द व औरत हज़रत यूसुफ़ बिन याकूब अलैहिस्सलाम के मानिन्द हसीन होगा, उस चश्मा से गुस्ल करने बाद जब दूसरे चश्मा से पानी पियेंगे तो उनके दिलों से कुदूरत हिज़्न व मलाल और हसद व नफ़रत दूर हो जायेगा उस चश्मा के पानी से अल्लाह तआला उनके दिल को अगराजे नफ़सानिया से पाक करके हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के दिल तरह कर देगा और उनकी ज़बान मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरह (अरबी) होगी। उसके बाद सब जन्नती चल कर जन्नत के दरवाजे पर पहुंचेंगे उनसे जन्नत के दरबान कहेंगे तुम राजी और खुश हो आप के मिजाज़ ठीक हैं, जन्नती कहेंगे हां! हम राजी और खुश हैं, उस वक्त दरबान कहेंगे कि आप हमेशा के लिए जन्नत के अन्दर आ जाइये। जन्नत के अन्दर दाखिल होने से पहले ही जन्नत के दरबान उनको बशारत दे देंगे और कि अब वह कभी जन्नत से नहीं निकलेंगे, सबसे अक्ल जब जन्नती अन्दर दाखिल होगा और आमाज़ लिखने वाले दो फ़रिश्ते करामन कातिबीन उसके साथ होंगे तो सामने से एक फ़रिश्ता आयेगा जिसके साथ सब्ज़ याकूत की एक ऊंटनी होगी जिसकी महार सुख़ याकूत की होगी कुजावह का अगला और पिछला हिस्सा मोती और याकूत का होगा, पालान के दोनों अतराफ़ सोने और चांदी के होंगे उस फ़रिश्ता के साथ सत्तर जोड़े होंगे, जन्नती उन जोड़ों को पहनेगा उसके सर पर ताज रखेगा जन्नती के आगे आगे सीप में छिपे हुए साफ़ व शफ़ाफ़ मोती की तरह दस हज़ार ग़िलमान होंगे उस वक्त फ़रिश्ता कहेगा, ऐ अल्लाह के वास्त इस ऊंटनी पर सवार हो जाइये यह आप की है और इस तरह आप के लिए और भी चीज़ें हैं, जन्नती उस ऊंटनी पर सवार हो जायेगा उस ऊंटनी के परिन्दे की तरह दो बाजू होंगे और कदम उसका मुतहाए नज़र पर पड़ेगा।

उसकी सवारी के आगे आगे दो फ़रिश्ते और दस हज़ार ग़िलामन होंगे (यह दोनों फ़रिश्ते वही दुनिया वाले करामत कातिबीन होंगे) इस तरह उसकी सवारी चलती हुई उसके महल्लात के पास पहुंचेगी (वह अपने महल्लात के पास पहुंच जायेगा) वह अपने महल्लात के पास पहुंचकर सवारी से उतर आयेगा, अल्लाह तआला का इरशाद है:

मैंने तुम्हारे इनाम का सिला जो कुछ इस सूरत में बयान किया है वही तुम्हारा सिला है बेशक तुम्हारी मसाई काबिले तारीफ़ थीं तो तुमको उसके एवज़ जन्नत अता फ़रमाई।



## बाब 13

# अय्यामे मुतबरका और फ़ज़ाइले शुहूर

मजलिसे अब्बल

## माहे रजब के फ़ज़ाइल

### चार बुजुर्ग महीने

अल्लाह तआला फ़रमाता है: अल्लाह के किताब में साल के महीनों की तादाद बारह है और जिस रोज़ से अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान को पैदा किया उसी रोज़ से चार महीनों को हुरमत वाला बनाया है।

इस आयत की शाने नुज़ूल यह है कि फ़तह मक्का से कब्बल मुसलमानों ने मदीना से मक्का का कस्द किया आपस में यह हज़रात कहने लगे कि हमें अंदेशा है कि कुफ़ारे मक्का कहीं हुरमत वाले महीने में हमसे अमादए जिदाल व किताल न हों उस वक़्त अल्लाह तआला ने आयते मज़कूरा नाज़िल फ़रमाई और बताया कि अल्लाह के नज़दीक महीनों की गिनती लौहे महफूज़ में जिस दिन आसमानों और ज़मीन को पैदा किया गया बारह महीने लिख दिए गये, उन बारह महीनों में चार महीने हुरमत वाले हैं यानी माहे रजब ज़ि कादा, ज़िल हिज्जा और मुहर्रम। रजब का महीना सबसे अलग है बाकी तीन महीने एक बाद दीगरे (मुसलसल है) यानी यह सीधा हिसाब है तो उन हुरमत वाले महीनों में तुम अपनी जानों पर जुल्म न करो, अल्लाह तआला ने मुमानिअत में इन चार महीनों को ख़ास फ़रमाया ताकि उन महीनों की अज़मत व हुरमत ज़ाहिर हो जाये। अगर्चे दूसरे महीनों में भी हमारे लिए जुल्म ममनू है लेकिन इन महीनों का बाकी महीनों से इमतियाज़ वाज़ेह हो जाये जैसा आयत: अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो ख़ास तौर पर दर्मियानी नमाज़ "अस्र" की। इस आयत में जिस दर्मियानी नमाज़ की तख़सीस फ़रमाई है वह अस्र की नमाज़ है अगर्चे हिफ़ाज़त व निगाह रखने का सब पर इतलाफ़ होता है लेकिन अस्र की नमाज़ की हिफ़ाज़त का हुक्म अलग बयान फ़रमाया ताकि हमें उसका ख़ास होना मालूम हो जाये इसी तरह इन चार महीनों में ख़ास तौर पर जुल्म की मुमानिअत फ़रमाई और फ़रमाया कि मुशरिकीने अरब में से किसी एक को भी इन हुरमत वाले महीनों में क़त्ल न करो मगर यह कि वह लड़ाई की इब्तिदा खुद करें।

हज़रत बायज़ीद ने फ़रमाया कि अल्लाह की इताअत को तर्क कर देना और अल्लाह की ना फ़रमानियां करना जुल्म है बाज़ लोगों का कौल है कि चीज़ को उसके महल के खिलाफ़ रख देना जुल्म है, पहले कौल से भी यही नतीजा निकलता है। इसके बाद अल्लाह तआला ने फ़रमाया अगर मुशरिक मिलकर तुम से माहे हराम में लड़ें तो तुम भी मिलकर तमाम कुफ़ार से इस माह में लड़ो और इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह की मदद परहेज़गारों के साथ है।



मुफ़स्सरीन हज़रात ने अदीनल कय्यम मानी में एखतिलाफ़ किया है मक़ातिल ने कहा दीने कय्यम दीने हक़ है और दीगर मुफ़स्सरीन ने कहा कि वह दीने सादिक़ है यानी दीन इस्लाम और बाज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि दीने कय्यम वह है जिसका अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हुक्म दिया है।

## लफ़्ज़ रजब की तहकीक़

रजब इस्मे मुशतक़ है और "तरजीब" से बना है, अहले अरब के नज़दीक़ तरजीब के मानी ताज़ीम के हैं, अहले अरब का एक मुहावरा है रजबतो हाज़ल शहर (मैंने इस महीने को अज़ीम जाना) जब किसी महीना को अज़ीम व बुजुर्ग़ बनाना मक़सूद होता है तो यह जुमला इस्तेमाल करते हैं हब्बाब बिन मंज़र निब जमूअ का भी यही कौल है वह कहते हैं कि जब आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विसाल हुआ उस वक़्त सहाबा कराम बनी साएदा के खेमे में जमा हुए और अमीर के तक़रूर में मुहाजरीन व अन्सार के दर्मियान एख़्तलाफ़ पैदा हुआ यह दोनों ग़रोह (अन्सार व मुहाजरीन) मुसिर थे कि एक अमीर हम में से हो और एक तुम में से हो। यह तारीख़ी वाक़ेआ है हब्बाब बिन मंज़र बिन जमूअ ने उस वक़्त ग़ज़बनाक हो कर तलवार नियाम से निकाल ली और कहा कि मैं अपने कबीला की छली (सुडौल तराशी हुई) लकड़ी हूँ और मैं इस कबीले की अज़ीम खजूर हूँ, मुद्दुआ यह कि मैं अपने कौम में अज़ीमुल मरतबत हूँ, उनमें मेरी बात मानी जाती और तसलीम की जाती है।

लफ़्ज़ अज़ीक़, अज़क़ की तस्गीर है अज़क़ उस खजूर के दरख़्त को कहते हैं जिसके खजूर के खोशे बड़े बड़े हों और अपने मालिक को ख़ूब खजूरें दे, खजूर का दरख़्त जब बड़े बड़े खोशों की कसरत से नीचे को झुक जाता है तो उसके टूट कर गिर पड़ने के डर से उसके नीचे लकड़ी के सुतून लगा दिए जाते हैं रोहबा, उन ही टेकियों को (सहारा) कहते हैं जो खजूर के दरख़्त के आस पास लगा दी जाती है। जुज़ैल दरख़्त का तना, मोटी कड़ी और खजूर का तना जिससे खारशी ऊंट अपने आप को रगड़ते थे। बाज़ का कौल है कि जज़ल एक लकड़ी होती है जो एक जगह गाड़ दी जाती है ताकि शुतूर बच्चे उससे खुद को खुजाएं, उनको पुश्ते खार का काम दें।

फ़रा ने कहा कि रजब की वजह तसमिया यह है कि इस महीने में अरब खजूर के खोशों को सहारों के ज़रिये रोकते थे और शाख़ों के साथ पत्तों को भी बांध देते थे ताकि हवा से टूट न जायें चुनांचे जो शख्स इस किस्म की नख़ल बन्दी या खोशा बन्दी करता था उस मौक़ा पर कहता कि मैंने खजूर के इर्द गिर्द सहारे खड़े कर दिए।

बाज़ लोगों का कौल है कि तरजीब के मानी हैं खजूर के दरख़्त के नीचे इर्द गिर्द कांटों की बाढ़ रख देना ताकि लोग ख़ोरमा न तोड़ सकें और ख़ोरमा महफूज़ रहें, यह बाढ़ तरजीब कहलाती है बाज़ उलमा का कहना है कि तरजीब के मानी हैं खजूर के दरख़्त को टेकियां लगा कर झुकने से रोक देना बाज़ लोगों का ख़्याल है कि रजब का लफ़्ज़ अरब के कौल रज्जबतुश शई से माखूज़ है यानी मैंने उसे डराया। बाज़ ने कहा कि तरजीब आमादा व तैयार करने के मानी में आता है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया माहे रजब में शाबान के लिए ख़ैर कसीर की तैयारी की जाती है। बाज़ लोगों का कौल है तरजीब के मानी बार बार ज़िक़रे खुदा करना और अल्लाह की अज़मत का इज़हार करना क्योंकि माहे रजब में फ़रिश्ते अल्लाह तआला



की तसबीह, तमजीद और तकदीस बार बार करते हैं इस लिए उसका यह नाम पड़ा। लफ्ज रजब को रजम, मीम के साथ भी कहा गया है इस सूरत में इसके मानी यह होंगे कि इस महीने में शयातीन को दूर किया जाता है ताकि मुसलमानों को इस महीने में अजीयत न दे।

रजब में तीन हर्फ है रा, जीम और बा । रा रहमतुल्लाह, जीम, जव्वादुल्लाह और बा, बरूल्लाह की है। इस माह में शुरू से अखीर तक अल्लाह तआला की जानिब से बन्दों के लिए तीन अतियात होते हैं बगैर अजाब के खुदा की रहमत, बगैर बुख्ल के बख्शिश और बगैर जफा के उसका एहसान।

## माहे रजब के दूसरे नाम

माहे रजब के और नाम भी हैं इसे रजब मुजर, मुनसिलून अस्सना, शहरुल्लाहिल असब्बो, शहरे मुतहर, शहरे साबिक, शहरूल फरद।

शहरे मुजर के सिलसिले में एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने एक खुतबए मुबारक में इरशाद फरमाया कि जमाना घूम कर उसी तरीके पर आ गया है जिस पर आसमान व जमीन की आफरीनश के वक्त था। साल बारह महीने का है जिसमें चार हुरमत वाले महीने हैं यके बाद दीगरे आते हैं। जीकअद, जील हिज्जा और मोहर्रम और एक अकेला है रजब मुजर जो जमादिउस्सानी और शाबान के दर्मियान आता है। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रजब के महीने को जमादिउस्सानी और शाबान के दर्मियान फरमाकर हकीकत में महीनों की तकदीम व ताखीर का अबताल फरमाया है। अहले अरब अय्यामे जाहिलियत में ऐसा किया करते थे। चुनांचे अल्लाह तआला का इरशाद है: बेशक नसई (महीनों को आगे पीछे करना) इसके सिवा नहीं कि वह कुफ्र में इजाफा है।

इसकी सूरत यह थी कि जमाना जाहिलियत में जब कुफ्रार मिना से वापसी का इरादा करते थे तो कबीला कनाना का एक शख्स जो कबीला का सरदार था और जिसका नाम नईम बिन सअलबा था, खड़े होकर ऐलान करता था कि मैं वह हूँ जिस की बात मानी जाती है और जिस पर कोई ऐब नहीं लगाया जा सकता और न उसका फैसला रद्द किया जा सकता है। लोग उसका यह दावा सुनकर कहते आप सच्च कहते हैं। आप हमारे लिए एक महीना पीछे कर दीजिए इस तरह उनकी ख्वाहिश यह होती थी कि मोहर्रम के महीने को हम से मोअख्खर कर दें और माहे सफर को माहे हराम करार देकर असल माहे मोहर्रमुलहराम में जंग व जिदल को हलाल बना दें (लौंद का ऐलान कर देने से एक महीना बाकी महीनों से पीछे हो जायेगा इस तरह बाकी तमाम महीने खुद ब खुद एक महीना पीछे आ जायेंगे) यह ताखीर वह इस लिए चाहते थे कि अरब जाहिलियत की मआश का मदार लूट और गारत गरी पर था तीन माह मुसलसल कत्ल व गारत गरी से बाज़ रहना उनके लिए दुश्वार और सख्त मुश्किल था (इस लिए वह चाहते थे कि मोहर्रम को माहे सफर करार दे दिया जाये और उनको लूट मार की खुली छुट्टी मिल जाये) उनकी इस दरख्वास्त पर नईम कनआनी ऐसा ऐलान कर देता था और फिर दूसरे साल इसी तरह उनको हुरमत वाले महीने में कत्ल व गारत की इजाजत मिल जाती थी—इन्साउन के मीनी यही हैं यानी ताखीर, देर इसी मानी में अहले अरब का यह मुहावरा है :नसा अल्लाहो फी अजलेही, अल्लाह तआला ने उसकी मौत में ताखीर कर दी।



गुनियतुतालिबीन  
 रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माहे रजब के दो वस्फ़ बयान किये हैं और इसको दो सिफ़तों से मुकय्यद फ़रमाया है अव्वल तो रजब मुज़र फ़रमाया चूँकि क़बाइल मुज़रा माहे रजब की बहुत ज़्यादा ताज़ीम व तकरीम करते थे। दूसरी सिफ़त यह बयान फ़रमाई कि इसे जमादीउस्सानी व शाबान के दर्मियान मुकय्यद फ़रमाया (ताकि तकदीम व ताखीर का अंदेशा रहे) ताकि माहे मोहर्रम की हुर्मत को माहे सफ़र से न बदल दिया जाए। इसी लिये हुज़ूर ने खुसूसीयत के साथ रजब मुज़र फ़रमाया और जमादी व शाबान के दर्मियान मुकय्यद फ़रमा कर इसकी हुर्मत को दवामी और पुख़्ता फ़रमाया दिया। (ताकि इसको लौंद का महीना न बनाया जा सके)।

बाज़ ने इसको रजब मुज़र कहने की वजह यह बताई है कि बाज़ काफ़िरों ने इस महीने में किसी क़बीला के लिये बददुआ की थी। अल्लाह तआला ने उनकी बददुआ से उस क़बीले को तबाह कर दिया था। कहते हैं कि इस महीने में ज़ालिमों और सितमगारों के हक़ में बददुआ क़बूल हो जाती है इसी लिये अरब जाहिलियत को जब बददुआ करना होती तो इस महीना का इंतज़ार करते और जब यह महीना आ जाता तो बददुआ करते और उनकी बददुआ करते और उनकी बददुआ हमेशा कामयाब और मोअस्सिर होती थी।

माहे रजब को "मुन्सिलूल अस्सन्ना" यानी नेज़ों से भालों को निकाल देने वाला। इसकी वजह तसमीया यह है कि अहले अरब (अरब जाहिलियत) इस माह में इसकी इज़्ज़त व हुर्मत के पेशे नज़र नेज़ों से उनकी भालों को अलग कर देते और तलवारों और नेज़ों को नियामों और तरकशों में डाल देते थे।

## इश्तिकाक़ की मिसालें

मैंने तीर में फ़ल या बोरी लगाई, मैंने तीर से उसकी भाल अलग की। पस मुंसिल इस्मे फ़ाएल है, बाबे इफ़आल से।

इस माह को शहरुल्लाहुल असम (अल्लाह का ख़ामोश महीना) भी कहते हैं। वजह तसमीया के बारे में मरवी है कि जब रजब का चाँद दिखाई दिया तो जुमा के दिन हज़रत उसमान ने मेम्बर पर तशरीफ़ लाकर खुतबा दिया और फ़रमाया! लोगो! यह सुनो! अल्लाह का यह असम (बहरा) महीना है यह ज़कात देने का महीना है जिस पर क़र्ज़ हो वह क़र्ज़ अदा करके बाकी माल की ज़कात दे। इब्ने अंबारी ने कहा कि हज़रत उसमान के असम फ़रमाने की वजह यह थी कि अरब हमेशा आपस में जंग व जिदल में मसरूफ़ होते थे लेकिन जब रजब का महीना आता तो वह नेज़ों के फ़ल बांसों से अलग कर देते। पस उस महीने में न हथियारों की झंकार सुनाई देती थी न नेज़ों की खटाखट। अगर कोई शख्स अपने बाप के कातिल की तलाश में निकल खड़ा होता और वह कातिल रजब के महीने में मिल जाता तो उससे कुछ तअरूज़ न करता गोया यह मालूम होता था कि उसने कातिल को देखा ही नहीं और न उसकी उसे कोई ख़बर मिली है। बाज़ ने असम की वजह तसमिया यह बताई है कि इस महीने में किसी कौम पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होने की ख़बर कभी नहीं सुनी गई। अक़वामे साबिका पर इस महीने के सिवा तमाम महीनों में अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुआ।

इसी महीने में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने कश्ती में सवार होने का हुक्म दिया चुनांचे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और उनके साथियों को लेकर यह कश्ती छः महीने



तक इधर उधर तैरती रही। हज़रत इबराहीम नखई का कौल है कि अल्लाह तआला ने माहे रजब में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को कश्ती में सवार होने का हुक्म दिया। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने रजब के रोजे रखें और अपने साथियों को भी रखवाए। अल्लाह ने आपको और आप के हमराहियों को तूफ़ान से महफूज़ व मामून रखा और तमाम रुए ज़मीन को ज़ालिमों और मुशिरकों से पाक कर दिया बाज़ ने इस किस्सा को मरफूअन बयान किया है। चुनांचे हबतुल्लाह ने अपनी सनद के साथ अबू हाज़िम से उन्होंने सहल बिन सअद से और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से। रिवायत करदा यह हदीस सुनाई कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सुनो! रजब हुरमत वाले महीनों में से है, इसी महीने में अल्लाह तआला ने हज़रत नूह को कश्ती सवार कराया, उन्होंने और उनके तमाम साथियों ने कश्ती ही में इस माह का रोज़ा रखा और अल्लाह तआला ने उन्हें नजात बख़्शी और गर्क होने से महफूज़ रखा और सैलाब के बाद ज़मीन को कुफ़्र और मअसियत से पाक फ़रमा दिया।

### असम की वजहे तसमिया:

असम कहने की यह वजह भी बयान की गई है कि मोमिन के जुल्म और उसकी ज़िल्लत को सुनने से यह महीना बहरा है, हाँ मोमिन की बुर्जुगी और उसके शरफ़ को खूब सुनता है यानी अल्लाह ने मोमिन को जुल्म और ज़िल्लत के तज़किरे सुनने से इस महीने को बहरा बना दिया ताकि कयामत के दिन यह मोमिन के जुल्म और ज़िल्लत की शहादत न दे सके बल्कि यह मोमिन के हुसने किरदार व फज़ीलत का तज़किरा जो उसने सुना है, उस पर कयामत के दिन शाहिद होगा। इस मकूला का हासिल यह है कि मोमिन रजब के महीने में खुसूसियत के साथ किसी पर जुल्म नहीं करता न कोई उस पर जुल्म करता है कि उसकी ज़िल्लत हो बल्कि दूसरों के साथ वह हुसने सुलूक और हुसने ख़ल्क से पेश आता है इसलिये माहे रजब कयामत के दिन उसकी मुवाफ़िक़त में शहादत देगा (उसके खिलाफ़ कुछ नहीं कहेगा)।

### असब्बुन कहने की वजह

माहे रजब को असब्बुन कहने की वजह यह है कि इस माह में बन्दों पर खुदा की रहमत बहाई जाती है, सब्बुन के मानी हैं बहाना, अल्लाह तआला इस माह में बन्दों को ऐसी अज़मतें और सवाब अता फ़रमाता है जो न आंखों ने देखी और न कानों ने सुना है, न किसी शख्स के दिल में उनका तसव्वुर आया।

### रजब में सवाब

इस माह में सवाब की तफ़सील में जो अहादीस आई हैं उनमें से एक हदीस वह है जो शैख़ इमाम हबतुल्लाह बिन मुबारक सिक़ती ने अपनी सनद के साथ आमश से और उन्होंने इब्राहीम नखई से और उन्होंने अलक़मा से और उन्होंने हज़रत अबू सईद खुदरी से बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "महीनों की गिनती जिस दिन से अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान को पैदा फ़रमाया अल्लाह की किताब में बारह महीने हैं, इन बारह महीनों में से चार हुरमत वाले हैं, एक रजब है और उसके बाद तीन मुसलसल हैं यानी ज़ीक़दा, ज़ील हिज्जा और मोहर्रम, रजब अल्लाह का महीना है और शाबान मेरा है और रमज़ान मेरी



उम्मत का। पस जिस ने रजब में एक दिन का रोजा रखा (यकीन व इखलास के साथ) तो उसने अल्लाह अज्ज व जल्ल की खुशनुदी अपने ऊपर वाजिब कर ली, उसे फिरदौसे आला में ठहराया जाएगा और जिसने रजब के दो दिन के रोजे रखे तो उसे दो गुना अज्र दिया जाएगा। हर अज्र (सवाब) का वज्ज दुनिया के पहाड़ों के बराबर होगा और जिसने तीन दिन के रोजे रखे तो अल्लाह तआला उसके और जहन्नम के दर्मियान एक खन्दक हाएल कर देगा जिसकी मुसाफत एक साल की मुसाफत के बक़्द्र लम्बी होगी। जिसने चार रोजे रखे, अल्लाह तआला उसको जज़ाम और जुनून और बर्स के अमराज़ से और दज्जाल के फितनों से महफूज़ रखेगा जिसने पांच रोजे रखे उसे क़ब्र के अज़ाब से बचाया जाएगा जिसने छः दिन के रोजे रखे तो वह अपनी क़ब्र से इस तरह उठेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं के चाँद की तरह ताबां व दरखशां होगा और जिसने सात रोजे रखे तो उसके लिये दोज़ख के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे और जिसने आठ रोजे रखे तो जन्नत के आठों दरवाज़े उसके लिए खोल दिए जाएंगे और जिसने नौ दिन के रोज़ रखे तो वह अपनी क़ब्र से अशहदु अल ला इलाहा इल्लल्लाह कहता हुआ उठेगा उसका मुंह जन्नत की तरफ़ होगा। जो दस रोजे रखेगा अल्लाह तआला उसके लिए पुल सिरात के हर मील पर एक बिस्तर आराम के लिए मुहय्या फ़रमा देगा, और जो रजब के ग्यारह रोजे रखेगा क़यामत के दिन उससे अफ़ज़ल और कोई उम्मती नज़र न आएगा सिवाए ऐसे शख्स के जिसने उसके बराबर या उससे ज़्यादा रजब के रोजे रखे हों, और जो शख्स इस माह के बारह रोजे रखेगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन ऐसे दो जोड़े पहनाएगा कि उसका एक जोड़ा दुनिया और दुनिया के तमाम चीज़ों से अफ़ज़ल और बेहतर होगा और जो रजब के तेरह रोजे रखेगा क़यामत के दिन अर्श के साया में उसके लिये दस्तरख़्वान बिछाया जाएगा और उससे वह जो दिल चाहेगा खाएगा जब कि और दूसरे लोग सख़्त तकालीफ़ में मुबतला होंगे, जिसने रजब के चौदह रोजे रखे तो क़यामत के दिन अल्लाह उसे वह चीज़ अता करेगा जो न कभी देखी और न उसके बारे में आज तक किसी से सुना न किसी दिल में उसका ख़्याल गुज़रा होगा। जिसने पन्द्रह दिन के रोजे रखे तो अल्लाह तआला मौकिफ़ (हशर) में उसे अमन के साथ खड़े होने वालों में शामिल कर देगा जहाँ जब किसी मुकर्रब फ़रिश्ता का गुज़र होगा या किसी नबी या रसूल का तो उसे कहा जाएगा मुबारक हो तू अमन वालों में से है। एक और रिवायत में है पन्द्रह दिन से ज़ाएद रोज़ों का भी जिक्र आया है, इस तरह पर कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने सोलह दिन के रोजे रखे तो वह अल्लाह तआला का दीदार करने और कलाम करने वालों की पहली सफ़ में होगा और जिसने सतरह दिन के रोजे रखे तो अल्लाह तआला उसके लिए पुल सिरात के हर मील पर एक आरामगाह मुकर्रर कर देगा, जिसमें वह आराम करेगा और जिसने माहे रजब के अठारह रोजे रखे वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के कुब्बा में क़याम करेगा, जिसने उन्नीस रोजे रखेगा तो उसके लिए अल्लाह तआला एक ऐसा महल मुहय्या फ़रमा देगा जो हज़रत आदम और हज़रत इब्राहीम के महल्लात के रुबरू होगा और वह उन दोनों नबियों को सलाम नियाज़ पेश करेगा वह दोनों नबी उसको जवाब देंगे और जिसने रजब के महीने के बीस रोजे रखे तो आसमान से एक मुनादी निदा देगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! तेरे तमाम गुनाह माफ़ कर दिये गए, तू बख़्श दिया गया, अब जिस क़दर तेरी उम्र बाकी है उनमें नेक अमल कर।

माहे रजब का नाम "मुतहहर" रखने की वजह यह है कि यह महीना अपने रोज़ादार को



गुनाहों और खताओं से पाक कर देता है, इस सिलसिले में दूसरी रिवायतों के मिन जुमला एक रिवायत वह है जो शैख इमाम हिबतुल्लाह बिन मुबारक सिकती ने हसन बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह मकरी के हवाले से और उन्होंने हारुन बिन अन्जा और उन्होंने हजरत अली रजियल्लाहो अन्हो के हवाले से बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: "रजब का महीना अजमत व बुजुर्गी वाला महीना है जो शख्स इसका एक रोजा रखेगा उसको एक हजार बरस के रोजों का सवाब होगा और जो दो रोजे रखेगा अल्लाह तआला उसके लिये दो हजार बरस के रोजों का सवाब लिखेगा, जो तीन रोजे रखेगा उसको तीन हजार साल के रोजों का सवाब अता फरमाएगा और जिसने सात रोजे रखे उस पर जहन्नम के सातों दरवाजे बन्द कर दिये जाएंगे और जो आठ रोजे रखेगा उस पर जन्नत के आठों दरवाजे खोल दिए जाएंगे वह जिस दरवाजे से चाहे जन्नत के अंदर दाखिल हो और जो बन्दा पन्द्रह रोजे रखेगा उसके गुनाह नेकियों से बदल दिये जाएंगे और आसमान से निदा आएगी कि तुझे बख्श दिया गया अब आइन्दा के लिये तू अज सरे नौ अमल कर और जो बन्दा इससे ज्यादा रोजे रखेगा अल्लाह उसको ज्यादा सवाब देगा।

शैख इमाम हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने अपनी असनाद के साथ ब रिवायत यूनुस बिन हसन रजियल्लाहो अन्हो रिवायत की उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने माहे रजब का एक रोजा रखा उसको अल्लाह तआला तीस साल के रोजों के बराबर सवाब देगा।

इमाम हिबतुल्लाह बिन मुबारक, हसन बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह मकरी से असनाद के साथ ब रिवायत अला बिन कसीर अज मकहूल बयान किया कि उन्होंने एक शख्स को हजरत अबू दरदा से माहे रजब के रोजों के बारे में सवाल करते सुना, हजरत अबू दरदा ने जवाब में फरमाया कि तुम ने ऐसे महीने के बारे में पूछा है जिसकी अहदे जाहिलियत में भी लोग अजमत करते थे और इस्लाम ने इसकी अजमत व मरतबत में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया कि जिस शख्स ने इखलास के साथ सवाब की उम्मीद और अल्लाह की खुशनूदी के लिए इस माह में एक दिन का रोजा रखा तो वह रोजा कयामत के दिन अल्लाह तआला के ग़ज़ब की आग को सर्द कर देगा और वह दोज़ख़ का एक दरवाज़ा उसकी तरफ़ से बन्द कर देगा, अगर ज़मीन के बराबर उसको सोना मिल जाए तब भी वह इस अज़्र का बदल न हो सकेगा न दुनिया की किसी चीज़ से उसका अज़्र पूरा हो सकेगा सिवाए कयामत के दिन के। माहे रजब के उस रोज़ादार की जब शाम होती है तो उस वक़्त उसकी दस दुआयें कबूल होती हैं अगर दुनिया की वह कोई चीज़ मांगता है तो वही उस को अता कर दी जाती है वरना उसके लिये ख़ैर का इतना ज़ख़ीरा जमा कर दिया जाता है जो उन दुआओं के ज़ख़ीरा से बेहतर होता है जो औलिया और असफ़ियाए सादेकीन करते हैं।

जिसने रजब के दो रोजे रखे उसको मजकूरा सवाब के अलावा ऐसे दस सिद्दिकों का सवाब मिलेगा जो अपने तवील तर उम्रों के साथ सिद्दीक रहे और सिद्दीकीन की शफ़ाअत के बराबर उसकी शफ़ाअत और सिफ़ारिश कबूल की जाएगी, वह खुद सिद्दीकीन के साथ जन्नत में जाएगा। जिसने तीन दिन के रोजे रखे तो उसको मजकूरा बाला सवाब का दोगुना सवाब मिलेगा उसके इफ़तार के वक़्त अल्लाह तआला फरमाएगा बेशक मेरे बन्दे का हक़ वाजिब हो चुका है और मेरी



गुनाहगारों और दोस्ती उसके लिये वाजिब हो चुकी है। ऐ मेरे फरिश्तो! मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने इसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये, और जब बन्दा चार रोज़े रखेगा उसको यह तमाम सवाब मिलेगा और मज़ीद बरआं उन आबिदों और बसीरत वालों का सवाब भी मिलेगा जो अल्लाह से बहुत ज़्यादा तौबा करते हैं, उसका आमाल नामा दायें हाथ में दिया जाएगा और कामयाब होने वाले अव्वल तरीन गरोह में शामिल होगा और जो शख्स पांच रोज़े रखेगा उसको यह सब कुछ मिलेगा जो बयान हो चुका और मज़ीद बरआं यह कि जब उसको क़यामत के दिन उठाया जाएगा तो उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह ताबां और दरखां होगा, उसकी नेकियों उतनी लिखी जाएगी जितनी आलिज के रेगिस्तान में रेत के ज़र्रे हैं वह जन्नत में दाखिल हो जाएगा और उससे कहा जाएगा कि अल्लाह पर भरोसा करते हुए जो आरजू तू करना चाहता है कर वह पूरी होगी। जो छः रोज़े रखेगा उसको भी यही कुछ मिलेगा और उसके अलावा ऐसा नूर भी अता होगा जिससे क़यामत में जमा होने वाले लोग रौशनी हासिल करेंगे और उसको अमन व अमान वाले लोगों के साथ उठाया जाएगा यहां तक कि वह बगैर हिसाब के पुल सिरात से गुज़र जाएगा नीज़ वालिदैन की नाफ़रमानी और क़तअ रहमी के गुनाह से भी उसको माफ़ी दे दी जाएगी, क़यामत के दिन जब अल्लाह तआला के हुज़ूर में उसकी पेशी होगी तो रब्बुल इज्ज़त बज़ाते खुद उसकी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाएगा। जो सात रोज़े रखेगा उसको मुर्दजा बाला अज़ भी अता होगा और मज़ीद बरआं और अज़ भी मिलेगा। दोज़ख के सातों दरवाज़े उसके ऊपर बन्द कर दिये जाएंगे, अल्लाह तआला जहन्नम की आग को उस पर हराम कर देगा और जन्नत को उसके लिये वाजिब फ़रमा देगा वह जहां चाहे क़याम करे और जो आठ रोज़े रखेगा उसके लिये मज़कूरा बाला अज़ भी होगा और मज़ीद बरआं और अज़ भी मिलेगा। बहिश्त के आठों दरवाज़े उस पर खोल दिये जाएंगे जिस दरवाज़े से चाहे उस दरवाज़े से दाखिल हो, जो नौ रोज़े रखेगा उसको इस अज़ के अलावा और भी मिलेगा। उसका अमल नामा इल्लिइन में उठाया जाएगा, क़यामत के दिन अंबिया के साथ होगा, क़ब्र से निकलते वक़्त उसका चेहरा ऐसा ताबां और नूरपाश होगा कि तमाम अहले जन्नत के चेहरे जगमगा उठेंगे, यहां तक कि लोग कहेंगे कि क्या यह कोई बरगुज़ीदा नबी है? जो दरजात उस बन्दे को अता होंगे उनमें सबसे कम दर्जा यह होगा कि वह बगैर हिसाब दिये जन्नत में दाखिल होने वालों में से होगा और जो दस रोज़े रखेगा उसका तो क्या ही कहना, वह हर तरह तारीफ़ व तौसीफ़ का मुस्तहिक़ होगा उसको दस गुना ज़ाएद सवाब मिलेगा वह उन लोगों में से होगा जिनकी बंदियों को नेकियों से बदल दिया जाएगा वह अल्लाह के मुकर्रेबीन और अल्लाह के लिये अदल व इन्साफ़ पर कायम रहने वालों में से होगा वह उस शख्स के मानिंद होगा जिसने हजार साल तक रोज़ादार रह कर खुलूस और जब्बा के साथ इबादत की हो।

जिसने बीस दिन के रोज़े रखे उसको बीस गुना सवाब मिलेगा वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के कुब्बा के रुबरु होगा और वह कबीलए रबीआ और मुज़र के लोगों के बराबर ख़ताकारों और गुनाहगारों की शफ़ाअत करेगा।

जो शख्स माहे रजब के तीस रोज़े रखेगा उसको उनके सवाब के अलावा तीस गुना और मज़ीद सवाब और अज़ मिलेगा। एक मुनादी आसमान से निदा करेगा कि ऐ अल्लाह के वली! क़रामते उज़मा की आप को बशारत हो। हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया



गया कि हुजूर करामते उज्जमा क्या है? फरमाया कि अल्लाह तआला के वजहे जमील की तरफ नजर करना (दीदारे इलाही से मुशरफ होना) और अंबिया, सिद्दीकीन और शोहदा की रिफाकत (जो बहुत ही अच्छे रफीक हैं) करामते उज्जमा है, ऐ माहे रजब के रोजे रखने वाले! कल को जब हिजाबात उठ जाएंगे तू अपने रब के अज्रे अजीम तक पहुंचेगा और फिर तेरे लिये मुसरत ही मुसरत होगी।

मरते दम उस रोज़ादार पर जब मौत का फरिश्ता उतरेगा तो नज़अ के वक्त अल्लाह तआला हौजे फिरदौस का शरबत उसको पिलाएगा इस तरह मौत उस पर इस कदर आसान हो जाती है कि उसकी तकलीफ उस को कतई महसूस नहीं होती। कब्र में वह सैराब रहता है और क़यामे महशर में भी सैराब रहेगा यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हौज़ (हौजे कौसर) पर वह पहुंच जाएगा जब वह कब्र से उठेगा तो सत्तर हजार फरिश्ते, मोती और याकूत की ऊंटनियां, किस्म किस्म के ज़ेवर और खिलअतें साथ लेकर आएंगे और उससे कहेंगे कि ऐ अल्लाह के दोस्त अपने रब के पास जल्द चलो, जिसकी खूशनूदी के लिये तुमने अपने आप को दिन भर प्यासा रखा और जिसकी रज़ा तलबी के लिए तुम ने अपने जिस्म को कमज़ोर और मुज़महिल किया, वह क़यामत के दिन फ़ाएज़ीन के साथ जन्नते अदन में सब से पहले दाखिल होने वालों में होगा। अल्लाह उनसे और वह अल्लाह से राजी होंगे और अल्लाह की रज़ामन्दी सबसे बड़ी कामयाबी और फौज़ व फ़लाह है। अगर कोई शख्स रोज़ाना के रोज़ों के साथ अपनी रोज़ी के हम वज़्न ख़ैरात भी करेगा तो उसका क्या ठिकाना, उसका क्या ठिकाना, उसका क्या ठिकाना! हुजूर ने यह कलमात तीन मरतबा अदा फरमाए जो सवाब उसको दिया जाएगा अगर तमाम मखलूक उसका अंदाज़ा करना चाहे तो उसके दसवें हिस्सा का भी अंदाज़ा नहीं कर सकती।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर से मरवी है, उन्होंने फरमाया जिसने अपने मुसलमान भाई से रजब के महीने में जो अल्लाह का माहे असम है ग़म दूर किया तो अल्लाह उसको फिरदौस में निगाह की रसाई के बक़्दर वसीअ महल मरहमत फरमाएगा, ख़ूब सुन लो! तुम माहे रजब की इज़्ज़त करोगे अल्लाह तआला तुम्हें हजार दर्जा बुजुर्गी अता फरमाएगा।

हज़रत उक़बा बिन सलामा बिन कैस ने मरफूअन रिवायत की है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने माहे रजब में सदका दिया तो अल्लाह तआला उसको आग (जहन्नम) से इतना दूर कर देगा जितना कौआ हवा में परवाज़ करके अपने आशियाना से इस क़दर दूर हो जाए कि उड़ते उड़ते बूढ़ा होकर मर जाए (बग़ान किया जाता है कि कौए की उम्र पांच सौ साल है) मुद्हुआ यह कि कौआ पांच सौ बरस में जितना फ़ासिला अपने आशियाना से तय करेगा और उससे दूर होगा बक़्दर उस फ़ासिले के बन्दा दोज़ख से दूर हो जाएगा!

## साबिक की वजहे तसमिया

रजब को साबिक कहने की वजह यह है कि हुरमत वाले महीनों में यह सबसे पहले आता है और फ़र्व कहने वजह यह है कि यह हुरमत का अकेला महीना है कोई दूसरा माहे हराम इसके साथ नहीं है जैसा कि हज़रत सौर बिन ज़ैद से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदाअ के मौक़ा पर अपने खुतबा में इरशाद फरमाया कि "ज़माना गर्दिश करके उसी मक़ाम पर आ गया जैसा कि ज़मीन व आसमान की आफ़रीनश के दिन था, साल



बारह महीने का है जिन में चार महीने हुरमत वाले हैं उनमें से तीन तो पै दर पै आते हैं जीकादा, जिल हिज्जा और मोहर्रम और एक फर्व है यानी सबसे अलग वह रजब मुजर है जो जमादीस सानी और शाबान के दर्मियान है।

## हुरमत वाले महीनों के ख़ास औसाफ़

### रजब की मजीद खुसूसियात

हज़रत इकरमा ने ब रिवायत हज़रत इब्ने अब्बास रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि आपने इरशाद फ़रमाया: रजब का महीना अल्लाह का महीना है, शाबान मेरा महीना है और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है। हज़रत मूसा बिन इमरान ने कहा कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक से खुद सुना वह फ़रमा रहे थे कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया है कि जन्नत में एक नहर है जिस का नाम रजब है उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा शीरी है। जिसने रजब का एक दिन का भी रोज़ा रखा अल्लाह उसको उस नहर का पानी पिलाएगा, हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि हुजूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत में एक महल है उसमें सिर्फ़ वही दाख़िल होगा जिसने रजब के रोज़े रखे हैं।

हज़रत अबू हुरैरा का कौल है कि हुजूर ने रमज़ान के अलावा रजब और शाबान के सिवा किसी और महीने के पूरे रोज़े नहीं रखे, हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि हुजूर इरशाद फ़रमाया जिस ने माहे हराम के तीन दिनों के रोज़े रखे यानी जुमेरात, जुमा, और हफ़ता तो अल्लाह तआला उस के लिये नौ सौ साल की इबादत लिखेगा।

बाज़ असहाब का मक़ूल है कि रजब का महीना जुल्म छोड़ने के लिए, माहे शाबान आमाल दीन के अहद के लिए और रमज़ान का महीना सिद्क व सफ़ा के लिए है। रजब तौबा का महीना है, शाबान मोहब्बत का, रमज़ान कुरबे इलाही का। रजब इज्ज़त का महीना है, शाबान ख़िदमत का और रमज़ान नेमते इलाही का। रजब माहे इबादत है, शाबान दुनिया से कतअ ताल्लुक और बेनियाज़ी का और रमज़ान कसरते सवाब (और नेकी में ज़्यादती) का महीना है, रजब ऐसा महीना है जिसमें अल्लाह तआला नेकियां दो चन्द कर देता है, शाबान के महीने में अल्लाह तआला बुराईयों को दूर कर देता है और रमज़ान अताए एजाज़ का महीना है। रजब नेकियों में सब से आगे बढ़ जाने वाले का महीना है, शाबान मियाना रवी एख़तियार करने वालों का और रमज़ान गुनाहगारों की माफ़ी का महीना है।

हज़रत जुन्नून मिसरी ने फ़रमाया कि रजब आफ़तों को तर्क करने के लिए, शाबान इबादत करने के लिए और रमज़ान करामतों की अता का इंतज़ार करने के लिए है, जो आफ़तों को तर्क न करे, इबादात बजा न लाए और करामतों का इन्तज़ार न करे वह अहले बातिल से है। हज़रत जुन्नून ने यह भी फ़रमाया, रजब खेती बोनो का महीना है और शाबान खेत को सैराब करने और रमज़ान खेती काटने का महीना है, हर शख्स वही काटेगा जो उसने बोया है और उसी का बदला पायेगा जो अमाल उस ने किए हैं पस वह जिसने खेती बोई नहीं वह काटते वक़्त शर्मसार होगा और उसी के साथ उसका अंजाम बुरा होगा।



बाज सालेहीन ने फरमाया कि साल एक दरख्त है और रजब के अय्याम उसके पत्ते हैं। शाबान के अय्याम उस के फल हैं और रमजान के दिन मेवा चीनी के दिन हैं, एक कौल यह भी है कि रजब को अल्लाह तआला की तरफ से मोजजात के साथ, शाबान को शफाअत के साथ और रमजान को नेकियां बढ़ाने के साथ, शबे कद्र को नुजूल रहमत के साथ और यौमे अरफा को दीन की तकमील के साथ मखसूस किया गया है, अल्लाह तआला का इरशाद है: आज मैंने तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया। यह आयत यौमे अरफा में नाजिल हुई थी, इसी तरह जुमा का दिन दुआओं के मकबूल होने के लिये और यौमे ईद को आतिशे दोजख से रुस्तगारी के लिये और मोमिनों की गरदन (गुलामी से) आजाद करने के लिये मखसूस कर दिये गये हैं। माजनी रहमतुल्लाह अलैह ने हजरत इमाम हुसैन का कौल नकल किया है कि आप ने फरमाया कि रजब के रोजे रखा करो क्योंकि रजब के रोजे बारगाहे इलाही की तरफ से एक तौबा है (नाजिल करदा) हजरत सलमान फारसी से मरवी है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना कि आप ने इरशाद फरमाया कि जिसने रजब का एक रोजा रखा गोया उसने हजार बरस के रोजे रखे और हजार गुलाम आजाद किये और जिसने माहे रजब में कुछ भी खैरात की उसने गोया हजार दीनार खैरात किये। अल्लाह तआला बदन के हर बाल के मुकाबिल उसके लिये नेकी लिखेगा और हजार दर्जा बलन्द करके उसकी हजार बुराईयां (गुनाह) महव फरमा देगा उसके हर रोजे और हर सदके के मुकाबला में हजार हज और हजार उमरे लिखेगा उसके लिये जन्नत में हजार मकान, हजार महल, हजार कमरे और हर कमरे में हजार खेमे में हजार ऐसी हूरें जो आफताब से हजार दर्जा ज्यादा हसीन होंगी अंता फरमायेगा।

## माहे रजब के पहले रोजे और पहली रात के कयाम की फजीलत

इमाम हिब्तुल्लाह सिकती ने अपनी इसनाद के साथ हजरत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि उन्होंने कहा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदते करीमा थी कि जब रजब का महीना शुरू होता तो आप दुआ फरमाते: इलाही हमारे लिये रजब और शाबान में बरकत दे और हमें रमजान तक पहुंचा। इमाम हिब्तुल्लाह ने अपनी इसनाद के साथ हजरत अबू ज़र की हदीस मरफूअन बयान की कि हज़ूर अकदस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने रजब का पहला रोजा रखा उसका यह रोजा महीना भर के रोजों के बराबर होगा और जिसने सात दिन के रोजे रखे उस पर जहन्नम के सातों दरवाजे बन्द कर दिये जायेंगे और जो आठ रोजे रखेगा उस पर जन्नत के आठों दरवाजे खोल दिये जायेंगे, जिसने दस दिन के रोजे रखे अल्लाह तआला उसकी बुराईयों को नेकियों से बदल देगा और जिसने रजब के अठारह रोजे रखे तो एक मुनादी आसमान से पुकारेगा कि ऐ बन्दो! बिला शुबहा तुझे बख्श दिया गया अब अज सरे नौ अमल शुरू कर।

हमारे इमाम हजरत हिब्तुल्लाह सिकती ने अपनी इसनाद के साथ बरिवायत हजरत सलाम बिन कैस मरफूअन बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स रजब का पहला रोजा रखेगा अल्लाह तआला उसके दस साल के गुनाह माफ़ फरमा देगा और जो पन्द्रह दिन के रोजे रखेगा अल्लाह तआला उसके हिसाब में बहुत आसानी फरमा देगा और जिसने तीस रोजे रखे अल्लाह तआला अपनी खुशनूदी उसके लिये लिख देगा और उसको



गुनियतुतालिबीन

अज़ाब नहीं देगा।

रिवायत है कि उमर बिन अब्दुल अजीज ने हुज्जाज बिन अरताह हाकिमे बसरा को, और एक रिवायत है कि अदी बिन अरताह को लिखा कि साल में चार रातों में इबादत जरूर करो, इन रातों में अल्लाह तआला अपनी रहमत बहाता है। वह चार रातें यह हैं: रजब की पहली रात, शाबान की पन्द्रहवीं रात, रमज़ान की सत्ताइसवीं रात और ईदुलफित्र की रात। हज़रत खालिद बिन मअदान ने फरमाया कि साल में पांच रातें ऐसी हैं कि जिसने उनका इल्तिज़ाम किया, उनके सवाब के हुसूल की कोशिश की और उन वादों की तसदीक की, तो अल्लाह तआला उस को जन्नत में दाखिल फरमा देगा (1) रजब की पहली रात, उस रात को कयाम करे और उसके दिन का (दूसरे दिन का) रोज़ा रखे (2) ईदैन की दो रातें, रातों को कयाम करे लेकिन दिन में रोज़ा न रखे (3) एक रात आशूरह की रात को कयाम करे और दिन में रोज़ा रखे।

### साल की वह रातें जिनमें कयाम करना मुस्तहब है

बाज़ उलमा ने साल भर की उन रातों को जमा किया है जिनमें इबादत करना मुस्तहब है, उन्होंने बताया है कि यह कुल चौदह रातें हैं जिनकी तफ़सील इस तरह है।

1-माहे मुहर्रम की पहली रात	1
2-आशूरह की रात	1
3-माहे रजब की पहली रात	1
4-रजब की पन्द्रहवीं शब	1
5-रजब की सत्ताइसवीं रात	1
6-शाबान की चौदहवीं रात	1
7-अरफ़ा की रात	1
8-ईदैन की दो रातें (ईदुलफित्र और ईदुलअज़हा)	2
9-रमज़ान शरीफ़ के आखिरी अशरह की पाँच ताक़ रातें (21-23-25-27-29)	5

कुल चौदह रातें

इसी तरह साल में उन्नीस दिन ऐसे हैं जिनमें इबादत करनी और औराद व विजाइफ़ में मशगूल रहना मुस्तहब है यानी

1-यौमे अरफ़ा	1
2-यौमे आशूरह	1
3-शाबान का पन्द्रहवां दिन	1
4-जुमा का दिन	1
5-ईदैन के दोनों दिन	2
6-ज़िलहिज्जा के इब्तिदाई दस दिन (अय्यामे मालूमात)	10
7-अय्यामे तशरीक़, 11, 12, 13, ज़िलहिज्जा	3

(अय्यामे मादूदात)

इनमें सबसे ज़्यादा ताकीद रोज़े जुमा की और माहे रमज़ान की है, हज़रत अनस से मरवी



है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब जुमा का दिन सलामत रहता है तो दूसरे तमाम दिन सलामत रहते हैं और जब माहे रमजान सलामत रहता है तो पूरा साल सलामत रहता है, इसके बाद तमाम दिनों से ज्यादा दो शंबा और पन्जशंबा की ताकीद और फज़ीलत है, इन्हीं दोनों दोनों में अल्लाह के सामने बन्दों के आमाल पेश होंगे।

## माहे रजब की अदिइय्या मासूरह

### रजब की पहली रात में पढ़ी जाने वाली दुआयें

मुस्तहब है कि माहे रजब की पहली रात में नमाज़ से फारिग होकर यह दुआ पढ़ें:

इलाही इस रात में बढ़ने वाले तेरे हुजूर में बढ़े और तेरी तरफ़ क़स्द करने वालों ने क़स्द किया और तालिबों ने तेरी बख़्शिश और तेरे एहसान की उम्मीद रखी, इस रात में तेरी तरफ़ से मेहरबानियाँ, अतिये और बख़्शिशें हैं, तू ही उन पर एहसान करता है जिन को चाहता है और जिन पर तेरी इनायत न होगी उनसे रोक लेगा, मैं तेरा मोहताज बन्दा हूँ तेरे फज़ल व करम का उम्मीदवार हूँ। मेरे मौला इस रात अगर तू किसी मख़लूक पर फज़ल करे और अपनी इनायत से किसी को नवाज़े तो सबसे पहले मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपने फज़ल व एहसान से मुझ पर नवाज़िश फ़रमा, या रब्बुलआलमीन!

रिवायत है कि हज़रत अली का दस्तूर था कि आप साल में चार रातें हर काम से ख़ाली कर के इबादत के लिए मख़सूस फ़रमाया करते थे (उन चार रातों में ख़ास तौर पर इबादत फ़रमाते थे) माहे रजब की पहली रात ईदुलफ़ित्र की रात, ईदुलअजहा की रात और माहे शाबान की पन्द्रहवीं रात।

उन रातों में आप यह दुआ पढ़ा करते थे:

या अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप की आल पर दरूद और रहमत भेज, यह लोग हिकमत व दानाई के चिराग़ हैं, नेमत के मालिक हैं, इस्मत व पाकी की कानें हैं, मुझे भी उनके साथ हर बदी से महफूज़ रख, गुरुर और तकब्बुर के सबब मुझे न पकड़, मेरे अंजाम को हसरत व नदामत वाला न बना, तू मुझसे राज़ी होजा, बेशक तेरी मग़फ़िरत ज़ालिमों के लिए है और मैं ज़ालिमों में से हूँ, इलाही! मुझे वह चीज़ अता फ़रमा जो तुझे ईज़ा नहीं देती और मुझे वह चीज़ बख़्श दे जो मुझे फ़ाएदा देने वाली है, तेरी रहमत वसीअ है, तेरी हिकमत नादिर और अजीब है, मुझे राहत और कुशादगी अता फ़रमा, अमन व तन्दुरुस्ती बख़्श दे, अपनी नेमत पर शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ मरहमत कर, आफ़ियत व परहेज़गारी और सब्र इनायत कर, अपने और अपने दोस्तों के नज़दीक मुझे रास्ती और लुत्फ़ इनायत फ़रमा, सख़्ती के बाद आसानी दे, मेरे अहल मेरे फ़रजन्दों और मेरे भाईयों पर जो तेरी राह पर चलने वाले हैं और मुसलमानों के बेटों और बेटियों पर, मुसलमान मर्द और औरतों पर अपनी रहमत आम फ़रमा दे और सबको अपनी रहमत में शामिल फ़रमा।



# माहे रजब की नमाजें

## रजब के महीने में बीस रकअत नमाज पढ़ने का तरीका

शैख इमाम हिब्तुल्लाह बिन मुबारक सिकती ने हमसे हदीस बयान जो चन्द असनाद से उन तक पहुंची थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ऐ सलमान! रजब का चांद तुलू हो गया अगर इस महीने में कोई मोमिन मर्द या औरत बीस रकअत नमाज इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फातिहा और सूरह इखलास तीन बार और सूरह अल काफिरुन तीन बार पढ़े तो अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाहों को महव फरमा देता है और उसको इतना अज्र अता फरमायेगा कि जैसे उसने पूरे महीने के रोजे रखे और उसका शुमार आईन्दा साल तक नमाज पढ़ने वालों में होगा (यानी उसको साल भर की नमाजों का सवाब मिलेगा) और शहीदे बद्र के अमल के बराबर उसके आमाल को रोजाना बलन्द से बलन्द तर किया जायेगा और हर दिन के रोजा के एवज साल भर की इबादत का सवाब उसके लिये लिखा जायेगा और उसके हजार दरजे बलन्द किये जायेंगे और अगर उसने पूरे महीने (माहे रजब के) रोजे रखे और यही नमाज पढ़ी तो अल्लाह तआला उसको दो ज़ख से बचा लेगा और उसके लिये जन्नत बाजिब कर देगा वह खुदावन्दे दो जहां के कुर्ब व जवार में होगा, मुझे इसकी खबर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने दी है, जिब्रील ने कहा था कि यह आपके और मुशरिकों और मुनाफिकों के दर्मियान फर्क पैदा करने वाली निशानी है। मुनाफिक यह नमाज नहीं पढ़ते हैं। हज़रते सलमान कहते हैं कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह मुझे बताइये कि मैं यह नमाज किस तरह पढ़ूं।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अब्बल माह में दस रकअतें पढ़ो और हर रकअत में सूरह फातिहा एक बार, सूरह इखलास तीन बार और कुल या अय्युहल काफिरुन तीन बार और जब सलाम फेरो तो हाथ उठाकर यह दुआ पढ़ो:

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह यकता व यगाना है, उसका कोई शरीक नहीं सब मुल्क उसी का है, उसी के लिये हम्द है वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है वह खुद हमेशा ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आती, नेकी उसी के हाथ में है वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है, जिसे तू अता करता है कोई उसे रोक नहीं सकता और जिसे तू रोक दे उसे कोई देने वाला नहीं, तेरी मर्जी के अलावा कोई शख्स कोशिश करे तो वह लाहासिल है।

हुजूर ने फरमाया और दस रकअतें वस्त माह में पढ़ो इस तरह कि हर रकअत में अलहम्द एक बार, सूरह इखलास तीन बार और कुल या अय्युहल काफिरुन तीन बार, सलाम फेरने के बाद हाथ उठाकर कहो:

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है उसका कोई शरीक नहीं तमाम मुल्क उसी का है, उसी के लिये तमाम मुल्क है, उसी के लिये हम्द है वही सबको ज़िन्दा करता है और मारता है वह हमेशा से है उसे कभी मौत नहीं आयेगी, सब नेकियां उसी के हाथ में हैं, वह हर चीज़ पर कादिर है, वह यकता है, उसका कोई नज़ीर नहीं वह यकता व यगाना है, न उसकी कोई बीवी है और न कोई औलाद।

यह दुआ पढ़ कर दोनों हाथ मुंह पर फेर लो। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद



फरमाया कि महीने के आखिर में दस रकअतें पढ़ो हर रकअत में सूरह फातिहा, सूरह इख्लास और कुल या अय्युहल काफिरून तीन बार, सलाम फेरने के बाद आसमान की तरफ हाथ उठा कर कहो।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है उस का कोई शरीक नहीं उसी की हुकूमत है वही तारीफ का सजावार है वह जिन्दा करता है और मौत देता है, उसी के हाथ में हर भलाई है वही हर चीज पर कुदरत रखने वाला है, हमारे आका (हजरत) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और आप की पाक आल पर अल्लाह की रहमत हो, उंचे मर्तबा वाले, अल्लाह के बगैर न कोई कूब्त है और न ताकत।

इसके बाद मुराद मांगो तुम्हारी दुआ कबूल होगी, अल्लाह तआला तुम्हारे और जहन्नम के दर्मियान सत्तर खन्दकें हाएल फरमा देगा हर खन्दक इतनी वसीअ व तवील होगी जैसे जमीन से असमान तक का फासला, हर रकअत के एवज दस लाख (हजार दर हजार) रकअतें लिखी जायेंगी (दस लाख रकअतों का सवाब मिलेगा) जहन्नम से आजादी और पुल सिरात से (बगैर किसी स खतरे) के उबूर तुम्हारे लिये मुकर्रर कर दिया जायेगा। हजरत सलमान फरमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब यह बयान फरमा चुके तो मैं इस अजीम अज्र पर अल्लाह का शक्र अदा करने के लिये रोता हुआ सजदे में गिर पड़ा। मैंने यह हदीस किताबुल अमल बिस्सुन्नह में पढ़ी थी।

## रजब की पहली जुमेरात के रोजे और

## अव्वल शबे जुमा की नमाज की फज़ीलत

### रजब की नौ चन्दी जुमेरात का रोज़ा

हम से शैख इमाम हिब्तुल्लाह सिकती ने और उनसे काज़ी अबुलफज़ल मक्की जाफ़र बिन यहया बिन कमाल ने बयान किया और उनसे अबू अब्दुल्लाह हुसैन जरज़ी बिन अब्दुल करीम बिन मुहम्मद ने मक्का में मस्जिदे हराम में बयान किया और जरज़ी से अबुल हसन अली हमदानी ने बरिवायत अबुल हसन अली सअदी बसरी बिन मुहम्मद सईद बयान किया और उनसे उनके वालिद खलफ़ बिन अब्दुल्लाह ज़आई ने बयान किया और खलफ़ बिन अब्दुल्लाह ने बरिवायत हमीद तवील हजरत अनस बिन मालिक का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रजब का महीना अल्लाह का महीना है और शाबान मेरा महीना है और रमज़ान का महीना मेरी उम्मत का महीना है। अर्ज किया गया या रसूलुल्लाह अल्लाह के महीने से क्या मतलब है? हुजूर ने फरमाया इस माह में ख़ास तौर पर मग़फ़िरत होती है, इस माह में खूरेज़ी से बचाया गया है, इस महीने में अल्लाह ने अपने नबियों की दुआयें कबूल फरमाई और इसी माह में अपने दोस्तों को दुश्मनों से रिहाई अता की जिसने इस माह के रोजे



गुनिबतुतालिबीन  
 रखे तो उसने अल्लाह तआला के जिम्मा तीन चीजें वाजिब कर लीं। तमाम गुजिश्ता गनाहों की माफी आईन्दा उम्र में होने वाले गुनाहों से बाजदाश्त और तीसरे यह कि कयामत के दिन (बड़ी वेशी के दिन) प्यासे होने का अन्देशा बाकी नहीं रहेगा, यह सुनकर एक जईफ़ शख्स ने खड़े हो कर अर्ज किया या रसूलल्लाह मैं (बुढ़ापे के बाएस) पूरे महीने के रोजे रखने से आजिज व कासिर हूं आप ने फरमाया अब्वल तारीख, दर्मियानी तारीख और आखिरी तारीख का रोज़ा रख लिया करो तुम को पूरे महीने के रोज़ों का सवाब मिलेगा, क्योंकि इस माह में हर नेकी का सवाब दस गुना है, मगर रजब के पहले जुमा की रात से गाफिल न रहना क्योंकि यह रात ऐसी है कि फरिश्ते इस रात को लैलतुरगाएब (मकासिद की रात) कहते हैं। जब इस शब की अब्वल तिहाई गुजर जाती है तो तमाम आसमानों और ज़मीनों में कोई फरिश्ता ऐसा बाकी नहीं रहता जो काबा या अतराफ़ काबा में जमा न हो जाये, उस वक़्त अल्लाह तआला तमाम मलाइका को अपने दीदार से नवाज़ता है और फरमाता है मुझसे मांगो जो चाहो, फरिश्ते अर्ज करते हैं, ऐ रब! हमारी अर्ज यह है कि तू रजब के रोज़ादारों को बख़्श दे, अल्लाह तआला फरमाता है मैंने उन्हें बख़्श दिया, इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने रजब की पहली रात जुमेरात का रोज़ा रखा और उसकी रात (शबे जुमा) में मगरिब व इशा की नमाज़ के दर्मियान बारह रकअतें पढ़ीं और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरतुल क़द्र तीन बार और सूरह इख़लास बारह मरतबा पढ़ी और हर दो रकअत के बाद सलाम फ़ेरा और नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद सत्तर बार मुझ पर दरुद पढ़ा और, और अल्लाहुम्मा सल्ले अला सय्यदना मुहम्मदिन नबीइल उम्मी व अला आलैहि वसल्लम पढ़ कर एक सजदा किया और सजदे में सत्तर मरतबा, सुब्बूहुन कुदुसुन रब्बुल मलाइकति वरूहि पढ़ कर सजदे से सर उठाया और सत्तर मरतबा यह दुआ पढ़ी रब्बिग़ फिर वरहम तजावज़ अन्ना नअल म फ़ इन्न क अन्तल अज़ीजुल आजमो यह दुआ पढ़ कर पहले सजदा की तरह दूसरा सजदा किया और सजदा की हालत में ही अल्लाह से अपनी मुराद मांगी तो उसकी मुराद पूरी कर दी जायेगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, उस जात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है कि जो बन्दा पाबन्दी से यह नमाज़ पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा, ख़्वाह वह समुन्दर के झागों, रेत के ज़रों के बराबर या पहाड़ों के हम वज़्न हों या बारिश के क़तरों और दरख़्तों के पत्तों के बराबर गिन्ती में हों। कयामत के दिन अपने घर के (कुंबा के) सात सौ आदमियों के हक़ में उसकी शफ़ाअत अल्लाह तआला क़बूल फ़रमायागा और जब क़ब्र में उसकी पहली रात होगी तो उस नमाज़ का सवाब शगुफ़ता रवी और फ़सीह ज़बान के साथ उसके सामने आयेगा और उस से कहेगा, ऐ मेरे प्यारे तुझे बशारत हो यकीनन हर शिदत और सख़्ती से तू नजात में रहेगा, वह शख्स पूछेगा तू कौन है? मैंने तेरे चेहरे से ज़्यादा हसीन कोई चेहरा नहीं देखा, तुम्हारी शीरीं गुफ़तार से ज़्यादा किसी की गुफ़तार नहीं पाई और न तुम्हारी खुशबु से बढ़कर किसी की मैंने खुशबु सूंधी, वह जवाब देगा, ऐ मेरे प्यारे! मैं तेरी उस नमाज़ का सवाब हूँ जिसे तू ने फ़लां साल फ़लां महीना में पढ़ा था आज मैं इसलिए आया हूँ कि तेरी हाजत पूरी करूँ और तेरी तन्हाई का शरीक बनूँ तुझ से वहशत को दूर करूँ, जब कयामत के दिन सूर फूँका जायेगा तो अरसए महशर में तेरे सर पर मैं साया करूँगा पस तू खुश हो जा तू अपने आका की तरफ़ से अपनी नेकी को कमी जाया नहीं देखेगा (तेरी नेकी कभी जाया नहीं होगी)।



## 27 रजब के रोजे की फज़ीलत

शैख अबुल बरकात हिब्तुल्लाह सिकती ने असनाद के साथ बरिवायत हज़रत अबू हुरैरा बयान किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने सत्ताईसवीं रजब का रोज़ा रखा उसको साठ महीनों के रोज़ों का सवाब मिलेगा। उसी दिन हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बारगाह में रिसालत ले कर नाज़िल हुए।

### हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास का मामूल

इमाम अबुल बरकात हिब्तुल्लाह ने अपनी असनाद के साथ हज़रत हसन बसरी से रिवायत की कि उन्होंने कहा हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास का मामूल था कि जब सत्ताईसवीं रजब आती तो वह ऐतकाफ़ में बैठे होते थे और बाद नमाज़े जोहर नफ़ल पढ़ने में मशगूल हो जाते इसके बाद वह चार रकअतें पढ़ते और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक मरतबा सूरतुल क़द्र तीन बार और सूरह इख़लास पचास मरतबा पढ़ते थे फिर अस्त्र तक दुआओं में मशगूल रहते उन्होंने फ़रमाया कि सरवरे कौनेन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही मामूल था।

शैख हिब्तुल्लाह ने अपनी असनाद से बरिवायत अबू सलमा हज़रत अबू हुरैरा और हज़रत सलमान फ़ारसी नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि माहे रजब में एक दिन और एक रात ऐसी है कि अगर उस दिन का कोई रोज़ा रखे और उस रात को इबादत करे तो उसको एक सौ बरस रोज़े रखने वाले और सौ साल की रातों में इबादत करने वाले के बराबर अज़्र मिलेगा। यह रात वह है जिसके बाद रजब की तीन रातें रह जाती हैं (यानी सत्ताईसवीं शब) और यह वह दिन है जिस दिन अल्लाह तआला ने रसूले करीम को रिसालत अता फ़रमाई।

## रोज़ा के आदाब और गुनाहों से

### एहतराज़ की फज़ीलत

#### रोज़ादार के लिए ज़रूरी शरायत

रोज़ादार के लिए ज़रूरी है कि उसका रोज़ा गुनाहों से ख़ाली हो, अल्लाह तआला के तक़वा के साथ उसको पूरा करे। हम से शैख हिब्तुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत अबू सईद खुदरी से रिवायत बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रजब हुरमत वाले महीनों में से है, इसके तमाम दिन छटे आसमान पर तहरीर हैं अगर कोई शख्स रजब के किसी दिन का रोज़ा रखता है और अल्लाह के ख़ौफ़ से अपने रोज़े को गुनाहों से महफूज़ रखता है तो वह रोज़ा भी कलाम करता है वह दिन भी उससे बोलता है और दोनों उसके हक़ में दुआ करते हैं कि परवरदिगार!! इस रोज़े रखने वाले को बख़्श दे और अगर किसी के रोज़ा की तकमील अल्लाह के तक़वा के साथ नहीं होती तो दोनों इसके लिये दुआए मग़फ़िरत नहीं करते



और कहते हैं, ऐ शख्स तुझे तेरे नफ्स ने फ़रीब दिया।

बरिवायत अअरज हज़रत अबू हु़रैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा जहन्नम की आग के लिये ढाल है अगर किसी का रोज़ा हो तो वह जिहालत की हरकतें न करे अगर उसको कोई गाली दे या उससे लड़े तो उसको चाहिए कि वह उससे कह दे कि मैं रोज़ादार हूँ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने रोज़ा में झूट बोलना और झूट पर अमल करना न छोड़ा तो उसके खाना पीना छोड़ देने की अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं है। बरिवायते हसन बसरी हज़रत अबू हु़रैरा से मरवी है कि रसूले खुदा ने फ़रमाया रोज़ा जहन्नम की ढाल है जब तक रोज़ादार उसके टुकड़े टुकड़े न कर दे, किसी ने अर्ज किया कि ढाल को कौन सी चीज़ टुकड़े टुकड़े कर डालती है? हुज़ूर ने फ़रमाया झूट और गीबत।

हज़रत अबू हु़रैरा से यह हदीस भी मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि सिर्फ़ खाना पीना तर्क कर देने से रोज़ा नहीं होता बल्कि बेहूदा और लगवियात से बचना रोज़ा है। शैख़ अबू नस्र मोहम्मद बिन अलबन्ना से बिल असनाद हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पांच चीज़ें रोज़े को ख़राब कर देती हैं और उन ही पांच चीज़ों से वजू नाकिस हो जाता है और वह यह हैं:

(1) झूठ बोलना (2) चुगली खाना (3) गीबत करना (4) शहवत से किसी औरत या मर्द को देखना (5) झूठी क़सम खाना। शैख़ अबू नस्र ने बहवाला अबू अला बिल असनाद हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो लोगों का गोश्त खाता रहा (गीबत करता रहा) उसका रोज़ा नहीं है। अबू नस्र ने अपने वालिद से उन की उनकी असनाद के साथ बयान किया कि हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ने फ़रमाया कि जिसने किसी औरत के अक़ब से भी उसके कपड़ों के ऊपर नज़र जमा कर देखा उसका रोज़ा बेकार हो गया, (बातिल हो गया)।

शैख़ अबू नस्र ने असनाद के साथ रिवायत की है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया जब तुम रोज़ा रखो तो याद रखो कि तुम्हारे कानों, आंखों और जबानों का भी रोज़ा झूठ बोलने और हराम चीज़ों के देखने से है, अपने पड़ोसी को ईज़ा न दो और रोज़े में वकार और संजीदगी को कायम रखना चाहिए, अपने रोज़े के दिन को बग़ैर रोज़े के दिन की तरह न बनाओ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बहुत से रोज़ादार ऐसे हैं कि उनका रोज़ा भूके पड़े रहने के सिवा कुछ नहीं। बहुत से इबादत गुज़ार और शबै जिन्दादार ऐसे हैं जिनकी बेदारी जागने के सिवा कुछ और नहीं ऐसे आमाल से अर्श लरज़ जाता है और अल्लाह तआला ग़ज़ब फ़रमाता है, इस इरशादे गिरामी से हुज़ूर की मुराद यह थी कि ताअत व इबादत अगर लिवजहिल्लाह न हो सिर्फ़ महज़ दिखावे के लिये हो तो यह बात पैदा हो जाती है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं शरीक से बेतर हूँ जिसने अपने अमले ख़ैर में मेरे सिवा किसी और को शरीक किया तो वह अमल मेरे लिए नहीं होगा बल्कि उसी शरीक के लिये होगा, मैं तो उसी अमल को कबूल करता हूँ जो कुल्लियतन मेरे लिये हो, ए इब्ने आदम! मैं सबसे बेहतर तकसीम करने वाला हूँ तू अपने अमल को देख जो तूने दूसरे के लिए किया है, तेरे इस अमल के बदला में जिम्मेदारी उसी की है जिस



के लिये तूने अमल किया है।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी दुआ में यह अलफाज फरमाया करते थे: इलाही! मेरी ज़बान को झूठ से पाक रख, मेरे दिल को निफ़ाक से बचा, मेरे अमल को रियाकारी और ख़यानत से पाक रख क्योंकि तू आंखों की ख़यानत और उन बातों को जो सीने में पोशीदा हैं जानता है।

पस रोज़ादार का लाज़िम है कि रोज़े के आदाब (शराइत) को मलहूज़ रखे, रोज़े में दिखावट (नमूद) नुमाईश और मख़लूक को अपने रोज़े से बा ख़बर करने से परहेज़ करे उसी तरह और दूसरी इबादतों में इन आदाब को मलहूज़ रखे ताकि दीन व दुनिया में नुक़सान ये महफूज़ रहे।

शैख़ अबू नस्र ने बिल असनाद बयान किया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फरमा रहे थे कि मैंने खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इरशाद फरमाते सुना कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने यौमे ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के सिवा तमाम उम्र रोज़े रखे। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने भी निस्फ़ उम्र रोज़े रखे, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हर माह में तीन दिन यानी 13,14,15 को रोज़े रखे इस तरह तमाम उम्र रोज़े रखे और तमाम न रखे।

शैख़ अबू नस्र ने बिल असनाद जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि एक बदवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आया और कहा या रसूलल्लाह! मुझे आप अपने रोज़ों के बारे में बताइए, यह सुन कर हुज़ूर को इस क़दर गुस्सा आया कि हुज़ूर के दोनों पाक रुख़सार सुर्ख़ हो गए, हज़रत उमर ने जब यह हाल देखा तो उस बदवी को बहुत झिड़का और झिड़का यहां तक कि वह ख़ामोश हो गया, जब रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गुस्सा फ़रू हो गया तो हज़रत उमर ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं आप पर कुरबान! मुझे उस शख़्स के बारे में बताइए जिसने तमाम रोज़े रखे? आपने फरमाया कि, न तो वह रोज़ादार है और न ग़ैर रोज़ादार, हज़रत उमर ने फिर पूछा कि जो तीन दिन रोज़ा से रहे? आप ने फरमाया। उसने तमाम उम्र का रोज़ा रखा, फिर दरयाफ़्त किया कि उस शख़्स के बारे में इरशाद फरमाइए जो दो शंबा और पंज शंबा को रोज़ा रखता है, हुज़ूर ने फरमाया कि पंज शंबा तो ऐसा दिन है जिस दिन आमाल उठाए जाते और दो शंबा ऐसा दिन है कि उस दिन में पैदा हुआ और यह वही दिन है जिस दिन मुझ पर वही नाज़िल की गई।

## इफ़्तारे सौम

### रोज़ा इफ़्तार करने की दुआ

जब रोज़े के इफ़्तार का वक़्त हो जाए तो इफ़्तार से पहले यह दुआ पढ़े।

ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए ही रोज़ा रखा और तेरे ही रिज़्क से इसको इफ़्तार करता हूँ (खोलाता हूँ) तेरे लिए पाकी है और तेरे ही लिए हम्द है, हमारी दुआ क़बूल फरमा, बेशक तू ही सुनने वाला और जानने वाला है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अलआस रोज़ा खोलते वक़्त यह दुआ पढ़ते थे: इलाही मैं तुझसे तेरी उस रहमत के सदक़े में जो तमाम चीज़ों पर मुहीत है, तुझसे मग़फ़िरत का तलबगार हूँ अबुल आलिया का कौल है कि जो शख़्स इफ़्तार के वक़्त यह दुआ पढ़ेगा



तमाम तरीफें उस खुदा को (सजावार हैं) जो बरतर है और गालिब है और हम्द उसी खुदा को है जिसने देखा और पसन्द किया और हम्द उसी खुदा को जो मालिक है और कादिर है और हम्द उसी खुदा को जो मुर्दे को जिन्दा करता है।  
तो गुनाहों से ऐसा पाक हो जाएगा जैसे मां के पेट से पैदाईश के दिन (गुनाहों से पाक व साफ) था।

(हज़रत) मुसअब बिन सईद ने बरिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर हज़रत सईद बिन मालिक से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया कि अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी सहाबी के यहां रोज़ा इफ़्तार करते तो इरशाद फ़रमाते:

रोज़ादारों ने तुम्हारे पास इफ़्तार किया और नेकियों ने तुम्हारा खाना खाया और फ़रिश्तों ने तुम पर रहमत भेजी।

## माहे रजब की बरकतें

माहे रजब ऐसा महीना है कि इसमें दुआयें कबूल और ख़तायें माफ़ होती हैं और जिसने इस महीना में गुनाह किया उसपर उसका दो गुना अज़ाब किया जाता है, इस सिलसिला में शैख़ हिबुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत हुसैन बिन अली कर्म्मल्लाह वजहहू से रिवायत की, हज़रत हसन ने फ़रमाया कि हम तवाफ़ में मशगूल थे कि एक आवाज़ सुनी, कोई शख्स कह रहा है।

ऐ वह जात जो तारीकियों में ग़म ज़दा की दुआ कबूल करता है, ऐ वह जात जो बीमारियों के साथ ग़म व बला दूर करता है। बेशक तेरे ग़रोह ने काबा और हरम के गिर्द रात गुज़ारी और मैं दुआ कर रहा हूँ और चश्मे इलाही नहीं सोती है। अपने फज़ल व करम के सदका में मेरे गुनाहों को बख़्श दे। ऐ वह कि जिसकी बख़्शिश की तरफ़ लोग इशारा करते हैं। अगर तेरी माफ़ी गुनहगार की जानिब सबक़त न करे। कौन है जो गुनहगारों पर बख़्शिश करे।

हज़रत हुसैन फ़रमाते हैं कि मुझसे मेरे वालिद ने फ़रमाया! ऐ हुसैन तुम सुन रहे हो कि वह अपने गुनाहों पर किस तरह रो रहा है और अपने रब को किस तरह पुकार रहा है तुम उधर जाओ शायद वह तुम को मिल जाये उसे बुला लाओ, हज़रत हुसैन फ़रमाते हैं कि मैं उस तरफ़ गया और वह मुझे मिल गया, मैंने उसे देखा कि वह एक खूबसूरत छरेरे बदन का आदमी है उसके कपड़े साफ़ थे और खुशबू आ रही थी मगर उसका दाहिना बाजू शल था मैंने उससे कहा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली कर्म्मल्लाहो वजहहू तुमको बुला रहे हैं यह सुनकर वह शख्स उठा और मफ़लूज हिस्सा को खींचता हुआ हज़रत अमीरुल मोमिनीन की खिदमत में पहुंचा उन्होंने उसका हाल दरयाफ़्त किया और पूछा तुम कौन हो, उसने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन आप इसका हाल क्या दरयाफ़्त फ़रमाते हैं, जो अज़ाब में गिरफ़्तार हो और अहल व अयाल के हुकूक की अदायगी से रोक दिया गया हो (अपाहिज हो) आप ने उसका नाम दरयाफ़्त फ़रमाया, उसने अपना नाम "मनाज़िल बिन लाहक़" बताया, हज़रत अली ने फ़रमाया तुम्हारा किस्सा क्या है? उसने कहा मैं लहव व लइब में और ऐश व तुरब के मामले में सारे अरब में मशहूर था, मैदानों में घोड़े दौड़ाने के सिवा कुछ काम न था ग़फ़लत ने मदहोश कर रखा था कि न मेरी तौबा का एतबार था और न माफ़ी मांगने का (तौबा करता और तौबा तोड़ देता जिस फ़ेअल से माफ़ी मांगता



दोबारा उसी को करता) मेरी हालत यह थी कि रजब और शाबान के महीने में भी गुनाहों के इरतिकाब से बाज़ न आता (बराबर गुनाह किये जाता) मेरा मेहरबान और शफीक बाप मुझे जहन्नम के अज़ाब से डराता था और गुनाहों के हौलनाक अंजाम से बराबर मुतनब्बेह करता था वह कहते कि बेटे? अल्लाह की गिरफ्त और उसकी सज़ा बड़ी सख्त है, उस खुदा की ना फरमानी क्यों करता है जो आग के अज़ाब में मुब्तला करने वाला है, तेरे मजालिम से बहुत से हाथ फरयादी हैं, इज्जत वाले फरिश्ते हुरमत वाला महीना (रजब) और बहुत सी रातें तुझसे नालां हैं, उन नसीहतों के जवाब में उसको मैं मारता पीटता, आखिरकार एक दिन उसने (मेरे मजालिम से) तंग आकर कहा कि खुदा की कसम मैं रोज़ा रखूंगा और कभी नहीं खोलूंगा, बराबर नमाज़ पढ़ूंगा (रात को भी नहीं सोऊंगा) चुनाचे एक हफ़ता अपनी कसम के बमोजिब उन्होंने किया और फिर ऊंटनी पर सवार हो कर मक्का मोअज्जमा में हज्जे अकबर के दिन पहुंच गये और कहने लगे कि मैं अब हरम में जाकर तेरे खिलाफ़ अल्लाह से मदद मांगूंगा (तेरे लिए बद दुआ करूंगा)

चुनाचे हरम में पहुंचकर उन्होंने काबा के पर्दे पकड़ कर इस तरह फरियाद की कि:

1) ऐ वह जाते पाक जिस की तरफ़ दूर दूर से हाज़ी आते हैं और उस बे नियाज़ और यकता जात के लुत्फ़ व करम की आस लगाते हैं मेरी फरियाद सुन! मनाज़िल (मेरा बेटा) मेरी नाफरमानी से बाज़ नहीं आता, ऐ रहमान! मेरे बेटे से मेरा हक़ ले ले, ऐ पाक जात मुझ पर बख्शि़श कर और (मेरी बद दुआ से) मनाज़िल का एक पहलू (बदन का एक रूख़) मफ़लूज़ कर दे, मनाज़िल ने कहा कि उस जात की कसम जिसने आसमान को बलन्द किया है और पानी को चश्मों से निकाला है कि मेरे वालिद अभी यहीं तक कहने पाये थे कि मेरा दायाँ हिस्सा (पहलू) मफ़लूज़ हो गया और मैं उन तख़्तों की तरह (बे हस व हरकत) होकर रह गया जो हरम के कोनों में पड़े रहते हैं लोग सुबह व शाम मेरे पास से गुज़रते तो कहते यह वही है जिसके बारे में अल्लाह तअत्राला ने इसके बाप की बद दुआ कबूल फ़रमा ली।

यह सुन कर हज़रत अली ने फ़रमाया फिर तुम्हारे बाप ने क्या किया? मनाज़िल ने कहा कि अमिरुल मुमिनीन मैंने अपने बाप को राज़ी कर लिया, जब वह मुझसे राज़ी हो गए तो मैंने दरख्वास्त की कि जिस जगह खड़े हो कर आपने मेरे लिये बद दुआ की थी उसी जगह खड़े हो कर आप मेरे लिए दुआ कीजिये उन्होंने मेरी दरख्वास्त कबूल कर ली, हम रवाना हो गए असनाए सफ़र एक ऊंटनी मिल गई, मैंने वालिद को उसपर सवार करा लिया और उनको ले चला, वादीए अराक़ में जब हम पहुंचे तो दरख़्त से एक परिन्दा (पर फड़ फड़ा कर इस तरह) उड़ा कि उसकी आवाज़ से ऊंटनी बिदक गई, मेरे वालिद ऊंटनी से गिर कर हलाक हो गए।

यह तमाम किस्सा सुन कर हज़रत अली ने फ़रमाया मैं तुझे एक दुआ बताता हूँ जिस को मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है हुज़ूर ने फ़रमाया था कि ऐसा कोई ग़म ज़दा नहीं जिसने इन अलफ़ाज़ से दुआ की और अल्लाह ने उसके ग़म दूर न कर दिए हों और न कोई ऐसा मुज़तरिब है जिसने अल्लाह से इन अलफ़ाज़ में दुआ की और अल्लाह तअाला ने उसके इज़्तिराब को ख़त्म न फ़रमा दिया हो मनाज़िल ने कहा बहुत बेहतर (मैंने ज़रूर यह दुआ पढ़ूंगा)

हज़रत हुसैन फ़रमाते हैं कि अमीरुल मुमिनीन ने मनाज़िल को यह दुआ सिखा दी, मनाज़िल ने अल्लाह से वही दुआ की और उसको मरज़ से नजात मिल गई, चुनाचे वह हमारे पास दूसरे दिन सुबह को तंदुरुस्त हो कर आया, मैंने उससे पूछा कि मनाज़िल! तूने क्या अमल किया? मनाज़िल



ने जवाब दिया कि जब तमाम लोग (रात को) सो गए तो मैंने वही दुआ तीन मरतबा पढ़ी, गैब से निदा आई "तेरे लिए अल्लाह काफी है, तूने इस्मे आजम के साथ अल्लाह से दुआ की है" अल्लाह को जब भी इस्मे आजम ले कर पुकारा जाता है अल्लाह तआला दुआ कबूल फरमा लेता है और जो चीज़ उससे तलब की जाती है वह उसको मिल जाती है, उसके बाद मेरी आंख लग गई, मैं ख्वाब में सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जियारत से मुशर्रफ़ हुआ मैंने वह दुआ अर्ज की, हुजूर ने फ़रमाया मेरे इब्ने अम्मे अली ने सच कहा है, इसी दुआ में वह इस्मे आजम है कि अगर इसको लेकर अल्लाह से दुआ की जाए तो वह जरूर कबूल होती है। इसके बाद मेरी आंख खुल गई, कुछ देर बाद मैं दोबारा फिर सो गया मैंने रसूलुल्लाह की फिर जियारत की, मैंने हुजूर से गुज़ारिश की मैं हुजूर वाला से इस दुआ के सुनने का मुश्ताक हूँ हुजूर ने फ़रमाया इस तरह पढ़ो: इलाही! ऐ पोशीदा चीज़ों के जानने वाले! ऐ वह जात जिस की कुदरत से आसमान बनाये गये और ऐ वह जात जिसकी कुदरत से ज़मीन बिछाई गयी। ऐ वह जात जिसके नूरे जलाल से सूरज और चांद रौशन और पुर नूर हैं। ऐ वह जात जिसकी तवज्जोह हर पाक नफ़्स की तरफ़ होती है, ऐ वह जात जो हरासां और तरसां लोगों को खौफ़ से तसकीन देने वाली है, ऐ वह जात जिसके यहां मखलूक की हाजतें पूरी होती हैं, ऐ वह जात जिसने नजात बख़्शी यूसुफ़ को गुलामी की ज़िल्लत से, ऐ वह जात कि जिसका कोई दरबान नहीं कि जिसको पुकारा जाये और न कोई मसाहिब है जिसके पास हाजिरी दी जाये और न कोई वज़ीर है कि जिस को नज़र पेश की जाये और न उसके अलावा कोई रब (परवरदिगार) है कि जिससे दुआ की जाये ऐ वह कि जिसका करम और जूद हाजतों की कसरत के बावजूद बढ़ता ही जाता है, मैं तुझसे दरख्वास्त करता हूँ कि हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे मेरी मुराद अता कर, बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है।

मनाज़िल ने कहा कि यह ख्वाब देख कर मैं बेदार हो गया बेदार हुआ तो मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त था।

हज़रत अली ने फ़रमाया कि इस दुआ को मजबूती के साथ हासिल कर लो यह अर्श के खज़ानों में से एक खज़ाना है। हज़रत उमर के ज़माने का भी एक ऐसा ही वाक़ेआ मनकूल है, बवजहे तवालत हम यहाँ ज़िक्र नहीं करते हैं। हासिल कलाम यह कि किसी जी होश व ख़िरद के लिये ज़ेबा नहीं कि वह गुनाहों को, मज़ालिम हो और मज़लूम की बददुआ को हकीर समझे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जुल्म क़यामत के दिन तारीकियां बन जाएगा।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि जब बन्दा अपने हाथ (सवाल के लिए) अल्लाह के आगे फैलाता है तो अल्लाह तआला उसको ख़ाली हाथ फेरने से हया फ़रमाता है। इस लिए उसको जल्द या ब देर दुनिया ही में दे देता है या आख़िरत में क़यामत के दिन के लिए जमा कर देता है। इस सिलसिले में दो अशआर हैं:

क्या तू दुआ को सुन का उसे हकीर समझता है?  
दुआ की तासीर तो तेरे अंदर नुमायां और जाहिर  
रात के तीर (नाले) ख़ाता नहीं करते मगर  
उनके लिए एक वक़्त है और वक़्त को गुज़रना है



## मजलिस

# माहे शाबान की फ़ज़ीलत

### माहे शाबान और शाबान की पन्द्रहवीं शब

शैख अबू नसर ने बिल असनाद अबू सलमा से और उन्होंने उम्मुल मोमेनीन हजरत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहो अन्हा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम माहे शाबान के रोजे इस तरह रखते थे कि हम कहते थे हुजूर अब कोई दिन नागा नहीं फरमाएंगे और जब हुजूर नागा फरमाते थे तो हम कहते थे कि अब (इस माह में) हुजूर रोजा नहीं रखेंगे और मैंने यह भी कभी नहीं देखा कि सिवाए माहे रमजान के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी महीने के पूरे रोजे रखे हों और मैंने यह भी नहीं देखा कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शाबान से ज्यादा किसी महीने में रोजे रखे हों (अलावा रमजान के) यह हदीस सहीह है इसको इमाम बुखारी ने बरिवायत अब्दुल्लाह इब्ने यूसुफ इमाम मालिक से रिवायत की है।

शैख अबू नसर ने बिल असनाद हजरत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहो अन्हा से रिवायत की है कि आपने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस तरह मुसलसल रोजे रखते थे कि हम ख्याल करने लगते कि आप किसी दिन का रोजा नहीं छोड़ेंगे और जब आप रोजादार न होते तो हम ख्याल करते कि आप अब रोजा नहीं रखेंगे। आपको शाबान के रोजे बहुत ज्यादा महबूब थे। मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह क्या सबब है कि आप माहे शाबान में रोजे रखते हैं? आपने फरमाया, आएशा! यह ऐसा महीना है कि साल के बाकी अर्सा में मरने वालों के नाम मलकुल मौत को लिख कर इस माह में दे दिये जाते हैं मैं चाहता हूँ कि मेरा नाम ऐसी हालत में नक्ल करके दिया जाए कि मेरा रोजा हो।

अबू नसर ने अपने वालिद मोहम्मद की असनाद से बरिवायत अता बिन यसार हजरत उम्मे सलमा से नक्ल किया है कि आपने फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रमजान के अलावा किसी महीने में इतने रोजे नहीं रखते थे जितने माहे शाबान में। इसकी वजह यह है कि (साल में) मरने वालों के नाम जिन्दों की फेहरिस्त से निकाल कर मुर्दों की फेहरिस्त में शामिल कर दिये जाते हैं, आदमी सफर में होता है हालांकि उसका नाम मरने वालों की फेहरिस्त में लिख लिया जाता है।

शैख अबू नसर ने बिल असनाद हजरत आएशा रजियल्लाहो अन्हा से रिवायत की है कि उन्होंने फरमाया हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नजदीक सबसे ज्यादा महबूब महीना शाबान का था चूँकि वह रमजान से मुत्तसिल है।

हजरत अब्दुल्लाह ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो माहे शाबान के आखिरी दो शम्बा रोजा रखेगा तो उसकी मगफिरत कर दी जाएगी। आखिरी दो शम्बा से मुराद है शाबान का वह दो शम्बा जो आखिरी दिनों में बाक़ेअ हो या न हो कि महीना के आखिरी दिन इसलिए कि रमजान से एक या दो दिन पहले (शाबान में) रोजा रखना मना है।



हजरत अनस बिन मालिक से मरवी है कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस माह का नाम शाबान इसलिए रखा गया कि इस माह में रमजान के लिए बेशुमार नेकियां तकसीम की जाती हैं और रमजान नाम इसलिए रखा गया कि यह महीना गुनाहों को जला देता है।

## अल्लाह तआला का इन्तेखाब और बुजुर्ग महीने

### अल्लाह तआला की तखलीक़ात

अल्लाह तआला फ़रमाता है: तेरा रब जो चाहता है पैदा करता है और उससे इन्तेखाब कर लेता है। पस अल्लाह तआला ने हर नौअ से चार का इन्तेखाब फ़रमाया और फिर उन चार से एक का इन्तेखाब फ़रमा लिया। मलाइका से अल्लाह तआला ने चार को मुन्तख़ब फ़रमाया यानी हज़रत जिब्रील, हज़रत मीकाईल, हज़रत इस्राफ़ील, हज़रत इज़राईल अलैहिमुस्सलाम, फिर इन चार में से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को मुन्तख़ब फ़रमा लिया इसी तरह अम्बिया में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और सय्यदे आलम मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पसन्द फ़रमाया और उनमें से हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुन्तख़ब फ़रमाया। सहाबा कराम से चार को पसन्द फ़रमाया यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फारूक़, हज़रत उसमान जुन्नुरैन और हज़रत अली मुर्तज़ा रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन, फिर उनमें से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को मुन्तख़ब फ़रमाया।

मसाजिद में चार मस्जिदें पसन्द फ़रमाई यानी मस्जिदे हराम, मस्जिदे अक़सा, मस्जिदे मदीना और मस्जिदे तूरे सीना, फिर उनमें से मस्जिदे हराम को मुन्तख़ब फ़रमाया। दिनों में चार दिनों को पसन्द किया, यानी यौमुल फ़ित्र, यौमुल अज़हा, यौमुल अरफ़ा और यौमे आशूरा। फिर इन चारों में से यौमे अरफ़ा को पसन्द फ़रमाया। चार रातें पसन्द फ़रमाई यानी शबे बरात, शबे क़द्र, शबे जुमा और शबे ईद, इन चारों से शबे क़द्र को इन्तेखाब फ़रमाया। बस्तियों में से चार बस्तियों को पसन्द फ़रमाया। मक्का मुकर्रमा, मदीना तय्यबा, बैतुल मुक़द्दस और मसाजिदुल अशाएर, इन चारों से मक्का मुकर्रमा को चुन लिया। पहाड़ों से चार पहाड़ इन्तेखाब फ़रमाए, उहद, तूरे सीना, लुक़क़ाम और लुबनान, उनमें से तूर को मुन्तख़ब फ़रमा लिया। दरियायों में से चार दरिया पसन्द फ़रमाए, जिहून, सिहून, नील और फ़रात, उनमें से फ़रात को मुन्तख़ब फ़रमाया। महीनों में से चार महीने पसन्द फ़रमाए, रजब, शाबान, रमजान और मुहर्रम। इनमें से शाबान को इन्तेखाब फ़रमा लिया और इसको रसूलुल्लाह का महीना करार दिया। पस जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तमाम अम्बिया में अफ़ज़ल हैं उसी तरह तमाम महीनों में माहे शाबान अफ़ज़ल है।

### शाबान रसूलुल्लाह का महीना है

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया शाबान



मेरा महीना है, रजब अल्लाह का और रमज़ान मेरी उम्मत का। शाबान गुनाहों को दूर करने वाला है और रमज़ान बिल्कुल पाक कर देना वाला। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया रजब और रमज़ान के दर्मियान शाबान का महीना है लोग इसकी तरफ़ से गुफ़लत करते हैं हालांकि इस माह में बन्दों के आमाल रब्बुल आलमीन के हुजूर पेश किये जाते हैं इस लिये मैं पसन्द करता हूँ कि मेरे आमाल अल्लाह के हुजूर में इस तरह पेश हों कि मेरा रोज़ा हो।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि हुजूर अक़दस ने फरमाया रजब का शरफ़ और फ़ज़ीलत बाकी महीनों पर ऐसी है जैसे दूसरे कलामों पर कुरआन मजीद की फ़ज़ीलत और तमाम महीनों पर शाबान की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे तमाम अंबिया पर मेरी फ़ज़ीलत है और दूसरे महीनों पर रमज़ान की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे तमाम काएनात पर अल्लाह की फ़ज़ीलत।

हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के असहाब जब शाबान का चांद देख लेते तो कलाम मजीद की तिलावत में मुन्हमिक और महव हो जाते और मुसलमान अपने अमवाल की ज़कात निकालते ताकि मिसकीन और ग़रीब मुसलमानों में भी रोज़े रखनने की सकत पैदा हो जाये। हुक्काम कैदियों को तलब करते जिस पर हद कायम होना होती उस पर हद कायम करते बाकी मुजरिमों को आज़ाद कर देते। सौदागर अपने कर्ज़ अदा करते, दूसरों से अपना कर्ज़ उसूल कर लेते और रमज़ान का चांद उनको नज़र आ जाता तो (दुनिया के तमाम कामों से फारिग होकर) एतकाफ़ में बैठ जाते।

## माहे शाबान के फ़ज़ाएल

### लफ़्ज़ शाबान की तहकीक़

शाबान में पांच हुरुफ़ हैं। शीन शरफ़ का है, ऐन उलू का, बा, बिरून (एहसान और भलाई) का, अलिफ़ उलफ़त का और नून नूर का है। इस महीने में यह पांचों हुरुफ़ बारगाहे इलाही से बन्दे के लिये मख़सूस होते हैं, इस माह में नेकियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, बरकतों का नुज़ूल होता है, ख़ताओं को माफ़ किया जाता है, रसूलुल्लाह पर दरुद की कसरत की जाती है (कसरत से आप पर दरुद भेजा जाता है) दरुद भेजने का यह ख़ास महीना है अल्लाह तआला का इरशाद है:

बेशक अल्लाह और उसके फ़रिशते नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरुद भेजते हैं ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दरुद व सलाम भेजो।

अल्लाह तआला की तरफ़ से सलात के मानी रहमत के हैं, मलाएका की तरफ़ से सलात के मानी, मदद, नुसरत और इस्तिग़फ़ार के और मोमिनों की तरफ़ से सलात के मानी हैं दुआ और सना के। मुजाहिद का कौल है कि सलात के मानी अल्लाह तआला की तरफ़ से तौफीक व रहमत के हैं, फ़रिश्तों की जानिब से मदद व नुसरत के और मुसलमानों की तरफ़ से पैरवी करने और इज़्ज़त व एहताराम पहुंचाने के हैं।

इब्ने अता कहते हैं कि सलात के मानी अल्लाह की तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर, ताल्लुके इत्तेसाल की बका के हैं और मलाइका की तरफ़ से ताज़ीम का इज़हार



करने और उम्मत की तरफ से सलात के मानी हैं, शफाअत तलब करना।

रसूल खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जो एक बार मुझ पर दरुद भेजता है अल्लाह तआला उसपर दस बार रहमत नाज़िल फरमाता है। इस लिये हर दानिशमंद मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वह इस महीने में गाफिल न रहे बल्कि रमज़ान के इस्तिक़बाल की तैयारी शुरू कर दे। गुज़िशता आमाल से तौबा करके गुनाहों से पाक हो जाए, माहे शाबान ही में अल्लाह के सामने ज़ारी करे, रसूलुल्लाह का वसीला पकड़े कि अल्लाह उसके दिल की खराबी को दूर फरमा दे और दिल की बीमारी का इलाज हो जाये, इस सिलसिला में ताखीर और लैत वा लअल से काम न ले यह न कहे कि कल कर लूंगा इसलिये कि दिन तो सिर्फ़ तीन हैं, एक कल जो गुज़र गया, एक आज जो अमल का दिन है एक आने वाला कल जिसकी बस उम्मीद ही उम्मीद है, कहा नहीं जा सकता कि वह उसके लिये आयेगा या नहीं, गुज़रा हुआ कल एक नसीहत है, आज का दिन ग़नीमत है, आने वाला कल सिर्फ़ एक खयाली चीज़ है। इसी तरह महीने तीन हैं, रजब तो गुज़र गया, वह लौट कर अभी नहीं अयेगा, रमज़ान का इन्तेज़ार है (आने वाला है) मालूम नहीं कि इस महीने तक जिन्दा रहे या न रहे, बस शाबान ही इन दोनों के दरमियान है इसलिये इस ताअत वा बन्दगी को ग़नीमत समझना चाहिये।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शख्स से इरशाद फरमाया और उसे नसीहत फरमाई यह साहब हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर अलखत्ताब थे, आप ने फरमाया कि पांच बातों को पांच बातों के वाक़ेअ होने से पहले ग़नीमत जानो।

(1) बुढ़ापे से पहले जवानी को (2) बीमारी से पहले सेहत को (3) मुफ़लिसी से पहले तवंगरी को (4) शग़ल से पहले फुरसत को (5) मरने से पहले जिन्दगी को।

## फ़ज़ाएल व बरक़ाते शबे बरात

अल्लाह तआला का इरशाद है: क़सम है रौशन किताब की जिसे हमने बरक़त वाली रात में उतारा है। हज़रते इब्ने अब्बास ने फ़रमाय कि हा मीम यानी रोजे क़यामत तक जो कुछ होने वाला है अल्लाह उसका फ़ैसला फ़रमा चुका है वल किताबुल मुबीन क़सम है किताबे मुबीन की (यानी क़रआन मजीद की) इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलतिम मुबारकहू हमने यह क़रआन (किताबे मुबीन) बरक़त वाली रात में उतारा, यानी निस्फ़ शाबान की रात में। इकरमा के अलावा अक़सर मुफ़स्सेरीन का यही कौल है। इकरमा का कौल है कि लैलतूल मुबारका से शबे क़द्र मुराद है। मुफ़स्सेरीन का यही कौल है। इकरमा का कौल है कि लैलतूल मुबारका से शबे क़द्र मुराद है।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में बुहत सी चीज़ों को मुबारक फ़रमाया है। क़रआन का भी मुबारक कहा गया है फ़रमाया है: यह क़रआन मुबारक ज़िक़्र है जिस को हमने नाज़िल किया। क़रआन की बरक़तें तरह तरह की हैं मसलन जिसने इसको पढ़ा और उसको माना उसने नार जहन्नम से नजात पाई। यह बरक़त उस से बढ़ कर उसके आबा व अजदाद और औलाद तक पहुंचती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने क़रआन पाक की तिलावत और औराक़ देख कर की अल्लाह तआला उसके मां बाप से अज़ाब हलका कर देता है। ख़वाह वह काफ़िर ही क़ियों न हों।

इसी तरह पानी को भी बरक़त वाली चीज़ों में फ़रमाया है: हम ने ऊपर से बरक़त वाला पानी



नाज़िल किया, यह पानी ही की बरकत है कि चीज़ें उससे ज़िन्दा हैं जैसा कि इरशादे रब्बानी है: हम ने सब चीज़ों को पानी से ज़िन्दा किया है फिर भी तुम ईमान नहीं लाते। कहा गया है कि पानी में दस खूबियां हैं, यानी, (1) रिक्कत (पतलापन) (2) नर्मि (3) ताकत (4) पाकीज़गी (5) सफ़ाई (6) हरकत (7) तरी (8) खुनकी (9) तवाजुअ (10) ज़िन्दगी। यह सब खूबियां अल्लाह तआला ने दानिशमंद मोमिन को भी अता फ़रमाई हैं दिल में नर्मि भी है और रिक्कत भी, ताअत व बन्दगी की ताकत भी है और लताफ़ते नफ़्स भी, अमल की सफ़ाई भी है और भलाई की तरफ़ हरकत भी है आंखों में तरी, गुनाहों से अफ़सुरदगी, मख़लूक से तवाजुअ भी है और हक़ बात सुनने से ज़िन्दगी भी।

पानी की तरह अल्लाह तआला ने जैतून को भी मुबारक फ़रमाया है। इरशादे रब्बानी है: बरकत वाले जैतून के दरख़त से) यही वह पहला दरख़त है जिसका फल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने उतारे जाने के बाद सबसे पहले खाया इसमें गिज़ा भी है और रौशनी बख़्शने वाला तेल भी। अल्लाह तआला ने इस बारे में इरशाद फ़रमाया: यह दरख़त खाने का काम देता है (खाने वालों के लिये सालन है) यह भी कहा गया है कि शज़रए मुबारका से मुराद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। एक कौल यह है कि इससे मुराद कुरआन करीम है। या ईमान है या मोमिन का वह नफ़से मुतमइन्ना है जो नेकी का हुक्म करने वाला है और ममनूआत से बचने वाला और कज़ा व क़द्र को कबूल करने वाला है और अल्लाह तआला ने जो कुछ लिखा और हुक्म फ़रमाया वह उसकी मुवाफ़िक़त करने वाला है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का भी अल्लाह तआला ने मुबारक नाम रखा। हज़रत ईसा का कौल नक़ल फ़रमाते हुए अल्लाह तआला का इरशाद है और मुझे बरकत वाला बनाया गया जहां कहीं भी मैं हूँ)

यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही बरकत थी कि हज़रत की वालदा मरियम अलैहिस्सलाम के लिये अल्लाह तआला ने ख़जूर के खुशक दरख़त में फल पैदा कर दिये थे और नीचे चश्मा खां फ़रमा दिया था, चुनांचे इरशाद फ़रमाया:

दरख़त के नीचे से मरियम को (हमने) पुकारा कि ग़मगीन न हो, तेरे रब ने तेरे नीचे चश्मा जारी कर दिया है और ख़जूर के दरख़त के तने को हिला तेरे ऊपर पक्के फल गिरेंगे बस बच्चा (के दीदार) से आंखें ठंडी कर।

मादरज़ाद नाबीना और कोढ़ियों को तंदुरुस्त कर देना दुआ से मुद्दों को ज़िन्दा कर देना और दूसरे मोज़ज़ात भी ईसा अलैहिस्सलाम की बरकतों में से हैं। काबा शरीफ़ को भी मुबारक फ़रमाया गया है।

बेशक सबसे पहला घर जो लोगों की इबादत के लिए कायम किया गया वह घर है जो मक्का में है बरकतों वाला है।

यह काबा ही की बरकत है जो कोई उसमें दाख़िल हो उस पर गुनाहों का कितना ही बोझ क्यों न हो जब वह उस (घर) से बाहर आता है तो उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये गये होते हैं (हो चुकते हैं) अल्लाह तआला का इरशाद है:

यानी जो मोमिन गुनाहों से तौबा करने के लिए काबा में दाख़िल होता है अल्लाह उसको अज़ाब से मामून व महफूज़ कर देता है उसकी तौबा कबूल कर लेता है और उसको बख़्श दिया



जाता है। बाज़ उलमा ने मज़कूरा आयत में मामूनी होने से मुराद यह ली है कि हरम के अन्दर किसी को कोई तकलीफ नहीं पहुंचाई जा सकती ता वक्तेकि वह बाहर निकल कर न आ जाये। बुनाचे यही वजह है कि हरमते काबा का लिहाज व पास करते हुए हरम के जानवरों का शिकार करना वहां के दरख्त काटना हराम करार दिया गया है यह खाना काबा की हरमत की वजह से है और मस्जिदे हराम की हरमत खाना काबा की हरमत के बाएस है, मक्का मुकर्रमा की हरमत मस्जिदे हराम की हरमत के बाएस है हरम की हरमत मक्का मुकर्रमा की बिना पर है जैसा कि मनकूल है कि काबा मस्जिदे हराम वालों का किब्ला है और मस्जिदे हराम अहले मक्का का किब्ला है मक्का मुकर्रमा अहले हरम का किब्ला है और हरम तमाम अहले ज़मीन का किब्ला है इसका नाम मक्का इसलिए रखा गया है कि वहां कौमों का हुजूम व इज्दहाम होता है और आदमी उस हुजूम में एक दूसरे पर रौंदे जाते हैं बक्का और मक्का एक ही लफ्ज़ हैं।

इसी तरह शबे बरात भी बरकत वाली चीज़ों में से है अल्लाह तआला ने इसको भी मुबारक फरमाया है क्योंकि अहले ज़मीन के लिए इस रात में रहमत, बरकत, खैर, गुनाहों से माफ़ी और नुजूल मग़फ़िरत है इसके सबूत में दूसरी रिवायात के मिनजुमला एक रिवायत वह भी है जो अबूनसर ने अपने वालिद से नक़ल की है कि जो उन्होंने बिला असनाद हज़रत अली से बयान की कि आपने फरमाया कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि निस्फ़ शाबान की रात में अल्लाह तआला करीब तरीन आसमान की तरफ़ नुज़ूल फरमाता है और मुशरिक, दिल में कीना रखने वाले और रिशतादारियों को मुनक़तअ करने वाले और बदकार औरत के सिवा तमाम लोगों को बख़्श देता है।

शैख अबूनसर ने अपने वालिद से बिल असनाद बयान किया कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाह तआला अन्हा ने बयान फरमाया कि निस्फ़ शाबान की रात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरी चादर के अन्दर से ख़ामोशी के साथ बाहर निकल गये खुदा की कसम मेरी यह चादर न हरीर की थी न कज़ की न कतान की थी और न ख़ज की। नरवह ने अर्ज किया फिर किस कपड़े की थी हज़रत सिद्दीका ने फरमाया उसका ताना बालों का था और बाना ऊंट के बालों का। इसके बाद आपने फरमाया कि इस तरह हुज़ूर के निकल जाने से मुझे यह गुमान हुआ कि हुज़ूर वाला किसी और बीवी के पास तशरीफ़ ले गये हैं मैंने उठकर आप को हुज़रे में तलाश किया तो मेरे हाथ हुज़ूर के पावों से छू गये आप उस वक़्त सजदे में थे मैंने दुआ के अलफ़ाज़ याद कर लिए थे आप सजदे में फरमा रहे थे:

या अल्लाह! मेरा जिस्म और मेरा दिल तुझे सजदा करता है मेरा दिल तुझ पर ईमान लाया और मैं तेरी नेमतों का शुक्र अदा करता हूँ अपने गुनाहों का एतराफ़ करता हूँ मैंने अपने नफ़स पर जुल्म किया तू मुझे बख़्श दे तेरे सिवा कोई गुनाहों का बख़्शने वाला नहीं है मैं तेरे अज़ाब से बचने के लिए तेरी पनाह में आता हूँ तेरे ग़ज़ब से बचने के लिए तेरी रज़ा का तालिब हूँ तेरे अज़ाब से अमन में रहने के लिए तुझ ही से दरख़्वास्त करता हूँ तेरी हम्द व सना कोई बयान नहीं कर सकता तूने आप अपनी सना की है तू ही आप अपनी सना कर सकता है और कोई नहीं कर सकता।

हज़रत आइशा फरमाती है कि सुबह तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इबादत में मसरूफ़ रहे कभी आप खड़े हो जाते थे और कभी बैठ कर इबादत फरमाते यहां तक कि आप



गुनियतुत्तालिबीन

के पाए मुबारक़ मुतवरम हो गये, मैं आप के पांव को दबाते हुए कहने लगी मेरे मां बाप आप पर कुरबान! क्या अल्लाह तआला ने आप के अगले पिछले तमाम गुनाह माफ़ नहीं कर दिए हैं क्या अल्लाह तआला ने आप के साथ ऐसा करम नहीं किया और आप पर लुत्फ़ व करम नहीं किया? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ आइशा! क्या मैं खुदा का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनू? तुम्हें मालूम है यह रात कैसी है? मैंने अर्ज किया आप फ़रमायें यह रात कैसी है? हुजूर ने फ़रमाया इस रात में साल भर में पैदा होने वाले हर बच्चे का नाम लिखा जाता है और इसी के साथ हर मरने वाले का नाम भी लिखा जाता है इसी रात मखलूक का रिज़्क तकसीम होता है इसी रात उनके आमाल व अफ़आल उठाये जाते हैं। मैंने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह! क्या कोई शख्स ऐसा नहीं है जो अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल हो? आप ने फ़रमाया कि कोई शख्स भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा। मैंने अर्ज किया क्या आप भी? आप ने फ़रमाया हां मैं भी मगर अल्लाह तआला ने मुझे अपनी रहमत में ढांप लिया है, उसके बाद हुजूर ने अपना दस्ते मुबारक़ चेहरे और सर पर फेरा।

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहो अन्हा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया, आइशा यह कौन सी रात है? उन्होंने फ़रमाया अल्लाह और उसके रसूल ही बख़ूबी वाकिफ़ हैं। हुजूर ने फ़रमाया यह निस्फ़ शाबान की रात है इस रात में दुनिया के आमाल, बन्दों के आमाल ऊपर उठाये जाते हैं (उनकी पेशी बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में होती है।) अल्लाह तआला उस रात बनी कल्ब की बकरियों के बालों की तादाद में लोगों को दोज़ख़ से आज़ाद करता है तो क्या तू मुझे आज की रात इबादत की आज़ादी देती हो? मैंने अर्ज किया ज़रूर! फिर आप ने नमाज़ पढ़ी और क़याम में तख़फ़ीफ़ की सूरः फ़ातिहा और एक छोटी सूरत पढ़ी फिर आधी रात तक आप सजदे में रहे फिर खड़े हो कर दूसरी रकअत पढ़ी और पहली रकअत की तरह इसमें किअरत फ़रमाई (छोटी सूरत पढ़ी) और फिर आप सजदे में चले गये, यह सजदा फ़ज्र तक रहा मैं देखती रही मुझे यह अंदेशा हो गया कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल की रूह (मुबारक) कब्ज़ फ़रमा ली है फिर जब मेरा इंतज़ार तवील हुआ (बहुत देर हो गई) तो मैं आप के करीब पहुंची और मैंने हुजूर के तलवों को छुआ तो हुजूर ने हरकत फ़रमाई मैंने खुद सुना कि हुजूर सजदे की हालत में यह अल्फ़ाज़ अदा फ़रमा रहे थे:

इलाही मैं तेरे अज़ाब से तेरी उफ़व और बख़्शिश की पनाह में आता हूं तेरे क़हर से तेरी रज़ा की पनाह में आता हूं तुझसे ही पनाह चाहता हूं तेरी जात बुजुर्ग़ है मैं तेरी शायाने शान सना बयान नहीं कर सकता तू ही आप अपनी सना कर सकता है और कोई नहीं।

सुबह को मैंने अर्ज किया कि आप सजदे में ऐसे कलमात और फ़रमा रहे थे कि वैसे कलमात मैंने आपको कहते कभी नहीं सुना, हुजूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया क्या तुम ने याद कर लिये हैं? मैंने अर्ज किया जी हाँ! आपने फ़रमाया खुद भी याद कर लो और दूसरों को भी सिखाओ क्योंकि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे सजदे में इन कलमात को अदा करने का हुक्म दिया था।

अबू नसर ने बिल असनाद मरवा से रिवायत की कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि एक रात मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बिस्तर पर नहीं पाया



गुनियतुतालिबीन

(आपकी तलाश में) घर से निकली, मैंने देखा कि आप बकीअ (के कब्रिस्तान) में मौजूद हैं और आपका सर आसमान की जानिब उठा हुआ है। हुजूर ने मुझे देख कर फरमाया क्या तुम्हें इस बात का अंदेशा है कि अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारी हक तलफी करेंगे, मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह मेरा गुमान यही था कि आप किसी बीबी के यहाँ तशरीफ ले गए हैं, हुजूर ने फरमाया अल्लाह तआला निस्फ़ शाबान की रात में दुनिया के आसमान पर जलवा फरमा होता है और बनी कल्ब की बकरियों के बालों के शुमार से ज्यादा लोगों की बख्शिश फरमा देता है।

हज़रत इब्ने अब्बास के आज़ाद करद गुलाम (मौला) इक्रमा ने आयत फीहा युफ़रको कुल्लो अमरीन हकीम की तफ़सीर में फरमाया कि निस्फ़ शाबान की रात में अल्लाह तआला आइन्दा साल के तमाम उमूर का इन्तेज़ाम फरमा देता है, बाज़ जिन्दों का मुर्दों की फेहरिस्त में लिख देता है और बैतुल्लाह के हाजियों के नाम लिख देता है (हज करने वालों के नाम लिख दिये जाते हैं) फिर उस लिखी हुई तादाद में कमी बेशी नहीं होती।

हकीम बिन केसान ने फरमाया कि अल्लाह तआला निस्फ़ शाबान की रात में अपनी मखलूक की तरफ़ तवज्जोह फरमाता है जो उससे पाकी का तलबगार होता है उसको पाक फरमा देता है और आइन्दा (इसी रात तक पाक रखता है) अता बिन यसार से मरवी है कि निस्फ़ माहे शाबान की रात में तमाम साल के उमूर पेश हो जाते हैं कुछ लोग सफ़र को जाते हैं और उनका नाम जिन्दों से निकाल कर मुर्दों में लिख दिया जाता है। कोई निकाह करता है हालांकि वह भी जिन्दों की फेहरिस्त से निकाल कर मुर्दों की फेहरिस्त में शामिल कर दिया जाता है।

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत आइशा सिद्दीका से रिवायत की कि आप ने फरमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना कि अल्लाह तआला चार रातों में खैर व बरकत के दरवाज़े सुबह तक खुला रखता है यानी शबे ईदुल अज्हा, शबे ईदुल फ़ित्र, शबे निस्फ़ माहे शाबान, इस रात मखलूक की उम्र, उनकी रोज़ी और हाजियों के नाम लिखे जाते हैं, शबे यौमे अरफ़ा। हज़रत सईद ने फरमाया कि मुझसे इब्राहीम बिन अबी बख़ीअ ने फरमाया कि वह पांच रातें है यानी पांचवीं रात शबे जुमा है।

## शबे बरात के इन्आमात

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लहो अन्हो से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरे पास निस्फ़ माहे शाबान की शब जिबील आए और फरमाया या रसूलल्लाह! आसमात् की तरफ़ अपना सरे मुबारक उठाइए, मैंने उनसे दरयाफ़्त किया कि यह कौन सी रात है, उन्होंने कहा यह वह रात है जिस रात अल्लाह तआला रहमत के तीन सौ दरवाज़े खोल देता है और हर उस शख्स को बख़्श देता है जिसने उसके साथ किसी को अपना शरीक नहीं ठहराया बशर्ते कि वह वह जादूगर न हो, काहिन न हो और सूद ख़्वा न हो, जानी न हो, आदी शराबी न हो, उन लोगों की अल्लाह तआला उस वक़्त तक बख़्शिश नहीं फरमाता जब तक वह तौबा न कर लें। फिर जब रात का चौथाई हिस्सा गुज़र गया तो जिब्रील अलैहिस्सलाम फिर आए और कहा या रसूलल्लाह! अपना सरे मुबारक उठाइये, आपने ऐसा ही किया, आप ने देखा कि जन्नत के दरवाज़े खुले हैं और पहले दरवाज़े पर एक फरिश्ता पुकार रहा है, खुशी हो उस शख्स के लिए जिसने रात को रुकूअ किया, दूसरे दरवाज़ा पर और एक फरिश्ता निदा दे रहा है, खुशी



हो उसके लिए जिसने इस रात में सजदा किया। तीसरे दरवाजा पर एक और एक फरिश्ता निदा दे रहा था, खुशी हो उसके लिए जिसने इस रात दुआ की, चौथे दरवाजे पर एक फरिश्ता दे रहा था खुशी हो इस रात में उन लोगों को जो जिक्र करने वाले हैं, पांचवें दरवाजे पर फरिश्ता पुकार रहा था खुशी हो उसके लिए जो अल्लाह के खौफ से इस रात में रोया, छठे दरवाजे पर फरिश्ता पुकार रहा था इस रात में तमाम मुसलमानों के लिए खुशी, सातवें दरवाजे पर फरिश्ता निदा दे रहा था क्या है कोई मांगने वाला कि उसकी आरजू और तलब पूरी की जाए, आठवें दरवाजे पर फरिश्ता पुकार रहा था क्या कोई माफी का तलबगार है कि उसके गुनाह माफ किये जायें। हुजूर फरमाते हैं कि मैंने कहा कि जिब्रईल यह दरवाजे कब तक खुले रहेंगे? जिब्रईल ने कहा कि अब्बल शब से तुलूअ फजर तक। उसके बाद जिब्रईल ने कहा ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस रात में दो जख से रिहाई पाने वाले की तादाद बनी कल्ब की बकरियों के बालों के बराबर होगी।

## शबे बरात की वजहे तस्मीया

### दो बरातें

इस रात को शबे बरात इसलिये कहा जाता है कि इस रात में दो बेजारिया हैं (1) बदबख्त लोग अल्लाह तआला से बेजार होते हैं और दूर हो जाते हैं और औलिया अल्लाह जिल्लत और गुमराही से दूर हो जाते हैं। रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब निस्फ शाबान की रात होती है तो अल्लाह तआला अपनी मखलूक पर नज़र फरमाता है (मुतवज्जेह होता है) मोमिनो को तो बख्श देता है और काफिरो को और ढील दे देता है और और कीना रखने वालों को उस वक्त तक छोड़े रखता है जब तक वह कीना परवरी से बाज़ न आ जायें। रिवायत है कि फरिश्तों के लिये आसमान में दो रातें ईद की हैं जिस तरह जमीन पर मुसलमानों के लिए दो दिन ईद के हैं। फरिश्तों की ईद की रातें हैं शबे बरात और शबे क़द्र। मुसलमानों की ईदों के दिन हैं ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा। फरिश्तों की ईदें रात में इस लिए रखी गई हैं कि वह सोते नहीं हैं, मुसलमानों की ईदें दिन में इसलिए रखी गई हैं कि वह सोते हैं, बाज़ उलमा ने कहा है कि इसमें हिकमते इलाही यह है कि शबे बरात को तो ज़ाहिर फरमा दिया और शबे क़द्र को पोशीदा रखा। शबे क़द्र रहमत व बख़शिश और जहन्नम से आज़ादी की रात है इसे अल्लाह तआला ने पोशीदा इसीलिए रखा कि लोग इसी पर तकिया न कर लें और आमाले सालेह से गाफिल न हो जायें। शबे बरात को इसलिए ज़ाहिर कर दिया कि यह रात हुक्म व फैसला की रात है और खुशी व अलम की रात है, रद्द व कबूल की रात है, रसाई और ना रसाई की रात है (विस्ल व एराज़ से मुराद है) खुश नसीबी और बदबख्ती की रात है, हुसूले शरफ और अंदेशाए अज़ाब की रात है। किसी को इसमें सआदत नसीब होती है और किसी को शकावत, किसी को जज़ा दी जाती है किसी को रुसवा किया जाता है, किसी को सरफराज़ किया जाता है और किसी को सर निगू किया जाता है, किसी को अज़्र दिया जाता है और किसी को जुदा किया जाता है। बहुत से कफ़न धोये हुए तैयार रखे होते हैं लेकिन कफ़न



पहनने वाले बाजारों में घूमते फिरते हैं (अपनी ला इल्मी और गफलत के बदौलत) बहुत से लोग ऐसे हैं जिन की कब्रें खुदी हुई तैयार होती हैं और कब्रों वाले खुशी में मगन गफलत में पड़े होते हैं। बहुत से चेहरे हंसते हुए होते हैं हालांकि उनकी हलाकत का वक्त बहुत करीब होता है, बहुत से मकानों की तामीर करीब तकमील होती है लेकिन साहबे मकान की मौत करीब लगी हुई है। बहुत से बन्दे सवाब के उम्मीदवार होते हैं लेकिन नाकामी उठाना पड़ती है बहुत से लोग जन्नत का यकीन रखे हुए होते हैं लेकिन दोजख का सामना करना पड़ता है, बहुत से बन्दों का विस्ल का यकीन होता है लेकिन फिराक का मुंह देखना पड़ता है, बहुत से लोग अता के उम्मीदवार होते हैं और मुसीबत का सामना करना पड़ता है, बहुत से लोग हुकूमत की आस लगाये होते हैं और उन्हें हलाकत से दो चार होना पड़ता है।

## हजरत हसन बसरी का वाक़ेआ

रिवायत है कि हजरत हसन बसरी निस्फ़ शाबान की शब को अपने मकान से बाहर निकल रहे थे उस वक्त उनके चेहरे से ऐसा ज़ाहिर हो रहा था कि जैसे उनको कब्र में दफ़न कर दिया गया था और वह उससे बाहर निकल कर आये हैं, आप से इसकी वजह दरयाफ़्त की गई, आप ने फ़रमाया कि खुदा की कसम जिस शख्स की कश्ती (वस्त समन्दर) में टूट गई हो उसकी मुसीबत मेरी मुसीबत से कठिन नहीं है। आप से पूछा गया कि ऐसा क्यों है, आप ने फ़रमाया मुझे अपने गुनाहों का तो यकीन है लेकिन मेरी नेकियां मारिजे ख़तर में हैं मालूम नहीं वह कबूल होती हैं या मेरे मुंह पर मार दी जायेंगी।

## शबे बरात में नमाज़

शबे बरात में जो नमाज़ (सल्फ़ से मंनकूल और) वारिद है उसमें सौ रकअतें हैं एक हजार मरतबा सूरह इख़लास के साथ यानी हर रकअत में दस मरतबा कुल हो वल्लाह अल्लाहु अहद पढ़ी जाये। इस नमाज़ का नाम सलातुल ख़ैर है इसके पढ़ने से बरकतें हासिल होती हैं। सल्फ़ सालेहीन यह नमाज़ ब जमाअत पढ़ते थे इस नमाज़ की बड़ी फज़ीलत आई है इसका सवाब कसीर है। हसन बसरी ने फ़रमाया कि मुझसे सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीस सहाबा का ने बयान किया कि इस रात को जो शख्स यह नमाज़ पढ़ता है अल्लाह तआला उसकी तरफ़ सत्तर बार देखता है और हर बार के देखने में सत्तर हाजतें उसकी पूरी करता है जिनमें सबसे अदना हाजत उसके गुनाहों की मग़फ़िरत है। मुस्तहब है कि इस नमाज़ यानी सलातुल ख़ैर को उन चौदह रातों में भी पढ़े जिनमें इबादत करना और शब बेदारी करना मुस्तहब है। इन रातों का जिक़्र माहे रजब के फ़जाएल में गुजर चुका है ताकि नमाज़ पढ़ने वाले को इज़्जत व फज़ीलत और सवाब हासिल हो।



## बाब 14

## रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाएल में

अल्लाह तआला का इरशाद है:

ऐ इमान वालो! तुम पर रोज़े (उसी तरह) फ़र्ज किये गये जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर ताकि तुम मुत्तकी बनो।

हसन बसरी फ़रमाते हैं कि जब सुनो कि अल्लाह तआला या अय्योहल लजीना आमनू फ़रमा रहा है तो अपने कानों को उसकी समाअत के लिए खाली कर दो (हमातन गोश बन जाओ) इसके बाद जो इरशाद होने वाला है उसमें या तो हुक्म होगा जिस को बजा लाना होगा या मुमानिअत होगी जिससे इजतिनाब ज़रूरी होगा। इमाम जाफ़र सादिक रज़ियल्लाहो अन्हो का इरशाद है कि वह लज़ज़त जो ख़िताब (निदा) से हासिल होती है वह इबादत की मशक्कत और कुलफ़त को दूर कर देती है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया या अय्योहल लजीना आमनू इसमें "या" हर्फ़ निदा है, आलिम (ज़ाते बारी) की तरफ़ से इस हर्फ़ के ज़रिये निदा की गई है। अय्यो वह इस्म निदा है जो मुनादी, मालूम के लिए इस्तेमाल होता है। "हा" हर्फ़ तंबीह है मुनादी को (इस तंबीह से) निदा की तरफ़ मुतवज्जेह किया गया है। अल्लजी इस्में मौसूल है और इसके ज़रिये मोहब्बते कदीमा और मारफ़ते साबिका की तरफ़ इशारा किया गया है और "आमनू" में उस बातिनी हालत की तरफ़ इशारा है जो पुकारने वाले और जिसको पुकारा गया है दोनों के दर्मियान एक राज़ की तरह पोशीदा है। (जैसे कोई कहे कि ऐ वह शख्स जो मेरे बातिनी राज़ से वाकिफ़ है और वह उसे जानता हो) कुतेबा अलैकुम यानी तुम पर फ़र्ज किये गये अस्सियामो रोज़ा रखना यह मसदर है जैसे तुम कहो सुमतो सियामन और सुमतो कयामन। असल लुगत में सय्याम के मानी हैं रुक जाना जैसे सामतिरीह (हवा रुक गई) सामतुल ख़ैल (घोड़े दौड़ने से रुक गये) सामतुन नहार (दिन ठहर गया, दोपहर हो गई) यानी जब सूरज आसमान के बीच में पहुंच जाता है तो ठहर जाता है और सैर से रुक जाता है। सामर रजलो, मर्द बात करने से रुक गया। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया (हज़रत मरियम का कौल) इन्नी नदजफ़ुर्रहमान सौमन, मैंने आज खामोश रहने की अल्लाह से मन्नत मानी है। शरीयत में रोज़ा के मानी हैं इंसान का खाने पीने और जिमअ से बाज़ रहना और गुनाहों से रुक जाना।

कमा कोतेबा अलल लजीना मिन कब्लेकुम यानी दूसरे अंबिया और उनकी उम्मतों पर जैसे रोज़ा रखना फ़र्ज किया गया था। सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर रोज़ा फ़र्ज हुआ। अब्दुल मलिक ने उनके दालिद हारून बिन अन्तरा ने बिल असनाद हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो का कौल नक़ल किया कि हज़रत अली ने फ़रमाया, एक रोज़ ठीक दोपहर के वक़्त जबकि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुजरा में तशरीफ़ फ़रमा थे मैं हाज़िरे ख़िदमत हुआ और सलाम अर्ज किया आपने सलाम का जवाब देने के बाद फ़रमाया: यह जिब्रील अलैहिस्सलाम है तुम को सलाम कर रहे हैं मैंने कहा अलैका व अलैहिस्सलाम या रसूलल्लाह। हुजूर ने फ़रमाया मुझसे करीब हो जाओ (मेरे नज़दीक आ जाओ) मैं हुजूर के करीब पहुंच गया आप ने फ़रमाया



अली जिब्रील तुम से कह रहे हैं कि हर महीने में तीन दिन रोजे रखा करो पहले दिन के रोजे के एवज दस हजार साल के रोजे, दूसरे रोजे के एवज तीस हजार साल के और तीसरे दिन के रोजे के एवज एक लाख बरस के रोजे तुम्हारे लिए लिखे जायेंगे (उनका सवाब मिलेगा) मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह इस सवाब की तखसीस मेरे ही साथ है या सब लोगों के लिए यह आम है आप ने फरमाया अली! तुम को भी इस का सवाब मिलेगा और तुम्हारे बाद जो (इस पर अमल) करेगा उसको भी यही सवाब मिलेगा। मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह वह कौन से दिनों के रोजे हैं हुजूर ने फरमाया अय्यामे बैज के यानी हर महीने का तेरह, चौदह और पन्द्रह तारीख के रोजे हैं।

रावी हदीस अन्तरा ने हजरत अली से दरयाफ्त किया कि इन दिनों को अय्यामे बैज क्यों कहते हैं? हजरत अली मुर्तजा ने फरमाया जब अल्लाह तआला ने हजरत आदम को जन्नत से जमीन पर उतारा तो आप का जिस्म अकदस तमाजते आफताब से जल गया और सारा जिस्म सियाह पड़ गया उस वक्त जिब्रील अलैहिस्सलाम आये और हजरत आदम से दरयाफ्त किया, क्या आप चाहते हैं कि आप का जिस्म फिर गोरा हो जाये, हजरत आदम ने कहा हां। तब आप से कहा गया कि आप 13, 14, और 15 तारीख को रोजा रखा करें। हजरत आदम ने पहला रोजा रखा तो आप का 1/3 जिस्म सफेद हो गया दूसरा रोजा रखा तो 2/3 और तीसरे रोजा पर कुल जिस्म की खाल गोरी हो गई। इस सबब इन दिनों को अय्यामे बैज कहते हैं पस हजरत आदम अलैहिस्सलाम ही वह पहले शख्स हैं जिन पर तीन रोजे फर्ज हुए थे।

हजरत हसन बसरी और दूसरे उलमाए मुफस्सरीन की एक जमाअत का कौल है कि अल्लजीना मिन कब्लेकुम से मुराद नसारा है, हमारे रोजे नसारा के रोजों से इसलिए मुशाबेह हैं कि नसारा और मुसलमानों के रोजों का महीना और उनकी तादाद यकसां थीं। उन पर भी माहे रमजान के रोजे फर्ज थे मगर सख्त गर्मी और सख्त सर्दी में रोजे रखना उन पर बहुत दुश्वार था फिर रोजे सफर की हालत और कसबे मआश में भी खलल अन्दाज होते थे इस लिए उनके उलमाए (किस्सीयीन) और सरदारों ने बइत्तेफाके राय यह तय कर लिया कि हर साल सर्दी और गर्मी के मौसमों के दर्मियान (मौसमे बहार) रोजों का वक्त मुकरर कर लिया जाये चुनांचे उन्होंने मौसमे बहार को मौसमे सियाम ठहरा लिया उन्होंने जो यह तब्दीली की थी इसके कफ़ारा में दस रोजे ज़्यादा कर लिए। इस तरह उनके चालीस रोजे हो गये, कुछ मुद्त के बाद ईसाइयों का बादशाह दर्दे देहन की बीमारी में मुब्तला हुआ उसने अल्लाह तआला से मन्नत मानी कि अगर उसे शिफा हो जाये तो वह इस तादाद में सात दिन का इज़ाफ़ा कर देगा चुनांचे उसके हुक्म से एक हफ्ते का इज़ाफ़ा कर दिया गया। उसके बाद के बादशाह ने (47) के बजाए पूरे 50 दिन के रोजे कर दिए। मुजाहिद ने फरमाते हैं कि जब उनमें वबा फैली और बहुत से लोग मर गये तो बादशाह ने कहा कि रोजों की तादाद बढ़ा दो इस तरह लोगों ने दस बढ़ा दिए फिर उसके बाद दस और बढ़ा लिए। शअबी फरमाते हैं कि अगर मैं तमाम साल रोजे रखूँ तो यौमुश्शक में नहीं रखूंगा (यौमे शक से मुराद है शाबान की तीस तारीख ऐसी सूरत में मतलअ अब्र आलूद था चांद नज़र नहीं आया था तो कोई उसको शाबान की तीस तारीख कहेगा और उसको रमज़ामुन मुबारक की पहली तारीख कहेगा) इसकी वजह यह है कि हमारी तरह नसारा पर भी माहे रमजान के रोजे फर्ज किये गये थे तो उन्होंने उन रोजों को मौसमे बहार में कर दिया यानी रमजान के दूसरे मौसम से तब्दील कर लिया क्योंकि गर्मी के ज़माने में तो यह गिन कर तीस रोजे रख लिया



करते थे। इनके बाद जब दूसरे लोग आये (दूसरी नस्ल) तो उनको अपनी ताकत पर बड़ा एतमाद था इस लिए उन्होंने रमजान से पहले एक या दो दिन के रोजे रखना शुरू कर दिए इस तरह उनके बाद आने वालों ने भी अगले लोगों की पैरवी में एक एक दो दो रोजों का इजाफा करना शुरू किया यहां तक कि पूरे पचास दिन के कर लिए। आयत कमा कोतेबा अलल लजीना मिन कबले कुम का मतलब यही है और लअल्लकुम तत्तकून के मानी हैं कि तुम खाने पीने और जिमाअ से (इन अय्याम) में बाज़ रहो।

मुफ़स्सरीने कराम का इरशाद है। कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिज़रत फ़रमा कर मदीना मनव्वरा तशरीफ़ ले आये तो अल्लाह तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आम मुसलमानों पर आशूरा के दिन का और हर महीने में तीन दिन के रोजे फ़र्ज किये। जंगे बदर से एक माह और चन्द रोज़ कब्ल रमजान के रोजों की फ़रज़ीयत का हुक्म नाज़िल हुआ जिससे मज़कूरा रोजे मनसूख हो गये। हक़ तआला के इरशाद अय्यमा मादूदातिन (गिनती के दिन हैं) से यही माहे रमजान के 29 या 30 दिन मुराद हैं।

सईद बिन अम्र बिन सईद बिन अलआस से मरबी है कि उन्होंने इब्ने उमर से मरफूअन बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं और मेरी उम्मत उम्मी है हम न हिसाब कर सकते हैं और न लिख सकते हैं कि महीना इतना, इतना, या इतना है। हुज़ूर ने दस्ते मुबारक की तमाम उंगुलियां खोल कर सामने बताया कि महीना इतना, इतना, और इतना होता है। (यानी 30 दिन का)

शहर के मानी महीने हैं यह लफ़्ज़ शोहरत से बना है और इसके मानी हैं मशहूर होना और सफ़ेदी, तलूअ और ऊँचा करना। चुनांचे कहते हैं शहरतुश़ैन मैंने तलवार नियाम से निकाल ली और उंची की। शहरल हिलाल पहली तारीख़ का चांद निकल आया।

## लफ़्जे रमज़ान की तशरीह व तहकीक़

लफ़्जे रमज़ान की तहकीक़ व तशरीह में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ उलमा कहते हैं कि रमज़ान अल्लाह तआला के नामों में से एक नाम है और "शहरे रमज़ान" कहा जाता है (यानी अल्लाह का महीना) जब कि रजब के लिए "शहरुल असम" कहा गया यह हज़रत अब्दुल्लाह का कौल है।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ ने बिल असनाद अपने अजदाद से रिवायत किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रमज़ान अल्लाह का महीना है। हज़रत अनस बिन मालिक ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह का फ़रमान है लफ़्ज़ "रमज़ान" न कहो बल्कि इसको निसबत के साथ कहो जिस तरह अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में इसकी निसबत फ़रमाई है और शहरे रमज़ान (माहे रमज़ान) कहा है। असमई ने अबू उमर बिन अस्साद का कौल नक्ल किया है कि रमज़ान की वजह तस्मिया यह है कि इस महीने में ऊँट के बच्चे गरमी की वजह से झुलस जाते हैं।

बाज़ असहाब का ख़्याल है कि चूंकि इस माह में गर्मी की वजह से पत्थर तपने लगते हैं और रमज़ा गरम पत्थर को कहते हैं इसलिए इसको रमज़ान कहने लगे। एक कौल यह भी है कि चूंकि इस माह में गुनाह जला दिये जाते हैं या रमज़ान गुनाहों को जला देता है इसलिए रमज़ान



कहा गया। "रम्ज" के मानी हैं जलाना, असमई और दूसरे वह लोग जिन्होंने गर्मी की शिद्दत वजह तस्मिया बताई है शायद उन लोगों के जमाने में रमजान मौसम गरमा ही में वाकैअ हुआ होगा (वरना वह तो हर मौसम में आता है।) यह तीसरा कौल भी सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही से मरवी है। बाज उलमा व मुइक्केकीन का कहना है कि रमजान में नसीहत और आखिरत की फिक्र की गर्मी से दिल इस तरह मुतास्सिर होते हैं जैसे रंग और पत्थर गर्मी से तपते और मुतास्सिर होते हैं। एक कौल यह भी है कि यह लफ्ज रम्ज से बना है और रम्ज के मानी हैं बरसाती बारिश (मौसम बरशगाल की बारिश) चूंकि रमजान बदन से गुनाह बिल्कुल धो डालता है और दिलों को इस तरह पाक कर देता है जैसे बारिश से चीजें धुल कर पाक व साफ हो जाती हैं।

## माहे रमजान और नुजूल कुरआन

### शहरो रमजानल्लजीं उन्जेला फीहिल कुरआन की तशरीह व तफसीर

आतिया बिन असवद कहते हैं कि मैंने हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहो अन्हो से दरयाफ्त किया कि मुझे आयत इन्ना अन्जलनाहो फी लैलतिन मुबारकतिन के मानी में कुछ शक पैदा होता है, आयत के मानी हैं कि हमने कुरआन को बरकत वाली रात में उतारा और कुरआन मजीद तो तमाम महीनों में उतरा है, अल्लाह तआला का इरशाद है हम ने कुरआन को जुदा जुदा करके उतारा ताकि आप वक्फे वक्फे के बाद लोगों को सुनायें पस जब मुख्तलिफ औकात में उसका नुजूल हुआ तो एक मुबारक रात में नुजूल के क्या मानी (यह तआरुज किस तरह रफा हो) हजरत इब्ने अब्बास ने जवाब दिया कि माहे रमजान के अंदर शबे फ़द्र में पूरा कुरआन एक बारगी लौहे महफूज से उतरा था और आसमाने दुनिया में बैतुल इज्जत में रख दिया गया था फिर थोड़ा थोड़ा तेइस साल में हजरत जिब्रील के ज़रिये रसूलुल्लाह पर उतारता रहा।

### कुरआन पाक किस तरह नाज़िल हुआ

दाऊद बिन अबू हिन्द ने कहा मैंने शअबी से दरयाफ्त किया कि माहे रमजान वह महीना है जिस में कुरआन नाज़िल हुआ तो क्या आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कुरआन पाक बरसों में नाज़िल नहीं हुआ? उन्होंने जवाब दिया कि कुरआन बरसों ही में नाज़िल हुआ, अलबत्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पूरा कुरआन दोहराते थे उसमें से अल्लाह को जिस क़द्र और जितना मंजूर होता महकम और बर करार रखता और जितना हिस्सा अल्लाह को मंसूख करना होता वह रसूलुल्लाह को फ़रामोश करा देता।

शहाब बिन तारिक ने बरिवायत हजरत अबूज़र गेफ़ारी बयान किया कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर माहे रमजानुल मुबारक की तीन रातों में सहीफ़े नाज़िल किये गए और हजरत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरेत माहे रमजान के जुमा की रातों में नाज़िल हुई। हजरत दाऊद अलैहिससलाम पर जुबूर माहे रमजान की अठारहवीं शब को उत्तरी, हजरत ईसा अलैहिस्सलाम पर इंजील माहे रमजान की तेरह तारीख को नाज़िल



गुनियतुत्तालिबीन

हुई और रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कुरआन मजीद रमजानुल मुबारक की चौदहवीं तारीख को उतरा।

इसके बाद (यानी नुजूल कुरआन के महीने की तरसरीह के बाद) अल्लाह तआला ने कुरआन पाक की सिफत बयान फरमाई कि वह हुदल लिन्नास है (लोगों को गुमराही से निकालने वाला है) हलाल व हराम और अहकाम की रौशन दलीले हैं और वह हक व बातिल के दर्मियान फर्क कर देने वाला है।

## माहे रमजान के फज़ाएल व ख़साइस

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत की है कि शाबान के आखिरी दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुतबा इरशाद फरमाया, आपने फरमाया:

ऐ लोगो! एक अजीमुल मरतबत और बरकतों वाला वह महीना सायाफगन हो रहा है जिस में एक रात ऐसी है जो हजार महीनों से अफज़ल है। अल्लाह तआला ने इस महीने के रोजे फर्ज किये हैं और इस महीने की रातों में इबादत को अफज़ल करार दिया है, जिस शख्स ने इस महीने में एक नेकी की या एक फर्ज अदा किया उसका अज़ उस शख्स की तरह होगा जिसने किसी दूसरे महीने में 70 फर्ज अदा किए। यह महीना सब्र का है और सब्र का सिला जन्नत है यह महीना नेकी पहुंचाने का है, इस महीने में मोमिन की रोजी में इज़ाफा किया जाता है, जिस शख्स ने किसी रोज़ादार को इफ़तार कराया उसके गुनाह बख़्श दिये गए उसकी गरदन आतिशे दोजख़ से आज़ाद की जाएगी और रोज़ादार के रोजे का सवाब कम किये बग़ैर इफ़तार कराने वाले को भी रोज़ेदार की बराबर सवाब मिलेगा।

सहाबा कराम ने अर्ज किया कि हम में से हर एक की इस्तेताअत इतनी नहीं है कि इफ़तार कराये, हुज़ूर ने फरमाया कि अल्लाह तआला हर उस शख्स को अज़ मरहमत फरमायेगा जिसने एक खजूर या एक घूंट दूध या एक घूंट पानी से भी रोज़ा खुलवाया। यह महीना ऐसा है कि इसका अव्वल (हिस्सा) रहमत है, दर्मियानी (हिस्सा) मग़फ़िरत है और आखिरी (हिस्सा) दोजख़ से आज़ादी है, पस जिसने इस महीने में अपने गुलाम पर आसानी की अल्लाह तआला उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ादी अता फरमायेगा पस इस महीने में यह चार बातें ज़्यादा से ज़्यादा करना चाहिए उनमें से दो बातें ऐसी हैं जिनसे तुम अपने रब को राज़ी कर सकते हो अव्वल यह कि इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, दोम अपने रब से मग़फ़िरत तलब करना, दो बातें वह हैं जिनकी तुमको ज़रूरत है, वह यह हैं अव्वल यह है कि अल्लाह तआला से जन्नत की तलब करो, दोम अल्लाह तआला से जहन्नम से नजात (पनाह) मांगो जिसने इस महीने में शिकम सैर करके खिलाया अल्लाह तआला उसको मेरे हौज़ (कौसर) से एक घूंट पिलायेगा और फिर कभी उसे प्यास नहीं महसूस होगी।

कलबी ने अबू नसर से और अबू नसर ने हज़रत अबू सईद खुदरी से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि माहे रमजान की पहली रात को आसमान और जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और आखिर माह (मुबारक) रमजान तक बन्द नहीं किये जाते और जो बन्दए मोमिन ख़्वाह मर्द हो या औरत इस माह की रातों में नमाज़ें पढ़ता



है अल्लाह हर सजदे के एवज एक हजार सात सौ नेकियां उसके लिए लिखता है उसके लिए जन्नत में सुख याकूत का ऐसा मकान तामीर फरमाता है जिस के हजार दरवाजे हैं और दरवाजों के पट (किवाड़) सुख याकूत से मुरस्सअ हैं और जिस शख्स ने अब्बल से आखिर तक (इस माह में) रोजे रखे अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह माफ़ फरमा देता है और (उन रोजों को) दूसरे माह रमज़ान का कफ़ारा बना देता है उसके लिए हर रोज जन्नत में महल तामीर कराता है जिसके एक हजार सोने के दरवाजे होते हैं और उसके लिए सत्तर हजार फरिश्ते सुबह व शाम इन्तजार करते रहते हैं और हर सजदे के बदले उसको इतना तनावर सायादार दरख्त अता होता है कि शहसवार उस के नीचे सौ बरस तक चल कर भी मुसाफ़त को तय न कर सकेगा।

मुझ (हज़रत अब्दुल कादिर जीलानी) से अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से बरिवायत हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब रमज़ान की पहली रात होती है तो अल्लाह जल्ला जलालहु अपनी मखलूक की तरफ़ तवज्जोह फरमाता है और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे पर नज़र (तवज्जोह) फरमाता है तो उसको कभी अज़ाब नहीं देता, अल्लाह तआला के हुक्म से हजारों आदमी दोज़ख से आज़ाद हो जाते हैं।

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत की है कि उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब माह रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं और दोज़ख के दरवाजे बन्द कर दिए जाते हैं और शयातीन को कैद कर दिया जाता है।

नाफ़ेअ बिन मरवा से बरिवायत हज़रत अबू मसऊद गेफ़ारी बयान किया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना कि जो बन्दा माह रमज़ान का रोज़ा रखता है उसका निकाह किसी हूरे ऐन से एक खोखले मोती के खेमे में किया जाता है और यह हूर उन औसाफ़ से आरास्ता होती हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने हूरून मकसूरातुन फ़िल खियाम फरमाया है। हूरे ऐन के बदन पर सत्तर जोड़े होंगे हर जोड़ा दूसरे जोड़े से मुखतलिफ़ होगा, यह जोड़े सत्तर किस्म के खुशबू से बसे होंगे हर एक की खुशबू दूसरी खुशबू से अलग होगी हर हूर को सत्तर मुरस्सअ तख़्त सुख याकूत के दिये जायेंगे, हर तख़्त सत्तर बिस्तरों से आरास्ता होगा हर बिस्तर पर एक मसनद होगी हर हूरे ऐन की खिदमत के लिए सत्तर हजार खिदमतगार और सत्तर हजार कनीज़ें होंगी। हूरे ऐन अपने इन तमाम खिदमतगारों के साथ शौहर की खिदमत के लिए होगी हर कनीज़ के पास सोने का एक प्याला होगा जिसमें ऐसा खाना होगा जिसके हर लुक़्मा का मज़ा पहले लुक़्मे से मुखतलिफ़ होगा और लज़ज़त में दोबाला होगा इन तमाम लवाज़िम के साथ हूरे ऐन का शौहर भी (रोज़ादार) सुख याकूत के तख़्त पर मौजूद होगा यह जज़ा रमज़ान के हर रोज़ा की होगी रोज़ा के अलावा जो नेक आमाल उसके हैं उनका सवाब अलग मिलेगा।

### माह रमज़ान की बरकतें

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास रिवायत की है कि मैंने खुद सुना है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमा रहे थे कि माह रमज़ान के इस्तिक़बाल के लिए जन्नत एक साल से दूसरे साल तक (यानी तमाम साल) मुज़य्यन व आरास्ता की जाती है, फिर जब माह



रमज़ान की पहली शब आती है तो अर्श के नीचे से एक हवा चलती है जिसका नाम मशीरा है यह हवा जन्नत के दरख्ताओं के पत्तों और किवाड़ों की जंजीरों से मस होती है और उनको हिलाती है उस हवा के लगने से ऐसी आवाज़ पैदा होती है कि उससे अच्छी आवाज़ सुनने वालों ने कभी नहीं सुनी होगी फिर हूरें आरास्ता होकर जन्नत के गरफों (झरोकों) में आकर खड़ी हो जाती हैं और आवाज़ देती हैं कि क्या कोई है कि जो हमको अल्लाह से मांग ले और अल्लाह तआला उसका निकाह हमसे कर दे फिर वह रिज़वाने जन्नत से कहती है आज की रात कैसी है? रिज़वान जवाब देता है ऐ बेमिसाल हसीनो! यह माहे रमज़ान की पहली रात है हक़ तआला फ़रमाता है कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में से रोज़ादारों के लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए गये हैं ऐ मालिक (दारोगए जहन्नम) उम्मते मुहम्मदिया की तरफ़ से दोज़ख के दरवाज़े बन्द कर दो ऐ जिब्रील! ज़मीन पर जाओ और शयातीन को मुकय्यद कर दो। उनको जंजीरों से जकड़ दो उनको समन्द्र के गिरदाबों में फेंक दो ताकि मेरे हबीब मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत के रोज़ों को ख़राब न करे। हुज़ूर वाला ने इरशाद फ़रमाया कि माहे रमज़ान की हर रात में अल्लाह तआला तीन मरतबा फ़रमाता है क्या कोई मांगने वाला है कि मैं उसका सवाल पूरा करूँ? क्या कोई तौबा करने वाला है कि मैं उसकी तौबा कबूल करूँ! क्या कोई मग़फ़िरत का तालिब है कि मैं उसको बख़्श दूँ? कोई है जो ऐसे ग़नी को कर्ज़ दे जो नादार नहीं है और पूरा बदला देने वाला है और वह किसी की हक़ तल्फ़ी करने वाला नहीं है आप ने फ़रमाया कि माहे रमज़ान में हर रोज़ इफ़्तार के वक़्त हजारों दोज़खी दोज़ख से आज़ाद कर दिए जाते हैं हालांकि उनमें से हर एक अज़ाब का मुस्तहक़ होता है और जब जुमा का दिन और जुमा की शब आती है तो लाखों दोज़खी दोज़ख से आज़ाद हो जाते हैं जिनमें से हर एक अज़ाब का सज़ावार होता है। जब रमज़ान का आखिरी दिन आता है तो अब्बल तारीख़ से आखिर तारीख़ तक मजमुई तौर से जितने अफ़सद दोज़ख से आज़ादी पा चुके हैं उनकी तादाद के बराबर (उस आखिरी रोज़) आज़ाद किये जाते हैं।

## शबे क़द्र

शबे क़द्र को अल्लाह तआला जिब्रील को हुक्म देता है हज़रत जिब्रील हस्बुल हुक्म फ़रिश्तों की जमाअत के साथ ज़मीन पर उतरते हैं उनके साथ एक सब्ज़ परचम होता है उसको वह ख़ानए काबा की छत पर गाड़ देते हैं और वह अपने छः सौ पर फ़ैला देते हैं जो मशरिक से मग़रिब तक फैल कर निकल जाते हैं। यह परचम लैलतुल क़द्र के अलावा नहीं लहराया जाता जिब्रील अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि उम्मते मोहम्मदिया में फैल जाओ फ़रिश्ते हर नमाज़ी इबादत गुज़ार और ज़िक़रे इलाही करने वाले को सलाम करते हैं उनसे मुसाफ़ा करते हैं और दुआ के वक़्त उनके साथ आमीन कहते हैं यह हालत सुबह तक कायम रहती है उसके बाद जिब्रील अलैहिस्सलाम एलान करते हैं कि ऐ अल्लाह के लश्करयो वापसी के लिए कूच करो उस वक़्त वह फ़रिश्ते कहते हैं ऐ जिब्रील तुम ने उम्मते मोहम्मदिया की हाजतों के बारे में क्या किया? जिब्रील जवाब देते हैं अल्लाह ने उन पर रहमत की नज़र फ़रमाई उनको माफ़ कर दिया और बख़्श दिया बजुज़ चार किस्म के लोगों के जो यह हैं:

- (1) मैं ख़्वाय (2) वालद्वैन के नाफ़रमान (3) रिश्तों को मुनक़तअ करने वाले (4) मुशाहिन



खुज रखने वाला) अर्ज किया गया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुशाहिन कौन हैं अपने फरमाया मुसलमानों से कतअ ताल्लुक करने वाला।

जब ईदुल फित्र की रात आती है जिस को शबे जाएजा कहते हैं यानी शबे इनाम उसके बाद सुबह को अल्लाह तआला फरिश्तों को तमाम शहर व अमसार में फैल जाने का हुक्म देता है बुनाचे फरिश्ते उतर कर गलियों और कूचों के शुरू में खड़े हो कर ऐसी आवाज से पुकारते हैं जिसको इन्स और जिन्न के अलावा तमाम मखलूक सुनती है वह कहते हैं ऐ उम्मत मोहम्मद के लोगो! अपने रब्बे करीम की तरफ चलो ताकि वह तुम को जजा अता फरमाए और तुम्हारे बड़े बड़े गुनाहों को बख्श दे, फिर वह ईदगाह की तरफ रवाना होते हैं, अल्लाह तआला फरिश्तों से फरमाता है कि ऐ फरिश्तों! मैं तुम्हें शाहिद बनाता हूँ कि इन बन्दों के रोजों और रात की इबादतों का सवाब मैंने अपनी रजा और मगफिरत करार दिया है इसके बाद फरमाता है ऐ बन्दो! मुझसे सवाल करो मुझे अपनी इज्जत व जलाल की कसम है अपनी इस जमाअत के अन्दर रह कर मुझसे जो कुछ आखिरत के मुताल्लिक मांगोगे मैं जरूर अता करूंगा और जो कुछ दुनिया से मुताल्लिक मांगोगे मैं तुम्हारे लिए उस पर नजर रखूंगा अपनी इज्जत व जलाल की कसम जब तक तुम मुझसे डरते रहोगे मैं तुम्हारी लग्जिशों की पर्दा पोशी करूंगा अपनी इज्जत व जलाल की कसम मैं तुम को दुनियवी सजा पाने वालों (असहाबे हुदूद) के सामने जलील और रुसवा नहीं करूंगा, जाओ तुम्हारी बख्शिश हो गई, तुमने मुझे राजी किया और मैं तुम से राजी हो गया। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया यह इनामात सुनकर फरिश्ते खुश होते हैं और इफ्तारे सौम के वक्त अल्लाह तआला उम्मत को जो कुछ अता फरमाता है उसकी बशारत और मुबारक बाद देते हैं। जहाक बिन मजाहिम ने हजरत इब्ने अब्बास से जो हदीस नकल की है उसके अल्फाज इस हदीस के अल्फाज से ममासिल और एकसा हैं।

शैख अबू नसर ने बिल असनाद हजरत मसऊद गेफारी से रिवायत की कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माहे रमजान का चांद देखने के दिन फरमाया कि अगर बन्दों को मालूम हो जाता कि माहे रमजान में कितनी खैर व बरकत है तो यकीनन बन्दे तमन्ना करते कि काश माहे रमजान तमाम साल का होता। यह सुनकर एक शख्स ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह हमें रमजानुल मुबारक की फजीलत से आगाह फरमाइये, आपने फरमाया कि माहे रमजान के इस्तिकबाल के लिए जन्नत आगाजे साल से मुजय्यन और आरास्ता की जाती है यहां तक कि रमजान की पहली शब को अर्श के नीचे से एक हवा चलती है जो जन्नत के दरख्तों के पत्तों से टकराती है हूरें उस हवा को महसूस करके कहती हैं परवरदिगार इस महीना में तेरे जो बन्दे रोजे रखें उनको हमारे शौहर मुकर्रर फरमा दे ताकि उनसे हमारी आंखें और हमसे उनकी आंखें टंडी हों (हिज उठाये) पस जो बन्दा रमजान के रोजे रखता है अल्लाह एक मिजूफ (खोखले मोती) के खेमा के अन्दर उसका निकाह किसी ऐसी हूर से जो उन हूरों में से होगी जिनके बारे में अल्लाह तआला ने हूरूम मकसूरातून फिल खयाम फरमाया है, जरूर कर देता है उनमें से हर हूर के जिस्म पर सत्तर जोड़े होंगे, हर जोड़े का रंग और खुशबू दूसरे जोड़े से अलग और मुखतलिफ होगी हर एक को सत्तर किस्म की खुशबू अता होगी हर हूर सुख याकूत के ऐसे तख्त पर जलवा फगन होगी जो मोतियों से मुजय्यन और आरास्ता होगा उस तख्त पर सत्तर फर्श होंगे हर फर्श का अस्तर इस्तबरक (एक आला रेशम) का होगा हर एक के ऊपर सत्तर मसनदें होंगी,



हर हूर के सत्तर हजार खादिम होंगे और शौहर के भी इतने ही खादिम होंगे, हर खादिम के हाथ में सोने का एक प्याला होगा जिसमें खाना तो एक रंग का होगा लेकिन हर लम्क़मा का मज़ा दूसरे लुक्मा से जुदा होगा। हर हूर के शौहर को भी ऐसा ही कुछ इनाम मिलेगा वह भी सुख याकूती तख़्त पर मुतमक्किन होगा और सोने के दो कंगन याकूत से मुरस्सअ वह पहने होगा यह इनाम हर उस शख्स के लिए होगा जिसने माहे रमज़ान के रोज़े रखे, दूसरी नेकियों जो उसने की हैं उसका अज़्र अलग होगा।

हज़रत कतादा ने हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया माहे रमज़ान की जब पहली रात होती है तो रिज़वाने जन्नत से अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उम्मत मोहम्मदिया के रोज़ादारों के लिए जन्नत को आरास्ता करो उसके दरवाज़ों को बन्द न करो जब तक उनका यह महीना ख़त्म न हो जाये फिर दारोग़ए जहन्नम (मालिक) से ख़िताब फ़रमाता है कि ऐ मालिक! वह कहता है लब्बैक (मैं हाज़िर हूँ) अल्लाह तआला फ़रमाता है मोहम्मद के उम्मत के रोज़ेदारों की तरफ़ से दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दो और जब तक यह महीना न गुज़र जाये उनको न खोलो, फिर जिब्रील को निदा फ़रमाता है जिब्रील कहते हैं मैं हाज़िर हूँ अल्लाह फ़रमाता है ज़मीन पर उत्तरो और सरकश शयातीन को जकड़ कर बांध दो ताकि उम्मत मोहम्मद के रोज़ों और रोज़ों की इफ़्तार में वह खलल न डाल सकें।

माहे रमज़ान में हर रोज़ तुलूए आफ़ताब से इफ़्तार के वक़्त तक अल्लाह तआला अपने कुछ बन्दों को ख़्वाह मर्द हों या औरत जहन्नम से आज़ादी अता फ़रमाता है, हर आसमान पर एक निदा देने वाला फ़रिश्ता होता है जिसकी चोटी अर्श के नीचे और पावं ज़मीन के सातवें तबक़े की इन्तहा पर होते हैं उसका एक बाजू मशरिफ़ में और एक मगरिब में होता है उसके सर पर लू लू मरजान और जवाहर का ताज होता है यह निदा देने वाला फ़रिश्ता पुकारता है क्या कोई तौबा करने वाला है कि उसकी तौबा क़बूल की जाये कोई मांगने वाला है जिस की दुआ क़बूल की जाये कोई मज़लूम है जिसकी दाद रसी की जाये कोई मग़फ़िरत चाहने वाला है जिस की मग़फ़िरत की जाये कोई सायल है जिसके सवाल को पूरा किया जाये।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला तमाम माहे रमज़ान में इसी तरह निदा फ़रमाता रहता है कि मेरे बन्दो! और मेरी बन्दियो! तुम को बशारत हो सब्र करो (खाने पीने वगैरा से) और पाबन्दी करो (अहकामे रोज़ा की) मैं अनक़रीब तुम्हारी मशक्कतें दूर कर दूंगा और तुम मेरी रहमत और करामत तक पहुँच जाओगे (तुम को मेरी रहमत हासिल होगी)

शबे क़द्र को जिब्रील फ़रिश्तों के साथ उतरते हैं और हर ज़िक़्रे इलाही करने वाले (ख़्वाह वह खड़ा हो या बैठा हो) के लिए दुआए रहमत करते हैं। हज़रत अनस बिन से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर अल्लाह तआला आसमानों और ज़मीन के बात करने की इजाज़त देता तो यकीनन वह माहे रमज़ान के रोज़ादारों को जन्नत की बशारत देते। हज़रत अब्दुल्लाह बिल ऊफी की रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि रोज़ादार की नीन्द इबादत है वह ख़ामोश तस्बीह है उसकी दुआ मक़बूल है और उसका अमल दूना किया जाता है।



अमश ने अबू खीसमा का कौल नक़ल किया है उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम कहते थे कि एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक, एक हज दूसरे हज तक, एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक जो गुनाह इस अर्सा में सरज़द होते हैं वह उनका कफ़ारा बन जाते हैं जब माहे रमज़ान आता तो हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अलखत्ताब फ़रमाते कि ऐ लोगो तुम्हें यह महीना मुबारक हो क्योंकि यह महीना सरापा ख़ैर व बरकत है इसके दिन रोज़े के और रातें इबादत की हैं इसमें खर्च करना राहे खुदा में खर्च करना है। हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने माहे रमज़ान के रोज़े रखे यकीन व हुसूले सवाब के खातिर रात में क़याम किया तो अल्लाह तआला उसके अगले पिछले तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा देगा।

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत का जब एक फ़र्द नेकी करता है तो उसको दस से सात सौ गुना तक सवाब दिया जाता है सिवाए रोज़ा के (अज़ के)। इसके मुताल्लिक तो अल्लाह तआला फ़रमाता है रोज़ा मेरे लिए है मैं ही इसकी जज़ा दूंगा रोज़ादार अपना खाना पीना मेरे लिए छोड़ता है रोज़ा ढाल है (दोज़ख़ और गुनाहों से बचाने के लिए) रोज़ादार के लिए दो मुसर्रतें हैं एक मुसर्रत इफ़्तार के वक़्त और दूसरी अपने रब के दीदार के वक़्त, अबुल बरकात सिक़ती ने बिला अस्नाद बयान किया कि मुझे मसरूदी से यह हदीस पहुंची है कि माहे रमज़ान की किसी रात में अगर कोई इन्ना फ़तहना लक़ फ़तहम मुबीना आख़िर सूरत तक) नफ़ल नमाज़ में पढ़े तो पूरे साल वह हर किस्म के शर और बलाओं से महफूज़ रहेगा।

## रमज़ान के हुरूफ़ और इनकी बरकतें

### रमज़ान के हुरूफ़

रमज़ान के पांच हुरूफ़ हैं। र रिज़वानुल्लाह (अल्लाह की खुशनूदी) है, मीम मुहाबतुल्लाह की है (अल्लाह की मोहब्बत) जाद ज़मानुल्लाह का है यानी अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी अलीफ़ का है और नून नूर और नवाल (मेहरबानी और बख़्शिश) का है, यानी अल्लाह के औलिया और सुलहा और अबरार के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की तरफ़ नून का इशारा है।

कहते हैं कि तमाम महीनों में रमज़ान के महीने की मिसाल ऐसी है जैसे सीना में दिल या इंसानों में अंबियाए कराम या शहरों में हरम। हरम ऐसी बुजुर्ग जगह है कि उसके अन्दर दज्जाले लईन को दाख़िला नहीं मिलेगा और माहे रमज़ान में सरकश शैतानों को जकड़ दिया जाता है, अंबिया गुनहगारों की सिफ़ारिश करते हैं माहे रमज़ान खुद भी गुनहगारों की सिफ़ारिश (शफ़ाअत करेगा) दिल की जिला मारफ़त और ईमान के नूर से होती है इसी तरह माहे रमज़ान की जीनत तिलावते कुरान पाक से होती है जो शख्स माहे रमज़ान में नहीं बख़्शा गया फिर उसके लिए कौन सा महीना होगा जिसमें वह बख़्शा जायेगा। बन्दे पर लाज़िम है कि तौबा के दरवाज़े बन्द होने से कब्ल अल्लाह की तरफ़ सच्चे दिल से रुजू करे और गिरया वज़ारी का वक़्त गुज़रने से पहले ही (बद आमाली पर) गिरया वज़ारी करे।



## रमज़ान की हुर्मत मिल्लत की इज़्ज़त है

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि जब तक मेरी उम्मत माहे रमज़ान की हुर्मत बाकी रखेगी वह रूसवा नहीं होगी। एक शख्स ने अर्ज किया या रसूलल्लाह रूसवाई कैसी? हुजूर ने इरशाद किया कि रमज़ान में जिसने हराम अमल का इरतिकाब किया या कोई गुनाह किया, शराब पी या जिना किया उसका रमज़ान (कोई रोज़ा) कबूल नहीं किया जायेगा और आइन्दा साल तक उस पर अल्लाह की उसके फ़रिश्तों की और आसमान वालों की लानत होगी अगर उस अर्सा में (आइन्दा साल की रमज़ान तक) मर जायेगा तो अल्लाह तआला के हुजूर में उसकी कोई नेकी, नेकी (की सूरत में कबूल) न होगी।

## सरदारी और सरवरी

कहा गया है कि सय्यदुल बशर आदम अलैहिस्सलाम हैं और सय्यदुल अरब हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और हज़रत सलमान फ़ारसी तमाम अहले फ़ारस के सरदार थे इसी तरह सय्यदुल रुम हज़रत सुहैब रुमी सय्यदुल हब्श, हज़रत बिलाल हबशी हैं। इसी तरह तमाम बस्तियों में सरवरी मक्का मुकर्रमा को, वादियों में सबसे बरतरी वादीए बैतुल मुक़दस को हासिल है, दिनों में जुमा सय्यदुल अय्याम है रातों में शबे क़द्र को सरवरी हासिल है, किताबों में कुरआन करीम को, सूरतों में सूरतुल बकर को, सूरतुल बकर में आयतल कुर्सी को, सब आयात में सरदारी और बुजुर्गी हासिल है, पत्थरों में संगे असवद तमाम पत्थरों में बुजुर्ग है और चाहे ज़मज़म हर कुएं से अफ़ज़ल है, हज़रत मूसा का असा हर असा से बरतर था और जिस मछली के शिकम में हज़रत यूनूस अलैहिस्सलाम रहे थे वह तमाम मछलियों में अफ़ज़ल थी। हज़रत सालेह की ऊंटनी तमाम ऊंटनियों में अफ़ज़ल थी और इसी तरह बुराक हर घोड़े से अफ़ज़ल था, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की अंगुशतरी तमाम अंगुशतरियों से बरतर और अफ़ज़ल थी और माहे रमज़ान तमाम महीनों का सरदार और उनसे बुजुर्ग व अफ़ज़ल है।

## शबे क़द्र के फ़ज़ाइल

### सूरह क़द्र की तफ़्सीर

अल्लाह तआला फ़रमाता है इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलतिल क़द्र (आखिर सूरत तक) यानी हमने इसे (कुरआन) शबे क़द्र में उतारा, कुरआन उतारने से इस तरफ़ इशारा है कि लौहे महफूज़ से आसमाने दुनिया पर लिखने वाले फ़रिश्तों के पास भेजा पस कुरआन मजीद का जिस क़दर हिस्सा पूरे साल में बहुक्मे इलाही हज़रत जिब्रील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लेकर आते थे उतना हिस्सा ही शबे क़द्र में आसमाने दुनिया पर नाज़िल हो जाता था इसी तरह दूसरे साल शबे क़द्र में इतना नाज़िल होता जितना कि उस साल हज़रत जिब्रील को लाना होता यहां तक कि तमाम कुरआन मजीद लैलतुल क़द्र में रमज़ान के अन्दर लौहे महफूज़ से आसमाने दुनिया पर नाज़िल कर दिया गया।



गुनियतुत्तालिबीन  
हजरत इब्न अब्बास और दूसरे मुफर्रसरीन ने आयत इन्ना अन्जलनाहो की तफसीर में फरमाया है कि मुराद यह है कि हमने इस सूरत और पूरे कुरआन के साथ जिब्रील को लिखने वाले फरिश्तों के पास शबे कद्र में उतारा उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर थोड़ा थोड़ा 23 साल की मुदत में मुखतलिफ़ दिनों, मुखतलिफ़ औकात और मुखतलिफ़ महीनों में नाज़िल होता रहा।

## लैलतुल क़द्र के मानी

लैलतुल क़द्र के मानी हैं अज़ीम रात या फैसला वाली रात। इसको लैलतुल क़द्र कहने की एक वजह यह भी हो सकती है कि इस रात में आइन्दा साल तक होने वाले तमाम वाकियात मुक़द्दर कर दिए जाते हैं इसके बाद हक़ तआला फ़रमाता है:

ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर अल्लाह आप को शबे क़द्र की अहमियत और अज़मत न बताता तो आप को क्या मालूम होता कि शबे क़द्र क्या है? कुरआन मजीद में जिस मक़ाम पर भी वमा अदराका आया है तो अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को उस चीज़ की इत्तेला दे दी है जहां वमा युदरिका आया है तो अल्लाह ने आप को इसकी इत्तेला नहीं दी जैसे किस ने तुम्हें बताया कि क़यामत अंकरीब आने वाली है) चुनांचे क़यामत का वक़्त रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर मुनक़शिफ़ नहीं हुआ था।

लैलतुल क़द्र से मुराद अज़मत और फैसला वाली रात है बाज़ उलमा का ख़याल है यह वही रात है जिसके मुताल्लिक़ आयत हमने कुरआन मजीद को बरक़त वाली रात में नाज़िल फ़रमाया, हम की डराने वाले हैं, इसी रात में हिक़मत व दानाई से भरे हुए फ़सले किए जाते हैं यानी शबे क़द्र में अमल करना उन हज़ार महीनों के अमल से बेहतर है जिनमें शबे क़द्र न हो। रिवायत है कि सहाबा कराम को जितनी खुशी ख़रूम मिन अल्फ़े शहरून से हुई किसी चीज़ से हासिल नहीं हुई, वाक़िया यह है कि एक रोज़ सरवर आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा कराम के रूबरू बनी इसराईल के चार हज़रात यानी हज़रत अय्यूब, हज़रत ज़करिया, हज़रत हिज़कील और हज़रत यूशअ बिन नून अलैहिमुस्सलाम का जिक़्र फ़रमाया और इरशाद किया कि उन्होंने अस्सी बरस तक अल्लाह तआला की इबादत की और कभी लम्हा भर के लिए भी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी नहीं की। सहाबा कराम को यह सुनकर ताज्जुब हुआ इस असना में जिब्रील अलैहिस्सलाम आ गये और कहने लगे कि ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप को और आप के सहाबा को यह सुनकर ताज्जुब हुआ कि उन हज़रात ने अस्सी बरस इबादत की और एक लम्हा को नाफ़रमानी नहीं की, अल्लाह तआला ने तो आप पर इससे बेहतर इरशाद नाज़िल फ़रमाया है इसके बाद हज़रत जिब्रील ने सूरत इन्ना अन्जलनाहो पढ़ी और कहा कि जिस चीज़ पर आप और आप के अस्हाब को ताज्जुब हुआ था यह उससे अफ़ज़ल है यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत मसरूर हुए।

यहया बिन बख़ीह का कौल है कि बनी इसराईल में एक शख्स अल्लाह तआला की रज़ा और खुशनूदी के लिए एक हज़ार महीने तक हथियार बन्द रहा और जिस्म से हथियार अलग नहीं किये यह बात हुज़ूर ने सहाबा कराम से बयान फ़रमाई तो इस पर सहाबा को ताज्जुब हुआ उस वक़्त अल्लाह तआला ने आयत लैलतुल क़द्रि ख़रूम मिन अल्फ़े शहर नाज़िल फ़रमाई मतलब



यह है कि उस शख्स के हजार महीनों से तुम्हारे लिए एक शबे क़द्र अफ़ज़ल व बरतर है। बाज़ अस्हाब ने उस मुजाहिद का नाम शमऊन बताया है किसी ने शमसून भी कहा है।

तनज़ज़लुल मलाएकतो यानी शबे क़द्र में गुरुबे आफ़ताब से तुलूए आफ़ताब तक फ़रिश्ते और रूह यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम उतरते रहते हैं वरूहो यानी हज़रत जिब्री अलैहिस्सलाम।

जहाक ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया अरूहो इंसानी सूरत पर एक क़वियुल जुस्सा खिलक़त है इसके बारे में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: आप से रूह के बारे में दरयाफ़्त करते हैं तो रूह वह फ़रिश्ता है जो सफ़ बस्ता फ़रिश्तों के साथ क़यामत के दिन तन्हा खड़ा होगा (अकेली सफ़ में खड़ा होगा)। मकातिल का कौल है कि अल्लाह तआला के नज़दीक वह फ़रिश्ता तमाम मलाइका से बरतर यानी अशरफ़ुल मलाइका है। दीगर उलमा ने इस सिलसिला में कहा है कि यह वह फ़रिश्ता है कि उसकी सूरत तो इंसानी है लेकिन ज़िस्म फ़रिश्तो के मानिन्द है वह अर्श के पास है आज़मे मख़लूक (मख़लूक में सबसे अफ़ज़ल) वह सफ़ बस्ता फ़रिश्तों के साथ खड़ा होता है चुनांचे अल्लाह तआला का यह इरशाद उसी के मुताल्लिक़ है।

शबे क़द्र में (फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं) हर अम्र यानी हर भलाई के साथ (उन फ़रिश्तों का नुज़ूल होता है) वह रात सलामती वाली है (उसमें कोई बीमारी व जादू टोने का असर, काहिनों की कहानत मोअस्सिर नहीं) तुलूए फ़ज़्र तक अगर मतला का लाम मक़सूर पढ़ा जाये मतलीए पढ़ा जाये तो उसके मानी होंगे मक़ामे तुलूअ सलामुन के मानी यह भी कहे गये हैं कि रूए ज़मीन के मुसलमानों पर मलाइका की तरफ़ से सलाम होता है यानी तुलूए फ़ज़्र तक फ़रिश्ते सलाम सलाम कहते रहते हैं।

## कौन सी रात लैलतुल क़द्र है

### शबे क़द्र की तलाश

शबे क़द्र को रमज़ान शरीफ़ के आखिरी अशरा में तलाश किया जाये (यानी 20 तारीख़ से आखिरी तारीख़ तक) उन तारीख़ों में ज़्यादा मशहूर 27 वीं शब है। इमाम मालिक के नज़दीक किसी तारीख़ का तअय्युन वसूक के साथ नहीं किया जा सकता, आखिरी अशरा की सब रातें बराबर हैं। इमाम शाफ़ई के नज़दीक 21 वीं शब ज़्यादा काबिले एतमाद है। एक कौल है कि 29वीं शब। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका का यही मसलक था (वह इसी रात को ख़्याल फ़रमाती थीं) हज़रत अबू मरवा 23वीं शब के काएल थे। हज़रत अबूज़र और हज़रत हसन ने फ़रमाया कि यह 25वीं शब है। हज़रत बिलाल ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि वह 24 वीं शब है। हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत अबी बिन कअब ने फ़रमाया कि वह 27वीं शब है इस तअय्युन पर उनकी दलील यह है कि 27वीं शब ज़्यादा मोअक्किद है मुख़तसर यह कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वह कौन सी शब है।

इमाम हंबल बिल असनाद हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहे अन्हो से रिवायत की है कि सहाबा कराम अपने अपने ख़्वाब आखिरी अशरा (रमज़ान) में रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान किया करते थे उस पर हुज़ूर ने फ़रमाया मुझे ऐसा मालूम होता है कि तुम लोगों के ख़्वाब 27 वीं शब के मुताल्लिक़ मुतवातिर हैं। इसलिए जो शख्स शबे क़द्र की जुस्तजू करे वह 27 वीं



रात को करे। यह भी मरवी है कि हजरत इब्ने अब्बास ने हजरत उमर फारुक से कहा मैंने ताक अददों पर तो सात से ज्यादा किसी ताक अदद को लाएके एतमाद नहीं पाया। फिर जब सात के अदद पर गौर किया तो आसमानों को भी सात, जमीन को भी सात, रात को सात, दरिया भी सात, सफा व मरवा के दर्मियान सई भी सात बार है, खाना कसबा का तवाफ भी सात बार है, रमई जमार भी सात है, इंसान की तखलीक भी सात आजा से है, उसके चेहरे में भी सात सुराख हैं कुरआन मजीद में हा मीम से शुरू होने वाली सूरते सात हैं सुरह अलहमद की आयत सात हैं, कुरआन पाक की किरअतें सात हैं, नीज मंजिले भी सात हैं, सजदा भी सात आजा से होता है, जहन्नम के दरवाजे सात हैं, जहन्नम के नाम सात और उसके दर्जे भी सात हैं असहाबे कहफ सात थे, सात दिन की मुसलसल लगातार आंधी से कौम आद हलाक हो गई, हजरत युसूफ अलैहिस्सलाम सात साल जेल खाना में रहे, बादशाहे मिस्र ने ख्वाब में जो गायें देखी थीं वह सात थीं, कहत के भी सात साल थे और अरजानी के भी के भी सात साल, पंजगाना नमाज के फराएज की रिकअते 17 हैं। अल्लाह तअला का इरशाद है: जब हज से फारिग होकर लौटो तो सात रोजे रखो नसबी औरतें भी सात ही हराम हैं और सुसराली औरतें भी सात हराम हैं। कुत्ता अगर किसी बरतन में मुह डाल दे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के बमौजिब वह उसको सात बार पाक करने का हुक्म है जिसमें पहली बार मिट्टी से माजना है। सूरतुल कद्र के आगाज से लफ़्ज सलाम तक हुरूफ की तादाद 27 है। हजरत अय्यूब अलैहिस्सलाम अपनी आजमाइश में सात साल मुबतला रहे। हजरत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीका ने फरमाया कि मैं सात साल की थी कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे निकाह फरमाया, सर्दी के आखिरी दिन सात हैं तीन दिन शबात (फागुन) के और चार दिन आजर (चैत) के। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत के शोहदा सात तरह के हैं (1) राहे खुदा (जिहाद) में मारा जाने वाला, (2) ताऊन से मरने वाला (3) सिल के मरज में मरने वाला (4) डूब कर मरने वाला (5) जल कर मर जाने वाला (6) पेट के मरज (हैजा) से मरने वाला (7) वजअ हमल में मरने वाली औरत। हजरत मूसा अलैहिस्सलाम का तूल उस जमाने के सात गज के बराबर था और आप के असा का तूल भी सात गज था, जब यह साबित हो गया कि अकसर चीजें सात हैं तो अल्लाह तअला ने सलामुन हेया हत्ता मत-ल-इल फ़र फरमाकर बन्दों को आगाह कर दिया कि शबे कद्र 27 वीं शब को है (कि इस में सात का हिन्दसा शामिल है) इस रिवायत से यह साबित होता है कि शबे कद्र 27 तारीख को होती है।

## शबे जुमा अफ़ज़ल है या शबे कद्र

हमारे उलमाए कराम के दर्मियान इस अम्र में इखतेलाफ़ है कि शबे जुमा अफ़ज़ल है या शबे कद्र। हजरत शैख अबू अब्दुल्लाह बिन बत्ता, शैख अबुलहसन जजरी और अबुल हफ़स उमर बरमक्की शबे जुमा को अफ़ज़ल कहते हैं अबुल हसन तमीमी के नजदीक शबे जुमा से वह रात अफ़ज़ल थी जिसमें कुरआने पाक का नुज़ूल हुआ उसके बाद आइन्दा सालों में (रमज़ान में आने वाली) शबे कद्र से शबे जुमा अफ़ज़ल है (यानी सिर्फ़ वह शबे कद्र शबे जुमा से अफ़ज़ल है जिसमें कुरआन का नुज़ूल हुआ इसके बाद हर शबे जुमा आने वाली शबे कद्र से अफ़ज़ल है



लेकिन अक्सर उलमाए का इस पर इखतेलाफ है उनका मज़हब यह है कि शबे क़द्र जुमा की रात और दीगर तमाम रातों से अफ़ज़ल व बरतर है।

हमारे असहाब यानी अकाबरीन उलमाए हनाबला (या हंबली मज़हब) के कौल की दलील वह रिवायत है जिसको काज़ी इमाम अबुल याला ने अपनी असनाद के साथ हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अल्लाह तआला जुमा की रात में तमाम मुसलमानों को बख़्श देता है। यह फ़ज़ीलत ऐसी है कि किसी और रात के बारे में हुज़ूर ने ऐसी फ़ज़ीलत बयान नहीं फ़रमाई यह भी हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है कि आप ने फ़रमाया मुझ पर फ़ज़ीलत वाली रातों में रौशन दिनों में, जुमा के दिन और उसकी रात में कसरत से दुरुद भेजा करो। एक वजह यह भी है कि शबे जुमा अपने दिन के ताबेअ है बिला शुबहा शबे जुमा की फ़ज़ीलत में इतनी रिवायत है। कि उतनी लैलतुल क़द्र की फ़ज़ीलत में नहीं है उन्ही रिवायाते फ़ज़ाइल में एक रिवायत यह है जिसके रावी हज़रत अनस है उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर ने इरशाद किया कि आफ़ताब किसी ऐसे दिन पर कभी तुलूअ नहीं हुआ जो अल्लाह तआला के नज़दीक जुमा के दिन से अफ़ज़ल हो।

हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया यौमे जुमा से अफ़ज़ल दिन पर सूरज न तुलूअ होता है न गुरुब और सिवाए दो बड़े फ़िरको यानी जिन्न व इन्स का हर जानदार अल्लाह से डर कर जुमा के दिन अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करता है। हज़रत अबू हुरैरा से यह भी मरवी है कि रसूले खुदा ने इरशाद फ़रमाया रोज़े क़यामत अल्लाह तआला हर दिन को उसकी सूरत में उठायेगा लेकिन जुमा के दिन को इस हाल में उठायेगा कि वह रौशन और ताबां होगा और अहले जुमा उसके गिर्दा गिर्द इस तरह चलेंगे जैसे दुल्हन को झुरमुट में उसके शौहर की जानिब ले जाते हैं, सब लोग उसकी रौशनी में चलेंगे, उनके रंग बर्फ़ की तरह सफ़ेद और उनकी खुशबू मुश्क की मानिन्द होगी वह सब काफ़ूरी पहाड़ों में दाख़िल होंगे अहले महशर में तमाम जिन्न व इन्स उनको ताज़्ज़ुब से देखेंगे यहां तक कि वह लोग जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे।

## शबे क़द्र पर शबे जुमा की अफ़ज़लियत

अगर कोई यह एतराज़ करे कि अल्लाह तआला तो शबे क़द्र को हज़ार महीनों से बेहतर और अफ़ज़ल फ़रमाता है तो उसके जवाब में कहा जायेगा कि हज़राते मुफ़र्रसीन ने फ़रमाया है कि इसका मतलब यह है जिन हज़ार महीनों में शबे क़द्र न हो उन हज़ार महीनों से बेहतर एक शबे क़द्र है। यह मतलब नहीं कि जिन महीनों में शबे जुमा भी न हो उनसे शबे क़द्र अफ़ज़ल है ब अलफ़ाज़े दिगर मुराद यह है कि शबे क़द्र ऐसे हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है जिनमें शबे जुमा न हो नीज़ यह वजह है कि शबे जुमा जन्नत में भी बाकी रहेगी क्योंकि उस दिन में अल्लाह तआला का दीदार वाक़ेअ होगा और यह शबे जुमा दुनिया में क़तई और यकीनी तौर पर मुतअय्यन व मालूम है और शबे क़द्र का तअय्युन महज़ जन्नी है।

## शबे क़द्र अफ़ज़ल है शबे जुमा से

इमाम अबुल हसन तमीमी और दीगर उलमाए कराम का मज़हब यह है कि शबे क़द्र अफ़ज़ल है इसकी वजह (दलील) यह है कि अल्लाह तआला का इरशाद है कि वह हज़ार महीनों से



अफज़ल है और हजार महीने 83 साल और चार महीने के हैं। एक कौल यह भी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुजूर में जब आप की उम्मत की उमरें पेश की गईं तो वह आप को बहुत कम मालूम हुई जिस पर आपको शबे क़द्र पेश की गई (यानी अता की गयी)

इमाम मालिक बिन अनस ने फ़रमाया कि मैंने एक काबिले एतमाद शख्स से सुना है कि गुज़िश्ता लोगों की उम्रें बड़ी तवील थीं हुजूर वाला ने उनके मुकाबले में अपनी उम्मत की उम्रों को कम पाया और ख़्याल फ़रमाया कि जितने आमाल (हुस्ना) गुज़िश्ता लोग अपनी तवील उम्रों में कर चुके उस हद तक मेरी उम्मत के लोग अपनी कोताह उम्रों में नहीं कर सकेंगे तो अल्लाह तआला ने आपको शबे क़द्र अता फ़रमाई जो हजार महीनों से अफज़ल है।

इमाम मालिक बिन अनस ने सईद बिन मुसैयब का कौल नक़ल किया है कि जो शख्स शबे क़द्र में इशा की नमाज़ बा जमाअत में हाज़िर हुआ उसको शबे क़द्र (की इबादत) का एक हिस्सा मिल गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है कि जिसने इशा और मगरिब जमाअत के साथ पढ़ी उसने शबे क़द्र से अपना हिस्सा हासिल कर लिया। हुजूर ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि जिसने सूरतुल क़द्र की तिलावत की उसने चौथाई कुरआन की तिलावत की। इस सूरह को माहे रमज़ान की आखिरी नमाज़े इशा में पढ़ना मुस्तहब है।

## शबे क़द्र के ग़ैर मुतअय्यन होने का सबब

अगर कोई कहे कि इसकी क्या वजह है कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को क़तई और यकीनी तौर से शबे क़द्र को क्यों नहीं बताया (कि वह कौन सी रात है) जिस तरह शबे जुमा की इत्तेला तअय्युन के साथ फ़रमा दी है, इसका जवाब उनको यह दिया जायेगा कि अदमे तअय्युन की वजह यह है कि लोग इस बात पर एतमाद न कर बैठे कि हम ऐसी रात में इबादत कर चुके जो हजार महीनों से अफज़ल है और अल्लाह ने हमारी मग़फ़िरत कर दी, हम को बारगाहे इलाही से बड़े बड़े मरातिब हासिल हो गये, जन्नत मिल चुकी। यह ख़्याल करके वह अमल से किनारा कश हो जायेंगे और मुतमईन हो कर बैठ जायेंगे और उम्मीद में फंस कर रह जायेंगे जिस का नतीजा बरबादी होगा। शबे क़द्र के तअय्युन से मुत्तला न करने की यही वजह है जो मौत के वक़्त से मुत्तला न करने की है ताकि अपनी मौत का वक़्त जानने वाला यह न कहने लगे अभी तो मेरी उम्र बहुत बड़ी है दुनिया में तो अभी ऐश कर लूं, लज़्ज़तें और ख़्वाहिशें पूरी कर लूं जब ज़िन्दगी की ख़ातमे का वक़्त आयेगा तो उस वक़्त तौबा कर लूंगा और इबादत में मशगूल हो जाऊंगा और नेकोकारों की हालात में मेरा ख़ातमा हो जायेगा इसलिए अल्लाह तआला ने उनसे उनके मरने का वक़्त पोशीदा रखा ताकि उनको हमेशा मौत का धड़का लगा रहे और नेक अमल में मसरूफ़ रहे हमेशा तौबा करते रहें और आमाल की इसलाह में मशगूल रहें और उन पर मौत इस हाल में आये कि वह नेकी पर कायम हों इस तरह दुनिया में भी वह जाएज़ लज़्ज़तो से महज़ूज़ हों और आखिरत में अल्लाह की रहमत के बाइस अज़ाब से बच जायें।

एक मकूल है कि अल्लाह तआला ने पांच चीज़ों को पांच चीज़ों के अन्दर छुपा रखा है बन्दा की ताअत में अपनी रज़ा को, बन्दा की नाफ़रमानियों में अपने ग़ज़ब को, दर्मियानी नमाज़ को दूसरी नमाज़ों में, मख़लूक में अपने औलिया को और माहे रमज़ान में शबे क़द्र को।



## पांच मखसूस रातें

### अल्लाह तआला ने हुजूर को पांच रातें मरहमत फरमाई

अल्लाह तआला ने अपने हबीब मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पांच मखसूस रातें अता फरमाई हैं पहली रात कुदरत और मोजजा वाली रात है जिसमें आप की अंगुष्ठे मुबारक के इशारे से चांद दो टुकड़े हो गया। अल्लाह तआला का इरशाद है: वह साअत करीब आ गई और चांद शक हो गया। हजरत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए उनके असा के जब से समन्दर शिगफ़ता हो गया लेकिन हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अंगुष्ठे मुबारक के इशारे से चांद शक हो गया। यह सबसे बड़ मोजजा था दूसरी रात दावत और दावत की कबूलियत की थी अल्लाह तआला ने फरमाया: हमने आप की तरफ़ जिन्नो की एक जमाअत को भेजा वह कुरआन सुनने लगे। तीसरी रात हुक्म और फैसला की रात थी। अल्लाह तआला ने फरमाया: हमने कुरआन को बरकत वाली रात में नाज़िल किया हम ही डराने वाले हैं उसी रात में हर हिकमत वाला काम तकसीम किया जाता है। चौथी रात कुर्ब और नजदीकी की थी यानी शबे मेराज थी, अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया: पाक है वह जात जिसने अपने बन्दे को रात के एक हिस्सा में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा तक सैर कराई। पांचवी रात तहय्यत व सलाम की है, इरशादे खुदावन्दी है इन्ना अन्जलनाहो फी लैलतिल कद्र—तनज़ज़लुल मलाइकतो वरूहो फीहा तक, यह शबे कद्र है।

### बदकारों के लिए नेकोकारों की शफ़ाअत

हुजूर इब्ने अब्बास से मरबी है कि जब शबे कद्र होती है तो अल्लाह तआला जिब्रील को ज़मीन पर उतरने का हुक्म देता है। जिब्रील के साथ सिदरतुल मुन्तहा पर रहने वाले सत्तर हजार फरिश्ते भी होते हैं जिनके पास नूरी झंडे होते हैं। ज़मीन पर नुज़ूल के बाद जिब्रील और फरिश्ते अपने अपने झंडे चार जगह गाड़ देते हैं 1—ख़ाना काबा के पास 2—हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रौजे अक़दस के पास 3—मस्जिद बैतुल मुक़द्दस के पास 4—मस्जिदे तूरे सीना के पास। इसके बाद जिब्रील फरिश्तों से कहते हैं कि तुम फैल जाओ, फरिश्ते सारी ज़मीन पर फैल जाते हैं कोई घर, कोई कमरा, कोई कोठरी और कोई कश्ती ऐसी बाकी नहीं रहती जहां मोमिन मर्द और औरत मौजूद हो और फरिश्ते वहां दाख़िल न हों अलबत्ता जिस घर में कुत्ता, सुअर तस्वीर या वह पलीद मौजूद हो जिसकी पलीदगी ज़िना से हुई हो वहां यह फरिश्ते दाख़िल नहीं होते। दाख़िल होने के बाद तमाम फरिश्ते तस्बीह, तक्दीस और तहलील में मसरूफ़ हो जाते हैं और उम्मत मोहम्मदिया के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं (तमाम रात रह कर) फ़ज्र के वक़्त आसमान पर चढ़ जाते हैं आसमाने दुनिया के रहने वाले दरयाफ़्त करते हैं कि आप कहां से आये, फरिश्ते जवाब देते हैं हम दुनिया में थे क्योंकि यह रात उम्मत मोहम्मदिया के लिए शबे कद्र थी, वही फरिश्ते फिर पूछते हैं कि अल्लाह तआला ने उनकी हाजतों की बाबत क्या हुक्म फरमाया, उस वक़्त जिब्रील कहते हैं कि अल्लाह तआला ने अच्छे अमल करने वाले को बख़्श दिया और बदकारों के लिए नेकोकारों की शफ़ाअत कबूल फरमाई यह सुनते ही आसमाने दुनिया के फरिश्ते



अपनी अपनी आवाज़ में तस्बीह व तक्दीस और रब्बुल आलमीन की हम्द व सना करने लगते हैं और इस अम्र पर अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाते हैं कि अल्लाह तआला ने उम्मत मोहम्मदिया की मग़फ़िरत फ़रमा दी और अपनी रज़ामन्दी का इज़हार फ़रमाया। इसके बाद आसमाने दुनिया के फ़रिश्ते उन फ़रिश्तों के साथ दूसरे आसमान तक जाते हैं वहां भी इसी तरह सवाल व जवाब व हम्द व सना का ग़लगला बलन्द होता है यहां तक यह फ़रिश्ते सातवें आसमान तक पहुंच जाते हैं उसके बाद जिब्रील फ़रमाते हैं कि ऐ आसमान के रहने वालो! लौट जाओ, फ़रिश्ते अपनी अपनी जगह वापस चले जाते हैं सिदरतुल मुन्तहा के रहने वाले फ़रिश्ते भी चले जाते हैं सिदरा के रहने वाले दरयाफ़्त करते हैं कि तुम कहां गये थे यह भी वैसा ही जवाब देते हैं जैसा कि आसमाने दुनिया पर रहने वाले फ़रिश्तों ने दिया था उनका जवाब सुनकर सिदरतुल मुन्तहा के रहने वाले फ़रिश्ते भी तस्बीह व तहलील व तक्दीस बलन्द आवाज़ में करने लगते हैं उनकी आवाज़ें जन्नतुल मावा सुनती है उसकी आवाज़ जन्नते नईम, उसकी आवाज़ जन्नते अदन, उसकी आवाज़ जन्नतुल फिरदौस और उसकी आवाज़ अर्श इलाही तक जाती है तो वह भी हम्द व सना व तस्बीह व तहलील में मसरूफ़ हो जाता और और उन इनामात पर शुक्र बजा लाता है जो अल्लाह तआला ने उम्मत मोहम्मदिया पर फ़रमाये हैं फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है।

ऐ मेरे अर्श! तूने किस लिए अपनी आवाज़ बलन्द की? वह अर्ज करता है कि ऐ मेरे माबूद! मुझे मालूम हुआ है कि तूने आज रात उम्मत मोहम्मदिया के सालेहीन को बख़्श दिया है और उनकी शफ़ात गुनहगारों के हक़ में कबूल फ़रमा ली है। हक़ तआला कहता है कि ऐ मेरे अर्श तू ठीक कहता है! मेरे नजदीक उम्मत मोहम्मदिया की इतनी इज़्ज़त व करामत है कि न किसी आंख ने देखी और न किसी कान ने सुनी और न किसी दिल में उसका वहम व गुमान गुज़रा।

रिवायत है कि जब हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम लैलतुल क़द्र में जब आसमान से उतरते हैं तो कोई मुसलमान ऐसा बाकी नहीं रहता जिससे उन्होंने सलाम करके मुसाफ़ा न किया हो। इसकी अलामत यह है कि उस शख्स की जिल्द की रौंगटे खड़े होंगे, उसका दिल नर्म होगा और उसकी आंख से आंसू बहेंगे यही वजह है उस रिवायत की जिसमें आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उम्मत के लिए परेशान थे अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मोहम्मद! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़मगीन न हो मैं जब तक तेरी उम्मत को अंबिया की मरातिब व दरजात अता नहीं करूंगा उनको दुनिया से नहीं निकालूंगा और इसकी सूरत यह है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम के पास चूँकि फ़रिश्ते कलाम, पयाम, वही और एजाज़ लेकर आते थे उसी तरह शबे क़द्र में अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते सलाम व रहमत के साथ उम्मत मोहम्मदिया पर नाज़िल होंगे।

## शबे क़द्र की अलामतें

शबे क़द्र की पहचान यह है कि उस शब में न गर्मी होगी न सर्दी (मौसम मोअतदिल होगा) बाज़ हज़रात ने कहा है कि इस रात में कुत्ते की भोंकने की आवाज़ नहीं सुनी जायेगी और उस रात की सुबह को सूरज इस तरह तुलूअ होगा कि उसकी शुआयें तश्त के मुशाबेह होंगी (यानी सूरज बग़ैर किरनों के तुलूअ होगा) शबे क़द्र के अजाएबात का इन्क़शाफ़ तो उन्ही दिल वालों पर होता है जो इताअत गुज़ार और साहबे विलायत होते हैं उन हज़रात में जिस बुर्जुग का जैसा हाल, दरजा और मरतबए कुर्ब होता वैसे ही इन्क़शाफ़ात उन पर होते हैं।



## नमाजे तरावीह

नमाजे तरावीह, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है आप ने एक दो या तीन रातें (ब इखतेलाफ रिवायत) तरावीह की नमाज पढ़ी इसके बाद सहाबा कराम हुजूर मुक़दस से आप के बाहर तशरीफ लाने के मुनतज़िर रहे मगर हुजूर काशानए नुबूव्वत से बाहर तशरीफ नहीं लाये, आपने फ़रमाया कि अगर मैं (तरावीह के लिए) बाहर आ जाता तो तुम पर तरावीह फ़र्ज हो जाती। हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर के ज़माने में तरावीह की नमाज हमेशा पढ़ी गई इस बिना पर इस की निसबत आप से की जाती है इस लिए भी कि इसकी जमाअत की इब्तेदा आप ही ने की।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा से मरवी है कि माहे रमज़ान की वस्त रात में एक बार हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद में नमाज पढ़ी लोगों ने भी हुजूर की इक़तेदा में नमाज अदा की दूसरी रात आदमियों की इतनी कसरत हुई कि मस्जिद तंग हो गई लेकिन हुजूर वाला हुजरे नबी से बरआमद नहीं हुए, सुबह को फ़ज्र की नमाज के लिए तशरीफ लाये फ़ज्र की नमाज से फ़ारिग हो कर लोगों से खिताब फ़रमाया तुम्हारी रात की हालत मुझसे पोशीदा न थी लेकिन अंदेशा यह था कि नमाजे तरावीह तुम पर फ़र्ज हो जाये और तुम इसके अदा करने से आजिज़ हो जाओ। हज़रत आइशा सिद्दीका फ़रमाती हैं कि हुजूर लोगों को रमज़ान की रातों को ज़िन्दा रखने (नमाज पढ़ने) की तरगीब दिया करते थे बग़ैर इसके कि आप उन पर लज़ूम के साथ हुक्म फ़रमाये (यानी वजूबी हुक्म हुजूर नहीं देते थे) आप के विसाल के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक और अहदे फ़ारुकी के इब्तेदाई के दौर में तरावीह का मामला यूं ही रहा।

हज़रत अली मुर्तज़ा रजियल्लाहो अन्ही ने फ़रमाया कि हज़रत उमर बिन अल ख़त्ताब ने मुझसे तरावीह की नमाज की हदीस जब सुनी तो आप ने उस पर अमल फ़रमाया। लोगों ने दरयाफ़्त किया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन वह हदीस क्या है? तो आप ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि आप ने फ़रमाया कि अर्श इलाही के इर्द गिर्द एक जगह है जिसका नाम "हज़ीरतुल कुदस" है वह नूर की जगह है उसमें इतने फ़रिश्ते हैं जिनकी तादाद अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, इबादते इलाही में मशगूल रहते हैं और उसमें एक लम्हा की भी कोताही नहीं करते जब माहे रमज़ान की रात आती हैं तो यह अपने रब से ज़मीन पर उतरने की इजाज़त तलब करते हैं और वह बनी आदम के साथ मिलकर नमाज पढ़ते हैं। उम्मत मोहम्मदिया में जिसने उनको छुआ या उन्होंने किसी को छुआ तो वह ऐसा नेक बख़्त व सईद बन जाता है कि फिर कभी बद बख़्त व शकी नहीं बनता, यह सुनकर हज़रत उमर ने फ़रमाया जबकि इस नमाज की यह शान है तो हम इसके ज़्यादा हक़दार हैं फिर आपने तरावीह की जमाअत कायम कर के उसको सुन्नत क़रार दे दिया।

हज़रत अली मुर्तज़ा से मरवी है कि माहे रमज़ान की इब्तेदाई रात में जब घर से बाहर आते और मस्जिदों में तिलावते कुरआन सुनते तो फ़रमाते अल्लाह! उमर की क़ब्र को रौशन कर दे जिन्होंने अल्लाह की मस्जिदों को कुरआन से मुनव्वर किया। इसी तरह की एक रिवायत हज़रत उसमान ग़नी से मरवी है उस रिवायत के अलफ़ाज़ यह है कि हज़रत अली मस्जिदों के करीब



गुनियवुतालिबीन

से गुजरे तो मस्जिदों को किन्दीलों से रौशन और लोगों को तरावीह पढ़ते देखा तो फरमाने लगे अल्लाह तआला हज़रत उमर की कब्र को रौशन फरमाये जिस तरह उन्होंने हमारी मस्जिदों को रौशन किया है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स अल्लाह के घर में किन्दील लटकाता है (रौशन करता है) सत्तर हजार फरिश्ते उस किन्दील के बुझने तक उसके लिए दुआए मग़फ़िरत और इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं। हज़रत अबूज़र गेफ़ारी ने फरमाया हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, रमज़ान की 23वीं रात को एक तिहाई रात तक हुज़ूर वाला ने खड़े होकर नमाज़ पढ़ाई 24 वीं रात को हुज़ूर तश्रीफ़ नहीं लाये पच्चीसवीं रात को तश्रीफ़ लाए तो निस्फ़ शब तक नमाज़ पढ़ाई हमने अर्ज किया कि अगर हुज़ूर हम को आज पूरी रात तक नफ़ल पढ़ाते तो ख़ूब होता हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स इमाम के साथ नमाज़ ख़त्म होने तक बा जमाअत नमाज़ में खड़ा रहा उसे पूरी रात का सवाब मिलेगा। 26 वीं शब को हुज़ूर फिर तश्रीफ़ न लाये फिर 27 वीं शब आई तो हुज़ूर वाला ने अहले ब़ैते कराम को भी जमा फरमाया और हम सब को साथ ले कर नमाज़ पढ़ाई हमको खौफ़ हुआ कि हमारी फ़लाह न फ़ौत हो जाये, लोगों ने अर्ज किया कि फ़लाह के क्या मानी हैं आप ने फरमाया कि सहरी।

## नमाज़े तरावीह की जमाअत

मुस्तहब है कि नमाज़े तरावीह बा जमाअत हो और तिलावते कुरआन जहरी हो इसलिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़े तरावीह इसी तरह पढ़ी थी। नमाज़े तरावीह की इब्तेदा उसी रात से करना चाहिए जिस रात को माहे रमज़ान का चांद नज़र आ जाये इस लिए कि वह रात माहे रमज़ान की रात होती है और इस लिए भी हुज़ूर वाला ने भी इस तरह पढ़ी है। इशा के नमाज़ के फ़र्ज़ों और सुन्नतों के बाद तरावीह होनी चाहिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अमल यही था। तरावीह की 20 रकअतें हैं हर दो रकअत के बाद सलाम फेरना चाहिए, 20 रकअत के पांच तरवीहा हैं यानी हर चार रकअत का एक तरवीहा। हर चार रकअत के बाद कुछ देर के लिए वक़फ़ा ज़रूरी है हर दो रकअत के शुरू में इस तरह नीयत करे कि मैं दो रकअत नमाज़े तरावीह मसनूना अदा कर रहा हूँ नमाज़ ख़्वाह तन्हा पढ़ रहा हो या जमाअत के साथ हर सूरत में नीयत करना मुस्तहब है माहे रमज़ान की अव्वल शब की तरावीह में पहली रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह अलक़ यानी पढ़े क्योंकि हमारे इमाम अहमद बिन हंबल और दूसरे तमाम अइम्मा के नज़दीक यह कुरआन की पहली नाज़िल शुदा सूरत है इसी तरह तमाम मुजतहेदीन के नज़दीक है। फिर सूरत के आख़िर में सजदए तिलावत करे इसके बाद उठ कर सूरह बकरा की तिलावत करे।

पूरे कुरआन को तरावीह में पढ़ना मुस्तहब है ताकि इस तरह लोग पूरे कुरआन को सुन ले और कुरआन में जो अवामिर व नवाही, नज़ाएह और बसाइर हैं उनसे वाकिफ़ हो जाये। पूरी तरावीह में एक ख़त्म से ज़्यादा पढ़ना अच्छा नहीं ताकि मुक़तदियों को कोई दुश्वारी न हो और वह तंग दिल होकर उकता ना जाये, जमाअत से कराहत न पैदा हो और उनका सदाबे अजीम और अजरे जज़ील फ़ौत न हो जाये और चूँकि यह तमाम दिक्कतें उनको इमाम दो वज़ह से पेश



आयेंगी इस लिए इमाम का गुनाह गुनाहे अजीम होगा। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हजरत मआज से फरमाया था कि मआज क्या तुम फितना व बला पैदा करते हो, सूरत यह हुई कि हजरत मआज ने कुछ लोगों को ने नमाज पढ़ाई और किरात को तूल दिया तो एक शख्स ने नमाज तोड़ कर अलग हो गया और उसने तन्हा नमाज पढ़नी शुरू कर दी फिर उसने इस अम्र की रसूले खुदा से शिकायत की उस वक्त हुजूर उनको बुलवा कर यह अलफाज हजरत मआज से फरमाये।

मुसतहब है कि तरावीह के बाद वित्र पढ़े वित्र की पहली रिकअत में सब्बेह इस्मे रब्बेकल आला और दूसरी रिकअत में सूरह काफिरून और तीसरी रिकअत में सूरह इखलास पढ़े इस लिए कि हुजूर सरवरे काएनात का यही मामूल था। दो तरावीहों के दर्मियान नफल पढ़ना मकरूह है इसी तरह दो मस्जिदों में तरावीह पढ़ना मकरूह है, नफल नमाज को तरावीह के बाद बा जमाअत पढ़ना भी दो रिवायतों में से एक के बमौजिब मकरूह है। यह तअक्कुब यानी जमाअत के बाद जमाअत करना है। इमाम अहमद के नज़दीक तअक्कुब मकरूह है। एक रिवायत में आया है कि हजरत अनस बिन मालिक भी इसे मकरूह समझते थे बल्कि तरावीह के बाद कुछ दर सो रहे फिर उठकर जितने नवाफिल और तहज्जुद पढ़ना चाहे पढ़े फिर अपनी ख्वाबगाह में चले जाए। नाशेअतुल लैल (रात का उठना) जिस की तारीफ अल्लाह ने सूरह मुजम्मिल में फरमाई है। दूसरी रिवायत में है कि तरावीह के बाद जमाअत नवाफिल बिला कराहियत जायज़ है लेकिन बिलकुल आखिर में सोने से पहले यह नफल बा जमाअत पढ़े क्योंकि हजरत उमर ने फरमाया था कि तुम लोग रात की फज़ीलत आखिरी हिस्सा पर छोड़ देते हो मुझे तो उस साअत से जिसमें तुम नमाज सोकर उठने के बाद पढ़ते हो वह साअत ज्यादा महबूब है जबकि तुम सो जाते हो यानी जिस घड़ी तुम सोते हो वह साअत मेरे नज़दीक और वह घड़ी तुम्हारी उस साअत से ज्यादा पसन्दीदा है जिस में तुम खड़े होकर इबादत करते हो।

## शबे क़द्र और माहे रमज़ान

### के मज़ीद मसाइल

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इरशाद है रूह यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम सत्तर हजार फरिश्तों को साथ लेकर उतरते हैं उनमें जिब्रील सब फरिश्तों के सरदार होते हैं जिब्रील हर उस शख्स को जो बैठा हो और दूसरे फरिश्ते हर उस शख्स को जो सोया हो सलाम करते हैं। हक सुब्हानहु तआला अपने हर उस बन्दे पर जो नमाज में खड़ा हो उसी तरह सलाम भेजता है जिस तरह जन्नत के अन्दर मोमिन बन्दों को अल्लाह का सलाम पहुंचाना साबित है। अल्लाह तआला का इरशाद है: मेहरबान रब की तरफ से उन को सलाम होगा। इसी तरह यह भी जाएज़ है कि दुनिया में उन नेक बन्दों पर सलाम भेजे जिनके लिए रोज़े अज़ल ही से अल्लाह की तरफ से भलाई, रहमत और सआदत मुक़्दर हो चुकी है जो फ़ानी दुनिया से मोहब्बत नहीं रखते और अल्लाह तआला ही से लौ लगाये हैं और अल्लाह ही की तरफ तवज्जोह व सुकून के साथ रूजूअ हो कर अपने गुनाहों पर नादिम हैं।

शबे क़द्र में ज़मीन का कोई चप्पा ऐसा बाकी नहीं रहता जहां कोई फरिश्ता हालते सुजूद



गुनियवुत्तालिबीन

या कयाम में मसरूफ मोमिन मर्द या औरत के लिए दुआ न करता हो सिर्फ इसाइयों के मअबद (गिरजा) यहूदियों की हैकल, बुत परस्तों के मन्दिर और वह मकामात जहां गलाजत डाली जाती है उससे मुस्तसना है (फरिश्ते वहां नहीं जाते)

रात भर यह मलाइका मुसलमान मर्दों और औरतों के लिए दुआ में मसरूफ व मशगूल रहते हैं हजरत जिब्रील भी हर मोमिन मर्द और औरत को सलाम व मुसाफा करते हैं वह हर मुसलमान से कहते हैं कि अगर तू इबादत में मशगूल हो तो तुझ पर सलाम है अल्लाह तेरी इबादत को कबूल करे और तेरे साथ भलाई फरमाये अगर तू गुनाहों में मुबतला हो तो तुझ पर सलाम हो अल्लाह तेरे गुनाहों को माफ करे अगर तू सोता है तो तुझ पर सलाम हो अल्लाह तुझ से राजी हो अगर तू कब्र में हो तो तुझ पर सलाम हो और तुझे राहत और रहमते इलाही मयस्सर हो। आयत मिन कुल्ले अमरीन सलामुन का यही मतलब है। बाज उलमाए कराम फरमाते हैं कि फरिश्ते अहले ताअत पर सलाम भेजते हैं अहले इसयां पर नहीं, उन गुनहगारों में कुछ तो वह हैं जो जालिम हैं उनके लिए फरिश्तों के सलाम से कुछ हिस्सा नहीं है कुछ लोग ऐसे हैं जो हराम खोर हैं, रिश्तादारियां मुनकतअ करने वाले हैं, चुगल खोर, यतीमों का माल खाने वाले हैं तो उन लोगों के नसीबा में फरिश्तों का सलाम नहीं है पस गुनाहों से बढ़ कर और कौन सी मुसीबत है कि मुबारक माह के आगाज में रहमत, दर्मियानी हिस्सा में मगफिरत और आखिरी हिस्सा में जहन्नम से आजादी की नेअमत मौजूद हो और यूँही गुजर जाये और मलाइका के सलाम से महरूमी नसीब हो इस महरूमी और बदनसीबी की वजह इसके सिवा और कुछ नहीं कि तू रहमान से दूर रह कर नाफरमानों में शामिल है तू शैतान की मवाफिकत करता है और ऐसे खुदा से दूर भागता है जिसके कब्ज़े कुदरत में बुराई और भलाई है।

रमजानुल मुबारक का महीना गुनाहों से रिहाई दिलाने का महीना, अल्लाह तआला से किये हुए वादों को निभाने का महीना, अल्लाह तआला की तरफ सिद्क दिल से रूजूअ होने का महीना, तमाम बुराइयों से तौबा करने का महीना है अगर यह महीना कभी तेरे दिल की दुरुस्ती न कर सका और तुझे अल्लाह की नाफरमानियों से बाज न रख सका और बदबख्तों और मुजरिमों से दूर न कर सका तो फिर तेरे दिल पर कौन सी चीज असर करेगी और तुझसे किस भलाई की उम्मीद हो सकती है, अब कौन सी खूबी और अच्छाई तेरे अन्दर बाकी रह गई और तेरे जानिब से कौन सी फ़लाह व बहबूद की तवक्कोअ की जा सकती है (ज़रा सोच) कौन सी बदबख्ती है जो तुम में नहीं ऐ इसयां में मुबतला इंसान तू जिस हाल में मुबतला है उससे खबरदार हो जा गफलत और नींद से बेदार हो जा और जिस मुसीबत में गिरफ़्तार है उसे देख, बाकी महीने (माह मुबारक के बकिया दिनों को) गनीमत जान कर तौबा कर और अनाबत की तरफ़ मुतवज्जेह हो, इताअत व इस्तिग़फ़ार के साथ अपने मनहूस नफ़स पर चीख चीख कर और हाय हाय कर के गिरया व ज़ारी, बहुत से रोज़ादार ऐसे होंगे कि आइन्दा माहे रमज़ान के रोज़े नहीं रख सकेंगे बहुत से इबादत गुज़ार ऐसे होंगे कि फिर उनको कभी इबादत का मौका नहीं मिलेगा, अमल करने वालों को अमल तमाम करने के बाद ही उजरत दी जाती है बिला शुबहा हम से अमल का वक्त रूखसत हो रहा है ऐ काश हमें मालूम होता कि फ़लां शख्स का रोज़ा या फ़लां शख्स की इबादत मकबूल या मरदूद होगी और उसके मुंह पर मार दी जायेगी काश हम को यह भी मालूम हो जाता कि कौन मकबूल है ताकि हम उसको मुबारकबाद पेश करते और यह मालूम हो



कि रान्दए दरगाह (मरदूद) कौन है कि हम उस की ताजियत और उससे इजहारे अफसोस करते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि बहुत से रोजादार हैं कि जिनको भूक और प्यास के रोजों से कुछ हासिल नहीं होगा (यानी उनके रोजे भूक और प्यास के सिवा कुछ नहीं) बहुत से रातों को नमाज़ पढ़ने वाले हैं जिन की नमाज़ सिवाए बेदार रहने के और किसी शुमार में नहीं आयेगी।

ऐ रमज़ानुल मुबारक के महीने तुझ पर सलाम! ऐ ईमान के महीने तुझ पर सलाम! नुजूले कुरआन व तिलावत के महीने तुझ पर सलाम! माहे अनवार तुझ पर सलाम! माहे बख्शिश व मगफिरत तुझ पर सलाम! दरजाते जन्नत के हुसूल और दोज़ख के तबकात से नजात के महीने तुझ पर सलाम! ऐ आबिदों और तौबा करने वालों के महीने तुझ पर सलाम! अहले मारफ़त के महीने तुझ पर सलाम! ऐ आरिफों के महीने तुझ पर सलाम! ऐ अमन व अमान के महीने तुझ पर सलाम! ऐ माहे रमज़ान तू गुनहगारों को गुनाहों से नजात दिलाने और परहेज़गारों से उन्स व मोहब्बत रखने वाला था तुझ पर सलाम! सलाम हो उन किन्दीलों और रौशन चिरागों पर, सलाम हो उन आंखों पर जो बेदार रहती हैं, सलाम हो उन आंखों पर जो बहती रहती हैं, सलाम हो उन मेहराबों पर जो रौशन और मनव्वर हैं, सलाम हो कतरा कतरा बन कर गिरने वाले आंसुओं पर, सलाम हो सोख़्ता दिलों से निकलने वाली आहों पर, इलाही हम को भी उन लोगों में शामिल फ़रमा दे जिनके रोजे और नमाज़ें तूने कबूल फ़रमाई हैं और जिनकी बुराइयों को तूने नेकियों से बदल दिया है और जिनको तूने अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाया और उनके मरातिब को बलन्द फ़रमाया या अरहमर्रहेमीन।

## सदक़ए फ़ित्र व ईदुल फ़ित्र

अल्लाह तआला का इरशाद है: बेशक वह कामयाब हुए और फ़लाह पाई जिन्होंने बातिन को पाक किया और अपने रब का ज़िक्र करते हुए नमाज़ पढ़ी। फ़लाह की दो किस्में हैं एक तो तौफीक़े ताअत की बदौलत दुनिया में बरकत व सआदत से हम किनार होना और आख़िरत में हमेशा जन्नत में रहना। क़द अफ़लहल मोमेनून अहले ईमान को सआदत मिल गई। क़द अफ़लहा मन तजक्का के मानी हैं जिसको ज़कात अदा करने और ईमान व तक्वा को गुनाहों से पाक रखने की तौफीक़ मिल गई वह खुश नसीब हो गया और जिसने यह तजकिया न किया यानी ज़कात न दी और गुनाहों से अपने आमाल को पाक न रखा उसके लिए कोई फ़लाह नहीं है ला युफ़लेहुल मुजरेमून के यही मानी हैं यानी गुनहगार (मुजरिम) न कामयाब है और न फ़लाह पाने वाले हैं, गुनहगार कामयाब और खुश नसीब नहीं होंगे। मन तजक्का के मानी में मुफ़रसरीन का इख़तेलाफ़ है। हज़रत इब्ने अब्बास ने इसके मानी फ़रमाये कि जो ईमान के ज़रिये शिर्क से पाक हो गया, हसन बसरी न फ़रमाया फ़लाह उसके लिए है जिसने नेक और बढ़ने वाले नेक आमाल किये। अबुल अहूस ने इरशाद किया जिस ने माल की ज़कात अदा की, क़तादा और अता फ़रमाते हैं कि इस आयत में सिर्फ़ सदक़ए फ़ित्र मुराद है। शैख़ ने इसी कौल की बुनियाद पर आयत मज़क़ूरा बाला को सदक़ए फ़ित्र के इस्तिदलाल में बयान किया है।

पज़करा इस्मा रब्बेही फ़सल्ला की तफ़सीर में भी इख़तेलाफ़ है, हज़रत इब्ने अब्बास ने इसकी



तफसीर में फरमाया कि जिसने अल्लाह को वाहिद जाना और पंजगाना नमाजें अदा कीं गोया जिक्र से मुराद तौहीद और पांचों वक्त की नमाजें हैं। हजरत अबू सईद खुदरी फरमाते हैं जिक्रे इस्म से मुराद तकबीरात कहना और सल्ला से मुराद हैं ईदगाह जाकर नमाजे ईद पढ़ना। वकीअ बिन जर्हा ने फरमाया रमजान के लिए सदकए फित्र की वह हैसियत है जो नमाज के लिए सजदए सहव की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोजादार को यावा गोई से बाज रखने के लिए सदकए फित्र को वाजिब करार दिया है यानी रोजादार के रोजा में यावा गोई दरोग, चोरी, चुगलखोरी, मुश्तबा रोजी और हसीन औरतों की तरफ निगाह करने से जो खराबियां पैदा हो जाती हैं, सदकए फित्र मजकूरा गुनाहों का कफ़ारा, रोजों का तकमिला और रोजों की नक्स की तलाफी का जरिया है जिस तरह गुनाहों के लिए तौबा व इस्तिगफार है और नमाज में सहव के लिए सजदा है, शैतान ही नमाज में सहव पैदा करता है पस सजदए सहव शैतान को जलील व ख्वार करता रहता है। इसी तरह रोजा में बेहूदा गोई और लगजिशें भी शैतान ही के बाएस होती हैं पस गुनाहों से तौबा और रमजान के रोजों की खराबियां दूर करने के लिए सदकए फित्र भी शैतान को जलील व ख्वार करने का जरिया है। अल्लाह तआला हम सब को शैतान की घातों से बचाए और दुनिया की आफतों और बलाओं से महफूज रखे (आमीन) और हमें अपनी रहमत में जगह दे आमीन सुम्मा आमीन।

## ईद की वजहे तसमिया

ईद को ईद इसलिए कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दों की तरफ इस दिन फरहत व शादमानी को बार बार लाया है यानी ईद और औद हम मानी हैं। बाज उलमा का कौल है कि ईद के दिन अल्लाह तआला की तरफ से बन्दे को मुनाफ़ेअ, एहसानात और इनामात हासिल होते हैं यानी ईद अवाइद से मुश्तक है और अवाइद के मानी हैं मुनाफ़ेअ के, या ईद के दिन बन्दा चूँकि गिरया व ज़ारी की तरफ लौटता है और उसके एवज अल्लाह तआला बख्शिाश व अता की जानिब रुजूअ फरमाता है। बाज उलमा का कहना है कि इसकी वजहे तसमिया यह है कि बन्दा इताअते इलाही से इताअते रसूल की तरफ रुजूअ करता है और फर्ज के बाद सुन्नत की जानिब पलटता है, माहे रमजान के रोजे रखने के बाद माहे शव्वाल के छः रोजों की तरफ मुतवज्जेह होता है इसलिए इसको ईद कहते हैं। ईद की वजहे तसमिया के मुताल्लिक बाज उलमा का कहना है कि ईद इसलिए कहा गया है कि इस दिन मुसलमानों से कहा जाता है कि (अल्लाह तआला फरमाता है) कि अब तुम मगफूर हो कर अपने घरों और मकामात को लौट जाओ बाज फरमाया कि इसको ईद इसलिए कहा गया कि इसमें वादा व वईद का जिक्र है, बांदी और गुलाम की आजादी का दिन है, हक तआला इस दिन अपनी करीब व बईद मखलूक की तरफ तवज्जोह फरमाता है, कमजोर व नातवां बन्दे अपने रब के सामने गुनाहों से तौबा और रुजूअ करते हैं।

वहब बिन मुम्बा का कौल है कि अल्लाह तआला ने यौमे फित्र को जन्नत पैदा फरमाई और उसी दिन अर्श पर दरख्ते तूबा लगाया। हजरत जिब्रील को वही के लिए मुनतखब फरमाया और उसी दिन फिरऔन की तरफ से हजरत मूसा अलैहिस्सलाम के मुकाबले में पेश होने वाले साहिरों ने तौबा करके भगफिरत पाई।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक हदीस मरवी है कि हुजूर ने फरमाया जब ईदुल



फित्र का दिन होता है और लोग ईदगाह की तरफ जाते हैं तो हक तआला उन पर तवज्जोह फरमाता है और इरशाद फरमाता है ऐ मेरे बन्दो! तुम मेरे लिए रोजे रखे मेरे लिए नमाजें पढ़ीं अब तुम अपने घरों को इस हाल में जाओ कि तुम बख्श दिए गये हो।

हजरत अनस बिन मालिक से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला उस शख्स को जिस ने माहे रमजान में रोजे रखे ईदुल फित्र की रात में पूरा पूरा अज्र अता फरमा देता है और ईद की सुबह फरिश्तों को हुक्म देता है कि जमीन पर जाओ और हर गली कूचा और बाजार में एलान कर दो (इस आवाज को जिन्न व इन्स के अलावा तमाम मखलूक सुनती है) कि मोहम्मद के उम्मतियों! अपने रब की तरफ बढ़ो वह तुम्हारी थोड़ी नमाज को कबूल करके बड़ा अज्र अता फरमाता है और बड़े बड़े गुनाहों को बख्श देता है फिर जब लोग ईदगाह रवाना हो जाते हैं और वहां नमाज से फारिग हो कर दुआ मांगते हैं तो अल्लाह तआला उस वक्त किसी दुआ और किसी हाजत को रद्द नहीं फरमाता और किसी गुनाह को बगैर माफ किये नहीं छोड़ता और लोग अपने घरों को मगफूर हो कर लौटते हैं।

हजरत इब्ने अब्बास की हदीस में है शबे ईदुल फित्र का नाम शबे जाएजा (यानी इनाम की रात) रखा गया और ईदुल फित्र की सुबह को तमाम शहरों के कूचा व बाजार में फरिश्ते फैल जाते हैं और एलान करते हैं (जिसको जिन्न व इन्स के सिवा तमाम मखलूक सुनती है) कि ऐ मोहम्मद की उम्मत! रब्बे करीम की तरफ चलो ताकि वह तुम को सबाबे अजीम अता फरमाये और तुम्हारे बड़े बड़े गुनाहों को बख्श दे। लोग ईदगाह को निकल जाते हैं तो अल्लाह तआला फरिश्तों से फरमाता है ऐ मेरे फरिश्तो! फरिश्ते लम्बैक कहते हुए हाजिर हो जाते हैं हक तआला फरमाता है उस मजदूर की क्या उजरत है जो अपना काम पूरा करे? फरिश्ते जवाब देते हैं कि ऐ हमारे माबूद! हमारे आका! उस मजदूर को पूरी पूरी उजरत दी जाये, रब्बे जलील इरशाद फरमाता है ऐ मेरे फरिश्तो! मैं तुम को गवाह बनाता हूँ कि मैंने इनके रोजों और नमाज, शब का अज्र, खुशनूदी और गुनाहों की मगफिरत बना दिया। फिर फरमाता है कि ऐ मेरे बन्दो मुझ से मांगो! अपनी इज्जत व जलाल की कसम आज तुम अपनी आखिरत के लिए मुझसे मांगोगे मैं वह तुम को जरूर दूंगा और जो कुछ अपनी दुनिया के लिए मांगोगे मैं उसका लिहाज रखूंगा। मुझे अपनी इज्जत व जलाल की कसम जब तक तुम मेरे अहकाम की हिफाजत करोगे (बजा लाओगे) मैं तुम्हारी खताओं और लगजिशों की पर्दापोशी करता रहूंगा और तुमको उन लोगों के सामने जिन पर शरई सजा वाजिब हो चुकी है रूसवा नहीं करूंगा जाओ तुम्हारी बख्शिाश हो गई, तुमने मुझे रजामन्द किया मैं तुम से राजी हो गया। हजरत इब्ने अब्बास फरमाते हैं फरिश्ते यह मुजदा सुनकर खुश हो जाते हैं और माहे रमजान के खातमे पर उम्मते मोहम्मदिया को यह खुश खबरी पहुंचाते हैं।

## चार उम्मतों की चार ईदें

### मिल्लते इब्राहीम की ईद

चार उम्मतों की चार ईदें हैं एक ईद हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की, मिल्लत के लिए थी जिस का जिक्र अल्लाह तआला ने इस तरह फरमाया: हजरत इब्राहीम ने सितारों पर नजर डाली और कहा मेरी तबीयत खराब है इसकी तफसील यह है कि हजरत इब्राहीम की कौम की ईद का



दिन था वह लोग ईद मनाने शहर के बाहर निकले, हज़रत इब्राहीम का मज़हब उनके मज़हब से अलग थलग था, आप उन लोगों के साथ (ईद मनाने नहीं गये) और बीमार बन गये जब लोग शहर के बाहर चले गये तो आपने तीशा उठाया और उनके बुतों को तोड़ डाला और उसके बाद तीशा बड़े बुत के कांधे पर रख दिया जब कौमे इब्राहीम वापस आई तो उसने अपने बुतों की यह डुरगत बनी देखी उन्होंने हज़रत इब्राहीम से पूछा कि हमारे बुतों के साथ यह सुलूक किसने किया (इसका पूरा किस्सा कुरआन मजीद में मज़कूर है) हज़रत इब्राहीम को अपने रब की इज़्ज़त के खातिर जोश आया इसलिए उन्होंने गुस्से में तमाम बुतों को तोड़ डाला और रब्बुल आलमीन की मोहब्बत में अपनी जान को खतरे में डाला इसके सिला में रब्बुल आलमीन ने आप को अपनी दोस्ती से नवाज़ा उनके हाथों से मुर्दा परिन्दे को ज़िन्दा कराया उनकी नस्ल में अंबिया व मुरसलीन पैदा फ़रमाए और उनको हज़रत खैरुल मुरसलीन मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़दे आला बनाया।

## उम्मे मूसा की ईद

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत की ईद: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मुकाबिला का मुक़रर शुदा दिन तुम्हारे लिए यौमे जीनत है। यौमे जीनत कहने की वजह तसमिया यह बयान की गई है कि अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल के दुश्मन फिरऔन और कौमे फिरऔन को हलाक करके हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आप की कौम को जीनत बख़्शी। फिरऔन और कौमे फिरऔन के साथ 72 या 73 जादूगर मैदान में निकल आये थे उन जादूगरों के पास सात सौ लाठियां थीं उन जादूगरों ने लाठियों के ख़ौल में पारा भर दिया था और ऊपर से उन पर रस्सियां लपेट दी थी सब लोग गर्म रेत पर सूरज के नीचे खड़े थे (तेज़ धूप में खड़े थे) जब धूप तेज़ हुई तो पारा में हरकत पैदा हुई और रस्सियों से लिपटी हुई लाठियां दौड़ने लगीं लोगों को गुमान हुआ कि वह सांप हैं दौड़ रहे हैं हालांकि लाठियां गैर मुतहरिक थीं (उनके अन्दर पारा मुतहरिक था) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने दिल में अपनी कौम के बारे में यह ख़तरा महसूस किया कि कहीं ऐसा न हो कि लोग जादूगरों की इस शोबदा बाज़ी को देखकर उन साहिरों से मरऊब हो जायें और सही रास्ता से भटक कर रान्दए दरगाह बन जायें। अल्लाह तआला ने उस वक़्त हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया तुम भी अपना असा ज़मीन पर डाल दो जो कुछ उन्होंने झूठ बनाया है तुम्हारी लाठी उसको निगल लेगी, हज़रत मूसा ने अपनी लाठी ज़मीन पर फेंक दी वह फौरन अज़दहा बनकर एक बड़े ऊंट की तरह दौड़ने लगा उस की दो आंखें आग की तरह दहकने लगीं (उस अज़दहे को देखकर) एक क़यामत बरपा हो गई उन लोगों ने जादू के जोर से जितने सांप दौड़ाये थे हज़रत मूसा के उस (अज़दहा) नुमा असा ने इन सब सांपों को एक बारगी निगल लिया और उसकी हालत में कुछ फ़र्क नहीं आया न पेट फूला न हरकत में कमी आई न उसकी लम्बाई चौड़ाई में इज़ाफ़ा हुआ चुनांचे बे एख़्तियार हो कर तमाम जादूगर अल्लाह तआला के हुज़ूर सजदे में गिर गये (उन जादूगरों के सरदार का नाम शमऊन था) सब जादूगर बयक ज़बान हो कर पुकार उठे हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाये।

सांप फिरऔन के लश्कर और उसकी कौम की तरफ़ बढ़ा, लोग (डर कर) भाग निकले



रिवायत है कि इस भगदड़ में तकरीबन पचास हजार आदमी मर गये (उसी दिन का नाम यौम जीनत रखा गया और यह उम्मत मूसवी का ईद का दिन है)।

## हज़रत ईसा की उम्मत की ईद

हज़रत ईसा और आपकी उम्मत की ईद: अल्लाह तआला (हज़रत ईसा की दुआ नक़ल फ़रमाते हुए) इरशाद करता है:

ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! हम पर आसमान से एक ख़वाने नेमत उतार जो हमारे लिए और हमारे अगले पिछलों के लिए ईद हो जाए।

वाक़ेया यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हव्वारियों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल क्या आप का रब आप का यह सवाल पूरा कर सकता है की आप उससे दुआ करें कि वह हमारे लिए आसमान से ख़वाने नेमत नाज़िल फ़रमाए तो क्या वह यह ख़वाने नेमत नाज़िल कर सकता है, हज़रत ईसा ने यह सुन कर फ़रमाया अल्लाह से डरो, अगर तुम ईमान रखते हो तो आजमाईश में पड़ने का सवाल न करो अगर ख़वाने नेमत उतार दिया गया और तुमने फिर भी उसे न माना (झुटलाया) तो तुम पर अज़ाब नाज़िल हो जाएगा। हव्वारियों ने कहा कि हम भूके हैं हम उसमें से खाना भी चाहते हैं और हमारे दिलों को इस पर इत्मीनान हो जाए जिस पर आप ईमान लाने और तसदीक़ करने को हम से कहते हैं और हम को मालूम हो जाए की आप नबुव्वत और रिसालत के मामले में सच्चे हैं दूसरे लोगों (बनी इस्राईल) के सामने जाकर हम ख़वाने नेमत नाज़िल होने कि शहादत भी दे सकेंगे। नबती ज़बान में हव्वारीन के मानी कपड़े धोने और सफ़ेद करने वाले हैं उनकी तादाद कुल बारह थी यह हव्वारी बैतुल मुक़द़स में कपड़े धोया करते थे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कौन है जो कुफ़्र व तुग़ियान के मुक़ाबिले में मेरी मदद करे और दीन को फैलाये? ताकि मैं उन काफ़िरों को इत्ताअते इलाही और उसकी वहदानियत की तरफ़ दावत दूं यह सुन कर हव्वारियों ने कहा हम हैं राहे खुदा में आपकी मदद करने वाले। हव्वारी अपना कारोबार छोड़कर हज़रत ईसा की इत्तेबा और पैरवी पर आमादा हो गये और आप के साथ हो गये उन्होंने जब साथ रह कर हज़रत ईसा के हाथ से सरज़द होने वाले अजीब व ग़रीब मोज़ज़ात देखे कि जब भूक लगती तो ज़मीन की तरफ़ हाथ बढ़ा देते और अपने हव्वारियों के लिए रोटी निकाल लेते। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आप के साथ होते थे जो मोज़ज़ात दिखाते आपकी मदद करते और नुसरत मन्द फ़रमाते।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल को बराबर मोज़ज़ात दिखाते रहते मगर बनी इस्राईल आपका इंकार ही करते रहे (आप से दूर ही होते गये) इत्तेबा और तसदीक़ की उनको तौफ़ीक़ नहीं हुई यहां तक कि एक दिन उन हव्वारियों के साथ पांच हजार जवान चले और उन्होंने हज़रत ईसा से ख़वाने नेमत के नुज़ूल की दरख़्वास्त की उस वक़्त हज़रत ईसा ने बारगाहे इलाही में इस तरह दुआ की:

ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवरदिगार! आसमान से हम पर एक ख़वाने नेमत नाज़िल फ़रमा दे जो हमारे लिए (हमारे ज़माने के लोगों के लिए भी) ईद हो और आइन्दा वालों के लिए भी और तेरी तरफ़ से मेरी रिसालत की निशानी भी हो जाये, हमको रिज़क अता फ़रमा तू सबसे अच्छा रज़ज़ाक है।  
अल्लाह तआला ने इस दुआ के जवाब में इरशाद फ़रमाया:



मैं अंकरीब तुम पर ख़ाने नेमत नाज़िल करूंगा लेकिन उसके बाद जो इंकार करेगा उसको अज़ाब भी ऐसा दूंगा कि सारी दुनिया में किसी को नहीं दिया गया होगा।

गर्ज कि अल्लाह तआला ने इतवार के दिन उनपर ख़ाने नेमत उतारा जिसमें ताज़ा मछली, चपातियां (पतली पतली रोटियां) और खजूरें थीं। एक कौल है कि तली हुई मछली थी जिसके सर के पास नमक और दुम के पास सिरका रखा था रोटियां पांच थीं हर रोटि पर जैतून का एक फल रखा था, पांच अनार और कुछ खजूरें थीं, उनके गिरदा गिर्द मुख़तलिफ़ तरकारियां (अलावा लहसुन) के चुनी हुए थीं बाज़ उलमा ने कहा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जबकि वह एक बाग़ में मुकीम थे अपने हव्वारियों से कहा कि तुम में से किसी के पास कुछ खाने के लिए मौजूद हो तो लाओ! शमऊन ने दो छोटी छोटी मछलियां और पांच रोटियां पेश कीं एक हव्वारी थोड़े से सत्तू (भुने हुए जौ का आटा) ले आया, हज़रत ईसा ने उन मछलियों के छोटे छोटे टुकड़े किए और रोटियों के भी टुकड़े कर दिए सत्तू उसी तरह रहने दिए फिर वजू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ी और अल्लाह से बरकत की दुआ की, अल्लाह तआला ने हव्वारियों पर औंघ तारी कर दी जब उनकी आंख खुली तो खाना इतना ज़्यादा था कि एक काफ़िला के लिए काफ़ी हो हज़रत ईसा ने फ़रमाया कि अल्लाह का नाम ले कर खाना खाओ उठाकर रख देने की इजाज़त नहीं है हुक्म दिया कि सब हल्का बना कर बैठें चुनांचे सब बैठ गये और अल्लाह का नाम ले कर सब ने खाना शुरू कर दिया यहां तक कि सबके सब शिकम सैर हो गये खाने वालों की तादाद पांच हजार थी। एक रिवायत में है कि वह सब लोग 18 सौ मर्द औरत थे उनमें कुछ फकीर भी थे और कुछ फाका कश थे और ऐसे लोग भी थे जिन्हें एक रोटि भी मैयस्सर न होती थी उन सब ने वह खाना खाया ख़ूब सैर हो कर खाया और अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए सब लोग उठ गये और खाना उतना का उतना ही मौजूद था उसमें कुछ कमी नहीं आई उसके बाद लोगों की नज़रों के सामने ही दसतरख़ान आसमान की तरफ़ उठ गया जिस फकीर ने उस ख़ाने नेमत से खाना खाया वह तवंगर बन गया और मरते दम तक तवंगर रहा जिस बीमार या अपाहिज ने खाया वह तन्दुरुस्त हो गया।

मकातिल का कौल है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कौम से पुकार कर कहा क्या तुम खा चुके, लोगों ने जवाब दिया जी हां, तो आपने फ़रमाया कि दूसरे वक़्त के लिए कुछ उठा कर न रखना, लोगों ने वादा किया लेकिन वादा ख़िलाफ़ी करते हुए कुछ उठा कर रख लिया जिस कदर खाना उन्होंने उठाया था उसकी मक़दार चौबीस मक़याल थी। (मक़याल ग़ल्ला नापने का पैमाना, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में इस पैमाने में जिस कदर भी आता हो जैसे अरब में साअ) इस मोज़जे को देख कर वह सब के सब हज़रत ईसा पर ईमान ले आए और आपकी रिसालत की तसदीक़ की, जब बनी इस्राईल के पास पहुंचे तो उन लोगों ने ख़ाने नेमत की शहादत दी और इसके सबूत में जो खाना (छिपाकर) उठाए थे पेश किया लेकिन बनी इस्राईल ने (जो यहूदी थे) न माना और उन (ईमान लाने वालों) के साथ लगे रहे यहां तक कि उनको इस्लाम से फेर दिया बावजूद कि ख़ाने नेमत से ली हुई ख़ोराक उनके पास अब भी मौजूद थी फिर भी यह नुजुले माएदा के मुनकिर हो गए इस इन्कार का नतीजा यह हुआ की एक दिन सोते में अल्लाह तआला ने उन सब की सूरतें सूअरों की तरह मस्ख़ कर दीं, जिन की सूरतें मस्ख़ की गई थीं वह सबके सब मर्द थे उनमें कोई औरत या बच्चा नहीं था।



बाज़ ओरफ़ा ने बयान किया है कि उस मोज़े में एक नुक्ता है और वह यह कि ख़ाने लज़्ज़त में जो ख़ाना मौजूद था वह बहुत कम था और ख़ाने वाली एक जमाअत, एक जम्मे ग़फ़ीर और सबके सब शिकम सैर होकर उठे और ख़ाना उतना ही बाकी रहा तो गौर करना चाहिए कि अल्लाह तआला के ख़ाने रज़ा और ख़ाने रहमत की क्या कैफ़ियत होगी जिस की न कोई हद है और न कोई इन्तिहा।

हदीस शरीफ़ में वारिद है की अल्लाह के सौ रहमतें हैं एक रहमत उसने दुनिया में उतारी है उसी रहमत के तुफ़ैल लोग आपस में रहमत व शफ़क़त करते हैं बाकी निनानवे हिस्से उसके पास हैं क़यामत के दिन वह रहमतें अपने बन्दों पर नाज़िल फ़रमाएगा।

हदीस शरीफ़ में आया है कि क़यामत के दिन अल्लाह जल्ला जलालुहू अपनी रहमत की ऐसी बिसात बिछाएगा कि अव्वलीन व आख़िरीन यानी तमाम इंसानों के गुनाह उसके किनारों में समा जायेंगे और उसके तमाम बिसात ख़ाली रहेगी यहां तक कि इब्लीस भी उसकी तरफ़ बढ़ने की कोशिश करेगा ताकी उसको भी बिसाते रहमत से कुछ मिल जाए हालांकि अल्लाह की रहमत इस क़दर वसीअ है लेकिन अक्लमन्द व जी फ़हम शख्स को ज़ेबा नहीं कि वह इसी पर तकिया कर ले और इस फ़रेब ख़ुर्दगी में मुब्तला हो जाए लेकिन ख़ौफ़ को उम्मीद पर ग़ालीब भी नहीं बनाना चाहिए वरना हलाक हो जाएगा बक़द़ ताक़ते बशरी कोशिश ज़रूर करना चाहिए जहां तक मुम्किन हो अवामिर व नवाहि की पाबन्दी करे और अपने तमाम कामों को अल्लाह के सुपुर्द कर दे यह ज़रूरी है। कसरत से बतौर दवाम तौबा व इस्तिग़फ़ार करता रहे, न ख़ौफ़े अज़ाब का इतना ग़लबा हो कि रहमत की आस टूट जाए और न नजात का इतना यकीन कि ममनूआत का इस्तेकाब करने लगे और अवामिर को तर्क करके नवाही का मुस्तकिब हो बल्कि दर्मियानी रास्ता इस्तियार करे यानी मोमिन के अन्दर उम्मीद व बीम बराबर हों, बीम व रज़ा परिन्दे के दो परो की तरह हैं और परिन्दे उड़ते वक़्त दोनों परो का तवाज़ुन बरकरार रखता है।

चौथी ईद उम्मत मोहम्मदिया की है आगाज़ में इसके मुताल्लिक तफ़सील बयान की जा चुकी है।

## ईद मोमिन भी मनाता है और काफ़िर भी

ईद की खुशी मनाने में मोमिन और काफ़िर दोनों शरीक हैं यानी काफ़िर भी (अपनी) ईद की खुशी मनाता है और मोमिन भी, लेकिन काफ़िर की ईद शैतान की खुशनुदी के लिए है और मोमिन की ईद अल्लाह तआला की रज़ा के लिए है। मोमिन ईद के लिए (ईदगाह) जाता है तो उसके सर पर हिदायत का ताज (मुज़य्यन) होता है, हया और शर्म की अलामतें आंखों से नुमाया होती हैं और कान हक़ सुनने की तरफ़ राग़िब होते हैं, ज़बान पर तौहीद की शहादत और दिल में मारेफ़त और यकीन होता है, उसके शानों पर इस्लाम की चादर और कमर में इताअत (इलाही) का पटका होता है उसका मक़ाम और मंज़िल ख़ानकाह व मस्जिद होती है उसका माबूद बन्दों और सारी मख़लूक का रब होता है वह उसी के सामने गिड़ गिड़ाता है उसी से मांगता है और



गुनियतुत्तालिबीन

अल्लाह तआला की अता और बख्शिाश उसकी पजीराई करती है अल्लाह तआला उसे मकामे इज्जत और जन्नत में दाखिल फरमा देगा।

काफिर ईद को जाता है तो उसके सर पर नामुरादी और गुमराही का ताज होता है, कानों पर गफलत का परदा और हिजाब पड़ा होता है, आंखें बेहयाई और ख्वाहिशाते नफ्सानी का पता देती हैं, जबान पर बद बख्ती और शकावत की मुहर लगी होती है, दिल पर जहल व इंकार का अंधेरा छाया होता है, कमर में बदबख्ती का पटका होता है, अल्लाह तआला से कट जाने के हैबत नाक गढ़े दर्मियान में हाएल होते हैं (ऐसे गढ़े जो अल्लाह और उसके दर्मियान हाएल होते हैं) उनकी नशिस्त व बरखास्त की जगहें गिरजे और आतिश कदे होंगे, उसके माबूद बुत होंगे, आखिरकार ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम ही है।

## ईद मनाने का इस्लामी तरीका

ईद में ऊमदा और अच्छा लिबास पहनने, ऊमदा और लजीज खाना खाने, हसीन औरतों से मुआनका करने और लज्जत और शहवत से लुत्फ अन्दोज होने से ईद नहीं होती है बल्कि मुसलमान की ईद होती है ताअत व बन्दगी की अलामात के जाहिर होने से, गुनाहों और खताओं से दूरी से, सय्यात के एवज हसनात के हुसूल से, दरजात के बलंदी की बशारत, अल्लाह तआला के तरफ से खिलअतें बख्शिाशें और करामतें हासिल होने से, नूरे ईमान से सीना की रौशनी, कुव्वते यकीन और दूसरी नुमायां अलामात के सबब दिल में सुकून पैदा हो जाने से, उलूम व फुनून और हिकमतों का दिल के अथाह समन्दर दिल से निकल कर जबान पर रवा हो जाने से ईद की हकीकी मुसररतें हासिल होती हैं।

ईद के दिन हजरत अली की खिदमत में एक शख्स हाजिर हुआ आप उस वक्त भूसी की रोटी खा रहे थे उसने अर्ज किया कि आज ईद का दिन है और आप चोकर (भूसी) खा रहे हैं? आप ने जवाब दिया, आज ईद तो उसकी है जिसका रोजा कबूल हो जिसकी मेहनत मशकूर हो और जिसके गुनाह बख्श दिये गये हों। आज का दिन भी हमारे लिए ईद का दिन है और कल भी हमारे लिए ईद हागी और हर वह हमारे लिए ईद का दिन है जिस दिन हम अल्लाह तआला की नाफरमानी न करें।

पस हर साहबे अक़ल व शुऊर के लिए मुनासिब व जेबा है कि ईद के जाहिर पर नज़र रखने से बाज़ आ जाये, जाहिर पर फरैफ़ता न हो बल्कि रोजे ईद को इबरत और गौर व फिक्र की निगाह से देखे, ईद के दिन को कयामत का दिन समझे और शबे ईद में शाही नक्कारा की आवाज़ को सूर की आवाज़ समझे जब लोग ईद के इंतज़ार में तैयारी करके रात को सो जाते हैं तो उनकी उस हालत को ऐसा समझे जैसा कि सूर के दो नफ़हों के दर्मियान ख्वाब की हालत होगी। ईद की सुबह लोगों को जब अपने अपने महलों और घरों से निकलते देखे उनको रंग बिरंग लिबास, तरह तरह के जेवरात में लिपटा खुशी से झूमता देखे तो ख्याल करे कि अहले माअसियत गमज़दा हैं और अहले तक़वा खुश व ख़ुर्रम हैं। मुशरिकों और मुजरिमों पर खुदा की फिटकार बरस रही है वह मुंह के बल औंधे पड़े रेंग रेंग कर चल रहे हैं, मुत्तकी सवारियों पर सवार हैं अल्लाह तआला फरमाता है।



रहमान की तरफ हम अहले तकवा को सवार करा के ले जायेंगे और मुजरिमों को दोजख की तरफ प्यासे ऊंटों की तरह हकायेंगे।

उस दिन हर जाहिद व आबिद व अबदाल अपने हकीकी बादशाह और महबूब के पास अर्श के साया में आराम व सुकून में होगा, हर एक के जिस्म पर लिबास और जेवर होगा, चेहरे पर मारफ़्त व ताअत के अनवार होंगे और उसकी ताजगी और झलक नुमायां होगी, सामने नेमत के दस्तरख्वान बिठे होंगे जिस पर तरह तरह खाने, मशरूब और फल रखे होंगे यहां तक कि तमाम मखलूक का हिसाब हो चुकेगा उस वक्त वह अपनी अपनी मंजिलों (क़याम गाहों) में जन्नत के अन्दर चले जायेंगे जो उनके लिए अल्लाह तआला ने तैयार कर रखी हैं। जन्नत में हर मरगूब तबअ चीज़ मौजूद होगी हर चीज़ वहां की जाज़िब नज़र होगी वहां की नेमतें ऐसी होंगी कि न आंखों ने उन जैसी नेमतें देखी होंगी और न कानों ने सुना होगा बल्कि किसी शख्स के दिल में उनका तसव्वुर भी न आया होगा, अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है:

कोई नहीं जानता कि उनके आमाल की जज़ा में अहले जन्नत के लिए आंखों को ठंडक पहुंचाने वाली कैसी चीज़ें पोशीदा रखी गई हैं।

और जो दुनिया के तलबगार हैं तो वह गिरया व ज़ारी और रन्ज व अलम में मुब्तला होंगे, अहले जन्नत जिन राहतों से हमकिनार होंगे उन राहतों और आसाईशों का दरवाज़ा उन के लिए बन्द रहेगा क्योंकि उन्हें माल व मताअ से रगबत थी, हराम और मुशतबहा माल खाते थे और अपने रब की इबादत में गड़बड़ करते रहते थे, वह अहले जन्नत के मुरातिब देखेंगे मगर उन तक न पहुंच सकेंगे जब तक वह उन हुक्म से ओहदा बरआ न होजायेंगे जो उनके जिम्मा हैं।

अब रहे काफ़िर तो वह तरह तरह के अज़ाब, ज़िल्लत व ख़वारी, तबाही और बर्बादी दोजख के दवामी अज़ाब को महसूस करके मौत व हलाकत की आरजू करेंगे मगर उनको मौत नहीं आएगी।

जब मुसलमान ईद के दिन कौमी (शाही) फ़रेरों को लहराता और झंडों को सरबुलंद देखे तो उसको चाहिए कि उस वक्त को याद करे जब अल्लाह तआला की तरफ से एक मुनादी उंचे निशान वाले मुसलमानों को अल्लाह तआला के दीदार के लिए पुकारेगा और जब वह (ईदगाह में) नमाज़ियों की दुरुस्त सफ़ें (जिन में बहुत से लोग शरिक हैं) देखे तो याद करे कि (कल) क़यामत के दिन तमाम मखलूक अल्लाह के सामने उसी तरह खड़ी होगी कि बुरे लोग अलग क़तारों में और नेक लोग अलग क़तारों में खड़े होंगे और तमाम ढकी छिपी बातें उस रोज़ जाहिर हो जायेंगी।

ईद की नमाज़ से फ़ारिग होकर लोग ईदगाह से लौटते हैं, कोई घर को जाता है, कोई दुकान को कोई मस्जिद को, तो उस वक्त यह हालत देख कर मुसलमान को चाहिए कि एस मंज़र औ क़ैफ़ियत को याद करे कि इस तरह लोग क़यामत में जज़ा अ सज़ा देने वाले बादशाह के हुज़ूर से जन्नत और दोजख की तरफ लौट कर जायेंगे, जैसा कि हक़ तआला का इरशाद है:

क़यामत काएम होने का दिन याद करो उस रोज़ लोगों के गरोह दो बन जायेंगे, एक गरोह जन्नत में और दूसरा जहन्नम में चला जाएगा।



## बाब 15

# दस रातें अशरए ज़िल हिज्जा, पैगम्बरों की दस चीजें पुल सिरात की आठ सीढ़ियां, हज, एहराम व लब्बैक, तरविया और अरफ़ा दस दिनों के फ़ज़ाइल

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

कसम है सुबह की, दस रातों की, जुफ़्त और ताक़ की और उस रात की जो गुज़र जाती है। यह कसमें जी फ़हम लोगों के लिये हैं।

वलफ़ज्र की तफ़सीर में मुफ़स्सरीन का इख़तेलाफ़ है, हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि फ़ज्र से सुबह की नमाज़ मुराद है वला यालिन अशरिन से ज़िलहिज्जा की दस रातें मुराद हैं यानी अशरा ज़िलहिज्जा, शफ़ए से जिसके लुगवी मानी जुफ़्त के हैं मखलूक मुराद है और वत्र (ताक़) से मुराद अल्लाह तबारक व तआला है वल्लैलि इज़ा यस्स और कसम उस रात की जो गुज़र जाती है या जाती हुई रात की कसम और अहले दानिश के लिए यकीनन यह बड़ी कसम है कि इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद तुम्हारा रब तुम्हारी घात में है

मकातिल का कौल है कि फ़ज्र से मुराद मुज़दलफ़ा की वह सुबह है जो कुरबानी के दिन होती है और लयालिन अशरिन से ईदे अज़हा के कबल की दस रातें हैं और अशफ़ेअ से मुराद हज़रत आदम व हव्वा हैं और अलवित्र खुदावंद तआला है और वल्लैलि इज़ा यसरिन के मानी हैं आई हुई रात यानी ज़िल हिज्जा की दसवीं रात गोया अल्लाह तआला ने कुरबानी के दिन की दस रातों की, आदम व हव्वा की, अपनी जात की और ईदे अज़हा की रात की कसमें खाई और इन (मुतअद्दिद) कसमों के बाद फ़रमाया यह कसमें अक़ल व तमीज़ के लिए काफी नहीं हैं। यह कसमें बहुत अजीमुश्शान हैं और जवाबे कसम इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद है यानी (तुम्हारा रब यकीनन इंतज़ार में है।)

एक कौल यह है कि फ़ज्र से मुराद है पौ फटना यानी आम सुबह। बाज़ मुफ़स्सरीन कहते हैं कि इससे दिन मुराद है और दिन को फ़ज्र से इस लिए ताबीर किया गया है कि वह दिन से पहले होती है। मुजाहिद का ख़्याल है कि इससे रोज़े नहर (कुरबानी के दिन) की फ़ज्र मुराद है। इक्रमा ने कहा कि फ़ज्र से मुराद चश्मों से पानी का फूट कर बहना, सब्जे का ज़मीन फाड़ कर नमूदार होना और फलों का दरख्तों में आना, फ़ज्र है उसी फ़ज्र की अल्लाह ने कसम खाई है। एक कौल यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अंगुशत हाये मुबारक से पानी फूटकर बह निकलने की अल्लाह ने कसम खाई है। यह भी कहा गया है कि पत्थर से फट कर हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी का बरआमद होना इससे मुराद है। यह भी रिवायत है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा की ज़र्ब से पत्थर के अन्दर से पानी का फूट कर बहना मुराद है।



बाज़ ने कहा है कि अल्लाह तआला ने गुनहगारों की आंखों से पानी फूटने यानी आंसुओं के पानी का बहना मुराद है या दिल से मारफ़ते इलाही का चश्मा फूटना मुराद है (क्योंकि ईमान व मारफ़त से ज़िन्दगी हासिल होती है) जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया देखो मुर्दा दिल को हम ने ईमान व मारफ़त के पानी से ज़िन्दा कर दिया। हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वल फ़ज्र वल यालिन अशरिन से जोहा की दस रातें मुराद हैं। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न जुबैर और हज़रत अब्बास ने फ़रमाया कि इससे मुराद ज़िल हिज्जा की दस रातें हैं हज़रत इब्ने अब्बास से एक दूसरी रिवायत आई है कि आप ने फ़रमाया कि अशरए रमज़ान की दस रातें मुराद हैं। मुजाहिद ने कहा कि वह हज़रत मूसा की दस रातें हैं। मोहम्मद बिन जु़रैर तबरी का कौल है कि वह मोहर्रम की अब्बल दस रातें हैं।

वशफ़अे वल वित्र की तफ़सीर में क़तादा और सिद्दी ने कहा शफ़ए हर वह चीज़ है तो जुफ़्त हों अल वित्र से मुराद अल्लाह तआला है। मक़ातिल का कौल है कि मुराद आदम और हव्वा है क्योंकि आदम तन्हा थे अल्लाह तआला ने हव्वा से उनका जोड़ा कर दिया। एक कौल है कि शफ़ए और वित्र से नमाज़े मुराद हैं यानी कोई नमाज़ (बएतबारे बरक़त) जुफ़्त है कोई ताक़, शफ़ए और वित्र दोनों से मुराद मगरिब की नमाज़ है कि अब्बल दो रकअतें जुफ़्त है और आखिरी रकअत ताक़, यह कौल रबीअ बिन अनस और अबू आलिया का है। यह भी कहा गया है कि शफ़ए यौमे नहर (क़ुरबानी कर दिन) है और वत्र अरफ़ा का दिन यानी नौ ज़िल हिज्जा या शफ़ए यौमे नहर के बाद के दो दिन हैं और वत्र तीसरा यानी तेरहवीं तारीख़ ज़िल हिज्जा की।

वल्लैल एज़ा यसरिन (गुज़रती रात की क़सम या अंधेरी होने वाली रात की क़सम) बाज़ ने कहा कि वह रिवायत मुज़दलफ़ा की रात है। बाज़ का कौल है सरीउन के मानी हैं रात को चलना यहां रात में चलने के मानी हैं रात में लोगों का सैर करना और चलना। वहल फी ज़ालिका क़समल्लज़ी हिज़रिन इसमें जी हिज़्र के मानी हज़रत अब्बास ने अक़्लमन्द के फ़रमाये हैं। हसन बसरी और अबूरजा कहते हैं कि इसके मानी हैं इल्म वाले, मोहम्मद बिन कअब क़रज़ी कहते हैं कि इससे मुराद दीन वाले हैं आयते बाला में हल बजाए इन्ना के ब मानी तहकीक़ इस्तेमाल हुआ है। बाज़ ने रब का लफ़ज़ महजूफ़ माना है यानी क़सम है मालिके फ़ज्र की, क़सम है दस रातों के मालिक की, इसी तरह दूसरी आयात में जहां क़सम मज़कूर है लफ़ज़ रब महजूफ़ माना गया है।

## माह ज़िल हिज्जा के अशरए अब्बल में

### मोजज़ाते अंबिया

शैख़ अबुल बरकात ने बिल असनाद हज़रत अब्बास से रिवायत की है कि आप ने फ़रमाया ज़िलहिज्जा के अब्बल अशरा में अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कबूल फ़रमाई और उनको अपनी रहमत से नवाज़ा उस वक़्त वह अरफ़ा में थे। अरफ़ा में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपनी ख़ता का एतराफ़ कर लिया था उसी अशरा में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपनी दोस्ती से नवाज़ा (अपना दोस्त और ख़लील बनाया) अपना माल मेहमानों के लिए, अपनी जान आतिशे नमरूद के लिए और अपने फ़रज़न्द (इस्माईल)



को कुरबानी के लिए पेश कर दिया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की जाते वाला पर कमाले तबक्कुल खत्म हो गया। उसी अशरा में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा शरीफ़ की बुनियाद रखी। अल्लाह तआला का इरशाद और जब इब्राहीम और इस्माईल उस घर बुनियादें उठाई। उसी अशरा में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम की इज्जत अता फ़रमाई, उसी अशरा में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की लगज़िश माफ़ की गई, उसी अशरा में लैलतुल मुबाहात (फ़ख़ व मुबाहात की रात) रखी गई।

रिवायत में आया है कि नुजूल कुरआन की इब्तिदा उसी अशरा में दस तारीख़ की सुबह को हुई उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईदगाह में तशरीफ़ ले जा रहे थे उसी अशरा में बैत रिज़वान हुई अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस दरख़्त के नीचे यह बैअत हुई वह समरह (बबूल) का दरख़्त था यह बैअत हुदैबिया के दिन हुई थी उस वक़्त सहाबा कराम की तादाद चौदह या पन्द्रह सौ थी सबसे पहले हज़रत अबूसीनान असदी ने बैअत के लिए हाथ बढ़ाया था उसी अशरा में यौमे तरविया (आठ तारीख़) यौमे अरफ़ा नौ तारीख़ और यौमे नहर (दस तारीख़) और यौमे हज्ज अकबर है।

शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद बरिवायत हज़रत अबू सईद खुदरी बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तमाम महीनों का सरदार माहे रमज़ान है और तमाम महीनों में हुरमत वाला महीना ज़िलहिज्जा है शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद व बरकात हज़रत जाबिर कहा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया के दिनों में सबसे अफ़ज़ल ज़िलहिज्जा के दस दिन हैं सहाबा कराम ने अर्ज़ किया उन दिनों के अमल के बराबर रहे खुदा में जिहाद करना भी नहीं है? आप ने फ़रमाया नहीं अलबत्ता उस शख्स की बुजुर्गी के बराबर है जिसने अपना मुँह खाक आलूद किया।

## अशरा ज़िलहिज्जा की इबादात

शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद बयान फ़रमाया कि मैंने खुद सुना कि हज़रत आइशा फ़रमा रही थीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक शख्स गाना सुनने का बहुत दिल दादह था लेकिन ज़िलहिज्जा का चांद देखकर सुबह से रोज़े रख लेता था उसकी इत्तेला हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंची हुजूर ने फ़रमाया उसको बुला कर लाओ वह शख्स हाज़िरे ख़िदमत हुआ, हुजूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम दिनों में रोज़े क्यों रखते हो? (कौन सी ऐसी चीज़ है जिसने तुमको इन दिनों के रोज़े पर उभारा) उसने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! यह दिन हज के हैं और इबादात के हैं और मेरी ख़्वाहिश है कि अल्लाह की अल्लाह उनकी दुआ में मुझे भी शरीक कर दे हुजूर ने इरशाद फ़रमाया तुम जो रोज़े रखते हो उसके हर रोज़े के एवज़ सौ गुलाम आज़ाद कराने, कुरबानी के लिए हरम में सौ ऊंट भेजने और जिहाद में सवारी के लिए सौ घोड़े देने का सवाब है और अरफ़ा के रोज़े के एवज़ दो हज़ार गुलाम आज़ाद करने, दो हज़ार ऊंट कुरबानी के लिए भेजने और दो हज़ार घोड़े जिहाद में देने का सवाब होगा और साल भर पहले और साल भर बाद के रोज़ों का सवाब मज़ीद बरां होगा।

शैख़ अबुल बरकात ने अपनी अस्नाद से बरिवायत सईद बिन जबीरहम से बयान किया कि हज़रत अब्बास ने फ़रमाया कि अय्यामे तशरीफ़ में किसी दिन नेक काम करना अल्लाह तआला



को हर एक दिन में नेक काम से ज्यादा महबूब है सहाबा कराम ने फरमाया राहे खुदा में जिहाद करने से भी ज्यादा? तो हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह की राह में जिहाद भी उस से बेहतर नहीं हां जो शख्स राहे खुदा में अपनी जान और माल ले कर निकला हो और फिर कुछ भी वापस ले कर न आया हो (यानी माल और जान दोनों कुरबान कर दिये हों)

शैख अबुल बरकात ने बिल अस्नाद उम्मुल मोमिनीन हजरत हफसा से रिवायत की कि आप ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चार अमल तर्क नहीं फरमाते थे: अशरा जिलहिज्जा के रोजे, आशूरा का रोजा, अय्यामे बैज (हर माह 13,14,15, को रोजे रखना) और फज्र की नमाज से पहले दो रकअतें।

शैख अबुल बरकात ने बिल अस्नाद बयान किया कि सईद बिन मुसय्यब ने हजरत अबू हुरैरा से मरफूअन यह रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि किसी यौम इबादत की इबादत अल्लाह तआला को इतनी महबूब और पसन्द नहीं जितनी अशरा जिलहिज्जा के अय्याम की महबूब है। जिलहिज्जा के अशरे में एक रोजे का सवाब साल भर के रोजों के बराबर है और इसमें एक रात की नमाज का सवाब एक साल की नमाजों के बराबर है।

शैख अबुल बरकात ने बिल अस्नाद हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने माहे जिलहिज्जा के दस दिन के रोजे रखे अल्लाह तआला हर रोजे के एवज उसके एक साल के रोजे लिखेगा। हजरत सईद बिन जुबैर फरमाते थे कि जिलहिज्जा की दस रातों में तुम अपने चिराग न बुझाओ, आप को इस अशरा में इबादत बहुत पसन्द थी। खादिमों को भी जागने और बेदार रहने का हुक्म दिया करते थे।

## अशरा जिलहिज्जा में नमाजें

### इस अशरा की नमाजों के फज़ाइल

शैख अबुल बरकात ने बिल अस्नाद हजरत आइशा से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने अशरा जिलहिज्जा की किसी तारीख को रात भर इबादत की तो गोया उसने साल भर हज और उमरा करने वाले की सी इबादत की और जिसने अशरा जिलहिज्जा को रोजा रखा तो गोया उसने पूरे साल इबादत की।

शैख अबुल बरकात ने अपनी अस्नाद के साथ हजरत अली मुर्तजा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह ने फरमाया अशरा जिलहिज्जा आ जाये तो इबादत की कोशिश करो, जिलहिज्जा के अशरा को अल्लाह तआला ने बुजुर्गी अता फरमाई है और इस अशरा की रातों को भी वही इज्जत दी है जो इसके दिनों को हासिल है अगर कोई शख्स इस अशरा की किसी रात के आखिरी तिहाई हिस्सा में चार रकअतें इस तरतीब से पढ़ेगा तो उसको हज्जे बैतुल्लाह और रौजए पाक की जियारत करने वाले के बराबर सवाब मिलेगा और अल्लाह तआला से वह जो कुछ मांगेगा अल्लाह तआला उसको अता फरमायेगा (नमाज की तरकीब व तरतीबे आयात यह है) हर रकअत में सूरह फातिहा, सूरह खलक, सूरह नास, एक एक बार सूरह इखलास तीन बार और आयतल



कुसी तीन बार पढ़े, नमाज़ से फ़ारिग हो कर दोनों हाथ उठाकर यह दुआ पढ़े।

अल्लाह तआला पाक बुजुर्ग, जबरुत का, कुदरत का मालिक है, वह मालिकुल मुल्क है, वह हमेशा बाकी रहेगा उसे मौत नहीं है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह मोमिन और मुशरिक दोनों का पालने वाला है वही बस्तियों का मालिक है हर हाल में कसीर पाकीज़ा और बरकत वाली हम्द अल्लाह के लिए है अल्लाह बड़ी बुजुर्गी वाला है, हमारा रब बुजुर्ग है उसकी अज़मत बड़ी है उस की कुदरत हर जगह है। शैख अबुल बरकात फ़रमाते हैं कि कुदरत से मुराद इल्म है यानी उसका इल्म हर शय को मुहीत है।

इस दुआ के बाद जो चाहे दुआ करे अगर ऐसी नमाज़ अशरा की हर एक रात को पढ़ेगा तो उसको अल्लाह तआला फिरदौश्से आला मे जगह देगा और उसके हर गुनाह को महव कर देगा फिर उससे कहा जायेगा अब अज़ सरे नौ अमल शुरू कर, अगर अरफ़ा के दिन का रोज़ा रखे और अरफ़ा की रात को भी नमाज़ पढ़े और यही दुआ करे और अल्लाह तआला के हुज़ूर में ज़्यादा से ज़्यादा तज़र्रो व वज़ारी करे तो अल्लाह फ़रमाता है ऐ मेरे फ़रिश्तो! मैंने इस बन्दे को बख़्श दिया और हाजियों में इसको शामिल कर दिया फ़रिश्ते अल्लाह तआला की इस अता से बेहद मसरूर होते हैं और बन्दे को बशारत देते हैं।

## पांच पैग़म्बरों की अलग अलग

### दस मख़सूस चीज़ें

#### हज़रत आदम की दस चीज़ें

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम महवे ख़्वाब थे अल्लाह तआला ने हज़रत हव्वा को उनकी बाई छोटी पसली से पैदा फ़रमाया, बेदार होने पर आप ने हज़रत हव्वा को अपने पास बैठा देखा तो पूछा तुम किस लिए हो? उन्होंने ज़वाब दिया मैं आप ही के लिए हूँ हज़रत आदम ने आप को छूना चाहा तो हुक्म हुआ कि बग़ैर महर अदा किये इनको हाथ न लगाना। हज़रत आदम ने दरयाफ़्त किया कि इलाही! इनका महर क्या है? अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया! नबी आख़िरुज़्ज़मा पर दस बार दरूद पढ़ना।

#### हज़रत इब्राहीम की दस चीज़ें

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए भी दस चीज़ें मख़सूस थीं! अल्लाह तआला का इरशाद है जब इब्राहीम की आजमाईश अल्लाह ने चन्द बातों से की तो इब्राहीम ने उनको पूरा कर दिया। यह दस अहकाम थे, पांच का ताल्लुक सर से है यानी सर के बालों में मांग निकालना मुँह कतरवाना, मिसवाक करना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना, बाकी पांच चीज़ों का ताल्लुक सारे जिस्म से है यानी नाखून कटवाना, ज़ेरे नाफ़ बालों को साफ़ करना, बग़लों के बाल साफ़ करना, ख़तना कराना, वजू में उंगुलियों का ख़िलाल करना।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब यह दस अहकाम (दस सुन्नतें) अदा कर दिये तो अल्लाह तआला ने उनको अपनी दोस्ती का ख़िलअत मरहमत फ़रमाया। चुनांचे इरशाद फ़रमाया:



अल्लाह ने इब्राहीम को दोस्त बना लिया।

## हज़रत शूऐब की दस चीज़ें

दस चीज़ें हज़रत शूऐब अलैहिस्सलाम से मखसूस हुईं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: हज़रत शूऐब अलैहिस्सलाम के कौल को नक़ल फ़रमाते हुए। अगर तुमने दस साल पूरे कर आये तो यह तुम्हारी तरफ़ से एहसान होगा। यह उस वाक़ेया की तरफ़ इशारा है कि हज़रत मूसा ने हज़रत शूऐब की दस साल तक ख़िदमत करना क़बूल किया था उस ख़िदमत को हज़रत शूऐब ने अपनी बेटी सफ़ूरा का महर करार दिया था (कि दस साल ख़िदमत के एवज़ उनकी बेटी सफ़ूरा का महर अदा हो जायेगा) बाज़ असहाब का कौल है कि हज़रत शूऐब दस साल तक रोते रहे उससे उनकी बीनाई जाती रही, अल्लाह तआला ने उन पर लुत्फ़ फ़रमाया और बीनाई वापस आ गई हज़रत शूऐब के पास वही भेजी कि अगर तुम्हारा यह रोना दोज़ख़ के ख़ौफ़ से था तो मैंने दोज़ख़ से तुम को अमान बख़्श दी और अगर तुम ज़न्नत चाहते हो तो मैंने तुमको ज़न्नत अता कर दी और अगर तुम मेरी रजा और खुशनूदी के तालिब हो तो मैंने तुम को अपनी रजा और खुशनूदी बख़्श दी। हज़रत शूऐब ने फ़रमाया कि ऐ जिब्रील मेरा रोना न दोज़ख़ के ख़ौफ़ से है और न ज़न्नत की तलब के लिए बल्कि मैं तो दीदारे इलाही का तालिब हूँ तब हुक्म हुआ कि ऐ शूऐब! तू हक़ के लिए रोया इसलिए और भी जितना रो सके रोओ। अल्लाह तआला ने उनको यह सिला दिया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जैसे बलन्द मरतबा पैग़म्बर ने दस साल तक उसकी ख़िदमत की और यह उन मरातिबे आलिया और तक़्रूब और उख़रवी नेमतों के अलावा था कि जो हज़रत शूऐब के लिए अल्लाह तआला ने मखसूस फ़रमा दी थीं यह मरातिब और नेमतें ऐसी थीं कि न किसी आंख ने देखा न किसी ने सुना न किसी के दिल में उनका तसव्वुर आया।

## हज़रत मूसा की दस चीज़ें

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दस चीज़ें वह थीं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया हम ने मूसा से वादा किया कि तीस रातों की इबादत करें फिर हम ने तीस की तकमील मज़ीद दस रातों से कर दी (यानी चालीस रातें इबादत की हो गईं) इसकी सूरत यह हुई कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम करने और तौरैत अता फ़रमाने का वादा किया था, हज़रत मूसा ने तीस दिन की रोज़े रखे यह महीना दस ज़िल हिज्जा का और बकौले बाज़ मुहक्ककीन जी क़अदा का था, एक माह के रोज़ों के बाद मुंह में ना गवार बू महसूस हुई तो आपने जैतून की लकड़ी का एक टुकड़ा मुंह में रख लिया (ताकि बू दूर हो जाये) अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ऐ मूसा! क्या तुम को मालूम नहीं कि रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क की खुशबू से ज़्यादा पाकीज़ा है, फिर अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को मज़ीद 10 दिन के रोज़े रखने का हुक्म दिया जिसकी आखिरी तारीख़ यानी आखिरी रोज़ा मुहर्रम की दसवीं तारीख़ थी। जिन हज़रात ने उन रोज़ों का महीना जी क़अदा मुराद दिया है उनके हिसाब से मज़ीद 10 दिन ज़िल हिज्जा का अशरए अव्वल होगा।

इस के बाद मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपना कुर्ब अता फ़रमाया और हम कलामी की इज़्ज़त से नवाज़ा।



## मय्यदुल मुरसलीन की दस चीजें

सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दस चीजें वह हैं जिन का जिक्र वल फजर वल यालिन अशरिन में किया गया है। यह ज़िल हिज्जा की दस इब्तिदाई रातें हैं जिनकी तशरीह व तफ़सीर इससे कबूल की जा चुकी है।

## अशराए ज़िल हिज्जा की अज़मत

कहा गया है कि जो शख्स इन दस अय्याम की इज़्जत करता है अल्लाह तआला यह दस चीजें उसको मरहमत फ़रमाकर उसकी इज़्जत अफ़जाई करता है (1) उम्र में बरकत (2) माल में अफ़जूनी (3) अहल व अयाल की हिफ़ाज़त (4) गुनाहों का कफ़ारा (5) नेकियों में इज़ाफ़ा (6) नज़अ में आसानी (7) जुलमत में रौशनी (8) मीज़ान में संगीनी (वज़नी बनाना) (9) दोज़ख के तबकात से नज़ात (10) जन्नत के दरजात पर उरूज़। जिसने इस अशरा में किसी मिसकीन को कुछ ख़ैरात दी उसने गोया अपनी पैग़म्बर की सुन्नत पर सदका दिया जिसने इन दिनों में किसी की अयादत की उसने औलिया अल्लाह और अबदाल की अयादत की जो किसी के जनाजे के साथ गया उसने गोया शहीदों के जनाजों में शिरकत की जिसने किसी मोमिन को इस अशरा में लिबास पहनाया अल्लाह तआला उसको अपनी तरफ़ से खिलअत पहनाएगा, जो किसी यतीम पर मेहरबानी करेगा अल्लाह तआला उस पर अर्श के नीचे मेहरबानी फ़रमायेगा, जो शख्स किसी आलिम की मजलिस में इस अशरा में शरीक हुआ गोया अंबिया और मुरसलीन की मजलिस में शरीक हुआ।

वहब बिन मम्बा का इरशाद है की जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर उतारा गया तो वह अपनी ख़ताओं पर छः रोज़ तक रोते रहे, सातवें दिन अल्लाह तआला ने वही नाज़िल फ़रमाई (इस हाल में कि हज़रत आदम मग़मूम व ग़मज़दा और सर छुकाए बैठे थे) कि ऐ आदम! यह तुम ने कैसी मुशक्कत और मेहनत इख़्तियार कर रखी है? हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज किया! इलाही मेरी मुसीबत बड़ी मुसीबत है, मेरी गुनाह ने मुझे हर तरफ़ से घेर रखा है मैं सआदत और इज़्जत के घर यानी खुल्द से निकल कर, ज़िल्लत बदबख़्ती मौत और फ़ना के घर में पहुंच गया हूं फिर अपने गुनाहों पर क्यों न रोकूं! अल्लाह तआला ने वही फ़रमाई कि आदम क्या मैंने तुझे अपना ख़ास नहीं बनाया था, अपनी मख़लूक पर तुझे फ़ज़ीलत नहीं दी थी? क्या मख़सूस तरीका पर तुझे मुअज़्ज़िज़ नहीं बनाया, क्या अपनी मुहब्बत से तुझे नहीं नबाज़ा, क्या तुझे अपने हाथों से नहीं बनाया, क्या अपने फ़रिशतों से तुझे सजदा नहीं कराया! क्या तू मेरी तरफ़ से मुत्तहाए करामनत और मक़ामे इज़्जत में नहीं रहा? फिर तूने मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ क्यों किया, मेरे हुक्म को भूला दिया तू ने किस तरह मेरी रहमत और नेमत को भुला दिया? मुझे अपने इज़्जत व जलाल की क़सम है कि अगर तेरी तरह लोगों से सारी ज़मीन भर जाए और वह सब रात दिन मेरी तसबीह में मशगूल रहें और एक लम्हा को भी मेरी इबादत पर सुस्ती न करें और फिर वह मेरी नाफ़रमानी करें तो मैं उनको ज़रूर नाफ़रमानों की मंज़िल पर उतार दूंगा यह सुनकर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम कोहे हिन्द पर तीन सौ बरस तक रोते रहे उनके आंसू पहाड़ी नालों में बहत थे और उनसे पाकिजा दरख़्त उग आते थे फिर हज़रत जिब्रील ने कहा कि ऐ आदम! बैतुल्लाह



जाइए और अशरए ज़िलहिज्जा के मुन्तज़िर रहिये, शाएद अल्लाह तआला आप की लगज़िश पर रहम फ़रमाए, हज़रत आदम वहां से काबा को रवाना हो गए हज़रत आदम का क़दम जिस जगह पड़ता था वह जगह सर सब्ज़ हो जाती थी और दोनों क़दमों के दर्मियान की जगह बन्जर रहती थी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के दोनों क़दमों के दर्मियान का फ़ासला तीन फ़रसंग होता था गर्ज हज़रत आदम काबा शरीफ़ पहुंच गए वहां पहुंच कर पूरे एक हफ़ता तवाफ़ किया और इतना रोए की घुटनों घुटनों तक पानी चढ़ गया, हज़रत आदम ने अर्ज किया! इलाही तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू पाक है मैं तेरी हम्द करता हूं मैंने बदी की और अपने ऊपर खुद जुल्म किया मेरा क़सूर माफ़ फ़रमा दे तू तमाम बख़्शाने वालों से बेहतर है तू अरहमर्राहेमीन है मुझ पर रहम फ़रमा। अल्लाह तआला ने उसके बाद वही भेजी और फ़रमाया आदम मुझे तेरी क़मज़ोरी पर रहम आ गया मैंने तेरा गुनाह माफ़ कर दिया और तेरी तौबा क़बूल कर ली। आयत फ़तलक्कई आदम मिन रब्बिही कलेमातिन फ़ताब अलैहि की तफ़सीर व तशरीह है यह उसी अशरा की बरकत थी कि अल्लाह ने आदम की तौबा क़बूल की, पस इसी तरह अगर कोई मोमिन अल्लाह का ना फ़रमान हो जाये और नफ़सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने लगे और वह उन दिनों में (अशरा ज़िल हिज्जा की) तौबा करे और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करे और खुदा का फ़रमांबरदार बन जाये तो अल्लाह उस पर मेहरबानी फ़रमाएगा और उसके गुनाह माफ़ फ़रमा देगा अपनी मेहरबानी से उसके गुनाहों को नेकियों से बदल देगा।

## इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद की तफ़सीर

### क़सम याद करने की हिकमत

आयत वल फ़ज्र वल यालिन अशरिन से इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद तक अल्लाह तआला ने फ़ज्र की दस रातों की, शफ़आ की और वत्र की क़सम खायी है (यानी जुफ़्त और ताक़ की) बात यह है कि दोज़ख़ के पुल के आठ दरजात हैं अव्वल दरजा या अव्वल सीढ़ी पर बन्दा से ईमान के बारे में सवाल किया जायेगा अगर ईमानदार है तो नजात पा जायेगा वरना दोज़ख़ में गिर पड़ेगा, दूसरी दरजा में वजू और नमाज़ के बारे में सवाल किया जायेगा अगर बन्दा ने उसमें क़सूर किया तो दोज़ख़ में गिर पड़ेगा और अगर उसने रुकूअ और सुजूद की तकमील की होगी तो नजात पा जायेगा। तीसरे दरजा में ज़कात के बाबत सवाल किया जायेगा अगर अदा की होगी तो बच जायेगा, चौथे दरजा में रोज़ा के बारे में पूछा जायेगा अगर माहे सियाम के सब रोज़े रखे हैं तो नजात पा जायेगा। पांचवें दरजा में हज और उमरा के बारे में पुरसिश होगी अगर यह फ़र्ज अदा किया होगा तो नजात पायेगा, छठे दरजा पर अमानत व दयानत के बारे में दरयाफ़्त किया जायेगा अगर अमानतदार होगा तो नजात मिल जायेगी, सातवें दरजा पर गीबत, झूट, दोतेपन के बारे में पूछा जायेगा कि उनसे बचता रहा कि नहीं, अगर बचता रहा तो नजात पायेगा वरना दोज़ख़ में गिरा दिया जायेगा। आठवें दरजा पर उससे हराम माल खाने का सवाल किया जायेगा



अगर माले हराम नहीं खाया है तो रिहाई मिल जायेगी वरना दोज़ख में गिरा दिया जायेगा। यही मानी हैं इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद के यानी तेरा परवरदिगार बिला शुबहा घात में है।

## यौमित्तरविया

(8 ज़िल हिज्जा)

अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ इब्राहीम तुम्हारी औलाद हो या दूसरे मोमिन सबको हज के लिए पुकारो, कुछ उनमें से पा पयादा और कुछ दुबले (सफ़र के आदी) ऊंटों पर सवार हज के लिए तुम्हारे पास दूर और नज़दीक की मुसाफ़तों से आ जायेंगे।

यह आयत सूरह हज की है और यह सूरह कुरआने करीम की अजीब तर सूरतों में है क्योंकि इसमें मक्की आयत भी हैं और मदनी भी, सफ़री भी हैं और हजरी (ग़ैर हालते सफ़र) भी रात वाली भी है और दिन वाली भी, नासिख भी हैं और मनसूख भी।

तीसवीं आयत से आखिरी सूरत तक तमाम आयात मक्की है, मदनी आयात पन्द्रहवीं आयत से उन्तीसवीं तक हैं। पांच पहली आयात रात में नाज़िल होने वाली हैं और छह से नौ तक दिन में नाज़िल शुदा हैं, एक से बीसवीं आयत तक हजरी आयात हैं और बकिया सफ़री हैं। इस सूरह की मदनी इस एतबार से कहा गया है कि मदीना के करीब इनका नुज़ूल हुआ।

आयते मज़कूरा में हज के लिए एक उमूमी हुक्म उस वक्त दिया था जब ख़ाना काबा से फ़ारिग होकर उन्होंने जनाबे ईलाही में अर्ज किया था इलाही! इस मकान का हज कौन करेगा? अल्लाह तआला ने हज के लिए लोगों को पुकारने का हुक्म आप को दिया। आप ने कोहे बूकबीस पर तशरीफ़ ले जाकर बलन्द आवाज़ से पुकारा लोगों! अपने रब के फ़रमान को कबूल करो अल्लाह तुम को अपने घर का हज करने का हुक्म दे रहा है यह कोहे कबीस वही पहाड़ है जिस की तिलहटी में सफ़ा पहाड़ी है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस पुकार (निदा) को हर उस मोमिन मर्द औरत ने सुन लिया जो रूए ज़मीन पर मौजूद था, या सुल्बे पिदर या शिकमे मादर में था, आज कल हज के मौका पर जो लब्बैक कही जाती है यह उसी दावत का जवाब है जो अल्लाह के हुक्म से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दी थी उस रोज़ उस दावत पर जिसने लब्बैक कहा था वह ख़ाना काबा की ज़ियारत के बग़ैर दुनिया से रुख़सत नहीं होगा।

## एहराम बांधना और लब्बैक कहना

मुजाहिद की रिवायत है की हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया की हम ख़िदमते गरामी में मौजूद थे कि यमन से कुछ लोग हाज़िर हुए और उन्होंने अर्ज किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हमारे मां बाप आप पर कुरबान आप हम को हज के फ़ज़ाएल से आगाह फ़रमाइये, हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया अच्छा (सुनो) जो शख्स हज या उमरा की नीयत से घर से चला तो हर कदम पर उसके गुनाह इस तरह दूर होते हैं जिस तरह दरख़्तों से पत्ते निचे गिर जाते हैं, जब वह मदीना तय्यबा पहुँच कर मुझसे सलाम व मुसाफ़ा करता है और जुलहुलैफ़ा



के चश्मा पर पहुंच कर गुस्ल करता है तो अल्लाह तआला उसे गुनाहों से पाक कर देता है और उससे फरिश्ते मुसाफा करते हैं, जब नए कपड़े (चादर और तहबंद) पहनता है तो अल्लाह तआला उसको बहुत सी नई नेकियां अता करता है जब वह लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक कहता है तो अल्लाह तआला लब्बैक व सअदिका कहता हुआ जवाब देता है। जब मक्का में दाखिल होकर तवाफ और सफा व मरवा के दर्मियान सई करता है तो अल्लाह नेकियों को उसके साथ कर देता है (बेहद नेकियां उसको अता फरमाता है) जब अरफात (के मैदान में) पहुंच कर हाजतों की तलब (दुआ) में उसकी आवाज बलन्द होती है तो अल्लाह तआला सातों आसमानों के फरीशतों से फख्र फरमाता हुआ कहता है! मेरे फरिश्तो मेरे आसमानों पर रहने वालो! क्या तुम नहीं देखते की मेरे बन्दे गुबार आलूद बाल, परीशां दूर दराज मकामात से आये हैं उन्होंने अपना माल भी खर्च किया है और अपनी जानों को भी थकाया है (जिस्मानी तकलीफ भी उठाई है) अपनी इज्जत व जलाल की कसम मैं उन नेकों के तुफैल उनके बुरों को भी बख्श दूंगा और उनको गुनाहों से इस तरह पाक कर दूंगा जिस तरह मां के पेट से पैदा होने के दिन थे, जब लोग कंकरीयां फेंकते, सर मुंडाते और काबा की जियारत करते हैं तो जेरीने अर्श से एक पुकारने वाला पुकारता है, तुम लोग अपने घरों को वापस जा सकते हो मैंने तुम्हारे सब पिछले गुनाह माफ कर दिए अब आईन्दा से नेक अमल करो।

## एक आराबी का वाकिआ

रिवायत है कि एक आराबी खिदमत गरामी में हाजिर हुआ और अर्ज किया या रसूलुल्लाह मैं हज के इरादे से निकला मगर हज न कर सका मैं एहराम पहने हू मुझे किसी ऐसे काम का हुक्म दीजिये जिसके जरिये मैं हज को या हज के सवाब को हासिल कर सकूँ रसूलुल्लाह ने उस की तरफ मुतवज्जेह हो कर फरमाया अबू कबीस को देखो! अगर तुम उसकी बराबा जर सुर्ख भी राहे खुदा में खर्च कर दो तब भी हाजियों के सवाब को नहीं पहुंच सकते। इसके बाद हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हज करने वाला जब सफरे हज की तैयारी शुरू करता है तो अल्लाह तआला उसके लिए दस नेकियां उसी वक्त लिख देता है और दस बुराइयां मिटा देता है। उसके दस दस दर्जे बलन्द फरमा देता है और जब वह अपनी सवारी पर सवार होता है तो उस सवारी के हर कदम पर उतना ही सवाब लिखता है फिर जब काबा का तवाफ करता है तो गुनाहों से निकल जाता है, अरफात में ठहरता है तो गुनाहों से अलग हो जाता है मशअरे हराम में कयाम करता है तो गुनाहों से निकल जाता है, कंकरीयां फेंकता है तो गुनाहों से निकल जाता है, उसके बाद आपने आराबी से फरमाया फिर किस तरह यह हो सकता है कि तुम को हाजी का सवाब मिल जाये (तुम हाजी के मरतबा को पहुंच जाओ)।

हजरत अली मुर्तजा से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ काबा का तवाफ कर रहा था मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह मेरे मां बाप आप पर कुरबान, यह (काबा) कैसा घर है, हुजूर ने इरशाद फरमाया अली! इसकी बुनियाद अल्लाह ने डाली ताकि मेरी उम्मत के गुनहगारों के गुनाहों का कफ़ारा हो सके मैंने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह यह सियाह पत्थर (हजरे असवद) क्या है हुजूर ने फरमाया यह जन्नती जौहर है जिसको अल्लाह तआला ने दुनिया में उतार दिया, यह सूरज की किरनों की तरह ताबिन्दा दरखशन्दा था लेकिन



जबसे इसको मुशरिकों ने हाथ लगाया इसकी सियाही बढ़ती रही और इसका रंग बिगड़ गया। इब्ने अबी मलीका की रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया मैंने खुद रसूलुल्लाह को फ़रमाते सुना कि इस बैतुल हराम पर हर शब व रोज़ में 120 रहमतें नाज़िल होती हैं साठ तो काबा का तवाफ़ करने वालों के लिए और चालीस काबा के गिर्द एतकाफ़ करने वालों के लिए, और 20 उसकी तरफ़ देखने वालों के लिए हैं।

जहरी ने बरिवायत सईद बिन अल मसय्यब हज़रत उमर बिन अबी सलमा का कौल नक़ल किय है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हक़ तबारक व तआला फ़रमाता है कि मैंने बन्दों को सेहत व तन्दुरुस्ती अता की उम्र में दराज़ी बख़्शी अगर तीन ऐसे साल गुज़र जायें कि वह उस घर (काबा की तरफ़) न आयें तो यकीनन वह महरूम है बेशक वह महरूम है।

## हज़रे असवद

हज़रत अबू सईद खुदरी ने फ़रमाया कि हम ने अमीरुल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब के साथ उनकी ख़िलाफ़त के इब्तिदाई ज़माने में हज किया जब वह मस्जिदे हराम में दाख़िल होकर हज़रे असवद के पास खड़े हुए तो फ़रमाया कि यकीनन तू एक पत्थर है न नुक़सान पहुंचा सकता है और न नफ़ा अगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहे अलैहि वसल्लम को तुझे बोसा देते न देखा होता तब मैं भी तुझे बोसा न देता उस वक़्त हज़रत अली ने फ़रमाया ऐ अमीरुल मोमिनीन ऐसा न फ़रमाइये बेशक हज़रे असवद खुदा के हुक्म से नफ़ा व नुक़सान पहुंचा सकता है अगर आपने कुरआन पढ़ा होता और मज़मूने कुरआन को समझा होता तो आप इसका इंकार न करते। हज़रत उमर ने फ़रमाया ऐ अबुल हसन! किताबुल्लाह में इसकी तशरीह क्या है? हज़रत अली ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है:

और ऐ महबूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उनकी नस्ल निकाली और उन्हें उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ तो सबने कहा क्यों नहीं, हम गवाह हुए कि क़यामत के दिन यह न कहो कि हमको न ख़बर थी।

यह इक़रार नामा एक सहीफ़ा पर लिखा उसके बाद उस पत्थर को तलब किया और यह इक़रार नामा उस पत्थर को निग़ला दिया पस उस जगह यह अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा अमीन है ताकि क़यामत के दिन उस शख़्स की शहादत दे जिसने अपने इक़रार को पूरा किया। हज़रत उमर ने फ़रमाया ऐ अबूल हसन अल्लाह ने आप के सीने में बड़ा इल्मी ख़ज़ाना पोशीदा रखा है।

अबू सालेह ने बरिवायत हज़रत अबू हुरैरा बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया हज और उमरा करने वाले अल्लाह के मेहमान हैं और जो दुआ करते हैं अल्लाह उनको क़बूल फ़रमाता है और जब वह गुनाहों की मग़फ़िरत चाहते हैं तो अल्लाह उनके गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। मुजाहिद की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया! इलाही हाजियों को और उन लोगों को जिन के लिए हाजी मग़फ़िरत की दुआ करें बख़्श दे। हज़रत हसन बसरी से मरवी है कि हदीस में आया है कि मलाएका हाजियों इस्तिक़बाल करते हैं जो ऊंट पर सवार होते हैं उन को सलाम करते हैं और जो ख़च्चरों पर सवार होते हैं उनसे मुसाफ़ा करते हैं और जो पैदल (पयादा पा) होते हैं उनसे गले मिलते हैं।



## हज के इरादे से घर से निकलने वाला और उस की वफ़ात

जहाक की मुरसल रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर वह मुसलमान जो जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के मक़सद से घर से चला लेकिन रास्ते में उसको किसी दरिन्दे ने हलाक कर दिया या किसी डसने वाले ने उसको डस लिया या वह किसी और वजह से मर गया तो वह शहीद है, उसी तरह हर वह मुसलमान जो हज्जे बैतुल्लाह के इरादे से घर से चला लेकिन मंज़िल से पहले उसकी मौत आ गई तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत वाजिब कर देता है।

अबू सुफ़ियान बिन ऐनिया ने अबू रिमाद के वास्ते से हज़रत अबू हु़रैरा का कौल नक़ल किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने काबा का हज किया और हज में उसने न कोई गुनाह किया और न नाफ़रमानी की और जहालत की बात की तो वह लौट कर ऐसा हो जाता है जैसा वह पैदाइश के दिन गुनाहों से पाक था सईद बिन मुसय्यब की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने काबा का हज किया और उसने कोई गुनाह व नाफ़रमानी या जिहालत की बात नहीं की तो वह लौट कर ऐसा हो जाता है जैसा पैदाइश के दिन गुनाहों से पाक था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन आदमी एक हज के वास्ते से जन्नत में जाते हैं, एक वह जिस ने वसीयत की, दूसरा वह जिसने वसीयत पर अमल किया, तीसरा वह जिसने उसकी तरफ़ से हज किया। जिहाद की भी यही कैफ़ियत है। अली बिन अब्दुल अजीज़ ने बयान किया कि मैंने एक साल हज के सफ़र में उबैदुल कासिम बिन सलाम का हम सफ़र था जब मैं मौक़िफ़ में पहुंचा और ज़ब्ले रहमत पर क़याम कर के गुस्ल किया तो मैं अपना सफ़रे खर्च वहीं भूल गया फिर जब मैं उतर कर नीचे आया तो अबू उबैदा ने कहा कि अगर आप कुछ मक्खन और खजूरें खरीद लाते तो बेहतर होता मैं मक्खन और खजूरें खरीदने को निकला तो रुपया याद हुआ फौरन पलट पड़ा और जहां जहां मैं गया था वहां दोबारा पहुंचा आखिरकार गुस्ल की जगह पर पहुंचा तो रुपया मिल गया रुपया लेकर जब मैं पलटा तो उस वादी को बन्दरों आर सुअरों से भरा हुआ पाया, मुझे उनसे डर महसूस हुआ लेकिन मैं उनसे बचता बचाता वापस आ गया और सुबह से पहले अबू उबैदा के पास पहुंच गया अबू उबैदा ने दरयाफ़्त किया कि क्या मांजरा है मैंने सारा वाकिआ उनको सुनाया उन बन्दरों और सुअरों का भी ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा की वह बन्दर और सुअर न थे बल्कि लोगों के गुनाह थे जिन को हाजी वहां छोड़ कर आए हैं।

## यौमे तरविया की वजहे तसमिया

यौमे तरविया की वजहे तसमिया में मुख़तलिफ़ अक़वाल हैं और उलमा का इख़्तिलाफ़ है। यौमे तरविया ज़िल हिज्जा के आठवें दिन का नाम है इस दिन हाजी मक्का मुकर्रमा से मिना की तरफ़ रवाना होते हैं चूंकि यह हज़रात ज़मज़म का पानी ख़ूब सैराब होकर पीते हैं इसीलिए इसको तरविया कहते हैं तरविया बर वज़्न तफ़अला बमानी सैराब करना है यह अरतवी से माख़ूज़ है जिसके मानी हैं पानी पिया और गुस्ल किया और हाजी उस रोज़ कसरत से आबे ज़मज़म पीते



हैं। एक वजह से तसमिया यह बताई है कि तरविया के मानी हैं गौर करना, सोचना, हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने आठ तारीख की रात को ख़्वाब में देखा था कि अपने बेटे को ज़िबह कर रहे हैं सुबह को सोच में पड़ गए और गौर करने लगे कि यह ख़्वाब दुश्मनने खुदा शैतान की तरफ़ से है या अल्लाह तआला की तरफ़ से, दिन भर सोचते रहे जब अरफ़ा की शब आई तो ग़ैब से कहा गया जो कुछ तुम से कहा गया है वही करो। उस वक़्त आप ने समझ लिया कि यह ख़्वाब अल्लाह तआला की तरफ़ से था इसी बिना पर इसका नाम यौमे तरविया रखा गया और नवीं तारीख़ को यौमे अरफ़ा (पहचान का दिन) से ताबीर किया जाता है।

अल्लाह तआला का इरशाद है: लोगों में हज की मुनादी कर दो। अल्लाह तआला ने अपने ख़लील को हुक्म दिया कि वह उसके बन्दे को उसके घर की तरफ़ आने की दावत दें, चुनांचे यह दावतें चार हैं पहली दावत अल्लाह की तरफ़ से बन्दों को है अल्लाह तआला का इरशाद है: और अल्लाह तुम को दारुस्सलाम की तरफ़ बुलाता है। यह दावत एक घर से दूसरे घर की तरफ़ है। बैसे अलम से इज्जत खाने की तरफ़ आने का हुक्म, ग़ैबत के मक़ाम से (जहां अल्लाह का मुशाहिदा नहीं था) मुशाहिदा के मक़ाम की तरफ़ आने की दावत दी, सैर के ज़वाल पज़ीर मक़ाम से मक़ामे बका की तरफ़ बुलाया। बन्दों को ऐसे घर की तरफ़ बुलाया जहां का आगाज रोने से और दर्मियानी रास्ता तकलीफ़ से और आखिरी हिस्सा फना है। ऐसे घर की तरफ़ बुलाया जिसके शुरू में अता, दर्मियान में रज़ा और आखिर में दीदारे इलाही है।

2-दूसरी दावत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से उम्मत को इस्लाम की दावत। अल्लाह तआला का इरशाद है: अल्लाह के रास्ते की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ।

दावत का काम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुपुर्द फ़रमाया लेकिन उम्मत को सीधी राह पर चलाना रसूलुल्लाह के फ़राइज़ में नहीं रखा गया चुनांचे हुज़ूर का इरशाद है: मुझे रहनुमा बना कर भेजा गया है लेकिन यह मेरे इख़्तियार में नहीं है कि मैं किसी को ज़बरदस्ती अच्छे रास्ते पर डाल दूँ।

अल्लाह तआला का इरशाद है: आप जिस को पसन्द करे उसको हिदायत पज़ीर नहीं बनाते बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर चलाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चचा अबू तालिब की हिदायतयाबी की दरख़्वास्त की। हक़ तआला ने उनको हिदायतयाब बनाने से इन्कार कर दिया और हज़रत हमज़ा के कातिल वहशी हिन्दा अबू सुफ़ियान के गुलाम को हिदायतयाब बना दिया गोया अल्लाह तआला अपने रसूल से फ़रमा रहा है ऐ मोहम्मद! तुम्हारे ज़िम्मा सिर्फ़ दावत देना है, ऐ रसूल आप पर जो कुछ उतारा गया वह लोगों तक पहुंचा दीजिये। एक और आयत में है: बेशक हम ने आप को शाहिद, बशारत देने, वाला डराने वाला, अल्लाह के हुक्म से उसकी तरफ़ बुलाने वाला और रौशन चिराग़ बना कर भेजा है।

आप के लिए सिर्फ़ शफ़ाअत है लेकिन क़बूल करना हिदायतयाब करना मेरे इख़्तियार में है अल्लाह तआला फ़रमाता है: अपने नूर की तरफ़ जिसको चाहता है राह दिखाता है। एक दूसरी आयत में है अगर हम चाहें तो हर एक को हिदायत पर ले आयें।

तीसरी दावत मोअज़्ज़िन की है जो नमाज़ की तरफ़ बुलाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है उस शख्स से अच्छी बात किस की हो सकती है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाता है और नेक काम



करता है हज़रत आएशा सिद्दीका ने फ़रमाया कि आयत मोअज़्ज़िनीन के हक में नाज़िल हुई यानी जिसने लोगों को नमाज़ के लिए बुलाया और अज़ान व इक़ामत के दर्मियान नमाज़ पढ़ी उससे अच्छी बात किसकी हो सकती है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया अज़ान देने वाले लब्बैक पढ़ने वाले क़यामत के दिन अपने क़ब्रों से अज़ान देते हुए और लब्बैक कहते हुए निकलेंगे। मोअज़्ज़िन की अज़ान की आवाज़ जहाँ तक जाती है वहाँ तक की सब चीज़ें उसके लिए दुआये मग़फ़िरत करती है। हर खुशक व तर दरख़्त और मिट्टी जिसने भी उसकी आवाज़ सुनी होगी उसके लिए शाहिद बन जाती है। मोअज़्ज़िन की अज़ान की आवाज़ पर जिस शख्स ने मस्जिद में नमाज़ अदा की होगी उसकी नेकियों के बराबर नेकियां मोअज़्ज़िन के लिए भी लिख दी जाती हैं। अज़ान व इक़ामत के दर्मियान मोअज़्ज़िन जो सवाल करता है अल्लाह उसको दुनिया में दे देता है या आखिरत में उसके लिए जमा रखता है या उससे किसी बुराई को दफ़ा कर देता है।

एक रिवायत में आया है कि एक शख्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत ग़रामी में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए कि जिससे मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं, आप ने फ़रमाया कि अपनी क़ौम में मोअज़्ज़िन बन जाओ ताकि तुम्हारी आवाज़ पर लोग जमा हो कर जमाअत से नमाज़ पढ़ें। उसने अर्ज़ किया कि अगर मैं ऐसा न कर सकूँ तो क्या करूँ, आप ने फ़रमाया कि तो (क़ौम का) इमाम बन जाओ, लोग तुम्हारी इक़तेदा में नमाज़ पढ़ें, उसने अर्ज़ किया कि अगर मैं यह भी न कर सकूँ तो, आप ने फ़रमाया पहली सफ़ में शरीक होकर नमाज़ पढ़ो।

हज़रत अबू अमामा बाहिती से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मोअज़्ज़िन की आवाज़ जहाँ तक जाती है उसी के लायक़ उसको बख़्श दिया जाता है। मोअज़्ज़िन को भी उतना ही सवाब मिलता है जितना उसके साथ नमाज़ पढ़ने वाले को मिलता है, लेकिन नमाज़ पढ़ने वाले के सवाब में कमी करके यह सवाब मोअज़्ज़िन को नहीं दिया जाता। हज़रत सअद इब्न अबी वक्रास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मरीज अल्लाह का मेहमान है जब तक कि वह बीमार रहता है उसको रोज़ाना सत्तर शहीदों के दरजात के बराबर उसके दरजात बलन्द किये जाते हैं जब अच्छा हो जाता है तो गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाता है जैसा कि वह पैदाइश के दिन था और अगर उसके लिए मौत मुक़द्दर हो चुकी है तो उसे बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल कर देता है।

बाज़ हज़रात का कहना है कि मुअज़्ज़िन अल्लाह का दरबान है, हर अज़ान के एवज़ उसको एक हज़ार नबियों का सवाब दिया जाएगा और इमाम अल्लाह तआला का वज़ीर है हर नमाज़ के एवज़ उसे एक हज़ार सिद्दीकों का सवाब दिया जाएगा और आलिम अल्लाह का वकील है हर हदीस के बदले उसको क़यामत के दिन नूर अता किया जाएगा और उसके लिए एक हज़ार साल की इबादत लिखी जाएगी और इल्मे दीन हासिल करने वाले तलबा ख़्वाह वह मर्द हों या औरत वह अल्लाह के ख़िदमत गुज़ार हैं उनकी जज़ा जन्नत है (इसके सिवा कुछ नहीं)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़यामत के दिन तमाम लोगों से ज़्यादा लम्बी (ऊंची) गरदन मुअज़्ज़िन की होगी। यह भी फ़रमाया जिसने सात साल तक अज़ान दी



अल्लाह तआला उसे दोज़ख से नजात अता फरमाएगा बशर्त कि वह अज़ान हुसने नीयत के साथ दे नीज़ फरमाया कि अल्लाह तआला मुअज़्ज़िन को उसकी बलन्द आवाज़ी (सौती) के एतबार से बख्शेगा (जितनी ही बलन्द आवाज़ होगी उतना ही उस पर लुत्फ व करम मबज़ूल होगा) उसकी तसदीक हर वह खुशक व तर चीज़ करेगी जिसने वह आवाज़ (अज़ान) सुनी होगी।

चौथी दावत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की है, हक़ तआला ने फरमाया: लोगों को हज की दावत दो, इसकी तशरीह अव्वलन की जा चुकी है।

## यौमे अरफ़ा के फ़ज़ाएल

### तकमीले नेमत का दिन

अल्लाह तआला का इरशाद है: आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और मैंने तुम्हारे लिए दीने इस्लाम पसन्द किया। यह आयत करीमा अरफ़ात में नाज़िल हुई है इस आयत के अलावा इस सूरह की कोई और आयत मक्की नहीं वह तमाम आयतें मदीना में नाज़िल हुईं। यह सूरत सूरह, सूरह मारदा है, इस आयत में दीन से मुराद हलाल व हराम के दीनी क़वानीन हैं और नेमत से मुराद है वह एहसान कि आइन्दा से अरफ़ात (के मैदान) में मुसलमानों के साथ काफ़िर और मुशरिक जमा नहीं होंगे। रज़ेतो के मानी हैं मैंने पसन्द किया, मैंने इन्तखाब किया। यह आयत अरफ़ा के दिन हुज्जतुल विदाअ में अरफ़ात के मक़ाम पर उतरी, इस आयत के मुज़ूल के बाद चन्द ही दिन मज़ीद सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रौनक अफ़रोज़े आलम रहे इसके बाद अल्लाह तआला ने आप को अपनी रहमत व रिज़वान की तरफ़ तलब कर लिया, यह तशरीह व तफ़सीर हज़रत अबदुल्लाह इब्ने अब्बास और दूसरे मुफ़स्सरीन ने की है।

मोहम्मद बिन कअब करज़ी कहते हैं कि फ़तहे मक्का के दिन यह आयत नाज़िल हुई, हज़रत इमाम जाफ़र ने फ़रमाया कि अल यौम का इशारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत और रिसालत की तरफ़ है। बाज़ मुफ़स्सरीन कहते हैं कि अलयौम से यौमे अज़ल की तरफ़ इशारा है और अतमाम से वक़्त की तरफ़ और रज़ा से अबद की तरफ़ इशारा है। बाज़ ने कहा है कि दीन का क़माल दो चीज़ों में है एक मारफ़ते इलाही दोम सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इत्तेबा व पैरवी है। बाज़ ने कहा है कि दीन का क़माल अमन व फ़राग़त में है इस लिए कि जब तुम उससे बेख़ौफ़ हो गये जिसका ज़ामिन अल्लाह तआला है तब तुम उसकी इबादत के लिए फ़ारिग़ हो गये। बाज़ हज़रत ने कहा कि दीन का क़माल ग़र्दिश, कुव्वत और मख़लूक की तरफ़ से बेज़ारी है, इन तमाम चीज़ों से किनारा कश हो कर उसकी तरफ़ रूजूअ हो जाये जो कुल का मालिक है। बाज़ ने कहा कि तकमीले दीन यह है कि हज के लिए अरफ़ा का दिन मुक़र्रर कर दिया क्योंकि इस्लाम से पहले लोग हर साल मक्का मुक़र्रमा में हज करते थे जब अल्लाह तआला ने हज का दिन मुक़र्रर कर दिया और इसको फ़र्ज़ कर दिया तो अलयौमा अकमलतो लकुम दी-न-कुम की आयत नाज़िल फरमाई।

दीन का लफ़ज़ कुरआन पाक में कई मानों में इस्तेमाल हुआ है, दुनिया और तरीक़े के मानी में जैसे यूसूफ़ अपने भाई को बादशाह के दीन यानी मुल्की रस्म व रिवाज के मुताबिक़ नहीं रख



सकते थे (रोक सकते थे)

2-दीन बमानी हिसाब। अल्लाह तआला का इरशाद है यह सीधा और दुरुस्त हिसाब है

3-दीन बमानी एवज़ और बदला। हक़ तआला का इरशाद है अल्लाह उस रोज़ उनको (उनके आमाल के एवज़) ठीक ठीक बदला देगा।

4-दीन के एक मानी हुक्म हैं। हुक्मे खुदा के निफ़ाज़ में तुमको इन दोनों (ज़ानी और ज़ानिया) पर तरस न आये।

5-दीन बमानी ईद (त्योहार) अल्लाह तआला का इरशाद है उन लोगों को छोड़ दो जिन्होंने दीन (यानी ईद) को महज़ खेल कूद बना रखा है।

6-दीन के मानी नमाज़, व ज़कात के भी हैं। यह दीन यानी नमाज़ व ज़कात दुरुस्त व सच्चा है।

7-दीन बमानी कयामत। इरशादे इलाही है अल्लाह तआला कयामत के दिन का मलिक है।

8-दीन के मानी शरीयत के भी हैं जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: आज तुम्हारे दीनी क़वानीन (शरीयत) को मैंने मुकम्मल कर दिया।

## आयत अल यौमा अकमलतो लकुम दी-न-कुम की मज़ीद तशरीह व तफ़्सीर

अल्लाह तआला ने तमाम आसमानी किताबों को (बजुज़ कुरआन मज़ीद के) एक दम और एक बारगी नाज़िल फ़रमाया और कुरआन मज़ीद को थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल फ़रमाया। नुज़ूल का कौन सा तरीका बेहतर है इस मसला पर उलमा ने मुख़तलिफ़ ख़्यालात पेश किये हैं चुनांचे बाज़ ने कहा कि नुज़ूले कुरआन का तरीका बेहतर है और इसकी दलील यह है कि अल्लाह तआला ने जब तौरेत को एक बारगी उतारा और बनी इस्राईल ने उसको क़बूल किया तो उसपर वह बहुत कम मुद्दत तक आमिल रहे उन पर तौरेत के अवामिर व नवाही बहुत ही गिरां गुज़रे चुनांचे वह कहने लगे: हमने सुन तो लिया मगर करेंगे हम इसके ख़िलाफ़, लेकिन कुरआन हकीम बतदरीज नाज़िल हुआ और अल्लाह तआला ने अहले ईमान को सबसे पहला हुक्म लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहने का दिया अल्लाह तआला ने ज़मानत दी कि जिसने यह कल्मा पढ़ा वह जन्मती हो गया लोगों ने उसको सुना और तसलीम कर लिया आकर उसके बाद हुक्म दिया गया कि दो दो रकअत की दो नमाज़ें अदा करें एक कबूल तुलूअ आफ़ताब (नमाज़ फ़ज़्र) और एक गुरुबे आफ़ताब के बाद, फिर पांच वक़्त की नमाज़ों का हुक्म दिया गया फिर हिज़रत के बाद जमाअत के साथ नमाज़े जुमा का हुक्म दिया गया उसके बाद ज़कात का हुक्म हुआ फिर आशूरा के रोज़े का, फिर हर माह तीन दिन के रोज़ों का हुक्म हुआ, फिर जिहाद और आख़िरी में हज का। इसके बाद जब अवामिर व नवाही तमाम हो गये तो अल्लाह तआला ने जुमा के रोज़ अरफ़ा का दिन हुज्जतुल विदा के मौका पर आयत अल यौमा अकमलतो लकुम दी न कुम नाज़िल फ़रमाई, इसी तरह हज़रत उमर से मरवी है:

तारिक बिन शहाब जुबैरी से मरवी है कि एक यहूदी ने हज़रत उमर ख़त्ताब की ख़िदमत में



अर्ज किया कि आप लोग एक ऐसी आयत पढ़ते हैं कि अगर वह हम पर नाज़िल हुई होती और इसका रोज़ नज़ूल हमको मालूम होता तो हम लोग उस रोज़ ईद मनाते। हज़रत उमर ने फ़रमाया वह कौन सी आयत है, यहूदी ने कहा अल यौमा अकमलतो लकुम दी न कुम। हज़रत उमर ने फ़रमाया मुझे मालूम है कि यह आयत किस रोज़ और कहां नाज़िल हुई, यह आयत अरफ़ा के रोज़ जुमा के दिन नाज़िल हुई, हम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अरफ़ात के मैदान में ठहरे हुए थे और अल्लाह का शुक्र है कि यह दोनों दिन हमारे लिए ईद के दिन हैं (जुमा और रोज़े हज) और जब तक एक मुसलमान भी दुनिया में बाकी रहेगा यह दिन मुसलमानों के लिए ईद का दिन ही रहेगा।

एक यहूदी ने हज़रत इब्ने अब्बास से अर्ज किया कि अगर यह दिन हम में होता तो हम इस रोज़ ईद मनाते, हज़रत अब्बास ने फ़रमाया कि यौमे अरफ़ा से बढ़कर ईद का और कौन सा दिन होगा।

## अरफ़ात और अरफ़ा के मानी

मौकिफ़ को अरफ़ात और मौकिफ़ के दिन को अरफ़ा क्यों कहा जाता है इसमें उलमा का इख़िलाफ़ है इसकी तौजीह मुख़तलिफ़ फ़ीह है ज़हाक़ ने कहा कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हिन्दुस्तान में और हज़रत हव्वा को ज़दा में उतारा गया हज़रत आदम हव्वा को और हव्वा आदम को ढूँढते रहे आख़िर कार एक मुद्दत बाद दोनों अरफ़ात के मैदान में अरफ़ा के दिन मिल गये एक दूसरे को पहचान लिया इसलिए उस दिन का नाम अरफ़ा और मक़ाम का नाम अरफ़ात रखा गया।

सिद्दी का कौल है कि अरफ़ात की वजह तस्मिया यह है कि हज़रत हाजरा हज़रत इस्माईल को लेकर हज़रत सारा के पास से चली आई उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मौजूद न थे जब वह आये तो इस्माईल को मौजूद न पाया, हज़रत सारा ने वाक़िया बयान किया कि हाजरा इस्माईल को लेकर चली गई हज़रत इब्राहीम हज़रत इस्माईल की तलाश में रवाना हो गये आख़िर अरफ़ात में दोनों मिल गये हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इस्माईल को पहचान लिया इसी लिए उस मक़ाम का नाम अरफ़ात हो गया।

एक रिवायत में आया है (जो मरफूअ है) कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़िलिस्तीन से रवाना हुए तो हज़रत सारा ने आप को कसम दी कि आप मेरे पास वापस आने तक सवारी से न उतरें (यानी हज़रत हाजरा से कुरबत न करें) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत इस्माईल को देख कर लौट आये फिर एक साल तक सारा ने हज़रत इब्राहीम को हज़रत इस्माईल के पास नहीं जाने दिया (एक साल तक रोके रखा) एक साल बाद सारा ने इजाज़त दे दी आप रवाना हो गये और मक्का के कोहिस्तान तक पहुँच गये लेकिन बावजूद रात भर चलने और दौड़ते फिरते रहने के आप को मंज़िल नहीं मिली, तिहाई रात गुज़रने पर अल्लाह तआला के हुक्म से मैदाने अरफ़ात में ठहरे रहे, सुबह हुई तो बस्तियाँ और वबाल के रास्ते पहचान लिए उसी शिनाख़्त और पहचान की वजह से उसको यौम अरफ़ा क़रार दिया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज किया कि इलाही इस जगह को अपना घर बना दे जो तुझे तमाम बस्तियों से ज़्यादा पसन्दीदा हो और जिसकी



तरफ़ दूर दराज़ रास्तों से अहले ईमान के दिल मायल हों और वह आयें।

अता ने अरफ़ात की वजह तस्मिया यह बयान की है कि हज़रत जिब्राईल हज़रत इब्राहीम को अरकाने हज बताते जाते थे और कहते थे अरफ़तो, अब पहचान गये फिर बताते और फिर कहते अरफ़तो, इसीलिए उस जगह का नाम अरफ़ात हो गया। सईद बिन मुसय्यब से मरवी है कि हज़रत अली ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जिब्राईल को हज़रत आदम के पास भेजा हज़रत जिब्राईल ने आप को हज कराया जब अरफ़ात के मैदान में पहुंचे तो हज़रत जिब्राईल ने कहा आपने इसे पहचाना इसलिए कि हज़रत इब्राहीम एक मरतबा पहले यहां आ चुके थे इस वजह से उसका नाम अरफ़ात रखा गया।

अबूल तुफ़ैल की रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास ने अरफ़ा की वजह तस्मिया यह बयान की है कि हज़रत जिब्राईल ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मक्का के मक़ामात और हज की जगहें दिखा दीं और बता दिया कि ऐ इब्राहीम यह जगह ऐसी है और यह जगह ऐसी है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जवाब में कहते थे मैंने पहचान लिया मैंने पहचान लिया। अस्बात ने सिद्दी का कौल नक्ल करते हुए कहा कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने लोगों को हज की दावत दी तो तमाम लोगों ने लब्बैक कहा और आने वाले हज के लिए आ गये। अल्लाह तआला ने एक मक़ाम की हालत बयान करते हुए फ़रमाया कि उस जगह पर निकल जाओ हज़रत इब्राहीम निकल कर चले दरख़्त के पास पहुंचे तो तीसरे जमरा यानी जमरए उक़बा पर शैतान सामने आया हज़रत इब्राहीम ने उसके सात संगरेजे मारे हर पत्थरी के मारते वक़्त आप अल्लाहो अकबर कहते, शैतान दूसरे जमरे पर जाकर हज़रत इब्राहीम ने वहां भी उस पर संगरेजे मारे और तकबीर पढ़ी शैतान वहां से हटकर पहले जमरा पर जा गिरा। हज़रत ने वहां भी उसके संगरेजे मारे और तकबीर पढ़ी, जब शैतान ने अपने अन्दर मुक़ाबला की ताक़त नहीं पाई तो वहां से भाग गया हज़रत इब्राहीम वहां से आगे बढ़कर जुल मजाज़ में पहुंचे आपने उस मक़ाम को नहीं पहचाना और आगे बढ़ गये और अरफ़ात में जाकर ठहरे आपने अरफ़ात को पहचान लिया और फ़रमाया मैंने पहचान लिया इसी लिए उस मक़ाम का नाम अरफ़ात रख दिया गया और उस दिन का नाम अरफ़ा रखा गया। जब शाम हुई तो आप मक़ामे जमा पर पहुंच गये उस मक़ाम को जमा इस लिए कहते हैं कि यहां मगरिब और ईशा की नमाज़ें जमा की जाती हैं (एक साथ पढ़ी जाती हैं) उस मक़ाम को मुज़दलफ़ा कहते हैं (मुज़दलफ़ा के मानी करीबी जगह के हैं) उस मक़ाम को मशअरे हराम कहने की वजह यह है कि अल्लाह तआला ने दूसरे मक़ामात की तरह इस मक़ाम के बारे में भी लोगों को बता दिया कि यह भी हरम जैसा है ताकि कोई शख्स यहां ऐसा काम न करे जिसकी हज में मुमानियत है।

अबू सालेह की रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि तरवीया और अरफ़ा की वजह तस्मिया यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ज़िलहिज्जा की आठवीं तारीख़ की रात को ख़्वाब में देखा कि उन्हें बेटा ज़िबह करने का हुक्म दिया जा रहा है सुबह हुई तो सोच में पड़ गये दिन भर इसी तरह फ़िक्र में गुज़र गया कि यह अल्लाह का हुक्म है या शैतान की तरफ़ से ख़्वाब है इसी सोच की वजह से उस दिन का नाम तरवीया (सोच का दिन) पड़ गया। अरफ़ा की रात को फिर वही ख़्वाब दोबारा देखा सुबह हुई तो उनको यकीन हो गया और यह पहचान गये कि यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से है इस वजह से उस दिन का नाम अरफ़ा पड़



गया। बाज़ उलमा ने अरफ़ा की वजह तस्मिया यह बयान की है कि उस दिन मौक़िफ़ में लोग जमा हो कर अपने गुनाहों का एतराफ़ करते हैं और इसकी असल यह है कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हज करने का हुक्म दिया गया तो वह अरफ़ा के दिन अरफ़ात में ठहरे और एतराफ़ किया रब्बना ज़लमना अन्फुसेना और बाज़ ने कहा कि अरफ़ात अरफ़ (यानी पाक और साफ़) से माखूज़ है चुनांचे अल्लाह तआला का इरशाद है: उनके लिए उसको पाकीज़ा बना दिया। यह मिना की ज़िद है क्योंकि मिना वह मक़ाम है जहां खून बहाया जाता है वहां गोबर भी होता है और खून भी, इसलिए यह मक़ाम पाक नहीं रहता, अरफ़ात में यह पलीदियां नहीं होती हैं इसलिए उसको अरफ़ात कहा गया। यौमे वकूफ़ यौमे अरफ़ा होता है इसकी वजह तस्मिया बकौले बाज़ यह है कि अरफ़ा में लोग एक दूसरे को पहचान लेते हैं यह भी कहा गया है कि इन दोनों लफ़्ज़ों की वजह तस्मिया यह है कि अरफ़ के मानी हैं सब्र खुशूअ और खुजूअ (गिड़गिड़ाना, गिरया व ज़ारी और आजिज़ी करना) चुनांचे रज़लुन आरिफ़ुन वह शख्स है जो सब्र करने वाला और आजिज़ी करने वाला हो। एक ज़म्बल मिस्ल है नफ़्स बड़ा साबिर है उसपर जो कुछ बोझ रख दो वह उठा लेता है।

शाएर ज़ुरमा का कौल है हुक्मे खुदावन्दी उसपर जो कुछ ला डालता है वह उसपर सब्र करता है चूंकि हाजी भी उस जगह पर बहुत कुछ गिरया व ज़ारी करते हैं और दुआ करते हैं तरह तरह की तकालीफ़ और शदाइद उस इबादत की तकमील के लिए बरदाश्त करते हैं इसलिए उस दिन को अरफ़ा और मक़ाम को अरफ़ात कहते हैं।

## अरफ़ा के रोज़ व शब

### रोज़े अरफ़ा और शबे अरफ़ा की फ़ज़ीलत

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद हज़रत जाबिर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यौमे अरफ़ा से अफ़ज़ल कोई दिन नहीं है अल्लाह तआला उस दिन ज़मीन वालों के ज़रिये आसमान वालों पर फ़ख़्र करता है और फ़रमाता है मेरे उन बन्दों को देखो बिखरे और गर्द आलूद बाल हैं मेरे पास दूर दराज़ रास्तों से मेरी रहमत की उम्मीद और मेरे अज़ाब का खौफ़ ले कर आये हैं। लिहाज़ा यौमे अरफ़ा से ज़्यादा दोज़ख़ से रिहाई का दिन कोई दूसरा नहीं है उस दिन जितने मुजरिम दोज़ख़ से रिहाई पाते हैं किसी और दिन नहीं पाते।

शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अरफ़ा के दिन खुतबा इरशाद फ़रमाते हुए फ़रमाया: "ऐ लोगो! घोड़ों और ऊंटों को इज़ा पहुचाने और लाग़र करने में नेकी नहीं है। उमदा और अच्छी रफ़तार से चलो और कमज़ोरों पर रहम खाओ, किसी मुसलमान को इज़ा न पहुचाओ।

हज़रत नाफ़ेअ ने हज़रत इब्ने उमर से रिवायत की है कि उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला अरफ़ा के दिन नज़र फ़रमाता है तो जिसके दिल में ज़रा सा भी ईमान होता है वह ज़रूर बख़्श दिया जाता है। मैंने हज़रत इब्ने उमर से पूछा कि यह मग़फ़िरत तमाम लोगों के लिये है या अहले अरफ़ात के



साथ मखसूंग है, उन्होंने फरमाया यह मगफिरत तमाम लोगों के लिये है।

शैख हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अरफा का दिन का दिन होता है, तो अल्लाह तआला नीचे के आसमान पर उतरता है और हाजियों की वजह से मलाइका पर फख्र करता है और फरमाता है ऐ मेरे मलाइका! मेरे इन बन्दों को देखो किस तरह परेशान बाल गर्द आलूद, दूर दराज रास्तों से आये हैं यह मेरी राहत के उम्मीदवार हैं और मेरे अजाब से तरसां हैं और जिस शख्स के मुलाकात के लिए कोई आता है तो उस पर हक है कि आने वाले की इज्जत करे, मेजबान पर मेहमान की इज्जत करना लाजिम है पस तुम गवाह रहो मैंने उनकी मगफिरत कर दी, उनकी मेहमानी का तआम जन्नत को करार दिया, मलाइका अर्ज करते हैं कि परवरदिगारे आलम इनमें तो मगरूर व मुतकब्बिर औरतें भी शामिल हैं, अल्लाह तआला फरमाता है कि मैंने उनको भी बख्श दिया रोजे अरफा से ज्यादा और कोई दिन दोख से आजादी का नहीं है।

शैख हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हजरत तलहा बिन अब्दुल्लाह का कौल नकल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अरफा के दिन से ज्यादा किसी दिन भी शैतान को ख़्वाब व जलील, शर्मिन्दा और ग़जबनाक नहीं देखा गया, क्योंकि उस दिन उसको अल्लाह की रहमत का नुजूल और बन्दों के गुनाहों की मगफिरत नज़र आती हैं। हां बद्र का दिन इससे मुस्तसना है। सहाबा ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह बद्र के दिन इब्नीस ने क्या देखा था हजरत ने फरमाया कि जिब्रील को मलाइका को बुलाते देखा था।

इकरमा का कौल है कि हजरत इब्ने अब्बास फरमाते थे कि यौमे अरफा हज्जे अकबर का दिन है वही दिन यौमे मुबाहात है कि अल्लाह तआला सबसे निचले आसमान पर नुजूल फरमाता है और फरिश्तों से फरमाता है मेरी जमीन पर बन्दों को देखो कि उन्होंने मेरी (वहदानियत और रबूबियत की) तसदीक की है तो यौम अरफा से बढ़कर कोई और दिन ऐसा नहीं कि बेशुमार लोग जहन्नम से आजाद किये जाते हों।

हजरत अबू हुरैरा की रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अलफ़ैमुल मौऊद रोजे कयामत है अश्शाहिद रोजे जुमा है और अश्शहूद रोजे अरफा है।

अता ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला अरफा के दिन आम लोगों के बाइस मुबाहात फरमाता है और हजरत उमर इब्न ख़ताब के बाइस ख़ास तौर पर (हजरत उमर की जाते गरामी से ख़ास तौर पर) हजरत इब्ने उमर की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सबसे बड़ा मुजरिम वह है जो यह जानते हुए अरफात से लौटता है कि अल्लाह ने उसकी मगफिरत नहीं की। हजरत अबूहुरैरा ने फरमाया कि अल्लाह तआला अरफा की शाम को मुजदलफा में जमा होने वाले तमाम लोगों को बख्श देता है सिवाए उनके जो कबीरा गुनाह करने वाले हैं, जब मुजदलफा की सुबह होती है तो अल्लाह तआला तमाम अहले कबाइर (कबीरा गुनाह करने वाले) को और आज़ार देने वाले लोगों को भी बख्श देता है।

शैख हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद हजरत इब्ने उमर से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे साथ अरफा की शाम को मौकिफ़ में ठहरे



गुनियतुत्तालिबीन  
जब वहाँ से रवानगी का क़स्द फ़रमाया तो आप खड़े हो गये, सब लोगों को ख़ामोश रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया ऐ लोगो! बिला शुब्हा अल्लाह तआला ने तुम पर एहसान फ़रमाया है कि तुम्हारी आज के दिन तक उमरें दराज़ कीं और तुम्हारी नेकियों के तुफ़ैल तुम्हारे बदकारों ने भी जो कुछ मांगा बख़्श दिया और बाहमी इज़ा रसानी के तमाम गुनाह भी बख़्श दिये। चलो अल्लाह का नाम ले कर, जब हम लोग मुज़दलफ़ा पहुंचे तो लोगों को हुज़ूर ने ख़ामोश कराया, जब लोग ख़ामोश हो गये तो फ़रमाया लोगो! आज इस दिन अल्लाह ने तुम पर बड़ा एहसान फ़रमाया तुम्हारे बदकारों को नेकों की वजह से बख़्श दिया और नेकों ने जो कुछ मांगा अता फ़रमा दिया और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दिया और तुम्हारे वह गुनाह भी माफ़ कर दिए जो इज़ा रसानी के बाइस तुम पर हुए थे और इज़ा रसानों के सवाब का भी ज़िम्मादार हो गया। चलो अल्लाह का नाम लेकर चलो। आप के इस इरशाद के बाद एक आराबी आप की ऊंटनी की मुहार पकड़ कर खड़ा हो गया और उसने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह उस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया है दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं जो मैंने नहीं किया, मैंने झूठे हलफ़ भी उठाये हैं तो क्या मैं भी उन लोगों में शामिल हूँ जिनकी आप ने सिफ़त बयान की है? हुज़ूर वाला ने इरशाद फ़रमाया ऐ आराबी! अब तू अज़सर नौ नेक अमल करना शुरू कर दे, तेरे पहले तमाम गुनाह बख़्श दिये गये, मुहार छोड़ दे।

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद हज़रत अब्बास बिन मरवास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरफ़ा की रात अपनी उम्मत के लिए मग़फ़िरत, बख़्शिश और रहमत की दुआ फ़रमाई इसके बाद आप ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत को बख़्श दिया सिवाए उनके जो एक दूसरे पर जुल्म करें। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने वह गुनाह बख़्श दिये जो बन्दे और अल्लाह के दर्मियान थे, फिर आप ने फ़रमाया इलाही! तू यकीनन तू कादिर है उस मज़लूम को उस पर किये गये जुल्म का बेहतर सवाब अता फ़रमाये और उस जुल्म को बख़्श दे। हुज़ूर ने फ़रमाया कि हक़ तआला ने उस रात जवाब अता नहीं फ़रमाया फिर जब मुज़दलफ़ा की रात आई तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया और अल्लाह तआला ने उसी वक़्त आप को जवाब अता फ़रमाया कि मैंने आपको भी बख़्श दिया। रावी का बयान है कि उस वक़्त हुज़ूर ने तबस्सुम फ़रमाया, एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुज़ूर ऐसे वक़्त मुसकुराये कि उससे पहले ऐसे वक़्त कभी तबस्सुम नहीं फ़रमाते थे (यानी दुआ के वक़्त) आपने फ़रमाया मैं दुश्मने खुदा इब्लीस की हालत पर मुसकुराया, जब उसको मालूम हुआ कि मेरी मुराद के मुताबिक़ उम्मत के लिए अल्लाह तआला ने मेरी दुआ क़बूल फ़रमा ली है तो वह अपनी बर्बादी और तबाही का पुकारने लगा और सर पर खाक डालने लगा।

हज़रत सईद बिन जुबैर से मरवी है कि अरफ़ा के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरफ़ात के उस मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा थे जहाँ बन्दे अल्लाह के हुज़ूर में हाथ फैलाते हैं और चिल्ला चिल्ला कर दुआ मांगते हैं कि जिब्रील नाज़िल हुए और कहा ऐ मोहम्मद! खुदाए बुजुर्ग़ व बरतर आपको सलाम कह रहा है और फ़रमाता है कि यह लोग मेरे घर के हाजी और मेरी ज़ियारत के लिए आने वाले हैं यह जिसकी मुलाक़ात को आये हैं उसपर लाज़िम है कि आने वाले की तौकीर करे मैं आपको और अपने मलाइका को गवाह बनाता हूँ कि मैंने उनसब को बख़्श



दिया और जुमा के दिन जियारत करने वालों के साथ ऐसा ही करते रहूंगा।

हजरत अली से मरवी है कि अरफा के दिन जब शाम हुई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरफात में ठहरे हुए थे आपने लोगों की तरफ मुतवज्जेह होकर तीन बार फरमाया अल्लाह के उन मेहमानों को मरहबा! यह जो सवाल करते हैं उनका सवाल पूरा किया जाता है, दुनिया में उनके रिज्क में बरकत पैदा करता है और आखिरत में हर दिरहम के एवज अल्लाह तआला हजार दिरहम उनको अता फरमायेगा। क्या मैं तुमको बशारत दूँ? सहाबा कराम ने अर्ज किया या रसूलल्लाह क्यों नहीं जरूर दीजिए आपने फरमाया, जब यह रात आती है तो अल्लाह तआला आसमाने दुनिया की तरफ नुजूल फरमाता है फिर अपने फरिश्तों को हुक्म देता है कि वह जमीन पर उतर जायें चुनांचे फरिश्ते इतने कसीर तादाद में उतरते हैं कि अगर सूई गिरे तो फरिश्ते पर गिरे, अल्लाह तआला फरमाता है ऐ मलाइका! मेरे बन्दों को देखो कि मेरे पास अतराफ व अकनाफ से परेशान और गुबार आलूद बालों के साथ आये हैं, क्या तुम सुन रहे हो वह मुझसे क्या मांग रहे हैं? फरिश्ते अर्ज करते हैं ऐ हमारे रब! वह तुझसे मगफिरत तलब कर रहे हैं हक तआला फरमाता है मैं तुमको गवाह बनाता हूँ कि मैंने उनको बख्श दिया, अल्लाह तआला तीन बार यह फरमाता है, लिहाजा अब अपनी कयाम गाह से चलो, तुम्हारी मगफिरत कर दी गई।

## अरफा के दिन नमाज़ रोज़ा और दुआ की फज़ीलत

अरफा के दिन की दुआयें

### अरफा का रोज़ा

शैख हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद बयान किया कि हजरत जैद ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स अरफा के दिन का रोज़ा रखता है अल्लाह तआला उसके एक साल पहले और एक साल बाद के गुनाह माफ कर देता है। शैख हिबतुल्लाह ने हजरत अबू कतादा का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया अरफा का रोज़ा दो साल के गुनाहों का कफ़ारा है, एक गुज़िश्ता साल के और एक आइन्दा साल के।

### अरफा के दिन की नमाज़ें

अरफा कि दिन की नमाज़ के बारे में शैख हिबतुल्लाह ने असनाद के साथ हजरत अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स अरफा के दिन जुहर व अस्म के दर्मियान चार रकअतें इस तरतीब से पढ़ता है कि हर रकअत में सूरह फातिहा एक बार और सुरह अखलास पांच बार, तो उसके लिए हजारों नेकियां लिखी जाती हैं, कुरआन के हर लफ़्ज़ के एवज जन्नत में उसका मरतबा इतना ऊंचा किया जायेगा जिसकी मुसाफ़त पांच बरस की मुसाफ़त के बराबर होगी। कुरआन के हर हर्फ़ के एवज अल्लाह तआला



गुनियतुतालिबीन सत्तर हूरें उसको मरहमत फरमायेगा, हर हूर के साथ सत्तर ख्वान मोती और याकूत के होंगे हर ख्वान पर हजार रंग के खाने होंगे जो सत्तर हजार सब्ज रंग के गोश्त के होंगे खाने, बर्फ की तरह सर्द और शहद की तरह शीरीं और मुश्क की तरह खुशबू दार होंगे उस खाने को न आग ने छुआ होगा और न लोहे से (गोश्त को) काटा गया होगा, हर लुक़्मा पहले लुक़्मा से बेहतर होगा उसके पास एक ऐसा परिन्दा आयेगा जिसकी चोंच सोने की, बाजू सुर्ख याकूत के होंगे, उस परिन्दे के सत्तर हजार पर होंगे, परिन्दा ऐसी ज़मज़मा संजियां करेगा कि किसी ने ऐसी नहीं सुनी होगी यह परिन्दा कहेगा! ऐ अहले अरफ़ा! मरहबा! हुज़ूर ने फरमाया फिर वह परिन्दा उस शख्स के प्याला में गिर जायेगा उसके हर पर के नीचे से सत्तर किस्म के खाने निकलेंगे जन्नती उनको खायेंगे फिर वह परिन्दा उड़ जायेगा उस नमाज़ पढ़ने वाले को (पसे मुरदन) जब क़ब्र में रखा जाये तो कुरआन के हर हर्फ़ के बाइस उसकी क़ब्र जगमगा उठेगी यहां तक कि वह बैतुल्लाह का तवाफ़ करने वालों को देख लेगा उसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जायेगा उस दरवाज़े से उसको वह सवाब और मरतबा दिखाई देगा जो उसके लिए मखसूस होगा उसको देखकर वह कहेगा इलाही! क़यामत बरपा कर दे।

शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत हसन से और उन्होंने हज़रत अली और अब्दुल्लाह इब्न मसऊद से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स अरफ़ा के दिन दो रकअतें पढ़े और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा तीन बार (सूरह फ़ातिहा को बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू करे) फिर सूरह काफ़िरून तीन बार और सूरह इख़लास एक बार, हर सूरत को बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू करे तो अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम गवाह रहो मैंने इसके गुनाह बख़्शा दिये।

## यौमे अरफ़ात की दुआयें

शैख़ हिबतुल्लाह ने अपनी असनाद के साथ उमर लेसी से रिवायत की है कि उन्होंने कहा कि हम को इत्तेला मिली है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास हज़रत जिब्रील को तवस्सुत से पांच दुआयें बतौरे हदिया भेजीं, जिब्रील ने कहा कि आप यह पांच दुआयें पढ़ा करें। अल्लाह को ज़िलहिज्जा के अशरा की इबादत से ज़्यादा किसी दिन की इबादत महबूब और पसन्दीदा नहीं है।

### पहली दुआ

पहली दुआ यह है:

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत है और उसी को हम्र है वही ज़िन्दा करता है वही मारता है उसी के कब्ज़ा में ख़ैर है और वह हर शय पर कादिर है।

### दूसरी दुआ

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं वह माबूद है, एक है, बेनियाज़ है न उसके बीवी है न बच्चे।



## तीसरी दुआ

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत है उसी के लिए हम्द है वही ज़िन्दा करता है वही मारता है वह ज़िन्दा है उसके लिए मौत नहीं है उसी के कब्ज़ा में भलाई है और वह हर शय पर कादिर है।

## चौथी दुआ

मेरे लिए अल्लाह काफी है और वही काफी है अल्लाह को जिसने पुकारा उसने उसकी पुकार सुनी अल्लाह के सिवा कोई और मुन्तहा नहीं है।

## पाचवीं दुआ

इलाही! तू ही सारी तारीफों के लायक है जैसा कि तूने आप अपनी तारीफ़ फ़रमाई है, हमारी हर तारीफ़ से तू बाला तर और बेहतर है इलाही! मेरी नमाज़, मेरी इबादत, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब तेरे ही लिए है मेरी मीरास भी खास तेरे लिए है, ऐ मालिक हर सूरत में तेरी ही बारगाह में अज़ाबे क़ब्र से बचने की दरख्वास्त करता हूँ मेरे कामों की परागन्दगी से मुझे बचा जिस चीज़ पर हवा चलती है मैं उसकी बेहतरी के लिए तेरे हुज़ूर में दुआ करता हूँ कि उससे मुझे अमन व अमान में रख।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों ने हज़रत ईसा से उन दुआओं का असर दरयाफ़्त किया, आपने फ़रमाया जो शख्स पहली दुआ एक सौ मरतबा पढ़ेगा तो रूए ज़मीन पर उस जैसा इबादत करने वाला कोई दूसरा नहीं होगा क़यामत के दिन तमाम नेकोकारों से ज़्यादा उसकी नेकियां होंगी। जिसने दूसरी दुआ को सौ मरतबा पढ़ा तो अल्लाह तआला उसके लिए एक लाख नेकियां लिखेगा और उतनी ही उसकी बुराइयां मिटा देगा और जन्नत में उसके दस हज़ार दर्जे बलन्द कर देगा। जिसने तीसरी दुआ को सौ मरतबा पढ़ा तो सबसे निचले आसमान से सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हाथ फैलाये हुए उसके पढ़ने वाले पर रहमत तलब करते हुए उतरेंगे। जिसने चौथी दुआ को सौ मरतबा पढ़ा तो उस दुआ को फ़रिश्ते सजा कर रब्बुल आलमीन के हुज़ूर में पेश करेंगे और अल्लाह तआला उस पर नज़रे करम फ़रमायेगा और जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला का नज़रे करम हो वह बदबख्त कैसे हो सकता है आपके हवारियों ने पांचवीं दुआ के बारे में दरयाफ़्त किया कि उसमें कितना सवाब है तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि इसकी वज़ाहत की उन्हें इजाज़त नहीं दी गई है।

शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद रिवायत की है कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली इब्न अबी तालिब ने फ़रमाया अरफ़ा की शाम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकसर दुआ करते और फ़रमाते थे।

ऐ अल्लाह! तू ने आप अपनी जो कुछ तारीफ़ की है वह तेरे ही लिए है मेरे कहने से (तारीफ़ करने से) जो खुद बेहतर कहता है, इलाही! मेरी ज़िन्दगी मेरी मौत और इबादत सब तेरे ही लिए है, मेरी मीरास भी तेरे ही लिए है, इलाही मैं तुझसे अमन व अमान चाहता हूँ! इलाही मुझे क़ब्र के अज़ाब से, सीना के फ़ितने और काम की बरहमी से महफूज़ रख, जिस चीज़ के साथ हवा चलती है मैं तुझसे उससे बेहतर चीज़ की दरख्वास्त करता हूँ वह मुझे अता फ़रमा दे।



शैख हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद अमीरुल मोमिनीन हजरत अली मुर्तजा से यह भी रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अरफा में मेरी और मुझे पहले पैगम्बरों की दुआ यह है:

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह यकता है उसका कोई शरीक नहीं उसी का मुल्क है और वही तारीफ और हम्द व सना के लायक है वह हर चीज पर कादिर है, इलाही! तू मेरे दिल में नूर अता फरमा, मेरे कानों और मेरी आंखों की नूर से मामूर कर दे! ऐ अल्लाह मेरा सीना खोल दे, मेरे काम आसान कर दे, मेरे सीने को वसवसों, कब्र के फितनों और काम की परागन्दगी से अमन में रख, इलाही मुझे रात और दिन की शरारतों (बुराइयों) से बचा, मुझे हवा की शरारतों और बदी से अमन व अमान में रख।

जहाक कहते हैं कि हुज्जतुल विदा में जब लोग अरफात में जमा हो गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया यह हज्जे अकबर का दिन है जो शरूस आज रात या दिन में अरफात में नहीं पहुंचा उसका हज नहीं हुआ, आज परवरदिगार से दुआ करने और मांगने का दिन है आज तहलील व तकबीर और तलबीह का दिन है जो शरूस आज इस जगह पहुंचेगा और अपने परवरदिगार से मांगने से महरूम रहा वही महरूम है, हकीकत में तुम ऐसे सखी से मांगते हो जो अता में बुखल नहीं करता और ऐसे मुतहम्मिल बुर्दबार से मांगते हो जो जहल (गुस्सा) नहीं फरमाता, ऐसे आलिम से मांगते हो जो भूलता नहीं। जिसने अपने घर रहकर अरफा के दिन रोजा रखा गोया उसने एक साल पहले और एक साल बाद के रोजे रखे।

## अरफा की शाम की वह दुआयें

जो

सरबरे कायनात खुसूसियत के साथ फरमाते

**अरफा की वह दुआयें जो आंहजरत के साथ मखसूस थीं**

शैख हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हजरत अली मुर्तजा से रिवायत की है कि उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद किया कि मौकिफ अरफा में इस दुआ से अफजल और कोई कौल या अमल नहीं है, इस दुआ को पढ़ने वाले की तरफ अल्लाह अज्ज व जल्ला तवज्जोह फरमाता है। हजरत अली फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरफात में किब्ला रु होकर दुआ मांगने वाले की तरह दोनों हाथ फैला कर तीन बार लंबैक फरमाते फिर सौ बार इरशाद फरमाते ला इला हा इल्लल्लाहो वहदहु ला शरी क लहू लहुल मुलको वलहुल हम्दो युहई व युमीतो बियदिहिल खैरा व हो व अला कुल्लि शैइन कदीर। फिर सौ मरतबा ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलीईल अजीम अशहदो अन्नल्ला हा अला कुल्लि शैइन कदीरून व अन्नल्लाहा कद अहाता बेकुल्लि शैइन इल्मा और कुव्वत अल्लाह ही के लिए है, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह ही हर चीज पर कादिर है सब कुछ अल्लाह ही के इहातए इल्म में है (कोई चीज उसके इल्म से बाहर नहीं है।)



फरमाते, इसके बाद शैतान मरदूद से पनाह मांगते और तीन बार फरमाते इन्नल्लाहा होवस समीउल अलीम, फिर तीन बार सूरह फातिहा पढ़ते हर बार सूरह फातिहा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू फरमाते और आमीन पर खत्म करते फिर सौ बार सूरह इख्लास पढ़ते फिर सौ बार फिर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, अल्लाहुम्मा सल्ले अलन्नबीइल उम्मीऐ व रहमतुल्लाहि व बरकातहु पढ़ते उसके बाद हुजूर जो चाहते वह दुआ करते। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है जो शख्स इस तरह दुआ करता है तो मलाइका से अल्लाह तआला फरमाता है मेरे बन्दा को देखो उसने मेरे घर की तरफ रुख किया मेरी बुजुर्गी बयान की, तसबीह व तहलील में मशगूल हुआ और जो सूरत मुझे सबसे ज्यादा महबूब थी वही पढ़ी और मेरे रसूल पर दरुद भेजा मैं तुम को गवाह बनाता हूँ कि मैंने उसके अमल को कबूल किया उसके अज़्र को वाजिब कर दिया, उसके गुनाह बख्श दिये और उसने जो कुछ मांगा मैंने उसकी सिफारिश कबूल की।

## रोज़े अरफ़ा

### मलाइका (मुकर्रबीन) और हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की दुआयें

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने अपनी असनाद के साथ हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया बरी और बहरी (पैगम्बर) यानी हज़रत इलयास और हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम हर साल मक्का मुअज़्ज़मा में जमा होते हैं हज़रत इब्ने अब्बास ने फरमाया हमको यह ख़बर मिली है कि यह दोनों बाहम सर मूँडते हैं और एक दूसरे से कहता है कि पढ़ो:

बिस्मिल्लाह माशाअल्लाह! सिवाए अल्लाह तआला के कोई नेकी नहीं देता बिस्मिल्लाह माशाअल्लाह! खुदा के सिवा कोई बदी को दूर नहीं कर सकता, बिस्मिल्लाह माशाअल्लाह! जिस क़दर नेमत भी तुम्हारे पास है अल्लाह ही देता है बिस्मिल्लाह माशाअल्लाह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई चीज़ ग़दीश नहीं कर सकती न किसी में इस बात की ताक़त है।

### इस दुआ का असर

हज़रत इब्ने अब्बास ने कहा कि हुजूर अक़दस ने फरमाया जो शख्स इस दुआ को रोज़ाना सुबह को पढ़ेगा वह डूबने से, जलने से, चोरी से और नागवार व ना पसन्दीदा चीज़ से शाम तक महफूज़ रहेगा और जो शख्स यह दुआ शाम को पढ़ेगा वह सुबह तक अल्लाह की पनाह में रहेगा

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक बिल असनाद हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहु से रिवायत करते हैं की आपने फरमाया, हर अरफ़ा के दिन अरफ़ात में हज़रत जिब्रील, मिकाईल, इस्राफ़ील और हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम जमा होते हैं, हज़रत जिब्रील कहते हैं: अल्लाह जो चाहे और अल्लाह के सिवा किसी को कुव्वत व ताक़त नहीं है। हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम इसके जवाब में कहते हैं: अल्लाह जो चाहे तमाम नेमतें अल्लाह की तरफ़ से हैं। इसके जवाब में हज़रत इस्राफ़ील कहते हैं: अल्लाह जो चाहे सारी भालाईयाँ अल्लाह के कब्ज़े में हैं इस के जवाब में हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: अल्लाह जो चाहे, अल्लाह के सिवा कोई बुराईयों को दूर नहीं कर सकता।



इस दुआ के बाद वह मुंतशिर व मुतफर्रिक हो जाते हैं और आईन्दा साल तक अरफा से पहले इकट्ठे नहीं होते।

## अरफा के दिन की दुआ में अक़वाल व अख़बार

### एक हदीस

इब्ने जुरैह ने कहा कि मुझे इत्तेला मिली है कि हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते थे कि अरफा में मुसलमानों की दुआ ज़्यादा तर यह होनी चाहिए:

इलाही हम को दुनिया में भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भी भलाई अता कर और ऐ हमारे रब हम को आग के अज़ाब से महफूज़ रख।

मुजाहिद ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की कि उन्होंने फ़रमाया जब से अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान पैदा फ़रमाए हैं रुकने यमानी के पास एक फ़रिश्ता आमीन कहने के लिए खड़ा है लिहाज़ा तुम यह कहो: रब्बना आतेना फ़िदुनिया हसनतंव व फ़िल आख़िरति हसनतंव व केना अज़ाबन्नार। हम्माद बिन साबित ने बयान किया कि लोगों ने हज़रत अनस बिन मालिक से अर्ज किया कि हमारे लिए दुआए मग़फ़िरत फ़रमाए आपने इस तरह दुआ फ़रमाई: अल्लाहुम्मा रब्बना आतेना फ़िदुनिया हसनतंव व फ़िल आख़िरति हसनतंव व केना अज़ाबन्नार। लोगों ने अर्ज किया कुछ मज़ीद दुआ फ़रमाईए आपने फिर वही दुआ दोहरा दी, लोगों ने फिर अर्ज किया कि मज़ीद दुआ फ़रमाईए तो आपने फ़रमाया तुम और क्या चाहते हो मैंने तुम्हारे लिए अल्लाह से दुनिया व आख़िरत की भलाई मांग ली। हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकसर इनही अलफ़ाज़ से दुआ फ़रमाया करते थे। अल्लाह तआला का खुद इरशाद है कि जो शख्स यह दुआ करेगा अल्लाह तआला अपने फज़ल व रहमत का कुछ हिस्सा उसको अता फ़रमाएगा। चुनांचे इरशाद फ़रमाया है फ़मिनन्नासि मैय्यकूलो रब्बना आतिना फ़िदुनिया। बाज़ लोग कहते हैं परवरदिगार हमको दुनिया ही इनायत कर यानी दुनियावी माल व मताअ इनायत कर, ऊंट, बकरी, घोड़े, गाय, गुलाम व बान्दी, सोना चांदी अता फ़रमा। दुनिया ही उसकी नीयत में होती है दुनिया ही की नीयत से वह खर्च करता है दुनिया ही के लिए नेक काम करता है दुनिया ही के लिए कोशिश करता है और थकता है और दुनिया ही उसका मुत्तहाए मकसूद होती है (तो ऐसे लोगों के लिए) इसके बाद अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया आख़िरत में ऐसे का कुछ हिस्सा नहीं है और कुछ लोग (यानी मोमिन) कहते हैं कि ऐ परवरदिगार हम को दुनिया में भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भी, हमको दोज़ख के अज़ाब से महफूज़ रख।

दुनिया और आख़िरत की भलाईयां क्या हैं, इसके मानी के तअय्युन में मुख़तलिफ़ अक़वाल हैं हज़रत अली फ़रमाते हैं दुनिया में हसना (नेकी) से मुराद नेक बीबी (बिबी) और आख़िरत में हसना के मानी हुरे ऐन हैं वकेना अज़ाबन्नार से मुराद बुरी बिबी है।



हजरत हसन बसरी ने फरमाया दुनिया में हसना से मुराद इल्म व इबादत और आखिरत में हसना से मुराद जन्नत है, सिद्दी और इब्ने हब्बान ने फरमाया दुनिया में हसना से मुराद रिज्क हलाल व वसीअ और अमले सालेह हैं और आखिरत में हसना से मुराद मगफिरत और अज्र है और अतबा ने फरमाया की दुनिया में भलाई (हसना) से मुराद इल्म और इल्म के मुताबिक अमल है और आखिरत की भलाई हिस्साब में आसान और जन्नत में दाखिला है।

बाज उलमा ने फरमाया है दुनिया में हसना से मुराद तौफीक (अमले खैर) इस्मत है और आखिरत में हसना से मुराद नजात व जन्नत है। बाज का कहना है कि दुनिया में हसना से मुराद नेक औलाद और आखिरत में हसना से मुराद अंबिया अलैहिमुस्सलाम की रिफाकत है। बाज कहते हैं कि दुनिया में हसना से मुराद इखलास और आखिरत में नजात है एक कौल यह भी है कि दुनिया की भलाई ईमान पर काइम रहना है और आखिरत का भलाई आजाब से नजात और रज़ाए इलाही का हुसूल है। एक कौल यह भी है कि दुनिया की भलाई से मुराद ताअत की लज्जत है और आखिरत की भलाई से मुराद दीदार इलाही की लज्जत है।

कतादह ने कहा है कि दुनिया की भलाई से मुराद भी आफियत है और आखिरत की भलाई से भी मुराद आफियत है और इस तावील को इस हदीस से तकवियत पहुंचती है जो साबित बनानी ने हजरत अनस बिन मालिक से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शख्स की अयादत की वह शख्स पर नोचे हुए चूजा की तरह लागर हो गया था हजूर ने उससे दरयाफ्त फरमाया क्या तुम अल्लाह से कुछ दुआ किया करते हो? और कुछ मांगा करते थे? उस शख्स ने अर्ज किया जी हां, मैं कहता था कि इलाही जो अजाब तू आखिरत में मुझे देना चाहता है वह इस दुनिया ही में दे दे। हजूर ने फरमाया सुब्हानल्लाह लेकिन उस वक्त तुम में इसकी ताब व तवां नहीं है तुमने इस तरह दुआ क्यों नहीं मांगी अल्लाहुम्मा रब्बना आतेना फिदुनिया हसनतंव व फिल आखिरति हसनतंव व केना अजाबन्नार। इसके बाद उस शख्स ने यही दुआ मांगना शुरू की तो अल्लाह तआला ने उसको शिफा दे दी।

सहल बिन अब्दुल्लाह ने कहा कि दुनिया की भलाई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत और आखिरत की भलाई जन्नत है। हजरत मुसय्यब ने मजकूरा बाला आयत के सिलसिला में औफ का कौल नक्ल किया है उन्होंने इस आयते करीमा की तफसीर में फरमाया कि अल्लाह तआला ने जिस को इस्लाम, कुरआन, अहल व अयाल और माल व मताअ इनायत फरमाया। बिला शुबहा उसको दुनिया और आखिरत में हसना (भलाई) अता की गई।

अब्दुल आला बिन वहब ने इस आयत के सिलसिला में हजरत सुफयान सौरी का कौल नक्ल किया है कि उन्होंने फरमाया दुनिया में हसना से मुराद पाक व हलाल रिज्क और आखिरत में हसना से मुराद जन्नत है।

## यौमुल अज़हा और यौमे नहर के फज़ाएल

कौसर के मानी:

अल्लाह तआला का इरशाद है: बेशक हम ने आप को कौसर अता फरमाया तो आप अपने



रब के लिए नमाज पढ़िये और कुरबानी दीजिये बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वही हर खैर से महरूम है। हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि कौसर से मुराद खैरे कसीर है जो कुरआन भी है, नबुव्वत भी है और जन्नत वाली वह नहर भी जो वस्ते जन्नत से रवां हैं जिस का अनदुरुनी हिस्सा (अन्दर की सतह) खोखले मोती (से बना) है और उसके दोनों किनारों पर सब्ज याकूत के कुब्बे हैं, जिस का पानी शहद से ज़्यादा शीरीं, मक्खन से ज़्यादा नर्म और जिस की कीचड़ ख़ालिस मुश्क से ज़्यादा खुशबूदार है, उसकी मिट्टी सफ़ेद काफ़ूर और उसकी कंकरीयां, मोती और याकूत हैं। तीर की तरह उसके पानी की रवानी हैं अल्लाह तआला ने यह नहर अपने पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाई है।

मकातिल कहते हैं कि कौसर उस नहर का नाम है जो वस्ते जन्नत में रवां हैं चूँकी यह नहर अपने औसाफ़ और ख़ूबियों में जन्नत की तमाम नहरों में अफ़ज़ल है इस लिए इसका नाम कौसर है। यह नहर उजाज यानी लहरों वाली है (इसमें लहरें उठती रहती हैं) तीर के मानिन्द रवां हैं। उसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क की, कंकरीयां याकूत ज़मुरद और मोती की हैं, उस का पानी बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद, मक्खन से ज़्यादा नर्म और शहद से ज़्यादा शीरीं हैं, उस नहर के दोनों किनारों पर खोखले मोती के गुंबद हैं, हर गुंबद की लम्बाई चौड़ाई एक एक फ़रसंग है हर गुंबद के चार हज़ार सुनहरी दरवाज़े हैं और हर गुंबद में एक तरहदार हूर मौजूद है जिस की सत्तर हज़ार खादिमें हैं।

रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैंने शबे मेराज में जिब्रील से दरयाफ़्त किया कि यह खेमे कैसे हैं? उन्होंने बताया की यह जन्नत में आपकी बीवियों के रहने के मकानात हैं। कौसर से अहले जन्नत के लिए वह चार नहरें निकलती हैं, जिन का ज़िक्र अल्लाह तआला ने सूरह मोहम्मद में फ़रमाया है। एक नहर पानी की, एक दुध की, एक शराब (शरबत) की और एक शहद की है।

फ़सल्ले ले रब्बेका वनहर की तफ़सीर में मकातिल कहते हैं कि इसका मतलब यह है कि नमाज़े पंजगाना पढ़ो और कुरबानी के दिन जानवर (ऊँट, बकरी) ज़िबह करो बाज़ ने कहा है कि इससे मुराद ईद की नमाज़ पढ़ना है और मेना में ऊँट की कुरबानी करना है। बाज़ उलमा ने वनहर की तशरीह में कहा है कि अपने हाथों को तकबीर के लिए हन्सली की हड्डी तक उठाओ(नहर तक) और बाज़ ने कहा है कि अपने सीना को किब्ला रुख़ करो।

इन्ना शानेअका हुवल अबतर आस बिन वाएल कहते हैं कि इसकी तशरीह यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनी सहम के दरवाज़े से काबा में दाख़िल हुए, अन्दर फ़ुरैश बैठे हुए थे, हज़ूर उनके सामने से गुज़र गए और आप उनके पास नहीं रुके और बाबे सफ़ा से बाहर तशरीफ़ ले गए उन लोगों ने दाख़िल होते वक़्त तो आप को देखा नहीं जाते वक़्त देख लिया मगर पहचान न सके (पुश्त होने के बाइस) लेकिन उसी वक़्त आस बिन वाएल बिन हश्शाम बिन सईद बिन सअद बाबे सफ़ा से काबा में दाख़िल हो रहा था उसने आप को देख कर पहचान लिया, यह वह ज़माना था कि हुज़ूर वाला के साहबज़ादे अब्दुल्लाह का इन्तक़ाल हो चुका था, अहले अरब का कायदा और मामूल था कि जब किसी शख्स की औलादे नरीना बाकी नहीं रहती थी (जो उसके वारिस बन सके) तो ऐसे शख्स को वह अबतर कहते हैं (यानी नस्ल बुरीदा) घुनांचे आस जब अपनी कौम के लोगों के पास पहुंचा तो उन्होंने कहा कि वह कौन



शख्स था जो तुम्हें रास्ता में मिला था (बदबख्त) आस ने फौरन जवाब दिया अबतर (मुझे अबतर यानी नस्ल बुरीदा मिला था) इस पर यह आयत नाजिल हुई कि "आप से बुग़ज़ रखने वाला और आप का दुश्मन ही अबतर हैं यानी हर ख़ैर से मुन्कतअ और अलग और आप का ज़िक्र मेरे ज़िक्र के साथ हमेशा बाकी रहेगा चुनांचे आप का ज़िक्र तमाम लोगों में बलन्द किया। सुरह अलम नशरह में इरशाद फ़रमाया।

क्या हम ने आप का सीना कुशादा नहीं किया और हम ने उस बोझ को दूर कर दिया जिसने आप की पीठ दोहरी कर दी थी और हम ने आप के ज़िक्र को बुलंदी और रिफ़ात अता फ़रमाई।

तो आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़िक्र हर जगह और हर काम में होता है ईद में, जुमा में, मिमबरों पर, मस्जिदों में, अज़ान में, एकामत में, नमाज़ में हत्ता कि तकरीर और निकाह के खुत्बों में भी किया जाता है। फिरदौसे आला को आप की मंज़िल करार दिया, आप के दुश्मन और बदगो से बद गोई आप को नुक़सान नहीं पहुंचा सकती बल्कि नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में बद गोई के बाइस आस बिन वाएल का ठिकाना जहन्नम करार पाया जहां वह तरह तरह के अज़ाबों रूसवाइयों में मुब्तला रहेगा इस सज़ा का मौजिब मज़कूरा कौल और रसूल का इन्कार था इसी तरह रसूल से मोहब्बत रखने वाले हर मोमिन को जन्नत और दुश्मनी रखने वाले मुनाफ़िक और काफ़िर को दोज़ख का अज़ाब दिया जाएगा।

आयत फ़सल्ले ले रब्बेका वनहर में अव्वलन तो अल्लाह तआला अपने नबीए मोहतरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को और आप की उम्मत को नमाज़ का हुक्म दिया इसके बाद दूसरी चीज़ों को यानी दुआ और कुरबानी का अम्र फ़रमाया।

## ज़िक्रे इलाही

### ज़िक्र व शुक्र

ज़िक्र के सिलसिला में अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ ईमान वालों! तुम कसरत से अल्लाह का ज़िक्र किया करो और तुम मेरी याद करो मैं तुम को याद रखूंगा और तुम मेरा शुक्र बजा लाओ नाशुक्री न करो। इस आयत की तशरीह व तफ़सीर में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि इसका मतलब यह है कि मेरी इताअत के साथ मेरा ज़िक्र करो (यानी इबादत के शक़ल में) मैं अपनी मदद से तुम को याद करूंगा। एक आयत में आया है: जो लोग हमारे रास्ता की तलाश करते हैं हम उन्हें अपनी राह दिखाते हैं। हज़रत सईद बिन जबीर कहते हैं की मज़कूरा बाला आयत का माना है मेरी इताअत की सूरत में मेरी याद करो मैं मग़फ़िरत में तुम को फ़रामोश नहीं करूंगा। अल्लाह तआला का इरशाद है: अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो ताकि तुम सज़ावारे रहमत बनो।

### हज़रत फुज़ैल की तशरीह

हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ ने फ़रमाया कि इस फ़रमाने इलाही का मतलब यह है कि मेरी इताअत के साथ मेरा ज़िक्र करो मैं अपने सवाब से तुम्हें फ़रामोश नहीं करूंगा। अल्लाह तआला का इरशाद है:



जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए हम उनका अज्र जाया नहीं करते, नेक काम करने वालों के लिए अदन की बहिश्त है।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिसने अल्लाह कि इताअत की तो हकीकत में उसने अल्लाह की याद की ख्वाह उसकी नमाजें, उसके रोजे और कुरआन की तिलावत कम हो और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की वह अल्लाह को भूल गया ख्वाह उसकी नमाजें रोजे और कुरआन की तिलावत ज्यादा हो। हज़रत अमिरुल मोमिनीन अबू बक्र सिदीक़ फ़रमाते हैं इबादत के लिए तौहीद काफी है और सवाब के लिए जन्नत काफी है।

## इन्हे कैसान की तशरीह

इन्हे कैसान कहते हैं कि इसके मानी हैं मेरी याद करो यानी शुक्र करो मैं तुम्हें याद रखूंगा यानी ज्यादा अज्र दूंगा। अल्लाह तआला का इरशाद है: अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम को ज्यादा अता करूंगा। बाज़ उलमा ने कहा है कि (इसके मानी हैं) मेरी याद करो यानी मुझे वाहिद जानो और मुझ पर ईमान लाओ मैं तुम्हारी याद करूंगा यानी बहिश्त में मरातिब अता करूंगा। अल्लाह तआला का इरशाद है: उन लोगों को बशारत है जो ईमान लाए और नेक काम किए उनके लिए जन्तें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं)

बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि इसके मानी हैं: तुम ज़मीन के ऊपर होने की हालत में मेरा ज़िक्र करो जब तुम ज़मीन के अन्दर होगे और ऊपर वाले तुमको भूल जायेंगे तो उस वक़्त मैं तुम को याद रखूंगा जैसा की असमई ने कहा है कि मैंने अरफ़ा के दिन एक आराबी को मैदाने अरफ़ात में देखा कि वह खड़ा कह रहा था, इलाही! तरह तरह की ज़बानों में तेरी तरफ़ आवाजें बलन्द हो रही हैं (लोग अपनी अपनी ज़बान में तुझे पुकार रहे हैं) लोग तुझसे हाजतें मांग रहे हैं, मेरी मुराद सिर्फ़ यह है कि तू मुझे मुसीबत के वक़्त में याद रखना जबकि मेरे घर के लोग मुझे फ़रामोश कर देंगे।

इस आयत के मानी और तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि तुम मुझे दुनिया में याद रखो मैं आख़िरत में तुम्हें याद रखूंगा। एक कौल इस सिलसिला में यह भी है कि इसके मानी हैं: तुम बन्दगी के साथ मुझे याद करो मैं हर दुख से बचाने में तुम्हें नहीं भूलूंगा। इस कौल की ताईद उस इरशादे रब्बानी से होती है जिस मर्द या औरत ने ईमानदार रहकर नेक आमाल किये तो हम ज़रूर (आख़िरत में) पाकीज़ा ज़िन्दगी देंगे। यह कौल भी (उसकी तफ़सीर व तशरीह में) आया है कि तुम मुझे ख़ला व मला (जलवत व ख़लवत) में याद करो मैं तुम्हें ख़ला व मला में याद करूंगा। इस सिलसिला में एक रिवायत है कि अल्लाह तआला ने बाज़ किताबों (सहीफ़ों) में फ़रमाया है कि मैं अपने बन्दा के गुमान के करीब हूँ मेरे बारे में वह जैसा चाहे गुमान करे जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ जो मुझे अपने दिल में याद करता है मैं उसे बातिन में याद करता हूँ और जो मुझे ज़ाहिर में याद करता है मैं उसे ज़ाहिर में याद करता हूँ जो मेरी तरफ़ एक बालिश्त बढ़ता है मैं उसकी तरफ़ एक हाथ बढ़ता हूँ जो मेरी तरफ़ चल कर आते हैं मैं उनकी तरफ़ दौड़ कर आता हूँ जो मेरे पास इतने गुनाह लेकर आते हैं कि सारी ज़मीन उनसे भर जाए तो मैं उतनी ही मग़फ़िरत उसको अता फ़रमाता हूँ मगर शर्त यह है कि उसने मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराया हो (शिरक़ का गुनाह उससे सरज़द न हुआ हो)



बाज़ उलमा ने कहा है की इसका मतलब यह है कि तुम मुझे ऐश व इशरत में याद करोगे तो मैं तुमको शिद्दत और मुसीबत में याद करूंगा जैसा की हक तआला का इरशाद है:

अगर वह (यूनुस अलैहिस्सलाम) अल्लाह की तस्बीह करने वालों में से न होते तो कयामत के दिन तक मछली के पेट में रहते।

## हज़रत सलमान फ़ारसी का इरशादे गरामी

हज़रत सलमान फ़ारसी का इरशाद है कि बन्दा जब खुशी में अल्लाह को पुकारता है (अल्लाह को ऐश में याद रखता है) फिर उसपर मुसीबत पड़ती है तो उस वक़्त फ़रिश्ते बारगाहे इलाही में अर्ज़ करते हैं परवरदिगार! तेरे बन्दे पर मुसीबत आ पड़ी है, (उसको दूर फ़रमा दे) इस तरह जब फ़रिश्ते उसकी सिफ़ारिश करते हैं तो अल्लाह तबारक व तआला उनकी सिफ़ारिश कबूल फ़रमा लेता है और बन्दा अगर ऐश व इशरत में अल्लाह को नहीं पुकारता (उसकी याद नहीं करता) और दुख के वक़्त पुकारता है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि अब अल्लाह को पुकारता है और फ़रिश्ते उसकी शफ़ाअत व सिफ़ारिश नहीं करते, इसकी तौज़ीह फिरऔन के किस्सा से होती है कि जब डूबते वक़्त फिरऔन ईमान लाया तो अल्लाह का इरशाद हुआ: अब तौबा करता है हालांकि पहले नाफ़रमानी करता रहा।) एक कौल यह भी है कि मुझे तुम तसलीम व सुपुर्दगी के साथ याद करो तो बेहतरीन तरीका पर मैं तुम्हारा ज़िक्र करूंगा। इसकी ताईद इस इरशादे रब्बानी से होती है: जो अल्लाह पर तवक्कुल और भरोसा करता है अल्लाह उसके लिए काफी है। इसी सिलसिला में एक कौल यह भी है कि तुम शौक व मुहब्बत से मेरी याद करो मैं विस्ल व कुरबत के साथ तुम्हारा ज़िक्र करूंगा। बाज़ ने कहा है कि हम्द व सना के साथ मेरा ज़िक्र करो मैं आत व जज़ा के साथ तुम्हारा ज़िक्र करूंगा। एक कौल है कि मेरा ज़िक्र तौबा के साथ करो मैं तुम्हारा ज़िक्र मासियत की बख़्शिश (गुनाहों की माफी) के साथ करूंगा, तुम मुझ को दुआ में याद करो मैं तुमको अता से याद करूंगा, तुम सवाल के साथ मुझे याद करो मैं बख़्शिश व नेवाल के साथ तुम्हें याद करूंगा, तुम बग़ैर ग़फलत के मुझे याद करोगे मैं बग़ैर ताख़ीर के तुम्हें याद करूंगा, तुम गुनाहों पर पशेमानी के साथ मुझे याद करो मैं लुत्फ़ व करम के साथ तुम को याद करूंगा, तुम उज़्रे गुनाह के साथ मेरी याद करो, मैं मग़फ़िरत से तुम को फ़रामोश नहीं करूंगा, तुम खुलूसे इरादा के साथ मेरी याद करो मैं तुम्हें फ़ायदा पहुंचाने से याद करूंगा (नफ़ा पहुंचाऊंगा) तुम निगाहों से बच कर मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा ज़िक्र मुसीबतें दूर करके करूंगा, तुम बग़ैर फ़रामोशी के मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा ज़िक्र अमन दे कर करूंगा, तुम इहितयाज से मेरी याद करो, मैं अपने इक्तिदार से तुम्हारी याद करूंगा, तुम मअज़रत व इस्तिग़फ़ार के साथ मेरी याद करो मैं अपनी रहमत और मग़फ़िरत के साथ तुम्हारी याद करूंगा, तुम ईमान के साथ मेरी याद करो मैं जन्नत देकर तुमको याद करूंगा, तुम इस्लाम के साथ मुझे याद करो मैं इज़्ज़त बख़्श कर तुम्हें याद करूंगा, तुम दिल से मेरी याद करो मैं हिजाब उठा कर तुम को याद करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र आजज़ी के साथ करो, मैं तुम्हारा ज़िक्र फ़ज़ल फ़रमाकर करूंगा, तुम एतराफ़े गुनाह के साथ मेरा ज़िक्र करो, मैं तुम्हारा ज़िक्र तुम्हारे गुनाहों को मिटा कर करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र सफ़ाए बातिन के साथ करो मैं तुम्हारा ज़िक्र ख़ालिस नेकी के साथ करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र सिदक़ के साथ करो मैं तुम्हारा ज़िक्र मेहरबानी व उलफ़त के साथ करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र



ताजीम से करो मैं तुम्हारा जिक्र तकरीम से करूंगा, तुम मेरा जिक्र अल्लाहु अकबर (मेरी अजमत व जलाल) के साथ करो मैं तुम्हारा जिक्र दोजख से नजात के साथ करूंगा, तुम मेरा जिक्र जुल्म को तर्क करके करो मैं तुम्हारा जिक्र वफा की निगहदाश्त के साथ करूंगा, तुम मेरा जिक्र तर्क खता से करो मैं तुम्हारा जिक्र तरह तरह के लुत्फ व अता से करूंगा, तुम मेरा जिक्र इबादत में मशक्कत उठा कर करो मैं तुम पर नेमत तमाम करके तुम्हारा जिक्र करूंगा, तुम मेरा जिक्र जैसे तुम हो उस तरह करो मैं तुम्हारा जिक्र जैसा कि मैं हूँ उस तरह करूंगा, बेशक व शुबहा अल्लाह तआला का जिक्र बहुत बड़ा है।

हजरत रबीअ फरमाते हैं कि इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने उस बन्दे को याद फरमाया है कि जो बन्दा शुक्र बजा लाता है और उस पर मजीद इकराम फरमाता है और जो नाशुकी करता है उसपर अजाब करता है। सिद्दी ने इस आयत के सिलसिला में कहा है जो बन्दा अल्लाह का जिक्र करता है अल्लाह उसका जिक्र फरमाता है जो मोमिन अल्लाह का जिक्र करता है अल्लाह तआला अपनी रहमत के साथ उसका जिक्र करता है, काफिर अल्लाह को याद नहीं करता अल्लाह उसको अजाब के साथ याद करता है।

हजरत सुफियान बिन ओऐनिया ने कहा है कि हम तक यह हदीस पहुंची है कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि मैंने अपने बन्दों को वह कुछ दे दिया कि अगर मैं जिब्रील और मिकाईल को दे देता तो मैंने उनको बहुत कुछ दिया होता मैंने अपने बन्दे से कह दिया फजकुरुनी अजकुरुकुम और मैंने मुसा (अलैहिस्सलाम) से कह दिया था कि जालिमों से कह दो कि मेरी याद न करें क्योंकि जो मुझे याद करता है मैं उसे याद करता हूँ और मेरा जालिमों को याद करना इस तरह है कि मैं उन पर लानत करता हूँ।

हजरत अबू उसमान हिन्दी ने कहा है कि मुझे मालूम है कि मेरा रब मुझे किस वक्त याद करता है लोगों ने कहा कि यह किस तरह? आपने कहा अल्लाह ने फरमाया है फजकुरुनी अजकुरुकुम उस जिस वक्त मैं अल्लाह की याद करता हूँ उसी वक्त वह मेरी याद करता है कहते हैं कि अल्लाह तआला ने हजरत दाउद (अलैहिस्सलाम) पर वही नाज़िल फरमाई कि दाऊद तुम मुझ से ही खुशी हासिल करो और मेरी ही याद से राहत पाओ। हजरत सुफियान सूरी ने फरमाया हर चीज़ के लिए एक अजाब (मौजूद) है, आरिफ का अजाब है अल्लाह तआला के जिक्र से दूर हो जाना। यह भी कहा गया है कि जब दिल में यादे इलाही मुतमक्किन हो जाती है और शैतान उसके करीब आता है तो बेहोश हो जाता है जिस तरह इंसान के करीब जिन्न आता है तो इंसान बेहोश हो जाता है, है तो बेहोश हो जाता है जिस तरह इंसान के करीब जिन्न आता है तो इंसान बेहोश हो जाता है, उस वक्त दूसरे शैतान पूछते हैं इसको क्या हो गया? जवाब मिलता है इसको इंसान का साया हो गया है यानी इंसान के छूने से यह बेहोश हो गया है।

हजरत सुहैल बिन अब्दुल्लाह फरमाते हैं कि मैं नहीं जानता कि कोई मासियत अल्लाह तआला को भुला देने से भी जाएद कबीह है। बाज़ उलमा ने कहा है कि जिक्रे खफ़ी को फरिश्ते उठा कर नहीं ले जाते इसलिए कि जिक्रे खफ़ी बन्दे और अल्लाह के दर्मियान मख़फ़ी रहता है उसकी ख़बर फरिश्तों को नहीं होती एक शख्स ने कहा कि मुझ से एक ऐसे जाकिर की तारीफ़ की गई जो एक जंगल में रहता था मैं उसके पास गया हम बैठे ही हुए थे कि एक बड़ा दरिन्दा आया और जाकिर के पन्जा मारा और उसका गोश्त नोच कर ले गया जाकिर इस सदमा से बेहोश हो गया, मुझ पर भी (हैबत से) बेहोशी तारी हो गई, जब मुझे होश आया तो मैंने दरयाफ़्त



किया कि यह क्या किस्सा था, जाकिर ने जवाब दिया अल्लाह ने मुझ पर उस दरिन्दे को मुसल्लत फरमा दिया है जब अल्लाह की याद में मुझ से सुस्ती होती है तो यह आकर मुझे इसी तरह काटता है जैसा तुम ने अभी देखा।

## दुआ

### दुआ का हुक्म

अल्लाह तआला का इरशाद है तुम्हारे रब ने हुक्म दिया है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ को कबूल करूंगा, दूसरी जगह इरशाद होता है: जब तू फारिग हो तो खड़ा हो जा यानी नमाज से फरागत हो तो दुआ के लिए खड़े हो जाओ, एक और जगह इरशाद फरमाया: मेरे बन्दे जब मेरे बारे में दरयाफ्त करें (कि हमारा रब कहां हैं) तो यकीनन मैं करीब हूं, दुआ करने वाला जब मुझ से दुआ करता है तो मैं उसकी दुआ कबूल करता हूं, मुफस्सरीने कराम का इस आयत करीमा के नुजूल के बारे में इख्तिलाफ है चुनांचे कलबी ने बरिवायत अबू सालेह हजरत इब्ने अब्बास का कौल नकल किया है, उन्होंने फरमाया कि मदीना मुनव्वरा के एक यहूदी ने रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि जब आप कहते हैं कि एक आसमान से दूसरे आसमान तक पांच सौ बरस का रास्ता है और हर आसमान का हजम (मोटाई) भी उतना ही है तो फिर हमारा रब हमारी दुआ कैसे सुनता है तो उस वक्त यह आयत करीमा नाजिल हुई।

हसन बसरी फरमाते हैं कि सहाबा कराम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ्त किया था कि हमारा रब किस जगह है? इस सवाल पर यह आयत नाजिल हुई। कतादा ने कहा कि जब यह आयत उदऊनी अस्तजिब लकुम नाजिल हुई तो एक शख्स ने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह! हम अपने रब को किस तरह पुकारें और किस जगह से पूकारें? तो अल्लाह तआला ने इस सवाल पर यह आयत नाजिल फरमाई वइजा असालोका इबादी अनय्या फानी करीबें। जहाक ने बयान किया है कि बाज सहाबा कराम ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह क्या हमारा रब करीब है कि हम चुपके चुपके उससे कलाम करें या जोर से उसको पुकारें तो उस वक्त अल्लाह तआला ने (इस सवाल के जवाब में) यह आयत नाजिल फरमाई।

### मुफस्सरीन का कौल

अहले मानी व मुहक्ककीन ने कहा है कि इस आयत में कुल लहुम या फआ लेमहुम (जुजअन शर्ती) महजूफ है तरतीबे कलाम इस तरह थी: जब मेरे बन्दे आप से मेरे मुताल्लिक दरयाफ्त करें तो उनसे कह दीजिए या उनको मुत्तला कर दीजिए कि मैं करीब हूं। अरबाबे मारफत का कौल है कि बन्दा और खुदा के दर्मियान से वास्ता को उठा देना कुदरत के इजहार के लिए है बमानी इस्तिजाबत व अजाबत है यानी मुझसे इस्तिजाबत करे, लुगत में अजाबत के मानी हैं ताअत व बन्दगी और सवाल पूरा करना। अबु रजा खुरसानी ने कहा है कि इसके मानी हैं मुझसे दुआ करें अजाबत बमानी अता है और इस मानी की ताईद अरबी के उस मकूला से



होती है: आसमान से पानी मांगा गया तो उसने बारिश दी और जमीन से सब्जा तलब किया गया तो उसने सब्जा दिया पस अल्लाह तआला की तरफ से अजाबत बमानी अता है और बन्दा की तरफ से अजाबत बमानी ताअत व बन्दगी है ताकि वह हिदायत पाये।

## दुआ की अदमे कबूलियत

अब अगर सवाल किया जाये कि जब आयत ओजीबो दअवतिदाए और आयत उदऊनी असतजिब लकुम में दुआ की कबूलियत और उसका वादा मौजूद है तो फिर क्या वजह है कि बहुत से लोगों की दुआयें मकबूल नहीं होतीं, उनके जवाब में दोनों आयतों की तफसीर व तौजीह मुख्तलिफ मानी के साथ की गई है, बाज ने कहा है कि दुआ से मुराद ताअत और अजाबत से मुराद सवाब है, गोया अल्लाह तआला फरमाता है कि जब बन्दा मेरी ताअत करेगा तो मैं उसको दूंगा बाज उलमा और मुफस्सरीन ने कहा है कि दोनों आयतों के अलफाज अगर्चे आम हैं लेकिन उनके मानी खास हैं असल कलाम यूं था: मैं दुआ करने वाले की दुआ कबूल करता हूं अव्वलन अगर मेरी मशीयत हो, दूसरी सूरत यह कि जब वह दुआ तकदीर (बन्दा) के मवाफिक हो, तीसरे जब वह नामुमकिन का सवाल न करे, चौथे जब दुआ का कबूल करना उसके हक में बेहतर हो, यह तमाम शराइत महजूफ हैं और उनकी ताईद इस कौल से होती है जो अली बिन अबी मुतवक्किल ने बरिवायत हजरत अबू सईद से नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब मुसलमान अल्लाह तआला से दुआ करता है और उसमें रिश्तादारी से कतअ ताल्लुक या फिर कोई गुनाह का सवाल नहीं होता तो अल्लाह तआला उसको जरूर तीन चीजों में एक चीज अता फरमा देता है या तो उसका महुआ फौरन दुनिया में पूरा कर देता है या आखिरत में जमा कर देता है या किसी आने वाली बुराई से उसको बचा लेता है यह सुनकर सहाबा ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह ऐसी सूरत में तो हम और ज्यादा दुआ किया करेंगे, हुजूर ने फरमाया अल्लाहो अकबर! उसकी अता बहुत ज्यादा है।

## एक इल्मी नुकता

बाज उलमा ने कहा है कि आयत अलफाज के एतबार से जिस तरह आम है उसी तरह मानी के एतबार से भी आम है। आयत में सिर्फ दुआ की अजाबत मजकूर है, मुराद का देना और हाजत का पूरा करना मजकूर नहीं जिस तरह एक आका अपने गुलाम की और एक बाप अपने बेटे की किसी बात पर हां कह देता है लेकिन उसकी दरखास्त पूरी नहीं की जाती पस दुआ की अजाबत जरूर होती है असल यह है कि उजीब और असतजियब खबरिया जुमले हैं और खबर कभी मनसूख नहीं होती वरना खबर देने वाले का काजिब होना लाजिम आयेगा और अल्लाह तआला की जात किज्ब से मुनज्जा और पाक है अल्लाह तआला की दी हुई खबर कभी खिलाफे वाकिया नहीं हो सकती।

इस तौजीह व तफसीर की ताईद उस हदीस शरीफ से होती है जिस को नाफेअ ने बरिवायत हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसके लिए दुआ का एक दरवाजा खोल दिया जाता है उसके लिए अजाबत के बहुत से दरवाजे खोल दिये जाते हैं हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम पर अल्लाह ने वही



नाज़िल फ़रमाई थी कि ज़ालिमों से कह दो कि मुझ से दुआ न करें क्योंकि अजाबत को मैंने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है और मैं ज़ालिमों की दुआओं की अजाबत इस तरह करता हूँ कि उनपर लानत भेजता हूँ इसकी यह तावील भी की गई कि मोमिन की दुआ अल्लाह उसी वक़्त क़बूल कर लेता है मगर अताए मुराद में ताख़ीर इसलिए फ़रमाता है कि बन्दा उसको पुकारता रहे और अल्लाह तआला उसकी आवाज़ सुनता रहे, इस मज़मून की मोवय्यद वह हदीस है जो मोहम्मद बिन मुनकदर ने बरिवायत हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दा अल्लाह को पुकारता है और अल्लाह उसको पसन्द फ़रमाता है तो कहता है जिब्रील मेरे इस बन्दे की हाज़त पूरी कर दो मगर देर से पूरी करना मैं इसकी पैहम आवाज़ सुनना पसन्द करता हूँ और अगर बन्दा अल्लाह से दुआ मांगता है और अल्लाह उसको पसन्द नहीं फ़रमाता तो फ़रमाता है जिब्रील मेरे इस बन्दे की हाज़त उसके इख़्लास की वजह से पूरी कर दो और जल्द पूरी कर दो मुझे इसकी आवाज़ पसन्द नहीं। कहते हैं कि यहया बिन सईद ने कहा कि मैं रब्बुल इज़्ज़त के दीदार से ख़्वाब में मुशरफ़ हुआ तो मैंने अर्ज़ किया इलाही मैंने तुझ से कितनी दुआ की लेकिन तू क़बूल नहीं फ़रमाता फ़रमाया कि यहया हमको तेरी आवाज़ पसन्द है।

बाज़ लोगों ने कहा है कि दुआ के कुछ आदाब और शराइत हैं उन्हीं पर कामियाबी और अजाबत का मदार है जो शख्स दुआ में उनको मलहूज़ रखता है और उन शराइत की तकमील करता है वह मक़बूलदुआ होता है और जो उनको तर्क करता है या उनमें कुछ नक्स पैदा कर देता है वह दुआ के रास्ता से हट जाता है। मनकूल है कि हज़रत इब्राहीम बिन अदहम से किसी ने सवाल किया कि क्या वजह है कि हम अल्लाह से दुआ करते हैं मगर वह उनको क़बूल नहीं फ़रमाता उन्होंने जवाब दिया कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहचानते हो मगर आप के तरीक़े पर नहीं चलते हो कुरआन को जानते हो मगर उस पर अमल नहीं करते, अल्लाह की दी हुई नेमतें खाते हो मगर उसका शुक्र अदा नहीं करते, जन्नत से वाकिफ़ हो मगर उसको तलब नहीं करते, दोज़ख़ का इकरार करते हो मगर उससे ख़ौफ़ नहीं खाते, शैतान को पहचानते हो मगर उससे मुक़ाबला नहीं करते बल्कि उसके बर अक्स उसकी मुवाफ़क़त करते हो, मौत से आगाह हो मगर उसकी तैयारी नहीं करते, मुर्दों को दफ़न करते हो मगर उनसे इबरत हासिल नहीं करते, तुमने अपने ऐबों को छोड़ दिया है और लोगों के ऐबों (के बयान करने) में लगे हो फिर तुम्हारी दुआयें किस तरह मक़बूल हों।

## कुरबानी

### नहर

कुरबानी की असल वह हुक्म है जो अल्लाह तआला ने अपने ख़लील इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दिया था जिस की तफ़सील यह है कि नमरुद ज़ालिम की आग से जब अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह को बचा लिया और उसके कुर्ब व अज़ाब से आप को महफूज़ रखा तो उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा मैं हिज़रत करके अपने रब की तरफ़



मुकद्दस सर जमीन में जाऊंगा, वह मुझे अपने दीन की हिदायत फरमायेगा, दुनिया में दीने इलाही के लिए सबसे पहली हिजरत करने वाले हजरत इब्राहीम ही थे चुनांचे आप अपने मानू जाद भाई (हजरत) लूत और लूत की बहन यानी अपनी बीवी सारह को लेकर वतन से चल दिये अरज मुकद्दस में पहुंचे तो अल्लाह तआला से दुआ की और अर्ज किया ऐ परवरदिगार मुझे एक सालेह बेटा अता फरमा, अल्लाह तआला ने उनकी दुआ कबूल फरमाई और एक जी कहम बेटे की बशारत दी। यह लड़का सारह का फरजन्द इसहाक था। इस सिलसिला में आगे चलकर हजरत मुरशदी व मौलाई जनाब मुसन्निफ ने खुद बताया है कि जबिहुल्लाह इसहाक नहीं थे बल्कि इस्माईल थे, तमाम मुफस्सरीन का इस पर इत्तेफाक है कि यह फरजन्द इसमाईल थे इस्हाक नहीं थे।

जब हजरत इसहाक आप से आप पहाड़ पर चढ़ने के काबिल हो गये तो हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक दिन उनसे कहा कि ऐ बेटे! मैंने ख्वाब में देखा है कि मैं तुमको जिबह कर रहा हूं यानी मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हें अल्लाह की राह में जिबह कर दूं यह हुक्म उस नज़ के सिलसिला में था जो आपने मानी थी, ऐ फरजन्दे अजीज! बताओ तुम्हारी इस सिलसिला में क्या राय है? फरजन्द ने अर्ज किया कि ऐ अब्बा जान! आप को रब ने जो हुक्म दिया है उसको बजा लाइये और अपने रब की इताअत फरमाइये! गोया इसहाक समझ गये कि यह अल्लाह का हुक्म है इसी लिए उन्होंने यूं कहा कि जो हुक्म किया गया है वैसा ही कीजिए, यह नहीं कहा कि जो ख्वाब देखा है उसके मुताबिक कीजिए।

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मुतवातिर तीन रात यही ख्वाब देखा था और जिबह (फरजन्द) से पहले आप ने रोज़ा भी रखा था और नमाज़ भी पढ़ी थी। हजरत इसहाक ने जब यह कहा कि आप को जो हुक्म दिया गया है उसको बजा लाइये तो उसके साथ यह भी कहा कि आप इन्शाअल्लाह जिबह होने पर मुझे साबिर पायेंगे जब उन दोनों हस्तियों ने अल्लाह के हुक्म को तसलीम कर लिया यानी हुक्म इलाही की इताअत पर आमादा हो गये तो पेशानी के बल पर हजरत इब्राहीम ने हजरत इसहाक को पछाड़ दिया और पेशानी के बाल पकड़ कर उनको जिबह करने लगे और अल्लाह तआला पर उन दोनों की सच्चाई अमलन जाहिर हो गई तो अल्लाह तआला ने पुकार कर फरमाया ऐ इब्राहीम तुमने बेटे के जिबह करने के ख्वाब का सच कर दिखाया अब तुम अपने बेटे को जिबह करने के बजाए मेंढा जिबह करो। अल्लाह तआला ने फरमाया: और हमने उसके बदले में इब्राहीम को कुरबानी का एक अजीम (बड़े रूतबा वाला) जानवर दे दिया उस मेंढे का नाम वजीर था यह जन्नत में चालीस साल तक चरने वाले मेंढों में से था बाज़ लोगों का कौल है कि यह वही मेंढा था जो हजरत आदम के बेटे हाबील शहीद ने कुरबानी किया था यह मेंढा जन्नत में चरा करता था अल्लाह तआला का इरशाद है कि हम नेकोकारों को ऐसी ही जज़ा देते हैं। हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म (जिबहे फरजन्द) की इताअत की और नेक अमल बजा लाये उसके बदले में अल्लाह ने उनको बेहतरीन जज़ा दी। बाज़ उलमा व मोहक्ककीन का यह कौल भी है कि हजरत इब्राहीम तब अल्लाह तआला ने जिस फरजन्द के जिबह करने का हुक्म दिया वह हजरत इसहाक नहीं थे बल्कि हजरत इस्माईल थे यही कौल कवी है। इसके बाद इरशाद फरमाया: यह बिला शुबहा यह खुली हुई रहमत थी जो अल्लाह ने हजरत इब्राहीम के फरजन्द से दरगुज़र फरमाई और उसके



फिदया में दुम्बा दे दिया। बाज़ असहाब ने कहा है कि खलीलुल्लाह ने जब अपने फरज़न्द के हल्क पर छुरी फेरनी चाही तो निदा आई इब्राहीम लड़के को छोड़ दो क्योंकि हमारी मुराद फरज़न्द को कुरबान करना न थी बल्कि मुराद यह थी कि फरज़न्द की मोहब्बत से दिल खाली हो जाये। बाज़ किताबों में आया है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब बेटे को ज़िबह करना चाहा तो दिल में कहा परवरदिगार अगर यह ज़बीहा दूसरे के हाथ से हो जाता तो बेहतर था अल्लाह तआला ने फरमाया यह काम तुम्हारे ही हाथों होना है उस वक़्त फरिश्तों ने अर्ज़ किया कि इलाहल आलमीन! इस इरशाद का मौजिब और सबब क्या है? हक़ तआला ने फरमाया ताकि मेरे सिवा किसी और की मोहब्बत खलील (इब्राहीम) के दिल में न रहे क्योंकि मैं मोहब्बत में किसी का शरीक होना पसन्द नहीं करता। हज़रत इब्राहीम ने बेटे से मोहब्बत की तो इस इम्तेहान में मुब्तला हुए, हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने हज़रत यूसुफ़ से मोहब्बत की तो यूसुफ़ चालीस बरस उनसे गायब रहे और हज़रत याकूब को यूसुफ़ की जुदाई की तकलीफ़ बरदाश्त करना पड़ी। हमारे पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन से मोहब्बत फरमाई जब यह मोहब्बत दिल में जागुर्ज़ी हुई तो ज़िब्रील ने आकर अर्ज़ किया कि इनमें से एक को ज़हर दिया जायेगा और दूसरे को शहीद किया जायेगा मतलब यह है कि महबूब के साथ कोई दूसरा मोहब्बत में शरीक न हो।

## ईदगाह की आमद व रफ़्त

### ईदगाह का रास्ता

मुस्तहब है कि जिस रास्ते से ईद की नमाज़ को जाये तो उसी रास्ता से वापस न आये यानी वापसी दूसरे रास्ते से हो। हज़रत इब्ने उमर का कौल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईद के दिन (नमाज़ के लिए) एक रास्ता से तशरीफ़ ले गये और दूसरे रास्ता से वापस तशरीफ़ लाये, लोगों ने इसकी मुख़्तलिफ़ तौजीह की है। अकसर उलमा का कौल है कि इस अमल से हुज़ूर का मक़सद मुसलमानों का मुशरिकों के लश्कर से तहफ़फ़ुज़ मक़सूद था। बाज़ हज़रात ने कहा है कि इससे मक़सूद सिर्फ़ वापसी का रास्ता मुख़्तसर करना था (यानी वापसी का छोटा और कम था) यानी नेकियों की कसरत के हुसूल के लिए तो आप ने तवील रास्ता एख़तियार किया और आप छोटे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाये! बाज़ लोगों ने कहा है कि आप एक रास्ता से तशरीफ़ ले गये तो ज़मीन ने जाने की शहादत दी फिर दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाये ताकि वापसी वाले रास्ते की ज़मीन भी शाहिद बन जाये। बाज़ हज़रात ने यह तौजीह की है कि आंज़रत एक रास्ता से किसी एक कबीला की तरफ़ तशरीफ़ ले गये और वापसी पर दूसरे कबीला की तरफ़ हो कर आये ताकि तमाम क़बाएल की इज़्ज़त अफ़जाई हो जाये इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दीदारे मुबारक एक रहमत थी। अल्लाह तआला का इरशाद है हमने आप को सारे ज़हानों के लिए रहमत बना कर भेजा है।

बाज़ मोहक़कीन का कौल है कि चूँकि ज़मीन अंबिया और औलिया के क़दमों से पामाल होने पर फ़ख़्र करती है इस लिए हुज़ूर ने दोनों रास्तों को तय फ़रमाकर एक रास्ता को दूसरे रास्ता पर फ़ख़्र करने का मौका नहीं छोड़ा (दोनों की फ़ज़ीलत व क़रामत एकसाँ अता फ़रमा



दी) यह भी कहा गया है कि हुजूर ईदगाह को एक रास्ते से गये इससे मकसूद था अल्लाह की तरफ जाना फिर जब अपने अहल व अयाल, घर बार और मसकन की मामूली मिट्टी और पानी की तरफ वापसी का कस्द फ़रमाया तो आप ने पसन्द नहीं फ़रमाया कि जिस राह से अल्लाह की तरफ गये थे उसी रास्ते से दूसरों की तरफ जायें इस बिना पर आप ने दूसरा रास्ता एख़तियार फ़रमाया।

बाज़ हज़रत का ख़्याल है कि अगर हुजूर वाला वापसी के लिए दूसरा रास्ता एख़तियार न फ़रमाते तो लोगों पर पहले रास्ता ही से वापस होना सुन्नते रसूलुल्लाह के मुताबिक़ लाज़िम हो जाता और फिर नमाज़ के बाद लोगों का अपने अपने घरों को जाना (मुख़्तलिफ़ रास्तों के बजाए एक ही रास्ते से) दुश्वार हो जाता इस लिए हुजूर ने वापसी के वक़्त लोगों पर कुशादगी और फ़राखी पैदा कर दी कि जिस रास्ते से चाहें घरों को वापस जायें। यह भी कहा गया है कि रास्ते की तब्दीली का बाइस यह था कि हुजूर वाला को मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों की चालबाज़ियों का अन्देशा था। बाज़ का ख़्याल है कि आहज़रत और सहाबा कराम नमाज़ के बाद सदका दिया करते थे, जुदा जुदा रास्ता एख़तियार करने का मक़सद यह था कि दोनों रास्तों के फुकरा और ग़ुरबा को सदका पहुंच जाये। एक कौल यह भी है कि हुजूर वाला इज़दहाम से बचने के लिए ऐसा किया करते थे।

## कुरबानी और यौमुल अज़हा की फ़ज़ीलत

### कुरबानी के वक़्त की दुआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़िर्त. रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह के नज़दीक़ कुरबानी का दिन (यौमे नहर) सब दिनों से ज़्यादा अज़मत् वाला है। रिवायत है कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा से फ़रमाया कि कुरबानी के जानवर के पास खड़ी रहो इसलिए कि कुरबानी के जानवर की गरदन से जब खून का पहला क़तरा गिरेगा तो उसके एवज़ तुम्हारे सारे गुनाह माफ़ कर दिए जायेंगे और उस वक़्त यह पढ़ो: मेरी नमाज़, इबादत, ज़िन्दगी और मौत सब अल्लाह ही के लिए है जो सारी मख़लूक का पालने वाला है। हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज किया कि इलाही उम्मत मोहम्मदिया में से कुरबानी करने वालों को क्या सवाब मिलेगा अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उसका सवाब कुरबानी के जानवर के हर बाल के एवज़ दस नेकियां हैं (उसको दस नेकियां हर बाल के एवज़ मिलेंगी) और दस गुनाह मिटा दिये जायेंगे और उसके दस दर्जे बलंद किये जायेंगे। हज़रत दाऊद ने फ़रमाया कि जब वह कुरबानी के पेट को चाक करेगा तो उसका क्या सवाब होगा, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब उस बन्दा की कब्र शक़ होगी तो अल्लाह तआला उसके भूक, प्यास और क़यामत के हौल से महफूज़ कर के निकालेगा।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ दाऊद! कुरबानी के गोश्त के हर पारचा के एवज़ जन्नत के अन्दर उसके लिए बख़्शी ऊंट के बराबर एक परिन्दा मख़सूस होगा और हर टुकड़े के एवज़ उसको जन्नत के अन्दर एक अस्पे बहिश्ती होगा और कुरबानी के जिस्म के हर बाल के बदला उसके



जन्नत में एक महल मिलेगा और कुरबानी के सर के हर बाल के एवज़ उसको हूर मिलेगी। ऐ दाऊद क्या तुमको मालूम नहीं कि कुरबानियां ही क़यामत के दिन पुल सिरात से गुज़रने के लिए सवारियां होंगी यह कुरबानियां गुनाहों को मिटा देती हैं, बलाओं को दफा करती हैं, तुम कुरबानियों का हुक्म दो यह मोमिन का फ़िदया हैं जैसे वह कुरबानी (दुम्बा इसहाक का फ़िदया था।

## कुरबानी का जानवर अच्छा हो

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अच्छे जानवर कुरबानी करो क़यामत के दिन यह तुम्हारी सवारियां होंगे। एक रिवायत है कि हज़रत अली ने आयत जिस दिन परहेज़गार लोग रहमान वफ़द बन कर उठाये जायेंगे, तिलावत फ़रमाई (और फ़रमाया वह गरोह जो अपनी कौम या हुक्मत की नुमाएंदगी करता है आला किस्म के ऊंटों पर सवार हो कर आता है) पुल सिरात से गुज़रने के लिए उनकी सवारियां (ऊंटनियां) यही कुरबानी के जानवर होंगे, फिर उनको ऐसी ऊंटनियां अल्लाह तआला मरहमत फ़रमायेगा कि ऐसी किसी मख़लूक ने नहीं देखी होंगी, उनके कुजावे सोने के और उनकी मुहारे ज़मुरद की होंगी यह ऊंटनियां उनको जन्नत तक ले जायेंगी, इतने करीब पहुंचा देगी कि वह जाकर जन्नत का दरवाज़ा खटखटायेंगे।

एक रिवायत है कि हुजुरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कुरबानियां बतीबे खातिर किया करो क्योंकि जो शख्स अपनी कुरबानी (कुरबानी के जानवर से मुराद है) को पकड़ कर उसका रूख़ किब्ला की तरफ़ करता है तो कुरबानी के बाल उसका खून उसके लिए क़यामत के दिन के लिए महफूज़ रखा जाता है। वजह यह है कि जो खून मिट्टी पर गिरता है वह अल्लाह तआला की निगरानी व निगहदाश्त में रहता है, तुम थोड़ा खर्च करोगे तो जब भी तुम को अज़्र ज़्यादा दिया जायेगा।

रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सियाही माएल बड़े बड़े सींगों वाले दो दुंबे तलब फ़रमाये फिर एक को लिटाकर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, बिस्मिल्लाह वल्लाहु अकबर, इलाही यह (दुंबा) मोहम्मद और अहले बैते मोहम्मद की तरफ़ से है फिर दूसरे को लिटा कर आप ने पढ़ा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, बिस्मिल्लाह वल्लाहु अकबर अल्लाहुम्मा हाज़ा अन मोहम्मदिवं व अन उम्मतेही इलाही यह (कुरबानी) मोहम्मद और उम्मते मोहम्मद की तरफ़ से है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने कुरबानी के दिन कुरबानी फ़रमाई। शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत आइशा सिद्दीका से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख्स कुरबानी के दिन अपनी कुरबानी के जानवर के नज़दीक उसको ज़िबह करने के इरादे से पहुंचता है तो अल्लाह तआला उसको जन्नत के नज़दीक कर देता है और जब वह उसको ज़िबह कर देता है तो उसके खून का पहला कतरा ज़मीन पर गिरते ही अल्लाह तआला उसको बख़्श देता है और उस ज़बीहा को क़यामत के लिये उसके वासते (पुल सिरात ऊबूर के लिए) सवारी बना देता है ताकि उस पर सवार हो कर जाये। उसके हर बाल और ऊन के गिनती के मुताबिक़ यानी हर बाल के एवज़ उसको नेकियां दी जायेंगी। हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सियाही माएल रंग के सींगों वाले दो मेंढों की कुरबानी की और ज़िबह करते वक़्त उसकी गरदन पर अपना पाए मुबारक उसके मुंह के रूख़ पर रखा और



बिस्मिल्लाह पढ़ी। हज़रत अबू उबैदा फ़रमाते हैं कि अमलह वह मेंढा होता है जिसमें सियाही और सफ़ेदी की आमेज़िश हो मगर सियाही का ग़लबा हो।

हज़रत आइशा फ़रमाती है कि हुज़ूर के हुक्म से सीगों वाला एक मेंढा लाया गया जो सियाही में चलता सियाही में देखता और सियाही में बैठता था यानी उसके पांव, मुंह और उसके पहलू सियाह रंग के थे। आप ने उस मेंढे की कुरबानी की और उस को लिटा कर ज़िबह किया और फ़रमाया बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, इलाही! इस को मोहम्मद, आले मोहम्मद और उम्मत मोहम्मद की तरफ़ से क़बूल फ़रमा। अहले हदीस ने इस हदीस से तशरीह की है कि मेंढा गोश्त और चर्बी की ज़्यादाती की वजह से अपने साया में चलता, अपने साया में देखता और अपने साया में बैठता था। अहले लुगत ने इसके मानी बयान किये हैं कि वह है जो सियाह हाथ पांव, सियाह आंखों और सियाह पहलूओं वाला हो।

## शबे ईदे कुरबान

### की नमाज़ और कुरबानी के मसाइल

शबे ईद कुरबान की नमाज़ दो रकअत है हर रकअत में सूरह फ़ातिहा सूरह इख़लास और सूरह फ़लक पन्द्रह पन्द्रह मरतबा पढ़े दूसरी रकअत में सलाम फेरने के बाद तीन बार आयतल कुर्सी और पन्द्रह मरतबा इस्तिग़फ़ार पढ़े इसके बाद दुनिया व आख़िरत की भलाई के लिए जो दुआ चाहे करे।

### कुरबानी के अहकाम

कुरबानी सुन्नत है, जो शख्स कुरबानी कर सकता है उसके लिए इसका तर्क अच्छा नहीं है। इमाम अहमद (हंबल), इमाम मालिक और इमाम शाफ़ई के नज़दीक कुरबानी सुन्नत है बाकी दूसरे (मुजतहिदीन) हज़रत के नज़दीक वाजिब है सुन्नत होने की दलील वह हदीस से है जो हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे कुरबानी का हुक्म दिया गया है लेकिन तुम्हारे लिए वह सुन्नत है। एक और हदीस में आया है कि हुज़ूर ने फ़रमाया तीन चीज़ें मुझ पर फ़र्ज़ हैं मगर तुम्हारे लिए नफ़ल हैं, कुरबानी, वित्र और फ़ज़्र की दो रकअतें। हज़रत उम्मे सलमा की रिवायत में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब अशरए ज़िलहिज्ज आ जाये और तुम में से कोई कुरबानी करना चाहे तो अपने बाल और खाल को बिलकुल न छुए (यानी न बाल मूंडे और न कतरवाये न फ़स्द न पछने लगवाये) इस हदीस में कुरबानी को इरादा और ख़्वाहिश के मुताल्लिक किया है और जो हुक्म शरअन वाजिब होता है उसका ताल्लुक करने वाले के इरादे से नहीं होता कि जी चाहे करे जी चाहे न करे इससे साबित होता है। कि कुरबानी वाजिब नहीं बल्कि सुन्नत है।

### कुरबानी का जानवर

कुरबानी के लिए सबसे अफ़ज़ल ऊंट है फिर गाय, उसके बाद बकरी, भेड़ जज़अ से कम



न हो और दूसरा जानवर मुसिन्ना से कम न हो। भेड़ छः माह की पूरी हो जाये तो जजअ कहलाती है, बकरा (बकरी) एक साल का हो, गाय दो साल और ऊंट दो साल का, यह सब उस उम्र पर पहुँचकर मुसिन कहलाते हैं।

एक बकरी एक शख्स के लिए और एक ऊंट या गाय सात आदमियों की तरफ से काफी है।

## कुरबानी के जानवर का रंग और उसकी अफ़ज़लियत

कुरबानी का अफ़ज़ल जानवर सफ़ेद रंग का है, फिर सियाह रंग का। खुद जिब्ह करना अफ़ज़ल है अगर खुद अच्छी तरह जिब्ह न कर सकता हो तो जिब्ह के वक़्त मौजूद रहे। कुरबानी का तीसरा हिस्सा अपने लिए है और एक तीसरा हिस्सा अइज़्ज़ा व अहिब्बा के लिए और एक तीसरा हिस्सा ख़ैरात कर दे। ऐबदार जानवर कुरबानी के लिए न ले, यह ऐब पांच है 1—सिंग या कान का बेशतर हिस्सा कटा हुआ होना (बाज़ अक्वाल में आया है कि जिस जानवर का एक तिहाई कान या सींग न हो उसकी कुरबानी दुरुस्त नहीं) 2—मुंडा (यानी बग़ैर सींग का जानवर) 3—काना (जिसका काना होना नुमाया हो यानी एक आंख अंदर धसी हो) 4—इतना दुबला जिसकी हड्डियों में मींग भी न रही हो 5—लंगड़ा ऐसा जिसका लंगड़ा पन जाहिर और नुमाया हो यानी कमजोरी की वजह से जानवरों के साथ चरने न जा सके, चर न सकता हो या ऐसा बीमार जिसकी बीमारी नुमाया हो, ख़ारशी हो (क्योंकि ख़ारिश गोश्त को ख़राब कर देती है)।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुकाबला, मुदाबिरा, ख़रका और शरका की कुरबानी से भी मना फ़रमाया है। मुकाबला वह जानवर जिसके कान का अगला हिस्सा काट कर लटका कर छोड़ दिया गया और मुदाबिरा वह जानवर जिसके कान को पिछला हिस्सा काट दिया हो, ख़रका वह जानवर है जिसके कान में दाग़ लगाने के बाइस सुराख़ हो गया हो, शरका उस जानवर को कहते हैं जिस को दाग़ लगाने से उसका कान फट गया हो यह मुमानियते तहरीमी नहीं है तन्जीही है पस तन्जीही है कि ऐसे जानवर की कुरबानी से गुरेज़ करे अगर कुरबानी कर दे तो जायज़ है।

## कुरबानी के दिन

कुरबानी के तीन दिन हैं नमाज़ (ईद) के बाद से, ईद का पूरा दिन और उसके बाद वाले दो दिन अकसर फुक्हा का यही कौल है। इमाम शाफ़ई के नज़दीक चार दिन हैं ईद का दिन और उसके बाद तशरीक के तीन दिन, तीन दिन के बारे में हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत अबू हुरैरा के अक्वाल मौजूद हैं।

इमाम की नमाज़ से पहले कुरबानी का सवाब हासिल नहीं होता फ़क़त गोश्त खाने के लिए ज़बीहा हो जाता है (उस गोश्त का खाना जाएज़ है लेकिन वह कुरबानी नहीं है) मनसूर ने बिल असनाद रिवायत की है कि हज़रत बरअ बिन आजिब ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम को खिताब किया और नहर के दिन नमाज़ के बाद फ़रमाया कि जिसने हमारी तरह नमाज़ पढ़ी और हमारी तरह कुरबानी की। उसने सही कुरबानी की और जिसने नमाज़ से पहले कुरबानी कर दी कि वह गोश्त की एक बकरी है (कुरबानी नहीं हुई।) हज़रत अबू बुरदा ने खड़े हो कर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह मैं तो नमाज़ को आने से पहले ही कुरबानी कर



मुका, मैं तो यह समझा था कि आज का दिन खाने पीने का है इस लिए मैंने कुरबानी जल्द कर ली। खुद भी खाया और अपने पड़ोसियों को भी खिलाया। हुजूर ने जवाब में इरशाद फरमाया वह गोश्त की बकरी हुई (कुरबानी नहीं हुई)। हजरत अबू बुरदा ने अर्ज किया कि मेरे पास बकरी का जज़अ (शशमाहा) जो गोश्त की दो बकरियों से बेहतर है क्या वह (कुरबानी के लिए) काफी हो जायेगा हुजूर ने फरमाया सिर्फ तेरे लिए, तेरे बाद किसी और के लिए न होगा (यानी यह शशमाहा बच्चा की कुरबानी सिर्फ तेरे लिए जायज़ है किसी और के लिए नहीं)।

असवद बिन कैस से मरवी है कि मैं नहर के दिन हुजूर की खिदमत में हाज़िर था हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रे जिन्होंने नमाज़ से पहले ही जानवर ज़िबह कर लिए थे, हुजूर ने फरमाया कि जिसने नमाज़ से पहले जानवर ज़िबह किया उसे चाहिए कि वह दोबारा जानवर ज़िबह करे और बाज़ हदीसों में इस तरह आया है कि हुजूर ने फरमाया जिसने नमाज़ से पहले जानवर ज़िबह किया उसे चाहिये वह उसकी जगह दूसरी कुरबानी करे और जिसने ज़िबह नहीं किया है वह अब ज़िबह करे।

## अय्यामे तशरीक

अल्लाह तआला का इरशाद है: गिने हुए या मुकर्रर दिनों में अल्लाह को याद करो। याद से मुराद है हर नमाज़ के बाद और हर पत्थरी मारते वक़्त तकबीर कहना। अब्बल अशरा से तशरीक के आखिरी दिन तक तकबीर कहना मुस्तहब है।

### तशरीक के मानी और मुखतलिफ़ तौजीहात

अय्यामे मादूदात अय्यामे तशरीक हैं यानी मिनो के तीन दिन और अय्यामे मालूमात से मुराद ज़िलहिज्जा के दस दिन हैं। अकसर उलमा का यही कौल है। अल्लाह तआला का इरशाद है और जो दो दिन में जल्द लौट आए उस पर कोई गुनाह नहीं। हाजी अय्यामे तशरीक के दो दिन या पूरे तीन दिन के बाद हज से बाहर आ जाते हैं।

हजरत इब्ने अब्बास फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अय्यामे मादूदात में ज़िक्र का हुक्म दिया है। यह अय्याम, अय्यामे तशरीक हैं यानी नहर के बाद तीन दिन, उन दिनों को गिनती के दिन कहने की वजह यह है कि पूरी उम्र के दिनों के मुकाबला में यह दिन थोड़े हैं, जैसे रमज़ान के महीने के बारे में अल्लाह तआला ने "गिनती के दिन" फरमाया है इसी तरह हजरत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में इरशाद फरमाया: यूसुफ़ के भाईयों ने यूसुफ़ को थोड़ी कीमत व गिनती के दिरहमों में बेच डाला (यानी बहुत कम दिरहमों के एवज़)

बाज़ उलमा ने मादूदा कहने की वजह यह बताई है कि उन दिनों का शुमार अय्यामे हज में किया जाता है चुनांचे मुज़दलफ़ा में कियाम और मेना में कंकरीयां (रमी जमार) और दूसरे मनासिके हज उन्ही अय्याम में होते हैं।

### जजाज़ का कौल

जजाज़ का कौल है कि मादूदात का इतलाक़ लुगत में कलील चीज़ पर होता है चूंकि यह भी तीन दिन हैं (यानी कलील) इस लिए उनको अय्यामे मादूदात कहा गया यानी तशरीक के



तीन दिन और जिस जिक्र का उन अय्याम में हुक्म दिया गया है उससे मुराद तकबीर है। नाफेअ की रिवायत है कि है की हज़रत इब्ने उमर ने फ़रमाया अय्यामे मादूदात तीन दिन हैं एक दिन नहर का और दो दिन उसके बाद के हैं। इब्राहिम नखई ने कहा कि अय्यामे मादूदात (जिल हिज्ज के) दस दिन हैं और अय्यामे मालूमात कुरबानी के दिन हैं इस आयत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को जिक्र का हुक्म दिया है और इससे पहली आयत में फ़जकुरुल्लाहा क जिकरेकुम आबाकुम में भी जिक्र का हुक्म दिया गया है इस का क्या सबब है? इस की वजह जमीअ मुफ़स्सेरीन ने कराम ने यह बयान फ़रमाई है कि हज से फ़रागत के बाद अरब काबा के पास कयाम करते और अपने बाप दादा के फ़जाएल और खूबीयां बयान करके तफ़ाखुर करते, कोई कहता कि मेरा बाप मेहमान नवाज़ था खाना खिलाता था ऊंट जिबह करता था, क़दियों को फ़िदया देकर और दैत अदा करके आज़ाद कराता था, चुर्नी करता और चुनां करता, गरज़ इस तरह बाहम एक दूसरे पर फ़ख़र करते पस इस तफ़ाखुर के बजाए अल्लाह तआला ने उनको अपनी याद का हुक्म दिया और फ़रमाया: फ़जकुरुल्लाहा क जिकरेकुम आबाकुम और फ़रमाया वज़कुरुल्लाहा फ़ी अय्यामीम मादूदातिन यानी मेरी याद करो मैं ही तुम्हारे और तुम्हारे आबा व अजदाद के साथ एहसान किया।

## सदी की रिवायत

सदी कहते हैं कि अहले अरब इबादत से फ़ारिग होकर मेना में जाते उनमें से एक बारगाहे इलाही में दुआ करता ऐ अल्लाह मेरे बाप का प्याला बहुत बड़ा था उसकी दहलीज़ भी बहुत बड़ी थी वह बड़ा दौलतमंद था, मुझे भी उसकी तरह माला माल फ़रमा दे गया इस तरह वह अल्लाह का जिक्र नहीं बल्कि वह अपने बाप के फ़जाएल बयान करता था दुनिया की लज़्ज़त और नेमत ख़्वाहिश करता इस लिए यह आयत नाज़िल की गई।

## मुख्तलिफ़ तौजीहात

हज़रत इब्ने अब्बास, अता, रबीअ और ज़हाक ने इस आयत के यह मानी बयान किये हैं कि तुम खुदा को इस तरह याद करो जिस तरह छोटे बच्चे अपने बापों को याद करते हैं। सबसे पहले जब बच्चा बोलना और समझना शुरू करता है तो साफ़ नहीं बोलता फिर अब्बा अम्मा ठीक तरह से बोलने लगता है। उमर बिन मालिक की रिवायत है कि अबुल जौजा ने बयान किया कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास से आयत फ़जकुरुल्लाहा क जिकरेकुम आबाकुम के सिलसिला में दरयाफ़्त किया कि कोई दिन ऐसा भी होता है कि कोई आदमी बाप को याद नहीं करता तो क्या खुदा को भी किसी रोज़ भूल जाना दुरुस्त है? उन्होंने कहा इसका यह मतलब नहीं है बल्कि मतलब यह है कि अगर अल्लाह की नाफ़रमानी की जाए तो देख कर तुम को उतना ही गुस्सा आए जितना गुस्सा तुम को उस वक़्त आता है जब तुम्हारे मां बाप को गाली दी जाए।

## मोहम्मद बिन कअब का कौल

मोहम्मद बिन कअब करतवी ने कहा कि क जिकरकुम आबाकुम औ अशदा जिकरा में औ ब माना बल है जैसे औ यज़ीदूना के मानी हैं बल यज़ीदूना यानी अल्लाह की याद बाप दादा की याद की तरह बल्कि इससे भी ज़्यादा करो। मक़ातिल ने कहा अशदु जिकरा के मानी हैं



अकसर जिकरा यानी शुमार में ज्यादा (अकसर व बेशतर) जैसे अशदु कसबतन (सखती में ज्यादा) अशदु खशयतन (खौफ में ज्यादा)।

## जिक्र

### जिक्र के मानी

अल्ताह तआला ने कुरआन मजीद में चन्द चीजों को "जिक्र" फरमाया है अब्बलन तौरैत को जिक्र कहा है फरमाया: तौरैत वालों से पूछ लो। कुरआन को भी जिक्र कहा है फरमाया यह मुबारक यादाश्त है जो हम ने नाजिल फरमाई। लौहे महफूज को भी जिक्र से याद फरमाया: हम ने लौहे महफूज के बाद जुबूर में लिख दिया। नसीहत को भी जिक्र से ताबीर फरमाया है: जब वह उस नसीहत को भूल गए जो उनको की गई थी। रसूल को भी जिक्र कहा है: इरशाद फरमाया: बेशक अल्ताह तआला ने तुम्हारी तरफ जिक्र को जो रसूल है भेजा। और खबर का नाम भी जिक्र रखा। चुनाचे फरमाया: यह उन लोगों की खबर है जो मेरे साथ हैं और उन लोगों की खबर जो मुझ से पहले गए। शरफ व फजीलत को भी जिक्र कहा गया है: फरमाया: यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी कौम के लिए एक फजीलत व शरफ है। तौबा को भी जिक्र से ताबीर किया गया है: इरशाद है: यह तौबा करने वालों के लिए यादाश्त है। नमाज को भी जिक्र कहा गया है: इरशाद हुआ: अल्ताह को इस तरह याद करो जिस तरह उसने बताया यानी इस तरह नमाज पढ़ो जैसे उसने सिखाई है। अस्त्र की नमाज को भी जिक्र कहा है: फरमाया: अपने सब के जिक्र से यानी अस्त्र की नमाज से माल की मोहब्बत को मैंने ज्यादा अजीज रखा। जुमा को भी जिक्र कहा है: इरशाद फरमाया: जुमा की नमाज की तरफ जाओ। इताअत और मगफिरत को भी जिक्र कहा है: फरमाया है: तुम मेरी इताअत करो मैं तुम्हारी मगफिरत करूंगा। नदामत को भी जिक्र कहा गया है: फरमाया है: जब तुम अपनी जानों पर जुल्म करो तो उस वक्त अपने दिल में अल्ताह का जिक्र करो (यानी दिल में नदामत महसूस करो) और जबान से इस्तिगफार करो। तकबीर को भी जिक्र कहा है: तशरीक के दिनों में अल्ताह का जिक्र करो यानी तकबीर कहा।

## तशरीक की वजहे तसमिया

### तशरीक के मानी

अय्यामे तशरीक की वजहे तसमिया में उलमा का इखतिलाफ है बाज का कहना है कि (दौरे जाहिलियत में) मुशरिक कहा करते थे ऐ कोहे सुबैर! रीशन हो जा ताकि हम बले। बात यह थी कि सूरज के तुलूअ होने से कबल मुशरिकीन मुजदलफा से नहीं लौटते थे (जब कोहे सुबैर चमकने लगता तब खाना होते) इस्लाम ने इस रस्म (जाहिलियत) को बातिल कर दिया। बाज उलमा का इरशाद है कि अय्यामे तशरीक के मानी हैं कुरबानी के गोश्त को पारचा पारचा करके खुश्क करने के दिन। अय्यामे जाहिलियत में लोग कुरबानी के गोश्त को खुश्क कर के रख लेते थे चुनाचे तशरीकुल लहम, गोश्त के पारचा करके धूप में सुखाना और शराएकुल लहम, गोश्त के सूखे पारचों को कहा जाता है।



बाज हजरात का कहना है कि तशरीक के मानी हैं ईद की नमाज़। लफ़्ज़ तशरीक शुरुकुश शम्स से मुशतक है यानी सूरज का रौशन होना, चूँकि ईद की नमाज़ का वक़्त तुलूअे ख़ूरशीद के बाद ही शुरू होता है इसी एतबार से ईदगाह को मशरिक कहते हैं कि सूरज तुलूअ होने के बाद लोग वहाँ पहुँचते हैं इसी वजह से यौमे ईद को यौमे तशरीक कहा जाता है। फिर ईद के बाकी दो दिनों को अय्यामे तशरीक से मौसूम कर दिया गया।

## हज़रत जुन्नून मिस्री ने तशरीह फ़रमाई

हज़रत जुन्नून मिस्री से दरयाफ़्त किया गया कि मौकिफ़ का नाम मशअर क्यों रखा गया, उसको हरम क्यों नहीं कहा गया, फ़रमाया काबा अल्लाह का घर है और हरम उसका पर्दा है, मशअर उसका दरवाज़ा है, जब मेहमान यानी हाजी ख़ानए खुदा का कस्द करते हैं तो अल्लाह उनको पहले दरवाज़े पर ठहरा देता है ताकि वह दरगाहे इलाही पर आजिजी करे, फिर दूसरे पर्दे पर आता है जिसे मुज़दलफ़ा कहते हैं वहाँ हाजी खड़ा होता है आजिजी करता है जब उसकी आजिजी और ज़ारी कबूल हो जाती है तो उसे कुरबानी का हुक्म दिया जाता है। कुरबानी करने से वह गुनाहों से पाक हो जाता है फिर तहारत करके ख़ानए काबा की ज़ियारत से मुशरफ़ होता है। उनसे दरयाफ़्त किया गया कि अय्यामे तशरीक में रोज़ा रखना क्यों मकरूह है? जवाब में फ़रमाया कि इस लिए कि लोग (हाजी) अल्लाह के मेहमान हैं उसकी मुलाकात को आये हैं और मेज़बान के यहाँ मेहमान को रोज़ा रखना मुनासिब नहीं है। फिर दरयाफ़्त किया गया कि काबा के पर्दे पकड़ कर लटकने की क्या वजह है? उन्होंने फ़रमाया इसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक बन्दा अपने मालिक का गुनहगार है और उसका कोई सिफ़ारिशी है तो वह मुजरिम बन्दा अपने सिफ़ारिशी का दामन पकड़ लेता है और गिरया व ज़ारी करके माफी की दरख़्वास्त करता है।

## तकबीरें

### तकबीराते अय्यामे तशरीक की तादाद

हज़रत नाफ़ेअ कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत उमर अय्यामे तशरीक में मेना के अन्दर के अन्दर नमाज़ों के बाद मजलिस में, बिस्तर पर, खेमा में और रास्ता में हर जगह तकबीर पढ़ते थे इन दोनों हज़रात की तकलीद में और लोग भी तकबीर पढ़ते और इस आयत का वज़कुरुल्लाहा फी अय्यामीम मादूदातिन का यही मतलब व मफ़हूम समझते थे। तकबीर के सुन्नत होने पर सब (अकाबिरीने उम्मत) का इत्तेफ़ाक़ है। इख़तिलाफ़ है तो इसकी तादाद में है

हज़रत अली अरफ़ा के दिन की फ़ज्र से आखिरी यौमे तशरीक की अस्त्र तक हर नमाज़ के बाद तकबीर कहते थे। हमारे इमाम अहमद बिन मोहम्मद बिन हंबल और काज़ी अबू यूसुफ़ और मोहम्मद बिन हसन का यही मज़हब है। इमाम शाफ़ई का भी इस सिलसिला में यही कौल है और यह कौल सबसे ज़्यादा जामेअ और औला है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद अरफ़ा की फ़ज्र से यौमे नहर (10 ज़िल हिज्जा) की नमाज़े अस्त्र तक हर नमाज़ के बाद तकबीर पढ़ा करते थे। इमामे आजम अबू हनीफ़ा नोमान का भी यही मज़हब है। हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत



जैद बिन साबित यौमे नहर की जुहर से आखिरी यौमे तशरीक की अस्त्र तक तकबीर पढ़ते थे। अता का कौल यही है, इमाम शाफई का जाहिरी तरीन कौल यह है कि नहर की जुहर से तकबीर का आगाज़ किया जाये और आखिरी यौमे तशरीक की फ़ज्र पर उसको ख़त्म कर दिया जाये ताकि हाजियों की इक्तेदा कामिल तौर पर हो जाये। इमाम मालिक का भी यही मज़हब है, शाफई का एक कौल यह भी है कि शबे नहर की मगरिब की नमाज़ से तकबीर की इक्तेदा की जाये और आखिरी यौमे तशरीक की नमाज़े फ़ज्र पर उसको ख़त्म किया जाये।

## तकबीर के अलफ़ाज़ और तादाद

हज़रत इब्ने मसऊद दो मरतबा तकबीर इस तरह कहते थे अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लाह वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द। हमारे इमाम और इमाम अबू हनीफ़ा और अहले इराक़ का मसलक यही है। इमाम मालिक तकबीर इस तरह कहते थे अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर यहां कुछ ठहर जाते फिर कहते अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लाह। हज़रत सईद बिन जुबैर और हसन बसरी तीन बार लगातार इस तरह तकबीर कहते थे अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर फिर आखिर तक वही कहते जो हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसऊद के कौल में ऊपर बयान किया जा चुका है। इमाम शाफई और अहलियाने मदीना का यही मसलक है (यानी वह शुरू में दो बार के बजाए तीन बार अल्लाहु अकबर कहते हैं) हज़रत क़तादा तकबीर इस तरह कहते थे अल्लाहो कबीरून अला मा बदाना, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द। हज़रत सईद से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अय्यामे मेना खाने पीने और अल्लाह का ज़िक्र करने के दिन हैं। हज़रत जाफ़र बिन मोहम्मद ने कहा कि रसूलुल्लाह ने अय्यामे तशरीक में एक मुनादी को भेजा और निदा कराई कि यह दिन (अय्यामे तशरीक) खाने पीने और औरतों (बीबीयों) से कुरबत के दिन हैं।

## मोहरिम की तकबीरात

आदमी अगर मोहरिम यानी एहराम की हालत में हो तो नहर की जुहर से आखिरी यौम तशरीक तक तकबीर पढ़े। इमाम अहमद का भी यही कौल है। इमाम अहमद से सही तरीन कौल यह भी आया है कि अगर नमाज़े फ़र्ज जमाअत से पढ़ी है तो तकबीर न पढ़े बल्कि तन्हा नमाज़ पढ़े तो तकबीर कहे।

# ईदुल फ़ित्र के दिन

## ईदुल फ़ित्र की तकबीरात

यह मसाएल जो बयान किये गये हैं ईदुल अज़हा में तकबीर कहने से मुताल्लिक हैं, ईदुल फ़ित्र में भी इसी तरह तकबीर कहे बल्कि ईदुल फ़ित्र की रात में तकबीर कहने की ज़्यादा ताकीद आई है। अल्लाह तआला का इरशाद है: और चाहिए कि तुम माहे रमज़ान की गिनती पूरी कर लो उस पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो जिसने तुमको हिदायत बख़्शी।

ईदुल फ़ित्र की तकबीरात का आगाज़ शबे फ़ित्र की मगरिब से होता है और ईद के दिन जब इमाम दोनों ख़ुत्बों से फ़ारिग हो जाये उस वक़्त तक तकबीर का हुक्म रहता है फिर यह



हुक्म खत्म हो जाता है।

इमामे आजम अबू हनीफ़ा ने फ़रमाया कि ईदुल फ़ित्र में तकबीर मसनून नहीं है। इमाम मालिक का कौल है कि ईदुल फ़ित्र के दिन में तकबीर पढ़े रात में न पढ़े और तकबीर पढ़ने का वक्त ईदगाह पहुंचने तक है। इमाम शाफ़ई ने फ़रमाया कि शबे ईद की मगरिब से तकबीर शुरू और जब इमाम ईद के दोनों खुत्बे खत्म कर दे तो तकबीर कहना भी खत्म कर दे। इमाम शाफ़ई ने यह भी फ़रमाया है कि तकबीर शबे ईद की मगरिब से शुरू करके उस वक्त खत्म कर दे जब इमाम ईदगाह में पहुंच जाये। एक कौल में इन्तहाई वक्त नमाजे ईद के आगाज़ को करार दिया गया है और दूसरे कौल में नमाजे ईद से फ़ारिग होने का वक्त तकबीर का आखिरी वक्त है।

ईदगाह



## बाब 16

## यौमे आशूरा और यौमे जुमा के फज़ाएल

## यौमे आशूरा के फज़ाइल

अल्लाह तआला का इरशाद है:

कुरआने करीम में अल्लाह तआला ने महीनों की तादाद बारह बयान फ़रमाई है जिस दिन ज़मीन व आसमान पैदा किये गये, जिन में चार महीने हुरमत वाले हैं।

हुरमत के महीनों में से अल्लाह के नज़दीक मोहर्रम भी है (इस की तफ़सील पहले गुज़र चुकी है) और इसी माह में आशूरा का दिन भी है, जिसमें इबादत करने वाले के लिए अज़ीम सवाब मुक़र्रर किया गया। हम ने शैख़ अबू नसर से बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास का यह कौल नक़ल किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने मोहर्रम के किसी दिन रोज़ा रखा उसको हर रोज़ा के एवज़ तीस दिन के रोज़ों का सवाब मिलेगा। मैमून बिन महरान ने हज़रत इब्ने अब्बास का यह कौल नक़ल किया है कि आंहुज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिस ने मोहर्रम की दस तारीख़ यानी यौमे आशूरा का रोज़ा रखा उसको दस हज़ार फरिश्तों, दस हज़ार शहीदों और दस हज़ार हज़ और उमरा करने वालों का सवाब दिया जाएगा। जिसने आशूरा के दिन किसी यतीम के सर पर हाथ फेरा अल्लाह तआला उसके सर के हर बाल के एवज़ जन्नत में उसका दरज़ा बलन्द करेगा, जिस ने आशूरा की शाम को किसी मोमिन का रोज़ा खुलवाया सोया उसने अपनी तरफ़ से तमाम उम्मत मुहम्मदिया का रोज़ा खुलवाया और सारी उम्मत का पेट भरा। सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या अल्लाह तआला ने आशूरा के दिन को तमाम दिनों पर फज़ीलत दी है, हुज़ूर रसूलुल्लाह! क्या अल्लाह तआला ने आशूरा के दिन को तमाम दिनों पर फज़ीलत दी है, हुज़ूर ने फ़रमाया हां, अल्लाह तआला आसमानों, ज़मीन, पहाड़ों, समुन्दरों को आशूरा के दिन पैदा फ़रमाया, लौह व क़लम को भी आशूरा के दिन पैदा किया। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम आशूरा के दिन पैदा हुए, हज़रत आदम को जन्नत में आशूरा के दिन दाख़िल फ़रमाया, हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम आशूरा के दिन पैदा हुए, उनके बेटे का फ़िदया कुरबानी आशूरा ही के दिन दिया गया, फिरऔन को आशूरा के दिन (नील में) गरक़ाब किया, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की तकलीफ़ आशूरा के दिन दूर फ़रमाई। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा आशूरा ही के दिन क़बूल फ़रमाई, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की लगज़िश आशूरा के दिन माफ़ फ़रमाई, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आशूरा के दिन पैदा हुए, क़यामत आशूरा के दिन ही बरपा होगी।

## हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत

हज़रत इब्ने अब्बास ही से एक दूसरी रिवायत इस तरह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने आशूरा का रोज़ा रखा है उसके लिए साठ बरस की इबादत (सियाम व सलात) अल्लाह तआला लिख देता है। जिसने आशूरा का रोज़ा रखा उसको हज़ार शहीदों का सवाब दिया जाता है, जिसने आशूरा का रोज़ा रखा अल्लाह तआला उसके लिए सातों



आसमानों के फ़रिश्तों का सवाब लिख देता है, जिसने आशूरा के दिन किसी मुसलमान का रोज़ा खुलवाया गोया उसने तमाम उम्मत मुहम्मदिया का रोज़ा खुलवाया और सब के पेट भरवा दिए, जिसने आशूरा के दिन किसी यतीम के सर पर हाथ फेरा तो यतीम के सर के हर बाल के एवज जन्नत में उसका मरतबा बलन्द किया जाएगा।

हज़रत उमर ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने आशूरा के रोज़ा के साथ हमको बड़ी फ़ज़ीलत अता फ़रमाई। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि हां ऐसा ही है क्योंकि उसी दिन अल्लाह तआला ने अर्श व कुर्सी, सितारों और पहाड़ों को पैदा फ़रमाया, लौह व कलम आशूरा के दिन पैदा किये, जिब्रील और दूसरे मलाइका को आशूरा के दिन पैदा किया, हज़रत आदम और हज़रत इब्राहीम अलैहिमस्सलाम को आशूरा के दिन पैदा फ़रमाया, अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम को आतिशे नमरुद को आशूरा के दिन नजात बख़्शी, उनके फ़रज़न्द का फ़िदया आशूरा के दिन दिया, फ़िरऔन को आशूरा के दिन गर्क किया, हज़रत इदरीस को आशूरा के दिन आसमान पर उठाया, हज़रत अय्यूब के दुख दर्द को आशूरा के दिन दूर किया, हज़रत ईसा को आशूरा के दिन उठाया, ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश भी आशूरा के दिन हुई, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा भी उसी दिन कबूल हुई, हज़रत दाऊद का लगज़िश उसी दिन बख़्शी गई, हज़रत सुलैमान को जिन्न व इन्स पर हुकूमत उसी दिन अता हुई, खुद बारी तआला आशूरा के दिन अर्श पर मुतमक्किन हुआ, क़यामत आशूरा के दिन होगी, आसमान से सबसे पहली बारिश आशूरा के दिन हुई जिस दिन आसमान से पहली मरतबा रहमत नाज़िल हुई वह आशूरा का दिन था, जिसने आशूरा के दिन गुस्ल किया वह मरजुलमौत के सिवा किसी बीमारी में मुब्तला न होगा, जिसने आशूरा के दिन पत्थर का सुर्मा आख में लगाया तमाम साल उसको आशोबे चश्म नहीं होगा, जिसने उस दिन किसी की अयादत की गोया उसने तमाम औलादे आदम की अयादत की, जिसने आशूरा के दिन किसी को एक घूंट पानी पिलाया उसने गोया एक लम्हा को अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं की।

### आशूरा के दिन चार रकअत नमाज़

जिसने आशूरा के दिन चार रकअत नमाज़ इस तरह पढ़ी कि हर रकअत में एक दफ़ा सूरह फ़ातिहा और पचांस बार सूरह इख़लास पढ़ी। अल्लाह तआला ने उसके पचास बरस गुज़िश्ता और पच्चास बरस आइन्दा गुनाह माफ़ फ़रमाए, मलाए आला में उसके लिए नूर के महल तामीर कराएगा। एक और हदीस में चार रकअतें दो सलामों के साथ मज़कूर हैं, हर रकअत में सूरह फ़ातिहा, सूरह ज़िलज़ाल, सूरह काफ़ेरून और सूरह इख़लास एक एक दफ़ा और नमाज़ से फ़रागत के बाद सत्तर बार दरुद शरीफ़ पढ़ना मज़कूर है, (यह रिवायत अबू हुरैरा से मरवी है)

### हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत यह भी आई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बनी इस्राईल पर साल में एक दिन यानी आशूरा के दिन रोज़ा फ़र्ज़ किया गया था, तुम भी उस दिन रोज़ा रखो और अपने घर वालों के खर्च में उस रोज़ फ़राखी रवा रखो, जिसने उस रोज़ अपने घर वालों के खर्च में वुसअत पैदा की अल्लाह तआला उसको पूरे साल आसूदगी व क़शाईश अता फ़रमाता है जिसने उस दिन रोज़ा रखा तो वह रोज़ा उसके चालीस



साल के गुनाहों का कफ़ारा हो जाएगा। जो शख्स शबे आशूरा में रात भर इबादत में मशगूल रहे और सुबह को वह रोज़ा से हो तो उसको इस तरह मौत आएगी कि उसको मरने का एहसास भी न होगा।

## हज़रत अली की रिवायत

हज़रत अली से मरवी हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने आशूरा की शब इबादत की तो अल्लाह तआला जब तक चाहेगा उसको ज़िन्दा रखेगा। हज़रत सुलैमान बिन उएनया ने बरिवायत जाफ़र कूफी, इब्राहीम बिन मुहम्मद (जो अपने ज़माने में कूफ़ा के बहुत बड़े बुजुर्ग समझे जाते थे) से रिवायत की है कि मुझे इत्तेला मिली है कि आशूरा के दिन जो शख्स अपने घर वालों के खर्च में फ़राखी व वुसअत पैदा करता है अल्लाह तआला पूरे साल उसको फ़राखी व वुसअत अता फ़रमाता है, हमने पचास साल से (बराबर) इसका तजर्बा किया है और हमेशा रोज़ी की फ़राखी ही मयस्सर हुई। यही हदीस हज़रत अब्दुल्लाह से भी मनकूल है कि जिसने यौमुज़ ज़ीनत यानी आशूरा के दिन रोज़ा रखा उसने साल भर के अपने फ़ौत शुदा सदका को पा लिया। यहया बिन कसीर का कौल है कि जिसने आशूरा के दिन मुश्क आमेज़ सुर्मा लगाया उसकी आंखों में साल भर तक आशोब नहीं होगा। अबू नसर ने अपनी वालिदा व वालिद की सनद से अबू गलीत अजमी से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे घर पर एक सर्द (ममूला) को देखा तो फ़रमाया कि सबसे पहले इस परिन्दे ने आशूरा का रोज़ा रखा।

## जंगली जानवर भी रोज़ा रखते हैं

कैस बिन उबादा ने फ़रमाया कि जंगली जानवर भी आशूरा के दिन रोज़ा रखते हैं। हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि माहे रमज़ान के बाद रोज़ों का सबसे अफ़ज़ल महीना वह है जिसको मुहर्रम कहा जाता है और फ़र्ज नमाज़ और वस्त शब की नमाज़ के बाद सबसे अफ़ज़ल नमाज़ यौमे आशूरा की है। हज़रत अली से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि खुदा के महीने यानी मुहर्रम में अल्लाह तआला ने कुछ लोगों की तौबा कबूल फ़रमा ली और कुछ लोगों की तौबा कबूल फ़रमा लेगा।

हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने ज़िलहिज्जा के आखिरी दिन और मुहर्रम के पहले दिन का रोज़ा रखा गोया उसने गुज़िश्ता साल को रोज़ों में ख़त्म किया (यानी साल भर के रोज़े रखे) और आईन्दा साल को भी रोज़ा से शुरू किया। अल्लाह तआला ने उसके पचास बरस के गुनाहों का उस रोज़ा को कफ़ारा बना दिया। अरवा रिवायत करते हैं कि हज़रत आईशा ने फ़रमाया कि अहदे जाहिलियत में कुरैश आशूरा का रोज़ा रखते थे और मक्का में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उस दिन का रोज़ा रखते थे जब हिजरत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो रमज़ान के रोज़े फ़र्ज किये गए फिर जिसने चाहा आशूरा का रोज़ा रखा जिसने चाहा उसे तर्क कर दिया। हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तय्यबा में तशरीफ़ लाए तो यहूदियों को आशूरा का रोज़ा रखते हुए पाया जब इसकी



वहज दरवाफ्त कि गई तो यहूदियों ने अर्ज किया कि आज के दिन अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और बनी इस्राईल को फिराउन पर ग़लबा अता फ़रमाया इस वजह से हम इस दिन को अजीम समझते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी बनिस्बत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हमारा ताल्लुक ज़्यादा है इसके बाद हुज़ूर ने इस दिन का रोज़ा रखने का हुक्म सादिर फ़रमा दिया।

## आशूरा की वजहे तसमिया

### आशूरा की वजहे तसमीया में उल्मा का इख़तिलाफ़

आशूरा की वजहे तसमीया में उल्मा का इख़तिलाफ़ है इसकी वजह मुख़तलिफ़ तौर पर बयान की गई है। अकसर उल्मा का कौल है कि चूँकि यह मुहर्रम का दसवां दिन होता है इस लिए इसको आशूरा कहा गया। बाज़ का कौल है कि अल्लाह तआला ने जो बुजुर्गियां दिनों के एताबर से उम्मत मुहम्मदिया को अता फ़रमाई हैं उसमें यह दिन दसवीं बुजुर्गी है इसी मुनासबत से इसको आशूरा कहते हैं। पहली बुजुर्गी तो रजब की है वह अल्लाह का माहे रहम है, अल्लाह तआला ने यह बुजुर्गी सिर्फ़ इस उम्मत को अता की है कि बाकी महीनों पर रजब को फ़ज़ीलत ऐसी ही है जैसी उम्मत मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत दूसरी उम्मतों पर। माहे शाबान की बुजुर्गी है, माहे शाबान की फ़ज़ीलत बाकी महीनों पर ऐसी है जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत दूसरे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम पर। तीसरा माह रमज़ान है इसकी फ़ज़ीलत बाकी महीनों पर ऐसी है जैसे अल्लाह की फ़ज़ीलत मख़लूक पर है। चौथी फ़ज़ीलत शबे क़द्र की है यह हज़ार महीनों से बेहतर है। पांचवां दिन ईदुल फ़ित्र का है यह रोज़ों की जज़ा मिलने का दिन है। अशरा ज़िलहिज्जा की फ़ज़ीलत है यह अल्लाह तआला की याद के दिन हैं। सातवीं फ़ज़ीलत अरफ़ा का दिन है उस दिन का रोज़ा रखने से दो साल के गुनाहों का कफ़ारा हो जाता है। आठवां दिन नहर (क़ुरबानी) का दिन है। नवां दिन जुमा का दिन है यह दिन सय्यदुल अय्याम है। दसवां दिन आशूरा का दिन है इस दिन रोज़ा रखने से एक साल के गुनाहों का कफ़ारा अदा हो जाता है। इन तमाम दिनों की एक ख़ास इज़्ज़त उसके वक़्त पर है जो अल्लाह तआला ने इस उम्मत को अता फ़रमाई है ताकि वह उसके गुनाहों का कफ़ारा हो जाये और उम्मत को ख़ताओं से पाकी हासिल हो जाये।

बाज़ उल्मा ने कहा है कि यौमे आशूरा की वजहे तसमिया यह है कि अल्लाह तआला ने उस रोज़ दस पैग़म्बरों पर एक एक एक इनायते ख़ास फ़रमाई (कुल दस इनायतें हुईं) 1—उस रोज़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल फ़रमाई। 2—हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम को मक़ामे रफ़ीअ पर उठाया। 3—हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़श्ती उसी रोज़ कोहे जूदी पर ठहरी 4—उसी रोज़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पैदा हुए और उसी रोज़ अल्लाह तआला ने उनको अपना ख़लील बनाया, उसी दिन नमरूद की आग से उनको बचाया। 5—उसी रोज़ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल फ़रमाई और उसी रोज़ हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को (छिनी हुई) सलतनत वापस मिली। 6—उसी रोज़ हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का इब्तिला (दुख दर्द) ख़त्म हुआ। 7—उसी दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को (रूदे नील में) ग़र्क़ होने से



बचाया और फिरऔन को गर्क कर दिया। 8-उसी रोज़ हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली के पेट से रिहाई मिली। 9-उसी रोज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठाया लिया गया। 10- इसी दिन सरवरे कायनात रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैदाईश हुई।

## मुहर्रम की किस तारीख़ को आशूरा समझना चाहिए

### किस तारीख़ को आशूरा होता है

आशूरा का दिन मुहर्रम की किस तारीख़ को होता है इसमें उलमा का इख़िलाफ़ है। अकसर उलमा का कौल है (जैसा कि पहले बयान किया जा चुका) कि मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को यौमे आशूरा कहते हैं। बाज़ उलमा ने 11वीं तारीख़ को आशूरा कहा है। हज़रत आईशा सिद्दीका से जो कौल मनकूल है उसमें नवीं तारीख़ मुहर्रम को आशूरा होने का ज़िक्र है। हकीम बिन आरज ने हज़रत इब्ने अब्बास से दरयाफ़्त किया कि आशूरा का रोज़ा किस तारीख़ को रखना चाहिए, आपने फ़रमाया जब मुहर्रम का चांद नज़र आ जाये तो उससे गिनती रख लो, नवीं तारीख़ की सुबह को रोज़ा रखो, जब हकीम ने दरयाफ़्त किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इसी तारीख़ को रोज़ा रखते थे? तो आपने जवाब दिया हाँ। एक दूसरी हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास का कौल यूँ आया है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुद भी दसवें दिन रोज़ा रखा और उस दिन रोज़ा रखने का हुक्म भी सादिर फ़रमाया, सहाबा कराम ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! यहूद व नसारा इस दिन को बड़ा और बुजुर्ग जानते हैं (यानी दसवीं मुहर्रम को) तो हुजूर ने फ़रमाया कि आईन्दा साल होगा तो इन्शाअल्लाह हम 9वीं (मुहर्रम) तारीख़ को रोज़ा रखेंगे लेकिन आईन्दा साल आने से पहले ही हुजूर ने विसाल फ़रमाया।

हज़रत इब्ने अब्बास के दूसरे अलफ़ाज़ इस तरह हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर आईन्दा साल तक मैं ज़िन्दा रहा तो इन्शाअल्लाह तअला नवीं तारीख़ को रोज़ा रखूंगा। हुजूर का यह इरशाद बनज़रे एहतियात था कि कहीं आशूरा का रोज़ा न छुट जाये।

## यौमे आशूरा के बाज़ मज़ीद मसाइल

यौमे आशूरा की एक और फ़ज़ीलत यह है कि उसी दिन हज़रत इमाम हुसैन की शहादत हुई। हज़रत उम्मे सलमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे घर तशरीफ़ फ़रमा थे आपके पास हुसैन भी तशरीफ़ ले आये, मैंने दरवाज़े से देखा तो वह रसूलुल्लाह के सीने मुबारक पर चढ़े हुए खेल रहे थे, हुजूर के दस्ते मुबारक में मिट्टी का एक टुकड़ा था और चश्मे मुबारक से आंसू जारी था, जब हुसैन खेल कर चले गये तो मैं हुजूर के करीब गई और मैंने अर्ज किया कि हुजूर मेरे मां बाप आप पर कुरबान, मैंने अभी देखा कि आपके हाथ में मिट्टी थी और आप अशक़ बारी फ़रमा रहे थे? आपने फ़रमाया हुसैन मेरे सीने पर खेल रहे थे मैं बहुत खुश था



कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे वह मिट्टी लाकर दी जिस पर हुसैन को शहीद किया जायेगा यह सबब मेरी अशक बारी का था।

## अहले बैत से अच्छा सुलूक

हसन बसरी से मरवी है कि सुलैमान बिन अब्दुल मलिक (उमवी) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख्वाब में देखा कि हुजूर उसको बशारत दे रहे हैं और उस पर मेहरबानी फरमा रहे हैं, सुबह हुई तो सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ने मुझसे उस ख्वाब की ताबीर पूछी मैंने कहा कि तुमने शायद रसूलुल्लाह के अहले बैत से अच्छा सुलूक किया है सुलैमान ने कहा जी हां, यजीद बिन मुआविया के खजाने में मुझे हजरत हुसैन का सर मिला था और मैंने सरे मुबारक दीबाह के पांच कपड़ों से कफना कर अपने साथियों के साथ उस पर नमाज़ पढ़कर कब्र में दफन कर दिया, मैंने कहा कि इसी वजह से रसूलुल्लाह तुमसे राजी हो गये। इस पर सुलैमान ने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया और मेहरबानी का बरताव किया।

हमजा बिन जय्यात ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ख्वाब में देखा कि यह दोनों पैगम्बर हजरत हुसैन की कब्र पर नमाज़ पढ़ रहे हैं। शैख अबू नसर ने बिल असनाद अबू असार के हवाले से बयान किया कि जाफर बिन मोहम्मद ने फरमाया कि हजरत हुसैन की शहादत के बाद आपकी कब्र पर सत्तर हजार फरिश्ते उतरे जो कयामत तक आपके लिए अशक बारी करते रहेंगे।

## आशूरा के रोज़े पर तअन करने वाले ग़लती पर हैं

बाज़ लोग आशूरा का रोज़ा रखने वालों पर तअन करते हैं और उन हदीसों और रिवायतों पर नुक्ता चीनी करते हैं जो यौमे आशूरा की ताजीम के सिलसिला में बयान की गई हैं वह कहते हैं कि उस रोज़ रोज़ा रखना जायज़ नहीं क्योंकि उस रोज़ हजरत हुसैन शहीद किये गये थे आप की शहादत पर हमागीर रंज व मलाल होना चाहिए लेकिन रोज़ा रखकर खुशी और मुसरत का दिन करार दे लिया जाता है और उस दिन बाल बच्चों के मसारिफ़ में फराखी पैदा करके खुशी मनाई जाती है, फकीरों, मुहताजों और गरीबों को खैरात दी जाती है तमाम अहले इस्लाम पर इमाम हुसैन का जो हक़ है उसका यह तकाज़ा नहीं।

यह एतराज़ करने वाला ग़लती पर है उसका मसलक ग़लत और फ़ासिद है। अल्लाह तआला ने अपने नबीए मोहतरम के फ़रज़न्द की शहादत के लिए ऐसे दिन का इन्तखाब फरमाया जो कद्र बुजुर्गी, अज़मत व जलालत में सब दिनों से अफज़ल व बरतर था ताकि उनको ज़ाती बुजुर्गी के साथ मज़ीद बुजुर्गी और उलूए मरतबत हासिल हुआ और शहीद हुए। खुलफ़ाए राशेदीन के मरातिब पर पहुंचा दिये गये अगर आप के शहादत के दिन को मुसीबत का दिन बना लिया जाये तो इस सूरत में दो शम्बा का दिन तो सबसे ज्यादा मुसीबत का दिन ठहरता है कि उस दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई और हजरत अबू बकर ने भी



उसी रोज़ वफ़ात पाई। हश्शाम बिन अरवा से मनकूल है कि हज़रत आइशा ने फ़रमाया कि हज़रत अबूबकर ने मुझसे दरयाफ़्त किया था कि रसूलुल्लाह की वफ़ात किस रोज़ हुई थी मैंने ज़वाब दिया कि पीर के रोज़, उन्होंने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि मैं भी उसी रोज़ मरूंगा। बुनाचे आप की वफ़ात भी पीर के दिन हुई। पस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर सिदीक रजियल्लाहो अन्हो की वफ़ात तो दूसरों की वफ़ात से बहुत अज़ीम है मगर सब लोगों का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि पीर का दिन बुजुर्ग़ है, उस दिन रोज़ा रखना अफ़ज़ल है, पीर और जुमेरात के दिन अल्लाह तआला के हुज़ूर में बन्दों के आमाल पेश होते हैं पस आशूरा के दिन को भी इसी तरह मुसीबत का दिन नहीं बनाना चाहिए इस को यौमे मुसररत और इनबिसात बनाने से यौमे मुसीबत बनाना किसी तरह भी औला अनसब नहीं है। हम पहले बयान कर चुके हैं कि उस दिन तो अल्लाह तआला ने नबियों को दुश्मनों से नज़ात अता की और उनके बद ख़्वाहों को हलाक़ कर दिया, आसमान व ज़मीन को पैदा किया और अज़मत व बुजुर्गी रखने वाली तमाम चीज़ें उसी रोज़ बनाईं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया, उस रोज़ का रोज़ा रखने वाले के लिए सवाबे अज़ीम मुकरर फ़रमाया, उस दिन के रोज़ों को गुनाहों का कफ़ारा बनाया और तमाम बुराइयों से नज़ात का वसीला बनाया, इन ख़ूबियों व नेमतों के बाइस यौमे आशूरा भी ईदैन, जुमा और अरफ़ा की तरह मुतबरक़ दिन है। अब अगर ऐसे दिन को यौमे मसाइब क़रार देना जाएज़ होता है तो सहाबा क़राम और ताबईन ऐसा ज़रूर करते वह ब मुकाबला हमारे, हज़रत इमाम हुसैन से ज़्यादा क़ुरबत और ताल्लुक़ रखते थे।

हदीस शरीफ़ में उस रोज़ अहल व अयाल के नफ़का में ज़्यादा वुसअत व फ़राख़ी और रोज़ा रखने की भी तरगीब दी गई है। हसन बसरी से मरवी है कि आप के नज़दीक आशूरा का रोज़ा रखना फ़र्ज़ था और हज़रत अली उस रोज़ रोज़ा रखने का हुक्म दिया करते थे। हज़रत आइशा ने लोगों से दरयाफ़्त किया कि तुमको रोज़ा रखने का हुक्म कौन देता है लोगों ने कहा कि हज़रत अली, आप ने फ़रमाया कि बाकी हज़रात में सुन्नत से वह तमाम लोगों से ज़्यादा वाकिफ़ हैं।

हज़रत अली फ़रमाते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि जिसने शबे आशूरा में रात भर इबादत की तो अल्लाह तआला जब तक चाहे उसको ज़िन्दगी अता करता है, इन मज़कूर दलाइल से एतराज़ करने वाले के एतराज़ की ग़लती अच्छी तरह वाज़ेह हो गई।

## यौमे जुमा के फ़ज़ाइल

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

ऐ इमान वालो! जब जुमा के दिन अज़ान दी जाये (तुम को पुकारा जाये) तो नमाज़ की तरफ़ जल्दी चलो और ख़रीद व फ़रोख़्त को तर्क कर दो यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो।

हज़रत इब्ने अब्बास इसकी तफ़सीर इस तरह करते हैं कि ऐ इमान वालो! ऐ वह लोगो! जिन्होंने अल्लाह की वहदानियत का इकरार किया और उसके वाहिद व यकता होने की तसदीक़ की, जब जुमा के दिन अज़ान के ज़रिये तुमको नमाज़ के लिए बुलाया जाये तो नमाज़े जुमा के



लिए जल्द चलो और अज्ञान के बाद खरीद व फरोख्त बन्द करो अगर तुम सच जानते हो तो कमाई और तिजारत से नमाज़ तुम्हारे लिए बेहतर है।

## शाने नुजूल

इस आयत के नुजूल का सबब यह है कि यहूदियों ने मुसलमानों पर तीन बातों से तफ़ाखुर किया अब्बलन वह कहते थे कि हम अल्लाह के दोस्त और उसके महबूब हैं तुम नहीं हो, सानियन हमारी तो किताब है तुम्हारी कोई किताब नहीं है, सालिसन हमारे लिए यौमुस्बत (हफ़्ता का दिन खास है) और तुम्हारे लिए कोई दिन खास नहीं है। अल्लाह तआला ने इस आयत पर यहूदियों की तकज़ीब फ़रमा दी और उनके दावों को रद्द कर दिया और अपने नबीए मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया।

ऐ यहूदियो! अगर तुम अपने इस दावा में सच्चे हो कि दूसरे लोगों को छोड़कर सिर्फ़ तुम ही अल्लाह के दोस्त हो तो तुम मौत की तमन्ना करो (कि मौत के बाद तुम को अपनी सआदत और नजात का यकीन होना चाहिए)

और उनके दूसरे दावा की तरदीद इस तरह फ़रमाई: अल्लाह ही ने उन अनपढ़ लोगों में एक अजीमुश्शान पैगम्बर उन्ही में से मबऊस फ़रमाया

और यहूदियों की (जिनको साहिबे किताब होने पर नाज़ था) इस तरह मजम्मत फ़रमाई।

जिन लोगों पर तौरैत उतारी गई उन की हालत ऐसी है गधा बड़े बड़े दफ़्तर उठाए हुए (यानी बे अमल) और उन के तीसरे दावे (यौमे सब्त पर तफ़ाखुर) की तरदीद में फ़रमाया: ऐ ईमान वालो जब नमाज़ की अज्ञान हो जुमा के दिन, और इसके बाद इरशाद फ़रमाया: अगर उनको कोई तिजारत या खेल की बात नज़र आती है तो उसकी तरफ़ बढ़ जाते हैं (फ़ैल जाते हैं) सूरते वाकिआ यह हुई कि मदीना को कोई काफ़िला (तिजारत) आता तो लोग तालियां और नक्कारे बजा कर उस का इस्तिक़बाल करते और लोग उस काफ़िला को देखने के लिए मस्जिद से निकल कर बाहर चले जाते, जब एक रोज़ काफ़िला आही पहुंचा तो बहुत से लोग मस्जिद से निकल गए सिर्फ़ बारह मर्द और एक खातून मस्जिद में रह गई, उसके बाद एक काफ़िला और आया जब भी यही सूरत हुई कि सब लोग सिवाए बारह मर्द और एक खातून के मस्जिद से बाहर आ गए उसके बाद दहिया बिन हुलैफ़ा कलबी इस्लाम लाने से कब्ल शाम से कुछ सामाने तिजारत ले कर मदीना मुनव्वरा आया उसके पास तरह तरह का सामाने तिजारत था, उसके इस्तिक़बाल के लिए मदीना वाले तालियां बजाते और नक्कारा पीटते बाहर निकले इत्तेफ़ाक़न मदीना में उसकी आमद जुमा के दिन ऐसे वक़्त में हुई कि जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुतबए जुमा इरशाद फ़रमा रहे थे लोग (उसकी आमद का ग़ो़गा सुन कर) खुतबा छोड़ कर उस की तरफ़ चले गए, उस वक़्त हुज़ूर ने फ़रमाया देखो मस्जिद में कितने आदमी हैं, लोगों ने अर्ज़ किया बारह मर्द और एक औरत। अगर यह भी न होते तो उन सब की हिलाक़त के लिए पत्थरों पर निशान लगा दिये जाते (आसमान से पत्थर बरसते और जिस पत्थर पर जिस का नाम होता वही पत्थर उस फ़र्द को हलाक़ करता यानी सब के सब पत्थर से हलाक़ कर दिये जाते)। इस आयत में नक्कारा बजाने और तालिया पीटने को लहव से ताबीर फ़रमाया है और तिजारत से वही तिजारती माल मुराद है जो दहिया लेकर आया था, जो लोग मस्जिद में



ठहरे रहे थे उनमें हज़रत अबू बकर सिद्दीक और हज़रत उमर भी थे।

# रोज़े जुमा के फ़ज़ाइल

## अहादीसे नबी में

अल्लामा अब्दुर्रहमान ने बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: रोज़े जुमा से ज़्यादा बन्दगी और इबादत वाले दिन में न सूरज तुलूअ हुआ और न गुरुब हुआ (यानी रोज़े जुमा इबादत व बन्दगी के लिए हर दिन से अफ़ज़ल व बरतर है।)

ज़मीन पर चलने वाला हर जानवर (सिवाये जिन्न व इन्स के) रोज़े जुमा से डरता है (क्योंकि क़यामत जुमा के दिन होगी)। जुमा के दिन मस्जिद के हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते आने वाले लोगों को तर्तीब वार दर्ज करते हैं, अव्वल नम्बर पर ऐसा शख्स होता है जैसे ऊंट क़ुरबानी करने वाला, दूसरे नम्बर पर गाय की क़ुरबानी करने वाला और तीसरे नम्बर पर ऐसा शख्स जिसने बकरी की क़ुरबानी की हो, फिर ऐसा जैसे किसी ने मुर्गी अल्लाह की दी है, फिर ऐसा जैसे किसी ने अंडा पेश किया हो, जब इमाम ख़ुतबा पढ़ने खड़ा हो जाता है तो वह कागज़ लपेट दिया जाता है।

हज़रत अबू सलमा ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत बयान की है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सबसे बेहतर दिन जिस में आफ़ताब तुलूअ और गुरुब होगा जुमा का है, क्योंकि उसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा हुए उसी दिन जन्नत में दाख़िल हुए और उसी दिन जन्नत से ज़मीन पर उतारे गये, उसी दिन क़यामत काइम होगी, जुमा के दिन एक ऐसी घड़ी आती है कि उस घड़ी में बन्दा अल्लाह तआला से जो कुछ मांगेगा अल्लाह तआला उस ज़रूर अता करेगा।

## जुमा की एक साअत

हज़रत अबू सअद फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने फ़रमाया कि वह मक़बूलियत की घड़ी दिन की आख़िरी साअत है वह साअत है जिस में अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया अल्लाह तआला का इरशाद है: व ख़लक़ल इंसान मिन अजल

सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के नज़दीक जुमा यौमे फ़ित्र से भी ज़्यादा अफ़ज़ल है, उसी दिन पांच अहम काम हुए यानी उस दिन हज़रत आदम को अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाया, उसी दिन वह ज़मीन पर उतारे गये (जिस दिन वह ज़मीन पर उतारे गये वह जुमा का दिन था)। उसी दिन उनकी वफ़ात हुई, उसी दिन में एक घड़ी ऐसी है कि उस घड़ी में बन्दा अल्लाह तआला से जो कुछ मांगता है (बशर्तकि वह हराम न हो) अल्लाह तआला उसको अता फ़रमाता है, उसी दिन क़यामत काइम होगी। हर मुक़र्रब फ़रिश्ता जुमा के दिन से डरता है आसमान और ज़मीन भी क़यामत के दिन से डरते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बेहतरीन दिन जिसमें सूरज तुलूअ होता है जुमा का दिन है, उसी दिन हज़रत आदम को पैदा



किया गया, उसी दिन उनको जन्नत में दाखिल किया गया, उसी रोज़ उनको जन्नत से ज़मीन पर उतारा गया, और उसी दिन क़यामत बपा होगी। हज़रत अबू हु़रैरा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया शायद आयत च शाहिदुन व मशहूदुन में शाहिद रोज़े जुमा है, मशहूद रोज़े अरफ़ा है और अलयौमुल मौऊद से मुराद रोज़े क़यामत है, जुमा से ज़्यादा फ़ज़ीलत वाले दिन न सूरज निकला न गुरुब हुआ, उसी दिन में एक घड़ी ऐसी है कि उस घड़ी में अगर मोमिन बन्दा अल्लाह तआला से ख़ैर तलब करता है तो अल्लाह तआला उसको ज़रूर देता है और जिस शर से वह पनाह तलब करता है उसको पनाह देता है।

## मलाइका फ़ेहरिस्त मुरतिब करते हैं

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद और दिगर असनाद से बयान किया है कि हज़रत अली मुर्तज़ा ने फ़रमाया जुमा का दिन होता है तो शयातीन झण्डे लेकर निकलते हैं और लोगों को बाज़ारों की तरफ़ ले जाते हैं और मलाइका मस्जिदों के दरवाज़ों पर उतर कर आने वालों के नाम हस्बे मरातिब आमद लिखते हैं, अब्बल, उसके बाद दोम, दोम के बाद सोम और इसी तरह बित्तीब यहां तक कि इमाम बरआमद होता है। जो शख्स इमाम से करीब होकर ख़ामोशी के साथ खुतबा सुनता है और उस असना में कोई लग्व बात नहीं करता उसका अज़्र एक हिस्सा होता है और जो इमाम के करीब रहकर कोई लग्व बात करता है और ख़ामोश रहकर खुतबा नहीं सुनता उस पर दोहरा गुनाह होता है, और जो इमाम से दूर रहकर लग्व बात करता है और ख़ामोशी से खुतबा नहीं सुनता उसपर बड़ा गुनाह होता है, यहां तक ख़ामोश रहने की ताकीद है कि अगर एक शख्स ने खुतबा के दौरान दूसरे शख्स से कहा ख़ामोश, तो उसने भी लग्व बात की और उसका जुमा नहीं हुआ, इसके बाद हज़रत अली ने मज़ीद फ़रमाया मैंने तुम्हारे पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसा ही सुना है। हज़रत अबू हु़रैरा से मरवी है कि मैंने खुद सुना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे इमाम के खुतबा के दौरान अगर तू ने अपने साथी से कहा ख़ामोश रह, तो तू ने लग्व बात की। अम्र बिन शुऐब ने अपने वालिद से रिवायत की कि उनके दादा ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुमा के रोज़ मस्जिदों के दरवाज़ों पर मलाइका खड़े होते हैं और वह आने वाले लोगों को कहते रहते हैं यहां तक कि इमाम बरआमद हो जाता है उस वक्त वह कागज़ तय कर लेते हैं और कलम उठा लिए जाते हैं मलाइका आपस में कहते हैं कि फ़लां शख्स किस वजह से नहीं आया और फ़लां शख्स क्यों नहीं आया। इलाही अगर वह बीमार है तो उसको शिफ़ा दे और अगर वह रास्ता भूल गया हो तो उसको रास्ता बता दे, अगर वह मुसाफ़िर है तो उसकी मदद फ़रमा।

## जुमा के दिन जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वाले

जाफ़र बिन साबित ने अपने वालिद का कौल नक़ल किया है कि अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते चांदी की तख़्तियां और सोने के कलम लेकर उन लोगों के नाम लिखते हैं जो जुमा की रात या दिन में जमाअत के साथ नमाज़ अदा करते हैं। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद के हवाले से अबुल जुबैर हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह का यह कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह ने



इरशाद फरमाया की जो शख्स अल्लाह और रोजे आखिरत पर ईमान रखता है उस पर जुमा के दिन जुमा की नमाज फर्ज है अलबत्ता बीमार, मुसाफिर, औरत, बच्चा और गुलाम इस हुक्म से मुसतस्ना हैं।

## तिजारत व लहव व लईब में मशगूल रहने वाला

जो शख्स खेल कूद और तिजारत में मशगूलियत के बाएस जुमा की नमाज से बेपरवाह हो जाता है अल्लाह तआला भी उससे बेपरवाह हो जाता है। अल्लाह तआला बेनियाज है। अबुल जहर खमरी की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस ने हकीर (मामूली बात) समझ कर तीन जुमा तर्क कर दिए अल्लाह उसके दिल पर मोहर कर देता है। शैख अबू नसर ने बिल असनाद रिवायत की कि हजरत जाबिर ने फरमाया कि मैंने खुद सुना की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ फरमा थे और फरमा रहे थे लोगों मरने से पहले अल्लाह से तौबा कर लो और रुकावट पैदा होने से पहले नेक आमाल करने में उजलत करो और जिक्रे इलाही की कसरत से तुम्हारे और खुदा के दर्मियान जो रिश्ता है उसको जोड़ो, छुपाकर और खुल्लम खुल्ला खैरात करो, तुमको अज्र भी मिलेगा और तुम्हारी तारीफ भी की जाएगी, तुम्हारा रिज्क भी ज्यादा होगा, जान लो कि अल्लाह ने जुमा की नमाज तुम पर इस महीने में उस जगह उस साल अब कयामत तक के लिए कतई फर्ज कर दी है, जिस शख्स को मौका मिले वह जरूर पढ़े मेरी हयात में या मेरे बाद जो शख्स इंकार करके या मामूली बात समझ कर जुमा की नमाज को ऐसी हालत में तर्क करे कि उसके लिए कोई खलीफा या नाएबे खलीफा मौजूद हो ख्वाह वह इमाम आदिल हो या फासिक तो अल्लाह उसकी परेशानी दूर फरमाए और न उसके काम में बरकत दे।

खूब सुन लो कि ऐसे शख्स की न नमाज है न वुजू है न जकात है न हज है, गौर से सुनो ऐसे आदमी को कोई बरकत नसीब नहीं होगी जब तक वह तौबा न करे, अगर वह तौबा करेगा तो अल्लाह तआला भी उसकी तौबा कबूल कर लेगा।

औरत मर्द की, देहाती मुहाजिर की, फासिक (सालेह) मोमिन की इमामत न करे ता वक्तेकि उसे किसी जाबिर व जालिम बादशाह की तलवार या कोड़े का डर न हो।

## जुमा के दिन की हैयत

अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हजरत अबू मूसा अशअरी का यह कौल नक्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला कयामत के दिन तमाम दिनों को उनकी हैयत पर महशूर व मबऊस फरमाएगा लेकिन जुमा को रौशन और नुमायां हैयत पर उठाएगा, अहले जुमा (जुमा के नमाजी) उसके इर्द गिर्द जुलू में इस तरह जा रहे होंगे जैसे दुल्हन को झुर्मुट में शौहर के पास ले जाते हैं, जुमा ऐसा रौशन होगा कि उसकी रौशनी में लोग चलेंगे, जुलू में चलने वालों के रंग बर्फ की तरह सफेद होंगे और उन से मुश्क की खुशबू आती होगी वह काफूर के पहाड़ों के अन्दर अन्दर चलेंगे दूसरे लोग ताज्जुब से उनकी तरफ तकते होंगे यहां तक कि वह उसी सूरत में जन्नत में दाखिल हो जायेंगे, सिवाए उन मोअज्जिनों के जो सवाब की उम्मीद में जुमा की अजान देते हैं कोई और उन के साथ शामिल नहीं होगा।



## जुमा के दिन छः लाख दोजखी आजाद होते हैं

हजरत अनस बिन मालिक का यह कौल भी शैख अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद के साथ नक़ल किया है कि उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला हर जुमा को छः लाख दोजखियों को दोजख आजाद फ़रमाता है, जुमा के दिन रात के चौबिस घंटे होते हैं और हर घंटा में छः लाख दोजखी दोजख से आजाद होते हैं। इसी हदीस शरीफ़ के दूसरे अलफ़ाज़ इस तरह हैं दुनिया के हर घंटा में छः लाख अफ़राद जो दोजख के मुसतहिक होते हैं दोजख से अल्लाह तआला की तरफ़ से आजाद किये जाते हैं लेकिन जुमा के दिन और रात के चौबिस घंटों में कोई साअत भी ऐसी नहीं होती कि छः लाख दोजखी अल्लाह तआला की तरफ़ से दोजख से आजाद न किये जाते हों।

## जुमा की नमाज़ बा जमाअत का सवाब

हजरत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैल रिवायत करते हैं कि हजरत अबू दरदा ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख्स जुमा के दिन जुमा की नमाज़ जमाअत से पढ़ता है अल्लाह तआला उसके लिए एक मक़बूल हज का सवाब लिख देता है और अगर उसी जगह (मस्जिद में) रह कर वह अस्त्र की नमाज़ भी पढ़ता है तो उसके लिए उमरा का सवाब भी मख़सूस हो जाता है और अगर उसी जगह रह कर वह मगरिब की नमाज़ अदा करे तो कोई चीज़ ऐसी नहीं कि वह अल्लाह तआला से मांगे और उसको न मिले।

हजरत अबू अमामा बाहिली कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने जुमा के दिन इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी और किसी जनाज़ा में हाज़री दी और कुछ सदका दिया, किसी बीमार की अयादत की और किसी निकाह में भी हाज़िर हुआ उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई।

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद रिवायत की कि उम्र बिन शुऐब ने अपने वालिद के हवाला से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुमा की नमाज़ में तीन किस्म के लोग होते हैं एक वह जो खुतबा के वक़्त बेकार बातें करता और नमाज़ में शरीक होता है उसका हिस्सा (रहमते इलाही) से बस एक तो वही है जो वह खुतबा के वक़्त मांगता है अल्लाह तआला को इख़्तियार है चाहे उसे दे या न दे, एक वह है जो ख़ामोशी के साथ मुतवज्जेह होकर खुतबा सुनता है और किसी मुसलमान की गरदन को नहीं फलांगता न किसी को ईज़ा पहुंचाता है ऐसी नमाज़ उस नमाज़ी के लिए आने वाले जुमा और उसके तिन दिन बाद तक के लिए मुतवातिर उसके गुनाहों का कफ़ारा बन जाती है क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है जो नेकी करेगा उसको दस गुना अज़्र दिया जाएगा (लिहाज़ा यह दस दिन हो गए)। हदीस शरीफ़ में आया है कि हज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ज़मीन पर चलने वाला हर जानवर अपने पांव पर खड़ा हुआ जुमा के रोज़ क़यामत बरपा होने से डरता है सिवाए शैतान और बद बख़्त इंसानों के कि यह नहीं डरते।

कहते हैं कि जुमा के रोज़ परिन्दे और कीड़े मकोड़े बाहम मिलते हैं और कहते हैं कि तुम्हारे लिए सलामती हो आज का दिन कितना अच्छा है। एक और हदीस में आया है कि हर रोज़ ज़वाले शम्स ज़हवए कुबरा से पहले जब खुर्शीद निसफुन्नहार पर होता है तो दोजख की आग



तेज़ की जाती है तुम उस साअत में नमाज़ न पढ़ो हां जुमा का दिन सरा सर नमाज़ ही है (उसका हर लहज़ा व लमहा नमाज़ है)। उस रोज़ जहन्नम की आग तेज़ नहीं होती।

## जुमा के दिन गुस्ल करके मस्जिद में जाना

हज़रत अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरा का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुमा के दिन गुस्ल करके जो शख्स पहली घड़ी ही में मस्जिद में गया यानी अब्ल वक़्त, उसने (अज़रूए सवाब) गोया ऊंट की कुरबानी की और जो दूसरी साअत में गया उसने गोया गाय कुरबान की और जो तीसरी साअत में गया उसने गोया सींगों वाले मेंढे की कुरबानी की और जो चौथी साअत में गया उसने मुर्गी अल्लाह की राह में दी और जो पांचवी साअत में गया उसने गोया एक अण्डा ख़ैरात करने का सवाब हासिल किया। उसके बाद जब इमाम बरआमद हो जाता है तो फ़रिश्ते खुतबा सुनने के लिए उठ जाते हैं (उन नामों का इन्दराज ख़त्म हो जाता है)।

## दिन की साअतों के औकात

पहली साअत सुबह की नमाज़ के बाद होती है, दूसरी सूरज कुछ बलन्द होने, तीसरी साअत धूप फैल जाने पर यानी चाश्त के वक़्त (जब सूरज की गरमी से रेत इस क़दर गर्म हो जाती है कि पैर जलने लगते हैं) चौथी साअत ज़वाल से पहले शुरू होती है और पांचवी साअत सूरज के ज़वाल (ख़त्म या ठिक ज़वाल के वक़्त) से शुरू होती है। हज़रत नाफ़ेअ की रिवायत है कि हज़रत इब्न उमर ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि जो शख्स जुमा को गुस्ल करता है अल्लाह तआला उसको गुनाहों से पाक व साफ़ कर देता है फिर उसे कहा जाता है कि (आईन्दा के लिए) अज़ सरे नौ अमल शुरू कर (पिछले गुनाह तो माफ़ हो गये)।

एक रिवायत में आया है कि जिसने दूसरे को नहलाया और खुद भी नहाया और अब्ल वक़्त ही मस्जिद में आ गया, इमाम के करीब बैठा और कोई लग्व हरकत नहीं की तो उसके लिए हर कदम पर एक साल के दिन के रोज़े और उनकी नमाज़ें लिखी जाती हैं, हर जुमा को बीवी से कुरबत करना उलमा के नज़दीक मुसतहब है। सलफ़े सालेहीन में बाज़ हज़रात इस हदीस के ततब्बो में ऐसा ही अमल करते थे बाज़ उलमाए सल्फ़ ने इसके मानी यह कहे हैं कि जिस ने अपना सर धोया या अपना बाकी जिस्म धोया यानी नहाया।

## जुमा के दिन के गुस्ल की ताकीद

हज़रत हसन बसरी ने हज़रत अबू हुरैरा का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया अबू हुरैरह! हर जुमा के दिन गुस्ल किया करो ख़ाह पानी (बवजहे गिरानी) तुम को अपनी उस रोज़ की ख़ोराक के एवज़ ही क्यों न ख़रीदना पड़े। अकसर फुक़हा ने गुस्ले जुमा को मुसतहब करार दिया है। दाऊद के नज़दीक वाजिब है जुमा की नमाज़ पढ़ने वाले के लिए गुस्ले जुमा को तर्क करना मुनासिब नहीं है।

## गुस्ल का वक़्त

गुस्ले (जुमा) का वक़्त सुबहे सादिक के तुलूअ बाद से शुरू होता है। ज़्यादा मुनासिब और



औला यही है कि गुस्ल से फरागत के फौरन बाद मस्जिद को रवाना हो जाए ताकि हदीस शरीफ का इत्तेबा हो जाए और जुमा की नमाज तक तहारत टूटने से खूद को महफूज रखना चाहिए गुस्ल से मकसूद खिदमत मौला समझिए (यानी जुमा की नमाज की अदाएगी)।

अगर एक शख्स जनाबत की हालत में सुबह को उठा और उसने जनाबत दूर करने और जुमा की नमाज अदा करने की नियत से वुजू करके गुस्ल कर लिया तो यह जाइज है। जुमा के रोज बाल साफ करके, नाखून तरशवा कर बदन से बदबू दूर करके यानी खूब अच्छी तरह गुस्ल करके पाकीजगी हासिल करे, जो बेहतरीन लिबास उसको मयस्सर हो वह पहने, सफेद कपड़े पहनना औला है, अमामा बांधे और चादर ओढ़े। हदीस शरीफ में आया है कि जुमा के रोज अमामा पहनने वाले के लिए फरिश्ते नुजूल रहमत की दुआ करते हैं। तबदीले लिबास के बाद जो अच्छी खुशबू मयस्सर आए वह इस्तेमाल करे लेकिन खुशबू के कपड़ों पर दाग नहीं पड़ना चाहिए यानी रंग जाहिर न हो सिर्फ खुशबू फैले, इसके बाद सुकून, तहम्मूल, बुर्द बारी, खुशूअ व खुजूअ के साथ बारगाहे इलाही का मोहताज बन कर दुआए इस्तिगफार और कसरत के साथ दरूद शरीफ का विर्द करता हुआ घर से बरआमद हो और जामा मस्जिद पहुंच जाए, वह घर से निकले और मस्जिद को जाने को वह खानए खुदा में अल्लाह के हुजूर हाजरी समझे और फर्जे इलाही की अदाएगी को कुर्बे इलाही का जरिया जाने और घर वापस आने तक मस्जिद में एतकाफ की नियत करे, रास्ता में और मस्जिद जामा में खेल कूद और लम्ब बातों से परहेज करे, जुमा के दिन राहत व आराम दुनियावी लज्जतों से दस्त कश हो जाए। वजाइफ व औराद और इबादात में मुसलसल मशगूल रहे। जुमा के दिन के आगाज से नमाजे जुमा की अदाएगी तक सारा वक्त खुदाबन्द तआला की खिदमत यानी औराद व वजाइफ में सर्फ करे, दोपहर से नमाजे अस्र तक दीनी मसाइल के सुनने और मोएजत व तजकीर की मजलिसों में गिरकत के लिए मखसूस कर दे। अस्र की नमाज से मगरिब तक तसबीह व इस्तिगफार में मसरूफ रहे। उस वक्त शबाना रोज में हर जिक्र से अफजल यह जिक्र है (उसमें मशगूल व ससरूफ रहे)।

## जुमा का अफजल तरीन जिक्र

जुमा के तमाम औकात में अफजल तरीन जिक्र यह है:

ला इलाहा इल्लल्लाही वहदहु ला शरीका लहु लहुल मुल्को व लहुल हम्दो यूह ई व यूमीतो वहो व हय्युल ला यमूतो बेयदेहिल खौर वहो व अला कुल्ले शैइन कदीर इसके बाद दो सौ बार सुब्हानुल लाहिल अजीम व बेहम्देही सौ बार ला इलाहा इल्लल्लाही अल मलकुल हक्कुल मुबीन सौ मरतबा (यह दरूद शरीफ) अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिन अब्देका व रसूलेकन्नबीयुल उम्मी इसके बाद सौ मरतबा अस्तगफेरुल्लाहुल हय्युल कय्यूम व असअलोहुत्तौबा फिर सौ मरतबा माशा अल्लाहो ला कुव्वाता इल्ला बिल्लाह

रिवायत है कि बाज सहाबा कराम रोजाना बारह हजार मरतबा तसबीह पढ़ा करते थे। एक रिवायत में आया है कि बाज ताबेईन रोजाना तीस हजार बार तसबीह पढ़ते थे उनमें से हर एक अपनी नमाज और अपनी तसबीह से वाकिफ था यानी पाबन्द था तुम इस बात से डरो कि कहीं तुम महरूम रहने वालों में शामिल न हो जाओ, अगर तुम अल्लाह को याद न करोगे तो अल्लाह



तआला की बारगाह में तुम्हारा जिक्र भी नहीं होगा। पहले मोमिन खुदा को याद करता है फिर उसका जिक्र और उसकी याद बारगाहे इलाही में होती है चुनांचे इरशाद फरमाया: फज़्करुनी अज़ करोकुम।

नमाज़े जुमा से कबल ऐसे शख्स के पास जाना मुनासिब नहीं जो किस्से कहानिया सुनाता है। (ऐसे वाएज़ जिनकी तकरीर चुटकुल, लतीफों और किस्सों पर मबनी होती है और इल्मी हैसियत बिल्कुल मफ़कूद हमारे ज़माने में तो ऐसे ही हज़रत का अलम बुलन्द है। हज़रत सय्यदना गौसुल आजम के ज़माने में भी ऐसे लोग मौजूद थे उन्ही ही सोहबत से मना किया गया है मुतर्जिम) क्योंकि किस्से कहानियां सुनाना और कहना बिदअत है। हज़रत इब्ने उमर और दूसरे सहाबा कराम ऐसे किस्सा कहने वालों को जामा मस्जिद से निकलवा देते थे हां अगर वह किस्सा गो दीन का इल्म रखता हो और उसको मारफ़ते इलाही हासिल हो तो उसकी मजलिस में हाज़िर होना नमाज़ से बढ़कर है (यानी उसका सवाब बहुत ज़्यादा है) हज़रत अबू ज़र से मरवी है हदीस में है कि इल्म की मजलिस में हाज़िर होना हज़ार रकअत नमाज़े नफ़ल से बेहतर है।

## लोगों को फलांगना मना है

जब नमाज़ी मस्जिद में पहुंचे तो लोगों की गरदने न फलांगें (यानी पिछे से आगे पहुंचने की कोशिश में सफ़ों का दरहम बरहम करता हुआ आगे न निकले) हां अगर इमाम या मोअज़्ज़िन हो तो मोज़ाएका नहीं है (उसके लिए मना नहीं है) एक रिवायत में आया है कि एक शख्स को हुज़ूर रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा कि वह लोगों की गरदने फलांग रहा है, हुज़ूर ने उससे फरमाया ऐ शख्स तुझे हमारे साथ जुमा पढ़ने से किस चीज़ ने रोक दिया, उसने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या आप ने मुलाहिज़ा नहीं फरमाया कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था, हुज़ूर ने फरमाया मैंने देखा कि तू आखिर में तौ आया और लोगों को दुख दिया, (लोगों की गरदनें फलांगकर आगे बढ़ा) एक और हदीस के अल्फ़ाज़ इस तरह से हैं कि हुज़ूर ने फरमाया तुने आज जुमा क्यों नहीं पढ़ा? उस शख्स ने अर्ज़ किया या नबी अल्लाह मैंने जुमा की नमाज़ पढ़ी थी, हुज़ूर ने फरमाया क्या मैंने तुझे लोगों की गरदनें फलांगते हुए नहीं देखा, यानी तू लोगों की गरदनें फलांग रहा था। याद रखो कि जिसने ऐसा अमल किया उसकी पीठ क़यामत के दिन दोज़ख़ का पुल बनाई जाएगी लोग उसके ऊपर से गुज़रेंगे और उसको पामाल करेंगे।

## नमाज़ी के सामने से गुज़रने की मुमानियत

खबरदार! नमाज़ी के आगे से न गुज़रना। हदीस शरीफ़ में आया है कि चालिस साल तक एक जगह पर ठहरे रहना नमाज़ी के सामने से गुज़रने वालों के लिए बेहतर है। एक दूसरी हदीस में इस तरह आया है कि नमाज़ी के सामने से गुज़रने वाला अगर खाक हो जाए कि उसको हवा में उड़ा दें तब भी यह बेहतर होगा ब मुकाबला इसके कि नमाज़ी के सामने गुज़रे। किसी नमाज़ी को उसकी जगह से उठा कर खुद न बैठे क्योंकि एक रिवायत में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम में से कोई शख्स अपने भाई को उसकी जगह से उठा कर उसकी जगह खुद न बैठे। हज़रत इब्ने उमर के लिए अगर कोई अपनी जगह छोड़ कर खड़ा हो जाता तो आप उस जगह पर नहीं बैठते बल्कि वह खुद ही वापस आकर अपनी जगह पर बैठ जाता था।



इमाम अहमद से दरयाफ्त किया गया अगर किसी के सामने जगह खाली हो तो ऐसी सूरत में क्या लोगों को फलांग कर उस जगह पर बैठ जाना जाएज है? इसके जवाब में इमाम अहमद ने फरमाया अपने साथी को उस जगह पर बढ़ाये और खुद उसकी जगह पर बैठ जाये तो बेहतर है अगर कोई अपने लिए कपड़ा वगैरा बिछा कर चला जाये (जगह को अपने लिए मखसूस कर दे) तो दूसरे के लिए जायज है कि उसे हटा कर बैठ जाये। इमाम के करीब बैठने में ज्यादा सवाब है। जब इमाम खुतबा दे रहा हो तो खामोशी से सुने बातें न करे अगर ऐसा करेगा तो गुनहगार होगा, खुतबा शुरू होने से पहले और खुतबा होने के बाद कलाम करना हराम नहीं है।

## रोजे जुमा की मजीद खुसूसियात

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हजरत इमाम मालिक से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मेरे पास जिब्रील सफ़ेद पर हाथ में लिए हुए तशरीफ लाये उस पर मैं एक सियाह नुक्ता था, मैंने दरयाफ्त किया कि हाथ में क्या है? जिब्रील ने कहा कि यह जुमा का दिन है जिसमें आप सबके लिए ख़ैरे कसीर है मैंने पूछा कि सियाह नुक्ता क्या है? उन्होंने कहा कि यह कयामत है जो जुमा के दिन कायम होगी। जुमा सय्युदल अय्याम है हम मलाए आला (आलमे मलकूत) में इसको यौमुल मजीद कहते हैं, मैंने कहा कि यौमुल मजीद कहने की क्या वजह है जिब्रील ने कहा जन्नत में अल्लाह तआला ने एक वादी बनाई है जिसकी खुशबू सफ़ेद मुश्क से ज्यादा है जब कयामत का जुमा आयेगा (वह जुमा जिस रोज़ कयामत बपा होगी) तो अल्लाह तआला उस वादी में जलवा अफ़रोज़ होगा उसकी कुर्सी के गिर्दा गिर्द नूर के मेम्बर होंगे जिन पर अंबिया अलैहिमुस्सलाम तशरीफ़ फ़रमा होंगे। उन मनाबिर के पास सोने की जड़ाओ कुर्सियाँ होंगी उन कुर्सियों पर शोहदा व सिद्दिकीन बैठे होंगे फिर अहले गरफ़ा आयेंगे और वह वादी भर जायेगी, फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मैंने तुम से जो वादा किया था वह पूरा कर दिया यानी तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और अपनी इज्जत की मक़ाम पर तुम को जगह दी। फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि अब तुम मुझसे अपनी मुराद तलब करो, उस वक़्त सबके सब अर्ज करेंगे इलाही हम तेरी ख़ूशनूदी के तालिब हैं, उस वक़्त इरशाद होगा कि मेरी ख़ूशनूदी ही ने तो तुमको इस घर में उतारा है मेरी अता की हुई इज्जत तुमको हासिल हुई, फिर फ़रमायेगा मुझ से मांगो सब लोग वही जवाब देंगे, फिर इरशाद होगा कि मुझ से मांगो आखिरकार बन्दे अपनी मुरादें मांगेंगे यहां तक कि हर बन्दे की आरजू और मुरादें ख़त्म हो जायेंगी उस वक़्त हर एक कहेगा कि हमारे लिए हमारा रब काफी है। उस वक़्त नमाज़े जुमा से वापसी की मिक़दार के मुताबिक़ (यानी जितना वक़्त नमाज़े जुमा से वापसी में बन्दा का सर्फ़ हुआ था उसके बक़्द्र) वह चीज़ें उसकी नज़रों के सामने लाई जायेंगी जो अब तक न किसी आंख ने देखी न किसी कान ने उनके बारे में सुना होगा किसी के दिल में उसका तसव्वुर आया होगा। यह सब गरफ़ा वाले अपने गरफ़ों की जानिब वापस हो जायेंगे, हर गरफ़ा (बाला ख़ाना) सफ़ेद मोती, सुख़ याकूत और सब्ज़ ज़मुरद का होगा न उसमें कोई नक्स होगा और न किसी किस्म की टूट फूट होगी, उन गरफ़ों के अन्दर नहरें बहती होंगी, दरख़्त और सब्ज़े की बुहतात होगी, दरख़्त फलों से लदे होंगे, उनकी बीवियों के रहने के लिए मख़सूस जगहें होंगी, ख़िदमतगार ख़िदमत के लिए होंगे उस वक़्त वह (यह इनामात देखकर) किसी चीज़ के



गुनियतुतालिबीन  
इतने जरूरतमन्द नहीं होंगे जितने जुमा के दिन के लिए इस लिए कि अल्लाह के फज़ल व करम में उससे इज़ाफ़ा होगा।

## जुमा के दिन जिब्रील काबा में अपना झंडा नस्ब करते हैं

शैख अबू नसर ने बिल असनाद अस्वग बिन नबान से रिवायत की है कि उनसे हज़रत अली ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह फ़रमाते थे जुमा का दिन होता है तो जिब्रील अमीन सुबह दम काबा (मस्जिदे हराम) में अपना झंडा नस्ब करते हैं इसी तरह दूसरे फ़रिश्ते भी उन मसाजिद के दरवाज़ों पर जहां जुमा की नमाज़ होती है अपने झंडे और अलम नस्ब कर देते हैं फिर चांदी के कागज़ पर सोने के कलम से जुमा की नमाज़ के लिए आने वालों के नाम बित्तरतीब (आमद) लिखते जाते हैं, जब तरतीबवार आने वालों की तादाद सत्तर हो जाती है तो यह कागज़ तय कर दिए जाते हैं जुमा में बित्तरतीब आने वाले यह सत्तर आदमी उन सत्तर आदमियों की तरह होते हैं जिनका इन्तखाब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम से किया था और यह सबके सब नबी थे, उसके बाद फ़रिश्ते सफ़ों में आकर नमाज़ियों को देखते हैं जब किसी नमाज़ी को नहीं पाते हैं तो आपस में पूछते हैं कि फ़लां नमाज़ी कहा है अगर वह फ़ौत हो गया है तो उसके लिए दुआए मग़फ़िरत करते हैं और कहते हैं कि वह जुमा का पाबन्द था, फिर कहते हैं कि फ़लां शख्स क्यों नहीं आया तो कहते हैं कि फ़लां शख्स सफ़र में है सवाल करने वाले फ़रिश्ते कहते हैं अल्लाह उसको अपनी अमान में रखे वह जुमा का पाबन्द था फिर दरयाफ़्त करने वाले (फ़रिश्ते) दरयाफ़्त करते हैं कि फ़लां शख्स का क्या हुआ तो जवाब देते हैं कि फ़लां शख्स बीमार है तो पूछने वाले फ़रिश्ते उसके लिए सेहत की दुआ करते हैं कि वह जुमा का पाबन्द था।

## जुमा के दिन दुआ की कबूलियत की साअत

जुमा के दिन एक साअत ऐसी आती है कि उस साअत में बन्दा अल्लाह तआला से जो कुछ दुआ करता है अल्लाह तआला उसकी दुआ कबूल कर लेता है। शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा का कौल नक़ल किया है कि उन्होंने फ़रमाया कि मैं तूर पर गया वहां मेरी मुलाकात कअबुल अहबार से हुई मैंने उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहादीस बयान की, हमारा उनका किसी चीज़ में इख़तेलाफ़ नहीं हुआ यहां तक कि मैंने यह हदीस बयान की कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया है कि जुमा के दिन एक साअत ऐसी है कि ठीक उस वक़्त अगर कोई मोमिन नमाज़ पढ़ता है और अल्लाह से ऐसी चीज़ की दुआ मांगता है जिसमें ख़ैर हो तो अल्लाह उसको मरहमत फ़रमा देता है। कअब ने कहा क्या हर साल में एक साअत आती है? मैंने कहा कि नहीं बल्कि हर जुमा के दिन। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यही फ़रमाया है यह सुनकर कअब कुछ दूर गये और फिर पलट आये और बोले आप ने सच कहा खुदा की क़सम ऐसी साअत हर जुमा में है जबकि यह रसूलुल्लाह ने फ़रमाया है। जुमा सय्यदुल अय्याम है और अल्लाह तआला को हर दिन से ज़्यादा पसन्द है, उसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश हुई उसी दिन उनको जन्नत में दाख़िल किया गया और उसी दिन वह जन्नत से ज़मीन पर उतारे गये उसी दिन क़यामत कायम होगी, जिन्न व इन्स के सिवा ज़मीन पर चलने वाला हर जानवर कान लगाये उस दिन का मुनतज़िर है जो जुमा के दिन वाक़ेअ होगी।



मैं वापस आकर अब्दुल्लाह बिन सलाम से मिला उनसे वह गुप्तगू बयान की जो कअब से और मुझ से हुई थी, हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा कअब ने साल की बात ग़लत कही थी तौरैत में भी वही है जो रसूल ने फ़रमाया था मैंने कहा कअब ने अपने पहले कौल से (साल वाली बात से) रुजूअ कर लिया था।

अब्दुल्लाह बिन सलाम ने फ़रमाया मुझे मालूम है कि जुमा के दिन वह साअत कौन सी है मैंने कहा कि बताइये वह साअत कौन सी है उन्होंने फ़रमाया जुमा के दिन की आखिरी साअत, मैंने कहा यह किस तरह मुमकिन है कि ठीक उस साअत में कोई मोमिन नमाज़ पढ़े (जबकि आखिरी साअत नमाज़ का वक़्त नहीं है) उन्होंने फ़रमाया क्या तुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद नहीं सुना कि जो फ़र्ज नमाज़ का इन्तज़ार करता है वह गोया नमाज़ ही में होता है, मैंने कहा जी हां, मैंने यह इरशाद सुना है, उन्होंने फ़रमाया बस इसका यही मतलब है।

एक और रिवायत में मोहम्मद बिन सीरी ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जुमा के दिन एक साअत ऐसी है कि मोमिन अल्लाह तआला से ख़ैर कि दुआ करे तो वह ज़रूर क़बूल होती है फिर आपने उंगली से इशारा करते हुए कहा कि वह साअत बहुत मख़्तसर होती है बाज़ बुजुर्गाने मिल्लत ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के पास बन्दों के उस मोकर्ररा रिज़्क के अलावह एक रिज़्क का फ़ज़ल और है जिस से सिवाए उस शख्स के जो जुमेरात की शाम या जुमा के दिन सवाल करे किसी और को कुछ नहीं दिया जाता।

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद रिवायत कि है कि मरजाना से हज़रत सय्यदा फ़ातमा ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुमा के दिन एक ऐसी साअत है कि उस वक़्त अगर बन्दा अल्लाह तआला से को ख़ैर का तानिब होता है तो अल्लाहा तआला उसको ज़रूर अता फ़रमाता है। मैंने अर्ज किया कि वह कौन सी साअत है? हुज़ूर ने फ़रमाया जब निस्फ़ सूरज गुरुब की तरफ़ झुक जाता है।

मरजाना का बयान है कि (उस इरशादे वाला के पेशे नज़र) जब जुमा का दिन होता तो हज़रत फ़ातमा अपने गुलाम ज़ैद को हुक्म देती थीं कि वह एक बलन्द मक़ाम पर चढ़ कर यह देखता रहे और जब निस्फ़ सूरज गुरुब की तरफ़ झुक जाए तो उनको आगाह कर दे, चुनांचे ज़ैद ऐसा ही किया करता था, जिस वक़्त ज़ैद आप को ख़बर करता आप फौरन उठकर मस्जिद में तशरीफ़ ले जातीं और जब सूरज गुरुब हो जाता तो नमाज़ अदा फ़रमातीं। कसीर बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद का और उन्होंने अपने दादा का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जुमा में एक साअत ऐसी होती है कि उस वक़्त बन्दा अल्लाह से जो कुछ मांगता है अल्लाह उसका सवाल ज़रूर पूरा कर देता है। अर्ज किया गया या रसूलुल्लाह वह कौन सी घड़ी है? हुज़ूर ने फ़रमाया इक़ामते सलात से ख़त्मे नमाज़ तक। कसीर बिन अब्दुल्लाह ने कहा कि जुमा से सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुराद जुमा कि नमाज़ है।

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद बयान किया कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते थे कि यह दुआ रसूलुल्लाह पर नाज़िल हुई, हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि



जुमा की (मुकर्ररा) साअत में मशरिक से मगरिब तक किसी चीज़ के लिए भी अगर दुआ की जाएगी तो जरूर कबूल होगी वह दुआ यह है:

ऐ अजीम बख्शाने वाले! ऐ एहसान करने वाले! ऐ आसमान व ज़मीन के पैदा करने वाले! ऐ साहबे जलाल व इकराम! तू पाक है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

सफ़वान बिन सलीम का कौल है कि मुझे यह बताया गया है कि जुमा के रोज़ इमाम के मिम्बर पर बैठने के वक्त जो शख्स **ला इलाहा इल्लल्लाहो वहदहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्को व लहुल हम्दो यूह ई व यूमीतो वहो व अला कुल्ले शैइन कदीर** कहता है उसको बख्श दिया जाता है।

हज़रत बरआ बिन आजिब ने फ़रमाया मैंने खुद सुना है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमा रहे थे कि रमज़ान में दूसरे दिनों पर जुमा को ऐसी फ़ज़ीलत हासिल है जैसी बाकी दिनों पर रमज़ान को फ़ज़ीलत है।

## जुमा के दिन दरूद व सलाम पेश करना

### जुमा के दिन दरूद शरीफ़ ज़्यादा पढ़ना चाहिए

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अली का यह कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जुमा के दिन मुझ पर दरूद ज़्यादा पढ़ा करो क्योंकि उस रोज़ आमा़ल (का सवाब) दो गुना कर दिया जाता है और मेरे लिए अल्लाह तआला से दरज़ए वसीला कि दुआ मांगा करो, किसी ने दरयाफ़्त किया कि या रसूलुल्लाह दरज़ए वसीला क्या है? हुज़ूर ने फ़रमाया यह जन्नत में एक ऐसा आला मक़ाम है जो सिर्फ़ एक नबी को अता होगा और मुझे यकीन है कि मैं ही वह नबी हूँ (जिसको वह मक़ाम अता होगा)।

मोहम्मद बिन मुनक़दर कहते हैं कि हज़रत जाबिर से रिवायत है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख्स अज़ान सुनकर यह कहेगा अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़ेहिद्दावतित्ताम्मति वस्सलामतिल काइमती आते मोहम्मद निल वसीलतुल फ़ज़ीला वदरज़तरर रफीअता वबअसहू मुक़ामन महमूदा निल्लज़ी व अदतहु। उस शख्स के लिए मेरी शफ़ाअत हलाल हो गई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि मैंने खुद हुज़ूरे सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाते हुए सुना कि रौशन रात और रौशन दिन यानी जुमा की रात और जुमा के दिन (जिस की रात भी रौशन और दिन भी रौशन है) अपने पैग़म्बर पर कसरत से दरूद पढ़ा करो।

### हज़रत अब्दुल अजीज बिन हबीब कि रिवायत

हज़रत अब्दुल अजीज बिन हबीब से मरवी है कि हज़रत अनस बिन मालिक ने फ़रमाया कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में खड़ा था, आप ने फ़रमाया जो शख्स हर जुमा को अस्सी बार दरूद मुझ पर पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसके अस्सी बरस के गुनाह माफ़ फ़रमा देगा यह सुन कर मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह हुज़ूर पर दरूद शरीफ़ कैसे पढ़ा जाए,



हुजूर वाला ने फरमाया यूँ कहो अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिन अब्देका व रसूलेकन नबीयुल उम्मी और उंगलियों पर (तादाद) शुमार करो।

हजरत अबू अमामा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हर जुमा के रोज़ मुझ पर कसरत से दरुद पढ़ा करो क्योंकि मेरे उम्मत का दरुद हर जुमा के दिन मेरे सामने लाया जाता है पस जो ज़्यादा दरुद पढ़ने वाला है वह कयामत के दिन मुझ से ज़्यादा करीब होगा।

## जुमा की सुबह की नमाज़ और मसनून सूरतें

### हजरत अब्दुल्लाह की रिवायत

शैख अबू नसर ने बिल असनाद हजरत अब्दुल्लाह का कौल नक़ल किया है कि जुमा के दिन सुबह की नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सूरह अलिफ़ लाम मीम, सजदा और सूरह हल अता तिलावत फरमाया करते थे। एक रिवायत में मगरिब की नमाज़ के सिलसिले में आया है कि आप सूरत कुल या अय्योहल काफ़ेरून और कुल होवल्लाहो अहद पढ़ा करते थे, इशा की नमाज़ में सूरह जुमा और अल मुनाफ़ेकून की किरअत फरमाते थे। रिवायत है कि जुमा की नमाज़ में भी हुजूर यही दो सूरतें पढ़ा करते थे।

हजरत हसन बसरी ने हजरत अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि शबे जुमा में जिसने सूरह यासीन, हा मीम और अदख़ान पढ़ी तो जब वह सुबह को उठता है तो उसकी मग़फ़िरत हो चुकी होती है (उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं) रिवायत है कि जिसने जुमा के दिन सूरह कहफ़ पढ़ी वह उस शख्स के बराबर हो गया जिसने दस हज़ार दीनार ख़ैरात किये, शबे जुमा और रोज़े जुमा में चार रकअत नमाज़ इस तरह पढ़ना मुस्तहब है कि चार रकअतों में वह चार सूरतें पढ़े सूरह अनआम, सूरह कहफ़, सूरह ताहा और सूरह मुल्क। अगर तमाम सूरतों को अच्छी तरह नहीं पढ़ सकता तो जितना अच्छी तरह पढ़ सकता है तो उतना ही पढ़े क्योंकि कहा गया है कि ख़त्मे कुरआन बक़द्रे इल्म कुरआन है यानी अगर किसी को कुरआन पूरा अच्छी तरह याद न हो तो जितना याद हो उसका उतना ही पढ़ना ख़त्मे कुरआन होगा। अगर किसी को पूरा कुरआन याद है तो उसके लिए मुस्तहब है कि जुमा के दिन पूरा ख़त्मे कुरआन करे। अगर दिन में मुकम्मल न हो हो सके तो रात में भी पढ़े और ख़त्म करे। अगर फ़ज्र या मगरिब की दो रकअतों में आखिरी हिस्सा को ख़त्म किया जाए तो उसकी बड़ी फ़ज़ीलत आई है अगर दस बीस रकअतों में हज़ार मरतबा कुल हो वल्लाहो अहद (सूरह इख़लास) पढ़ेगा तो यह भी फ़ज़ीलत में ख़त्मे कुरआन से ज़्यादा होगा।

### जुमा के रोज़ हज़ार मरतबा दरुद शरीफ़ पढ़ना

जुमा के दिन हज़ार मरतबा दरुद शरीफ़ पढ़ना मुस्तहब है, इसी तरह हज़ार बार तस्बीह पढ़ना भी मुस्तहब है तस्बीह के चार कलमात यह हैं।

सुब्हानल्लाहि वल हम्दो लिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर



# सय्यदुल अय्याम

## जुमा की वजहे तसमिया

### वजहे तसमिया की एक रिवायत

शेख अबू नसर ने अपने वालिद से उनकी असनाद व रिवायत के साथ हज़रत सलमान से रिवायत किया है कि उन्होंने फ़रमाया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे इरशाद फ़रमाया कि तुम जानते हो कि जुमा का नाम जुमा क्यों हुआ? मैंने अर्ज किया नहीं, हुज़ूर ने फ़रमाया इसलिए कि उस रोज़ तुम्हारे बाप आदम के ख़मीर को जमा किया गया था, इस लिए उसका नाम जुमा रखा गया। जिस शख्स ने उस दिन अच्छी तरह गुस्ल किया और अच्छी तरह वजू करके नमाज़े जुमा अदा की तो एक जुमा से दूसरे जुमा तक उसके तमाम सगीरा गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे बशर्ते कि वह कबीरा गुनाहों से बाज़ रहे। बाज़ उलमा क़राम ने फ़रमाया है कि उस दिन का नाम लफ़्ज़ इजतिमा से माखूज़ है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का पुतला चालिस बरस तक ख़मीर होता रहा फिर रूह को उसी दिन उस ख़मीर में डाला गया। बाज़ का कौल है कि हज़रत हव्वा को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पसली से जब पैदा किया गया तो उसी रोज़ दोनों का इजतेमा हुआ था। बाज़ कहते हैं कि तबील जुदाई के बाद हज़रत आदम व हज़रत हव्वा का उसी रोज़ इजतेमा हुआ था। एक कौल यह भी है कि उस रोज़ शहर और देहात के बाशिन्दे (अदायत नमाज़ के लिए) जमा होते हैं। यह भी कहा गया है कि यौमे क़यामत का नाम यौमुलजमा है। अल्लाह तआला का इरशाद है: और जिस रोज़ तुम्हें जमा होने के लिए जमा किया जाएगा।



## बाब 17

## तौबा, तहारते क़ल्ब, इख़लास और रियाकारी

## तौबा और तौबा करने वाले

बरकत वाले महीनों के रोज़े, कुरबानी, नमाज़ और अज़कार जिनका ज़िक्र अब तक किया गया है आइन्दा हम बयान करेंगे उन सब की क़बूलियत, तौबा, दिल की पाकी और इख़लासे अमल और रियाकारी को तर्क करने के बाद होती है। तौबा के सिलसिले में इससे क़बूल हम कह चुके हैं यहां इस सिलसिले में मज़ीद यह कहना है कि अल्लाह तआला तौबा करने वालों को दोस्त रखता है और गुनाहों से पाक होने वालों से मोहब्बत करता है। इरशाद है: अल्लाह क़सरत से तौबा करने वाले को पसन्द करता है, ख़ूब पाक होने वालों से मोहब्बत करता है। इस आयत की तशरीह व तफ़सीर में हज़रत अता, मक़ातिल और कलबी ने कहा है कि अल्लाह गुनाहों से तौबा करने वालों को दोस्त रखता है और नजासत, जमाबत, हैज़ और वुजू तोड़ने वाली चीज़ों की नापाकी को पानी (यानी गुस्ल और वुजू) से दूर करने वालों को दोस्त रखता है, इसकी वज़ाहत अहले क़बा के सिलसिले में नाज़िल होने वाली आयत से होती है। अहले क़बा की पाकी तहारत की सिलसिले में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: इसमें वह लोग हैं जो ख़ूब पाक होने को पसन्द करते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बा वालों से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम तहारत का क्या अमल करते हो उन्होंने अर्ज किया कि हम पत्थरियों से सफ़ाई करने के बाद पानी से इस्तिन्जा करते हैं।

मुजाहिद कहते हैं कि गुनाहों से क़सरत तौबा करने वालों को अल्लाह तआला पसन्द फ़रमाता है और तहारत करने वालों को दोस्त रखता है। औरतों के पिछले मक़ाम (दुबुर) में लिवातत करने वाला पाक नहीं है। औरत हो या मर्द दोनों से लिवातत का एक ही हुक्म है। बाज़ ने कहा है कि गुनाहों से तौबा करने वाले और शिर्क से पाक होने वाले लोगों से मुराद है। अबुल मिनहाल ने कहा है कि मैं अबू आलिया के पास मौजूद था उन्होंने अच्छी तरह वुजू किया (उनकी यह हालत देखकर) मैंने कहा इन्नल्लाहा यकूब्बुल तव्याबैना व यूहिब्बुल मोत्तहहरीन, फ़रमाया किस चीज़ से पाकी के बारे में फ़रमाया गया है, पाकी यकीनन अच्छी चीज़ है लेकिन इस आयत में से मुराद उन लोगों से है जो गुनाहों से ख़ूब पाक होते हैं (यानी यह आयत उन लोगों के सिलसिले में है।)

## हज़रत सईद बिन जुबैर का कौल

सईद बिन जुबैर कहते हैं कि इसके मानी हैं अल्लाह शिर्क से तौबा करने वालों और गुनाहों से पाक होने वालों को पसन्द करता है। यह भी कहा गया है कि कुफ़्र से तौबा करने वाले और ईमान से तहारत हासिल करने वाले इससे मुराद हैं। एक कौल यह भी है कि गुनाहों से तौबा करने वाले वह हैं जो दुबारा गुनाहों की तरफ़ न लौटें और गुनाहों से पाक रहने वाले वह हैं



गुनियवुत्तालिबीन

जिनसे गुनाह सरज़द न होते हों। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद कबीरा गुनाहों से तौबा करने वाले और सगीरा गुनाहों से पाक रहने वाले मुराद हैं। एक कौल यह है कि इससे बुरे कामों से तौबा करने वाले और बुरी बातों से पाक रहने वाले लोग मुराद हैं।

एक कौल यह है कि बुरे अफ़आले से तौबा करने वाले और अक़वाले बद से पाक व साफ़ रहने वाले मुराद हैं। एक कौल यह है कि गुनाहों से तौबा करने वाले और जुर्मों से पाक व साफ़ रहने वाले मुराद हैं। एक कौल है कि गुनाहों से तौबा करने वाले और ऐबों से पाक व साफ़ रहने वाले मुराद हैं। एक कौल यह भी है कि खुलूस से तौबा करने वाला वह है कि जब भी गुनाह सरज़द हो फौरन तौबा कर ले जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है: अल्लाह तआला की तरफ़ कसरत से रुजूअ करने वाले को अल्लाह तआला माफ़ फरमा देता है।

## हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह की रिवायत

मोहम्मद बिन मनकदर की रिवायत है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तुमसे पहले लोगों में से एक शख्स का गुज़र एक खोपड़ी पर हुआ (उसने एक खोपड़ी देखी) खोपड़ी देख कर उसने कहा, इलाही तू तू ही है और मैं मैं ही हूँ तू बार बार मग़फ़िरत फरमाता है और मैं बार बार गुनाहों में मुब्तला हो जाता हूँ यह कह कर वह सज्दे में गिर पड़ा अल्लाह तआला ने फरमाया, ऐ बन्दे सर उठा, मैं बार बार मग़फ़िरत करने वाला हूँ और तू बार बार गुनाह करने वाला है, जब उस शख्स ने सज्दे से सर उठाया तो उसकी बख़्शिश कर दी गई।

## इख़लास

### ख़ालिस इताअत

आमाल के इख़लास के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है:

उनको सिर्फ़ इस बात का हुक्म दिया गया है कि वह अल्लाह की इबादत करें और इताअते ख़ालिस उसी की करें। इसी सिलसिला की दूसरी आयत है: सुन लो (आगाह रहो) अल्लाह ही की ख़ालिस इताअत करना चाहिए। मज़ीद इरशाद फरमाया है कि:

अल्लाह को कुरबानियों का गोश्त और खून नहीं पहुंचता मगर तुम्हारी परहेज़गारी पहुंच जाती है।

एक और आयत में इरशाद फरमाया:

हमारे आमाल हमारे लिए और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए हैं हम तो उसी के लिए अमले ख़ालिस करते हैं।

### इख़लास के मानी

इख़लास के क्या मानी हैं इस सिलसिले में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत हसन बसरी फरमाते हैं कि मैंने हज़रत हुज़ैफ़ा से दरयाफ़्त किया कि इख़लास क्या चीज़ है? उन्होंने जवाब दिया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया था कि इख़लास की क्या



हकीकत है? तो रसूलुल्लाह ने फरमाया कि मैंने जिब्रील अलैहिस्सलाम से यह सवाल किया था कि इखलास क्या है? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा मैंने अल्लाह तआला से दरखास्त की कि इखलास से क्या मुराद है? अल्लाह तआला ने फरमाया कि वह मेरे राजों में से एक राज है, मैं अपने बन्दों में से जिसके दिल में चाहता हूँ उसको अमानत के तौर पर रखता हूँ।

अबू इद्रीस खोलानी ने कहा कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया कि बिला शुबहा हर हक की एक हकीकत है बन्दा इखलास की हकीकत को उस वक्त तक नहीं पहुँचता जब तक खास अल्लाह तआला के लिए किये हुए अमल पर अपनी तारीफ़ को नापसन्द न करने लगे (यानी तारीफ़ को पसन्द न करे)।

## हज़रत सईद बिन जुबैर के नज़दीक इखलास के मानी

सईद बिन जुबैर ने फरमाया इखलास यह है कि अपनी ताअत और अमल को खालिस अल्लाह के लिए करे और ताअत में किसी को उसका शरीक न बनाये और उसके किसी अमल में रियाकारी न हो, हज़रत फुजैल रहमतुल्लाह अलैहि ने फरमाया कि लोगों की खातिर या लिहाज से अमल करना शिर्क है और लोगों की खातिर उसका तर्क कर देना रिया है। इखलास यह है कि तुम को डर लगा रहे कि अल्लाह तआला उन दोनों बातों की सज़ा देगा। हज़रत यहया बिन मआज़ फरमाते हैं कि अमल को उयूब से इस तरह पाक व साफ़ निकाल लेना इखलास है जिस तरह गोबर और खून से दूध खींच कर निकाल लिया जाता है। अबुल हसन बूशन्जी कहते हैं कि इखलास वह चीज़ है जिसको न फरिश्ते लिखें और न शैतान उसको बिगाड़े और न किसी इंसान को उसकी इत्तेला हो।

शैख़ रुयम ने कहा कि अमल से नज़र का बलन्द हो जाना इखलास है (यानी अमल पर नज़र न रहना) बाज़ उलमा फरमाते हैं कि इखलास वह है जिसके साथ हक़ का इरादा किया जाये यानी जिस काम में महज़ हक़ की तलब और सदाक़त का अज़म हो वह इखलास है। यह भी कहा गया है कि इखलास यह है जिसमें खराबियों की आमेज़िश और तावीलाते ज़वाज़ की तलाश न हो। एक कौल यह भी है कि वह अमल जो मख़लूक से पोशीदा हो और नकाएस से पाक हो उसका नाम इखलास है। हज़रत हुजैफ़ा का कौल है कि जाहिर व बातिन की यकसानियत का नाम इखलास है। शैख़ अबू याकूब मकफूफ़ ने कहा कि जिस तरह बुराईयों को छुपाया जाता है उसी तरह नेकियों को छुपाना इखलास है। सहल बिल अब्दुल्लाह ने कहा कि अपने अमल (नेक) को हेच व हकीर समझना इखलास है। हज़रत अनस बिन मालिक की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तीन बातें हैं जिनमें मुसलमान के दिल को ख़ियानत नहीं करना चाहिए। अल्लाह के लिए खुलूसे अमल, हुक्काम की ख़ैर ख़्वाही और मुसलमानों की जमाअत के साथ रहना।

एक कौल के बमौजिब इखलास यह है कि इताअते हक़ में मख़लूक की खुशनूदी को न मिलाना (यानी मख़लूक की खुशनूदी से इताअते हक़ को अलग रखना) न मख़लूक से तारीफ़ हासिल करने के लिए, न किसी की तरफ़ से मोहब्बत के हुसूल के लिए (कि कोई इखलास को देखकर उससे मोहब्बत करने लगे) न इसलिए अमल करना कि मख़लूक की ज़बान से मलामत और मज़म्मत को रफ़ा करे (यानी बन्दा के अमल और इखलास की बिना पर लोग उसकी



गज़मत नहीं करेंगे)।

कहा गया है कि मखलूक की खातिर और उसके लिहाज़ व पास से अपने अमल को पाक रखना इखलास है। हज़रत जुन्नून मिस्री फ़रमाते थे कि जब तक इखलास में सच्चाई और इस्तिक़लाल न हो इखलास की तकमील नहीं होती और जब तक सच्चाई और सिद्क में इखलास व दाम न हो सच्चाई कामिल नहीं होती।

अबू याकूब मूसा का कौल है कि जब तक लोग अपने इखलास में इखलास देखते रहेंगे (यानी इखलास का दावा रहेगा) उनका वह इखलास सदा खुलूस का मुहताज रहेगा। हज़रत जुन्नून मिस्री का कौल है कि इखलास की तीन निशानियां हैं अवाम की मदह व ज़म दोनों उसके लिए बराबर हों, अपने अच्छे आमाल को न देखना, अच्छे आमाल पर आखिरत में सवाब की तलब को फ़रामोश कर देना। हज़रत जुन्नून का यह कौल भी है कि इखलास वह है कि जिसे दुश्मन ख़राब न कर सके।

## इखलास के दर्जे

अबू उसमान मगरबी ने कहा है कि एक इखलास तो वह है जिसके अन्दर नफ़्स को कोई हिस्सा किसी हाल में न हो यह अवाम का इखलास है ख़ास का इखलास वह है कि बग़ैर इरादा खुद बख़ुद आमाले हसना का सुदूर हो, उनसे ताअत का जुहर बग़ैर कस्द के होता है और उनसे इस सिलसिला में कोई ऐसी अलामत ज़ाहिर न हो जिससे उस अम्र का इज़हार हो कि उन को ताअत मलहूज़ थी।

## हकीकी इखलास

हज़रत अबू बकर दक्काक़ फ़रमाते हैं कि हर मुखलिस को अपने इखलास के देखने से नुक्सान पहुंचता है। अल्लाह तआला जब किसी के इखलास को पसन्द फ़रमा लेता है तो फिर उसके इखलास को उसकी नज़र से गिरा देता है यानी मुखलिस अपने इखलास पर नज़र नहीं रखता। इस तरह वह मुखलिस अपने इखलास को इखलास ही नहीं समझता इस तरह वह खुदा की नज़र में पसन्दीदा हो जाता है।

## हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह का इरशाद

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह का इरशाद है कि सिर्फ़ मुखलिस ही रिया को पहचान सकता है। हज़रत अबू सईद मराज़ का कौल है कि अहले मारफ़त का रिया अहले इरादा के इखलास से बेहतर है यानी वह इखलास जो इरादा से हो उन अहले मारफ़त के रिया से भी कम तर दर्जा की चीज़ है। अबू उसमान कहते हैं कि ख़ालिक की तरफ़ हमेशा निगाह रखने वाला मखलूक की तरफ़ देखना भूल जाता है यही इखलास है। एक कौल यह भी है कि इखलास वह है जिस में सिर्फ़ हक्के मतलूब और सिद्क के मकसूद होता है। एक कौल यह भी है कि अपने आमाल पर नज़र नख़ने से गुरेज़ और ऐराज़ इखलास है। हज़रत सिरी सिक़ती ने कहा कि जो शख्स लोगों के दिखाने के लिए उन चीज़ों से आरास्ता हो जो उसके अन्दर मौजूद नहीं हैं वह अल्लाह की नज़र से गिर जाता है।

हज़रत जुनैद बग़दादी का इरशाद है कि इखलास खुदा और बन्दे के माबैन एक ऐसा राज़



## गुनियतुतालिबीन

है जिससे न कोई फरिश्ता वाकिफ़ है कि उसको लिख सके और न शैतान उससे आगाह है कि उसको इखलास से रोक सके।

हज़रत रूयम फ़रमाते हैं कि अमल में इखलास यह है कि अमल करने वाला दोनों ज़हान में अपने उस अमल पर अज़्र की उम्मीद न रखे न देखने वाले दोनों फ़रिश्तों से (अज़्र के) कुछ हिस्से का ख़्वास्तगार हो (कि वह उसके अमल को लिखेंगे तो उसको कुछ न कुछ अज़्र मिलेगा)।

सहल इब्न अब्दुल्लाह से पूछा गया कि नफ़्स के लिए सबसे ज़्यादा दुश्वार क्या चीज़ है, उन्होंने फ़रमाया इखलास। इसलिए कि नफ़्स के लिए उसमें कुछ हिस्सा नहीं है। एक कौल यह भी है कि इखलास ऐसी चीज़ है कि अल्लाह तआला के सिवा उससे कोई और बाख़बर नहीं होता। एक बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं कि जुमा के दिन अस्त्र से पहले हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह के पास पहुंचा मैंने देखा कि उनके हुजरे में एक सांप है मैं एक कदम आगे बढ़ाता और फिर एक कदम पीछे हट जाता, सांप का डर मुझ पर ग़ालिब आ गया था हज़रत सहल ने अन्दर से आवाज़ दी क्यों डरते हो अन्दर आ जाओ जिस का ईमान खुदा पर हो उससे हर चीज़ डरती है फिर फ़रमाया कि तुम जुमा पढ़ना चाहते हो? मैंने अर्ज़ किया कि हमारे और ज़ामा मस्जिद के माबैन एक दिन रात की मुसाफ़त है, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और रवाना हो गये हम लोग थोड़ी ही दूर चले थे कि ज़ामा मस्जिद सामने नज़र आने लगी, हमने नमाज़े जुमा अदा की फिर बाहर निकल आये हज़रत सहल रुक गये और मस्जिद से निकलने वालों को देखने लगे फिर फ़रमाया कि कलमए तौहीद पढ़ने वाले तो बहुत हैं लेकिन उन मुखलिस (साहिबाने इखलास) बहुत कम हैं।

## तवक्कल व इखलास

एक बार मैं (हज़रत मुसन्निफ़) हज़रत इब्राहीम की हमराही में सफ़र कर रहा था हम एक ऐसी जगह पहुंचे जहां सांप बक़सरत थे हज़रत इब्राहीम ख़्वास ने अपना आफ़ताबा रख दिया और वहां बैठ गये जब रात हुई तो सांप बाहर निकल आये मैंने हज़रत इब्राहीम को आवाज़ दी उन्होंने फ़रमाया कि तुम ज़िक्र इलाही में मसरूफ़ रहो मैं ज़िक्र में मशगूल हो गया आये हुए सांप लौट गये, थोड़ी देर बाद वह फिर पलट पड़े मैंने शैख़ को पुकारा शैख़ ने फिर फ़रमाया कि ज़िक्र में मसरूफ़ रहो सुबह तक मेरी यही हालत रही सुबह को हज़रत शैख़ रवाना हुए मैं भी उन के साथ चल पड़ा रवाना होते वक़्त शैख़ के बिस्तर से एक बहुत बड़ा सांप गिरा जो कुन्डली मारे बिस्तर में मौजूद था मैंने कहा क्या आप को उस सांप का एहसास भी नहीं हुआ उन्होंने फ़रमाया नहीं, एक मुद्दत के बाद मेरी रात ऐसी अच्छी तरह गुज़री। अबू उसमान फ़रमाते हैं जिसने वहशत की ग़फलत का मज़ा नहीं चखा (दुनियावी वहशत में मुब्तला नहीं हुआ) उसने ज़िक्र की मोहब्बत की लज़ज़त हासिल नहीं की।

## दिल की पाकीज़गी

### नापाक नफ़्स इंसान के दर पै आज़ार है

हर आबिद व हर आरिफ़ को हर सूरत में रियाकारी, मख़लूक के दिखावे और खुद पसन्दी से बचना चाहिए क्योंकि यह ख़बीस नफ़्स हर इंसान के दर पै है। यह नफ़्स गुमराह करने वाली



ख्वाहिशात, तबाह व बर्बाद करने वाली रगबतों और उन लज्जतों का सर चश्मा और मम्बा है जो खुदा और बन्दे के दर्मियान एक हिजाब (पर्दा) बन जाती हैं। जब तक बदन में रूह मौजूद है उसकी तबाह कुन ख्वाहिशात से बचना बहुत मुशकिल है ख्वाह इंसान अबदाल या सिद्दीकीन के मरतबा पर पहुँच जाये ख्वाह उसकी मौजूदा हालत उसकी साबिका हालत के मुकाबले में ज्यादा अमन व सलामती की हो (ऐसे दर्जा पर हो जहां नफ्स की फरेब कारियों से अमन हासिल रहता हो) खैर गालिब हो, नूरे मारफत की फरावानी हो, हिदायत शरीके हाल और तौफीके इलाही मुमिद् व मुआविन हो और अल्लाह तआला की हिफाजत मयस्सर हो बई हमा गुनाह से मामून व मसून रहना हमारी खुसूसियत नहीं है (अवामुन्नास का खास्सा नहीं है) बल्कि मासूम अनिल खता तो अबिया अलैहिमुस्सलाम हैं नबुव्वत और विलायत का फर्क उसी से होता है (यानी वली मासूम नहीं होता नबी मासूम होता है)

## रियाकारी

### रियाकारों को तहदीद

अल्लाह तआला ने रियाकारों और शर पसन्दों को डराते हुए नफ्स की खबासते दुनियवी और उसके खतरात से खबरदार फरमाया है और नफ्स की पैरवी से मना फरमाया है उसकी मुखालिफत का हुक्म कभी कुरआन से और कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बाने वही तरजमान से फरमाया, इरशादे रब्बानी है:

उन नमाज़ियों के लिए बड़ी खराबी (तबाही) है जो अपनी नमाज़ से गाफिल हैं।

दिखवा करते हैं और मामूली इस्तेमाल चीज़ों को भी जरूरत मन्दों से रोके रखते हैं।

एक दूसरी आयत में इरशाद होता है:

वह मुंह से ऐसी बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं होतीं, अल्लाह उनकी छुपाई हुई बातों से खूब वाकिफ़ है।

एक और जगह इरशाद फरमाया गया:

जब नमाज़ को उठते हैं तो कसल और सुस्ती के साथ (महज़) लोगों के दिखावे को (उठते हैं) और अल्लाह की याद कम करते हैं। लोग दोनों गरोहों के दर्मियान डांवा डोल (फिर रहे) हैं न एक तरफ़ न दूसरी तरफ़।

एक और आयत में इरशाद है:

आलिमों और आबिदों में (बनी इस्राईल के) बहुत से ऐसे हैं जो बातिल तरीकों से लोगों का माल खाते हैं और दूसरों को अल्लाह के राह से रोकते हैं।

एक और आयत में फरमाया है:

ऐ वह लोगो जो ईमान ला चुके हो जो बात करते नहीं वह कहते क्यों हो? अल्लाह को यह बात बहुत नापसंद है कि ऐसी बात कहो जो करते नहीं।

एक और आयत में आया है:

ख्वाह तुम पोशीदा तरीके से बात कहो या जाहिर करके, जो कुछ तुम्हारे दिल में है अल्लाह तआला उससे बखूबी वाकिफ़ है



मजीद इशाद फरमाया:

जो अल्लाह के पाक दीदार का ख्वास्तगार और तालिब है उसको नेक अमल के लिए कह दीजिए और उससे कह दीजिए कि अल्लाह की इबादत में किसी और को शरीक न कर।

एक और आयत है:

नफ़्स तो बहुत ज्यादा बुराई का हुक्म देता है मगर वह महफूज़ रहता है जिस पर मेरा रब रहम फरमाए।

एक और मक़ाम पर इरशाद हुआ:

और तबाए बुख़्ल पर हाज़िर रखी जाती हैं (तबाए बुख़्ल पर आमादा रहती हैं)

एक और मक़ाम पर हुक्म फरमाया:

ख्वाहिशे नफ़्स की पैरवी न करो अगर ऐसा करोगे तो वह तुम को राहे खुदा से गुमराह कर देगा।

अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम से फरमाया था ऐ दाऊद अपने नफ़्स की ख्वाहिश को छोड़ दो, ख्वाहिशे नफ़्स के अलावा मेरी हुक्मत में मुझसे झगड़ने वाला कोई और नहीं है।

## रिया की मज्मूत में अहादीसे शरीफ़ा

हज़रत शद्दाद बिन औन्स से एक हदीस मरसूी है उन्होंने कहा कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने चेहरा अनवर पर कुछ ऐसे आसार देखे जिन से मुझे बहुत दुख हुआ, मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! हुज़ूर का यह क्या हाल है? हुज़ूर वाला ने फरमाया मुझे अपनी उम्मत के मुशरिक होने का अन्देशा है, मैंने अर्ज किया क्या हुज़ूर के बाद लोग शिर्क में मुब्तला हो जायेंगे? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह सूरज, चांद, बुत और पत्थर की तो यकीनन पूजा नहीं करेंगे मगर आमाल में रिया करेंगे और रिया ही शिर्क है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया है कि कयामत के दिन कुछ मुहर कर्दा आमाल नामे लाये जायेंगे उस वक़्त अल्लाह तआला फरिश्तों से फरमाएगा इस आमाल नामे को फेंक दो ओर इसको कबूल कर लो, फरिश्ते बारगाहे इलाही में अर्ज करेंगे इलाही! तेरी इज्ज़त व जलाल की कसम! हम तो उन आमाल में खैर ही मालूम होई थी। अल्लाह तआला फरमायेगा हां लेकिन यह अमल तो दूसरों के लिए था मैं सिर्फ़ वही अमल कबूल करता हूँ जो ख़ालिसन मेरे लिए हो (जिस का मक़सद सिर्फ़ मेरी जात हो)।

## रसूलुल्लाह की दुआ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी दुआ में फरमाया करते थे, इलाही मेरी ज़बान को झूठ से पाक फरमा, मेरे दिल को निफ़ाक़ से, मेरे अमल को रिया से, मेरी आंख को ख़्यानत से पाक फरमा, तू आंखों की ख़्यानत और दिलों के पोशीदा अहवाल को जानता है।

## किस आलिम की सोहबत में बैठना चाहिए

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि ऐसे आलिम की सोहबत में बैठो जो पांच चीज़ों को छुड़ा कर पांच चीज़ों की तरगीब देता हो: दुनिया की रग़बत से निकाल



कर जुहद की तरगीब देता हो, रिया से निकाल कर इखलास की तालीम दे, गुरुर से छुड़ा कर तवाजो की तरगीब, काहिली और सुस्ती से बचा कर पिन्द व नसीहत करने की तरगीब, जिहालत से निकाल कर इल्म की तरगीब दे।

## हुजूर सरवरे कायनात का एक और इरशाद

आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला का इरशाद है मैं हर शरीक से बेहतर हूँ जो शख्स किसी को मेरे साथ अपने अमल में शरीक करेगा तो उसका अमल उसी शरीक के लिए होगा मेरे लिए नहीं होगा, मैं तो सिर्फ उसी अमल को कबूल करता हूँ जो महज मेरे लिए किया गया हो, ऐ इंसान मैं सबसे अच्छा हिस्सादार हूँ देख जो अमल तू ने मेरे लिए नहीं बल्कि दूसरे के लिए किया तो उसका अज्र भी उसी के जिम्मा है जिस के लिए तू ने वह अमल किया।

## एक और इरशाद गरामी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया इस उम्मत को बशारत दे दो कि दीन में उसको बुजुर्गी हासिल है और शहरों पर कब्जा और गिरफ्त, जब तक वह दीन का काम दुनिया के हुसूल के लिए न करें यानी मुसलमानों को तमाम दुनिया में उस वक्त तक बुजुर्गी और दुनिया के शहरों पर उनकी हुकूमत रहेगी जब तक वह दीन का काम दुनिया के हुसूल के लिए नहीं करेंगे, उनके आमाल खालिस रहेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि आखिरत की नियत पर (अमल करने वाले को) अल्लाह तआला दुनिया भी देता है लेकिन दुनिया की नियत पर (अमल करने वाले को) आखिरत नहीं मिलेगी।

हजरत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया शबे मेराज में मेरा गुजर ऐसे लोगों की तरफ हुआ जिन के होंठ आग की कैंचियों से काटे जा रहे थे मैंने जिब्रील अमीन से दरयाफ्त किया कि यह कौन लोग हैं, उन्होंने जवाब दिया यह आप की उम्मत के वाएज हैं कि दूसरों से तो कहते थे और खुद उस काम को नहीं करते थे जिस चीज को वह अच्छा जानते थे उसका हुक्म दूसरों को देते थे और खुद वह काम करते थे जिनको वह बुरा कहते थे, लोगों को नेकी का हुक्म देते थे और अपने आप को भूल जाते थे।

## सबसे बड़ा अंदेशा

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मुझे अपनी उम्मत के मुताल्लिक सबसे बड़ा अंदेशा उस मुनाफिक से है जिसकी ज़बान दराज़ हो (बहुत बोलने वाला) कसम है उस जात की जिसके कब्जे में मेरी जान है कि उस वक्त तक कयामत बरपा नहीं होगी जब तक तुम लोगों पर झूठे हाकिम, बद किरदार वजीर, खाइन अमीर, जालिम पेशकार, फासिक व फाजिर, कारी और जाहिल आबिद मुसल्लत न हो जायेंगे। जब ऐसा वक्त आ जायेगा तो अल्लाह तआला उन फितनों के तारीक (तियाह) दरवाजे खोल देगा जिसके अन्दर वह जालिम यहूदियों की तरह हैरान व परेशान फिरते रहेंगे, यह वक्त ऐसा (नाजुक) होगा, इस्लाम का कब्जा आहिस्ता आहिस्ता कमजोर होता जायेगा और फिर एक वक्त ऐसा आ जायेगा कि अल्लाह अल्लाह भी नहीं



कहा जायेगा (मुसलमान इस्लाम से बहुत दूर हो जायेंगे)।

## दर्दनाक अज़ाब

हज़रत अददी बिन हातिम कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के दिन कुछ लोगों को सख़्त अज़ाब में मुब्तला किया जाएगा, अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएगा: क्या तुम तन्हाई में मेरे सामने बड़े बड़े गुनाह नहीं करते थे लेकिन जब तुम लोगों से मिलते थे तो बड़ी आजज़ी और इन्क़सार के साथ मिलते थे, तुम लोगों से डरते थे लेकिन मुझसे नहीं डरते थे, तुमने लोगों को बड़ा जाना लेकिन मुझे बड़ा नहीं समझा, अपनी इज़्ज़त की क़सम आज मैं तुमको दर्दनाक अज़ाब दूंगा।

हज़रत ओसामा बिन जैद से मरवी है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि एक आदमी को दोज़ख़ में डाला जाएगा तो उसकी आंते बाहर निकल पड़ेंगी वह अपनी आंतों को खींचता हुआ चक्की की तरह घूमता फिरेगा उससे पूछा जाएगा क्या तू नेकी का हुक्म लोगों को नहीं देता था, क्या उनको बुरी बातों से मना नहीं करता था? वह जवाब देगा मैं अच्छे काम करने का दूसरों को हुक्म देता था लेकिन खुद नहीं करता था इसी तरह दूसरों को बुरी बातों से रोकता था मगर खुद मैं ऐसी बातें करता था।

## दिखावे का रोज़ा और उसकी जज़ा

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बहुत से रोज़ादारों को भूक प्यास के सिवा रोज़ा से और कुछ हासिल नहीं होता, इसी तरह बहुत से शब बेदार नमाज़ियों को उनकी शब बेदारी का सिवाए नमाज़ के और कुछ हासिल नहीं होता (शब बेदारी से कुछ हासिल नहीं होता) हज़ूर वाला ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि (उन लोगों की इस ज़ाहिर परस्ती से) अर्श लरज़ जाता है और अल्लाह तआला ग़ज़बनाक होता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया वह बन्दा बुरा है जिसके और सवाबे इलाही के दर्मियान कोई दूसरा बन्दा हाएल हो जाए ऐसा बन्दा इबादत इसलिए करता है कि जो दूसरे शख्स के पास है वह उसको मिल जाए। वह उस बन्दे की खुशनूदी के हुसूल के लिए अपने जिस्म को थकाता है लेकिन उस का नतीजा यह होता है कि वह अपने दीन से भी महरूम हो जाता है और उसको इज़्ज़त से भी हाथ धोना पड़ते हैं। ऐसा शख्स उस बन्दे को (जिस के लिए नमाज़ पढ़ी) अपनी ख़िदमत का उतना हिस्सा देता है कि उतना वह अपनी इताअत का हिस्सा अल्लाह को भी नहीं देता।

## महज़ अल्लाह के लिए ख़ैरात करना

हज़रत मोज़ाहिद से मरवी है कि एक शख्स रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमते गरामी में हाज़िर हुआ और अर्ज किया या रसूलुल्लाह मैं महज़ अल्लाह के लिए ख़ैरात करता हूं लेकिन यह भी चाहता हूं कि मुझे दुनिया में भी (इसी वस्फ़ के बाएस) अच्छा कहा जाए इस पर यह इरशादे इलाही नाज़िल हुआ: व मन का न यरजू लिका रब्बिही फ़लयामल अमेलन यालिहन वला युशरिक बेइबादति रब्बिही अहदा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि आख़री ज़माने में कुछ लोग दीन को दुनिया कमाने का ज़रिया बना लेंगे अपनी नर्मी दिखाने के लिए भेड़ की खाल पहन लेंगे



(बातिन में दरीन्दे होंगे) उनकी ज़बानें शकर से ज़्यादा मीठी होंगी लेकिन दिल में भेड़ियों के होंगे अल्लाह तआला ऐसे लोगों के बारे में इरशाद फ़रमाता है क्या यह लोग मेरे मुताल्लिक़ फ़रेब खुरदा हैं या मेरे ख़िलाफ़ दिलेरी और ज़सारत करते हैं मैं क़सम खाता हूँ कि उन पर ऐसा फ़ितना खड़ा कर दूंगा जिसे देख कर बड़े बड़े बुर्दबार भी हैरान रह जायेंगे।

हज़रत हमज़ा ने अबी हबीब से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि फ़रिश्ते बाज़ बन्दों के बाज़ आमाल उठा कर बारगाहे इलाही में उस मक़ाम पर ले जाते हैं जहाँ अल्लाह तआला चाहता है, फ़रिश्ते उन आमाल को अच्छा समझते हैं और उस शख्स को गुनाहों से पाक़ करार देते हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम मेरे बन्दे के आमाले जाहिरी के निगरां हो और मैं तो उसकी नियत को भी देखता हूँ चूँकि मेरे इस बन्दे ने ख़ालिस मेरे लिए यह अमल किया है लिहाज़ा इसको इल्लीईन के दफ़तर में रख दो।

## रियांकार क़ारी, रियाकार सख़ी और रियाकार मुजाहिद

हज़रत अबू हु़रैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया क़यामत के दिन अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ का फ़ैसला फ़रमाएगा, हर उम्मत उसक़ हुज़ूर में ज़ानू के बल मौजूद होगी, उस वक़्त अल्लाह तआला क़ारीए क़ुरआन, शहीद और तवन्नार को तलब फ़रमाएगा और अव्वलन क़ारी से इस्तिफ़सार होगा कि तू जितना जानता था उस पर तूने कितना अमल किया क़ारी कहेगा मैं शबाना रोज़ के औकात में खड़े होकर नमाज़ में क़ुरआन पढ़ता था, अल्लाह तआला उसको ज़वाब देगा तूने झूठ कहा (फ़रिश्ते भी यही कहेंगे कि यह दरोह गो है) तेरा मक़सद तो सिर्फ़ यह था कि लोग तुझे क़ारी कहें चुनांचे तुझे क़ारी कह दिया गया, फिर अल्लाह तआला तवन्नार को तलब फ़रमाकर दरयाफ़्त करेगा कि मैंने तुझे जो कुछ दिया था तूने उसका क्या मसरफ़ किया वह अर्ज़ करेगा मैं उसको सिला ए रहम में (क़राबत दारियों के क़याम के लिए) खर्च करता रहा और ख़ैशत करता रहा अल्लाह तआला फ़रमाएगा तू झूठा है (फ़रिश्ते भी यही कहेंगे) तूने ग़लत कहा, उस अमल से तेरा मक़सद सिर्फ़ यह था कि तुझे सख़ी समझा जाए, सो तुझे सख़ी कह दिया गया, फिर जिहाद में शरीक होने वाले से पूछा जाएगा कि तू किस लिए मारा गया वह ज़वाब देगा मैं तेरे लिए तेरी राह में लड़ा था और आख़िरकार मारा गया, अल्लाह तआला फ़रमाएगा तूने झूठ कहा (फ़रिश्ते भी यही कहेंगे) तेरा मक़सद यह नहीं था बल्कि तेरे मक़सद यह था कि तुझे बहादुर कहा जाए चुनांचे तुझे बहादुर कह दिया गया, यह इरशाद फ़रमाकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दोनों दस्तहाय मुबारक अपने पाक़ ज़ानुओं पर इज़हारे अफ़सोस के लिए मारे और फ़रमाया, अबू हु़रैरा मख़लूक़ में सबसे पहले क़यामत के दिन इन्ही तीनों (किस्म के) लोगों पर दोज़ख़ की आग़ शोला ज़न होगी।

इस हदीस शरीफ़ की ख़बर जब मुआविया को पहुंची तो वह बहुत रोये और कहने लगे कि अल्लाह के रसूल ने सच फ़रमाया इसके बाद यह आयत पढ़ी।

जो शख्स दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी जीनत का तालिब है हम उस को दुनिया ही में अज़्र देते हैं दुनिया में उनका हिस्सा कम नहीं किया जाता लेकिन ऐसे लोगों के लिए आख़िरत में सिवाए दोज़ख़ के और कुछ नहीं है। दुनिया में जो कुछ किया होगा वह अकारत जाएगा और जो कुछ वह करते थे वह बेकार गया। उन लोगों के लिए बड़ा (दर्दनाक) अज़ाब होगा और



आखिरत में यह लोग बड़े खसारे में रहेंगे।

## जन्नत से महरूम रहने वाले

हज़रत अदी बिन हातिम की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के दिन चन्द दोज़खियों को जन्नत की तरफ़ ले जाने का हुक्म होगा जब यह दोज़खी जन्नत के करीब पहुंचेंगे और उसकी खुशबू सूंधेंगे वहां के महल्लात देखेंगे और उन चीज़ों का मुशाहिदा करेंगे जो अल्लाह तआला ने बहिश्त वालों के लिए तय्यार की हैं तो यकायक निदा आएगी कि उसको वापस कर दो उनका यहां से कोई हिस्सा नहीं है उस वक़्त वह ऐसी हसरत व पशेमानी के साथ वापस होंगे कि ऐसी हसरत व पशेमानी से कभी न लौटे होंगे उस वक़्त वह (हसरत के साथ) कहेंगे परवरदिगार तूने अपने दोस्तों के लिए जो नेमतें फ़राहम की हैं वह अभी हम ने तमाम व कमाल देखी भी नहीं थी कि हम को दोज़ख में दाख़िल कर दिया गया (हमको वह नेमतें पूरी देखने को मिल जातीं) इसके जवाब में अल्लाह तआला फ़रमाएगा मेरी यही मशीयत थी तुम तन्हाई में तो मेरे सामने और लोगों के सामने अपनी पारसाई (तक़वा) का दावा करते थे और उनके सामने आजज़ी और तवाज़ो का इज़हार करते थे, तुम्हारे दिलों में उसके ख़िलाफ़ होता था, तुम लोगों से तो डरते थे लेकिन मेरा खौफ़ तुम को नहीं आया, तुम लोगों को बड़ा समझते थे लेकिन मुझे बड़ा नहीं जाना, तुमने लोगों की वज़ह से बुरे काम तर्क कर दिए लेकिन मेरे डर से बुरे कामों को तर्क नहीं किया इसलिए आज मैं अपने अजीम सवाब से तुम को महरूम रखूंगा और अपना अज़ाब तुम पर मुसल्लत करूंगा।

## मोमिनीन की फ़लाह और रियाकारों की इब्तला

हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला ने जब जन्नते अदन को पैदा फ़रमाया तो उसमें ऐसी नेमतें पैदा फ़रमाईं जिनको न किसी आंख ने देखा और न किसी कान ने सुना, न किसी इंसान के दिल में उसका ख़याल गुज़रा तो उससे फ़रमाया कि तू कुछ कहना चाहती है तो मुझसे कह, तो जन्नते अदन ने तीन मरतबा कहा मोमिनीन ही फ़लाह पाने वाले हैं फिर कहा बेशक मैं हर बख़ील और रियाकार पर हराम हूं।

## रियाकार अल्लाह तआला को फ़रेब देना चाहता है

एक शख्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि रोज़े क़यामत मेरी नजात का ज़रिया क्या होगा, हुज़ूर ने फ़रमाया, अल्लाह तआला को फ़रेब देने की कोशिश न करना, उस शख्स ने अर्ज किया कि हुज़ूर मैं अल्लाह को फ़रेब कैसे दे सकता हूं आपने फ़रमाया काम तो तू वह करे जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है मगर उसका मक़सद (इताअत इलाही न हो बल्कि) दूसरा हो, रिया से बचो, रिया शिर्क है। तमाम रियाकार क़यामत के दिन तमाम मख़लूक के सामने चार नामों से पुकारे जायेंगे, ऐ काफ़िर! ऐ फ़ाज़िर! ऐ दगाबाज़! ऐ नुक़्सान उठाने वाले! तेरा अमल बेकार गया तेरा अज़्र ज़ाया हो गया, आज तेरा कोई हिस्सा नहीं ऐ रियाकार तू अपना सवाब उसी से मांग जिसके लिए तू अमल करता था।



## मुनाफिक का अंजाम

अल्लाह तआला हम सब को रिया, शोहरत तलबी और निफाक से अपनी पनाह में रखे, यह सब काम दोजखियों के हैं मुनाफिक के लिए अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है: यकीनन मुनाफिक दोजख के सबसे निचले तबका में रहेंगे यानी फिरऔन व हामान के साथ हाविया में पड़े होंगे। अगर कोई यह सवाल करे कि बाज़ अहादीस से तो यह मुसतंबित होता है कि अगर नेक अमल को मखलूक देख भी ले तब भी कोई हरज नहीं है जैसा कि वकीअ ने बिल असनाद हज़रत अबू हुदैरा का कौल नक़ल किया है कि एक शख्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमते बाबरकत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैं बाज़ अच्छे काम अगरचे छुपा कर करता हूँ फिर भी लोगों को उसकी ख़बर हो जाती है (लोग मुत्तला हो जाते हैं) और यह बात मेरे दिल को बुरी भी लगती है, क्या ऐसे अमल का मुझे अज़्र मिलेगा? हुज़ूर ने फरमाया तेरा अज़्र दोहरा होगा, एक अज़्र छुपाने का और दूसरा ज़ाहिर हो जाने का। इस हदीस शरीफ की तौज़ीह में कहा गया कि दोहरा अज़्र इस तरह हुआ कि उस शख्स को यह बात पसन्द थी कि दूसरे लोग भी उसकी इत्तेबा करें और उस सूरत में एक अज़्र तो अमल का और दूसरा अज़्र दूसरे लोगों की इत्तेबा व पैरवी का।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस शख्स ने कोई अच्छा तरीका (नेक अमल) का निकाला उसको अपने उस अमल का भी सवाब मिलेगा और उन लोगों के अमल करने का भी जो क़यामत तक उस पर अमल पैरा रहेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह मालूम था कि उस शख्स (सायल) को यह बात पसन्द है कि लोग उसके अमल की पैरवी करें इसी लिये आपने दोहरा अज़्र उसके बदला में फरमाया) हां अगर अमल की पसन्दीदगी लोगों के इत्तेबा के ख़याल से खाली हो (यानी अपने अमल को महज़ अपनी ज़ात के एतबार से पसन्द करता है और उस पर नाज़ां है और यह ख़याल नहीं कि लोग मेरे अमल की पैरवी करें) तो ऐसे शख्स के लिए कोई अज़्र नहीं है इसलिए कि खुद पसन्दी धारगाहे इलाही में पसन्द नहीं, बन्दा उसकी बदौलत अल्लाह की नज़र से गिर जाता है।

हज़रत हसन बसरी का इरशाद है कि जब तुम बूढ़े होगे तो तुमको ऐसे लोग मिलेंगे जिनके रंग गोरे होंगे लेकिन दुरुश्त मिज़ाज, तेज़ ज़बान और बेबाक नज़र, दिल के मुर्दा, तुम उनके जिस्म देखोगे उनके जिस्म न होंगे, उनकी आवाज़ सुनाई देगी उनमें उन्सियत न होगी, उनकी ज़बानें बहुत तरार होंगी लेकिन दिल क़हत के मारे खुश्क होंगे। बाज़ असहाबे रसूल ने मुझसे बयान किया कि जब तक हमारी उम्मत के उलमा, रऊसा और उमरा की सोहबत की तरफ़ राग़िब न होंगे और सालेह लोग दौड़ दौड़ कर फ़ाजिरों से मुलाक़ात के लिए न जायेंगे, नेक लोगों को बुरों का ख़ौफ़ न होगा उस वक़्त तक उम्मत मोहम्मदिया अल्लाह तआला की पनाह में रहेगी लेकिन जब उनसे यह बद किरदारियां सरज़द होंगी तो अल्लाह तआला उनसे अपना हाथ उठा लेगा और उनको फ़िक्र व फ़ाका में मुब्तला फरमायेगा और उनके दिलों में ज़ालिमों का ख़ौफ़ पैदा कर देगा और सितमगारों को उनपर मुसल्लत कर देगा और बुरी बुरी तकलीफों की उन पर मार पड़ेगी।

हज़रत हसन बसरी ही से रिवायत भी है कि वह बन्दा बहुत ही बुरा बन्दा है जो मग़फ़िरत



का सवाल करता है और अमल मासियत के उससे सरजद होते हैं। खुजूअ व खुशूअ का इजहार अपनी अमानतदारी के इजहार के लिए करता है हालांकि वह फरेब से ऐसा करता है, दूसरों को (बुरी बातों से) मना करता है लेकिन खुद उन पर अमल पैरा है दूसरों को जिस काम का हुक्म देता है खुद वह काम नहीं करता, देता है तो पूरा नहीं देता, तो न देने की उज्र पेश नहीं करता, तन्दुरुस्त होता है तो निडर बन जाता है बीमार होता है तो पशेमान होता है, मुहताजी में गमगीन होता है, तवन्नर बन जाता है तो फितने उठाता है, अज्र व सवाब का तालिब हो मगर शदाइद पर सब्र न करे बद मस्त हो कर सो जाये और रोजे में ताखीर करे।

## हजरत हसन बसरी और फरकद

एक दिन हसन बसरी बेश कीमत लिबास पहने हुए अपनी मजलिस में मौजूद थे उस मजलिस में फरकद सनजी भी मौजूद था और फरकद सौफ़ (पशमीना) का लिबास पहने था आप ने फरकद से फरमाया मेरा लिबास जन्नतियों का है और तुम्हारा लिबास दोज़खियों का है तुमने जाहिर में दुनिया छोड़ रखी है लेकिन तुम्हारे दिल में गुरुर और तकब्बुर भरा हुआ है आज कल लोगों ने सौफ़ पहनना शेआर बना लिया है लेकिन हकीकत में वह चादर ओढ़ने वालों से ज्यादा मगरूर होते हैं। लोग आपस में तफ़ाखुर करते हैं (लिबास से एक दूसरे पर फख़र करते हैं) सुनो शाहाना लिबास पहनो मगर दिलों को अल्लाह के खौफ़ से मुर्दा बना लो (दिल खौफ़े खुदा से मुर्दा हो जाये)।

## लिबास तीन किस्म के हैं

हजरत उमर फरमाते हैं कि लिबास वह पहनो कि उलमा उसका मज़ाक़ न बनायें और न बे ख़िरद तुम् को (उस लिबास के बाएस) हकीर समझें, कपड़े ख़्वाह सूती ही क्यों न हो दिल पाक व साफ़ होना चाहिए। लिबास तीन किस्म के लोगों का होता है परहेज़गारों का लिबास, यह ऐसा जाएज़ लिबास होना चाहिए जिसके पहनने से न मख़लूक की तरफ़ से मुआख़जा हो न शरअ का उस पर मुतालबा हो सके, ख़्वाह वह सूत का हो या सौफ़ का, नीला हो या सफ़ेद रंग का। औलिया अल्लाह का लिबास: औलिया का लिबास वह है जिस का हुक्म शरीअत ने दिया है यानी कम से कम इतना कि सतरे औरत हो सके और जिस्म का ज़रूरी हिस्सा छुप जाये और ज़रूरत का तकाज़ा पूरा हो जाये ताकि हवा व हवस शिकस्ता पर हो जायें और अबदाल के दर्जा तक रसाई हो जाये। अबदाल का लिबास: अबदाल का लिबास यह है कि शरई हुदूद की हिफ़ाज़त के साथ जो कुछ तकदीर से मिल जाये (उसको काफ़ी समझा जाये)। वह एक दांग कीमत का कुर्ता हो या एक सौ अशरफी का ख़िलअत (दोनों उसके लिए बराबर हों) न अपना इरादा आला लिबास पहनने का हो न नफ़्सानी ख़्वाहिश कि अदना लिबास पहन कर उस ख़्वाहिश को शिकस्त दी जाये बल्कि जो हलाल लिबास अल्लाह तआला ने अपनी मेहरबानी से मरहमत फ़रमा दे बग़ैर मेहनत और तकलीफ़ के इनायत कर दे नफ़्स में न किसी लिबास का शौक़ हो न कोई आरजू (कि ऐसा लिबास मिले) तो ऐसा लिबास अबदाल का लिबास है इन लिबासों के अलावा हर किस्म का लिबास अहदे जाहिलियत का लिबास है, हिमाक़त का लिबास है और नफ़्सानी ख़्वाहिश का लिबास है।



## बाब 18

# हफ़्ता के मुख़्तलिफ़ दिन और उनके फ़ज़ाइल

अय्यामे बैज़ और अय्यामे बैज़ के रोज़ों के फ़ज़ाइल

और तरगीबात, अय्यामे बैज़ में शबाना रोज़ के वज़ाएफ़ व औराद

अय्याम की तख़लीक़ और हर दिन की खुसूसियत

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया अल्लाह तआला ने शम्बा के दिन ज़मीन पैदा फ़रमाई और एक शम्बा को ज़मीन पर पहाड़ों को कायम फ़रमाया। दो शम्बा को दरख़्तों को और सह शम्बा को तमाम मकरूहात को पैदा किया, चहार शम्बा को तमाम ख़ूबियां तख़लीक़ फ़रमाई और पंज शम्बा को ज़मीन पर तमाम चौपाओं को पैदा फ़रमा कर इधर उधर मुन्तशिर फ़रमाया, जुमा के रोज़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अस्त्र के बाद मगरिब से क़बल आख़िरी साअत में पैदा फ़रमाया।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हफ़्ता के दिन के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया यह मक्र व फ़रेब का दिन है। सहाबा कराम ने वजह दरयाफ़्त की तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि उस दिन कुरैश ने दारुल नदवा (हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस शब को हिजरत फ़रमाई उस दिन में कुफ़ारे कुरैश ने एक मकान में जमा हो कर हुज़ूर के बारे में नऊज़बिल्लाह क़त्ल का प्रोग्राम बनाया था) में मेरे लिए फ़रेब का मन्सूबा तैयार किया था। इतवार के दिन के बारे में दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया यह दरख़्त लगाने और इमारतें बनाने का दिन है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि इसी दिन दुनिया की और इसकी आबादी की इब्तिदा हुई थी, पीर के दिन के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया यह सफ़र और तिजारत का दिन है, सहाबा ने फ़रमाया यह किस तरह? हुज़ूर ने फ़रमाया कि शुऐब पैग़म्बर ने इसी दिन सफ़र किया था और तिजारत में मशगूल हुए थे, मंगल के दिन के बारे में जब दरयाफ़्त किया गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया यह ख़ून का दिन है, सहाबा कराम ने अर्ज किया यह किस तरह, हुज़ूर ने फ़रमाया, इसी दिन हज़रत हव्वा को हैज़ आया और आदम के बेटे (काबील) ने अपने बड़े भाई (हाबील) को क़त्ल किया था, बुध के दिन के बारे में जब दरयाफ़्त किया गया तो इरशाद फ़रमाया यह नहूसत और बदबख़्ती का दिन है, सहाबा ने अर्ज किया यह क्योंकर? हुज़ूर ने फ़रमाया, इसी दिन अल्लाह ने फिरऔन और उसकी कौम को (नील में) गर्क किया और आद व समूद को तबाह किया। जुमेरात के बारे में सवाल करने पर फ़रमाया हाजतों के पूरा करने और सलातीन के पास जाने का दिन है, सहाबा कराम ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर यह किस तरह? आप ने फ़रमाया कि इसी रोज़े हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह नमरुद के पास तशरीफ़ ले गए थे, नमरुद ने आप का मुहुआ पूरा कर दिया और आप ने हाजरा को उससे



हासिल कर लिया।

जुमा के बारे में जब दरयाफ्त किया गया तो हुजूर ने इरशाद फरमाया कि यह खुतबा और निकाह का दिन है, जब अर्ज किया गया कि किस तरह ? तो हुजूर वाला ने इरशाद फरमाया कि इसी दिन अम्बिया अलैहिमुस्सलाम/निकाह करते थे।

जहरी ने बरिवायत अब्दुर्रहमान बिन कअब बयान किया कि उनके दादा अब्दुर्रहमान ने बयान फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफर के लिए जुमेरात ही के दिन निकला करते थे, मुआविया बिन हज्जा ने हजरत अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स 17 तारीख मंगल के दिन सेंगी लगवाता है अल्लाह साल भर तक उसको बीमारी से महफूज कर देता है।

## अम्बिया के मखसूस दिन

एक रिवायत है कि अल्लाह तआला ने हजरत मूसा और दूसरे पचास पैगम्बरों को हफ्ता का दिन दिया था (यानी उनकी इबादत का दिन) हजरत ईसा अलैहिस्सलाम और उनके अलावा बीस और अम्बिया को इतवार का दिन दिया था, पीर (दो शम्बा) का दिन सय्यदे आलम मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और तिरसठ (63) दूसरे रसूलों को अता फरमाया, मंगल का दिन हजरत सुलैमान और दूसरे पचास पैगम्बरों को अता किया, बुध (चहरा शम्बा) का दिन हजरत याकूब और पचास दूसरे रसूलों को अता फरमाया और जुमेरात का दिन हजरत आदम अलैहिस्सलाम और पचास दूसरे नबीयों को अता किया, जुमा का दिन खालिस अल्लाह तआला का अपना दिन है।

## उम्मे मुहम्मदिया का तोहफ़ा खास

मनकुल है कि रसूले क़रीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बारगाहे इलाही में मुनाजात फरमाई, इलाही मेरी उम्मत को तूने क्या अता फरमाया? अल्लाह तआला ने फरमाया ऐ महबूब जुमा का दिन मेरा है और जन्नत मेरी है मैं जुमा का दिन और जन्नत आप की उम्मत को अता करता हूँ और मैं जन्नत में आप की उम्मत के साथ हूँगा।

## बुध, जुमेरात और जुमा के रोज़े की फज़ीलत

हजरत अनस बिन मालिक की रिवायत कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जिसने बुध, जुमेरात और जुमा का रोज़ा रखा उसके अज़्र में अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में मोती, याकूत और ज़मुरद का महल तैयार फरमाता है और दोज़ख से उसके लिए नजात लिख दी जाती है। हजरत अनस बिन मालिक की एक और रिवायत में है कि हुजूर वाला ने इरशाद फरमाया कि जिसने हुरमत वाले महीनों में जुमेरात, जुमा और हफ्ता के दिन के (तीन) रोज़े रखे उसके नामए आमाल में नौ साल की इबादत लिखी जाती है नीज़ इरशाद फरमाया कि हफ्ता और इतवार को रोज़ा रखो और यहूद और नसारा की मुखालिफ़त करो।

हजरत अबू हुरैरा फरमाते हैं कि हुजूर ने इरशाद फरमाया पीर और जुमेरात को आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और हर शख्स को जो शिर्क नहीं करता बख़्शा दिया जाता है अगर वह शख्स नहीं बख़्शा जाता जिसके दिल में अपने मुसलमान भाई की तरफ़ से हसद और कीना



गुनियवुत्तालिबीन  
हो। एक हदीस में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन दिनों के रोजों को तर्क नहीं किया करते थे ख्वाह आप सफर में हो या हजर में, यह दोनों दिन ऐसे हैं जब बन्दे के आमाल बारगाहे इलाही में पेश किये जाते हैं।

## अय्यामे बैज के रोजे

### अय्यामे बैज के रोजों की फज़ीलत

अय्यामे बैज के रोजों की बड़ी फज़ीलत आई है। शैख अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत इमाम जैनुल आबेदीन (इब्न हुसैन इब्ने अली मुर्तज़ा करमुल्लाहो वज्हु) ने फ़रमाया कि तेरह तारीख़ का रोज़ा तीन हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर और चौदह तारीख़ का रोज़ा दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर और पन्द्रह तारीख़ का रोज़ा एक लाख तेरह हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है।

अबू इसहाक ने हज़रत जुरैर का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि जो शख्स चांद की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं का रोज़ा रखेगा उसको उम्र भर के रोज़ों का सवाब मिलेगा। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाया: जिसने एक नेकी की उसके लिए दस गुना सवाब है, गोया तीन रोज़ों का सवाब महीना भर के रोज़ों के बराबर होगा इसी तरह हर माह तीन रोज़े रखने वाला तमाम उम्र रोज़े रखने वाला हो जायेगा।

हज़रत इब्ने अब्बास का कौल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अय्यामे बैज के रोज़े ख्वाह सफ़र में हो या इक़ामत में नहीं छोड़ते थे। शअबी का कौल है कि मैंने हज़रत इब्ने उमर से सुना कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे सामने इरशाद फ़रमाया: जिसने हर माह तीन दिन का रोज़े रखे और फ़ज्र की दो रकअत सुन्नतें अदा कीं और नमाज़े वित्र को न सफ़र में छोड़ा न हज़र में उसको सौ शहीदों का सवाब मिलता है।

सईद बिन अबी हिन्द ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे इन तीन बातों की वसीयत फ़रमाई कि मरते दम तक महीने के तीन रोज़े (अय्यामे बैज के) रखूँ और मरने से पहले चाशत और वित्र की नमाज़ न छोड़ूँ।

अब्दुल मालिक बिन हारून ने बरिवायत अनजह बयान किया कि अन्जह बयान किया कि अन्जह ने कहा मैंने हज़रत अली मुर्तज़ा करमल्लाहो वज्हु से उन्होंने फ़रमाया कि एक दिन दोपहर के वक़्त मैं रसूलुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, हुजूर उस वक़्त हुजरए मुबारक में रौनक अफ़रोज़ थे, मैंने सलाम अर्ज किया हुजूर ने सलाम के जवाब देने के बाद फ़रमाया अली! यह जिब्रील हैं तुमको सलाम कर रहे हैं मैंने अर्ज किया वअलैका व अलैहिस्सलाम या रसूलल्लाह, हुजूर ने फ़रमाया मेरे करीब आ जाओ, मैं करीब में हाज़िर हो गया तो हुजूर ने फ़रमाया कि अली! जिब्रील कह रहे हैं कि हर माह तीन दिन के रोज़े रखा करो, पहले रोज़े पर दस हज़ार साल का, दूसरे रोज़े पर तीस हज़ार साल का और तीसरे रोज़े पर एक लाख साल का सवाब लिखा जायेगा। मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह क्या इस सवाब की तख़सीस मेरे ही साथ है या यह आम तौर पर सब के लिए है, हुजूर ने फ़रमाया कि यह सवाब तुम्हें होगा और उसको भी जो तुम्हारी तरह यह रोज़े रखेगा हज़रत अली मुर्तज़ा ने रोज़ों की तारीख़ दरयाफ़्त की तो फ़रमाया हर माह



की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं।

## अय्यामे बैज की वजहे तसमिया

अन्जह कहते हैं कि मैंने हज़रत अली से दरयाफ़्त किया कि अय्यामे बैज की वजहे तसमिया क्या है? हज़रत अली ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का जन्मत से ज़मीन पर उतारा तो आफ़ताब की तमाज़त ने उनके जिस्म को सियाह कर दिया हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उनके पास आये और कहा कि ऐ आदम! क्या आप चाहते हैं कि आप के जिस्म की यह सियाही दूर हो जाये और इसकी जगह सफ़ेदी आ जाये, हज़रत आदम ने फ़रमाया हां, उस वक़्त हज़रत जिब्रील ने फ़रमाया कि आप हर माह की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं का रोज़ा रखा कीजिए। चुनांचे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने पहला रोज़ा रखा तो 1/3 जिस्म की सियाही दूर हो गई, दूसरे दिन 2/3 और तीसरे दिन पूरा जिस्म मुबारक सफ़ेद हो गया (तमाम सियाही ज़ाएल हो गई।) इस लिए इन दिनों को अय्यामे बैज कहते हैं।

हज़रत ज़र्र बिन जैश का कौल है कि मैंने हज़रत इब्ने मसऊद से अय्यामे बैज की वजहे तसमिया दरयाफ़्त की तो उन्होंने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इसके बारे में दरयाफ़्त किया था तो हुज़ूर ने फ़रमाया था जब हज़रत आदम ने अल्लाह की नाफ़रमानी की और दरख़्ते ममनूआ खा लिया तो अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि मेरे कुर्ब इज़्जत व अज़मत से नीचे उतर जाओ, जो मेरी नाफ़रमानी करता है वह मेरे करीब नहीं रह सकता। आदम अलैहिस्सलाम नीचे उतर गये, आप के बदन का रंग सियाह हो गया फ़रिश्तों ने उस पर आह व बुका की और बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया रब्बुल इज़्जत तूने आदम को अपने हाथ से बनाया, अपने फ़रिश्तों से उनको सजदा कराया और अब एक गुनाह पर उनके सफ़ेद रंग को सियाही से बदल दिया। उस पर अल्लाह तआला ने हज़रत आदम के पास वही भेजी कि तुम मेरे लिए इस दिन यानी तेरहवीं तारीख़ का रोज़ा रखो, हज़रत आदम ने पहला रोज़ा रखा तो उनका तिहाई बदन मोरा हो गया फिर वही भेजी कि आज चौदहवीं का रोज़ा रखो, हज़रत आदम ने रोज़ा रखा तो सुबह को दो तिहाई बदन गोरा हो गया, अल्लाह तआला ने फिर वही भेजी कि इस रोज़ यानी पन्द्रहवीं तारीख़ का भी रोज़ा रखो, तो सारा बदन गोरा हो गया अय्यामे बैज कहने की यही वजह है।

अतबी ने अदबुल कातिब में कहा है कि इन तारीख़ियों (दिनों) को अरब अय्यामे बैज इस वजह से कहते हैं कि इन तारीख़ियों में पूरी रात भर की चांदनी होती है (रातों में बजाए सियाही के सफ़ेदी होती है)

## सयामुद्दहर और उसका अज़्र

### हमेशा रोज़ा रखने वाले का अज़्र

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से और उन्होंने अपने असनाद के साथ हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सबसे बेहतर रोज़े हज़रत दाऊद के रोज़े हैं, एक दिन रोज़ा, एक दिन नागा।



जिस शख्स ने हमेशा सारे रोजे रखे (उम्र भर रोज़ाप रखा) उसने बिला शुब्हा अपनी जान अल्लाह के लिए वक्फ कर दी। हज़रत अबू मूसा अशअरी फ़रमाते हैं कि जिसने उम्र भर रोजे रखे उस पर दोज़ख़ इस तरह तंग हो जाता है कि उसमें दाख़िल होना मुमकिन ही नहीं रहता (हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने 90 का अदद बना कर दिखाया)

शुऐब ने बरिवायत सअद बिन इब्राहीम बयान किया है कि हज़रत आइशा हमेशा रोजे रखती थीं। याकूब ने अपने वालिद की असनाद के साथ बयान किया है कि हज़रत सअद ने अपने मरने से पहले चालीस साल पहले से पैहम रोजे रखे। अबू इद्रीस कहते हैं कि हज़रत अबु मूसा अशअरी ने इतने रोजे रखे कि सूख कर खिलाल की तरह हो गये थे, मैंने उनसे कहा कि हज़रत आप अपने नफ़्स को तो कुछ आराम दीजिए, उन्होंने फ़रमाया कि (रोजे रखकर) उसको आराम ही तो देना चाहता हूँ, मैंने देखा है कि वह दौड़ में आगे निकल जाने वाले घोड़े वही होते हैं जिनको मशशाक बना कर दुबला कर दिया जाता है।

अबु इसहाक बिन इब्राहीम का बयान है कि मुझसे अम्मार राहिब ने कहा कि ओएला में ईसा बिन ज़ाज़ान की मजलिस में सकीनए गफ़फ़ारिया हमार साथ शरीके महफ़िल होती थीं, आप उस मजलिस में हाज़िरी के लिए बसरा से आती थीं मैंने उनको ख़्वाब में देखा और दरयाफ़्त किया सकीना! ईसा के साथ अल्लाह ने क्या मामला किया? सकीना हंसीं और बोलीं, उनको चमकदार हुल्ला (बहिश्ती) पहनाया गया। ख़िदमतगार आफ़ताबे लिए उनके गिर्दा गिर्द घूमने लगे फिर उनको ज़ेवर पहनाए गये और कहा गया ऐ कारी! अपने मरतबा में तरक्की करता जा, अपनी बका की कसम रोज़ों ने तुझ को पाक कर दिया है।

ईसा इतने रोजे रखते थे कि उनकी कमर ख़मीदा हो गई थी और आवाज़ भी (कमज़ोरी के बाइस) नहीं निकलती थी।

हज़रत अनस का बयान है कि हज़रत अबू तलहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में जिहाद के बाइस नफ़ली रोजे नहीं रखते थे लेकिन सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद मैंने उनको कभी रोजे के बग़ैर नहीं देखा सिवाय यौमे फ़ित्र और यौमे नहर के। अबू बकर बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हश्शाम कहते हैं कि मुझसे एक ऐसे आदमी ने यह रिवायत की जिसने खुद मुशाहिदा किया था कि गर्मी के दिन हैं, हुज़ूर रोजे से हैं और गर्मी की शिद्दत और प्यास की वजह से सरे मुबारक पर पानी डाल रहे हैं।

सुफ़ियान ने बरिवायत अबु इसहाक हारिस के हवाला से बयान किया कि हज़रत अली कर्मल्लाहो वज्जहु ने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रोज़ रोज़ा रखते थे और एक रोज़ नागा फ़रमाते थे। एक रिवायत में आया है कि हज़रत उमर ने रसूलुल्लाह की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह अगर कोई शख्स तमाम उम्र रोज़ा रखे तो क्या हुक्म है? हुज़ूर ने जवाब में फ़रमाया न उसने रोज़ा रखा न बग़ैर रोजे के रहा। इस हदीस से यह अम्र मुस्तबित हुआ कि उस शख्स ने हमेशा रोजे रखे, ईदुल फ़ित्र और अय्याम तशरीक में भी नागा नहीं किया, हज़रत इमाम अहमद हंबल ने भी यही फ़रमाया है लेकिन अगर उसने उन अय्याम में रोजे न रखे और बाकी पूरे साल रखे तो उसके हक में कोई मुमानियत नहीं है बल्कि उसके लिए वही फ़ज़ीलत है जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका है।



# आम रोज़ा की फ़ज़ीलत

## रोज़ा की फ़ज़ीलत बिला तख़सीस

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स ख़ालिसन अल्लाह तआला की खुशानूदी के लिए रोज़ा रखेगा तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम से उतनी मुसाफ़त के बक़्दूर कर देगा कि एक कौआ का बच्चा उस मुसाफ़त पर उड़ना शुरू करे और बूढ़ा हो कर मर जाये और मुसाफ़त बाकी रहे। (कहा जाता है कि कौआ की उम्र तक़रीबन पांच सौ बरस है)

हज़रत अबू दरदा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख्स महज़ अल्लाह के लिए किसी दिन का रोज़ा रखेगा अल्लाह उसके मुंह को दो ज़ख़ से बक़्दूर सत्तर बरस की मुसाफ़त से दूर फ़रमा देगा। हज़रत आईशा ने इरशाद फ़रमाया मैं खुद सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे जो बन्दा सुबह को रोज़ा दार होता है उसके लिए आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं, उसके आज्ञा अल्लाह की तस्बीह व तक़दीस बयान करते हैं और उसके लिए दुनियावी आसमान वाले मग़फ़िरत की दुआ करते हैं और यह हालत गुरुबे आफ़ताब तक रहती है अगर वह एक दो रकअत नमाज़े नफ़ल भी पढ़ लेता है तो उसके लिए आसमान नूर से जगमगा जाते हैं (जन्नत में) उसकी बीबियां यानी बड़ी बड़ी आंख वाली हूरें कहती हैं इलाही इसकी रूह कब्ज़ करके हमारे पास पहुंचा दे हम इसके मुशताक हैं, अगर वह रोज़ादार तस्बीह व तहलील में मसरूफ़ रहता है तो सत्तर हजार फ़रिश्ते उसकी तस्बीह व तहलील को लिखते हैं और यह हालत गुरुबे आफ़ताब तक रहती है।

अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरा के हवाले से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो बन्दा एक नेकी करे उसकी जज़ा उसको दस से सौ तक बल्कि सात सौ गुना तक मिलेगी लेकिन रोज़ा ऐसा अमल है कि इसके बारे में हक़ तआला ने फ़रमाया कि वह मेरे लिए है और मैं ही इसकी जज़ा दूंगा और रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह तआला के नज़दीक मुश्क की खुशबू से ज़्यादा महबूब है।

हज़रत अली मुर्तजा कर्म्मल्लाहो वज्हेहु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा के बाइस जो शख्स खाने पीने और ख़्वाहिशे नफ़स से दूर रहा अल्लाह तआला जन्नत में उसको मेवा खिलायेगा और जन्नत का शरबत पिलायेगा।

## जन्नत का दरवाज़ा रय्यान

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया हर नेक काम करने वालों के लिए जन्नत का एक ख़ास दरवाज़ा होगा जहां से उनको पुकारा जायेगा और रोज़ा रखने वालों को जिस ख़ास दरवाज़े से पुकारा जायेगा उसका नाम रय्यान होगा। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या कोई शख्स ऐसा भी होगा जिसको तमाम दरवाज़ों से पुकारा जाये? हुज़ूर ने फ़रमाया हां मुझे उम्मीद है कि तुम उन ही में से होगे। रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि हर चीज़ का एक दरवाज़ा है चुनांचे इबादत का दरवाज़ा रोज़ा है।



गुनियवुत्तालिबीन

रोज़ा निस्फ़ सब्र है

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रोज़ा निस्फ़ सब्र है हर चीज़ की ज़कात है और बदन की ज़कात रोज़ा है। हज़रत अबू औफ़ा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि रोज़ादार का सोना इबादत है, उसकी ख़ामोशी तस्बीह है और उसका अमल मक़बूल है। हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क़यामत के दिन रोज़ादारों के लिए सोने का एक ख़्वान रखा जायेगा जिसमें मछली होगी। रोज़ादार उस ख़्वान से खाते होंगे और दूसरे लोग उनको देखते होंगे (दूसरों का उससे कुछ हिस्सा न होगा)।

अहमद बिन हवारी से रिवायत है कि अबू सुलैमान रहमतुल्लाह अलैहि ने उनसे कहा कि अबू अली असीम एक दिन तश्रीफ़ लाये और उन्होंने एक ऐसी हदीस सुनाई जिससे बेहतर आज तक हमने नहीं सुनी थी, उन्होंने फरमाया कि रोज़ादारों के लिए क़यामत में एक दस्तरख़्वान बिछाया जायेगा और वह उस पर खाने में मशगूल होंगे जबकि दूसरे तमाम लोगों से हिसाब लिया जाता होगा, यह लोग हिसाब (देने वाले) कहेंगे कि इलाही हमारा हिसाब लिया जा रहा है और यह लोग (नेमतें) खाने में मशगूल हैं अल्लाह तआला फरमायेगा यह वह लोग हैं जिन्होंने मुद्तों तक रोज़े रखे और तुमने नहीं रखे, वह खड़े नमाज़ें पढ़ते रहे और तुम सोते रहे (यह उसका इनाम उनको दिया गया है)।

## रोज़ादार के मुंह से मुश्क की लपटें

हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब रोज़ादार अपनी क़ब्रों से निकलेंगे तो उनके मुंह से मुश्क की खुशबू की लपटें आयेंगी, जन्नत का एक ख़्वान उनके सामने रखा जाएगा जिससे वह खायेंगे और वह सब अर्श के साया में होंगे।

हज़रत सुफ़ियान बिन उऐनिया ने कहा मुझे इत्तेला मिली है कि रोज़ेदार जिन चीज़ों से रोज़ा खोलता है उनका हिसाब उससे नहीं लिया जाएगा। हज़रत अबू हु़रैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला फरमाता है कि रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही रोज़ा का जज़ा दूंगा, मेरा बन्दा मेरे लिए अपना खाना पीना और नफ़्सानी ख़्वाहिश को छोड़ता है, रोज़ा एक सेपर है रोज़ादार के लिए दो मसरतें रखी गई हैं एक तो वह जब वह रोज़ा इफ़तार करता है दूसरी खुशी रब से मुलाकात के वक़्त मयस्सर होगी। रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह तआला को मुश्क की खुशबू से ज़्यादा पसंद है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया रोज़ा एक सिपर है, जिस के ज़रिया बन्दा दो ज़ख़ से महफूज़ रहता है सईद बिन जुबैर की रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने फरमाया मैं दुनिया में अपने पीछे क्या क्या चीज़ें छोड़ जाऊंगा इसका मुझे ग़म नहीं, ग़म है तो दोपहर के वक़्त रोज़ादार होने और नमाज़ के जाने का (कि मरने के बाद यह चीज़ें मयस्सर न होंगी)। मुजाहीद ने हज़रत अबू हु़रैरा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है जो शख्स अल्लाह के वास्ते नफ़ल रोज़ा रखे और उस के बदला में ज़मीन भर सोना उसको मिल जाए तब भी क़यामत से पहले उसके रोज़े का सवाब उसको पूरा नहीं होगा।



# औरादे शब व नमाजें शब

## और उसकी तरगीब

### औरादे शब के सिलसिले में अहादीस

हजरत शफीक बिन अब्दुल्लाह रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने कुछ लोगों का जिक्र हुआ, किसी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह फ़लां शख्स रात भर सोता रहा यहां तक की सुबह की नमाज़ भी उसने अदा नहीं की हुजूर ने फ़रमाया शैतान ने उसके कान में पेशाब कर दिया। हदीस शरीफ़ में आया है कि जब आदमी सो जाता है तो शैतान उसके सर पर तीन गिरहें लगा देता है फिर जब सो कर उठता है और अल्लाह का जिक्र करता है तो उसकी एक गिरह खुल जाती है जब वजू करता है तो दूसरी गिरह भी खुल जाती है और जब दो रकअत नमाज़ पढ़ लेता है तो आखिरी गिरह भी खुल जाती है सुबह को आदमी हश्शाश व बश्शाश होता है, वरना दूसरी सूरत में सुस्त और चिड़चिड़ा रहता है। एक हदीस में आया है कि शैतान के पास कुछ चीज़ें नाक में डालने, कुछ चाटने और कुछ छिड़कने की होती है आदमी जब नाक में डालने वाली चीज़ को सुड़क लेता है तो वह बद खुल्क हो जाता है और चाटने वाली चीज़ को जब चाट लेता है तो बुरी बातें उसकी ज़बान पर चढ़ जाती हैं, जब छिड़कने वाली चीज़ को किसी पर छिड़क दिया जाता है तो वह रात से सुबह तक सोता रहता है।

रात की नमाज़ में कयाम को तूल देना सुन्नत है, रात की नमाज़ में दो दो रकअतें हैं, दिन की नमाज़ में रूकूअ और सुजूद की कसरत सुन्नत है अगर एक सलाम से चार रकअतें पढ़ी जाएं तब भी जाएज़ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए रात की नमाज़ें नाफ़िला (पांच नमाज़ों) से ज्यादा थी और वह हुजूर पर फ़र्ज़ थी वह हुजूर के लिए कुरबे इलाही और मरतबत अफ़ज़ाई का ज़रीया थी, उम्मत से फ़राइज़ में जो कोताही होती है उसकी पूरा करने वाली है।

सालिम ने हजरत इब्ने उमर का कौल नक़ल किया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहदे मसऊद में जब कोई ख़्वाब देखता था तो उसको हुजूर की ख़िदमत में बयान करता था मुझे भी आरजू थी कि मैं कोई ख़्वाब देखूं और हुजूर वाला से बयान करूं (आखिरकार यह आरजू पूरी हुई और) मैंने एक ख़्वाब देखा दो फ़रिशतें मुझे पकड़ कर दोज़ख़ की तरफ़ लिये जा रहे हैं, दोज़ख़ के गिर्द कुवें की तरह मुंडेर (मन) बनी हुई है और कुवें के चर्ख़ के मिनारों की तरह उसमें दो मीनार भी थे मैंने वहां के कुछ लोगों को देख कर पहचान लिया और मैंने कहा मैं दोज़ख़ से अल्लाह की पनाह मांगता हूं, मुझे फ़ौरन ही एक फ़रिश्ता मिला और मुझ से कहने लगा ख़ौफ़ न खा (फिर मेरी आंख खुल गई) मैंने यह ख़्वाब उम्मुल मोमेनीन हजरत हफ़्सा से बयान किया और उन्होंने हुजूर वाला से बयान किया, हुजूर ने फ़रमाया अब्दुल्लाह अच्छा शख्स है काश वो रात को नमाज़ पढ़ता। सालिम कहते हैं कि फिर अब्दुल्लाह रात को बहुत थोड़ी देर के लिए सोते थे।

अबू सलमा रिवायत करते हैं कि हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र आस ने कहा कि मुझ से



रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया कि तुम फलां शख्स की मानिंद न हो जाना कि पहले वह रात की नमाज़ पढ़ता था फिर उसने वह नमाज़ छोड़ दी।

हज़रत अबू सालेह ने बिल असनाद हज़रत अली करमल्लाहु वज्हु से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया एक रात हुज़ूर वाला मेरे और अपनी साहबज़ादी फ़ातिमा के पास तशरीफ़ लाए हम दोनों को सोता (लेटा हुआ) पाकर, आप ने फ़रमाया, तुम नमाज़ नहीं पढ़ते हो (नमाज़े शब) मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह हमारी जानों का मालिक अल्लाह तआला है अगर वह हम को उठाना चाहेगा तो (नमाज़ के लिए) उठा देगा, हुज़ूर वाला वापस चले गये और इस बात का कोई जवाब इरशाद नहीं फ़रमाया, अलबत्ता मैंने सुना कि वापिस होकर आप जानूँ मुबारक पर हाथ मार कर फ़रमा रहे थे कि आदमी बड़ा झगड़ालू है।

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह का कौल नक़ल किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर आदमी दो रकअतों रात के दर्मियान पढ़ ले तो वह दुनिया और माफीहा से बेहतर है अगर मैं अपनी उम्मत पर इस को बार न समझता तो (इन दो रकअतों को) फ़र्ज करार दे देता।

## सबसे अफ़ज़ल नमाज़

शैख अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से अबू मुस्लिम का यह कौल नक़ल किया कि मैंने हज़रत अबूज़र गेफ़ारी से दरयाफ़्त किया कि कौन सी नमाज़ अफ़ज़ल है, उन्होंने फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह से इसके मुताल्लिक दरयाफ़्त किया था, हुज़ूर ने फ़रमाया था कि दर्मियान शब या आधी रात की नमाज़ सबसे अफ़ज़ल है मगर ऐसा करने वाले (इस नमाज़ को अदा करने वाले) कम हैं।

## हज़रत दाऊद को हुक्म हुआ

बाज़ अहादीस में आया है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से सवाल किया इलाही मैं तेरी इबादत करना चाहता हूँ इस लिए कौन सा वक़्त अफ़ज़ल है? अल्लाह ने उन पर वही नाज़िल फ़रमाई और उनसे फ़रमाया ऐ दाऊद न रात के अव्वल हिस्सा में नमाज़ को खड़ा हो न आख़िर हिस्सा में, जो अव्वल हिस्सा में खड़ा होगा वह आख़िर हिस्सा में सो जाएगा और जो आख़िर में खड़ा होगा वह अव्वल हिस्सा में सो जाएगा। तो शब के दर्मियानी हिस्सा में खड़ा हो तेरी ख़लवत में मैं हूँ और मेरी ख़लवत में तू हो और उस वक़्त मेरे सामने अपनी हाज़तें बयान कर।

यहया इब्न मुख़तार से मरवी है कि हसन बसरी ने फ़रमाया कि वस्तु शब में पाबन्दी के साथ क़याम (नमाज़) और हक़ पर माल खर्च करने से ज़्यादा आंखों को ठंडक बख़्शने वाला, पीठ को (मासियत के बोझ से) हलका रखने वाला और दिल के लिए मुसररत बख़्शा बन्दा का कोई अमल नहीं है।

## वहशते क़ब्र नमाज़ से दूर हाती है

हज़रत अबू दरदा फ़रमाते हैं कि बिला शुब्हा मैं तुम्हारा बही ख़्वाह हूँ, मैं तुम पर शफ़क़त करने वाला हूँ, ऐ लोगो! वहशते क़ब्र को दूर करने लिए रात की तारीकी में नमाज़ें पढ़ो, रोज़े



महशर की गर्मी से बचने के लिए रोजे रखो, सख्त दिन के खौफ से खैरात करो। ऐ लोगो! मैं तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ, मैं तुम्हारा बही ख्वाह हूँ। शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि वह फ़रमा रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक तिहाई रात बाकी रह जाती है उस वक़्त दुनियावी आसमान की तरफ़ अल्लाह तआला नुजूल इजलाल फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता है कौन है जो मुझ से दुआ करे और मैं उसको क़बूल करूँ, कौन है जो मुझ से तालिबे मग़फ़िरत हो और मैं उसकी मग़फ़िरत करूँ, कौन है जो मुझसे रिज़्क मांगे और मैं उसको रिज़्क अता करूँ, कौन है जो मुझ से दुख दर्द दूर करने की इस्तदा करे और मैं उसका दुख दूर करूँ। यह कैफ़ियत तुलूए फ़ज्र तक रहती है।

शैख अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है हर रात आखिरी तिहाई में अल्लाह तआला दुनियावी आसमान की तरफ़ नुजूल इजलाल फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता है कि कौन मग़फ़िरत का तलबगार है कि मैं उसकी मग़फ़िरत करूँ, कौन दुआ करने वाला है कि मैं उसकी दुआ क़बूल करूँ, कौन साएल है कि मैं उसका सवाल पूरा करूँ। सहाबा करामे इसी बिना पर आखिरी रात की नमाज़ को मुस्तहब कहते थे।

### आखिरी रात में फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ क़बूल होती है

हज़रत अबू अमामा ने फ़रमाया, रसूलुल्लाह से दरयाफ़्त किया गया कि किस हिस्से शब में दुआ ज़्यादा क़ाबिले पज़ीरई होती है, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आखिरी रात में और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया बेहतरीन रोज़े हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के रोज़े हैं, आप निस्फ़ मुदत रोज़ा रखते थे एक दिन रोज़ा से और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहते थे इसी तरह हर साल वह छः माह रोज़े से रहते थे और बेहतरीन नमाज़ दाऊद की नमाज़ है, हज़रत दाऊद आधी रात तक सोते और पिछले पहर में नमाज़ पढ़ते थे।

हज़रत अबू हुरैरा ने फ़रमाया मैं रात के तीन हिस्से करता हूँ एक तिहाई में नमाज़ अदा करता हूँ बाकी एक तिहाई में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहादीस (फ़रमूदाते नबवी) याद करता हूँ।

हज़रत इब्ने मसऊद का इरशाद है कि रात की नमाज़ को दिन की नमाज़ पर ऐसी ही फ़ज़ीलत हासिल है जैसे पाशीदा तौर पर खैरात देने को जाहिरी तौर पर खैरात देने पर। हज़रत अम्र बिन अलआस का इरशाद है कि रात की एक रकअत नमाज़ दिन की दस रकअतों से अफ़ज़ल है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील से दरयाफ़्त किया कि रात में दुआ किस वक़्त ज़्यादा सुनी जाती है, जिब्रील ने ज़वाब दिया, सहर के वक़्त से अर्श में लरज़ा आता है (यानी सहर के वक़्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का नुजूल इजलाल होता है)

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद गरामी है कि नमाज़े शब को लाज़िम करो यह तुमसे पहले गुज़रने वाले सालेहीन का तरीका था, कयामे शब कुर्बे इलाही का ज़रिया और गुनाहों को साकित करने, गुनाहों से रोकने और जिस्म से बीमारी को दूर करने का वास्ता है।



## रात की एक खास साअत

शैख अबू नसैर ने अपने वालिद से बिल असनाद बहवाला हजरत जाबिर बयान किया है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि रात में एक ऐसी साअत है कि ठीक उसी साअत में अगर बन्दा अल्लाह से कुछ मांगता है तो खुदाए बुजुर्ग व बरतर जरूर अता फरमा देता है और यह साअत हर रात में मौजूद है। उलमा ने कहा है कि जिस तरह रमजान के अशरए अखीर में शबे कद्र और रोजे जुमा में कबूलियत की एक साअत है उसी तरह यह साअत हर रोज आम है। कहा गया है कि रात में एक साअत ऐसी है जिसमें हर आंख वाला सोता और गाफिल हो जाता है सिवाए हय्य व कयूम के जिसको फना नहीं है शायद यह साअत वही हो। हजरत अम्र बिन उकबा से मरवी हदीस में है आखिर शब की नमाज का इल्तजाम रखो यह नमाज मशहूदा व महसूरा है रात और दिन के मलाइका उस वक्त हाजिर और मौजूद होते हैं।

## रसूलुल्लाह की नमाजे शबीना

### बुखारी शरीफ और मुस्लिम शरीफ की सराहत

अबू इसहाक ने बयान किया कि असवद बिन यजीद मेरे भाई और दोस्त थे मैंने उनसे जाकर कहा कि अबू उमर (असवद की कुन्नियत) मुझसे रसूलुल्लाह की उस नमाज के बारे में वजाहत कीजिए जो आप से हजरत आइशा ने बयान फरमाई थी, उन्होंने कहा कि हजरत आइशा ने फरमाया था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अव्वल वक्त में सो रहते थे और आखिर शब में इबादत फरमाते थे फिर अगर आप को बीबी की जरूरत होती तो आप अपनी यह जरूरत पूरी फरमा लेते और पानी को हाथ लगाये बगैर सो जाते थे और फिर जब अजाने अव्वल सुनते (अजाने फजर) तो उछल जाते थे (यक बारगी खड़े हो जाते थे) हजरत आइशा ने उठ कर खड़े हो जाते थे नहीं फरमाया, मुराद यह है कि बहुत उजलत के साथ दफअतन हुजूर खड़े हो जाते थे और बदन पर पानी बहाते थे। (हजरत उम्मूल मोमिनीन आइशा ने "गुस्ल फरमाते थे" नहीं फरमाया लेकिन मैं अबू उमर जानता हूं कि हजरत आइशा की मुराद उछलने और पानी नहीं फरमाया लेकिन मैं अबू उमर जानता हूं कि हजरत आइशा की मुराद उछलने और पानी मुराद बहाने से क्या थी) अगर हुजूर को नहाने की जरूरत नहीं होती थी तो नमाज के लिए वुजू फरमा कर नमाज में मशगूल हो जाते थे।

कुरैब मौला इब्ने अब्बास (यानी हजरत इब्ने अब्बास के गुलाम कुरैब) ने हजरत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि उन्होंने फरमाया कि एक रात मैं अपनी खाला उम्मूल मोमिनीन हजरत मैमूना के पास रात को ठहर गया, मैं बिछौने के अर्ज में और रसूलुल्लाह और मेरी खाला हजरत मैमूना के पास रात को ठहर गया, मैं बिछौने के अर्ज में और रसूलुल्लाह और मेरी खाला हजरत मैमूना बिस्तर के तूल में इस्तराहत फरमा हुए, रसूलुल्लाह सो गये जब आधी रात हुई या कुछ कम वक्त होगा कि हुजूर वाला बेदार हो गये, दस्ते मुबारक से चश्मे हाय मुबारक को मला (नींद की कैफियत को दूर फरमाया) फिर सूरह आले इमरान की आखिरी दस आयात पढ़ी इसके बाद आप उठ खड़े हुए और पास ही जो मुश्क लटकी हुई थी उससे खूब अच्छी तरह वुजू किया और फिर नमाज को खड़े हो गये, मैं भी उठ गया और जो अमल हुजूर ने फरमाया था वही मैंने किया और मैं हुजूर के पहलू में खड़ा हो गया, हुजूर ने अपना दस्ते रास्त और मेरे सीधे कान को मड़ोड़ा,



फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें, (दस रकअतें) पढ़ीं इसके बाद वित्र अदा फरमाए और फिर इस्तराहत के लिए लेट गये। जब सुबह को मोअज्जिन (इत्तेला के लिए) हाजिर हुआ तो आपने उठकर दो रकअतें इस्तिस्ार के साथ अदा कीं उसके बाद बाहर जाकर नमाजे फ़ज्र अदा फरमाई।

## हज़रत आइशा की रिवायत

अबू सलमा से मरवी है कि उम्मूल मोमिनीन हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि मैं पिछली रात को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने पास इस्तराहत फ़रमा पाती थी यानी आप वित्र की नमाज़ से फ़रागत के बाद मेरे पास इस्तराहत फ़रमाया करते थे।

## अमल की मदावमत पसन्दी

मसरूक ने हज़रत आइशा सिद्दीका से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया कि हुजूर वाला को हर अमल पर मदावमत बहुत पसन्द थी मैंने दरयाफ़्त किया कि हुजूर रात के किस हिस्सा में उठते थे? फ़रमाया जब सुबह को मुर्ग की बांग सुन लेते थे।

हज़रत हसन से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रात में ज़रूर इबादत किया करो ख़ाह चार रकअत पढ़ो या दो रकअत, इसलिए कि जिस घर में रात में नमाज़ पढ़ी जाती है उस घर में मुनादी आवाज़ देता है कि ऐ घर वालो! उठो अपनी अपनी नमाज़ पढ़ लो।

## हुजूर का इरशाद तिलावत के बारे में

अबू सलमा ने अबू हुरैरा से रिवायत की है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला नबी का खुशअलहानी से कुरआन पढ़ना जिस तरह सुनता है उस तरह किसी और चीज़ को नहीं सुनता। हज़रत उमर ने हज़रत आइशा सिद्दीका से रिवायत की कि रसूलुल्लाह ने रात की नमाज़ में एक शख्स की किरात समाअत फ़रमाई तो इरशाद फ़रमाया अल्लाह उस पर रहमत नाज़िल फ़रमाये उसने मुझे फ़लां फ़लां आयत याद दिला दी जो मैंने फ़लां सूरत से हज़फ़ कर दी थी।

## हुजूर की नमाज़ शब की मिक़दार

शैख अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से हज़रत आइशा सिद्दीका से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शब में तेरह रकअत और दो रकअत फ़ज्र की सुन्नत पढ़ा करते थे। यह भी एक रिवायत में आया है कि आप रात में बारह रकअत पढ़ा करते थे और एक रकअत मज़ीद मिला कर नमाज़ को वित्र (ताक़) बना देते थे। एक रिवायत यह भी है कि आप दस रकअत नमाज़ पढ़ते थे और एक रकअत मज़ीद मिला कर वित्र बना देते थे। (इस तरह ग्यारह रकअतें हो जाती थीं)।



# नमाजे तहज्जुद की मजीद तफसील

## नस्से कुरआन

अल्लाह तआला ने अपनी किताबे मुबीन में शब का क़याम करने वालों के बारे में इस तरह जिक्र फ़रमाया है:

वह रात के थोड़े हिस्सा में सोते हैं और सुबह दम अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करते हैं।

एक और आयत में इस तरह आया है:

इनके पहलू रात को बिस्तरों से दूर रहते हैं और वह अपने रब से ख़ौफ़ और उम्मीद के ज़ेरे असर दुआ करते हैं।

एक और इरशादे रब्बानी है:

भला जो शख्स रात के औकात में सजदा व क़याम की हालत में इबादत करता है, आखिरत से डरता है और अपने रब की रहमत की उम्मीद रखता है।

एक और आयत में इरशाद है:

और वह लोग (नेक बन्दे) हैं जो रातों को अपने रब के सामने सजदा रेज़ होते हैं और खड़े रहते हैं।

एक और आयत में आया है:

रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद पढ़ा कीजिए यह आप के लिए ज़ायद नमाज़ (फ़र्ज़) है करीब है कि आप को रब आप को मक़ामे महमूद पर फ़ाएज़ करे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि जब क़यामत के दिन अल्लाह तआला अगले पिछले लोगों को इकट्ठा फ़रमायेगा तो एक मुनादी पुकारेगा वह लोग खड़े हो जायें जिनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते थे और वह अपने रब को ख़ौफ़ व उम्मीद के तहत पुकारते थे, यह निदा सुनकर सब लोग खड़े हो जायेंगे मगर उनकी तादाद कम होगी। फिर दोबारा मुनादी पुकारेगा वह लोग खड़े हो जायें जिनको माले तिजारत, ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह के जिक्र से ग़ाफ़िल नहीं करती थीं उन मशाग़िल के बावजूद वह यादे इलाही से ग़ाफ़िल नहीं होते थे। यह लोग खड़े हो जायेंगे मगर यह भी थोड़े होंगे, फिर मुनादी पुकार कर कहेगा जो रन्ज व ग़म में अल्लाह की सना करते थे यह लोग खड़े हो जायेंगे मगर यह भी कम होंगे, फिर उनके बाकी लोगों का हिसाब किताब होगा।

## सहरी ख़ाना और क़यामे शब

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है सहरी ख़ाने से दिन के रोज़े के लिए और दोपहर में कैलूला करके रात के क़याम के लिए मदद हासिल करो क्योंकि रात भर सोने वाला क़यामत के दिन अफ़लास की हालत में आएगा, उसके कान में शैतान पेशाब कर देता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कभी कभी रात में एक ही आयत बार बार पढ़ते थे और इस तरह सुबह हो जाती। हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीका फ़रमाती हैं कि एक शब रसूलुल्लाह मेरे पहलू व पहलू इस्तराहत फ़रमा हुए फिर फ़रमाया आइशा! क्या तुम इजाज़त देती



गुनियतुत्तालिबीन

हो कि अ. ज रात मैं अपने रब की इबादत में मशगूल रहूं मैंने अर्ज किया खुदा की कसम, अगरचे मैं आपके कुर्ब को पसंद करती हूं मगर मैं आपकी ख्वाहिश को तरजीह देती हूं (कि आप अपने रब की इबादत फरमायें) हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उठ खड़े हुए और कुरआन पाक की तिलावत शुरू फरमाई असनाए तिलावत हुजूर इस कदर रोए कि आपके दोनों मोँढ़े तर हो गए फिर आप बैठ कर कुरआन पढ़ने में मशगूल हुए और इस कदर रोए कि आंसूओं से आपके दोनों पहलू और कूल्हे तर हो गए फिर आप लेट गए और कुरआन पढ़ते रहे और इस कदर रोए कि करीब की ज़मीन भीग गई, इतने में हज़रत बिलाल हाज़िर हुए और यह हाल देख कर अर्ज किया या रसूलल्लाह क्या अल्लाह तआला ने आपको मग़फ़ूर नहीं फ़रमा दिया, हुजूर ने जवाब दिया कि ऐ बिलाल! क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा नहीं बनूं आज रात ही यह आयात मुझपर नाज़िल हुई हैं।

बेशक आसमानों, ज़मीन की पैदाईश रात दिन के इख़्तिलाफ़ में उन दानिशमन्दों के लिए निशानियां हैं जो खड़े, बैठे और पहलू के बल लेटे अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हैं और ज़मीन व आसमान की आफ़रीनश पर गौर कर के कहते हैं ऐ हमारे रब तूने उनको बेकार नहीं बनाया, तू पाक है (हर आज़िज़ी से) हमको दोज़ख के अज़ाब से महफूज़ रख।

हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि मैंने कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रात की नमाज़ बैठ कर पढ़ते हुए नहीं देखा, हां जब आप क़िब्र सिनी को पहुंचे तो आप बैठकर नमाज़ (तहज्जुद) अदा फ़रमाते थे फिर भी जब सूरह की तीस चालीस आयात बाकी रह जाती थीं तो आप खड़े हो जाते और उनको पढ़ कर रुकुअ फ़रमाते थे।

यअमर बिन बशीर का बयान है कि रात के वक़्त मैं अब्दुल्लाह बिन मुबारक के मकान पर गया तो उनको नमाज़ पढ़ते पाया वह सूरत इजस्समाअल फ़तरत की तिलावत कर रहे थे, जब वो इस आयत पर पहुंचे: ऐ इंसान तुझे किस बात ने अपने रब्बे करीम से मगरूर करके मुनहरिफ़ कर दिया है? तो उसको पढ़ कर ठहर गए और बार बार उसकी तक़रार करने लगे यहां तक कि सारी रात गुज़र गई (मैं वापिस आगया और) फिर मैं तुलूए फ़ज्र के वक़्त उनके यहां गया वह उस वक़्त भी इस आयते करीमा की तिलावत कर रहे थे, जब उन्होंने देखा कि सुबह हो रही है तो नमाज़ ख़त्म कर दी और इसके बाद कहा, इलाही तेरे हिल्म ने और मेरी जिहालत ने मुझे दिलेर कर दिया था इसके बाद मैं लौट आया और उनको उनके हाल पर छोड़ दिया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे सर्दी का मौसम मोमिन के लिए बहार का मौसम है, दिन छोटा होता है और उसमें वह रोज़ा रखता है, रात तवील होती है उसमें क़ायम करता है।

## हज़रत इब्ने मसऊद के पाकीज़ा अक़वाल

हज़रत इब्ने मसऊद ने फ़रमाया कुरआन पाक पढ़ने वाले के लिए मुनासिब वक़्त यह है कि रात को जब सब सो जायें तो कुरआन पाक की तिलावत करे (अपनी रात को पहचाने) और अपने दिन को पहचाने जब लोग बे रोज़ा हों (रोज़ा रखे) जब लोग हंस रहे हों तो अपने रोने से वाकिफ़ रहे और अपनी परहेज़गारी को जाने, जब लोग हराम व हलाल में तमीज़ न कर रहे हों (तक़वा पर क़ायम रहे) अपनी आज़िज़ी को पहचाने जब लोग गुरूर व तकब्बुर में मुब्ताला हों।



(खुजुअ व खुशूअ से काम ले) अपने गम को पहचाने जब लोग खुशी और मसरत में मशगूल हों, जब लोग यावा गोई में मसरुफ हों तो अपनी खामोशी को पहचाने (खामोशी इख्तियार करे)।

## मगरिब और इशा के दर्मियान नवाफिल

### मगरिब व इशा के दर्मियान नमाज़ की फज़ीलत

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया अगर किसी ने मगरिब के बाद छः रकअतें पढ़ीं और उनके दर्मियान कलाम नहीं किया तो यह छः रकअतें बारह साल की इबादत के बराबर होंगी। जनाब ज़ैद बिन खब्बाब की रिवायत है कि यह भी शर्त है कि उस असना में कोई बुरी बात न कही।

कहा गया है कि पहली दो रकअतों में कुल या अय्युहल काफ़िरन और कुल हुवल्लाहो अहद पढ़ना मुस्तहब है ताकि नमाज़ जल्द ख़त्म हो जाये इसलिए कि यह दो रकअतें नमाज़े मगरिब के साथ उठाई जाती हैं, बाकी चार रकअतों में अगर चाहे तो किरात तवील करे।

हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मगरिब के बाद किसी से बात किये बग़ैर अगर किसी ने चार रकअतें पढ़ीं तो यह रकअतें उसके लिए ईल्लीईन में लिखी जायेंगी और सबाब में यह शख्स उसके मिस्ल हो जाता है जिसने शबे क़द्र में मस्जिदे अक़सा में नमाज़ अदा की। यह नमाज़ आधी रात के क़याम से बेहतर है।

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद बहवाला हज़रत अमीरुल मोमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ बयान किया कि सिद्दीक़ अक़बर ने फ़रमाया कि मैंने खुद सुना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमा रहे थे कि जिस शख्स ने मगरिब की नमाज़ के बाद चार रकअतें पढ़ीं तो वह उस शख्स की मानिन्द हो गया जिसने हज पर हज अदा किया हो, हज़रत सिद्दीक़े अक़बर फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज किया कि अगर कोई शख्स छः रकअतें अदा करे तब, हुजूर ने फ़रमाया, उसके पचास बरस के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे।

हज़रत सईद बिन जुबैर ने बरिवायत हज़रत सोबान बयान किया कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया जो शख्स जमाअत वाली मस्जिद में मगरिब व इशा के दर्मियानी अरसा में मस्जिद में रुका रहे और सिवाए नमाज़ या तिलावते कुरआन के किसी से कोई बात न करे तो उस बन्दा का अल्लाह तआला पर हक़ हो जाता है कि जन्नत के अन्दर उसके लिए ऐसे दो महल तामीर किये जायें कि हर महल का तूल सद साला रास्ता की मुसाफ़त के बक़्द्र हो और दोनों महलों के नीचे ऐसे दरख़्त लगा दे कि तमाम दुनिया उन दरख़्तों के नीचे बतौर मेहमान बैठ जाये जब भी तंगी न करता है और उसी नमाज़ पर अपना दिन ख़त्म करता है यह नमाज़ न मुसाफ़िर से साक़ित है न मुक़ीम से। जो शख्स मगरिब की नमाज़ के बाद चार रकअतें किसी शख्स से बात किये बग़ैर पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके लिए दो महल मोती और याकूत मुरस्सा तैयार फ़रमायेगा और अगर



किसी हमनशीं से बात किये बगैर मगरिब के बाद छः रकअतें पढ़ेगा तो उसके चालीस बरस के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे।

हज़रत अबू हुरैरा मगरिब और इशा के दर्मियान बारह रकअतें पढ़ते थे।

हश्शाम बिन अरवा ने बरिवायत अपने वालिद से हज़रत आइशा सिद्दीका का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख्स मगरिब और इशा के दर्मियान बीस रकअतें पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल तैयार फ़रमायेगा। एक रिवायत में है कि हज़रत अनस बिन मालिक मगरिब और इशा के माबैन नफ़ल पढ़ते थे और फ़रमाते थे यह तहज्जुद की नमाज़ के कायम मक़ाम है।

अब्दुर्रहमान बिन असवद ने अपने चचा का कौल नक़ल किया है कि उन्होंने कहा मगरिब और ईशा के दर्मियान जब भी हज़रत इब्ने मसऊद के पास जाता आप को नमाज़ पढ़ते पाता, वह फ़रमाते थे कि यह ग़फ़लत की घड़ी है।

कहा गया है कि इसी नमाज़ के मुताल्लिक आयत ततजाफ़ा जुनूबिहिम अनिल मज़ाजेअ नाज़िल हुई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख्स ने नमाज़े मगरिब के बाद अलीफ़ लाम मीम तंज़िलिस सजदा और तबारकल्लज़ी बयदिहिल ख़ैर पढ़ी तो उसने उस शब्द का हक़ अदा कर दिया, कयामत के दिन उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह दरख़्शां और ताबां होगा मुमकिन है कि यह मसनून दो गाना से अलावा हो या उसके साथ शामिल हो।

## मगरिब की नमाज़ से पहले दो रकअतें

### हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल का इरशाद

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल से मगरिब की नमाज़ से कबल दो रकअतें पढ़ने के बारे में दरयाफ़्त किया गया, फ़रमाया मैं ऐसा नहीं करता और अगर कोई करे तो कुछ हरज भी नहीं है। हज़रत इब्ने उमर से इसकी बाबत दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में मैंने किसी को पढ़ते नहीं देखा लेकिन हज़रत इब्ने उमर ने मगरिब से पहले दो रकअतें पढ़ने से किसी को मना भी नहीं फ़रमाया।

एक रिवायत में है कि हज़रत अनस ने फ़रमाया रसूलुल्लाह के अहदे मुबारक में गुरुब के बाद नमाज़े मगरिब से पहले हम दो रकअतें पढ़ा करते थे, मैंने हज़रत अनस से दरयाफ़्त किया कि क्या आप ने भी पढ़ी थीं? उन्होंने फ़रमाया हम हुज़ूर को पढ़ते देखते थे लेकिन हुज़ूर ने न हुक्म दिया और न मुमानियत फ़रमाई।

### सहाबा केबार में किसी ने यह नमाज़ नहीं पढ़ी

इब्राहीम नख़ई का बयान है कि एक ज़माना में कूफ़ा में बड़े बड़े बुजुर्ग सहाबी मौजूद थे जैसे हज़रत अली कर्रमुल्लाहो वज्हेहु, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान, हज़रत अम्मार बिन यासिर, हज़रत अबू मसऊद अंसारी वगैरह लेकिन मैंने मगरिब से पहले किसी को भी नमाज़ पढ़ते नहीं देखा और न हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर और हज़रत उसमान रिज़वानुल्लाह



अलैहिम अजमईन में से किसी ने यह नमाज़ पढ़ी।

## मग़रिब और इशा के दर्मियान

## नमाज़ पढ़ना और उसका सवाब

अब्दुर्रहमान बिन हबीब हारसी बसरी ने सईद बिन सअद से उन्होंने अबू तैबा कुर्ज बिन दौरा अब्दाल से रिवायत की है कि मुल्क शाम से मेरा भाई मेरे पास एक तोहफा लाया और मुझसे कहा इसको कबूल फरमाइये क्योंकि यह बहुत उमदा तोहफा है, कुर्ज ने उनसे दरयाफ्त किया कि यह तोहफा तुम कहां से लाये हो उन्होंने कहा कि मुझे यह तोहफा इब्राहीम तैमी ने दिया था। कुर्ज अपने भाई से दरयाफ्त किया कि क्या तुमने इब्राहीम तैमी से दरयाफ्त था कि उनको यह तोहफा कहां से मिला? उन्होंने कहा कि इब्राहीम तैमी से मैंने दरयाफ्त किया था तो उन्होंने मुझे बताया था कि:

हज़रत ख़िज़्र से मुलाक़ात और दीदारे रसूले करीम

मैं खानए काबा के रूबरू बैठा हुआ तरबीह व तहमीद व तहलील में मसरूफ़ था कि एक साहब तशरीफ़ लाये और सलाम करके मेरी दाईं जानिब बैठ गये, वह बहुत ज्यादा खूबरू थे, ऊमदा साफ़ और मुअत्तर लिबास पहने हुए थे। मैंने दरयाफ़्त किया, अल्लाह के बन्दे तुम कौन हो? उन्होंने जवाब दिया कि मैं खिज़्र हूँ और तुम्हे सलाम करने आया हूँ, चूँकि तुम अल्लाह के महबूब हो इस लिए तुमको एक तोहफ़ा पेश करता हूँ, मैंने दरयाफ़्त किया कि वह कौन सा तोहफ़ा है? मेरे पूछने पर हज़रत खिज़्र ने बताया कि तुम सूरज निकलने और धूप फैलने से पहले और इसी तरह गुरुबे आफ़ताब से पहले सात मरतबा अलहमद शरीफ़, सात मरतबा सूरह सूरह अन्नासा, सात मरतबा सूरह फ़लक और सात मरतबा सूरह इख़लास, सात मरतबा कुल या अय्योहल काफ़ेरून, सात मरतबा आयतल कुर्सी और सात मरतबा सुब्हानल्लाहि वलहमदो लिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर और सात मरतबा दरुद शरीफ़ और सात मरतबा अपने और अपने वालिदेन और जमीअ मुसलमानों मर्द और औरतों के लिए इस्तिग़फ़ार पढ़ो और इस्तिग़फ़ार के बाद यह दुआ पढ़ा करो:

इलाही मेरे साथ और तमाम के साथ जल्दी बिला ताखीर दुनिया व आखिरत में वही कर जो तेरे शायाने शान हो और हमारे साथ वह न कर जिसके हम लायक नहीं हैं, बेशक तू ही बख्शने वाला, बुर्दबार, सखी, करीम, मेहरबान और रहम करने वाला है।

यह विद सुबह व शाम बराबर करते रहा करो इसको कभी तर्क न करना, चूंकि जिसने मुझे यह तोहफा दिया है उसने मुझसे कहा था ख्वाह उम्र भर में एक ही मरतबा ही पढ़ना लेकिन इसको पढ़ना जरूर। मैंने हजरत खिज़्र से दरयाफ्त किया कि आप को यह तोहफा देने वाला कौन था? उन्होंने कहा कि मुझे सय्यदना आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अता फरमाया है। फिर मैंने कहा कि मुझे भी ऐसी चीज़ बता दीजिए कि अगर मैं उसको पढ़ूं तो मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीदार से ख्वाब में मुशरफ हो जाऊं और मैं खुद हुजूर से दरयाफ्त कर लूं कि वह तोहफा क्या है जो हुजूर ने हजरत खिज़्र को दिया था?



हजरत खिज़्र ने फ़रमाया तो क्या तुम मुझ को झूठा समझते हो और मुझसे झूठ की तोहमत रखते हो? मैंने कहा नहीं खुदा की कसम ऐसा नहीं है मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जबाने मुबारक से सुनना चाहता हूँ।

हजरत खिज़्र ने फ़रमाया कि अगर तुम ख़्वाब में ज़ियारत के ख़्वाहां हो तो अच्छी तरह समझ लो और याद कर लो कि मगरिब की नमाज़ के बाद इशा तक बग़ैर किसी से बात किये खड़े हो कर नमाज़ (नफ़ल) पढ़ो और हुजूरे कल्ब और पूरी तवज्जोह से नमाज़ अदा करो हर दो रकअत पर सलाम फ़ेरो हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह इख़लास सात बार पढ़ो, ज़माअत के साथ ईशा की नमाज़ पढ़कर किसी से बात किये बग़ैर घर आ कर वित्र पढ़ो, सोने से कबूल दो रकअतें और पढ़ो, हर रकअत में सूरह फ़ातिहा और सूरह इख़लास हर एक सात बार, फिर नमाज़ के बाद सजदा करो, सजदा में सात बार इस्तिग़फ़ार, सात मरतबा सुब्हानल्लाहि वलहम्दो लिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीइल अजीम पढ़ो, फिर सजदे से सर उठा कर अच्छी तरह बैठकर दोनों हाथ उठा कर यह दुआ पढ़ो या हय्यो या कय्यूमो या जल जलाले वल इकराम या इलाहल अव्वलीना वल आख़ेरीना या रहमानदुनिया वल आख़ेरते व र हिम हुमा या रब्बे या अल्लाहो या अल्लाहो, फिर खड़े हो जाओ और कयाम में वही दुआ करो जो पहले सजदा में की थी फिर सजदा में जाओ और यही दुआ मांगो इसके बाद सर उठा कर जिस जगह चाहो किब्ला रू हो कर दरुद शरीफ़ पढ़ते हुए सो जाओ। दरुद शरीफ़ बराबर पढ़ते रहना, यहां तक तुम नींद से मग़लूब हो जाओ। मैंने कहा कि मेरी ख़्वाहिश तो यह है कि जिस हस्ती से आप ने यह दुआ सुनी है वही मुझे भी इसकी तालीम दें। हजरत खिज़्र ने कहा कि तुम मुझ पर झूठ की तोहमत रखते हो, मैंने कहा उस खुदा की कसम जिसने मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबीए बरहक़ बना कर भेजा मैं आप पर झूठ की तोहमत नहीं लगाता। हजरत खिज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिस जगह इस दुआ की तालीम दी जा रही थी और हुक्म दिया जा रहा था मैं वहां मौजूद था पस जिस हस्ती को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तालीम दी थी मैंने उस हस्ती से इसे सीख लिया। मैंने हजरत खिज़्र से कहा अच्छा मुझे इस दुआ का सवाब सुनाइये तब खिज़्र ने कहा कि अब तुम खुद ही सरवर कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त कर लेना।

इब्राहीम नखई का बयान है कि मैंने हजरत खिज़्र के इरशाद के मुताबिक़ दुआयें पढ़ीं और बिस्तर पर लेट कर बराबर दुआ पढ़ता रहा, खिज़्र अलैहिस्सलाम की मुलाकात और हुजूर के दीदारे पाक की आरजू से मुझे इतनी खुशी हुई कि मेरी नींद उड़ गई (जागते जागते) और सुबह भी हो गई, मैं फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर अपनी महराब में बैठा रहा यहां तक कि दिन चढ़ आया उस वक़्त मैंने इशराक़ की नमाज़ पढ़ी लेकिन मैं अपने दिल से हम कलाम था कि अगर आज रात तक ज़िन्दगी बाकी रही तो साबिका शब की तरह इन दुआओं को फिर पढ़ूंगा, यह ख़्याल करते करते मैं सो गया, नींद में कुछ फ़रिश्ते आये मुझे सवार करके अपने हमराह ले चले और मुझे ले जाकर जन्नत में दाख़िल कर दिया, मैंने वहां कुछ महल देखे उनमें से बाज़ याकूते सुख़, कुछ सब्ज़ ज़मुरद के थे और बाज़ सफ़ेद मोतियों के थे, शहद, दूध और शराबे (तहूर) की नहरें भी दिखाई गई, एक महल में एक हसीन औरत पर मेरी नज़र पड़ी जो मुझे इश्तियाक़ से देख



गुनिबुत्तालिबीन

रही थी उसके चेहरा के नूर से सूरज की रौशनी मांद थीं, उसकी जुल्फें उस महल के ऊपर से जमीन तक लटक रही थीं। चूंकि फरिश्तों ने मुझे जन्नत में दाखिल किया था इस लिए मैंने उन्हीं से पूछा कि यह महल कौन से हैं और यह औरत कौन है और किसके लिए है? उन्होंने कहा कि तेरे अमल की तरह जो भी अमल करे यह उसके लिए है। फरिश्ते मुझे जन्नत से उस वक्त तक बाहर नहीं लाये जब तक उन्होंने मुझे जन्नत के फल न खिला दिए और वहां का शरबत न पिला दिया उसके बाद उन फरिश्तों ने मुझे उसी जगह पहुंचा दिया जहां मैं बैठा था, इतने में मैंने देखा कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सत्तर अम्बिया के साथ फरिश्तों की सत्तर कतारों के जुलू में तशरीफ लाए हैं। उन कतारों में से हर कतार मशरिक से मगरिब तक चली गई थी। हुजूर तशरीफ लाए और सलाम अलैक से नवाजा और मेरा हाथ पकड़ लिया मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह! मुझसे खिज़्र ने इस तरह फरमाया है कि उन्होंने यह बात हुजूर वाला से सुनी है, यह सुन कर हुजूर ने फरमाया खिज़्र ने जो कुछ कहा सच कहा और जो कुछ वह बयान करते हैं हक होता है, वह अहले जमीन में सबसे बड़े आलिम हैं और रईसुल अबदाल हैं और अल्लाह के लशकरियों में से हैं, मैंने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह जो ऐसा अमल करेगा उसका क्या सवाब मिलेगा, हुजूर ने फरमाया कि जो कुछ तूने देखा और जो कुछ तुझे दिया गया उससे बढ़कर और क्या सवाब होगा, तूने जन्नत में अपनी जगह देख ली, जन्नत के फल खाये और जन्नत का शरबत पिया, फरिश्तों और अंबियां को मेरे साथ देख लिया और हूरें भी देख लीं (इससे बढ़कर सवाब और क्या होगा) मैंने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह अगर कोई शख्स मेरे अमल की तरह अमल करे और जो कुछ मैंने मुशाहिदा किया वह यह सब कुछ नहीं देख पाये तो क्या उसको इन चीजों के बदले कुछ सवाब मिलेगा, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया उस जात की कसम जिसने मुझे नबीए बरहक बना कर भेजा है ऐसे शख्स के तमाम सगीरा और कबीरा गुनाह बख्श दिये जायेंगे, अल्लाह तआला उस पर ग़ज़ब नहीं फरमायेगा और न उससे नाखूश होगा अगर वह जन्नत को ख़्वाब में नहीं भी देखेगा तब भी उसको वही कुछ मिलेगा जो तुझ को दिया गया है, एक मुनादी आसमान की निदा करेगा कि इस अमल को करने वाले के और उम्मत मोहम्मदिया के मशरिक से लेकर मगरिब तक (जहां जहां वह मौजूद हैं) तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के गुनाह अल्लाह तआला ने बख्श दिए हैं, बाई जानिब के फरिश्ते को (किरामन कातेबीन में से एक को) हुक्म दिया जायेगा कि आइन्दा साल तक इस बन्दे के गुनाह न लिखना।

यह सुनकर मैंने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह मेरे मां बाप हुजूर पर कुरबान! कसम है उस खुदा की जिसने मुझे हुजूर के जमाल से मुशर्रफ और सरफराज फरमाया और जन्नत की सैर कराई क्या उस शख्स के लिए भी इस कदर सवाब है? हुजूर ने फरमाया हां, यह सब इनाम उसको दिया जायेगा। मैंने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह तब तो तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिए यह जरूरी है कि वह इस तरीके को सीखें और सिखायें क्योंकि इसमें बड़ी फज़ीलत और बड़ा सवाब है। यह सुनकर हुजूर ने फरमाया कसम है उस जात की जिसने मुझे बरहक नबी बना कर भेजा इस अमल को वही शख्स करेगा जिसको अल्लाह ने सईद पैदा किया होगा और इस को वही तर्क करेगा जो पैदाइशी तौर पर बदबख्त होगा।



मैंने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह ऐसा अमल करने वाले को क्या कुछ और भी मिलेगा? हुजूर ने फरमाया कसम है उस जात की जिसने मुझे नबीए बरहक बना कर भेजा है कि जो शख्स यह अमल एक रात भी करेगा तो उसके लिए कायनात की पैदाइश से सूर फूँके जाने के दिन तक आसमान से बरसने वाले हर कतरे की तादाद के बराबर नेकियां लिखी जायेंगी और जमीन से पैदा होने वाले दानों के बराबर उसकी बुराइयां और बदियां दूर कर दी जायेंगी, ख्वाह वह मर्द हो या औरत।

## शबे जुमा में दो रकअत नमाज

हजरत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो कोई शबे जुमा में दो रकअत नमाज इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फातिहा, आयतल कुर्सी एक एक बार सूरह इखलास पन्द्रह बार पढ़े फिर नमाज के आखिर में हजार मरतबा यह दरुद अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिन नबीइल उम्मी पढ़े तो वह मेरा दीदार ख्वाब में जरूर करेगा यानी दूसरा जुमा होने से पहले उसको मेरा दीदार ख्वाब में हो जायेगा और जिसने मुझको देखा उसके लिए जन्नत है, उसके गुज़िश्ता और आइन्दा गुनाह माफ कर दिये जायेंगे।

## नमाजे इशा के बाद नवाफ़िल

शैख अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद के साथ हजरत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि जिसने नमाज इशा में बादे चार रकअत नमाजे इशा के बाद चार रकअत नमाजे नफ़ल पढ़ी गोया मस्जिदे हराम में शबे क़द्र का सवाब उसको हासिल हो गया।

## चार रकअत नफ़ल का सवाब

कअब अहबार का कौल है कि जिसने इशा के बाद ख़ूब ऊमदा किरात के साथ चार रकअत नफ़ल पढ़े उसके लिए उतना अज़्र है जितना शबे क़द्र का। (गोया उसने शबे क़द्र में नमाज अदा की) शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल'असनाद हजरत अनस बिन मालिक से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स इशा के बाद दो रकअतें इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फातिहा एक बार और सूरह इखलास बीस बार पढ़े तो अल्लाह तआला उसके लिए दो महल बनायेगा जो जन्नत में रहने वालों को नज़र आयेंगे।

## नमाज वित्र का वक़्त

वित्र की नमाज रात के आखिरी हिस्सा में पढ़ना अफ़ज़ल है क्योंकि उस वक़्त के क़याम की बड़ी फ़ज़ीलत है जैसा कि इससे पहले बयान किया जा चुका है। हजरत नाफ़ेअ ने हजरत इब्ने उमर से रिवायत की है कि उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह से एक शख्स ने नमाजे शब के बारे में दरयाफ़्त किया, हुजूर ने फरमाया दो दो रकअत पढ़ो जब सुबह सादिक होने का एहतमाल हो तो तीसरी रकअत मिला कर वित्र पढ़ लिया करो।

हजरत उमर फारूक आखिरी रात में वित्र पढ़ा करते थे और हजरत अबू बकर सिद्दीक अब्दल रात में सोने से क़ब्ल वित्र पढ़ लिया करते थे। जब हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम



उन्होंने दोनों हज़रत से दरयाफ्त फ़रमाया कि वित्र किस तरह पढ़ते हो? तो हज़रत सिद्दीक़े अक़बर ने फ़रमाया अक्व़ल शब में सोने से क़बूल और हज़रत उमर फ़ारूक़ ने बताया कि आख़िरी रात में पढ़ते हैं तो आपने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि यह मुहतात हैं और हज़रत उमर फ़ारूक़ के बारे में इरशाद किया कि यह क़वी व तवाना हैं। रिवायत में आया है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ ने फ़रमाया कि होशमन्द अक्व़ल शब में वित्र पढ़ लेते हैं और क़वी व तवाना आख़िरी रात में और यही अफ़ज़ल है लेकिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के अमल के बावज़ लोगो ने अक्व़ल शब में वित्र पढ़ना अफ़ज़ल करार दिया है।

हज़रत उसमान ग़नी के बारे में रिवायत है कि उन्होंने (इस सिलसिला में) फ़रमाया मेरा मामला यह है कि मैं अक्व़ल शब में वित्र पढ़ लेता हूँ फिर अगर बेदार हो गया तो फिर वित्र पढ़ लेता हूँ। एक रकअत पढ़ कर वित्र को शिफ़ा बना लेता हूँ गोया मेरी यह रकअत एक अजनबी ऊँट की तरह है जिसको मैं उसके हमजिन्सों से मिला देता हूँ। हज़रत उसमान का यह अमल कि आप रात भर में पूरा क़ुरआन पाक एक रकअत में ख़त्म कर दिया करते थे। यह एक रकअत ही उनकी वित्त्र नमाज़ थी।

## हज़रत अबू हुरैरा को सरवरे आलम की तीन हिदायतें

हज़रत अबू हुरैरा फ़रमाते हैं कि मेरे हबीब अबुल क़सिम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे तीन बातों की वसीयत फ़रमाई है, एक यह कि सोने से पहले वित्र पढ़ो करूँ, दोम हर माह तीन रोज़े रखूँ सोम यह है कि चाश्त की दो रकअतें पढ़ा करूँ जिस शख्स को यह डर हो कि सोने के बाद आँख नहीं खोल सकेगी उसे सोने से पहले वित्र ज़रूर पढ़ लेना चाहिए।

## नमाज़े वित्र के तीन तरीक़े

हज़रत अली ने फ़रमाया नमाज़ वित्र के तीन तरीक़े हैं अगर तुम चाहो तो अक्व़ल शब में पढ़ो तो फिर दो दो नफ़ल पढ़ो और चाहो तो वित्र की एक रकअत पढ़ कर सो रहो, फिर अगर तुम बेदार हो जाओ तो एक रकअत पढ़ कर इसको शिफ़ा बना दो और इसके बाद दूसरे वित्र पढ़ो और अगर दिल चाहे तो वित्र को आख़िरी रात के लिए छोड़ दो और तहज्जुद की नमाज़ के बाद पढ़ लो।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया जिसको अन्देशा हो कि आख़िर शब में बेदार नहीं हो सकेगा उसको चाहिए कि अक्व़ल शब में वित्र पढ़ कर सो रहे और जिसको पिछली रात में उठने की उमीद हो वह वित्र को मोअख़्ख़र कर दे (आख़िर शब में पढ़े) क्योंकि आख़िर शब की नमाज़ में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और यह अफ़ज़ल है।

हज़रत आइशा ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आख़िर शब में वित्र पढ़ लेते थे अगर आपवन्दे बीवी से क़ुरबत की गुर्ज़ होती तो क़ुरबत फ़रमाते वरना जाए नमाज़ ही पर लेट जाते थे यहां तक कि (सुबह सादिक के वक़्त) बिलाल हाज़िर होकर नमाज़ (तैयार होने) की इत्तेला देते थे।

## रसूलुल्लाह ने पूरी रात में वित्र पढ़े हैं

हज़रत आइशा ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पूरी



रात में वित्र पढ़े हैं यानी अव्वल में भी, दर्मियान शब में भी और आखिर शब में भी। आप के वित्र की आखिरी हद सहर होती थी। एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह (कभी कभी) वित्र अजान के वक्त और फ़ज्र की दो रकअतें इक़ामत के वक्त पढ़ लेते थे। सहाबा कराम नमाज़े इशा पढ़ कर दो रकअतें पढ़ते थे फिर चार पढ़ते थे फिर जो चाहता वित्र पढ़ लेता और जिस की राय होती वह सो रहता (पिछले पहर उठ कर वित्र पढ़ लेता)।

## वित्रों को फ़स्ख़ कर देना

### वित्रों का फ़स्ख़ करना

अगर अव्वल शब में वित्र पढ़ लिये हों और फिर तहज्जुद को भी उठे तो अव्वल शब के पढ़े होये वित्रों को फ़स्ख़ कर दे और अज़ सरे नौ वित्र पढ़े या वित्र को फ़स्ख़ किए बग़ैर जिस क़दर चाहे नमाज़ अदा करे। इस सिलसिला में इमाम अहमद हंबल की एक रिवायत तो यह है कि वह वित्र को फ़स्ख़ न करे (यह अदमे फ़स्ख़ की रिवायत है) और दूसरी फ़ज़ल बिन ज़ियाद की रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया आखिर शब में वित्र अफ़ज़ल हैं हां अगर किसी को सोते रहने का अन्देश हो तो अव्वल शब में वित्र पढ़ ले फिर अगर आखिर शब में बेदार हो जाये दो दो रकअतें (कुल चार) पढ़ ले और वित्र न पढ़े लेकिन दूसरी रिवायत इस रिवायत के खिलाफ़ है। फ़ज़ल बिन ज़ियाद कहते हैं कि मैंने इमाम अहमद हंबल से दरयाफ़्त किया कि पिछली रात में उठलने वाला क्या सोने से पहले पढ़े हुए वित्र फ़स्ख़ कर दे? उन्होंने फ़रमाया फ़स्ख़ न करे लेकिन अगर फ़स्ख़ कर दे और अज़ सरे नौ पढ़े तो इस में भी काई हरज नहीं है।

हज़रत उमर, हज़रत उसामा, हज़रत अली, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत अबू हुरैरा ने ऐसा किया है। वित्र को फ़स्ख़ करने का तरीका यह है कि अव्वल शब में अगर वित्र की एक रकअत पढ़ कर सोया और फिर आखिर शब में नमाज़ पढ़ने के लिए बेदार हो जाए तो पढ़े हुए वित्र को फ़स्ख़ करने और उसको शफ़अ बनाने की नीयत से एक रकअत और पढ़ कर सलाम फेर दे इस तरह पहली रकअत जुफ़्त हो जाएगी, उसके बाद जिस क़दर चाहे दो दो रकअत पढ़े और तुलूए फ़ज्र से पहले किसी दोगाना को एक रकअत पढ़ कर वित्र बनादे।

हज़रत उसमान इब्ने अफ़फ़ान के अमल से इसकी वज़ाहत हुई है जैसा कि ऊपर बयान हो चुका है, ऐसा न करे कि अव्वल शब में पढ़े हुए वित्र वैसे ही छोड़ दे और फिर मज़ीद वित्र पढ़ ले। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि एक रात में वित्र की दो नमाज़ें नहीं हैं। अलबत्ता अगर पहले पढ़े हुए वित्र छोड़े दे (फ़स्ख़ कर दे) फिर जितनी नमाज़ चाहे पढ़े और आखिर में वित्र पढ़ ले तो जाइज़ है जैसा कि ऊपर सराहत की जा चुकी है।

## वित्र की दुआ

वित्र की आखिरी रकअत में रूकुअ से सर उठा कर यह दुआ पढ़ी जाये

हज़राते हनाबला का यही मज़हब है, अहनाफ़ में क़िरत के बाद रूकुअ से पहले तफ़अ यदैन



उसके बाद दुआए कुनूत पढ़ी जाती है।

इलाही हम तुझ ही से मदद चाहते हैं और तुझ ही से हिदायत के और मगफिरत के तालिब हैं और हम तुझ पर ईमान रखते हैं और तेरा भरोसा रखते हैं और तमाम भलाईयों पर तेरी सना करते हैं और हम तेरा शुक्र अदा करते हैं और ना शुक्र नहीं करते, हम तेरे खताकार को छोड़ते हैं और उससे कतअ ताल्लुक करते हैं। इलाही हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते हैं और सजदा करते हैं और तेरी ही तरफ हम दौड़ते हैं और शताबी करते हैं। हम तेरी रहमत से उम्मीद रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं बिला शुब्हा तेरा अज़ाब काफ़िरों को पहुँचने वाला है।

इलाही जिनको तूने हिदायत अता फ़रमाई मिनजुमला उनके मुझे यही हिदायत अता फ़रमा और जिनको तू ने आराम दिया मिनजुमला उनके मुझे भी आराम अता फ़रमा और जिनको तूने कारसाज़ी की उनके मिनजुमला मेरे भी काम बना, उसमें बरकत अता कर और अपने फ़ैसला की बुराई से मुझे महफूज़ रख, बिला शुब्हा तू हुक्म चलाता है तुझ पर हुक्म नहीं चलाया जाता, बिला शुब्हा जिसको तूने दोस्त बनाया वह ज़लील नहीं हुआ और जिसको तूने दुश्मन बनाया वह इज़्ज़त न पा सका, ऐ हमारे परवरदिगार तू बुजुर्ग व बतर है इलाही मैं तेरे गुज़ब से तेरी रज़ा की और तेरे अज़ाब से तेरी माफ़ी की और तुझसे तेरी ही पनाह मांगता हूँ। इलाही जैसी तूने अपनी सना फ़रमाई वैसी सना मैं किसी हाल में नहीं कर सकता।

इन अलफ़ाज़ के बाद चाहे तो दुआईया अलफ़ाज़ और इज़ाफ़ा करे, इसके बाद हाथों को चेहरे (मुंह) पर फेरे। एक रिवायत में है कि सीने पर फेरे अगर माहे रमज़ान में यह दुआ मांगने वाला इमाम हो तो दुआ के वाहिद के सेगों के बजाए जमा के सेगे इस्तेमाल करे।

## नीन्द का ग़लबा

जो शख्स रात में नमाज़ पढ़ रहा हो अगर उसपर नीन्द का ग़लबा हो जाये तो बेहतर यह है कि वह सो जाये क्योंकि बुखारी और मुस्लिम (सहीहैन) में हज़रत आइशा से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लिम ने फ़रमाया कि जब किसी को नमाज़ की हालत में नीन्द ग़ालिब हो जाये तो उसको सो जाना चाहिए ताकि नीन्द का ग़लबा जाता रहे इसलिए कि औघने की हालत में नमाज़ पढ़ेगा तो मुमकिन है कि इस्तिग़फ़ार के बजाए खुद को बुरा कहने लगे।

अब्दुल अज़ीज़ बिन हबीब हज़रत अनस से रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो दो सुतूनों के दरमियान रस्सी बंधी हुई मुलाहज़ा फ़रमाई। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लिम ने सहाबा कराम से इसकी वजह दरयाफ़्त फ़रमाई तो सहाबा ने अर्ज किया कि यह हज़रत ज़ैनब की रस्सी है वह रात को जब नमाज़ पढ़ती हैं तो जब सुस्त हो जाती हैं या उनका बदन (नीन्द के ग़लबा से) ढीला पड़ जाता है तो हाथ से उसका सहारा ले लेती हैं, आपने फ़रमाया इस रस्सी को खोल दो जब तक बदन में चुस्ती रहे नमाज़ पढ़ें और जब थक जाओ या नीन्द का ग़लबा हो तो बैठ जाओ।

हज़रत अरवा का बयान है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका की खिदमत में कबीलए बनी असद की एक औरत मौजूद थी कि हुज़ूर अक़दस तशरीफ़ लाये और फ़रमाया यह कौन है हज़रत आइशा ने अर्ज किया कि यह फ़लां औरत है रात को (इबादत की वजह से) सोती



गुनियतुत्तालिबीन

ही नहीं, हुजूर ने फरमाया तुम में जिस अमल की सकत और ताकत है उसकी पाबन्दी करो खुदा की कसम तुम थक जाओगे अल्लाह तआला नहीं थकेगा (वह बदला देने से नहीं थकेगा)। हजरत आइशा फरमाती हैं कि अल्लाह को वही अमल ज्यादा महबूब है जो हमेशा किया जाये ख्वाह वह कम ही क्यों न हो (रोज़ किया जाये) क्योंकि रसूलुल्लाह जब लोगों को उनकी ताकत और तवानाई के मुताबिक अमल का हुक्म देते थे तो वह अर्ज करते थे या रसूलुल्लाह हम आप की तरह किस तरह हो सकते हैं कि अल्लाह तआला ने आपकी तमाम अगली पिछली लगजिरी तो माफ़ फरमा दी हैं लिहाज़ा हमारा अमल सख्त और ज्यादा होना चाहिए यह सुनकर हुजूर वाला के चेहरा मुबारक पर नागवारी के आसार नुमायां हो जाते। पस जिस इबादत गुज़ार पर नीन्द का इस क़दर ग़लबा हो जाये कि उसको नमाज़ और ज़िक्र से रोके (नमाज़ और ज़िक्र में रुकावट पड़े) तो उसको चाहिए कि सो जाये ताकि नीन्द का ग़लबा जाता रहे और बाद में वह हश्शाश बश्शाश हो कर इबादत कर सके और जो पड़े उसको समझे भी।

## बैठे बैठे सो जाना बुरा है

हजरत इब्ने अब्बास बैठे बैठे सो जाने को बुरा समझते थे। हदीस शरीफ में आया है रात में नीन्द की तकलीफ़ न उठाओ। चुनांचे बाज़ लोग अमदन खुद को सोने में मशगूल कर लेते थे ताकि कुछ आराम करके रात में इबादत कर सकें बाज़ सुलहा कसदन सोने को बुरा जानते थे और जब तक पूरी तरह गालिब नहीं आ जाती थी नहीं सोते थे कहते हैं कि वहब बिन मम्मा यमनी ने तीस बरस तक ज़मीन से अपना पहलू नहीं लगाया, आप के पास चमड़े का एक सहारा था जब नीन्द से मगलूब हो जाते तो उस पर सीना रखकर चन्द बार झूलते और फिर घबरा कर नमाज़ के लिए खड़ हो जाते, वह फरमाते थे कि किसी घर में मुझे शैतान को देखना इतना नागवार नहीं गुज़रता जितना बिस्तर को देखना नागवार है (सुराद यह कि बिस्तर नीन्द की तरफ़ रग़बत दिलाता है)।

## अबदाल के औसाफ़

किसी से अबदाल के औसाफ़ दरयाफ़्त किये गये उन्होंने जवाब दिया कि उनका खाना फाका है उनका सोना उस वक़्त होता है जब नीन्द का इन्तहाई ग़लबा हो, वह ज़रूरत के वक़्त बोलते हैं उनकी ख़ामोशी हिकमत है और उनका इल्म कुदरत है। बाज़ सुलहा से दरयाफ़्त किया गया कि ख़ौफ़े खुदा रखने वालों के औसाफ़ क्या हैं उन्होंने जवाब दिया उनका खाना बीमारों का खाना होता है और उनकी नीन्द डूबने वालों की नीन्द होती है लेकिन कोई शख्स सालेहीन के आमाल व अहवाल को पेशे नज़र न रखे बल्कि उन अहवाल व अक्वाल की जुस्तजू करना चाहिए जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी हैं उनको देखो कि काबिले एतमाद वही है ख्वाह उनकी पैरवी में कोई शख्स ऐसी हालत ही को क्यों न पहुंच जाये जो मुनफ़रिद हो।

## बेहतर अमल

हजरत उम्मे सलमा ने हजरत आइशा से रिवायत की है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किसी शख्स ने दरयाफ़्त किया कि कौन सा अमल अफ़ज़ल है? हुजूर ने फरमाया अमल वही अफ़ज़ल है जो हमेशा किया जाये ख्वाह वह कम ही क्यों न हो।



अलकमा ने हज़रत आइशा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदते करीमा यह थी कि आप की नमाज़ हमेशा पाबन्दी के साथ होती थी इसलिए रसूलुल्लाह कभी आधी रात तक नमाज़ पढ़ते थे कभी एक तिहाई रात तक, कभी आधी रात से रात के 1/12 हिस्सा तक, कभी सिर्फ़ चहारुम रात तक, कभी रात के छठे हिस्से तक, उन तमाम का तज़क़िरा सूरह मुज़म्मिल में आया है। एक रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रात की नमाज़ पढ़ो ख़्वाह उसका वक़्त इतना क़लील ही क्यों न हो जितना बकरी का दूध दूहने का। उतनी देर में कभी दो रकअतें होती हैं और कभी चार। हुज़ूर वाला ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि आदमी के लिए रात में दो रकअतें पढ़ लेना दुनिया और माफ़ीहा से बेहतर है। अगर उम्मत की मशक्क़त का ख़्याल न होता तो मैं रात की दो रकअतें उनपर फ़र्ज़ कर देता। हुज़ूर ने यह सब कुछ इसलिए किया कि क़यामे शब की इबादत उम्मत पर दुश्वार न गुज़रे और इबादत से उनको बेज़ारी न हो जाये और वह उक़ता न जायें उनके लिए सहूलत बाकी रहे। हुज़ूर ने क़यामे शब की हिदायत फ़रमाई और इसका सवाब व फ़ज़ीलत बयान फ़रमा दी ताकि वह सिर्फ़ फ़राइज़ व सुनन ही पर इक्तिफ़ा न करें।

## मुसतहब क़याम

एक तिहाई रात का क़याम मुसतहब है और इस्तिहबाब का कम तर दरजा छठे हिस्सा तक क़याम व इबादत है। इसलिए कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तमाम रात कभी क़याम नहीं फ़रमाया और न आप तमाम रात सुबह तक महव ख़्वाब रहे हैं बल्कि रात में कुछ हिस्सा क़याम ज़रूर फ़रमाते थे।

एक कौल यह भी कि अव्वल रात की नमाज़ तहज्जुद पढ़ने वालों के लिए है और आधी रात की नमाज़ आबिदी और ज़ाहिदी की लिए है और आख़िर शब का क़याम नमाज़ियों के लिए है और सिर्फ़ फ़ज्र का क़याम गाफ़िलों के लिए है।

युसुफ़ बिन मेहरान रिवायत करते हैं कि मुझे इत्तेला मिली है कि अर्श के नीचे मुर्ग़ की शक़ल का एक फ़रिश्ता है जिसके नीचे मोतियों और नाखून सब्ज़ ज़मुरद के हैं। जब तिहाई रात गुज़र जाती है तो वह बाजू फड़फड़ाता है और कहता है ऐ इबादत गुज़ारो! उठो और जब सुबह सादिक़ हो जाती है तो बाजू फड़फड़ा कर कहता है ऐ गाफ़िलों! उठो (उनसे कहता है जो तहज्जुद के लिए नहीं उठे थे) उनका गुनाह उन ही पर है।

## शब बेदारों के दिलों पर अल्लाह तआला की तवज्जोह

बाज़ अहले इरफ़ान का कौल है कि अल्लाह तआला सहर के वक़्त शब बेदारों के दिलों पर नज़र फ़रमाता है और उनको नूर से भर देता है जिस के बाएस उन के दिलों पर रूहानी फ़वाईद का नुजुल होता है और वह मुनव्वर हो जाते हैं। फिर यह रौशनी उन मुनव्वर दिलों से गाफ़िलों के दिलों तक पहुंचती है।

## अल्लाह के मक़बूल बन्दे

एक रिवायत में आया है कि अल्लाह तआला ने बाज़ सिदीकीन को बज़रिया इलहाम ख़बर दी कि मेरे कुछ बन्दे ऐसे हैं जो मुझ से मोहब्बत रखते हैं और मैं भी उनको महबूब रखता हूँ वह



मेरे मुशताक हैं और मैं उन का, वह मेरी तरफ देखते हैं अगर तुमने भी वैसा ही अमल किया तो मैं तुम को भी महबूब बना लूंगा और अगर तुम उनका तरीका तर्क कर दोगे तो मैं भी तुम से मुंह मोड़ लूंगा। उन सिद्दीकीन ने अर्ज किया इलाहल आलमिन! तेरे उस महबूब बन्दे की निशानियां क्या हैं? अल्लाह तआला ने फरमाया, वह दिन में नमाज़ के औकात (सायों) की ऐसी हिफाज़त करते हैं जैसे दरिन्दों से डरने वाला चरवाहा अपनी बकरियों की देख भाल करता है और वह गुरुबे आफ़ताब के ऐसे मुशताक होते हैं जैसे परिन्दे अपने अपने घोंसलों में जाने के लिए सूरज डूबने के मुन्तज़िर होते हैं, जब रात हो जाती है तो बिस्तर लगा दिये जाते हैं, चरपाईयां बिछा दी जाती हैं और हर दोस्त तन्हाई में अपने दोस्त से मिलता है, उस वक़्त वह मेरे लिए कयाम करते हैं और मेरे लिए अपने चेहरे बिछाते यानी सजदे करते हैं और वह मेरे कलाम की तिलावत करके मुझ से हम कलाम होते हैं और मेरे इनाम का जिक्र करके आजजी का इज़हार करते हैं। उन में से कुछ गिरया व ज़ारी करते हैं और कुछ ख़ूजूअ व ख़ूशूअ, कुछ आह करते हैं और कुछ ज़ारी, कुछ कयाम व कज़द करते हैं और कुछ रुकूअ व सुजूद।

मेरी तरफ़ से उन पर सबसे पहले इनाम यह होता है कि मैं अपने नूर से उनके दिलों को मुनव्वर करता हूं फिर वह गाफ़िल लोगों को मेरी ख़बर देते हैं। दूसरी मरहमत यह होती है कि जो कुछ सातों आसमान और जो कुछ उनमें है अगर उनके पलड़ों में रख दिया जाए तब भी मैं उसको उनके लिए बहुत थोड़ा और क़लील समझता हूं। मेरा तीसरा इनाम यह है कि मैं उनकी तरफ़ मुतवज्जेह होता हूं। अब तुम गौर करो कि मैं जिनकी तरफ़ मुतवज्जेह होता हूं उनको मैं क्या कुछ देना चाहता हूं।

### तमाम शब का कयाम

सारी रात का कयाम तो उन क़वी लोगों का काम है जिन पर अल्लाह तआला की इनायत पहले से हो चुकी है और अल्लाह तआला की हिफाज़त हमेशा उनके शामिले हाल रही हो और जिन के दिलों पर तौफ़ीक़ इलाही और जलाल व जमाले खुदावन्दी का नूर हमेशा परतवे फ़गन रहा हो, ऐसे लोगों के लिए अल्लाह तआला ने कयामे शब को अपनी ऐसी बख़्शिश व नेमत का ख़िलअत उनके लिए बना दिया है कि वह उनसे अपनी मुलाकात (हशर) तक वापस नहीं लेगा।

हज़रत उसमान ग़नी के मुताल्लिक़ रिवायत है कि आप पूरा कुरआन मजीद एक रकअत में ख़त्म करते और तमाम रात गुज़ार देते थे। हज़राते ताबेईन में से चालीस हज़रात के बारे में बयान किया गया है कि वह रात भर इबादत में मसरूफ़ रहते और फ़ज्र की नमाज़े इशा के वुजू से अदा फ़रमाते थे और इस हाल में उन्होंने चालीस साल गुज़ार दिए, यह रिवायत सही और बहुत मशहूर है। उन ताबेईन हज़रात में सईद बिन जुबैर, सफ़वान बिन शिल्म, अबू हाज़िम, मुहम्मद बिन मुकन्दर, अहालियाने मदीना से थे और अहले मक्का में फुज़ैल बिन अयाज़ और वहब बिन मुनय्या और कूफ़े वालों में रबीअ बिन हशम, हिकम, शामियों में अबू सुलैमान दारानी और अली बिन बक्कार थे और अबादान के रहने वालों में से अबू अब्दुल्लाह ख़व्वास और अबू आसिम, अहले फ़ारस में हबीब अबू मोहम्मद और अबु हाइज़ सुलैमानी, मिसरियों में मालिक बिन दीनार और सुलैमान तैमी, यज़ीद अकाशी, हबीब इब्ने अबी साबित और यहया बक्कार वगैरह ऐसे बुजुर्ग़ थे।



# ग़फ़लत के बाद शब बेदारी

**गुनाहगार अगर क़यामे शब का ख़्वास्तगार हो**

जिस को ग़फ़लत ने घेर रखा हो और गुनाहों में जकड़ा हो, ख़ताओं और लगज़िशों ने उस को शब बेदारी से महरूम कर दिया हो और अब अगर वह इस बात का ख़्वास्तगार हो कि शब बेदारी करके सहर के वक़्त इस्तिग़फ़ार करने वालों और इबादत गुज़ारों के जुमरे में दाख़िल होना चाहता हो तो उसको चाहिए कि सोने का इरादा करते और लेटते वक़्त तीन मर्तबा इस्तिग़फ़ार करें फिर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ कर सूरह कहफ़ की इब्तिदाई दस और आख़िरी दस आयतें पढ़े यानी आमिनुर्रसूलो से आख़िर तक पढ़े फिर कुल या अय्योहल काफ़िरुन पढ़ कर सो रहे, यकीनन अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल व करम से उसको वक़्त पर बेदार फ़रमा देगा और क़यामे शब का अहल बना देगा और अपनी वसीअ रहमत और मग़फ़िरत के सदका में उसको शब बेदारी की कुव्वत व हिम्मत अता फ़रमा देगा। मज़क़ूरा बाला सूरतों के साथ यह दुआ भी बेहतर है।

इलाही मुझे ऐसे वक़्त बेदार कर दे जो तुझे महबूब हो और मुझे ऐसे अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमा जो तुझे पसन्द हो और जो मुझे तेरे नज़दीक करके तेरे अज़ाब से दूर कर दे। इलाही मैं तुझ से सवाल करता हूँ मुझे अता फ़रमा, मैं मग़फ़िरत चाहता हूँ मुझे बख़्श दे, दुआ करता हूँ इस को क़बूल फ़रमा। इलाही! मुझे अपने अज़ाब से मामून फ़रमा, अपने सिवा किसी दूसरे के हवाले मत कर और मुझसे अपना बुरदए उफ़व न छीन और अपना ज़िक्र मुझसे न भुला। (मैं तेरा ज़िक्र न भूलूँ) और मुझे ग़ाफ़िलों में शामिल न कर।

कहा गया है कि जो शख्स सोते वक़्त मज़क़ूरा बाला दुआ करता है तो अल्लाह तआला के तीन फ़रिश्ते उसको नमाज़ के लिए वक़्त पर बेदार कर देते हैं और जब वह नमाज़ पढ़ता और दुआ करता है तो दुआ पर फ़रिश्ते आमीन कहते हैं और अगर वह शख्स नहीं उठता तो फ़रिश्ते उसके एवज़ इबादत करते हैं और उनकी इबादत कर सवाब उस शख्स के लिए लिख दिया जाता है।

एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख्स रात को बेदारी की लज़ज़त और मुसरत हासिल करना चाहता है वह सोते वक़्त यह दुआ पढ़े।

इलाही! मुझे मेरी ख़्वाबगाह से उठा दे, अपने ज़िक्र के लिए अपने शुक्र के लिए, अपनी नमाज़ के लिए और इस्तिग़फ़ार और कुरआन मजीद की तिलावत और बेहतरीन इबादत के लिए।

फिर 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल्हम्दुलिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अकबर पढ़े चाहे तो 25 मर्तबा सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि ला इलाहा इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर पढ़ ले।

हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सोते वक़्त अपने दाहिने हाथ पर रुख़सारे मुबारक रख लेते थे ऐसा मालूम होता था कि आज शब विसाल इलल्लाह होने वाला है और उस वक़्त आप यह कलमात ज़बाने मुबारक से अदा फ़रमाते थे।

इलाही! तू सातों असमान और अर्श अजीम का परवरदिगार है, हमारी हर चीज़ का मालिक है, तौरेत, इंजील और कुरआन मजीद का नाज़िल करने वाला है हर दाने और बीज का फाड़ने



वाला है। मैं तेरे यहां बंदों की बंदी से अमन में रहने की दरखास्त करता हूं और हर उस जानदार के शर से जो तेरे कब्ज़ा और गिरफ्त में है पनाह चाहता हूं ऐ कि तू अव्वल से है, तुझसे पहले कोई चीज़ नहीं थी और तू ही आखिर है, तेरे बाद कोई चीज़ नहीं, तू जाहिर है और कोई चीज़ तुझसे ऊपर नहीं और तू ही पोशीदा है और कोई दूसरी चीज़ तेरे सिवा ऐसी पोशीदा नहीं, मुझ से मेरा कर्ज दूर कर और मुझे फकर (तंगदस्ती) से महफूज रख।

## क़यामे शब पर मदावमत

जिस शख्स को अल्लाह तआला क़यामे शब और नवाफिल पढ़ने की नेमत अता फरमा दे तो उसको चाहिए कि वह उसकी पाबन्दी करे, बशर्त कि उसपर कुदरत हो और कोई उज्र न हो, हज़रत आइशा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस ने अल्लाह तआला की इबादत (अज किस्म नवाफिल वगैरह) की और फिर थक कर उसको तर्क कर दिया तो अल्लाह को उससे नफरत हो जाती है। हज़रत आइशा फरमाती हैं कि अगर नीन्द के गल्बा या बीमारी के बाएस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी रात को नहीं उठते थे तो दिन में बारह रकअतें अदा फरमा लेते थे। हदीस शरीफ में आया है कि अल्लाह को सबसे प्यारा वह अमल होता है जो हमेशा किया जाए ख़्वाह वह थोड़ा ही क्यों न हो। फर्ज नमाज़ों के बाद सबसे ज़्यादा सवाब तहज्जुद की नमाज़ का है।

## तहज्जुद की दुआयें

मुसतहब है कि तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठते ही कहे:

तारीफ़ है उस अल्लाह के लिए जिसने मारने के बाद मुझे जिन्दा किया और मखलूक का हशर उसी की तरफ़ है।

इस के बाद सुरह आले इमरान की आयात पढ़े और मिस्वाक करे, मिस्वाक के बाद वुजू कर के यह दुआ पढ़े।

इलाही! तू पाक है और तू ही हम्द के लाएक है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है, मैं तुझ से मग़फ़िरत तलब करता हूं और तेरे हुज़ूर तौबा करता हूं तू मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा, बेशक तू ही तौबा क़बूल करने वाला और रहम करने वाला है, इलाही तू मुझे तौबा करने वालों में कर दे और पाकों में शामिल फरमा दे और मुझे सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला बना दे और उन लोगों में शामिल फरमा दे जो तुझे बहुत याद करने वाले हैं और सुबह व शाम तेरी पाक़ी बयान करते हैं।

इसके बाद आसमान की तरफ़ सर उठा कर यह दुआ पढ़े:

मैं शहादत देता हूं कि सिवा अल्लाह के कोई माबूद नहीं है उसका शरीक नहीं और मैं शहादत देता हूं कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं मैं तेरे अज़ाब से तेरी मांफ़ी की पनाह मांगता हूं और तेरे ग़ज़ब से तेरी रज़ा के ज़रिये पनाह मांगता हूं मैं हरगिज़ तेरी सना नहीं कर सकता जैसी तूने अपनी सना की है, मैं तेरा बन्दा और तेरे बन्दे का बेटा हूं मेरी पेशानी तेरे कब्ज़ा में है मुझ पर तेरा हुक्म नाफ़िज़ है, मेरे मुताल्लिक तेरा फ़ैसला



सरासर इन्साफ़ है, मेरे यह हाथ अपने किये में गिरफ्तार हैं और यह मेरी जान अपने किये हुए आमाल से वाबस्ता है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं बेशक मैं गाफिलों में से हूँ मैंने बुरे काम किये और अपनी जान पर जुल्म किया, तू मेरे गुनाह को बख्श दे, तू ही मेरा रब है तेरे सिवा कोई गुनाह बख्शाने वाला नहीं है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

फिर किब्ला की तरफ मुंह करके नमाज़ को खड़ा हो और कहे अल्लाहो अकबर कबीरन वलहम्दु लिल्लाहि कसीरन व सुब्हानल्लाहि बुकरतन व अयीलन फिर दस मर्तबा सुब्हानल्लाह दस मर्तबा अल्हम्दु लिल्लाह, दस मर्तबा ला इलाहा इल्लल्लाह और दस बार अल्लाहो अकबर कहे इसके बाद अल्लाहो अकबर जुल मलकूति वल जबरूति वल किबरियाए वल अज़मति वल जलालि वल कुदरति एक बार पढ़े।

## तहज्जुद में क़याम की हालत में दुआ

तहज्जुद में क़याम की हालत में अगर चाहे तो यह दुआ पढ़े। यह दुआ भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मनकूल है।

इलाही! तू ही हम्द के लाइक है तू आसमान व ज़मीन का नूर है तू ही हम्द के लाइक है तू आसमान व ज़मीन को ताज़गी है, तू ही हम्द के लाइक है, तू ज़मीन व आसमान को जीनत बख्शता है तू ही हम्द के लाइक है तू आसमान व ज़मीन को और जो कुछ उन में है और जो कुछ उन पर है सब को बाकी रखता है तू ही हक़ है और तेरी ही तरफ़ से हक़ है जन्नत हक़ है, दोज़ख हक़ है, तमाम नबी हक़ हैं और मोहम्मद मुसतफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बरहक़ हैं ऐ खुदा तेरे लिए ही मैं इस्लाम लाया और तुझ ही पर ईमान लाया और तुझ ही पर तवक्कुल है मेरे तमाम मामलात तेरे हवाल हैं तू ही हुक्म फ़रमाने वाला है मेरे तमाम अगले पिछले पोशीदा और ज़ाहिर गुनाह बख्श दे तू ही पहले है तू ही बाद में है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है ऐ खुदा! मुझे तक़्वा और पाकी नसीब फ़रमा तू ही बेहतरीन पाक करने वाला है तू ही मेरा कारसाज़ है तू ही मेरा आका है ऐ खुदा! मुझे नेक कामों की तौफ़ीक़ अता कर, तेरे सिवा कोई हिदायत देने वाला नहीं है मुझे गुनाहों से फ़ेर दे तू ही गुनाहों से फ़ेरने वाला है मैं तुझ से उन बातों का सवाली हूँ कि मैं मिस्कीन व मोहताज हूँ और तुझ से आजजी व बेबसी के साथ दुआ करता हूँ इलाही! मैं ज़लील फ़कीर की तरह तझे पुकार रहा हूँ परवरदिगार अपनी पुकार में मुझे बदनसीब न बना और मुझ पर मेहरबान और रहीम हो जा। ऐ वह ज़ात जो हर मसऊल (जिससे सवाल किया जाए) से बेहतर और हर देने वाले से ज़्यादा करीम है।

### तहज्जुद की तकबीर

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान बयान किया कि अबू सलमा ने कहा मैंने हज़रत आईशा से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठते थे तो तकबीर किस तरह पढ़ते थे और नमाज़ की इब्तिदा किस तरह फ़रमाते थे? उन्होंने फ़रमाया कि तकबीर और इब्तिदाए नमाज़ इस तरह फ़रमाते थे: या अल्लाह! जिब्रील, मिकाईल और इस्राफ़ील को तूने ही पैदा किया है आसमानों और ज़मीन के ज़ाहिरी और बातिनी भेदों का जानने वाला तू ही है बन्दे जिन बातों में इख़्तिलाफ़ करते



हैं उनमें तू ही हुक्म करने वाला है जिस चीज में इख्तिलाफ़ किया गया है तो तू उसमें मुझे सीधा रास्ता देखा, बिला शुब्हा तू जिस को चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत करता है।

## तहज्जुद की नमाज़ का आगाज़

जब शब को तहज्जुद की नमाज़ के लिए खड़े हो तो दो रकअतें (गैर तवील सूरतों के साथ) पढ़ो, नमाज़ से कब्ल कुछ खाना पीना दुरुस्त नहीं है क्योंकि बेदारी के बाद दिल साफ़ और अफ़कार से खाली होता है लेकिन खाने पीने के बाद यह कैफ़ियत बाकी नहीं रहती और तारीकी पैदा हो जाएगी इसलिए बेहतर और औला यही है कि कुछ न खाए जब तक भूख हद से ज्यादा न हो जाए बसूरते दीगर (यानी सहरी) रमज़ान में दिन में भूख पैदा हो जाने का अंदेशा हो और ताख़ीर करने से ख़त्मे सहरी (तुलूए फ़ज्र) का अंदेशा हो तो ऐसी सूरत में पहले ही खा लेना मुसतहब है।

## तीन सौ आयात का विर्द

मुसतहब है कि सोने से कब्ल तीन सौ आयात पढ़े ताकि बन्दा इबादत गुज़ारों के जुमरे में शामिल हो जाए और उसका नाम गाफ़िलों में दर्ज न किया जाए, मुनासिब है कि सूरह फुरकान या सूरह शोअरा पढ़े इसलिए कि इन दोनों सूरतों में तीन तीन सौ आयात हैं। अगर इन सूरतों का पढ़ना मुमकिन न हो तो सूरह वाकिआ, सूरह नून, सूरह अलहाक्का, वाकिआ (साल साइल) और अल मुदस्सिर पढ़े और अगर यह भी अच्छी न पढ़ सकता हो तो सूरह तारिक से आख़िर कुरआन तक पढ़े यह कुल तीन सौ आयात हैं, अगर तीन सौ आयात के बजाए हज़ार आयात पढ़े तो बहुत ही अफ़ज़ल है इसके लिए अज़ीम अज़्र है और इबादत गुज़ारों में उसका शुमार होगा, एक हज़ार आयात की मिक़दार सूरह तबारकल्लज़ी से आख़िर कुरआन तक है अगर यह हिस्सा अच्छी तरह याद न हो तो ढाई सौ मर्तबा सूरह इख़लास पढ़े, यह हज़ार आयात के बराबर होगा। हर एक रात से यह सूरतें पढ़ना बेहतर है इनको किसी हाल में तर्क न करे यानी सूरह अलीफ़ लाम मीम सजदा, सूरह यासीन, सूरह हामीम, सूरह दख़ान, सूरह तबारकल्लज़ी अगर इन सूरतों के साथ सूरह जुमर और सूरह वाकिआ भी पढ़े तो बहुत बेहरत है।

## मामूलात नूबवी

हज़रत रसूले मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस्तराहत फ़रमाने से कब्ल सूरह सजदा सूरह तबारक पढ़ा करते थे। एक हदीस में यह भी आया है कि सूरह बनी इस्राईल और सूरह अज़्जुमर पढ़ा करते थे। एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुसब़हात पढ़ा करते थे (यानी वह सूरतें जो सब्बीह से शुरू होती हैं) इस सूरह में एक आयत ऐसी है जो कि एक लाख आयतों से अफ़ज़ल है।

## शबे जिन्दादारी के लिए मुआविन चीज़ें

शब बेदारी के लिए जो चीज़ें मुआविन हैं उन में से कुछ यह हैं कि (1) रिज़्के हलाल (2) तौबा पर इस्तेक़ामत (3) अज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ (4) अल्लाह तआला के सवाब के वादों के हुसूल का ज़ौक व शौक (5) मुशतबहा रोज़ी से परहेज़ (6) गुनाहों से गुरेज़ (7) मौत की याद और मआद की फ़िक्र (8) दुनियावी फ़िक्र व ग़म से आज़ादी (9) मौत को बक़सरत याद करना



(10) आखिरत का फरामोश न करना (11) अहले दुनिया की मोहब्बत से दिल का खाली होना। एक शख्स ने हसन बसरी से अर्ज किया कि मैं तन्दरुस्त हूँ, तवाना हूँ और शब बेदारी को भी महबूब रखता हूँ, वुजू के लिए पानी भी तैयार रखता हूँ, इस के बावजूद रात भर सोता रहता हूँ इस की क्या वजह है? उन्होंने कहा कि तुम्हें गुनाहों ने जकड़ रखा है। इमाम सौरी फरमाते हैं कि मुझ से एक गुनाह सरज़द हो गया जिस की पादाश में पांच माह तक मैं रात के कयाम से महरुम रहा। किसी ने दरयाफ्त किया कि हज़रत वह गुनाह कौन सा था? फरमाया मैंने एक शख्स को रोता देख कर यह ख्याल किया कि यह शख्स रियाकारी से रो रहा है।

हज़रत हसन बसरी फरमाते हैं कि बन्दा एक गुनाह की पादाश में दिन के रोज़े और के कयाम से महरुम रहता है बाज़ उलमा का कौल है कि बहुत से ऐसे खाने हैं जिन की वजह से रात का कयाम दुश्वार हो जाता है और बहुत सी (हराम) निगाहें कुरआन की किरअत से महरुम कर देती हैं। बन्दा यकीनन ऐसा खाना खा लेता है या ऐसा काम कर गुज़रता है जिस की बिना पर साल भर तक रात के कयाम से महरुम रहता है, बहुत जुस्तजू के बाद उस नुकसान की शिनाख्त होती और जुस्तजू की तौफीक उस वक़्त मिलती है जब गुनाह बहुत कम सरज़द हों।

अबू सुलैमान फरमाते थे सिर्फ़ गुनाह ही की वजह से नमाज़ी की जमाअत फ़ौत हो जाती है। फरमाया कि बदख्वाबी का होना भी एक अज़ाब है नापाक रहना खुदा से दूर रहने का मौजिब है। कयाम लैल व शब बेदारी को मदद खाने पीने की कमी और मेदे को खाली रखने से भी पहुंचती है।

औन बिन अब्दुल्लाह फरमाते हैं कि बनी इस्राईल के कुछ लोग इबादत किया करते थे जब उनके सामने खाना आता तो एक शख्स खड़े कहता कि ज़्यादा न खाओ अगर ज़्यादा खाओगे तो नींद आ जाएगी और जब नींद का ग़लबा होगा तो नमाज़ें कम पढ़ोगे। बाज़ बुजुर्गों का कहना है कि नींद की ज़्यादती कसरत से पानी पीने की वजह से होती है। बताया गया है कि सत्तर सिद्दीकों की राये यही है कि नींद की ज़्यादती पानी बकसरत पीने से होती है। शब बेदारी की मुआविन चीज़ें यह भी हैं कि दिल को मौत, क़ब्र और कयामत की हौलनाकियों के ग़म व अलम से खाली न होने दिया जाए, दिल की ज़िन्दगी के लिए शब बेदारी ज़रूरी है। आलमे मलकूत में ग़ौर करने और उन में थोड़ी देर क़ैलूला करने से शब बेदारी में मदद मिलती है, बदन को ज़्यादा मेहनत करके न थकाए ताकि शब बेदारी में रखना न पड़े।

## शब बेदारी के तरीके

कयामे शब की एक सूरत तो यह है कि अब्बल शब में कयाम करे और जब नींद का ज़्यादा ग़लबा हो तो सो जाए फिर बेदार होकर नमाज़ को खड़ा हो जाए, फिर नींद से मग़लूब होकर सो जाए फिर आखिर शब में उठ कर नमाज़ को खड़ा हो जाए, इस सूरत से रात में दो मर्तबा नींद हो जाएगी और दो मर्तबा कयाम भी हो जाएगा। इस तरह रात भर की इबादत हो जाएगी मगर यह एक कठिन और मुश्किल काम है यह उन्हीं लोगों का अमल है जो अहले हुज़ूर हैं और साहबे ज़िक्र व फ़िक्र हैं, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शब बेदारी में यही शान थी।

जो आबिद क़वी और तवाना हो वही रात में कई मर्तबा कयाम और कई मर्तबा नींद कर



सकता है लेकिन कयाम व ख्वाब का बराबर रखना बड़ा कमाल है जो सिर्फ़ नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हासिल था। किसी दूसरे के लिए ऐसा अमल मुमकिन नहीं इस लिए कि हुजूर पूर नूर का मुबारक कल्ब हमेशा बेदार रहता था और वहीए इलाही से आप को बेदार किया जाता था और सोने से मुमानिअत की जाती थी आप को करवट व हरकत दी जाती थी बजुज आप की जाते पाक के किसी मखलूक को यह वस्फ़ हासिल नहीं था यह खुसूसियत सिर्फ़ आप ही की थी।

## आखिर शब में सोना

कायमुल लैल के लिए आखिरी शब में सो जाना दो वजूह के बाइस मुस्तहब है एक तो यह कि सुबह के वक़्त ओंघ न आए, सुबह का सोना मकरुह है इसी लिए असलाफ़ फ़ज्र की नमाज़ से कब्ल सोने से मना फ़रमाते थे इसी लिए सोने वाले को नमाज़े फ़ज्र के बाद सोने की इजाज़त दे दी गई लेकिन नमाज़ फ़ज्र से कब्ल सोना ममनूअ है। हुजूर पूर नूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ के बाद कुछ देर के लिए सो जाते थे। दूसरी वजह यह है की आखिरी शब में सोने से चेहरे की वह छरदी दूर हो जाती है जो बेदारी के बाइस पैदा हो जाती है अगर न सोया जाए तो ज़र्दी बाकी रहती है और इससे बचना ज़रूरी है। यह एक बहुत बारीक बात है इस में नफ़्स की एक ख्वाहिश पिन्हा से और एक शिक ख़फी पोशीदा है क्योंकि चेहरे की ज़र्दी देख कर उस शख्स की तरफ़ लोगों की उंगलियां उठती हैं उसकी नेकी, उसका जुहद और उसकी शब बेदारी, रोज़ादारी और ख़ौफ़ का लोगों को यकीन होगा (जाग यकीन कर लेंगे कि यह जाहिद शब जिन्दाबाद है) हम उस शिक ख़फी और उस रिया से और उस अलामत से जिसमें रिया हो अल्लाह की पनाह मांगते हैं। रात में पानी कम पीना चाहिए, पानी पीने से नींद आती है और चेहर पर ज़र्दी आ जाती है ख़ास तौर से आखिरी शब में अगर ऐसा किया जाए। नींद से फ़ौरन जागते ही पानी पीना ही नहीं चाहिए। इदीस शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आखिर शब में वित्र पढ़ने के बाद दायें करवट से इस्तराहत फ़रमाते थे यहाँ तक कि (सुबह हो जाती और) बिलाल आते और नमाज़े फ़ज्र की इत्तेला देते तो आप नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते थे।

## वित्र की नमाज़ से पहले आराम करना

वित्र के बाद सुबह की नमाज़ से पहले कुछ देर के लिए आराम करना (सोना) हमारे असलाफ़े कराम के नज़दीक मुस्तहब था बल्कि हज़रत अबू हुरैरा और आप कम मुत्तबईन तो इस को सुन्नत समझते थे। असलाफ़े कराम इस को इस वजह से पसन्द करते थे कि इस से असहाबे मुर्शाहिदा और अहले हुजूर के अहवाल में तरक्की होती है (कुरबते इलाही का हुसूल होता है) उनको आलमे मलकूत का कश्फ़ होता है, आलमे जबरुत (दुनिया) के तरह तरह के उलूम उन पर मुन्कशिफ़ हो जाते हैं और अजीब अजीब हिकमतों से उनके दिल आगाह होते हैं और अहले रियाज़त और अरबाबे मुजाहिदा को इससे सुकून हासिल होता है, इस लिए फ़ज्र की नमाज़ के बाद तुलूअ आफ़ताब तक और अस्त्र की नमाज़ कम बाद गुरुबे आफ़ताब तक नमाज़ पढ़ने को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया है ताकि शबाना रोज़ के



और वज्राइफ अदा करने वाले इन साआत में कुछ देर आराम कर लें।

इसी तरह रात की नमाज़ के दर्मियान यानी हर दो रकअतों के बाद थोड़ी देर के लिए बैठना और उन रकअतों में फ़स्ल पैदा करने मुस्तहब है उस जुलूस में सौ बार सुब्हानल्लाह पढ़ें ताकि नमाज़ के लिए कुव्वत हासिल हो और आज़ाए बदन को कुछ आराम मिल जाए तबीयत का कसल दूर हो जाए और तहज्जुद की नमाज़ के लिए जौक व शौक में कमी न आने पाये। यह अल्लाह के इस इरशाद के तहत है: जब कि रात बाकी हो तो सितारों के ग़ायब हो जाने तक अल्लाह की तस्बीह बयान करो। दूसरी आयत में नमाज़ के पीछे तस्बीह और पाकी बयान करो फ़रमाया।

## क़यामे शब की क़ज़ा

अगर नींद या किसी और वजह से रात का क़याम तर्क हो जाए (नमाज़ अदा न की हो) तो तुलूअ आफ़ताब से ज़वाले आफ़ताब (ज़हवे कुबरा) के दर्मियान उसकी क़ज़ा करना ऐसा ही है जैसे कि रात के वक़्त उस को वक़्त पर पढ़ा गया है। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से, उन्होंने अपनी असनाद के साथ हज़रत उमर बिन अल ख़त्ताब से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ज़वाले आफ़ताब के बाद जुहर के फ़र्ज़ से पहले चार रकअत नमाज़ का शुमार सहर की रकअतों में होता है। हज़रत उमर से एक हदीस दूसरे अलफ़ाज़ में इस तरह मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स अपने रात का वज़ीफ़ा अदा किये के बग़ैर सोता रहा या अदा करना भूल गया फिर नमाज़े फ़र्ज़ से नमाज़े जुहर तक उसको पढ़ लिया तो गोया उसने रात ही में पढ़ ली।

बाज़ असनाफ़े कराफ़ी का कौल है कि आले रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमाना यह है कि अगर रात के औराद व वज़ाइफ़ फौत हो जायें तो ज़वाले आफ़ताब से क़ब्ल उनको पढ़ ले तो वही अज़्र व सवाब मिलता है जो रात को पढ़ने से मिलता। अगर ज़वाल से क़ब्ल न पढ़ सका तो ज़हर व अज़्र के दर्मियान उनको पढ़ ले। अल्लाह तआला का इरशाद है। उसी खुदा ने रात और दिन को एक दूसरे का क़ायम मक़ाम कर दिया है उसके लिए जो ज़िक्र और शुक्र का इरादा करे। मतलब यह है कि अज़्र व सवाब में दिन रात बराबर हैं हर एक फ़ज़ीलत में एक दूसरे का क़ायम मक़ाम है।

## रात के औराद के पांच औक़ात

इन तमाम बयान और तस्रीहात का हासिल यह है कि वज़ाइफ़े शब पांच हैं (1) मगरिब व इशा के दर्मियान (2) इशा से सोने के वक़्त तक (3) आधी रात में (4) आखिरी शब में (5) सहर के आखिरी हिस्सा में तुलूअ फ़र्ज़ से पहले। यह पांचवा सिर्फ़ क़िरअते कुरआन, इस्तिग़फ़ार, मुराक़्बा और इबरत के हुसूल के लिए है नमाज़ के नहीं हैं इस लिए कि यह अन्देशा है कहीं नमाज़ के अन्दर फ़र्ज़ हो जाए और उस वक़्त नमाज़ की मुमानिअत है इसी लिए नमाज़े शब दो दो रकअत कर के पढ़ें कि अगर फ़र्ज़ के तुलूअ का अन्देशा हो तो एक रकअत पढ़ ली जाए उस रकअत के मिलने से पिछले नमाज़ वित्र हो जाएगी, हाँ अगर सोने की वजह से नमाज़े वित्र, वज़ीफ़ा और नमाज़े तहज्जुद सबके सब फौत हो गए तो वित्र को सुबह सादिक में पढ़ ले (इस की तफ़सील वित्र के बयान में गुज़र चुकी है)



## दिन की इबादत के पांच औकात

दिन की इबादत और औराद व वज़ाइफ़ के भी पांच हैं (1) तुलूए फ़ज्र से तुलूए आफ़ताब तक (2) चाश्त की नमाज़ ज़वाले आफ़ताब तक (3) बाद ज़वाले आफ़ताब चार रकअत नमाज़ मगर एक सलाम के साथ (इस के लिए सवाब यह है कि आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं) (4) अस्त्र व जुहर के दर्मियान (5) अस्त्र के बाद मगरिब तक।

## सुबह सादिक़ की इबादत

### दिन का पहला वज़ीफ़ा

फ़ज्र की नमाज़ के बाद से सूरज निकलने के वक़्त तक ज़िक़रे इलाही के लिए बैठना मुस्तहब है, उस वक़्त में तिलावत करे या ज़िक़रे इलाही में मसरूफ़ है, मुराक़बा कल्बी में मुतवज्जेह हो, किसी को दीनी तालीम दे या किसी आलिम की सोहबत में बैठे। इसी तरह की मशगूलियत नमाज़े अस्त्र के बाद गुरुबे आफ़ताब तक रखना चाहिए, इस लिए कि इन दो औकात में नफ़ल पढ़ने की मुमानिअत है।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की सनद के साथ अबू अमामा से रिवायत की है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नमाज़े फ़ज्र के बाद तुलूए आफ़ताब तक अगर मैं लोगों के साथ बैठा तकबीर व तहलील में मसरूफ़ रहूँ तो मुझे यह अमल दो गुलाम आज़ाद कराने से ज़्यादा महबूब है और नमाज़े अस्त्र के बाद गुरुबे आफ़ताब तक अगर मैं ज़िक़र व तहलील करता रहूँ तो औलादे इस्माईल से चार गुलाम आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्द है। हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अपने रिज़्क की तलब से ग़फ़लत न बरतों और ग़ाफ़िल न रहो लोगों ने हज़रत अनस से इस की तशरीह चाही तो फ़रमाया कि जब नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ हो जाओ तो 33 बार अलहम्दुलिल्लाह और सुब्हानल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर पढ़ा करो, एक दूसरी हदीस में इस तरह है कि 33 सुब्हानल्लाह 33 बार अलहम्दुलिल्लाह और 33 बार अल्लाहु अकबर और आख़िर में यह कलमात कहे।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, उस का कोई शरीक नहीं मुल्क उसी के लिए मख़सूस है उसी के लिए हम्द है वही जिन्दा करता है वही मारता है, वह जिन्दा है उसे कभी मौत नहीं, सब नेकी उसी के हाथ में है वह हर चीज़ पर कादिर है।

इसी तरह अस्त्र के बाद और सोते वक़्त पढ़ना चाहिए।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद उरवा बिन जुबैर का कौल नक़ल किया है कि उन्होंने कहा मैंने खुद सुना कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे कि राहें खुदा में जिहाद के लिए सुबह व शाम को निकलना दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है। एक शख्स ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस शख्स में जिहाद की कुदरत और इस्तिताअत न हो (वह क्या करे)? फ़रमाया मगरिब की नमाज़ पढ़ने के बाद वहीं बैठा अल्लाह की याद इशा की नमाज़ तक करता रहे (इशा की नमाज़ इसी तरह पढ़ ले) उसकी यह



इबादत (मगरिब से इशा तक) जिहाद के लिए शाम को निकलने की तरह है और जो शख्स फज्र की नमाज़ पढ़कर तुलूए आफ़ताब तक बैठा खुदा का ज़िक्र करता रहे तो उसका यह अमल जिहाद के लिए सुबह को निकलने की तरह होगा।

शैख अबू नसर ने अपने वालिद की सनद से अबू अमामा का यह कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख्स फज्र की नमाज़ के बाद दस मर्तबा यह (दुआ) पढ़ता है तो उसको अल्लाह तआला उसके लिए दस नेकियां लिख देता है।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, उस का कोई शरीक नहीं मुल्क उसी के लिए मखसूस है उसी के लिए हम्द है वही ज़िन्दा करता है वही मारता है, वह ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं, सब नेकी उसी के हाथ में है वह हर चीज़ पर कादिर है।

उस बन्दे दस दर्जे बलन्द कर देता है और दस गुलामों को आज़ाद कराने के बराबर सवाब उसको मिलता है और शिर्क के अलावा उस रोज़ का किया हुआ कोई गुनाह उसको नुक़सान नहीं पहुँचाएगा। जो बन्दा अच्छी तरह वुजू करता है और अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक मुंह धोता है तो अल्लाह तआला उसके वह तमाम गुनाह महव फ़रमा देता है जिन को उसने आंखों से किया या ज़बान से किया, जो बन्दा हुक्मे खुदावन्दी के मुताबिक हाथों को धोता है तो अल्लाह उसके हाथों से किये हुए तमाम गुनाह फ़रमा देता है फिर जब वह अपने कानों और सर पर मसह करता है तो उसके वह तमाम गुनाह मिटा दिए जाते हैं जो उसने कानों से सुने थे फिर जब वह अग्रे इलाही के मुताबिक दोनों पांव धोता है तो अल्लाह तआला उसके वह तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा देता है जिनकी तरफ़ वह पांव से चला था, आखिरकार वह नमाज़ को खड़ा हो जाता है तो नमाज़ उसके लिए महज़ फ़जीलत का बाएस बन जाती है (तमाम सवाब वुजू क एवज़ उस का मिल जाता है)।

जो शख्स वुजू की हालत में अल्लाह के ज़िक्र के दौरान सो जाता है तो बेदारी पर वह जो कुछ दुआ करता है कबूल हो जाती है। जो बन्दा अल्लाह की राह में एक तीर फेंकता है ख़्वाह वह निशाने पर लगे या न लगे उसका सवाब एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर उसको ज़रूर दिया जाता है और जिस बन्दे के अल्लाह की राह में बाल सफ़ेद होते हैं अल्लाह जआला क़यामत के दिन उसको नूर अता फ़रमाएगा और जो गुलाम आज़ाद करेगा तो उसके हर उज्व को दोज़ख़ से बचाने के लिए उसका फ़िदया बन जाएगा।

## इमाम हसन का इरशाद

शैख अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत इमाम हसन का यह कौल नक़ल किया है कि मैं ने खुद सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे जो शख्स फज्र की नमाज़ मस्जिद में पढ़ कर वहीं बैठा तुलूए आफ़ताब तक अल्लाह का ज़िक्र करता रहे और तुलूए आफ़ताब के बाद अल्लाह तआला की हम्द व सना करके दो रकअत नमाज़ पढ़ ले तो हर रकअत के एवज़ अल्लाह जआला जन्नत के अन्दर दस लाख कस्र मरहमत फ़रमाएगा और हर कस्र के अन्दर दस लाख हूरें होंगी और हर हूर के दस लाख ख़ादिम होंगे और अल्लाह तआला के हुज़ूर में वह अब्बाबीन में से होगा।

(सलातुल अब्बाबीन इसलिए कहा जाता है कि खुदा की तरफ़ रुजूअ होने वालों की नमाज़ है)



हजरत नाफेअ ने बरिवायत इब्ने उमर बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाजे फज्र अदा फरमा कर अपनी जगह से नहीं उठते थे यहां तक कि इशराक की नमाज का वक़्त हो जाता (सूरज निकल आता) हुजूर ने इरशाद फरमाया था कि जो शख्स सुबह की नमाज पढ़ कर उसी जगह उस वक़्त तक बैठा रहे कि उसके लिए इशराक का वक़्त हो जाए तो उसकी फज्र की नमाज ऐसी हो जाएगी जैसे किसी का मकबूल हज और उमरा। यही वजह थी कि हजरत इब्ने उमर नमाज पढ़ कर तुलूआफताब तक वहीं बैठे रहते थे जब उनसे इस कयाम की वजह दरयाफ़्त की गई तो उन्होंने फरमाया मैं सुन्नत की पैरवी करना चाहता हूँ।

शैख अबू नसर ने बिल असनाद हजरत इब्ने अब्बास का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स जमाअत के साथ फज्र की नमाज पढ़ कर सूरज निकलने तक वहीं बैठा रहे फिर तुलूआफताब के बाद चार रकअतें मुसलसल पढ़े और पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा और तीन बार आयतल कुर्सी, सात बार सूरह इख़लास, दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद वश्शम्स वज्जुहाहा एक बार, तीसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा और वस्समाए वतारिक एक बार और चौथी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार आयतल कुर्सी और तीन बार सूरह इख़लास पढ़े तो अल्लाह तआला उसके पास सत्तर फरिश्ते भेजेगा यानी हर आसमान से दस फरिश्ते, हर फरिश्ते के पास बहिशती ख़्वान और बहिशती रुमाल होंगे यह फरिश्ते उन ख़्वानों में उस नमाज को रख कर रुमाल से ढांप कर ऊपर ले जायेंगे यह फरिश्ते फरिश्तों की जिस जमाअत के करीब से गुज़रे वह फरिश्ते उस नमाजी के लिए मग़फ़िरत तलब करेंगे। जब अल्लाह तआला के हुजूर में यह ख़्वान रखे जायेंगे तो अल्लाह तआला फरमाएगा ऐ मेरे बन्दे! तूने मेरे लिए नमाज पढ़ी और मेरी इबादत की अब तो अज सरे नौ अमल कर, तेरे पिछले गुनाह मैंने माफ़ फरामा दिये।

## नमाजे इशराक़

यही नमाज उस रिवायत की तशरीह है जिसमें रसूलुल्लाह ने अल्लाह तआला का यह कौल नक़ल फरमाया था ऐ बनी आदम! मेरे लिए शुरु दिन में चार रकअत पढ़ जो आखिर दिन तक तेरे लिए काफी हैं।

बाज़ उलमाए कराम ने इस इरशाद को नमाज फज्र की सुन्नत व फर्ज (की चार रकअतों) पर महमूल किया है लेकिन इससे नमाजे इशराक़ ही मुराद है जिसके बारे लिखा जा चुका है।

## सलातुल अब्बाबीन

चाशत की नमाज का नाम सलातुल अब्बाबीन भी है इसको हमेशा पढ़ना चाहिए या नहीं इस सिलसिले में हमारे उलमा (उलमाए हंबली) के दो कौल हैं एक मुसबत और एक मनफ़ी और इस की असल वह हदीस है जिसको अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से बरिवायत हजरत अबू हुदैरह बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया चाशत की नमाज अब्बाबीन की नमाज है (खुदा की तरफ़ रुजूअ करने वालों की) इन्ही असनाद के साथ दूसरी हदीस में आया है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया चाशत की नमाज अकसर दाऊद की नमाज होती थी यानी हजरत दाऊद अकसर चाशत के वक़्त नमाज पढ़ा करते थे।



## जन्नत के एक दरवाजे का नाम जोहा है

हज़रत अबू हुरैरह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत के दरवाजों में से एक दरवाजे का नाम जोहा है, जब क़यामत का दिन होगा तो एक मुनादी पुकारेगा कि वह लोग कहां हैं जो चाश्त की नमाज़ पढ़ा करते थे? ताकि वह अल्लाह की रहमत के साथ उस दरवाजे से जन्नत में दाख़िल हों। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़ताब और अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली की ख़िलाफ़त के ज़माने में लोग नमाज़े फ़ज्र के बाद चाश्त की नमाज़ के इन्तेज़ार में बैठे रहा करते थे और फिर नमाज़ (चाश्त) पढ़ कर मस्जिद से निकला करते थे। ज़हहाक बिन कैस हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत करते हैं कि वह फ़रमाते थे एक ज़माना हम पर भी ऐसा गुज़रा है कि आयत युसब्बेहुन्ना बिल अशी वल इशराक़ का मतलब समझ में नहीं आता था यहां तक कि हम ने लोगों को चाश्त की नमाज़ पढ़ते देख लिया उस वक़्त समझ में आया कि इशराक़ की नमाज़ यही है।

इब्ने अबी मलीका की रिवायत है कि हज़रत अब्बास से चाश्त की नमाज़ के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो उन्होंने फ़रमाया इसका ज़िक्र तो किताबुल्लाह में मौजूद है यह फ़रमा कर आपने यह आयत पढ़ी: अल्लाह ने हुक्म दिया है कि घरों में अल्लाह को याद किया जाए और उसका नाम बलन्द हो उनमें सुबह व शाम अल्लाह की तसबीह पढ़ी जाती है।

मालूम हुआ कि इस आयत में हज़रत इब्ने अब्बास के नज़दीक तसबीह गुदू से मुराद चाश्त की नमाज़ है। हज़रत इब्ने अब्बास चाश्त की सिर्फ़ दो रकअतें पढ़ते थे लेकिन इसकी मुदावमत नहीं करते थे बल्कि कभी कभी पढ़ लिया करते थे। हज़रत इकरामा से दरयाफ़्त किया गया कि हज़रत इब्ने अब्बास सलाते जोहा (चाश्त की नमाज़) क्या रोज़ाना पढ़ते थे तो उन्होंने कहा कि वह एक दिन पढ़ते थे और एक दिन छोड़ देते थे। हज़रत नखई ने कहा कि सहाबा कराम नमाज़े चाश्त की पाबन्दी को मकरुह जानते थे यानी पढ़ते भी थे और छोड़ भी देते थे ताकि वह फ़र्ज़ नमाज़ की तरह न हो जाये।

## नमाज़े चाश्त की रकअतें

नमाज़े चाश्त कम से कम दो रकअतें हैं और ज़्यादा से ज़्यादा बारह औसतन आठ हैं दो रकअतों के सिलसिले में शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से हज़रत बरीदा का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि इंसान में तीन सौ साठ जोड़ (जिस्म के अन्दर हैं) और हर जोड़ का रोज़ाना सदका देना वाजिब है यह सुन कर सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह किस की ताक़त है कि इस क़दर सदका दे सके। हुज़ूर ने फ़रमाया अगर कोई शख्स नाक की रेज़िश मस्जिद में देख ले तो उसपर मिट्टी डाल दे या किसी तकलीफ़ देह चीज़ को रास्ते से हटा दे अगर ऐसा मुमकिन न हो तो चाश्त की दो रकअतें पढ़ लेना उसके लिए काफी हैं।

हज़रत अबू हुरैरह रिवायत करते हैं कि मुझे मेरे महबूब सय्येदना अबुल कासिम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बातों की वसीयत फ़रमाई है अब्बल यह कि सोने से पहले वित्र पढ़ लिया करूं, दोम यह कि हर महीने के तीन दिन रोज़े रखा करूं और सोम यह कि चाश्त की



दो रकअतें पढ़ लिया करूं। नमाज़े चाश्त की चार रकअतें भी रिवायत में आई हैं एक रिवायत तो अकरमा ने हज़रत इब्ने अब्बास से मरफूअन बयान की है दूसरी हदीस हज़रत मआज़ा ने हज़रत आइशा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चाश्त की नमाज़ की चार रकअतें पढ़ीं और फिर छः रकअतें पढ़ीं।

हमीदुल तवील हज़रत अनस से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर चाश्त की छः रकअतें भी पढ़ते थे और आठ भी। इकरमा बिन ख़ालिद उम्मे हानी बिनते अबी तालिब से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर फ़तहे मक्का के दिन जब तशरीफ़ फरमाए मक्का हुए आप ने आलाए मक्का में नुज़ूल फरमा कर चाश्त की आठ रकअतें पढ़ीं मैंने दरयाफ़्त किया या रसूलल्लाह! यह कौन सी नमाज़ है? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह चाश्त की नमाज़ है। हज़रत इमाम अहमद हंबल फ़रमाते हैं कि यह हदीस सही है और उलमा के नज़दीक चाश्त की आठ रकअत ही मख़्तार हैं अबू सईद खुदरी ने रसूलुल्लाह से इसी तरह नक़ल किया है।

हज़रत आइशा ने भी चाश्त की आठ रकअतें पढ़ी हैं, कासिम बिन मोहम्मद की रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा चाश्त की आठ रकअतें पढ़ा करती थीं और तवील पढ़ती थीं जब आप नमाज़े चाश्त पढ़तीं तो दरवाज़ा बन्द रखती थीं अगर कोई दस रकअतें पढ़ना चाहे तो दस पढ़े, बारह रकअत की भी रिवायत आई है और यही अफ़ज़ल भी है शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत की है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाते सुना कि जो शख्स चाश्त की बारह रकअतें पढ़ेगा अल्लाह उसके लिए जन्नत में सोने का महल बनाएगा। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की इसनाद ही से एक और रिवायत हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा से की है कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख्स बारह रकअतें दिन की पढ़ेगा अल्लाह तआला जन्नत में उसको महल अता फ़रमाएगा।

## हज़रत अबू ज़र का मामूल

शैख़ अबू नसर ही ने अपने वालिद से बिल असनाद बरिवायत हज़रत अबू ज़र बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अबू ज़र दिन के बारह घंटे हैं तुम हर घंटा के एक रूकूअ और दो सजदा अदा करो यह तुम्हारे दिन भर के गुनाहों की तलाफ़ी कर देंगे, ऐ अबू ज़र! जिसने दो रकअत पढ़ी उसका शुमार गाफ़िलों में न होगा जिसने चार पढ़ीं उसका नाम ज़ाकिरों में होगा। जिसने छः रकअत पढ़ी उसको शिर्क के सिवा कोई गुनाह नुकसान नहीं पहुंचाएगा और जिसने बारह रकअतें पढ़ी उनके लिए जन्नत में महल तैयार किया जाएगा, मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (यह बारह रकअतें) एक सलाम से या जुदा जुदा? आप ने इरशाद फ़रमाया अगर एक सलाम से भी पढ़ीं तब भी कोई हरज नहीं है।

## चाश्त की नमाज़ का वक़्त

### चाश्त की नमाज़ के दो औकात हैं

चाश्त की नमाज़ के औकात दो हैं एक जाएज़ दूसरा मुसतहब, जाएज़ वक़्त तुलूअ आफ़ताब



गुनियवुत्तालिबीन  
 से नमाज़े जुहर तक है और मुसतहब वक़्त दिन के गर्म होने से ज़वाल तक है। मुसतहब होने की दलील यह कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ने मस्जिद कुबा में एक जमाअत को चाश्त पढ़ते देखा तो फ़रमाया काश इन लोगों का मालूम होता कि यह कुछ और देर करके नमाज़ पढ़ते तो अफ़ज़ल था क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि चाश्त का वक़्त उस वक़्त है जब ऊंट के बच्चे के पाँव गर्म होने लगें बाद ज़वाले चाश्त पढ़ना भी जाएज़ है। हज़रत औफ़ बिन मालिक से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि औसत आसमान से आफ़ताब के ढल जाने पर चाश्त (साअते सुबहा) का वक़्त है यह नमाज़ आजज़ी करने वालों की है इसको सख़्त गर्मी में पढ़ना अफ़ज़ल है अगर जुहर की नमाज़ तक चाश्त की नमाज़ नहीं पढ़ी है तो बाद नमाज़ जुहर कज़ा करना मुसतहब है।

## नमाज़े चाश्त की किरात

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि नमाज़े चाश्त में सूरह वश्शम्स वज्जुहाहा और वज्जुहा पढ़ें। उमर इब्ने शोऐब ने अपने वालिद से बिल असनाद रिवायत की है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने चाश्त की बारह रकआत पढ़ीं और हर रकआत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार आयतल कुर्सी, तीन बार सूरह इख़लास पढ़ी तो हर आसमान से सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरते हैं जिसके हाथ में सफ़ेद कागज़ और नूर के कलम होते हैं जो उस नमाज़ का सवाब ता कयामे कयामत लिखते रहेंगे, कयामत के दिन फ़रिश्ते उसकी क़ब्र पर आयेंगे हर फ़रिश्ते के पास बहिश्ती लिबास का जोड़ा और तुहफ़ा होगा, फ़रिश्ते कहेंगे 'साहबे क़ब्र' अल्लाह के हुक्म से उठो क्योंकि तुम उन में से एक हो जिन को अल्लाह ने अज़ाब से अमन अत्ता फ़रमा दी है।

## नमाज़े चाश्त के सिलसिले में रिवायाते ममनूआ

बाज़ सहाबा कराम ने नमाज़े चाश्त से इन्कार किया है, चुनावे इब्नुल मुबारक अपनी सनद के साथ हज़रत इब्ने उमर से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया मैं जब से इस्लाम लाया हूँ मैंने चाश्त की नमाज़ नहीं पढ़ी। सिर्फ़ ख़ाना काबा के तवाफ़ के दिन पढ़ी थी, बिला शुब्हा यह बिदअत है लेकिन बिदअते हसना है। लोगों की ईजाद कर्दा बिदअतों में यह सबसे अच्छी बिदअत है। हज़रत इब्ने मसऊद चाश्त की नमाज़ के बारे में फ़रमाते थे अल्लाह के बन्दे लोगों पर ऐसा बोझ न डालो जो अल्लाह ने उन पर नहीं डाला हो अगर तुम को ऐसा करना ही है (नमाज़े चाश्त पढ़ना है) तो अपने घरों में पढ़ा करो।

इन अक़वाले बाला से (जिनमें इन्कार किया गया है) नमाज़े चाश्त के उन फ़ज़ाइल की तरदीद नहीं होती जो ऊपर बयान किए जा चुके हैं। उन बुजुर्गों का मक़सद यह था कि चाश्त की नमाज़ फ़र्ज़ नमाज़ कि तरह न हो जाए और लोगों में इसके वुजूब का अकीदा पैदा हो जाए अलावा अज़ीं तमाम लोग इबादत और ताअत के लिए चुस्ती और आमादगी में बराबर नहीं हैं इस लिए इन बुजुर्गों ने इन्कार करके आम लोगों का बोझ हल्का कर दिया और ताअत को आसान कर देना चाहा। हज़रत उतबान बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काशानए नबुव्वत के अन्दर नमाज़ चाश्त पढ़ी और सहाबा कराम ने आप के पीछे खड़े होकर पढ़ी (उस हुज़रए मुकद्दस में) पहले बयान किया जा चुका है कि हज़रत आइशा जब



चाश्त की नमाज़ पढ़ना चाहती थीं तो वह दरवाज़ा बन्द कर लेती थीं, हज़रत इब्ने अब्बास नमाज़े चाश्त को एक दिन पढ़ते और दूसरे दिन तर्क कर देते (यह इसी बिना पर था)।

## दिन का तीसरा वज़ीफ़ा

### जुहर से पहले और जुहर के बाद का वक़्त

तीसरे वज़ीफ़ा का वक़्त जुहर से पहले और जुहर के बाद है। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत उम्मे हबीबा से रिवायत की है कि वह फ़रमाती हैं कि जिस ने जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअतें और बाद नमाज़े जुहर चार रकअतें पढ़ीं अल्लाह उसके गोश्त पर आतिशे दोज़ख़ को काबू नहीं पाने देता। बाज़ बुजुर्गों का कौल है कि ज़वाल के बाद जुहर की नमाज़ तक आसमान और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं इसी बिना पर कहा गया है कि उस वक़्त दुआयें मक़बूल होती हैं और यही वजह है कि इबादत, दुआ और ज़िक्र इलाही उस वक़्त करना मुसतहब है।

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़े जुहर से क़ब्ल चार रकअतें हमेशा पढ़ा करते थे जब हुजूर वाला से इसकी वजह दरयाफ़्त की गई तो इरशाद फ़रमाया कि सूरज ढलने पर जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जुहर की नमाज़ होने तक बन्द नहीं किए जाते इसलिए मुझे यह नमाज़ (चार रकअत) नमाज़े जुहर से क़ब्ल पढ़ना मुझे पसन्द है।

हज़रत आइशा से दरयाफ़्त किया गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किस नमाज़ की पाबन्दी बहुत ज़्यादा मरगूब थी? उन्होंने फ़रमाया नमाज़े जुहर से क़ब्ल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चार रकअतें पढ़ते थे उन रकअतों में आप तवील क़याम और रुकूअ व सुजूद खूब अच्छी तरह करते थे (अच्छी तरह से मुराद तवील वक़्त है)।

## चौथा वज़ीफ़ा

### चौथा वज़ीफ़ा जुहर और अस्त्र के दर्मियान की नमाज़ है

दिन का चौथा वज़ीफ़ा जुहर और अस्त्र के दर्मियान की नमाज़ से मुराद है। शैख़ अबू नसर अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने जुहर और अस्त्र के दर्मियानी वक़्त में ज़िक्र इलाही किया (ज़िन्दा रखा) अल्लाह उसके दिल को उस रोज़ ज़िन्दा रखेगा जिस दिन तमाम दिल मर जायेंगे। हज़रत इब्ने उमर जुहर व अस्त्र के दर्मियानी वक़्त को ज़िक्र व इबादत से ज़िन्दा रखते थे।

हज़रत इब्राहीम नख़ई फ़रमाते हैं कि हुजूर वाला मगरिब व इशा के दर्मियान और जुहर व अस्त्र के दर्मियानी ज़माने की इबादतों को रात की इबादतों के मिस्ल बताया करते थे और हुजूर की अकसर इबादत गुज़ारी का तरीक़ा यह था कि तन्हाई में जुहर व अस्त्र के दर्मियान ज़िक्र में मसरूफ़ रहते थे। तमाम मख़लूक से अलग होकर अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाते थे यह वक़्त अल्लाह से ख़लवत का है उस वक़्त की नमाज़ ग़फ़लत को दूर करने वाली है, ज़िक्र



गुजिशतालिबान  
नमाज़ के लिए जुहर व अस्त्र के दर्मियान मस्जिद में बैठे रहना मुसतहब है ताकि एतकाफ़ भी हो जाए और इन्तेज़ार भी (नमाज़ अस्त्र का इन्तेज़ार) बुजुर्गाने सल्फ़ का भी यही मामूल था, लेकिन अगर कोई शख्स जवाल से पहले न सोया हो तो उस वक़्त में सो जाए ताकि आने वाली रात में नमाज़ पढ़ने की सकत आ जाए इसलिए कि दोपहर से पहले का सोना तो गुजिशता शब बेदारी की वजह से होता है और जवाल के बाद सोना आने वाली रात के लिए है।

## कितने घंटे सोना मुसतहब है

आठ घंटे से ज्यादा सोना मुसतहब नहीं है  
तो निज़ामे जिस्मानी में ख़राबी पैदा हो जाएगी नीन्द से बदन को राहत और कुव्वत दोनों चीज़ें हासिल होती हैं। अबू नसर अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अबू हुदैरह से रिवायत करते हैं कि रसुले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने यह बारह रकअतें रोज़ाना अदा कीं अल्लाह तआला उसको जन्नत में महल तैयार करके देगा यानी दो फ़ज़र के फ़र्ज से पहले, जुहर से पहले चार रकअत, जुहर के बाद दो रकअत, अस्त्र से पहले दो रकअत और मगरिब के बाद दो रकअत (कुल बारह रकअतें हुई) हज़रत सईद बिन मुसय्यब ने हज़रत आईशा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो नमाज़ी अस्त्र से पहले चार चार रकअत पढ़ते रहेंगे उनके लिए अल्लाह तआला अपनी बख़्शिश को लाज़िम कर देगा।

## औरादे मजकूरा और एक जामेअ हदीस

अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने मगरिब की नमाज़ के बाद किसी से बात किए बग़ैर चार रकअत नमाज़ अदा की उस का दर्जा इल्लीइन में बुलन्द किया जाएगा और उसको ऐसा सवाब मिलेगा जैसे उसने शबे क़द्र में मस्जिदे अक्सा के अन्दर जिक़रे इलाही किया और यह आधी रात के क़याम व इबादत से बेहतर है। अल्लाह तआला का इरशाद है: यह लोग रात में बहुत कम सोया करते थे और फ़रमाया: वह अपने पहलूओं को बिस्तरों से और दूर रखते हैं नीज़ इरशाद फ़रमाया: वह शहर में उस वक़्त दाख़िल हुए जब कि शहर वाले गाफ़िल थे।

जिस शख्स ने इशा की नमाज़ के बाद चार रकअतें पढ़ीं उसका मर्तबा ऐसा होगा जैसे किसी ने मस्जिदे हराम में शबे क़द्र को पा लिया और जो जुहर से पहले चार रकअतें और बाद चार रकअतें पढ़ता है अल्लाह तआला उसके बदन को आग पर हराम कर देता है (दोज़ख़ की आग उस के बदन को नहीं जलाती) और जो अस्त्र से पहले चार रकअतें पढ़ता है उसके लिए दोज़ख़ से नजात दे दी जाती है।

हज़रत नाफ़ेअ ने हज़रत इब्ने उमर से रिवायत किया की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया फ़ज़र की दो रकअतें मुझे दुनिया और कायनाते दुनिया से ज्यादा पसन्द है। अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद बयान किया है कि हज़रत अली से रसूलुल्लाह की नफ़ल नमाज़ के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरह नवाफ़िल अदा करने की किस में ताक़त है, हुज़ूर उस वक़्त तक इन्तेज़ार फ़रमाते थे जब तक कि सूरज जितना दाईं जानिब रहता उतना ही बाईं जानिब न हो जाता तो हुज़ूर अस्त्र से पहले दो रकअतें पढ़ते थे और सूरज दायें बायें बराबर होता तो जुहर



से पहले चार रकअतें पढ़ते थे और अगर सूरज ढलने पर कुछ वक़्त होता तो जुहर से पहले और जुहर के बाद दो और अस्त्र के पहले चार रकअतें पढ़ते थे।

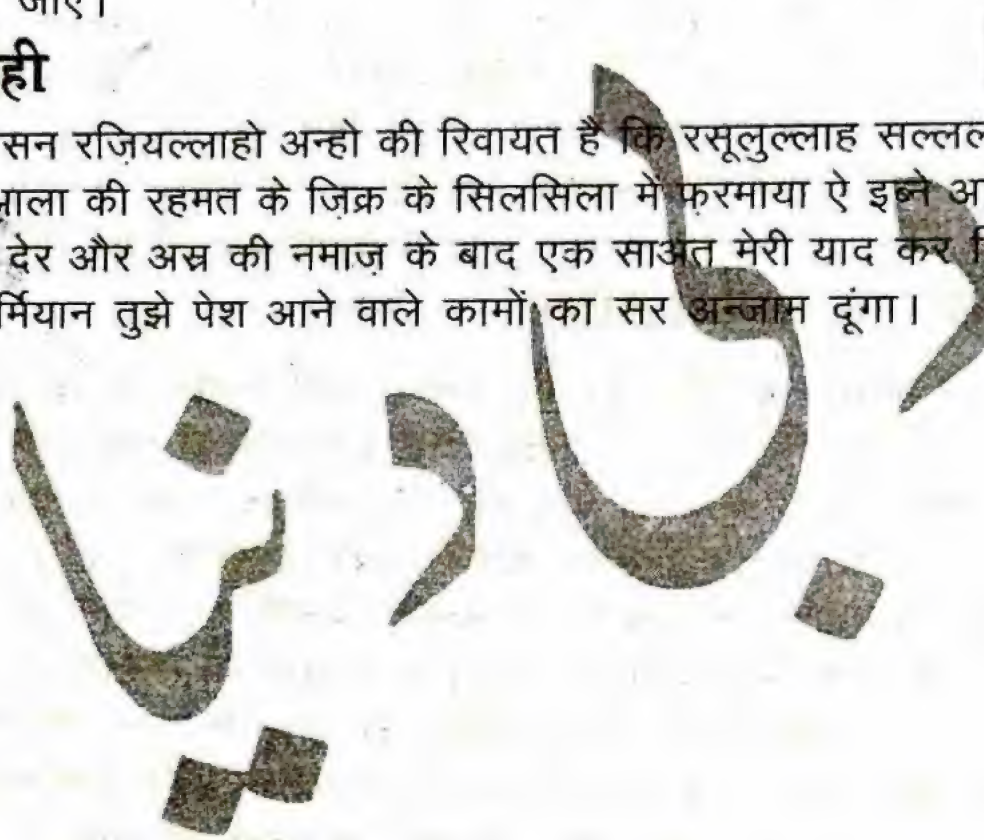
## पांचवा वज़ीफ़ा

### अस्त्र की नमाज़ के बाद से गुरुबे आफ़ताब तक

अस्त्र की नमाज़ के बाद से आफ़ताब के गुरुब होने तक तसबीह व तहलील, इस्तिग़फ़ार, अल्लाह की कुदरते कामिला का बग़ौर मुताला यानी मुराक़बा, क़ुराअन पाक की तिलावत और ज़िक़रे इलाही में मसरूफ़ रहना चाहिये उस वक़्त नफ़ल नमाज़ मना है। गुरुबे आफ़ताब से क़ब्ल सूरह वश्शम्स वज़ज़ोहाहा, वल्लैल इज़ा यग़शा, सूरह फ़लक़ और सूरह अन्नास इस तरह पढ़े कि दिन ख़त्म हो जाए।

### रहमते इलाही

हज़रत हसन रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की रहमत के ज़िक़र के सिलसिला में फ़रमाया ऐ इब्ने आदम! फ़जर की नमाज़ के बाद थोड़ी देर और अस्त्र की नमाज़ के बाद एक साअत मेरी याद कर लिया कर मैं इन दोनों औकात के दर्मियान तुझे पेश आने वाले कामों का सर अन्जाम दूंगा।





## बाब 19

## नमाजे पंजगाना के औकात

सुन्नते और हर नमाज के फज़ाइल

## शबे मेराज में पचास नमाजें फ़र्ज हुईं

फ़र्ज नमाजें पांच हैं, फ़ज्र की दो रकअतें, जुहर की चार रकअतें, अस्त्र की चार रकअतें, मगरिब की तीन रकअतें, इशा की चार रकअतें हैं। यक कुल सतरह रिकअतें हैं, नमाजे जुमा की रकअतें इसके अलावा हैं। शबे मेराज में पचास वक़्त की नमाज फ़र्ज की गई थीं फिर तख़फ़ीफ़ की इस्तिदा पर हिकमते इलाही के तहत पांच वक़्त की कर दी गई ताकि उम्मत मोहम्मदी के लिए तख़फ़ीफ़ व आसानी हो। अल्लाह तआला ने पैतालीस को साकित कर के पांच बाकी (नमाजों) का सवाब पचास के बराबर रखा, यह हुक्म ऐसा है जैसा जिहाद में एक मुसलमान का दस काफ़िरों और मुशरिकों के मुकाबला का हुक्म था फिर उसको साकित करके एक मुसलमान के लिए दो का मुकाबला बाकी रखा या जिस तरह रमज़ान की रातों में सोकर उठने के बाद खाना पीना और बीवियों से कुरबंत करना हराम था फिर इस हुरमत को साकित कर के माहे रमज़ान की तमाम रातों में फ़ज्र सादिक तक खाने पीने (वगैरह) की इजाज़त अता फ़रमा दी इरशाद फ़रमाया: जब रात की सियाही से जब तब सफ़ेद धागा जाहिर न हो उस वक़्त तक खाओ पीओ।

## नमाज की फ़र्जियत

अल्लाह तआला ने नमाज की फ़र्जियत के बारे में हुक्म दिया यानी नफ़से बुजूबे सलात की दलील यह हुक्म है: नमाज कायम करो और ज़कात अदा करो और रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ करो।

## औकाते सलात

औकाते सलात के सिलसिले में चन्द आयात और अहादीस मौजूद हैं इस सिलसिले में आयात यह हैं: अल्लाह की पाकी बयान करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त और उसी के लिए ज़मीन व आसमान पर हम्द है और इशा की नमाज पढ़ो और जब जुहर करो तो नमाज पढ़ो। दूसरी आयत में यह फ़रमाया: मुसलमानों पर नमाज वक़्ते मुकर्ररा पर फ़र्ज है। एक और आयत में फ़रमाया: दिन के दोनों तरफ़ (अस्त्र) और रात के कुछ औकात नमाज कायम करो। और एक और आयत में यह हुक्म आया है: आफ़ताब गुरुब होने पर नमाज कायम करो। दुलूक का तर्जमा जवाल भी किया गया यानी जवाल के बाद नमाज पढ़ो। एक और आयत में आया है: अपने रब की तस्बीह और तहमीद सूरज के तुलूअ और गुरुब से पहले करो और रात के कुछ औकात में भी तसबीह बयान करो और दिन के किनारों पर ताकि रज़ाए इलाही हासिल करो।



हजरत कतादा ने फरमाया है तुलूए आफताब से पहले फ़ज्र की नमाज़ है। गुरुब से पहले अस्त्र की और औकात शब में मगरिब और इशा की नमाज़ें हैं और दिन के किनारों पर जुहर की नमाज़ है नमाज़ की फ़र्जीयत अहादीस में भी मौजूद है।

## अहादीस से नमाज़ की फ़र्जीयत

हजरत इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक बार जिब्रील ने खानए काबा के पास मेरी इमामत की और जवाले आफताब के फौरन बाद जुहर की नमाज़ और दो मिस्ल साया हो जाने पर अस्त्र की नमाज़ पढ़ाई और फिर इफ्तारे रोज़ा के वक़्त मगरिब की नमाज़ पढ़ाई जब शफ़क़ गायब हो गई तो इशा की नमाज़ पढ़ाई और उस वक़्त जब रोज़ादार पर खाना पीना हराम हो जाता है यानी सुबह सादिक के वक़्त मुझे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। दूसरे दिन फिर जुहर की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब हर चीज़ का साया उस शय के मिस्ल हो गया और अस्त्र की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब हर शय का साया उसका दोगुना हो गया और मगरिब की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब रोज़ादार इफ्तार करता है, इशा की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब एक तिहाई रात गुज़र गई फिर फ़ज्र की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब उजाला फैल गया उसके बाद मेरी तरफ़ मुखातिब होकर कहा मोहम्मद सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम यह औकाते नमाज़ आप से पहले पैग़म्बर के हैं दोनों वक़्त के दर्मियान नमाज़ का वक़्त है यह हदीस तअय्युने औकात की असल है इस सिलसिले की और अहादीस भी हैं जो इसी हदीस के हम मानी हैं इसी लिए उन अहादीस को हमने बयान नहीं किया।

## उन औकात से पहले नमाज़ पढ़ने वाले पैग़म्बर

हमारे नबी करीम सय्यदे आलम सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से कब्ल जि होंने इन वक़्तों में सबसे पहले जिन्होंने नमाज़ अदा फरमाई उनका जिक्र अहादीसे शरीफ़ा में मौजूद है चुनांचे एक अंसारी ने सरकर काइनात सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से नमाज़े फ़ज्र के बारे में दरयाफ़्त किया कि सबसे पहले किसने अदा फरमाई तो आप ने फरमाया सबसे पहले हजरत आदम ने इस नमाज़ को पढ़ा है और नमाज़ जुहर को सबसे पहले इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पढ़ा। जब अल्लाह तआला ने आप को नमस्सुद की आग से नजात बख़्शी, अस्त्र की नमाज़ सबसे पहले हजरत याकूब ने उस वक़्त पढ़ी जब हजरत जिब्रील ने उनको हजरत यूसूफ़ की खुशख़बरी सुनाई। मगरिब की नमाज़ हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब उनकी तौबा कबूल हुई और सबसे पहले इशा की नमाज़ उस वक़्त हजरत यूनस अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब वह मछली के पेट बाहर आए। उनकी हालत ऐसी थी जैसे मुर्गी का चूज़ा बग़ैर बाल और पर के होता है। जब हजरत यूनस बतने मांही से निकले तो हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर उनसे अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला आप पर सलाम भेजता है और वह अपनी शान के मुताबिक़ आप से हया फरमाता है कि दुनिया में आप को ऐसा अज़ाब दिया, अल्लाह तआला फरमाता है कि क्या अब तुम मुझ से राजी हो? हजरत यूनस उसी वक़्त खड़े हुए और चार रकअत इशा की नमाज़ अदा फरमाई और बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में अर्ज़ किया यकीनन मैं अपने रब से राजी हूँ, मैं अपने रब से राजी हूँ।



## रसूलुल्लाह पर सबसे पहले फर्ज होने वाली नमाज़ें

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सबसे पहले फ़ज्र और मगरिब की नमाज़ वाजिब हुई थी और उसी के बारे में हुक्म हुआ था फ़सब्बेह बेहम्दे रब्बेका बिल अशय्या वल इबकार का यहीं मतलब है यानी आप अपने रब की तसबीह सुबह व शाम किया कीजिये, यहां तक कि आप को शबे मेराज में पांच नमाज़ों का तोहफा अता हुआ, उन नमाज़ों में सबसे पहली नमाज़ फ़ज्र की है, उस के बाद जुहर है लेकिन उलमा ने उन नमाज़ों में सबसे पहले जुहर की नमाज़ का तज़क़िरा किया है और वह बरबिनाए इत्तेबाए सुन्नत है। हज़रत अब्बास वाली हदीस में है कि ख़ानए काबा के पास जिब्रील ने मुझे जुहर की नमाज़ पढ़ाई यही वजह है कि उलमा ने जुहर की नमाज़ का वक्त पहले बयान किया है, इस के यह मानी नहीं कि पहले नमाज़े जुहर फर्ज हो गई थी, पहले ज़िक्र हो चुका है कि फ़ज्र की नमाज़ सबसे पहले हज़रत आदम ने पढ़ी थी और आप इन्सानों में सबसे पहले नबी थे जिनको ज़मीन पर भेजा गया था, इस से ज़ाहिर व साबित है कि फ़ज्र की नमाज़ ही सब से पहली नमाज़ है जो फर्ज हुई।

## नमाज़े फ़ज्र का वक्त

नमाज़े फ़ज्र का इब्तिदाई वक्त तुलूअ सुबहे सादिक है उस वक्त मशरिक से सुबहे सादिक की पौ फट कर इन्तिहाई मशरिक में फैल जाती है और फिर ऊंची होकर सारे उफ़क पर छा जाती है और फिर पहाड़ों की चोटियां और ऊंचे मकानात रौशन हो जाते हैं और उस का आखिरी वक्त वह उजाला है कि नमाज़ का सलाम फेरते ही सूरज का किनारा उफ़क से नमूदार हो जाए इन दोनों हुदूद के माबैन फ़ज्र का वक्त है जो बहुत वसीअ है। इस नमाज़ को सुबह की नमाज़ (फ़ज्र की नमाज़) कहना मुस्तहब है इस को नमाज़े ग़दात न कहा जाए चूंकि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है फ़ज्र की नमाज़ के वक्त रात और दिन के फ़रिश्तें हाज़िर होते हैं इस लिए फ़ज्र की नमाज़ रास्त वाले रोज़ नामचों में भी लिख ली जाती है और दिन वाले फ़रिश्तों के दफ़तर में भी।

## नमाज़े फ़ज्र किस वक्त अफ़ज़ल है

बिलकुल इब्तिदाई वक्त में जब अंधेरा ही हो (तग़लीस) नमाज़े फ़ज्र पढ़ना अफ़ज़ल है और हमारे इस कौल पर दलील हज़रत आइशा का वह कौल है जिसमें उन्होंने फ़रमाया है कि हमारे इस कौल पर दलील हज़रत आइशा का वह कौल है जिसमें उन्होंने फ़रमाया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में औरतें हुजूर के साथ नमाज़े फ़ज्र आकर पढ़ती थीं वह चादरों में लिपटी हुई वापिस चली जाती थीं और सुबह के अंधेरे में उनको कोई शिनाख़्त नहीं कर सकता था।

हमारे इमाम अहमद हम्बल से एक कौल और भी मनकूल है वह यह कि मुक़तदियों की हालत को देखना चाहिए अगर मुक़तदी रौशनी फैलने के बाद आये हैं तो फिर ख़ूब रौशनी फैलने पर नमाज़ अफ़ज़ल है ताकि जमाअत में लोग ज़्यादा हो जायें और सवाब बढ़ जाए। फ़ज्रे अब्वल (सुबहे काज़िब) काबिले एतबार नहीं है वह न रोज़ादार पर कोई चीज़ हराम करती है और न नमाज़े फ़ज्र वाजिब करती है। हज़रत इब्ने अब्बास रिवायत करतें हैं कि फ़ज्र दो हैं, वह फ़ज्र जिससे नमाज़ वाजिब हो जाती है और रोज़ादार पर खाना पीना हराम करती है वह है जो पहाड़ों



पर रौशनी फैलाती है।

बाज़ उलमा ने दोनों फ़ज्रों के हुदूद और अहवाल बयान किये हैं कहते हैं कि पहली फ़ज्र (सुबहे काज़िब) शुआए आफ़ताब के ग़लबा की इब्तिदा होती है यानी आफ़ताब की रौशनी पांचवे ज़मीन के पीछे से निकल कर आसमान के दर्मियान फैल जाए यह रौशनी रात के आखिरी तीसरे हिस्सा में ज़ाहिर होती है और फिर सियाही लौट आती है इस लिए आफ़ताब नीचे वाले आसमान के दर्मियान रूपोश हो जाता है और छठीं ज़मीन उसके आगे परदा बन जाती है।

फ़ज्रे सानी यानी सुबहे सादिक सूरज की शफ़क़ फट कर निकलने को कहते हैं यह वह सफ़ेदी जिसके नीचे शफ़क़ की सुर्खी हो जो शफ़क़े सानी कहलाती है, यही सुर्खी आखिरी रात के वक़्त सूरज की किरनों का अव्वलीन पेश खेमा होती है यानी वहीं से किरनों के फूटने की इब्तिदा होती है इस के बाद कुर्से खुरशीद निकलना शुरू होती है, सूरज जब उस मसकुना ज़मीन पर (उठ कर) परतवे फ़गन होता है और उसकी किरनें नीचे वाले आसमान के दामन से फूट कर निकलना शुरू होती हैं तो पहाड़ों, समुन्द्रों और उन मुल्कों पर जो ऊंचे हैं (यानी मशरिके बर्ड के मुल्क हैं) छा जाती हैं। अव्वलन फ़ज्र की शुआयें तूल में फैलती हैं उसके बाद अर्ज में फैलना शुरू होती हैं और फिर सारे उफ़क़ पर मुत्ताशिर हो जाती हैं। शफ़क़ दो होती हैं एक तुलूए शम्स के वक़्त और एक गुरुबे शम्स के वक़्त।

## जुहर का वक़्त

### जुहर के वक़्त की इब्तिदा

सूरज ढलने पर जुहर का वक़्त हो जाता है और आखिरी वक़्त वह है जब कि साया एक मिस्ल न हो जाए। जुहर अव्वल वक़्त में पढ़ना अफ़ज़ल है अलबत्ता जमाअत में शेरक़त से अगर ताख़ीर करना पड़े तो ताख़ीर दुरुस्त है, गर्मी या अब्र के बाइस भी ताख़ीर करना दुरुस्त है। हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुहर की नमाज़ ठंडक में पढ़ो, गर्मी की शिदत जहन्नम की लपट (शोला ज़नी) से होती है। एक दूसरी रिवायत हज़रत बिलाल से मरबी है कि उन्होंने फ़रमाया कि मैंने जुहर की नमाज़ तैयार होने की इत्तेला हुज़ूर को दी, हुज़ूर ने फ़रमाया बिलाल ख़ुनकी होने दो कुछ देर के बाद मैंने फिर इत्तेला दी तो हुज़ूर ने फिर फ़रमाया, ख़नकी होने दो, तीसरी बार मैंने इत्तेला दी तब भी हुज़ूर ने यही फ़रमाया यहां तक कि टीलों के साये मुझे नज़र आने लगे, फिर हुज़ूर ने फ़रमाया गर्मी की शिदत जहन्नम की शोला ज़नी से है गर्मी सख़्त हा तो (नमाज़े जुहर के लिए) ठंडक होने दिया करो।

## ज़वाल की पहचान

### निस्फुन्नहार और ज़वाल

ज़वाल से कब्ल सूरज ठहरा हुआ होता है अगर ज़रा भी ढल जाए तो जुहर का वक़्त शुरू हो जाता है। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि सूरज तिस्मा बराबर भी ढल जाए तो जुहर के वक़्त का आगाज़ हो जाता है और जब साया हर चीज़ का एक मिस्ल हो जाए तो जुहर का वक़्त ख़त्म हो



कर अस्त्र का वक्त शुरु हो जाता है अगर उसकी शिनाख्त चाहते हो तो इसका तरीका यह कि एक लकड़ी हमवार जमीन पर सीधी खड़ी की जाए या खुद ही सीधे किसी हमवार और ठीक जमीन पर खड़े हो जाओ जहां तक साया पड़ रहा है उसके खत्म पर एक निशान लगा दो या कोई लकीर खींच दो फिर साये के घटने बढ़ने को देखो अगर साया कम हो जाए तो समझ लो अभी जवाल का वक्त नहीं हुआ है और अगर घटता बढ़ता न हो बल्कि एक जगह ठहरा और काएम हो तो वह निस्फुन्नहार (ठीक दोपहर) है उस वक्त नमाज दुरुस्त नहीं है। जब साया कुछ बढ़ने लगे तो समझ लो कि सूरज ढलना शुरु हो गया (जवाल का वक्त शुरु हो गया) अब मुकर्ररा निशान या लकीर को देखो अगर साया लकीर से आगे एक मिस्ल बढ़ गया है तो यह जुहर का आखिरी वक्त है और अगर एक मिस्ल से कुछ आगे बढ़ जाए तो अस्त्र का अब्बल वक्त होगा।

अगर सायए असल के दो मिस्ल हो जाए तो वह अस्त्र का आखिरी वक्त होगा उससे आगे सिर्फ जरूरत और मजबूरी पर वह वक्त नमाज के लिए है यानी अगर मजबूरन किसी को नमाज अदा करना है तो उस वक्त में अदा करे। यही तरीका अपने कद से साया के पहचानने का है यानी कद का साया अगर देखो कि वह घट रहा है तो समझ लो कि आफताब का अभी जवाल नहीं हुआ अगर साया ठहर गया है तो निस्फुन्नहार का वक्त है अगर साया बढ़ गया है तो जवाल हो गया है सायए मिस्ल के पहचानने का तरीका यह है कि अगर कद की लम्बाई सात कदम है तो सामने की तरफ से साया नाप लो जिस कदम पर खड़े हो उसको शुमार न करो सायए असल के सिवा सात कदम हो जाए तो समझ लेना चाहिए कि जुहर का वक्त हो गया है अगर उससे बढ़ जाए तो (फिकहे हंबली में) अस्त्र का वक्त हो गया।

## सायए असल की मजीद तशरीह

सायए असल के सिलसिले में जो कुछ कहा गया है तो उसका इतलाक मौसमे सर्मा और गर्मा दोनों पर यकसां नहीं है बल्कि मौसम के एतबार से कम व बेश होता है, मौसमे गर्मा की बनिस्बत मौसमे सर्मा में साया ज्यादा तवील होता है इसका सबब यह है कि मौसमे सर्मा में आफताब ऐन सिमतुरास से होकर नहीं गुजरता बल्कि आसमान के दामन की तरफ हट कर गुजरता है और मौसमे गर्मा में साया कम होता है क्योंकि इस मौसम में आफताब ऐन सिमतुरास (यानी वस्ते आसमान) से गुजरता है उस वक्त उसकी शुआयें इंसान के बिल्कुल ठीक सर पर पड़ती हैं।

आफताब जिस वक्त तुलूअ होता है वह आसमान के उफक पर दिखाई देता है और उसका साया बहुत लम्बा होता है जूं जूं वह चढ़ता जाता है साया घटता जाता है और जब वह वस्ते आसमान पर पहुंच जाता है तो फिर साया ठहर जाता है यही वक्त तवक्कुफ है लेकिन सूरज की रफ्तार बराबर जारी रहती है और सूरज का मगरिब की जानिब झुकाओ शुरु हो जाता है और असले साया में तूल शुरु हो जाता है सूरज के इस उतार (नुजूल) को जवाल कहते हैं।

जिस तरह मौसमों के एतबार से साया में कमी व बेशी होती रहती है उसी तरह शहरों के महल्ले वुकूअ के इख्तिलाफ से भी साया में कमी व बेशी होती है जो शहर आसमान के ऐन वस्त में आते हैं जैसे मक्का और उसके अतराफ के बस्तियां, उन बस्तियों में आफताब का साया कम पड़ता है यहां तक कि तवक्कुफ के वक्त साया बिल्कुल नहीं रहता है और जो ममालिक वस्ते



आसमान से दूर हैं जैसे खुरासान अतराफे खुरासान वगैरह वहां मौसमे सर्मा और गर्मा दोनों में साया तवील होता है, उन शहरों में मौसमे गर्मा में सूरज का असल साया इतना होता है जितना दूसरे शहरों में मौसमे गर्मा के अन्दर।

## मुख्तलिफ़ महीनों में ज़वाल के वक़्त साया

### उलमाए सल्फ़ की तशरीह

इल्म तौकीत के उलमाए सल्फ़ ने कहा है कि माहे हज़ीरान (आसाढ़) में जब साया दो क़दम रह जाता है तो वह ज़वाल हो जाता है और माहे कानून (पूस) में अकसर जब आठ क़दम साया होता है तो ज़वाल होता है और माहे ऐलूल (क़वार) में पांच क़दम साया पर ज़वाल होता है और नशरीन अब्बल (कार्तिक) में छः क़दम साया पर ज़वाल होता है। नशरीन सानी (अगन) में सात क़दम पर और कानू अब्बल (पूस) में आठ क़दम पर इस महीना में दिन बहुत ही छोटा और रात बहुत ही ज़्यादा तवील हो जाती है। इसके बाद साया घटने और दिन बढ़ने लगता है चुनांचे कानून सानी (माघ) के महीने में सात क़दम पर ज़वाल होता है और माहे शबात (फ़ागुन) में छः क़दम पर, माहे अदार (बैसाख) में पांच क़दम पर ज़वाल होता है इस माह में कुछ दिन के लिए रात दिन बराबर होते हैं। फिर माह अयार (चैत) में चार क़दम पर ज़वाल होता है माहे नीसां में भी चार क़दम पर ज़वाल होता है और माहे तिमोज (जैठ) में तीन क़दम पर और माहे आब (सावन) में इसी तरह दो क़दम पर ज़वाल होता है यह ज़माना दिन के इन्तहाई तवील और रात के सबसे ज़्यादा छोटे होने का होता है और कम से कम असले साया पर दिन का ज़वाल होता है दिन पन्द्रह घंटे का और रात नौ घंटे की होती है सावन में ज़वाल तीन क़दम साया पर और भादो में चार क़दम साया पर होता है, कुंवार के महीने में ज़वाल पांच क़दम साया पर होता है और इस ज़माने में रात दिन बराबर होते हैं।

हज़रत सुफ़ियान सूरि से मरवी है कि आफ़ताब का ज़वाल ज़्यादा से ज़्यादा सात क़दम पर और कम से कम एक क़दम पर है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से मरवी है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जुहर की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते थे जब साया तीन क़दम से पांच क़दम तक होता था और सर्दी के मौसम में पांच क़दम साया होने पर पढ़ा करते थे।

### बाज़ उलमा की तसरीह ज़वाल के बारे में

साया के घटने और बढ़ने की एक सूरत बाज़ उलाम ने यह बयान की है कि जेठ की 19 तारीख़ को हर चीज़ का सायए असली तीन क़दम होता है और उसी पर ज़वाल होता है इस लिए उस दिन सूरज का ज़वाल हर चीज़ के 3/7 हिस्सों पर वाक़ेअ होता है इसके बाद साया घटने लगता है, हर 36 दिन गुज़रने पर साया बक़दर एक क़दम बढ़ जाता है। कुंवार की 19 तारीख़ को दिन रात फिर बराबर हो जाते हैं। उस दिन ज़वाले आफ़ताब तीन क़दम पर होता है (चौदह दिन के बाद साया बक़दर एक क़दम बढ़ जाता है पोह या पूस की 19 तारीख़ को रात का बढ़ना और दिन का घटना इन्तहा को पहुंच जाता है उस दिन सायए असली साढ़े सात क़दम होता है यह



साया ज्वाल के वक्त के लिए सबसे ज्यादा है इसके बाद चौदह दिन गुजरने पर एक कदम साया ज्यादा हो जाता है। साया का घटना और बढ़ना खिजां और बहार के मौसम में हर छत्तीस दिन पर एक कदम होता है मौसमे बहार में हर चौदह दिन बाद एक कदम बढ़ता है।

## ज्वाल की शिनाख्त का एक और तरीका

हमारे मशाइख (उलमाए हंबली) ने शिनाख्त ज्वाल का एक और तरीका बयान किया है और वह यह है कि कदमे इंसान के कद का  $1/7$  होता है। चैत के पूरे महीने में तीन कदम साया पर ज्वाल होता है इस महीने में अस्त्र का अब्बल वक्त साढ़े नौ कदम साया पर होता है (यानी असल और बढ़ा हुआ साया दोनों को मिला कर साढ़े नौ कदम सावन के पूरे महीने में जुहर का अब्बल वक्त साढ़े ग्यारह कदम होता है। पूरे कुंवार में जुहर का अब्बल वक्त छः कदम साया पर और अस्त्र का वक्त साढ़े बारह कदम पर शुरू होता है। माघ के शुरू महीने में सात कदम के फासला (साया) पर जुहर का और साढ़े तेरह कदम पर अस्त्र का वक्त शुरू होता है और इस महीने के अखीर में आठ कदम साया पर जुहर का और साढ़े चौदह कदम साया पर अस्त्र का वक्त शुरू हो जाता है, पूस (पोह) के महीने में साढ़े दस कदम पर जुहर और साढ़े सत्तरह कदम साया (असल और ज्यादा) पर अस्त्र का वक्त शुरू होता है, फागुन में सात कदम साया पर जुहर और साढ़े चौदह कदम पर अस्त्र का वक्त शुरू हो जाता है चैत के महीने में छः कदम पर जुहर और साढ़े बारह कदम साया पर अस्त्र का वक्त शुरू होता है, बैसाख में साढ़े चार कदम साया पर जुहर और ग्यारह कदम पर अस्त्र का वक्त शुरू हो जाता है, जेठ में साढ़े तीन कदम पर जुहर और साढ़े दस कदम पर अस्त्र का वक्त शुरू होता है। साल के बारह महीनों में ज्वाले आफ़ताब का यह एक अन्दाज़ा है लेकिन हर बात की असल हकीकत अल्लाह तआला ही को मालूम है हमारी अकलें इसके इदराक से कासिर व आजिज़ हैं।

## जून व यकीन के ग़लबा पर अमल

बयानात व तसरीहाते मजकूरा बाला से ज्वाल की शिनाख्त और उसकी हद बन्दी (बारह महीनों में) काई आखिरी और कतई नहीं है यह सब कुछ शिनाख्त का एक जरिया है लेकिन इस से हर शख्स इस्तिफ़ादा नहीं कर सकता बल्कि इसका काइदए कुल्लिया यह है कि जिस शख्स का ज्वाल का यकीन और उस पर गुमान ग़ालिब हो जाए तो उस पर उस वक्त में जुहर की नमाज़ अदा करना वाजिब हो जाता है और हकीकत यह है कि ज्वाल की शिनाख्त करने वाले लोग तीन तरह के होते हैं अब्बल वह लोग जिन पर उन औकात का यकीनी इल्म फ़र्ज होता है, वह लोग हैं जो इल्मे तौकीत (घंटा मिनट मोअय्यन करने का इल्म) और सितारों की रफ़्तार से वाकिफ़ होते हैं उन ज़राए से उनको औकात का यकीनी इल्म हो जाता है दोम वह लोग हैं जिन का फ़र्ज इस सिलसिले में कोशिश करना और औकात की शिनाख्त और अपने काम की मिक्दार या दूसरे लोगों के काम की मिक्दार से नतीजा हासिल करना है मसलन नाने बुज़ की आदत यह हो कि वह जुहर के वक्त तक एक मख़सूस वज़न की रोटीयां पका लेता हो और वह उस मख़सूस मिक्दार को पका ले तो यह राय कायम कर ली जाएगी कि जुहर का वक्त हो गया या एक आटा पीसने वाला जुहर तक एक मख़सूस पैमाना तक ग़ल्ला पीस लेता है और वह उस दिन यह मख़सूस वज़न और पैमाना ग़ल्ला का पीस ले तो यह राय कायम कर ली



जाएगी कि जुहर का वक़्त हो गया है। इस तरह तरीक़ा कार की मदद से पेशावर वक़्त की शिनाख़्त कर लेता है और नमाज़ अदा कर लेता है, अन्दाज़े कार से वक़्त के अन्दाज़े की ज़रूरत इसलिए पेश और भी आई कि अब्र के दिन सूरज न होने की वजह से वक़्त कम मालूम होता है और इंसान वक़्त की सही शिनाख़्त नहीं कर सकता।

इसी तरह वक़्त को पहचानने वाले मोअज़्ज़िन की अज़ान या ऐसे शख्स की अज़ान जिसने किसी वक़्त शनास की इजाज़त से अज़ान दी हो (इंसान वक़्त का अन्दाज़ा कर लेता है और) नमाज़ को खड़ा हो जाता है, सोम वह शख्स जिसका फ़र्ज़ सिर्फ़ अपनी फ़िक्र व अक्ल से इज्तिहाद करना है, यह शख्स उस वक़्त तक नमाज़ को मोअख़्खर करता है यानी उस वक़्त तक वक़्त हो जाने का हुक्म नहीं लगाता जब तक वक़्त हो जाने का उसको गुमान ग़ालिब न हो जाए मसलन वह लोग जो किसी जगह पर बन्द हों या मुक़ैयद हो जहाँ न कोई दलील वक़्त पहचानने की हो और न कोई इत्तला मिलने की उम्मीद और न अज़ान की अवाज़ आने की तवक्को तो ऐसे लोग महज़ अपने गुमाने ग़ालिब से नमाज़ अदा करते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है मैं जब तुम को किसी काम करने का हुक्म दूँ तो जितना कर सकते हो करो।

## यकीनी तौर पर ज़वाल की शिनाख़्त

यकीनी तौर पर ज़वाल के वक़्त की पहचान मुश्किल भी है और दक्कीक़ भी, इसका सही अन्दाज़ा कोई नहीं कर सकता। हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया कि क्या आफ़ताब ढल गया? उन्होंने जवाब दिया नहीं फिर फ़ौरन ही कहा हाँ आप ने दरयाफ़्त किया यह क्या जवाब तुमने दिया? उन्होंने ने कहा कि जब मैंने नहीं के बाद हाँ कहा उतनी देर में आफ़ताब ने अपने मदार पर पचास हज़ार फ़रसख़ मुसाफ़त तै कर ली है, हुज़ूर का जिब्रील से ज़वाल के बारे में सवाल करना इल्मे इलाही के बारे में था।

बहरहाल अगर तुम क़िब्ला रु खड़े हो और गर्मी का ज़माना है, सूरज तुम्हारी दायें अबरु के ऊपर हो तो समझ लो कि ज़वाल हो गया जुहर की नमाज़ पढ़ लो और जब हर चीज़ का साया एक मिस्ल हो जाए तो समझ लो कि अस्त्र का वक़्त हो गया और अगर आफ़ताब बायें अबरु पर हो तो यकीन कर लो कि अभी ज़वाल नहीं हुआ और अगर आफ़ताब दोनों अबरुओं के वस्त में हो तो यह समझना चाहिये कि आफ़ताब के तवक्कुफ़ और क़याम का वक़्त है यानी उस वक़्त आफ़ताब ठीक निस्फुन्नहार पर है। मौसमे सर्मा के इब्तिदा में जब कि दिन छोटा होता है यह मुमकिन है कि हालते मज़कूरा में ज़वाल हो गया हो (यानी जब आफ़ताब दोनों अबरुओं के दर्मियान हो और जाड़े का मौसम हो) अगर मौसमे सर्मा की इब्तिदा में आफ़ताब दायें अबरु पर हो तो हर मौसम में ज़वाल का वक़्त हो जाता है (ख़्वाह गर्मी का मौसम हो या सर्दी का) बस फ़र्क़ इतना होगा कि अगर गरमी है तो अब्बल वक़्त जुहर का होगा और मौसमे सरमा में जुहर का आखिरी वक़्त। अगर आफ़ताब बायें अबरु पर हो तो मौसमे सर्मा में तो ज़वाल का वक़्त मुमकिन है लेकिन गर्मा में ज़वाल का वक़्त नहीं हो सकता है क्योंकि दिन बड़ा होता है, मौसमे सर्मा में अगर आफ़ताब दोनों अबरुओं के दर्मियान हो तो ज़वाल का वक़्त यकीनी है और अगर दायें अबरु की तरफ़ आफ़ताब माएल हो तो जुहर का आखिरी वक़्त होगा लेकिन यह वक़्त अहले ख़ुरासान व इराक़ के लिए होगा



यानी उन लोगों के लिए जो रुकने असवद और बैतुल्लाह के दरवाजे की तरफ रुख कर के नमाज़ अदा करते हैं लेकिन यमन और अहले मगरिब और उसके अतराफ में रहने वाले लोगों का वक्त इसके खिलाफ होगा इसलिए कि वह रुकने यमानी और काबा की पुश्त की तरफ रुख करके नमाज़ पढ़ते हैं पस साया का अंदाज़ वक्त तबदील हो जाता है।

## काबा की शिनाख्त

जवाल की शिनाख्त के बाद अगर काबा की सिम्त की शिनाख्त करना है तो अपना साया अपनी बाई तरफ कर लो उस वक्त तुम्हारा मुह किब्ला रु होगा इस मौका पर इताना और जान लो कि जवाल के वक्त की शिनाख्त मुश्किल और बहुत दकीक बात है यही वजह है कि हम ने इस को इस कदर तफसील से बयान किया। हज़रत इब्ने मसऊद से मरवी हदीस में जवाल के बारे में शिनाख्त की तंबीह आई है यानी जवाल के वक्त के सिलसिला में ज्यादा काविश न की जाए।

## अस्र का वक्त

### अस्र के वक्त का आगाज़?

नमाज़े अस्र का वक्त उस वक्त होता है कि साया एक मिस्ल से बढ़ जाए और उसका आखिरी वक्त रह जाता है कि साया दो मिस्ल हो जाए इस के बाद से गुरुबे आफ़ताब तक सिर्फ़ वक्ते ज़रूरत है, अस्र की नमाज़ अव्वल वक्त में पढ़ना अफ़जल है।

## मगरिब का वक्त

### मगरिब के औकात

आफ़ताब के गुरुब होते ही मगरिब का वक्त हो जाता है। डूबने के मानी यह हैं कि कुर्स ख़ुशीद का बालाई किनारा नीचे को लटक जाए और नज़रों से ग़ायब हो जाए। मगरिब के दो वक्त है एक इब्तेदाई दूसरा इन्तेहाई। गुरुबे आफ़ताब मगरिब का अव्वल वक्त है और मगरिब का आखिरी वक्त शफ़क़ की सुर्खी ग़ायब होने तक है सही रिवायत यही है।

## इशा का वक्त

### इशा का आगाज़

जब आसमान पर शफ़क़ की सुर्खी (गुरुब के बाद) बिल्कुल ग़ायब हो जाए तो इशा का वक्त शुरु हो जाता है और वक्ते फ़ज़ीलत एक रिवायत के एतबार से एक तिहाई रात तक और दूसरी रिवायत के लिहाज़ से निस्फ़ शब तक बाकी रहता है अलबत्ता उज़र और ज़रूरत का वक्त सुबहे सादिक़ के नमूदार होने तक है। इशा के दो नाम हैं अतमा और इशा आखिरा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि देहाती इस नमाज़ का नाम (अतमा) रखने में तुम पर ग़ालिब आ गये तुम इस बात में उनकी मुख़ालिफ़त न करो।



तिहाई रात के अब्बल या निस्फ़ शब तक इशा की नमाज़ में ताख़ीर करना अफ़ज़ल है इशा की नमाज़ का अफ़ज़ल वक़्त वह है कि मगरिब के उफ़क़ की सफ़ेदी ग़ायब हो कर उसकी जगह सियाही ने ले ली हो उस सफ़ेदी को जिस पर तारीकी ग़ालिब आ गई दूसरी शफ़क़ कहते हैं लिहाज़ा चौथाई या तिहाई या निस्फ़ शब तक ताख़ीर करना चाहिए लेकिन यह अहक़ाम (ताख़ीर) उस शख्स के लिए है जो पढ़ने से पहले न सोए (इशा की नमाज़ पढ़े बग़ैर सोना मकरूह है) जिसको नीन्द आ जाने का डर हो उसके लिए नमाज़ पढ़ कर सो जाना ही अफ़ज़ल है ख़्वाह वह शुरू शब ही क्यों न हो। इमाम शाफ़ई के नज़दीक इसी एतबार से अब्बल शब में इशा पढ़ना अफ़ज़ल है, लेकिन हम (हनाबिला) ताख़ीर की फ़ज़ीलत के कायल हैं क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि इशा की नमाज़ में ताख़ीर करो।

एक शब हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम देर से नमाज़ (इशा) के लिए तशरीफ़ लाए थे और फ़रमाया था कि अगर मुझे उम्मत की दुशवारी का ख़याल न होता तो मैं उनको ऐसे ही वक़्त इशा पढ़ने का हुक्म देता। लिहाज़ा आपने न सिर्फ़ ताख़ीर फ़रमाई थी बल्कि ताख़ीर की रग़बत भी दिलाई।

## नमाज़े पंजगाना और सुनने मोअक्किदा

पंजगाना नमाज़ में तेरह रकअतें सुन्नते मोअक्किदा हैं (इनको सुनने रातिबा भी कहते हैं) दो रकअतें नमाज़े फ़ज्र से कबूल, दो रकअतें नमाज़े जुहर से कबूल और दो इसके बाद, दो रकअतें नमाज़े मगरिब के बाद, दो रकअतें नमाज़े इशा के बाद और तीन रकअत वित्र, वित्र में इख़्तियार है कि चाहे तो मगरिब की नमाज़ की तरह एक सलाम से पढ़े या दो रकअत पर सलाम फेर कर फ़ौरन इसके बाद एक रकअत मिला दे और यह अफ़ज़ल है। वित्र की पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सबाहिस म रब्बिकल आला और दूसरी रकअत में कुल या अय्युहल काफ़िरून और तीसरी रकअत में कुल हुवल्लाहो अहद पढ़े। फ़ज्र की सुन्नतों में पहली रकअत में कुल या अय्युहल काफ़िरून और दूसरी रकअत में कुल हुवल्लाहो अहद पढ़े। फ़ज्र की सुन्नतें घर पर पढ़ कर फ़र्ज के लिए निकलना मुसतहब है। फ़ज्र की सुन्नतों के बाद ज़िक़रे इलाही में मशगूल रहे और किसी से बात न करे (सिवाए ज़रूरी बात के) मगरिब की नमाज़ की सुन्नतों में वही क़िरत करे जो फ़ज्र की सुन्नतों में की गई है। हज़रत इब्ने उमर फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बीस से ज़्यादा बार सुना है कि आप मगरिब की सुन्नतों में कुल या अय्युहल काफ़िरून और सूरह इख़लास पढ़ा करते थे। हज़रत ताऊस पहली रकअत में कुल आमनररसूलो और दूसरी रकअत कु हुवल्लाहो अहद पढ़ते थे।

### मगरिब की सुन्नतें जल्द पढ़ना

मगरिब की सुन्नतें जल्द पढ़ना मुसतहब है, हज़रत हुज़ैफ़ा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मगरिब की नमाज़ के बाद दो रकअतें जल्द पढ़ लिया करो ताकि फ़र्ज नमाज़ के साथ मलाइका उनको भी उठा कर ले जायें पस दोनों रकअतें मुख़्तसर पढ़ना मुस्तहब हैं। एक और हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने बात करने से पहले मगरिब के बाद की दो रकअतें पढ़ी



गुनियतुतालिबीन

करिश्ते उस शख्स की यह नमाज़ इल्लीईन में ले जाते हैं।

एक ऐसी भी रिवायत आई है कि जिससे इन दोनों रकअतों का तवील पढ़ना मुस्तहब साबित होता है। हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मगरिब के बाद वाली रकअतें इस क़दर तवील पढ़ते थे कि तमाम अहले मस्जिद मुतफ़रिक् हो जाते थे (अपने अपने घरों को चले जाते थे) हज़रत हुजैफ़ा का बयान है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मगरिब की नमाज़ पढ़ी, मगरिब की नमाज़ के बाद इशा तक हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ते रहे फिर घर को तशरीफ़ ले गए।

एक हदीस में आया है कि मगरिब के बाद की दो रकअतें घर में पढ़ना मुस्तहब हैं। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मगरिब के बाद वाली दो रकअतें मेरे घर में अदा फ़रमाते थे। हज़रत उम्मे हबीबा से भी ऐसी ही रिवायत आई है। हज़रत सुहैल बिन सअद फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उसमान का ज़माना पाया है जब अमीरुल मोमिनीन मगरिब की नमाज़ का सलाम फेरते थे तो मैं किसी को बाद की दोनों रकअतें मस्जिद के अन्दर पढ़ते नहीं देखा था सब लोग जल्द से जल्द मस्जिद के दरवाज़े की तरफ़ जाते और अपने अपने घर में पहुंच कर यह दो रकअतें अदा करते थे।

## नमाज़ पंचगाना के फ़ज़ाइल:

### एक तमसील

अबू सलमा ने हज़रत अबू हुदैरह से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ग़ौर करो! अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर नहर जारी हो और वह रोज़ाना उसमें पांच बार गुस्ल करे तो क्या उसके बदन पर कुछ मेल बाकी रहेगा, सहाबा कराम ने अर्ज किया! नहीं, हुज़ूर ने फ़रमाया नमाज़े पंचगाना का भी यही हाल है। अल्लाह उनके ज़रिये गुनाहों को मिटा देता है। अबू सअलबा करतबी का बयान है कि मैंने हज़रत उमर ख़त्ताब से सुना कि आप फ़रमा रहे थे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लोग रात भर जलते हैं जब सुबह की नमाज़ पढ़ लेते हैं तो नमाज़ से पहले के जलाने वाले गुनाहों को वह नमाज़ धो डालती है फिर जब जुहर की नमाज़ पढ़ते हैं तो यह नमाज़ उस वक़्त से पहले के जलाने वाले गुनाहों को धो डालती है इसी तरह जब अस्र की नमाज़ पढ़ते हैं तो यह नमाज़ इससे पहले के गुनाहों को धो डालती है यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी तरह पांचों नामज़ों को बयान फ़रमाया।

हज़रत उसमान के आज़ाद कर्दा गुलाम हारिस का बयान है कि एक दिन हज़रत उसमान ने मज़ीद पानी वुजू के लिए तलब फ़रमाया और वुजू किया और इरशाद किया कि मैंने इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वुजू करते देखा था, जिसने मेरे वुजू की तरह वुजू किया और खड़े होकर जुहर की नमाज़ अदा की उसके फ़ज़र से लेकर जुहर तक तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे फिर जिसने मगरिब की नमाज़ पढ़ी उसके अस्र से मगरिब तक के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे इसके बाद जिसने इशा की नमाज़ अदा की उसके मगरिब से इशा तक के तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे फिर मुमकिन है कि वह बिस्तर पर तमाम रात लेटा रहे



लेकिन जब सूबह को उठ कर उसने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ ली तो इशा से फ़ज्र तक के तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। बेशक नेकियां बुराईयों को दूर कर देती हैं। लोगों ने अर्ज़ किया यह तो नेकियां हैं और बाकियाते सालिहात किस को कहते हैं, आपने फ़रमाया: सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर वला हौला वला कुव्व त इल्ला बिल्लाह।

## नमाज़ के औसाफ़

इमाम जाफ़र बिन मोहम्मद ने बरिवायत अपने जद्दे मोहतरम बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने फ़रमाया: नमाज़ रब की खुशनुदी, मलाईका की मोहब्बत, अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत, मारफ़त का नूर, ईमान की असल अल्लाह और बन्दे के माबैन शफी, नमाज़ी की कब्र का चिराग़, कब्र में उसके पहलू के लिए बिस्तर, मुनकर नकीर के सवाल का जवाब और कयामत तक के लिए कब्र के अन्दर एक गमगुसार दोस्त की मानिन्द है।

जब कयामत का दिन होगा तो नमाज़ नमाज़ी के ऊपर साया फ़गन होगी, उसके सर का ताज़ होगी, उसके बदन का लिबास और उसको राह दिखाने के लिए नूर बन जायेगी, यह नूर नमाज़ी के आगे रवां दवां होगा, नमाज़ नमाज़ी और दोज़ख के दर्मियान एक आड़ बन जायेगी, अल्लाह तआला के हुज़ूर में मोमिनों के लिए हुज्जत होगी, मीज़ान को भारी करेगी पुल सिरात से गुज़रने का वासता बन जाएगी, जन्नत की कलीद होगी, इसलिए कि नमाज़ में तसबीह भी है और तहमीद भी, तक्दीस भी है और ताज़ीम भी, इसमें किरत भी है और दुआ भी, गर्ज़कि तमाम आमाल से अफ़ज़ल वक़्त पर अदा की जाने वाली नमाज़ है।

## नमाज़ दीन का सुतून है

हज़रत इब्ने उमर फ़रमाते हैं कि मैंने खुद सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम इरशाद फ़रमा रहे थे पांचों नमाज़ें दीन का सुतून हैं। अल्लाह तआला बग़ैर नमाज़ के दीन को कबूल नहीं फ़रमायेगा।

हज़रत अनस बिन मालिक ने फ़रमाया एक शख्स ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर कितनी नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं? हुज़ूर ने फ़रमाया पांच नमाज़ें! उस शख्स ने अर्ज़ किया, क्या इनसे अब्बल या बाद को कुछ और भी है? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं जिन से पहले या बाद को और कुछ नहीं है, उस शख्स ने अल्लाह की कसम खाकर कहा कि मैं इस से न कम करुंगा न ज्यादा, आप ने फ़रमाया अगर इस शख्स ने सच कहा है तो यह जन्नत में जाएगा।

## कयामत में बन्दे से सबसे पहले नमाज़ का सवाल होगा

हज़रत तमीम दारी ने फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि कयामत के दिन बन्दे से सबसे पहले अब्बल नमाज़ों का सवाल होगा, अगर उस की नमाज़ें पूरी होई तो पूरी लिखी जायेंगी अगर पूरी न हुई तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमायेगा मेरे बन्दे के नवाफ़िल देखो अगर वह तुम को मिल जायें तो जो कुछ (फ़र्ज़) इसने खोये हैं उसको उन (नवाफ़िल) से पूरा कर दो। हज़रत अनस बिन हक़म खुब्बी से रिवायत है कि उन



से हज़रत अबू हुसैरह ने कहा कि तुम जब अपने घर वालों के पास जाओ तो उन से कह देना कि अबू हुसैरह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना था कि हुजूर वाला फरमा रहे थे क़यामत के दिन बन्दे से सबसे अब्बल फ़र्ज नमाज़ का हिसाब होगा अगर उसने पूरी कर ली होगी तो फ़ब्बेहा वरना अगर उसके पास नवाफ़िल होंगे तो यह कमी उन से पूरी की जाएगी और तमाम आमाल का हिसाब इसी तरह किया जाएगा।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सबसे पहले बन्दे की नमाज़ का हिसाब होगा और सब से पहले इस उम्मत (मोहम्मदी) पर अल्लाह ने नमाज़ ही फ़र्ज की है।

## मस्जिद को जाना, नमाज़ बाजमाअत

अदा करना और नमाज़ में खुजूअ खुशूअ

### मस्जिद में जाने की फ़ज़ीलत औ जमाअत

नाफ़ेअ ने हज़रत इब्ने उमर से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जमाअत की नमाज़ और तन्हा नमाज़ में सत्ताईस दर्जा का फ़र्क है। हज़रत अबू हुसैरह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जब बन्दा वुजू करके मस्जिद को जाता है तो उसके हर एक कदम पर अल्लाह तआला एक नेकी लिखता है और एक गुनाह मिटाता है और उसका एक दर्जा बलन्द फ़रमाता है और जिस तरह मुदत दराज़ के सफ़र से कोई मुसाफ़िर जब घर वापस होता है तो उसके घर वाले खुश होते हैं उसी तरह उसके मस्जिद में आने पर अल्लाह तआला खुश होता है।

अबू उसमान महदी से मरवी है कि हज़रत सलमान ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है जो शख्स अपने घर में अच्छी तरह वुजू करके मेरे किसी घर (मस्जिद) में मेरी मुलाकात के लिए आता है तो मैं उसकी इज़्ज़त में इज़ाफ़ा कर देता हूँ इसलिए कि जब मुलाकात को कोई आये तो आने वाले की खातिर करनी वाजिब है।

सालिम बिन अब्दुल्लाह ने बरिवायत हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर का यह कौल नक़ल किया है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आये और कहा जो लोग रात की तारीकी में पैदल चल कर मस्जिद में पहुंचते हैं उनको क़यामत के दिन नूर कामिल की बशारत दे दीजिये। हज़रत अबू दरदा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख्स रात के अंधेरे में पैदल चल कर मस्जिदों में आता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसको नूर अता फ़रमाएगा।

हज़रत अबु सईद खुदरी का कौल है कि मैंने खुद सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमा रहे थे कि बाजमाअत नमाज़ को तन्हा नमाज़ पर पच्चीस दर्जा फ़ज़ीलत हासिल है। नाफ़ेअ ने हज़रत इब्ने उमर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बा जमाअत नमाज़ और तन्हा नमाज़ में 27 दर्जा का फ़र्क है। (फ़ज़ीलत में)



## गुनियतुत्तालिबीन

हजरत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ असमान इब्ने मजऊन जिस ने सुबह की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी उसके लिए यह नमाज़ कबूले हज और कबूले उमरा के बराबर हो जाती है। ऐ उसमान जिसने जुहर की नमाज़ जमाअत से पढ़ी उसको पच्चीस नमाज़ों का सवाब है और उसके सत्तर दर्जे जन्नत में बलन्द होंगे। ऐ उसमान जिसने असर की नमाज़ बाजमाअत पढ़ी फिर गुरुबे आफताब तक जिक्रे इलाही में मसरुफ़ रहा तो गोया उसने औलादे इस्माईल से बारह हजार गुलामों को आजाद किया और जिसने मगरिब की बाजमाअत नमाज़ पढ़ी उसके लिए पच्चीस नमाज़ों का सवाब है और उसके साथ जन्नते अदन में उसके सत्तर दर्जे बलन्द होंगे और ऐ उस्मान! जिसने इशा की नमाज़ जमाअत से पढ़ी गोया उसने शबे क़द्र में इबादत की।

## मस्जिद में दाखिल होना

मस्जिद में आये तो अल्लाह तआला से खौफ़ खाता और डरता हुआ खुजूअ व खुशूअ के साथ आए, यह मुसतहब है, संजीदगी और बर्दबारी नुमायां हो, मस्जिद में आने से पहले दुनिया के जिन झमेलों और बखेड़ों में उलझा था उनको छोड़ कर हुजूरे खुदावन्दी में हाजिरी पर गौर करता हुआ आए और अदब के साथ आए, सवाब की रग़बत पर अज़ाब का खौफ़ तारी हो, आजिजी, इंकेसारी और फ़रोतनी नुमायां हो, खुदपसन्दी, गुरुर और तकब्बुर न हो, खुद बीनी और खुदआराई मौजूद न हो सिर्फ़ ख़ानए खुदा की तरफ़ तवज्जोह करने की निस्बत हो वह ख़ानए खुदा जिस की अज़मत को बरक़रार रखने और वहां जिक्रे खुदावन्दी करने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है।

घरों में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उनमें अल्लाह को याद किया जाए और उसका नाम बलन्द हो जहां कुछ ऐसे लोग सुबह व शाम उसकी पाकी बयान करते हैं जिनको तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से माफ़िल नहीं कर पाते।

पस जितनी नमाज़ जमाअत के साथ मिल जाए और जितनी फ़ौत हो गई उसको लौटा ले। हजरत अबू हुरैरह से मरवी हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर नमाज़ हो रही हो और कोई आए तो आहिस्तगी से आए औ जितनी नमाज़ (बाजमाअत) मिल जाए पढ़ ले जितनी पहली हो चुकी हो उसको लौटा कर अदा कर ले। इसी हदीस के दूसरे अल्फ़ाज़ हैं इत्मिनाना और वकार से चल कर आए, बन्दे के लिए यह भी ज़रूरी है कि अपनी इबादत की पाबन्दी और हमेशा अदा करने पर न इतराए, यह खुद बीनी अल्लाह तआला की नज़रों से गिरा देती है और कुर्बे खुदावन्दी से महरुमी का बाइस बनती है। और इंसान अपनी असल हालत के मुशाहदा से महरुम रहता है, नूरे बसीरत जाइल हो जाता है, इबादत से जो लज़्ज़त हासिल होती है उसका एहसास मिट जाता है और मारफ़त की सफ़ाई उस से मुक़द्दर और धुंदली पड़ जाती है उसके बाइस अल्लाह तआला बन्दे के नामए आमाल को उस के मुंह पर मार देता है। एक रिवायत में आया है कि तकब्बुर करने वाले जब तक तौबा न करें अल्लाह तआला के यहां उनके अमल कबूल नहीं होते।

## हजरत इब्राहीम का एक वाकिआ

हदीस शरीफ़ में आया है कि हजरत इब्राहीम खलीलुल्लाह ने एक दफ़ा तमाम रात इबादत



की जब सुबह होई तो शब बेदारी पर उनको हैरत और ताज्जुब हुआ वह खुद बखुद कहने लगे कि कितना अच्छा रब है और इब्राहीम भी कितना अच्छा बन्दा है (उनको अपनी इबादत पर नाज़ और तबखतुर हुआ) जब सुबह नाश्ता का वक़्त आया तो कोई शख्स शरीके तआम होने के लिए नहीं मिला आप बगैर मेहमान के खाना नहीं खाते थे मजबूरन वह सरे राह बैठ गए कि कोई राहगीर मिला जाए और साथ में खाले, इतने में दो फरिश्ते आसमान से उतरे और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरफ़ बढ़े आपने उनको मुसाफिर समझ कर खाने की दावत दी उन फरिश्तों ने दावत कबूल कर ली आपने फरमाया इस करीब के बाग में चलो वहां चश्मा भी है हम सब वहीं खाना खायेंगे चुनांचे सब के सब बाग में पहुंचे, देखा तो चश्मा खुशक पड़ा है, हज़रत इब्राहीम को यह देख कर बहुत दुख हुआ और कौल के मुताबिक वहां पानी न होने पर मुसाफिरों से शर्मिन्दगी हुई फरिश्तों ने कहा ऐ इब्राहीम! अपने रब से दुआ कीजिए कि वह दोबारा चश्मा जारी कर दे हज़रत इब्राहीम ने दुआ की लेकिन कुछ जवाब नहीं मिला आप को इससे और ज़्यादा तकलीफ़ हुई तब आप ने फरिश्तों से कहा कि तुम दुआ करो चुनांचे एक फरिश्ते ने दुआ की फौरन पानी का चश्मा जारी हो गया फिर दुसरे ने दुआ की तो चश्मा का पानी उबल कर सामने बहने लगा, आखिर कार उन्होंने बताया कि हम अल्लाह के भेजे हुए फरिश्ते हैं और आपको जो शब बेदारी और रात की इबादत पर कुछ गुरुर पैदा हो गया उसकी वजह से अल्लाह तआला ने आपकी दुआ कबूल नहीं फरमाई। गौर करो कि जब अल्लाह तआला ने अपने खलील से यह मामला किया तो दूसरों का क्या हकीकत है पस बन्दा को यकीन रखना चाहिए कि जो कुछ इबादत व ताअत वह कर रहा है, सब कुछ तोफ़ीके इलाही है उसका फज़ल व करम उसकी मेहरबानी है।

पस अल्लाह तआला के हुज़ूर में जब खड़ा हो तो खुशूअ व खुशूअ, एहताराम व अदब और इज्ज़ के इजहार के साथ खड़ा हो, इस तरह कि वह अल्लाह तआला को अपनी आंखों से देख रहा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह की इबादत इस तरह किया करो गोया उसे तुम देख रहे हो फिर अगर तुम उसको नहीं देखते तो वह तो तुम को देख ही रहा है।

## हज़रत ईसा से ख़िताब

हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर वही नाज़िल फरमाई कि ऐ ईसा! जब तुम मेरे सामने कयाम करो तो इस तरह करो कि तुम डरते कांपते और अपने आप को जलील समझते हुए हो और अपने नफ़्स को बुरा कहते हुए कि नफ़्स इस काबिल है कि इसको ख़्वा़र किया जाए और अगर तुम मुझसे दुआ करो तो इस हालत में करो तुम्हारे आज्ञा लर्ज़िश में हों, (तुम्हारा हर उज्व कांप रहा हो) इसी तरह एक हदीस में आया है कि ऐसी ही वही अल्लाह तआला ने हज़रत मुसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल फरमाई थी।

## बाज़ बुजुर्गाने सल्फ़ की नमाज़ें

एक रिवायत में है कि इब्ने सिरीन जब नमाज़ को खड़े हाते तो खशीयते इलाही से उनके चहरे का खून खुशक हो जाता था। मुस्लिम बिन यसार जब नमाज़ शुरु करते थे तो फिर उनकी



महवियत का यह आलम होता था और खशीयते इलाही का इस कदर गलबा होता था कि कोई आवाज़ उनके कानों में नहीं पहुंचती थी। आमिर बिन कैस का बयान है कि नमाज़ की हालत में दुनिया के बारे में किसी किस्म का खयाल और किसी मामले में गौर व फिक्र करने से दोनों रानों के दर्मियान खंजर घोंपना मेरे खयाल में ज्यादा बेहतर है। हज़रत सअद बिन मआज़ ने फरमाया मैं कभी ऐसी नमाज़ नहीं पढ़ता जिस को खत्म करने से पहले दुनिया का कोई खयाल मेरे दिल में आया हो।

शैख मुजाहिद फरमाते हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर नमाज़ के लिए खड़े होते तो ऐसे हमातन महव हो जाते गोया लकड़ी का एक सुतून खड़ा है। वहब बिन मुनब्बेह जब नमाज़ को खड़े होते तो मालूम होता है कि शायद वह जहन्नम को अपनी नज़रों के सामने देख रहे हैं। अतबा जो एक गुलाम थे जब नमाज़ का खड़े होते तो सर्दी के मौसम में (खौफे इलाही से) उनके जिस्म से पसीना आ जाता, लोगों ने वजह दरयाफ़्त की तो फरमाया कि अल्लाह के सामने मुझे अपने गुनाहों पर शर्म आती है। एक बार मुस्लिम बिन यसार एक हुजरे में नमाज़ पढ़ रहे थे अचानक मकान में आग लग गई, मोहल्ले के लोग घबरा कर अपने अपने घरों से निकल आए और आग बुझा दी लेकिन मुस्लिम को इस वाक़ेअ की मुतलक खबर भी न हुई और उस वक़्त आप को यह तमाम बातें मालूम हुई जब आप नमाज़ से फारिग हुए, आप ही का एक वाक़िआ यह कि एक बार आप मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे मस्जिद का एक सुतून आप पर गिर पड़ा, सुतून गिरने की ऐसी आवाज़ हुई कि बाज़ार के लोग घबरा कर दौड़े आए मगर आप को इस हंगामा का अहसास भी न हुआ।

अम्मार बिन जुबैर नमाज़ में मशगूल थे, आप की जूतियां सामने रखी थीं उनमें नया तिसमा पड़ा था, नमाज़ में आप की नज़र उस नए तिसमा पर पड़ गई, नमाज़ से फारिग होकर जूती को फेंक दिया और वह फिर जब तक जिन्दा रहे जूती नहीं पहनी। रबीअ बिन खशीम नफ़ल नमाज़ पढ़ रहे थे, उनके सामने उनका बीस हजार दिरहम कीमत का घोड़ा बंधा था, कोई चोर आया और घोड़ा खोल कर ले गया जब इस चोरी का हाल लोगों को मालूम हुआ तो वह इज़हारे हमदर्दी के लिए आप के पास आए, आप ने फरमाया, मैंने चोर को घोड़ा खोलते देख लिया था लेकिन मैं तो उस वक़्त एक ऐसे काम में मशगूल था जो मुझे घोड़े से ज्यादा अजीज़ था (इस लिए मैं चोर की तरफ़ मशगूल नहीं हुआ) कुछ दिन के बाद वही घोड़ा खुद बख़ुद आप के पास आ गया।

एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुख़ धारी की सियाह चादर पहने नमाज़ अदा फरमा रहे थे जब आप ने सलाम फेरा तो फरमाया इस सुख़ धारी ने मुझे नमाज़ की तरफ़ से हटा कर दूसरी तरफ़ लगा दिया। (मेरा ध्यान बटा दिया)।

### खुजूअ व खुशूअ करने वालों की तारीफ़

अल्लाह तआला ने उन बन्दों की जो नमाज़ में खुजूअ व खुशूअ करते हैं इस तरह तारीफ़ फरमाई है। वह लोग जो अपनी नमाज़ों में खुजूअ व खुशूअ करते हैं।

ज़हरी फरमाते हैं कि खुशूअ के मानी हैं नमाज़ में दिल का कायम रखना, बाज़ ने इस के मानी कहे हैं नमाज़ में इनहिमाक व मशगूलियत की वजह से दायें बायें वालों से भी बेख़बर होना। हुज़ूर वाला का इरशाद है कि नमाज़ तो हकीकत में खुद एक आला मशगूला है।



# नमाजों की हिफाजत और मदावमत

## अव्वल वक्त में नमाज की अदाएगी

आमश ने बरिवायत शफीक बिन सलमा इब्ने मसऊद का यह कौल नक्ल किया है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स अव्वल वक्त में नमाज अदा कर लेता है खुद उसकी नमाज जगमगाती हुई और ताबां बन कर आसमान पर उठा ली जाती है और अर्श पर पहुंच जाती है और वह कयामत तक नमाजी के लिए इस्तिगफार करती रहती है और कहती है कि जैसी हिफाजत तूने मेरी की है अल्लाह तेरी हिफाजत भी उसी तरह करे। और जब बन्दा वक्त के खिलाफ नमाज पढ़ता है तो उसकी नमाज में नूर नहीं होता जब वह आसमान की तरफ बढ़ती है तो एक फटे हुये कपड़े की तरह लपेट कर उसके मुंह पर मार दी जाती है, उस वक्त नमाज कहती है अल्लाह तआला तुझे भी इसी तरह जाया करे जिस तरह तूने मुझे जाया किया है।

हजरत एबाद बिन सामित फरमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने उम्दा और मुकम्मल वजू किया कामिल किरअत और सही रूकूअ व सुजूद किया तो नमाज कहती है अल्लाह तआला तेरी हिफाजत इसी तरह करे जिस तरह तूने मेरी हिफाजत की इस के बाद उसको आसमान पर उठा लिया जाता है उसमें नूरानियत होती है और वह रौशन होती है उसके लिए कि आसमान के दरवाजे खोल दिए जाते हैं और वह बारगाहे इलाही तक पहुंच जाती है और अपने नमाजी के लिए सिफारिश करती है और अगर नमाजी ने रूकूअ व सुजूद अच्छी तरह अदा नहीं किये तो नमाज कहती है जिस तरह तूने मुझे बरबाद किया अल्लाह तआला तुझे भी उसी तरह बरबाद करे फिर जब उसको ऊपर ले जाया जाता है तो नूर के बजाये उस पर तारीकी होती है और जब वह आसमान तक पहुंचती है तो आसमान के दरवाजे उसके लिए बन्द कर दिए जाते हैं और पुराने कपड़े की तरह लपेट कर नमाजी की मुंह पर मार दी जाती है।

हजरत इब्ने मसऊद फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ्त किया कि कौन सा अमल सबसे अच्छा है फरमाया वक्त पर नमाजें अदा करना, वालिदैन् की इताअत करना और अल्लाह की राह में जिहाद। इब्राहीम बिन अबी महजूर मोअज्जिन ने अपने वालिद से अपने दादा का यह कौल नक्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अव्वल वक्त नमाज की अदाएगी अल्लाह तआला की खुशनूदी का जरिया है और दर्मियानी वक्त की नमाज अल्लाह तआला के रहम के हुसूल का जरिया है और आखिर वक्त की नमाज अल्लाह तआला की तरफ से माफी का जरिया है अल्लाह तआला का इरशाद है:

## वक्त टाल कर नमाज पढ़ना

उन नमाजियों के लिए बड़ी खराबी है जो अपनी नमाजों से गाफिल रहते हैं।

हजरत इब्ने अब्बास ने फरमाया खुदा की कसम नमाजियों की खराबी की वजह यह कि उन्होंने अपनी नमाजों को उनके औकात टाल कर पढ़ा, इस से मुराद बिलकुल छोड़ देना नहीं है। हजरत सअद ने फरमाया मैंने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हुम अन सलातेमि साहून का मतलब पूछा तो फरमाया वह वक्त से देर करके नमाज पढ़ते हैं।



हजरत बरा बिन आजिब ने अजाउस्सलाता वत्तबउश्शहवाते फसौफा युलकूना गैया में लफ्ज गैया के बार में फरमाया कि गैया जहन्नम की एक वादी है। हजरत इब्ने अब्बास फरमाते हैं कि इस में वही लोग जाएंगे जिन्होंने अपनी नमाजों के औकात खो दिए हैं। हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ने फरमाया कि एक रोज़ रसूलुल्लाह ने नमाज का जिक्र फरमाया और इरशाद किया कि जो नमाज की निगहदाश्त करेगा उसके लिए नमाज, नूर और हुज्जत और कयामत के दिन नजात का जरीया होगी और जो इसकी निगहदाश्त नहीं करेगा उसके लिए नमाज न नूर होगी और न हुज्जत, न दोजख से नजात का जरीया होगी, वह दोजख के अन्दर फिरौन व हामान और अबी बिन खलफ के साथ होगा।

हारिस ने हजरत अली बिन अबी तालिब का कौल नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स नमाज को हकीर समझेगा अल्लाह तआला उस को पन्द्रह सज़ायें देगा, छः किस्म के अज़ाब मरने से पहले, तीन मरते वक़्त, तीन क़ब्र में और तीन क़ब्र से निकलते वक़्त।

### छः दुनियावी अज़ाब

छ दुनियावी अज़ाबों में पहला अज़ाब यह है, गाफ़िल नमाज़ी को सालेहीन की फ़ेहरिस्त से ख़ारिज कर दिया जाएगा (2) उससे ज़िन्दगी की बरक़त दूर कर दी जाएगी (3) उसके रिज़्क से बरक़त दूर हो जाएगी (4) उसका कोई नेक़ अमल क़बूल नहीं किया जाता (5) उस की दुआ क़बूल नहीं होती (6) वह नेकों की दुआओं से महरूम कर दिया जाता है।

### मरते वक़्त का अज़ाब

ऐसे नमाज़ी को मरते वक़्त जो तीन अज़ाब होते हैं वह यह हैं (1) वह प्यासा मरता अगरचे उसके मुंह में सात दरिया उलट दिये जायें (2) उसकी मौत अचानक होगी (तौबा की मोहलत ही नहीं मिलेगी) (3) उसके कांधों पर दुनियावी लोहे, लकड़ी और पत्थरों का बोझ डाला जाएगा जिस से वह बोझल हो जाएगा।

### क़ब्र के तीन अज़ाब

क़ब्र के तीन अज़ाब यह हैं कि (1) क़ब्र उस पर तंग कर दी जाएगी (2) क़ब्र में ज़बरदस्त अंधेरा होगा (3) मुनकर नकीर के सवालों का जवाब नहीं दे सकेगा।

### क़ब्र से निकलने पर तीन अज़ाब

क़ब्र से निकलने पर यह तीन अज़ाब होंगे (1) अल्लाह तआला उस पर ग़ज़बनाक होगा (2) उससे हिसाब बहुत ज़्यादा सख़्त होगा (3) अल्लाह तआला के दरबार से उसकी वापसी दोजख़ की तरफ़ होगी (अगर अल्लाह माफ़ फरमा दे तो ख़ैर)

## नमाज़ की अज़मत और शान

नमाज़ की बुजुर्गी और इस की अज़मत व शान बहुत अज़ीम है, इसके तमाम अहक़ाम भी अज़मत वाले हैं। अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खुसूसियत के



साथ नमाज़ ही का हुक्म दिया, नबूव्वत की पहली वही में इसका हुक्म दिया है इस के बाद हर अमल से पहले नमाज़ के बारे में हुक्म दिया इस सिलसिला में बकसरत आयात हैं। एक आयत में इरशाद फरमाया: जो किताब बजरीये वही आप के पास भेजी गई है उसकी तिलावत कीजिये और नमाज़ कायम कीजिये। दूसरी आयत में फरमाया: बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है। एक और जगह इरशाद फरमाया:

अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दीजिये और खुद भी नमाज़ की पाबन्दी कीजिये हम तुम से रिज़्क के तालिब नहीं, रिज़्क तो हम ही तुम को देंगे।

अल्लाह तआला ने तमाम मुसलामानों को मुखातिब फरमा कर तमाम ताअतों में सब्र और सलात से मदद लेने का हुक्म फरमाया है:

मुसलमानो! सब्र और नमाज़ के ज़रीये अल्लाह से मदद मांगो, बिला शुबहा अल्लाह की मदद सब्र करने वालों के साथ है। एक और मकाम पर इस तरह इरशाद फरमाया:

हमने वही के ज़रीये उनको अच्छाईयां करने, नमाज़ कायम करने और ज़कात अदा करने का हुक्म दिया।

इस आयत में अव्वलन अल्लाह ने मुजमिलन लफ़्ज़ ख़ैरात फरमाया जिसके तहत तमाम अच्छाईयां और नेकियां करना और गुनाहों से बचना आ जाता है फिर सबसे अलग नमाज़ कायम करने का और पढ़ने का खुसूसियत के साथ ज़िक्र किया।

नमाज़ की अव्वलियत और अहमियत

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुनिया से तशरीफ़ ले जाते वक़्त भी अपनी उम्मत को नमाज़ की वसीयत फरमाई थी और इरशाद किया था अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, नमाज़ के मामला में और बांदी गुलामों के मामला में। हदीस में वारिद है कि यह नबी की आखिर वसीयत और दुनिया से रुख़सत होते वक़्त अपनी उम्मत को आखिरी हुक्म यही हुआ था। पस रसूलुल्लाह और आपकी उम्मत पर भी सबसे पहला फ़र्ज़ है कि सबसे आखिरी वसीयत हुजूर वाला की यही थी, वह इस्लामी अमल जिस को बन्दा साथ ले जाएगा यही है और क़यामत के दिन जिस अमल की सबसे पहले पुरसिशस होगी वह भी यही है, नमाज़ इस्लाम का सुतून है अगर यह ज़ाया हो गई तो न दीन रहा और न इस्लाम।

हदीस शरीफ़ में आया है कि हुजूर ने इरशाद फरमाया तुम्हारे दीन से जो चीज़ सबसे पहले गुम होगी वह अमानत है और दीन की आखिरी गुम होने वाली चीज़ नमाज़ है। बिला शुबहा लोग नमाज़ें पढ़ेंगे लेकिन नमाज़ में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा (उनकी नमाज़ें कामिल नहीं होंगी)

## नमाज़ की फ़र्जीयत के मुनकिर का हुक्म

अगर कोई शख्स नमाज़ की फ़र्जीयत का मुनकिर है और नमाज़ तर्क करे तो काफ़िर हो जाता है और उस का क़त्ल वाजिब हो जाता है (इमाम अहमद के मज़हब में) अगर फ़र्जीयत का अकीदा रखता है लेकिन बेपरवाई और सुस्ती के बाइस नमाज़ छोड़ दी है। नमाज़ के लिए उसको बुलाया गया मगर उसने नहीं पढ़ी और उस नमाज़ के बाद वाली नमाज़ का वक़्त भी तंग हो गया उस वक़्त यह शख्स भी काफ़िर हो जाएगा और दोनों सूरतों में उस पर मुरतद का हुक्म होगा तीन रोज़ तक उससे तौबा कराई जाएगी अगर वह तौबा न करेगा तो उसको तलवार



से कत्ल कर दीया जाएगा उसका माल जब्त करके बैतुल माल में दाखिल कर दिया जायेगा और उसकी जनाजे की नमाज़ नहीं पढ़ी जाएगी न मुस्लिम कब्रिस्तान में उसको दफन किया जाएगा।

### बेनमाजी का शरई हुक्म:

इमाम अहमद की दूसरी रिवायत में है कि बेनमाजी को जिसने सुस्ती और गफ़लत की बिना पर नमाज़ नहीं पढ़ी है फौरन कत्ल करना वाजिब नहीं है जब तक वह तीन नमाज़ों को तर्क करके चौथी नमाज़ का वक्त भी उसने तंग कर दिया तो ऐसे शख्स को शादी शुदा जानी की तरह हद्दे शरई में कत्ल कर दिया जाएगा मगर इसका हुक्म मुसलमानों के मुर्दों जैसा होगा यानी उसका माल उसके वारिसों में तकसीम किया जाएगा।

इमाम अबू हनीफ़ा फ़रमाते हैं कि उसको कत्ल नहीं बल्कि कैद किया जाएगा और उस वक्त तक कैद में रखा जाएगा जब तक वह तौबा करके नमाज़ न पढ़े वरना तमाम उम्र कैद में रहेगा और कैद ही में मर जाएगा। इमाम शाफ़ई फ़रमाते हैं वह काफ़िर नहीं होगा मगर हद्दे शरई में उसको तलवार से कत्ल किया जाएगा। ऐसे शख्स का काफ़िर होने का सबूत उन आयात व अहादीस से मिलता है जो ऊपर मज़कूर हो चुकी हैं यहां मज़ीद ताईदी रिवायात और पेश की जाती है।

### तरके सलात के सिलासिल में मज़ीद रिवायात

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदमी के इस्लाम और कुफ़ व शिर्क के दर्मियान तरके सलात के सिवा कोई और फ़र्क नहीं है। अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने अपने वालिद की रिवायत बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हमारे और उन (काफ़िरों) के दर्मियान तरके सलात (हद्दे फ़ासिल) है जिसने नमाज़ तर्क की वह काफ़िर हो गया।

इमाम जाफ़र बिन मोहम्मद ने अपने वालिद की रिवायत बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह सजदे में ठोंगे मार रहा है यानी सजदे में पेशानी रख कर फौरन उठा लेता है और फिर सजदे में सर रख देता है (उसका बैठना ऐतदाल पर है और न काइदा से सजदा करता है) हुज़ूर ने फ़रमाया अगर यह इस हालत में मर जाए तो मोहम्मद के दीन पर नहीं मरेगा। अतिया औनी ने कहा कि हज़रत अबू सईद खुदरी का कौल बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर किसी ने कसदन नमाज़ तर्क की तो उसका नाम दोज़खियों के साथ दोज़ख के दरवाजे पर लिखा जाएगा (जो उसमें दाखिल होंगे)

हज़रत अनस बिन मालिक रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़बरदार कोई शख्स इशा की नमाज़ पढ़े बग़ैर न सोए क्योंकि ऐसे शख्स से (जो नमाज़ पढ़े बग़ैर सो गया) फ़रिश्ते कहते हैं तेरी आंखों से नींद का खुमार न जाए और तेरी आंखों को ठंडक नसीब न हो अल्लाह तुझे दोज़ख और जन्नत के दर्मियान रोक दे जैसा कि तूने हम को रोके रखा है।



## बाब 20

# नमाज़ के आदाब, मुस्तहब्बात, नमाज़ के मकरुहात, इमामत, इमाम के औसाफ़, मुक़तदी और मोअज़्ज़िन आदाबे नमाज़

## पैंतालीस मकरुह बातें

हज़रत हसन बसरी फ़रमाते हैं कि सहाबा कराम पैंतालीस बातों को मकरुह जानते थे, उनमें से कुछ फ़र्ज नमाज़ों से मुताल्लिक हैं जिन को कसदन बग़ैर ज़रूरत करना ममनूअ व मकरुह है और वह यह हैं (1) कसदन ख़खारना (2) किसी तरफ़ मशगूल होना (3) कसन छींकना (4) आसमान की तरफ़ मुंह उठाना (हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आसमान की तरफ़ निगाह फ़रमाया करते थे लेकिन जब आयते करीमा वल्लज़ीना हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊन नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सरे अक़दस झुका लिया) (5) अपनी सज़दा गाह से नज़रों को हटाना (6) ठोड़ी को सीने से मिलाना (7) कपड़े ठीक करना (8) अंगड़ाई लेना (9) लम्बे लम्बे सांस लेना (10) आंखें बन्द करना (11) दायें बायें कंखियों से देखना (हज़रत उक़बा बिन अमिर ने आयत करीमा अल्लज़ीना हुम अला सलातेहिम दाएमून) की तफ़सीर में फ़रमाया कि दाएमून से मुराद वह लोग हैं जो नमाज़ पढ़ते में इधर उधर नहीं देखते। हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नमाज़ की हालत में इधर उधर तवज्जोह करने के बारे में दरयाफ़्त किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया यह शैतानी झपट है जो आदमी को नमाज़ से हटा कर दूसरी तरफ़ ले जाती है। मनकूल है कि एक दिन तलहा बिन मसरफ़ अब्दुल जब्बार बिन वाइल के पास आए उस वक़्त वह मजलिस में बैठे हुए थे तलहा ने उनसे सरगोशी में कुछ बातों की फिर चले गए तो अब्दुल जब्बार बिन वाइल ने कहा कि तुम्हें मालूम है कि तलहा बिन मसरफ़ ने क्या कहा? उन्होंने मुझसे कहा कि मैंने कल नमाज़ में तुम को इधर उधर तवज्जोह करते देखा था यह मकरुह हैं।

हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूले खुदा ने फ़रमाया बन्दा जब नमाज़ शुरू करता है तो अल्लाह तआला उसकी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाता है और वह बन्दा से उस वक़्त तक तवज्जोह नहीं हटाता जब तक बन्दा खुद अपना मुंह न फेर ले या दायें बायें झाके। एक और हदीस में आया है कि बन्दा जब तक नमाज़ की हालत में रहता है तीन रहमतें उसके शामिले हाल रहती हैं एक यह कि आसमान से उसके सर पर नेकियों की बौछार होती रहती है, दूसरे यह कि फ़रिश्ते नमाज़ी के कदमों से आसमान तक उसे घेरे में लिये रहते हैं, तीसरे यह कि मुनादी निदा करता है कि अल्लाह उसकी नमाज़ की गवाही देता है अगर नमाज़ी को यह मालूम होता कि



गुनियतुत्तालिबीन

वह किस की बारगाह में मुनाजात कर रहा है तब वह किसी और तरफ कभी तवज्जोह न करता।

इन अहादीस से मालूम हुआ कि नमाज़ की हालत में इधर उधर देखना मकरुह है बाज़ उलमा फ़रमाते हैं कि नमाज़ में किसी और तरफ़ तवज्जोह करने से नमाज़ क़तअ हो जाती है क्योंकि इस तरह नमाज़ की बे हुरमती और आदाब की पामाली होती है।

कुत्ते की तरह नमाज़ में बैठना और इमाम की हरकात से पहले हरकत करना, सजदे में दोनों बाहें ज़मीन पर बिछाना, सीना ज़ानू से मिलाना, सजदे में बगलों को पहलुओं से मिलाना भी मकरुह है।

हदीस शरीफ़ में आया है कि हुज़ूर जब सजदा फ़रमाते थे तो दोनों बाजूओं को ख़ूब कुशादा रखते थे इसी तरह सजदा में हाथ की उंगलियां फैला कर अलग अलग रखना भी मना है, मिला कर रखना चाहिए इसी तरह रूकूअ में दोनों हाथों को घुटनों के अलावा कहीं और रखना भी मना है पैर पर पैर रखना भी ममनूअ है तहबन्द या पाएजामा लटकाना, दातों को कुरेदना, एक या दो दाना के बराबर गिज़ा को निगल जाना भी मना है, ज़बान से कुछ निकालना फिर और निगल लेना, फूंक मारना, थूकना भी मना है, सजदे के लिए कंकरियों को हमवार करना भी ममनूअ है। अर्ज़ पर चलना, तशहहुद के अन्दर साथी से बलन्द आवाज़ से कुछ कहना, दायें बायें खड़े हुए शख्स को पहचानना, आंख या हाथ से इशारा करना, इकार लेना, या कोई चीज़ हल्क़ से बाहर आ रही हो उसको हल्क़ के अन्दर उतारना, खांसना, नाक सुनुकना, कपड़ों को देखना, पेशानी से मिट्टी साफ़ करना और सजदे के मक़ाम को झाड़ना यह तमाम बातें मना हैं। अगर इमाम हो तो सलाम फेरने के बाद महराब में बायें जानिब रूख़ बदले बगैर बैठा रहना भी मकरुह है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है अल्लाह तआला उस आदमी की नमाज़ की तरफ़ नज़र भी नहीं फ़रमाता जो अपने दिल को हाज़िर न रखे।

## नमाज़ में दूसरी चीज़ों से शग़फ़ मना है

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शख्स को नमाज़ की हालत में दाढ़ी से खेलते देखा तो फ़रमाया अगर इस के दिल में खुशूअ होता तो उसके आज्ञा में भी होता। हसन बसरी ने एक शख्स को देखा वह कंकरियों से खेल रहा है और कहता जाता था इलाही! मेरा निकाह हूरों से करा दे, हसन बसरी ने कहा तू बहुत बुरा ख़िताब करने वाला है तू खेलता भी जाता है निकाह का भी ख़्वास्तगार है। अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह ने हज़रत अब्दुल्लाह का कौल बयान किया है कि जो लोग नमाज़ की हालत में नज़रें ऊपर उठाते हैं वह इससे बाज़ आ जायें वरना उनकी बीनाई छीन ली जाएगी। हज़रत औज़ाई फ़रमाते हैं कि दो शख्स नमाज़ में मसरूफ़ होते हैं लेकिन उन दोनों में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ होता है, एक दिल की गहराईयों से खुदा की तरफ़ मुतवज्जेह होता है और दूसरा खेल और ग़फ़लत में मुबतला होता है।

## नमाज़ का सवाब

सही हदीस में वारिद है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नमाज़ी जिस क़दर नमाज़ में इनहिमाक रखता है उसी के मुताबिक़ नमाज़ का सवाब निस्फ़ हिस्सा से दसवें हिस्सा तक उसको देता है। एक और हदीस में आया है कि किसी नमाज़ी को चार सौ



गुना, किसी को दो सौ गुना, किसी को डेढ़ सौ गुना, किसी को पचास गुना, किसी को सत्ताईस गुना, किसी को दस गुना और किसी को एक ही नमाज़ का सवाब मिलता है। एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि किसी नमाज़ी की चार सौ नमाज़ें होती हैं, किसी नमाज़ी की दो सौ नमाज़ें, किसी कि डेढ़ सौ नमाज़ें, किसी को सत्तर नमाज़ें और एक नमाज़ के एवज़ पचास नमाज़ों का सवाब और एक नमाज़ के एवज़ सत्ताईस नमाज़ों का सवाब और एक नमाज़ के बदले दस नमाज़ों का सवाब और एक नमाज़ के एवज़ सिर्फ एक नमाज़ होती है। जिस के लिए चार सौ नमाज़ें रखी गई हैं वह शख्स है जो काबा में इमाम के साथ जमाअत की नमाज़ अदा करता है और तकबीरे ऊला भी कज़ा नहीं होती, वह शख्स जिसके लिए दो सौ नमाज़ें रखी गई हैं वह शख्स है जो नमाज़ के अहकाम जानने के बाद लोगों की इमामत करता है और जो मोअज़्ज़िन है उसके लिए डेढ़ सौ नमाज़ें रखी गई हैं। जो शख्स मिसवाक करता है जो पूरा वुजू करके जामा मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ अदा करता है और तकबीरे तहरीमा भी फौत नहीं होने देता उसके सत्ताईस नमाज़ें रखी गई हैं जो शख्स जमाअत के साथ बाद को आकर मिलता है (लाहक होता है) और उसकी तकबीरे तहरीमा फौत हो जाती है उसके लिए दस नमाज़ों का सवाब है और जो शख्स तन्हा बगैर जमाअत के नमाज़ पढ़ता है उसकी सिर्फ एक नमाज़ लिखी जाती है और वह जिस की नमाज़ बिल्कुल नहीं होती वह शख्स है जो नमाज़ पढ़ता है मगर मुर्ग की तरह सजदे में ठोंग मार लेता है, रूकूअ व सुजूद पूरा नहीं करता उसकी नमाज़ उसके मुंह पर पुराने कपड़े की तरह लपेट कर मार दी जाती है और उससे कहा जाता है कि जिस तरह तूने नमाज़ की निगहदाश्त नहीं की उसी तरह अल्लाह तेरी निगहदाश्त नहीं करे।

## नमाज़ के अबलीन आदाब

हर नमाज़ी पर वाजिब है कि पहले नमाज़ की नीयत करे और क़िब्ला रु खड़े होकर खानाए काबा का तसव्वुर करे और सजदे की जगह पर नज़र रखे और यकीन करे कि वह अल्लाह तआला के हुज़ूर में खड़ा है और इस में शक व शुबहा न करे कि अल्लाह तआला उसको देख रहा है अल्लाह का यही इरशाद है:

और जब तुम खड़े होते हो और सजदा करने वालों के साथ हरकत करते हो तो अल्लाह तुम को देखता है।

## नमाज़ की तरकीब

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया उसको देख रहे हो क्योंकि अगर तुम उसको नहीं देखते तो वह तो बिला शुबहा तुमको देखता है।

फ़र्ज नमाज़ की नीयत करे, अदा या कज़ा का तअय्युन करना औला है, कानों की लौ या शानों तक हाथ उठाना (इसकी तफ़सील पहली लिखी जा चुकी है) हाथ उठाते वक़्त अपनी उंगलियों को खुला हुआ रखे (यह दोनों रिवायतें इमाम अहमद से मनकूल हैं) इसके बाद तकबीर कहे गोया वह परदा उठा दे जो उसको और अल्लाह के दर्मियान पड़ा था और उस मक़ाम पर



पहुंच जाए जहां दूसरी तरफ तवज्जोह करना और किसी दूसरे काम में मशगूल होना किसी तरह जाएज नहीं। क्योंकि उस वक्त बन्दा को यकीन होता है मैं उस माबूद के सामने हूँ जो मेरी हर एक हरकत को देख रहा है और जो ख्याल दिल में गुजरता है उससे वाकिफ है और वह उस राज से भी वाकिफ है जो अन्दरूनी परदे में लिपटा हुआ है, पस अपनी सजदा गाह (सजदा करने की जगह) पर नज़र जमाए रहे दायें बायें न देखे और अपने सर को आसमान की तरफ न उठाए।

## सना पढ़ते वक्त हुजूरे क़ल्ब

जब सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बेहम्देका व तबारकसमोका व तआला जद्दोका व ला इलाहा गैरोका पढ़े तो उस वक्त यह समझे कि मैं ऐसी अजीम हस्ती से मुख़ातिब हूँ जो सुनने वाला, कबूल करने वाला, हर शय को देखने वाला है और बाल बराबर शय भी उससे पोशीदा नहीं है और न किसी हिस्सए जिस्म की हरकत उससे मख़फ़ी पोशीदा है। इसी तरह जब इय्या कानअबदु व इय्याका नसतईन एहदनस सिरातल मुस्तकीम (हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद के तालिब हैं, इलाही हम को सीधा रास्ता दिखा दे) पढ़े तो समझे कि क्या कह रहा है और जाने कि वह किस से खिताब कर रहा है। खुजूअ व खुशूअ के बावजूद इस बात का ख्याल रखे कि कहीं इस चीज में सहव व निसयान न हो जाए जिस के लिए खड़ा है और जिसकी तरफ़ मुतवज्जेह है। सूरह फ़ातिहा में ग्यारह तशदीदों का ख्याल रखें, अलफ़ाज की ऐसी ग़लती से बचे जिससे मानी में तबदीली आ जाती है क्योंकि सूरह फ़ातिहा की क़िरअत फ़र्ज है और यह नमाज़ का एक रूक़न है इस के तर्क से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। लफ़ज़ी निगहदाश्त के साथ यह भी समझता रहे कि मैं पुल सिरात पर खड़ा हूँ जिस के दायें जानिब जन्नत अपने तमाम सिफ़ात के साथ मौजूद है और बाई तरफ़ जहन्नम अपनी तमाम हौलनाकियों के साथ है। नमाज़ी को समझना चाहिए कि नमाज़ ही के ज़रीये मुझे वह सवाब मिलने वाला है जिस का अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है। बशर्ते कि नमाज़ दुरुस्त हो और समझिये कि इसी के ज़रीये मुझे दोज़ख़ के उस अज़ाब से पनाह मिलेगी जिससे अल्लाह ने डराया है। इन तमाम बातों पर दिल से यकीन रखे और अक़ल को हाज़िर रखे, इन तमाम बातों के साथ साथ इस बात का भी अकीदा रखे कि यह नमाज़ रूख़सत करने वाले के मानिन्द है इस में किसी किस्म का शुबहा और शक न लाए कि यह नमाज़ बारगाहे इलाही में पेश होती है, सही नमाज़ वही होगी जो अल्लाह के नज़दीक सही होगी सूरह फ़ातिहा के बाद कोई पूरी सूरत पढ़ना अफ़ज़ल है यूँ किसी सूरत के आख़िर या औसत या इब्तिदा से जो कुछ याद हो वह भी पढ़ सकता है लेकिन जो कुछ पढ़े पूरी तरह समझ कर पढ़े दुरुस्त और सही मख़ारिज के साथ क़िरअत करे। नमाज़ी अगर इमाम के पीछे है तो ख़ामोशी से उसकी क़िरअत सुने और आयात में नसीहतें और तंबीहें हैं उनसे असर ले, अहकामे इलाही पर चलने और ममनूआत से बाज़ रहने का पुख़्ता इरादा करे यहां तक कि क़िरअत ख़त्म हो जाए, क़िरअत से फ़ारिग़ होकर रूकूअ से पहले दम लेने के लिए (चन्द सानिया) ख़ामोश खड़ा रहे ताकि रूकूअ की तकबीर और क़िराअत बाहम मिल न जाए, फिर कानों की लौ या मोठों के मुकाबिल तक हाथ उठा कर तकबीर (रूकूअ) कहे तकबीर ख़त्म हो जाए तो हाथ नीचे गिरा दे और रूकूअ में चला जाए, रूकूअ में दोनों हाथों की उंगलियां खुली



रखे। और हथेलियों में घुटनों को भर ले (घुटनों की चपनियां हथेलियों की गिरिफ्त में आ जायें) बगलों और कलाईयों पर जोर दे, पीठ हमवार रखे, सर को झुकाने की हद तक झुकाए ऊंचा न रखे। हदीस शरीफ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब रूकूअ फरमाते थे तो ऐसा फरमाते कि पुश्ते मुबारक पर अगर पानी का एक कतरा भी होता तो वह भी अपनी जगह कायम रहता। एक दूसरी हदीस में है कि अगर रूकूअ की हालत में पुश्ते मुबारक पर पानी से भरा हुआ प्याला रख दिया जाता तो वह भी अपनी जगह से हरकत नहीं करता। रूकूअ में पहुंच कर सुब्हान रब्बीयल अजीम कम से कम तीन बार कहे। हजरत हसन बसरी फरमाते हैं कि सात बार यह पढ़ना मुकम्मल तसबीह है, पाँच बार पढ़ना मुतवस्सित और तीन बार पढ़ना औला। इस तसबीह के बाद समेअल्लाहो लेमन हमेदह कहता हुआ सर को उठाए और हाथ छोड़कर सीधा खड़ा हो जाए फिर सजदे को झुके, ज़मीन पर पहले घुटने, फिर हाथ फिर नाक और पेशानी रखे और निहायत इत्मीनान के साथ सजदा बजा लाए। बदन के हर हिस्से को क़िबला रूख रखे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मुझे सात हड्डियों पर सजदा करने का हुक्म दिया गया है। दूसरी हदीस में इस तरह आया है कि बन्दा सात आज्ञा पर सजदा करता है। सजदा में जिस उज्व को बिगाड़ देगा, वही उज्व उस नमाज़ी के लिए बददुआ करेगा, सजदे की हालत में जिस्म को ज़्यादा नहीं फैलाना चाहिए बल्कि अपने बांहों को नहीं बिछाना चाहिए, दोनों हाथों की उंगलियां और हथेलियां ज़मीन पर मोड़ों के मुक़ाबिल बिल्कुल उसी तरह रखे जिस तरह तकबीरे क़याम के वक़्त रखा था, हाथों को सर के बराबर रखे, उंगलियों को कुशादा न करे और उनका रूख क़िबला की तरफ़ रखे दोनों बाजूओं को पहलू से अलग रखे, रानों को पिंडलियों से और पेट को ज़मीन से अलग रखे फिर रूकूअ की तरह सजदे में तीन बार सुब्हाना रब्बीयल आला पढ़े इसके बाद कहता हुआ सर उठाए, बायें पांव पर बैठे और दाहिने पैर खड़ा अपनी गोद की तरफ़ देखता हुआ तीन बार रब्बिग़ फिरली पढ़े फिर दूसरा सजदा करे फिर तकबीर कहता हुआ अब्बल सर को उठाये फिर हाथों को फिर जानूओं को, हाथों को, घुटनों पर सहार दे कर पांव की उंगलियों के बल पर खड़ा हो जाए, एक क़दम को दूसरा क़दम से न बढ़ाए यह मकरुह है। हजरत इब्ने अब्बास का कौल है कि इससे नमाज़ फ़ासिद हो जाती है इसी तरह दूसरी रकअत पूरी करे।

जब पहले तशहहुद के लिए बैठे तो बायें पांव पर बैठे दाहिना पांव खड़ा रखे लेकिन उस की उंगलियों का रूख काबा की तरफ़ करे, बायां हाथ बायें (रान) जानू पर और दाहिना हाथ दायें जानू (रान) पर रखे, अंगुष्ठे शहादत से इशारा करे, दर्मियानी उंगली और अंगूठे का हलका बना कर दोनों पिछली उंगलियों का बन्द रखे (न फैलाये) तशहहुद पढ़ने में आखिर वक़्त तक उंगलियों पर नज़र रखे। हदीस शरीफ़ में आया है कि कोई नमाज़ी हालते नमाज़ में किसी चीज़ से न खेले, इस लिए कि वह अपने रब से हम कलाम है। यह उंगली शैतान को भगाने का हथियार है फिर तशहहुद में यह पढ़े, अत्तहय्यातो लिल्लाहे वस्सलावातो वतैयबाते अस्सलामो अलैका अय्योहन नबीयो व रहमतुल्लाहि बरकातहु अस्सलामो अलैना व अला इबादिल लाहिस्सालेहीन अशहदु अल ला इलाहा इल्लल्लाहो व अशहदु व अन्ना मोहम्मदन अबदहु व रसूलहु इसके बाद तकबीर कहता हुआ खड़ा हो जाए और सिर्फ़ सूरत फ़ातिहा पढ़े और रूकूअ व सजदा करे फिर इसी तरह चौथी रकअत पढ़ कर तशहहुद के लिए बैठ जाए और तशहहुद पढ़ कर (जिस तरह



गुनियतुतालिबीन

बताया गया) यह दरुद शरीफ पढ़े अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिवं व अला आले मोहम्मदिन कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीम इन्नका हमीदुम मजीद अल्लाहुम्मा बारिक अला मोहम्मदिवं व अला आले मोहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीमा इन्नका हमीदुम मजीद

हमारे इमाम हम्बल से एक रिवायत आई है कि लफ़्ज़ इब्राहीम के साथ आले इब्राहीम भी कहे यानी इस तरह कहे कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा और दूसरी जगह कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा पढ़े नमाज़ी के लिए मुस्तहब है कि चार चीज़ों से पनाह मांगना और यूँ कहे:

या रब! मैं तेरी पनाह लेता हूँ दोज़ख के अज़ाब से, क़ब्र के अज़ाब से, दज्जाले मसीह के फ़ितने से और ज़िन्दगी और मौत की आजमाईशों से।

और इसके बाद यह दुआ मांगे:

इलाही! जिन चीज़ों से मैं आगाह हूँ उन तमाम की तुझ से भलाई चाहता हूँ और जिन से आगाह नहीं उनकी भी, और मैं उन तमाम बुराईयों से तेरी पनाह हासिल करता हूँ जिन को मैं जानता हूँ या नहीं जानता। इलाही! तेरी नेक बन्दों ने तुझ से तेरे नेक बन्दों ने तूझ से जो चीज़ तलब की है मैं तुझ से उसकी भलाई दरख्वास्त करता हूँ और जिस चीज़ से तेरे नेक बन्दों ने पनाह मांगी है मैं उससे भी पनाह मांगता हूँ। ऐ अल्लाह मैं तुझ से बहिश्त का तालिब हूँ और वह कौल व अमल चाहता हूँ जो मुझे बहिश्त से करीब कर रहे हैं, दोज़ख के अज़ाब से तेरी पनाह मांगता हूँ उस कौल व अमल से जो मुझे दोज़ख से करीब कर दे। ऐ हमारे परवरदिगार हमें दुनिया और आखिरत में भलाई अता कर और दोज़ख के अज़ाब से बचा। इलाही हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराईयाँ दूर फ़रमा दे हमको नेकोकार लोगों से मिला दे। ऐ हमारे रब तुने जो कुछ अपने पैगम्बरों को अता करने का वादा फ़रमाया है वह हमें अता फ़रमा दे, क़यामत के दिन हमें ज़लील ख़वार न फ़रमाना बेशक तू कभी वादा ख़िलाफी नहीं करता।

इस से ज़्यादा भी अगर दुआ मांगे तो जाइज़ है, हाँ अगर इमाम हो तो तवील दुआ मुक़तदियों को गिरां गुज़रे (ज़ईफ़ व बीमारी के बाइस) तो तालीफ़े क़ल्ब और दिलदही के खातिर दुआ में इख़्तिसार करना मुस्तहब है इस के बाद सलाम फेर दे, अपने लिए, अपने वालिदैन के लिए और तमाम मुसलमानों के लिए दुआ करे, उन तमाम कामों और बातों में अपनी नमाज़ के बारे में डरता रहे कि वह बारगाहे खुदावन्दी में पेश होने वाली है, नमाज़ का हुक्म और उसकी दावत देने वाला अल्लाह तआला है नमाज़ का सवाब भी वही अता करने वाला है और अगर नमाज़ ख़राब हो जाए (सही अदा न हो) तो संज़ा देने वाला भी वही है।

नमाज़ से फ़ारिग हो जाने के बाद अपने इल्म के मुताबिक़ उस पर ग़ौर करे अगर इल्म इस बात की शहादत दे कि नमाज़ तमाम ख़राबियों से पाक व साफ़ है तो अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान करे कि उसी ने तौफीक़ अता फ़रमाई और अगर इल्म शहादत दे नमाज़ में कुछ ख़राबी वाक़ेअ हो गई है तो तौबा व इस्तिग़फ़ार करे और बाद वाली नमाज़ में उस ग़लती व क़ोताही से दूर होने की कोशिश करे।

## मक़बूल और मरदूद नमाज़ की निशानियां

मक़बूल नमाज़ की भी खुली हुई निशानियां हैं और मरदूद नमाज़ की भी। मक़बूल नमाज़ की



अलामत यह है कि नमाज़ नमाज़ी को तमाम बेहयाइयों और बदकारियों से रोक दे और नमाज़ी ख़ैर, नेकी और कसरते ताअत की तरफ़ माइल हो जाए और दुरुस्तीए आमाल की कोशिश करे सबाब के कामों की तरफ़ उसकी रग़बत हो जाये, बुराईयों से बाज़ आ जाए, गुनाहों और ख़ताओं को बुरा समझने लगे। अल्लाह तआला को इरशाद है: नमाज़ बुराईयों और गुनाहों से रोकती है। हमने जो कुछ बयान किया इसमें इमाम, मुनफ़रिद और मुक़तदी सब शरीक हैं, नमाज़ की शरायत और वाजिबात व मसनूनात का ज़िक्र हम अब्वलन कर चुके हैं।

## इमाम और उसकी खुसूसियात

### इमाम के औसाफ़

जब तक यह बातें (औसाफ़) इमाम में मौजूद न हों उस शख्स का इमाम होना जाइज़ नहीं है। (1) उस शख्स को खुद इमामत की ख्वाहिश न हो लेकिन इस सूरत में कि दूसरा आदमी इस मनसब को अंजाम देने वाला मौजूद हो (अगर मौजूद न हो तो ख्वाहिश करना दुरुस्त है) (2) जब उससे अफ़ज़ल शख्स इमामत के लिए मौजूद न हो तो भी खुद आगे न बढ़े (3) हदीस शरीफ़ में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया लोगों की इमामत कोई शख्स करे और उससे अफ़ज़ल शख्स उसके पीछे मौजूद हो तो ऐसे लोग हमेशा पस्ती में रहेंगे। हज़रत उमर फ़रमाते हैं कि अगर मेरी गर्दन मार दी जाए तो मेरी नज़र में इस बात से बेहतर है कि ऐसी मैं जमाअत की इमामत करूँ जिसमें अबू बकर सिद्दीक़ मौजूद हों (4) इमाम कारी हो, दीन की बातें समझता हो, सुन्नत से ख़ूब आगाह हो। हदीस शरीफ़ में आया है कि अपना दीनी मामला तुम अपने फ़कीहों के सुपुर्द कर दो और कारियों को अपना इमाम बनाओ। एक दूसरी हदीस इस सिलसिला में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी इमामत वह लोग करें जो तुम में बेहतर हों वह अल्लाह की बारगाह में तुम्हारे नुमाईन्दे हैं। हुज़ूर ने यह तख़सीस इसलिए फ़रमाई कि दीनदार इमाम और इल्म व फ़ज़ल रखने वाले लोग, अल्लाह को जानने और उससे डरने वाले होते हैं वह अपनी नमाज़ और अपने मुक़्तदियों की नमाज़ को समझत हैं और वह नमाज़ को ख़राब करने वाली बातों से गुरेज़ करते हैं वह खुद अपना और अपने मुक़्तदियों का बार उठाते हैं। कारीए कुरआन से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुराद बे अमल कारी नहीं हैं बल्कि बा अमल हाफ़िज़ है। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि इस क़िरअत का ज़्यादा हक़दार वह है जो उस पर अमल करता है अगर वह उसको पढ़ता न हो यानी हाफ़िज़ व कारी न हो। जो कारी कुरआन पर अमल नहीं करता और हुदूदे इलाही की परवाह नहीं करता, न अल्लाह तआला के फ़रारज़ पर अमल करता है और न उसकी मसनूआत से बचता है अल्लाह भी उसकी कोई परवाह नहीं करता और न ऐसा शख्स इज्ज़त व करामत का मुस्तहक़ है।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि जिसने कुरआन की हराम कर्दा चीज़ों को हलाल जाना वह कुरआन पर ईमान नहीं रखता लोगों को जाइज़ नहीं कि ऐसे शख्स को इमाम बनायें, इमामत के लाएक़ वही है जो सबसे ज़्यादा आल्म होने के साथ उस पर अमल भी करे और उसको खुदा ख़ौफ़ भी हो। इमाम लोगों की ऐब जोई और ग़ीबत से अपनी



जबान को रोके, दूसरों को नेकी का हुक्म दे और खुद भी उस पर अमल करे, दूसरों को बुराई से मना करे और खुद भी बाज रहे, नकी और नेक लोगों से मोहब्बत रखे, बदी और बदों से नफरत करे, औकाते नमाज से वाकिफ हो और उनकी पाबन्दी करे, अपने हाल की इस्लाह करता रहे, मुशतब्हा रोजी से बचता हो (पाकिजा शिकम हो) हराम बातों से इज्तिनाब करता हो, फेअले हराम से अपने हाथों को रोकने वाला हो। अल्लाह तआला की खुशनूदी के सिवा दूसरी चीजों की कम कोशिश करे। दुनिया की तलब उसमें न हो, हलीम हो और साबिर और शर से चश्म पसेशी व एराज करने वाला हो, लोग अगर उस पर नुक्ता चीनी करें तो सब्र करे और खुदा का शुक्र अदा करे, बुरे कामों से आंखों को बन्द रखे, हर काम अल्म व बुर्दबारी से अंजाम दे। सतरे औरत से अपनी आंखों को बचाए, अगर कोई जाहिल उसके साथ बुराई से पेश आए तो उसकी बुराई को बरदाश्त करे और कह दे अल्लाहो सलामन लोग उसकी तरफ से आराम पायें (लोगों को उससे तकलीफ न पहुंचती हो) लेकिन वह खुद अपने नफ्स की तरफ से बेचैन हो, नफ्सानी ख्वाहिशात से अपनी आजादी का ख्वाहां हो और उनसे अपनी नफ्स की रिहाई की कोशिश करता हो हमेशा इस बात को महसूस करता हो कि इमामत जैसे अजीम काम को उसके सुपुर्द करके उसकी आजमाईश की गई है, इमामत का दर्जा बहुत बुजुर्ग और अजीम है। इमाम के पेशे नजर हमेशा इमामत की अजमत और मरतबत रहना चाहिए।

इमाम को लाजिम है कि बेकार गुफ्तगू न करे, इमाम की हालात दूसरे लोगों की हालत से बिल्कुल जुदागाना है। जब वह महराब में खड़ा हो तो उस वक्त उसको समझना चाहिए कि मैं अबिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खलीफा के मकाम पर खड़ा हूं और रब्बुल आलमीन से कलाम कर रहा हूं। नमाज के अरकान पूरे पूरे अदा करने कि दिल से कोशिश करे और जिन लोगों ने इमामत की यह रस्सी उसके गले में डाली है यानी उसको इमाम बनाया है उनकी नमाज की तकमील की भी कोशिश करे। नमाज मुख्तसर पढ़े इस गर्ज से कि तमाम अरकान पूरे अदा हो जायें, जो लोग उसके पीछे खड़े हैं उनका ख्याल करे कि उनमें कमजोर और जईफ लोग भी शामिल हैं इसलिए अपने आप का कमजोर व नातवां लोगों में महसूब करे।

अल्लाह तआला इमाम से खुद उसके बारे में और दूसरे लोगों (मुक्तदियों) के मुताल्लिक बाज पुर्स फरमाएगा, अपनी उस इमामत की जिम्मादारी पर तास्सुफ करे, साबिका खताओं, गुनाहों और तल्फ कर्दा औकात पर नदामत का इजहार करे, अपने आप को मुक्तदियों से बरतर न समझे और उसी तरह कम दर्जा लोगों से अपने को बरतर न गरदाने, मगर कोई शख्स उसकी बुराई करे तो उसे बुरा न समझे। अगर उसकी गलती जाहिर करे तो नफ्सानी ख्वाहिश के पेशे नजर हट धर्मी और ज़िद न करे, इस बात को पसन्द न करे कि लोग उसकी तारीफ करें तारीफ और मजम्मत दोनों को बराबर समझे, इमाम का लिबास साफ सुथरा और खोराक पाक हो उसके लिबास से तबख्तुर और बड़ाई जाहिर न होती हो, उसकी नशिस्त में गुरुर की झलक न हो, किसी जुर्म की सज़ा में उस पर इस्लामी हद जारी न की गई हो (सज़ा याफता ना हो) लोगों की नजर में मुत्तहिम न हो, किसी भाई की हाकिमों से लगाई बुझाई न करता हो, लोगों के राजों का तहफफुज करे, (पर्दा दरी न करे) किसी भाई से कीना न रखे। अमानत, तिजारत और मुस्तआर चीजों में उसने खयानत न की हो, खबीस कमाई वाला इमामत का अहल नहीं है, जिसके दिल में इस्लाम कीना और बुग्ज हो उसको भी इमाम न बनाया जाए, वह किसी के ऐब की तलाश में



हो और उम्मतें मुहम्मदिया को फरेब देने वाला, मगलूबुल गजब, नफ्स परस्त और फितना परवर शख्स को भी इमाम नहीं बनाना चाहिए।

## इमाम के लिए मजीद शर्तें

इमाम के लिए जरूरी है कि फितना पैदा करने की कोशिश न करे न फितना को तकवीयत पहुंचाए बल्कि बातिल परस्तों के खिलाफ अहले हक की मदद करे हाथ से मुमकिन न हो तो ज़बान से, अगर ज़बान से भी मुमकिन न हो तो दिल से उनकी मदद का ख़्वाहां हों, अल्लाह के मामले में किसी बुरा कहने वाले के बुरा कहने का ख़्याल न करे, अपनी तारीफ़ को पसन्द न करे न अपनी मजम्मत को बुरा माने, अपने लिए दुआ में तख़सीस न करे बल्कि जब दुआ करे तो अपने लिए और तमाम लोगों के लिए आम तौर पर दुआ करे, अगर तन्हा अपने लिए दुआ करेगा तो दूसरों के साथ ख़यानत होगी।

अहले इल्म के सिवा किसी को किसी पर तरजीह न दे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है मुझ से मुत्तसिल व दानिश्वर और जी फ़हम लोग खड़े हों, इसी तरह इमाम के पीछे यानी अगली सफ़ में ऐसे ही लोगों को होना चाहिए। दौलतमंद को अपने करीब और ग़रीब को हकीर जान कर दूर खड़ा न करे। ऐसे लोगों की इमामत न करे जो उसकी इमामत को पसन्द नहीं करते। अगर मुक्तदियों में कुछ लोग उसकी इमामत को पसन्द और कुछ नापसन्द करते हैं तो नापसन्द करने वालों की तादाद अगर ज्यादा है तो इमाम को महराब छोड़ देना चाहिए लेकिन शर्त यह है कि मुक्तदियों की नागवारी और नापसन्दीदगी की वजह हक़ानियत और इल्म व आगही पर हो अगर नागवारी का बाएस जिहालत, बातिल परस्ती, नादानी और फिरका वाराना तास्सुब, नफ़्सानी ख़्वाहिश पर मबनी हो तो फिर मुक्तदियों की नागवारी की परवाह न करे और उनकी वजह से नमाज़ पढ़ाना तर्क न करे, अगर कौम में इस बिना पर फितना व फ़साद बरपा होने का अन्देशा हो तो अलबत्ता किन्तारा कश हो जाए और महराब को छोड़ दे और उस वक़्त तक महराब के पास न जाए जब तक कि लोग आपस में सुलह न कर लें और उसकी इमामत पर राजी न हो जायें।

इमाम झगड़ने वाला ज्यादा फ़समें खाने वाला और लानत करने वाला न हो, उसको बुराई की जगह और तुहमत के मक़ाम पर जाना मुनासिब नहीं उसको चाहिए कि सालेहीन के अलावा किसी से मेल मिलाप न रखे, इमाम को लाज़िम है कि फितने और फ़साद उठाने वालों से गुनाह और गुनाहगारों से, सरदारी और सरदारों से मुहब्बत न करे, अगर लोग उसे ईज़ा पहुंचायें तो उस पर सब्र करे और उसके एवज़ उनसे मुहब्बत करे और उनकी भलाई का तालिब हो और ख़ैर ख़्वाही की कोशिश करता रहे।

## इमामत के लिए झगड़ा करना मना है

इमामत के लिए झगड़ा नहीं करना चाहिए और अगर कोई दूसरा शख्स इस बार को उसकी जगह उठाना चाहता है तो उससे इस मामले में न झगड़े। अकाबिरीने मिल्लत और सालेहीने सल्फ़ के बारे में मनकूल है कि उन्होंने इमाम बनने से गुरेज़ किया है और अपनी बजाए उन्होंने इमामत के लिए ऐसे लोगों को बढ़ा दिया जो बुजुर्गी और तक्वा में उनके बराबर नहीं थे, इस तर्ज़े अमल से उनका मुद्दा यह था कि खुद उनका बोझ हलका हो जाए वह इस बात से डरते



थे कि कहीं इमामत में उनसे कोई कुसूर व कोताही न हो जाए।

## हाकिमे वक्त की इजाजत जरूरी है

अगर हाजिरीन में हाकिमे वक्त मौजूद हो तो उसकी इजाजत के बगैर इमामत के लिए आगे न बढ़े इसी तरह जब किसी गांव में या कबीला में पहुंचे तो वहां के लोगों की इजाजत से बगैर इमामत न करे, इसी तरह किसी काफ़ला या सफ़र में बहुत से लोगों के साथ हो जाने का इत्तेफ़ाक़ हो तो साथियों की इजाजत के बगैर उनकी इमामत न करे, नमाज़ लम्बी नहीं पढ़ाना चाहिए बल्कि मुख़्तसर पढ़ाना चाहिए मगर अरकान पूरे अदा करे। हज़रत अबू हु़रैरह से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम में से कोई इमाम हो तो नमाज़ मुख़्तसर करे क्योंकि उसके पीछे बच्चे व बूढ़े और काम करने वाले लोग भी खड़े होते हैं, हां अगर नमाज़ तन्हा पढ़े तो फिर जितनी चाहे लम्बी पढ़े। हज़रत अबू वाकिद रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब लोगों को नमाज़ पढ़ाते तो बहुत ही मुख़्तसर नमाज़ होती और जब बह नफ़से नफ़ीस अदा फ़रमाते तो सबसे ज़्यादा लम्बी नमाज़ होती।

## इमाम का दिल और ज़बान से नीयत करना

इमाम को चाहिए कि दिल से नीयत किए बगैर न नमाज़ शुरू करे और न तकबीरे तहरीमा कहे अगर ज़बान से भी नीयत के अलफ़ाज़ कह ले तो ज़्यादा अच्छा है। इमाम को चाहिए कि पहले दायें बायें देख कर सफ़े दुरुस्त कराए और मुक्तादियों से कहे सीधे खड़े हो जाओ, अल्लाह तुम पर रहमत नाज़िल फ़रमाए, ठीक खड़े हो जाओ अल्लाह तुम से सज़ी हो, दर्मियान के ख़ला को पुर करने के लिए हुक्म दे कि शाना से शाना मिला कर खड़े हो जाओ सफ़ों की कजी से नमाज़ में नक्स पैदा होता है, शैतान लोगों के साथ सफ़ों में घुस कर खड़े हो जाते हैं। हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि सफ़ें जोड़ लिया करो, शाने से शाना मिला लिया करो और दर्मियानी ख़ला को पुर कर लिया करो ताकि बकरी के बच्चों जैसे शैतान तुम्हारे दर्मियाद घुस कर न खड़े हो जायें।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो सरकार वाला तकबीर कहने से पहले दायें और बायें के लोगों को शाने बराबर रखने का हुक्म दिया करते थे और फ़रमाते थे कि कोई शख्स आगे पीछे न हो वरना दोनों में फूट पड़ जाएगी। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक रोज़ (नमाज़ के वक्त) देखा कि एक शख्स का सीना सफ़ से बाहर निकला हुआ है हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया तुम को अपने मोंढे बराबर कर लेना चाहिए वरना अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में फूट डाल देगा।

मुस्लिम और बुख़ारी की मुत्तफ़क़ अलैह रिवायत है कि सालिम बिन जोर ने हज़रत नोमान बिन बशीर से सुना कि उन्होंने फ़रमाया रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि अपनी सफ़ें सीधी रखो वरना अल्लाह तआला तुम्हारे चेहरों में फ़र्क़ पैदा कर देगा। एक और हदीस में हज़रत क़तादा ने हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत कि है कि रसूले खुदा ने फ़रमाया सफ़ों को सीधा रखना तकमीले नमाज़ में से है (यानी तकमीले सलात का एक हिस्सा है)

हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अलख़त्ताब ने एक शख्स को महज़ सफ़ें सीधी करने पर



गुनियवुत्तालिबीन  
 मुक़र्रर कर रखा था जब तक वह शरूस् सफ़ों के हमवार होने की इत्तेला आपको नहीं देता था  
 आप तकबीर (तहरीमा) नहीं कहते थे। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का भी यही मामूल था,  
 एक रिवायत में है कि हज़रत बिलाल (मोअज़िज़ने रसूलुल्लाह) सफ़ें हमवार कराते थे और एडियों  
 पर कोड़े मारते थे ताकि लोग हमवार खड़े हो जायें बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि इस रिवायत  
 से यह ज़ाहिर होता है कि हज़रत बिलाल यह ख़िदमत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम  
 के अहदे मुबारक में इक़ामत के वक़्त नमाज़ शुरू करने से पहले अंजाम दिया करते थे इसलिए  
 कि हज़रत बिलाल ने हुज़ूर वाला के बाद किसी इमाम के लिए कभी अज़ान नहीं दी। सिर्फ़ एक  
 दिन हज़रत अबू बकर के ज़माने में जबकि आप मुल्के शाम से वापस आए थे तो हज़रत सिद्दीके  
 अक़बर और दूसरे सहाबा ने अहदे नबवी की याद और इश्तियाक़ में हज़रत बिलाल से दरख़्वास्त  
 अज़ान की थी, तो आपने अज़ान दा थी, अज़ान में जब आप कलमा अशहदो अन्ना मुहम्मदुर्रसूल्लाह  
 पर पहुंचे तो रुक गए और आगे कुछ न कह सके, हुज़ूर वाला की मुहब्बत और आपके इश्क़  
 व मुहब्बत में बेहोश हो कर गिर पड़े, मदीना के अंसार व मुहाजिरीन में एक कोहराम पड़ गया  
 यहां तक कि मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में जवान औरतें भी पर्दे से बाहर निकल  
 आईं, इस रिवायत से साबित होता है कि हज़रत बिलाल का लोगों की एडियों पर दुर्र मारना  
 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने मुबारक में था।

### इमाम महराब में बिल्कुल अन्दर न खड़ा हो

इमाम को जाईज़ नहीं है कि महराब के बिल्कुल अन्दर घुस कर खड़ा हो और पीछे वाले  
 लोगों की नज़रों से छुप जाए बल्कि उसको महराब से कद्रे बाहर खड़ा होना चाहिए। इमाम  
 अहमद से दूसरी रिवायत यह है कि ताक़्या (महराबे इमाम) के अन्दर खड़ा होना मुस्तहब है  
 अलबत्ता उसको यह जाएज़ नहीं कि वह मुक्तादियों से ऊंची जगह खड़ा हो अगर ऐसा करेगा  
 तो एक कौल के मुताबिक़ नमाज़ बातिल हो जाएगी। इमाम के लिए मुनासिब है कि नमाज़ से  
 सलाम फेरने के बाद ज़्यादा देर तक महराब में न ठहरे बल्कि बाहर निकल कर सुन्नतों के लिए  
 खड़ा हो जाए या महराब के बाईं जानिब खड़े होकर सुन्नतें अदा करे। हज़रत मुगीरा बिन शअबा  
 रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इमाम ने जिस  
 जगह खड़े हो कर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ाई है, उस जगह सुन्नतें और नफ़ल न पढ़े, अलबत्ता मुक्तादी  
 के लिए जाएज़ है कि वह अपनी जगह पर खड़े होकर सुन्नतें और नफ़ल पढ़ ले चाहे तो इधर  
 उधर हट कर भी पढ़ सकता है।

### किरअत के अव्वल व बाद सुकूत

इमान को दोबारा वक्फ़ा करना चाहिए, एक बार तो नमाज़ के शुरू में और दूसरी बार  
 किरअत के बाद रुकूअ से पहले, कि इस वक्फ़ा में उसको दम लेने का मौका मिल जाएगा और  
 किरअत से जो जोश पैदा हुआ था वह सुकून से बदल जाए और किरअत का इत्तेसाल रुकूअ  
 की तकबीर से भी नहीं होगा, हज़रत समराह बिन जुन्दुब से मरवी हदीस में रसूलुल्लाह  
 सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इसी तरह मनकूल है।  
 इमाम को चाहिए कि अपने सामने सुतरह (ओट) रखे लेकिन सुतरह इतने फ़ासला पर नहीं



गुनियतुत्तालिबीन

रखना चाहिए कि उसके दर्मियान से काला कुत्ता, गधा या औरत गुजर सके, उनके गुजरने से नमाज़ टूट जाती है। हज़रत इमाम अहमद का यही मसलक है लेकिन आप ही से एक दूसरी रिवायत यह है कि औरत और गधा सामने से गुजर जाए तो नमाज़ में नुकसान वाक़ेअ नहीं होता।

## रुकूअ की तसबीह

रुकूअ में जाए तो तीन बार वह तसबीह पढ़े जिस का हम जिक्र कर चुके हैं, तसबीह पढ़ने में उजलत न करे बल्कि बहुत आहिस्तागी और जम कर अल्फाज़ अदा करे क्योंकि अगर इमाम उस तसबीह को उजलत से पढ़ लेगा तो मुक्त्तदी उसको नहीं पा लेंगे और इस सूरत में मुक्त्तदी इमाम से सबक़त ले जायेंगे और उनकी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी और उनका गुनाह इमाम की तरफ़ लौटेगा (इमाम पर होगा) इसी तरह रुकूअ से सर उठा कर समे अल्ला होलेमन हमेदह कह कर ठीक ठीक खड़ा हो जाए और बग़ैर उजलत के रब्बना लक़ल हम्द कहे ताकि मुक्त्तदी भी उतनी देर में कह लें। अगर उसके साथ मिलअस्समाए व मिलअल अर्ज़े व मिलअशेतअ मिन शैइन कहे तो भी जाइज़ है। इस सिलसिला में एक हदीस आई है हज़रत अनस बिन मालिक ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रुकूअ से सरे मुबारक उठा कर इतनी देर तक (सजदे से) तवक्कुफ़ फ़रमाते कि यह ख़्याल होता था कि आप भूल गए, इसी तरह सजदे में और दोनों सजदों के दर्मियान क़अदा में वक्फ़ा करे और उस शख्स के कहने का कुछ ख़्याल न करे जो यह कहता है कि इस सूरत में मुक्त्तदी इमाम से पहले बाज़ अरकान अदा करेगा और फ़ेअल मुक्दम किया तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। जब लोग इमाम के वक्फ़ा को देखेंगे और समझ लेंगे कि इमाम हमेशा यह वक्फ़ा करता है तो वह समझ लेंगे कि दोनों सजदों के दर्मियान वक्फ़ा इमाम की आदत है इसे लिए फिर वह भी ठहरा करेंगे और इमाम से पहले अमल नहीं करेंगे।

## नमाज़ से पहले मुक्त्तदियों को तसबीह करना

इमाम को यह हुक्म देना कि नमाज़ शुरु करने से पहले मुक्त्तदियों का ख़बरदार कर दे कि इमाम से मुसाबक़त बड़ा गुनाह है (इस को मुफ़स्सेलन हम आइन्दा औराक़ में बयान करेंगे) पस इमाम के इस तवक्कुफ़ और सुकून से कोई से ख़राबी नहीं पैदा होगी बल्कि इस के बर अक्स आम इसलाह हो जाएगी और नमाज़ें मुकम्मल होंगी। हदीस शरीफ़ में आया है इमाम हर उस नमाज़ी पर निगरां है जो उसके साथ नमाज़ पढ़ रहा है और उससे उसकी रईयत (यानी मुक्त्तदी) के बारे में सवाल किया जाएगा। इस तरह भी आया है कि इमाम मुक्त्तदी की नमाज़ का मुहाफ़िज़ व निगहबान है इस लिए इमाम पर मुक्त्तदियों की ख़ैर ख़्वाही और भलाई लाज़िम है।

## मुक्त्तदी का गुनाह इमाम का गुनाह है

इमाम अपनी नमाज़ को मुकम्मल, उम्दा और महकम बनाये यह उस पर फ़र्ज़ है ताकि मुक्त्तदियों की नमाज़ का उसको भी सवाब है वरना अगर नमाज़ में ख़राबी और कोताही करता रहेगा तो जैसा गुनाह मुक्त्तदियों को होगा वैसा ही उसको भी होगा।



## इक़तदा के आदाब

### इक़तदा की नीयत

इमाम की पैरवी के लिए नीयत करना वाजिब है, मुक्तदी को इमाम के दायें जानिब खड़ा होना चाहिए बशर्ते कि तन्हा हो, न इमाम के आगे खड़ा और न बायें हाथ को। अगर मुक्तदियों की जमाअत हो (यानी चन्द अफ़राद हो) तो सब को इमाम के पीछे खड़ा होना चाहिए। अगर अकेला मुक्तदी हसबे शर्त इमाम के दायें जानिब खड़ा होकर तकबीर कह चुका था कि दूसरा मुक्तदी भी आ गया तो वह भी उसके साथ तकबीर में शरीक हो जाए और फिर दोनों इमाम के पीछे जाकर एक सफ़ में खड़े हो जायें ऐसी सूरत में जब दूसरा आदमी तकबीर कह चुके तो इमाम अपने हाथ से दोनों को पीछे कर दे, इमाम खुद आगे न बढ़े हां अगर पीछे जगह न हो तो बसूरते मजबूरी कि अगर आगे बढ़ जाए।

### जमाअत का शिगाफ़ पुर करना

अगर जमाअत खड़ी हो और बाद को कोई शख्स आए तो और उसको जमाअत के अन्दर कहीं पर खला नज़र आये तो उसमें दाखिल हो जाये वना सफ़ के पीछे इमाम के दायें रुख़ पर खड़ा हो जाये अपने साथ मिलाने के लिए किसी नमाज़ी को सफ़ में से न खींचे इस तर्ज़े अमल से आपस में बुग़ज व अदावत पैदा होती है अलावा अर्जी जिस शख्स को सफ़ बनाने के लिए खींचा गया है उसकी नमाज़ हमारे नज़दीक (हंबली मज़हब में) फ़ासिद हो जाती है इसलिए कोशिश करके सफ़ में दाखिल हो जाये और तकबीरे तहरीमा कह कर नमाज़ शुरू कर दे, अगर मुक्तदी ऐसे वक़्त में मस्जिद में दाखिल हुआ है कि इमाम रूकूअ में है तो वह दो तकबीरें कहे और एक तकबीरे तहरीमा और दूसरी तकबीरे रूकूअ, अगर एक तकबीर कही लेकिन दोनों तकबीरें कर लीं तब भी दुरुस्त है, अगर मुक्तदी ऐसे वक़्त पहुंचा है कि इमाम तशहहुद में हो तो नमाज़ की नीयत कर के तकबीर कह कर तशहहुद के लिए बैठ जाना मुस्तहब है ताकि जमाअत की फ़ज़ीतल से महरूम न रहे, जब इमाम सलाम फ़ेरे तो उसी तकबीर को बना बना कर अपनी बाकी नमाज़ पूरी करे।

### इमाम से सबक़त न करना

मुक्तदी के लिए लाज़िम है कि अपने किसी फ़ेअल में इमाम से सबक़त न करे और न तकबीर में और न रूकूअ में न सुजूद में और न सर उठाने में, जहां तक मुमकिन हो हर रुक़न इमाम के बाद अदा करे, इस सिलसिले में बहुत सी अहादीस आई हैं और सहाबा कराम के भी बहुत से अक़वाल हैं।

हज़रत बरा बिन आज़िब फ़रमाते हैं कि हम रसूलू खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ते थे तो जब तक आप जबीने मुबारक सजदे में न रखते हम अपनी कमरों को न झुकाते थे (सजदे में जाने के लिए न झुकते थे) और जब आप रूकूअ के बाद तकबीर कह कर अपना सारे मुबारक ज़मीन पर न रख दिया करते थे उस वक़्त तक हम आप के पीछे ही



कयाम की हालत में खड़े रहते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है जो शख्स इमाम से पहले सर उठाता है क्या उसको डर नहीं लगता कि कहीं अल्लाह उसके सर को गधे के सर में तबदील न कर दे। दूसरी हदीस में हुजूर ने फरमाया कि इमाम तुम से पहले रुकूअ करता है और तुम से पहले सर उठाता है।

सहाबा कराम के अक़वाल में है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सीधे खड़े हो जाते थे और उस वक्त तक हम सजदे ही में होते थे। हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स इमाम से पहले अपना सर सजदा से उठाता है क्या उसको डर नहीं लगता कि अल्लाह तआला उसके सर को गधे के सर से बदल दे या खिन्जीर के सर की तरह बना दे। हज़रत अबू हुरैरह से जो रिवायत है उसमें खिन्जीर का जिक्र नहीं है। एक रिवायत में है कि

हज़रत इब्ने मसऊद ने एक शख्स को इमाम से पहले अरकान अदा करते देख कर फरमाया तूने न तन्हा नमाज़ पढ़ी है और न इमाम की इक़तदा की है और जिसने इमाम से पहले रुकूअ अदा किए वह न तन्हा नमाज़ पढ़ता न इमाम के साथ। ऐसे ही लोगों की नमाज़ें नहीं होती। इसी तरह हज़रत इब्ने उमर से एक रिवायत है कि उन्होंने एक शख्स को इमाम से सबकते करते देख कर फरमाया तूने न तन्हा नमाज़ पढ़ी और न इमाम के साथ, फिर उसके दोबारा नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया।

## इमाम मुताबेअत की गर्ज व ग़ायत के लिए मुक़र्रर किया जाता है

अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया इमाम को इसी लिए मुक़र्रर किया जाता है कि उसकी मुताबेअत की जाए लिहाज़ा जब वह तकबीर कहे तब तुम भी तकबीर कहो जब वह रुकूअ करे तब तुम भी रुकूअ करो जब वह सजदा करे उस वक्त तुम भी सजदा करो, जब वह सर उठाए तुम भी सर उठाओ जब समेअ अल्ला होलेमन हमेदह कहे तब तुम रब्बना लकल हम्द कहो जब इमाम बैठे (जलसा करे) तब तुम भी बैठो।

हज़रत अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन हंबल ने अपने एक रिसाला में अपनी असनाद के साथ हज़रत अबू मूसा अशअरी की एक रिवायत बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम को हमारी नमाज़ सिखाई है और नमाज़ में हम जो कुछ पढ़ते हैं वह भी हम को बता दिया। हुजूर ने फरमाया जब इमाम तकबीर कहे तो तुम भी तकबीर कहो, जब किरअत करे तो ख़ामोशी के साथ मुतवज्जेह होकर सुने, जब इमाम गैरिल मग़जूबि अलैहिम वलज्जाल्लीन कहे तो तुम मुक़तदी आमीन कहो अल्लाह तुम्हारी दुआओं को कबूल फरमाएगा और जब इमाम तकबीर कहे तो तुम तकबीर कहो जब वह रुकूअ से सर उठाकर समेअ अल्ला होलेमन हमेदह कहे तो तुम सर उठाकर अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द कहो। अल्लाह तुम्हारा कौल सुनेगा, जब वह तकबीर कहे और सजदा करे तो तुम तकबीर और सजदा करो, जब वह सजदे से सर उठाए तो तुम सर उठाओ और उसके बाद तकबीर कहो। हुजूर ने इस मक़ाम पर फरमाया बस! यह तुम्हारे आमाल इमाम के अफ़आल के साथ हैं इसी तरह जब इमाम कअदा दे तो तुम अत्तहयातो



लिलाहि वस्सलवातो वतैय्येबात पढो यहां तक कि नमाज़ से फ़ारिग हो जाओ।

हमारे इमाम हज़रत अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन शअबान ने इस हदीस की तशरीह में फ़रमाया है (अल्लाह हमारा खातमा उन के अकीदे पर करे और उनके साथ हम को महशूर फ़रमाए) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब इमाम तकबीर कहे तो उसके साथ भी तकबीर कहो इस के मानी और इससे मुराद यह है कि जब इमाम तकबीर कह चुके और उस के अल्फ़ाज़ ख़त्म हो जायें तो उसके बाद तुम तकबीर कहो अवाम नमाज़ को एक मामूली बात समझ कर परवाह नहीं करते, हदीस को नहीं समझते चुनांचे जब इमामा तकबीर शुरू करता है तो वह भी तकबीर शुरू कर देते हैं और यह ग़लती है। जब तक इमाम तकबीर से फ़ारिग न हो जाए और उसकी आवाज़ ख़त्म न हो जाए उस वक़्त तक मुक्तदियों का तकबीर कहना जाइज़ नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादे गिरामी का यही मतलब है।

इमाम को तकबीर कहने वाला उसी वक़्त कहा जा सकता है जब वह पूरी तकबीर कह दे पस जब वह अल्लाहु अकबर कह चुके तो मुक्तदियों को तकबीर कहना चाहिए। इमाम के साथ साथ कहना दुरुस्त नहीं है और यह अमल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादे गिरामी के ख़िलाफ़ है मसलन तुम कहो कि जब फ़ला शख्स नमाज़ पढ़ेगा तो मैं उससे कलाम करूंगा तो इसका मतलब यह होगा कि मैं इतनी देर इन्तेज़ार करूंगा कि वह नमाज़ से फ़ारिग हो जाए इसका यह मतलब तो नहीं हो सकता कि वह शख्स नमाज़ भी पढ़ता रहे और बात भी होती रहे, यही इस फ़रमाने नब्वी का मतनब है कि जब इमाम तकबीर कहे तब तुम भी कहो।

बाज़ कम फ़हम इमाम तकबीर को लम्बा कर देते हैं और मुक्तदी की तकबीर उसके साथ या बाद में ख़त्म होती है तो इस सूरत में मुक्तदी इमाम का ताबेअ नहीं होगा और जो शख्स इमाम से पहले तकबीर कह ले उसकी नमाज़ नहीं होती (पस उस शख्स की नमाज़ भी नहीं होगी) इस लिए कि इसके मानी यह हुए कि उस शख्स ने इमाम से पहले नमाज़ शुरू कर दी।

इसी तरह हुज़ूर के फ़रमान का कि जब इमाम सर उठाए और समेअ अल्ला होलेमन हमेदा कहे तो तुम भी सर उठाओ और अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द कहो मतलब यह है कि तब तक इमाम सर को उठा कर समेअल्ला होलेमन हमेदा न कह चुके और उसकी आवाज़ ख़त्म न हो जाए मुक्तदी सर को न उठाएयें और अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द न कहें, इसी तरह इस इरशादे वाला के कि जब इमाम तकबीर कहे और सजदा करे तो तुम तकबीर कहो और सजदा करो, मानी भी यही है कि मुक्तदी उस तक वक़्त खड़े रहें जब तक इमाम तकबीर कहता हुआ सजदा को झुके और पेशानी ज़मीन पर रख दे। (उस वक़्त यह तकबीर कहे और सजदा करें) हज़रत बरा बिन आज़िब ने यही तशरीह की है और यही तशरीह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस इरशादे गिरामी के मुवाफ़िक़ है कि इमाम तुम से पहले रुकूअ करता है और तुम से पहले सजदा करता और तुम से पहले सर उठाता है और इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो यह फ़रमाया था कि इमाम जब तकबीर कहे और सर उठाए तो तुम अपने सर उठाओ और तकबीर कहो इसका भी मतलब यही है कि मुक्तदी उस वक़्त तक सजदा में रहें कि इमाम सजदा से सर उठाए और तकबीर कहे और उसकी आवाज़ ख़त्म हो जाए तो उसकी पैरवी करें और सजदा से सर को उठायें। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान यह मुक्तदी उन इनामों के साथ साथ हैं यानी क़याम की हालत में तुम इतना इन्तेज़ार



करो कि इमाम तकबीर कह चुके और रूकूअ में पहुंच जाए और रूकूअ की हालत में यह इन्तेज़ार करो कि इमाम रूकूअ से सर उठा ले और समेअ अल्ला होलेमन हमेदह कह चुके और उसकी आवाज़ खत्म हो जाए तब तुम अपना सर रूकूअ से उठाओ और रबबना लकल हम्द कहो अल गर्ज हुजूर का फरमाने मज़कूरा हर हरकत को शामिल है, तुम पूरी नमाज़ इमाम की उसी तरह पैरवी करके मुकम्मल करो और खूब सोच समझ कर उस पर अमल करो।

## इमाम से मुसाबक़त के बाएस नमाज़ कबूल नहीं होगी

क़यामत के दिन बहुत से ऐसे लोग होंगे जिनकी नमाज़ें कबूल नहीं हुई क्योंकि रूकूअ सुजूद और क़ऊद व क़याम में उन्होंने इमाम से मुसाबक़त की होगी। हदीस शरीफ़ में आया है कि एक ज़माना ऐसा आएगा कि लोग नमाज़ तो पढ़ेंगे मगर हकीकत में नमाज़ नहीं पढ़ेंगे मुमकिन है कि वह ज़माना यही हो क्योंकि इस ज़माने में बेशतर लोग इमाम से अफ़आले नमाज़ में सबक़त करते हैं और इस तरह वह नमाज़ के अरकान व वाजिबात और मसनूनात को जाये कर देते हैं।

## तर्क वाजिबात व आदाबे नमाज़ पर तंबीह करना ज़रूरी है

अगर कोई शख्स किसी शख्स को नमाज़ के वाजिबात व आदाब में कोताही करता हुआ देखे तो उस पर वाजिब है कि उसको बताए और समझाए ताकि वह आइन्दा नमाज़ दुरुस्ती के साथ अदा करे और नाकिस अदा कर्दा नमाज़ों की तलाफी करके इस्तिग़फ़ार करे और देखने वाला ऐसा नहीं करेगा तो करने वाले का शरीक करार दिया जाएगा और उसका बार और गुनाह उस पर भी होगा।

हदीस शरीफ़ में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जाहिल की वजह से आलिम की तबाही होगी क्योंकि आलिम जाहिल को नहीं सिखात। इससे यह लाज़िम आता है कि न जानने वाले को बताना और सिखाना आलिम पर वाजिब है इसी लिए हुजूर सरवरे काइनात ने उसको तबाही से डराया है जो वाजिब और फ़र्ज का तर्क करने वाला होता है वही वर्इद का मुस्तहिक़ होता है।

## ख़ताकार की इस्लाह

हज़रत बिलाल बिन सअद से हदीस मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया गुनाह जब तक छुपा रहता है उस वक़्त तक गुनाह करने वाले के सिवा किसी और को ज़रर नहीं पहुंचता और जब सामने आ जाता है (ज़ाहिर हो जाता है) और उसकी इस्लाह नहीं की जाती तो उसका नुक़सान आम लोगों को पहुंचता है क्योंकि लोगों पर यह लाज़िम है कि जिस से गुनाह सरज़द हो रहा है उसको रोके और गुनाह की इस्लाह करें लेकिन वह ख़ामोश रहते हैं उससे उस गुनाह की ख़राबी और उसका वबाल बढ़ जाता है और सब लोग उसकी लपेट में आ जाते हैं और इस तरह बदकारों की बदकारी में नेकोकार भी शरीक हो जाते हैं अगर उन्होंने रोका और नसीहत की तो शिरकत ख़त्म हो जाती है।

## हज़रत इब्ने मसऊद का कौल

हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि जिसने किसी को नमाज़ में ग़लती और कोताही करते



गुनियवुत्तालिबीन  
देखा और उसको उस गलती से नहीं रोका तो वह गुनाह में शरीक उसका शरीक होगा, देखने वाला अगर मना न करे तो वह शैताने लईन की मुवाफकत करता है इसलिए कि शैतान भी तो बुराई से मना नहीं करता बल्कि तरगीब देता है और उस नेकी व तकवा से रोकता है जिस का हुक्म अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दिया है। अल्लाह तआला का इरशाद है: नेकी और तकवा में एक दूसरे के साथ तआवुन करो।

## मुसलमानों को नसीहत करना हर एक पर वाजिब है

हर मुसलमान पर वाजिब है कि दूसरे मुसलमान को नसीहत करे क्योंकि शैतान तो यही चाहता है कि मुसलमानों का दीन कमजोर हो जाए और इस्लाम दुनिया से मिट जाए और तमाम मखलूक इसयां में मुब्तला हो जाए पस किसी जी फहम के लिए यह मुनासिब नहीं कि वह शैतान के कहने पर चले। अल्लाह तआला का इरशाद है:

ऐ औलादे आदम! कहीं ऐसा न हो कि शैतान तुम को फितने में उसी तरह डाल दे जिस तरह तुम्हारे मां बाप को जन्नत से निकलवाया था।

दूसरा इरशादे रब्बानी है: यकीनन शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तुम उसे अपना दुश्मन जानो शैतान और उसकी जुरीयत तो तुम को उसी तरफ बुलाती है कि तुम दोखियों में से हो जाओ।

## उलमा की खामोशी का नतीजा

नमाज़, रोज़ा और दीगर इबादात में जो कमी और कोताही पाई जाती है यह सब कुछ उलमा और फुकहा की खामोशी का नतीजा है चूंकि उन्होंने वाज़ व पिनद को तर्क कर दिया है और दीन की तालीम देना और आदाब सिखाना छोड़ दिया इसकी वजह से इबादतों में जो नक्स पैदा होता है अव्वलन उसकी इब्तिदा जाहिलों से होती है और उसके बाद यह आलिमों और फकीहों में भी फैल जाती है और फिर तमाम बुराईयां उन ही तरफ मसूब हो जाती है और सब लोग यही कहने लगते हैं कि यह सब कसूर उलमा का है। किस कदर ताज्जुब की बात है कि एक मर्द मुसलमान अगर किसी शख्स को एक यहूदी या एक मुसलमान का एक जुब्बा या एक रोटी भी चुराते देखता है तो चीख उठता है चोर चोर पुकारता है और उसको बुरा कहता है लेकिन वही शख्स अगर किसी को नमाज़ पढ़ते वक्त नमाज़ के अरकान व वाजिबात को चोरी करते यानी उनको छोड़ते देखता है और उसकी नज़रों के सामने मुक्तदी इमाम से सबकत करता है तो खामोश रहता है कुछ भी नहीं कहता है, न उसको रोकता है न उसकी इसलाह करता है बल्कि उसके मामले को नाकाबिले तवज्जोह समझ कर छोड़ देता है।

## सबसे बड़ा चोर

हदीस शरीफ में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स नमाज़ में से कुछ चुराता है वह बदतरीन चोर है, सहाबा ने अर्ज किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कोई नमाज़ की चोरी कैसे कर सकता है, हुजूर ने इरशाद फरमाया रुकूअ व सुजूद को पूरा अदा न करना नमाज़ की चोरी है, हसन बसरी ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मैं तुम को बताऊं कि लोगों में सबसे बदतरीन चोर कौन है? सहाबा ने अर्ज किया जरूर इरशाद फरमाइये वह कौन है? हुजूर ने



फरमाया जो न रुकूअ पूरा करता है और न सजदा मुकम्मल करता है।

हजरत सलमान फारसी फरमाते हैं कि नमाज़ एक पैमाना है जो पूरा देगा उसका पूरा दिया जाएगा (बदला) और जो कम देगा तो जानते ही हो कि कम देने वाले के हक में अल्लाह तआला ने क्या फरमाया है हजरत अब्दुल्लाह बिन अली या अली बिन शैबान फरमाते हैं कि मैं उन नुमाइन्दों में से एक था जो हुजूर की खिदमत गरामी में अपने कबीले की तरफ से हाज़िर हुए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस वक्त फरमाया कि अल्लाह उसकी तरफ इलतेफात नहीं फरमाता जो रुकूअ और सुजूद में अपनी कमर सीधी नहीं रखता।

## इआदए नमाज़ का हुक्म

हजरत अबू हुरैरा ने फरमाया कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद के एक गोशे में तशरीफ फरमा थे एक शख्स आया और नमाज़ पढ़ कर हुजूर की खिदमत में हाज़िर हुआ और सलाम अर्ज किया हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सलाम का जवाब देने बाद फरमाया लौट कर जाओ और नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने हकीकत में नमाज़ नहीं पढ़ी। उस शख्स ने फिर उसी तरह नमाज़ पढ़ी जैसे पहले पढ़ी थी फिर हाज़िर खिदमत होकर सलाम अर्ज किया, हुजूर ने फिर इरशाद फरमाया नमाज़ पढ़ लो क्योंकि तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी, उस शख्स ने तीन बार ऐसा ही किया उसके बाद हुजूर से अर्ज किया कि मैं नमाज़ का इल्म अच्छी तरह नहीं रखता आप मुझे नमाज़ सीखा दीजिये! हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो अच्छी तरह वुजू कर लो फिर किब्ला रु होकर तकबीर कहें फिर कुरआन में से जो कुछ याद हो पढ़ो फिर रुकूअ करो जब ठीक तरह रुकूअ कर लो तो सर उठाओ और सीधे खड़े हो जाओ फिर सजदा करो, ठीक ठीक सजदा करने के बाद बैठ जाओ जब नशिस्त ठीक हो जाए तो दूसरा सजदा करो और ठहराओ से सजदा करने के बाद सर उठाकर ठीक तरह बैठ जाओ और इसी तरह नमाज़ पूरी करो।

एक दूसरी हदीस में है कि हजरत रिफाआ बिन राफ़ेअ ने फरमाया है कि हम रसूलुल्लाह की खिदमत में हाज़िर थे कि एक शख्स आया और उसने किब्ला रु होकर नमाज़ पढ़ी उसके बाद वह खिदमत वाला में हाज़िर हुआ और सलाम पेश किया, हुजूर ने उससे फरमाया दोबारा जाकर नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी, हुजूर ने उसको यह हुक्म दो तीन मर्तबा दिया आखिर उस शख्स ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! हत्तल इमकान तो मैंने नमाज़ में कोई कमी नहीं की। मुझे नहीं मालूम कि आप मुझसे किस तरह नमाज़ अदा कराना चाहते हैं? आप ने फरमाया बगैर कामिल वुजू के किसी की नमाज़ नहीं होती जैसा कि अल्लाह तआला का हुक्म है अपने चेहरों और हाथों को कोहनियों तक धोओ, सर का मसह करो, टखनों तक पैर धोओ, उसके बाद अल्लाहु अकबर कह कर सुब्हानका अल्लाहुम्मा पढ़ो फिर तकबीर कह कर रुकूअ में जाओ, दोनों हथेलियों को घुटने पर रखो यहां तक कि आज्ञा अपनी हालत पर ठहर जायें, फिर रुकूअ से उठते हुए समेअल्लाहो लिमन हमेदह कहो और सीधे खड़े हो जाओ यहां तक कि रीढ़ की हड्डी सीधी हो जाए फिर तकबीर कहते हुए सजदे में जाओ इसी तरह आप ने नमाज़ की चारों रकअतें अदा करने की तशरीही हालत बयान फरमाई उसके बाद फरमाया ऐसा किए बगैर तुम में से किसी की नमाज़ पूरी नहीं होगी।



गौर कीजीये कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ और रूकूअ व सुजूद को पूरा करने का हुक्म दिया और इरशाद फरमा दिया कि इस के बगैर नमाज़ कबूल नहीं होती। अलावा अजीं हुजूर वाला ने एक शख्स को नाकिस नमाज़ पढ़ते देखा तो आपने खामोश न रहे बल्कि उसकी इसलाह फरमा दी पस अगर वक्ते जरूरत बयान व हुक्म की ताखीर जाइज होती और ना वाकिफ की तरदीद और उसकी तालीम का तर्क दुरुस्त होता तो हुजूर खामोशी और सुकूत इख्तेयार फरमाते और उससे कबूल सहाबा कराम को मुफ़स्सलन जो कुछ बता चुके थे उसी पर इकतिफ़ा फरमाते और नाकिस नमाज़ पढ़ने वाले से दरगुज़र फरमाते लेकिन हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस शिद्दत के साथ उस शख्स से नमाज़ का इआदा कराया और सही नमाज़ की तालीम दी इस से साफ़ ज़ाहिर है कि जाहिल को बताना (तालीम देना) वाजिब है। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हाजिरीने मजलिस को भी ताकीद फरमा दी कि अगर वह किसी को इस तरह नमाज़ पढ़ते देखें तो उसी तरह (उसकी इसलाह) करें और अपने साथियों को भी बता दें और सीखा दें ताकि अहकामे शरअ की तालीम कयामत तक इसी तरह जारी व सारी रहे।

## मोअज़्ज़िन के आदाब

मोअज़्ज़िन पर वाजिब है कि अज़ान में दोनों शहादतों की अदाएंगी में अपना तलफ़फ़ुज़ दुरुस्त रखे (शीन सीन न कहे) औकात को पहचानता हो, फ़ज्र की अज़ान के सिवा दूसरी नमाज़ों की अज़ान वक़्त से पहले न दे, अज़ान देनी की उजरत न ले बल्कि सिर्फ़ सवाब के लिए अज़ान दे, अल्लाहु अकबर और अश्शहदु अल ला इलाहा इल्लाह और अश्शहदु अन्ना मोहम्मदन रसूलुल्लाह कहते वक़्त किब्ला की तरफ़ मुंह रखे और हय्या अलस्सलाह और हय्या अलल फ़लाह कहने के वक़्त दायें बायें मुंह फेरे, मगरिब की अज़ान दे तो अज़ान व इक़ामत के दर्मियान थोड़ी देर को बैठ जाए।

जनाबत की हालत में या बेवुजू रह कर अज़ान देनी मकरुह है। इक़ामत के बाद सफ़ों को चीरता हुआ पहली सफ़ में जाकर खड़ा होना मना है, मुनासिब तो यही है कि जहां अज़ान दी है उसी जगह इक़ामत कहे लेकिन इस में अगर दुश्वारी हो मसलन अज़ान मिनारा पर चढ़कर दी थी, या ख़ारिज मस्जिद किसी जगह अज़ान दी थी तो वहां से उतर कर नमाज़ की जगह पहुंच कर इक़ामत कहे।

## नमाज़ में खुशूअ व ख़ुजूअ

खुशूअ व ख़ुजूअ, आजिजी, इन्क़सारी, खौफ़ व ख़शीयते इलाही और रग़बत व शौक के साथ नमाज़ अदा करने पर अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल होती है, नमाज़ में नमाज़ी के पेशे नज़र अल्लाह तआला की खुशनूदी हो, मुनाजात, कयाम, रूकूअ और सुजूद की हालत में यह जाने कि अल्लाह के सामने कमर बस्ता रहना है इस लिए अपने दिल को दुनियावी तसव्वुरात से ख़ाली कर ले और अदाए फ़र्ज की सरगर्म कोशिश-करे मालूम नहीं के इस नमाज़ के बाद भी दूसरी नमाज़ पढ़ सकेगा या नहीं या दूसरी नमाज़ से पहले ही उसको मौत का प्याम आ जाएगा। लिहाज़ा अपने रब के सामने उम्मीद व बीम की हालत में ग़मगीन और खौफ़ज़दा खड़ा हो, नमाज़



कबूल होनी की उम्मीद लगाए रहे और रद्द किये जाने से डरता रहे, नमाज़ कबूल हो गई तो सआदत हासिल होगी अगर लौटा दी गई तो बद बख्ती और बद नसीबी का सामना होगा।

ऐ वह मुसलमान जो नमाज़ में और दूसरे आमाल में नूरे इस्लाम से मुनव्वर है तेरा अन्देशा बहुत अजीम है, नमाज़ हो या दूसरे फराइजे खुदावन्दी सब में रंज व ग़म और ख़ौफ़ व ख़तर तुझ से बहुत की करीब है इस लिए कि तुझे नहीं मालूम कि तेरी कोई नमाज़ या कोई नेकी कबूल हुई भी या नहीं, तेरा कोई गुनाह माफ़ भी हुआ या नहीं लेकिन उस पर भी हंसता है, खुश होता है, तू ग़फलत में पड़ा है, दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी की खातिर अपनी दाइमी और अबदी ज़िन्दगी से गाफ़िल है, उसका तुम को कुछ इल्म नहीं कि तुम्हारा अंजाम क्या होगा। एक सच्चे अमीन और मुखबिर के पास यह यकीनी ख़बर आ चुकी है कि तुझे दोज़ख़ पर से ज़रूर गुज़रना है। अल्लाह तआला का इरशाद है: तुम में से कोई ऐसा नहीं जो दोज़ख़ पर न उतरे। और तुझे उसका यकीन नहीं। जब तक अल्लाह तेरी ताअत कबूल न करे उस वक़्त तक तुझ को सब से ज़्यादा गिरया करना और ग़म में मुबतला रहना चाहिये। फिर तुझे यह भी तो मालूम नहीं है कि तेरी शाम के बाद सुबह भी होगी या नहीं और तेरी सुबह के बाद शाम आएगी या नहीं और तुझे जन्नत की बशारत मिलेगी या दोज़ख़ की, तेरी इस हालत का इक्तेज़ा तो यह था कि तुझे न बीवी बच्चों से खुशी हासिल होगी और न माल व मनाल से।

## इन्सान बड़ी भूल और एक अजीम ग़फलत में है

तुम्हारी इस ग़फलत और इस भूल पर बड़ा ताज्जुब है कि दिन और रात की हर घड़ी तुम्हारी ज़िन्दगी कम हो रही है, तुम को मौत की तरफ़ हंकाया जा रहा है पस मौत से डर और उस अजीम ख़तरे से जो तुझ पर छाया हुआ है, गाफ़िल मत हो, मौत का मज़ा बिल आख़िर तुम्हें चखना है, तुम्हें सब कुछ छोड़कर ख़ाली हाथ इस दुनिया से जाना है मुमकिन है सुबह या शाम मौत तेरे घर डेरे डाल दे और उस का रूख़ तेरे मकान की जानिब हो जाए, आख़िर सब कुछ छीन कर तुझे यहां से निकाला जाना ही है फिर तेरा रूख़ ख़्वाह दोज़ख़ की तरफ़ हो या जन्नत की तरफ़ (इस की तुझे ख़बर नहीं) दोज़ख़ की हकीकत उसके अज़ाब की मिक्दार और तरह तरह के अज़ाबों का जानना और समझना ना मुमकिन है, वह तहरीर के इहाते और रिवायत के दायरे में नहीं आ सकते।

## जन्नत का तलबगार और दोज़ख़ से फ़रारी

एक नेक बन्दे का कौल है कि मैं हैरान हूं कि दोज़ख़ के अज़ाब से भागने वाला किस तरह सोता है और जन्नत के तलबगार को नींद किस तरह आती है। खुदा की कसम तू अगर दोज़ख़ से फ़रार और जन्नत की आरजू दोनों से ख़ाली है तो फिर तू अज़ाब पाने वाले बद नसीबों के साथ तबाही में मुबतला होगा और तेरी बद बख्ती अजीम तरीन बदबख्ती होगी तेरा ग़म और तेरी गिरया व ज़ारी बहुत तवील होगी और अगर तुझे यह दावा है कि तू दोज़ख़ से फ़रार चाहता है और जन्नत का ख़्वाहां है तू होशियार हो कि आरजूएं तुझे फ़रेब में मुबतला न कर दें।

कोशिश और काविश से काम ले और नफ़्स और शैतान से हमेशा डरता रह, इन दोनों के नफ़्स की जगह बहुत ही बारीक है यह ज़बरदस्त लुटेरे हैं और इन की मक्कारियों में ख़बासत



गुनियवतुतालिबीन

ख़्वासत है, पस दुनिया से ख़बरदार रह, कहीं यह अपनी ज़ेबाईश से तुझे न मोह ले, कहीं तुझे यह अपनी बे माया सरो सामान से, झूट से और सर सब्जी व शादाबी से फ़रेब में मुबतला न कर दे कि

## दुनिया धोका देती और ज़रूर पहुंचाती है

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि दुनिया धोका देती है मुज़र इन से और मुज़रत रसां हैं।

अल्लाह तआला का इरशाद है: कहीं तुम को दुनियावी ज़िन्दगी फ़रेब में न डाले, कहीं फ़रेब देने वाला शैतान तुम्हें अल्लाह के साथ फ़रेब में मुबतला न कर दे।

पस अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, नमाज़ और दूसरे अहकाम की इताअत करो, ममनूआत से बचो, जाहिरी और बातिनी गुनाहों को छोड़ दो, अल्लाह किसमत में जो कुछ लिख दिया है जितना रिज़्क मुक़द्दर कर दिया है उस पर राज़ी और शाकिर रहो, अपने ख़ब के अवामिर और मनाही के पाबन्द रहो और उसके फ़रमा बरदार बन जाओ। जिस काम के इस्तेकाब से मना किया है उस हुक्म से न भागो (ममनूआत से बचो) तुम्हारी मर्जी के खिलाफ़ रिज़्क की जो तकसीम की गई है और बहुत से ऐसे काम हैं जिन को तुम पसन्द नहीं करते उनके मसालेह तुम को मालूम नहीं और उनका अंजाम तुम से पोशीदा है उनका अज़्र तुम पर जाहिर नहीं पस तुम अल्लाह की तदबीरों पर एतराज़ करके उसकी नाख़ुशी के सजावार मत बनो। अल्लाह तआला का इरशाद है:

बसा औकात तुम किसी चीज़ को बुरा जानते हो हालांकि तुम्हारे लिए बेहतार वही है और बसा औकात तुम किसी शय को अच्छा समझते हो हालांकि वह तुम्हारे लिए बुरी होती है, अल्लाह तआला सब हक़ाएक का आलिम है और तुम नहीं जानते।

तुम हमेशा अपने मौला के फ़रमाबरदार और उसके फैसले पर राज़ी और उसकी भेजी हुई मुसीबत पर साबिर और उसकी नेमतों पर शुक्र गुज़ार रहो उसके नाम से उसकी नेमतों और उसकी कुदरत की निशानियों का ज़िक्र करके उस से दुआ करो और उसके फ़ैअल और उसकी मशीयत और उसके इन्तिजाम पर नुक्ता चीनी न करो उस वक़्त तब उस पर अमल पैरा रहो कि मौत आ जाए। नेक लोगों के साथ मरना और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के साथ तुम्हारे हश्र हो, रब्बुल आलमीन की रहमत और उसके करम से तुम को भी जन्नत में दाख़िला मिल जाए।

## ख़्वास की नमाज़

### अल्लाह तआला के ख़्वास बन्दों की नमाज़

अल्लाह तआला के ख़्वास बन्दे जो दिल को बेदार रखते और खुज़ूअ व खुशूअ और मुराक़बा करते, दिलों की मुहाफ़िज़त करते और खुदावन्द तआला के मुक़र्रब हैं, उनकी नमाज़ की हकीकत और है। एक रिवायत में है कि हज़रत युसूफ़ बिन असाम ख़ुरासान की जामा मस्जिद में पहुंचे आपने वहां देखा की एक बहुत बड़ा मजमा हलका बनाए बैठा है, उन्होंने दरयापत किया यह कौन लोग हैं, किसी ने उनको बताया यह शैख़ हातिम का हलका है और इस वक़्त वह जुहद



और तकवा और बीम व उम्मीद के मौजूब पर बातें कर रहे हैं, युसूफ ने अपने साथियों से कहा चलो इनसे नमाज़ के बारे में कुछ पूछें अगर इन्होंने ठीक ठीक जवाब दिया तो हम भी वहां बैठकर उनका वाज़ सुनेंगे (वर्ना नहीं) चुनांचे युसूफ उनके पास पहुंचे सलाम किया और कहा अल्लाह तआला आप पर रहमत फ़रमाए हम को चन्द मसाएल दरयाफ़्त करना है, हातिम ने कहा पूछिये क्या पूछना है, युसूफ ने कहा कि मैं नमाज़ के बारे में कुछ दरयाफ़्त करना चाहता हूं हातिम ने फ़रमाया कि मारफ़ते नमाज़ के बारे में दरयाफ़्त करना चाहते हो या अदाबे नमाज़ के बारे में? युसूफ ने कहा कि मेरा सवाल आदाबे नमाज़ के बारे में है।

## आदाबे नमाज़

हातिम ने फ़रमाया, आदाबे नमाज़ यह हैं कि हुक्म के मुताबिक़ तुम उठो, सवाब की उम्मीद करके मस्जिद को चलो फिर नीयत करके अज़मत के साथ तकबीर कहो, तरतील के साथ कुरआन पाक पढ़ो, खुशूअ के साथ रूकूअ करो, आज़िज़ी के साथ सजदा करो, इख़लास के साथ तशहहुद पढ़ो और रहमत से सलाम फ़ेरो।

## मारफ़ते नमाज़

यह सुन कर युसूफ के अहबाब ने कहा कि अब तो मारफ़ते नमाज़ के बारे में इनसे दरयाफ़्त करना चाहिए चुनांचे युसूफ ने मारफ़ते नमाज़ के बारे में हातिम से दरयाफ़्त किया, उन्होंने फ़रमाया कि मारफ़ते नमाज़ यह है कि जन्नत की अपने दायें जानिब और दोज़ख़ को अपने पीछे, पुलसिरात को अपने पैरों तले और मीज़ान को आंखों के सामने समझो और यकीन रखो कि खुदा को देख रहो, अगर यह मर्तबा हासिल न हो तो यह समझो कि अल्लाह तआला तुम को देख रहा है। युसूफ ने उनसे दरयाफ़्त किया कि आप कितने अर्सा से इस तरह नमाज़ अदा कर रहे हैं? उन्होंने फ़रमाया बीस साल से, यह सुन कर युसूफ ने अपने साथियों से कहा कि उठो ताकि हम अपनी पचास बरस की नमाज़ों को दोबारा अदा करें। युसूफ ने हज़रत हातिम से यह भी सवाल किया कि आप ने मारफ़त की नमाज़ की यह तालीम कहां से हासिल की उन्होंने फ़रमाया उन किताबों से जो आप ने हमारे लिए इस्तिफ़ादा के लिए लिखी हैं।

## अबू हाज़िम की वज़ाहत

इसी तरह का एक वाकिआ अबू हाज़िम अल मरज का है अबू हाज़िम का बयान है कि मैं समुन्दर के साहिल पर था एक सहाबी से मुलाकात हुई, सहाबी ने फ़रमाया अबू हाज़िम क्या तुम अच्छी तरह नमाज़ पढ़ना जानते हो, मैंने कहा मैं फ़राइज़ और सुन्नतों को अच्छी तरह जानता हूं इसके अलावा अच्छी तरह नमाज़ पढ़ने के और क्या मानी हैं? सहाबी ने फ़रमाया अबू हाज़िम बताओं अदाइगी फ़र्ज़ के लिए खड़े होने से कब्ल कितने फ़राइज़ हैं? मैंने कहा छः फ़र्ज़ हैं, उन्होंने दरयाफ़्त किया वह क्या हैं? मैंने कहा (1) तहारत (2) सतर औरत (सतर पोशी) (3) नमाज़ के लिए एक जगह का इन्तिखाब (4) नमाज़ के लिए खड़ा होना (5) नीयत करना (6) और क़बला रू होना। उन्होंने कहा कि किस नीयत के साथ घर से मस्जिद की तरफ़ जाते हो? मैंने कहा रब से मुलाकात करने की नीयत के साथ, उन्होंने कहा किस नीयत के साथ मस्जिद में दाख़िल होते हो? मैंने कहा इबादत व बन्दगी की नीयत से, फिर दरयाफ़्त किया कि किस नीयत



से इबादत के लिए खड़े होते हो? मैंने कहा बन्दगी की नीयत से, अल्लाह तआला की रबूबियत का इकरार करते हुए। सहाबी ने फिर दरयाफ्त किया कि अबू हाजिम किन चीजों के साथ किबला की तरफ मुंह करते हो, मैंने कहा कि तीन फराईज और एक सुन्नत के साथ, पूछा वह क्या हैं? मैंने जवाब दिया, किबला रु खड़ा होना फर्ज है, नीयत फर्ज है और तकबीरे तहरीमा फर्ज है (यह तीन फराईज हुए) और तकबीरे तहरीमा में दोनों हाथ उठाना सुन्नत है। सहाबी ने पूछा कितनी तकबीरें फर्ज हैं और कितनी सुन्नत? मैंने कहा चौरानवे (94) तकबीरें हैं और उनमें सिर्फ पांच तकबीरें फर्ज हैं बाकी सब सुन्नत हैं, उन्होंने दरयाफ्त किया कि नमाज किस चीज से शुरू करते हो? मैंने कहा तकबीर से, उन्होंने पूछा नमाज की बुरहान क्या है? मैंने कहा किरअत, पूछा नमाज का जौहर क्या है? मैंने कहा उसकी तसबीहात, उन्होंने पूछा नमाज की जिन्दगी क्या है? मैंने कहा खुजूअ व खुशूअ, उन्होंने पूछा खुशूअ क्या है? मैंने कहा सजदागाह पर नजर जमाए रखना, उन्होंने दरयाफ्त किया नमाज का वकार क्या है? मैंने कहा सुकून और इत्मिनान, उन्होंने पूछा कि वह फेअल कौन सा है जिसकी बिना पर नमाज के सिवा हर फेअल मना हो जाता है? मैंने कहा तकबीरे तहरीमा, उन्होंने ने पूछा नमाज को खत्म करने वाली कौन सी चीज है? मैंने कहा सलाम फेरना, उन्होंने दरयाफ्त किया कि उसकी खुसूसी अलामत क्या है? मैंने कहा नमाज खत्म करने के बाद सुब्हानल्लाहि, अलहम्दु लिल्लाहि और अल्लाहु अकबर पढ़ना।

सहाबी ने दरयाफ्त किया इन सब की कुंजी क्या है? मैंने कहा नीयत, उन्होंने कहा नीयत की कुंजी क्या है, मैंने कहा यकीन, उन्होंने कहा यकीन की कुंजी क्या है, मैंने कहा तवक्कुल, उन्होंने कहा तवक्कुल की कुंजी क्या है? मैंने कहा खौफे खुदा, उन्होंने कहा खौफे खुदा की कुंजी क्या है? मैंने कहा उमीद? दरयाफ्त किया उम्मीद की कुंजी क्या है? मैंने कहा सन्न, उन्होंने कहा सन्न की कुंजी क्या है? मैंने कहा रजा, उन्होंने पूछा रजा की कुंजी क्या है? मैंने कहा इताअत, उन्होंने पूछा इताअत की कुंजी क्या है, मैंने कहा इकरार, उन्होंने पूछा इकरार की कुंजी क्या है? मैंने कहा अल्लाह की रबूबियत और उसकी वहदानियत का इकरार, उन्होंने दरयाफ्त किया कि यह सब बातें तुम को कहां से मालूम हुई? मैंने कहा इल्म के जरीये से। उन्होंने पूछा इल्म कहां से हासिल किया? मैंने कहा सीखने से, उन्होंने कहा कि सीखने का जरीया क्या था? मैंने कहा अक्ल, उन्होंने पूछा अक्ल कहां से आई? मैंने कहा अक्ल दो किस्म की है एक अक्ल वह है जिस को सिर्फ अल्लाह तआला पैदा करता है दूसरी वह जिस को इन्सान अपनी लियाकत से हासिल करता है, जब यह दोनों जमा हो जाती हैं तो दोनों एक दूसरे की मददगार बनती हैं, उन्होंने पूछा यह सब चीजें तुम को कहां से हासिल हुई? मैंने कहा अल्लाह तआला की तौफीक से, अल्लाह तआला आप को और हम को ऐसी तौफीक बख्शे जिस से वह राजी हो।

इन सब सवालात व जवाबात के बाद सहाबी ने मुझ से कहा खुदा की कसम! तुमने जन्नत की कुंजियां तो मुकम्मल कर लीं अब यह बताओ कि तुम्हारा फर्ज क्या है और फर्ज का फर्ज क्या है, और वह कौन सा फर्ज है जो फर्ज की तरफ ले जाता है? फर्ज में सुन्नत क्या है? वह कौन सी सुन्नत है जिससे फर्ज पूरा हो जाता है? मैंने जवाब दिया कि हमारा फर्ज यह है कि हम नमाज पढ़ें, फर्ज का फर्ज तहारत है, दायें हाथ से बायें हाथ को मिला कर (चुल्लू बना कर) पानी लेना ऐसा फर्ज है जो दूसरे फर्ज तक पहुंचाता है और पानी से उंगलियों का खिलाल करना ऐसी सुन्नत है जो फर्ज में दाखिल है और वह सुन्नत जिस से फर्ज की तकमील हो जाए खतना



कराना है यह सुनकर सहाबी ने फ़रमाया अबू हाज़िम! तुम ने अपने ऊपर हुज्जत तमाम कर ली अब कुछ बाकी नहीं है लेकिन इतना और बता दो कि खाना खाने में तुम पर क्या फ़र्ज़ है और क्या सुन्नत है, मैंने उनसे कहा कि क्या खाना खाने में किसी फ़र्ज़ व सुन्नत होते हैं? उन्होंने कहा हां इसमें चार फ़र्ज़ हैं चार सुन्नतें हैं और चार बातें मुस्तहब हैं।

### खाना खाने में फ़राइज़ व सुन्नत और मुस्तहब्बात

फ़रमाया फ़र्ज़ तो यह बातें हैं (1) इब्तिदा (शुरु करते वक़्त) बिस्मिल्लाह कहना (2) अल्लाह की हम्द करना (3) शुक्र बजा लाना (4) पहचानना कि जो खाना अल्लाह ने दिया है वह हलाल है या हराम। बायें रान पर ज़ोर देकर बैठना (टेक लगाना) तीन उंगलियों से खाना, लुक़मा, ख़ूब चबाना आख़िर में उंगलियां चाटना, यह चार सुन्नतें हैं, पहले दोनों हाथ धोना, लुक़मा छोटा लेना, अपने सामने से खाना, और अपने हम तआम की तरफ़ कम देखना यह चारों मुस्तहब्बात या तहज़ीबी उमूर हैं।

ایک روز



## बाब: 21

नमाजे जुमा, नमाजे ईदैन, नमाजे इस्तिसका  
नमाजे कसूफ व खसूफ, नमाजे खौफ  
नमाज में कस्र, नमाजे जनाजा व दीगर मसाएल

### नमाजे जुमा

नमाजे जुमा की फर्जीयत के बारे में दलील बारी तआला का यह इरशाद है:  
ऐ ईमान वालो! जब जुमा के दिन नमाज के लिए अज्ञान दी जाए तो अल्लाह की याद (नमाज) के लिए जल्द जाओ और खरीद व फरोख को तर्क कर दो।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद गिरामी है कि अल्लाह तआला ने जुमा के दिन की नमाज फर्ज की है। एक दूसरा इरशादे गिरामी है कि जिसने बिला उज तीन जुमा तर्क कर दिये अल्लाह उसके दिल पर मोहर लगा देता है। जिस शख्स पर पाँचों नमाजें फर्ज हैं उस पर जुमा भी फर्ज है बशर्ते कि वह वतन में हो या ऐसे शहर और ऐसी बस्ती में मोकीम हो जहां चालीस आकिल व बालिग और आजाद अफराद रहते हों, अगर कोई शख्स ऐसे गांव में रहता हो जहां चालीस मर्द न हों लेकिन उस गांव में नमाजे जुमा की अज्ञान दूसरी बस्ती या शहर से सुनाई देती हो या शहर एक फरसंग (फरसाख) के फासले पर हो तो ऐसी जगह जुमा अदा करना बाजिब है, बगैर उज के जुमा छोड़ना जाइज नहीं, हा उज की सूरत में जुमा को तर्क करने और बाकी दूसरी नमाजों की जमाअत तर्क करने में माजूर समझा जाएगा। मसलन कोई शख्स बीमार हो या शिरकते जुमा की वजह से माल के जाया हो जाना का डर हो या किसी अजीज की मौत का डर हो कि उसकी अदम मौजूदगी में वह मर जाएगा या पेशाब या पाखाना की सख्स हाजत हो या खाना मौजूद हो और सख्त भूका हो या हाकिम की तरफ से गिरफ्तारी का अंदेशा हो कर्ज ख्वाह का डर हो कि वह न छोड़ेगा या यह डर हो कि जुमा की नमाज में शरीक होने पर जो माल मिल सकता है वह न मिल सकेगा या नीन्द का इस कदर ग़लबा हो कि नमाजे जुमा का वक्त गुजर जाए, बारिश, कीचड़ या शदीद तूफान मानेअ हो (यह सबकी सब उज शरई की सूरतें हैं)।

### जुमा की रकअतें

जुमा की (फर्ज) दो रकअतें हैं जो खुतबा के बाद इमां के साथ पढ़ी जाती हैं, अगर जुमा की नमाज न मिले तो चाहे तन्हा चाहे जमाअत के साथ नमाजे जुहर (की चार रकअतें) पढ़े ले।

### जुमा की नमाज का वक्त

नमाज का वक्त जवाल से अब्बल वक्त है जिस में नमाजे ईद अदा की जाती है (अहनाफ के यहां इसका वक्त पांचवें पहर से शुरू होता है यानी जवाल के बाद) लेकिन बाज उलमा का कौल है कि जुमा की नमाज दिन के पांचवें पहर में अदा करना चाहिए (जुमा का वक्त पांचवें



साअत है) इनअेकादे जुमा की शर्त यह है कि जमाअत में ऐसे चालीस आदमी मौजूद हों जिन पर जुमा फ़र्ज है एक रिवायत में तीन आदमी भी आयें हैं।

## किरअते मस्नूना

सुन्नत है कि किरअत में जहर किया जाए और सूरह फातिहा के बाद सूरह जुमा अब्बल रकअत में और सूरह मुनाफिकून दूसरी रकअत में पढ़ी जाए। क्या जुमा की नमाज़ के लिए हाकिमे इस्लाम (खलिफ़ए वक्त्त) की इजाज़त की ज़रूरत है इसके जवाब में दो अक़वाल हैं यानी मुख़्त और मनफ़ी। शराइते जुमा में दो खुतबे भी दाखिल हैं, जुमा से पहले कोई सुन्नत (अदा करना) लाज़िम नहीं है लेकिन नमाज़े जुमा के बाद कम से कम से दो और ज़्यादा से ज़्यादा छः रकअतें सुन्नत हैं इसको बाज़ सहाबा कराम ने रसूले खुदा से रिवायत किया है बाज़ उलमा फ़रमाते हैं कि नमाज़े जुमा से पहले बारह रकअत और नमाज़े जुमा के बाद छः रकअत पढ़ना मुस्तहब है।

जब मिनबर के पास अज़ान हो जाए तो ख़रीद व फ़रोख़्त बन्द कर देना चाहिए इसलिए कि बारी तआला का इरशाद है: ऐ ईमान वालो! जब जुमा की नमाज़ के लिए तुम को (अज़ान से) पुकारा जाए तो अल्लाह के ज़िक्र की जानिब चलो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो। यही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में अज़ान थी (हंबली मसलक में) हमारे नज़दीक जुमा के दिन यह अज़ान वाजिब है और दूसरी नमाज़ों के लिए फ़र्जे कफ़ाया है। मिनारा पर चढ़ कर अज़ान देने का हुक्म हज़रत उस्मान ने अपने अहद में आम मसलेहत के पेशे नज़र नीज़ उन लोगों की इत्तेलाअ के लिए जो शहरों से दूर आबादियों से बाहर बस्ते थे दिया था लेकिन यह पहली अज़ान ख़रीद व फ़रोख़्त को बातिल नहीं करती।

## चार रकअत मुस्तहब

मुस्तहब है कि मस्जिद में दाखिल होते ही अगर वक्त्त में गुज़ाईश हो तो चार रकअत पढ़ें, हर रकअत में पचास पचास मर्तबा सूरह इख़्लास, सूरह फातिहा के बाद पढ़ें। हज़रत इब्ने उमर से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख्स यह चार रकअत पढ़ेगा अपना घर जन्नत में अपनी ज़िंदगी में ही देख लेगा। (उसको ज़िंदगी ही में उसका मक़ाम दिखा दिया जाएगा)।

## दो रकअत नमाज़

मस्जिद में दाखिल होने के बाद दो रकअत नमाज़ तहय्यतुल मस्जिद पढ़ें, उससे कब्ल न बैठें जैसा कि हम इससे कब्ल फ़ज़ाइले जुमा में बयान कर चुके हैं जामा मस्जिद में जाने और दीगर मुताल्लिकाते जुमा इससे बयान हो चुके हैं।

# ईदैन की नमाज़

## ईदैन की नमाज़ फ़र्जे कफ़ाया है

ईदैन (ईदुल फ़ित्र व ईदुल अज़हा) की नमाज़ फ़र्जे कफ़ाया है किसी बस्ती में अगर कुछ



लोग पढ़ें और कुछ न पढ़ें तो न पढ़ने वालों के जिम्मा से साकित हो जाती है अगर बस्ती के तमाम लोग इस नमाज़ के अदा करने पर मुत्तफिक हो जायें तो इस सूरत में इमामे वक्त को उन से जंग करना चाहिए यहां तक कि सब तौबा कर लें।

## ईद की नमाज़ का वक्त

ईदैन की नमाज़ का वक्ते अव्वल वह है जब आफताब बलन्द हो जाए और जवाल पर वक्ते नमाज़ खत्मा हो जाता है। ईदुल अज़हा की नमाज़ अव्वल वक्त पर पढ़ना मुस्तहब है कि लोगों को कुर्बानी का वक्त मिल जाए, हां ईदुल फित्र की नमाज़ में ताखीर करना मुस्तहब है।

## ईद की नमाज़ के शराइत

ईदैन की नामाज़ के शराइत यह हैं कि वतन में हो, नमाज़ियों की मुकर्ररा तादाद (तीन या चालीस या पचास) मौजूद हो और नमाज़े जुमा की तरह इस नमाज़ के लिए भी हाकिमे इस्लाम की तरफ से इजाज़त हो। इमाम अहमद से एक दूसरी रिवायत इस तरह आई है कि इससे साबित होता है, तमाम शर्तों का पाया जाना ज़रूरी नहीं है। यही मज़हब इमाम शाफ़ई का है।

ईद की नमाज़ नमाज़ मैदान में पढ़ना मुस्तहब है, औला यह है कि नमाज़ शहर से बाहर पढ़ी जाए, जामा मस्जिद में बिना उज़्र पढ़ना मकरुह है, सुबह सवेरे ही ईद की नमाज़ को जाना, ऊम्दा लिबास जेब तन करना और खुशबू लगाना मुस्तहब है। ईद की नमाज़ में औरतों की शिर्कत भी ममनूअ नहीं है। ईदगाह को पैदल जाना और दूसरे रास्ता से वापस आना मुस्तहब है इसकी इल्लत हम ईदैन की फ़ज्जल में बयान कर चुके हैं। ईद की नमाज़ के लिए अस्सलातु जामेआ के ज़रिया यह कह कर निदा की जा सकती है कि नमाज़ तैयार है।

## ईद की नमाज़ किस तरह पढ़ी जाए

ईद की नमाज़ की दो रकअतें हैं पहली रकअत में सुब्हा नका अल्लाहुम्मा और अऊज़ो बिल्लाह के दर्मियान सात तकबीरें (मअ तकबीरे तहरीमा) और दूसरी रकअत में किरअत से पहले पांच तकबीरें कही जायें और हर तकबीर में हाथ उठाये जायें और अल्लाहु अकबर कबीरन वल्हम्दो कसीरन व सुब्हानल्लाहो बुकरतन व असीला कहा जाए (हनफी मज़हब में पहली रकअत में तऊज़ से पहले सिर्फ़ तीन तकबीरें और दूसरी रकअत में किरअत के बाद रुकूअ से पहले तीन तकबीरें हैं। तकबीर में सिर्फ़ अल्लाहु अकबर कहा जाता है, इस सिलसिले में ऊपर जो कुछ बयान हुआ है वह हंबली मज़हब के एतबार से है) पहली रकअत में जब तकबीरों से फ़ारिग हो जाए तो अऊज़ो बिल्लाह पढ़ कर सूरह फ़ातिहा पढ़ी जाए और इसके बाद सब्बेह इसमें रब्बेकल आला पढ़े और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद हल अता का हदीसुल गाशिया पढ़े, अगर पहली रकअत में सूरह काफ़ वल कुरआनुल भजीद तो दूसरी रकअत में इक़त-र बतिस्साअतो पढ़े, इमाम अहमद से यही मनकूल है अगर इन सूरतों के अलावा और दूसरी सूरतें पढ़े तो वह भी जाइज़ है।

क्या तकबीरों के बाद आऊज़ के साथ सुब्हान-क पढ़े या तकबीरे तहरीमा के बाद ही मजीद तकबीरों से पहले पढ़े? जवाब यह है कि यह दोनों रिवायतें आई हैं।

## ईद की नमाज़ के बाद नवाफ़िल

ईद की नमाज़ से पहले और ईद की नमाज़ के बाद नवाफ़िल ना पढ़े बल्कि नमाज़े ईद पढ़



कर घर लौट आए, अहले खाना की जरूरियात का इन्तिजाम करे और उनसे मुहब्बत व खुलूस के साथ पेश आए, मसारिफ व नफका में कुशादगी करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि ईद के अय्याम खाने पीने और अहले खाना के साथ खुशी और मसरत के इजहार के दिन है यह हुक्म ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़हा और अय्यामे तशरीक के लिए है।

## ईद की नमाज़ मस्जिद में

अगर ईद की नमाज़ मस्जिद में पढ़े तब भी जाइज़ है अलबत्ता मस्जिद में दाखिल के होने पर दो रकअत "तहय्यतुल मस्जिद" पढ़े बगैर न बैठे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जब तुम मस्जिद में दाखिल हो तो जब तक दो रकअत न पढ़ लो न बैठो, यह हुक्म उमूमी है इस में दोनों ईदें भी शामिल हैं। इमाम अहमद ने जो नवाफिल न पढ़ने की सराहत की वह ईदगाह के लिए मखसूस है मस्जिद के लिए नहीं है चूंकि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न तो नमाज़े ईद से पहले नवाफिल पढ़ते थे और न नमाज़े ईद के बाद और यही कौल हज़रत उमर, अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास और इब्ने उमर का है।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईद की नमाज़ मैदान में पढ़ा करते थे अगर आप मस्जिद में पढ़ते तो तहय्यतुल मस्जिद तर्क न फ़रमाते।

## नमाज़ ईद की कज़ा

अगर किसी शख्स की नमाज़े ईद किसी वजह से फ़ौत हो जाए तो उसके लिए कज़ा मुस्तहब है और उसको इस्तेयार है कि नमाज़े चाश्त की मानिन्द चार रकअत बगैर तकबीराते ज़ाएदा के पढ़ ले या फिर नमाज़े ईद की तरह दो रकअत मज़ा तकबीराते ज़ाएदा के पढ़े ऐसे शख्स को चाहिये कि अपने घर वालों को और दोस्त अहबाब को जमा कर के पढ़े इस में बड़ा सवाब है।

## नमाज़े इस्तिस्का

### नमाज़े इस्तिस्का कब पढ़ी जाती है

इस्तिस्का की नमाज़ सुन्नत है, बारिश न हो तो बारिश की दुआ लिए यह नमाज़ पढ़ी जाती है। यह नमाज़ इमाम के साथ इस तरह अदा की जाए जैसे ईद की नमाज़ मैदान या ईदगाह में चाश्त के वक़्त अदा की जाती है। नमाज़े इस्तिस्का के अहकाम व अहवाल ईद की नमाज़ की तरह हैं।

मुस्तहब है की इस नमाज़ के लिए गुस्ल कर के पाक साफ़ होकर जाए सिर्फ़ खुशबू लगाना मुस्तहब नहीं है इस लिए कि यह आजिज़ी मिसकीनी और तलबे हाजत का वक़्त होता है इस लिए पुराने कपड़े पहन कर खुशूअ और खुजूअ, ज़ारी व मिसकीनी, शिकस्ता हाली के साथ नमाज़ को जाना मुस्तहब है इस नमाज़ में पढ़े, बूढ़े, मर्द, औरतें, बच्चें और मुसीबत ज़दा लोग शरीक हों। मज़ालिम, गुनाहों और हुकूकूल इबाद के अतलाफ़ से सिद्क़े दिल से तौबा करे लोगों के तमाम हुकूक अदा करें, बेजा ली हुई चीज़ें और ज़कात, मन्नतें और कफ़ारे अदा करें, ख़ैरात



ज्यादा करें, रोज़े बकसरत रखें, अज सरे नौ तौबा करे और मरते दम तक तौबा पर कायम रहने का पुख्ता इरादा करें, सगीरा और कबीरा गुनाहों से इजतिनाब करें खलवत और जलवत में खुदा से शर्म करें, ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ अल्लाह से पोशीदा नहीं है वह हर ज़ाहिर और पोशीदा चीज़ से वाकिफ़ है।

ज़ाहिदों, नेकोकारों, आलिमों और बुजुर्गों और दीनदारों का वसीला इख़्तियार करें। रिवायत में आया है कि उमर फ़ारुक़ इस्तिस्का की नमाज़ के लिए जब बाहर मैदान में आयें तो हज़रत अब्बास का हाथ पकड़ कर क़िबला रु होकर इस तरह दुआ मांगी, इलाही यह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मोहतरम चाचा हैं हम इनको वसीला में पेश करते हैं इनके तुफ़ैल में तू हम को सैराब फ़रमा। रावी का बयान है कि लोग वहां से घरों को लौटने न पाए थे कि बारिश से जल थल भर गए। वजह इसकी यह है कि बारिश न होना और मेंह बन्द हो जाना, औलादे आदम की नहूसत का बदला और उनकी सज़ा है इसी लिए रिवायत में आया है कि जब काफ़िर को क़ब्र में दफ़न कर दिया जाता है तो मुनकर नकीर आकर उससे रब, नबी और दीन के मुताल्लिक सवाल करते हैं और जब उससे जवाब बन नहीं पड़ता तो गुर्ज से उसको मारते हैं उसकी ज़र्ब से वह चीख़ता है तो उस की चीख़ को जिन्न व इन्स के सिवा बाकी तमाम मख़लूक सुनती है और लानत भेजती है हत्ता कि वह बकरी भी उस पर लानत भेजती है जो क़स्साब की छुरी के नीचे होती है वह कहती है कि हम पर इस मनहूस के बाइस बारिश बन्द हो गई, अल्लाह तआला का इरशाद:

उन लोगों पर अल्लाह और लानत करने वालों की लानत है, का यही मलतब है। आदमी जब बिगड़ जाता है तो उसका बिगाड़ हर जानदार तक असर अन्दाज़ होता है अगर दुरुस्त होता उसकी दोस्ती का असर हर चीज़ तक पहुंच जाता है, इसान का बिगाड़ अल्लाह तआला की ना फ़रमानी और उसकी दुरुस्ती उसकी ताअत व फ़रमा बरदारी के बाइस होती है।

## नमाज़े इस्तिस्का का इमाम कौन हो

ख़लीफ़ा या ख़लीफ़ा का नायब लोगों को नमाज़े इस्तिस्का की दो रकअतें बग़ैर अज़ान के पढ़ाये, पहली रकअत में तकबीरे तहरीमा के अलावा छः तकबीरें जाइद कही जाएंगी और दूसरी रकअत में पांच जाएद तकबीरें कही जाएंगी, यह तकबीरात दोनों रकअत में क़याम की तकबीर के अलावा हैं, हर दो तकबीरों के दर्मियान अल्लाह तआला का ज़िक्र करे, नमाज़ के बाद इमाम खुतबा पढ़े। एक रिवायत में नमाज़ से क़ब्ल खुतबा पढ़ने को भी जाइज़ कहा गया है। इमाम अहमद से यह भी मनकूल है कि खुतबा की तकदीम व ताख़ीर में इमाम मुख़तार है इमाम अहमद ही से एक रिवायत में आया है कि नमाज़े इस्तिस्का के लिए खुतबाए मसनूना नहीं है बल्कि नमाज़ के बाद बजाए खुतबा सिर्फ़ दुआ करे। अलगर्ज इमाम को जिस में आसानी हो वही करे।

इमाम अगर खुतबा पढ़े तो खुतबा का आगाज़ ईद के खुतबा की तरह तकबीर से करे और दुरुद शरीफ़ कसतर से पढ़े, इन आयात को भी खुतबा में पढ़े।

हज़रत नूह ने उनसे कहा अपने रब से तुम इस्तिग़फ़ार करो वही बख़्शने वाला है वह आसमान से मुसलाधार बारिश उतारता है।

खुतबा से फ़ारिग़ होने के बाद क़िबला रु होकर खेड़े होकर अपनी चादर उलट दे, दायें



कांधे वाला हिस्सा बायें कांधे पर और बायें कांधे वाला हिस्सा दायें कांधे पर डाला दे, बालाई किनारा नीचे और नीचे का किनारा ऊपर को डाले तमाम लोग भी इसी तरह करें, और घर वापस पहुंचने तक चादरों की हैयत इसी तरह रहने दें। घर पहुंच कर बतौर खुशफाली दूसरे कपड़ों के साथ चादरों को भी बदल लें गोया सबने भीगा हुआ लिबास बदल डाला यह नेक शगुन है इससे खुशक साली और इमसाक बारां दूर हो जाता है। हदीस शरीफ में यही तरीका मनकूल है। उबाद बिन तमीम अपने चचा के हवाले से बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों को लेकर नमाजे इस्तिस्का के लिए तशरीफ ले गए और जहरी किरात के साथ दो रकअत नमाज पढ़ाई। रिदाये मुबारक को फेरा और दुआ फरमाई, अल्लाह तआला से बारिश तलब फरमाई।

इमाम को चाहिए कि क़िबला रु होकर दोनों हाथ उठा कर यह दुआ करे, रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी दुआ मांगी थी।

इलाही! हमारे लिए पानी भेज जो मुसीबत से नजात दे, इसका नतीजा और अंजाम अच्छा हो खुशगवार हो वह सैराब करने वाला और ज़मीन में असर करने वाला हो, आम तौर पर जारी होने वाला और कसरत से जारी होने वाला हो, इलाही हमारे पास पानी भेज हमें पानी से ना उम्मीद होने वाले लोगों में से न बना, इलाही ऐसा पानी हमको अता न फरमा जो अज़ाब हो, न वह पानी जो हमारी खेतियों को बहा ले जाने वाला हो और न वह मुसीबत में डाले न हमारे घरों को गिराए न उन्हें गर्क करे, ऐ अल्लाह! शहरों में और तेरे बन्दों में बड़ी अफ़सुर्दगी और भूक फैली हुई है, बहुत तंगी और मुसीबत दरपेश है इन बातों का गिला तुझ ही से है हम तेरे सिवा किसी के पास गिला नहीं करते, इलाही हमारी खेती को सरसब्ज कर दे और हमारे जानवरों का दूध बढ़ा दे और हम पर आसमान की बरकतें नाज़िल फरमा और ज़मीन की बरकतों से हमारे फ़स्लें उगा दे, जो नर्म और लहलहाती नज़र आती हों, इलाही! हमको भूक प्यास की मुशक्कत और सख़ती से महफूज़ रख तेरे सिवा और कोई नहीं जो हम को इस मुशक्कत से बचाए, इलाही हम तेरी ही बख़्शिश चाहते हैं इसलिए कि तू ही बख़्शाने वाला है, इलाही हम पर बरसने वाला अब्र भेज, ऐ अल्लाह! तू ने अपने हुज़ूर में हम को दुआ करने का हुक्म दिया है और तू ने हम से दुआ क़बूल करना का हम से वादा किया है, इसलिए तेरे इरशाद के मुताबिक़ हम ने तुझ से दुआ की है पस अब तू अपने वादा के मुताबिक़ इसको क़बूल फरमा।

ऐसा कौल यह भी है कि खुतबा के दौरान क़िबला की तरफ़ रुख़ करे और क़िबला रु हो कर खुतबा ख़त्म करे इसके बाद दुआ करे लेकिन बेहतर यही है जो अव्वलन ज़िक्र किया जा चुका है कि खुतबा से फ़ारिग़ होकर क़िबला रुख़ होकर दुआ करे क्योंकि खुतबा में मोअज़त व पिन्द तंबीह और खौफ़ का तास्सुर होता है और यह मक़सूद उसी वक़्त हासिल होता है जब कि लोगों की तरफ़ ख़तीब का रुख़ हो ताकि उसका वाज़ कानों से लोगों के दिलों तक पहुंच सके, क़िबला की तरफ़ मुंह करने से लोगों की तरफ़ पुश्त हो जाती है जैसा कि नमाज़ में इमाम की पुश्त होती है (इस तरह ख़िताबत का मक़सूद फ़ौत हो जाता है)



# सूरज और चान्द गरहन और नमाज़

## नमाज़े कसूफ़ सुन्नते मोअक्कदा है

नमाज़े कसूफ़ या सूरज गरहन की नमाज़ सुन्नते मोअक्कदा है। गरहन शुरु होने से मुकम्मल रोशनी की वापसी तक इस नमाज़ का वक़्त है यानी सूरज या चांद जिस वक़्त गहना शुरु हुआ यानी धुंधले पन और किरनों का घटाओ का आगाज़ हो तब से नमाज़ का वक़्त शुरु हो जाता है और जब तक यह हालत बिल्कुल ख़त्म न हो जाए, वक़्त बाकी रहता जब गरहन का ज़वाल हो जाता है इस नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाता है।

## नमाज़ का तरीक़ा

मसनून यह कि नमाज़ जामा मस्जिद में अदा की जाए और इमाम दो रकअत नमाज़ पढ़ाये, पहली रकअत में तकबीरे तहरीमा के बाद सना और तऊज़ के बाद सूरह फ़ातिहा पढ़ कर सूरह बकर पढ़े फिर रूकूअ करे, रूकूअ इतना तवील हो कि सौ आयतों के बक़द सुब्हान रब्बीयल अजीम की तक़रार करता रहे फिर समेअल्लाहु लिमन हमेदह कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाए और सूरह फ़ातिहा पढ़े इसके बाद सूरह आले इमरान पढ़ कर दोबारा रूकूअ करे जो पहले से तवालत में कम हो फिर सर उठाए और सज़दे में जाए रूकूअ की तरह सज़दे भी इतने तवील करे कि हर सज़दे में सौ आयतों के बक़द सुब्हान रब्बीयल आला पढ़ ले फिर दूसरी रकअत के लिए खड़ा हो जाए दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा पढ़ कर सूरह निसा पढ़े फिर पहली रकअत की तरह तवील रूकूअ करे फिर सर उठाए और सीधा खड़े होकर सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह माएदा पढ़े, अगर यह सूरतें अच्छी तरह याद न हों तो इन आयत के बक़द कुरआन मजीद की दूसरी सूरतें पढ़ें अगर कुछ भी न पढ़ सकता हो तो सूरह इख़लास ही पढ़े लेकिन इतनी मिक्दार में कि मज़कूरा सूरतों की तादाद के बराबर हो।

## हर बार क़िरअत की मिक्दार

अव्वल रकअत में दूसरे क़याम के अन्दर क़िरअत अव्वल क़िरअत से  $2/3$  होगी और तीसरे क़याम में (दूसरी रकअत के अन्दर) क़िरअत की मिक्दार अव्वल क़याम की क़िरअत से  $1/2$  होगी और चौथे क़याम में क़िरअत की मिक्दार तीसरे क़याम की क़िरअत से  $2/3$  होगी। इसी तरह हर तसबीह (रूकूअ व सुजूद) की मिक्दार हर क़याम की क़िरअत की मिक्दार से  $3/2$  (दो तिहाई) के बराबर होगी, दूसरी रकअत में रूकूअ व सुजूद और तशहहुद के बाद सलाम फेर दे इस तरह इस नमाज़ में चार रूकूअ और सुजूद करे यानी हर रकअत में दो रूकूअ होंगे। लोग नमाज़ पढ़ने में मसरूफ़ हों और घर में खुल जाए तो नमाज़ में तख़फ़ीफ़ कर देना मुस्तहब है लेकिन नमाज़ को मुनक़तअ नहीं करना चाहिए यह नमाज़ घर में भी पढ़ना जाइज़ है लेकिन मस्जिद में इस को पढ़ना अफ़ज़ल है।

## नमाज़े कसूफ़ की दलील

सूरज गरहन की नमाज़ की दलील वह हदीस है जो हज़रत आइशा ने नक्ल फ़रमाई है आप



फरमाती हैं कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में एक मर्तबा सूरज गरहन हुआ, हुजुरे अक़दस ईदगाह को तशरीफ़ ले गए, वहां पहुंच कर आपने तकबीरे तहरीमा कही लोगों ने भी इत्तेबा की फिर आप ने जहरी किरअत फरमाई और तवील कयाम के बाद रुकूअ किया, फिर सरे अक़दस उठा कर समेअल्लाहु लिमन हमेदह फरमा कर फिर तवील किरअत फरमाई फिर रुकूअ फरमाया फिर खड़े हुए फिर सजदा फरमाया फिर सरे अक़दस उठाया और फिर सजदा किया और उसके बाद खड़े हो गए, हुजूर ने दूसरी रकअत भी इसी तरह अदा फरमाई (इस तरह पूरी नमाज़ में हुजूर ने चार रुकूअ और चार सजदे अदा फरमाए) नमाज़ के बाद हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आफ़ताब व माहताब अल्लाह तआला की दो निशानियां हैं उनमें किसी के जीने और मरने से गहन नहीं लगता, जब तुम कभी गहन देखो तो घबरा कर नमाज़ पढ़ने लगा करो।

## नमाज़ खौफ़

### नमाज़े खौफ़ की शर्तें

नमाज़े खौफ़ इन चार शर्तों के साथ जाएज़ है (1) एक यह मद्दे मकाबिल दुशमन से जंग करना जाएज़ हो (2) दुशमन समते क़िबला के सिवा और किसी दूसरी سمت हो (3) दुशमन के हमला कर देने का खौफ़ हो (4) लश्कर में इतने आदमी हो कि उन्हें मुतफ़रिक् किया जा सके, यानी कम से कम छः, इन आदमियों को दो गरोहों में तकसीम करके एक गरोह को दुशमन के मकाबिल रखे और दूसरे गरोह को इमाम एक रकअत पढ़ाये जब इमाम पहली रकअत से फारिग होकर दूसरी रकअत के लिए उठे तो इक्तेदा करने वाला गरोह दुशमन के मकाबिल में चला जाये और इमाम से जुदाई की नीयत पर नमाज़ कायम करके सलाम फेर दे और अब दूसरा गरोह उनकी जगह ले ले और तकबीरे तहरीमा साथ इमाम के पीछे एक रकअत पढ़े फिर इमाम बैठ जाए (कि यह उसकी दूसरी रकअत होगी) और मुक़तदी खड़े होकर अपनी फौत शुदा रकअत पूरी करके बैठ जायें अब इमाम के साथ सब सलाम फेरें, दूसरी रकअत में इमाम को किरअत इतनी तवील करना चाहिए कि पहला गरोह दूसरी रकअत पढ़ कर चला जाए और दूसरा गरोह आकर तकबीरे तहरीमा कह कर इमाम के साथ शरीक हो जाए इस दूसरी गरोह के लिए इमाम तशहहुद को इतना तवील कर दे कि यह गरोह अपनी दूसरी रकअत पूरी कर के इमाम को तशहहुद में पा ले और इमाम के साथ सलाम फेर सके। इसी तरह इस दूसरे गरोह को इमाम के साथ सलाम फेरने की फज़ीलत हासिल हो जाएगी जिस तरह पहले गरोह को इमाम के साथ तकबीरे तहरीमा कहने की फज़ीलत हासिल हो चुकी थी।

हुजूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वा ज़ातुरिकाअ में सलातुल खौफ़ इसी तरह अदा फरमाई थी।

हज़रत सहल बिन खुज़ैमा से मरवी हदीस में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इमाम के साथ एक सफ़ खड़ी हो और दूसरी सफ़ दुशमन के सामने हो, इमाम अव्वल सफ़ को एक रकअत दो सजदों के साथ पढ़ाये फिर सीधा खड़ा हो जाए यहां तक कि मुक़तदी अपनी दूसरी रकअत पूरी कर लें फिर उस सफ़ की जगह दूसरी सफ़ आ जाए और



यह उस की जगह चली जाए दूसरी सफ़ को भी इमाम एक रकअत दो सजदों के साथ पढ़ाये फिर इमाम कऊद में इतनी देर करे कि यह सफ़ (आखिर में आने वाली) अपनी रकअत पूरी करे फिर इमाम उस सफ़ को साथ लेकर सलाम फेर दे।

## इमाम अहमद बिन हंबल का इरशाद

हमारे इमाम से जो कौल मरवी है कि इससे साबित होता है कि घमसान की लड़ाई और सख्त जंग की हालत में नमाज़ में इतनी देर कर देना कि यह शिदत जाती रहे और लड़ाई कुछ ठंडी पड़ जाए जाइज है।

सलाते खौफ़ का मजकूर बाला कैफ़ियत का ताल्लुक नमाज़े फ़जर और उन नमाज़ों से है जिन में कस्र किया जाता है यानी जुहर, अस्त्र और इशा अगर मगरिब की नमाज़ हो तो पहली दो रकअतें पहले गरौह को पढ़ाए और आखिरी रकअत दूसरे गरौह को, उन तीनों रकअतों में कमी न की जाए क्योंकि नमाज़े मगरिब में कस्र नहीं है। मगरिब की नमाज़ में इमाम पहली जमाअत को दो रकअत पढ़ाएगा और दूसरे गरौह को आखिरी (यानी तीसरी) रकअत पढ़ाएगा।

पहला गरौह इक्तदाए इमाम को किस वक़्त तर्क करे क्या उस वक़्त जब इमाम तशहहुद अब्वल के लिए बैठे या उस वक़्त करे जब इमाम तशहहुद अब्वल से फारिग हो कर तीसरी रकअत के लिए खड़ा हो जाए यह दोनों कौल आए हैं यानी पहली सूरत भी और दूसरी सूरत भी।

अगर सफ़र न हो बल्कि इंसान हज़र में हो और सलाते खौफ़ पढ़ना हो तो इमाम दो दो रकअतें हर गरौह को पढ़ा दे (नमाज़ में कस्र न होगा) हर गरौह अपनी बकिया दो रकअतें खुद बग़ैर इक्तदा के पूरी करेगा। अगर इमाम चार गरौह जमाअत के कर के हर गरौह को एक एक रकअत पढ़ाएगा तो इमाम की नमाज़ नहीं होगी और न तीसरे और चौथे गरौह की। पहले और दूसरे गरौह की नमाज़ होने या न होने के बारे में दो कौल हैं।

नमाज़े खौफ़ की अदाएगी की यह सूरत उस वक़्त है जब कि दुश्मन किबला की तरफ़ न हो बल्कि मुखालिफ़ سمت में हो या किबला से शिमाल या जुनूब की तरफ़ हो लेकिन अगर यह सूरत हो कि दुश्मन किबला की سمت हो और एक फ़रीक़ दूसरे फ़रीक़ को देख रहा हो यानी दुश्मन का अमना सामना हो और दुश्मन के घात में बैठ जाने का अन्देशा न हो तो ऐसी सूरत में भी सलाते खौफ़ पढ़ना जाइज है। अफ़राद की कसरत या किल्लत के एतबार से इमाम फौजियों की दो तीन सफ़ें बना ले, सब लोग तकबीरे तहरीमा साथ साथ कहें, इमाम सबको पहली रकअत पढ़ाए (यानी पहली रकअत में तमाम लोग शरीक हों) जब इमाम सजदे में जाए तो मुक्तादियों की पहली सफ़ हिफ़ाज़त के लिए खड़ी रहे, (सजदे में न जाए) जब बाकी सफ़ें सजदे से सर उठा कर खड़ी हो जायें तो पहली सफ़ सजदे करे फिर सब सफ़ें क़याम की हालत में आ जायें, जब दूसरी रकअत के बाद इमाम सजदा करे तो पहली रकअत में जिस सफ़ में इमाम के साथ सजदा किया था वह सजदे न करे बाकी सजदा करें और यह उन सब सजदा करने वालों की हिफ़ाज़त करे जब इमाम तशहहुद के लिए बैठे तो उस वक़्त यह हिफ़ाज़त करने वाली सफ़ सजदा करे और सजदा के बाद इमाम के साथ तशहहुद में शरीक हो जाए और सब मिल कर सलाम फेर दें। ग़ज़वए असफ़ान में हुज़ूर सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी तरह नमाज़ अदा फ़रमाई थी, बयान कर्दा सूरत में अगर पहली सफ़ दूसरी रकअत में



पीछे हट कर आ जाए और दूसरी पहली सफ़ की जगह आ जाए तो यह भी जाएज़ है।

## घमसान की जंग में सलाते ख़ौफ़

अगर घमसान की लड़ाई जारी हो तो उस वक़्त जिस तरह बन पड़े नमाज़ अदा करें, जमाअत बनाकर, मुनफ़रिद तौर पर, पैदल या सवारी पर जैसे भी मुमकिन हो ख़्वाह रुख़, काबा की तरफ़ हो या पुश्त हो इशारा से अदा करे या बग़ैर इशारा के। नमाज़ शुरु करते वक़्त काबा की तरफ़ मुंह होना ज़रूरी है या नहीं इस सिलसिले में दो अक़वाल मनकूल हैं। जब अमन या दुश्मन को शिकस्त हो जाए तो पिछली नमाज़ अदा कर लें। सवारियों से उतर आयें और काबा की तरफ़ मुंह कर के पढ़ें, हां अगर हालते सुकून में नमाज़ शुरु की थी कि जंग ने शिद्दत पकड़ ली और पहली सी ख़ौफ़ की हालत हो गई तो सवारियों पर सवार हो जायें और सलाते ख़ौफ़ पूरी करें ख़्वाह उस वक़्त शमशीर ज़नी की ज़रूरत हो या नेज़ा बाज़ी की या (दुश्मन के दबाव से) पीछे हटने का मौका हो।

सलाते ख़ौफ़ दुश्मन से डरने वाले के लिए है ख़्वाह वह दुश्मन इंसान हों, सैलाब हो या कोई दरिन्दा हो, इसी तरह अगर दुश्मन पर हमला करना चाहता है या दुश्मन को अंकरीब शिकस्त होने वाली है और यह ख़तरा है कि नमाज़ में मशगूल हो जाने से दुश्मन ज़द से निकल जाएगा हर सूरत में सलाते ख़ौफ़ पढ़ी जायगी इसके खिलाफ़ भी एक रिवायत है।

## नमाज़ों का क़स्र

### क़स्र का हुक्म

चार रकअतों वाली नमाज़ को क़स्र कर के सिर्फ़ दो रकअतें उन सूरतों में पढ़ना जाएज़ है (1) कि अपनी बस्ती की आबादी या अपनी कौम के खेमों से दूर निकल जाए। (2) सफ़र की तवालत चार मंज़िल हो (एक मंज़िल चार फ़रसख़ की होती है) 16 फ़रसख़ या 48 मील, इस सूरत में आमद व रफ़्त दोनों हालतों में क़स्र किया जाएगा।

अगर किसी शहर या क़रिया में दाख़िल हो और वहां 22 नमाज़ों तक इक़ामत का इरादा हो तो वह बजाए मुसाफ़िर के मुकीम समझा जाएगा और पूरी नमाज़ पढ़ना होगी अगर 21 नमाज़ों तक ठहरने की नीयत है तो क़स्र व अदमे क़स्र करने के सिलसिले में दो कौल हैं। अलबत्ता इस से कम मुदत के लिए क़स्र ही का हुक्म है। अगर किसी आबादी में पहुंचा और यह नहीं मालूम कि कब तक ठहरन होगा, कोई नीयत नहीं हर रोज़ जाने का इरादा रखता है लेकिन जाना नहीं होता तो क़स्र करना होगा। एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहे अलैहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा में अठारह दिन एक रात और एक रिवायत के बमौजिब पंद्रह दिन क़याम फ़रमाया लेकिन इस मुदत में हुज़ूर ने नमाज़ों को क़स्र ही पढ़ा।

हज़रत इमरान बिन हसीन बयान करते हैं कि फतहे मक्का के वक़्त में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ही था, आपने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया कि ऐ शहर वालो! तुम अपनी चार रकअत पूरी कर लो क्योंकि हम मुसाफ़िर हैं, इसी तरह हुज़ूर ने गज़वए तबूक में बीस दिन क़याम फ़रमाया मगर नमाज़ें क़स्र ही अदा फ़रमाई, यही सहाबा कराम



का अमल था। हजरत अनस बिन मालिक फरमाते हैं कि सहाबा कराम ने राम हरमज में सात माह कयाम फरमाया लेकिन नमाजें कस्र ही पढ़ी।  
 एक रिवायत है कि हजरत इब्ने उमर ने आजर बाईजान में छः माह कयाम फरमाया मगर नमाजों में कस्र फरमाते रहे।

## कस्र के मसाईल

अगर किसी ने सफर की हालत में नमाज शुरु की फिर वह मुकीम हो गया या मुकीम ने इमाम के पीछे नमाज पढ़ी या ऐसे शख्स की इक्तदा की जिसके बारे में यह शक था कि वह मुकीम है या मुसाफिर, या नमाज शुरु करते वक्त कस्र की नीयत नहीं की तो उन तमाम सूरतों में वह नमाज पूरी पढ़ेगा इसके लिए कस्र जाएज नहीं होगा।

कज़ा नमाज अदा करने वाले को भी नमाज में कस्र जाएज नहीं क्योंकि पूरी नमाज कज़ा हुई है, सफर का असर सिर्फ वक्ती नमाज के अदा करने पर पड़ेगा।

अगर कस्र की नीयत के साथ नमाज शुरु हो फिर दौराने सलात इकामत (मुकीम होने) की नीयत कर ली तो नमाज पूरी पढ़ेगा इसी तरह अगर बहालते इकामत नमाज शुरु की थी फिर सफर की नीयत कर ली तब भी नमाज पूरी पढ़ेगा इसी तरह अगर सफर किसी खेल या तफरीह के लिए होगा तो नमाज पूरी पढ़ना होगी। रुख्सते सफर से फ़ाएदा नहीं उठाया जा सकता, रुख्सते सफर का फ़ाएदा उसी वक्त उठाया जा सकता है जब सफर किसी बाजिब को अदा करने मसलन हज, जिहाद वगैरह के लिए हो या किसी अग्रे मुबाह, बिजारत, तलबे मआश, तलबे मदयुन वगैरह के लिए हो। अगर हम सफर मासियत में मुब्तला होने वाले को रुख्सते सफर की इजाजत दे देंगे तो गुनाह करने और गुनाह पर कायम रहने और ताअत की इस्लाह न करने पर उसकी मदद करेंगे, इस तरह उसकी हालत दुरुस्त नहीं होगी और वह ख की इत्ताअत की तरफ रुजूअ न होगा लिहाजा हम इस सूरत में उसकी किसी तरह इआनत नहीं करेंगे और न उसकी हौसला अफ़जाई करेंगे, ऐसे सफर से उसको बाज रखने की कोशिश करेंगे और उसका हौसला तोड़ेंगे।

इमाम अहमद के नज़दीक कस्र करना पूरी नमाज पढ़ने से अफ़जल है वैसे पूरी नमाज भी जाएज है। जिस तरह मुसाफिर के लिए दौराने सफर रोज़ा और इफ़तार दोनों जाएज हैं लेकिन अल्लाह तआला की अता कर्दा इजाजत के खिलाफ़ जुरत न करना और उसकी मेहरबानियों और इनायतों से मुस्तफीद होना अफ़जल है। अगर सफर में पूरी नमाज पढ़ना और रोज़ा रखना खुद पसन्दी गुरुरे नफ़स और फख़ व मुबाहात के लिए न हो या कस्र करने और रोज़ा न रखने का बाएसे फ़रोतनी, इज़हारे इज्ज और तकमीले इबादत से अपना कस्द व इंकिसार हो तो कस्र करने और रोज़ा न रखने को ज़्यादा अफ़जल कहना मुनासिब है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जब अर्ज किया गया कि अब हालते अमन है अब हमको कस्र नहीं करना चाहिए तो हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह सदका अल्लाह ने अपने बन्दों को दिया है अल्लाह के दिये हुए सदका को कबूल करो, हुज़ूर वाला ने यह भी फ़रमाया था कि अल्लाह तआला जिस तरह फ़राएजे खुदावन्दी की पाबन्दी को पसन्द फ़रमाता है उसी तरह खुदादाद रुख्सत (इख़्तियार) करना भी उसको पसन्द है पस बड़ा ताज्जुब है उस शख्स पर जो सफर में पूरी नमाज पढ़ता और रोज़ा रखता है और खुदादाद रुख्सत को तर्क करता है



हालांकि यूँ वह मुख्तलिफ़ कबाएर जैसे हराम खोरी, मय नोशी, रेशम पोशी, जिना, लिवातत और उसूली बद एतकादियों में मुब्तला है।

## हालते सफ़र में दो नमाज़ों को मिला कर पढ़ना

### जुहर व अस्त्र, मग़रिब और इशा को मिला कर पढ़ना

सफ़र की हालत में दो नमाज़ों को एक वक़्त में पढ़ना जाएज़ है जैसे जुहर व अस्त्र को मिलाना या मग़रिब व इशा को मिला कर पढ़ना लेकिन इसके लिए शर्त यह है कि सफ़र तवील हो यानी 16 फ़रसंग या साढ़े सत्तावन मील से ज़्यादा हो उससे कम सफ़र में जमा करना जाएज़ नहीं है, दो नमाज़ों को जमा करने की दो सूरतें हैं अब्बल यह कि नमाज़ को आख़िर वक़्त तक मोअख़्ख़र किया जाए और आने वाली नमाज़ को अब्बल नमाज़ के आख़िरी वक़्त में एक साथ पढ़ा जाए, दूसरी सूरत यह है कि अब्बल नमाज़ को दूसरी नमाज़ के शुरू वक़्त में पढ़ा जाए, दोनों सूरतों में पहली अफ़ज़ल है अगर कोई दूसरी सूरत इख़्तियार करे तो उसे चाहिए कि पहले अब्बल नमाज़ पढ़ ले फिर दूसरी पढ़े।

### नीयत करना ज़रूरी है

अब्बल नमाज़ की तकबीरे तहरीमा के वक़्त जमा बैनुल सलातीन (दो नमाज़ों को जमा करना) की नीयत करे, दोनों नमाज़ों में इतना फ़स्ल करे कि उन दोनों के दर्मियान इक़ामत कही जा सकती हो। अगर वुजू टूट गया हो तो वुजू करे अगर किसी ने दोनों नमाज़ों के दर्मियान सुन्नतें पढ़ लीं तो एक रिवायत के मुताबिक़ जमा का हुक्म बातिल हो जाएगा। औला यह है कि सुन्नतों को फ़र्ज़ों से फ़ारिग़ होने तक मोअख़्ख़र कर दे, (फ़र्ज़ों से फ़ारिग़ हो कर पढ़े) दोनों फ़र्ज़ों के दर्मियान किसी और नमाज़ से फ़स्ल पैदा न करे।

अगर दूसरी नमाज़ के वक़्त में पहली नमाज़ पढ़ी हो तो पहली नमाज़ में जमा की नीयत करना काफी है दूसरी नमाज़ के वक़्त जमा की नीयत करना ज़रूरी नहीं है। जमा की नीयत पहली नमाज़ के अब्बल वक़्त में कर ले ख़्वाह उस वक़्त करे जब नीयत करने के बक़द्रे वक़्त बाकी है (तंग वक़्त में) दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं है अगर पहली नमाज़ का वक़्त जमा की नीयत किये बग़ैर निकल गया तो फिर जमा की नीयत करना दुरुस्त नहीं है।

अगर दूसरी नमाज़ के वक़्त में पहली नमाज़ पढ़ी तो अब्बलन पहली नमाज़ अदा करे फिर दूसरी पढ़े यही तर्तीब उस वक़्त भी पेशे नज़र रखना होगी जब अब्बल नमाज़ के वक़्त में दूसरी नमाज़ पढ़ रहा हो उस वक़्त दोनों फ़र्ज़ों के दर्मियान सुन्नतें पढ़ना और दोनों फ़र्ज़ों में फ़स्ल कर देना जाएज़ नहीं लेकिन एक रिवायत के एतबार से जाएज़ भी है।

हमारे उलमा कराम में अबू बकर काएल हैं कि जमा और कस्र के लिए नीयत ज़रूरत नहीं है, बारिश की वजह से मग़रिब व इशा को तो जमा करना जाएज़ है लेकिन जुहर व अस्त्र को जमा करने के बारे में मुस्बत व मनफ़ी दो कौल हैं इसी तरह अगर बारिश न हो सिर्फ़ कीचड़



हो या सख्त सर्द हवायें चल रही हों तो इसके बारे में भी मुस्बत व मनफी दो कौल आये हैं।

## बारिश के बिना पर नमाजों का जमा करना

अगर किसी ने बारिश की बिना पर दो नमाजों को जमा किया है तो अगर पहली नमाज के वक्त जमा किया है तो पहली नमाज को शुरू और उसको खत्म करते वक्त और दूसरी नमाज को शुरू करते वक्त बारिश होना शर्त है और दूसरी नमाज के वक्त में जमा किया है और पहली नमाज के वक्त से बारिश का सिलसिला जारी है तो दूसरी नमाज को अदा करते वक्त बारिश जारी हो या न हो दोनों बराबर हैं क्योंकि ताखीर तो अब्बल नमाज ही की थी और उस वक्त उज्जे बारिश मौजूद था अब अगर उज्र जाता रहा तो पहली नमाज का वक्त भी जाता रहा और उसकी तलाफी करना मुमकिन नहीं, हां दूसरी नमाज वह अपने वक्त में पढ़ रहा है उस वक्त बारिश हो या न हो दोनों सूरतें एकसां हैं।

जमा का यह हुक्म लोगों की दुशवारी के पेशे नज़र है कि बारिश के बाएस लोगों की आमद व रफ्त मुश्किल है इसके साथ जूतों और कपड़ों के जियां की भी रियाएत मलहूज रखी गई है। हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है जब जूते तर हो जायें तो नमाज घरों ही पर पढ़ लो।

हमारे नज़दीक मुसाफिर और मरीज़ के लिए भी जमा का जवाज़ इसी वजह से है, अल्लाह तआला ने इन दोनों का जिक्र एक ही जगह और एक ही कलाम में फरमाया है: अगर तुम में से कोई बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में रोज़ों की कज़ा करे।

यह इजाज़त (कज़ा) कमज़ोरी के बाएस दी गई है और मरीज़ की कमज़ोरी जाहिर है यही हाल मुसाफिर का है कि कभी आराम से सवारी पर सफ़र करता है और कभी नहीं, जब दौलत मंद मुसाफिर को भी अल्लाह तआला ने आराम मिलने के बावजूद कस्र व जमा की इजाज़त दी तो मरीज़ तो उससे ज़्यादा हकदार है और शरई रुख़सतों का उसको ज़्यादा हक़ पहुंचता है।

## नमाजे जनाज़ा

### नमाजे जनाज़ा के लिए खड़े होने का तरीक़ा

मुसलमान मय्यत की नमाजे जनाज़ा फ़र्जे किफ़ाय़ा है, हमारे नज़दीक नमाजे जनाज़ा की इमामत का सबसे ज़्यादा हकदार मय्यत का वसी है उसके बाद हाकिमे इस्लाम फिर तर्तीब वार मय्यत के असबात (पेदरी रिश्तादार) सबसे पहले सबसे ज़्यादा करीबी रिश्ता रखने वाला उसके बाद बित्तरतीब बाद वाले लोग (असबात से)। इमाम मय्यत अगर मर्द की हो तो उसके सीने के मुकाबिल और अगर औरत की है तो उसकी कमर के मुकाबिल खड़ा हो, मुक्तदियों की अगर एक जमाअत हो तो सब को बराबर रखे लेकिन अगर तरह तरह के लोग मौजूद हों तो इमाम की जानिब वह लोग हों जो अफ़ज़ल हैं, इमाम की तरफ़ सब से आगे मर्दों को होना चाहिये उनके पीछे औरतें, औरतों के पीछे गुलाम, फिर ख्वाजा सरा और उनके पीछे बच्चे। एक रिवायत में यह भी आया है कि बच्चे गुलामों से आगे हों बहरहाल इसी तरह हर किस्म के लोगों पर तदज्जोह रखना चाहिये और इमाम के जानिब खड़े हुए सबसे अब्बल वही लोग हों जो इल्म में दीन में और



तकवा में अफ़ज़ल हों।

कहा गया है कि औरत और मर्द का जनाज़ा साथ साथ हो तो जनाज़ों को इस तरह रखना चाहिये की औरत की कमर के मुकाबिल मर्द का सीना हो।

## नमाज़े जनाज़ा

नमाज़े जनाज़ा के लिए इमाम सफ़ों को दूसरी नमाज़ों की तरह दायें बायें देख कर सीधा करा दे। इमाम अब्बल अपनी गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करे, अपनी क़ब्र, आख़िरत और मौत को याद करे कि मौत का प्याला हर एक को पीना है और ख़याल करे कि मुझे भी एक दिन मौत आएगी उससे छुटकारा मुमकिन नहीं है इसके बाद हुजूरे क़ल्ब पैदा करे और खुशूअ व खुजूअ के साथ नमाज़े जनाज़ा पढ़े ताकि दुआ जल्द क़बूल हो, फिर चार तकबीरें कहे, पहली तकबीर पर सूरह फ़ातिहा पढ़े (हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़े जनाज़ा में सूरह फ़ातिहा पढ़ने का हम को हुक्म दिया था) फिर दूसरी तकबीर कह कर दरुद शरीफ़ पढ़े, वह दरुद जो तशहहुद में पढ़ा जाता है (मुजाहिद फ़रमाते हैं कि मैंने 18 सहाबा क़राम से जनाज़ा की नमाज़ के बारे में दरयाफ़्त किया हर एक ने यही फ़रमाया कि पहले तकबीर कहो फिर सूरह फ़ातिहा पढ़ो, तकबीर कहो और दरुद शरीफ़ पढ़ो) फिर तीसरी तकबीर कह कर मय्यत के लिए, अपने लिए और अपने वालिदैन और तमाम मुसलमानों के लिए जो दुआ तुम को महबूब और पसंद हो और जो तुम्हारे लिए आसान हो पढ़ो मगर यह दुआ पढ़ना मुस्तहब है।

इलाही हमारे जिन्दों और मुर्दों को बख़्श दे, हमारे उन लोगों को जो हाज़िर हैं और जो ग़ायब हैं बख़्श दे, हमारे छोटों को और बड़ों को और हम में मर्दों को और औरतों को बख़्श दे, ऐ अल्लाह हम में से जिसे तू जिन्दा रखे उसको सुन्नत रसूल और इस्लाम पर जिन्दा रखना और जिसको तू मारे (मौत दे) उसको भी सुन्नत और इस्लाम पर मारना (उस को इस्लाम पर मौत आए) तू जानता है कि हमारी बख़्शिश और आराम की जगह कौन सी है तू हर एक चीज़ पर कादिर है, इलाही तेरा यह बन्दा और तेरे बन्दे का बेटा और तेरी बन्दी (कनीज़) का बेटा, अब तेरी बारगाह में हाज़िर हो जाए और तू उन सब से बेहतर है जिस के पास कोई हाज़िर हो हम उसकी नेकी के सिवा किसी चीज़ से आगाह नहीं हैं ऐ अल्लाह अगर यह नेक है तो इसकी अच्छी जज़ा दे और ऐ अल्लाह अगर यह ख़ताकार है तो अपनी रहमत से इसको बख़्श दे हम तेरी बारगाह में इसकी शफ़ाअत के लिए हाज़िर हुए हैं इसके हक़ में हमारी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा और इसको क़ब्र के अज़ाब से बचा, दोज़ख़ के अज़ाब से महफूज़ रख, इसके सारे जुर्म माफ़ फ़रमा दे इसको अच्छी जगह आराम दे और जो घर इसने छोड़े हैं उससे बेहतर घर इसको अता फ़रमा और इसको अच्छा हमसाया अता कर अपने अता और बख़्शिश से हमको और तमाम मुसलमानों को सरफ़राज़ फ़रमा हम को इसके अज़्र से महरूम न रख और हमें इसके बाद फ़ितना में मुब्तला न कर।

यह दुआ पढ़ कर चौथी तकबीर कहे और कहे

ऐ हमारे रब! हमें दुनिया व आख़िरत में नेकी अता कर और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।

हमारे बाज़ उलमा का कौल है कि चौथी तकबीर के बाद कुछ न कहे कुछ तवक्कुफ़ कर के पहले सीधी तरफ़ को सलाम फेरे दोनों तरफ़ को सलाम फेरना भी जाएज़ है दोनों तरफ़ सलाम फेरना इमाम शाफ़ई का मज़हब है इमाम अहमद (हम्बल) का मज़हब यही है कि सिर्फ़



दायें तरफ सलाम फेरे। इमाम अहमद फरमाते हैं कि चन्द सहाबा कराम हजरत अली इब्ने अबी तालिब, हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास, हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर, हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अबी ऊफा, हजरत अबू हुरैरा, हजरत वासला बिन अलअसका के बारे में रिवायत है कि उन तमाम असहाब ने जनाजा की नमाज में एक तरफ (दायें जानिब) सलाम फेरा। एक मरफूअ रिवायत यह भी आई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक जनाजा की नमाज में सिर्फ दाएं जानिब सलाम फेरा।

जो दुआ ऊपर लिखी जा चुकी है इसके अलावा अगर चाहे तो यह दुआ पढ़े:

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो हर एक को मारने वाला और जिन्दा करने वाला है, वही है जो मुर्दों को जिन्दा करेगा बुजुर्गी और अजमत उसी के लिए है वही मुल्क और कुदरत रखता है उसी के लिए तारीफ है वही हर चीज पर कादिर है इलाही हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनकी आल पर दरुद भेज जैसा की तूने बरकत, पहुंचाई और रहमत फरमाई हजरत इब्राहीम और उनकी आल पर, बेशक तू ही तारीफ किया गया है तूही बुजुर्ग है। इलाही! यह तेरा बन्दा है और तेरे बन्दे का बेटा और तेरी बंदी का बेटा है, तू ही ने इसको पैदा किया इसको रिज्क दिया तू ही मारने और जिन्दा करने वाला तू ही इसके भेद को जानने वाला है हम तेरी बारगाह में इसकी सिफारिश करते हैं तू हमारी शफाअत कबूल फरमा ले ऐ अल्लाह अब तू इसको अपने जवारे रहमत में कबूल फरमा ले। तू मालिक है तू जिम्मादार है, इलाही तू इसको कब्र के फितने व दोजख के अजाब से बचा इसको बख्श दे इस पर रहम फरमा, इसे और इसके बुजुर्गों को माफ कर और इसकी आराम गाह को बेहतर बना और इसकी कब्र को फराख और कुशादा कर दे इसको बर्फ के पानी और ठंडे पानी से नहला दे और इसको इसके गुनाहों से पाक कर दे इस तरह पाक फरमा दे जैसे पानी में लगे कुचैले कपड़ों को साफ कर देता है इसको अच्छे घर में दाखिल फरमा दे, इसको ऐसी हूर इनायत कर जो तमाम हूरों से बेहतर हो, इसको बहिश्त में जगह दे दे इसको दोजख की आग से बचा, इलाही अगर तेरा यह बन्दा नेक है तो इसकी नेकियों को बढ़ा दे और इसको उनका एवज अता फरमा अगर यह बदकार है तो इसको माफ फरमा दे, इलाही यह तेरी जनाब में हाजिर हुआ है और तू उन सब से बेहतर है जिस के पास कोई हाजिर होता है इलाही यह तेरी रहमत का मुहताज है और तू गुनी है, यह मुफलिस और मुहताज है और तू इससे बेपरवाह है कि इसको अजाब दे, इलाही जब मुनकर नकीर सवाल करे तो इसकी तू मदद फरमाना, इसको कब्र के अजाब में गिरिफ्तार न करना यह उस अजाब की ताकत नहीं रखता, इलाही हमको इसके अज्र से महरूम वापस न कर और इसके बाद हम को फिल्ला में न डाल।

जनाजा की नमाज पढ़ाने का हमारे इमाम अहमद के नजदीक सबसे ज्यादा मुस्तहिक वह शख्स है जिसको मय्यत ने वसीयत कि है यानी मय्यत का वसी हो फिर हाकिमे इस्लाम, फिर मय्यत के असबात में से उसूल यानी बाप, दादा वगैरह इसके बाद बेटा और बेटे के नीचे जो असबात में सबसे ज्यादा मय्यत से करीब हो भाई, भतीजा, चचा जाद भाई वगैरह। औरत की जनाजा की इमामत का हक शौहर को पहले है या उसके बेटे को यह हक हासिल है इस बारे में मुस्वत और मन्फी दोनों कौल मौजूद हैं।



## सहाबा कराम की वसीयत

सहाबा कराम ने अपनी मय्यत की नमाज पढ़ाने की वसीयत फरमाई है चुनांचे हजरत अबू बकर सिद्दीक ने वसीयत फरमाई थी कि उनके जनाजा की नमाज हजरत उमर पढ़ायें और हजरत उमर ने वसीयत फरमाई कि उनके जनाजे की नमाज हजरत हबीब पढ़ायें हालांकि उस वक्त आप के साहबजादे हजरत अब्दुल्लाह मौजूद थे। जनाब शुरैह ने वसीयत फरमाई थी कि उनकी नमाज हजरत जैद बिन अरकम पढ़ायें, हजरत मैसरा ने अपनी नमाजे जनाजा के लिए हजरत शुरैह को वसीयत की थी। हजरत आएशा ने हजरत अबू हुरैरह को अपनी नमाज के लिए वसी बनाया था इसी तरह हजरत उम्मे सलमा ने सईद बिन जुबैर को वसीयत की थी कि उनके जनाजे की नमाज पढ़ायें।

मय्यत अगर बच्चा हो तो दुआ इस तरह पढ़ें

इलाही यह तेरा ही बन्दा है और तेरे बन्दे का बेटा है और तेरी बन्दी (कनीज़) का बेटा है इसे तूने ही पैदा किया इसको रिज़्क अता किया तू ही मारता और तू ही जिन्दा करता है इलाही तू इसके मां बाप के लिए इसको पेश खेमा बना दे और उनके लिए इसको अज्र की ज्यादाती का बाएस बना दे यह उनके मीज़ान के पल्लों के भारी होने का बाएस बन जाये इसके बाएस इसके वालिदैन् के अज्र को ज्यादा फरमा दे हमें भी इसके अज्र से महरूम न रख। और इसके बाद हमको फितना में न डाल बल्कि उससे महफूज़ रख इलाही इसको अपने नेकोकारो और सालेह बन्दों में शामिल फरमा ले इसको हजरत इब्राहीम की कफ़ालत व जमानत में दाखिल फरमा दे इसको दुनिया के घरों से बेहतर घर अता फरमा इसके अहल से बेहतर अहल इनायत कर, इसको जहन्नम के अज़ाब से बचा इलाही हमारी औलाद को हमारे बुर्जुगों को जिन्होंने ईमान में हमसे पहले पहल की उन सबको बख्शा दे इलाही हम में से जिसको तू जिन्दा रखे उसको इस्लाम पर जिन्दा रख और जिसको मौत दे उसको इस्लाम पर मौत दे (मुसलमान होने की हालत में मरे) इलाही तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों को जो जीते हैं और या जो मर गये हैं उन सब को बख्शा दे।

## जनीन की नमाजें जनाजा

अगर नातमाम बच्चा में इंसानी खद व ख़ाल नुमाया हो गए तो उसको गुस्ल भी दिया जाएगा और नमाज भी पढ़ी जाएगी लेकिन अगर वह सिर्फ मज़गए गोश्त है और कोई बनावट नुमाया नहीं है तो न उसको गुस्ल दिया जाएगा और न उसकी नमाज होगी, सिर्फ दफ़न कर दिया जाएगा, बच्चा को गुस्ल मर्द दें या औरतें दोनों जाएज़ है। हजरत इब्राहीम फरज़न्दे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात आठ माह की उम्र में हुई और उनको औरतों ने गुस्ल दिया था।



# मौत, तलकीन, गुस्ले मय्यत तकफीन और तदफीन

## मौत पर यकीन

हर मोमिन साहबे अक्ल व फिरासत के लिए मुस्तहब है कि वह मौत पर यकीन रखे, उसे कसरत से याद करे और उसकी तैयारी और साज व सामान मुहय्या करने की कोशिश करे, हर आन व हर लहजा तौबा करता रहे अपने नफ्स का मुहासबा करे और तमाम हुक्क और कर्ज से सुबुकदोश रहे, वसीयत नामा तैयार रखे। ऐसी यकीनी बात से गफलत न बरते जिस की हैसियत मखलूक के लिए उमूमी है लेकिन मौत का आना और उसका प्याला पीना जरूरी है। मौत की याद को मुसतहब कहना इस वजह से है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मौत की याद बहुत किया करो अगर तुम उसको तवंगरी के हालत में याद रखोगे तो ऐश परस्ती से मुकद्दर कर देगी और मुफलिसी और तंगदस्ती की हालत में याद करोगे तो वह तंग दस्ती को तुम्हारे लिए गवाह बना देगा।

## सबसे ज्यादा दानिशमंद

यह इरशादे गरामी भी हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है कि जानते हो कि सबसे बड़ा दाना और होशमंद शख्स कौन है? सबसे ज्यादा दाना वह है जो मौत को बहुत याद रखे और सबसे बड़ा होशियार वह है जो मौत की तैयारी ज्यादा करे। सहाबा कराम ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! इसकी अलामत और पहचान क्या है? हुजूर ने इरशाद फरमाया इस फरेब खाना (दुनिया) से ज्यादा दूर रहना और हमेशगी के घर की तरफ रुजूअ करना।

## हजरत लुकमान की नसीहत

हजरत लुकमान ने अपने बेटे से फरमाया था, ऐ फरजन्द! तौबा को कल पर टालना मौत अचानक आ जाएगी।

## फरमाने मुस्तफवी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसके पास माल हो उसके लिए मुनासिब नहीं कि दो रातें भी ऐसी गुजार दे जिस में वसीयत नामा लिखा हुआ पास मौजूद न हो। एक और हदीस में आया है कि हिसाब के लिए जाने से पहले तुम अपना मोहासबा कर लो, मीजान अमल पर तौले ज्ञाने से पहले तुम अपने आमाल का वजन कर लो। हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना है कि दुनिया में ऐसे अमल कर लो गोया तुम को हमेशा यहां रहना है और आखिरत के लिए अमल करते वक्त यह न भूलो कि मौत सर पर खड़ी है गोया तुम कल ही मर जाओगे। इस लिए दानिशमंद को चाहिए कि वह अपनी मौत से कबल उन हुक्क से ओहदा बरआ



हो जाए जो उस पर लाज़िम हैं। गुनाहों से बरअत हासिल कर ले, कर्ज़ अदा कर दे, अगर ऐसा न करेगा तो क़तई तौर पर जान ले और अच्छी तरह समझ ले कि वह उन हुक्क में गिरिफ़्तार रहेगा उन हुक्क के एवज़ पकड़ा जाएगा और कब्र के अज़ाब में मुबतला होगा तमाम कुव्वतें जाएल हो जाएंगी तमाम तदबीरें बेकार हो जाएंगी हवास बाख़ता होगा घर वाले और पड़ोसी छोड़ जाएंगे और उसका छोड़ा हुआ माल उसके दुश्मनों, मर्दों, औरतों और बच्चों के कब्ज़े में चला जाएगा उस बुरे अंजाम से नजात देने वाली चीज़ सिर्फ़ यही है कि हुक्क को दुनिया में अदा कर दिया जाए और उनकी अदाएंगी से ओहदा बरआ हो जाए तौबा करे और इताअत में मसरूफ़ रहे यहां तक कि अल्लाह तआला की रहमत और उसकी मेहरबानियां उस पर छा जाएं वह सबसे बड़ा रहम करने वाला है जो कुछ चाहेगा बहिश्ते जाविदां में उसको जज़ा अता फ़रमा देगा।

### मकरूज़ पर अज़ाब

हज़रत समरा बिन जुन्दब फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे हुज़ूर वाला ने एक जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाई सलाम फेरने के बाद हुज़ूर ने फ़रमाया कि फ़लां ख़ानदान का कोई यहां मौजूद है? एक शख्स ने अर्ज़ किया हुज़ूर मैं हाज़िर हूं। हुज़ूर ने फ़रमाया फ़लां शख्स (यानी मय्यत) कर्ज़ कि वजह से गिरिफ़्तार है। हज़रत समरा फ़रमाते हैं कि मैंने खुद देखा कि मय्यत के घर वाले फ़ौरन ही कर्ज़ चुकाने लगे फिर कोई कर्ज़ ख़्वाह बाकी नहीं रहा।

यही हदीस शरीफ़ में दूसरे अल्फ़ाज़ में इस तरह है।

फ़लां शख्स जन्नत के दरवाज़े पर कर्ज़दार होने की वजह से महबूस है। हज़रत अली से रिवायत है कि अहले सफ़्फ़ा में से एक साहब का इन्तक़ाल हो गया, लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह इसने एक दीनार और एक दिरहम तरका में छोड़ा है, हुज़ूर ने फ़रमाया यह आग के दो दाग़ हैं तुम अपने साथी की नमाज़ पढ़ो (मैं इस में शिरकत नहीं करूंगा) उस शख्स पर कुछ कर्ज़ था।

एक और हदीस है कि एक अंसारी का जनाज़ा बारगाहे नबूव्वत में लाया गया आपने फ़रमाया क्या इस पर कर्ज़ है? अर्ज़ किया गया जी हां यह सुन कर हुज़ूर वापस जाने लगे उस वक़्त हज़रत अली ने अर्ज़ किया कि इसके कर्ज़ का मैं ज़ामिन हूं यह सुन कर हुज़ूर वापस तशरीफ़ ले आए और उसकी नमाज़ पढ़ी और इरशाद फ़रमाया ऐ अली अल्लाह ने तुम्हारी गरदन इस तरह आज़ाद कर दी जिस तरह तुम ने अपने मुसलमान भाई की गरदन आज़ाद कराई। जो किसी का कर्ज़ छोड़ा है अल्लाह कयामत के दिन उसको रिहा कर देगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है, कयामत के दिन हक़दारों के हक़क़ ज़रूर दिए जाएंगे यहां तक कि मुन्डी बकरी का हक़ सींगों वाली बकरी से लिया जाएगा, हुज़ूर ने यह भी इरशाद फ़रमाया जुल्म करने से गुरेज़ करो, कयामत के दिन जुल्म अंधेरियां बन जाएगा, फ़हश से परहेज़ करो, अल्लाह तआला बेहयाई को पसन्द नहीं फ़रमाता, बुख़ल से बचो इसी बुख़ल ने तुम से पहले गुज़रने वाले लोगों को बरबाद कर दिया, इसी बुख़ल ने बख़ीलों रिश्तेदारियां मुन्क़तअ करने का हुक्म दिया और उन्होंने (अजीज़ों रिश्तेदारों के) हक़क़ तल्फ़ किए।



## अयादत

### अयादत मुस्तहब है

अगर कोई मोमिन बीमार हो उसकी बीमार पुरसी करना मुस्तहब है, मुसलमान भाई जब उसकी अयादत को पहुंचता है और उसके हाल को देखता है तो अगर अच्छा हो जाने की उम्मीद होती है तो उसके लिए दुआ करके लौटता है और अगर मरने का अन्देशा होता है तो उसको तौबा करने की तरगीब देता है और उसको आमादा करता है कि वह अपना तिहाई माल उन गरीब रिश्तेदारों को देने की वसीयत कर जाए जो उसको शरअन वारिस नहीं हैं अगर उसके अकरबा में कोई मोहताज नहीं होता तो फिर उन लोगों के हक में वसीयत करने की तरगीब देता है जो फकीर व मिसकीन हों, अहले इल्म हों, दीनदार हों या ऐसे लोग हों कि अल्लाह तआला की तकदीर ने उनके रोजी के जराए मसदूद कर दिए हैं और तक्वा व परहेजगारी के बाएस अलाएके दुनयवी से उन्होंने मुंह मोड़ लिया हो।

### मुत्तकी और मुतवक्किल हज़रात

मुत्तकी और मुतवक्किल हज़रात के नज़दीक चूंकि रोजी के असबाब ज़ाहिर भी शिरकत का बाएस होते हैं इस लिए वह सबसे किनारा कश हो कर खास सबुल इज्जत की इबादत में मशगूल रहते हैं और रिज़क के लिए सिर्फ उसी की तरफ़ रूजूअ होते हैं क्योंकि वह हर ज़ाहिरी सबब को शिर्क समझते हैं, उनकी हाल अल्लाह तआला से इस ताल्लुक के बिना पर पुख्तगी के कमाल पर पहुंचता है, उनकी तौहीद बे दाग होती है और मुकद्दर की जो रोजी है वह पाक व साफ़ होकर उनके पास पहुंच जाती है इस लिए न उनको दुनिया में बुरे अंजाम का अन्देशा होता है और न आखिरत की सज़ा का। मुबारक हैं वह लोग और बशारत है उन लोगों के लिए जो ऐसे मुतवक्कलीन के खिदमत में कुछ माल पेश करें और उनके साथ मेहरबानियां करके उनके साथ मेल जोल रखें, किसी रोज़ उनकी खिदमत करें, उनकी दुआ पर आमीन कहें और उनके लिए कलमए खैर ज़बान से निकालें, लोगों को मुबारक हो कि यह मुतवक्कलीन, अहलुल्लाह (औलिया अल्लाह) हैं यह अल्लाह के खास बंदे हैं बादशाह के हुजूर में बादशाह के में बादशाह के अमाएदीन के बगैर रसाई नहीं होती। गौर करो क्या किसी शख्स को शाही बख्शिशा या शाही इनाम बादशाह के उन मुकर्रबों और खादिमों के ज़रीये के अलावा किसी दूसरे ज़रिया से मिल सकती है, पस अगर कोई बादशाह के इन हाशिया नशीनों से और खिदमतगारों से मिल लें और उनके साथ हुसने सुलूक से पेश आए, उनकी खिदमत करे तो हो सकता है कि उनमें से कोई बादशाह के हुजूर में उसका पेश कर दे और उसकी पसन्दीदा आदतों और ऊमदा खसाएल का जिक्र करे और बादशाह उसके हुन व इखलास से खुश हो कर उस बन्दा को अपनी नेमतों और बख्शिशाओं से नवाजें (यह मिसाल अहलुल्लाह यानी औलिया ए कराम की है कि वह बारगाहे इलाही में गुनाहगारों को पेश करते हैं।

### तलकीन

अगर मरीज़ में मौत की अलामात नमूदार हो जाएं तो घर वालों को चाहिए, उनके लिए



मुस्तहब है कि जो शख्स मरीज़ का सबसे बड़ा रफ़ीक़ हो और मरीज़ के तौर तरीकों से वाकिफ़ हो और सबसे ज़्यादा मुत्तकी और परहेज़गार हो उसको इस बात पर मुकर्रर करे कि वह मरने वाले को खुदा की याद दिलाये और ताअते इलाही की तरफ़ उसको राग़िब करे उसके हल्क़ में पानी या शरबत टपकाए और भीगी हुई रूई से उसके लबों को तर करने की ख़िदमत अन्जाम दे और ला इलाहा इल्लल्लाह की एक बार तलकीन करे (ज़्यादा से ज़्यादा तीन बार तलकीन की जाए, इससे ज़्यादा न करें कि मरने वाले की तंग दिली का बाएस हो और उसको नफ़रत न पैदा हो जाए और इस ना गवारी के आलम में जान निकल जाए)।

अगर तलकीन के बाद के बाद कोई और बात कर ली हो तो दोबारा तलकीन करना चाहिये ताकि आखिरी कलाम कलमए तौहीद ही हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशादे गरामी है कि जिस का आखिरी कलाम होगा वह जन्नत में दाख़िल किया जाएगा, तलकीन बड़ी आहिस्तगी, नरमी और खूश इख़लासी से करना चाहिये मुनासिब यह है कि सूरह यासीन उसके पास पढ़ी जाए ताकि रूह निकलने में आसानी हो जब उसकी रूह निकल जाए तो उसको चित लेटा कर मय्यत का मुंह काबा की तरफ़ कर दिया जाए (इस तरह की अगर बिठाया जाता तो मुंह काबा की तरफ़ होता) मय्यत की आंखें जल्द ही बन्द कर देना चाहिए।

## मुर्दा के हक़ में अच्छा कलमा कहो

हज़रत शहाद बिन औस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाया तुम लोग मुर्दे के पास मौजूद हो तो उसकी आंखें बन्द कर दो क्योंकि नज़र रूह की परवाज़ का पीछा करती है और आंखें बंद नूर और बद शक़ल हो जाती हैं मुर्दे के हक़ में कलमए ख़ैर कहना चाहिए इस लिए कि घर वाले जो कुछ उसके बारे में कहते हैं उस पर आमीन कही जाती है फिर मय्यत के दोनों जबड़ों को दबाव दे कर बंद कर देना चाहिए। एक रिवायत है कि हज़रत उमर बिन अलख़त्ताब का जब वक्त (मर्ग) करीब आ पहुंचा तो आप ने अपने फ़र्जन्द हज़रत अब्दुल्लाह से फ़रमाया जब देखो कि मेरी जान तालू तक आ पहुंची है तो तुम दाईं हथेली मेरी पेशानी पर और बाईं हथेली ठोड़ी के नीचे रख कर मेरा मुंह बंद कर देना। मुंह बन्द करने के बाद मय्यत के जोड़ों को नर्म किया जाए यानी कलाईयों को उठा कर इस तरह मोड़ा जाए कि वह बाजुओं से मिल जाए फिर उनको खोल दिया जाए इस तरह उनमें नर्मी पैदा हो जायेगी। इसी तरह दोनों पिंडलियों को रानों से मिलाया जाये उसके बाद मय्यत के कपड़े उतार कर एक चादर से पूरी मय्यत को ढांप दिया जाए इस लिए के मौत के बाइस मय्यत का पूरा बदन छुपाना वाजिब हो जाता है (वाजिबुल सतर होता है) इसी बुनियाद पर उस के सारे बदन को कफ़न से ढांपना वाजिब है मय्यत के पेट पर तलवार या आइना रख देना चाहिए ताकि पेट ज़्यादा न फूले इस अमल के बाद मय्यत को गुस्ल के तख़्त पर रख देना चाहिये तख़ता पर मय्यत को टांगों की तरफ़ नीचे रखना चाहिये (तख़ता सर की तरफ़ से कुछ ऊंचा कर देना चाहिए) इस अमल के बाद मय्यत के कर्जों को अदा करना चाहिए और उसकी वसीयतों को पूरा करना चाहिए ताकि खुदावन्दे आलम के हुज़ूर में वह तमाम हुकूक और बारों से बरी होकर पहुंचे।



## मय्यत का गुस्ल

इस से फारिग होने के बाद मय्यत के गुस्ल तजहीज तकफीन और तदफीन में उजलत करना चाहिए अगर मौत अचानक आ गई हो तो कुछ तवक्कूफ करने में हरज नहीं ताकि मौत का यकीन हो जाए यानी दोनों पहुंचें लटक जाएं, टांगें ढिली पड़ जाएं, नाक बहने लगे, कनपटियां बैठ जाएं उस वक्त गुस्ल की तैयारी शुरू कर देना चाहिए।

### मय्यत का गुस्ल

सबसे पहले गुस्साल मय्यत के कपड़े उतार कर मय्यत के जिस्म को नाफ से जानू तक एक कपड़े में छुपा दे इस सतर पोश से नहलाने में जहां तक मुमकिन हो नहलाने वाला मुर्दे के सतर के मकाम से आंखें बन्द रखें, मुर्दे को एक लम्बा चौड़ा कुर्ता पहना कर नहलाना अच्छा है अगर कमीज तंग हो तो चाक को और कुशादा कर लिया जाए फिर आसानी और नरमी के साथ मय्यत के जोड़ों को नर्म करे अगर ज्यादा सख्त हो तो उनको वैसा ही छोड़ दो इस लिए कि अकसर इस अमल से हड्डियां टूट जाती हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मुर्दे का हड्डी तोड़ना ऐसा है जैसे जिन्दा की हड्डी तोड़ना। इस के बाद मुर्दे को बैठने के अंदाज़ तक झुकाए और उसके पेट को आहिस्ता आहिस्ता सोंते ताकि अन्दर जो कुछ नजासत हो खारिज हो जाए फिर हाथों पर कपड़ा लपेट ले ताकि उसके सतर पर नंगा हाथ न पड़े दूसरे यह कि कपड़े से सफाई अच्छी तरह हो जाती है इसी तरह बदन के बाकी हिस्सा को भी हाथों पर कपड़ा लपेट कर छुना ही मुस्तहब है। इस दौरान में नहलाने वाले के हाथों पर पानी बराबर डालता रहना चाहिए जिस कपड़े से इसतिन्जा कर रहा था उसको इसतिन्जा के अमल से फारिग होने के बाद उतार कर दूसरा पाक कपड़ा लपेट लेना चाहिए इस तरह तीन मरतबा कपड़ा बदलना और हाथ धोना चाहिए, फिर मय्यत को नमाज़ के वुजू की तरह तरतीब के साथ वुजू कराए खुद नीयत करे बिस्मिल्लाह कह कर नहलाने वाला अपनी दोनों उंगलियों को पानी से तर करके मय्यत के दांतों को मले, इसी तरह नाक के सुराखों में उंगलियों से सफाई करने पर नाक और मुंह पर पानी डाले लेकिन एहतियात रखे कि पानी नाक और मुंह के अन्दर न जाये उसके बाद वुजू को तमाम करे। वुजू से फारिग होकर बेरी के पत्तों से जोश दिए पानी (आबे सिदरा) से सर और दाढ़ी को धोये लेकिन बालों में कंघी न करे फिर सर से पांव तक पानी डाले उसके बाद पहलू बदल कर दाहिनी जानिब को धोए बाई तरफ को करवट दे कर बायें पहलू उसके बाद पहलू बदल कर दाहिनी जानिब को धोए बाई तरफ को करवट दे कर बायें पहलू उसके बाद पहलू बदल कर दाहिनी जानिब को धोए बाई तरफ को करवट दे कर बायें पहलू को भी धोए। इसी तरह हर मरतबा पानी और बेरी के पत्तों वाले पानी से गुस्ल देने के बाद सादा पानी से गुस्ल देता रहे (बेरी के पानी से गुस्ल देने के बाद खालिस पानी से गुस्ल देना जरूरी है) अगर मैल दूर करने के लिए अशनान (घास) की जरूरत हो तो उसको इस्तेमाल किया जा सकता है नाखूनों के अन्दर का मैल निकालने के लिए खिलाल पर रूई लपेट कर नाखूनों के अन्दर से और नाक कान के सुराखों से मैल साफ कर दे फिर दोबारा पेट कदरे उठाए और पेट पर हाथ फेर कर नजासत निकाल दे और दोबारा वुजू कराये फिर आखिरी गुस्ल आबे काफूर करा के किसी पाक कपड़े से बदन पोछ दे। कम से कम गुस्ल तीन बार और ज्यादा से ज्यादा सात बार है अगर तीन बार गुस्ल देने से पूरी पूरी सफाई न हुई तो सात बार तक गुस्ल दिया



जा सकता है। ख्याल रखना चाहिए की गुस्ल का खातमा ताक अदद पर करे (जैसे तीन, पांच, या सात) अगर जिस्म से नजासत निकलना बंद न हो तो रूई या पाक मिट्टी रख कर बंद कर दें। बाज़ उलमा का कौल है कि उसको बंद करने की हाजत नहीं, इमाम अहमद के नज़दीक ऐसा अमल मकरुह है। बाज़ उलमा का कौल है कि गुस्ल के बाद अगर जिस्म से कुछ खारिज हो जाए तो गुस्ल के इआदा की हाजत नहीं है सिर्फ जाए खुरुज को धो दिया जाए उसके बाद नमाज़ के मानिन्द वुजू करा दिया जाए और कफ़न पहनाने के लिए तख़तए गुस्ल से लाश को उठा लिया जाए। अफ़ज़ल यह है कि पहली बार आबे सिदरा (बेरी के पत्तों के जोश दिए हुए पानी) से गुस्ल दिया जाए फिर खालिस पानी से और आख़िर में काफ़ूरी पानी से।

## मर्द की तकफ़ीन

अगर मय्यत मर्द की है तो तीन कपड़े कफ़न में दिये जाएं, कपड़ा सफ़ेद होना चाहिये (रंगीन न हो) यह तीन कपड़ें सिर्फ़ चादरें हों, सिला हुआ तहबंद, कमीज़, पाजामा न हो, अगर कपड़े का अरज़ कम हो तो दो पार्ट कर के सी दिया जाए (अरज़ में सी दिया जाए) मय्यत के जिस्म से कफ़न लपेटने से कब्ल कपड़ों को ऊद और काफ़ूर के बुख़रात से मुअत्तर कर लेना चाहिये लपेट की हर दो चादरों के दर्मियान खुशबू लगाई जाए। बाज़ उलमा का कौल है कि यह तीन कपड़े कफ़न में (अगर मर्द हो तो) दिये जाएं, बग़ैर सीली कमीज़ जिसमें तुकमा न हो, तहबंद और लपेट की चादर, तीन कपड़ों का कफ़न देना अफ़ज़ल है। हज़रत आइशा सिद्दीका ने फ़रमाया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीन सफ़ेद सहोली कपड़ों का कफ़न दिया गया था, जिनमें न कमीज़ थी न अमामा। इमाम अहमद ने इस हदीस को सही माना है और अपने मजहब की बिना इसी हदीस को बनाया है।

कफ़न के कपड़ों से खुशबू मल दे और काफ़ूर रूई में रख कर दोनों सुरीनों के दर्मियान रख दे और ऊपर से कपड़े का टुकड़ा रख दे, आज़ाए सजदा यानी पेशानी, नाक, हाथ, ज़ानू और पैरों पर काफ़ूर लगा दे, इसी तरह दोनों कानों, रान, बग़ल, कानों और आंखों के बैरुनी हलकों में भी काफ़ूर लगा दे, आंखों के अंदर काफ़ूर दाख़िल न करे। अगर उन सूराखों से किसी चीज़ के निकल पड़ने का डर हो तो नाक कान के सूराखों को रूई और काफ़ूर उन पर रख कर बंद कर दे अगर सारे जिस्म पर काफ़ूर और संदल की खुशबू लगाई जाए तो अफ़ज़ल है। जनाब नाफ़ेअ की रिवायत है कि हज़रत इब्ने उमर मय्यत के जंगसों (कुन्ज रान) बग़लों और कोहनियों पर मुश्क लगाया करते थे। इस तरह कफ़ना कर मय्यत को लाकर लपेट की चादरों पर रख दिया जाए पहले बायें तरफ़ से दायें तरफ़ को लपेटा जाए फिर दायें तरफ़ से बायें तरफ़ से लपेट दें, दूसरी और तीसरी चादर को भी इसी तरह लपेटा जाए लेकिन सर की जानिब का किनारा ज़्यादा हो और टांगों की तरफ़ का कम छोड़ा जाये। अगर किनारा खुल जाने का अंदेशा हो तो गिरह लगा कर बांध दिया जाये। कब्र में उतारने के बाद बंदिश खोल दी जाए लेकिन कफ़न को चाक न किया जाए।

## औरत का कफ़न

मर्द के खिलाफ़ औरत को पांच कपड़ों का कफ़न देना चाहिए, एक तहबंद, ओढ़नी, कुर्ता और दो चादरें लपेट की। तहबंद पूरे बदन पर लिपटा होना चाहिये हमारे बाज़ उलमा के



नज़दीक यह बात मुस्तहब है कि पांचवीं चादर से मय्यत की रानें लपेट दी जाएं और एक चादर लिफाफा के कायम मकाम है औरत के सर के बालों को तीन लटों में गूँध कर पुश्त की जानिब डाल दिया जाए, मय्यत औरत की हो या मर्द की उसको दुलहन की तरह आरास्ता किया जाए, अगर किसी को मजकूरा बाला मिक्दार में कपड़ा मय्यसर न आए तो बहालते मजबूरी एक कपड़ा ही काफी है या जिस कदर मय्यसर आ सके।

## मोहरिम का कफ़न

अगर कोई हालते एहराम में फौत हो जाए (हज या उमरा में) तो उस पानी से जिस में बेरी के पत्ते पड़े हों उस को गुस्ल दिया जाए, खुशबू उसके पास न लाई जाए उसके सर और पांव को ढांपा न जाए सिला हुआ कपड़ा उसको न पहनाया जाए और सिर्फ़ दो कपड़ों का कफ़न दिया जाए। हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरफ़ात में तवक्कुफ़ फ़रमा थे अचानक एक शख्स ऊंटनी से गिर पड़ा उसकी गरदन टूट गई और मर गया हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया इसको पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल दो और सिर्फ़ दो कपड़ों का कफ़न दो इसके सर को न ढांको क्योंकि अल्लाह तआला क़यामत में इसे तलबीह कहता हुआ उठाएगा।

## मुर्दा जनीन का गुस्ल

ना तमाम बच्चा अगर चार माह से ज़्यादा का हो तो उसको गुस्ल दिया जाए और उसकी नमाज़ भी पढ़ी जाए और ऐसा नाम रखा जाए जो मर्द और औरत दोनों पर सादिक आए। बच्चा को गुस्ल मर्द दे या औरत दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं। रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम को औरतों ने गुस्ल दिया था साहबज़ादे कि उम्र आठ माह की थी उम्मे अतिया की बयान कस्बा हदीस से यह साबित है।

## मर्द को मर्द और औरत को औरत गुस्ल दे

मर्द की मय्यत को मर्द गुस्ल दे और औरत की मय्यत को औरत गुस्ल दे अगर बीवी अपने शौहर को गुस्ल दे तो जाएज है, शौहर अपनी बीवी को गुस्ल दे सकता है या नहीं इसके बारे में दो रिवायतें हैं एक मुस्बत दूसरा मनफ़ी, उम्मे वलद का हुक्म भी यूँही जैसा है, हज़रत अली ने अपनी जौजा मोहतरमा हज़रत सय्यदा फ़ातिमा को गुस्ल दिया था।

मर्द मय्यत का कफ़न अदाए कर्ज़ व तकमीले वसीयत पर मुक़द्दम है अगर मय्यत के पास माल बिल्कुल न हो तो जो शख्स उसके खर्च के कफ़ील हो उसपर कफ़न देना लाज़िम है अगर ऐसा शख्स मौजूद न हो तो उसका कफ़न बैतुल माल से दिया जाएगा। औरत के कफ़न का भी यही हुक्म है। शौहर पर उसका कफ़न देना वाजिब नहीं, मय्यत के दफ़न की ख़िदमत उस शख्स को ही अंजाम देना चाहिए जिस ने गुस्ल दिया था, यही औला है।

## क़ब्र का तूल व अर्ज और गहराई

मुर्दों के लिए क़ब्र बक़दरे मुतवस्सित क़द्दे आदम गहरी खादी जाए क़ब्र का तूल तीन हाथ और एक बालिश्त हो और अर्ज एक हाथ एक बालिश्त जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि



वसल्लम ने हज़रत उमर से फ़रमाया था कि ऐ उमर तुम्हारा उस वक़्त क्या होगा जब तुम्हारे लिए तीन हाथ एक बालिशत लम्बी और एक हाथ एक बालिशत चौड़ी ज़मीन तैयार की जाएगी फिर तुम्हारे घर वाले तुम को गुस्ल देंगे और कफ़न पहनायेंगे और खुशबू मलेंगे इसके बाद उठा कर ले जायेंगे और ज़मीन में छुपा कर तुम पर मिट्टी डाल कर तन्हा छोड़ कर वापस आ जायेंगे।

## मय्यत को क़ब्र में उतारना

मुस्तहब है कि मुर्दे को सर की जानिब से क़ब्र में उतारा जाए, अगर ऐसा करना दुश्वार हो तो क़ब्र के पहलू से या जिस तरफ़ से ज़्यादा आसान हो उतारा जाए। इमाम अहमद से इसी तरह मनकूल है। औरत को दफ़न करने की ख़िदमत भी औरतें ही अंजाम दें जिस तरह गुस्ल की ख़िदमत अंजाम दी थी अगर यह औरतों के लिए दुश्वार हो मय्यत के करीबी रिश्तादार यह काम अंजाम दें यह भी मुमकिन न हो तो ग़ैरों में से ज़ईफ़ और बूढ़े लोग यह काम अंजाम दें। औरत की क़ब्र का (मय्यत को उतारते वक़्त) पर्दा करना मुस्तहब है, मर्द का न किया जाए। रिवायत है कि हज़रत अली एक जगह से गुज़रे वह लोग मुर्दे को दफ़न कर रहे थे और उन्होंने क़ब्र पर पर्दा तान रखा था हज़रत अली ने पर्दा को खींच लिया और फ़रमाया ऐसा तो औरतों के लिए किया जाता है।

जब मुर्दे को क़ब्र के अन्दर पहुंचा दिया जाए तो उस पर तीन लप (दोनों हाथ मिलाने से जो ज़र्फ़ बनता है उसको लप कहते हैं) मिट्टी डाली जाए। हदीस शरीफ़ में इसी तरह आया है इसके बाद बाकी मिट्टी डाल दी जाए, क़ब्र को एक बालिशत ऊंचा रखा जाए और मिट्टी पर पानी छिड़क दिया जाए कुछ सग़रों भी रख दिये जायें, मिट्टी से उसको लेप देना भी जाएज है। क़ब्र पर चूने से सफ़ेदी करना मकरूह है क़ब्र कोहान की तरह बनाना मुस्तहब है चिपटी क़ब्र मस्नून नहीं है। हज़रत असन बसरी फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का रौज़ए मुबारक और आपके दोनों रफ़ीक़ों (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर) के मज़ारात को देखा है वह कोहान नुमा हैं।

## तलकीने मय्यत

मुर्दे को दफ़न करने के बाद तलकीन करना मस्नून है। हज़रत अबू उमामा से मरवी हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम से जब कोई मर जाए और उसके क़ब्र में दफ़न करके मिट्टी डाल दी जाए तो तुम में से कोई उसके सिरहाने खड़े होकर कहे ऐ फ़लां इब्ने फ़लाना! बेशक वह सुनता है जवाब नहीं दे सकता, फिर कहे फ़लां इब्ने फ़लां! जब दूसरी मर्तबा आवाज़ देगा तो मुर्दा उठकर बैठ जाएगा फिर तीसरी बार भी इसी तरह मुख़ातिब करे, उस वक़्त मय्यत कहती है, ऐ खुदा के बन्दे! अल्लाह तुम पर रहमत नाज़िल फ़रमाए, हमें राहे रास्त दिखाओ, लेकिन तुम सुन नहीं सकते, फिर तलकीन कहने वाला कहे तू जिस कलमा पर दुनिया से निकला था उसको याद कर, तू शहादत देता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं और तू अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबी होने और कुरआन के इमाम होने पर राजी था।

उस वक़्त मन्कर नकीर कहते हैं कि इसको मुदल्लल और मुकम्मल जवाब बता दिया गया



है हम इसके पास बैठ कर क्या करें।

किसी शख्स ने यह सुन कर हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज किया या रसूलल्लाह अगर किसी शख्स की वालिदा का नाम मालूम न हो तो किस तरह उसको पुकारें, हज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि उसको हज़रत हब्बा की तरफ़ मन्सूब कर दे तलकीन करने वाला शख्स अगर चाहे तो यह भी उसमें इज़ाफ़ा कर सकता है कि तू मुसलमानों के भाई होने और काबा के किब्ला होने पर राज़ी था (यानी तू ने इसका भी इकरार किया था) तो उस इज़ाफ़ा से कोई हरज नहीं इसी तरह उस तलकीन में दूसरे शिआरे इस्लाम का ज़िक्र भी किया जा सकता है।

अबु दौद



## बाब 22

# हफ़्ता भर की नमाज़ें और उनके फ़ज़ाएल

### हफ़्ता भर में दिन में पढ़ी जाने वाली नमाज़ें

हज़रत अबू सलमा ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया जब तुम घर से निकलो तो दो रकअत नमाज़ पढ़ लिया करो, यह रकअतें तुम को बैरुनी और ख़ारजी आफ़ात से महफूज़ रखेंगी और जब घर में दाख़िल हुआ करो तब भी दो रकअतें पढ़ लिया करो, यह रकअतें तुम को दाख़िली और अन्दरुनी ख़राबी और परेशानी से मामून रखेंगी।

### फ़ज़ की नमाज़ के बारे में इरशादे नबवी

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ज़ की नमाज़ के बारे में इरशाद फ़रमाया कि जो कोई वुजू कर के मस्जिद की तरफ़ जाता है और वहां पहुंच कर नमाज़ पढ़ता है तो उसके हर कदम पर उसके लिए एक नेकी तहरीर की जाती है और एक गुनाह महव कर दिया जाता है, उसको हर नेकी के एवज़ दस गुना दिया जाता है फिर जब वह नमाज़ पढ़ कर उस वक़्त लौटता है जब सूरज के तुलूअ का वक़्त होता है तो अल्लाह तआला उसके बदन के हर बाल के एवज़ उसकी एक नेकी तहरीर फ़रमा देता है और इस तरह वह एक हज्जे मक़बूल का सवाब ले कर वापस होता है और अगर दूसरी नमाज़ पढ़ने तक वह वहीं मस्जिद में मुक़ीम रहे तो उस नशिस्त का बदला अल्लाह तआला उसको दो लाख नेकियां अता फ़रमाता है और जो मुसलमान इशा की नमाज़ पढ़ता है उसको भी यही कुछ बदला अता फ़रमाता है और वह एक मक़बूल उमरा का सवाब ले कर लौटता है।

### हज़रत उसमान का इरशाद

हज़रत उसमान इब्ने अफ़फ़ान फ़रमाते हैं कि मैंने खुद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि जो शख्स जमाअत के साथ इशा की नमाज़ पढ़ता है वह गोया निस्फ़ शब तक नमाज़ पढ़ता है और जो शख्स जमाअत के साथ फ़ज़ की नमाज़ पढ़ता है वह गोया पूरी रात नमाज़ अदा करता है।

### मुनाफ़िकों पर नमाज़े फ़ज़ और नमाज़े इशा भारी थी

अबू सालेह हज़रत अबू हुरैरा की सन्द से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुनाफ़िकों पर नमाज़े फ़ज़ और नमाज़े इशा से बढ़कर कोई चीज़ भारी नहीं थी, अगर वह जानते कि इन दोनों नमाज़ों का कितना अज़्र व सवाब है तो यकीनन वह सर के बल घसीटते आते और मेरा इरादा है कि मैं ऐसे लोगों के घरों को आग लगवा दूं जो हमारे साथ नमाज़ के लिए घरों से नहीं निकलते।



## जवाब के बाद नमाज़

अता बिन यसार ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख्स जवाब के बाद चार रकअतें अच्छी तरह किरअत व रूकूअ व सुजूद के साथ पढ़ता है तो हजार फ़रिशतें उसके साथ नमाज़ पढ़ते हैं और शाम तक उसके लिए मग़फ़िरत का दुआ करते रहते हैं।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जवाब के बाद की चार रकअतें कभी तर्क नहीं फ़रमाते थे, आप उन रकअतों को तवील पढ़ते थे और फ़रमाते थे उस वक़्त आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और मैं पसन्द करता हूँ कि मेरा कोई अमल उस वक़्त उठा लिया जाए।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज किया गया कि या रसूलुल्लाह क्या यह चार रकअतें दो सलामों से पढ़ी जायें? आपने फ़रमाया नहीं (यानी एक सलाम से पढ़ी जायें) नीज़ हुज़ूरे वाला ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जो अस्त्र से पहले चार रकअतें पढ़ ले।

## यक शम्बा की नमाज़

### हज व उमरा की नमाज़

हज़रत अबू हुरैरह से मरवी है की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस ने इतवार के रोज़ चार रकअत नमाज़ पढ़ी और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार अपमनर रसूल पढ़ा अल्लाह तआला उसको हर नसानी मर्द और औरत की नेकियों के बराबर नेकियां देता है। नबी का सवाब महमत फ़रमा कर एक हज और एक उमरा का सवाब उसके अमाल नामे में लिख देता है, हर रकअत के बदला उसको हजार नमाज़ों का अता फ़रमाता है। अलावा अज़ीं अल्लाह तआला जन्नत में हर हर्फ़ के एवज़ उसको मुश्के अज़फ़र से तामीर किया हुआ एक शहर अता फ़रमाएगा।

हज़रत अली मुर्तुज़ा से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इतवार के दिन नमाज़ की कसरत करके अल्लाह तआला की तौहीद बयान किया करो क्योंकि वह यकता है और उसका कोई शरीक नहीं।

अगर इतवार के दिन वह जुहर के फ़र्ज़ और सुन्नतों के बाद कोई शख्स चार रकअत इस तरह पढ़े कि पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के साथ अलीफ़ लाम मीम सजदा और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के साथ तबारकुल मुल्क पढ़े और तशहहुद पढ़ कर सलाम फेरे फिर खड़ा होकर दो रकअतें और पढ़े और उन दोनों रकअतों में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह जुमा की किरअत करेगा और फिर दुआ मांगेगा तो अल्लाह तआला पर उसका हक़ है कि उसकी हाजत पूरी फ़रमाए और उसको ईसाईयों के दीन से महफूज़ रखे।

## दो शम्बा की नमाज़

हज़रत अबू जुबैर हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो



अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने दो शम्बा (पीर) के दिन आफ़ताब बलन्द होने के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़ी और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार आयतल कुर्सी और एक बार सूरह इख़लास और एक एक बार मुऊज़तैन पढ़ कर सलाम फेरा फिर दस मर्तबा असतग़फ़िरुल्लाह और दस बार दरुद शरीफ़ पढ़ा तो अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह बख़्श देगा।

साबित नबानी हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत करते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शरूस् पीर के दिन बारह रकअत इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक मर्तबा आयतल कुर्सी पढ़े, नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद बारह मर्तबा सूरह इख़लास और बारह मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़े तो क़यामत के दिन मुनादी पुकारेगा कि फ़लां का बेटा फ़लां कहां है? वह उठे और अपने सवाब अल्लाह तआला से हासिल करे, उसको सवाब में जो चीज़ पहले अता होगी वह एक हज़ार जोड़े और ताज होगा, उससे कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ उसके इस्तिक़बाल के लिए एक हज़ार फ़रिशते मौजूद होंगे।

## सेह शम्बा की नमाज़

यज़ीद रफ़ाई हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शरूस् मंगल के दिन दस रकअतें निस्फुन्नहार (दोपहर) से क़ब्ल पढ़ेगा (एक रिवायत में है कि दिन चढ़े पढ़ेगा) और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार आयतल कुर्सी और तीन मर्तबा सूरह इख़लास पढ़ेगा तो उसके नाम पर आमाल में सत्तर दिन तक कोई गुनाह नहीं लिखा जाएगा और उस दौरान में अगर वह फ़ीत हो जाएगा तो उसको शहादत की मौत नसीब होगी और उसके सत्तर साल की गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

## चहार शम्बा की नमाज़

अबू इदरीस ख़ौलानी हज़रत मआज़ बिन जबल के हवाले से बयान करते हैं कि हज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शरूस् चहार शम्बा के दिन चाशत के वक़्त बारह रकअतें इस तहर पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा, आयतल कुर्सी एक एक बार और सूरह इख़लास तीन बार, मुऊज़तैन तीन बार पढ़ी जाए तो ऐसे शरूस् को एक फ़रिशता जो अर्श के करीब रहता है पुकार कर कहेगा ऐ अल्लाह के बन्दे! तेरे पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिये गये अब अज़ सरे नौ अमल शुरू कर, अल्लाह तआला उससे अज़ाबे क़ब्र, फ़िशारे क़ब्र और जुल्मते क़ब्र को दूर फ़मा देता है और उससे क़यामत की तमाम मुसीबतों को उठा लेगा, उस बन्दा का उस दिन का अमल नबी के अमल की हैसियत से उठाया जाएगा।

## पन्ज शम्बा की नमाज़

हज़रत इकरमा ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो बन्दा जुमेरात के दिन जुहर व अस्त्र के दर्मियान दो रकअतें इस तरह पढ़े कि पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक सौ मर्तबा आयतल कुर्सी और दूसरी



रकअत में सूरह फातिहा के बाद सौ मर्तबा सूरह इखलास और नमाज़ के बाद सौ मर्तबा मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरुद भेजे तो अल्लाह तआला उसे रजब, शाबान और रमजान के रोज़ों के बराबर सवाब अता फ़रमाएगा अलावा अज़ीं उसको एक हज का सवाब भी मिलेगा उसके नामए आमाल में उन तमाम लोगों के बराबर नेकियां लिखी जायेंगी जो अल्लाह पर ईमान लाये हैं और उस पर तवक्कुल किया है।

## जुमा के दिन की नमाज़

### तमाम दिन इबादत करना

अली बिन हुसैन ने अपने वालिद से और उन्होंने अपने दादा से रिवायत की है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फ़रमाया कि जुमा का पूरा दिन इबादत का है जो शख्स एक दो नेज़ा आफ़ताब बलन्द होने पर अच्छी तरह वुजू कर के अल्लाह तआला के लिए चाश्त की तस्बीह की दो रकअतें सवाब कि नीयत से पढ़े तो अल्लाह तआला ऐसे शख्स के लिए दो सौ नेकियां लिख देता है और उसकी दो सौ बुराईयां माफ़ फ़रमा देता है और जो बन्दा चार रकअत पढ़े अल्लाह तआला जन्नत में उसके चार सौ दर्जे बलन्द फ़रमा देता है जो आठ रकअतें पढ़े अल्लाह तआला बहिश्त में उसके आठ सौ दर्जे बलन्द फ़रमा देता है और उसके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा दिये जाते हैं।

जो शख्स बारह रकअतें पढ़े अल्लाह तआला उसके लिए एक हजार दो सौ नेकियां लिख देता है और उसके एक हजार दो सौ दर्जे बलन्द फ़रमा देता है। हज़रत अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरा के हवाले से रिवायत कि है कि हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने जुमा के दिन सुबह की नमाज़ जमाअत से अदा की फिर तुलूअ आफ़ताब तक मस्जिद में बैठा जिक्रे खुदा करता रहा उसको जन्नतुल फिरदौस में सत्तर दर्जे नसीब होंगे। हर दो दर्जे का दर्मियानी फ़ासला तेज़ रौ घोड़े की सत्तर साला तक कतअ मुसाफ़त के बराबर होगा और जिसने जुमा की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की उसको जन्नतुल फिरदौस में पांच सौ मंज़िलें अता होंगी, हर दो मंज़िलों का दर्मियानी फ़ासला तेज़ रौ घोड़े की पचास साला मुसाफ़त के बक़दर होगा और जिस ने अस्त्र की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी गोया उसने हज़रत इस्माईल को आज़ाद करने का सवाब हासिल किया और जिसने अलैहिस्सलाम की औलाद से आठ गुलामों को आज़ाद करने का सवाब हासिल किया और मग़रिब की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की उसने गोया एक मक़बूल हज और उमरा का सवाब हासिल किया।

### जुहर व अस्त्र के माबैन दो रकअत पढ़ना

मुजाहिद ने हज़रत इब्ने अब्बास के हवाले से नक़ल किया है कि हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख्स जुमा के दिन जुहर व अस्त्र के दर्मियान दो रकअत नमाज़ पढ़ ले और अव्वल रकअत में सूरह फातिहा एक बार, आयतल कुर्सी एक बार और कुल अऊजुबे रबिल फ़लक पच्चीस बार पढ़े और और दूसरी रकअत में सूरह फातिहा एक बार, सूरह अखलास रबिल फ़लक बीस मर्तबा पढ़े उसके बाद सलाम फेर कर पांच एक मर्तबा और कुल अऊजुबे रबिल फ़लक बीस मर्तबा पढ़े उसके बाद सलाम फेर कर पांच



नहीं कर लेगा।  
रिवायत है कि एक आराबी ने हजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में खड़े हो कर अर्ज किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम शहर से दूर सेहरा में आबाद हैं और जुमा को आप की खिदमत में हाजिर नहीं हो सकते, लिहाजा आप मुझे ऐसा अमल बता दें कि जब मैं अपनी कौम में वापस जाऊं तो उनको जुमा की कायम मकाम कोई चीज बता सकूँ।  
हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ आराबी! जुमा का दिन हो तो दिन हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ आराबी! जुमा का दिन हो तो दिन चढ़ने के बाद तुम दो रकअतें इस तरह अदा कर लिया करो कि पहली रकअत में सूरह फातिहा और कुल अऊजुबे रब्बिल फलक और दूसरी रकअत में सूरह फातिहा और कुल अऊजुबे रब्बिन्नास पढ़ो फिर नमाज़ पूरी कर के सलाम फेर दो, इसके बाद बैठे बैठे सात बार आयतल कुर्सी पढ़ो इससे फारिग हो कर फिर आठ रकअतें चार चार करके इस तरह अदा करो कि हर रकअत में सूरह फातिहा के साथ सूरह नसर एक एक बार और सूरह इखलास पचीस मर्तबा पढ़ो, फिर अपनी नमाज़ पूरी कर लो इसके बाद सत्तर मर्तबा ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीईल अजीम पढ़ो, इसके बाद आप ने फरमाया उस जात की कसम जिसके हाथ में मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है जो कोई मोमिन या मोमिना इस नमाज़ को इस तरीका पर पढ़ लेगा जो मैंने बताया है मैं जन्नत में उसका जामिन हो जाऊंगा और वह अपने मकाम से उठने न पाएगा कि अल्लाह तआला उसको और उसके वालिदेन को बख्शा देगा (बशर्त कि वह मुसलमान हों) और अर्श के नीचे से मुनादी निदा देगा कि ऐ खुदा के बन्दे! अब तू अज सरे नौ अमल शुरू कर दे (पिछले तमाम मुनाह माफ़ कर दिए गये) इस नमाज़ की और बहुत सी फज़ीलतें हैं उन सबका बयान तवालत का मौजिब होगा हम ने मज़कूरा नमाज़ के दूसरे मसाएल भी बयान किये हैं और जो जुमा के दिन बारह मर्तबा सूरह इखलास पढ़ी जाने वाली नमाज़ में मज़कूर हैं जो चाहे उस नमाज़ को पढ़े।

## हजरत अबू हुसैरा की रिवायत

हज़रत सईद ने हज़रत अबू हुसैरा से रिवायत कि है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो कोई हफ़ता के दिन चार रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद तीन बार कुल या अय्योहल काफ़ेरून पढ़े और सलाम फेर कर आयतल कुर्सी पढ़े, अल्लाह तआला हर हर्फ़ के एवज़ एक हज और एक उमरा का सवाब देगा और उसके आमाल नामा में एक साल के रोज़ों और रात के क़याम का सवाब दर्ज किया जाएगा और अल्लाह तआला उसको हर हर्फ़ के बदले एक शहीद का सवाब अता फ़रमाएगा, वह शख्स अर्श के साया में शहीदों और नबीयों की सफ़ों में मौजूद होगा।



# हफ़्ता की रातों की नमाज़ें

## शबे यक शम्बा की नमाज़

### हज़रत अनस बिन मालिक की रिवायत

हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि मैंने हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि जो बन्दा इतवार की शब में बीस रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार, सूरह इख़लास पच्चास बार और मरुजतैन एक एक बार और अल्लाह तआला से सौ बार इस्तिग़फ़ार करे अपने नफ़्स और वालिदैन् के लिए सौ बार इस्तिग़फ़ार करे और मुझ पर सौ बार दरूद भेजे और अपने इज्ज का इज़हार करे और अल्लाह तआला की कुव्वत और कुदरत के सामने झुक जाए और यह पढ़े।

तो ऐसे शख्स का हश्र कयामत के दिन अमन पाने वालों के साथ होगा और अल्लाह तआला के करम के जिम्मा होगा कि वह उसको जन्नत में अम्बिया के साथ दाखिल फ़रमा दे।

## शबे दो शम्बा की नमाज़

### नमाज़े हाजत

आमश ने हज़रत अनस के हवाले से बयान किया है कि हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख्स दो शम्बा की शब में चार रकअत नमाज़ इस तरह अदा करे की कि पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार सूरह इख़लास दस बार पढ़े और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह इख़लास बीस बार पढ़े तीसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह इख़लास तीस बार पढ़े और चौथी रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह इख़लास चालिस बार पढ़े फिर तशहहुद पढ़कर सलाम फेर दे और सलाम के बाद 75 मर्तबा सूरह इख़लास पढ़े और अल्लाह तआला से अपने और अपने वालिदैन् के लिए 75 बार इस्तिग़फ़ार करे फिर मुझ पर 75 बार दरूद भेजे और उसके बाद अपनी हाजत तलब करे तो खुदा पर हक हो जाता है की उसका सवाल पूरा करे उस नमाज़ को नमाज़े हाजत कहा जाता है।

हज़रत अबू ओमामा से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख्स शबे दो शम्बा को दो रकअत इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद पन्द्रह मर्तबा सूरह इख़लास पढ़े फिर नमाज़ पूरी करके सलाम फेरे और उस के बाद पन्द्रह मर्तबा आयतल कुर्सी और पन्द्रह मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़े तो अल्लाह तआला उसका नाम जन्नती लोगों में मुक़र्रर फ़रमा देता है ख़्वाह वह अहले दोजख़ से क्यों न हो और उस के तमाम जाहिरी गुनाह बख़्श देगा उसको हर आयत के बदला हज वगैरह का सवाब अता फ़रमाएगा और अगर दूसरे दो शम्बा के दर्मियान वह फौत हो गया तो उसको शहीद का दर्जा मिलेगा।



## शबे सह शम्बा की नमाज़

हदीस शरीफ में आया है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो कोई सह शम्बा की शब में दस रकअत नमाज़ पढ़े और हर रकअत में सूरह फातिहा एक बार और सूरह नसर पांच बार पढ़े तो अल्लाह तआला उसको जन्नत में एक ऐसा घर अता फरमाएगा जो तूल व अर्ज के एतबार से दुनिया से सात गुना बड़ा होगा।

## शबे चहार शम्बा की नमाज़

हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि बुध की रात में दो रकअत नमाज़ इस तरह पढ़ो कि सूरह फातिहा के बाद दस बार सूरह फलक पहली रकअत में और दूसरी रकअत में सूरह फातिहा के बाद दस बार सूरह नास तो हर आसमान से सत्तर हज़ार फरिश्ते उतर कर आते हैं और उस नमाज़ी के लिए क़यामत तक सवाब कहते रहते हैं।

## शबे पन्ज शम्बा की नमाज़

हज़रत अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरा के हवाले से नक़ल किया है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो बन्दा जुमेरात की रात में मगरिब व इशा के दर्मियान दो रकअतें इस तरह अदा करे कि हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद पांच बार आयतल कुर्सी पांच बार सूरह इख़लास और मऊज़तैन पढ़े फिर नमाज़ से फ़ारिग हो कर पन्द्रह बार अस्तग़फ़िरुल्लाह पढ़ कर उसका सवाब अपने वालिदैन् को पहुंचाए तो गोया उसने वालिदैन् का हक़ अदा कर दिया अगरचे वह अपने वालिदैन् का नाफ़रमान और आक कर्दा बेटा ही क्यों न हो अल्लाह तआला उसको सिद्दीकीन् और शुहदा का दर्जा अता फरमाएगा।

## शबे जुमा की नमाज़

### हज़रत जाबिर की रिवायत

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रिवायत करते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहे अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस ने शबे जुमा में मगरिब व इशा के दर्मियान बारह रकअत इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फातिहा के बाद दस मर्तबा सूरह इख़लास पढ़ी गोया उस ने बारह साल तक दिन के रोज़े रखे और रात की इबादत की।

### लैलतुल क़द्र की इबादत का सवाब

कसीर बिन सलमा ने हज़रत अनस बिन मालिक के हवाले से बयान किया है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो कोई इशा की नमाज़ जुमा की शब में बा जमाअत अदा करे और उसके बाद वह शख्स दो रकअत सुन्नत अदा कर ले और उसके बाद दस रकअत नफल पढ़े और हर रकअत में सूरह फातिहा एक बार और मऊज़तैन और सूरह



इखलास एक एक बार पढ़े फिर तीन रकअत वित्र अदा कर के अपनी दाहिनी करवट पर सो जाए और मुंह किब्ला की तरफ रखे तो उसका अज्र यह है कि गोया उसने तमाम शबे कद्र इबादत में बसर की।

## शबे जुमा में दरुद की कसरत

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह भी इरशाद है कि जुमा की अजीमुश्शान रात और ताबनाक दिन में मुझ पर कसरत से दरुद भेजा करो।

## शबे शम्बा की नमाज़

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो बन्दा हफ़ता की शब में मगरिब और इशा के माबैन बारह रकअत नमाज़े नवाफ़िल अदा करे तो अल्लाह तआला जन्नत में उसके लिए एक कस्र बना देगा (अता फ़रमा देगा) गोया उसने हर मोमिन और मोमिना के हक़ में सदका अदा किया और यहूदियत से बेज़ारी का इज़हार किया और फिर खुदा वन्द तआला के करम के ज़िम्मा है कि उसे बख़्श दे।

## नफ़लों की अदाएगी

तौबा के बयान में हम मुफ़स्सलन यह कह चुके हैं कि फ़राएज़ और सुनन की अदाएगी के बाद नफ़ल नमाज़ों, रोज़ों और सदक़ात अदा करने की तरफ़ तवज्जोह की जाए, फ़राएज़ व सुनन को अदा किए बग़ैर इन इबादाते नाफ़िला में मशगूल न हो अगर इन फ़राएज़ की तकमील नहीं कर सका है तो मज़कूर दिन रात के नवाफ़िल में मुख़तलिफ़ुन नौ फ़राएज़ ही की कज़ा की नीयत करे ताकि फ़राएज़ उससे साक़ित हो जायें (नफ़ल फ़राएज़ की कमी को कर देते हैं) अल्लाह तआला अपने फज़ल व करम से उसके लिए ज़्यादा से ज़्यादा अज्र जमा कर देगा जब वह उन तमाम फ़राएज़ की अदाएगी से सुबुकदोश हो जाए तो फिर मज़कूरा औकात में नवाफ़िल की नीयत की जाए।

## सलातुत्तसबीह और इसकी फ़ज़ीलत

सलातुत्तसबीह सगीरा और कबीरा गुनाहों को माफ़ करा देती है

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास से बयान किया कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अम्मे मुहतरम हज़रत अब्बास से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि ऐ चचा! क्या मैं तुम को ऐसी दस बातें बता दूँ की अगर तुम उन पर अमल पैरा हो जाओ तो अल्लाह तआला तुम्हारे अगले पिछले, नए पुराने सब गुनाह ख़्वाह वह बिल इरादा हों या बग़ैर इरादा, सगीरा हों या कबीरा, पोशीदा हों या ज़ाहिर सबके सब माफ़ फ़रमा दे और यह दस बातें यह हैं कि तुम चार रकअत नमाज़ पढ़ो, जिस कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा और जो सूरह याद हो पढ़ो, पहली रकअत में सना के बाद 15 बार और क़िरअत के बाद 10 बार यह पढ़ो



सुब्हानल्लाहे वल हम्दो लिल्लाहे वला इलाहा इल्लाहो वल्लाहो अकबर फिर रुकूअ में इसी तसबीह को दस मरतबा पढ़ो फिर रुकूअ से सर उठा कर और कौमा में इस तसबीह को दस बार पढ़ो फिर सजदा में दस बार यही तसबीह पढ़ो पहले सजदा के बाद जलसा में बैठो तो यही तसबीह दस बार पढ़ो इस तरह हर रकअत में पचहत्तर दफा यह तसबीह होगी इस तरह तुम चार रकअतों में यह तसबीह पढ़ो। अब अगर तुम को कुदरत है तो यह नमाज़ रोज़ाना पढ़ो, वरना हर जुमा को पढ़ लिया करो अगर यह भी न हो सके तो साल में एक मरतबा पढ़ लो और यह भी न हो सके तो तमाम उमर में एक बार पढ़ लो।

दूसरी हदीस में है कि पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा और उसके साथ सूरह आला, दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह ज़िलज़ाल पढ़ें, तीसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह काफ़ेरून और चौथी रकअत में सूरह फ़ातिहा और सूरह इख़लास पढ़ी जाए।

इमाम अबू नसर ने अपने वालिद कि सनद से साथ हम से जो हदीस बयान की है उसमें ख़िताब हज़रत अबू जाफ़र बिन अबू तालिब से फ़रमाया है और इस तरह आख़िर बताया है। यह भी कहा गया है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह हदीस उमर बिन आस से मुख़ातिब हो कर फ़रमाई लेकिन इस हदीस में हालते क़याम में दस तसबीहें मज़ीद बताई गई हैं (यानी 25 बार) इस के अलावा और किसी हैयत में तसबीह पढ़ने का ज़िक्र नहीं है।

## तीन सौ तसबीहें

बाज़ रिवायतों में आया है कि यह सब तीन सौ तसबीहें हैं यानी चारों रकअतों की तसबीहात तीन सौ हैं एक रिवायत में यह सब तमाम तसबीहों की तादाद एक हजार दो सौ है इस तसबीह के चार जुमले हैं सुब्हानल्लाह, वल हम्दो लिल्लाह, वला इलाहा इल्लाह, वल्लाहो अकबर। अगर इन चारों को तीन से ज़र्ब दें तो बारह सौ बनते हैं इस तरह तीन सौ बार पढ़ना साबित है।

नमाज़ को जुमा के दिन दो मरतबा पढ़ना, एक मरतबा दिन और एक मरतबा रात में मुस्तहब है।

# नमाज़े इस्तख़ारा और उसकी दुआएं

## इस्तख़ारा की तालीम

मुहम्मद बिन मंकदर ने हज़रत जाबिर के हवाले से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर काम के लिए इस्तख़ारा कि तालीम हम को इस तरह दी जिस तरह आप ने कुरआन की सूरतों की तालिम दी। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जब तुम्हें कोई काम दर पेश हो या सफ़र का इरादा हो तो दो रकअत नमाज़ नफ़ल पढ़ करे यह दुआ पढ़ो।

इलाही मैं तुझ से तेरे इल्म के ज़रिये ख़ैर की दरख़्वास्त करता हूँ और तेरी कुदरत से तेरी मदद और तेरी इस्तक़ामत चाहता हूँ मैं कादिर नहीं हूँ साहबे कुदरत तू है मैं नादान हूँ और तू दाना है, इलाही! ग़ैब का इल्म तुझ ही को है, इलाही! तूही जानता है यह काम मेरे दीन, मेरी दुनिया, मेरी आख़िरत और मेरे अन्जाम में बेहतर है। जल्दी या देर में, फ़ायदा देने वाली ही जो चीज़ मेरे हक़



में बेहतर हो और मेरे लिए फायदा बरखा हो वह मेरे लिए मुकद्दर और आसान कर। उसमें मुझे बरकत दे और अगर ऐसी न हो तो मुझ से दूर रख और जिस जगह मैं हूँ वहाँ मेरे लिए नेकी और आसान कर दे जब तक मैं दुनिया में रहूँ मुझे अपने हुक्म से खुशनूद कर तू अरहमर्राहेमीन है।

## सफ़र, तिजारत, हज व ज़ियारत के लिए इस्तख़ारा

अगर कोई शख्स किसी सफ़र या किसी तिजारत के अज़्म रखता हो तो अपनी दुआए इस्तख़ारा में इन अल्फ़ाज़ को और बढ़ाये।

ऐ अल्लाहफ! मैं उस तरफ़ अपने मकसद के लिए जाना चाहता हूँ तेरे सिवा मेरा और कोई सहारा नहीं और ने तेरी जात के सिवा किसी और से उम्मीद है न ही कुव्वत है कि उस पर तबक्कुल करूँ और न ही तेरे सिवा कोई और चारा है कि उसकी पनाह हासिल करूँ मगर मैं तेरे फज़ल का तलबगार हूँ तुझ से तेरी रहमत और नेकियों का ख्वास्तगार हूँ मैं तेरी इबादत पुर सुकून तरीक़े पर करना चाहता हूँ ऐ अल्लाह तू मेरे उस रास्ते की राहतों और कुलफ़तों को पहले से ख़ूब जानता है, अल्लाह तू अपनी कुदरत से मुझ पर आई हुई हर बला को टाल दे और हर सख़्ती को मुझ पर आसान कर दे और बीमारी को दूर फ़रमा दे और मुझे अपनी रहमत की चादर से ढांप ले और मुझ पर अपनी मदद से करम फ़रमा, मुझ को अपनी हिफ़ाज़त और पूरी तरह से आफ़ियत में रख।

यह दुआ पढ़ कर सामाने सफ़र उठाए, सफ़र शुरू कर दे और यह पढ़े।

इलाही! तेरा फैसला मुझ पर बर हक़ है, मेरी उम्मीद को नेक बना और जिस चीज़ से मैं डरता हूँ उससे मुझे बचा जिस को तू मुझ से ज़्यादा जानता है और इस सफ़र को मेरे लिए दीन और आख़िरत की भलाई बना दे, ऐ अल्लाह मैं तुझ से ख़याल करता हूँ तू निगरां बन जा मेरे इन अहल व अयाल का और उन अजीजों का जिनको मैं पीछे छोड़ आया हूँ जिस तरह तू तमाम मोमिनीन के घरों की हिफ़ाज़त फ़रमाता है और उनको हर मुजरत से बचाता है, उनसे हर तकलीफ़ को दूर करता है हर रंज व ग़म को रफ़ा करता है दुनिया और आख़िरत में अपनी रज़ा और ख़ूशनूदी से मेरी दिलजोई फ़रमा अपनी याद और अपना शुक्र नसीब कर (मुझे तौफीक़ अता कर) अपनी इबादत और नेकी सिखा, मुझ से राज़ी हो और मुझे बहिश्त में दाख़िल कर तू तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

मुसाफ़िर को दौराने सफ़र में यह दुआ बकसरत पढ़ना चाहिए इस लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस दुआ को बकसरत पढ़ा करते थे।

तमाम तारीफ़ें उस खुदा के लिए है जिस ने मुझे पैदा किया जब कि मैं कुछ भी तो न था, ऐ अल्लाह दुनिया की परेशानियों, ज़माने की सज़बतों और रात दिन की मुश्किलों में मेरी मदद फ़रमा और मुझ को ज़ालिनों के शर से बचा, इलाही तू सफ़र में मेरा साथ दे और मेरे घर वालों के लिए निगरां बन जा, मेरी रोज़ी में बरकत अता फ़रमा मुझे अपनी आंखों में तू ज़लील रख लेकिन लोगों के निगाहों में इज्ज़त दे, मुझे सेहतमंद रख, मेरे आज्ञा दुरुस्त रख और मेरे रब मुझे अपना दोस्त बना, मैं तेरी उस शान वाली जात की पनाह चाहता हूँ जिस ने तमाम आसमान रौशन किए और जिससे तमाम तारीकियां छट गई हैं और जिस रौशनी से गुज़श्ता और आइन्दा आने वालों के काम सुधर गये मैं तुझ से पनाह चाहता हूँ कि तू मुझ पर अपना ग़ज़ब नाज़िल



न फरमाना और नाराज़गी का इज़हार न फरमाना। इलाही मैं तेरी जानिब बक़्दर अपनी ताक़त व इस्तेताअत के रूजूअ होता हूँ और नहीं है कोई ताक़त और कुव्वत सिवाए अल्लाह के। इलाही मैं पनाह चाहता हूँ तेरे ज़रिया सफ़र की मुशक्क़त और नाकाम वापस आने से और फ़राखी व आसूदगी के बाद तंगी से और मज़लूम की बददुआ से, ऐ अल्लाह हमें रास्ता तय करा दे और हम पर इस सफ़र को आसान फ़रमा दे मैं तुझ से बेहतर बात का ख्वाहां हूँ और तुझ से मग़्फ़िरत तलब करता हूँ और तेरी रज़ा का तालिब हूँ मैं तुझ से तमाम भलाईयां चाहता हूँ बेशक तू तमाम बातों पर कुदरत रखने वाला है।

## घर से निकलते वक़्त की दुआ

जब सफ़र के लिए अपने घर से निकले तो पढ़े

बिस्मिल्लाहे तवक्कलतो अलल्लाहे वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह।

एक हदीस में इस तरह आया है कि (उसके जवाब में) फ़रिश्ते कहते हैं तेरी हिफ़ाज़त की गई, तुझे बचा लिया गया, तेरी हिमायत की गई।

## सवार होते वक़्त की दुआ

जब मुसाफ़िर सवार हो तो तीन बार अलहम्दो लिल्लाह कहे इस के बाद यह दुआ पढ़े।

जिसने इस (सवारी) को मेरा ताबेअ किया वह ज़ात पाक है यह ताक़त मुझ में तो न थी कि मैं इस को काबू में रख सकूँ ऐ अल्लाह तेरी ज़ात पाक है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं इलाही मैंने अपनी जान पे जुल्म किया है मुझे बख़्श दे तेरे सिवा कोई दूसरा बख़्शाने वाला नहीं।

यह दुआये मज़कूरा बाला को हुजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इसी तरह मरवी है, हज़रत इब्ने उमर से मरवी हदीस में इस तरह है कि जब आप सफ़र फ़रमाते और सवारी पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो इस तरह फ़रमाते।

इलाही! मुझे इस सफ़र में परहेज़गारी अता फ़रमा, मुझे ऐसे अमल की तौफ़ीक़ दे जो तेरी रज़ामंदी का मौजिब हो, मेरा सफ़र आसान फ़रमा दे, ज़मीन की दूरी व दराज़ी हम पर आसान फ़रमा दे ताकि मैं इस को आसानी से तय कर लूँ ऐ अल्लाह सफ़र में तू ही मेरा मददगार है तू ही हमारे पीछे हमारे घर वालों का निगहबान है।

इस दुआ में इब्ने सरीह की रिवायत के ब मौजिब यह अल्फ़ाज़ जायद हैं।

इलाही मैं तेरे ही ज़रीये पनाह चाहता हूँ, सफ़र की तकलीफ़ से और नाकाम लौटने से और अपने घर वालों और अपने माल को तबाह हाल व बरबाद देखने से।

जब मुसाफ़िर किसी गांव व शहर में दाख़िल हो तो जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मनकूल है यह पढ़े।

ऐ आसमान और उनके जेरे साया तमाम अशिया के मालिक, ऐ सातों ज़मीनों और उन चीज़ों के मालिक जिनको यह अपने ऊपर उठाए हुए हैं, ऐ शैतानों और उनकी गुमराहियों के मालिक मैं तुझ से इस करिया की और इसके बाशिन्दो और जो कुछ इस में मौजूद है उसकी भलाई का ख्वाहां हूँ, मैं इस बस्ती के, इसके बाशिन्दों के और इसके हर दाख़िली शर से तेरी पनाह मांगता हूँ मैं तुझ से इस बस्ती के नेक लोगों की दोस्ती और मोहब्बत और यहां के अशरार के हिफ़ाज़त चाहता हूँ।



# चोर, डाकू और दरिन्दों से

## महफूज रहने की दुआ

दौराने सफ़र चोर, डाकूओं और दरिन्दों से महफूज रहने के लिए यह दुआ पढ़े।

इलाही! हमारी निगहबानी फ़रमा अपनी उस आंख से जो कभी सोई नहीं और अपनी उस ताकत से हम को पनाह दे जिस कि मुखालिफ़त का कोई कस्द नहीं कर सकता तू हम पर कादिर है उसी कुदरत से हम पर रहम फ़रमा, तू हमारी उम्मीद है हम हलाक नहीं होंगे।

हज़रत उसमान फ़रमाते हैं कि मैंने सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि जिसने अपने सफ़र की पहली रात में तीन मर्तबा यह पढ़ लिया उसके पढ़ने वाले को सुबह तक कोई नागहानी बला (दरिन्दा, डाकू वगैरह) ग़ज़न्द नहीं पहुंचाएगा (उसको नहीं घेरेगा)।

## हिफ़ाज़त की दुआ

अल्लाह के नाम से शुरू (करता हूँ) जिसे आसमान व ज़मीन की कोई चीज़ ज़रूर नहीं पहुंचाती वह हर बात को सुनता है और हर चीज़ का इल्म रखता है।

## अबू सईद का वाक़िया

अबू युसूफ़ ख़ुरासानी ने अबू सईद बिन अबी रुहा के हवाले से नक़ल किया है कि उन्होंने कहा मैं एक रात मक्का के सफ़र में रास्ता भूल गया अचानक मैंने अपने पीछे आहट सुनी तो बहुत घबराया कि कौन है जब मैंने गौर से सुना तो मालूम हुआ कि कोई शख्स कुरआन पाक की तिलावत कर रहा है, थोड़ी देर के बाद वही साहब मेरे पास आ गए और कहने लगे मेरा ख़याल है कि तुम रास्ता भूल गए हो मैंने कहा जी हां ऐसा ही है इस पर उन्होंने कहा मैं तुम को वह चीज़ न बता दूँ कि जब तुम कभी रास्ता भूलने के बाद उसको पढ़ लो तो तुम को फ़ौरन रास्ता मिल जाए और अगर डर महसूस हो रहा हो तो उसके पढ़ने से डर जाता रहे, या बे ख़्वाबी की शिकायत है वह शिकायत दूर हो जाए, मैंने कहा ज़रूर बताइये उन्होंने के पढ़ो:

उस खुदा के नाम से शुरू करता हूँ जो साहबे रूतबा है उसकी दलील बहुत अज़ीम है, उसकी कुदरत बड़ी सख़्त है हर दिन वह नई शान में है, मैं शैतान से खुदा की पनाह चाहता हूँ वही होता है जो अल्लाह को मन्ज़ूर होता है कोई ख़ौफ़ नहीं और कोई कुव्वत नहीं सिवाए अल्लाह तआला के।

जब मैंने इस दुआ को पढ़ा तो अचानक मैंने खुद को अपने हम सफ़रों में पाया, उस वक़्त मैंने उन साहब को बहुत तलाश किया लेकिन नहीं मिले। अबू हिलाल फ़रमाते हैं कि मैं मिना में अपने हमराहियों से बिछड़ गया उस वक़्त मैंने यह दुआ पढ़ी अचानक मुझे मेरे हमराही मिल गए।

## यह दुआ ग़म व अलम रफ़ा करती है

हज़रत अबू दरदा से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख्स सात मर्तबा यह दुआ पढ़े:



बेशक अल्लाह तआला ऐसा मालिक है कि उसने कुरआन पाक नाज़िल फ़रमाया और जिस क़दर नेकोकार लोग हैं उनका वह वाली है और वही अल्लाह काफी है, उस के सिवा कोई और माबूद नहीं है मैंने उसी पर तवक्कुल किया और वह अर्श अज़ीम का परवरदिगार है।

उसके तमाम ग़म ख़्वाह वह वाकई हों या ग़ैर वाकई इन्शाअल्लाह सब दूर हो जायेंगे। हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने मुसीबत के वक़्त ला इलाहा इल्लाह हुवल्लाहुल अलीमो सुबहनल्लाहे रब्बिल अर्शिल अज़ीम अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन (ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं वह हर बात का जानने वाला है करीम है, पाक है और वह अर्श अज़ीम का मालिक है, तमाम हम्द उसी के लिए है वह तमाम आलम का पालने वाला है।) पढ़ा तो अल्लाह तआला उसके तमाम ग़म और उसकी मुसीबत को दूर फ़रमा देता है।

## नमाज़े किफ़ायत

वह नमाज़ जो तमानियते क़ल्ब के लिए पढ़ी जाती है

नमाज़े किफ़ायत से तमानियते क़ल्ब हासिल होती है

इस नमाज़ की दो रकअतें हैं इस नमाज़ को जिस वक़्त चाहें पढ़ें (वक़्त की क़ैद नहीं है) इसकी हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक मर्तबा सूरह इख़लास दस मर्तबा और सयक फ़ीक़हुमुल्लाहो व हुस्समीउल अलीम पचास बार पढ़ें फिर सलाम फेर कर इन अल्फ़ाज़ के साथ दुआ मांगें।

ऐ अल्लाह, ऐ रहमान, ऐ शफीक, ऐ मोहसिन, ऐ वह हस्ती जिसकी पाकी हर ज़बान से बयान की जाती है, ऐ वह ज़ाते पाक जिसके दोनों हाथ भलाई के साथ कुशादा हैं, ऐ अहज़ाब से हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बचाने वाला, ऐ हज़रत इब्रहीम को आग से नजात बख़्शने वाले, ऐ हज़रत मूसा को फिरऔन से नजात देने वाले, ऐ हज़रत ईसा को ज़ालिमों से नजात बख़्शने वाले, ऐ हज़रत नूह को तूफ़ान से निकालने वाले, ऐ हज़रत लूत को उनकी क़ौम की बदकारियों से दूर रखने वाले, ऐ हर चीज़ से बचाने वाले मुझे हर मुशकिल से बचा ताकि न मैं डरूं और न ही ख़ौफ़ खाऊं, तेरे उस नाम की वजह से जो सबसे अज़ीम है।

जो शख्स इस नमाज़ को पढ़ेगा उसके ग़मों और तबाह हालियों और शिकस्तगीए ख़ातिर को यह नमाज़ दूर कर देगी।

## इज़ालए दुशमनी की नमाज़

नमाज़ दफ़ए ख़सूमत

इस नमाज़ की चार रकअतें हैं यह चारों रकअतें एक ही सलाम के साथ पढ़ी जाती हैं पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह इख़लास ग्यारह मर्तबा और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह इख़लास दस बार और सूरह काफ़िरून तीन बार पढ़ें तीसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के साथ सूरह इख़लास दस मर्तबा और सूरह तकासुर तीन बार पढ़ें, चौथी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद पन्द्रह बार सूरह इख़लास और एक मर्तबा आयतल कुर्सी पढ़ें फिर इसका



सवाब अपने दुश्मनों को बख्श दे, इनशा अल्लाह तआला क़यामत के दिन के मामला में अल्लाह तआला काफ़ी होगा।

## नमाज़े ख़सूमत के औकात

यह नमाज़ इन सात औकात में पढ़ी जाती है माहे रजब की पहली रात, शबे निस्फ़ माहे शाबान, माहे रमज़ान के आख़िरी जुमा को, दोनों ईदों के दिन, यौमे अरफ़ा और यौमे आशूरा पर।

## सलाते उत्क़ा

### सलाते उत्क़ा शव्वाल में पढ़ी जाती है

शैख़ हज़रत अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद के साथ हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो कोई माहे शव्वाल की किसी रात या किसी दिन में इस नमाज़ की आठ रकअत को इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद पन्द्रह बार सूरह इख़लास पढ़ी जाए नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद 70 बार सुब्हानल्लाह पढ़े फिर रसूले मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सत्तर मर्तबा दरूद व सलाम भेजे तो क़सम है उस ज़ात की जिसने नबीए बरहक़ मबऊस फ़रमाया कि इस नमाज़ के पढ़ने वाले के दिल में अल्लाह तआला हिकमत के चशमे रवां फ़रमा देगा। और ज़बान को नुत्के शीरीं अता फ़रमायेगा दुनिया के अमराज़ और उसका इलाज़ उसको बता देगा और क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझे नबीए बरहक़ बना कर मबऊस फ़रमाया कि अल्लाह तआला इस नमाज़ के पढ़ने वाले को बख़्श देगा क़बूल इसके कि वह सजदा से सर उठाए। अगर इस दौरान उसका इन्तेक़ाल हो जाए तो उसकी शहीद का दर्जा दिया जाएगा जिसके सारे गुनाह बख़्श दिए गये हों और कोई शख्स ऐसा नहीं कि उसने असनाए सफ़र नमाज़ पढ़ी हो और उसका मक़सूद आसान न बना दिया गया हो अगर इस नमाज़ का पढ़ने वाला कर्ज़दार है तो उसका कर्ज़ अदा करा देता है और अगर वह ज़रूरतमंद है तो उसकी ज़रूरत पूरी करा देता है और क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझे दीने बरहक़ दे कर भेजा कि जिसने यह नमाज़ पढ़ी है अल्लाह तआला उसको हर हर्फ़ और हर आयत के बदला जन्नत में एक मख़रफ़ा अता फ़रमएगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया गया कि हुज़ूर ने मख़रफ़ा क्या है? हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह जन्नत में चन्द बाग़ हैं इतने तवील व अरीज़ कि अगर एक सवार एक सौ साल तक उसके दरख़्तों के साया में क़तए मुसाफ़त करे तब भी उसको तय न कर सके।

## अज़ाबे क़ब्र दूर करने वाली नमाज़

### नमाज़ दाफ़ेअ अज़ाबे क़ब्र की फ़ज़ीलत

हज़रत अली ने हज़रत हसन से और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि कोई यह दो रकअत नमाज़े नफ़ल इस तरह पढ़े कि पहली रकअत में सूरह फुरक़ान का आख़िरी रूकूअ, अख़ीर सूरह तक



और दूसरी रकअत में सूरह फातिहा के बाद सूरह मोमिनून की इब्तिदा से फतबारकल्लाहो अहसनुल खालेकीन तक, तो ऐसा शख्स जिन्नात और इंसानों के शर और फरेब से महफूज रहेगा और उसका आमाल नामा हशर के दिन उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा।

## इस दुआ के फज़ाइले औसाफ़

अज़ाबे क़ब्र और अजीम इज़्तिराब से उसको अमन दे दिया जाएगा तो अल्लाह तआला उसको कुरआन का इल्म अता फ़रमाएगा ख़्वाह वह कुरआन आमोज़ी की ख़्वाहिश भी न रखता हो। अल्लाह तआला उसकी मोहताजी और ग़रीबी को दूर फ़रमा देगा, शान व शौकत अता फ़रमाएगा, उसको कुरआन फ़हमी की बसीरत अता होगी, क़यामत के दिन हिसाब फ़हमी और बाज़ पुर्स के वक़्त मुदलल्ल ज़वाब देना उसको सिखा दिया जाएगा, उसके दिल में नूर पैदा कर दिया जाएगा, जब दूसरे लोग ग़मगीन होंगे तो उसके लिए कोई ग़म न होगा न उसे कोई ख़ौफ़ होगा। अल्लाह तआला उसकी आंखों में रौशनी पैदा कर देगा उसके दिल से दुनिया की मुहब्बत महव हो जाएगी उसका नाम अल्लाह तआला के पास सिद्दीकीन में लिखा जाएगा।

## नमाज़े हाजत

### नमाज़े हाजत किस तरह अदा की जाए

नमाज़े हाजत के सिलसिले में अबुल हाशिम ने हज़रत अनस बिन मालिक के हवाला से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख्स को अल्लाह तआला से कोई हाजत तलब करना हो या उसको कोई सख़्त मुश्किल दरपेश हो तो अच्छी तरह वुजू कर के यह दो रकअत नमाज़ (नफ़ल) पढ़े पहली रकअत में सूरह फातिहा और उसके साथ आयतल कुर्सी और दूसरी रकअत में सूरह फातिहा के बाद आमनररसूलो बिमा उन्ज़ेला इलैहे मिर्रब्बेही बल मोमेनून से फ़न्सुरना अलल कौमिल काफ़ेरीन तक पढ़े फिर तशहहुद व दरूद पढ़ कर सलाम फ़ेरे और उसके बाद यह दुआ पढ़े।

ऐ अल्लाह हर अकेले के ग़म गुसार हर यगाना के यार व मददगार, ऐ वह करीब कि किसी से दूर नहीं, तू हर वक़्त बाख़बर है, तू कभी किसी से दूर नहीं होता, तू ग़ालिब है किसी से मग़लूब नहीं होता मैं तुझ से तेरे उस नाम की ताक़त मांगता हूँ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ऐ वह कि कभी तुझे कभी औंघ और नींद नहीं आती बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तू हमेशा काइम है सबके मुंह आजिज़ी और लजाजत के साथ तेरी तरफ़ लगे हैं, सब आवाज़ें तेरे हुज़ूर आजिज़ी कर रही हैं तमाम दिल तेरे ख़ौफ़ से कांप रहे हैं तू मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर दरूद व सलाम भेज मेरे काम में कुशादगी पैदा कर दे और मेरी हाजत पूरी फ़रमा।

तो इसके पढ़ने वाले की हाजत और मुराद पूरी हो जाएगी।



# मुसीबत और जुल्म से नजात पाने की दुआ

**रसूलुल्लाह ने हजरत अली और हजरत फातिमा को यह दुआ सिखाई**

हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हजरत अली और हजरत फातिमा को यह दुआ सिखाई थीं और फरमाया था कि जब तुम पर कोई मुसीबत आए या किसी हाकिम के जुल्म का डर हो या तुम्हारा कोई जानवर गुम हो जाए तो ऐसी सूरत में अच्छी तरह वुजू कर के दो रकअत नमाज़ (नफ़ल) पढ़ो फिर दोनों हाथ ऊपर की तरफ फैला कर यह पढ़ो।

ऐ ग़ैब और राज़ की बातों के जानने वाले, हर चीज़ की बाज़ग़श्त तेरी ही तरफ़ है तू सब दिलों के नज़दीक अज़ीज़ है ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह, अपने रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुश्मन गरोहों को शिकस्त देने वाला तू ही है, हजरत मूसा के लिए फिरऔन को तूने ही सज़ा दी थी, ऐ हजरत नूह की कौम को गर्क होने से बचाने वाले, हजरत याकूब की अश्कबारी पर तूने ही रहम ख़ाया था। हजरत युनूस को तीन रातों की तारीकी से नज़ात तूने ही दी थी इलाही तू ही हर नेकी का पैदा करने वाला है तू ही हर नेकी की तरफ़ रास्ता दिख़ा वाला है, तू ही नेकी का साहब व मालिक है तू ही साहबे ख़ैरात है इलाही जिस चीज़ को तू मुफ़ीद जानता हो मैं उसके लिए तुझ से सवाल करता हूँ मैं तुझ ही से दरख़्वास्त करता हूँ कि तू आंहजरत और उनकी आल पर दरूद भेजे।

यह दुआ पढ़ने के बाद अपनी हाज़त और मुराद तलब करो, इन्शा अल्लाह ज़रूर कबूल होगी।

## जुल्म से महफूज़ होने की दूसरी दुआ

दुश्मनों के शर और जुल्म से महफूज़ रहने के लिए दूसरी दुआ वह है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंगे अहज़ाब के रोज़ की थी।

हजरत उमर से रिवायत है कि वह दुआ यह है:

इलाही मैं तेरे हुज़ूर अमन की दरख़्वास्त करता हूँ तेरे पाक नूर और तेरी बुजुर्गी और तेरे जलाल की बरकतों के ज़रिये से हर आफ़त और हर रंज व जुनून और इंसानों की बलाओं से अमन चाहता हूँ मैं उस पर राज़ी हूँ जो कुछ तेरी तरफ़ से मुझे पहुंचे मेरी पनाह तू ही है मैं तुझ ही से पनाह मांगता हूँ मेरी अमन की जगह (मामन) तू ही है, सब गर्दन कशों की गर्दनें तेरे हुज़ूर में ख़म हैं और वह तेरे सामने ज़लील व ख़्वार हैं अपनी मख़लूक की हिफ़ाज़त और उनकी निगहबानी की चाबियां तेरे ही ख़जाने में मौजूद हैं मैं तेरी ज़ात के जलाल के सदक़ा में तुझ ही से अमन चाहता हूँ और तेरे हुज़ूर रूसवा होने से महफूज़ होने की दरख़्वास्त करता हूँ इलाही मेरी पर्दादरी न की जाए मैं तेरी याद से फ़रामोशी इख़्तियार न करूँ और तेरा शुक्र अदा करने से बाज़ न आऊँ।

रात के वक़्त, दिन के वक़्त, सोते में, जागते में, आराम में, सफ़र में, वतन में, तेरी पनाह में, रहने की दरख़्वास्त करता हूँ तेरा ही ज़िक्र तेरा ही ज़िक्र मेरा शिआर हो और तेरी ही तारीफ़ मेरा



दसार (लिबास) हो तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है तू पाक है मैं तेरे नाम को बिल्कुल पाक जानता हूँ मुझे रूसवाई से महफूज रख, अजाब और अपने बन्दों की बुराई से मुझे बचा, मेरे लिए निगहबानी और अपनी हाजत के खेमे खड़े कर दे और अपनी रहमत के दरवाजे खोल कर मुझे गनी फरमा दे और गुनाहों के अजाब से मुझे बचा नेकी से मुझे माला माल फरमा दे तू सबसे ज्यादा रहीम है।

## इज़ालए रंज व अलम

### और अदाए कर्ज की दुआ

हज़रत अबू मूसा अशअरी से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिस शख्स को कोई रंज व ग़म लाहिक हो तो उसको चाहिए कि यह दुआ पढ़े।

इलाही मैं तेरा बन्दा हूँ तेरे बन्दे का बेटा हूँ मेरी पेशानी तेरे हाथ में है मुझ में तेरा हुक्म जारी है तू मेरे लिए आदिलाना हुक्म जारी करता है, ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ कि अपने तमाम असमा के तुफ़ैल जो तूने अपने लिए मुकर्रर किये हैं और अपनी किताब कुरआन में लिखे हैं या मखलूक में से किसी को सिखाये हैं और इल्मे ग़ैब में उसको बरगुज़ीदा बनाया है कि मेरे सीने को रौशन फरमा दे ताकि ग़म व अलम दूर हो जायें और उसकी मोहब्बत दिल को अता कर तू उससे इंसान का रंज व ग़म दूर कर देगा और खुशी से सीना कुशादा फरमा देगा।

हाज़रीन में से किसी ने किसी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह वह शख्स जो इन अलफ़ाज़ को भूल गया दिवालिया हुआ और बड़े ख़सरा में रहा हुज़ूर ने फरमाया हां तुम इन अलफ़ाज़ को याद करो और दूसरों को भी सिखाओ जो शख्स इन अलफ़ाज़ के साथ अल्लाह को पुकारेगा (दुआ करेगा) अल्लाह तआला उसके ग़म दूर कर देगा और बहुत ज्यादा मुसरत व शादमानी अता फरमायेगा।

### हज़रत आएशा से हज़रत सिद्दीक़ का इरशाद

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका ने फरमाया कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ मेरे पास तशरीफ़ लाए और मुझ से दरयाफ़्त फरमाया कि तुम ने वह दुआ सुनी है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम को सिखाया करते थे और ईसा अलैहिस्सलाम ने भी अपनी हवारियों को सिखाई थी हुज़ूर फरमाते थे अगर तुम में से किसी शख्स के ज़िम्मा कोहे अहद के बराबर भी कर्ज हो तो वह कर्ज इस दुआ की बरकत से अल्लाह तआला अदा करा देता है।

हज़रत आइशा ने जवाब में इरशाद किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह दुआ फरमाया करते थे।

ऐ अल्लाह गिरहों का ख़ौलने वाला और रंज व अलम का दूर करने वाला तू ही है, तू बेकरारों की दुआ कबूल करने वाला है, तू दुनिया में रहमान है और आख़िरत में रहीम है मैं तुझ से दरख्वास्त करता हूँ कि मुझ पर अपनी रहमत फरमा और अपनी रहमत के तुफ़ैल मुझे दूसरों से बे नियाज़ फरमा दे।



## हज़रत हसन बसरी के दोस्त का वाकिया

अदाए कर्ज के लिए एक और दुआ है जो हसन बसरी से मनकूल है रिवायत है कि हज़रत हसन बसरी के पास उनके एक अजीज और दोस्त आए और कहा अबू सईद (हज़रत हसन बसरी की कुन्नियत) मैं कर्जदार हूं मेरी ख्वाहिश है कि आप मुझे अल्लाह का इस्मे आजम सिखा दें (ताकि कर्ज अदा हो जाए) हज़रत हसन बसरी ने फरमाया अगर तुम इस्मे आजम सीखना चाहते हो तो उठो और वुजू करो यह सुन कर वह दोस्त उठे और उन्होंने वुजू किया, हज़रत हसन बसरी ने फरमाया पढ़ो या अल्लाहो, या अल्लाहो, अन्ता अल्लाहो, अन्ता अल्लाहो, बला वल्लाहे अन्ता ला इलाहा इल्ला अन्ता अल्लाहो, अल्लाहो, अल्लाहो, अल्लाहो, वल्लाहो ला इलाहा इल्ला अल्लाहो इक़ज़े अनीयद्दीना वर्रजुकनी बादद दीन उनके दोस्त ने यह कलिमात पढ़े (और चले गए) जब सुबह हुई तो उन बुजुर्ग ने अपने सामने भरी हुई थैलियां रखी हुई पाईं उन थैलियों में एक लाख दिरहम थे, थैलियों के मुंह पर लिखा था अगर तू इससे ज्यादा मांगता तब वह भी देते, तूने जन्नत क्यों नहीं मांगी। यह बुजुर्ग हज़रत हसन बसरी की खिदमत में हाज़िर हुए और इस वाकिया की इत्तेला दी आप उनके साथ उनके घर तशरीफ ले गए और उन दिरहमों को बचश्मे खुद मुलाहिजा फरमाया उनके दोस्त ने कहा मुझे पशेमानी है कि मैंने जन्नत क्यों नहीं मांगी। हज़रत हसन बसरी ने फरमाया सिखाने वाले ने तुम्हारी भलाई और बेहतरी के लिए तुमको इस्मे आजम सिखाया है तुम इस बात को पोशीदा रखना कहीं (हुज्जाज बिन युसूफ सकफी) न सुन पाए अगर उसने यह दुआ सुन ली तो फिर कोई शख्स भी उसके जुल्म व सितम से नहीं बच सकेगा।

## हज़रत जिब्रील की सिखाई हुई दुआ

एक और दुआ अदाए कर्ज और कशाइशे रिज़्क के लिए है, यह दुआ जिब्रील अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह अलैहिस्सलाम को उस वक़्त सिखाई थी जब आप कुरैश की चीरा दस्तियों से परेशान होकर और कशाइशे रिज़्क के लिए मक्का मुअज़्ज़मा से गारे हिरा की तरफ तशरीफ लिये जा रहे थे। हज़रत अबू बकर सिदीक रावी हैं कि जिब्रील ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा ऐ मोहम्मद अल्लाह तआला ने आप को सलाम फरमाया है और मुझे यह दुआ सिखाई है कि मैं आप को सिखा दूं अब आप इस दुआ को पढ़िये अल्लाह तआला आपके और आपके कुरैश के दर्मियान एक पर्दा हाइल फरमा देगा (आप कुरैश की चीरा दस्तियों से महफूज़ रहेंगे) हुज़ूर ने फरमाया हां ऐ जिब्रील मुझे वह दुआ बताइये हज़रत जिब्रील ने कहा पढ़िये।

ऐ सब बुजुर्गों के बुजुर्ग तू हर एक की आवाज़ सुनता है और हर एक को देखता है तेरा कोई शरीक नहीं है न ही तेरा कोई वजीर है चमकने वाले सूरज को तू ने ही पैदा किया है और रौशन चांद को तू ही ने रौशनी बख्शी है तू खौफ़जदा आदमी की हिफाज़त करने वाला है तू अमन के तालिब को अमन देता है शीर ख़्बार बच्चे को तू ही रोज़ी देता है टूटी हुई हड्डियों का दुरुस्त करने वाला तू ही है तू ही ज़ालिमों को हलाक करता है, दुश्मनों को तू ही मारता है मैं तेरे हुज़ूर में फकीरों और बेकरार लोगों की तरह सवाल करता हूं कि अपने अर्श की रहमत की इज़्ज़त और रहमत की कुंजियों के तुफ़ैल अपने उन आठ नामों के तुफ़ैल जिनको तू ने आफ़ताब के ऊपर लिखा है और जो तेरे जलाल के ज़ाहिर करने वाले हैं, मेरे मक़सद को पूरा फरमा दे।

इस के बाद अपनी हाज़त का नाम लिया जाए।



## बाब 23

# फ़र्ज नमाज़ों और ख़त्म कुरआन के बाद पढ़ी जाने वाली दुआयें

## फ़ज्र और अस्त्र के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ

फ़ज्र और अस्त्र की फ़र्ज नमाज़ों के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ यह है:

ऐ अल्लाह! तमाम हम्द व शुक्र ख़ालिस तेरे ही लिए है, फ़ज़ल और अज़मत व बुजुर्गी तेरे ही लिए है, तमाम नेकियां तेरी ही नेमत से तमाम होती हैं, ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाली हूँ कि मेरी रोज़ी कुशादा फ़रमा दे क्योंकि तू ही दुआयें कबूल फ़रमाता है तवक्कुल और सब्रे जमील तू ही अता फ़रमाता है तू अपनी रहमत के कामिला के तुफ़ैल हर मुसीबत से रिहाई बख़्शाता है और तू ही सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है, इलाही! हमें गुनाहों से बचा, बद बख़्ती और बद नसीबी से दूर रख, हमारी हाजतें पूरी फ़रमा, हमें अपनी बारगाह से बद नसीब और महसूम न रख, अपने सिवा किसी ग़ैर के आगे न झुका, अपनी नेमतों से हमको माला माल कर दे और अपने सामने शर्मिन्दा होने का हमको मौका न दे, अपनी रहमत से दुनिया और आख़िरत की नेकी अता फ़रमा, तू ही सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहीम है, इलाही हमको सुबह व शाम नेकी अता कर, कज़ा व क़द्र की नेकी बख़्श दे और हमसे सुबह व शाम के शर को और कज़ा व क़द्र के शर को दूर फ़रमा दे, ऐ अल्लाह उस दिन जिस क़दर नेकी व सलामती, भलाई और बेहतरी, रिज़्क की कुशादगी तू ने उतारी है उससे ज़्यादा हिस्सा हमको अता फ़रमा और जिस क़दर बदी व बुराई, फ़ितना व शर तू ने आज के दिन नाज़िल किया उससे मुझे सब मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को महफूज़ रख तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहीम है।

## एक और दुआ

इसी सिलसिले में एक और दुआ मासूरा यह है:

तमाम तारीफ़ें उस खुदाए बुजुर्ग व बरतर के लिए हैं जिसने अपने इल्म से सब चीज़ों को इहाता कर लिया है और वह सब चीज़ों का शुमार जानता है उसके सिवा कोई माबूद नहीं है, वही बुजुर्गी और अज़मत वाला है, इज़्ज़त व जलाल की इन्तेहा उसी के लिए है, वही बारां और रहमत का मालि है वही दुनिया व आख़िरत का वाली है वही ग़ैब का जानने वाला है उसकी ताकत और क़हर शदीद है वह जो चाहे करे वह हर शय से अव्वल है और तमाम चीज़ों का ख़ालिक है और उनका रज़्ज़ाक है वह पाक है और उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ऐ अल्लाह हमारी सुबह बख़ैर कर और हमें रूसवा न कर, हमें ज़माना की सख़्तियों से महफूज़ रख, ज़माने के मकरुहात को हम से दूर रख, बदी और शैतान की बुराइयों से हमको महफूज़ रख, आज और दूसरे दिनों में भी हमको नेकी अता फ़रमा हमको बुराइयों से दूर रख, इलाही हमको नेक बना



दे, हमारे आमाल व अफ़आल को नेक बना, हमारे अख़लाक़ को संवार दे हमारे आबा व अजदाद सबको नेक बना दे। इलाही जिस तरह तू ने हमारी रात गुज़ारी है और आफ़ियत बख़शी है उसी तरह हमारे दिन को भी बसर करा दे आफ़ियत और सलामती के साथ, हम पर रहम कर तू सब रहम करने वालों में बड़ा रहम करने वाला है, इलाही! हमको दुनिया और आख़िरत की नेकी अता फ़रमा अपनी रहमत से दोज़ख़ के अज़ाब से बचा, तू सबसे रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है। (आमीन) ऐ दो जहानों के पालने वाले (आमीन)

## तीसरी दुआ

इसी सिलसिला की एक दुआ यह भी है:

तमाम तारीफ़ें उसी अल्लाह के लिए हैं जो ज़मीन और आसमान का पैदा करने वाला है सिवाए उस वहदहु ला शरीक के कोई दूसरा माबूद नहीं है उसी पर मेरा तवक्कुल है जो अर्श का परवरदिगार है वह पाक है शिर्क से और बलन्द है, इलाही हमारे गुनाह ज़ाहिरी हों या बातिनी सब बख़्श दे, तू हमारी सारी ख़ताओं को जानता है, सब ख़ताओं को बख़्श दे इलाही हमको अपनी रज़ा अता फ़रमा दुनिया में भी और आख़िरत में भी और कलमए शहादत व मग़फ़िरत पर हमारा ख़ातमा फ़रमा, हमारी अख़ीर उम्मों को अच्छा बना दे, हमारे आमाल का ख़ातमा नेकी पर कर दे, हमारे लिए सबसे अच्छा दिन और नेक दिन वही होगा जब हम तेरा दीदार करेंगे, इलाही! हम तुझ से तेरी अता की हुई नुसरत के ज़वाल से पनाह चाहते हैं, हम तेरी आफ़त और दुशमनी से पनाह चाहते हैं, हमारी दरख़्वासत है कि हमको अपनी आफ़ियत से दूर न रख, इलाही मैं बद बख़्ती और हर आफ़त व बला से और मुसीबतों से और दुशमनों की तानाज़नी से पनाह चाहता हूँ नेमतों के तग़य्युर और क़ज़ा व क़द्र की बदी से और तमाम बुराइयों से तेरी पनाह चाहता हूँ इलाही हमारे बीमारों को शिफ़ा इनायत कर और हमारे मुर्दों पर रहम फ़रमा हमारे जिस्मों को सेहत अता फ़रमा और हमारे लिए अपने दीन को ख़ालिस फ़रमा, इलाही हमारे सीनों को खोल दे, हमारे सारे कामों का अच्छा बन्दोबस्त कर दे और हमारे बच्चों की परवरिश का बन्दोबस्त फ़रमा दे हमारे जुर्मों को ढांप ले हमारे बिछड़े हुए लोगों को हम से मिला दे, हमारे दीन पर हम को साबित क़दम रख, इलाही! मैं तुझ से नेकी और राहे रास्त से राहनुमाई चाहता हूँ हम को ईस्लाम पर मौत दे अपनी रहमत से हमें दुनिया और आख़िरत में नेकी अता फ़रमा, नारे दोज़ख़ और क़ब्र के अज़ाब से बचा तू ही सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है तू ही सब जहानों का पालने वाला है।

## दुआए ख़त्मे कुरआन

**ख़त्मे कुरआन मजीद की दुआ यह है:**

वह अज़मत वाला अल्लाह सच्चा है जिसने मख़लूक़ को पैदा किया बग़ैर किसी नमूने के और दीन के क़वानीन बनाए और उसको जारी किया और नूर को रौशनी और चमक अता फ़रमाई और रोज़ी में तंगी और फ़राख़ी रखी और अपनी मख़लूक़ को नक्सान और नफ़ा बख़्शा और पानी को जारी किया और उसके सोते पैदा किए और आसमान को मज़बूत छत बनाया और



उस को बलन्द किया, जमीन को फर्श बनाया और उसके नीचे बिछाया और चांद को गर्दिश दी (चलाया) और उसको नमूदार किया वह अल्लाह पाक है उसका मर्तबा बहुत ऊंचा और बड़ा बलन्द है उसका तसल्लुत बहुत मजबूत और नादिर है उसकी सनअत को कोई रोकने वाला नहीं है और न उसकी ईजाद को कोई तगय्युर देने वाला है और जिसको उसने इज्जत दी उसको कोई जलील करने वाला नहीं है और जिसको उसने नीचा किया उसको कोई इज्जत देने वाला नहीं है जिसको उसने जमा किया उसको कोई मुंतशिर करने वाला नहीं, उसका कोई शरीक नहीं और उसके साथ कोई दूसरा माबूद नहीं, उस खुदा ने सच फरमाया जिसने जमानों का इन्तेजाम किया और जिसने तक्दीर को मुकद्दर फरमाया और तमाम उमूर में तसरूफ किया वह दिलों के खयालात से आगाह है और तारीकियों की मुसलसल रफ्तार से वाकिफ है, वह आसान को मुशकिल बनाता है, तमाम समुन्दर उसके मुसख्खर हैं उसी ने कुरआन मजीद, नूर, तौरात, इंजील और जुबूर नाजिल फरमाई और उसने कुरआन मजीद की कसम खाई और कोहे तूर की और उस तहरीर की जो फैली हुई झिल्ली पर लिखी जाती है, वही तारीकियों और रौशनी को पैदा करने वाला है, उसी ने हूर व गिलमान और जन्नत के महल्लात बनाए हकीकत में अल्लाह ही जिसको चाहता है सुनाता है तुम कब्र के मुर्दों को सुनाने वाले नहीं, अजमत वाले खुदा ने सच फरमाया जो इज्जत वाला और मर्तबा वाला है जो बुजुर्ग और ताकतवर है, जिसकी अजमत के सामने हर चीज जलील और ताबेअ फरमान है और उसी ने आसमान को बलन्द और ऊंचा किया और जमीन को बिछाया और कुशादगी दी उसी ने दरिया बहाए और चशमे निकाले उसी ने समुन्दर को मिलाया और लबरेज किया उसी ने सितारों को अपने हुक्म के नीचे रखा और उसी ने बादलों को भेजा और उसी के हुक्म से अब्र उठा और उसी ने नूर को रौशनी अता फरमाई जिसकी वजह से वह चमका, उसी ने बारिश की और वह बरसी उसी ने मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम किया और उनको (कलाम) सुनाया और पहाड़ (तूर) पर जलवा अफरोज हुआ जिसके बाएस वह पारह पारह हो गया वही बख्शाता है वही छीनता है, वही नफा और नकसान पहुंचाता है, वही देता है वही रोकता है, उसने शरीअत का इजरा फरमाया उसी ने मुंतशिर किया और यकजा किया, तुम को एक नफ्स वाहिद से पैदा किया पस एक ही (मय्यत की) फ़रार गाह है और एक ही सुपुर्दगी का मकाम (कब्र) है। अजमत वाला आल्लाह सच्चा है वह तौबा को कबूल करने वाला है बख्शाने वाला और अता फरमाने वाला है वह जिसकी अजमत के सामने गर्दन झुकी हुई हैं और जिस के दबदबा के सामने सरकश आजिज व सरनिगूं हैं जिसके सामने सख्त खू नर्म पड़ गए और उसकी सनअत में दानेश व अक्ल से इस्तिदलाल किया, बादल, बिजली, मिट्टी, दरख्त और चौपाए सब उसकी पाकी बयान करते हैं वह हाकिमों का हाकिम और असबाब बनाने वाला है और किताब (कुरआन मजीद) नाजिल करने वाला है और अपनी मखलूक (उंसुरी) को मिट्टी से पैदा करने वाला है गुनाह को माफ करने वाला और तौबा कबूल करने वाला है सख्त अज़ाब देने वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसी पर मेरा तवक्कुल है और उसकी तरफ मेरी वापसी है सच फरमाया उस अल्लाह ने जो हमेशा से बुजुर्ग व बरतर है और रहनुमा है वह जो मेरी किफायत के लिए काफी है सच्चा है वह सच्चा है जिस को मैंने अपना कारसाज समझ रखा है वह अल्लाह सच्चा है जो अपने पास पहुंचने का रास्ता खुद बताने वाला है, अल्लाह सच्चा है और उसके पैगम्बर सच्चे हैं, अल्लाह सच्चा है और उसकी नेमतें बड़ी हैं और अल्लाह



से बढ़ कर सच बात कहने वाला और कौन हो सकता है, अल्लाह सच्चा है उसकी दी हुई खबरें सच्ची हैं, अल्लाह सच्चा है और उसके ज़मोन व आसमान भी शहादत देते हैं, वह अल्लाह जो पाक हमेशगी वाला और बुजुर्ग व बीना, करीम दाना माफ़ करने वाला मेहरबान क़दरदान, बुर्दबार है सच्चा है कह दो कि अल्लाह ने सच फ़रमाया है तुम दीने इब्राहीम पर चलो, हिकमत वाला अल्लाह सच्चा है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं वह रहमान व रहीम है वह ज़िन्दा है इल्म वाला है साहिबे हयात है करीम है मुर्दा नहीं ग़ैर फ़ानी है ऐसा ज़िन्दा जिसको कभी भी मौत नहीं आएगी बुजुर्गी और जलाल व जमाल वाला अज़मत वाले नामों और अज़ीम एहसानों वाला है उसके इज़्ज़त वाले पैग़म्बरों ने उसका पयाम ठीक ठीक पहुंचा दिया, अल्लाह की रहमत और सलामती हो हमारे आका पर और दूसरों पैग़म्बरों पर हम अपने मालिक और मौला के कौल के गवाह हैं और जो कुछ उसने फ़र्ज व वाजिब किया है उसके इन्कार करने वाले नहीं हैं हम्द है उस खुदा को जो जहानों का मालिक है और उसकी रहमत व सलाम हो हमारे आका हमारे पुश्त पनाह हज़रत मोहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर जो ख़ातिमुल अम्बिया हैं और आप के दो मुहतरम दादाओं पर यानी हज़रत आदम व हज़रत अब्राहिम अलैहिमस्सलाम पर उनके तमाम पैग़म्बर भाईयों पर और पाक अहले बैत पर और उन के बरगुज़ीदा इस्हाब पर और आपकी पाक बीबियों पर जो मुसलमानों की मायें थीं और अच्छे तरीक़े पर सहाबा क़राम की पैरवी करने वालों पर रोज़े क़यामत तक और उनके साथ हम पर भी, ऐ सबसे ज़्यादा रहम फ़रमाने वाले अपनी रहमत फ़रमा। सच्चा है अल्लाह, बुजुर्गी इज़्ज़त, अज़मत और हुकूमत वाला वह ऐसा ताकतवर है कि उसको ज़ेर करने का इरादा नहीं किया जा सकता ऐसा ग़ालिब है कि उस पर हुक्म नहीं चलाया जा सकता सारे जहां का इन्तेज़ाम करने वाला है जो कभी नहीं सोता, बुजुर्गी वाले काम उसी के लिए मख़सूस हैं बड़ी बड़ी बख़्शिशें और ज़बरदस्त एहसान और इनामे कमाल और तकमिला (उसी के साथ मख़सूस हैं) उसकी पाकी बयान करते हैं तमाम मुअज़्ज़िज़ फ़रिशते और चौपाए कीड़े मकोड़े, हवायें और बादल और रौशनी और तारीकी (मैं उसकी पाकी बयान करते हैं) वही अल्लाह है हाकिमे आला है हर ऐब से पाक है हर नक्स से सालिम अल्लाह हमारा रब है उसकी तारीफ़ बड़ी है उसके माक नाम हैं और उस के एहसान अज़ीम हैं और हम उसके कौल की शहादत देते हैं ज़मीन व आसमान भी उसके शाहिद हैं और पैग़म्बरों और नबियों ने भी उसकी शहादत दी है फ़रिशते और अहले इल्म शाहिद हैं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अदल पर काएम है वही ग़ालिब हिकमत वाला है, अल्लाह के नज़दीक पसंदीदा दीन नहीं वह अदल पर काएम है और मलाएक़ा ने और अहले इल्म ने जो कुछ शहादत दी है हम सिर्फ़ इस्लाम है हमारे रब ने और और अहले इल्म ने जो कुछ शहादत दी है और उसी शहादत के सबब मोमिन भी वही शहादत देते हैं यह शहादत अल्लाह ने खुद दी है और उसी शहादत के सबब मोमिन माफ़ करने वाले मेहरबान अल्लाह की इताअत करता है वह और अर्श के मालिक बरतर खुदा के लिए उस शहादत को खुलूस से अदा करता है, अल्लाह उस शहादत को अच्छे और हिदायत वाले आमाल की वजह से बलन्द मर्तबा कर देता है और उसके काएल को बहिश्त में बकाए दवाम अता फ़रमाता है वह बहिश्त जहां की बेरियां बे ख़ार हैं और अकेले तह बतह, साया वसीअ और पानी बहाव है, मोमिन उस बहिश्त में उन अम्बिया के साथ रहेगा जो शहादत देने वाले और रूकूअ व सुजूद करने वाले और ताअते इलाही में इन्तेहाई कोशिश करने वाले हैं। इलाही हमको तसदीक़ की बिना पर सादिक़ बना दे और उस सच्चाई का गवाह कर दे और उस शहादत पर



ईमान लाने वाला बना दे और उस ईमान के जरिये हम को मुवहिहद बना दे और उस तौहिद में हमको मुखलिस कर दे और इखलास की वजह से अहले यकीन से बना दे और उस यकीन के बाएस आरिफों में से कर दे, उस मारफत के बाएस अपना शनासा बना दे और उस अतराफ के बाएस अपनी तरफ रुजूअ होने वाला बना दे और उसकी तौबा की वजह से हमको कामियाब और अपने सवाब की तरफ रागिब और जजा का तालिब बना दे, और इज्जत वाले आमाल लिखने वाले फरिशतों पर हमको बतौरे फख्र पेश कर और हम को पैगम्बरों, सिद्दीकों, शहीदों और सालेह आमाल रखने वालों के साथ उठाना और उन लोगों में से हमारा शुमार न फरमा जिनको शयातीन ने अपनी तरफ माएल कर लिया है और दुनिया के एवज दीन से रोक दिया है जिसके नतीजा में वह पशेमान और आखिरत में खसारायाब हो गए। ऐ अरहमर्राहेमीन! अपनी रहमत से राहत की जन्नतों को हमारे लिए दवामी कर दे, इलाही तमाम सताईश तेरे ही लिए है और तू ही तारीफ का मुस्तहिक है और एहसान व फज़ल करने का भी अहल है, तेरे ही लिए हम्द है तेरे मुसलसल एहसानात पर और तेरे लिए हम्द है, तेरे पैहम इनाम पर और तेरे लिए हम्द है तेरे मुतवातिर फज़ल पर, इलाही तू ने ही हमारे अख्यामे तिफली में मां बाप के दिलों को हम पर मेहरबान बनाया और बड़े होने के जमाने में तू ने हमको गू ना गूं नेमते अता फरमाई और हम पर अपने खैर की मुसलसल बारिश की, हम बारहा तेरे ना आशना रहे लेकिन तू ने हमारी गिरफ्त फौरी नहीं की पस तेरे ही लिए हम्द है कि तू ने गुनाह से इस्तिगफार करने का हमारे दिल में जज्बा डाला तेरे ही लिए हम्द है हमको जन्नत नसीब फरमा दे और अपने उफ़व से दोज़ख को हम से छिपा दे, इलाही हम तेरी हम्द करते हैं जाहिर में भी और बातिन में भी, और दिली रगबत और इरादा से तेरा शुक्र अदा करते हैं, पस हमारा पर्दा फाश करके हशर के दिन अक़वाम के सामने हम को रूसवा न फरमाना और अपनी पेशी के रोज हमको बद आमाली की वजह से रूसवा करके ज़िल्लत व ख़्यारी का लिबास न पहनाना, ऐ अरहमर्राहेमीन, अपनी रहमत से इस दुआ को कबूल फरमा, इलाही तेरे लिए हम्द है कि तू ने हम को इस्लाम का रास्ता दिखाया और हिकमत व कुरआन की तालिम दी, इलाही तू ने हम को कुरआन सिखाया जबकी हमको इसके सीखने की रगबत न थी और तू ने कुरआन सिखा कर हम पर एहसान किया कि हमको इसकी मारफत का बिल्कुल इल्म न था तू ने खुसूसियत के साथ हमको कुरआन अता किया जबकि हम उसके फज़ल से वाकिफ भी न थे, इलाही जबकि यह सब कुछ हमारी कुव्वत के बगैर तू ने हम पर एहसान किया है तो फिर उसके हक की निगहदाश्त अता फरमा और उसकी आयतों के हिफज़ करने की कुव्वत दे और उसके हुक्म पर अमल और मुतशाबेह पर ईमान और उस पर गौर करने का सही रास्ता और उसकी इमसाल और मौजज़ पर गौर और उसके नूर और हुक्म को देखने की निगाह अता फरमा। इसकी तसदीक में हमको शुब्हात लाहिक व आरिज़ न हों और उसके सीधे रास्तों में हमारे दिलों के अन्दर कजी का ख़्याल न आने पाए इलाही हमको कुरआन अजीम से नफ़ा अता फरमा हमको इसकी आयात और पुर हिकमत नसीहतों में बरकत अता फरमा और इसको हमसे कबूल फरमा तू बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है और हमारी तरफ रहमत रुजूअ फरमा की तू ही तौबा कबूल करने वाला रहीम है, ऐ अरहमर्राहेमीन अपनी रहमत से ऐसा कर दे कि कुरआन हमारे दिलों की बहार बन जाए, हमारे सीनों को शिफा देने वाला, हमारे गुमों को ज़ाएल करने वाला हमारे अनदोह व अफ़कार को दूर करने वाला और हमको तेरी



रहमत की तरफ़ और तेरी राहत वाली जन्नतों की तरफ़ चलाने वाला, खींचने वाला और रास्ता बताने वाला बना दे, ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले अपनी रहमत से ऐसा कर दे इलाही कुरआन पाक को हमारे दिलों के लिए ज़िया और हमारी आंखों के लिए जिला, हमारी बीमारियों के लिए शिफा बना दे हमको गुनाहों से छुड़ाने वाला और दोज़ख़ से नजात दिलाने वाला बना दे, इलाही! इसके ज़रिया से हमको बहिश्ती जोड़े पहना हमको क़यामत के दिन साया में रखना, हमको पूरी पूरी नेमतें अता फ़रमा और हमसे अज़ाब को दफ़ा कर, बदला देते वक़्त हमको कामियाब होने वालों में शामिल फ़रमा राहतों और नेमतों के वक़्त हम को शुक्र करने वालों और मुसीबत के वक़्त सब्र करने वालों में से बना, इलाही हमको उन लोगों में से न कर देना जिन को शैतान ने अपनी तरफ़ माएल कर लिया है, दीन से अलग करके दुनिया में लगा दिया है जिसके बाएस वह नक़सान उठाने वालों में से बन गए हैं ऐ अरहमर्रहिमीन यह दुआ क़बूल फ़रमा ले इलाही कुरआन को हमारे हक़ में बुराइ न बना न पुल सिरात को हमारे फिसला देने वाला और हमारे नबी हमारे सरदार और हमारे वसीला हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़यामत के दिन हम से एराज़ करने वाला और मुँह मोड़ने वाला न बना बल्कि ऐ हमारे रब, ऐ हमारे ख़ालिक ऐ हमारे राज़िक उनको हमारे लिए ऐसा सिफ़ारिश करने वाला बना दे जिनकी सिफ़ारिश क़बूल की जाए और हमको उनके हौज़े कौसर पर हाज़िर कर और उन ही के जाम से हम को सैराब फ़रमा वह हम को खुशगवार और मुबारक शरबत पिलाये जिस के बाद हम कभी प्यासे न हों और न ख़्वाह हों और न ज़लील हों और न इंकार करने वाले और न हम मुसतहि ग़ज़ब हों और न गुमराह हों ऐ अरहमर्रहिमीन अपनी रहमत से यह सब चीज़ें इनायत फ़रमा, इलाही इस कुरआन के ज़रिया हम को फ़ाएदा पहुँचा जिस का तू ने मर्दाना बलन्द किया, जिस के फ़राएज़ काइम किए जिस की दलील मज़बूत बना, जिसकी इशक़ ज़ाहिर फ़रमाई और फ़सीह अरबी लुग़त (ज़बान) मधसूस की और तू ने फ़रमाया कि जब हम उसको पढ़ें तो ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप इसकी पैरवी करें, इसका बयान हमारे जिम्मा है और कुरआन की तरतीब तेरी सब क़िताब से अच्छी है और कलाम सबसे ज़्यादा वाज़ेह है और हलाल व हराम को सबसे ज़्यादा खोल कर बयान करने वाला है बयान के एतबार से महकम है इसकी दलील ज़ाहिर है और वह कमी व क़िशोर से महफूज़ है, इसके अन्दर वादे और वईदें हैं और डरावे और धमकियां हैं इसमें किसी तरफ़ से भी आकर झूठ शामिल नहीं हुआ है, वह खुदा के तरफ़ से उतारी हुई किताब है इलाही तू इसके ज़रिये हमारे लिए शरफ़ और ज़्यादतीए सवाब का ज़रिया बना दे और हम को खुश नसीब लोगों में शामिल फ़रमा दे और हमसे अच्छे और नेक काम लेना, बेशक तू नज़दीक है, क़बूल करने वाला है अपनी रहमत से इस दुआ को क़बूल फ़रमा इलाही जैसा की तू ने हमको कुरआन की तसदीक करने वालों में से बनाया है और जो कुछ इस में है उसको हक़ समझने वाला बनाया है इसी तरह इसकी तिलावत से हम को नफ़ा उठाने वाला बना दे और इसके ख़ूश आइन्द ख़िताब को सुनने वाला कर दे और जो कुछ इसमें है उससे नसीहत हासिल करने वाला बना दे और उन अहक़ाम पर अमल करने वाला बना दे और उसके अवामिर व नही के सामने झुकने वाला वाला बना दे, इसके ख़त्म के बाद हमको बामुराद कर हमको इसके सवाब को हासिल करने वाला बना दे हमको तमाम महीनों में अपना ज़िक्र करने वाला अपनी ही जानिब तमाम मामलों में रूजूअ करने वाला बना दे हम सबकी इस रात मग़फ़िरत



फरमा दे ऐ अरहमर्राहेमीन हरमत के जरिया माफ़ फरमा दे।

ऐ अल्लाह हमको उन लोगों में शामिल कर दे जिन्होंने कुरआन की इज्जत की उसको हिफ्ज करने के बाद और इसको सुनने के बाद इसकी ताज़ीम की और जब उस के सामने आए तो उस के आदाब को मलहूज़ रखा और जब जुदा हुए तो उसके अहकाम को मजबूती से थामा और उस का हक्के रिफ़ाक़त अदा किया और जब उन्होंने उसको साथ लिया तो उसके पढ़ने से तेरी रज़ा चाही और आखिरत को तलब किया पस वह इस कुरआन के जरिया आला मकामात को पहुंचने और इसी कुरआन के जरिया जन्नत के दर्जों पर चढ़ने वालों में शामिल कर दे और उन लोगों में शामिल कर दे जिनसे खुशनूदी के साथ रसूलुल्लाहा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुलाकात फरमायेंगे, कुरआन की शफ़ाअत ढूंडने वाला बद नसीब नहीं होता, ऐ अरहमर्राहेमीन इस दुआ को कबूल फरमा ले, इलाही इसको बरकत वाला ख़त्म बना दे इसके पढ़ने वालों के लिए और उस वक़्त हाज़िर होने वालों के लिए और उनके लिए जिन्होंने इसको सुना और इसकी दुआ पर आमीन कहा ऐ अल्लाह इस कुरआन की बरकतें घर वालों पर उनके घरों में और महल्लात वालों के महल्लात में नाज़िल फरमा, इलाही सरहद पर जिहाद करने वालों पर और हरमैन शरीफ़ैन में रहने वाले मोमिनों पर इस की बरकतें नाज़िल फरमा, इलाही हमारी मिल्लत के मुर्दों की कब्रों में (इसकी बरकत से) रौशनी और कुशादगी नाज़िल फरमा दे और उनकी नेकियों की अच्छी जज़ा अता फरमा और उनके गुनाहों को बख़्श दे ऐ अरहमर्राहेमीन अपनी रहमत से रहम फरमा जब कि हम चले जायें ऐ वह जात जो हर साबिक से साबिक है ऐ आवाज़ के सुनने वाले ऐ वह जात जो मरने के बाद हड्डियों को गोश्त का लिबास पहनाने वाली है, रहमत भेज हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और उनकी औलाद पर और उस मुबारक रात में हमारा कोई गुनाह ऐसा न छोड़ जिस को तू ने न बख़्श दिया हो और न कोई ऐसा ग़म हो जिस को तू ने दूर न कर दिया हो और न कोई ऐसी सख़्ती जिस को तू ने हटा न दिया हो और न कोई ऐसा रंज जिस को तू ने दूर न कर दिया हो और न कोई ऐसी बुराई जिस को तू ने फेर न दिया हो और न कोई ऐसा मरीज जिस को जिस को तुने शिफ़ा न बख़्शी हो और न कोई ऐसा गुनहगार जिस को तूने माफ़ न कर दिया हो (और हिदायतयाब किए बग़ैर छोड़ा हो) और न किसी बच्चे को सालेह बनाए बग़ैर और न किसी मुर्दे को रहमत के बग़ैर और दुनिया व आखिरत की कोई ऐसी हाज़त पूरी किए बग़ैर न छोड़ जिसमें तेरी रज़ा हो और वह हमारे लिए भी मोफीद हो, इलाही तू इसको हमारे लिए आसान, फ़ाइदा रसां और बख़्शिष का बाएस बना दे, ऐ अरहमर्राहेमीन! हमारी यह दुआ अपनी रहमत से कबूल फरमा, इलाही! हमको आफ़ियत अता फरमा और अपने उफ़वे अज़ीम से हम को माफ़ फरमा दे अपनी जमील पर्दा पोशी से और अपने कदीम एहसान के तुफ़ैल ऐ बहुत ही भलाई और नेकी करने वाले रहमत नाज़िल फरमा, हमारे आका और सरदार हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और उनके तमाम पैग़म्बर भाईयों, उनकी औलाद और मलाएका पर और उन सब पर अपनी सलामती नाज़िल कर, ऐ हमारे रब हम पर अपनी तरफ़ से रहमत फरमा और हम को हमारे कामों में दुरुस्ती इनायत कर दे और हम को इस नेक अमल की तौफीक़ अता कर जिस से तू राज़ी हो, ऐ अरहमर्राहेमीन! अपनी रहमत से इस दुआ को कबूल कर, इलाही हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपनी रहमत नाज़िल फरमा जिस तरह उन्होंने रिसालत का फ़र्ज अदा किया



है, ऐ अल्लाह हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो शहरों के आफताब, जमीन के महताब, कयामत की जीनत और रोजे महशर में गुनहगारों की शफाअत करने वाले हैं उन पर रहमत नाज़िल फरमा, इलाही हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उनकी औलाद पर और उनके तमाम सहाबा पर जिन्होंने दीन की मदद फरमाई और सबके सब रसूल की पैरु रहे अपनी रहमत नाज़िल फरमा, इलाही रहमत नाज़िल फरमा हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिन को तू ने सच्चा दीन दे कर भेजा और तू ने उनकी सच्ची तारीफ़ की और बुर्दबारी उनकी अलामत बनाई और अहमद उन का मुबारक नाम रखा और कयामत के दिन उम्मत के बारे में तू उनकी सिफारिश कबूल फरमाएगा, इलाही हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रहमत नाज़िल फरमा जब तक सितारे रौशन हैं और उन पर रहमत भेज जब तक बादल जमा होते रहें और उन पर रहमत नाज़िल फरमा ऐ हय्यो ऐ कय्यूमो, इलाही हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रहमत नाज़िल फरमा जब तक नेक लोग उनका जिक्र करते रहें, ऐ अल्लाह हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रहमत नाज़िल फरमा जब तक रात दिन की आमद व रफ्त का सिलसिला काएम है ऐ अल्लाह अपनी रहमत नाज़िल फरमा हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और मुहाजरीन व अंसार पर।

## एक वसीयत

### साहबे खैर व बरकत माहे रमज़ान की आखिरी शब

अल्लाह के बन्दो! अल्लाह तुम पर रहमत नाज़िल फरमाये यह रूखसत होने वाले महीने की आखिरी शब है जिस को अल्लाह तआला ने मुशरफ़ किया और उसकी अज़मत बढ़ाई उसके रूतबा को बलंद किया दिन के रोज़ों, रात की नमाज़ों और कुरआन पाक की तिलावत अल्लाह की रहमत और उसकी ख़ुशनुदी के नुज़ूल के बाइस अल्लाह तआला ने इसको करामत बरख़्शी। इस महीने में तुम पर अल्लाह तआला की जानिब से रहमत व सआदत नाज़िल हुई है, अल्लाह तआला ने इस महीने को सल के चिराग़ और मोतियों के हार का दर्मियानी मोती (वास्ता अल अक़द) बनाया, नमाज़ व रोज़ा के नूर की वजह से इसको अरकाने इस्लाम में बहुत ज़्यादा मुकर्रम बनाया इसी महीने में उसने अपनी किताब नाज़िल फरमाई और तौदा करने वालों के लिए कबूलियत के दरवाज़े खोल दिए। इस माह में हर दुआ कबूल होती है और हर नेकी जमा जाती है, हर ज़रर इस महीना में उठा दिया जाता है कामयाब और काबिले मुबारक बाद वही है जिसने इस महीने के औकात को ग़नीमत समझा और नुक़सान उठाने वाला और घाटे में रहने वाला वही है जिसने इसको जाया कर दिया और इसको हाथ से खो दिया।

### यह महीना गुनाहों का कफ़रा है

अल्लाह तआला ने इस महीने को तुम्हारे लिए गुनाहों के लिए तहारत का ज़रीया और तुम्हारी बुराईयों के लिए कफ़ारा बनाया है, तुम में से जिस किसी ने इसको अच्छी तरह बसर किया उसके लिए वह आखिरत का ज़खीरा और नूर बन गया और जिसने इस महीने के तकाज़े



पूरे किए और इस माह के हुक्क अदा कर दिए उसके लिए यह महीना खुशी और मुसरत का महीना बना दिया गया यह महीना ऐसा है कि इस महीने में फासिक व फाजिर भी सुधर जाते हैं और नेक बन्दों की तवज्जोह अल्लाह तआला की तरफ बढ़ जाती है। यह ऐसा महीना है जो दिलों को आबाद करता है, गुनाहों का कफ़ारा बन जाता है और यह महीना मस्जिदों को पूर करने वाला है इस महीना में फरिश्ते आजादी और रिहाई के परवाने लेकर नाजिल होते हैं इस महीने में मस्जिदें आबाद हो जाती हैं, चिराग रौशन होते हैं, आयाते कुरआनी की तिलावत की जाती है दिलों की दुरुस्ती होती है, गुनाह बर्खा दिए जाते हैं।

यह महीना वह है जिस में मस्जिदें अनवारे इलाही से चमक उठती हैं और मलाएका रोजादारों के लिए कसरत से इस्तिगफार करते हैं। अल्लाह तआला इस महीने की हर रात को इफ्तार के वक्त छः लाख अफराद को दोजख की आग से नजात देता है, इस माह में बरकतों नुजूल होता है, लोग इस माह में ज्यादा सदकात करते हैं इस माह में बरकतों का नुजूल होता है लगजिशें माफ कर दी जाती हैं लोगों की गिरया व जारी पर रहम फरमाता है और वह कम हो जाती है, इस माह में जन्नत की हसीन हुरें आवाज देती हैं, ऐ रोजादार मर्द और औरतो! और इबादत करने वाले मर्द और औरतो! तुम को वह रहम और मलाईयां मुबारक हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए तैयार कर रखी हैं, यकीनन तुम को बरकतों ने ढांप लिया है और जमीन व आसमान के तमाम रहने वाले तुम से खुश हैं।

अल्लाह तआला उस शख्स पर रहमत फरमाए जिस ने मरने से पहले अपने नफ्स के लिए तैयारी की और माजी व मुस्तकबिल की फिक्र से आजाद होकर इमरोज (हाल) में मशगूल (हाल को कामयाब बनाया) और अपने बचे कूचे सामान से जादे यह फराहम करने में मसरूफ हुआ जो उसकी उम्र खत्म होने तक पूरा हो जाएगा और वह नेक बन्दा इस महीने की जवानी से गमगीन हुआ और सलाम करके इसको इस तरह रूखसत किया:

अस्सलामो अलैका या शहरा रमजान अस्सलामो अलैका या शहर अस्सियाम वस्सियाम व तिलावतिल कुरआन। ऐ दर गुजर और माफी के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ बरकत व मलाई के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ दोहफों व रजामन्दी के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ इबादत और कुरबानी (नफ्स) के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ रोजा और तहज्जुद की इबादत वाले महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ तरावीह के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ नूर और चिरागों के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ आरिफों के मुसरत तुझ पर सलाम हो, ऐ खूबियों वाले लोगों के बाइसे इफतेखार महीने तुझ पर सलाम हो ऐ इबादत गुजारों के बाग तुझ पर सलाम हो।

ऐ हमारे महीने हम ने तुझे रूखसत किया हालांकि हम तुझे रूखसत करना नहीं चाहते थे हम तुझ से जुदा हो गए हालांकि तू हमारा दुश्मन नहीं था, ऐ माहे रमजान, तेरा सरापा सदका और रोजा था, तेरी जात सरापा कुरआन की तिलावत और कयाम था, तुझ पर हमारी जानिब से सलामती हो, तुझे हम मुबारक बाद पेश करते हैं, खुदा जाने हम को आइन्दा तू मयस्सर होगा या नहीं, मुमकिन है कि हम मौत से हम आगोश हो जाएं और तू हम तक न आए! ऐ माह रमजान तुझ से हमारी मस्जिदों के चिराग रौशन रहते थे और वह आबाद रहती थी, अब जब कि तू जा रहा है वह चिराग बुझ जाएंगे और तरावीह खत्म हो जाएंगी और हम फिर असले हालत पर लौट आएंगे और तुझ जैसे इबादत वाले महीने से जुदा हो जाएंगे।



ऐ काश मैं जानता कि हम में से (इस माह के) किस के आमाल कबूल हुए हम उसको उसके ऐसे अच्छे आमाल पर मुबारक बाद पेश करते हैं, ऐ काश कि मैं जानता हम में से किस के आमाल ना मकबूल हुए हम उसकी बद आमाली पर ताजियत करते।

ऐ मकबूल आमाल वाले! तुझे अल्लाह का सवाब उसकी खुशी मुबारक हो, तुझे अल्लाह की रहमत, उसकी मकबूलियत और उसकी मगफिरत मुबारक हो, तुझे अल्लाह का इनाम, गुनाहों की माफी, उसकी नेमतों की अरजानी मुबारक हो तुझे अल्लाह जन्नत में हमेशा हमेशा के लिए दाखिला मुबारक हो।

ऐ ना मकबूल आमाल वाले! तेरे इसरार, सरकशी, जुल्म व तअदी, गफलत व निसयान, नुकसान और मुसलसल गुनाह करने का बाइस अल्लाह तआला का गजब और उसकी नाराजगी तुझ पर बहुत बड़ा गजब बन कर टूटी है, ऐ बन्दे तेरी अशक रेज़ आंखें कहां है तेरे बहने वाले आंसू कहां गए, तेरी फरयाद कहां गई, तूने तौबा को ताखीर में किस दिन के लिए डाल रखा है और किस साल के लिए तूने अपने खजाने को जमा कर रखा है (उस को कब खर्च करेगा) क्या आइन्दा साल के लिए या मौजूदा साल गुज़र जाने के वक्त तक। खबरदार ऐसा न करना, उम्रों की मुद्दत तेरे इल्म में नहीं है (तुझे क्या मालूम मौत कब आएगी) और न तू मुकदरों के पहचानने पर कादिर है।

जरा गौर कर, कितने उम्मीदों से भर पूर दिल गुज़रे हैं जिनको उम्मीद बरारी की तवक्को थी लेकिन उनकी उम्मीद बर नहीं आई और कितने उम्मीदों के चाहत वाले थे जो उस तक नहीं पहुंच सके। बहुत से ऐसे लोग थे जो ईद की खुशियां मनाने की तैयारी में मसरूफ़ थे और वह कब्र में पहुंचा दिए गए और उनका आरास्ता लिबास उनका कफ़न साबित हुआ, बहुत से ऐसे थे जो सदकए फित्र अदा करने की तैयारी में मशगूल थे लेकिन वह खुद ही कब्र में रहन रख दिए गए।

बहुत से ऐसे लोग हैं जो रोज़ा नहीं रखेंगे और अल्लाह के सिवा दूसरे मशगलों में लगे रहेंगे पस ऐ खुदा के बन्दो! खुदा की हम्द करो कि उसने माहे खैर को अखीर तक पहुंचा दिया और अल्लाह तआला से इस माह के रोज़ों और इबादत की कबूलियत की दुआ मांगो इस माह के जो हुकूक हैं उनकी अदाएगी की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ, अल्लाह और उसकी तौफीक की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो।

ऐ लोगो! अल्लाह तुम पर रहमत नाज़िल फ़रमाये तुम को समझ लेना चाहिए कि तुम एक बहुत ही बरगुज़ीदा और मुअज्जिज़ महीने से जुदा हो रहे हो पस वह रोज़ादार और इबादत करने वाले कहां हैं जो पिछले बरसों में तुम्हारे साथ थे? और वह लोग कहां हैं जो तुम्हारे साथ रमज़ान की रातों में शरीके इबादत थे और तुम्हारे वालिदैन्, बहन और भाई, हमसाये और कराबतदार कहां हैं जो खुदा का हर हक़ अदा किया करते थे, खुदा की कसम उनको मौत आ गई वह मौत जो तमाम लज्ज़तों को ढाने वाली और बरबाद करने वाली है, तमाम अरमानों को काटने वाली है और जमीअतों में तफ़रका डालने वाली है, उनसे मजजिसें खाली हो गईं, मस्जिदें उनसे सुनसान हो गईं, अब तो तुम उनको कब्रों की मिट्टी में पड़ा हुआ देख रहे हो, उन पर जो हालत तारी है उसको वह टाल नहीं सकते अब उनको अपने नुफूस के नफ़ा व नक़सान पर कुदरत हासिल नहीं है, वह उस दिन के मुंतज़िर हैं जिस दिन लोग अपने रब की तरफ़ बुलाये जायेंगे (रोज़े हशर)



और सारी मखलूक मैदान में जमा कर दी जाएगी वह उस दिन हर तरफ दौड़ते फिरेंगे, उस दिन की हौलनाकी (हैबत) से कांपते होंगे और उस दिन के हिसाब के खौफ से उनके दिल फटे पड़े होंगे अल्लाह तआला का इरशाद है और सूर फूँका जाएगा तो हम उन सब को इकट्ठा कर लेंगे।

ऐ अल्लाह के बन्दो! पस जिस ने माहे रमज़ान में हराम से अपने आप को बाज़ रखा तो उसे चाहिए कि इसी तरह वह तमाम महीनों में और सालों में भी अपने नफ़्स को इसी तरह हराम से बचाए रखे इसलिए कि माहे रमज़ान व ग़ैर माहे रमज़ान यानी दूसरे महीने का मालिक एक है और वह उन दोनों ज़मानों से अच्छी तरह वाकिफ़ है।

अल्लाह तआला हम को और तुम को इस महीने की जुदाई के बाद जज़ा दे और अपनी रहमते आम से हम को और तुम को सिला अता फ़रमाए और बाकी उमूर में हमारे और तुम्हारे लिए बरकत अता फ़रमाए, अपने फज़ल, रहमत और एहसान से हमें हिदायत के रास्ते पर चलाए आमीन।

इलाही! तू ने इस रात में अपनी बख़्शिश, आज़ादी, रहमत, रज़ा, उफ़व व दरगुज़र, एहसान व इकराम दोज़ख़ से नजात और हमेशा के लिए जन्नत में दाख़िला तय फ़रमा दिया है, इलाहल आलमीन! हम को सबसे ज़्यादा इससे हिस्सा इनायत फ़रमा (आमीन)।

इलाही! जिस तरह तू ने माहे सियाम हम को अता फ़रमाया उसी तरह इस माह के हाल को बरकतों से भर दे और इसके अय्याम को बहुत ज़्यादा मुबारक बना दे और हम से इसको कबूल फ़रमा ले यानी वह आमाल जो इस माह में हमने बहैसियत रज़ा और इबादत किये हैं वह कबूल फ़रमा ले और हमारे उन गुनाहों को बख़्श दे जो इस माह में हम से सरज़द हुए हैं, हम को मखलूक के हुक्क से उस दिन नजात अता फ़रमा दे जिस दिन तेरे सिवा कोई उम्मीद गाह नहीं होगी, ऐ सबसे ज़्यादा जानने वाले, ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले इस दुआ को कबूल फ़रमा ले।

इलाही! इसमें कुछ शक नहीं कि हम से इस माह के रोज़ों और क़्याम (इबादत) में कोताही हुई और हम तेरी इबादत का कुछ हक़ ही अदा नहीं कर सके, इस कसूर के पेशे नज़र हम तेरे दर पर सवाली बन कर झुकते हैं और तेरी रज़ा और रहमत के तालिब बन कर सर को झुकाते हैं, इलाही! हम को ना मुराद वापस न कर और न अपनी रहमत से मायूस फ़रमा, हम तेरे मुहताज हैं तेरे सामने एक बन्दे की तरह हैं पस हम तो तेरी ही जानिब रुजूअ करते हैं, और तुझ ही से ख़ैर के तालिब हैं, हम तेरे ही दरवाज़े को खटखटाते हैं और सिर्फ़ तेरी ही रहमत से सवाल करते हैं, तू हम पर रहम फ़रमा और हमारे दिलों को संवार दे और हमारे ऐबों को छुपा ले, हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे और क़्यामत के दिन हमारी आंखों को खुनकी मरहमत फ़रमा और हम को अपनी अज़ीम व गिरांबार तवज्जोह से महरूम न कर, हमारे अमल को कबूल फ़रमा और हमारी कोशिशों को पज़ीराई अता कर और उस रात से हम को ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा अता फ़रमा दे।

इलाही! अगर तेरे लाज़वाल इल्म में आइन्दा साल इस माह में हमारा मुक़द्दर है तो इस में हमें बरकत अता फ़रमा और अगर हमारी उम्र पूरी हो चुकी है और मौत हमारे दर्मियान हाएल होने वाली है तो हमारे अख़लाफ़ (बेटे पोते वगैरह) को नेक बना दे और हमारे अगलों पर अपनी रहमत को कुशादा कर दे और हम सब को अपनी आम रहमत व बख़्शिश से नवाज़, अम्बिया, सिद्दीकीन शुहदा और सालेहीन की रिफ़ाक़त दे, इलाही हमारी इस दुआ को कबूलियत का शरफ़ अता फ़रमा।

इलाही अहले क़बूर ऐसे गुनाहों (की पादाश) में घिरे हैं कि उनसे छुटकारा नहीं पा सकते



और ऐसी तन्हाई की कैद में गिरफ्तार हैं कि उससे आजाद नहीं हो सकते और ऐसे मुसाफिर हैं जिन को मुहलत नहीं दी जा सकती उनके चेहरे की खूबसूरती को मौत ने मस्ख कर दिया और जहरीले कीड़े कब्रों में उनके हमसाये बन गये हैं वह इस तरह खामोश हैं कि बात नहीं कर सकते और एक दूसरे के ऐसे पड़ोसी हैं कि आपस में मिलजुल नहीं सकते, और वह अपनी अपनी कब्रों में कयामत तक इस तरह सोने वाले हैं कि कहीं और मुन्तकिल नहीं हो सकते उनमें नेक भी हैं और बद भी, पीछे रह जाने वाले भी हैं और आगे बढ़ जाने वाले भी।

इलाही जो लोग उनमें खूश होने वाले हैं उनकी खूशी और मुसरत को और बढ़ा दे और जो उनमें गमगीन हैं उनका गम खूशी और मुसरत में बदल दे। इलाही तमाम मोमिन मुर्दों पर अपनी रहमत नाज़िल फरमा ऐ अरहमर्राहेमीन इस दुआ को शर्फ कबूल अता फरमा।

इलाही इन मुर्दों की कब्रों को उनके लिए राहतगाह और अपनी बख्शिश, मगफिरत, माफी और अहसान की मंजिल बना दे ताकि वह अपनी अपनी कब्रों में मुतमईन हो जाएं और तेरे जूद व करम पर यकीन करने वाले और आला दरजों पर पहुंचने वाला बन जाए। इलाही इन तमाम नेमतों के साथ इनके बाप, बेटों, भाईयों और रिश्तेदारों को भी अपने करम से नवाज़ कबूल इस के कि यह दुनिया तबाह हो जाए और तैरगी सफा पर गालिब आ जाए और जिन्दगी के हाथ से उम्मीद का दामन निकल जाए और मकानात मिट्टी में दब कर बरबाद हो जाएं और यह सब कुछ इससे पहले हो कि हमदर्दी दुशमनी से बदल जाए कलरा सैलाब की तरह इख्तियार करे, सुबह रात का रूप धार ले और ज़मीन व आसमान के रीने वालों पर सुकूते मर्ग तारी हो जाए और यह सब नेमतें हम को इस से पहले हासिल हों कि जईफ अपनी पीराना साली पर और अधोड़ उम्र वाला अपनी अधेड़ उम्र पर तास्सुफ करे, गुनाहगार कफ़े अफ़सोस मलें और नौजवान वा हसरत वा हसरत पुकारें यह सब नेमतें उससे कबूल अता फरमा दे कि नदामत व शर्मिन्दगी उनको गुर्क करे और वह इस तरह महार ब लब हो जाए कि बोल न सकें और अपने आमाल से आगाह होकर नदामत से सरो को झुकायें और (अज़ाब से) खौफ़ज़दा होकर वह यह ख्वाहिश करने लगें कि काश हम पैदा न हुए होते।

ऐ रोज़ी देने वाले, आवाज़ को सुनने वाले, मरने के बाद जिन्दा करने वाले हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और उनकी आल व औलाद पर अपनी रहमत नाज़िल फरमा। इलाही! इस मुबारक और शरफ़ रखने वाली रात में हमारा कोई ऐसा गुनाह माफ़ किए बग़ैर न छोड़ और न कोई ऐसा ग़म मौजूद हो जिसे तूने तूने दूर न फरमा दिया हो, और न कोई ऐसा मुसीबत ज़दा बाकी रहे जिस को तूने आफ़ियत अता न कर दी हो, बुरों को भी नज़र अंदाज़ न फरमा, उनके गुनाह भी माफ़ फरमा दे, न कोई ऐसा कर्ज़दार बाकी रहे जिस को तूने कर्ज़ से नजात अता न फरमा दी हो अगर कोई गुमग़स्ता हो तो तू उसको राह बता दे, कोई ऐसा गुनहगार बाकी न रहे जिसके गुनाह तूने न बख़्श दिए हों और न कोई ऐसा मुर्दा बाकी रहे जिस पर तूने अपनी रहमत नाज़िल न फरमाई हो।

हमारी दीन व दुनिया की कोई भी ज़रूरत जिस में तेरी रज़ा भी शामिल है और उस में हमारी भलाई भी, उसको हमारे लिए आसान बना दे और अपनी बख़्शिश के साथ पूरा फरमा दे, ऐ अरहमर्राहेमीन इस दुआ को अपनी कबूलीयत का शर्फ़ अता फरमा, इलाही हमारे आबा व



अजदाद, हमारी माओं, भाइयों, बेटों, अजीजों, शार्गिदों, उस्तादों, हमारे लिए दुआ करने वालों और हम से दुआ के तलबगारों के गुनाह बख्श दे, इलाही उनके भी गुनाह माफ़ फ़रमा जिनसे हमें तेरी खातिर रग़बत और नफ़रत है जिनको हम ने तेरी खातिर छोड़ा है ख्वाह उनमें से कोई जिन्दा है या मुर्दा, उन सब के भी गुनाह बख्श दे इलाही हमारी इस दुआ को अपनी रहमत से कबूलीयत का शर्फ़ अता फ़रमा।

ऐ माबूदे बरहक! तमाम छुपी बातों को जानने वाले, ऐ बलाओं को दूर करने वाले, दुआ को कबूलीयत अता करने वाले और गर्मों को दूर करने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा जो सारी मख़लूक से बेहतर हैं हम को अपनी किताब (कुरआन मजीद) की आयात से नफ़ा पहुंचा और इस की तरतील व तिलावत के वास्ते से हमारे गुनाहों को धो डाल और रमज़ान के रोज़ों और इबादत के ज़रीये हमारे दरजे अपनी कुरबत में बुलंद फ़रमा। ऐ पोशीदा बातों को जानने वाले हमारे हुज़ूर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनकी आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा और कुरआन के ज़रीये हमारी ख़तायें माफ़ फ़रमा और उसके तवस्सुत से हम पर ज़्यादा इनायत कर उसके ज़रीये हमारे बीमारों को अच्छा कर दे हम में से जो मर गए हैं उन पर रहम फ़रमा, हमारे दीनी व दुनियवी मामलात बेहतर फ़रमा दे और इसके ज़रीये हमारे ईसयां के बोझ उतार दे और हम को तौफीक अता फ़रमा कि हम नेकों क ख़साएल इख़्तियार करें, हमारी तमाम ख़ताएं और लज़ज़िशें और ग़लतियां माफ़ फ़रमा दे हमारे दिल और हमारे बातिन को पाक फ़रमा दे और कुरआन की बरकत से अज़कार को बेहतर बना दे और इसके ज़रीये हमारे ख़्यालात को पाकी अता फ़रमा हम को गिरानी से नजात अता कर दे हम से अशरर की बुराईयां और फ़ाजिरों के मक़ को दूर फ़रमा दे हम को सहाबा कराम की मोहब्बत पर जिन्दा रख, हम को दोज़ख़ से नज़ात अता फ़रमा और दुनिया व आख़िरत में भलाई अता कर दोज़ख़ को अज़ाब से महफूज़ रख।

तमाम तारीफ़ खुदा के लिए है खुदा की तमाम रहमतें हुज़ूरे अकरम खातिमुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उनकी औलाद पर, सहाबा कराम पर और अज़वाजे मुतहहरात पर नाज़िल हो ऐ अल्लाह उन सब पर कसरत से सलाम भेज।



## बाब 24

## आदाबुल मुरीदीन

वह फुकराए हकीकी जो उन सूफियाए कराम के रास्ते और तरीके पर चलने वाले हैं, जो नफ़सानी ख्वाहिशों और गुमराह करने वाली आरजूओं से पाक और आदाते रज़ीला से महफूज़ हैं, वह सब लोग अबदाल और औलिया (अल्लाह) के गरोह में दाखिल हैं, उनके दिल में जो खुदा का खौफ़ और डर है उसके बाएस यह हज़रात बहुत कम मुद्दत में शर्फ़याब हो जाते हैं।

## इरादत, मुरीद व मुराद

## इरादत की तारीफ़

अपनी आदात को तर्क कर देना इरादत है तफ़सील इस इजमाल की यह है कि दिल को अल्लाह तआला की तलब में तर्क मासिबा के लिए मुसतएद बना लेना इरादत है जब इंसान उन आदतों को छोड़ देगा जो दुनिया व आखिरत की लज्जतें कहलाती हैं तो उसकी इरादत कामिल होगी, हर मामले में यही इरादत सबसे मुक़दम है, इसके बाद कस्द का नम्बर है और फिर अमल का, बस इरादत सालिके हक़ की इब्तिदा है और उसकी पहली मंज़िल का नाम है।

अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इरशाद फ़रमाया:

तुम उन लोगों को जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं और उसकी रज़ा के तालिब हैं न धुतकारो।

मक़ामे फ़िक्र है कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसे लोगों के धुतकारने और अपने से दूर रखने से मना फ़रमाया। दूसरी जगह इरशाद होता है:

ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने नफ़स को सब्र की आदत डालिये उन लोगों के साथ जो अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं ताकि उसकी रज़ा हासिल करें और आप उनसे अपनी आंखें न फेरें इस नीयत से कि आप उनसे दुनियावी ज़िन्दगी की रौनक चाहें।

अल्लाह तआला ने अपने हबीब को उनके साथ राबता रखने और सब्र करने का हुक्म दिया और सहाबा कराम की तारीफ़ इन अलफ़ाज़ में फ़रमाई कि यह लोग खुदावन्द तआला की रज़ा के तालिब हैं इसके बाद फ़रमाया गया कि आप उनसे दुनियावी ज़िन्दगी की आसाईश चाहते हुए अगमाज़ व अगराज़ न फ़रमायें। इससे यह बात पाए सुबूत को पहुंच गई कि तरीक़त की हकीक़त खुदावन्द तआला की रज़ा तलबी है और दुनिया व आखिरत की जीनत के मुकाबले में अल्लाह की रज़ा बहुत काफ़ी व वाफ़ी है।

## मुरीद किसे कहते हैं

मुरीद यानी खुदावन्द तआला की रज़ा का तालिब वह है जिसमें यह सब औसाफ़ तमाम व



कमाल मौजूद हों यानी वह इस वस्फ से बहरामन्द हो कि हमेशा खुदावन्द तआला और उसकी ताअत की जानिब मुतवज्जेह रहे, मा सिवा अल्लाह से उसको बेजारी हो, वह अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ के कबूल करने से नफरत करे, वह अपने रब की सुनता हो और किताब व सुन्नत के अहकाम पर अमल पैरा हो, गैरुल्लाह की जानिब से वह बहरा हो जाए (किसी बात पर कान न धरे) वह खुदा के नूर के ज़रिया से देखता हो और खुदा अपनी जात में और अपने से सिवा तमाम मखलूक में अल्लाह का फ़ैअल ही मुशाहिदा करता हो, गैरुल्लाह की तरफ से अंधा हो जाए और किसी और को (सिवाए अल्लाह अज़्ज व जल्ल के) फ़ाएले हकीकी न समझे।

## हुज़ूर का इरशाद

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है तेरी मोहब्बत तुझे किसी चीज़ से अन्धा और बहरा बना देती है, यानी महबूब के मासिवा से तुझे अंधा और बहरा कर देती है इस लिए तू महबूब ही में खोया रहता है आदमी उस वक़्त तक मोहब्बत नहीं करता जब तक वह इरादा न करे और वह उस वक़्त तक इरादा नहीं कर सकता जब तक इरादा में खुलूस मौजूद न हो और इरादा में खुलूस उस वक़्त पैदा होता है जब उसके दिल में मशीयते इलाही की चिंगारी शोला ज़न हो जाती है और यही चिंगारी मा सिवा अल्लाह को जला डालती है।

अल्लाह तआला का इरशाद है:

बेशक बादशाह जब किसी बस्ती (करिया) में दाखिल होते हैं तो उसको वीरान कर देते हैं और इसी बस्ती के जी इज़्ज़त लोगों को ज़लील बना देते हैं।

गोया दिल एक बस्ती है और मशीयते इलाही की चिंगारी उस बस्ती की हर चीज़, आरजू और ख्वाहिश को जला डालती है।

## मोहब्बते इलाही का ख्वास्तगार

मोहब्बत एक ऐसी आरजू और एक ऐसी ख्वाहिश है जो हर मुसीबत को आसान बना देती है। ऐसे शख्स की नींद नींद के इन्तेहाई ग़लबा के वक़्त होती है (आराम के लिए नहीं) उसका खाना फ़ाका के वक़्त और कलाम ज़रूरत के तेहत होता है इसलिए कि वह हमेशा अपने नफ्स से नफरत करता रहता है (उसको आराम पहुंचाने के लिए उसका सोना खाना और बोलना नहीं होता) और वह हमेशा महबूब हकीकी की तरफ़ राग़िब होता है वह सिर्फ़ अल्लाह के बन्दों की ख़ैर ख्वाही करता है लेकिन अपने लिए गोशए तन्हाई पसन्द करता है, वह गुनाहों से बचता है और अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहता है और उसके अहकाम की इताअत व बजा आवरी में मसरूफ़ रहता है, अग्रे खुदावन्दी को पसन्द करता है और खुदा की नज़र से शर्म करता है (ऐसा काम नहीं करता जो अल्लाह को नापसन्द हो) उसकी तमाम कोशिशें अल्लाह की मोहब्बत में सर्फ़ होती हैं वह हमेशा ऐसे काम करता है जो उसको खुदा तक पहुंचायें वह गुमनामी और खलवत नशीनी पर क़ानेअ रहता है मखलूक की मदह व सताईश उसको पसन्द नहीं आती।

## मारेफ़्त

वह ख़ास खुदा के लिए कसरत से नवाफ़िल पढ़ता है ताकि अल्लाह तआला तक रसाई का ज़रिया बन सकें यहां तक की वह खुदा तक पहुंच जाता है फिर वह औलिया अल्लाह और



सालिकीने हक के गरोह में दाखिल हो जाता है उस वक्त उस मुरीद को मुराद कहेंगे, उस वक्त उससे वह तमाम गिरां बारियां ले ली जाती हैं जो उसको लाहिक थीं और उसको खुदावन्द तआला की मेहरबानी और शफ़क़त से गुस्ल दिया जाता है फिर अल्लाह तआला के कुर्ब में उस के लिए मंज़िल बना दी जाती है और उसको तरह तरह की खिलअतें पहनाई जाती हैं, इसी का नाम मारेफ़त है यही खुदा की मोहब्बत है इसी से उस को सुकून हासिल होता है उसको तमानियते कुल्ली हासिल हो जाती है।

ऐसा शख्स जो कलाम करता है वह हिकमते इलाही और इल्मे इलाही से करता है, उसका नाम अल्लाह के दोस्तों में पुकारा जाता है वह खुदा के खास बन्दों में दाखिल कर लिया जाता है और वह ऐसे कई नामों से मौसूम हो जाता है जिनका इल्म खुदा के सिवा किसी और को नहीं उस वक्त वह ऐसे राजों से मुत्तला हो जाता है जो उसी के साथ मखसूस होते हैं वह उन राजों को मा सिवा अल्लाह पर जाहिर नहीं करता, वह अल्लाह से सुनता है वह उसी के ज़रिये देखता है, उसी की मदद से काम करता है और उसी की कुव्वत से कुव्वत हासिल करता है वह उसी की ताअत पर चलता है, अल्लाह ही से सुकून हासिल करता है और अल्लाह की ताअत और याद के साथ उसी की निगहबानी और हिफ़ाज़त में वह सो जाता है फिर वह खुदा की राह में मरने वालों और शहीद होने वालों में से हो जाता है वह अल्लाह की ज़मीन के औताद में से हो जाता है वह अल्लाह के शहरों और अल्लाह के दोस्तों का निगहबान बन जाता है।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हदीसे कुदसी में बयान फ़रमाया की अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरा मोमिन बन्दा हमेशा नवाफ़िल के ज़रिये मेरा कुर्ब हासिल करता है यहां तक की मैं उसको अपना दोस्त बना लेता हूँ और मैं उसके कान, आंखें, ज़बान, हाथ पांव और दिल बन जाता हूँ पस वह मेरे ही ज़रिया सुनता है और मेरी ही मदद से देखने लगता है मेरे ही ज़रिया बोलता है और मेरे ही ज़ेहन से सोचने लगता है और मुझ ही से कुव्वत हासिल करता है।

यह वह बन्दा है जिस ने एक बड़ी अक्ल का बार उठा रखा है जिस की नफ़सानी ख्वाहिशात फना हो चुकी हैं चूंकि उस पर खुदावन्द जल्लो उला का कब्ज़ा हो गया है इसलिए उस का दिल खज़ानए इलाही बन जाता है, ऐ खुदा के बन्दे! अगर तेरा इरादा है कि तू मारेफ़ते इलाही हासिल करे तो फिर मंज़िले खुदावन्दी यही है। (इन बातों पर अमल कर और को खुद को वैसा बना ले)।

## मुराद और मुरीद का फ़र्क

बुजुर्गाने सल्फ़ में से किसी बुजुर्ग का इरशाद है कि मुरीद और मकसूद के असल मानी यही हैं अगर अल्लाह तआला को उसे मुरीद बनाना मकसूद न होता तो वह हरगिज़ मुरीद न होता। अल्लाह तआला जो चाहता वही होता है इसलिए जब वह किसी को कोई भी खुसूसियत अता करना चाहता है तो उसको इरादत की तौफ़िक़ अता फ़रमा देता है। बाज़ दूसरे बुजुर्गों का इरशाद है कि मुरीद इब्तेदा करने वाला होता है और मुराद व मकसूद मुनतहा है। सालिक यानी मुरीद वह है जो मसाएब और मशक्कतों में फेंक दिया जाता है और मुराद वह है जो मंज़िले मकसूद तक पहुंच गया हो और रंज व मशक्कत से आज़ाद हो चुका हो, मुरीद को रंज दिया जाता है और सुन्नते इलाही यही है कि वह सालिकीने हक को मजाहिदात की तकलीफ़ देता है फिर उन को खुद तक पहुंचा देता है और उनसे बोझ उतार देता है नवाफ़िल की अदाएंगी



और तर्क ख्वाहिशात के सिलसिले में उनको आसानी फ़राहम कर देता है, फ़राएज व सुनन की अदाएंगी के अलावा दीगर इबादात की अदाएंगी में रियायत फ़रमा देता है फिर अल्लाह तआला उनको हुक्म देता है कि वह अपने दिलों कि हिफ़ाज़त करें, हुदूदे इलाही के मुहाफ़िज़त में मशगूल हों और मा सिवा अल्लाह से अपने दिलों को मुनक़तअ कर लें, उस वक़्त उन लोगों का ज़ाहिर तो मख़लूक़े खुदा के साथ होता है लेकिन उन का बातिन अल्लाह के साथ मशगूल होता है, उनकी ज़बानें अल्लाह के हुक्म और उनके दिल इल्मे खुदावन्दी के साथ होते हैं, उनकी ज़बानें बन्दगाने इलाही को नसीहत करने के लिए मख़सूस हो जाती हैं और उनके बातिन इलाही अमानतों की हिफ़ाज़त के लिए वक़फ़ हो जाते हैं पस जब तक बन्दे अल्लाह की इबादत में मसरूफ़ व मशगूल हैं और उसके हुक्क और हुदूद की हिफ़ाज़त पर काएम हैं उन सब बन्दों पर अल्लाह तआला का सलाम और उसकी बरकतें नाज़िल हों।

## मुरीद व मुराद के सिलसिले में हज़रत जुनैद की तशरीह

हज़रत जुनैद से दरयाफ़्त किया गया कि मुरीद और मुराद के क्या मानी हैं आप ने फ़रमाया मुरीद वह है जिस की सरपरस्त तदबीरे इल्मी होती है और मुराद की सरपरस्त रियायते खुदा वन्दी होती है, मुरीद तो चलता है लेकिन मुराद उड़ता है, ज़ाहिर है कि चलने वाला और उड़ने वाला बराबर नहीं हो सकते।

## हज़रत मूसा और आंहज़रत की मिसाल

यह फ़र्क हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मिसाल से बख़ूबी वाजेह हो सकता है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सिर्फ़ मुरीद थे कि उन का मुनतहाए सैर कोहे तूर था और सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सैर की हद अर्श व लौहे महफूज़ तक थी पस मुरीद तालिब है और मुराद मतलूब है, मुरीद की इबादत मुजाहिदा है और मुराद की इबादत बख़्शिश व मोहेबत है, मुरीद मौजूद है और मुराद फ़ानी (बिल हक़) है मुरीद ज़जा के लिए अमल करता है लेकिन मुराद अमल की तरफ़ तवज्जोह नहीं करता बल्कि तौफीक व एहसाने खुदावन्दी की तरफ़ उस की नज़र होती है, मुरीद सुलूक की मंज़िल तय करता है और मुराद सुलूक के तमाम रास्तों के मक़ामे इत्तेसाल पर खड़ा है, मुरीद तो नजरे खुदावन्दी के नूर से देखता और मुराद खुद अल्लाह के ज़रिये देखता है, मुरीद अपनी ख्वाहिशात की मुख़ालिफ़त करता है और मुराद अपने इरादे और ख्वाहिशे नफ़्स ही से बेज़ार होता है (उसके अन्दर अपना इरादा और अपनी ख्वाहिश जन्म नहीं लेती) मुरीद तकरूब हासिल करता है और मुराद को तकरूब दिया जाता है मुरीद को परहेज़ कराया जाता है और मुराद की रहनुमाई की जाती है उस को नाज़े नअम से नवाज़ा जाता है और खिलाया जाता है, मुरीद महफूज़ होता है और मुराद के ज़रिये (दूसरों की) हिफ़ाज़त कराई जाती है, मुरीद हालते सऊद (ऊपर चढ़ना) में होता है और मुराद अपने उस रब तक पहुंच चुका होता है जिस के पास हर ऊम्दा और नफीस नेमत मौजूद है इसलिए मुराद हर आबिद, मुतकरिब, परहेज़गार और नेकोकार से बढ़ जाता है।



# मुतसव्विफ़ और सूफी का फ़र्क़

## मुतसव्विफ़ कौन है

मुतसव्विफ़ वह है जो सूफी बनने के लिए रियाज़ करता है और इतनी कोशिश करता है कि वह आखिरकार सूफी बन जाता है, पस जब वह मशक्कतें उठा सकता है और उस कौम के तरीका को अपना शिआर बना लेता है और उन लोगों की राह इख्तियार कर लेता है तो वह मुतसव्विफ़ कहलाता है जिस तरह कमीज़ पहनने वाले और जिरह बांधने वाले को कहा जाता है कि उसने कमीज़ पहनी और जिरह बांधी और उस को साहिबे कमीज़ और साहिबे जिरह कह कर पुकारते हैं उसी तरह जुहद इख्तियार करने वाले को तजहहुद कहते हैं और जब वह अपने जुहद में उस कमाल पर पहुंच जाता है कि तमाम अशिया को हेच समझने लगता है, तो उस वक़्त उस को ज़ाहिद कहा जाता है उस वक़्त उसके सामने ऐसी बहुत सी बातें आती हैं जिनको वह न चाहता है और न उनसे नफ़रत करता है वह उन तमाम बातों में अहकामे इलाही की पालबंदी करता है और फ़ेअले इलाही का मुंतज़िर रहता है इसी मिसाल पर मुतसव्विफ़ और सूफी को क़यास कर लेना चाहिए। सूफी में जब यह वस्फ़ पैदा हो जाएगा तो उसको सूफी कहें लफ़ज़ सूफी फ़ौइल के वज़न पर है और मुसाफ़ात से मुशतक़ है इस एतबार से सूफी के मानी होंगे वह एक बन्दा जिस को अल्लाह तआला ने सफ़ाए क़ल्ब अता फ़रमाई, सूफी वह है जो नफ़्स की आफ़तों और उस की बुराईयों से ख़ाली, खुदा के नेक रस्ते पर चलने वाला, हक़ाएक को गिरफ़्त में लेने वाला और अपने दिल को मख़लूक के दर्मियान ग़ैर मुतहरीक़ महसूस करने वाला हो।

## तसव्वुफ़ के मानी

तसव्वुफ़ के मानी के बारे में कहा गया है कि अल्लाह के साथ सिद्क और उस के बन्दों के साथ अच्छे अख़लाक़ से पेश आना तसव्वुफ़ है।

## मुतसव्विफ़ और सूफी का फ़र्क़

सूफी और मुतसव्विफ़ के दर्मियान फ़र्क़ यह है कि मुतसव्विफ़ मुब्तदी है और सूफी मुनतहा, मुतसव्विफ़ राहे सुलूक का राह रौ है और सूफी वह है जो उस राह को तय कर चुका है और मक़सूदे हकीकी को पा चुका है, मुतसव्विफ़ बार का बरदाश्त करने वाला है और सूफी तमाम बार बरदाश्त कर चुकता है, मुतसव्विफ़ पर हलकी और भारी चीज़ें इसलिए बार की जाती हैं ताकि उस का नफ़्स शिकस्ता हो जाए और उस की ख़्वाहिशात जाएल और उसकी तमाम आरजूयें और तमन्नायें नाबूद हो जायें इस तरह वह साफ़ हो जाता है और सूफी कहलाता है। जो बन्दा यह बोझ उठा लेता है पस वह अमानते खुदावन्दी का उठाने वाला, मशीयते इलाही का कर्मा और खुदावन्द तआला का तर्बियत याफ़्ता और उस के उलूम व अहकाम का सर चशमा बन जाता है, वह अमन व कामरानी का घर, औलिया अल्लाह का निगरां, उन का मामन और उनकी पनाह गाह बन जाता है, तमाम औलिया अल्लाह और औताद का मरजा, उनकी क़याम गाह और राहत व मसरत के हुसूल का मम्बा हो जाता है, हार और ताज का मोती और खुदा नुमा बन जाता है। मुरीद मुतसव्विफ़ अपने नफ़्स अपनी ख़्वाहिश और अपने शैतान से बेज़ार हो कर तमाम मख़लूक



और अपनी दुनिया व आखिरत से बेनियाज बन जाता है, वह तमाम दुनिया और उस के आमाल व अफ़आल से कट कर खुदा की इबादत में मशगूल हो जाता है अपने नफ़्स को मुजाहिदा और रियाज़त में लगा देता है, अपने शैतान के खिलाफ़ चलता है और अपनी दुनिया को तर्क कर देता है, तमाम ख़वेश व अकारिब से किनारा कशी इख़्तियार कर लेता है, यह सब कुछ वह हुक्मे खुदा वन्दी से करता है और आखिरत की गर्ज से करता है। इसके बाद वह बहुक्मे इलाही अपने नफ़्स और ख़्वाहिश से जिहाद करता है और उस जिहाद में तरक्की करके अपने रब की मोहब्बत में तलबे आखिरत और जो कुछ अल्लाह तआला ने आखिरत में अपने दोस्तों के लिए नेमतें तैयार कर रखी हैं उन सब को छोड़ देता है इस मरहला पर पहुंच कर वह मौजूदात के इहाता से निकल जाता है और तमाम आलाइशों से पाक हो जाता है और तमाम जहानों का मालिक बन जाता है उस वक़्त उससे तमाम दुनियावी अलाएक व असबाब और अहल व अयाल के ताल्लूकात ख़त्म हो जाते हैं, सारी जिहात उस पर बन्द हो जाती हैं और उसकी रू बरू सारी जिहात की छत और तमाम दरवाज़ों का एक दरवाज़ा खुल जाता है जिस को रज़ाए इलाही कहते हैं यानी उस अल्लाह की रज़ा मन्दी जो तमाम मुल्कों का मालिक और हर माज़ी व मुस्तक़बिल का जानने वाला है जो तमाम राजों और पोशीदा बातों से वाकिफ़ और जो कुछ हमारे आज्ञा करते हैं और जो कुछ हमारे दिल और हमारी नीयतें सोचती हैं उन का अच्छी तरह जानने वाला है।

फिर उस दरवाज़े के सामने एक और दरवाज़ा खुलता है यह कुर्बे खुदावन्दी का दरवाज़ा है, उस दरवाज़े से सूफी को मोहब्बत की महफ़िलों की जानिब उठा लिया जाता है, फिर वह वहदानियत के राज की दुनिया में पहुंच जाता है और उस पर अज़मत व जलाले इलाही मुंकशिफ़ होते हैं जब उसकी नज़र जलाल व अज़मत पर पड़ती है तो वह अपनी हस्ती बतौर नज़राना पेश करता है और अपने नफ़से हसाब, ग़लबा व इक्तिदार, कुव्वते अमल, इरादा और ख़्वाहिश, दुनिया व आखिरत सब को छोड़ जाता है और उस वक़्त वह एक ऐसे बलूरी ज़र्फ़ की तरह हो जाता है जो लबा लब पानी से भरा हो और उसमें जलवा बारियां होती हों फिर उस पर तक्दीर के सिवा कोई और हुक्म नहीं किया जाता वह खुद अपनी जात और अपनी लज़्ज़तों से गुज़र जाता है और उस वक़्त वह उस बच्चे की मानिन्द बन जाता है जिस को जब तक खिलाया नहीं जाता वह नहीं खाता और जब तक पहनाया नहीं जाता नहीं पहनता, इस मर्तबा पर पहुंच कर वह आज़ाद हो जाता है और अपनी जात को अल्लाह के सुपुर्द कर देता है जैसा कि अल्लाह तआला ने अस्हाबे कहफ़ के बारे में इरशाद फ़रमाया कि हम उनको दायें बायें करवटें बदलवाते रहते हैं।

## सालिक का मख़लूक में मौजूद होना

अगरचे सालिक हक्के मख़लूक में मौजूद होता है लेकिन अफ़आल व आमाले बातिनी, ज़ाहिरी हालात ख़्यालात और अपनी नीयतों में उन सबसे जुदा होता है उस वक़्त वह सूफी कहलाता है और उसके मानी यह होते हैं कि वह मख़लूक की कदूरत से साफ़ हो गया और अपने नफ़्स को और उस रब को पहचानने वाला बन जाता है जो मुर्दे को जिलाता है और जो अपने दोस्तों को नफ़ूस और तबाए की ख़्वाहिशात और उनकी गुमराहियों की जुलमतों से निकाल कर मारिफ़े उलूम, असरार, अनवारे कुरबत और अपने नूर की वादी की तरफ़ ले जाता है और खुद जिम्मादार है अल्लाह तआला ने उन लोगों के दिल ख़्यालात और नीयतों से वाकिफ़ कर दिया है मेरे रब ने उनके



दिलों का भेदी और पोशीदा बातों का अमीन बना दिया है और खलवत व जलवत में अल्लाह तआला ने उनको (हर मुसीबत से) महफूज कर दिया है, उस मंजिल पर ऐसा कोई शैतान नहीं जो उनको बहका सके और न कोई उनके पीछे लगी हुई गुमराही उन को किसी लगजिश की तरफ माएल कर सकती है अल्लाह तआला ने शैतान से मुखातिब हो कर फरमाया मेरे बन्दों पर तेरा कोई गलबा नहीं होगा न उनको कोई गुमराह करने वाला है और न उनके साथ कोई ऐसी नफ्सानी ख्वाहिश होगी जो उनको अहले सुन्नत वल जमाअत के तरीके से निकाल दे।

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया है यह इस लिए होगा कि हम उस से बुराई और बेहयाई दूर कर दें वह तो हमारे मुखलिस बन्दों में से है, पस मेरे रब ने उन (सूफिया) की हिफाजत की और उनके नुफूस की रऊनतें और किब्र व नखूवत को अपने गलबा और जोर से खत्म कर दिया और उनको मकामाते सुलूक में साबित कदम रखा और उन को इफाए अहद की तौफीक अता फरमाई उनको यह तौफीक उस वक्त अता हुई जब उन्होंने अल्लाह की राह में रास्ती से काम लिया और अपनी जात के मखलूक से अलाहदा होने पर और अपनी परेशानियों पर सब्र से काम लिया, अपने फराएज अदा किए, हुदूदे शरईय्य और अहकामे इलाही की हिफाजत की और सुलूक के मकामात पर सख्ती से काएम रहे, यहां तक कि अल्लाह तआला ने उन को साबित कदम कर दिया और उनको आरास्ता किया और सफाए कल्ब से नवाजा उन्होंने खुद को बा अदब बनाया और पाक व साफ रखा, फराखी को दिल में जगह दी खुद को पाकीजा बनाया और जसारत व दिलेरी से काम लिया और उन तमाम बातों के आदी और खूबर हो गये पस उनको अल्लाह की कामिल विलायत और सरपरस्ती हासिल हो गई।

अल्लाह तआला मोमिनीन का दोस्त होता है इरशाद फरमाता है: अल्लाह सालेहीन का कारसाज है। उस मंजिल से सूफी का दरजात बढ़ा कर खुदा के नजदीक कर दिये जाते हैं जिस मकाम पर यह पहुंचते हैं वह खुदा के रू बरू हैं, उस मंजिल पर पहुंच कर उनकी मुनाजात वह मुनाजात बन जाती है जो उनके बातिन व कुलूब में पैदा होती है, वह सब कुछ छोड़ कर खुदा की तरफ मशगूल हो जाते हैं उनके नुफूस को हर शय से रोक दिया गया है और अल्लाह तआला ने जो हर चीज का रब और मौला है उनको अपने कब्जे में कर लिया और उनको उनकी उकूल के साथ मुकय्यद कर दिया और फिर वह उसी के कब्जा और हिफाजत में हो जाते हैं। कुर्बे इलाही की वह खूशबू सूंघते हैं और तौहीद व रहमत की सैरगाह में जिन्दगी बसर करते हैं और उसकी इजाजत के बगैर किसी काम में मशगूल नहीं होते ताकि शैतान और नफसे अम्मारा और उसकी ख्वाहिशात उनको जरूर न पहुंचा सकें इस सूरत में उनके आमाल में न शयातीन का कोई दखल बाकी रहता है न नफ्सानी उयूब का जैसे रिया, निफाक, ग़ज़ब, खुद पसन्दी, तल्बे मुआविजा, शिर्द और किसी मखलूक की ताकत और कुव्वत पर एतमाद का दखल बाकी नहीं रहता, वह अपने आमाल को अल्लाह की मेहरबानी और तखलीके खुदावन्दी और उसी की दी हुई अमली तौफीक समझते हैं।

मेरी तलब भी तो तेरे करम का सदका है

कदम यह उठते नहीं हैं उठाए जाते हैं

उन का यह अकीदा इस वजह से रासिख हो जाता है कि कहीं वह हिदायते इलाहिया की राह से न भटक जायें जब वह अहकाम की अदाएगी और आमाल की तकमील से फारिग हो जाते



हैं तो उनको फिर उन ही मरतिब की तरफ लौटा दिया जाता है जिन को उन्होंने अपने लिए लाजिम कर लिया था कभी ऐसा होता है कि उनको अमीन बना दिया जाता है और उनमें से हर एक से उसकी हैसियत और हालत के मुताबिक खिताब किया जाता है और इरशाद होता है तुम आज से हमारे अमीन हो चुके यह मरतबा जब उन्हें हासिल हो जाता है तो उसके बाद यह किसी हुक्म के मुहताज नहीं रहते बल्कि उनको मुखतार बना दिया जाता है उनका काम उन ही के सुपुर्द हो जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसे सही इस की ताईद करती है कि अल्लाह तआला ने बजरिये जिब्रील अलैहिस्सलाम अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास फरमान भेजा था और फरमाया था कि बन्दा को मुझ से करीब करने वाली चीज अदाए फर्ज से ज्यादा और कोई नहीं है, बन्दा नवाफिल के जरिये मेरा कुर्ब हासिल करता है यहां तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूं और जब मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूं तो मैं उसके कान, आंखें, ज़बान, हाथ, पांव और दिल बन जाता हूं वह मेरे ही कानों के जरिये सुनता है और मेरी ही आंखों के जरिये देखता है और मेरी ज़बान से बोलता है, मेरे ही कल्ब से समझता है और मेरे ही हाथों से पकड़ता है। इस हदीसे कुदसी को इस किताब में हमने कई जगह बयान किया है क्योंकि यही हदीस सूफिया ए कराम के इस मकाम की हामिल है।

अलगर्ज उस बन्दा का दिल अल्लाह की मुहब्बत, नूर और इल्म (मारेफत) से पुर हो जाता है फिर इसके अलावा उसके अन्दर किसी और चीज की गुंजाईश नहीं रहती। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि जो शख्स अल्लाह से कल्बी मुहब्बत करने वाले को देखना चाहता है वह अबू हुजैफा के आजाद कर्दा गुलाम (हजरत) सालिम को देख ले जिस का जाहिर फेअले इलाही से मुतहरिक और बातिन आल्लाह की मुहब्बत से पुर है।

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने बारगाह इलाही में अर्ज किया था कि ऐ परवरदिगार मैं तुझे कहां दूँ अल्लाह तआला ने इरशाद फरमा ऐ मूसा क्या किसी घर में मेरी रसाई हो सकती है वह कौन सी जगह है जो मुझे बरदाश्त कर सकती है (मेरा इहता कर सकती है) अगर तुम जानना ही चाहते हो कि मैं कहां रहता हूं तो मेरा मकाम है तारिक, वद्दाअ और अफीफ का दिल तारिक वह है जो कोशिश और तकलीफ के साथ दुनिया को छोड़ता है लेकिन फिर भी उस में शाएबा बाकी रहता है, फिर अल्लाह उस पर अहसान फरमाता है तो वह दुनिया की तरफ से मुर्दा हो जाता है और सारी दुनिया को तर्क कर देता है (वद्दाअ) हउस के बाद वह अफीफ बन जाता है यानी अपने मौला के सिवा किसी और की तरफ तव्वजोह ही नहीं करता।

अगर कोई यह सवाल करे कि इन्सान जब तर्क दुनिया कर लेता है तो फिर उस पर मजीद अहसाने इलाही क्या होता है? तो इसके जवाब की तफसील यह है कि जब अल्लाह तआला बन्दा को एक मरतबा पर कायम करता है तो शर्त यह होती है कि बन्दा उस पर काइम रहे और अपने कदम जमाए रखे। पस बन्दा अगर इस शर्त को पूरा कर लेता है तो फिर उस मरतबा से आगे अल्लाह उसको आलमे जबरुत में दाखिल फरमा देता है, आलमे जबरुत का हाकिम उसके नफ्स की निगहदाश्त करता और ख्वाहिशात से उसकी बाज़ दाश्त करता है जिस की वजह से उसके नफ्स में मसकनत और खूशूअ पैदा हो जाता है उसके बाद उसको बादशाहे आलमे जबरुत के हुजूर में पेश किया जाता है और शाहे जबरुत उसको मुहज्जब (आरास्ता) कर देता है उसके बाद आलमे जलाल में ले जाकर उसको अदब सिखाता है फिर आलमे जमाल में ले



जाकर उसके मैल कुचैल (कसाफते नफ्स) को साफ करता है फिर मुल्के अजमत में ले जाकर उसको पाक करता है और मुल्के तजल्ला में गुस्ल कर के उसको निखार देता है फिर मुल्के बहजत में पहुंचा कर उसको वुसअत अता फरमाता है उसके बाद मुल्के हैबत में उसकी तरबीयत फरमाता है वहां से मुल्के रहमत में पहुंचा कर ताजगी, कुव्वत और शुजाअत अता करता है फिर मुल्के फरदियत में पहुंचा कर उसको सब से यगाना व यकता बना देता है इस मरतबा पर लुत्फे इलाही से उस को गिजा पहुंचती है और शफकते इलाहिया उसको जमीयत अता करती है और उसका इहाता कर लेती है, मुहब्बत उसको कुव्वत पहुंचाती है, शौक कुर्ब अता करता है और मशीयत (इलाही) कुरबे खुदावन्दी तक पहुंचा देती है और अल्लाह तआला उसका रुख पलट कर उसको कुर्ब अता फरमाता है इस मंजिल पर पहुंच कर वह ठहर जाता है, फिर उसको अदब सिखाया जाता है उससे राज कहे जाते हैं अपने करम से अल्लाह तआला उसको बस्त इनायत करता है फिर उस पर कब्ज तारी फरमा देता है, उस मंजिल पर पहुंच कर वह जहां जाता है और जिस खलवत में भी होता है, अपने रब से करीब और उसी के कब्जा में होता है। उस वक्त वह अल्लाह के असरार और उन अहकाम व तसरूफात का अमीन बन जाता है जो अल्लाह तआला की तरफ से मखलूक को पहुंचते हैं इस मरतबा पर पहुंच कर उसकी सिफात खत्म हो जाती हैं, कलाम और ताबीर कतअ हो जाती है, यही मकाम कल्ब व अब्ल की रसाई क मुन्तहा और औलिया अल्लाह की गायत (मंजिले आखिरी) है यहीं तक औलिया अल्लाह के अहवाल की पहुंच है इससे आगे के मकामात अंबिया और रसूलों के लिए मखसूस हैं इस लिए कि वली की इन्तेहा नबी की इब्तिदा होती है।

## नबूव्वत और विलायत का फर्क

नबूव्वत और विलायत में फर्क यह है कि नबूव्वत अल्लाह की तरफ से एक कलाम है और जिब्रील अलैहिस्सलाम की मारफत अल्लाह की तरफ से एक वही है, हजरत जिब्रील वही अदा करते हैं और अल्लाह की तरफ से उस पर कबूलीयत की मोहर लग जाती है उसकी तसदीक लाज़िम है और उसका मुनकिर काफिर है इस लिए कि नबूव्वत का मुनकिर हकीकत में कलामे इलाही का मुनकिर है।

विलायत यह है कि अल्लाह अपने दोस्त को अपनी बात बतौरे इलहाम पहुंचा देता है, यह इलहाम अल्लाह ही की तरफ से होता है और अल्लाह की तरफ से सच्ची जबान पर जारी होता है इस इलहाम में एक ठहराओ और सुकून होता है मजजूब का दिल उसको कबूल कर लेता है और उससे सुकून हासिल करता है। मुख्तसरन यह कि कलाम (वही) खुदावन्दी अंबिया के लिए मखसूस है और इलहाम औलिया अल्लाह के लिए है अब्ल का रद्द करने और न मानने वाला काफिर है इस लिए कि वह हकीकत में कलामे इलाही को रद्द करने वाला है और दूसरे का मुनकिर काफिर नहीं बल्कि नाकाम है उसका इनकार वबाल का बाइस बन जाता है। इलहामा हकीकत में उस चीज़ को कहते हैं जो मशीयते खुदावन्दी के इल्मे इलाही से किसी के दिल में एक राज की तरह पैदा हो अल्लाह जिस बन्दा से मोहब्बत करता है उसकी मोहब्बत उस चीज़ को वाकैइयत के साथ बन्दा के दिल तक पहुंचा देती है और मुहिब का दिल सुकून के साथ उसको कबूल कर लेता है।



## बाब 25

# राहे सुलूक में मुबतदी के वाजिबात

### मुबतदी के वाजिबात

सही एतकाद ही इस की बुनियाद है और सल्फ़ सालेहीन कुदमाए अहले सुन्नत के अकीदे पर होना ज़रूरी है। अंबिया मुर्सलीन, सहाबा कराम, ताबेईन और सिद्दीकीन के तरीके पर कायम रहना ज़रूरी है (इस की तफ़सील) इस किताब में पहले पेश कि जा चुकी है)

### कुरआन मजीद और हदीसे पाक की पाबंदी

अवामिर व मनाही, उसूल और फ़रोज़ दोनों में कुरआन मजीद औ हदीसे पाक की पाबंदी ज़रूरी है अल्लाह तक उड़ कर पहुंचने के लिए इन ही को दो बाजू बना लेना चाहिए इसके बाद सिदक और सई की ज़रूरत है क्योंकि राहे सुलूक में तवक्कुफ़ और काहिली हर आदमी की सरिश्त में दाखिल है हवा व हवस गुमराह करने वाली चीज़ें हैं, नफ़्स बड़ा ऐबी है, लज़्ज़तें और ख़्वाहिशें हर वक्त हैज़ान में रहती हैं, उन से जुलमत व दामानदगी और तकान हासिल होती है अगर उस दामानदगी और जुलमत में मुरीद सई व कोशिश से काम ले तो उसको हिदायत, इरशाद, रहबरी करने वाला, नामूस बनाने वाला, मोनिस और एक राहत आफ़री राहतनुमा मिल जाएगा। अल्लाह तआला का इरशाद है :

जो लोग हमारी राह में कोशिश करते हैं हम अपने रास्ते उनको खुद बता देते हैं। एक बुजुर्ग दानिशमन्द का कौल है कि जो शख्स तलब और सई करता है वह अपने मक़सद को पा लेता है पस एतकाद (सही) की बदौलत इल्मे हकीकत हासिल होता है और सई और कोशिश से राहे हकीकत का तै करना मयस्सर आता है।

मुरीद को सच्चे दिल से अहद करना चाहिए कि जब तक बारगाहे खुदावन्दी तक वह नहीं पहुंच जाएगा एक क़दम भी अल्लाह तआला की रज़ा के बग़ैर न उठाएगा और न कहीं रखेगा। दिल सुलूक में किसी मलामत करने वाले की मलामत से अपने मक़सद से वापस नहीं होना चाहिए, इस लिए की जो अहले सिदक हैं उनका क़दम कभी पीछे नहीं हटता है उसको करामत की वजह से रास्ता में कहीं तवक्कुफ़ नहीं करना चाहिए। करामत को अल्लाह के रास्ते में अपने जिहाद व सई का सिला नहीं समझना चाहिए क्योंकि करामत तो अल्लाह तक रसाई में खुद एक हिजाब है जो उस तक पहुंचने से रोकती है अलबत्ता वसूले हक़ के बाद ज़रर नहीं पहुंचाती इस लिए कि करामत खुदावन्द तआला की अता करदा कुदरत का नमूना और बारगाहे इलाही तक रसाई का समरा होती है उस वक्त साहबे करामत अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह की कुदरत और ख़िरक़ आदत होता है, पहले वह नादान था, ना वाकिफ़ था, गूंगा था अब उसका कलाम



हिकमते कामिला बन जाता है उसकी हरकात व सकनात और ज़िन्दगी की रफ़्तार उलुल अबसार के लिए दर्से इबरत बन जाती है और उसके ऊपर और उसके दिल में ऐसे अफ़आले इलाही का ज़हूर होता है जो दानिश व फ़हम को हैरानी में डाल देते हैं।

## मोजज़ा और करामत

विलायत की शर्त है कि करामत को पोशीदा रखे और नबूव्वत और रिसालत में शर्त है कि मोजज़ात का इज़हार किया जाए ताकि नबूव्वत और विलायत का फ़र्क़ ज़ाहिर हो जाए, इसलिए मुबतदी (मुरीद) को लाज़िम है कि इस की पाबंदी करे।

## मुरीद का मेल मिलाप किन लोगों से मना है

मुरीद के लिए जाएज़ है कि वह मक़ामाते तक़सीर में न घिरे यानी तक़सीर व कोताही से बचे, उन लोगों के साथ मेल मिलाप न रखे जो इस्लाम व ईमान के तो दाई हैं लेकिन अमल में कोताही करते हैं, नाकारा हैं महज़ बातें बनाते हैं आमाल व अहकाम के मुख़ालिफ़ हैं ऐसे ही लोगों के हक़ में अल्लाह तआला फ़रमाया है:

ऐ लोगो! अगर तुम ईमान वाले हो तो जो बात तुम खुद नहीं करते उसके लिए दूसरों को क्यों कहते हो क्योंकि यह खुदा के नज़दीक बड़ा गुनाह है कि जो बात तुम खुद न करो दूसरों को उसकी दावत दो।

एक और आयत में इरशाद फ़रमाया:

क्या तुम दूसरों को नेकी का मशवस देते हो और अपनी जानों को फ़रामोश कर देते हो हालांकि तुम अल्लाह की किताब पढ़ते हो क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते (कि दूसरों नेकी का हुक्म देना खुद न करना बुरी बात है।

मुरीद के लिए यह भी ज़रूरी है कि जो कुछ मयस्सर आए रहे खुदा में खर्च कर दे और उसके पास जो कुछ है उसके देने में इस लिए बुख़ल न करे कि अगर मैं खर्च करूंगा तो इफ़्तार व सहर के वक़्त क्या खाऊंगा, अपने दिल में उसको यकीन रखना चाहिए कि ज़मान साबिक में कोई वली ऐसा पैदा नहीं हुआ जो मयस्सर होने वाली चीज़ के खर्च करने में बुख़ल करता हो।

## इज़्ज़ व इन्केसार

मुरीद के लिए ज़रूरी है कि हमेशा आजिज़ी को अपनाये रहे, भूक और गुमनामी को पसन्द करे अगर लोग उसकी मज़म्मत करें तो उस पर ख़ूश हो। अगर उसके मुआसिरीन और हम सर लोगों को इज़्ज़त, बख़्शिश और मशाएख़ व उलमा की मजालिस में कुर्ब के लिहाज़ से उस पर तरज़ीह दी जाए तो रंज न करे बल्कि उस पर राज़ी रहे, खुद भूका रहे और दूसरों को पेट भरता रहे, सब की इज़्ज़त होने दे और खुद ज़िल्लत पर राज़ी रहे खुद भी सब की इज़्ज़त करे और अपने लिए ज़िल्लत पसन्द करे अगर कोई मुरीद इन उमूर पर राज़ी न होगा और अपने नफ़्स को इन हालात में मुतमईन नहीं रखेगा तो उस पर असरारे मारफ़त का खुलना मुमकिन नहीं है और वह इस राह में कुछ भी न कर सकेगा उसकी मुकम्मल फ़लाह और कामयाबी इस में मुज़मिर है जिस का हम ने अभी ज़िक्र किया।



## मुरीद और रज़ाए इलाही

मुरीद के लिए ज़रूरी है कि अपने गुज़िश्ता गुनाहों की मग़फ़िरत तलब करे और आइन्दा गुनाहों से हिफ़ाज़ते इलाही का ख़्वास्तगार हो, अल्लाह तआला की पसन्द के मवाफ़िक़ ताअते इलाही और अल्लाह तआला को पहचानने वाली इबादत को तौफ़ीक़ के सिवा किसी और मक़सद कि पूरा होने का मुन्तज़िर न रहे वह अपनी तमाम हरकात व सकनात में राज़ी ब रज़ा रहे, मशाएख़ व औलिया और अबदाल की नजरों में महबूब व मक़बूल हो जाने को पसन्द करे इस लिए की जी अक़ल व जी फ़हम दोस्तों के गरोह में दाख़िल होने का यही ज़रीया है, अहले फ़र्द वही है जो अल्लाह की जानिब से फ़हम रखते हैं। यह जो कुछ ने हम ने बयान किया सब मुरीद के अहवाल से मुताल्लिक़ था जब तक मुरीद का दिल तमाम ख़्वाहिशात और अग़राज से ख़ाली नहीं होगा और सिर्फ़ मजक़ूर बाला मक़सद के हुसूल के अलावा दूसरे मताल्लिब व मकासिद के हुसूल की आरजू से पाक व साफ़ नहीं हो जाएगा वह मुरीद कहलाने का मुस्तहिक़ नहीं है।

## शैख़ तरीक़त के साथ मुरीद के आदाब

### शैख़ की मुख़ालिफ़त न करना

मुरीद पर वाजिब है कि जाहिरी अमल में पीर (शैख़) की मुख़ालिफ़त न करे और न दिल पर उस पर ऐतराज़ करे, जाहिर में शैख़ पर नाफ़रमानी करने वाला गुस्ताख़ और बे अदब है और बातिन में उस पर मुअतरिज़ होने वाला खुद अपनी तबाही और हलाक़त का ख़्वास्तगार है। मुरीद को चाहिए की शैख़े तरीक़त की तरफ़दारी में अपने नफ़्स को मसरूफ़ रखे और जाहिर व बातिन में शैख़ की मुख़ालिफ़त से अपने नफ़्स को बाज़ रखे और उसकी उस ख़्वाहिश पर उसको मलामत करे और इस आयत की तिलावत कसरत से करे।

ऐ अल्लाह हम को बख़्श दे हम से पहले जो मोमिन भाई दुनिया से रुख़सत हो चुके हैं उन को भी बख़्श दे, हमारे दिलों को मोमिनों की तरफ़ से न हटा ऐ परवरदिगार बेशक तू ही मेहरबान और रहमत करने वाला है।

अगर पीरे तरीक़त से ख़िलाफ़ शरअ कोई अमल सरज़द हो तो इशारा और किनाया में उसकी वजह दरयाफ़्त करे सराहत के साथ वजह न पूछे इस सूरत में शैख़ को अपने मुरीद से नफ़रत हो जाएगी। अगर शैख़ में कोई ऐब नज़र आए तो उसकी पर्दा पोशी करे और उसकी कोई शरई तावील निकाले और इस बारे में अपने नफ़्स को ग़लत फ़हम समझे यानी यह ख़्याल करे कि मैंने शैख़ के बारे में जो कुछ समझा है ग़लत समझा है। अगर इस फ़ैअल का कोई शरई उज़्र बन ही न सकता हो तो शैख़ के लिए इस्तिग़फ़ार करे और अल्लाह से दुआ करे कि अल्लाह उस को तौफ़ीक़, इल्म, बेदारी और तक़्वा अता फ़रमाये। मुरीद को चाहिए की पीर के नासूम होने का अक़ीदा न रखे, उसके ऐब की किसी दूसरे को ख़बर न करे, जब मुरीद दूसरी मरतबा शैख़ की ख़िदमत में जाए तो यह ख़्याल लेकर जाए कि शैख़ का पिछला ऐब ज़ाएल हो चुका होगा और शैख़ पिछले दर्जा से तरक्की करके दूसरे बलन्द मरतबा तक पहुंच चुका होगा और शैख़ से जो गुनाह सरज़द हो चुका है वह किसी सहव की बिना पर सरज़द हुआ है और



वह शैख के दोनों मरतबों के दर्मियान हद्दे फासिल बन गया था जहां एक हालत की इन्तेहा और दूसरी हालत की इब्तिदा होती है यानी विलायत के एक दर्जा से दूसरे दर्जा की तरफ इन्तकाल होता है और एक अदना लिबास को उतार कर दूसरे आला व अफज़ल लिबास और खिलअत उसको पहनाया जाता है इस लिए की औलिया अल्लाह का कुर्ब रोज़ाना बढ़ता है।

शैखे तरीकत अगर नाराज़ हो जाए या चीं ब जबीं हो या किसी किस्म की बे इल्तेफ़ाती उस से ज़ाहिर हो तो मुरीद उससे किनारा कश न हो बल्कि अपनी हालत का जाएज़ा ले और देखे कि कहीं शैख के हक में उससे कोई गुस्ताखी और बे अदबी तो सरज़द नहीं हो गई है या हक की अदाएगी में उससे कुछ कोताही तो नहीं हुई है अगर हुकूकुल्लाह में कुछ कुसूर हुआ है तो पहले अल्लाह तआला से तौबा इस्तिग़फ़ार करे और दोबारा उस का इआदा न करने का अहद करे फिर अपने शैख से माज़रत चाहे उसके सामने इज़ज़ व इन्केसार का इज़हार करे और आइन्दा शैख के हुक्म के खिलाफ़ न करने का अहद करे और शैख की निगाहे इल्तेफ़ात के हुसूल की कोशिश करे। शैख के हुक्म की हमेशा इताअत करे और शैख को खुदा तक पहुंचने का वसीला और ज़रीया, रास्ता और सबब समझे, उसको इस मिसाल से समझना चाहिए कि अगर कोई बादशाह के हुज़ूर पहुंचना चाहे और बादशाह उसको पहचानता न हो तो ला महाला उस को किसी दरबारी या शाही खिदमतगार या बादशाह के मुकर्रब का वसीला ढूँढना होगा ताकि शाही आदाब और हुज़ूरी के तौर तरीकों से वाकिफ़ हो जाए पेशी और खिताब के आदाब मालूम हो जाएं और उसको आगाही हो जाए कि कौन कौन से तोहफे और मेवे ऐसे हैं जो बादशाह के हुज़ूर में पेश करने के लाएक हैं और कौन कौन सी चीजें हैं जिन की अफ़जाइश बादशाह को पसन्द है इस लिए सबसे पहले उसको इसी तरीका को इख़्तियार करना ज़रूरी है कि कहीं ऐसा न हो कि वह उस वसीला और आगाही के बग़ैर दाखिल हो जाए और उसको ज़िल्लत ख़वारी का मुंह देखना पड़े और बादशाह से जो गरज़ व मतलब वाबस्ता था वह हासिल न हो सके। हर नये दाखिल होने वाले पर एक हैबत और दहशत तारी होती है उसको एक ऐसे शख्स की ज़रूरत होती है जो आदाब की याद दहानी कराता रहे और अज़ राहे मेहरबानी उसको उसके मरतबे के लायक जगह प खड़ा कर दे या बिठा दे या इशारा से उसके मुनासिब हाल मकाम को बता दे ताकि वह बद तहज़ीबी और बेवकूफी का निशाना न बने।

## हज़रत आदम की तरबीयत

मुरीद को इस बात का यकीन रखना चाहिए कि आदते इलाही इसी तरह जारी है कि ज़मीन पर एक पीर हो एक मुरीद, एक मुक़तदिर हो, दूसरा मुसाहिब, एक पेशवा हो दूसरा पैरो। यह आदते इलाही हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के वक़्त से जारी है और क़यामत जारी रहेगी। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा करने के बाद तमाम अस्मा अल्लाह ने उनको सिखा दिये और उन ही से कायनात की इब्तिदा-की गोया उनको इस तरह बता दिया जैसा उस्ताद शाग़िर्द को बता देता है (सिखाता पढ़ाता है) या पीर मुरीद को बताता है फिर तालिम व तहज़ीब से आरास्ता करने के बाद अल्लाह तआला ने उनको मुअल्लिम, उस्ताद और शैखे हुक्म बना दिया तरह तरह के लिबास और जेवर पहनाए, ज़बान को कुव्वते गोयाई अता फरमाई, जन्नत के अन्दर कुसी नशीन बनाया और मलाइका को उनके गिर्दा गिर्द कतार अन्दर कतार खड़ा किया और फ़रिश्तों से



सवाल किया तमाम फ़रिश्तों ने ला जवाब हो कर कहा

इलाही! तू पाक है, तूने जो कुछ हम को नहीं सिखाया उसका हम को इल्म नहीं बेशक तू जानने वाला और हिकमत वाला है।

तब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से इरशाद हुआ कि आप उन तमाम चीज़ों के नाम बता दें, हज़रत आदम ने तमाम अशिया के नाम बता दिए इस से फ़रिश्तों पर आदम की फ़ज़ीलत नुमायां हो गई। आदम सब के शैख़ और फ़रिश्ते उनके शागिर्द हो गए, अल्लाह की नज़र में फ़रिश्तों कि नज़र में भी वह फ़रिश्तों से अफ़ज़ल और अशरफ़ करार पाए चुनांचे आदम पेशवा हुए और फ़रिश्ते उनके ताबेअ और पैरो।

## हज़रत आदम का जन्नत से ख़ुरूज

इस के बाद हज़रत आदम को शज़रे ममनूआ को खाने, जन्नत से निकलने और एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ मुन्तकिल होने का हांदसा पेश आया और आदम अलैहिस्सलाम वहां पहुंचे जिसका न आप को इल्म था न आप वहां कभी रहे थे न आप के दिल में उस जगह का कभी ख़्याल आया था। जब आप ज़मीन पर पहुंचे और इधर उधर घुमे तो आप को सख़्त इज़तराब लाहिक़ हुआ और वहां आप को ऐसी चीज़ों से साबिका पड़ा जिनको इससे कब्ल आप ने कभी महसूस नहीं किया था यानी भूक, प्यांस, बातिनी सोज़िश और इल्मी कब्ज़ की कैफ़ियत कि इस से पहले आप को इन चीज़ों से वास्ता नहीं पड़ा था उस वक़्त ला महाला आप को किसी मुअल्लिम, मुर्शीद, उस्ताद, रहनुमा, और अदब आमोज़ की ज़रूरत महसूस हुई। इस ज़रूरत को रफ़अ करने के लिए अल्लाह तआला हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को आप के पास भेजा हज़रत जिब्रील ने आप के पास आकर उस बहशत को दूर किया और उस मंज़िल और फ़रवागाह के तमाम ऊक़दे आप पर खोल दिए और गेहूं बोने का हुक्म दिया आलात फ़राहम कर दिए, गेहूं बोना, खेती काटना, साफ़ करना और पीसना सिखाया, इन तमाम उमूर की अंजाम देही के बाद रोटी पकाना सिखाई। आदम अलैहिस्सलाम ने रोटी पका ली फिर हज़रत जिब्रील ने रोटी खाने का हुक्म दिया, गिज़ा ने हज़्म हो कर बाहर निकलना चाहा, इस की तालीम हज़रत जिब्रील ने दी और उनको इस्तिनजा करना सिखाया, इन कामों में मशगूल रह कर हज़रत आदम की जिस्म की चमक दमक और सफ़ेदी सियाही से बदल गई थी। हज़रत जिब्रील ने उनको अय्यामे बैज़ के रोज़े रखने की तालीम दी, उन रोज़ों को रखने से आप के जिस्म का गोरापन फिर लौट आया, इस के अलावा दुनिया के दूसरे उलूम और आदाबे ज़िन्दगी आप को सिखाए, इस तरह हज़रत आदम जिब्रील के शागिर्द बन गए और हज़रत जिब्रील आप के उस्ताद और शैख़ करार पाए।

अगरचे हबूत से कब्ल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, हज़रत जिब्रील और तमाम मलाइका के मुक़तदा और शैख़ थे और सबसे ज़्यादा आलिम थे, इस तब्दीली का बाइस, तग़ैयुरे हाल और एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम की तरफ़ इन्तक़ाल था। इसी तरह हज़रत शीस इब्ने आदम ने अपने बाप आदम से आदाबे ज़िन्दगी और तमाम उलूम सीखे और उनसे उनकी औलाद ने। इसी तरह हज़रत नूह ने जो कुछ बाप से सीखा उसकी तालीम अपनी औलाद को दी और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी औलाद को यह तालीम दी। अल्लाह तआला का इरशाद है: इब्राहीम ने अपनी औलाद को हुक्म दिया और तालीम दी और याकूब ने अपनी औलाद यानी बनी इस्राइल



को तालीम दी। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने हवारियों को और आखिर में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हमारे पैगम्बर मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वुजू और नमाज़ की तालीम दी और मिसवाक करने का भी हुक्म दिया। चुनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया था कि मुझे जिब्रील ने मिसवाक करने की ताकीद फरमाई। एक और हदीस में इस तरह आया है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे मिसवाक करने की ऐसी सख्त नसीहत की कि करीब था कि वह मुझे परिन्दा बना दें और उन्होंने मुझे काबा के पास दो मरतबा नमाज़ पढ़ाई, जुहर की नमाज़ सूरज ढलते पढ़ाई थी। इस हदीस को इस से कब्ल बयान कर चुके हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सहाबा कराम ने उनसे ताबईन हज़रात ने, उनसे तबअ ताबईन ने, अपने अपने दौर और अपने अपने ज़माना में तालीम हासिल की हर एक नबी का कोई न कोई सहाबी ज़रूर ऐसा हुआ है जिसने उसकी रहनुमाई (तालीम) कि मुताबिक ज़िन्दगी का रास्ता तै किया और वह पैगम्बर का जानशीन और कायम मकाम बना जैसे हज़रत मूसा के जानशीन उनके खादिमे खास उनके भांजे युशअ बिन नून गुज़रे हैं और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी जानशीन हुए हैं और हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर खलीफा और जानशीन हुए और उन ही की तरह हज़रत उसमान और हज़रत अली और दूसरे सहाबा कराम जानशीन और शागिर्द हुए।

### औलिया अल्लाह और अबदाल

तमाम औलिया अल्लाह और अबदाल और सिद्दीकीन का सिलसिला भी इसी तरह चलता आया है कोई उस्ताद हुआ कोई शागिर्द। हज़रत हसन बसरी के शागिर्द ऊकबा गुलाम थे, हज़रत सिरी सिकती के शागिर्द उनके भांजे और खादिम हज़रत अबुल कासिम जुनैद थे। यह मशाएख ही अल्लाह तक पहुँचने का ज़रिया और रास्ता हैं, यही खुदा का रास्ता दिखाने वाले हैं, इसी दरवाजे से अल्लाह तआला की बारगाह में रास्ता मिलता है (शाज़ इससे मुस्तसना हैं) वरना हर मुरीद के लिए शैख की ज़रूरत है। यह दूसरी बात है कि अल्लाह तआला बन्दे का खुद इतेखाब फरमाए और उसकी तर्बीयत फरमाये और शैतान व हवा व हवस से खुद भी उसकी हिफाज़त फरमाये जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत ओवैस करनी के साथ उस ने किया। हम इसके मुनकिर नहीं (लेकिन यह सूरतें शाज़ हैं) लेकिन अकसर और आम तरीका वही है जिस को हम ने बयान किया, यही तरीका ज़्यादा सलामती और बेहतरी का है।

### शैख से मुनक़तअ होना

शैख से मुनक़तअ हो जाना उस वक़्त तक किसी मुरीद के लिए दुरुस्त और जाइज़ नहीं जब तक वह खुदा रसीदा होकर मुसतगनी न हो जाए और खुदा तक न पहुँच जाये और अल्लाह तआला खुद उसकी तर्बीयत व तहज़ीब का मुतवल्ली और जिम्मादार हो जाए और उन चीज़ों से मुरीद को आगाह फरमा दे जो शैख को भी मालूम नहीं थीं और खुद अपनी मशीयत के मुताबिक उस से अमल कराए, रोके या हुक्म दे, तंगी और फराखी अता फरमाए, गनी बनाए या फकीर कर दे, इस सूरत में अपने रब्बानी ताल्लुक की वजह से अल्लाह के सिवा बाकी दूसरों



से मुस्तगनी हो जाता है दूसरों की तरफ़ मुतवज्जेह होने की उसको फुरसत ही नहीं मिलती, अल्लाह की ताज़ीम व तकरीम और ख़िदमत की पाबन्दी के सिवा और किसी बात की गुंजाईश ही बाकी नहीं रहती। इस मर्तबा और हाल में और वह शैख़ से क़तअ मुनक़तअ हो जाता है इस हाल में शैख़ और मुरीद के रास्ते अलग अलग हो जाते हैं शैख़ मुरीद को एक रास्ते पर ले जाएगा और मुरीद दूसरे रास्ता पर चलेगा इसलिए सोहबत व इज्तिमा का हुसूल मुमकिन नहीं रहेगा। अल्लाह की रहमतें नाज़िल हों उस शैख़ पर और उस मुरीद पर कि जब अल्लाह तआला उसको इस हालते इस्तग़ना पर पहुंचा दे तो वह अपने रब के लिए अपने शैख़ से भी मुस्तगनी हो जाए।

## मजीद आदाब

मुरीद के लिए जो आदाब ज़रूरी हैं मिनजुम्ला उनके एक यह भी हैं कि बे ज़रूरत शैख़ के सामने बात न करे और न शैख़ के सामने अपनी कोई खूबी बयान करे, नमाज़ के सिवा किसी और वक़्त शैख़ के आगे अपना मुसल्ला न बिछाए जब नमाज़ से फ़ारिग हो जाए तो अपना मुसल्ला लपेट दे, अपने शैख़ नीज़ उन लोगों की ख़िदमत के लिए भी मुसतएद रहे जो शैख़ के साथ उसके सज्जादा पर मुतमककिन हैं शैख़ के सज्जादा के बराबर और शैख़ के असहाब के सज्जादा के बराबर या उससे ऊपर अपना सज्जादा न बिछाए यह मशाएख़ की नज़र में सूए अदब है अलबत्ता शैख़ अगर हुक्म दे तो तामीले हुक्म में ऐसा कर सकता है।

शैख़ के सामने अगर कोई मसला आ जाए और मुरीद को उस मसला का सही और तफ़्सीली जवाब मालूम हो जब भी ख़ामोश रहे और शैख़ की ज़बान से उस मसले का जवाब सुने और उसको ग़नीमत समझे, उसके फैसला को मान ले और उस पर अमल करे अगर शैख़ के जवाब में कोई कोताही नज़र आये तो उसकी अलल एलान तरदीद न करे बल्कि अल्लाह का शुक्र अदा करे कि अल्लाह ने उसको फ़ज़ल और इल्म से नवाज़ा है लेकिन इन बातों को पोशीदा रखे और शैख़ की ग़लती को ज़ाहिर न करे।

## समाअ के वक़्त के आदाब

समाअ के वक़्त शैख़ के सामने कोई हरकत न करे अलबत्ता अगर शैख़ की तवज्जोह उस की जानिब हो और उसकी तवज्जोह से उसमें कोई कैफ़ियत पैदा हो तो वज्द में आ सकता है अलबत्ता इस हालत को अपनी तरफ़ से पैदा शुदा ख़्याल न करे अगर इस सूरत में मग़लूबुल हाल हो जाए तो इस मग़लूबियत के बक़द्रे इजाज़त है लेकिन वज्द का जोश ख़त्म होते ही फ़ौरन सुकून, अदब और संजीदगी की तरफ़ वापस आ जाए और जिस राज़ का इन्किशाफ़ अल्लाह ने इस हाल में उस पर किया है उसको पोशीदा रखे।

## समाअ के बारे में हमारे नुक्ता ए नज़र

समाअ, क़व्वाली, मज़ामीर और रक्स को हम जाएज़ नहीं समझते और इस की कराहत हम पहले बयान कर चुके हैं लेकिन हमारे ज़माना में लोग अपनी ख़ानकाहों और मजलिसों में इस राह को इख़्तियार किए हुए हैं (उनकी मजलिसों में क़व्वाली रक्स व मज़ामीर का सिलसिला जारी है) और मुमकिन है कि इस राह पर चलने वाले सच्चे हों इसलिए उनके मसलक के मुताबिक़ हम इस मौजूअ पर क़लम उठा रहे हैं। मुमकिन है कि समाअ में कलाम के मानी सामेअ के



जब्वए मुहब्बत व सदाकत की आग को भड़का दे और वह इस आग से भड़क उठे और खुदी उस से गाएब हो जाए और उसके आजा में बेसाख्ता हरकत पैदा हो जाए लेकिन उस शख्स की हालत का उस शख्स की हालत से कोई ताल्लुक नहीं जिन को समाअ के लुत्फे तबअ और लज्जते हवस हासिल होती है। किसी फौत शुदा महबूब और बिछड़े हुए माशूक की याद उनके दिल में ताजा हो जाती है और जाहिरी मुहब्बत की आग भड़क उठती है।

चूँकि मुरीद से उसके दिल की आग तो बुझती ही नहीं उसका शोलए अशक तो कमी फूरु नहीं होता उसका महबूब गाएब नहीं होता और न उसका दोस्त उसको किसी वक्त छोड़ता है बल्कि उसके लिए महबूब का कुर्ब लज्जत व कैफियत में इजाफा का बाएस होता है उसके हाल को महबूबे हकीकी (खुदावन्द तआला) के कलाम और गुफ्तगू के सिवा न कोई चीज बदल सकती है और न उसकी हालत को बर अंगेखता कर सकती है इसलिए न उसको अशआर सुनने की जरूरत हाती है न गाने की आवाज से हिज हासिल होता है और न चीखने चिल्लाने वालों के शोर शर से (जो शैतानों के शरीक, नफ्सानी ख्वाहिशात पर सवार होते) उसे कुछ लज्जत हासिल होती है।

## समाअ में मुरीद के आदाब

मुरीद को चाहिए कि समाअ की हालत में न किसी से मुजाहमत करे और न तआरूज, न गाने वालों से यह फर्माईश करे कि ऐसे अशआर गाओ जो दुनिया से बे ताल्लूकी पैदा करने वाले, रिक्कत आफरीन हों न यह फर्माईश करे कि ऐसा कलाम पेश करो जिससे जन्नत की, जन्नत की हूरों की और दीदारे इलाही की रगबत पैदा हो, दुनिया से बेजारी, दुनिया वालों से गुरेज की तालीम हासिल हो, दुनिया के दुख दर्द और मसाइब को बर्दाश्त करने की जुरत पैदा हो और आखिरत के तालिबों से दुनिया जो अपना रुख फेरती है उस पर सब्र हासिल हो (अलगर्ज किसी मखसूस मजमून की फर्माईश न करे) यह काम शैख का है, सब को उसके सुपुर्द रहना चाहिए। शैख जो महफिल में मौजूद है उस वक्त तमाम महफिल के लोगों की बाग डोर उसी के हाथ में है अलबत्ता अगर सामेअ अहले हाल है और आदाबे जाहिरी से वाकिफ है और तसन्नो से आरी है तो अल्लाह खुद ऐसे ऐसे अस्वाब पैदा कर देगा कि कव्वाल खुद ऐसे अशआर पेश करेगा जिसका यह ख्वास्तगार है या अगर सामेअ किसी मिसरअ की तक़रार चाहता है तो गाने वाला खुद बखुद उसकी तक़रार करेगा और इसी तरह उस सच्चे सामेअ की ख्वाहिश खुद बखुद पूरी हो जाएगी। समाअ के सिलसिला में आदाबे मुरीद की बहस को खत्म करते हुए मुरीद के लिए चन्द और आदाब जिक्र किये जाते हैं।

## शैख की अहमीयत

मुरीद अगर शैख से कुछ सीखना चाहता है तो उसके लिए ज़रूरी है कि उसको शैख पर यकीने रासिख और पुख्ता एतकाद हो कि इस मुल्क में मेरे शैख से बुजुर्ग और कोई शैख नहीं। इस एतकाद से उसको अपने असले मक़सद में फायदा हासिल होगा अल्लाह के हुज़ूर में उसको कबूलियत हासिल होगी और जो कुछ वह पीर की खिदमत में अंजाम दे रहा है उस को आफ़ात से महफूज़ रखेगा और जो मुआहदा इरादत है उसको ख़तरात से बचाएगा, पीर की ज़बान से भी



वही बात निकलेगी जो उसके लिए मुनासिब होगी, मुरीद को चाहिए कि शैख की मुखालिफत किसी हाल में न करे, मशाएख की मुखालिफत मुरीदों के हक में जहरे कातिल है इसलिए न सराहतन मुखालिफत करे न किसी तावील के साथ। मुरीद को लाजिम है कोशिश करे कि शैख से अपना कोई राज और अपनी कोई हालत पोशीदा न रखे, न शैख के हुक्म की किसी को इत्तेला दे।

मुरीद के लिए किसी हाल में भी यह जाइज़ नहीं कि अम्ने ममनूआ की रुखसत (इजाज़त) का शैख से तलबगार हो और अल्लाह की जिस नाफरमानी को तर्क कर चुका है उसकी तरफ दोबारा वापस आए यह कबीरा गुनाह है। अहले तरीकत की नज़र में मुरीदी की शिकस्त है, इरादते शैख इस इरादा से फिस्ख हो जाती है। सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि हिबा की कोई चीज़ को दोबारा वापस लेने वाला उस कुत्ते के मानिन्द है जो मुंह से गिज़ा उलट कर दोबारा उसको खा ले।

मुरीद पर लाजिम है कि उसका शैख उसकी अदब आमोजी के लिए जो कुछ हुक्म दे उस को बजा लाए अगर उससे इस बारे में कोताही हो तो शैख को उससे आगाह कर दे ताकि वह इस सिलसिले में गौर व खौज़ करे और मुरीद के हक में तौफीके अमल की दुआ फरमाये।

## मुरीद की तादीब व तरबीयत

किस तरह की जाए?

### तादीबे मुरीद में शैख का तर्ज अमल

शैखे तरीकत के लिए ज़रूरी है कि वह महज़ अल्लाह के लिए (अपनी किसी गरज़ के बगैर) मुरीद को कबूल करे मुरीद के साथ उठे बैठे और मोहब्बत की आंख से उसको देखे, अगर मुरीद से रियाज़त बरदाश्त न हो तो नर्मी के साथ पेश आए और उसकी तरबीयत इस तरह करे जैसे मां अपने बच्चे की या दानिश्मन्द बाप अपने बेटे या गुलाम की तरबीयत करता है, अव्वलन उस पर आसान गिरिफ्त करे और ना काबिले बरदाश्त बार उस पर न डाले।

अव्वलन उसको हुक्म दे कि दिल की तमाम ख्वाहिशात को तर्क करे और शरअ ने जिस उमूर कि इजाज़त दी है उसको बजा लाए ताकि वह अपने नफ़्स और तरबीयत की कैद से आज़ाद हो कर शरअ की कैद और गिरिफ्त में आ जाए इस के बाद उस को रुखसत (शरईया) से अज़ीमत की तरफ ले जाए। अगर इब्तिदाए कार ही में शैखे तरीकत को मुरीद में मुजाहिदा का सिदक और अज़म की पुख्तगी नज़र आए और वह अपनी खुदादाद फिरासत व फ़हम और अल्लाह तआला के अता करदा मुकाशिफा से यह मालूम करे कि मुरीद में अज़ीमत मौजूद है तो ऐसी हालत में मुरीद के लिए दरगुज़र से काम न ले बल्कि ऐसी सख्त रियाज़तों के साथ उसको मशगूल करे कि उसकी कुव्वते इरादी में कसूर पैदा होने न पाए उसके लिए आसानी पैदा करके उस के हक में ख़यानत न करे, मुरीद से फायदा उठाना शैख के लिए जाइज़ नहीं है न माल से न उस की खिदमत से। इस अदब आमोजी और तरबीयत के सिला की अल्लाह तआला से भी तमन्ना न करे बल्कि उस को महज़ हुक्मे खुदावन्दी की तामील और एक इनामे इलाही समय कर कबूल करे। इस लिए शैख की खिदमत में मुरीदों का हाज़िर होना न शैख कि इख्तियार में



है और न इस में उसकी कोशिश को कुछ दखल है सिर्फ अल्लाह तआला की रहनुमाई और तकदीरे इलाही पर इस का मदार है अल्लाह ही ने उसको भेजा है गोया वह अल्लाह का भेजा हुआ एक तोहफा है पस इस तोहफा के हुस्ने कबूल की यही एक सूरत है कि मुरीद के साथ भलाई से पेश आए उसको आदाब सिखाए और उसको रुहानी और अखलाकी तरबीयत करे इस से यह साबित होता है कि मुरीद के माल और खिदमत से गरज नहीं रखना चाहिए यहां सिर्फ एक सूरत में इस का जवाज है कि अल्लाह तआला ने शैख को इसका हुक्म दे दिया हो और उसकी माली पेशकश के कबूल करने की उसको खबर दे दी हो और मुरीद का भलाई और उसकी नजात इस अम्र से वाबस्ता कर दी हो इस सूरत में उससे बचने और उसके माल को वापस लौटा देना दुरुस्त नहीं।

## मुरीद किस को बनाया जाए

मुरीद के इन्तिखाब के सिलसिले में शैख को एहतियात रखना चाहिए ऐसा न करे कि जो भी मिले उसको मुरीद बना ले बल्कि इस अम्र में भी अल्लाह के हुक्म और तकदीर का मुंतज़िर रहे और अल्लाह तआला जिस की रहनुमाई फ़रमा कर उसको शैख की खिदमत में भेजे और शैख के कमालात या जाहिरी हालत को इस में दखल न हो उसको मुरीद बनाए और उसकी तरबीयत करे, इस सूरत में उसकी तरबीयत और अदब आमोजी की तौफीक अल्लाह की तरफ से होगी वरना नहीं।

शैख पर लाज़िम है कि हत्तल मकदूर मुरीद की तरबीयत में कसूर न करे अगर मुरीद से इताअते इलाही में सुस्ती या कसूर हो जाए तो तन्हाई के वक्त उससे तौबा कराए और खुद भी उसके लिए माफी तलब करे, मुरीदों के राज़ की निमहदाश्त शैख के लिए ज़रूरी है कि यह मुरीद की अमानत है।

अगर कोई मुरीद मकरूहाते शरईया में से किसी मकरूह का मुरतकिब हो तो तन्हाई में उसको नसीहत करे और उसको इसके इआदा से बाज़ रखे ख्वाह वह अम्र मकरूह जिस का इरतिकाब किया है उसूली हो या फ़रोई। मुरीद को कभी ऐसा दावा न करने दे जिस का वह अहल नहीं है, मुरीद को ताकीद करे कि वह अपने अमल पर गरूर व तकब्बुर न करे, खुद पसन्दी से बचे शैख को चाहिए कि मुरीद के अहवाल आमाल को उसकी नज़र में हकीर व बे माया दिखाए ताकि वह बेचारा ओजुब व गरूर में मुब्तिला होकर तबाह न हो जाए खुद पसन्दी बंदे को अल्लाह तआला की नज़रों से गिरा देती है।

अगर तरबीयत इजतेमाई मकसूद हो इन्फ़ेरादी मतलूब न हो तो सब मुरीदों को जमा करके बिला तअय्युन व तख़सीस कहे कि तुम में से बाज़ लोग मुद्ई हैं या यह बात कहते हैं या ऐसा करते हैं गरज इस सिलसिले के तमाम मफ़ासिद और बुराईयों को बयान कर के उनको नसीहत करे और बुराईयों से बचने की तलकीन करे मगर किसी फ़र्द की तख़सीस व तअय्युन न करे इस तर्ज अमल से इस्लाह भी हो जाएगी और किसी के दिल में नफ़रत भी पैदा नहीं होगी अगर बद खुल्की से काम लेगा, जज़ तौबीख़ करेगा तो या उनके असरार को फ़ाश करेगा या उन पर खुल्लम खुल्ला नुक्ता चीनी करेगा और उनकी बुराईयों का तज़क़िरा दूसरों से करेगा तो इस तर्ज अमल से शैख की मोहब्बत से उनके दिलों में नफ़रत पैदा होगी। अहले तरीक़त के मसलक में



यह अमल मुरीदों पर तोहमत तराशी कहलाता है और औलिया अल्लाह की मोहब्बत का जो बीज मुरीदों के दिल में बोया जाता है इस अमल से उसकी नश्व व नुमा नहीं होती है, लिहाजा पीरे तरीकत को इस सिलसिले में पूरी एहतियात रखना चाहिए, अगर ऐसी सूरत पेश आए कि शैख मगलूबुल हाल हो जाए और इसका तदारुक उसके बस की बात न हो तो फिर शैख को मरतबए इरशाद और मसनदे तरीकत से अलग हो जाना चाहिए और अलग हो कर अपनी नफ्स को मुजाहिदा और रियाज़त में मशगूल करके और खुद किसी शैख की जुस्तजू करे ताकि उसको मोअद्ब, मुहज्ज़ब और सहीहुल हाल बना दे ऐसे खतरात जब उसके पास हों तो वह शैख बनने का अहल नहीं है इस लिए मुरीदों की राह में उसको रुकावट नहीं बनना चाहिए।

ایہ ذیل



## बाब 26

# अवामुन्नास, अग़निया, और फुक़रा के साथ तर्जें मुआशरत

## दोस्तों के साथ सूफी की रविश

राहे तरीक़त के राह रौ के लिए ज़रूरी है कि दोस्तों की मुसाहिबत में ईसार, जवानमर्दी, दरगुज़र और ख़िदमत गुजारी से काम ले, अपना हक़ किसी पर न समझे और न किसी से अपने हक़ का मुतालबा करे, बल्कि इसके बर अक्स यह समझे कि हर शख्स का उस पर हक़ है और उसके अदा करने में कोताही न करे। दोस्ती और मुसाहिबत के हुकूक में से यह भी है कि दोस्तों की हर बात और फ़ेअल से मुवाफ़क़त का इज़हार करे (बशर्त कि वह शरीअत के खिलाफ़ न हो) ख़्वाह उसका अपना नुक़सान हो मगर हमेशा उसका साथ दे अगर उनसे कोई ग़लती हो जाए तो उनकी ख़ातिर उसकी तौजीह करे और उनकी तरफ़ से उज़्र ख़्वाही करे, उनके साथ नफ़रत तशद्दुद और जंग का ख़्याल भी न करे उनके ओयूब की तरफ़ से आंखें बन्द कर लें।

हमेशा दोस्तों के दिलों की पासदारी करे जो बात दोस्त को पसन्द न हो इससे इजतेनाब करे ख़्वाह उस में उसकी भलाई ही क्यों न हो, किसी दोस्त की तरफ़ से दिल में कीना न रखे अगर किसी के दिल में उसकी तरफ़ से नागवारी और ना खुशी पैदा हो जाए तो उसके साथ इस तरह पेश आए की उसके दिल से शिकायत दूर हो जाए, अगर कोई दोस्त उसकी ग़ीबत करे और उस ग़ीबत से उसके दिल में नागवारी का अहसास हो तो अपनी तरफ़ से इस कबीदगी का इज़हार न होने पाए बल्कि बरताव पहले जैसा ही रखे।

## गैरों के साथ बरताव

गैरों के साथ बरताव और मुआशरती ताल्लुक का तकाज़ा यह है कि उनसे अपना राज़ छुपाये, उन के साथ शफ़क़त और मेहरबानी से पेश आए, उनका माल बतौर अमानत अगर हो तो उनके सुपुर्द कर दे तरीक़त व मारफ़त के अहक़ाम उनसे पोशीदा रखे उनकी बद अख़लाकी पर सब्र करे उन पर अपनी बरतरी का ख़्याल भी दिल में न लाए बल्कि कहे कि अल्लाह उन से दर गुज़र फ़रमाएगा ऐ मेरे नफ़्स तुझ से हर छोटी बड़ी बात की पुरशिश होगी और हर शय की तुझ से हिसाब फ़हमी होगी। अल्लाह तआला ना वाकिफ़ की इन बातों से दर गुज़र फ़रमाएगा कि वह इन बातों के जाने वाले नहीं हैं लेकिन जानने वालों से हिसाब फ़हमी होगी पस अवाम की तो परवाह भी नहीं की जाती अलबत्ता ख़्वास एक बड़े ख़तरे में हैं।

## उमरा के साथ सोहबत

अग़निया और दौलतमंदों के खिलाफ़ हुज्जत पेश करे उनसे ताल्लुक मुनक़तअ करे, उनकी दौलत



का लालच न करे, तमाम बातों को दिल से निकाल दे और महज उनके इकराम व इनाम से फायदा उठाने के लिए उनके सामने ज़लील होने से अपने दीन को महफूज़ रखे। हदीस शरीफ़ आया है कि हुजुरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मालदार के सामने जिसने उसके माल की वजह से अपनी ज़िल्लत का इज़हार किया उसका दो तिहाई दीन तबाह हो गया।

हम अल्लाह तआला से ऐसी हरकत से जिससे दीन को नुक़सान पहुंचे अल्लाह की पनाह चाहते हैं, और ऐसे लोगों की मोहब्बत से भी पनाह चाहते हैं जिस की वजह से इसमें रखना और ख़राबी पैदा हो और जिस से दीन का कब्ज़ा टूट जाए और लोग के नूरे इमान की शुआ को दुनिया के माल की चमक व दमक बुझा दे, हां अगर सैर व सफ़र या मस्जिद या सराये वगैरह में उससे मोहब्बत का इत्तेफ़ाक़ हो जाए (कि ऐसे मवाक़ेअ पर मिलना जुलना बहुत मुमकिन है) तो उनके साथ खुश अख़लाकी से पेश आना चाहिए यह उमूमी हुक्म है इस में अग़निया और फुकरा दोनों शामिल हैं फुकरा के सोहबत के वक़्त तुम्हारे दिल में यह ख़्याल न आना चाहिए कि तुम उनसे बरतर और बढ़ कर हो बल्कि यह यकीन रखो की तमाम मख़लूक तुम से बेहतर है, तुम सब से कमतर हो इस अकीदा की बदौलत तुम को गरूर नजात मिल जाएगी हत्तरा कि फ़ज़ीलते फ़ेक़ की ख़्वाहिश भी दिल में नहीं पैदा होना चाहिए तुम अपनी फ़ेक़ को न दुनिया में कोई फ़ज़ीलत समझो न आख़िरत में और न इस का कोई वज़न जानो। एक मशहूर मक़ूला है कि जिस ने अपने नफ़्स की बड़ाई महसूस की उसकी कोई बड़ाई नहीं और जिस ने अपने नफ़्स को गिरां बार समझा तो उसका भी कोई वज़न और गिरां माएगी नहीं।

हर चन्द की मालदार के लिए यह ज़ेबा है कि फ़कीर के साथ मलाई से पेश आए, माल अपनी थैली से निकाल कर फ़कीर को चज़ करे और खुद ख़ाली हो जाए, अपने आप को सिर्फ़ गुज़श्ता मालदार और अग़निया का जानशीन मुतसव्विर करे खुद को उस माल का मालिक मुतसव्विर न करे लेकिन फ़कीर का अदब नफ़्स वही है कि मालदार का ख़्याल अपने दिल से निकाल दे और मालदार से और बल्कि दुनिया से फ़ारिगुल बाल हो जाए किसी चीज़ को दिल में जगह न दे सिर्फ़ अपने रब के ख़्याल से ख़ाली दिल को पुर करे उसकी नज़र में खुदा की हस्ती के सिवा किसी और की ताक़त, तवानाई और हस्ती का तसव्वुर न आए उस वक़्त बगैर रज व अलम के अल्लाह का फ़ज़ल उसको मय्यसर आ जाएगा।

## फुकरा की मुसाहेबत उमरा के लिए

फ़कीरों के मुसाहेबत का तकाज़ा यह है कि न अक्ल व शरब व लिबास में और हर अच्छी चीज़ में उनको अपनी ज़ात पर तरजीह दे अपनी जान को उनसे कम मरतबा समझे और कभी किसी हाल में फ़कीरों पर बरतरी का ख़्याल दिल में न लाए।

हज़रत अबू सईद बिन अहमद बिन ईसा फ़रमाते हैं कि मैं फ़कीरों के साथ तीस साल तक रहा लेकिन मेरे और उनके दर्मियान कभी कोई ऐसी बात नहीं हुई जिससे उनको दुख पहुंचता, न मेरी तरफ़ से कोई नफ़रत आफ़रीं सुलूक हुआ जिससे उनको वहशत हो जाती, लोगों इस बरताव की जब कैफ़ियत दरयाफ़्त की तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं उनके साथ हमेशा अपन नफ़्स के खिलाफ़ रहा।

जब तुम फुकरा पास पहुंचो तो मुसरत और खुश अख़लाकी के साथ जाओ और खुश



अखलाकी को तोहफा बनाओ लेकिन यह ख्याल रहे कि इस खुश अखलाकी के बाइस तुम्हारे दिल में उनसे बरतरी का ख्याल पैदा न हो, उनके एहसान को अपनी गर्दन का तौक समझो और इस ख्याल से भी बचते रहो कि तुम उन पर एहसान कर रहे हो बल्कि अल्लाह का शुक्र बजा लाओ कि उसने तुम को जिस खल्क की तौफीक अता फरमाई और तुम को अपने औलिया, अपने खास बंदों और अल्लाह वालों की खिदमत का मौका इनायत फरमाया क्योंकि फुकरा सालेहीन अहलुल्लाह और उसके खास बंदे होते हैं रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है:

कुरआन वाले ही अहलुल्लाह और उसके खास बंदे हैं।

कुरआन वाले वह हैं जो कुरआन पर अमल करते हैं, जो कुरआन की तिलावत तो करते हैं लेकिन उस पर अमल नहीं करते वह अहले कुरआन नहीं हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो कुरआन के ममनूआत को हलाल समझता है वह कुरआन पर ईमान नहीं लाया।

मुसाहबते फुकरा के तोहफे अदब में से यह भी है कि तुम फुकरा को ऐसा मौका ही न दो कि उनको तुम से सवाल करना पड़े। अगर इत्तेफाकन अगर कोई फकीर तुम से कर्ज मांगे उस को ब जाहिर तो कर्ज दो लेकिन दिल में उसको इस कर्ज से सुबुकदोश करार दे दो और जल्द ही उसको सुबुकदोशी से मुत्तेला भी कर दो ताकि बारे एहसान मजीद बरदाश्त करने की उसको तकलीफ न हो।

## फकीर से हुस्ने सुलूक

फकीर के साथ हुस्ने सुलूक का एक तरीका यह भी है कि उसकी मुराद जल्द पूरी करके उसके दिल को मुतमईन कर दे इंतजार (वादा) से उसके दिल को दुख न पहुंचाना चाहिए, फकीर के पास मुस्तकबिल के इंतजार का वक्त नहीं है अगर तुम को इल्म हो कि फकीर साहबे अयाल है तो आदाबे फुकरा का तकाजा यह है कि उसके साथ ऐसा सुलूक किया जाए जो उसके और उसके वाबस्तगान के लिए काफी हो। फकीर अपना जो कुछ हाल बयान करे उसको सब्र के साथ सुनना चाहिए और उसके साथ कज अदाई तुर्श रूई और सख्त कलामी से पेश न आए, उसको कतई ना उम्मीद करके उसको दिल शिकस्ता न किया जाए उसके दिल में नफरत न पैदा की जाए और उसने अपना राज जो तुम से मुनकशिफ किया है उसकी शर्मन्दगी और नामुरादी उस की शिकस्तगी का बाइस न बन जाए, ऐसी सूरत में फकीर बेकाबू हो जाता है, नफसानियत का उस पर ग़लबा हो जाता है और फिर वह आपे में नहीं रहता और वह फिर ग़ज़बनाक हो जाता है और मुक़दर का शिकवा करने लगता है उसका दिल अंधा हो जाता है और नूरे ईमान की शमा बुझने लगती है चूंकि उसके गैज़ व हैजान का बाइस तुम हुए हो इस लिए तुम इस गुनाह में पकड़े जाओगे।

## फेक्र पर सब्र की खूबी

फकीर के सवाल के अन्दर जो मसालेह पोशीदा हैं और जो सवाल इस में मखफ़ी हैं और जो मारफते उलूम इस के अंदर हैं वह मखलूक की नज़र से पोशीदा हैं अगर फकीर पर फेक्र व फाका की यह खूबियां का जाहिर हो जाएं तो फिर सवाल की नौबत ही न आए फकीर का



दिल भी गनी हो जाए। अल्लाह तआला के फज़ल एहसान और उसके इनाम के लशकर उसके मसाएले हाल हो जाएं, उसकी रहमत, मेहरबानी और उसकी हिफाज़त उसकी निगहबान बन जाए और वह हुवा यतवल्लाह अस्सालेहीन का मिसदाक बन जाए और वह तमाम चीज़ों से बे परवाह बन जाए और सिवाए रब की लगन के कोई और आरजू उसको बाकी न रहे। सब चीज़ें खुद उसके पास आएँ उसको किसी चीज़ की तलब के लिए किसी के पास न जाना पड़े, लोग उस को अपना मकसूद व मतलूब बना लें उसके अनवार व असरार के हुसूल में कोशां हो सिर्फ़ मौला से उसको लौ लगी हो और किसी की तरफ़ तवज्जोह न करे उसका जज़्बा उसको खींच कर उसको रब की तरफ़ ले जाए। मखलूक के साथ ताल्लुक़े खातिर की जुलमत, नफ़स की मुवाफ़िक़त व मुताबिक़त, ख़्वाहिशात की पैरवी और दुनिया व आख़िरत में किसी चीज़ की तलब उन तमाम चीज़ों से उसको आज़ादी मिल जाए।

## सुपुर्दगी का सिला

उन लोगों ने जब अपनी जानें और अपने अमवाल अल्लाह के हाथ बेच डाले तो अल्लाह ने भी उनकी जान व माल को बहिश्त के बदला में ख़रीद लिया।

बेशक हम ने मोमिनीन से उनके जानों व माल को ख़रीद लिया और उसके एवज़ उनको बहिश्त अता फ़रमा दी।

उन्होंने दुनिया में अफ़लास पर सब्र किया अपने जान व माल और औलाद का पूरा पूरा इख़्तियार खुदा वन्द तआला को दे दिया और सब कुछ उसी के सुपुर्द कर दिया, उसके अहकाम की पाबन्दी और ममनूआत से खुद को बचाया और अपने मुक़द्दर को तक्दीरे इलाही के हवाले कर दिया मखलूक से अलग हो गये, इरादों और आरजूओं से पाक हो गए तो अल्लाह तआला ने भी उनको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया और ऐसी नेमतों में उनको मशगूल कर दिया जिन को न किसी आंख ने देखा और न किसी कान ने उनको सुना न किसी इन्सान के दिल में उनका ख़्याल गुज़रा और खुद ही इरशाद फ़रमाया:

तहकीक़ अहले बहिश्त उस दिन अपने शग़ल में खुशहाल हैं।

फ़कीर जब इस मंज़िल से गुज़र जाता है तो उसके लिए जन्नत का हुसूल यकीनी हो जाता है तो उस वक़्त वह जन्नत के एवज़ अपने रब को ले लेता है और मकान से पहले हमसाया की तलब करता है जैसा कि राबिआ अदविया ने इरशाद किया था मकान से पहले हमसाया को देखो। अल्लाह तआला का भी इरशाद है वह अल्लाह की ज़ात के तालिब हुए हैं अल्लाह तआला ने किसी साबिक़ आसमानी किताब में भी इरशाद फ़रमाया है: मुझे दोस्तों में सब से ज़्यादा प्यारा बंदा वह है जो बख़्शिश की आरजू के बग़ैर मेरी इबादत महज़ हक्के रबूबियत को अदा करने के लिए करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला जन्नत और दोज़ख़ को पैदा न करता तो कोई उसकी इबादत न करता। हज़रत अली मुर्तज़ा का इरशाद है कि अगर अल्लाह तआला जन्नत व दोज़ख़ का पैदा न करता तो उसे कोई न पूजता।

जब फ़कीर इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ हो जाता है और अल्लाह के सिवा हर चीज़ से वह बे ताल्लुक़ हो जाता है और हर चीज़ की वाबस्तगी से उसका दिल पाक हो जाता है तो वह इस



अम्र का मुस्तहिक बन जाता है कि अल्लाह तआला खुद उसकी कारसाजी फरमाए उसकी रहनुमाई करे और जब तक जिन्दा रहे दुनिया में भी उसको अपनी नेमतों से नवाजे और मरने के बाद भी उस पर मजीद नवाजिशें फरमाए, नई नई खिलअतें, नूर, राहत, पाकीजा जिन्दगी और अपना कुर्ब अता करे और उन तमाम चीजों से नवाजें जो उसने अपने औलिया और दोस्तों के लिए तैयार रखी हैं और जिस की खुद इस तरह खबर दी है।

किसी नफ्स को मालूम नहीं कि उसके लिए क्या क्या चीजें पोशीदा रखी गई है।

## रसूलुल्लाह की हदीस

सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह चीजें तैयार रखी हैं जो न किसी आंख ने देखीं न किसी कान ने सुना और न किसी शख्स के ख्याल में आई। हजरत अबू हुरैरा ने यह हदीस नक्ल फरमाते हुए फरमाया अगर तुम इस की तसदीक में हुक्मे रब्बानी चाहते हो तो पढ़ो फला तअलम व नफसुन व उकफिया लहुम मिन कुरतीन अईन।

अगर तुम ऐसे शख्स को खाली हाथ वापस कर दोगे जो हाथ और दिल का गनी है लेकिन हुक्मे मौला की तामील में अपने लिए और अपने अहल व अयाल के लिए तुम से कुछ तलब करता है और तर्क सवाल इस लिए नहीं करता कि अल्लाह तआला ने उसको इस सवाल का मुकल्लफ बना दिया है और फेक्र में मुबतला कर दिया है जैसा कि बारी तआला का इरशाद है: हम ने तुम्हारे बाज के लिए आजमाइश की है, आया तुम सब्र करते हो या नहीं।

याद रखो कि फकीरी हमेशा कायम रहने वाली नहीं है, जल्द दूर हो जाती है और जल्द तवंगरी में बदल जाती है और उसके मुकद्दर में जो दौलत और मौला की कुरबत के बाइस दवामी इज्जत लिख दी गई है वह अमकरीब उसको मयस्सर आ जाएगी, तो इस सूरत में ऐ हाथ के सखी और दिल के फकीर अपने नफ्स और अपने रब की कुदरत से ना वाकिफ और अपने आगाज व अंजाम से बे खबर तुझे उसकी सजा दी जाएगी और दौलत तेरे हाथ से छीन ली जाएगी और तू जिस तरह तू दिल का फकीर था उसी तरह तू हाथ का फकीर हो जायेगा, तमाम चीजों की हिस्स व तलब तुझे रहेगी और उनके हुसूल के लिए तुझे दुख झेलना होंगे जो तेरे मुकद्दर में नहीं हैं जैसा कि कहा गया है जो चीज मकसूम में न हो उसकी तलब सख्त तरीन अजाब है हां अगर अल्लाह तआला अपनी आगोशे रहमत में ले ले और अल्लाह तुम्हारी तौबा कबूल फरमाये और तुम को बख्शा दे तो इस सूरत में तुम अजाब से महफूज रह सकते हो, पस अल्लाह से तौबा करो वह अरहमर्रहेमीन और गफूररहीम है।

## फेक्र के आदाब

### फेक्र से मोहब्बत

फकीर को चाहिए कि वह अपने फेक्र से ऐसी मोहब्बत करे जैसे दौलतमन्द अपनी दौलत से मोहब्बत करता है और वह हमेशा इसी अम्र में कोशां रहता है कि उसकी दौलत को ज्वाल न हो इसी तरह फकीर को चाहिए कि वह भी ऐसी ही कोशिश करे (कि उसके फेक्र को ज्वाल



न हो) और अल्लाह से दुआ करे कि उसका फेक़ ज़वाल पज़ीर न हो अपने नफ़्स को इहितयाज और तंगी के वक़्त और भी ज़ईफ़ बना ले गुनी बनने के लिए अस्बाबे मईशत की फ़राहमी और कमाई के गोना गूं ज़राये से ताल्लुक न रखे, न अपने नफ़्स के लिए और न अपने अयाल के लिए।

## फ़ेक़ की शर्त

फ़ेक़ की एक शर्त यह भी है कि क़द्रे किफ़ायत पर क़नाअत करे किसी हाल में भी क़द्रे किफ़ायत से तजावुज़ न करे (क़द्रे किफ़ायत से ज़्यादा माल न ले) और बक़द्रे किफ़ायत माल का क़बूल करना भी सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म की तामील और क़त्ले नफ़्स से बाज़ रहने के लिए। अल्लाह तआला का इरशाद है: तुम अपनी जानों को मत मारो खुदा तुम पर अपनी रहमत करने वाला है।

पस अपने नफ़्स के हक़ (जाएज़) को रोकना हराम है और नफ़्स का हक़ है कि वक़्त बसर करने के बक़द़ खाना पीना ताकि जिस्मानी कुव्वत काएम रहे और बक़द़ सतरे लिबास पहनना कि नमाज़ के अरकान व वाजिबात और शराइत अदा हो सकें।

## तर्क हिज़्जे नफ़्स

फ़कीर को चाहिए कि हिज़्जे नफ़्स को तर्क कर दे, पस कभी लज़्ज़त के हुसूल के दर पै न हो अलबत्ता अगर बीमार हो और उसकी सेहत के लिए ऐसी चीज़ तजवीज़ कि जाए जो लज़ीज़ हो तो उसका इस्तेमाल दुरुस्त है उस वक़्त लज़ीज़ चीज़ का हुक्म वही होगा जो हालते सेहत में रोज़ी (कुव्वते त्वा यमूत) का है। फ़कीर को अपनी फ़कीरी में बही लज़्ज़त महसूस करना चाहिए जैसी लज़्ज़त दौलत में अपनी दौलत में महसूस करता है अपनी ज़िल्लत व ख़्वारी और गुमनामी को लोगों में क़बूलियत का ज़रिया न बनने दे, लोगों के हुज़ूम को अपने पास पसंद न करे।

## माल की कमी हसरते दिल का मौजिब है

फ़ेक़ की एक शर्त यह भी है कि जब ख़ाली हाथ हो तो अपने माल की सफ़ा से कुव्वत हासिल करे, जिस क़दर माल में कमी होगी उसी क़दर मसररत ख़ातिर में इज़ाफ़ा होगा दिल की कुव्वत और क़ल्ब की रौशनी में इज़ाफ़ा होगा लेकिन अगर फ़कीर की नादारी उसके दिल को तारीक और तबीअत को मुतज़लज़ल कर दे और अल्लाह से शिकायत का पहलू निकल आए तो उस वक़्त फ़कीर को समझ लेना चाहिए की उसको आजमाईश में डाल दिया गया है या फ़ेक़ की हालत में उससे कोई गुनाहे अज़ीम सरज़द हो गया है लिहाज़ा अल्लाह तआला से तौबा व इस्तिग़फ़ार करे और अपने कुसूर और लगज़िश का पता चलाने की कोशिश करे और अपने नफ़्स की मलामत करे।

फ़कीर के लिए सज़ावार है कि उसकी औलाद जिस क़दर ज़्यादा हो उसी क़दर रिज़्क के मामला में उसका दिल पुरसुकून हो, अल्लाह तआला पर कामिल एतमाद रखे और यह तामीले हुक्मे इलाही ज़ाहिरी हालत में उनके लिए है लेकिन बातिन में अल्लाह के वादा पर कामिल एतमाद रखे और पुख़्ता यकीन रखे कि उनका रिज़्क अल्लाह के पास मौजूद है, उसने रिज़्क का वादा किया है और मुक़दर कर दिया है हर हाल में वह उसके या किसी और ज़रिया से बच्चों



तक जरूर पहुंचेगा पस उसको अपनी सई (और कोशिश को वसीला रिज्क न समझे और खालिक को मखलूक के दर्मियान दखील न बने रिज्क में कमी और फाका कशी की तोहमत राजिके मुतलक पर न रखे और उसके वादा में शक न करे न किसी और से उस कमी का शिकवा करे उसका शिकवा उसी से करे और उसी से हाजत रवाई की दुआ करे। फकीर पर अल्लाह तआला ने अयाल के नफका की जो जिम्मादारी डाली है उस बात पर साबित कदम रहने की दुआ करे और दुआ करे कि इलाही इनके रिज्क को सहल और आसान बना दे, अल्लाह अपने बन्दे को मुसीबत में इसलिए मुब्तला करता है कि बन्दा उसकी तरफ रुजूअ हो कि ज़ारी के साथ मांगने वाले उसको पसन्द हैं यह सवाल ही तो है जिसके बाएस बन्दा और मौला गुनी और फकीर का फर्क वाजेह हो जाता है सवाल ही की बदौलत बन्दा किब्र, नखुव्वत व गरूर और तबखतुर से निकल कर आजजी, मसकनत और एहतियात की तरफ आता है इस सूरत में उस को जल्द कबूलियत हासिल होती है और इसके लिए आखिरत में सवाब भी जमा होता है।

### फकीर को मुस्तकबिल की फिक्र नहीं करना चाहिए

फकीर को लाजिम है कि मुस्तकबिल की फिक्र न करे हाल पर नज़र रखे उसके हुदूद से तजावुज़ न करे शराइते हाल और आदाबे हाल को मलहूज़ रखे अपने हाल से बलन्द हाल की तरफ न देखे, किसी दूसरे की हालत का हरीस न बने कि ऐसा भी होता है कि वह हालत साहिबे हाल के लिए वजहे सलामती है मगर हरीस के लिए हलाकत आफरीन बन जाती है इसकी मिसाल गिज़ा की तरह है कि बाज़ गिज़ायें बाज़ लोगों के लिए सेहत अफ़ज़ा होती हैं लेकिन बाज़ के लिए मुज़िरे सेहत बन जाती हैं। फकीर को चाहिए कि खुद अपने इन्तेखाब से किसी हालत को पसंद न करे जब तक कि खुदा की तरफ से उसको इस हालत में दाखिल न कर दिया जाए अगर खुद अपने नफ़्स को किसी हालत में दाखिल करेगा तो वह अपने नफ़्स की जलालत व हलाकत का बाएस खुद बनेगा खुद बखुद किसी हालत में दाखिल न हो जब तक खुदा का हुक्म न आ जाए कि उसी के कब्ज़ा में मौत व जिन्दगी है और किसी हालत से उस वक्त तक न निकले जब तक तसरूफ़े इलाही ही उसको इस हाल से न निकाले, जो फकीर व उलमाए सल्फ़ और अरबाबे तरीक़त का यही अमल था इसी की पैरवी लाजिम है।

### मौत का इन्तेज़ार

फकीर के लिए जरूरी है कि हर वक्त मौत का मुंतज़िर और उसके लिए तैयार रहे। नाज़िल शुदा मसाइब और हालते फ़ेक़्र पर राजी बरज़ा रहने में इस तरीका को अपनाने से मदद मिलेगी इस लिए कि मौत की याद से उम्मीदें कोताह हो जाती हैं। नफ़्स पर शिकस्तगी पैदा होती है और ख्वाहिशाते नफ़्सानी का जोश ठंडा पड़ जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया लज़्ज़तों की इमारत को ढा देने वाली मौत की याद ज़्यादा किया करो।

मिन जुम्ला आदाबे फ़ेक़्र यह भी है कि मखलूक की याद दिल से निकाल दे, आदाबे फ़ेक़्र से यह भी है कि फकीर को जो कुछ मयस्सर आए (फल हो या खाना) अगर कोई गुनी उसके यहां आए तो खुश खुल्की से उसके सामने पेश करे, ईसार में फकीर को गुनी से ज़्यादा होना चाहिए अगर उसरत की हालत हो तब गुनी पर खर्च करके अपने अयाल को तंगी में न डाले



हां अगर अयाल उसके ईसार पर राजी और उससे खुश हों तो खर्च करने में मुजाइका न करे।

फकीर के आदाब में से यह भी है कि तंगदस्ती और उसरत की हालत में अपने तकवा की इहतियात व निगहदाश्त रखे, उसरत और नादारी के बाएस खिलाफे शरीअत काम न कर बैठे और अजीमत छोड़ कर रिफअत की तरफ कदम न बढ़ाए, खूब अच्छी तरह समझ ले कि तकवा पर दीन का मदार है और तमअ दीन की बुर्दबारी है, मुशतब्हा चीजों के कबूल करने में दीन की खराबी है जैसा की एक बुजुर्ग का कौल है कि जिस फकीर के फेक़ में तकवा नहीं उसका खाना हराम है इसलिए जरूरी है कि उसरत की हालत में दीनी तावीलों की तरफ माएल न हो बल्कि अजीमत की तरफ कदम बढ़ाए अजीमत अगरचे दुशवार है मगर इहतियात की चीज है।

## फकीर का सवाल

### फकीर कब सवाल करे

फेक़ के आदाब में यह भी है कि जब तक फकीर के पास बकद्रे किफायत चीज मौजूद है मखलूक से सवाल न करे, अगर हाजत और जरूरत उसको बहुत ही मजबूर कर दे तो बकद्रे हाजत तलब कर ले, उसकी हाजत ही सवाल का कम्फारा बन जाएगी। फकीर को सवाल करना उसी वक्त वाजिब है कि जब वह हर तरह से मजबूर हो जाए और किसी तरह उसका बस न चले फिर भी अपने नफ्स के लिए सवाल न करना ही बेहतर है सिर्फ अयाल के लिए तलब करे अगर फकीर के पास एक दीन है तो जब तक वह खर्च न हो जाए सवाल न करे क्योंकि जब तक उसके पास कुछ माल है उस वक्त तक मौब से उसको कुछ मदद नहीं मिल सकती।

सवाल की एक शर्त यह भी है कि मखलूक पर उसकी नजर न हो बल्कि खुदा पर हो वही उसकी हाजत पूरी करने वाला है इसलिए सवालिया इशारा खुदा ही की तरफ हो। मखलूक को सिर्फ वकील और अल्लाह कारिन्दा समझे, किसी बंदे को रब न समझे मखलूक से सवाल करने का मतलब यह है कि मसकूल को अपना और अपने बच्चों (के फेक़ व फाका) का हाल बता दे लेकिन इसमें अल्लाह का शिकवा न हो सवाल करे तो इस्तफहामिया सूरत में करे मसलन इस तरह कहे क्या हमारे लिए आप को कुछ दिया गया है? क्या आप पर हमारा कुछ बार डार गया है? ऐ अल्लाह के मम्लूक! ऐ अल्लाह के दर के फकीर आप और मैं अपने अपने मकबूज़ा माल में यकसां हैसियत रखते हैं हम में से कोई भी इस माल का मालिक नहीं है मालिक तो कोई और है जिस के हम सब मोहताज हैं, अगर इन अल्फाज़ के साथ सवाल करे तो सवाल करना उसके लिए हलाल है वरना हराम। ऐसे फकीर की कोई इज्जत नहीं जो मखलूक को कारसाज़ समझ कर सवाल करे वह मुशरिक है फरेबी है रियाकार है, अहले तरीक़त से खारिज है, दरोग गो, दोगला और बे दीन है।

फकीर को अगर काई कुछ दे दे तो शुक्र करे न दे तो सब्र करे सच्चे फकीर के यही औसाफ़ होते हैं। अगर फकीर का सवाल रद्द कर दिया जाए तो गुमगीन न हो अपने हाल को न बिगाड़े, न गुस्सा करे और न मोतरिज़ हो न सवाल रद्द करने वाले को बुरा भला कहे। अगर वह ऐसा



करेगा तो उसके साथ जुल्म करेगा, यानी मसऊल तो अल्लाह की तरफ से मामूर और वकील मुअक्किल के हुक्म के मुताबिक ही करता है, देने वाला तो असल में मुअक्किल है और वह अल्लाह अज्जा व जल्ल है पस ऐसी हालत में अल्लाह ही की तरफ रुजूअ करे और उसी से फराखी व आसानी और युसर की दरखास्त करे ताकि अल्लाह तआला लोगों के दिलों को उसकी तरफ माएल फरमा दे और उसकी मुशकिलात आसान हो जायें, रिज्क जारी हो जाए और जो कुछ मकसूम है वह उसको पहुंच जाए, मुमकिन है कि अल्लाह तआला ने उसकी तरफ से लोगों के हाथ इस लिए रोक दिये हों कि उसका अपनी तरफ रुजूअ कराना मकसूद हो इसलिए फकीर को चाहिए कि अल्लाह के दरवाजे से लिपट जाए और दुआ व जारी करके उसके दर के हिजाब को दूर कर दे कि असल में देने वाला तो अल्लाह तआला है कोई बंदा देने वाला नहीं।

## फुकरा के आदाबे मुआशरत

### दोस्तों के साथ सुलूक

फकीर को दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक रवा रखना चाहिए, उनके साथ शगुफता रवी से पेश आए चीं बजबीं न हो जो कुछ वह चाहते हैं अगर वह खिलाफे शरअ नहीं है तो उसकी मुखालफत न करे या उसका इरतिकाब गुनाह का मौजिब, शरीअत की मुखालफ और नहीं ऐ इलाही से तजावुज का बाएस न हो, इसी तरह दोस्तों से झगडा न करे और न उनसे खसूमत रखे बल्कि उसके बर अक्स हमेशा दोस्तों का समदूह व मुआकिन रहे लेकिन इसी शर्त के साथ जो हम ने अभी ऊपर बयान की है।

दोस्त अगर मुखालफत करें तो उनकी मुखालफत को बरदाश्त करे और उनकी तरफ से पहुंचने वाले रंज पर सब्र से काम ले उनसे कीना व दुसमनी न रखे, किसी दोस्त के लिए अपने दिल में बुराई, नफरत और फरेब को जगह न दे, अगर वह मौजूद नहीं है तो उसकी गीबत न करे न सामने उसको बुरा कहे। दोस्त की गैर हाजिरी में अगर कोई उस पर इलजाम तराशी करे या उसकी बुराई करे तो उन इलजामात को रफअ करे जहां तक मुमकिन हो दोस्त के उयूब दूसरे दोस्तों से पोशीदा रखे अगर कोई दोस्त बीमार हो जाए तो उसकी अयादत करे अगर किसी सबब से अयादत न कर सके तो उसकी सेहत के बाद उसको सेहत की मुबारक बाद दे अगर खुद बीमार हो जाए और कोई दोस्त अयादत के लिए न आए तो उनको माजूर समझे और आइंदा उस से बदला लेने की दिल में न ठाने (कि वह बीमार पड़ेगा तो मैं बीमार पुर्सी और अयादत नहीं करूंगा) यानी जो यह रिश्ता तोड़े उससे फकीर को चाहिए कि यह रिश्ता जोड़े, अपनी अता यानी यानी अयादत से उसको महरूम न रखे, उसको अता करे जो उस पर जुल्म करे उसको माफ करे जो उसके साथ बुराई से पेश आए, उसको उस खता और कुसूर पर माजूर समझे।

### दूसरों की चीजों का इस्तेमाल

दूसरों की चीजें उनकी इजाजत बगैर इस्तेमाल न करे लेकिन अपनी चीजें और दोस्तों के लिए ममनूअ न करार दे (उनको इख्तियार दे दे कि चाहें तो इस्तेमाल करें) अपनी तमाम हरकात व सकनात में परहेजगारी से गाफिल न रहे (कोई अम्र तकवा के खिलाफ सरजद न हो) अगर



कोई दोस्त बर बिनाए यगानगत और बेतकल्लुफी उसके किसी माल या किसी चीज का ख्वास्तगार हो तो शगुफ़ता रबी और खन्दा पेशानी के साथ उसका शुक्र अदा करते हुए उसकी ख्वाहिश को पूरा कर दे, उसका शुक्र गुज़ार और मन्नत पज़ीर हो कि उसने उसको इस काबिल समझा और अपनी हाजत रवाई का अहल करार दिया। हत्तल वसअ किसी के इस्तेमाल की कोई चीज़ मुसतआर न ले, हां अगर दूसरा मुसतआर ले ले तो उसे उससे वापसी का मुतालबा न करे, मुसतआर दी हुई चीज़ का वापस मांगना शाने जवांमर्दी के खिलाफ है जिस तरह शरअ में हदिया और हिबा की हुई चीज़ का वापस ले लेना दुरुस्त नहीं है इसी तरह मुसतआर चीज़ को वापस न ले और अगर तलब से खुद को न रोक सके तो वापस ले कर फिर उसको लौटा दे यानी उसको इस्तेमाल के लिए फिर मुसतआर दे दे ख्वाह उसको यह जहमत रोज़ाना ही क्यों न उठाना पड़े। अपना माल लेकर लोगों से अलग थलग हो जाना शाने फ़कीरी नहीं है फ़कीर तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उस माल का अमीन है जो शख्स किसी चीज़ का मालिक होता है हकीकत में वह चीज़ उसकी मालिक होती है क्योंकि उसकी मोहब्बत उसके दिल पर गालिब हो जाती है पस दिल मग़लूब हो और शय गालिब। जिस के हाथ में इंसान की बाग़ डोर हो हकीकत में वह उसका बंदा है बल्कि हमारे पास जो चीज़ें हैं सब का मालिक अल्लाह ही को जानना चाहिए और बंदों की तमाम चीज़ें अल्लाह की मिल्क में बराबर और एकसां हैं।

जो चीज़ किसी दूसरे के कब्ज़ा में हो उसके इस्तेमाल में शरीअत के अहक़ाम, तक्वा और अल्लाह तआला की काएम कर्दा पाबंदियों को मलहूज़ रखे ताकि उस गरोह में शामिल न हो जाए जो हर चीज़ को मुबाह समझने वाला बे दीन लोगों का गरोह है। अगर किसी तकलीफ़ या फ़ाका में मुब्तला हो जाए तो जहां तक मुमकिन हो अपने दोस्तों से उसको छुपाए ताकि उसकी परेशानी से वह लोग भी परेशान हों इसी तरह ग़म व अन्दोह की सूरत में भी दोस्तों से इसका इज़हार न करे वरना उनकी मुसर्रतें और उनकी शगुफ़तगी में रखना पड़ जाएगा।

अगर कोई दोस्त हालते रंज व ग़म में बज़ाहिर खुशी और मुसर्रत का इज़हार करे तो फ़कीर को चाहिए कि वह उनकी ज़ाहिरी हालत में शरीक हो। रंज और ग़म को जान लेने के बावजूद उसको दिल में पोशीदा रखे और कोई ऐसी बात उनके सामने न कहे जो उनकी दिल शिकस्तगी का बाइस हो। अगर दोस्त की बात से कबीदा खातिर हो जाए तो हुस्ने अख़लाक़ का तकाज़ा है कि उससे इस तरह गुफ़्तगू करे कि उसकी उदासी दूर हो जाए।

## हस्बे हैसियत बरताव

हर शख्स से उसकी हैसियत के मुताबिक़ बरताव करे और उसको हद से ज़्यादा तकलीफ़ न दे और जब तक खिलाफ़े शरअ बात ज़हूर में न आए या पैरवी करने से शरीअत की खिलाफ़ वर्ज़ी न हो रही हो उस वक़्त तक उसकी पैरवी करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि हमारे अंबिया के गरोह को हुक्म दिया गया है कि लोगों से उनकी समझ के मुताबिक़ गुफ़्तगू करें जो लोग उनसे कम मतर्बा हैं उनसे शफ़क़त के साथ और जो उनसे मुआशरत में बलन्द हैं उनसे ताज़ीम के साथ और बराबर वालों के साथ मेहरबानी, भलाई और ईसार के साथ पेश आयें।



## आदाबे तआम

### फुकीर को किस तरह खाना चाहिए

फुकीर को हिर्स और बेनियाजी के साथ नहीं खाना चाहिए बल्कि खाना खाते वक्त अल्लाह की याद दिल में रखना चाहिए, बुजुर्गों से पहले खाना की तरफ हाथ न बढ़ाये (खाना शुरू न करे) न दूसरे से खाने को कहे और न अपने सामने से उठा कर किसी दूसरे के सामने से रखे न उसे खुश खुल्की समझे और न तवाजोअ। अलबत्ता यह बात मेजबान के लिए जाएज है, यह मेजबान की तरफ से एक गुना खिदमत है, खाने वाला मेजबान से अपनी तरफ से यह न कहे आप भी हमारे साथ खाइये। जिस शख्स को जिस जगह बिठा दिया जाए बैठ जाए खुद दूसरी जगह बैठने के लिए पसन्द न करे जब तक साथ वाले खाने से फारिग न हो जाए खुद अपना हाथ खाने से न खींचे अगर वह ऐसा करेगा (यानी हाथ खाना से खींच लेगा) तो दूसरे को झिझक और शर्म महसूस होगी और वह शिकम सैर न होने के बावजूद वह रुक जाएगा जब तक दरवेश खा रहा रहो उसके सामने खाना न उठाया जाए, खाने पर दूसरे साथियों का साथ दे कि बाहम मुखालिफत न हो अगरचे खुद उस को इश्तिहा न हो। दस्तरख्वान पर किसी दूसरे को लुकमे बना बना कर न दे। अगर पानी पेश किया जाए तो तमाम पानी पी ले, मेजबान अगर खिदमत के लिए खड़ा हो तो उसको मना न करे अगर वह हाथ धुलाना चाहे तो उसको न रोके।

### अगुनिया और फुकरा के साथ खाना खाना

अगर अगुनिया और मुतमव्विल हजरात के साथ खाने का इत्तेफाक हो तो खुदारी के साथ खाए हां फुकरा और अहबाब के साथ ईसा और बे तकल्लुफी के साथ खाने में मुजाएका नहीं, खाने के सिलसिले में ना दीदापन न दिखाये, यानी जब तब खाना सामने न आ जाए दिल में खाने का ख्याल भी न करे, सामने आ जाए तो खाए। खाने की ख्वाहिश में नफ्स का शरीक न बने मुमकिन है कि वह खाना मुक़्दर और मकसूम ही में न हो और वह ख्वाहिश कभी पूरी न हो सके। कहीं ऐसा न हो कि उस ख्वाहिश में मुबतला होकर निगरानीए हाल से गाफिल हो जाए और अल्लाह की इबादत से महजूब और महरूम रहे।

पस खाना अगर सामने आ जाए तो उस की ख्वाहिश करे और खा कर अल्लाह का शुक्र अदा करे, खाने को असले मकसूद न बना ले और दिल को उससे वाबस्ता न कर दे और न बार बार उसका जिक्र कर के अपने नदीदापन को जाहिर न कर दे बल्कि उससे महफूज रहने के लिए दिल को एतबार दिलाए कि वह बीमार है और सेहतयाब होने तक खाने पीने से परहेज जरूरी है। हकीकत भी यही कि नफ्स की आरजू और ख्वाहिश बीमारी है और अल्लाह तआला उसका तबीब और मुआलिज है। जब तबीब अपने किसी गुलाम (बंदा) के हाथ उसके लिए खाने पीने का कुछ सामान भेज दे तो समझ ले कि उसके नफसे बीमार के लिए दवा है चूंकि तबीब की तरफ से आई है। पस अपने हाल की निगहदाश्त और हिफाजत में मशगूल हो जाये। दरवेश को चाहिए कि कभी किसी आरजू और ख्वाहिश को मर्कजे खातिर और मतमहे नज़र न बनाये इसी तरह अपनी तमाम हरकात व सकनात में किसी चीज़ को तमानीयते कल्ब का मौजिब न समझे।



# फुकरा के माबैन आदाबे मुआशरत

## अपने साथियों के साथ सुलूक

फकीर को चाहिए कि अपनी किसी चीज़ को साथियों से अलग थलग न रखे जैसे कपड़े, मुसल्ला, अपने प्याले, गिलास वगैरह अपने साथियों से बचा कर न रखे (अगर वह इस्तेमाल करना चाहें तो उनको इस्तेमाल के लिए दे दे।) अगर कोई दूसरा शख्स उसकी जानमाज़ पर कदम रखे तो उससे रंजीदा न हो और जवाबान अपना कदम दूसरे के मुसल्ले पर न रखे, अपना मुसल्ला अपने से बलन्द मरतबत शख्स के मुसल्ले से बलन्द जगह और ऊपर न बिछाए, किसी से अपनी खिदमत न बल्कि खुद दूसरों की खिदमत करे, फकीरों और दरवेशों के पांव दाबे लेकिन खुद किसी से अपने पांव न दबवाये। अगर दरवेश हम्माम में जाए तो हम्मामी से मालिश और मसाज न कराये, आपस में एक दरवेश दूसरे दरवेश की अगर मालिश करना चाहे तो कोई मुज़ाइका नहीं।

अगर कोई दरवेश किसी दूसरे दरवेश की कोई चीज़ जैसे खिरका, मुसल्ला वगैरह पसंदीदगी की नज़र से देखे तो उसी वक्त वह चीज़ उस दरवेश की खिदमत में पेश कर दे जो उसका ख्वास्तगार है अपनी ज़ात पर उसको तरजीह दे।

खाने का वक्त हो या और किसी काम का वक्त दूसरे फुकरा को अपने इन्तेज़ार की तकलीफ़ में मुबतला न करे इस लिए कि मुनतज़िर को इन्तेज़ार का बार उठाना पड़ता है। अगर किसी दरवेश को खाना भेजना है तो उसको इन्तेज़ार में रोके न रखे, शोरबा का इन्तेज़ार बड़ी ज़िल्लत की बात है।

दरवेश को लज़िम है कि कद्रे इमकान किसी चीज़ को ज़खीरा बना कर न रखे अगर खाना ज़्यादा नहीं है तो जब तक दूसरों के सर्फ़ से बच न जाए खुद न खाए। इस अम्र की कोशिश करे कि दरवेशों को जो खाना पेश किया है वह बहुत की पाकीज़ा और उनकी तबाए के मुताबिक है। अगर जमाअत के साथ है तो किसी चीज़ के क़बूल करने या खाने में अपनी इफ़िरादीयत को नुमाया न करें अगर खाना का आगाज़ उसी की ज़ात से किया जा रहा है या तोहफ़ा उसी के सुपुर्द किया गया है तो मुनासिब है उस चीज़ को वस्त में रख दे अगर बीमार है और किसी मखसूस ग़िज़ा वगैरह की ज़रूरत है तो अपने जमाअत से इजाज़त लेकर उसका इस्तेमाल करे।

## इजाज़त ज़रूरी है

अगर किसी मेहमान खाने में फ़रूकश है या मदरसा में मुकीम है तो वहां के मोहतमिम (शैख़) या ख़ादिम की इजाज़त से मशवरा के बग़ैर कोई काम न करे। अगर जमाअत के साथ है तो अफ़रादे जमाअत जिस काम में मशगूल हों खुद भी उसी काम में लग जाये (उनसे अलग थलग न रहे) दरवेशों के साथ हो तो तसबीह और ज़िक्र बलन्द आवाज़ से न करे बल्कि आहिस्ता आहिस्ता पढ़े और ज़िक्र करे बल्कि उससे बेहतर है कि इबादते बातिनी यानी तफ़क्कुर और हुसूले इबरत की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए हां अगर साथी ख़्वास में से है तो फिर मुज़ाइका नहीं। हर काम की दुरुस्तगी और असबाब की फ़राहमी उसका रब खुद फ़रमाएगा, वही हुक्म देगा वही



मना फरमाएगा। जमाअत के दिलों को वही माबूदे बरहक उसका ताबेअ और मुतीअ बनाएगा और उसकी मोहब्बत से उनके दिलों को भर देगा और उनके दिलों में उसकी हैबत और ताजीम फरमा देगा। जिक्रे इलाही के अलावा और कोई बात बलन्द आवाज से नहीं करना चाहिये।

जमाअत की हमराही की हालत में सरगोशी न करे और जहां तक मुमकिन हो दुनिया के मखमसों और खाने पीने की बातें न करे, दरवेशों की सोहबत में (आदाब व उसूले तरीकत वगैरह) लिखने से बाज रहे बल्कि जो कुछ लिखा हुआ है उस पर अमल पैरा हो और इस शग्ल के बजाए बातिनी शग्ल (जिक्र) और अपनी हालत की निगहदाश्त में बसर करे, दरवेशों के सामने ज्यादा नवाफिल भी न पढ़े, अगर दरवेशों की जमाअत (नफ़ली) रोज़ा रखे तो खुद भी रोज़ा रखे, उनकी मुवाफ़कत करे तन्हा रोज़ा न रखे।

दरवेश अगर बेदार हो तो खुद भी बेदार रहे सो न जाए बदर्जा मजबूरी अगर नींद का बहुत ही ग़लबा हो तो कुछ देर तन्हा सो सकता है ताकि नींद का ग़लबा और जोश सर्द पड़ जाए।

## पेश कदमी और पहल करना

किसी चीज़ की ख्वाहिश और उसके इख्तियार करने में पेश कदमी न करे हत्तल वसअ उससे बचे अगर कोई दरवेश उससे कुछ तलब करे तो उसकी ख्वाहिश और तलब को न रद्द करे, थोड़ी ही चीज़ देकर उसका सवाल पूरा कर दे और इस सूरत में भी उसको इन्तेजार की ज़हमत में न डाले और उसके दिल को न दुखाए। अगर कोई उससे मशवरा तलब करे तो पूरे गौर व ख़ौज से जवाब दे, जवाब देने में जल्दी न करे बल्कि मशवरा तलब करने वाले के इतनी मोहलत दे कि वह इतमीनान के साथ अपनी बात पूरी करे, जहां तक मुमकिन हो रद्द और इनकार में जवाब न दे, अगर उसका सवाल दुरुस्त न हो तो भरपूर मुवाफ़कत न करे, बल्कि कुछ मुवाफ़कत करे और फिर नमी के साथ वह बात बता दे जो उसकी राय से ज्यादा सही और दुरुस्त हो लेकिन सही राये होने में सख्ती और दुरुश्ती से काम न ले।

## अहल व अयाल के साथ तर्जें मुआशरत

### नफ़का की अदाएगी अदबे दरवेश है

खुश अख़लाकी और दस्तूर के मुताबिक हत्तल वसअ व बक़दे इमकान अहल व अयाल का नफ़का अदा करना अदबे दरवेश है, अगर दरवेश को आज और सिर्फ़ आज की ज़रूरत के मुताबिक कोई चीज़ मयस्सर आए तो वक्ती ज़रूरत को नज़र अन्दाज़ करके कल के लिए जमा नहीं रखना चाहिए अलबत्ता अगर वक्ती ज़रूरत से कुछ बच रहे तो कल के लिए रख लें लेकिन यह भी अपने लिए नहीं बल्कि अहल व अयाल के लिए। अगर वह उसमें से अपनी ज़ात पर भी कुछ खर्च कर ले तो सिर्फ़ उस शकल में कि वह अयाल का खादिम और उनका वकील है जिस तरह गुलाम अपने आका के तुफ़ैल में खाता है। यह यकीन रखना चाहिए कि अहल व अयाल की ख़िदमत करना और उनकी रोज़ी के लिए मुशक्कत करना और तकलीफ़ बरदाश्त करना हुक्मे इलाही की तामील और उसकी इताअत है। इस सिलसिला में अपने नफ़स की ख्वाहिश पूरी करने से गुरेज़ करे, अहल व अयाल को अपने ऊपर हमेशा तरजीह दे अगर कुछ



खाए तो उनकी इशतिहा और भूक की मुवाफकत में खाए अपनी इशतिहा की मुवाफकत व मुनासबत पर उनको आमादा न करे।

अगर मौसमे गरमा में कोई ऐसी चीज़ उसको मिला जाए जिस की ज़रूरत मौसमे सरमा में होगी तो उसको फ़रोख़्त करके बशर्ते ज़रूरत उसकी कीमत अपनी ज़रूरत में सर्फ़ कर ले अगर आज की ज़रूरत पूरी होने के लायक़ उसको कुछ मिल जाए और मज़ीद कमाई से कल के मसारिफ़ के लिए कुछ जमा हो सकता है तो मज़ीद कमाई और कसब में मशगूल न हो बल्कि सिर्फ़ आज की ज़रूरत के बक़्दर किफ़ायत पर क़नाअत करना वाजिब है। कल की रोज़ी की तदबीर कल पर छोड़ दे अगर खुद दरवेश के अन्दर तवक्कुल और भूक पर सब्र करने की ताक़त तो है लेकिन बाल बच्चों में यह ताक़त नहीं है तो उनको अपनी हालत पर लाने की कोशिश करे यानी उनको तकलीफ़ और मुसीबत बरदाश्त करने का आदी बनाए।

अगर बाल बच्चों में अल्लाह की इताअत, हुसने सीरत और इबादते इलाही का ज़ौक़ व शौक़ देखे तो उनको मुबाह चीज़ कसबे हलाल से खिलाना वाजिब है ताकि उससे अल्लाह की इताअत और नेकी के नताएज मुरत्तब हों उनको हराम न खिलाए, हराम खिलाने से उनमें ना फ़रमानी और गुनाह की ज़ुरत पैदा होगी। खुद दरवेश के लिए भी ज़रूरी है कि अपने अमल की दुरुस्ती, कौल की सच्चाई और दिल की नफ़ासत हासिल करने की कोशिश करे ताकि अल्लाह तआला उसके और उसके अहल व अयाल के मामलात में दुरुस्ती पैदा करे और वह सब्र व शुक्र का रास्ता इख़्तियार करे और अल्लाह तआला की इताअत बवजहे क़माल कर सकें खुद उसकी मुवाफ़कत से रू गरदानी न करें और दरवेश की जाती इसलाहे अहवाल की बरक़त अहल व अयाल को भी हासिल हो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जो खुदा से अपने मामलात दुरुस्त कर लेता है तो अल्लाह तआला बन्दों से उसके मामलात दुरुस्त करा देता है (बीवी बच्चे भी अल्लाह तआला के बन्दे हैं इस तरह बन्दे के मामलात इस से भी दुरुस्त हो जाएंगे)।

## मेहमान के खाने में बच्चों को भी शरीक करे

अगर अल्लाह तआला फ़राख़ दस्ती अता फ़रमाए और घर मेहमान आयें और उनके लिए ऊम्दा ऊम्दा खाने तैयार कराये तो बक़्दरे इमकान अहल व अयाल को भी मेहमान के खाने में शरीक करे और इस क़दर खाना तैयार कराए कि जो सब के लिए काफ़ी हो जाए, अगर नादार है और अपनी तंगदस्ती और फ़ेक़्र व फ़ाका के बाउस समझता है कि मेहमान की मेहमानदारी में बीवी बच्चे खुद ईसार से काम लेंगे तो तैयार किया हुआ खाना मेहमान को खिला दे हां अगर मेहमान से कुछ बच रहे तो घर वाले भी खा लें कुछ मुज़ाएफ़ा नहीं है। इस तरह यह अम्र अल्लाह तआला की खुशनूदी का मौजिब होगा और अल्लाह तआला उनके रिज़्क में बरक़त अता फ़रमाएगा। मेहमान अपना रिज़्क अपने साथ खुद लाता है और उसके तुफ़ैल में घर वालों (मेज़बान) के गुनाह कम हो जाते हैं। हदीस शरीफ़ में इसी तरह वारिद है।

## खुद दावत में शरीक होना मुनासिब नहीं है

अगर दरवेश की कहीं दावत है लेकिन बच्चों की ज़रूरियात पूरी करने के लिए उस के पास कुछ मौजूद नहीं तो बच्चों को तबाह हाल छोड़ देना और खुद दावत में पहुंच कर ख़ूब खाना



पीना और बच्चों को फाका से रखना इंसानियत के खिलाफ है और दावत में शरीक होकर गुनाहगार बनना किसी तरह भी जाएज नहीं इसलिए ऐसी सूरत में दावत में हरगिज न जाए बल्कि बाल बच्चों के साथ फाका पर कनाअत और सब्र करे हां अगर दावत देने वाला मुखलिस और बाखबर इंसान है और उसको मालूम है कि दरवेश के बाल बच्चे गिरफ्तार फलाकत और मुब्तलाए फाका हैं तो तन्हा दरवेश का नहीं बुलाना चाहिए बल्कि उसके अहल व अयाल की जरूरत के मुताबिक उसके घर खाना भेज देना जरूरी है और अपने इस इरादा की खबर दरवेश को भी दे देना चाहिए ताकि उसके दिल से बच्चों की फिक्र का बार उतर जाए।

## उलूमे शरीअत की तालीम अहल व अयाल को देना जरूरी है

फकीर पर लाजिम है कि अपने बीवी बच्चों को उलूमे जाहिरी और शरीअत की पाबन्दी की तालीम दे ताकि वह किसी बात में (ख्वाह मामूली हो या अहम) शरीअत की मुखलफत न करें उन का हर अमल शरीअत की तालीम के मुताबिक हो, अपनी औलाद को बाजारी लोगों के सुपुर्द न करे कि वह उनको तिजारत के हिरफत के गुर सिखायें बल्कि उनको दीनी तालीम और अहकामे मजहब सिखाए और तलबे दुनिया के तर्क पर आमादा करे हां अगर नादारी, बेकसी और फजीहत व रुसवाई का अन्देशा हो तो रोजी की तलब के लिए मखलूक की तरफ रुजूअ करे और ऐसे नाजुक वक़्त में बाल बच्चों को कमाई में लगा दे और खुद भी उस में लग जाए लेकिन इहतियात रखे कि हुदूदे शरीअत से तजावुज न हो, हुदूदे शरीअत के तहफ़ुज के साथ कसब में मशगूल हो जाना अफ़जल व अनसब है।

औलाद का यह तालीम भी दे कि वालिदैन् की नाफ़रमानी से इज्तिनाब करें, बीवी को तालीम दे कि वह अल्लाह के हुक्क अदा करे शौहर के हुक्क अदा कर, शौहर की फ़रमांबरदारी करे और उसको अपनी नादारी और बे सरो सामानी पर सब्र की तालीम दे। (जैसा कि आदाबे निकाह के सिलसिला में हुक्के जौज़ा के बारे में लिखा जा चुका है)।

## आदाबे सफ़र

### मोमिन के सफ़र की गरज़ व ग़ायत

मोमिन के सफ़र की गरज़ व ग़ायत यह होना चाहिए कि वह बुरे ख़सायल को छोड़ कर सिफ़ाते पसंदीदा के हुसूल की जानिब माइल है (सिफ़ाते पसंदीदा को कसब करना चाहता है) इसलिए दरवेश को लाजिम है कि परहेज़गारी और तक़वा की सेहत के साथ साथ रज़ाए इलाही की तलब में अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तर्क कर दे। दरवेश इस मक़सद से अगर अपने शहर से सफ़र करना चाहता हो तो सबसे पहले उन लोगों की रज़ा जोई करे जिनसे उसके ताल्लुकात बिगड़े हुए थे, अपने मां बाप से और अगर वह न हों तो उन लोगों से जो उनके काइम मक़ाम हो सकते हैं जैसे चचा मामू दादा दादी वगैरह से इजाज़त तलब करना जरूरी है, जब उनकी रज़ा हासिल हो जाए तो सफ़र के लिए रवाना हो अगर दरवेश साहबे अयाल है और उनके छोड़ जाने में उनको ज़रर पहुंचने या उनके तबाह व बर्बाद हो जाने का अंदेशा हो तो उनका बंदोबस्त किए बग़ैर सफ़र करना जाएज नहीं या उन सब लवाहिकीन को भी अपने साथ ले जाए। हुज़ूर



सरवरे काए गत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि आदमी जिस का रिज्क फ़राहम करता है उसको जाया कर देना बड़ा गुनाह है। पस दरवेश चूँकि अहल व अयाल के नफ़का का कफ़ील व ज़ामिन है इसलिए उनको जाया होने से बचाये।

## सफ़र की एक शर्त

दरवेश के सफ़र की एक शर्त यह भी है कि सफ़र में उसको हर हर कदम पर हुजूरे कल्ब हासिल हो गुज़िश्ता अलाएक और दिलबसतगियों की तरफ़ उसकी तवज्जोह न हो न मुस्तक़बिल की, मस्जिदों के ख़्याल में हो बल्कि उसका दिल माज़ी और मुस्तक़बिल के अलाएक व अफ़कार से बेनियाज़ हो, हर चीज़ से उसका दिल ख़ाली हो जहाँ हो हुजूरे कल्ब उसको हासिल हो। जनाब इब्राहीम बिन रुहा ने फ़रमाया है कि मैं इब्राहीम बिन शैबा के साथ एक मर्तबा सफ़र में गया, इब्ने शैबा ने मुझ से कहा जो कुछ तुम्हारे पास है सब फेंक दो, मैंने इमतसाले अम्र के तौर पर हर एक चीज़ फेंक दी मगर एक दीनार अपने पास रहने दिया, इब्ने शैबा ने फ़रमाया तुम मेरे बातिन को दूसरे मशग़ला में क्यों लगाए हुए हो, जो कुछ तुम्हारे पास है वह फेंक दो मैंने वह दीनार भी फेंक दिया, इब्ने शैबा ने फिर फ़रमाया हर वह चीज़ फेंक दो जिससे तुम्हारी तबअ को वाबस्तगी है यह सुन कर मुझे जूते के वह तिस्मे याद आए जो मेरे पास रखे हुए थे मैंने वह तिस्मे भी फेंक दिए, खुदा की कसम मुझे जहाँ भी उस सफ़र में जूते के तिस्मे की जरूरत पेश आई मुझे वह सामने पड़ा मिल गया। इब्ने शैबा ने फ़रमाया जो शख्स अल्लाह के साथ सिद्क का मामला रखता है उसका हाल ऐसा ही हो जाता है। (उसकी हर जरूरत आप पूरी हो जाती है)।

## औराद व वजाइफ़े सफ़र

दरवेश हज़र की हालत में जो औराद व वजाइफ़े पढ़ता था सफ़र की हालत में भी उनको पढ़े उनमें कमी न करे, इसलिए कि सफ़र से तो हालत में अफ़रोज़ी होती है न कि कमी। पस सफ़र की वजह से आमाल व अहवाल में किसी किस्म का इख़्तलाल न पैदा होने दे। रुख़सत का हुक्म और उसका ज़वाज़ तो सिर्फ़ अवाम और कमज़ोर लोगों के लिए है ख़ास और ताक़तवर लोगों के लिए नहीं है, उन के लिए तो हमेशा हर हाल में अज़ीमत ज़रूरी और लाज़मी है, तौफीके इलाही उनके शामिले हाल होती है और रहमते इलाही का उन पर नुज़ूल होता है। अल्लाह के निगहबान उन के साथ निगहबानी के लिए होते हैं। महबूबे हकीकी उनका हम नशीन होता है और उसकी मोहब्बत के तुफ़ैल हर चीज़ से बेनियाज़ी हासिल हो जाती है। ग़ैब से ऐसी इमदादे पैहम और मुसलसल नाज़िल होती है, महबूबे ख़ास की इआनत में हर वक़्त सरगर्म रहता है ग़ैबी लशकर उसकी इआनत के लिए हलका ब हलका मामूर होते हैं, इसलिए सफ़र उनके लिए मज़ीद तक़वीयत का बाइस होता है इसलिए सफ़र से ज़्यादा उनके लिए और कोई चीज़ बेहतर नहीं।

सफ़र में दरवेश से वह तमाम ख़्वाहिशात और तमन्नायें गरेज़ान हो जाती हैं जो हज़र में उसका मक़सूद बने रहते हैं और मख़लूक से दूरी हो जाती है जो बुतों की हैसियत रखते हैं, यह माबूद उसके लिए गुमराही में सलीब से ज़्यादा और शैतान से बढ़कर अग़वा व गुमराह करने वाली है चीज़ें हैं।



## आगाजे सफ़र ही से दिल की निगरानी करना

फ़कीर के लिए मुनासिब है कि आगाजे सफ़र ही से दिल की निगरानी करे ग़फलत की हालत में सफ़र का आगाज़ न करे। यही कोशिश करता रहे कि सफ़र में खुदा दिल से किसी हाल में फ़रामोश न हो, यह सफ़र किसी दुनियावी गरज़ पर मबनी नहीं होना चाहिए इसका मकसूद हज, मुक़द्दस मक़ामात की ज़ियारत या शैख की मुलाकात हो।

## एक जगह पर क़याम

असनाए सफ़र में दरवेश को अगर किसी जगह पर सफ़ाए क़ल्ब और कमाले ज़िन्दगी मयस्सर आ जाए तो वहां मोकीम हो जाए उस जगह को न छोड़े सिर्फ़ इस सूरत में उस जगह को छोड़े जब अल्लाह तआला की तरफ़ से क़तई हुक्म मिल जाए या बज़ोरे तक्दीर ऐसा करना पड़े उस सूरत में जहां जाने का हुक्म हुआ है वहां चला जाए लेकिन यह हुक्म उस दरवेश के लिए है जो उन लोगों में शामिल हों जो राज़ी बरजाए इलाही और तक्दीर के इशारों पर चलते हैं और अपनी ख़्वाहिशात और इरादों से आज़ाद मुरादियत और महबूबियत के दर्जा पर फ़ाएज़ हों।

## मक़बूलियत वजहे हिजाब है

अगर किसी मक़ाम पर फ़कीर को इज़्ज़त और क़बूले अवाम हासिल हो जाए तो उस को अपने लिए मौजिबे परेशानी समझे और उस मक़ाम को फ़ौरन छोड़ दे ताकि यह मक़बूलियत उस के लिए हिजाब और खुदा से दूरी का मौजिब न बन जाए लेकिन फ़कीर के लिए यह हुक्म उस वक़्त है जबकि उसकी ख़्वाहिशाते नफ़्सानी बाकी हों अगर नफ़्सानी ख़्वाहिशात फ़ना हो चुकी हैं तो उस वक़्त दरवेश की नज़र में न मख़लूक की कोई हस्ती बाकी होती है और न उनकी क़बूलियत उसके लिए वजहे नाज़िश बनती है यह निशान उसके दिल से महव हो चुका होता है, दरवेश और मख़लूक के दर्मियान हिजाबात हाएल हो जाते हैं और उनके निगरां दिल इस अम्र की निगरानी करते हैं मख़लूक उनके अंदर दाख़िल न होने पाए वरना शिर्क पैदा हो जाएगा और तौहीद की मंज़िल मुतज़लज़ल हो जाएगी।

## सफ़र में रफ़ीकों के साथ रहने का तरीक़ा

सफ़र में रफ़ीक़ाने सफ़र के साथ रहने सहने का तरीक़ा यह है कि अपने हम सफ़रों से खुश अख़लाकी से पेश आये तमाम बातों में उनके साथ सुलह व आशती को काइम रखे उनसे मुख़ालफ़त या झगड़ा न करे उनकी ख़िदमत में मशगूल रहे लेकिन खुद उनसे किसी किस्म की ख़िदमत न ले।

सफ़र में हमेशा पाक रहे अगर पानी मयस्सर न आ सके तो तयम्मुम कर ले जिस तरह हज़र में पाक रहना मुस्तहब है सफ़र में भी मुस्तहब है। वुजू मोमिन का हथियार है। हदीस शरीफ़ में आया है मोमिन के लिए वुजू तमाम शयातीन और मूजीयों से बचने के लिए एक अमान है।

## सफ़र मे अमरदों के साथ न रहे

दरवेश के लिए ज़रूरी है कि खुसूसियत के साथ अमरदों के साथ सफ़र न करे अमरदों की सोहबत और उनका कुर्ब शैतानों की दोस्ती से भी ज़्यादा ख़तरनाक है उनका कुर्ब हवस परस्ती,



फितना अंगेजी, नफ़सानी उयूब और तोहमत का ज़रिया बन जाती है। उनकी सोबहत और कुर्ब में सख़्त ख़तरा है वहां अगर दरवेश शैख़ वक़्त हो या आरिफ़ बिल्लाह, अबदाल, मासूम अल्लाह वाला, नेकी की तालिम देने वाला, मख़लूक़ का अदब आमोज़, अज़ाबे इलाही से डरने वाला, मख़लूक़ को ऐबों से पाक बनाने वाला, अल्लाह और मख़लूक़ के दर्मियान वास्ता, हक़ व नाहक़ को परखने वाला तो ऐसी सूरत में उनके कुर्ब की परवाह न करे, उसकी नज़र में नौजवान और बूढ़े सब बराबर हैं।

## ख़िदमते शैख़

अगर किसी शहर में पहुंचने पर मालूम हो कि वहां कोई शैख़ मौजूद है तो सबसे पहले उसकी ख़िदमत में पहुंचे उसको सलाम करे उसकी ख़िदमत में मसरूफ़ हो जाए गुरुर, तबख़्तुर, पिन्दार और खुद पसंदी की निगाह से उसको न देखे ताकि उसकी ख़िदमत से जो फ़वाइद हासिल होते उनसे महरूम न रहे। अगर उस शहर का शैख़ उसको कुछ अता करे तो अपने दूसरे रोक़ाए सफ़र को भी उस में शरीक करे सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए उसको मख़सूस न करे।

अगर रोक़ाए सफ़र में से किसी को कोई उज़्र सफ़र पेश आए तो उसको छोड़ कर न चल दे बल्कि खुद भी ठहर जाए ताकि वह रफ़ीक़े सफ़र उसके हाथ से न जाए। अल्लाह ज़आला ही सबको नेकियों की तौफ़ीक़ देने वाला है।

## समाअ के आदाब

### समाअ के आदाब

समाअ की महफ़िल में शरीक हो तो समाअ में तसन्नो और बनावट का इज़हार न करे और अपने इख़्तियार से समाअ का इस्तिक़बाल न करें, (खुद बखुद समाअ की महफ़िल में शरीक होने की कोशिश न करें) अगर इत्तेफ़ाक़ से समाअ का मौक़ा मिल जाए तो सुनने वाले पर लाज़िम है कि मुहज्ज़ब हो कर बैठे, दिल को अल्लाह की याद में मसरूफ़ रखे और कोशिश करे कि ग़फ़तल व निसयान के वसवसों से दिल की बेदारी न जाती रहे, जब कानों में कोई आवाज़ आए तो कारी के बारे में ऐसा ख़याल करे कि वह अल्लाह की तरफ़ से उन वारदाते ग़ैबी का इज़हार कर रहा है यानी उन मज़ामीन को अदा कर रहा है जो जन्नत की तलब, दोज़ख़ का डर, मोहब्बत और शैफ़तगी, अल्लाह की ना खुशी का डर और महारत का ज़ौक़ बढ़ाने वाले हैं ऐसे वक़्त में वारदाते दिली की तरफ़ बढ़ने और इशारए ग़ैबी का फ़ौरन इस्तिक़बाल करे, अगर समाअ ऐसा हो कि कारी की ज़बान उसकी अपनी ज़बान बन जाए और कारी की ज़बान से यह खुद अल्लाह तआला से ख़िताब कर रहा है लेकिन यह याद रखना चाहिए कि समाअ का कोई विजदान और क़ल्बी इक्त्तिज़ा अबदीयत और आदाबे शरीअत के ख़िलाफ़ न हो।

### महफ़िले समाअ में शैख़ की मौजूदगी

अगर समाअ की महफ़िल में शैख़ की मौजूदगी हो तो हत्तल वसअ दरवेश को पुरसुकून रहना चाहिए और शैख़े तरीक़त के वकार को मलहूज़ रखना चाहिए अगर कैफ़ से मग़लूब हो जाए तो बक़द्रे ग़लबा, कैफ़ व वज्द (हरकत) करना दुरुस्त है और जब ग़लबा ख़त्म हो जाए तो फ़ौरन



पुरसुकून हो जाए और वकारे शैख का लिहाज रखे। कारी या कव्वाल से दरवेश का यह तकाजा करना कि किरत को छोड़ कर शेअर ख्वानी शुरू कर दे दुरुस्त नहीं जबकि हमारे जमाने में रिवाज हो गया है। अगर यह अहले समाअ अपने इरादे, तखय्युल की यकसूई और रुहानी तसरूफ में सच्चे और सादिक हैं तो कलामे इलाही के सुनने से उनके दिलों में और उनके आज्ञा में तास्सुर पैदा होना चाहिए न कि दूसरों का कलाम सुनने से उनको झुरझुरी आ जाए, कुरआन पाक तो उनके महबूब का कलाम है उसी का बयान है, उस में महबूबे हकीकी का जिक्र, अलिया साबेकिन का जिक्र है, आशिक व माशूक, मुरीद व मुराद का जिक्र है झूठी मोहब्बत के दावेदारों पर अताब और उनकी मजम्मत मौजूद है पस जब उनकी सदाकत और इरादत में खलल वाकेंअ है और उनका दावा बिला सुबूत है तो साबित हो गया कि यह न उनका बातिनी जजबा है और न अंदरूनी सिद्क है, न उसका नाम मारेफ़त है न कश्फ़, न उनका मकसूद उलूमे अजूबा का हुसूल है न अंदरूनी असरार पर इत्तेला न कुर्ब व उन्स के मकाम तक रसाई है और न इस तरह महबूब तक पहुंच हो सकती है और न हकीकी समाअ का उनके कुलूब पर वुरुद हो सकता है, उनका (हालते वज्द में) खड़ा हो जाना महज रसमन और आदतन है, हकीकी समाअ तो एक इल्हाम है और इस हाल में अल्लाह तआला अपने जानने वालों खास औलिया और अबदाल से अपना मखसूस तरीका से कलाम करना है लेकिन यह मुद्ई इससे बिल्कुल बेबहरा होते हैं। यह तो उन अशआर को सुनकर खड़े हो जाते हैं जो मादी कुव्वतों को पहचान में लाने वाले और आशिकों की कुव्वते शहवानी की आग को भड़काने वाले होते हैं। यह अशआर कल्बी और रुहानी जजबात को नहीं भड़काते। पस तमाम शोअरा को चाहिए ख्वाह फकीरे हक हों या फकीरे खल्क, फकीरे हकीकत हों या फकीरे सूरत, फकीरे दुनिया हों या फकीरे आखिरत कि कारी और कव्वाल से किसी शेअर की तकरार की ख्वाहिश न करें बल्कि इस आरजू को खुदा के सुपुर्द कर दें अगर उसकी मशीयत होगी और सुनने वाला फकीर सच्चा होगा और तकरार में उसकी फौज व फलाह और रुहानी मरज का इलाज होगा तो अल्लाह लआला उसके बजाए किसी दूसरे शख्स को इस बात पर मुकर्रर फरमा देगा और उसकी तरफ से तकरार की ख्वाहिश पैदा होगी या खुद कव्वाल के दिल में ख्वाहिश पैदा हो जाएगी और वह उन अशआर की तकरार करेगा।

## वज्द में मदद लेना

वज्द की हालत में किसी दूसरे से मदद चाहना फकीर को ज़ेबा नहीं हां अगर दूसरे दरवेश उससे मदद लेना चाहें तो उनकी मदद में मुज़ाएफ़ा नहीं दूसरे से मदद लेना वज्द की कमज़ोरी की दलील है।

अगर दरवेश कोई आयत और या शेअर सुन कर वज्द में आए तो किसी शख्स को उसकी मज़ाहमत नहीं करना चाहिए (जैसा कि आम तौर पर पकड़ लिया जाता है या लोग इघर उघर से थाम लेते हैं) बल्कि उसकी इस हालत को उसी के सुपुर्द कर देना चाहिए अगर अहयानन कोई थाम ले जो वज्द वाले को चाहिए की थामने वाले के रोकने से रूक जाए। अगर दरवेश किसी आयत या शेअर की वजह से वज्द या कैफ़ में आ जाए तो उसको आज़ाद ही छोड़ देना बेहतर है। अगर किसी शख्स को इसमें बनावट और तसन्नोअ नज़र आए तो बरदाश्त करे उसकी परदा पोशी ज़रूरी है, अगर यह ज़रूरी हो कि उसको तंबीह की जाए तो उसको नर्मी



और मोहब्बत के साथ समझा दिया जाए या सिर्फ़ इस बात को दिल में रख ले ज़बान से कुछ न कहे, हाल या हकीकी है या तसन्नोअ है उसकी शिनाख़्त के लिए कुव्वते हाल सफ़ाए बातिन, तबहहुरे इल्मी असरार व रमूज़ के से आगाही होना ज़रूरी है।

## दरवेश का अताए ख़िरका

अगर दरवेश वज्द में आकर अपना ख़िरका उतार दे तो दूसरों को उसके अता करने की चन्द सूरतें हैं। अगर साहिबे ख़िरका अपना ख़िरका क़व्वाल को देना चाहता है तो क़व्वाल को दे देना चाहिए। वह क़व्वाल का हक़ और हिस्सा है अगर मजमा के वस्त में उसको फेंक दिया है तो उसका इख़्तियार साहिबे ख़िरका ही को है उससे दरयाफ़्त करना चाहिए की फेंकते वक़्त किसको अता करने का इरादा था अगर जवाब में बताया जाए कि दरवेशों को देने का इरादा था तो फिर उसकी तरफ़ से दरवेशों के लिए अतिया होगा और दरवेशों के लिए वह फ़ुतूह और नज़राना में शामिल होगा जैसा वह चाहें करें और अगर दरवेश यह जवाब दे कि चूंकि मेरे शैख़ ने ख़िरका उतार कर फेंका था उसकी तक़लीद और पैरवी में मैंने भी ऐसा ही किया तो ऐसा दरवेश बड़ा ज़ईफ़ुल हाल है और वज्द उसके लिए अपना नहीं है, ख़िरका उतारने में शैख़ की मुवाफ़क़त तो उस शख्स के लिए ज़ेबा है जो वज्द और हाल में शैख़ की तक़लीद व मुवाफ़क़त कर रहा हो।

आज कल दरवेशों में यह तरीका राएज हो गया है और एक रस्म सी बन गई है कि दूसरे की देखा देखी अपना ख़िरका उतार फेंकते हैं यह बड़ी ना रवा सी बात है इस की कुछ असल नहीं है और ब ई हमा जिस दरवेश ने अपने सिनफ़े वज्द के बा वस्फ़ ख़िरका उतार कर फेंक दिया तो ब इक़तेज़ाए रस्म ख़िरका का इख़्तियार उस शैख़ को हासिल है जिस की तक़लीद में यह ख़िरका फेंका गया था अगर ख़िरका फेंकने वाला दरवेश यह कहे कि मैंने यह फ़ेअल हाज़िरीन की इत्तेबाअ में करना चाहा था तो ऐसा दरवेश से उस पहले दरवेश से भी ज़्यादा ज़ईफ़ुल हाल है क्योंकि जब हाल और वज्द में मुवाफ़क़त क़ौम के साथ की गई थी तो फ़ेअले अता में भी मुवाफ़क़त करना ज़रूरी था और अब इत्तेफ़ाक़ बहुत कम होता है कि तमाम क़ौम मशरब और हाल में एक जैसी हो जाएं। बहर नौअ दरवेश के इस फ़ेअल को क़ौम की तरफ़ रुजूअ किया जाएगा जो क़ौम के दूसरे ख़िरकों का हुक्म होगा वही हुक्म उस दरवेश के ख़िरका पर लगाया जाएगा।

अगर दरवेश कहे कि ख़िरका फेंकते वक़्त मेरा कोई इरादा और कस्द ही न था कि मैं किसी को यह अता करूंगा तो उससे मुतालबा किया जाएगा कि अब वह अपने इख़्तियार से काम ले और किसी को अता कर दे (हाज़िरीन में से किसी को उसका इख़्तियार नहीं होगा) शैख़ को भी यह इख़्तियार नहीं होगा अगर दरवेश कहे कि यकीनी तौर पर मेरा कुछ इरादा नहीं था बल्कि मैंने यह काम इशारए ग़ैबी की बुनियाद पर किया है तो दरवेश का यह कौल जानदार है और उसकी तरीक़त में असर है, गोया अल्लाह तआला ने उसको हुक्म दिया कि अपना ख़िरका उतार कर नूरे कुरबत और लुत्फ़ व राहत का जो ख़िलअत उसको मरहमत हुआ है उसको पहन ले इस सूरत में अताए ख़िरका का इख़्तियार अताए शैख़ को है (मुरीद को नहीं) अगर शैख़ वहां मौजूद न हो तो दरवेशों को इख़्तियार है कि वह उस ख़िरका को क़व्वाल को अता कर दे। कुछ



दुनियादार हाजिरीने मजलिस उस खिरका को खरीद लेते हैं और उनकी इस खरीदारी का मकसद यह होता है कि खरीद कर मालिके खिरका को वापस कर दें (इस से दरवेश की खूशनूदी हासिल हो जाएगी) लेकिन तरीकत में यह फेअल अच्छा और पसंदीदा नहीं है अलबत्ता अगर खरीदने वाले में जवांमर्दी और दरवेश से कमाल अकीदत हो तो दूसरी बात है। फकीर के लिए ऐसा फेअल बुरा है इस लिए कि उसने खिरका फेंक कर अपने वज्द की सच्चाई और हाल की सदाकत जाहिर की है अब अगर उसको वापस लेना है तो खुद ही फेअले हसन की तकजीब कर रहा है अलबत्ता अगर यह बात शैख के इशारे से हो जो शैख के हुक्म की तामील में उसको ले ले और बाद को उतार कर किसी और को बख्श दे।

अगर मजलिस के वस्त में कोई चीज किसी ने डाल दी है तो उसमें सब का बराबर का हक है अगर शैख मौजूद हो तो मुनासिब है कि चन्द लोगों या किसी एक को अता फरमा दे, शैख की इस राय को बे चूं व चरा मान लेना चाहिए अगर शैख की मौजूदगी में दूसरे दरवेश अपना अपना खिरका वापस भी ले ले तब भी उस दरवेश को वह खिरका वापस नहीं लेना चाहिए, अगर शैख मौजूद न हो और अकेला हो तो उसको दूसरे दरवेशों की मुताबिकत में मुजाएका नहीं है ताकि दूसरो को उसके इनफेरादी अमल से खजालत न हो और उनमें नाराजगी पैदा न हो अगर खिरका वापस लेने के बाद (शैख की अदमे मौजूदगी में) फिर किसी को दे दिया तो ज्यादा बेहतर है अगर किसी ऐसे शख्स के लिए मखसूस कर दे जो उस वक्त महफिल में मौजूद नहीं तो तब भी जाइज है।

तकाजाए वक्त और गुंजाइशे हाल के चन्द उमूर बतौरे खुलासा हम ने लिख दिए हैं और आदाबे फुकरा तहरीर कर दिए हैं अब हम इस मबहस को खत्म करते हैं। मुसाफिर खानों, सबीलों में दाखिल होने से ताल्लुक रखने वाले, जूता पहनने वगैरह के आदाब जो दरवेशों ने ईजाद किए हैं और उनको रस्म बना लिया है उनकी तालीम दरवेशों की सोहबत से हासिल हो सकती है इस किस्म के अकसर मबाहिस चूकिं हम बहस अल अदब फी शरअ में लिए चुके हैं इस लिए यहां उनका इआदा नहीं करते। अब हम एक और बाब उन चीजों के बयान में शुरू करते हैं जो तरीकत की बुनियाद हैं और यह सात चीजे हैं यानी मुजाहिदा, तवक्कुल, हुसने अखलाक, शुक्र व सब्र, रजा और सिदक।



## बाब 27

# अरकाने तरीक़त

# मुजाहिदा

### मुजाहिदा की अस्ल

मुजाहिदा की असल अल्लाह तआला का इरशाद है:

जो लोग हमारी राह में सई व कोशिश करते हैं हम अपने रास्ते उनको खुद बता देते हैं।

हज़रत अबू सईद खुदरी से अबू नसर ने रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लोगों ने दरयाफ़्त किया कि अफ़ज़ल जिहाद कौन सी है, हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ बात कहना अफ़ज़ल जिहाद है। यह हदीस बयान करते वक़्त हज़रत अबू सईद खुदरी के आंखों से आंसू बहने लगे।

हज़रत अबू अली दक्काक़ ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख्स ने अपने ज़ाहिर को मुजाहिदा के ज़रीये आरास्ता किया अल्लाह तआला उसके बातिन को मुजाहिदा के ज़रीये आरास्ता फ़रमा देगा जैसा कि इरशाद फ़रमाया है: जो लोग हमारी राह में सई व कोशिश करते हैं हम अपने रास्ते उनको खुद बता देते हैं, जो सालिक इब्तदा में साहिबे मुजाहिदा नहीं होता उसको तरीक़त की हवा भी नहीं लगती।

अबू उसमान मगरबी ने इरशाद फ़रमाया अगर मुजाहिदा के बग़ैर कोई शख्स यह ख़्याल करे कि तरीक़त में उस पर कोई बात खोल दिया जाएगी या उसको किसी बात का कश्फ़ हो जाएगा वह ग़लती पर है उसके लिए ऐसा ना मुमकिन है। अबू अली दक्काक़ फ़रमाते हैं कि जो शख्स शुरु में मुजाहिदा न करे उसके लिए आखिर में आराम नहीं है और यह भी इरशाद फ़रमाया कि हरकत में बरकत है ज़ाहिरी आमाल बातिन की बरकतों को लाने वाले हैं। हसन बिन अलविया ने अबू यज़ीद के बारे में बताया कि उनका इरशाद है मैं अपने नफ़्स के बारे में बारह बरस तक सोया रहा और पांच साल तक अपने दिल का आईना रहा और एक साल तक आईना के अंदर की चीज़ों का मुजाहिदा करता रहा फिर मैंने देखा कि मेरे अंदर ज़ाहिर आसार मौजूद हैं उसके दूर करने के लिए मैंने मज़ीद बारह साल तक मुजाहिदा किया फिर नज़र कि तो वह जुन्नार मौजूद था मैंने उसको तोड़ने के लिए मज़ीद पांच साल तक अमल किया कि किसी तरह यह ख़त्म हो जाए उस वक़्त मुझे कश्फ़ हुआ उसके बाद मैंने मख़लूक़ की तरफ़ देखा तो उनको मुर्दा पाया उस वक़्त मैंने जनाज़ा की चार तकबीरें उन पर पढ़ दीं।

हज़रत जुनैद ने इरशाद फ़रमाया कि मैं हज़रत सिरी सिक्ती को खुद यह फ़रमाते सुना कि ए नौजवानो! इससे क़ब्ल की तुम मेरी हालत को पहुंचो उसकी कोशिश करो, वरना आखिर उम्र में तुम कमजोर हो जाओगे और इस तरह कासिर रहोगे जिस तरह मैं कासिर रहा। हज़रत सिरी



सिक्ती ने जिस ज़माने में यह बात फ़रमाई वह इबादत के उस दर्जा पर थे कि जवान वहां तक नहीं पहुंच सकते। हज़रत हसन फ़ज्जाज़ रहमतुल्लाह अलैह का इरशाद है कि मुजाहिदा की बुनियाद तीन चीज़ों पर रखी गई है यानी फाका के बग़ैर न खाए, नींद से मग़लूब हो जाने के बग़ैर न सोए, बे ज़रूरत न बोले।

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम का इरशाद है कि जब तक आदमी इन छः दुशवार मंज़िलों (घाटियों) को तय नहीं कर लेता सालेहीन के मरतबा को नहीं पहुंचता। पहली घाटी यह है कि अपने ऊपर ऐश व नअम का दरवाज़ा बन्द कर ले और सख़्ती का दरवाज़ा खोल दे, दूसरी घाटी यह है कि अपने लिए इज़्ज़त का दरवाज़ा बंद कर ले और ज़िल्लत का दरवाज़ा खोल ले, सोम नींद का दरवाज़ा बंद कर दे और बेदारी का दरवाज़ा खोल दे, चहारुम आराम का दरवाज़ा बंद कर दे और तकलीफ़ का दरवाज़ा खोल ले, पंजुम दौलत का दरवाज़ा बन्द कर दे फ़ेक़्र का दरवाज़ा खोले, शशुम उम्मीद का दरवाज़ा बन्द कर दे और मौत की तैयारी का दरवाज़ा खोल ले।

हज़रत इब्ने उमर बिन नजीब फ़रमाते हैं कि जिस शख्स को नफ़्स अजीज़ होता है उसकी नज़र में उसका दीन ख़्बार होता है, अबू अली रुदबारी ने फ़रमाया कि अगर सूफी पांच ही दिन के बाद यह कहने लगे कि मैं भूका हूं तो उसको बाज़ार का रास्ता बताओ और उसको खाने का हुक्म दो (वह मुजाहिदा का काबिल नहीं है) हज़रत जुन्नून मिस्त्री फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को इससे बढ़ कर कोई इज़्ज़त नहीं दी कि वह अपनी ज़िल्लत नफ़्स को पहचाने, और इससे बढ़ कर उसको कोई ज़िल्लत नहीं दी कि वह अपने ज्ञाते नफ़्स पर पर्दा डाल दे। हज़रत इब्राहीम ख़्वास फ़रमाते हैं कि मुझे जिस चीज़ ने डराया मैंने उस पर कब्ज़ा कर लिया। मोहम्मद बिन फ़ज्जल ने फ़रमाया, नफ़्स की ख्वाहिशों से छुटकारे का नाम राहत है।

## आफ़त आने के असबाब

हज़रत मनसूर बिन अब्दुल्लाह का इरशाद है कि मैंने अबू अली रुदबारी को फ़रमाते सुना कि आफ़त तीन वजूह से आती है, तबीयत की ख़राबी के ख़राबी से। मैंने दरयाफ़त किया तबीया की ख़राबी क्या है? फ़रमाया हराम खाना, मैंने अर्ज़ किया कि आदत के जड़ पकड़ लेने से क्या मुराद है फ़रमाया बुरी नज़र, हराम से फायदा उठाना और दूसरों को पीठ पीछे बुरा कहना, फिर मैंने अर्ज़ किया कि सोहबत कि ख़राबी क्या है? फ़रमाया जब नफ़्स में कोई ख्वाहिश पैदा हो तो उसकी पैरवी करना। हज़रत नसरबादी का इरशाद है कि तेरा नफ़्स बड़ा कैद खाना है जब तू उससे निकल आएगा तो राहते अबदी तुझ को मय्यसर आ जाएगी। हज़रत अबुल हसन वारिक का इरशाद है कि हमारे इब्तिदाई मुजाहिदा के ज़माने में जब हम मस्जिद अबू उसमान में मुकीम थे तो हमारे फ़राएज यह थे कि हम को जो कुछ फुतूह हासिल हों हम दूसरों को दे दें और रात को कोई सिक्का हमारे पास बाकी न बचे। जो शख्स हमारे साथ बुराई से पेश आए हम महज़ अपने नफ़्स की खातिर बदला न लें बल्कि उससे माफी मांग लें और उसके मुकाबिले में आजिज़ी इख़्तियार करें और जब कभी हमारे दिलों में किसी के बारे में हिकारते अहसास पैदा हो तो हम उसकी ख़िदमत के लिए मुसतैद हो जाएं।

## ख़्वास और अवाम का मुजाहिदा

आम लोगों का मुजाहिदा यह है कि आमाल को पूरी तरह अंजाम दें और ख़्वास का मुजाहिदा



यह है कि अपने अहवाल का तसफिया करें, भूक और प्यास का बरदाश्त करना और शब बेदारी आसान है लेकिन बुरे अखलाक का इलाज दुशवार और मुश्किल होता है।

## आफ़ाते नफ़्स

### आफ़ाते नफ़्स क्या हैं

दूसरे लोगों की ज़बान से अपनी तारीफ़ सुनना और मदह सराई से नफ़्स का लज्जत अंदोज होना नफ़्स के लिए आफ़त है। नफ़्स कभी कभी इबादात का बार उठाता है और फिर उस पर रिया और निफ़ाक़ ग़ालिब आ जाता है और इसकी अलामत यह है कि जब लोगों की जानिब से उसकी तारीफ़ का सिलसिला टूट जाता है और बर अक्स लोग उसकी बुराई करने लगते हैं तो नफ़्स इबादात में सुस्ती और काहिली की तरफ़ माएल हो जाते हैं। नफ़्स की खराबियों के शिके दावा और उसकी दरोग गोई का पर्दा उस वक़्त उठ जाता है जब दावा (मुजाहदा) को रियाज़त के मेआर पर परखा जाता है और जब तक उसके तक़्वा के इम्तेहान न लिया जाए वह मुत्तकी लोगों जैसी बातें करता है लेकिन जब तुम उसके तक़्वा के ख़्वास्तगार या ज़रूरत मंद होगे तो उस वक़्त वह तुम को मुशरिक, रियाकार और खुद पिन्दार मालूम होगा और जब तुम उससे इनायत के तालिब होगे तो उसका दावा ग़लत साबित व इख़लास की आजमाईश से पहले अहले यकीन के होने का मुद्दई होगा और अपना मोतवाजे होना ज़ाहिर करेगा बशर्ते कि ग़ज़ब के वक़्त उसके ख़िलाफ़ ख़्वाहिश की कोई चीज़ पैदा न हो।

### अख़्लाके हमीदा की हकीक़त

यही हाल उसके दावा सख़ावत, करम, ईसार, बख़्शि़श, बेनियाजी और जवांमर्दी जैसे अख़्लाके हमीदा का है यही अख़्लाक अलिया अल्लाह और अबदाल के हैं उनका दावा करने वाला महज़ अपने बातिल आरजू सफ़ाहत और हिमाक़त के तेहत दावा करता है लेकिन जब तुम उनसे उन फ़जाएले अख़्लाक का मुतासला करोगे और उसको इम्तिहान की कसौटी पर कसोगे तो उनके उस दावे की हकीक़त सराब से ज़्यादा न होगी, जिस को दूर से प्यासा शख्स पानी समझता है लेकिन पास जाने पर उसको कुछ नहीं मिलता, अगर उनके पास कुछ भी सिद्क व इख़लास होता तो वह उस मख़लूक के सामने उस तसन्नो और बनावट से काम न लेते, जो न उनके नफ़ा की मालिक है और न नुक़सान की। (न उनको नफ़ा पहुंचा सकती है न नुक़सान)।

### नफ़्स की हकीक़त

हज़रत अबू हफ़्स फ़रमाते हैं कि नफ़्स सरासर जुल्मत है उसका चिराग़ यानी रौशनी करने वाला उसका इख़लास है, उसके चिराग़ इख़लास का नूर तौफीके इलाही है। पस जिस के बातिन को तौफीके इलाही हासिल न हो तो वह सरासर तारीक़ रहेगा। अबू उसमान का इरशाद है कि जिस शख्स को अपने नफ़्स की कोई बात भी अच्छी लगती है तो वह शख्स अपने नफ़्स का ऐब नहीं देख सकता, नफ़्स का ऐब तो उसी शख्स को नज़र आता है जो हर हालत में अपने नफ़्स को मुशतब्हा समझता है।



## आमाले नफ्स को पसंद करना

हज़रत अबू हफ़्स का इरशाद है कि लोगों में सब से जल्द वह शख्स हलाक होने वाला है जो अपने ऐब को नहीं पहचानता मआसी तो कुफ़्र के कासिद होते हैं। हज़रत अबू सूफ़ियान ने फ़रमाया कि मैंने अपने नफ़्स के किसी अमल को पसंदीदगी की नज़र से नहीं देखा कि जिस से मुझे सवाब की उम्मीद होती (यानी मैंने अपने नफ़्स के किसी अमल से सवाब की उम्मीद नहीं रखी) हज़रत सिरी सिक़ती का इरशाद है कि उमरा के पड़ोस, बाज़ारी कारियों और दरबारी आलिमों के कुर्ब से बचते रहो। हज़रत जुन्नून मिस्री ने फ़रमाया मख़लूक में छः चीज़ों की वजह से फ़साद हुआ है (1) अमले आख़िरत के सिलसिला में उनकी नीयत की ख़िफ़फ़त (2) उनके जिस्म का ख़्वाहिशात के लिए वक़फ़ हो जाना (3) मौत से करीब होने के बावजूद लम्बी उम्मीदें बांधना (4) मख़लूक की रज़ामंदी को ख़ालिक की रज़ामंदी से मुक़द्दम समझना (5) सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नज़र अंदाज़ करके दिली ख़्वाहिशात पर अमल करना (6) बुजुर्गाने सल्फ़ की मामूली ख़ताओं और लगज़िशों को अपनी हवस परस्ती के लिए हीला बना लेना और उन अकाबिर के आमाले हसना को नज़र अंदाज़ कर देना।

## मुजाहिदा की अस्ल

मुजाहिदा की अस्ल यह है कि ख़्वाहिशाते नफ़्स की ख़िलाफ़वर्ज़ी की जाए इस लिए चाहिए कि अपने नफ़्स को ख़्वाहिशों और लज़ज़तों से दूर रखे। नफ़्स उमूमन जिस चीज़ के ख़्वाहां रहता है उसके ख़िलाफ़ करने की कोशिश करे, अगर नफ़्स ख़्वाहिशात के दर पै हो तो ख़ौफ़े इलाही और तक़्वा से उसकी बाज़दाश्त करे, अगर वह फिर भी भाएल व सरकशी हो और इताअत व तामील में उससे तवक्कुफ़ सरज़द हो तो ख़ौफ़े अज़ाब का मुरतकिब हुआ और इजतिनाब इहताराज़ पर कारबंद होकर उसको बाज़ रखे (ख़्वाहिशात के घोड़े पर इजतिनाब व एहताराज़ के कोड़े लगाए ताकि वह इस तरफ़ का क़स्द न करे)।

## मुराक़्बा

### मुराक़्बा की अहमीयत

मुजाहिदा बग़ैर मुराक़्बा के मुकम्मल नहीं होता हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशादे गरामी में इसी तरफ़ इशारा है, हुज़ूर ने फ़रमाया कि जब जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आप से एहसान की हकीक़त दरयाफ़्त फ़रमाई तो हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया एहसान यह है कि तुम अल्लाह तआला की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसको देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देखते तो बिला शुब्हा वह तुम को देख रहा है। लिहाज़ा मुराक़्बा यह है कि बन्दा यह जान ले कि अल्लाह तआला उस पर मुत्तला है और इसी एहसास के हमेशा काएम रहने का नाम मुराक़्बा है।

यह मुराक़्बा तमाम ख़ूबियों और भलाईयों कि असल है और इस दर्जा तक सालिक की रसाई और इन चीज़ों के बग़ैर नहीं होती, आमाल का मुहासबा जल्द अज़ जल्द इसलाहे हाल, राहे हक़ पर साबित क़दमी, अल्लाह तआला से दिली लगाव की निगहदाश्त, किसी सांस को बेकार और यूंही ज़ाया न कर देना है। यह पास अन्फ़ास है, पस समझ लेना चाहिए कि अल्लाह



तआला सालिक का निगरां हैं उसके दिल के करीब है और उसके तमाम अहवाल से वाकिफ है, उसकी तमाम बातें सुनता है।

## मुजाहिदा की तकमील

इन औसाफ के बगैर मुजाहिदा की तकमील नहीं होती: (1) अल्लाह तआला की मारफत (2) अल्लाह के दुशमन इब्लीस (लईन) को पहचानना (3) अपने नफसे अम्मारा की बुराई को पहचानना, अल्लाह तआला के लिए जो अमल किया है उसको पहचानना, अगर कोई शख्स कोशिश के साथ साथ तमाम उम्र इबादत करता है और वह उन उमूर से आगाह नहीं और उसने उनके मुवाफिक अमल नहीं किया तो इस इबादत से उसको कोई फायदा नहीं पहुंचेगा, वह हमेशा नादानी में बसर करेगा और मआले कार उसका ठिकाना जहन्नम होगा, हां अल्लाह तआला अपनी रहमत से नवाजे तो और बात है।

## मारफते खुदावन्दी

मारफते खुदावन्दी से असास यह है कि बंदा दिल में यह यकीने वासिक रखे कि अल्लाह तआला उसके करीब है, उसका कारसाज है, उस पर कादिर है उसको देख रहा है, उसके हाल से आगाह है, उसका निगरां और मुहाफिज है, वही हर चीज का पालने वाला है, उसकी हुकूमत में कोई उसका शरीक नहीं, वह सादिकुल वादा है वह अपने किए हुए वादा को पूरा करेगा, वह अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने वाला है, वह लोगों को अपनी तरफ बुलाता है और पुकारता है अगरचे वह उससे मुस्तगनी है, उसकी बर्ईद और धमकी सच्ची है जिसको वह जरूर पूरा करेगा, उसकी हस्ती सारी मखलूक का मरजअ है वह ऐसा सर चश्मा है कि तमाम एहकाम वहीं से जारी होते हैं उसी को सवाब व अजाब देने का इख्तियार है, उसका कोई मिस्ल नहीं वह बे मानिन्द और मुशाबेह है, वह काफी है, मेहरबान है, मोहब्बत करने वाला है, समीअ और अलम है, हर दिन वह एक नए हाल में है उसको कोई हाल दूसरे हाल से मानेअ नहीं हो सकता वह हर खफी से खफी तरीन बात से आगाह है, दिल में पैदा होने वाले ख्यालात और वसवसों से आगाह है, इरादों, नीयतों का जानता है, हर हरकत से वाकिफ है, आंख झपकने, आंख और हाथ के इशारे उससे भी ज्यादा और कम से कम ख्वाह कितनी ही बारीक चीज जिस को हम शिनाख्त नहीं कर सकते वह उसको जानता है ख्वाह वह चीज इतनी अजीम हो कि उसका बयान न हो सके उससे वह वाकिफ है वह गुज़श्ता और आइन्दा से आगाह है। यकीनन अल्लाह तआला ग़लबा और हिकमत वाला है (हम मारफते इलाही के जिम्न में तफसील से इस मौजूअ पर लिख चुके हैं)

पस जब बन्दा यकीने रासिख के साथ इस मारिफत को दिल में जमा लेगा और उसको जिस्म का हर हिस्सा, हर उज्व, हर जोड़, हर हड्डी, असबा व रेशा, खाल और बाल उस पर कारबंद हो जाएगा और उसको यकीन हो जाएगा कि अल्लाह तआला मुझ पर शाहिद है, मुझ से वाकिफ है और उसका इल्म मुझे मुहीत है और उसके इल्म से कोई चीज पोशीदा नहीं है उसी ने मुझे बनाया है और खूब बनाया है और उसी ने मुझे यह अच्छी सूरत अता की है, यह तमाम बातें जब बन्दे के दिल में रासिख हो जाएंगी और उसका अज्म सही और अक्ल कामिल हो जाएगी और उस वक्त उसको मोहास्बा का मरतबा मिल जाएगा और अल्लाह की मारफत हासिल हो जाएगी और बारगाहे इलाही से उसको एक मकामे अजीम हासिल हो जाएगा, ऐसी सूरत में



हर अमल में अल्लाह का खौफ उसके साथ रहेगा और अल्लाह की तरफ से उसके दिल की निगरानी की जाएगी और तमाम ला हासिल मशागिल उससे मुनकतअ कर दिए जाएंगे सिर्फ उसके वह मशागिल बाकी रह जाएंगे जो उसकी दानिशवरी में मोमिद व मुआविन होंगे व ई हमा उसको अंदेशा लगा रहेगा कि कहीं उसके दिल की गिरफ्त न हो जाए इस लिए कि अल्लाह तआला उसके गुजश्ता और आइन्दा के आमाल पर गिरफ्त की कुदरत रखने वाला है और चूंकि उसको कुर्बे खुदावंदी भी हासिल है इस लिए उसको अल्लाह की शर्म भी दामनगीर होगी इस लिए कि उसके किसी मकसद व इरादा का जवाब अल्लाह के इल्म के बगैर नहीं होगा, चुनांचे बन्दा इस फेअल पर मुरतकिब होगा जो अल्लाह तआला को पसंद होगा और उससे बाज़ रहेगा, जो अल्लाह को ना पसंद होगा और उसका कोई वसवसा, कोई इरादा, उसकी कोई बैरुनी या अंदुरुनी हरकत ऐसी न होगी जिससे अल्लाह तआला की आगही का ख्याल पहले से उसके दिल में मौजूद न हो।

यह मकाम उन उलमाए रब्बानी को हासिल होता है जो आरिफ, मुत्तकी, जाहिद और खुदा से डरने वाले हैं।

## इब्लीस की शिनाख्त और मारफ़त

### शैतान से जिहाद

अल्लाह तआला ने जाहिर व बातिन, इताअत व मासियत हर हालत में इब्लीस से जो उदुल्लाह है लडने का हुक्म दिया है और उसने अपने बन्दों को बता दिया है कि इब्लीस अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का, उसके बन्दों का, उसके नबीयों का और उसके दोस्तों का और उसके खलीफा अलल अर्ज (हज़रत आदम अलैहिस्सलाम) का दुश्मन है उसने हज़रत आदम की औलाद को नुकसान पहुंचाया है, जब आदमी सोता है तो वह नहीं सोता, इन्सान से तो भूल चूक हो जाती है लेकिन इब्लीस से भूल चूक नहीं होती न वह गाफिल होता है और न बोलता है आदमी सोता हो या जागता इब्लीस हर हाल में उसको तबाह व बर्बाद करने की कोशीश करता रहता है और इस सिलसिले में वह कोई हीला, मक्र और फरेब उठा नहीं रखता है वह जाल जो आदमी को फांसने के लिए वह इबादत या नाफरमानी की हालत में लगाये रखता है बडे ही दिल फरेब और लज़्ज़त आगीं होते हैं, उस जाल से बहुत से आबिद जो फरेब में आने वाले और घोका खाने वाले हैं गाफिल और ना वाकिफ़ होते हैं।

इब्लीस की यह ख्वाहिश नहीं है कि वह इब्ने आदम को रियाकारी, नाफरमानी, खूद पसंदी में मुब्तला कर दे बल्कि उसकी ख्वाहिश यह होती है कि वह इब्ने आदम को अपने साथ अपने ठिकाने यानी जहन्नम में ले जाए। अल्लाह तआला का इरशाद है: वह अपने गरौह को बुलाता है कि वह दोज़ख में चलें (असहाबे जहन्नम बन जाएं)

जो शख्स शैतान को इन औसाफ़ के साथ शिनाख्त कर चुका है उस पर लाज़िम है कि भूल चूक के बगैर यह हक़ और बातिल में उसकी शिनाख्त को दिल से न मिटने दे और उस को सख्त जंग और जिहाद करे ख्वाह वह जंग बातिन में हो या जाहिर में, इस में जरा भी कोताही न करे। बन्दा को चाहिए कि अपनी तमाम मसाई शैतान की उस दावते शर के खिलाफ़ जंग व



जिहाद में सर्फ कर दे और अल्लाह तआला से आजिजाना दुआ, इलतेजा और इमदाद की तलब को तर्क न करे ताकी खुदावन्द जल्ल व ऊला शैतान के मुकाबले में उसकी इमदाद फरमाए और अपने नफ्स अल्लाह तआला के हुजूर में हाजतमंदाना और आजिजाना तरीके पर पेश करे इस लिए कि अल्लाह के सिवा किसी की तदबीर तदबीर और कुव्वत कुव्वत नहीं है। बन्दा को चाहिए की अल्लाह तआला से आजिजी और ज़ारी के साथ फरयाद करे और शब व रोज़ ज़ाहिर व बातिन, जलवत व खलवत में आजिजाना तरीके पर शैतान के खिलाफ़ (जिहाद में) मदद की दरख्वास्त करे, ताकि अल्लाह तआला की तौफीक से उसको अपनी वह कोशिश हकीर नज़र आए जो उसने मारफ़ते इलाही में की है।

## शैतान अल्लाह का दुश्मन है

हकीकत में शैतान अल्लाह का दुश्मन है, तमाम मखलूक से पहले उसी ने खुदा की नाफरमानी की और खुदा की मखलूक में अव्वलीन मुर्दा यानी नाफरमान वही है खुदा का हर नाफरमान मुर्दा होता है जैसा कि हदीसे कुदसी में आया है कि अल्लाह तआला ने फरमाया: सब से पहले मेरी मखलूक में मरा वह इब्लीस है, इब्लीस ही ने तमाम अंबिया, सिद्दीकीन, औलिया अल्लाह और हर बंदए इलाही से दुश्मनी की, पस बन्दा को चाहिए कि वह (इब्लीस की दुश्मनी में) यकीन करे कि मैं जिहादे अज़ीम में मसरूफ़ हूँ और अल्लाह तआला का कुर्ब मुझे हासिल है और यह कुर्ब इलाही ऐसा मकाम है जिसकी अज़मत का बयान ना मुमकिन है। पस इस अदावते इब्लीस में उसको साबित कदम रहना चाहिए और कभी पीछे न हटे, इस लिए कि अगर वह पीछे हटा या इस जिहाद से उकताया, नाफरमान होगा और दोज़ख में जा गिरेगा। अल्लाह का गुज़ब उस पर नाज़िल होगा कि ऐसी सूरत में उसने गोया अपनी उम्मीदें उसी दुश्मन ख़ुदा से वाबस्ता कर ली हैं और उसको अपने ऊपर ग़लबा दे चुका है, बन्दा से शैतान की इन्तेहाई ख़्वाहिश और ग़ायत आरजू बस यही है कि बन्दा अल्लाह की तौहीद का इंकार कर दे, क्योंकि इब्लीस बन्दा को एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ पलटता रहता है यहां तक कि उस पर ख़ुदा का गुज़ब नाज़िल हो जाता है उस वक़्त अल्लाह तआला बन्दा को उसके हाल पर छोड़ देता है और फिर वह हलाक हो जाता है और जहन्नम में शैतान के साथ गिर जाता है। पस ज़ाहिर है कि बन्दे के हक़ में शैतान से ज़्यादा ख़तरनाक कोई और मखलूक नहीं है लिहाज़ा उससे बचते रहो, इस लिए कि सूरतें दो ही हैं या हलाकत या रहमत इलाही के तुफ़ैल में नजात इन दोनों में से एक का हुसूल ज़रूरी है। अल्लाह तआला हम को और तमाम मुसलमानों को शैतान और उसके लशकरियों के शर से पनाह में रखे (ख़ुदावन्द बुजुर्ग व बरतर ही की मदद से ग़लबा व कुव्वत मयस्सर आती है)।

## नफ़से अम्मारा की शिनाख़्त

### नफ़से अम्मारा की पहचान

बुराई पर आमादा करने वाले नफ़से यानी नफ़से अम्मारा की मारफ़त यह है कि उसको उसी मकाम पर रखे जिस पर ख़ुदावन्द तआला ने उसको रखा है और उसकी वही हालत समझे जो



अल्लाह तआला ने बयान फरमाई और उसकी ऐसी ही निगरानी करे जैसा खुदा ने हुक्म दिया है। नफ़्स बन्दे के हक़ में इब्लीस से ज़्यादा दुश्मन है इब्लीस इसी के ज़रीये से बन्दा पर ग़लबा पाता है कि नफ़्स शैतानी हुक्म को क़बूल करके अमल करता है लिहाज़ा तुम उसकी सरिश्त के हर पहलू और उसकी फ़ितरत को पहचान लो, नफ़्स की फ़ितरत ज़ईफ़ है लेकिन उसकी तमअ औ हिर्स क़वी है यह मुद्ई है खुदा की इताअत से बाहर सरकशी करने वाला है, तसल्लुत जमाने वाला और उम्मीदें बांधने वाला है, उसका सच झूठ है, उसका दावा बातिल है उसकी हर चीज़ धोका है, उसका कोई फ़ैअल न महमूद व पसन्दीदा है और न कोई दावा सच्चा है। पस बन्दे को अपने नफ़्स के किसी बयान पर फरेब में नहीं आना चाहिए और न उसकी किसी ख़्वाहिश का उम्मीदवार बने, अगर उसको कैद से आज़ाद कर दिया जाए तो यह आवारा हो जाता है और अगर इसकी बंदिश खोल दी जाती है तो यह सरकश हो जाता है अगर इसकी ख़्वाहिशें पूरी की जाती रहीं तो बन्दा हलाक हो जाता है अगर उसके मुहासबा में ग़फलत बरती जाए तो यह बदहाल हो जाता है, अगर इसकी मुख़ालफ़त में ज़रा सी भी कमी हो जाती है तो यह बिल्कुल गर्क हो जाता है (हलाक हो जाता है) अगर इसकी ख़्वाहिशों पर चलाया जाए तो वह रूख़ फेर कर दोज़ख़ में गिर पड़ता है, इसका हक़ और ख़ैर की तरफ़ बिल्कुल मैलान नहीं होता, यह तमाम बलाओं की जड़, रूसवाई की असल और इब्लीस का ख़ज़ाना है इसको सिवाए उसके ख़ालिक (खुदाए अज़्ज़ा व जल्ल) के कोई नहीं पहचान सकता।

## नफ़्स की शिनाख़्त अल्लाह तआला ने बता दी है

इसकी पहचान और शिनाख़्त वही है जो अल्लाह तआला ने बयान फ़रमा दी है, जब कभी वह ख़ौफ़ का इज़हार करे तो समझ लो कि अमन व अमान है और जब वह सिद्क का दावा करे तो झूटा है, जब नफ़्स इख़लास का इज़हार करे तो खुद पसन्दी और रियाकारी है चुनांचे हालात व वाक़ियात की कसौटी पर उसका झूठ सच ज़ाहिर हो जाता है और उसको पहचान लिया जाता है आजमाईश के मौक़े पर उसके दावा की कलई खुल जाती है, हर अज़ीम मुसीबत व सानेहा इंसान पर उसी की वजह से आता है।

पस बन्दा पर लाज़िम है कि उसका एहतेसाब करे उसकी निगरानी करे और उसकी मुख़ालफ़त करे और जिस चीज़ की यह दावत दे या जिस काम में यह दख़ील हो उसके ख़िलाफ़ जिहाद करे यकीन रखे कि उसका कोई दावा सच्चा नहीं है नफ़्स हर वक़्त खुद अपनी ही बर्बादी और तबाही में कोशां और मसाई रहता है उसकी जो कुछ भी बुराई बयान की जाए वह उससे भी ज़्यादा बुरा है। नफ़्स शैतान का फ़रज़न्द और दोस्त है, जो शख्स उसकी अलामात को जान लेता है वह उसको पहचान लेता है और फिर उसकी नज़र में उसका नफ़्स ज़लील व ख़्वार हो जाता है और वह ताईदे इलाही से उस पर ग़ालिब आ जाता है।

जब बन्दा को यह तीनों औसाफ़ (मारेफ़ते नफ़्स, ज़िल्लते नफ़्स और ग़लबए नफ़्स) हासिल हो जाए तो वह खुदा से मदद चाहे कि यह मारेफ़त और ग़लबा उस को हासिल रहे, अपने नफ़्स की जानिब से ग़फलत न बरते उसकी इताअत न करे और अल्लाह तआला की इमदाद के भरोसा पर पुख़्ता अज़्म के साथ क़दम बढ़ाए और उन तमाम उमूर में अल्लाह तआला के सिवा किसी और तरफ़ रूजूअ न करे अगर वह ग़ैरुल्लाह की तरफ़ रूजूअ करेगा तो नेकी और भलाई



की तौफीक से महरूम हो जाएगा और अल्लाह तआला असको उसके नफ्स के हवाले कर देगा, पस लाजिम है कि बन्दा उन तमाम उमूर में अल्लाह तआला से मदद तलब करे और तमाम अवामिर व नवाही में अल्लाह तआला की मरज़ियात की पैरवी करे और किसी तरह मा सिवा अल्लाह का ख्याल दिल में न लाये, जब बन्दा उस पर आमिल हो जाएगा तो अल्लाह तआला उसको तौफीक व हिदायत अता फ़रमाएगा और उससे मोहब्बत फ़रमाएगा और ना पसन्दीदा बातों से उसको महफूज़ रखेगा और अपनी रहमत के परदे उस पर डाल देगा।

## ताअत व मासियत

### अल्लाह के लिए अमल करने की शिनाख़्त

ख़ालिसन अल्लाह के लिए अमल करने की शिनाख़्त क्या है? इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआला ने बन्दा को कुछ बातों का हुक्म दिया है (काम करने का) और कामों से रोका है जिस काम का उसको हुक्म दिया है उसको बजा लाना ताअत है और जिस काम से रोका है उसको करना मासियत है।

ताअत हो या गुनाह से इज्तिनाब दोनों में इख़लास का हुक्म दिया गया है और कुरआन व हदीस के बताए हुए तरीक़े पर चलने का हुक्म फ़रमाया है उसी के साथ यह भी हुक्म दिया है कि उस के अमल के वक़्त उसके दिल में अल्लाह के सिवा किसी के रज़ा तलबी दिखावट का ख्याल दिल में न हो वरना वह उन लोगों के ग़रोह में शामिल हो जाएगा जो ज़ाहिरी गुनाह तो छोड़ देते हैं और उन बातिनी गुनाहों को नहीं छोड़ते जो मआसी की बुनियाद और असास हैं। अल्लाह तआला ने तर्क ऐसी तर्क मासियत पर मग़फ़िरत का वादा नहीं फ़रमाया है, दारे आख़िरत में उसको जज़ा मिलेगी। लिहाज़ा फ़ासीद नीयत और मुज़महिल इरादे के साथ बन्दा सिर्फ़ ज़ाहिरी इबादत की कोशिश न करे वरना उसकी तमाम ताअतें मासियत में बदल जायेंगी और जिस्मानी तकान, लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों के तर्क कर देने के बावजूद दोनों ज़हान का अज़ाब उस पर नाज़िल होगा और दारैन की नाकामी उसके हिस्सा में आएगी।

### इबादत में खुलूस होना चाहिए

बन्दा को चाहिए कि अपनी इबादत को खुलूसे तक्वा और परहेज़गारी से आरास्ता करे, नीयत में सच्चाई रखे इरादा की निगरानी करे और उसका मुहासबा करता रहे उसका अज़्म सिद्क़े नीयत पर मबनी हो, अपने तमाम अक्वाल, आमाल व अहवाल में खुलूस का अज़्म रखता हो, इबादत में इसी तरह मशगूल हो और मासियत को तर्क करे, इसके साथ इसका भी लिहाज़ रखे कि कहीं शैतान मरदूद उसको अपनी मक्कारियों से फ़रेब में मुब्तला न कर दे और अपनी कमीनगाह में न गिरा दे, कहीं अपने जालों में न फांस ले और कहीं अपनी फ़रेब कारियों और दगा बाज़ियों से उसको हलाकत में न डाल दे, इसलिए कि उसके जाल दिलों पर लगे हुए हैं, उसके फ़रेब बहुत दिल पसन्द और कैफ़ आंगी होते हैं कि उनको बज़ाहिर नूरे ईमान समझा जाता है लेकिन वह हकीकत में इस तरह शक व जुल्मत के ऐसे सैंकड़ों दरवाजे खोल देता है कि बन्दे को किसी दरवाजे में दाख़िल कर के उसकी अदना सी लगज़िश में फांसा कर उसके



तमाम आमाल को जाया कर दे। पस उसके फरेब से बचो और डरो। अगर मुमकिन हो तो कुरआन सीखने की तरह शैतान के फरेब से भी वाकफीयत हासिल करे।

पस बन्दे को अपनी इबादत में उस से ऐसा ही बचना चाहिए जिस तरह मआसी से बचता है। अगर उसके दिल में कोई ख्याल आए और उसका नफ्स उस जानिब रुजूअ हो या उसको उस तरफ बुलाए तो समझे बूझे बगैर उस तरफ जाने में जल्दी न करे और सोच समझ कर कदम उठाए।

नफ्स की इन शरारतों से बचने के लिए आदमी को चाहिए कि अहकामे इलाही के आरिफों की सोहबत में बैठे ताकि वह उसको अल्लाह का रास्ता दिखायें और बतायें, अमराज से भी आगाह करें और उसका इलाज भी बतायें जैसा कि हम इससे कब्ल मजलिसे तौबा में बयान कर चुके हैं, बन्दे के लिए मुनासिब नहीं कि अपने अमल से वाकफीयते कुल्ली के बगैर अपने जुहद व इत्तेका तूले कयाम शिद्दते कयाम व नवाफिल से धोका न खाए, जब वह देख ले कि उसका अमल मारफते नफ्स, मारफते रब के साथ साथ अंजाम पजीर हो रहा है तो उसका फेअल उस वक्त सही होगा, उस वक्त उसे इल्म और दीन की वाकफीयत अता होगी। पस जो कुछ भी इल्मे जाहिरी और बातिनी से पेश आए उसपर गौर करे अगर वाकई वह खालिसतन लिल्लाह है तो वह उसको कबूल फरमा कर सवाब बख्शेगा और अगर ऐसा नहीं है तो अल्लाह तआला उसको रद फरमा देगा।

इन तमाम उमूर पर आगाही हासिल हो जाने के बाद भी अपने नफ्स पर एतमाद न करे न अपनी जात पर न दीन के मामला में, तबीअत के मैलान और रुजहान पर भरोसा करे न इब्लीसे लईन से मुतमईन हो कर बैठ रहे और उसी के साथ साथ अपनी खुद शनासी पर भी नफ्स का एतबार न करे।

## अहले मुजाहदा व मुहासबा के दस खसाइल

### अहले मुजाहदा के दस खसाइल

अहले मुजाहदा व मुहासबा अरबाबे तरीकत और उलुल अज्म हजरात ने अपने इन खसलतों का इन्तेखाब किया है और उनको अपनाया है जब बहुक्मे इलाही वह सख्ती के साथ उन खसलतों से कारबन्द हो गए तो उनको बड़े बड़े मरतबे हासिल हुए, वह दस खसलतें यह हैं:

### पहली खसलत

अव्वल: खुदा की कसम न खाए खाह वह सच हो या झूठ, अमदन हो या भूल से, इस लिए कि जब वह इस बात का आदी हो जाएगा और तर्क कसम की आदत रासिख हो जाएगी तो फिर उसकी ज़बान से भूल कर भी कसम अदा नहीं होगी और तर्क कसम का वह आदी हो जाएगा। उस वक्त अल्लाह तआला उसके दिल पर अपने अनवार के दरवाजे खोल देगा, उस वक्त वह तर्क कसम का फाइदा महसूस करेगा, उसको अपने बदन में कुव्वत महसूस होगी, दर्जा में बलन्दी, बसारत में कुव्वत, अहबाब में उसकी तारीफ होगी और पड़ोसियों में उसकी इज्जत



होगी फिर हर शनासा उसका हुक्म बजा लाएगा और हर देखने वाला उसकी ताजीम करेगा।

## दूसरी खसलत

**दोम:** झूठ से परहेज रखे, मजाहन भी झूठ न बोले, संजीदगी तो बड़ी बात है, जब बन्दा का नफ़स झूठ से बचने का आदी हो जाएगा और ज़बान से उसकी आदत तर्क हो जाएगी तो अल्लाह तआला उसको शरहे सदर अता फ़रमाएगा और इल्म की सफ़ा से उसको नवाज़ेगा उस वक़्त वह ऐसा हो जाएगा जैसा कि वह झूठ को जानता ही नहीं। इसी तरह जब किसी दूसरे से झूठ बात सुने तो उसको टोके और अपने दिल में उसकी दरोग गोई से नफ़रत व आर महसूस करे, अगर वह दूसरे से झूठ की आदत छुड़ाने कि दुआ करेगा तो उसका भी उसको सवाब मिलेगा।

## तीसरी खसलत

**सोम:** जहां तक मुमकिन हो किसी से वादा कर के बग़ैर किसी उज़े खास के वादा खिलाफी न करे, अगर ख़ल्फ़े अहद न करने का आदी हो जाएगा तो फिर इस सूरत में वादा करने की आदत ही यकसर छूट जाएगी। यह तरीका किसी अमल को सही तरीके पर अन्जाम देने का बड़ा क़वी ज़रिया और सीधा रास्ता है। ख़ल्फ़े अहद झूठ ही का एक शोबा है जब वादा खिलाफी से बचने का बन्दा आदी हो जाएगा तो उस पर सखावत का दरवाज़ा खुल जाएगा और हया का जीना वा हो जाएगा। जो लोग रास्त गुफ़्तार हैं उनके दिलों में उसकी मोहब्बत पैदा होगी और अल्लाह तआला के यहां उसको अजीम सरतबा हासिल होगा।

## चौथी खसलत

**चहारूम:** किसी मख़लूक पर लानत न करे। ज़र्रा से कम हैसीयत मख़लूक को भी ग़ज़न्द न पहुंचाए। यह नेक और रास्त बाज़ लोगों का खुल्क है इसके नतीजा में वह दुनिया में भी अमन से रहेगा और वह और आखिरत में भी वह मरातिबे आलिया पर फ़ाएज़ होगा अल्लाह तआला उसको हलाकत के मक़ामात से मामून व महफूज़ रखेगा और वह मख़लूक के शर से भी आमान में रहेगा बन्दों की शफ़क़त उसको हासिल और कुर्बे इलाही मय्यसर होगा।

## पांचवी खसलत

**पंजुम:** किसी के लिए बहुआ न करे ख़्वाह किसी ने उस पर जुल्म ही क्यों न किया हो, न उसको ज़बान से बुरा कहे और न उसके जुल्म का अपने किसी अमल से बदला ले बल्कि उसका बदला खुदा पर छोड़ दे। गर्ज़ कि अपने कौल व फ़ेअल से बदला न ले अगर बन्दा में यह वस्फ़ पैदा हो जाए तो यह वस्फ़ उसको बलन्द मतर्बा पर पहुंचा देगा और दारैन में इनामे अजीम उसको हासिल होगा। दूर व नज़दीक की मख़लूक के दिलों में उसको अपनी मोहब्बत मिलेगी और लोग उससे शफ़क़त से पेश आयेंगे उसकी दुआ कबूल होगी और अहले ईमान के दिलों में उसकी इज़ज़त पैदा होगी।

## छठी खसलत

**शशुम:** अहले किबला में से किसी के कुफ़्र और निफ़ाक़ पर क़तई शहादत न दे यह अमल



उसको रहमते खुदावंदी से बहुत करीब कर देगा बलन्द मरतबा हासिल होगा, यह सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है, इल्मे इलाही में दखील बनने से बन्दा को महफूज रखती है, और अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ्तार होने से बन्दा महफूज रहता है, अल्लाह की रहमत और खुशनूदी से यह अमल बहुत करीब है यह खसलत अल्लाह तक पहुंचने का एक मुअज़्ज़िज़ दरवाज़ा है और दूसरे मखलूक पर रहम करने का ज़ब्बा अल्लाह तआला बन्दा में पैदा कर देता है।

## सातवीं खसलत

**हफ़तुम:** जाहिरी और बातिनी गुनाह की तरफ नज़र करने और उसका इरादा करने से भी परहेज़ करे, गुनाहों से अपने आज़ा को रोके रखे, इस फ़ैअल का सवाब दुनिया में उसके दिल को और दूसरे आज़ा को बहुत जल्द हासिल हो जाएगा और साथ ही साथ आखिरत में अल्लाह उसके लिए भलाई का ज़खीरा जमा फ़रमाएगा।

## आठवीं खसलत

**हशतुम:** अपना बार किसी मखलूक पर प डाले ख़्वाह वह बारे गिरां हो या बारे सुबुक, बल्कि दूसरों का बार खुद उठा ले ख़्वाह किसी मखलूक की तरफ से इस की ख़्वाहिश हो या न हो, बिला शुब्हा यही इबादत गुज़ारों और बरगुज़ीदा हस्तिया की बुजुर्गी और अज़मत कमाल यही है और इसी वस्फ़ के बाइस बन्दा अम्र बिल मारूफ़ व नही अनील मुनकर पर काएम रहेगा और फिर तमाम मखलूक, हक के मामला में बराबर हो जाएगी जब बन्दा इस वस्फ़ से मुत्तसिफ़ हो जाएगा तो अल्लाह तआला उसको बेनियाजी, यकीने कामिल और तवक्कुल का मक़ाम मरहमत फ़रमाएगा, यकीन रखना चाहिए कि यह वस्फ़ मोमेनीन की इज़्ज़त और मुत्तकीन की बुजुर्गी के हुसूल का दरवाज़ा है और करीब तरीन बाबे इखलास यही है।

## नवीं खसलत

**नहुम:** लोगों से और उनके माल व मताअ से क़तअ उम्मीद करे, यही सब से बड़ी इज़्ज़त है, यही ख़ालिस तवंगरी, अज़ीम हुकूमत, अज़ीम फख़्र और शिफ़ा बख़्श सही तवक्कुल है। इस खसलत के बाइस अल्लाह पर भरोसा होता है और दुनिया से बेरग़बती पैदा होती है इसी से तक्वा का हुसूल और इबादत का तकमिला होता है यह खसलत तमाम दुनिया से कट कर अल्लाह से रिश्ता जोड़ने वालों की अलामत है।

## दसवीं खसलत

**दहुम:** तवाज़ोअ, तवाज़ोअ से मरतबा की अज़मत में इस्तेक़ामत और पुख़्तगी पैदा होती है, दर्जा बलन्द होता है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल और मखलूक की नज़र में इज़्ज़त और रुख़सते कामिल होती है दुनिया और आखिरत दोनों के हर काम पर बन्दा क़ादिर हो जाता है यह खसलत तमाम ख़साएल की असल है और यही असल कमाल है। इस खसलत के ज़रीया बन्दा उन नेक लोगों का मरतबा पाता है जो खुदा से हर हाल में ख़्वाह राहत हो या तकलीफ़ राज़ी रहते हैं और उनका तक्वा कामिल हो जाता है।



## तवाजोअ की तारीफ़

तवाजोअ किसे कहते हैं? तवाजोअ यह है कि बन्दा जिस से भी मिले उसको अपने मुकाबले में अफ़ज़ल समझे और यह ख़्याल करे कि मुमकिन यह शख्स अल्लाह के नज़दीक मुझ से हज़ार दर्जा बलन्द और बेहतर हो। अपने छोटों के बारे में ख़्याल करे कि इन्होंने खुदा की नाफ़रमानी नहीं की और मैं (ब एतबारें सिन व साल) काफी कर चुका हूँ इस लिए वह मुझ से बेहतर हैं और जब बड़ों से मिले तो ख़्याल करे कि इन्होंने मुझसे ज़्यादा इबादत की है इस लिए कि वह उम्र में मुझ से बड़े हैं इस लिए यकीनन वह मुझ बेहतर हैं कि इनको इबादत का ज़्यादा वक़्त मिला है, जब किसी आलिम से मिले तो ख़्याल करे कि इस आलिम को वह चीज़ बख़्शी गई है जो मुझे नहीं मिली है, वह जानता है और मैं नहीं जानता और वह अपने इल्म के मुताबिक़ अमल भी करता है। जाहिल से मुलाकात हो तो यह समझे कि इसने नादानी में खुदा की नाफ़रमानी की और मैं इल्म रखते हुए नाफ़रमान हुआ, नहीं मालूम कि इसका ख़ात्मा किस तरह हो और मेरा किस तरह। अगर काफ़िर से मुलाकात हो तो यह ख़्याल करे कि मुमकिन है कि यह ईमान ले आए और इसकी वजह से इसका ख़ात्मा ब ख़ैर हो और मुमकिन है कि मैं कुफ़्र में मुब्तला हो जाऊँ और उस कुफ़्र के बाइस मेरा ख़ात्मा बुरा हो, तवाजोअ अल्लाह से डरने का दरवाज़ा है। साथ रखने के काबिल औसाफ़ व फ़ज़ाएल में इसको अब्बलियत का दर्जा हासिल है और बाकी रहने वाले औसाफ़ में यह आखिरी वस्फ़ है। बन्दा जब तवाजोअ इख़्तियार कर लेता है तो अल्लाह तआला उसको तमाम तबाहियों से महफूज़ कर देता है और अल्लाह तआला उसको उन मुरातिब तक पहुंचा देता है जो महज़ अल्लाह के लिए ख़ैर तलबी करने के मुरातिब हैं, बन्दा अल्लाह की मुन्तख़ब और मुहिब बन्दों में शामिल हो जाता है और उसका शुमार इब्लीस के दुश्मनों में होने लगता है।

तवाजोअ रहमत का दरवाज़ा है तकब्बुर की राह को क़तअ करने और खुद पसन्दियों की रस्सियों को काटने का ज़रीया है। दारैन में अपने आप को सब से बरतर और अफ़ज़ल समझने के यकीन को बातिल करने का सबब है, यही इबादत का फ़ख़्र है और यही जाहिदों का शरफ़ है, यह आबिदों की निशानी है, कोई शय और कोई वस्फ़ इससे अफ़ज़ल नहीं है। बन्दा जब इस वस्फ़ को अपना ले तो मख़लूक के तज़किरे से अपनी ज़बान रोक ले, अगर ऐसा नहीं करेगा तो उसका अमल मुकम्मल नहीं होगा। बन्दा को चाहिए की तमाम अहवाल में अपने दिल से कीना, ज़ब्बए बरतरी और तकब्बुर को निकाल दे, बन्दा की ज़बान, उसका कलाम और उसका इरादा जाहिर व बातिन यकसां हो, वह तमाम मख़लूक का यकसां ख़ैर ख़्वाह हो अगर वह किसी का ज़िक्र बुराई के साथ करेगा या किसी को उसके फ़ैज़ल पर शर्मिन्दा करेगा या इस बात को पसंद करेगा कि उसके सामने किसी की बुराई की जाए तो किसी की बुराई होते वक़्त अगर उसका दिल खुश होता है तो इस सूरत में उसका शुमारा ख़ैर ख़्वाहों में नहीं होगा। यह बुराईयां आबिदों के लिए आफ़त और इबादत गुज़ारों के लिए तबाही का मौज़िब और ज़रीया हैं इस तबाही से वही बच सकता है जिस को अल्लाह तआला अपनी रहमते कामिला से दिल व ज़बान की हिफ़ाज़त की तौफीक़ अता फ़रमाए।

हम अल्लाह तआला से इस अम्र के साएल हैं कि वह हम सब को इन फ़ज़ाएल पर आमिल बना कर एहसानमन्द बनाए और हमारे दिलों से ख़्वाहिशों को निकाल दे (आमीन)



# तवक्कुल

## तवक्कुल की अस्ल

तवक्कुल की अस्ल अल्लाह तआला का यह इरशादे गरामी है: जिस ने अल्लाह पर भरोसा किया अल्लाह उसके लिए काफी है। एक दूसरी आयत है: अगर तुम ईमान वाले हो तो अल्लाह ही पर तवक्कुल करो।

## हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद का इरशाद

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से मरवी है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि ज़माने हज में बहुत से रुयाए सादिका मुझे दिखाए गए, मैंने अपनी उम्मत को देखा कि उससे मैदान और पहाड़ भरे पड़े हैं मुझे उनकी यह वजह और उनकी यह कसरत पसन्द आई, मुझे से कहा गया क्या आप इस पर राजी हैं? मैंने जवाब दिया कि जी हां, फिर मुझ से कहा कि इनके साथ सत्तर हजार ऐसे भी हैं जो बगैर किसी हिसाब के जन्नत में दाखिल होंगे, यह लोग वह हैं जो दाग नहीं लगवाते, शगुन नहीं लेते, मंत्र नहीं कराते, बल्कि खुदा ही पर तवक्कुल करते हैं, यह सुनकर उकाशा बिन महज़ अदसी खड़े हुए और बासाहे रिसालत में अर्ज किया या रसूलल्लाह आप अल्लाह से दुआ फरमाए कि मुझे इन लोगों में से कर दे। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ फरमाई ऐ अल्लाह इनको उन लोगों में से कर दे। इस के बाद एक दूसरे साहब खड़े हुए और उन्होंने अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह से दुआ फरमाइये कि मुझे भी उन लोगों में से कर दे, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब में फरमाया कि उकाशा तुम से (इस मामले में) सबक़्त ले गए।

## तवक्कुल की तारीफ़

तवक्कुल की हक़ीक़त यह कि तमाम उमूर को अल्लाह के सुपुर्द कर देना, तदबीर व इख़्तियार की तारीकियों से पाक होना और तक्दीर (इलाही) के बाद उनकी जानिब क़दम बढ़ाना है, बन्दा जब यह यकीन कर लेता है कि किस्मत में कोई तब्दीली नहीं हो सकती और जो कुछ उसके मुक़्दर में है वह उससे नहीं लिया जाएगा और जो मुक़्दर नहीं है वह किसी सूरत में हासिल नहीं होगा तो उसके दिल को सुकून हो जाता है और अपने रब के वादा पर मुतमईन हो जाता है और उसी से वह किस्मत की चीज़ को हासिल करता है।

## तवक्कुल के दर्जे

तवक्कुल के तीन दर्जे हैं अब्बल का तवक्कुल और दूसरे का नाम तसलीम और तीसरे का नाम तफ़वीज़ है। मुतवक्किल अपने रब के वादा से मुतमईन होकर सुकून हासिल कर लेता है, साहबे तसलीम अल्लाह के इल्म को अपने लिए काफी समझता है और साहबे तफ़वीज़ अल्लाह के हुक्म पर (हर सूरत में) खुश होता है।

बाज़ अकाबिर का ख़्याल है कि तवक्कुल इब्तिदा है तसलीम उसका दर्मियाना दर्जा और तफ़वीज़ उसकी इन्तेहा है, बाज़ उल्मा का ख़्याल है कि तवक्कुल तो आम मोमिनीन का वस्फ़



है, तसलीम औलिया कराम की सिफत है और तफवीज तौहीद परस्तों का वस्फ है। बाज़ असहाब फरमाते हैं कि तवक्कुल अवाम की, तसलीम ख्वास की और तफवीज ख्वासाने ख्वास का वस्फ है इस सिलसिले में बाज़ दूसरे अकाबेरीन फरमाते हैं कि तवक्कुल आम अम्बियाए कराम की सिफत है, तसलीम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए मखसूस है और तफवीज हमारे सय्यदुल अम्बिया मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सिफत है।

तवक्कुल हकीकी ब एतबारे कमाल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उस वक्त हासिल हुआ जिस वक्त आपने जिब्रील अलैहिस्सलाम से (उनकी इमदाद की पेशकश के जवाब में) फरमाया था मुझे तुम्हारी हाजत नहीं है क्योंकि उस वक्त उनकी खुदी खत्म हो चुकी थी यही सबब था कि आप ने सिवाए अल्लाह तआला के किसी और को उस वक्त नहीं देखा (उसी की जात पर तवक्कुल किया)।

## मुतवक्किल की तारीफ़

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह ने इरशाद फरमाया कि तवक्कुल का पहला मकाम यह है कि बन्दा अल्लाह तआला के सामने ऐसा हो जाए जिस तरह मुर्दा गुस्साल के सामने होता है कि गुस्ल देने वाला जिधर चाहता है उधर उसको उलट पलट करता है (फेर देता है) और खुद उसको अपने किसी अमल पर इख्तियार और तदबीर पर जोर और काबू नहीं होता, जो मुतवक्किल इलल्लाह है वह न किसी से सवाल करता है न इरादा करता है न रद्द करता है न रोकता है (बिल्कुल बे इख्तियार होता है)।

बाज़ अकाबिर का खयाल है कि तवक्कुल खुद को छोड़ देने का नाम है। हज़रत हमदून का इरशाद है कि अल्लाह तआला के दामन को मजबूती से पकड़ लेने का नाम तवक्कुल है। हज़रत इब्राहीम ख्वास ने इरशाद फरमाया कि गैरुल्लाह से उम्मीद व बीम के ताल्लुक को मुनक़ता कर देने का नाम तवक्कुल है। बाज़ सुफियाए कराम का कौल है कि एक ही ज़िन्दगी पर इक्तिफ़ा करना और कल का ग़म तर्क कर देने का नाम तवक्कुल है।

## तवक्कूल की तीन अहम बातें

हज़रत अली रुदबासी ने फरमाया कि तवक्कुल में तीन बातें काबिले लिहाज़ हैं अल्वल यह कि मिले तो शुक्र अदा करे न मिले तो सब्र, दोम यह कि हुसूल व अदमे हुसूल दोनों उसकी नज़र में एकसाँ हों, सोम यह कि न मिलने पर इस वजह से शुक्र करे कि अल्लाह तआला ने उसके लिए यही पसन्द किया है और उसको यही पसन्द है तो मुझे भी यह बात क्यों न पसन्द हो। हज़रत जाफ़र से मरवी है कि हज़रत इब्राहीम ख्वास ने इरशाद फरमाया कि मैं मक्का के सफ़र पर था असनाए राह में मुझे एक वहशी सूरत नज़र आई मैंने उससे कहा कि तू इंसान है या जिन? उसने कहा खुल्दी मैं इंसान नहीं जिन हूँ मैंने कहा कहां जा रहे हो, उसने कहा मक्का जाने का क़स्द है, मैंने कहा कि बग़ैर जाद और सवारी के, उसने कहा कि हां हम में से बाज़ ऐसे हैं जो तवक्कुल पर सफ़र करते हैं मैंने कहा कि तवक्कुल क्या है? उसने जवाब दिया, अल्लाह से लेना तवक्कुल है।

हज़रत सहल ने फरमाया कि कुल मखलूक को रिज़्क पहुंचाने वाले की मारफ़त का नाम तवक्कुल है (इस एतबार से) किसी का तवक्कुल उस वक्त तक कामिल नहीं है जब तक उसकी नज़र में



आसमान तांबे की तरह और लोहे की तरह न हो जाये, आसमान से पानी न बरसे और जमीन से सब्जा न उगे उसे कोई गर्ज नहीं वह यकीन करे कि उन दोनों के दर्मियान में जो मखलूक है उनके रिज्क का जो जामिन है वही मुझे भी रिज्क पहुंचाएगा और मुझे फरामोश नहीं करेगा।

बाज़ असहाब का कहना है कि तवक्कुल यह है कि तू रिज्क की खातिर खुदा की नाफरमानी न करे। बाज़ हज़रात कहते हैं कि बन्दा के लिए यही तवक्कुल काफी है कि वह अल्लाह के सिवा अपने लिए कोई और मददगार और अपने रिज्क के लिए कोई दूसरा खाजिन और अपने आमाल के लिए कोई दूसरा देखने वाला पसन्द न करे।

## हज़रत जुनैद का इरशाद तवक्कुल के सिलसिले में

तवक्कुल के सिलसिले में हज़रत जुनैद का इरशाद है कि तवक्कुल यह है कि अपनी तदबीर को खुदा की राह में फना कर दे और अल्लाह तआला से जो तेरा जामिन और मददगार है, राजी रहे। अल्लाह तआला का इरशाद है: और अल्लाह कारसाजी के लिए काफी है। बाज़ हज़रात का इरशाद है कि बन्दे हकीर को खुदावन्द अजीम को अपने लिए काफी समझना तवक्कुल है जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला को अपने लिए काफी समझा था और हज़रत जिब्रील की इमदाद की पेशकश पर नज़र डालना भी गवारा नहीं की। बाज़ कहते हैं कि खालिके दो जहां पर भरोसा कर के जिद्दो जेहद से बाज़ रहने का नाम तवक्कुल है। हज़रत बहलूल मजनून से दरयाफ्त किया गया कि बन्दा को मुतवक्किल किस वक्त कहना चाहिए उन्होंने ने फरमाया कि जब उसका नफ़स मखलूक में होते हुए भी मखलूक से अजनबी और बेगाना रहे और उसका दिल खुदा के साथ हो।

हज़रत असम से दरयाफ्त किया गया कि आप को तवक्कुल का यह मकाम किस तरह हासिल हुआ? आप ने फरमाया चार बातों की वजह से, अब्बल यह कि मुझे इस बात का यकीन हो गया कि मेरा रिज्क कोई दूसरा नहीं खाएगा लिहाज़ा मैं उसकी तालाश में मशगूल नहीं हुआ और दूसरे मैंने जान लिया कि मेरा अमल कोई दूसरा अन्जाम नहीं देगा पस मैं उस में मशगूल हो गया, तीसरे मैंने यकीन कर लिया कि मौत अचानक आती है लिहाज़ा मैं उसके पाने की जल्दी करता हूं चहारुम मैंने जान लिया कि मैं हर हाल में खुदा के सामने मौजूद हूं पस मैंने उससे हया की।

अबू मूसा दुबैली फरमाते हैं कि मैं ने अब्दुर्रहमान बिन यहया से तवक्कुल के बारे में दरयाफ्त किया तो उन्होंने फरमाया कि तवक्कुल यह है कि तू अजदहे के मुंह में भी हाथ डाल दे तो अल्लाह तआला के साथ होने की वजह से तुझे किसी किस्म का गज़न्द न पहुंचने का यकीन हो और तुझे उससे कुछ खौफ न आए। इसके बाद अबू मूसा ने कहा कि मैं यही सवाल हज़रत बायजीद बुस्तामी से करने के लिए निकला। चुनांचे शहरे बुस्ताम में दाखिल हुआ और उनका दरवाज़ा खटखटाया, अन्दर से उनकी आवाज़ आई, अबू मूसा! क्या तुम्हारे लिए अब्दुर्रहमान का जवाब काफी नहीं है जो तवक्कुल की हकीकत दरयाफ्त करने यहां आए हो और मुझ से पूछ रहे हो, मैंने अर्ज किया, ऐ आका दरवाज़ा खोल दीजिए, अन्दर से जवाब आया अगर तुम मुलाकाती की हैसीयत से तुम मेरे पास आते तो मैं जरूर दरवाज़ा खोल देता (तुम से मिलता) तुम दरवाज़ा ही पर जवाब सुन लो और लौट जाओ, सुनो, तवक्कुल यह है कि अगर वह सांप



जो अर्श के गिर्द हलका जन है अगर तुम्हारी तरफ बढ़े तो तुम इस बिना पर ज़रा भी न डरो कि खुदा तुम्हारे साथ है। अबू मूसा कहते हैं कि मैं यह सुन कर अपने वतन दुबैल लौट आया और एक साल तक मुक़ीम रहा फिर मैं हज़रत बा यज़ीद की मुलाकात के इरादा से वहां से रवाना हो कर बुस्ताम पहुंचा, जब मैं उनके पास पहुंचा तो उन्होंने मुझे खुश आमदीद कहा और फ़रमाया, आओ अब तुम मेरे पास मुलाकाती की हैसीयत से आए हो, मैं उनके पास तकरीबन एक माह ठहरा रहा और इस अर्से में जब मैंने उनसे कोई बात दरयाफ़्त करना चाही तो मेरे सवाल से पहले उन्होंने उसका जवाब दे दिया। एक माह बाद मैंने उनसे रुख़सत तलब की और अर्ज किया कि मुझे आप से कुछ भी फ़ाइदा हासिल होना चाहिए तो उन्होंने फ़रमाया जान लो मख़लूक का फ़ाइदा कोई फ़ाइदा नहीं है लिहाज़ा जाओ मैंने इसी कौल को फ़ाइदा समझ लिया और वहां से लौट आया।

इब्ने ताऊस ने अपने वालिद हज़रत ताऊस का कौल नक़ल किया है कि एक आराबी ने अपनी सवारी का ऊंट एक जगह बिठा कर बांध दिया फिर आसमान की तरफ़ मुंह उठा कर कहा कि इलाही! यह सवारी का ऊंट मअ तमाम समान का जब तक यह लोगों में है तेरी ज़मानत में है, यह कह कर वह मस्जिदुल हराम में चला गया, थोड़ा देर बाद वहां से निकल कर उस जगह पहुंचा जहां ऊंट बांध दिया था देखा कि ऊंट और सामान सब कुछ गायब है उसने आसमान की तरफ़ मुंह उठा कर कहा कि इलाही! मेरी कोई चीज़ तो चोरी नहीं गई जो कुछ चोरी गया है वह तेरा ही था, तेरी ही चीज़ें चोरी की गई हैं। ताऊस कहते हैं कि हम यह हाल देख ही रहे थे कि अचानक कोहे अबू कबीस की चोटी से हम ने एक शख्स को उतरते देखा जो बायें हाथ से ऊंट की मुहूर पकड़े उसको खींच कर ला रहा था और उसका दायां हाथ कटा हुआ उसके गले में झूल रहा था, वह शख्स आराबी के पास आया कि ला अपनी सवारी और सामान। मैंने आराबी से कैफ़ीयत दरयाफ़्त की उसने कहा कि मैं उस ऊंट और सामान को लेकर जब अबू कबीस पर पहुंचा तो एक सवार आया और मझ से कहा ऐ चोर! अपना दाहिना हाथ निकाल, मैंने दाहिना हाथ बढ़ा दिया उसने मेरा दाहिना हाथ पत्थर पर रख कर काट दिया और मेरी गर्दन में लटका दिया और मुझ से कहा कि नीचे उतर और यह सवारी और सामान जिस आराबी का है उसको वापस कर दे।

## हज़रत उमर का इरशाद

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर तुम लोग अल्लाह तआला पर पूरा पूरा तवक्कुल रखोगे तो अल्लाह तआला तुम को ज़रूर रिज़्क देगा जिस तरह परिन्दों को देता है कि वह सुबह को भुके जाते हैं और शाम को शिकम सैर हो कर लौटते हैं। मोहम्मद बिन कअब ने हज़रत इब्ने अब्बास के हवाले से रिवायत की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख्स यह बात पसन्द करता है कि वह लोगों में बुजुर्ग शुमार हो तो उसको चाहिए कि अल्लाह से डरे और जिस को यह बात पसन्द हो कि वह लोगों में सबसे ज़्यादा बेनियाज़ हो तो उसे चाहिए कि वह अल्लाह तआला के हाथ की चीज़ पर अपने हाथ की चीज़ के मुकाबले में ज़्यादा भरोसा करे।

हज़रत उमर इस सिलसिले में दो अशआर पढ़ा करते थे (जो यह हैं)



कर आसान काम खुद पर जान ले यह सारे कामों में हैं हुक्मे इयजदी से सारे अंदाजे ही वाबस्ता न आयेंगी तुम्हारे पास, वह पलटी हुई चीजें मुकद्दर में जो है उसको फरारी का नहीं रस्ता

हज़रत यहया बिन मआज़ से पूछा गया कि आदमी को मुतवक्किल कब कहा जाता है? फरमाया जब अल्लाह तआला की कारसाज़ी पर खुश हो। हज़रत बिशर रहमतुल्लाह अलैह का इरशाद है कि हर एक यह कहता है कि मेरा पर खुदा पर तवक्कुल है, हालांकि खुदा की कसम वह झूठा है क्योंकि अगर खुदा पर उसको तवक्कुल होता तो वह उस पर राजी रहता जो अल्लाह तआला उसके हक में करता है। हज़रत अबू तोराब नख़शबी कहते हैं बदन को उबूदियत में लगा देना, अपने दिल से रूबियत से वाबस्ता कर देना और अपने कामों की दुरुस्ती की तरफ से मुतमईन हो जाना तवक्कुल है, पस अगर उसको कुछ मिल जाए तो शुक्र अदा करे न मिले तो सब करे।

हज़रत जुन्नून मिस्री का इरशाद है कि नफ़्स की तदबीर का तर्क और अपनी कुव्वत और ग़लबा का सहारा छोड़ देना तवक्कुल है, आप से एक शख्स ने दरयाफ्त किया तो आपने फरमाया अरबाबे दुनिया को छोड़ देना ज़राये को तर्क कर देना तवक्कुल है। साएल ने अर्ज किया कि इस सिलसिले में कुछ मज़ीद फरमाइए तो आप ने फरमाया नफ़्स का बन्दगी में लगा देना और अरबाबे दुनिया से उसका निकाल लेना तवक्कुल है। हज़रत जुन्नून मिस्री ने तवक्कुल की यह तारीफ़ भी की है कि तवक्कुल वह हिस्सा व हवा को तोड़ देना है लेकिन जाहिरी कोशिश तो वह है कसब है और कसब सुन्नत से साबित है, यह कल्बी तवक्कुल को माने नहीं है जबकि बन्दा अपने दिल में यह बात रासिख कर ले कि बिलाशुब्हा तकदीर अल्लाह ही की तरफ से है इस लिए तवक्कुल का मक़ाम कल्ब ही है। ईमान को दिल में जमा लेना ही तवक्कुल है जिसने कसब का इन्कार किया गोया उसने सुन्नत से इन्कार किया जिस ने तवक्कुल का इन्कार किया उसने गोया ईमान का इन्कार किया, पस जब असबाब से कोई चीज़ मुश्किल हो जाए तो समझ ले कि उसका ताल्लुक तकदीरे इलाही से है और अगर कोई चीज़ सहल हो जाए तक भी यही समझे कि वह खुदा ही के सहल करने पर सहल होती है लिहाज़ा तमाम आज़ा और जाहिरी क़वा को (किसी सबब के मुकम्मल करने में) इख़्तियार करने में कोशां हो कि यही हुक्मे इलाही है, हां बातिन को अल्लाह के वादे से मुतमईन रखे।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि एक दफ़ा एक शख्स एक ऊंटनी पर सवार आया और हुज़ूर रिसालत में अर्ज किया कि या रसूलल्लाह! मैं इस ऊंटनी को छोड़े देता हूँ और (इसकी हिफ़ाज़त के लिए) अल्लाह पर तवक्कुल करता हूँ, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया इसको बांध दो और फिर खुदा पर तवक्कुल करो।

सोलहा और ओरफ़ा ने कहा है कि तवक्कुल उस शीर ख़्वा र बच्चा की तरह है जो सिवाए अपनी मां के छाती के और कोई ठिकाना नहीं जानता। इसी तरह मुतवक्किल भी सिवाये खुदा के और किसी सहारे को नहीं जानता। बाज़ हज़रात ने तवक्कुल की तारीफ़ इस तरह की है कि तवक्कुल अपने शकूक को रफ़ा करना और अल्लाह तआला पर भरोसा करना है। बाज़ हज़रात कहते हैं कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की कुदरत पर एतमाद करना और दूसरे लोगों की कुदरत और इख़्तियार से ना उम्मीद हो जाना तवक्कुल है।



## हुस्ने अखलाक

हुस्ने अखलाक की अस्ल अल्लाह तआला का यह इरशाद है जो उसने अपने महबूब व बरगुजीदा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान में कुरआन में नाज़िल फ़रमाया है यानी बिला शुब्हा आप अजीम अखलाक पर फ़ाएज़ हैं। हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया गया या रसूलल्लाह किस मोमिन का ईमान अफ़ज़ल है आप ने फ़रमाया जिस का अखलाक सबसे अच्छा है।

### हुस्ने अखलाक की अफ़ज़लियत

हुस्ने अखलाक बन्दे की तमाम सनअतों में अफ़ज़ल है, उससे जवांमर्दी के जौहर नुमायां होते हैं, इन्सान अपनी जिस्मानी बनावट के लिहाज़ से पोशीदा है लेकिन अपने अखलाक के लिहाज़ से जाहिर व नुमायां है। बाज़ मुहक्केकीन ने कहा है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अपने रसूल हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मोज़जे करामतें और बहुत से फ़जाएल खास तौर पर अता फ़रमाए लेकिन उन फ़जाएल में से किसी एक की ऐसी तारीफ़ नहीं की जैसे के आप के अखलाक की फ़रमाई यानी इरशाद फ़रमाया: बिला शुब्हा आप अजीम अखलाक पर फ़ाएज़ हैं। बाज़ मुहक्केकीन का कौल है कि अल्लाह तआला ने आप के खुल्क की यह तारीफ़ इस लिए फ़रमाई कि आप ने दोनों जहान बख़्श दिए और खुदा पर ही इकतेफ़ा किया। यह भी कहा गया है कि खुल्के अजीम यह है कि कमाले मारफ़ते इलाही की बिना पर किसी से झगड़ा न किया न जाए न कोई उससे झगड़ा करे यानी न किसी से अपना हक़ मांगे कि उसके बाइस झगड़ा करना पड़े और न किसी की हक़ तलफ़ी करे कि उसके बाइस दूसरा उससे झगड़े। बाज़ हज़रात ने खुल्के अजीम की तारीफ़ यह की है कि हक़ की मारफ़त के बाद दूसरे लोगों के बुरे अखलाक उस पर असर अंदाज़ न हों। हज़रत अबू सईद ख़ज्जाज़ ने फ़रमाया कि आदमी के इरादा के सामने अल्लाह के सिवा कोई न हो (उसका इरादा अल्लाह की रज़ा के तहत हो) हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि मैंने हारिस मुहासबी को कहते हुए सुना है कि हम ने तीन चीज़ों को खो दिया है अब्बल कुशादा रवी व हिफ़जे आबरू, दोम बग़ैर ख़यानत के खुश कलामी, सोम वफ़ाये अहद के साथ दोस्ती का निभाना। बाज़ हज़रात का कौल है कि खुल्के हुस्न यह है कि तुम से जो चीज़ दूसरे को पहुंचे उसको तुम हकीर समझो। दूसरों से जो कुछ तुम को मिले उसको अजीम समझो। बाज़ कहते हैं कि हुस्ने खुल्क यह है कि तुम अपनी तरफ़ से दूसरों को ईज़ा न दो और दूसरों की तरफ़ से पहुंचने वाले दुख को बरदाश्त करो।

### हुज़ूर का इरशाद

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा कराम से इरशाद फ़रमाया तुम्हारे माल में सब लोगों (के खर्च) की यकीनन गुंज़ाइश नहीं होगी लेकिन ख़न्दा पेशानी और हुस्ने खुल्क में तो उनकी समाई कर लो। अल्लाह तआला के साथ हुस्ने खुल्क यह है कि तुम उस के अवामिर को बजा लाओ और ममनूआत को तर्क कर दो और आम हालत में बग़ैर किसी इस्तेहकाक सवाब के उस की इताअत करो और बग़ैर तरद्दुद के अपने तमाम मुक़द्देरात को उसी के सुपुर्द करो और बग़ैर किसी



शिक के उसके एक तसलीम करो और बगैर किसी शक के उसको वादा में सच्चा जानो।

हजरत जुन्नून मिस्री से किसी ने दरयाफ्त किया कि सबसे ज्यादा अंदोहनाक हालत किस शख्स की है, फरमाया उसकी जो सबसे बद खुल्क हो। हजरत हसन बसरी ने अल्लाह तआला के इस इरशाद: अपने कपड़ों को पाक रखिये, की तफसीर करते हुए कहा कि यानी अपने खुल्क को अच्छा (पाकीजा) कर लो।

बाज लोगों ने आयत: और अल्लाह तआला ने तुम को जाहिरी और बातिनी दोनों किस्म की नेमतें पूरी पूरी अता की हैं, की तफसीर में बयान किया है कि जाहिरी नेमत तो आजाए जिस्मानी की सेहत व तन्दरुस्ती है और बातिनी नेमत अखलाक की पाकीजगी है।

## हजरत इब्राहीम अदहम का इरशाद

हजरत इब्राहीम अदहम से दरयाफ्त किया गया कि क्या आप दुनिया में कभी खुश भी हुए? फरमाया हां दो मरतबा ऐसा हुआ पहली मरतबा तो उस वक्त जब कि मैं बैठा हुआ था कि एक कुत्ता आया और मुझे पर पेशाब कर दिया, दूसरी बार उस वक्त जब मैं बैठा था तो एक आदमी आया उसने मेरे तमांचा मारा।

रिवायत है कि हजरत ओवैस करनी को जब लड़कें देखते तो आप को ईंटें मारते, आप उनसे कहते अगर पत्थर मारते ही हो तो छोटे छोटे पत्थर मारो ताकि मेरी पिंडलियां (इन बड़े पत्थरों और ईंटों से) लहु लहान न हो जाए और मैं नमाज में पढ़ सकूं। एक रिवायत है कि एक शख्स अहनफ बिन कैस के पीछे पीछे उनको गालियां देता जाता था जब हजरत अपने कबीला के करीब पहुंच गए तो उठर गए और फरमाया ऐ शख्स! अगर तेरे दिल में कुछ और बाकी रह गया हो तो उस भी कह डाल ऐसा न हो कि आगे बढ़ कर कोई नादान शख्स तेरी गालियां सुने और तुझे गालियां देने लगे (तो उस वक्त तुझे अफसोस होगा)।

हजरत हातिम असम से कहा गया कि इन्सान हर एक की (बात) बरदाश्त कर लेता है आप ने फरमाया हां मगर अपने नफ्स के सिवा। रिवायत है कि अमीरुल मोमीनीन हजरत अली इब्ने अबी तालिब ने अपने गुलाम को आवाज दी, उसने कोई जवाब नहीं दिया, आप दूसरी फिर तीसरी बार आवाज दी तब भी उसने कोई जवाब नहीं दिया, आप उसके पास गए तो उसको लेटे हुए देखा आपने फरमाया ऐ गुलाम क्या तू सुन नहीं रहा है, तो उसने कहा हां मैं सुन रहा हूं, आपने फरमाया फिर तूने जवाब क्यों नहीं दिया, उसने कहा मुझे आप की सजा का तो कोई डर ही नहीं था इस लिए मैंने जवाब देने में सुस्ती की, आप ने फरमाया जा तू अल्लाह के लिए आजाद है।

बाज हजरात का कौल है कि हुस्ने खुल्क यह कि तुम लोगों के साथ रहते हुए भी उनसे बेगाना रहो। बाज का ख्याल यह है कि हुस्ने खुल्क यह कि मखलूक की तरफ जो जुल्म तुम पर किया जाए उसको बरदाश्त कर लो और उनका हक बगैर तंगदिली और नागवारी के अदा करते रहो। इंजील में मौजूद है: मेरे बन्दे मुझे याद रख, जब तू गुस्सा में हो, मैं तुझे अपने गजब के वक्त अपनी रहमत के साथ याद रखूंगा।

मालिक बिन दीनार से किसी औरत ने कहा ऐ रियाकार! आपने उसको जवाब दिया कि तुमने मेरा वह नाम पा लिया जिसे अहले बसरा भूल चुके थे। हजरत लुकमान अलैहिस्सलाम ने



अपने बेटे से फरमाया ऐ मेरे प्यारे बेटे तीन किस्म के लोग इन तीन मौकों पर पहचाने जाते हैं, (1) हलीम और बुर्दबार गुस्सा के वक्त (2) बहादुर जंग के मौका पर (3) दोस्त हाजत और जरूरत के वक्त।

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज किया कि इलाही! मेरी तुझ से यह दरखास्त है कि मेरे बारे वह कुछ न कहा जाए जो मुझ में मौजूद नहीं है (यानी मुझ पर बोहतान तराशी न हो) जवाब आया कि यह हम ने अपने लिए जब नहीं किया तो तेरे लिए कैसे करूँ।

## शुक्र

### शुक्र की अस्ल

शुक्र की अस्ल अल्लाह तआला का यह इरशाद है: अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हारे लिए नेमतें जरूर और ज्यादा कर दूंगा। यही हदीस भी शुक्र की हकीकत पर रोशनी डालती है जिसको हजरत अता ने नक्ल किया है, हजरत अता का बयान है मैं हजरत आएशा की खिदमत में हाजिर हुआ और अर्ज किया या उम्मुल मोमिनीन आप हम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सबसे ऊम्दा और आला वह बात बतायें कि जो आप ने कभी देखी हो, यह सुन कर आप अश्कबार हो गईं और फरमाया आप की कौन सी बात ऐसी न थी जो ऊम्दा और आला न हो। एक मर्तबा रात में आप मेरे पास तशरीफ लाए और मेरे साथ आराम फरमाने लगे, आप को मुझ में इस कदर कुर्ब था मेरी जिल्द आप की जिल्द से मस हो रही थी, आप ने फरमाया मैं अबू बकर की बेटी आज तुम मुझे अपने खूब की इबादत करने दो मैंने अर्ज किया हर चन्दा कि आप का कुर्ब मुझे पसन्द है लेकिन मैं आप की ख्वाहिश को तरजीह देती हूँ मैंने आप को मजाजत दे दी। हुजूर वाला उठ कर मशक के पास तशरीफ ले गए और वुजू में काफी पानी साह किया फिर खड़े हो कर नमाज में मशगूल हो गये आप कयाम की हालत में इस कदर रोये कि आप के आंसू आप के नूरानी सीने तक पहुंचने लगे फिर आप ने रुकूअ फरमाया और फिर अश्कबारी की, फिर सजदा किया और रोते रहे फिर सरे मुबारक उठाया इस दौरान में भी आप अश्कबार रहे यहां तक हजरत बिलाल आए और नमाजे फजर की इत्तेला दी। उस वक्त मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह इस कदर रोने का मौजिब क्या है जब कि अल्लाह तआला ने आप के तमाम अगले पिछले गुनाह बख्श दिये हैं, आप ने यह सुन कर फरमाया क्या मैं खुदा का शुक्र गुजार बन्दा ना बनूँ और क्योंकर ऐसा ना करूँ जब कि अल्लाह ने मुझ पर यह आयत नाज़िल फरमाई है:

आसमानों और जमीन के माबैन निशानियां हैं (आखिर आयत तक) अहले तहकीक ने शुक्र के हकीकत में कहा कि यह आजिजाना तौर पर मुनईम की नेमत का एतराफ करना है और इसी मानी में अल्लाह तआला ने अपनी जात के लिए लफ्जे शकूरो मजाज़न फरमाया है जिस के मानी हैं कि वह बंदों को उनकी शुक्र गुजारी का बदला देता है, शुक्र के बदला को भी शुक्र कहा गया है जैसा की अल्लाह तआला के इस इरशाद में है।

बुराई के बदला बुराई को मजाज़न फरमाया है वरना हकीकत में बुराई का बदला बुराई नहीं है। बाज़ अहले तहकीक कहते हैं कि शुक्र की हकीकत है किसी मोहसिन के एहसान को याद करके उसकी तारीफ करना लिहाज़ा बन्दा की तरफ से खुदावन्द तआला के शुक्र अदा करने के



मानी ही खुदा की तारीफ उसके एहसान की याद के साथ और खुदा की तरफ से बंदा का शुक्र अदा करने के हैं कि खुदावन्द तआला की तरफ से बन्दा की शुक्रगुजारी पर उसकी तारीफ करना। बंदा का एहसान (हुस्ने किरदार) खुदावन्द तआल की इताअत करना है और हक तआला का एहसान अपने बंदा पर इनाम व इकराम फरमाना है। बंदा की तरफ से अल्लाह का शुक्र अदा करना यह है कि अल्लाह तआला के इनाम का ज़बान से जिक्र और दिल से उसका इकरार करे।

## शुक्र की किस्में

शुक्र की कई किस्में हैं अब्बल ज़बान का शुक्र। ज़बान का शुक्र यह है कि आजिज़ाना तरीके पर अल्लाह की तारीफ के साथ साथ अल्लाह की नेमत का एतराफ व इकरार। दोम: बदन व आज्ञा के साथ शुक्र, वफादारी और खिदमत के साथ शुक्र गुजारी है। सोम: दिल का शुक्र, यह हुदूदे इलाही की पाबन्दी के साथ हाज़िरी के फरिश्ता पर एक सूई के साथ खड़ा हो जाना। चहारुम: आंखों और कानों का शुक्र, आंखों का शुक्र यह है कि अपने साथी के ऐब को देख कर उससे अगमाज़ और पर्दा पोशी करे, कानों का शुक्र यह है कि साथी के अन्दर किसी ऐब की खबर सुनकर उसको छुपा ले। तमाम मबाहिस् का हसिल यह है कि शुक्र यह है कि अल्लाह तआला की नेमतें होते हुए उसकी नाफरमानी न करना।

कहा गया है कि आलिमों का शुक्र कौली (कौल से) होता है और आबिदों का अमली और आरिफों का शुक्र यह है कि अल्लाह के हुक्म पर हर हाल में कायम रहें और यकीन रखें कि हम से जो नेकी हो रही है वह जिस ताअत व अब्दीयत और जिक्र खुदावन्दी का जहूर जो हम से हुआ है वह सब कुछ अल्लाह की तौफीक, उसकी मदद कुव्वत, ताक़त और उसके इनाम की बदौलत हुआ है।

बन्दा का चाहिए कि शुक्र में अपने अहवाल से ख़ुश हो कर अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात और नूर में ख़ुश हो जाए अपनी आजिजी, नादानी, कोतली का इकरार करे और हर हाल में अपना मरकज़े सुखन उसी की ज़ात को जाने।

## शुक्र की तारीफ़ में मुख्तलिफ़ अक़वाल

अबू बकर वर्राक का इरशाद है कि हुदूदे इलाही की हिफाज़त रखना और एहसाने इलाही का मुशाहिदा करना शुक्र नेमत है और यह भी कहा गया है कि अपने नफ़्स को तुफ़ैली समझना भी शुक्र नेमत है (अदाए शुक्र में।) हज़रत अबू उसमान ने फरमाया कि अदाए शुक्र से कासिर रहने की मारफ़त का नाम शुक्र है यह भी कहा गया है कि शुक्र का शुक्र अदा ही कामिल शुक्र है (यानी इस बात का शुक्र अदा करना कि अल्लाह तआला ने शुक्र की तौफीक अता फरमाई है) कि तौफीक शुक्र भी एक बड़ी नेमत है। लिहाज़ा बन्दा को चाहिए कि पहले शुक्र कामिल शुक्र है कि तौफीक शुक्र भी एक बड़ी नेमत है। लिहाज़ा बन्दा को चाहिए कि पहले शुक्र अदा करे फिर तौफीक के शुक्र का शुक्र अदा करे फिर तौफीक शुक्र पर शुक्र अदा करने का शुक्र अदा करे इस तरह शुक्र अदा करने का एक ग़ैर महदूद सिलसिला जारी रखा जाए।

बाज़ अहले तहकीक़ ने कहा कि नेमत को मुनइम की तरफ़ आजिज़ाना अंदाज़े बयान के साथ मन्सूब करना शुक्र है। हज़रत जुनैद फरमाते हैं कि शुक्र यह है कि तुम खुद को अल्लाह की नेमत का अहल न समझो। बाज़ ने कहा है कि शाकिर वह है जो नेमते मौजूदा पर शुक्र अदा करे और मशकूर (बहुत शुक्र गुज़ार) वह है जो उस नेमत पर शुक्र अदा करे जो उसको अभी



नहीं मिली है। एक कौल यह भी है कि शाकिर वह है जो मिलने पर शुक्र करे और मशकूर वह है जो न मिलने पर शुक्र करे एक कौल यह भी है कि शाकिर वह है जो इनाम व बख्शिशाश पर शुक्र अदा करे और मशकूर वह है जो मुसीबत पर शुक्र करे। यह भी कहा गया है कि शाकिर वह है जो किसी नेमत के मिलने पर शुक्र अदा करे और मशकूर वह है जो नेमत के अदमे हुसूल पर भी शुक्र करे।

हजरत शिबली ने फरमाया कि शुक्र मुनइम का दीदार है न कि नेमत का। बाज़ अहले तहकीक कहते हैं कि शुक्र नेमते मौजूदा को कैद रखता है और नेमते गैब को शिकार करता है। अबू उसमान का इरशाद है कि अवाम का शुक्र तो माकूलात, मशरूबात और मलबूसात पर होता है और ख्वास का शुक्र उनकी वारदाते कल्बी पर होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है मेरे बन्दों में थोड़े ही शुक्र गुज़ार बन्दे हैं।

हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अर्ज किया, इलाही मैं तेरा किस तरह शुक्र अदा करूँ, तेरा शुक्र अदा करना भी तो तेरी एक नेमत है, पस अल्लाह तआला ने उन पर वही नाज़िल फरमाई कि तू ने मेरा शुक्र अब अदा किया। बाज़ का कौल है कि जब ऐ इंसान तेरा हाथ बदला चुकाने से कासिर रहे तो चाहिए कि तेरी ज़बान शुक्र में दरज़ हो।

रिवायत है कि जब हजरत इदरीस अलैहिस्सलाम को मग़फ़िरत की खुशख़बरी दी गई तो उन्होंने कुछ ज़िन्दगी मांगी उनसे पूछा गया कि मज़ीद ज़िन्दगी क्यों चाहते हो अर्ज किया इस लिए कि तेरी नेमत का शुक्र अदा कर सकूँ, इस से पहले तो मैं मग़फ़िरत के लिए मसरूफ़े अमल रहता था। यह सुन कर फ़रिशते ने अपने बाज़ फैलाए और उनको ऊपर उठा लिया गया।

रिवायत है कि किसी नबी का एक छोटे पत्थर के पास से गुज़र हुआ उस पत्थर से बड़ी मिक़दार में पानी जारी था यह बात देख कर उनको बहुत ताज़्जुब हुआ अल्लाह तआला ने पत्थर को गोयाई की कुव्वत अता कर दी, नबी अल्लाह ने उससे पानी निकलने की वजह दरयाफ़्त की, पत्थर ने जवाब दिया कि जब से अल्लाह तआला ने आयत, आदमी और पत्थर दोज़ख़ का इंधन होंगे, नाज़िल फ़रमाई है मैं ख़ौफ़ के बाइस रोता रहता हूँ (यह पानी मेरे आंसू हैं) नबी अल्लाह ने दुआ की कि इलाही इस पत्थर को दोज़ख़ से महफूज़ रख, वही नाज़िल हुई कि हमने इसको नज़ात दे दी। नबी अल्लाह वहाँ से रुख़सत हो गए जब वापस हुए तो पहले से ज़्यादा पानी निकलते देखा यह देख कर उनको ताज़्जुब हुआ अल्लाह ने पत्थर को फिर कुव्वते गोयाई अता फ़रमा दी और नबी अल्लाह ने पत्थर से इस तरह रोने की वजह दरयाफ़्त की और फ़रमाया कि मैंने तेरी बख़्शिशाश के लिए दुआ की थी (और वह कबूल हो गई है) पत्थर ने अर्ज किया कि पहला रोना तो गुम व ख़ौफ़ का रोना था और यह रोना शुक्र और मुसररत का रोना है।

बाज़ असहाब का इरशाद है कि शाकिर को मज़ीद नेमतें हासिल होती हैं क्योंकि उसको नेमतों को मुशाहिदा होता है अल्लाह तआला का इरशाद है कि अगर तुम शुक्र नेमत बजा लाओगे मैं तुमको मज़ीद नेमतों से नवाज़ूंगा।

मुसीबत पर सब्र करने वाला अल्लाह की पनाह लेता है क्योंकि वह मुशाहदए मुसीबत में होता है उस पर इनाम यह होता है कि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया दिया कि मैं यकीनन सब्र करने वालों के साथ हूँ। बाज़ हज़रात का इरशाद है कि अपनी सांसों पर हम्द करना और हवा़ की नेमतों पर शुक्र करना ही शुक्र है। हदीसे सही में आया है कि जन्नत की तरफ़ सबसे पहले



हमद करने वाले बुलाए जायेंगे। बाज का कौल है कि अल्लाह ने जो मुसीबत दफा फरमा दी है उस पर हमद होती है और अल्लाह तआला ने जो एहसान फरमाया है उस पर शुक्र होता है। मनकूल है कि एक शख्स का असनाए सफर एक बड़े बूढ़े के पास गुजर हुआ मुसाफिर ने उस साल खूदा से उसका हाल दरयाफ्त किया उसने कहा कि मैं इब्तादाए जवानी में अपनी चचा जाद बहन से मोहब्बत करता था और वह भी मुझ उसी तरह चाहती थी, हुस्ने इत्तेफाक कि मेरा उस से निकाह हो गया, जब शबे जिफाफ हुई तो मैंने अपनी बीवी से कहा कि आओ! आज रात हम दोनों अल्लाह की इबादत इस शुक्र में करें कि उसने हम दोनों को मिला दिया चुनांचे (कुर्बत के बजाए) वह पूरी रात हम ने इबादत में गुजार दी, उस वक्त से आज तक सत्तर अस्सी साल हम को इसी हाल में हो गये हैं, हर रात यही कैफीयत होती है। उस वक्त यह बातें हो रही थीं उसकी बीवी भी उसके साथ थी, उन बुजुर्ग ने अपनी बीवी से इस बात की जब तसदीक चाही तो बीवी ने कहा ऐसा ही है।

## सब्र

अल्लाह तआला का यह कौल सब्र के सिलसिले में अस्ल है:

ऐ ईमान वालो! सब्र करो और सब्र कराओ और डरो शायद इससे तुम को रुस्तगारी हासिल हो जाए।

इस सिलसिले में एक दूसरी आयत है:

तुम सब्र करो, सब्र अल्लाह तआला की मदद के साथ है।

इस सिलसिले में वह हदीस शरीफ जो हुजूरत आइशा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सब्र वही है जो पहली ही मुसीबत पर हो। एक रिवायत में आया है एक शख्स ने खिदमते नबवी में अर्ज किया कि रसूलुल्लाह मेरा माल जाता रहा और मेरी सेहत खराब हो गई (जिस्म बीमार हो गया) हुजूर ने इरशाद फरमाया उस बन्दे में कोई भलाई नहीं है जिस का माल चोरी न जाए और जिस्म बीमार न हो।

अल्लाह तआला जब किसी बन्दा से मोहब्बत फरमाता है तो उसको आजमाईश करता है और जब उसको आजमाईश में डालता है तो उसको सब्र भी अता फरमाता है। एक और हदीस में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि खुदा के यहां बन्दा के लिए जरूर एक ऐसा दर्जा होता है कि उस दर्जा तक वह अपने अमल के जरिये नहीं पहुंच पाता यहां तक कि वह किसी जिस्मानी तकलीफ (मरज) में मुब्तला हो जाता है और फिर वह उस जरिया से उस दर्जा तक पहुंच जाता है। एक और हदीस में इस तरह है कि आयत मय्यामर सूअन यूज्जबही नाजिल हुई तो हुजूरत अबू बकर सिद्दीक ने खिदमते नबवी में अर्ज किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अब इस आयत के नुजूल के बाद फलाह किस तरा मय्यसर होगी? हुजूर ने फरमाया अबू बकर खुदा तुम्हारी मगफिरत फरमाए क्या तुम अलील नहीं होते? क्या तुम पर मुसीबत नाजिल नहीं होती, क्या तुम सब्र नहीं करते, क्या तुम गुमजदा नहीं होते? बस यही तुम्हारे गुनाह का बदला हो जाता है यानी जो कुछ दुख तुम पर आते हैं व तुम्हारे गुनाहों का कफारा हो जाते हैं।



## सब्र की किस्में

सब्र की कई किस्में हैं अब्बल अल्लाह के लिए सब्र करना यानी हुक्मे इलाही बजा आवरी और मुमानिअत की इताअत में जो कुछ तकलीफ पहुंचे उस पर सब्र करना। दोम अल्लाह तआला की मशीयत पर सब्र करना यानी अल्लाह तआला का जो कुछ फैसला और अहकाम जारी हों और उनसे तुम पर कुछ मुसीबत आए या उफताद पड़े उस पर सब्र करना। सोम अल्लाह के वादों पर सब्र करना यानी रिज्क की कशाइश, माली जरूरियात की तकमील, जरूरत का रवा होना और आखिरत में सवाब का जो वादा किया है उस वादा पर सब्र करना।

बाज अहले तहकीक ने सब्र की दो किस्में बयान की हैं अब्बल यह कि उन चीजों के करने या न करने पर सब्र करना जिनके करने पर बन्दे को इख्तियार है। दोम उन बातों पर सब्र करना जिन पर बंदा को इख्तियार नहीं है। पहले किस्म के सब्र की दो सूरतें हैं अब्बल अवामिरे इलाही की तामील पर सब्र, दोम नवाही की इताअत पर सब्र, दूसरी किस्म का सब्र यह है कि उन उमूर पर सब्र करे जो बन्दे के इख्तियार में नहीं हैं यानी इंसान के लिए जिस्मानी, दिली या रुहानी तकलीफ का जो हुक्मे इलाही है और मशीअते खुदावन्दी है उस पर सब्र करना (मायूसी और नाफरमानी न करना)।

बाज असहाब का कौल है कि सब्र करने वाले तीन तरह के होते हैं अब्बल वह तकल्लुफ और जब्र के साथ सब्र करे, दोम आम सब्र करने वाला, सोम बहुत ज्यादा सब्र करने वाला।

रिवायत है कि एक शख्स ने हजरत शिबली से कहा कि कौन सा सब्र साबिर के लिए सबसे ज्यादा सरख्त है आप ने फरमाया अल्लाह की राह में सब्र करना, उस शख्स ने कहा नहीं, आपने फरमाया सब्र लिल्लाह (अल्लाह के वास्ते सब्र करना) उसने कहा नहीं यह भी नहीं है, आप ने फरमाया सब्र मअ अल्लाह (अल्लाह की मअइयत का मुसाहिदा करने में साबिर रहना) उस शख्स ने कहा नहीं, आप ने उस से फरमाया फिर कौन सा सब्र है, उसने शख्स ने जवाब दिया सब्र ल मिनल्लाह (अल्लाह को देखते हुए सब्र करना) यह सुनते ही हजरत शिबली ने एक चीख मारी यह मालूम होता था कि उनकी रुह निकल जाएगी।

### हजरत जुनैद का इरशाद

हजरत जुनैद का इरशाद है कि दुनिया से आखिरत की तरफ जाना मोमिन के लिए आसान और सहल है लेकिन खुदा की राह में मखलूक को छोड़ देना मुश्किल है और नफ्स को छोड़ कर अल्लाह तआला की तरफ रुजूअ करना मुश्किल तर है और सब्र मअ अल्लाह मुश्किल तरीन सब्र है। एक बार जब सब्र के बारे में आप से दरयाफ्त किया गया तो आपने फरमाया कि मुंह बिगाड़े बगैर किसी कड़वी चीज का एक एक घूंट करके पीना सब्र है।

### हजरत अली का इरशाद

हजरत अली ने फरमाया सब्र ईमान से उसी तरह वाबस्ता है जिस तरह सर बदन से लगा होता है। हजरत जुन्नून मिसरी फरमाते हैं कि सब्र अल्लाह की ना पसन्द चीजों से दूर रहने और मसाइब के गुमों का घूंट घूंट पीना और मआश की तंगी के बावजूद बेनियाजी का इजहार करना सब्र है। बाज का कौल है कि हर मुसीबत को खन्दा पेशानी से बर्दाश्त करने का नाम सब्र है। यह भी कहा गया है कि सब्र के मानी हैं मसाइब में इजहारे शिकवा व शिकायत के बगैर फना



हो जाना। बाज कहते हैं कि जिस तरह आफियत, आसूदगी की मौजूदगी में दिल को एक गूना सुकून होता है उसी तरह मुसीबत की हालत में दिल के ठहराव और सुकून का नाम सब्र है। इस सिलसिले में यह भी कहा गया है कि इबादत की बेहतरीन जजा सब्र की जजा है इससे बढ़ कर कोई जजा नहीं। अल्लाह तआला ने फरमाया:

सब्र करने वालों को उनका अज्र बे हिसाब पूरा पूरा दिया जाता है।

अल्लाह तआला ने यह भी इरशाद फरमाया है:

जिन लोगों ने सब्र किया हम जरूर उन्हें ज्यादा नेक चीजों के साथ अज्र देंगे जैसा कि वह सब्र करते हैं।

बाज हजरात का कहना है कि अल्लाह तआला की मअइयत में साबित कदम रहना और इसकी फर्सतादा मुसीबत के दुखों का कुशादा दिली से इस्तिकबाल करना सब्र है। हजरात ख्वास ने फरमाया कि सब्र मअ अल्लाह के मानी हैं कुरआन और सुन्त (रसूलुल्लाह के अहकाम पर साबित कदम रहना) यहया बिन मआज राजी ने कहा कि आशिकों का सब्र जाहिदों के सब्र से ज्यादा सख्त है।

सब्र करते हैं हम बहर सूरत

बस तेरे वास्ते नहीं होता

बाज हजरात का इरशाद है कि सब्र शिकायत का तर्क करना है। बाज ने कहा है कि अल्लाह तआला के हुजूर आजिजी का इख्तियार करना और उसकी पनाह चाहना सब्र है। बाज कहते हैं कि सब्र के मानी हैं सिर्फ खुदा से मदद मांगना बाज कहते हैं कि सब्र अल्लाह के इस्म की तरह है, कहा गया है कि सब्र यह है कि नेमत व मुसीबत में फर्क न करे और दोनों सूरतों में दिल जमई रहे।

**रजा**

## रजा की तारीफ

रजा की अस्ल अल्लाह तआला का यह इरशाद है: अल्लाह उन मुसलमानों से राजी हुआ और वह उससे राजी हुए। और दूसरी आयत है: उनका रब उनको अपनी रहमत और रजामन्दी की बशारत देता है।

हजरात इब्ने अब्बास से मरवी है कि हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया उस शख्स ने ईमान का मजा चख लिया जो अपने रब की रबूबियत से राजी हुआ। रिवायात है कि हजरात उमर बिन खत्ताब ने हजरात अबू मूसा अशअरी को लिखा था (हम्द व सलात के बाद कुल भलाई अल्लाह के इल्म पर राजी व रजा होने में है पस अगर तुम राजी रह सको तो बेहतर है वरना सब्र करो। इस इरशादे इलाही, जब उनमें से किसी को खबर दी जाती है कि तुम्हारे घर में लड़की पैदा हुई है तो ग़म से उसका मुंह सियाह पड़ जाता है, की तशरीह व तफसीर में हजरात क़तादा ने फरमाया यह मुशरिकों का तरीका था। अल्लाह तआला ने उनके इस खुबसे अमल की इस आयत में खबर दी है, पस मोमिन के शायाने शान है कि जो अल्लाह तआला ने उसको मकसूम कर दिया है उस पर राजी रहे अल्लाह का फैसला अपने



फैसले से कहीं बेहतर है।

ऐ इब्ने आदम जो कुछ खुदा ने तेरे लिये मुकर्रर फरमा दिया है और जिस को तू नागवार महसूस कर रहा है वह तेरे लिए उस से बेहतर है कि खुदाबन्द तआला तेरे लिए तेरी पसन्दीदा चीज मुकर्रर करता। खुदा से डर और उसकी कजा पर राजी रह।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

और जिस चीज को तुम नागवार समझते हो, हो सकता है कि वह तुम्हारे लिए बेहतर हो और जिस चीज को तुम पसन्द करते हो शायद वह तुम्हारे लिए बुरी हो अल्लाह वाकिफ है तुम ना वाकिफ हो (तुम्हारी दीनी व दुनियावी मसलेहत से अल्लाह ही वाकिफ है)।

पस अल्लाह तआला ने मखलूक से उनकी मसलहतें पोशीदा रखी हैं और उनको अपनी बन्दगी के लिए मुकल्लफ बनाया है जिससे मुराद अवामिर का पूरा करना और ममनूआत (नवाही) से रूकना, मुकदर के आगे सर झुकाना और कजाए इलाही पर अपने तमाम मुनाफे और नुकसानात में राजी व रजा रहना, अल्लाह तआला ने अन्जाम और मसलेहतों को अपने इख्तियार में रखा है। पस बन्दे को चाहिए कि हमेशा अपने आका और मौला की इताअत में लगा रहे, और उससे राजी रहे जो कुछ खुदा ने उसके लिए मकसूम कर दिया है उस पर तोहमत न दे। यह बात अच्छी तरह जान लो कि आदमी अपने मकसूम के लिए जिस कदर तकदीर के मुकाबला में कशमकश करेगा और जितना भी अपनी ख्वाहिश के दूर पै होगा और जिस कदर रजा और कजा को तर्क करेगा उसी कदर तकलीफ में रहेगा। जो शरह तकदीर के हुक्म पर राजी रहता है वह आराम से रहता है और तकदीरे खुदाबन्दी से नाराज रहता है, इसका रंज व अलम बढ़ जाता है हालांकि दुनिया में वही कुछ मिलता है जो मकसूम में होता है, जब तक नफसानी ख्वाहिश इन्सान पर हुकमरा और उसकी पेशवा रहती है और बन्दा हुक्मे कजा पर राजी नहीं होता वह नतीजा में दुख पर दुख रहता है और उसकी तकलीफ में इजाफा होता रहता है, राहत के हुसूल तो नफस की मुखालफत में है इस लिए कि इस सूरत में ला महाला राजी व कजा होना होता है और नफस की मुवाफकत का नतीजा तकलीफ और मशक्कत, पस इस लिये कि इस सूरत में बन्दा हो हक से कशाकश करना पड़ती है, खुदा करे कि ख्वाहिशे नफस बाकी न रहे और वह हो तो हमारा भला बाकी न हो।

## रजा हाल है या मकाम

साहिबाने तरीकत के माबैन इस तअय्युन में इखतिलाफ है कि रजा हाल है या मकाम। अहले इराक ने इसको हाल कहा है बन्दा के इख्तियार को इस में दखल है यह भी मिन जानिब दिल ही पैदा होने वाली एक हालत है और गैर मुस्तकिल है इस के बाद दूसरी हालत आ जाती है।

सुफयाए खुरासान फरमाते हैं कि रजा एक मकाम है और तबक्कुल की आखिरी हद है, उस हद तक बन्दा अपनी रियाजत से पहुंच सकता है, दोनों कौलों में मुताबिकत इस तरह हो सकती है कि इब्तेदाई रजा बन्दा को रियाजत से हासिल हो सकती है यह रजा (कसबे अब्द) का एक मकाम है और इन्तेहाए रजा एक हाल है जो काबिले कसब नहीं है। पस साहबे रजा वह बन्दा है जो तकदीरे खुदाबन्दी पर एतराज न करे। अबू अली दक्काक फरमाते हैं रजा यह नहीं है कि तकलीफ का एहसास ही बन्दा न करे बल्कि रजा यह है कि तू तकदीरे खुदाबन्दी पर एतराज



करे। कुछ और मशाइख ने फरमाया है कि तक्दीरे खुदावन्दी पर रज़ा इख्तियार करना खुदा रसी का बहुत बड़ा जरीया है और दुनिया की जन्नत है यानी जिस बन्दा को रज़ा से नवाजा गया उसको कामिल फराखी हो गई और कुर्ब आला से सरफराज़ किया गया।

रिवायत है कि एक शार्गिद ने अपने उस्ताद से दरयाफ्त किया कि क्या बन्दा यह जान सकता है कि खुदा उससे राजी है? उस्ताद ने जवाब दिया नहीं जान सकता, गौर करो कि किस तरह जान सकता है जब कि रज़ाए इलाही पोशीदा है, शार्गिद ने कहा कि बन्दा रज़ाए इलाही जान लेता है, उस्ताद ने कहा किस तरह? शार्गिद ने जवाब दिया कि जब मैं अपने कल्ब को खुदा से राजी पाता हूँ तो जान लेता हूँ कि वह मुझ से राजी है, उस्ताद ने कहा कि ऐ शार्गिद तूने खूब बात कही, बन्दा उसी वक़्त खुदा से राजी होता जब कि खुदा उससे राजी होता है।

अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया है: अल्लाह तआला उनसे राजी हुआ और वह खुदा से राजी हुए यानी खुदा की खुशनुदी के बाइस वह लोग खुश हुए, बयान किया जाता है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ मांगी। इलाही मुझे ऐसा कोई अमल बता दे जिस के करने से तू राजी हो, अल्लाह तआला ने जवाब दिया कि तुझ से किसी की ताकत नहीं, हज़रत मूसा सजदे में गिर पड़े, अल्लाह तआला ने वही भेजी कि ऐ इमरान के बेटे! मेरी रज़ा इस में है कि तू मेरी क़ज़ा पर राजी रहे।

कहा गया है कि जो कोई मकामे रज़ा पर पहुँचना चाहे उसको चाहिए कि उस अमल को इख्तियार करे जिस में खुदा ने अपनी रज़ा रखी है। रज़ा की दो किस्में हैं एक खुदा पर राजी रहना दूसरे खुदा से राजी रहना। खुदा पर राजी रहने का मतलब यह है कि बन्दा उसको साहिबे तदबीर माने और खुदा से राजी रहने का माने यह है कि अल्लाह तआला हाकिम व साहबे फैसला होने के तय्यार से जो फैसला करता है उस फैसले से राजी रहे और बाज़ ने कहा कि रज़ा यह है कि अगर दो ज़ख्म उसकी दाहिनी जानिब हो जाए तो उसको बाई जानिब करने का ख़्याल दिल में न लए। कहा गया है कि रज़ा कल्ब से ना गवाश को निकाल देने का नाम है दिल में सिर्फ़ फ़रहत और मुसरत ही बाकी रहे। जनाब राबिया अदविया से दरयाफ्त किया गया कि बन्दा तक्दीर पर कब राजी होता है, जवाब दिया वह मुसीबत पर वह खुश होने लगे, जिस तरह नेमत पर खुश होता है। रिवायत है कि हज़रत शिबली ने हज़रत जुनैद बग़दादी के सामने ला हौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह पढ़ा हज़रत जुनैद ने फरमाया आयत पढ़ना सीने की तंगी की वजह से है (यानी मुसीबत को मुसीबत समझे और उससे नाखुश होने की वजह से) और सीने की तंगी रज़ाए इलाही के तर्क की वजह से है। हज़रत अबू सुफ़ियान ने फरमाया कि रज़ा यह है कि न तो खुदा से जन्नत की आरजू करे और न दोज़ख़ से पनाह मांगे। हज़रत जुन्नून मिस्री ने कहा कि तीन बातें रज़ा की अलामतों में से हैं, क़ज़ा से पहले इख्तियार को तर्क कर देना और क़ज़ा के बाद तल्ख़ी को ख़त्म कर देना और मुसीबत के दौरान मोहब्बत का जोश पैदा होना। आप ही से यह भी मनकूल है कि रज़ा तक्दीर की तल्ख़ी पर दिल का खुश होना है और अबू उसमान से हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस कौल का मतलब दरयाफ्त किया गया: इलाही मैं तुझ से क़ज़ा के बाद रज़ा का तालिब हूँ। हज़रत अबू उसमान ने कहा रज़ा क़ज़ाए इलाही से पहले के मानी है रज़ा का अज़म करना और क़ज़ा के बाद रज़ा मानी है क़ज़ा पर राजी होना। एक और रिवायत में आया है कि हज़रत हुसैन बिन अमीरुल



मोमिनीन अली से कहा गया कि अबू जर फरमाते हैं कि फेक मेरे नजदीक गिना है, बीमरी मुझे सेहत से और मौत हयात से ज्यादा पसन्दीदा है आप ने जवाब दिया अल्लाह तआला अबू जर पर रहम फरमाए मैं कहता हूं कि जो अल्लाह तआला कि पसन्दीदगी पर भरोसा करे वह खुदा के पसन्दीदगी के सिवा किसी चीज की तमन्ना नहीं करेगा।

## हजरत फुजैल बिन अयाज का इरशाद

हजरत फुजैल बिन अयाज ने बिशर हाफी से इरशाद फरमाया कि दुनिया में रजा जुहद से अफजल से सबब इस का यह है कि साहबे रजा अपने मरतबा से बलन्द मरतबा की तमन्ना नहीं करता। हजरत फुजैल का यह फरमाना बजा है इस लिए कि इस कौल में रजा बिलहाल है और रजा बिलहाल में वह तमाम खूबियां जमा हैं। अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से इरशाद फरमाया:

मैंने अपने कलाम और पयाम से सरफराज करने में तुम को दूसरे लोगों पर तरजीह दी पस जो कुछ मैंने तुम को दिया उसको ले लो और शुक अदा करने वालों में से हो जाओ।

इसी तरह अल्लाह तआला ने सय्यदना हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फरमाया:

मुख्तलिफ लोगों को हम ने जो रौनकें दुनयवी बतौर इम्तेहान अता की है तुम उसकी तरफ नजर न उठाओ।

इस आयत में अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अदब की तालीम दी है और आयत व रिज्को रखेका खेरून व अल अब्का में हाल पर कायम रहने, राजी ब रजा रहने और कजा पर कानेअ रहने की तालीम से मतलब यह है कि हम ने जो आप को नबूव्वत, कनायत, सब्र, विलायत और कुदस्त अता की है उन चीजों से कहीं बेहतर और औला है जो दूसरों को अता किया है।

पस साबित हुआ कि सारी खैर हाल की हिफाजत और उस पर राजी रहने और मरजीए मौला के सिवा हर चीज को तर्क कर देने में है इस लिए कि बन्दा के मतलूब की इन तीन सूरतों में से एक सूरत जरूर होगी या तो वह उसका मकसूम होगा या किसी दूसरे का मकसूम होगा या फिर किसी के लिए भीज होगा बल्कि आजमाइश के लिए उसकी तखलीक की गई होगी। पस अगर ऐ बन्दा वह तेरा मकसूम है तो तुझ तक जरूर पहुंचेगा ख्वाह तू चाहे या न चाहे इस लिए यह किस तरह मुनासिब है कि ऐसी चीज की तलब में तुझ से बेकरारी और हिर्स का इजहार हो, अक्ल व इल्म का फैसला उस को बजा और अच्छा करार नहीं देता और अगर वह किसी दूसरे का मकसूम है तो फिर उसकी तलब में क्यों मेहनत और सऊबत बरदाश्त कर रहा है वह तुझे मिलने वाली नहीं है, वह तुझ तक नहीं पहुंचेगी और अगर वह किसी का भी मकसूम नहीं बल्कि आजमाइश है तो फिर उस के लिए अपने आप को आजमाइश में डालना कौन सी दानिशवरी है, अक्लमंद उस पर किस तरह खुश होगा, इस लिए दानिशमंद तो उसकी तलब ही नहीं करेगा।

एक जमाअत ने कहा है कि कजा पर राजी रहना यह है कि अल्लाह का हुक्म तुझ को पसन्द हो या ना पसन्द हो, तेरी नजर में दोनों बराबर हों। बाज ने कहा है कि कजा की तल्खी



गुनियतुत्तालिबीन

(नागवारी) पर सब्र करना रजा है। एक और कौल है कि खुदा के हुजूर में अपने इख्तियार को साकित कर देना रजा है। एक कौल यह भी है कि मुदबिरे हकीकी के सामने अपने इख्तियार को तर्क कर देना रजा है। किसी ने यह भी तारीफ़ कि रजा तर्क इख्तियार का नाम है, बाज़ कहते हैं कि अहले रजा वह हैं जिन्होंने अपने दिलों को इख्तियार से खाली कर दिया है (इख्तियार की जड़ ही काट दी है) वह न उस चीज़ को इख्तियार करते हैं जिसको उनका दिल चाहता है और न ऐसी चीज़ को इख्तियार करते हैं जिसमें तलब का पहलू हो, वह नुजुले हुक्म से पहले हुक्म के मुन्तज़िर नहीं रहते बल्कि जब हुक्म आ जाता है जिसके न वह मुन्तज़िर थे न शाएक तो उस हुक्म पर राजी हो जाते हैं, उस को पसन्द करते हैं और उस पर खुश होते हैं। उन ही साहब का यह कौल भी है कि अल्लाह तआला के ऐसे बहुत से बन्दे हैं कि जब उन पर कोई मुसीबत का वक़्त आ जाता है तो वह उसको अपने लिए नेमत ख़ुदावन्दी समझते हैं शुक्र अदा करते हैं और खुश होते हैं, इस खुशी से वह अन्दाज़ा कर लेते हैं कि बिना शुब्हा नेमतों में मशगूल रहकर मुनइम की तरफ़ से गाफ़िल होना मुज़रत रसा है इस लिए उनके दिल नेमत की तरफ़ से हट कर मुनइम की तरफ़ रुजूअ हो जाते हैं। इस तरह मुसीबतें उन पर नाज़िल होती रहती हैं और उनके दिल मसाइब की तरफ़ से बे हिस हो जाते हैं जब इस मक़ाम पर पहुंच कर उनको करार हासिल हो जाता है तो उनका रब उनका मरतबा इस दर्जा से भी ऊंचा कर देता है, अल्लाह तआला की बख़्शिशें और नेमतें ला महदूद और बे इन्तेहा हैं।

## रजा का अदना दर्जा

रजा का अदना दर्जा यह है कि मा सिवा अल्लाह से बन्दा की उम्मीद मुन्कतअ हो जाए। अल्लाह तआला ने अपने सिवा बन्दों से आस लगाने कि मज़म्मत फरमाई है। एक रिवायत में आया है कि यहया बिन कसीर ने कहा कि मैंने तोरत में पढ़ा है कि वह मलऊन है जिस का एतमाद अपनी ही जैसी मख़लूक पर हो।

## हदीसे कुदसी

हदीसे कुदसी आया है कि अपनी इज़्ज़त व जलाल और सखावत व बुजुर्गी की कसम मैं हर उस उम्मीदवार की उम्मीद को ना उम्मीदी से मुन्कतअ कर दूंगा जिस ने मेरे सिवा ग़ैर से आस लगाई। पस ज़रूर उस शख्स को लोगों के दर्मियान ज़लील करूंगा और अपने कुर्ब से दूर कर दूंगा, और उससे अपना रिश्ता मुन्कतअ कर दूंगा, क्या वह मुसीबतों में ग़ैर से उम्मीद बांधे बैठा है हालांकि मसाएब मेरे हाथ में हैं, तो बन्दा मेरे ग़ैर से आस लगाता है और ग़ौर व फ़िक्र के बाद दूसरों के दरवाजे खटखटाता है हालांकि वह दरवाजे बन्द हैं और उनकी कुजियां मेरे कब्ज़े में हैं, जो बन्दा मख़लूक को छोड़ कर मुझे पकड़ता है उसके उस इरादे को मैं उस के दिल और उसकी नीयत से मालूम कर लेता हूँ और तमाम आसमान और ज़मीन और सारी कायनात भी अगर मेरे ऐसे बन्दे पर अपना दाव चलाते हैं तो मैं उसको उस दाव से निकलने का रास्ता दे देता हूँ और उसको पनाह देता हूँ और जो शख्स मुझे छोड़ कर मख़लूक का दामन थामता है तो मैं आसमान से उसकी रस्सियां काट देता हूँ और उसके नीचे से ज़मीन को खींच देता हूँ और फिर दुनिया में उसको दुखी बना देता हूँ और वह तबाह हो जाता है।



## हुजूर का इरशाद

एक सहाबी ने फरमाया कि मैंने सुना कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमा रहे थे कि जो शख्स लोगों के जरीये इज्जत चाहता है वह जलील होता है। एक कौल है कि जो अपने जैसी मखलूक पर भरोसा और तकिया करता है जलील होता है, ऐसी चीज की ख्वाहिश करना जो इधर उधर झांकने और इरादों के परेशान होने और जिल्लत व ख्वारी से हासिल होती है उसकी पादाश में यही काफी है कि ऐसे आदमी के अन्दर वह तमाम खराबियां जमा हो जाती हैं जो दुनिया में ख्वारी और खुदा से दूरी का बाइस होती हैं ऐसे आदमी के रिज्क में जर्रा बराबर भी इजाफा नहीं होता।

## तमअ शिर्क है

एक शख्स ने कहा कि मैं मुरीदों और तालिबाने हक के लिए जरर रसां दिलों को वीरान करने वाली, मकसद से दूर रखने वाली, इरादों को मुन्तशिर रखने वाली तमअ से ज्यादा किसी चीज को नहीं जानता इसका सबब यह है कि मुरीद ख्वाह किसी दर्जा पर हो तमअ उसके लिए शिर्क है। जिस शख्स ने अपनी ही जैसी हस्ती से तमअ वाबस्ता की जो न नुकसान पहुंचाने पर कादिर है और न फायदा पहुंचाने पर न रोकने पर, तो उसने बादशाह की हुक्मत गोया गुलाम के सुपुर्द कर दी इस लिए वह मुशरिक हो गया। ऐसी सूरत में तकवा का सबूत उस वक्त मिल सकता है जब चीजों को उसके अस्त मालिक की तरफ मन्सूब किया जाए उसी से मांगे दूसरे से तलब न करे। बाज का कौल है कि तमअ दरख्त की जड़ की तरह है और उसकी शाखें रियाकारी, शोहस्त पसन्दी, तसन्नोअ और जाह पसन्दी है।

## हवारियों से हजरत ईसा का इरशाद

हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने हवारियों से फरमाया था कि तमअ सफाक, कातिल और बखील बनाने वाली है। एक बुजुर्ग का इरशाद है कि मैंने एक बार किसी दुनियावी चीज की तमअ की तो हातिफ ने पुकार कर कहा कि ऐ शख्स बन्दो की तरफ दिल को माएल करना आजाद मुरीद को जेब नहीं देता बल्कि वह अपनी हर मुराद अल्लाह से पा सकता है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बन्दों से उन चीजों की तमअ पोशीदा तौर पर रखते हैं जो उनके कब्जा में होती हैं, लेकिन उनको बरकत वहां से मिलती है जहां से उनको तमअ नहीं होती यानी मुनइमे हकीकी के यहां से और वह अच्छी तरह जानते हैं कि तमअ अहवाल की खामी का सबब है यह मुतवकिल आरिफों का सबसे अदना दर्जा है।

किसी मुरीद के दिल में तमअ उसी वक्त पैदा होती है और दिल में जागुर्जी होती है जब उसको अल्लाह तआला से इन्तेहाई दूरी हो जाती है, क्योंकि उसको मालूम है कि उसका मौला उसको देख रहा है फिर भी वह अपनी जैसी मखलूक से तमअ करता है और खिलाफे इलाही उसको (तमअ से) नहीं रोकता।



# सिद्क

## सिद्क की अस्ल

सिद्क की असल अल्लाह तआला का यह इरशाद है:

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरो और सच्चाई के साथ रहो।

## हुजुरे अकरम का इरशाद

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद मरवी है कि हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया बन्दा सच बोलता रहता है और सच बोलने का कसद करता रहता है यहां तक कि बारगाहे इलाही में उसको सिद्दीक लिख लिया जाता है और बन्दा झूट बोलता है और झूट बोलने का इरादा करता रहता है कि यहां तक कि अल्लाह के यहां उसको कज्जाब लिख लिया जाता है।

बयान करते हैं कि अल्लाह तआला ने हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम के पास वही भेजी कि ऐ दाऊद जो मुझे अपने बातिन (दिल) में सच्चा जानता है उसको मखलूक के अन्दर सच्चा कर दूंगा। समझ लेना चाहिए कि सिद्क हर काम का सुतूत है, हर काम की दुरुस्ती और तकमील सच्चाई ही ही होती है, सिद्क नबूव्वत से दूसरे दर्जा पर है। अल्लाह तआला का इरशाद है:

जो लोग रास्तबाज (सच्चे) हैं वह पैगम्बरों, सिद्दीकों, जहादों और नेकों कारों के साथ हैं। सादिक लफ्ज सिद्क से इस्मे फाएल है, सिद्दीक इससे इस्मे मुवालागा का सीगा है यानी बहुत ही सच्चा। सिद्दीक वह है जिससे बार बार सच्चाई जाहिर होती हो यहां तक कि सच्चाई उस की आदत और मल्का बन जाए, सिद्क उस पर मुहूर्त हो गया हो गोया सिद्क नाम है जाहिर व बातिन की एकसाधियत का। सादिक वह है जो कौल में सच्चा हो, और सिद्दीक वह है जो अक्वाल, आमाज और कुल अहवाल में सच्चा हो। कहा गया है कि जो शख्स यह ख्वाहिश रखता हो कि अल्लाह तआला उसके साथ रहे तो उसको चाहिए कि वह सच्चाई को अपनाए रहे क्योंकि अल्लाह सच्चा के साथ होता है।

## हजरत जुनैद का इरशाद

हजरत जुनैद का इरशाद है कि सादिक एक दिन में चालीस बार बदलता है (वह हर बार सच बोलता है) और रियाकार चालीस बरस तक एक हालत (रियाकारी) में रहता है, बाज का कौल है कि सच्चाई हलाकत के मकाम पर भी कलमए हक़ ज़बान से निकालने का नाम है। बाज ने कहा कि बातिन के मुवाफिक़ ज़बान से अदा करना सिद्क है। एक कौल यह है कि नाजाएज़ बात की अदाएगी से मुंह को रोक लेना सिद्क है, किसी ने कहा कि अल्लाह के लिए तकमीले अमल सिद्क है। सहल बिन अब्दुल्लाह ने कहा जो शख्स अपने नफ्स या किसी दूसरे शख्स के बारे में यावा गोई करता है वह सिद्क की बू भी नहीं सुंघ सकता।

## हजरत अबू सईद करशी का इरशाद

हजरत अबू सईद करशी ने कहा कि सादिक मौत के लिए तैयार रहता है और अन्दुरूनी हालतों के जाहिर होने से नहीं झिझकता। अल्लाह तआला का इरशाद है:



अगर तुम रास्त गुफ्तार हो तो मौत की आरजू करो।

एक कौल है कि बिल इरादा तौहीद की सेहत, सिद्क है। फरमाया असले सिद्क यह है कि जहाँ झूट बोलने से छुटकारा हो सके वहाँ भी सच बोले। सादिक में तीन खसलतें होती हैं जिन में से दो खता नहीं करतीं। अब्बल यह कि सादिक की इबादत में हलावत होती है दोम यह कि मखलूक उस से खौफ खाती है, सोम यह है कि उसकी गुफ्तगू में तमकिनत होती है।

## हजरत जुन्नून मिस्री की सराहत

हजरत जुन्नून मिस्री फरमाते हैं कि रास्ती और सच्चाई खुदा की तलवार है जिस से वार किया जाता है और वह रस्सी को दो टुकड़ों में काट देती है। लोगों ने फतहे मूसली से सिद्क के बारे में दरयाफ्त किया आप ने लोहार के भट्ठी में जिसमें आग दहक रही थी हाथ डाल कर आग की तरह दहकता हुआ लोहा हाथ में उठा लिया और उतनी देर तक हाथ में लिए रहे कि वह ठंडा हो गया उस वक्त आप ने फरमाया यह सिद्क है।

## हारिस मोहासबी का इरशाद

हारिस मोहासबी से सिद्क की निशानी दरयाफ्त की गई तो उन्होंने फरमाया सादिक वह है कि अगर लोगों के दिलों से उसकी कद्र व मंजिलत बिल्कुल जाती रहे तो इसलाहे कल्ब के बाइस वह उसकी बिल्कुल परवाह न करे और चींटी बराबर अपने हुस्ने अमल की खबर लोगों को हो जाना पसन्द न करे और अगर उसके आमांले बद की खबर लोगों को हो जाए तो उसको गिरा न गुजरे, अगर वह नागवारी महसूस करेगा तो यह इस अम्र का सबूत होगा कि वह लोगों की नज़र में अपने आमांल से ज्यादा कुछ बनना चाहता है, यह सिद्दीकीन का खुल्क नहीं है। एक शख्स ने कहा जो शख्स देवामी फर्ज अदा नहीं करता उसका वक्ती फर्ज भी कबूल नहीं किया जाता, उन साहब से दरयाफ्त किया गया कि देवामी फर्ज क्या है? उन्होंने जवाब दिया सिद्क। फरमाया कि जब तू अल्लाह तआला से सिद्क के साथ तलब करेगा तो अल्लाह तआला तुझ को एक आइना इनायत करेगा जिसके अन्दर दुनिया व आखिरत के तमाम अजाए बात तुझ पर जाहिर हो जाएंगे।

तम्मत बिल खैर

4 जमादिउल अब्बल 1431 हि०

बमुताबिक 19 अप्रील 2010 बरोज़ पीर

अज कलम साजिद हाशमी

हिन्दी तर्जमा मुकम्मल हुआ अल्लाह तआला कबूल फरमाये